Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरी प्रचारिणी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110691

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

RT-932

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Varanasi

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या २८] [पुस्तक संख्या १७ और १८

गरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला।

सम्पादक—महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी।

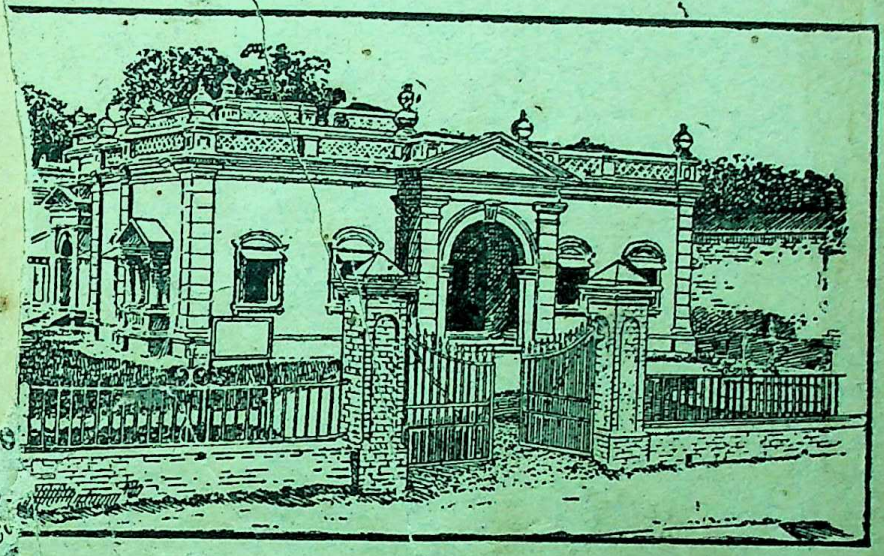

culus No. 28.] [Books Nos. 17 & 18

NAGARI-PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR—

MAHAMAHOPADHYAYA SUDHAKER DVIBEDI.

PUBLISHED BY

THE NAGARI-PRACHARINI SABHA.,

BENARES,

Under the patronage of the Government of the United [illegible]ces.

[illegible] थ। इन का [illegible] ह कि इन्हें मारकर [illegible] ब सिंहासन पर बैठा [illegible]

[२] पीस कर। शूली देकर।

[५] गाँठ के; अपने भी। धोती की मुर्री में लोग रूपए [illegible] और रख लेते हैं उसीसे यह मुंहाविरा निकला।

०१

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका

(१) भूषणग्रन्थावली—पण्डित श्यामविहारी मिश्र एम०ए० [illegible]
पण्डित शुकदेव विहारी मिश्र बी०ए०सम्पादित (१-[illegible]
(२) मान कवि कृत राजविलास—लाला भगवान
सम्पादित (१-४०)

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110691

विषादन ।

लक्षण । दोहा ।

जहँ चित चाहे काज ते उपजत काज विरुद्ध ।
ताहिँ विषादन कहत हैं भूषन बुद्धि विसुद्ध ॥२१६॥

उदाहरण । मालती सवैया ।

दारहि[1] दारि[2] सुरादहि[3] मारि कै संगर साह सुजै[4] बिचलायो । कै कर मैं सब दिल्लि कि दौलति औरहु देस घने अपनायो ॥ बैर कियो सरजा सिव सों यह नौरँग के न भयो मन भायो । फौज पठाई हुती गढ़ लेन को गांठिहु[5] के गढ़ कोट गँवायो ॥ २१७ ॥

अपरंच । दोहा

महाराज सिवराज तव बैरी तजि रस रुद्र ।
बचिबे को सागर तिरे बूड़े सोक समुद्र ॥ २१८ ॥

अधिक ।

लक्षण-दोहा ।

जहाँ बड़े आधार ते बरनत बढ़ि आधेय ।
ताहि अधिक भूषन कहत जानि सुग्रन्थ प्रमेय ॥ २१९ ॥

---

[१], [४], [३] यह तीनों औरंगज़ेब के भाई थे। इन का हाल प्रसिद्धही है कि इन्हें मारकर औरंगज़ेब सिंहासन पर बैठा ।

[२] पीस कर । शूली देकर ।

[५] गाँठ के; अपने भी । धोती की मुर्री में लोग रुपए और रख लेते हैं उसीसे यह मुंहाविरा निकला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरण । दोहा

सिव सरजा तव हाथ को नहिं बखान करि जात ।
जाको बासी सुजस सब त्रिभुवन मैं न समात ॥ २२० ॥

पुनः । कबित्त मनहरण ।

सहज सलील सील जलद से नील डील पब्बय से पील देत नाहिं अकुलात है । भूषन भनत महाराज सिवराज देत कंचन को ढेरु जो सुमेरु सो लखात है ॥ सरजा सवाई कासों करि कबिताई तव हाथ की बड़ाई को बखान करि जात है? । जाको जस टंक सातो दीप नव खंड महि मंडल की कहा बरम्हंड ना समात है ॥ २२१ ॥

अन्योन्य ।

लक्षण । दोहा ।

अन्योन्या उपकार जहँ यह बरनन ठहराय ।
ताहि अन्योन्या कहत हैं अलंकार कविराय ॥ २२२ ॥

उदाहरण । मालती सवैया ।

तो कर सों छिति छाजत दान है दानहु सों अति तो कर छाजै । तैंही गुनी की बड़ाई सजै अरु तेरी बड़ाई गुनी सब साजै ॥ भूषन तेहि सों राज बिराजत राज सों तू सिवराज बिराजै । तो बल सों कोट गजैं अरु तू गढ़ कोटन के बल गाजै ॥ २२३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विशेष ।

लक्षण । दोहा ।

बरनत हैं आधेय को जहँ बिनही आधार ।
ताहिं बिसेष बखानहीं भूषन कवि सरदार ॥ २२४ ॥

उदाहरण । दोहा ।

सिव सरजा सों जंग जुरि चन्दावत[1] रजवंत ।
राव अमर[1] गो अमरपुर समर रही रज[2] तंत ॥२२५॥

पुनः । कवित्त मनहरण ।

सिवाजी खुमान सलहेरि मैं दिलीस दल कीन्हों कतलाम करबाल[3] गहि कर मैं । सुभट सराहे चन्दावत कछवाहे मुगलौ पठान ढ़ाहे फरकत परे फर मैं ॥ भूषन भनत भौंसिला के भट उदभट जीति घर आए धाक फैली घर घर मैं । मारु के करैया अरि अमर पुरै गे तऊ अजौ मारु मारु सोर होत है समर मैं ॥ २२६ ॥

---

[१] अमर सिंह चन्दावत । छन्द नं० ८७ नोट देखिए ।

[२] राव तो अमर पुर चला गया पर उसकी राजश्री (यहाँ पर बीरता) निराधार युद्धस्थल में रह गई ।

[३] "हाथ में तलवार लेकर" । शिवाजी इस युद्ध में नहीं लड़ा था । वह तो इस युद्ध में थाही नहीं और उसके मंत्री मोरोपंत नामक ब्राह्मण ने यह युद्ध जीता था पर हाँ "लड़ै सिपाही और नाम हो सरदार का" इसका हाल छं० नं० ८७ नोट में देखिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्याघात ।

लक्षण । दोहा ।

और काज करता जहाँ करै और्इ काज[1] ।
ताहि कहत व्याघात है भूषन कवि सिरताज ॥२२७॥

उदाहरण । मालती सवैया ।

ब्रह्म रचै पुरुषोत्तम पोसत संकर सृष्टि संहारन हारे । तू हरि को अवतार सिवा नृप काज सँवारै सबै हरि वारे ॥ भूषन यों अवनी यवनी कहैं "कोऊ कहै सरजा सों हहारे । तू सबको प्रतिपालनहार बिचारे भतार न मारु हमारे" ॥ २२८ ॥

अन्यच्च । कवित्त मनहरण ।

कसत मैं बार बार वैसोई बलन्द होत वैसोई सरस रूप समर भरत है । भूषन भनत महराज सिवराज मनि सघन, सदाई जस फूलन धरत है ॥ बरछी कृपान गोली तीर केते मान, जोरावर गोला बान तिनहू को निदरत है । तेरो करबाल भयो जगत को ढाल, अब सोई हाल[2] म्लेच्छन के काल को करत है ॥ २२९ ॥

---

[१] यह लक्षण अशुद्ध प्रतीत होता है । "हितकारी वस्तु को अहित" वर्णन करने में व्याघात अलंकार होता है (दूलह कृत "कवि कुल कंठा भरण" देखिए) । उदाहरण शुद्ध है ।

[२] इस समय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(कारण माला) गुम्फ ।

लक्षण । दोहा ।

पूरब पूरब हेतु कै उत्तर उत्तर हेतु ।
या बिधि धारा बरनिए गुम्फ कहावत नेतु ॥२३०॥

उदाहरण । मालती सवैया ।

शंकर की किरपा सरजा पर जोर बढ़ी कबि भूषन गाई । ता किरपा सों सुबुद्धि बढ़ी भुव भौंसिला साहि तनै की सवाई ॥ राज सुबुद्धि सों दान बढ्यो अरु दान सों पुन्य समूह सदाई । पुन्य सों बाढ्यो सिवाजी खुमान खुमान सों बाढ़ी जहान भलाई ॥२३१॥

पुनः । दोहा ।

सुजस दान अरु दान धन धन उपजै किरवान ।
सो जग मैं जाहिर करी सरजा सिवा खुमान ॥२३२॥

एकावली [१] ।

लक्षण । दोहा ।

प्रथम बरनि जहँ छोड़िए जहाँ अरथ की पाँति ।
बरनत एकावलि अहै कवि भूषन यहि भाँति ॥२३३॥

उदाहरण । हरिगीतिका छन्द ।

तिहुँ भुवन मैं भूषन भनै नरलोक पुन्य सुसाज

---

[१] कारण माला में कारण-कार्य्य का सम्बंध होता है पर एकावली में नहीं होता तथा मालादीपक में पदावृत्ति दीपक का सम्बंध होता है सो भी एकावली में नहीं होता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं । [1]नर लोक मैं तीरथ लसै महि तीरथों कि समाज मैं ॥ महि मैं बड़ी महिमा भली महिमैं[2] महाराज लाज मैं । रज लाज राजत आजु हैं महराज श्री सिवराज मैं ॥ २३४ ॥

मालदीपक एवं सार ।

लक्षण । दोहा ।

दीपक एकावलि मिले माला दीपक होय ।
उत्तर उत्तर उतकरष सार कहत हैं सोय ॥ २३५ ॥

उदाहरण ।

माला दीपक । कवित्त मनहरण ।

मन कवि भूषन को सिव की भगति जीत्यो सिव की भगति जीत्यो साधु जन सेवा ने । साधु जन जीते या कठिन कलिकाल कलिकाल महाबी महाराज महिमेवा ने[3] । जगत मैं जीते महाबीटे महाराजन ते महाराज बावनहू पातसाह लेवा ने पातसाह बावनौ दिली के पातसाहि दिलीपा पातसाहै जीत्यो हिन्दुपति सेवा ने ॥ २३६ ॥

सार यथा । मलती सवैया ।

आदि बड़ी रचना है बिरंचि की जामैं रह

[१] नरलोक मैं तीरथों की समाज मैं महि (एक) तीरथ ल
[२] महिमै (महिमाही) मैं रजलाज (बड़ी) । यहाँ दूरान्व दूषण है ।
[३] महिमावान ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रचि जीव[1] जड़ो है। ता रचना महँ जीव बड़ो
प्रति. काहे तें ता उर ज्ञान गड़ो॥ जीवन मैं नर
नाग बड़े कबि भूषन भाषत पैज अड़ो है। है नर
नाग मैं राज बड़ो सब राजन मैं सिवराज बड़ो है॥२३७॥

यथा संख्य।

लक्षण—दोहा।

क्रम सों कहि तिनके अरथ क्रम सों बहुरि मिलाय॥
यथा संख्य ताको कहैं भूषन जे कविराय॥ २३८॥

उदाहरण—कवित्त मनहरण।

जेई चहौ तेई गहौ सरजा सिवाजी देस संके
ल दुवन के जे वै बड़े उर के। भूषन भनत भौंसिला
सों अब सनमुख कोऊ ना लरैया है धरैया धीर धुर
। अफजल[2] खान रुसामै[3] जमान फत्ते[4] खान
टे कूटे लूटे ए उजीर बिजेपुर के। अमर[5] सुजान

---

[१] जीवधारी और जड़ पदार्थ।

[२] छन्द नं०६३ नोट देखिए।

[३] सन् १६५८ के दिसम्बर में इसका शिवाजी से परनाले के ट मुठभेड़ हुआ और शिवाजी ने इसकी सेना का बड़ाही भयं- कतलाम किया और इसे कृष्णा नदी के उस पार तक खदेरा। का शुद्ध नाम रुस्तमे ज़माँ था।

[४] यह सन् १६७० में शिवाजी से जंजीरे के किले में लड़ा। शिवाजी से मिल गया और इस कारण इसके तीन साथियों ने बन्दी कर लड़ाई जारी रक्खी।

[५] छं० नं० ८७ नोट देखिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहकम[1] बहलोल[2] खान खाँड़े छांड़े डाँड़े उमराय दिलीसुर के ॥ २३८ ॥

पर्य्याय ।

लक्षण । दोहा ।

एक अनेकन मैं रहै एकहि मैं कि अनेक ।
ताहि कहत परयाय हैं भूषण सुकबिबिवेक ॥ २४० ॥

उदाहरण । दोहा ।

जीत रही औरंग मैं सबै छत्रपति छाँड़ि ।
तजि ताहू को अब रही शिवसरजा कर माँड़ि ॥२४१॥

पुनः । कबित्त मनहरण ।

कोट गढ़ दै कै माल मुलुक मैं बीजापुरी गोलकुंडा वारो पीछेही को सरकतु है। भूषन भनत भौंसिला भुवाल भुजबल रेवाही[3] के पार अवरंग हरकतु है ॥

---

[१] शिवाजी के समय में यह कोई बड़ा नामी सरदार न था हाँ कोई साधारण लड़ाई में उससे अवश्य हारा होगा जिसका हाल इतिहास में नहीं मिलता पर आगे चलकर फर्रुखसियर बादशाह के समय में यह बड़ा था और सन् १७१७ में मरहटों से लड़ने को भेजा गया था ।

[२] छन्द नं० ८६ नोट देखिए । यह दिल्ली का नहीं बरन बीजापुरी सरदार था ।

[३] नर्म्मदा नदी के उत्तर ओरही ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110691

पेसकसैं[1] भेजत इरान[2] फिरमान[3] पति उनहू के घर याकी धाक धरकतु है । साहितनै सिवाजी खुमान या जहान पर कौन पातसाह केन हिए खरकतु है ? ॥ २४२ ॥

अगर के धूप धूम उठत जहांई तहाँ उठत बभूरे अब अतिही अमाप हैं। जहाँई कलावँत अलापैं मधुर-स्वर तहांई भूत प्रेत अब करत विलाप हैं ॥ भूषन सिवाजी सरजा के बैर बैरिन के डेरन मैं परे मनो काहु के सराप हैं । बाजत हे जिन महलन मैं मृदंग तहां गाजत मतंग सिंह वाघ दीह दाप हैं ॥ २४३ ॥

परिवृत्ति ।

लक्षण । दोहा ।

एक बात को दै जहाँ आन बात को लेत ।
ताहि कहत परिवृत्ति हैं भूषन सुकबि सचेत ॥ २४४ ॥

उदाहरण । कबित्त मनहरण ।

दच्छिन धरन धीर धरन खुमान, गढ़ लेत गढ़ धरन सों धरम दुवारु दै । साहि नर नाह को सपूत महा बाहु लेत मुलुक महान छीनि साहन को मारु दै ॥ संगर मैं सरजा सिवाजी अरि सैनन को सार हरि लेत

---

[१] पेशकश; नज़र, ख़िराज ।

[२] ईरान, फ़ारस ।

[३] योरप वाले जैसे फ़रासीसी, पोर्टुगीज़ इत्यादि। ये योरुपी सौदागर शिवाजी को नज़रैं भेजते थे। बाबर के पिता का राज्य भी फ़िरंगाना कहलाता था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिन्दुवान सिर सारु दै । भूषन भुसिल जय जस को पहारु लेत हरजू को हारु हरगन को अहारु दै ॥ २४५ ॥

परिसंख्या ।

लक्षण । दोहा ।

अनत बरजि कछु बस्तु जहँ बरनत एकहि ठौर ।
तेहि परिसंख्या कहत हैं भूषन कबि दिलदौर ॥२४६॥

उदाहरण—मनहरण दंडक ।

अति मतवारे जहाँ दुरदै निहारियत तुरगनही मैं चंचलाई परकीति है । भूषन भनत जहाँ पर लगैं बानन मैं कोक पच्छिनहि माहिँ बिछुरन रीति है ॥ गुनि गन चोर जहाँ एक चित्तही के, लोक बंधै जहाँ एक सरजा की गुन प्रीति है । [1]कम्प कदली मैं बारि बुन्द बदली मैं सिवराज अदली के राज मैं यों राजनीति है ॥ २४७ ॥

विकल्प ।

लक्षण । दोहा ।

कै वह कै यह कीजिए जहँ कहनावति होय ।
ताहि बिकल्प बखानहीं भूषन कबि सब कोय ॥२४८॥

---

[१] इसका दूसरा पाठ यों है "कम्प……सिवराज अदली मैं अदली की राज नीति है" ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरण[1] । मालती सवैया ।

मोरँग[2], जाहु कि जाहु कमांऊँ[3] सिरीनगरै[4] कि कबित्त बनाए । बाँधव[5] जाहु कि जाहु अमेरि[6] कि जोधपुरै कि चितौरहि[7] धाए ॥ जाहु कुतुब्ब कि एदिल पै कि दिलीसहु पै किन जाहु बोलाए । भूषन गाय फिरौ महि मैं बनि है चित चाह सिवाहि रिझाए ॥ २४८ ॥

---

[१] ये दोनोंही उदाहरण (छं० नं० २४८, २५०) अशुद्ध हैं। विकल्प में सन्देह ही रहना चाहिए पर इन दोनों छन्दों में अन्त में सन्देह हटा कर एक बात निश्चयात्मक कह दी है। कदाचित अपने नायक की पूर्ण प्रशंसाही के लिये भूषण जी ने अपने ठीक उदाहरण अन्त में जान बूझ कर अशुद्ध कर दिए हों पर यह अन्य प्रकार से भी सम्भव था।

[२] इस नाम की रियासत का पता नहीं लगता। कदाचित मोरभंज की रियासत से तात्पर्य्य हो अथवा मुरंजन किले से जो कांकण प्रान्त में था।

[३] कमाऊँ (गढ़वाल) की रियासत में भूषण जी गए थे। इस विषय में भूमिका देखिए।

[४] कश्मीर।

[५] बाँधवा की रियासत।

[६] जयपुर में इस नाम का प्रसिद्ध किला है जहाँ शक्ति शिलामयी देवी हैं। "जय जय शक्ति शिला मयी जय जयगढ़ आमेर। जय जयपुर सुरपुर सदृस जो जाहिर चहुं फेर" ॥

[७] चित्तौर अर्थात मेवार अथवा उदयपुर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनः मालती सवैया ।

देसन देसन नारि नरेसन भूषन यों सिख देहिं दया सों । मंगन ह्वै करि, दन्त गहौ तिन, कन्त तुम्हैं है अनन्त महाशों[1] ॥ कोट गहौ कि गहौ बन ओट कि फौज कि जोट सजौ प्रभुता सों । और करौ किन कोटि कराह सलाह बिना बचिहौ न सिवा सों ॥ २५० ॥

समाधि ।

लक्षण । दोहा ॥

और हेतु मिलि कै जहां होत सुगम अति काज ।
ताहि समाधि बखानहीं भूषन जे कविराज ॥ २५१ ॥

उदाहरण । मालती सवैया ।

बैर कियो सिव चाहत हो तब लौं अरि बाह्यो कटार कठैठो । योंही मलिच्छहि छाँडै नहीं सरजा मन तापर रोस मैं पैठो ॥ भूषन क्यों अफजल्ल बचै अठपाव[2] कै सिंह को पावँ उमैठो । बीजू के घाय धुक्योई[3] धरक्क ह्वै तौ लग धाय धराधर बैठो ॥२५२॥

---

[१] सौंह; क़सम ।

[२] उपद्रव; शरारत । यथा "करौ तुम अठपाव पावैं हम गारी गावँ मैं" [रघुनाथ--रसिक मोहन] ।

[३] धुकधुकाया; कलेजा कांपा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समुच्चय।

लक्षण-दोहा।

एक बारही जहँ भयो बहु काजन को बंध।
ताहि समुच्चय कहत हैं भूषन जे प्रतिबंध ॥ २५३ ॥

उदाहरण—मालती सवैया।

माँगि पठायो सिवा कछु देस वजीर अजानन बोल गहे ना। दौरि लियो सरजा परनालो[1] यों भूषन जो दिन देाय लगे ना॥ धाक सों खाक बिजैपुर भो मुख आय गो खान[2] खवास के फेना[3]। भै भरकी करकी धरकी दरकी दिलएदिलसाहि कि सेना॥२५४॥

द्वितीय समुच्चय।

लक्षण[4]। दोहा।

वस्तु अनेकन को जहाँ बरनत एकहि ठौर।
दुतिय समुच्चय ताहि को कहि भूषन कवि मौर॥२५५॥

उदाहरण—मालती सवैया।

सुन्दरता गुरुता प्रभुता भनि भूषन होत है आदर जामैं। सज्जनता औ दयालुता दीनता कोमलता झलकै पर जामैं॥ दान कृपानहु को करिबो

---

[१] छन्द नं० १०७ नोट देखिए।

[२] छं० नं० २०६ नोट देखिए।

[३] भयानकरस पूर्ण।

[४] अन्य कबि इसका लक्षण यों देते हैं "द्वितीय समुच्चय में एक काज को कई कारण पुष्ट करते हैं।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करिबो अभै दीनन को बर जामैं। साहन सों रन टेक बिबेक इते गुन एक सिवा सरजा मैं॥ २५६॥

प्रत्यनीक।

लक्षण—दोहा।

जहां जोरावर सत्रु के पक्षी पै कर जोर।
प्रत्यनीक तासों कहैं भूषन बुद्धि अभोर॥ २५७॥

उदाहरण—अलसा सवैया[1]।

लाज धरौ सिवजू सों लरौ सब सैयद सेख पठान पठाय कै। भूषन ह्यां गढ़ कोटन हारे उहाँ तुम क्यों मठ[2] तोरे रिसाय कै? ॥ हिन्दुन के[3] पति

---

(१) अलसा सवैया नवीन मत की है। इसमें पहले सात भगन फिर एक रगन (रगनन्त भ मुनि) होते हैं भगण के तीन अक्षरों में पहला गुरु और शेष दो लघु होते हैं तथा रगण के तीन अक्षरों में पहला व तीसरा गुरु होता है और दूसरा लघु।

(२) औरंगजेब ने अनेक मन्दिर हिन्दुओं को सताने के लिए तोड़वा दिए यहां तक कि काशीजी में श्री विश्वनाथजी तक का मन्दिर तोड़वा कर उसकी एक ओर की दीवार पर मस्जिद बनवा दी जो अब तक जैसा का तैसा प्रस्तुत है। न जानें इसमें हिन्दुओं की क्या वास्तविक हानि हो गई पर हां इतना अवश्य हुआ कि ऐसी ही बातों से मुग़लों के ऐसे सुदृढ़ राज्य की चूरें हिल गईं और कुछ ही दिनों में वह भरभरा कर ढेर हो गया। आश्चर्य्य है कि औरंगजेब जैसे राजनीतिज्ञ शासक ने ऐसी उत्कट भूलें कीं! अस्तु। सन् १६६८ ई० की यह घटना है। बीभत्स रस।

(३) मेवार (उदयपुर) के राणा "हिन्दूपति" कहलाते हैं। शिवाजी को उसी वंश का होने से भूषण जी ने इस नाम से पुकारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सों न बिसात सतावत हिन्दु गरीबन पायकै । लीजै कलंक न दिल्लि के बालम आलम आलमगीर[1] कहायकै ॥ २५८ ॥

पुनः । कबित्त मनहरण ।

गौर[2]गरबीले अरबीले राठ[3]वर गह्यो लोह[4]गढ़ सिंहगढ़ हिम्मति हरषते । कोट के कँगूरन मैं गोलन्दाज तीरन्दाज राखे हैं लगाय, गोली तीरन बरषते ॥ कै कै सावधान किरवान कसि कम्मरन सुभट अमान चहुँ ओरन करषते । भूषन भनत तहाँ सरजा सिवा तैं चढ़ो राति के सहारे ते अराति[5]अमरषते ॥ २५९ ॥

अर्थापति (काव्यार्थापति) ।

लक्षण-दोहा ।

"वहजीत्यो तौ यह कहा" यों कहनावति होय ।
अर्थापत्ति बखानहीं तहाँ सयाने लोय ॥ २६० ॥

---

(१) औरंजेब का यह भी नाम था जिसका अर्थ है संसार भर पर अधिकार करलेने वाला ।

(२) छं० न० १३४ नोट देखिए ।

(३) जोधपुर के राजा गण । यहां उदय भानु राठौर (छं० न० १०० देखिए ।)

(४) सिंहगढ़ (छं० न० १०० देखिए) के गढ़ अर्थात् किले में लोह अर्थात् तलवार गहा ।

(५) शत्रु पर क्रोध करके ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरण। कवित्तमनहरण ।

सयन मैं साहन को सुन्दरी सिखावैं ऐसे सरजा सों बैर जनि करौ महाबली है। पेसकसैं भेजत विलायति पुरुतगाल[1] सुनिकै सहमि जात करनाट[2] थली है ॥ भूषन भनत गढ़ कोट माल मुलुक दै सिवासों सलाह राखिए तौ बात भली है। जाहिदेत दंड सब डरिकै अखंड सोई दिली दलमली तौ तिहारी कहा चली है ? ॥२६१ ॥

काव्यलिङ्ग ।

लक्षण-दोहा ।

है दिढ़ाइबे जोग जो ताको करत दिढ़ाव ।
काव्य लिंग तासों कहैं भूषन जे कबिराव ॥ २६२ ॥

उदाहरण-मनहरण दंडक ।

साइति लै लीजिए बिलाइति को सर कीजै बलख़ बिलायति को बंदि अरिडावरे। भूषन भनत कीजै उत्तरी भुवाल बस पूरब के लीजिए रसाल गज छावरे ॥ दच्छिन के नाथ से सिपाहिन सों बैरकरि अवरंग साहिजू कहाइए न बावरे। कैसे सिवराज मानु देत अवरंगै गढ़ गाढ़े गढ़पती गढ़ लीन्हे और रावरे ॥ २६३ ॥

---

(१) छन० २४२ नोट देखिए ।
(२) छं० नं० ११७ नोट देखिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अर्थान्तरन्यास ।

[1]लक्षण-दोहा ।

कह्यो अरथजाही लियेा और अरथ उल्लेख ।
सो अर्थान्तर न्यास है कहि सामान्यबिसेख ॥२६४॥

उदाहरण । सामान्य भेद । कबित्त मनहरण ।

बिना चतुरंग संग बानरन लैकै बाँधि बारिद को लंक रघुनन्दन जराई है । पारथ अकेले द्रोन भीषम से लाख भट जीति, लीन्हों नगरी बिराट मैं बड़ाई है ॥ भूषन भनत ह्वै गुसुल खाने मैं खुमान अवरंग साहिबी हथ्याय हरि लाई है । तौ कहा अचम्भो महराज सिवराज सदा बीरन के हिम्मतै हथ्यार होत आई है ॥२६५॥

विशेषभेद । मालती सवैया ।

साहि तनै सरजा समरत्थ करी करनी धरनी पर नीकी । भूलिगे भोजसे बिक्रम से औ भई बलि बेनु कि कीरति फीकी ॥ भूषन भिच्छुक भूप भए भलि भीख लै केवल भौंसिला ही की । नैसिक रीझि धनेस करै, लखि ऐसियै रीति सदा सिवजीकी ॥२६६॥

---

(१) इसका लक्षण अन्य कवि येां देते हैं :-अर्थान्तर न्यास वह है जहाँ किसी वस्तुको पहले विशेष कह के फिर सामान्यकरदे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रौढ़ोक्ति ।

लक्षण । दोहा ।

[1]जहँ उतकरष अहेत को बरनत हैं करि हेत ।
प्रौढ़ोकति तासों कहत भूषन कबि बिरदेत[2] ॥२६७॥

उदाहरण—कबित्त मनहरण ।

मानसर बासी हंस बसन समान होत, चन्दन सों घस्यो घनसारऊ[3] घरीक है । नारद की सारद की हाँसी मैं कहाँ सी भास सरद की सुरसरी कौन पुण्ड रीक है ? ॥ भूषन भनत छक्यो छीरधि मैं थाह लेत फेन लपटानो ऐरावत को करी कहै ? । कयलास ईस ईस सीस रजनीस वहौ अवनीस सिवाके न जस को सरीक है ॥ २६८ ॥

सम्भावना ।

लक्षण । दोहा ।

"जुयों होय तौ होय इमि" जहँ सम्भावन होय ।
ताहिकहत सम्भावना कबि भूषन सबकोय ॥ २६९ ॥

उदाहरण । कवित्त मनहरण ।

लोमस की ऐसी आयु होय कौनहू उपाय तापर कवच जो करन वारो धरिए । ताहूपर हूजिए सहस

---

(१) इसका लक्षण अन्य कवियों ने यों भी कहा है:- प्रौढ़ोक्ति वह है जहाँ कोई बहुत बड़ा काज हो और उसके वास्ते कोईकारण वरणितन हो पर कोई कल्पित कारण कहा जाय ।

(२) विरद (प्रशंसा) करने वाले ।

(३) कपूर भी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाहु ता पर सहस गुनो साहस जो भीमहु ते करिए ॥ भूषन कहैं येां अवरंगजू सेां उमराव नाहक कहौ तौ जाय दच्छिन में मरिए । चलैन कछू इलाज भेजियत बेही काज ऐसोहोय साज तौसिवासेां जायलरिए॥२७०॥

मिथ्याध्यवसित

लक्षण । दोहा ।

झूठ अरथ की सिद्धि को झूठो बरनत आन ।
मिथ्याध्यवसित कहतहैं भूषन सुकबि सुजान ॥२७१॥

उदाहरण । दोहा ।

[1]पगरन मैं चल येां लसैं ज्येां अङ्गद पग ऐन ।
धुव सेा भुव सेा मेरु सेा सिव सरजा को बैन ॥२७२॥

पुनः । कवित्त मनहरन ।

मेरु सम छोटो पन सागर सेा छोटो मन धनद को धन ऐसो छोटो जग जाहि को । सूरज सेा सीरो तेज चाँदनी सी कारी कित्ति अमिय सेा कटु लागै दरसन ताहि को ॥ कुलिस सेा कोमल कृपान अरि भंजिबे को भूषन भनत भारी भूप भौंसिलाहि को । भुव सम चल पद सदा महि मंड़ल मैं धुव सेा चपल धुव बल सिव साहिको ॥ २७३ ॥

---

(१) इस में शिवाजी के विषयमें झूठी बातें झूठी उपमाओं द्वारा कही गई हैं जैसा कि भूषणजी ने लक्षण में साफ़ लिख दिया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उल्लास ।

लक्षण । दोहा ।

एकहि के गुन दोषते औरै को गुन दोस ।
बरनत हैं उल्लास सेा सकल सुकबि मतिपेास॥२७४॥

उदाहरण (गुणेनदोषो) । मालतीसवैया

काज मही सिवराज बली हिँदुवान बढ़ाइबेको उर ऊटै । भूषन भूनिरम्लेच्छ करी चहै, म्लेच्छन मारिबे को रन जूटै ॥ हिन्दु बचाय बचाय यही अमरेस चँदावत लौं कोइ टूटै । चन्द अलोकते लोक सुखी यहि कोक अभाग को सेाकन छूटै ॥ २७५ ॥

पुनः (दोषेण गुणो) । मनहरण दण्डक ।

देस दहपट्ट कीने लूटि कै खजाने लीने बचेन गढ़ोई काहूगढ़ सिरताज के । [1]तेारादार सकल तिहारे मनसबदार डाँड़े, जिनके सुभाय जंग दै मिजाज के ॥ भूषन भनत बादसाह को यों लेाग सब बचन सिखावत सलाहकी इलाज के । डावरे कि बुद्धि ह्वै कै बावरे नकीजै बैरु रावरे के बैर होत काज सिवराज के ॥ २७६ ॥

अन्यच्च (गुणेन गुणो) । दोहा ।

नृप सभान मैं आपनी होन बड़ाई काज ।
साहितनै सिवराज के करत कबित कबिराज॥२७७॥

---

(१) तिहारे सकल तेारादार (तथा) मनसबदार जिनके सुभाय मिजाज के (अभिमानी थे) युद्धकरके डाँड़े ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपरंच (दोषेनदोषो) । दोहा ।

सिव सरजा के बैर को यह फल आलमगीर ।
छूटे तेरे गढ़ सबै कूटे गए वजीर ॥ २७८ ॥

पुनरपि । मनहरण दण्डक

दौलति दिली की पाय कहाए अलमगीर बब्बर[१] अकब्बर[२] के बिरद बिसारे तैं । भूषन भनत लरि लरि सरजा सों जंग निपट अभंग गढ़ कोट सब हारे तैं ॥ सुधरचोन एकौ साज भेजि भेजि बेही काज बड़े बड़े बे इलाज उमरावं मारे तैं । मेरे कहे मेर करु, सिवाजी सों बैर करि गैर[३] करि नैर[४] निज नाहक उजारे तैं ॥ २७९ ॥

अवज्ञा ।

लक्षण । दोहा

औरे के गुन दोस ते होत न जहँ गुन दोस ।
तहाँ अवज्ञा होत है भनि भूषन मति पोस ॥२८०॥

उदाहरण । मालती सवैया

औरन के अनबाढ़े कहा अरु बाढ़े कहा नहिँ होत चहा है । औरन के अनरीझे कहा अरु रीझे

---

[१] बाबर बादशाह, औरंगज़ेब के पांच पुश्त ऊपर का भारत का पहला मुग़ल बादशाह था ।

[२] अकबर औरंगज़ेब का परदादा था ।

[३] गैरकरि=बेजा करके ।

[४] नगर; देश ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा न मिटावत हा[1] है । भूषन श्री सिवराजहि माँ गिए एक दुनी बिच दानि महा है । मंगन औरन के दरबार गए तौ कहा न गए तौ कहा है ? ॥२८१॥

अनुज्ञा ।

लक्षण । दोहा ।

जहाँ सरस गुन देखि कै करै दोस की हौस ।
तहाँ अनुज्ञा होत है भूषन कबि यहि रौस ॥२८२॥

उदाहरण । कवित्त मनहरण ।

जाहिर जहान सुनि दान के बखान आजु महा दानि साहितनै गरिब नेवाज के । भूषन जवाहिर जलूस जर बाफ जोति देखि देखि सरजा कि सुकबि समाज के ॥ तप करि करि कमलापति सों माँगत यों लोग सब करि मनोरथ ऐसे साज के । बैपारी जहाज के न राजा भारी राजके भिखारी हमैं कीजै महाराज सिवराज के ॥ २८३ ॥

लेश ।

लक्षण । दोहा

जहँ बरनत गुन दोष,कै कहै दोष गुन रूप ।
भूषन ताको लेस कहि गावत सुकबि अनूप ॥२८४॥

उदाहरण । दोहा

उदै भानु राठौर बर धरि धीरज, गढ़, ऐंड़ ।

---

[१] "हाय" अर्थात् दुःख को नहीं मिटाता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगटै फल ताको लह्यो परि गो सुर पुर पैंड़ ॥२८५॥
कोऊ बचत न सामुहें सरजा सों रन साजि ।
भली करी पिय ! समरते जियलै आए भाजि ॥२८६॥

तद्गुण ।

लक्षण । दोहा

जहाँ आपनो रंग तजि गहै और को रंग ।
ताको तद्गुन कहत हैं भूषन बुद्धि उतंग ॥ २८७॥

उदाहरण । मनहरण दंडक

[1]पम्पा मान सर आदि अगन तलाव लागे जेहि के परन मैं अकथ युत[2] गथ के । भूषन यों साज्यो राजगढ़[3] सिवराजरहे देव चक चाहि कै बनाए राजपथ के ॥ बिन[4] अवलम्ब कलिकानि[5] आसमान मैं ह्वै होत विसराम जहाँ इन्दु औ उदथ[6]

---

[१] जिस (राजगढ़) के पक्षों अर्थात् पक्खों में पम्पा, मानसरोवर आदि अगणित तालाब लगे हैं अर्थात् चित्रित हैं ।

[२] वे (तालाब) अकथनीय हैं और उनके साथ कितने ही गाथा लगे हैं अर्थात् वे इतिहासों और पुराणों में प्रसिद्ध हैं ।

[३] इसका वर्णन छन्द नं० १४ नोट एवं छन्द नं० १५-२४ में देखिए । जान पड़ता है कि वह वरणन राजगढ़ ही का है न कि रायगढ़ का । भूमिका देखिए ।

[४] बिना किसी चीज़ पर सहारा पाने के सूर्य्य और चन्द्रमा आसमान में परेशान हो कर जिस राजगढ़ पर विश्राम ले लेते हैं ।

[५] परेशानी ।

[६] उदय व अस्त होनेवाला, सूर्य्य ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के । महत उतंग मनि जोतिन के संग[1] आनि कैधौ रंग चकहा[2] गहत रबि रथ के ॥ २८८ ॥

पूर्व्व रूप

लक्षण । दोहा

प्रथम रूप मिटि जात जहँ फेरि वैसोई होय ।
भूषन पूरब रूप सो कहत सयाने लोय ॥ २८९ ॥

उदाहरण । मालती सवैया ।

ब्रह्म के आनन ते निकसे ते अत्यन्त पुनीत तिहू पुर मानी । राम युधिष्ठिर के बरने बलमीकिहु ब्यास के अंग सोहानी ॥ भूषन यों कलि के कबिराजन राजन के गुन पाय नसानी । पुन्य[3] चरित्र सिवा सरजै बर न्हाय पवित्र भई पुनि बानी ॥ २९० ॥

यों सिर पैं ढहरावत ढार हैं जाते उठैं असमान बभूरे । भूषन भूधरऊ धरकैं जिनके धुनि धक्कन यों बल

---

[१] के संग आनि=से मिलान हो कर ।

[२] पहिए ।

[३] इस को पढ़ कर तुलसीदासजी की—

"भक्त हेतु विधि भवन बिहाई । सुमिरत सारद आवत धाई ॥
"राम चरित सर बिन अन्हवाए । सो श्रम जाय न कोटि उपाए ॥"

इत्यादि चौपाइयों का स्मरण हो आता है । इस विषय में हमने अपने विचार "सरस्वती, भाग १ संख्या १२" में "हिन्दी काव्य (आलोचना)" शीर्षक निबंध में प्रकट किए हैं । विषयी राजाओं के कारण लोभी कवियों ने नायका इत्यादिक विषयों पर काव्य कर सरस्वती देवी को अपवित्र सी कर दिया था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूरे ॥ ते सरजा सिवराज दिए कबिराजन को गज-राज गरूरे । सुंडन सों पहिले जिन सोखि कै फेरि महामद सों नंद पूरे ॥ २८१ ॥

श्री सरजा सलहेरि[1] के युद्ध घने उमरावन के घर घाले। कुम्भ चँदावत सैद पठान कबंधन धावत भूधर हाले॥ भूषन यों सिवराज कि धाक भए पियरे अरुने रँग वाले। लोहै कटे लपटे अति लोहु[2] भए मुँह मीरन के पुनि लाले ॥ २८२ ॥

यों कबि भूषन भाषत है यक तौ पंहिले कलि-काल कि सैली । तापर हिन्दुन की सब राह सु नौरँग साह करी अति मैली ॥ साहि तनैं सिव के डर सों तुरकौ गहि बारिध की गति पैली । बेद पुरानन की चरचा अरचा द्विज देवन की फिरि फैली ॥ २८३ ॥

अतद्गुण ।

लक्षण । दोहा

जहँ संगति ते और को गुन कछूक नहिँ लेत ।
ताहि अतदगुन कहत हैं भूषन सुकवि सचेत ॥२८४॥

उदाहरण । मालती सवैया

दीन दयालु दुनी प्रतिपालक जे करता निरम्लेच्छ मही के । भूषन भूधरि उद्धरिबो सुने और जिते गुन ते सब जी के ॥ या कलि मैं अवतार लियो तऊ तेई सुभाय सिवाजि बली के । आय धरयो हरि ते नर रूप पै काज करैं सिगरे हरिही के ॥ २८५ ॥

---

[१] छन्द नं० ८७ नोट देखिए । [२] लोहू ; रुधिर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनः । कवित्त मनहरण ।

सिवाजी खुमान तेरो खग्ग बढ़े मान बढ़े मानस लौं बदलत कुरुष उछाह[1] ते । भूषन भनत क्यों न जाहिर जहान होय प्यार पाय तो से ही दिपत नर नाह ते ॥ परताप फेटो रहो सुजस लपेटोरहो बरनत खरो नर पानिप अथाह ते । रंग रंग रिपुन के रकत सों रँगो रहै राती दिन राती पै न राती होत स्याह ते ॥२८६॥

अपरंच । दोहा

सिव सरजा की जगत मैं राजत कीरति नौल ।
अरि तिय अंजन दृग हरै तऊ धौल की धौल ॥२८७॥

अनुगुन ।

लक्षण । दोहा ।

जहाँ और के संग ते बढ़ै आपनो रंग ।
ता कहँ अनुगुन कहत हैं भूषन बुद्धि उतंग ॥ २८८ ॥

उदाहरण । कवित्त मनहरण ।

साहि तनै सरजा सिवा के सनमुख आय कोऊ बचि जायन गनीम भुज बल मैं । भूषन भनत भौंसिला की दिल दौर सुनि धाकही मरत म्लेछ औरँग के दल मैं ॥ राती दिन रोवत रहत यवनी हैं सोक परोई रहत दिली आगरे सकल मैं । कज्जल कलित अँसुवान के उमंग संग दूनो होत रोज रंग यमुना के जल मैं ॥ २८८ ॥

---

[१] मानसरोवर की भांति बेरुखी उछाह में परिणित हो जाती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीलित ।

लक्षण । दोहा ।

सदृस बस्तु मैं मिलि जहां भेद न नेक लखाय ।
ताको मीलित कहतहैं भूषन जे कबिराय ॥ ३०० ॥

उदाहरण । कवित्त मनहरण ।

इन्द्र निज हेरत फिरत गज-इन्द्र अरु इन्द्र को अनुज[1] हेरै दुग्गधिनदीस को । भूषन भनत सुर सरिता को हंस हेरै बिधि हेरै हंस को चकोर रजनीस को ॥ साहि तनै सिवराज करनी करी है तैंजु होत है अचम्भो देव कोटियौ तैंतीस को । पावत न हेरे तेरे जस मैं हिराने निज गिरि को गिरीस हेरैं गिरिजा गिरीस को ॥ ३०१ ॥

उन्मीलित ।

लक्षण-दोहा ।

सदृस वस्तु मैं मिलत पुनि जानत कौनेहु हेत ।
उनमीलित तासों कहत भूषन सुकवि सचेत ॥३०२॥

उदाहरण-दोहा ।

सिव सरजा तव सुजस मैं मिलै धौल छवि तूल ।
बोल बास ते जानिए हंस चमेली फूल ॥ ३०३ ॥

सामान्य ।

लक्षण-दोहा ।

भिन्न रूप जहँ सदृस ते भेद न जान्यो जाय ।
ताहि कहत सामान्य हैं भूषन कवि समुदाय ॥३०४॥

(१) इन्द्र का छोटा भाई अर्थात वरुण जो जल के देवता हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरण । मालतीसवैया ।

पावस की यक राति भली सुमहाबली सिंह सिवा गमकेते । म्लेच्छ हजारनही कटि गे दसही मरहट्टन के झमकेते ॥ भूषन हालि उठे गढ़ भूमि पठान कबंधन के धमकेते । मीरन के अवसान गये मिलि धोपनि[1] सों चपला चमके ते ॥ ३०५ ॥

विशेषक ।

लक्षण–दोहा ।

भिन्न रूप सादृश्य मैं लहिए कछू बिसेख ।
ताहि बिसेषक कहत हैं भूषन सुमति उलेख ॥३०६॥

उदाहरण–कबित्त मनहरण ।

अहमद[2] नगर के थान किरवान लै कै नवसेरी खान[3] ते खुमान भिरयो बलते । प्यादन सों प्यादे पखरैतन सों पखरैत बखतर वारे बखतर वारे हलते॥ भूषन भनत एते मान घमसान भयो जान्यो न परत कौन आयो कौन दलते । सम बेष ताके, तहाँ सरजा सिवा के बाँकेबीर जाने हाँके देत, मीरजाने चलते ॥३०७॥

---

(१) तलवार । यथा "छत्रसाल जेहि दिसि पिलै काढ़ि धोप कर माहिं । तेहि दिसि सीस गिरीस पै बनत बटोरत नाहिं" ॥ (छत्रप्रकाश) । यहां शाइस्ता ख़ां वाली लड़ाई का इशारा भूषण जी ने किया है ।

(२) निजामशाही "बादशाहों" कीं राजधानी । यहां पर शिवाजी ने नौशेरीख़ां को लूटा था ।

(३) नौशेरी ख़ां को ख़ानदौरां की उपाधि थी (छ० नं० १०१ नोट देखिए)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिहित ।

लक्षण-दोहा ।

परके मन की जानि गति ताको देत जनाय ।
कछू कृया करि, कहत हैं पिहित ताहि कबिराय॥ ३०८॥

उदाहरण-दोहा ।

गैर मिसिल ठाढ़ो सिवा अन्तरजामी नाम ।
प्रकट करीरिस, साहकी सरजा करि न सलाम॥३०९॥
[1]आनि मिल्यो अरि, यों गह्यो चखनँ चक्कत्ता चाव।
साहि तनै सरजा सिवा दियो मुच्छ परताव॥३१०॥

प्रश्नोत्तर ।

लक्षण-दोहा ।

कोऊ बूझै बात कछु कोऊ उत्तर देत ।
प्रश्नोत्तर ताको कहत भूषन सुकवि सचेत ॥ ३११ ॥

उदाहरण । मालती सवैया ।

लोगन सों भनि भूषन यों कहै खान[2] खवास कहा सिख दै हौ । आवत देसन लेत सिवा सरजै मिलिहौ भिरिहौ कि भगै हौ ॥ एदिल की सभा बोलि उठीयाँ सलाह करौब कहां भजिजैहौ । लीन्हो कहा लरिकै अफजल्ल कहा लरिकै तुमहू अबलैहौ ? ॥ ३१२ ॥

---

(१) बीर रस अपूर्ण ।
(२) छं० नं० २०६ नोट देखिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनः । दोहा ।

कोदाता को रनचढ़ो को जग पालनहार ? ।
कबि भूषन उत्तरदियो सिवनृप हरिअवतार ॥३१३॥

व्याजोक्ति ।

लक्षण । दोहा

आनहेतु सेां आपनो जहां छिपावै रूप ।
व्याज उकुतिता सेां कहतभूषन सुकबिअनूप ॥३१४॥

उदाहरण । मालतीसवैया ।

साहिन के उमराव जितेक सिवा सरजा सब लूटि लए हैं । भूषन ते बिन दौलति ह्वै कै फकीर ह्वै देस बिदेस गए हैं ॥ लेाग कहैं इमि दच्छिन[1] जेय सिसौदिया रावरे हाल ठए हैं ? । देत रिसाय कै उत्तर येां हमही दुनियाँ ते उदास भए हैं[2] ॥३१५॥

पुनः । दोहा ।

सिवाबैर औरँग बदन लगी रहैनित आहि ।
कबि भूषन बूझे सदा कहै देत दुखसाहि[3] ॥ ३१६ ॥

---

(१) दक्षिण का जीतने वाला सिसौदिया अर्थात् शिवाजी ।

(२) इन दोां पदेां का पाठान्तर येां है—"ईजति राखि सकैं अपनी इमि स्यानपनो करि त्योर ठए हैं । भेटतही सबही सेां कहैं हम या दुनियां ते उदास भए हैं" ।

(३) शाही; राज्य भार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोकोक्ति एवं छेकोक्ति ।

लक्षण । दोहा ।

कहनावति जेा लोक की लोक उकुति सेा जानि ।
जहाँ कहत उपमान ह्वै छेकउकुति तेहिमानि ॥३१७॥

उदाहरण ।

लोकोक्ति यथा । दोहा ।

सिवसरजा की सुधि करौ भलीन कीन्ही पीव ।
सूबा ह्वै दच्छिन चले धरे जातकित जीव? ॥३१८॥

छेकोक्ति । यथा । दोहा ।

जे सेाहात सिवराज केा ते कबित्त रसमूल ।
जे परमेस्वर पै चढैं तेई आछेफूल ॥ ३१९ ॥

पुनः । किरीटी सवैया १ ।

औरँग जेा चढ़ि दक्खिन आवै तौ ह्याँते सिधावै सोऊ बिनु कप्पर । दीनो मुहीम केा भार बहा[3]दुर छागे[2]सहै क्येां गयन्द को झप्पर ? ॥ सास्ता खां सँग वे हठि हारे जे साहब सातएँ ठीके भुवप्पर । ये अब सूबहु आवैं सिवापर "काल्हि के जोगी कलींदे[4] को खप्पर" ॥३२०॥

---

(१) इस सवैया में "वसुभा" अर्थात आठ भगण होत हैं। एक गुरु फिर दो लघु अक्षर = भगण ।

(२) बकरा; छगरा ।

(३) कदाचित यह खानबहादुर = ख़ां जहां बहादुर के विषय हो—इसका हाल छन्द नं० ८६ में बहलोल वाले नोट में देखिये ।

(४) तरबूजा । "नई नाइन बाँस का नहन्ना" की तरह यह भी एक कहावत है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वक्रोक्ति ।

लक्षण । दोहा ।

जहाँ श्लेषसों का[1]कु सों अरथ लगावैं और ।
बक्र उकुति ताको कहत भूषन कबिसिरमौर ॥३२१॥

उदाहरण ।

श्लेषसे बक्रोक्ति । कबित्त मनहरन ।

साहितनै तेरे बैर बैरिन को कौतुक सो बूझत फिरत कहौं काहे रहे तचिहौ ? । सरजा के डर हम आए इतै भाजि, तब सिंह सों डराय याहूठौर ते उकचि[2]हौ ॥ भूषन भनत वै कहैं कि हम सिव कहैं तुम चतुराई सो कहत बात रचिहौ । सिवजापै रूठैं तौ निपट कठिनाई तुमबैर त्रिपुरारिके त्रिलोक मैं न बचिहौ ॥ ३२२ ॥

काकु से बक्रोक्ति । कबित्तमनहरण ।

सास[3]ताखां दक्खिन को प्रथम पठायो तेहि बेटा के समेत हाथ जाय कै गँवायो है । भूषन भनत जौ लौं भेजौ उत औरै तिन बेही काज बरजोर कटक कटायो है ॥ जोई सूबेदार जात सिवाजी सों हारितासों अवरंग साहि इमि कहै मन भायो है ।

---

(१) वह प्रश्न जिससे उत्तर व्यंजित होजाय यथा "क्या मजाल ?"

(२) उचको गे; उठ भागो गे ।

(३) छन्द नं० ३५ नोट देखिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुलुक लुटायेा तौ लुटायेा, कहा भयो ? तन आपनेा बचायेा महाकाज करिआयो है ॥ ३२३ ॥

पुनः । दोहा ।

करि मुहीम आये कहत हजरत मनसब दैन ।
सिव सरजा सेां जंगजुरि ऐहैं बचिकै हैन ॥ ३२४ ॥

स्वभावोक्ति ।

लक्षण । दोहा ।

सांचो तैसो बरनिए जैसो जाति स्वभाव ।
ताहि सुभावोकति कहत भूषन जे कबिराव ॥३२५॥

उदाहरण । मनहरण दंडक ।

[1]दानसमै द्विजदेखि मेरुहू कुबेरहू की सम्पति लुटायबे को हियोललकत है । साहिके सपूत सिव साहिके बदन पर सिव की कथान मैं सनेह झलकत है ॥ भूषन जहान हिन्दुवान के उबारिबे को तुरकान मारिबे को बीर बलकत है। साहिन सेां लरिबे की चरचा चलत आनि सरजाके दृगन उछाह छलकतहै ॥ ३२६ ॥

[2]काहू के कहे सुनेते जाही ओरचाहैं ताही ओर इकटक घरी चारिक चहत[3] हैं । कहे ते कहत बात कहे ते पियत खात भूषन भनत ऊँची साँसन

---

(१) इस कवित्त में दान, दया, तथा युद्ध वीर सभी वरणित हैं और वीररस भी पूर्ण है ।

(२) भयानक रस । (३) देखते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहत हैं ॥ पौढ़े हैं तौ पौढ़े बैठे बैठे खरे खरे हम केा हैं कहा करत येाँ ज्ञान न गहत हैं । साहि के सपूत सिव साहि तव बैर इमि साहि सब रातौ दिन सोचत रहत हैं ॥ ३२७ ॥

उमड़ि कुड़ाल[1] मैं खवास खान आए भनि भूषन त्यों धाए सिवराज पूरेमनके । सुनि मरदाने बाजे हय हिहनाने घोर मूछैं तरराने मुख बीर धीर जनके ॥ एकै कहैं मार मार सम्हरि समर एकै म्लेच्छ गिरे मारबीच बेसम्हार तनके । कुंडन[2] के ऊपर कड़ाके उठैं ठौर ठौर जीरन[3] के ऊपर खड़ाके खड़गन के ॥ ३२८ ॥

आगे आगे तरुन तरायले चलत चले तिनके अमोद[4] मन्द मन्द मोद सकसै । अड़दार बड़े गड़[5] दारन के हाँके सुनि अड़े गैर[6] गैर माहिँ रोस रस अकसै ॥ तुंडनाय सुनि गरजत गुंजरत भौंर भूषन भनत तेऊ महा मद छकसै । कीरति के काज महराज सिवराज सब ऐसे गजराज कबिराजनको बकसै ॥३२९॥

---

(१) इसका पता इतिहास में नहीं चलता । इस नाम के किसी छोटे स्थान पर शिवाजी से खवास खां (छं० २०६ नोट) की फौज़ से कोई लड़ाई हुई होगी ।

(२) लोहे का टोप ।

(३) ज़िरह बख्तर ।

(४) खेल कूद ।

(५) ३१-३४नोट देखिए ।

(६) गैल गैल; राह राह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाविक ।

लक्षण । दोहा ।

भयो, हीन हारो, अरथ बरनत जहँ परतच्छ ।
ताकोभाविक कहत हैं भूषनकबि मतिस्वच्छ ॥३३०॥

उदाहरण । कबित्तमनहरण ।

अजौं भूतनाथ मुण्डमाल लेत हरषत भूतन अहार लेत अजहूँ उछाह है । भूषन भनत अजौं काटे कर बालन के कारे कुंजरन परीकठिन कंराह है ॥ सिंह सिवराज सल[1]हेरि के समीप ऐसो कीन्हो कतलाम दिली दल को सिपाह है । नदी रन मंडल रुहेलन रुधिर अजौं अजौं रबिमंडल रुहेलनकी राहहै ॥३३१॥

गजघटा उमड़ी महा घन घटा सी घोर भूतल सकल मदजल सों पटत है । बेला छाँड़ि उछलत सातौ सिंधु बारि, मनमुदित महेस मग नाचत कढ़त है । भूषन बढ़न भौंसिला भुवाल को यों तेज जेतो सब बारहौ तरनि मैं बढ़त है । सिवाजी खुमान दल दौरत जहान पर आनि तुरकान पर अलैं प्रगटत है ॥ ३३२ ॥

भाविक छबि ।

लक्षण । दोहा ।

जहँदूरि स्थित बस्तु को देखत बरनत कोय ।
भूषन भूषन राज भनि भाविक छबिसो होय ॥३३३॥

---

(१) छं० ८७ नोट देखिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरण । मालती सवैया ।

सूबन साजि पठावत है नित फौज लखे मरहट्टन केरी । औरँग आपनि दुग्ग जमाति बिलोकत तेरियै फौज दरेरी ॥ साहितनै सिव साहि भई भनि भूषन यों तुव धाक घनेरी । रातहु द्योस दिलीस तकैं तुव सैनकि सूरति[1] सूरति[2] घेरी ॥ ३३४ ॥

उदात्त ।

लक्षण । दोहा ।

अति सम्पति बरनन जहां तासों कहत उदात ।
कैं आनै सुलखाइए बड़ी आन की बात ॥३३५ ॥

उदाहरण । कवित्त मनहरण ।

द्वारन मतंग दीसैं आँगन तुरंग हीसैं बन्दी जन बारन[3] असीसैं जसरत हैं । भूषन बखानै जरबाफ के सम्याने ताने झालरन मोतिन के झुंड झलरत हैं ॥ महाराज सिवा के नेवाजे कविराज ऐसे साजि कै समाज तेहि ठौर बिहरत हैं । लाल करैं प्रात तहाँ नील मनि करैं रात याही भाँति सरजा कि चरचा करत हैं ॥ ३३६ ॥

जाहु जनि आगे खता खाहु मति यारो गढ़ नाह के डरन कहैं खान यों बखान कै । भूषन खुमान

(१) शकल
(२) छं० २०० नोट; सूरत नाम का दक्षिण में प्रसिद्ध शहर ।
(३) दरवाजों पर अथवा बार बार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सेा है जेहि पूना माहिँ लाखन मैं सास[1]ता खाँ डारयो बिन मान कै ॥ हिन्दुवान द्रुपदी की ईजति बचैबे काज झपंटि बिराट पुर बाहर प्रमान कै । वहै है सिवा जी जेहि भीम ह्वै अकेले मारयो अफजल कीचक[2] को कीच घमसान कै ॥ ३३७ ॥

पुनः । दोहा ।

या पूना मैं मति टिकौ खान[2] बहादुर आय ।
ह्याँई साइस[3] खान को दीहीं सिवा सजाय ॥ ३३८ ॥

अत्युक्ति

लक्षण । दोहा ।

जहाँ सूरतादिकन की अति अधिकाई होय ।
ताहि कहत अति उक्ति हैं भूषन जे कविलोय ॥ ३३९ ॥

उदाहरण । मनहरण दंडक ।

साहि तनै सिवराज ऐसे देत गजराज जिन्हैं पाय होत कबिराज बे फिकिरि हैं । झूलत झलमलात झूलैं जर बाफन की जकरे जँजीर जेार करत किरिरि

---

(१) शाइस्ता खां । छं ३५ नोट देखिए ।

(२) राजा विराट का साला जिस ने द्रौपदी का सतीत्व भंग करना चाहा था । इसे भीमसेन ने मार डाला था । (महाभारत, विराट पर्व ।)

(३) खान बहादुर नाम का कोई व्यक्ति इतिहास में नहीं मिलता । अवश्यही भूषण जी ने ख़ान जहां बहादुर को इस नाम से लिखा है जिसे औरंगजेब ने १६७२ में दक्षिण का गवर्नर नियत किया था । इस का हाल छं० नं० ८६ में बहलोल वाले नोट में देखिए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं ॥ भूषन भँवर भननात घननात घंट पग झननात मनो घन रहे घिरि हैं । जिन की गरज सुने दिग्गज बे आब होत मदही के आब गड़काब होत गिरि हैं ॥ ३४० ॥

आजु यहि समै महराज सिव राज तुही जग-देव[1] जनक जजाति अम्बरीक सेा । भूषन भनत तेरे दान जल जलधि मैं गुनिन को दारिद गयेा बहि खरीक[2] सेा ॥ चन्द कर किंजलक[3] चाँदनी पराग उड़ बृन्द मकरन्द बुन्द पुंज के सरीक सेा । कुन्द[4] सम कयलास नाक गंग नाल तेरे जस पुंडरीक को अकास चंचरीक सेा ॥ ३४१ ॥

पुनः । दोहा

माहाराज सिव राज के जेते सहज सुभाय ।
औरन को अति उक्ति से भूषन कहत बनाय ॥३४२॥

निरुक्ति

लक्षण । दोहा ।

नामन को निज बुद्धि सेां कहिए अरथ बनाय
ताको कहत निरुक्ति हैं भूषन जे कविराय ॥ ३४३ ॥

---

(१) पंवारों का बड़ा विदित और तेजस्वी राजा ।

(२) खरिका ; दांत खोदने की सींक ।

(३) कमल-फल के चारों ओर जो पीली व सफ़ेद सी कैं ही होती हैं ।

(४) कुन्दी का छोटा सा सफ़ेद फूल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदाहरण । दोहा ।

कबि गन को दारिद द्विरद याही दल्यो प्रमान ।
याते श्री सिवराज को सरजा कहत जहान ॥३४४॥
हरयो रूप इन मदन को याते भो सिव नाम ।
लियो बिरद सरजा सबल अरि गज दलि संग्राम ॥३४५

पुनः । कवित्त मनहरण ।

आजु सिवराज महराज एक तुही सरनागत जनन को दिवैया अभै दान को । फैली महि मंडल बड़ाई चहुँ ओर ताते कहिए कहां लौं ऐसे बड़े परिमान को ? ॥ निपट गँभीर कोऊ लाँघि न सकत बीर जोधन को रन देत जैसे भाऊ[1] खान को । दिल दरियाव क्यों न कहैं कबिराव तोहिं तो मैं बहिरात आनि पानिप जहान को ॥ ३४६ ॥

हेतु

लक्षण । दोहा ।

"या निमित्त यहई भयो" यों जहँ बरनन होय ।
भूषन हेतु बखानहीं कबि कोबिद सब कोय ॥३४७॥

उदाहरण । मन हरण दण्डक ।

दारुन दइत हरनाकुस बिदारिबे को भयो नरसिंह रूप तेज बिकरार है । भूषन भनत त्योंही रावन

---

१ भाऊसिंह के विषय में छन्द नम्बर ३५ का नोट देखिए । इन्हें "भाऊखान" वैसेही कहा गया है जैसे अम्बर (जयपुर) के महाराजा जयसिंह "मिर्ज़ा" कहाते थे । वास्तव में भाऊ खां नामक कोई मुसलमान सरदार न था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मारिबे को रामचन्द्र भयो रघुकुल सरदार है। कंस के कुटिल बल बंसन बिधुंसिबे को भयो यदुराय बसुदेव को कुमार है। पृथी पुरहूत साहि के सपूत सिवराज म्लेच्छन के मारिबे को तेरो अवतार है ॥३४८॥

अनुमान ।

लक्षण—दोहा ।

जहां काज ते हेतु कै जहां हेतु ते काज।
जानि परत, अनुमान तहँ कहि भूषन कबिराज॥३४९॥

उदाहरन । मनहरन दंडक ।

चित्त अनचैन आँसू उमगत नैन देखि बीबी कहैं बैन मियां कहियत काहि नै? । भूषन भनत बूझे आए दरबार ते कँपत बार बार क्यों सम्हार तन नाहि नै? सीनो धक धकत पसीनो आयो देह सब हीनो भयो रूप न चितौत बाएँ दाहिनै। सिवाजी कि संक मानि गए हौ सुखाय तुम्हैं जानियत दक्खिन को सूबा करो साहिनै ॥ ३५० ॥

अंझासी[1] दिन कि भई संझासी सकल दिसि गगन लगन रही गरद छवाय है। चील्ह गीध बायस समूह घोर रोर करैं ठौर ठौर चारों ओर तम मड़राय है॥ भूषन अँदेस देस देस के नरेस गन आपुस मैं कहत यों गरब गँवाय है। बड़ो बड़वा को जित-

१ नाग़ा अर्थात दिन गायब सा हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजविलास ।

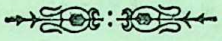

दोहा ।

सेवत सुर नर मुनि सकल, अकल अनूप अपार ।
बिबुध मात बागेश्वरी, दिन दिन सुखदातार ॥ १ ॥
देवी ज्यौं तुम करि दया, कालिदास कवि कीन ।
बरदायिनि त्यौं देहु बर, निर्मल उक्ति नवीन ॥ २ ॥
पइयें बर कविराज पद, लच्छी वंछित लील ।
तुम तुट्ठै जगतारनी, सुमति सँयोग सुसील ॥ ३ ॥
कौन गिनै मरु रेतुकन, को घन बुंद कहंत ।
को तारायन परि कहैं, त्यौं गुन आदि अनंत ॥ ४ ॥
जपियहिं तुम कौं जग जननि, अधिक ग्रंथ आरंभ ।
कवित कथा मंगल करत, दूरि हरन दुख दंभ ॥ ५ ॥
सांप्रत देहु सरस्वती, वानी सरस विलास ।
भारति जग पोषनि भरनि, इच्छित पूरन आस ॥६॥
चित्रकोट पति राज चिर, राज सिंह महारान ।
सूर्य वंश वर सहस कर, षल षंडन षूंमान ॥ ७ ॥
गावत जसु जस छंद गुन, पावत सुख भरपूर ।
सुपसायें तुम सारदा, दुरित प्रनासहिं दूर ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीणा पुस्तक कर प्रबर, बाहन बिमल मराल ।
सेत बसन भूषन सजै, रीझी देत रसाल ॥ ८ ॥

कवित्त ।

रीझी देत रसाल रंग रस में सुररानी । गुनवंती गय गमनि बाग देवी ब्रह्मानी ॥ निशपति मुख मृग नयनि कांति कोटिक दिनकर कर । सचराचर संचरनि अगम आगम अपरंपर ॥ भय हरनि भगत जन भगवती बचन सुधारस बरसती । राजेश राण गुण संवरत सुप्रसन्न हौ सरस्वती ॥ १० ॥

गीतामालती ।

सुप्रसन्न सरसुति मात सुमिरत कोटि मंगल कारनी । भारती सुभर भँडार भरनी विकट संकट वारनी ॥ देवी अबोधहिँ बोध दायक सुमति श्रुत संचारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ ११ ॥

आई निरंतर हसित आननि महि सुमाननि मोहनी । संकरी सकल सिँगार सज्जित रुद्र रिपुदल रोहनी ॥ वपु कनक कांति कुमारि विधिजा अजर तूंही जारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १२ ॥

पयतल प्रबाल किलाल पल्लव दुति महावर दीपए । अंगुली नष दह विमल उज्जल जोति तारक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जीपए ॥ अनवट अनोपम बीछिया अति धुनि मनोहर धारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १३ ॥

झमकंति झंझरि नाद रुण झुण पाय पायल पहिरना । कमनीय क्षुद्रावली किंकिनि अवर पय आभूषना ॥ कलधौत कूरम समय मन क्रम पाप पीड़ प्रहारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १४ ॥

कदली सुखंभ अधो कि करिकर जंघ जुग बर जानिये । शुचि शुभग सार नितंब प्रस्थल बाघ कटि बाषानिये ॥ वापिका नाभि गँभीर सुवणित महा रिपु दल मारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १५ ॥

चरनालि कटि तट लाल चरना पवर अरु पट कूलयं । मेषला कंचन रतन मंडित देव दूष दुकूलयं ॥ दीपती दुति जनु भानु द्वादस अघ तिमर अपहारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १६ ॥

तिमि तुल्ल कुखिस मध्य तिवलिय उरज उभय अनोपमां । किधों नालिकेर कि कनक कुंभ सुकुंभि-कुंभ सुऊपमां ॥ कंचुकी जरकस कसिय कोमल आदि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अमियअहारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १७ ॥

भुज दंड लंब बिशाल श्रीभर कनक भूरि सुकंकनां । पेंचीय गजरा बहिरषा प्रिय बाहुबंध सुबंधना ॥ महिंदीय रंगहिं पानि मंडित बेलि सोभव धारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १८ ॥

करसाष कमनिय रूप कोमल मुद्रिका बर मंडनं । उपमान मूंगफली सु उत्तम अरुन नषर अषंडनं ॥ पुस्तकरु वीन सुपानि पल्लव बेदराग बिथारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ १९ ॥

कहियै निगोदर हार कंठहि मुत्ति माल मनोहरं । मग्रतूल गुन चौकी कनक मनि चारु चंपकली उरं ॥ तपनीय हंसरु पोति तिलरी कंठश्री सुख कारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥२०॥

बिधु सकल कल संजुत्त बदनी चिबुक गाड़ सुचाहियै । बिद्रुम कि बंधूजीव वर्णो सहज अधर सराहियै ॥ दुति दसन बीज सुपक्व दारिम भेष जन मन हारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ २१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसना सुरंती अवति नव रस तालु मृदु तर तासयं। सतपत्र पुष्प समान सुरभित अधिक बदन उसासयं॥ कलकंठ बचन विलास कुहकति अगम निगम उछारनी। अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जयजगतारनी॥ २२॥

शुकराय चंचु कि भुवनमनिशिष नासिका बर निरखियै। कलधौत नथ मधि लाल मुत्तिय ऊपमा आकरषियै॥ मनु राज दर गुरू शुक्र मंगल सोह बर संभारनी। अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ २३॥

अरबिंद पुष्प कि मीन अक्ष सु प्रचल षंजन पेषियं। सारंग शिशु दृग सरिस सुंदर रेह अंजन रेषियं॥ संभूत्त जुग जनु सुधा संपुट विश्व सकल विहारनी। अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ २४॥

मनु कनक संपुट सुघट मंजुल पिशित पुष्ट कपोल दो। दीपंत श्रुत जनु दोइ रवि ससि लसत कुंडल लोल दो॥ इन हेत अति उद्योत आनन विघन सघन विडारनी। अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी॥ २५॥

कोदंड आकृति भृकुटि कुटिलिति मानु भमहिं सुमधुकरं। लहि कमल कुसुम सुवास लोयन स्त्रैर सं-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ठिय वपु सरं ॥ किं अवर उपमा कहय लघु कवि शत्रु जय संहारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ २६ ॥

सुविशाल भाल कि अष्टमी ससि चरचि केसरि चंदना । बिंदुली लाल सिँदूर सुवणित वर्ण पुष्प सुवंदना ॥ अनि तिलक जटित जराउ ऊपित सकल काम सुधारनी । अद्भुत अनूपमराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ २७ ॥

शिर भाल संधि सुसीसफूलह सहसकिरन समानयं । राषडी निरषत चित्त रंजति वेणि व्याल बषानयं ॥ मोतिन सुमांग जवादि मंडित अधम लोक उधारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनिजयतिजयजगतारनी ॥२८॥

अंशुक कि इंदु मयूष उज्जल झीन अति दुतिझलमलं । सुरवरहिं निर्म्मित सरस सुर नित परम पावन पेसलं ॥ मन रंग ऊढ़ति महामाई विपति कंद विदारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ २८ ॥

चंबेलि जूही जाइ चंपक कुंद करणी केवरा । मचकुंद मालति दवन मुग्गर चारु कंठहिं चौसरा ॥ तंबोल मुख महकंत त्रिपुरा ब्रह्मरूप विचारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनिजयतिजयजगतारनी ॥ ३० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अज अजर अमर अपार अवगत अग अषंड अनंतयं । ईश्वरी आदि अनादि अव्यय अति अनोप अचिंतयं ॥ कर जोरि कहि कवि मान किंकर अरजतं अवधारनी । अद्भुत अनूप मराल आसनि जयति जय जगतारनी ॥ ३१ ॥

कवित्त ।

जय जय जगतारनी सारदा सुमति समप्पन । कुमति कु कवित कुभास कठिन कलिमल दुखकप्पन ॥ अकल अनोपम अंग मात पूरन चिंतित मन । सदा तास सुमिरंत धवल मंगल लहियै धन ॥ श्रीराजसिंह राना सबल महिपतियां शिरमुकटमनि । गावंत तास गुण बंद गुरु धणियांणी दिज्जै सुधुनि ॥ ३२ ॥

दोहा ।

धणियांणी दीजै सु धुनि, सरसी वांणि सुशाल ।
चित्रकोट पति जस चऊँ, रचि रचि छंद रसाल ॥३३॥
इन परि सुनि कवि कृत अरज, मात होइ सनमुक्ख ।
बोली यों अमृत बचन, सकल समर्पन सुक्ख ॥ ३४ ॥
गावहु गावहु सुकवि गुन, ठिक करि मन इक ठांउँ ।
राज राण जस छंद रचि, हों तुम्ह पूरौ हाँउँ ॥३५॥
सुवर दयौ श्री सरस्वती, आई अभिमुख आइ ।
शीश चढ़ाय लयौ सुकवि, प्रत मिसु त्रिकरनपाइ॥३६॥
उद्यम ग्रन्थह काज अब, दिवस महाभल देखि ।
कीनौ आलसि दूरि करि, लाभ अनंत सुलेखि ॥ ३७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ।

सुभ संवत दस सात बरस चौंतीस बधाई । उत्तम मास अषाढ़ दिवस सत्तमि सुखदाई ॥ बिमल पाख बुधवार सिद्धि बर जोग संपतौ । हरषकार रिषि हस्त रासि कन्या ससि रत्तौ ॥ तिन द्यौस मात त्रिपुरा सुतवि कीनौ ग्रंथ मंडानकवि । श्रीराजसिंह महाराण कौ रचि यहिं जस जौं चंद रवि ॥ ३८ ॥

अति पावस उल्हरिय करिय कण्ठल धुरकाली । आसा बंधि असाढ़ हरष करसणि कर हाली ॥ बद्दल-दल वित्थुरिय चारु चपला चमकंतह । गज्जघोष गम्भीर मोर गिरि सोर मचंतह ॥ आदीत सोम छवि आवरिय घण आयौ घमसाण घण । बरसंत बुंद बड़ बड़ बिमल जलधर वल्लभ जगत जण ॥ ३९ ॥

पद्धरी ।

आसाढ़ मास आयो अनूप, रचि उत्तर कंठल श्यामरूप । बद्दल चढंत बज्जत सुवाइ, उल्हरिय सुपावस समय आइ ॥ ४० ॥

चहुँओर जोर चपला चमक्क, झल हलत तेज रवि सम झमक्क । घुरहरत घोर घण गुहिर घोष, पावंत सुनिव संसार पोष ॥ ४१ ॥

केकी करंत गिरवर किंगार, सजि पंष छत्र नाचंत सार । महि मिलिय सयल सिरि मेघ माल, बरसंत बुंद बड़ बड़ विशाल ॥ ४२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल बहत जोर षलहलत खाल, पयधार पतत दगगग प्रनाल । पप्पीह चीह पिउ पिउ पुकार, भूरूह विहस्सि अट्टार भार ॥ ४३ ॥

धोवंत सिहरि घन धवलधार, पुहवी सुकीन जल थ़ल प्रचार ॥ नीलांणी धर वरसंत नीर, चितरंग आनि मनु पहरी चीर ॥ ४४ ॥

महियल सुरंग उपजे ममोल, अति अरुन अंग कोमल अमोल ॥ बगपंति श्याम बद्दल बिहार, हिय मध्य पहरि मनु मुत्ति हार ॥ ४५ ॥

सब हलकि चली सलिता सँपूर, बज्जंत बारि लग्गत विधूर । उछलंत छोल ऊघल अपार, पथ थकित पथिक को लहय पार ॥ ४६ ॥

निय्यमिक बलन न लगंत नाव, तट उपट बहत अति जोर ताव । भोंरह परंत लागंत भीर, तरुवर उषारिलैं चलिय तीर ॥ ४७ ॥

निरषंत नीर नीरधिन माय, छवि चंद सूर राषी सुछाय। हलहलत भरित सरवर हिलोर, रव समझि परंत न भेक रोर ॥ ४८ ॥

डहडहत हरित डंबर डहक्क, कोकिल करंत उपवन कुहक्क । मालती कुन्द केतकी मूल, फूले सुवृक्ष चंपक सफूल ॥ ४९ ॥

गिरि भेदि शृङ्ग किय गलम गात, निष्तरण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

झरत झरहरनि घात । गहराय पत्त गहबर गहक्क, मधुकर सुगुंज तरुवर महक्क ॥ ५० ॥

टपकंत बुन्द तरु पव्व डाल, मंडव सुकीन द्रुम वल्लि माल । बग टग लगाय पावस बइट्ठ, दारा सु बकी पतिव्रता दिट्ठ ॥ ५२ ॥

झुकि विटपि सजल मारुत झकोर, घन उमड़ि घुमड़ि बरसंत घोर । चतुरंग चंग रचि इंद्र चाप, बिरहनि करंत विह्वल विलाप ॥ ५२ ॥

यामिनी तमस अति च्यारि याम, करि कोप काय बाधंत काम । धनवंत लोक निज धवल धाम, बरसंत मेघ विलसंत वाम ॥ ५३ ॥

जगमगति निशा षद्योत जोति । हच्छे सुहच्छ-नन मुद्धि होति । पर मुग्ध लब्ध पंथक प्रमोद, वेताल करत बन घन विनोद ॥ ५४ ॥

झर मंडि इंद तम रह्यो झुक्कि, धाराधर पर वद्दल सु धुक्कि । हुंकार नाद बन सिंह हुक्कि, ढूढंत भक्ष निशिचार दुक्कि ॥ ५५ ॥

बोलंत झिल्लि इक सांस बैन, मानिनि वियोग मन मथत मैन । दीसंत मग्ग दानिनि दमक्क, चितचोर मष्त उपजे चमक्क ॥ ५६ ॥

सारंग करत गायन सुजान, रीझंत जेह सुनि राय राण । मल्हार घटत माचंत मेह, नर नारि चित्त बाधंत नेह ॥ ५७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संवत सु सत्त दह सतक सार, बच्छर चौतीशम धरि विचार। सब लोक उंक निज २ सचेंन, आसाढ़ सेत सत्तमी अेंन॥ ५८॥

देवी सु आइ बरदान दीन, कवि मान ग्रंथ आरंभ कीन। चीतौर धनी कहियै चरित्र, पढि छंद बिबिधि रचि जस पवित्र॥ ५९॥

सब हिंदवान कुल रवि समान, राजंत राज श्री राजराण। इक लिंग रूप मेवार ईश, याचक जन मन पूरन जगीश॥ ६०॥

लहियैं जु नाम तस लच्छि लील। संपजै संग सज्जन सुशील॥ दारिद्र दुख नासंत दूरि। व्है रिद्धि सिद्धि संपति हजूरि॥ ६१॥

दोहा।

देश देश फिरि देखते, अति उत्तम षिति आज।
धर्म्म देश मेवार धर, सब देसां सिरताज॥ ६२॥
जिण घर हरि घर देश जिंहि, ग्राम ग्राम प्रति ग्राम।
असुरायन धरनी अवर, रटैं नहीं जहं राम॥ ६३॥
दरसन षट जे देषियै, पंडित पढ़त पुरान।
बेद च्यारि जह बांचिये, तेज नहीं तुरकान॥६४॥
सकल जहां पूजै मुरित, नव देवल निपजंत।
नह अन्याय इक निमिष को, भाषा भल भाषंत ६५॥
गाम नगर पुर कोट गढ़, बसैं बहुत सुषवास।
सुन्दर नर नारी सकल, वित्तवंत वर वास॥६६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पग पग जल जहं पाइयै, नदी तलाब निवान ।
सालि गोधुमा सेलड़ी, सर्प्पष सुरभि सुषान ॥६७॥
मौठ मसूर माषा मुदग, जौ बहु चना रुहार ।
धान नीपजै जिहिं धरा, अमित अमाप अपार ६८॥

कवित्त ।

हद्द न्याय हिँदवान राण श्री राज सुराजहिं ।
पिशुन चोर पिल्लियहि न्याय करि साधु निवाजहिं ॥
वसै सकल सुषवास गाम पुर नगर कोट गढ़ । सुन्दर
रूप सुजान सधन नर नारि सुकृत दृढ़ ॥ तीरथ
तलाव तटनी तहां निशि वासर निरभय निगम ॥ सब
देश देश देखे सु परि देश न को मेवार सम ॥ ६९ ॥

हनूफाल ।

मालउ मरु मेवात, मुलतान मरहठ मात ।
महि मगध मध्य मडाण, ठिक करिग पेषी ठाण ॥७०॥
अैराक अारब अच्छ, कहि अंग बंगरु जच्छ ।
कर्णाट पुनि कंबोज, चषु दीठ चित करि चोज ॥७१॥
कासीरु दीठ कलिंग, बैराट बब्बर संग । कुरु
कासमीर कहाय, देखंत नांव हि दाय ॥ ७२ ॥
कौसलरु कौंकण किद्ध, दिल कांवरू दिशि दिद्ध ।
धायौ धंधेरा धाट, लिषि लये लाडरु लाट ॥ ७३ ॥
रहि दीठ हबसी रूम, भिलवारि भोट सु भूम ।
षंधार षग षुरसाण, गंधार नैं गुँडवाण ॥ ७४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ि गौर गंगापार, धर भिन्न माल सुधार ।
देष्यौ यु गुज्जर देश, लच्छिन न जहँ शुभ लेश ॥७५॥

विचरंति झालावारि, धावंत काठी धारि ।
छप्पनरु बागरि छेह, अटि देषि देश अछेह ॥ ७६ ॥

निज निरखि नागर चाल, नर अश्व मुख नेपाल ।
पंजाब पहु पंचाल, बसुधा बिदेह बँगाल ॥ ७७ ॥

पुनि फिरयौ देश फिरंग, रुचि न किय जहं मन रंग । सोधयौ सिंधु सुबीर, नर नारि मुष नहिं नीर ॥ ७८ ॥

सोरठ सिंघल साज, रमि रह्यौ धरतिय राज ।
दक्षिन विदरभिन देश, भल रूप भूसन भेश ॥७९॥

दूग द्रविड़ देश युदिट्ठ, चबि चविड लोक सुचिट्ठ । रोहिल्ल गरवर राह, उत्तर दिशा अवगाह ॥८०॥

बसुमती देश विदेश, तरि रही नव नव तेश ।
कहिं देश अति गुरु कान, जहं सोइ अंशुक जान ८१॥

कहिं अश्वमुख नरकाय, कहिं एकजंघ कहाय ।
कहिं त्रिया राज करंत, कहुं श्वेत काक कहंत ॥ ८२ ॥

कहुं लंब कुच तिय किद्ध, पुहवी अनादि प्रसिद्ध ।
कहुं जनत कामिनि जात, तब पवन राखत तात ८३॥

षिति कहूं जल अति खार, कहिं देश जल दुख कार । कहुं कुहुर नीर कढंत, ढिग ढोल तहं ढमकंत ॥ ८४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहिं धरा पुरुष कुरूप, सुन्दरी सकल सरूप ।
लव नही किहिं कण लूंण, गोबहत किहिं धर गोंण ८५॥

इत्यादि देश अनेक, अति अधभ नर अविवेक ।
समझें न धर्म्म सुसार, गरथल अग्यान गमार ॥८६॥

सब देश में सिर दार, उत्तम जहां आचार ।
महिमेद पाट समान, पुहवी न कोइ प्रधान ॥ ८७ ॥

धर लोक जहं धनवंत, वाणी सु मिठ्ठ बदंत ।
धारंत निज२ धर्म्म, सुन्दराकार सु सर्म्म ॥ ८८ ॥

अति दत्त चित्त उदार, आदरैं पर उपकार ।
लेवा सुलच्छी लाह, सौभाग धारक साह ॥ ८९ ॥

जह हिंदुपति जयवंत, कवि मान राज करंत ।
श्रीराज सिंघ सुरांण, बिरुदैत बड़ बाषाण ॥ ९० ॥

दोहा ।

मेद पाट महि मंडणह, चित्रकोट गढ़ चारु ।
मानौ मुग्धा माननी, हिय मानिक कौ हार ॥९१॥

अति उतंग अंबर अचल, अकल अभेद अभीत ।
चित्रकोट पर चक्रतें, आदि अनादि अजीत ॥९२॥

तुंग विशाल त्रिकोट तहं, कोशीशावलि कंत ।
मौढ़ पौरि दुर्घट सुपथ, बज्र कपाट वणंत ॥९३॥

कवित्त ।

गुरु चौरासी गढनि महीं मेवार सुमंडन । अकल अभेद अभीत विषम पर चक्र बिहंडन ॥ तुंग विशाल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिकोट थिरिसु कोशीशा थाटह। पौरि बुरज गुरु प्रबल कठिन अग्गला कपाटह॥ बहु कुण्ड बापि सर जल विमल बिबुधालय बसुधा बदित। देषे यु दुर्ग सब देश के चित्रकोट मेा बसिय चित॥ ८४॥

दंडमाली।

गढ चित्रकोट सु गाईयें, बसु सुजसु पटह बजाईयें। कुन्ती बहू गढ कोटयं, जग नहीं कोइ ने जोटयं॥ ८५॥

उत्तंग गिर सम अंबरा, दिशि च्यारि दुर्गा डंबरा। सकुनी न जहं संचारयं, पहुँचैं न जहं पद धारयं॥ ८६॥

प्राकार तीन प्रचंड है, मनु अमर आइसु मंड है। सु विशाल गज सँग बीस के, उत्तंग गज इकतीश के॥८७॥

कोशीश पंकति कंतए, पटि मोरछा सम पंतए। जहँ नारि गुरु गंबूरयं, छुट्टंत रिपु दल चूरयं॥ ८८॥

गुरु बुरज गिरि सम गातए, बर पौरि सत्त विष्यातए। भारी कपाट सुभग्गला, अति गाढ शृंषल अग्गला॥ ८९॥

कहिं परधि द्वादस कोश की, अनभंग अंग अदेास की। दल देव निर्म्मित दुर्गए, अरि दलन गर्व्व अलग्गए॥ १००॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तरहटी तीर तरंगिनी, गंभीर गंग सु संगनी।
गढ़ सज्जियै चतुरंगनी, आवै न कहि आसंगनी ॥ १ ॥

गढ़ मध्य बहु गंभीर है, सर कुण्ड बापि सनीर है। निरषे सु सर्व्व निवांन जू, यहु असिय च्यारि प्रमान जू ॥ २ ॥

मुख भीमकुण्ड सुमानियै, जसु तीर गोमुख जानियै। पयधार पतत प्रबाहनी, अवलोकतें उच्छाहनी ॥ ३ ॥

उठि प्रात तच्छ अन्हाईये, गुरु रोग सोग गमाइयै। अति एह तीरथ उत्तमं, सुप्रसंसितं पुरुसोत्तमं ॥ ४ ॥

महि चित्रकोट सु मंडनी, दुग्गायु आसुर दंडनी। प्राधानता प्रासादयं, बोलंत नभ सों बादयं ॥ ५ ॥

कल कीर थंभ सुकोरनी, नर नारि नेन निहोरनी। नभ लोक मिलि नव षंडयं, बल चक्रतिन चढ़ि षंडयं ॥ ६ ॥

मेवार धर सम मेदनी, नन अवर चित्त उमेदनी। महि चित्र कोट समानयं, गढ़ कोन आवहिं गानयं ॥ ७ ॥

रिनथंभ मंडव रेवतं, सुर असुर किंनर सेवतं। आबू सुगढ आसेरयं, अवगाढ़ गढ़ अजमेरयं ॥ ८ ॥

ग्वालेर अलवर गज्जना, विक्रमरु बंधुर वज्जना। गूगौर नर वर गाहियै, शिव साहि गढ साराहियैं ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंडोवरा मैदानयं, गढ गागरोनि गुमानयं ।
दौलताबाद सुदेषयौ, पुहवी सु पूना पेषयौ ॥ १० ॥
हिंसारगढ़ हरणौरयं, सोवर्ण गिरि सच्चौरयं ।
गढ देव ईडर गौरवं, बैराट बंधू बौरवं ॥ ११ ॥
कहि कंगुरा कल्यानियं, ठिल्ला पहार सु ठानियं ।
सुनियै शिवाना सारका, महि मध्य मंडल मारका १२॥
तारागनं त्रिकुटा चलं, नाशक्य त्र्यंबक कुंडलं ।
येां कोट दुर्ग अनेकयं, बाषानियें सु विवेकयं ॥ १३ ॥
इन चित्रकोट सु उप्पमं, इल दुर्ग्गकोन अनोपमं ।
इन ओर कोटहिं अंतरं, पति नृत्य जानि पटंतरं ॥१४॥
इन मंड आदि न आवही, पर्य्यन्त पार न पावही । इह देव अंसी अखियें, पढ़ि मांन बोल परखियें ॥ १५ ॥

दोहा ।

चित्रकोट चित्रांगदे, भोरी कुल महिपाल ।
गढ़ मंड्यौ अवलोकि गिरि, देवंसीदा ढाल ॥ १६ ॥
संगहि लिय सीसौदीयै, दुर्ग्ग एह रिषि दान ।
बापा रावर बीरबर, बसुमति जास बखान ॥ १७ ॥
पाट अचल मेवाड़ पति, रघुबंसी राजान ।
बापा रावर बड़ बखत, थिरि चीतौर सुथान ॥१८॥
जढ़ौ क्यौं रिषि राय तिहिं, तसु को जननी तात ।
गह्यौ तिनहिं किन भंति गढ़, बापा बड़ विष्यात॥१९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेा प्रबंध रचियै सरस, रंजन मन महरान ।
उत्तम नृप गुन अंषते, कमला किनि कल्यान ॥२०॥

कवित्त ।

चित्रकोट गढ़ चारु, मंडि चित्रांगद मेारिय ।
रघू करत तहँ राज, ढाहि अरिजन ढंढेारिय ॥ तीन लष्य तेाषार सहस त्रय मद झर सिंधुर । सहसु रत्थ भर शस्त्र प्रबल पायक अपरंपर ॥ घन सेन जानि पावस सु घन जय करि रण रिपु जग्गवै । अति तेज देश दश अट्ठ सें, भू मेवारहि भुग्गवै ॥२१॥

मेद पाट मालवौ सिंधु सेाबीर सवा लख ।
सेारठ गुज्जर सकल कच्छ कांबेाज गौड़ रुष ॥ बावन धर बैराट ढुंढि बागरि ढुंढारह । नरवर नागर चाल खग्ग छप्पन वैरारह ॥ देखिए देश ए अठ्ठदश चित्रांगद मेारी सुचिर । मह चित्रकोट तिन मंडयौ थप्यौ नाम निज अवनि थिरि ॥ २२ ॥

दोहा ।

चित्रांगद तें सत्तमें, पाटें नृप चित्रंगि ।
राज करै चीतौरिधर, षल दल षग्ग निषंगि ॥२३॥

अथ बापा रावल उत्पत्ति । कवित ।

पच्छिम दिशा प्रसिद्ध देश सेारठ धर दीपत ।
नगर बल्लिका नाथ जंग करि आसुर जीपत ॥ राजत श्रीरघुबंश पाट रघुनाथ परंपर । गृहादित्य नृप गरुअ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरा रक्षिपाल धर्म्म धुर ॥ हय गय सुयान पायक हसम अंते डर परिवार अति । नन नंदन तेहि नरिंद नैं गाढ़ी पूरब कर्म्म गति ॥ २४ ॥

सकल देव देवंत क्षितिय पूजंत दरस षट । देत नवग्रह दान हच्छि हय हेम हीर पट ॥ तीरथ ते षज तंत्र करत इक अंग जकद्रह । आरतिवंत अंतीव रचै नहि चित्त सुरद्रह ॥ सोवंत इक्क निशि सुष सयन पत्त सुपन पच्छिम पुहर । शशि भाल शीश गंगा सरित उद्यल वृष आसन सु हर ॥ २५ ॥

भनहि ईश सुनि भूप राज रघुवंशी राजन । सुत व्हैहैं तुअ सकल सबल जसु बषत सु साजन ॥ परि तसु आनन पदम नयन निज तुम न निरक्खहु । लहियै जो कछु लेख रंच आरति जिन रक्खहु ॥ नारी सुनंद काकें निलय राज रिद्धि तनु इत रहय । निज कृत बसत्य चल्लें नृपति काम दहन सच्चौ कहय ॥२६॥

दोहा ।

निरखि सुपन जग्ग्यौ नृपति, ईश बचन उर धारि ।
आन्यौ चित संतोष अति, आरति सब अपहारि २७॥
काहू सें ही सुपन कथ, नकही आप नरिंद ।
दिन दिन धन घन दिद्दियें, आहर अति आनंद२८॥
मेद पाट महिमंडलें, नागद्रहापुर नाम ।
सोलंषी संग्राम सी, धनवति सुता सुधाम ॥ २९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरखि वल्हिका नाथ निज, दिय पुत्री वरदान ।
राजन बरि आये रमनि, सुन्दर सची समान ॥३०॥
सोलंषिनी सु लच्छिनी, राजन सरिस रमंत ।
अन्य वरस के अंतरे, गरभ र्‌यौ गुनवंत ॥ ३१ ॥
गरभ बालही पितृ गृह, आई अति उच्छाह ।
पेम मिली माता पिता, बन्धु कनिष्ट सु व्याह ३२॥
बंधव बरि आयौ सुबधु, रति सम सुन्दर रंग ।
धाम आपकै धनवती, चलन कियेा चित चंग ॥३३॥
मात पिता बंधुनि मिली, यहै कीन अरदास ।
रहौ सुबाई रंग रस, चतुरंगौ चौमास ॥ ३४ ॥
मात पिता बच मानिकैं, पावस बरजि पयान ।
रही तहां राजन रवनि, औसर आवनि जानि ॥३५॥

कवित्त ।

गृहादित्य नृप गरुअ भौम भारथ रिपु भंजन ।
काल राति किय काल गाढ़ गिरिवर गय गंजन ॥
हुअ हा हा रव हूक कहर नृप त्रिय सत किन्नौ ।
संसकार करि स्नान दान जल अंजलि दिन्नौ ॥ संथप्पि
सुता सुत रद्र सिरि नव नरपति परधान नव । ऐऐ
सुपुतृ विनु अच्छिइल बीयौ आई भुंजै विभव ३६॥
सुनिय बत्त संग्राम सीह परिवार समेतह ।
धसकि परी धनवती अवनि मुरझाइ अचेतह ॥ सखि-
यनि करी सचेत धवल उट्ठी धीरज धरि । सती संग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संगह्यौ पिता वरजंत विविहि परि ॥ निज उअर फारि काढ्यौ गरत पावक पिंड पइट्ठयौ। धन धन्य कहै सुर धनवती पति सम प्रान परट्ठयौ ॥ ३७ ॥

कामुकी बांताणं।

अट्ठ मासं सुयं नंषि आधानयं, परठियं सांइ सच्छें तिनें प्रानयं। अमर बानी बदे धन्य आवासयं, बरसए मेह ज्यौं पुष्प बरवासयं ॥ ३८ ॥

सगति जेा कीजियै तेह केही सती। धन्य कहि यैति के होइ ज्येां धनवती॥ आपणां उभय कुल जेण अजुवालयं। धाइ राषी घणुं दूध धवरा वियं ॥ बांधए हच्छ हत्थेण सेा बालयं। सुन्दराकार तनु गेारष कुमालयं ॥ ४० ॥

पंच धाएण सेा आप पेासिद्यए। चित्त चाहंत ते दिंत तसु चिद्यए॥ मद्यरण न्हांण आभूषणैं मंडियं। सुभग सुचि अंशुकं अंग सेालंकियं ॥ ४१ ॥

चंद सिय पष बरजेम नित कल चढ। वियौ मासै जितौ एह दिवसें बढै ॥ सेाम सम बयण जिम लच्छि संतानयं। बेालियै अधिक किं तास बाषाणयं ४२॥

नाम वापौ ठव्यौ बज्जि नीसानयं। दिच्छए हेम हय ईहकं दानयं ॥ निरषि नाना तणौ चित्त अति नेहयं। मेार मनि जिमि बसै सजल दल मेाहयं ॥४३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दस बरस तिहिं अति क्रम्या अनुक्रमै । साहसै धीर वर बीर जोवन समै ॥ बनहि क्रीड़ा तणौ विसन तिहिं नर वरू । पंच सय सच्छ बालेण संपर वरू ॥ ४४ ॥

एक दिन एक जोगिंद अवलोकियौ । सिद्ध हारीत गिरि कंदरा संठियौ ॥ थिर तिहां रुद्र इकलिंग नौ थानयं ॥ प्रणमिया उभय योगिंद प्राधानयं ॥४५॥

पुष्प फलं करिय रिषिराय तब पूजियौ । मिठ बयणें कहै अघ धनी मोजियौ ॥ देव तुम दरसणै दूरि नठौ दुषं । सकल संपत्ति मिलि अद्य सु हुवै सुखं ४६॥

सेव दो जांम लग तांम तिण साचवी । नयण वयणे मिल्यां प्रीति बांधी नवी ॥ चरण रिषि वर तणे अधिक रंज्यौ चितं । हद्द लग्गो सु योगिंद बापै हितं ॥ ४७ ॥

मंगि आदेश आयो तदा मंदिरै । सयन किद्धा निशा चित मुनि संभरै ॥ जो हुवे प्रात तो पास तस जाइये । षीर ने षंड घृत तास षवराइये ॥ ४८ ॥

प्रात हूवां पचावै परमान्नयं । मंडकं सरस घृत षंड मिष्टान्नयं ॥ ऊजलै अंवरै तेह आछादिय । करषि कोदंड कर शिलिमुषं संधियं ॥ ४९ ॥

क्रमि क्रमैं पत्त सो तच्छ गिरि कंदरा । बाघ बाराह निवसे तहां बंदरा ॥ पाय बंधन करी दिद्ध परसादयं । सिद्ध बर किद्ध आहार सुस्वादयं ॥ ५० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इण परे सरस भोजन सदा आणए । युक्ति योगिंदनी भक्ति भल जाणए ॥ मास षट बोलि या रीझियो सो मुनी । धन्य तूं बालका एम बोलै धुनी ॥ ५१ ॥

अब हमं गमन मन प्रात बड़ आवनां । सोंपि के रद्यतो पछ सिद्धावना ॥ पूरियो अंग तस अधिक उत्तक पणों । आव ए तहति कहि मंदिरै आपणों ५२॥

राति बोली हुई पुब्ब दिशि रत्तड़ी । बेगि आवै जितै भूप सू बद्दडी ॥ तितै हारीत रिषि गगन गति हल्लियो । बोल बापै तदा आइ इम बुल्लियौ ॥ ५३ ॥

अहो जोगिंद करि उच्चर्यो आपणौ । थिर थई नाथ जी रद्य सिरि थापणे ॥ रवनि सुनि देव मुनि अप्प ऊभौ रह्यो । किज्जिये भूप तुहि मंडि मुख यों कह्यो ॥ ५४ ॥

मंडियो मुख तिणै स्वमुख तंबोलयं । नंषियो हेत करि पीक निर्मोलयं ॥ देषि उच्छिष्ट निज वयण टाली दियं । लिहिय रिषि मुष तणो पाय झल्लै लियं ॥ ५५ ॥

कहय रिषि राम तें बाल कीद्धो किसौ । अमर हुइ देह नित एह हूं तो इसौ ॥ नेट तो पायथी राज जायै नहीं । किद्ध तू भूप में एह वाचा कही ॥ ५६ ॥

अप्पि बर एम योगिंद वर अतिक्रम्यो । राग धरि तिच्छ अडसठि फरसण रम्यौ ॥ सदन संपत्त

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बापो हुवां संभए । माल्ह तो हंस गति मोद मन संभए ॥ ५७ ॥

सत्त दिन बोलियां नंतरे यह समैं । रंग रस वनह क्रीड़ा तणी वनि रमै ॥ चेत सुदि तीज नो दीह सौ चारुयं । सकल सुह बत्तिया करिय सिंगारुहं ॥५८॥

नगर नागद्रहा हूंत ते नीसरी । केलि करि वा चली बनहि हरषें करी ॥ गाव ए नवनवी भास करि गीतयं । रिष्भ ए मान कवि रसिक तिहि रीतयं॥५९॥

दोहा ।

जाति जाति निज झुंड जुत, बाला करत विनोद।
रास देइ निज रंग मैं, पति वति सकल प्रमोद६०॥
अकस्मात तब सिंह इक, केप कियें महकाय ।
उतरिसु हरि आकाश तैं, अबलनि मध्य सु आय ॥६१॥
बिफुर्‌यौ सेा बहु बाउ ज्यौं, बबकि बिलूरैं बाल ।
कै भग्गी भय भीति कै, बनिता केक बिहाल ॥६२॥
सूर वीर देखे सकल, हल्लि कि नहि नह नाइ ।
सिंह मग्ग संगहि रह्यौ, बाला अति बिललाय॥६३॥

कबित्त ।

सुनि बापा नृप सेार अबल गन मध्य सु आवहिं । चापर धनुष चढ़ाय सहज टंकार सुनावहिं ॥ उहि छिन सिंह अदिट्ठ होत सब बाला हरषिय । अवर पुरुष सु प्रधान नयन धरि नेहा निरषिय ॥ मनु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामदेव अवतार मिनि कितनिक इक्क सुमंत करि ।
बरमाल घल्लि गर तब बर्‌यौ इक सत अत उत्तम
कुँवरि ॥ ६४ ॥

दोहा ।

पानि ग्रहन कीनौ नृपति, इक सेा सुंदरि अत्त ।
तरु मंडप सहकार तन, मंजरि मेार सुमित्त ॥६५॥
सहज सिंगारत सुन्दरी, बिबिधि सहज बादित्त ।
गीत सु सहजें गावही, ए ऐ अद्‌भुत चित्र ॥ ६६ ॥
पुत्री परनित सुन पिता, सकल तच्छ संपत्ति ।
कर छेाड़ावनि हरष करि, बहु विधि आप्पिय बित्त
करी सुकरहा बहु कनक, हीरा मौक्तिक हार ।
पंच वर्ण जरवाफ पट, आए सधन अपार ॥ ६८ ॥
हय दस किन किन वीस हय, दीन दायजै दान ।
साकति स्वर्ण पालन सब, गिनत सहस त्रय गान ६८
दासी किन इक किन सु दुइ सब विधि जांन सुजान ।
पुत्री प्रति दीनी पिता, सकल अधिक सनमान ७०॥

छन्द विराज ।

बरी सर्ब्ब बाला, रमा ज्येां रसाला ।
मनी सुत्ति माला, लही लाष लाला ॥ ७१ ॥
दुरंमा दुसाला, हयं हिंस वाला ।
सरूवं सिघाला, पुलैं ज्येां पँषाला ॥ ७२ ॥
सिंगारे सुण्डाला, महामत्त वाला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हलंतेह ठाला, मनौ मेघमाला ॥ ७३ ॥
सची सी सहेली, पढें जे पहेली ।
करंती सुकेली, दिनेशं दुहेली ॥ ७४ ॥
सबैं लीन सथ्थें, प्रमानै सु प्रथ्थें ।
महा द्विरद मथ्थे, चढ़े चारु पथ्थें ॥ ७५ ॥
घुरंती घमस्सें, निसानं निहस्सें ।
करी कुंभ कस्सें, जयं जै सु जस्सै ॥ ७६ ॥
भणे बिरुद भट्टा, घनें घाघरट्टा ।
थटे बाजि थट्टा, बहैं सेनु पट्टा ॥ ७७ ॥
पुरं सुप्रवेसं, निहारें नरेशं ।
बहू बालबेशं, वनीता विषेशं ॥ ७८ ॥
सु संग्राम सीहं, प्रभंगं प्रबीहं ।
करें हर्ष केाडं, जगानंद जेाडं ॥ ७९ ॥
नियं पुत्ति पुत्रं, सु लेाकेस पुत्रं ।
दिए ग्राम दानं, सिसेादा सुथानं ॥ ८० ॥
वसे तच्छ वासं, उमंगे उल्हासं ।
रची राजधानी, शिवा सु प्रमानी ॥ ८१ ॥
प्रगट नाम पायौ, सिसौदा सुहायौ ।
सबर एक शाषा, भनें देव भाषा ॥ ८२ ॥
भलौ काम भोगी, स्ववामा सँयोगी ।
रमै रत्ति दीहा, जपै केा सु जीहा ॥ ८३ ॥
किनें चित्र केाटें, सुजंपीस जोटें ।
बर ब्याह वत्तं, चित्रंगी सु चित्तं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपन्नौ अचज्जं, कहे मंत्रि कज्जं ।
पठायौ सुपत्तं, दियं पुत्रि दत्तं ॥ ८४ ॥
क्रमें ब्याह किन्नौ, लळी लाह लीनौ ।
नियं पुत्रि नायं, समप्पै सु सायं ॥ ८५ ॥
हयं दो हजारं, सुवर्णो सिँगारं ।
दिए मत्त दंती, षरी आनि षंती ॥
दयौ अद्ध देशो, सिवारं महेशो ।
दई केई दासी, रची रूप रासी ॥ ८६ ॥
जरी पाद्य जामा, समप्पैं सकामा ।
दयो कोटि हेमं, प्रगटि आनि पेमं ॥ ८७ ॥
सुथानें सँपत्ते, रमें रंग रत्ते ।
वनीता विनोदं, महा चित्त मोदं ॥ ८८ ॥
कितै काल वित्तै, वदी दूत वत्तें ।
चित्रंगी चढ़ाई, करैं कच्छ जाई ॥ ८९ ॥
चलौ चित्र कोटें, इला दुर्ग्ग ओंटें ।
रषौ अप्प राजा, सजौ बेगि साजा ॥ ९० ॥
सुने दूत शद्दं, निशानं सुनद्दं ।
भयौ मान भायौ, उमंगे यु आयौ ॥ ९१ ॥

दोहा ।

चित्रकोट आए सुचढ़ि, बापा नृप बर बीर ।
मोरी चित्रंगी मिले, साहस वंत सधीर ॥ ९२ ॥
चित्रंगी तब ही चढ़े, बंब निशान बजाइ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बापा बीरहिं राखकें, चित्रकोट चित चाइ ॥ ८३ ॥
चिंतिय बापा बीर चित, नृप इनदे निज धीय ।
बंधन बंधे पेमकें, कीने अनुग स्वकीय ॥ ८४ ॥
हम हूं नृप निज थान हैं, इह नृप इनके थान ।
करें न हम पर किंकरी, येा न तजैं अभिमान ॥८५॥
रहय कवन उद्योत रवि, सिंह बहय नहिं सीर ।
इंद कवन आधीन हुइ, हम राजा रनधीर ॥ ८६ ॥
चित्रंगी मुक्कि चल्यौ, जेजे सुभट जुझार ।
अवनि गांव तिन दै अधिक, किए सु आज्ञाकार ॥८७॥
चित्रंगी कच्छहिं चलिय, पिट्ठि सु पुच्छिय पंच ।
बापा बीर महा बलिय, सज्यौ कोट लहि संच ॥८८॥
गेारा नारि सुसेारघन, शस्त्र भृत्य सु विचार ।
हय गय रथ पायक हसम, भरि अन धन भंडार ॥८९॥

कबित्त ।

बापा नृप बर बीर तेान निज दुर्ग भलाइय । चित्रंगी चित चंड साथ दल सज्जि सवाइय ॥ चढ्यौ कच्छ पर चूक धरनि षुरतारहिं दुज्जिय । षल कुल अति षरभरिय भग्ग अरि भूमि सु तज्जिय ॥ दीसंत भग्ग नन दिशि विदिश रवि मंडल छायौ सुरज । दिशि छंडिभग्गि दिगपाल दस गद्यत गुहिर सु शद्दगज ॥ १०० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा।

जुरयौ जाइ चित्रंग नृप, काल कीट कंकाल।
कच्छ विभच्छ उधंस किय, भरिय रोसभूपाल॥१०१॥
परयौ पाइ कच्छाधिपति, दंड मानि रस ठानि।
पुत्ति देइ हय गय प्रवर, जंग जोर वर जानि॥१०२॥

कवित्त।

कच्छ देश निज करिय जंग मोरी नृप जित्तिय। कूच कूच प्रति कूच पुहवि मेवारहिं पत्तिय॥ दुर्ग मुक्किनिय दूत कह्यौ पयसार सुकद्यह। कह्यौसो करि कैरव्व सवर सीसोदा सद्यह॥ सुनि तप्पौ ताम मोरी ससुर बुल्लय एह असोचि वच। गढ छंडि आउ रन मंडि गुरु सब रंतन बिधि एह सच॥ १०३॥

निठुर ससुर बच सुनत तमकि मंगिय तोषारहि। सज्जि तुरिय पर वर सनाह शिर टोप सुधारहि॥ बिहसि सकति कटि बंधि तोंन बहु सर तरवारिय। चंड चित्त कर चाप हय सु इक्कल खह कारिय॥ इक सहस दंति मदझर अनड लाख पंच पायक्क लिय। चढि समुख चढ्यो चित्रकोट तै बापा बीर महाबलिय॥ १०४॥

दोहा।

शस्त्रायन भरि इक सहस, घुरत निशानन घोष।
कायर थर हरि कंपई, सूरन रन संतोष॥ १०५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उत तैं मोरी दल अधिक, चित्रंगी चित्त चंड ।
आयो गढ़पति ऊपरे, मंडिय दुहु रन मंड ॥ १०६ ॥

छंद दंडका ।

मिलिय बापा वीर मोरिय, कुरे दुहुं वर वीर झोरिय । सनन सद्द अवाज सोरिय, गगन गुंजत बहत गोरिय ॥ १०७ ॥

छुट्टि बाननि भांन छाइय, उमड़ि मनु घनघोर आइय । धींग धसमस करत धाइय, पेषि कायर नर पलाइय ॥ १०८ ॥

ठनकि गज घंटा सु ठननन, भनकि भेरि नफेरि भननन । षनकि षग्ग उनग्ग वननन, झनकि ज्यों झलुरी झननन ॥ १०९ ॥

किलकि कर कट्टैं कटारिय, देषिये दीरघ दुधारिय । ढुंढि ढुंढि सुपिन्न ढारिय, वीर निज निज बल बकारिय ॥ ११० ॥

झाट झरमंडि बज्जि षग झट, घमतु घायल घाव घण घट । गिद्ध पीवत ओन घट घट, जिंद ढूंढत फिरत शिर जट ॥ १११ ॥

सूर झूझत सार सारह, झरत शीश सुरंग झारह । धुकत धर धर लगत धारह, मंडि मुख मुख मार मारह ॥ ११२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नृपत वीर कमंध नच्चिय, रोस रस रन रंग रच्चिय । सिंध सुर सहनाइ सच्चिय, मांस रुधिर सु पंक मच्चिय ॥ ११३ ॥

वित्त आयुध होत लय बय, रबकि किन चक-चूर किंय रथ । भिरत भींच सुभार भारथ, प्रगटि मनु दुर्योधि पारथ ॥ ११४ ॥

सँमुख सज्जिय सूर सूरह, प्रचलि श्रोन प्रवाह पूरह । झाक बज्जत हेात झूरह, नयन रत्त सुवीर नूरह ॥ ११५ ॥

देत निज निज पति दुहाइय, समरि परमेसर सहाइय । घुरिय घाट त्रिघाट घाइय, भूत प्रेत पिशाच भाइय ॥ ११६ ॥

उड़िय रेनु सुढंकि अंबर । झमकि डोंरू नद्द डंबर । तवत गायन देव तुंबर, सुरन मन रन जानि संबर ॥ ११७ ॥

समर हय गय फिरत सूनह, चरन पयदल होत चूनह । लहिय उयरें सांइ लेंनह, दपटि गजघट चित्त दूहन ॥ ११८ ॥

ढहिय सिंधुर परिय ढेरह, मानु अंजन वर्ण मेरह । घिरिय दुहु दल करिय घेरह, जोध इक बहु करत जेरह ॥ ११९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुंड मुंड रुडंत रड़ बड़, लटकि कंधहि शीश लड़ बड़ । देत दल बिचि बीर दड़ वड़, गगन गुंजत शद्द गड़ बड़ ॥ १२० ॥

झलकि सेन सुसार झल मल, हलकि कायर काय हल मल । कहर सोर सजोर कल कल, देषिए अनभंग दुहु दल ॥ १२१ ॥

झरत लोह सु छोह झड़ झड़, कटकि हड्डु सुजड्डु कड़ कड़ । दड़कि अरि सिर परत दड़ दड़, हसिय नारद वीर हड़ हड़ ॥ १२२ ॥

अंत पंतिय पय अलुझत, बियो अप्पन को न बूझत । झपटि लटि योधार झुझत, मार मचि तरफ-रिय मुझत ॥ १२३ ॥

वित्त लरत सु सत्त वासर, आहटे मनु अमर आसुर । भरिय रोस असेस भासुर, सद्द जय जय उच्चरिय सुर ॥ १२४ ॥

भगग मेारिय सेन भग्गिय, बीर बापा जयति बग्गिय । लेाथि लेाथि सु जेट लग्गिय, जंग इन समथेा व जग्गिय ॥ १२५ ॥

येागिनी सुर जपत जय जय, गहियतें चित्रकोट हय गय । बीर बापा बलिय लहु वय, जंग प्रथमहि कीन निज जय ॥ १२६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव देवि विमान दरसिय, व्योम हुंत सुकुसुम बरसिय । सजल सहज सुगंध सरसिय, चवत मांन सुजान चुरसिय ॥ १२७ ॥

दोहा ।

चित्रकोट गहि चित चुरस, बापा नृप बड़वार ।
मेारी कच्छहिं सुंचि वर, करि निज आज्ञाकार १२८
देश लिये निज अठ दस, मेारी आनहिं मेटि ।
बापा बीर अनंत बल, शत्रव सकल समेटि ॥१२८॥
आए नृप दुर्गहि अतुल, नेावति बज्जत नाद ।
मंडय को नृप महिय लहि, बापा नृप सम्बाद ॥१३०॥

कवित्त ।

जय पत्ते जुरि जंग, महामेारी दल मेारिय । बापा नृप बर बीर बषत बल रद्य बहेारिय ॥ करि सुराज चित्रकोट नाद नोबत्ति निसानह । हय गय पय-दल हसम गनक को गिनय सु ज्ञानह ॥ पेषंत सघन उल्लटि प्रजा, वनिता कलस बँधाइ बर । चित चूंप सिंगारिय सकल गृह तेारन मंडिय तुंग तर ॥ १३१ ॥

दोहा ।

तेारन मंडप तुंग तर, सेावन रतन सिंगार ।
सुकर पंति पट कूल मय, दीपत राज दुआर ॥१३२॥
राज महल संपत्त रसु, सेावन तुला सँचिट्ठ ।
जज्ञ सुमंडिय जयति को, बाघासनहिं बइट्ठ ॥१३३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंद्र सभा की ऊपमा, थटि हय गय भट थट्ट ।
बंदी जन बुल्लय बिरुद, भोर चारना भट्ट ॥ १३४ ॥

कबित्त ।

सत्तम दिन निशि समय प्रहर पच्छिलय प्रसिद्धह । सुपन पत्त श्री कार सेाइ हारीत सु सिद्धह ॥ अवनी पति प्रति अंखि वीर बापा सुनि बत्तह । तुमहिं सु हम संतुट्ठ दीन चित्रकोट सु दत्तह ॥ पय रद्य अचल मेवार पति बचन एह संदेह बिनु । अब रावर पद तुझ अप्पियहि सुत संतति सबहें सुदिन १३५

दोहा ।

सिद्धि अप्पि रावर सुपद, अंगहि धरि निज अंस ।
गय येागिंद सु गगन गति, पढ़ि भूपति सु प्रसंस १३६
जग्गौ बापा वीर जब, उदयेा अरक अभंग ।
राजन अति उत्साह रचि, रावर पद गहि रंग १३७

कवित्त ।

रावर पद गहि रंग वीर बापा सु सुद्धि वर ।
बापेाती सु बहेारि धरिय भानेज अन्य धर ॥ पंच लक्ख हय पवर सहस दस मत्तसु सिंधर । पनर लक्ख पायक सु सत्त सय सुंदरि सुंदर ॥ नव हत्थ देह सु प्रमान निज भक्त सवा मन जास भाल । पल बावन टोडर इक्व पय बापा रावर अतुल बल ॥ १३८ ॥

इति श्री मन्मान कवि विरचिते राजविलास शास्त्रे राउल श्री बापाजी कस्योत्पतिः रावल पद स्थापना चित्रकोट राजस्थान करण नाम प्रथम विलास सम्पूर्णम् ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ श्री बापा राउल तेा पट्टावली लिख्यते ।

छंद विअछरी ।

बापा रावर पाट विराजय । रावल श्री षुम्मान सु राजय ॥ नगर तिनहि षमणेारनि पाइय । सिंध. मालव पति समर हराइय ॥ १ ॥

रावर श्री कुवेर रयणायर । दान करन तप तेज दिवायर ॥ रावर त्रिपुर सीह बहु विक्रम । सत्यवंत हरिचंद भूप सम ॥ २ ॥

गेाविंद रावर रनहिं थिर सुहर । गट्ट गुमान जानि सुर गिरवर ॥ श्री माहेंद्र नाम महरावर । विभव अनंत सत्य वसुधा वर ॥ ३ ॥

कीरति धवल धबल कीरति धर । सकुँत कुमार रावर जनु श्रीबर ॥ सारि वाहन रावर सक बंधिय । सिंह समान सकल धर सद्धिय ॥ ४ ॥

रावर श्री नर लीलर ढालह । पुहवी पति सु प्रजा प्रतिपालह ॥ अंब पसाउ सु जंग अभंगह । श्री नर ब्रह्म बषानि सु चंगह ॥ ५ ॥

अल्लू रावर राज नीति अति । इंद नरिंद एक जनु गति मति ॥ विरद अघाट साष उतपन्निय । महि मंडल नृप नृप करि मन्निय ॥ ६ ॥

जुद्ध जुडण रिपु मलन जसेा भ्रम । धारम सिंघ राज क्षत्री भ्रम ॥ जेाग राज रावर जयवंतह । साहस सिंह समान सुमंतह ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रावर गात्र गिरु आजस गज्जय । तीखे अरि तनु तैह सु तज्जय ॥ रावर हंस मदन सम रूपह । भेटहि जसु पय बड बड भूपह ॥ ८ ॥

भट्टू रावर जास महा भट । कूलब उंच निज राखन कुल वट ॥ भटेबरा नृप तातें भनियहि । अति अवगाढ़ सुभट सिरि गिनियहि ॥ ९ ॥

बैर सिंघ रावल अतुली बल । देषिय सायर सरिस जास दल ॥ महण सीह रावर महिमागर । नूर जास नित २ नर नागर ॥ १० ॥

करमसीह उंच कृत कीनह । पदम सीह रावर सु प्रवीनह ॥ जैत सीह रावर जोधा रह । सुनियहि तेज सिंह सिरदारह ॥ ११ ॥

समर सीह रावर जस सारह । श्री पृथीराज रास सु बिचारह ॥ पृथा सोम चहुआन सु पुत्तिय । पानि ग्रहन संभरि पुर पत्तिय ॥ १२ ॥

दलिय युद्ध जयचंद पंग दल । समर सीह रावर दल संकुल ॥ संपत्ते दिल्लीस सहाइय । पृथीराज चहुआंन सु पाइय ॥ १३ ॥

रावर चौंड हिंदु मग राखन । बसुधा नायक बीर विचक्षन ॥ षण दाता ग्याता षल घायक । सबल उथप्पन अबल सहायक ॥ १४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रतन सेन रावर बर रज्जिय । संबत दश पण तीसहिं सज्जिय । पदमनि सिंहल दीपहिं परनिय । हरि हर बंभ देव मन हरनिय ॥ १५ ॥

अलावदी आलम चढ़ि आइय । बरस एक रहिं पुल बंधाइय ॥ बनिता देन असुर बहिकाइय । मरदानै तब मारि मचाइय ॥ १६ ॥

भय मन्निय असपति तब भग्गिय । जय जय रतनसेन जस जग्गिय ॥ धनि जननी जिन उयरहिं धरियौ । इल अवतार रूप अवतरियौ ॥ १७ ॥

भूमि चूड रावर भट भारी । सज्जन सेन दहल धर सारी ॥ डुंगर सी रावर नन दुल्लय । हरषि समर संमुह ते हल्लय ॥ १८ ॥

रावर पुंजा रण रस रंगिय । निज कर करि अरि सेन निषंगिय ॥ श्री नरपुंज सुदान समप्पय । कवि वर दुख दारिद्रहिं कप्पय ॥ १९ ॥

प्रताप सीह रावर सु प्रतापह । छत्र धारि नृप शिर जसु छापह ॥ करन समान सुकरन कहावहिं । तिन समान नृप कोइ न आवहिं ॥ २० ॥

इत्यादिक रावर अवतारिय । जटा मुकट ईश्वर अनुहारिय ॥ राजथान चित्रकोट सुरद्यय । गुरु गहिलौत शाष धुर गज्जय ॥ २१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूर बीर दातार सु सीलप । लच्छी पति सम
जसु जस लीलह ॥ मंगल कहत एह कवि मान्नह ।
बसुधा नायक सरस बषानह ॥ २२ ॥

कवित्त ।

करन पुत्र दुअ कहिय जिठ्ठ राहप त्रिभुवन जस ।
माहव दुतिय महिंद बाघ रिपु करन अप्प बस ॥
राणा पद राहपहिं लीन करि उत्सव लक्खह । संवत
तेरह सुद्ध पच दस बरस प्रतक्खह । थपि एकादश
कुल देवि, थिर याग भाग बंधिय जगति ॥ दुहुं बेर
वरस मंडे सु दुति, नौमी दिन पूजै नृपति ॥ २३ ॥

दोहा ।

राना राहप रंग रस, इच्छित पूरन आस ।
रावर पद माहप रच्यौ, जूव राज करि जास ॥२४॥

छन्द निसानी ।

राहप रान अजेय रन, जननी धनि जाया ।
कृतब उंच कीए जिनहिं, मह जज्ञ मंडाया ॥ अजा
सिंह दुहुं घाट इक, पानिय तिन प्याया । राणा पद
लिय रंग सौं, कुल कलस चढ़ाया ॥ दिनकर रान
दिनेश दुति, सक बंध सवाया । राना श्री नरपति
रघू, विधि अप्प बनाया ॥ २५ ॥

जयवंता जस करन जग, करमेत कहाया ।
सज्जन जनहिं सुहावना, अपरहिं असुहाया ॥ २६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुन्यपाल राना प्रगट, परमेश्वर पाया। मुख देखत रिधि सिधि मिली, मन सोच मिटाया॥ पीथड राण अडोल पग पतिसाह बुलाया। अन मन बांए अतुल बल, भल दंड भराया॥ २७॥

भूमिभोग पति भाणसी, राना सु रिझाया। दैहैं मुहँ मांग्या दरब, कुंदन सुकटाया॥ भीमसरीसे भारथनि भल भीम भलाया। शत्रव कहूं न रहिं सकै सब जगत सुधाया॥ २८॥

रान अजय सी बीर रस, षल जूह थिलाया। नारद तुंबर नच्चिया, गुण गंधव गाया॥ लषम सीह जस लोभिया, बसु घण बरसाया। राजस गुण जत रति रवन, अवतार उपाया॥ २९॥

अरसी राण महा अनम, हल्लय न हलाया। सिंधूर तुरंग समप्पनां, दत नाम दिपाया॥ शीश जास गगा सलित सिव रूप सुहाया। रज्ज बहोरि हमीर रांण रघुबोल रहाया॥ ३०॥

खेलत राण सभाहि षग, अरि कट्ट उड़ाया। पर दुख कातर पुहबि पति, बड़ बिरुद बुलाया॥ लाषण सी राणा सु लच्छि, तनु सोवन ताया। बंश बिभूषन दल बहुल, दिल दत्त दिढ़ाया॥ ३१॥

मोकल राण उदार मन, निज सुजसनि पाया। बैरी पकरि बिभच्छना, जनु सिंह जगाया॥ कुंभ राण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अषियात कलि, लष हेम लगाया । पनरा सै पचरो तरै, परगट परनाया ॥ ३२ ॥

कुंभल मेर अजीतगढ़, बहु लोक बसाया । महत रंभ आरंभ करि, महिदंद मिटाया ॥ चित्रकोट चित चूंप सौं, कमठान कराया । कुंभ सामि देवल कलस, धज दंड धराया ॥ ३३ ॥

राणा जाच्या रायमल, लष दान सु ल्याया । संपति जिहिं पाई सकल, भव दुःख भगाया ॥ राण संग्राम सुरोस रस, सजि कटक सवाया। नर वर दुर्ग निसान लिय, लछि नगर लुटाया ॥ ३४ ॥

उदय सिंघ राणा अनम, जग नाम जनाया । अलकापुर सम उदयपुर, बर नगर बसाया ॥ राण प्रताप सुरुद्र रस, मह जंग मचाया । अबदुल्ला सरिषा असुर, गज सहित गिराया ॥ ३५ ॥

सहस बहत्तरि दल सकल, षग मारि षिसाया । साहि अकब्बर संकयौ, ए बीर उपाया ॥ अमरा रांण सदा अमर, गुण गीतहि गाया । अरिजन भुज वल आहनिय, घन सुजस घुराया ॥ ३६ ॥

करण राण चढ़ती कला, संसार सुणाया । बसुधा नायक अति विभव गुरू बषत गिणाया ॥ जगतसिंघ राणा सुजय, जस करि जग छाया । आखत मान निधान ए, तनतें मन भाया ॥ ३७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना ।

अब तक ग्रन्थमाला की पिछली छब्बीस संख्याओं में निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं ।

संख्या १ और २

(१) ध्रुवदास की भक्तनामावली । भक्तों के संक्षिप्त वृत्तान्त सहित । सम्पादक बाबू राधाकृष्ण दास । मूल्य ॥≡)

(२) सदलमिश्र की चन्द्रावती । सम्पादक बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० । मूल्य ।-)

संख्या ३, ४, ५, ६, ७, ८ और ९

(३) सूदन कवि का सुजानचरित्र । सम्मादक बाबू राधाकृष्ण दास । मूल्य २)

* (५) लाल कवि का छत्रप्रकाश । सम्पादक बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० । मूल्य १।)

(६) नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी । सम्पादक बाबू राधाकृष्ण दास । संख्या १० मूल्य ।≡)

(७) चन्द्रशेखर का हम्मीरहठ । सम्पादक बाबू जगन्नाथदास बी० ए० (रत्नाकर) । मूल्य ॥)

संख्या ११ और १२

(८) श्रीधर का जंगनामा । सम्पादक बाबू राधाकृष्ण दास और पण्डित किशोरीलाल गोस्वामी । मूल्य ॥।)

(९) मलिक मुहम्मद जायसी का अखरावट । सम्पादक महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी । मूल्य ।≡)

संख्या १३ और १४

(१०) मुंशी देवीप्रसाद की महिलामृदुवाणी । मूल्य १)

* इस पुस्तकावली की चौथी संख्या का ग्रन्थ पृथ्वीराजरासो है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४ और २५

(११) दादूदयाल की बनी । सम्पादक महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी । मूल्य १॥)

(१२) कवि नूरमहम्मद कृत इन्द्रावती, पहिला भाग । सम्पादक बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० । मूल्य १)

(१३) कवि जोधराज कृत हम्मीररासो । सम्पादक बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० । मूल्य ॥)

(१४) दादूदयाल का सबद । सम्पादक महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी । मूल्य १॥)

(१५) कवि आनन्दघन कृत विरहलीला—सम्पादक बाबू काशीप्रसाद जायसवाल । मूल्य ॥)

संख्या २६ और २७

(१६) कवि पद्माकर कृत बीरविरदावली । सम्पादक लाला भगवानदीन । मूल्य ॥)

(१७) भूषणग्रन्थावली--सम्पादक पण्डित श्यामविहारी मिश्र एम० ए० और पण्डित शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० [अपूर्व]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अङ्क संख्या ३०] [पुस्तक संख्या १७ और १८

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला।

सम्पादक-श्यामसुन्दर दास बी० ए०

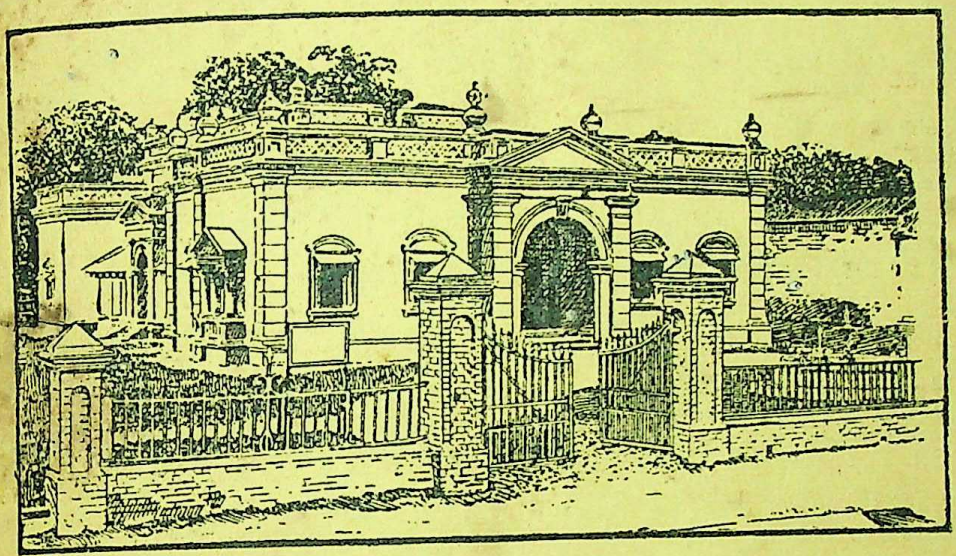

Fusciculus No. 30] [Books Nos 17 & 18

NAGARI-PRACHARINI GRANHAMALA

EDITOR—

SYAM SUNDAR DAS. B. A.

PUBLISHED BY

THE NAGARI-PRACHARINI SABHA,

BENARES,

Under the patronage of the Government of the United Provinces.

मूल्य प्रति संख्या ॥) *Price per fasciculus As. 8*

ISSUED ON THE 1st. SEPTEMBER 1909.

Printed by Madho Prasad, Bharat Press, Benares, for the Publisher.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका ।

(१) भूषणग्रन्थावली–पण्डित श्यामबिहारी मिश्र एम० ए० और पं० शुकदेव बिहारी मिश्र बी० ए० सम्पादित (१४५)

(२) भूषणग्रन्थावली की भूमिका–पंडित श्यामबिहारी मिश्र एम० ए० और पंडित शुकदेव बिहारी मिश्र बी० ए० लिखित (१-१४)

(३) मान कवि कृत राजविलास–लाला भगवानदीन सम्पादित (८१-१२३)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोट गढ़ ढाहियतु एकै पातसाहन के एकै पातसाहन के देस दाहियतु है । भूषन भनत महाराज सिवराज एकै साहन की फौज पर खग्ग बाहियतु है ॥ [1]क्यों न होहिँ बैरिन की बौरी सुनि बैर बधू दौरनि तिहारे कहौ क्यों निबाहियतु है । [2] रावरे नगारे सुने बैर वारे नगरनि नैन वारे नदन निवारे चाहियतु है ॥ ४२ ॥

चकित चकत्ता चौंकि चौंकि उठै बार बार दिली दहसति चित चाहै खरकति है । बिलखि बदन बिलखात बिजैपुर पति फिरत फिरंगिन की नारी फरकति है । थर थर काँपत कुतुब साहि गोलकुंडा हहरि हबस भूप भीर भरकति है । [1]राजा सिवराज के नगारन की धाक सुनि केते पातसाहन की छाती दरकति है ॥४३॥

मोरँग[3] कुमाउँ वौ पलाऊ[4] बाँधे एक पल कहाँ लौं गनाऊं जेब भूपन के गोत हैं । भूषन भनत गिरि बिकट निवासी लोग बावनी बवंजा[5] नव कोटि धुन्धु जोत[6] हैं । काबुल कँधार खुरासान जेर कीन्हो जिन मुगल

---

(१) भयानक रस ।

(२) चंचलातिशयोक्ति ।

(३) शि० भू० छन्द नं० २४८ नोट देखिये ।

(४) 'भागना' हो सकता है; 'पला' भी । पला नामक एक ग्राम यमुना जी के किनारे था ।

(५) बजूना नामक एक स्थान फतेहपूर सिकरी के पास था ।

(६) धुँधली जोति के अर्थात तेजहत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पठान सेख सैयदहु रोत हैं। अब लगि[1] जानत हे बड़े होत पातसाह सिवराज प्रगटे ते राजा बड़े होत[2] हैं॥४४॥

दुग्ग पर दुग्ग जीते सरजा सिवाजी गाजी डग्ग नाचे डग्ग पर रुंड मुंड फरके । भूषन भनत बाजे जीति के नगारे भारे सारे करनाटी[3] भूप सिंहल को सरके ॥ मारे सुनि सुभट पनारे[4] वारे उदभट तारे लगे फिरन सितारे गढ़ धर के । बीजापुर[1] बीरन के, गोलकुंडा धीरन के, दिल्ली उर मीरन के दाड़िम से दरके[5] ॥ ४५ ॥

मालवा उजैन भनि भूषन भेलास[6] ऐन सहर सिरोज[7] लौं परावने परत हैं । गोंडवानो[8] तिल

---

(१) काव्यलिंग अलंकार ।

(२) यह छन्द स्फुट कविता से यहां आया है ।

(३) करनाटक पर शिवाजी ने सन १६७६-७८ में आक्रमण किया था ।

(४) इस छन्द में पनारे गढ़ का वरणन अशुद्ध सा जँचता है क्योंकि परनाले में सन् १६६१ ई० एवं सन् १६७३ ई० में लड़ाई हुई थी और करनाटक की चढ़ाई सन् १६७८ई०में हुई थी। सम्भव है कि पनाले क़िले के फौजी कहीं बाहर लड़े हों और वहां मारे गये हों ।

(५) पूर्णोपमा ।

(६) भेलसा-इसमें बहुत से प्राचीन बौद्ध स्तूप हैं-यह ग्वालियर राज्य में है ।

(७) शीराज़ हो सकता है-सिरोज नामक एक शहर बुन्देलखण्ड के समीप भी था ।

(८) वर्त्तमान समय का प्रायः समस्त मध्य प्रदेश उस समय गोंडवाना कहलाता था क्योंकि वहां गोंड़ विशेषतया रहते थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गानेा फिरगानेा[1] करनाट[2] रुहिलानेा रुहिलन[3] हिये हहरत हैं ॥ साहि के सपूत सिवराज तेरी धाक सुनि गढ़पति बीर तेऊ धीर न धरत हैं। बीजापुर गेालकुंडा आगरा दिली के कोट बाजे बाजे रोज दरवाजे उघरत हैं ॥ ४६ ॥

मारि करि पातसाही खाकसाही कीन्हीं जिन जेर कीन्हेां जेार सेां लै हद्द सब मारे की। खिसि गई सेखी फिसि गई सूरताई सब हिसि गई हिम्मति हजारेां लेाग सारे की ॥ बाजत दमामे लाखौं धौंसा आगे घहरात गरजत मेघ ज्येां बरात चढ़े भारे की। [4] दूलहेा सिवाजी भयेा दच्छिनी दमामे वारे दिली दुलहिनि भई सहर सितारे की ॥ ४७ ॥

डाढ़ी के रखैयन की डाढ़ी[5] सी रहति छाती बाढ़ी मरजाद जस हद्द हिन्दुवाने की। कढ़ि गई रैयति के मन की कसक सब मिट गई ठसक तमाम तुरकाने की ॥ भूषन भनत दिलीपति दिल धकधका सुनि सुनि धाक सिवराज[6] मरदाने की।

---

(१) बाबर के पिता का राज्य।

(२) करनाटक।

(३) भूमिका देखिए।

(४) सम अभेद रूपक। [कहते हैं।

(५) जली हुई। जंगलमें पत्तियां जलाई जाती हैं उसे "दाढ़ा"

(६) इस छन्द में कहीं कहीं शिवराज के स्थान पर छत्र शाल का नाम लिखा है परन्तु शुद्ध शिवराज ही का नाम समझ पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोटी भई चंडी बिनु चोटी के चबाय सीस खोंटी भई सम्पति चकत्ता के घराने की ॥ ४८ ॥

जिन फन फुतकार उड़त पहार भार कूरम कठिन जनु कमल बिदलि गो । विष जाल ज्वाला मुखी लवलीन होत जिन झारन चिकारि मद दिग्गज उगलि गो ॥ कीन्हों जेहि पान पय पान सेा जहान कुल केाल हू उछलि जल सिन्धु खलभलि गो । [१] खग्ग खगराज महाराज सिवराज जूकेा अखिल भुजंग मुगल दूल निगलि गो ॥ ४९ ॥

[२] सुमन मैं मकरन्द रहत हे साहि नन्द मकरन्द सुमन रहत ज्ञान बेाध है । मानस मैं हंस बंस रहत हैं तेरे जस हंस मैं रहत करि मानस विसेाध है ॥ भूषन भनत भौंसिला भुवाल भूमि तेरी करतूति रही अदभुत रस अेाध है । पानि मैं जहाज रहे लाज के जहोज महाराज सिवराज तेरे पानिप पयेाध है ५०॥

बेद राखे विदित पुरान राखे सार युत रामनाम राख्यो अति रसना सुघर मैं । हिन्दुन की चेाटी रेाटी राखी है सिपाहिन की काँधे मैं जनेऊ राख्यो माला राखी गर मैं ॥ मीड़ि राखे मुगल मरेाड़ि राखे पातसाह बैरी पीसि राखे बरदान राख्यो कर

(१) खग अभेद रूपक ।

(२) यह छन्द स्फुट कविता से आया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं । राजन की हद्द राखी तेग बल सिवराज देव राखे देवल स्वधर्म्म राख्यो घर मैं ॥ ५१ ॥

सपत नगेस चारौं ककुभ[1] गजेस केाल कच्छप दिनेस धरैं धरनि अखंड केा । पापी घालै धरम सुपथ चालै मारतंड करतार प्रन पालै प्रानिन के चंड केा ॥ भूषन भनत सदा सरजा सिवाजी गाजी म्लेच्छन केा मारै करि कीरति घमंड केा । जग काज वारे निहिचिन्त करि डारे सब भेार देत आसिष तिहारे भुजदंड केा ॥ ५२ ॥

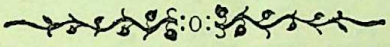

(१) पृथ्वी के हाथी अर्थात दिग्गज ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री छत्रशाल दशक ।

दोहा ।

इक हाड़ा[1] बूँदी धनी मरद महेवा[2] वाल ।
सालत नौरँगजेब को ये दोनो छतसाल ॥
वै देखौ छत्ता पता यै देखो छतसाल ।
वै दिल्ली की ढाल[3] यै दिल्ली ढाहन वाल ॥

कवित्त मनहरन ।

छत्रशाल हाड़ा बूंदी नरेश विषयक ।

चले चन्दबान[4] घनबान औ कुहूकबान[5] चलत कमान[6] धूम आसमान छूवै रहो । चली जम डाढ़ैं बाढ़ वारैं तरवारैं जहां लोह आँच जेठ के तरनि मान वै रहो । ऐसे समै फौजैं विचलाईं छत्रसालसिंह अरि केचलाये पायँ बीर रस च्वै रहो ॥ हय चले हाथी चले

---

(१) एक छत्रसाल हाड़ा बूंदी नरेश थे-ये महाराज गोपीनाथ के पुत्र और राव रतन सिंह के पौत्र थे-ये स्वयं बावन लड़ाइयों में शरीक रहे थे । सन् १६५८ ई० में धौलपूर में दारा और औरंगजेब की जो लड़ाई राज्यार्थ हुई थी उसमें ये महाराज दारा के दल के हरौल में थे । उसी लड़ाई में बड़ी बहादुरी दिखा कर ये मारे गये । उसीका वरणन भूषण ने इस दशक के प्रथम दो छन्दों में किया है ।

(२) दूसरे छत्रसाल राय चम्पति बुँदेला के पुत्र थे । इन्हीं की अनिवार्य्य प्रयत्नों से इनका राज्य बुंदेलखंड भर में फैल गया था ।

(३) क्योंकि वे दिल्ली की ओर हो दारा की तरफ से लड़े थे ।

(४) अर्द्ध चन्द्रबाण ।

(५) अंधेरे में चलने वाले बाण ।

(६) तोप ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संग छोंड़ि साथी चले ऐसी चला चली मैं अचल हाड़ा ह्वै रहो[1] ॥ १ ॥

दारा साहि औरँग जुरे हैं दोऊ दिली दल एकै गये भाजि एकै गये रुँधि चाल मैं[2] । बाजी कर कोऊ दगाबाजी करि राखी जेहिँ कैसेहू प्रकार प्रान बचत न काल[3] मैं ॥ हाथी ते उतरि हाड़ा जूझो लोह लंगर[4] दै एती लाज कामें जेती लाज छत्रसाल मैं । तन तरवारिन मैं मन परमेसुर मैं प्रान स्वामि. कारज मैं माथो हरमाल मैं ॥ २ ॥

छत्रशाल बुंदेला महोबा नरेश विषयक ।

निकसत म्यान ते मयूखैं[5] प्रलय भानु कैसी फारैं तम तोम से गयन्दन के जाल को । लागत लपटि कंठ वैरिन के नागिनि सी रुद्रहि रिझावै दै दै मुंडन

---

(१) पूर्णोपमा, पदार्थावृत्त दीपक, परिसंख्या औ भूषणानुसार पर्य्याय अलंकार ।

(२) कोई भाग गये और कोई सेना के संचालन में फँस गये, अर्थात् इस प्रकार से सेना चलाई गई कि उनकी सेना ऐसे स्थान पर जा पड़ी कि जहाँ से वह शत्रु से भली भाँति लड़ नहीं सक्ती थी ।

(३) कोई ऐसे थे कि जिस समय किसी प्रकार प्राण नहीं बचते थे तो उन्होंने दगाबाजी करके अपने हाथ बाज़ी रक्खी, (अर्थात् प्रान बचाये) ।

(४) जब हाथी लड़ाई से भागने लगतें हैं तब उनके पैरों में लंगड़ (मोटी जंजीर) डाल देते हैं कि वे भाग न सकैं ।

(५) किरनैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के माल को ॥ लाल छितिपाल छत्रसाल महाबाहु बली कहां लौं बखान करौं तेरी करबाल को। प्रति, भट कटक कटीले केते काटि काटि कालिका सी किलकि कलेऊ देति काल को ॥ ३ ॥

भुज भुजगेस की वै संगिनी भुजंगिनी सी खेदि खेदि खातीं दीह दारुन दलन के । बखतर पाखरिन बीच धसि जाति मीन पैरि पार जात परबाह ज्यों जलन के ॥ रैया राय चम्पति[२] को छत्रसाल महाराज भूषन सकत को बखानि यों बलन के।

---

(१) पूर्णोपमा अलंकार ।

(२) चम्पतिराय छत्रसाल बुँदेला के पूज्य पिता थे। ये महाराज बुँदेलों में बड़े ही प्रतापी हो गये हैं। पहिले महाराज चम्पति शाहजहां से मित्रता रखते थे और उनकी ओर से दारा के साथ काबुल में भी लड़ने गये थे-वहां इन महाराज ने इतनी वीरता दिखाई और अफ़गानों को इतना शीघ्र परास्त कर दिया कि दारा को इनकी वीरता से द्वेष उत्पन्न हुवा-इसी द्वेष के कारण इन से और दारा से शत्रुता हो गई तब ए महाराज औरंगजेब की ओर हो गये और इन्होंने धौलपुर के युद्ध में हरौल दल के नेता होकर दारा को परास्त करके औरंजेब को राज्य दिलाने में पूरा योग दिया (यथा "चम्पति राय जगत जस छायो-ह्वै हरौल दारा बिचलायो" लाल कृत छत्र प्रकाश)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पच्छी पर छीने[1] ऐसे परे परछीने[2] बीर तेरी बरछी ने बर[3]छीने हैं खलन के ॥ ४ ॥

रैया राय चम्पति को चढ़ो छत्रसालसिंह भूषन भनत समसेर जोम जमकैं।[4] भादौं की घटा सी उठीं गरदैं गगन घेरैं सेलैं समसेरैं फेरैं दामिनी सी दमकैं ॥ खान उमरावन के प्रान राजा रावन के सुनि सुनि उर लागैं घन कैसी घमकैं। बैहर[5] बगारन की अरि के अगारन की नाँघती पगारन[6] नगारन की धमकैं ॥ ५ ॥

अब गहि छत्रसाल खिझ्यो खेत बेतवै के उत ते पठाननहू कीन्हीं झुकि झपटैं। [7]हिम्मति बड़ी के गबड़ी[8] के खिलवारन लौं देत सै हजारन हजार

---

(१) पंखकटे।

(२) पर अर्थात् शत्रु खंडित हो गए।

(३) बल।

(४) पूर्णोपमा अलंकार।

(५) वायु।

(६) घेरा।

(७) पूर्णोपमा अलंकार।

(८) गबड़ी (कबड्डी) एक प्रकार का खेल होता है-इसमें खेलाड़ी दो भागों में विभक्त हो जाते हैं। एक समूह का एक खेलाड़ी कबड्डी कबड्डी कहता दूसरे गोल में जाता है और यह प्रयत्न करता है कि उसकी एकही साँस न टूटने पावे और वह उस गोल के किसी खेलाड़ी को छूकर लौट आवै। अगर उसने ऐसा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बार चपटैं ॥ भूषन भनत काली हुलसी असीसन को सीसन को ईस[१] की जमाति जोर जपटैं[२]। समद लौं समद[३] की सेना त्यों बुँदेलन की सेलैं समसेरैं भईं बाड़व की लपटैं ॥ ६ ॥

हैबर हरट्ट[४] साजि गैबर[५] गरट्ट[६] सम[७] पैदर के ठट्ट फौज जुरी तुरकाने की। भूषन भनत राय चम्पति को छत्रसाल रोप्यो रन ख्याल ह्वै कै ढाल हिन्दुवाने की ॥ कैयक हजार एक बार बैरी मारि डारे रञ्जक दगनि मानो अगिनि रिसाने की।

लिया तो उस गोल के जिस खेलाड़ी को उसने छुवा उसे मानो उस ने मार डाला नहीं तो स्वयं मर गया। दूसरे गोल वाले चाहते हैं कि उसे पकड़ कर मार डालें और उसकी सांस बलात् तोड़वा दें और एक सांस बिना तोड़े उसे लौटने न दें। उसके पीछे दूसरे गोलों का एक खिलाड़ी वैसा ही करता है। इसी प्रकार जब किसी गोल के सब खेलाड़ी मर जाते हैं तो वह गोल हार जाता है।

(१) महादेव जी।

(२) चपेट करते हैं।

(३) अब्दुससमद दिल्ली का एक सरदार था। बेतवे नदी के किनारे सन १६८० ई० के करीब यह छत्रसाल से भारी युद्ध में हारा था।

(४) हृष्ट पुष्ट।

(५) गजबर; अच्छे हाथी।

(६) समूह।

(७) उसी भांति के।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सैद अफगन[1] सेन सगर सुतन लागी कपिल सराप लौं तराप तोपखाने की ॥ ७ ॥

चाक[2] चक चमू के अचाक[3] चक चहूँ ओर चाकसी फिरत धाक चम्पति के लाल की। भूषन भनत पातसाही मारि जेर कीन्हीं काहू उमराय ना करेरी करबाल[4] की ॥ सुनि सुनि रीति बिरदैत[5] के बड़प्पन की थप्पन उथप्पन की बानि छत्रसाल की। जंग जीतिलेवा ते वै ह्वैकै दामदेवा[6] भूप सेवा लागे करन महेवा महिपाल की ॥ ८ ॥

कीबे को समान प्रभु ढूँढ़ि देख्यो आन पै निदान दोन युद्ध में न कोऊ ठहरात हैं। पंचम[7] प्रचंड भुज दण्ड को बखान सुनि भागिबे को पच्छी लौं पठान थहरात हैं ॥ संका मानि सूखत अमीर

(१) सैद अफ़गन दिल्ली का एक सरदार था और छत्रसाल से लड़ने को वह भेजा गया था। छत्र साल ने उसे पराजित किया था। लाल कवि कृत छत्र प्रकाश देखिये। मटौंध जीतने के बाद छत्र साल ने पहिले स्वयं विचलित होकर फिर इसे घोर युद्ध कर हराया था तब इसकी जगह शाह क़ुली नियत हुआ।

(२) चाक़, मोटी ताज़ी।

(३) अचानक।

(४) तलवार।

(५) यश वरणन करने वाला।

(६) कर देने वाले।

(७) पंचम सिंह बुन्देलों के पूर्व्व पुरुष थे। महाराज बुन्देल (जो बुन्देलों के पुरखा थे) इनके पुत्र थे। पंचमसिंह बड़े प्रतापी और देवी के बड़े भारी भक्त थे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिली वारे जब चम्पति के नन्द के नगारे घहरात हैं । चहूँ ओर चकित चकत्ता के दलन पर छत्ता के प्रताप के पताके फहरात हैं [१] ॥ ९ ॥

राजत अखण्ड तेज छाजत सुजस बड़ो गाजत गयन्द दिग्गजन हिय साल को। जाहि के प्रताप सों मलीन आफताप[२] होत ताप तजि दुजन करत बहु ख्याल को ॥ साज सजि गज तुरी[३] पैदरि कतार दीन्हे भूषन भनत ऐसो दीन प्रतिपाल को ? । और राव राजा[४] एक मन मैं न ल्याऊं अब साहू[५] को सराहौं कै सराहौं छत्रसाल को ॥ १० ॥

---

(१) पूर्णोपमा, चंचलातिशयोक्ति, पूर्ण भयानक रस । यह छन्द स्फुट कविता से यहाँ आया है ।

(२) आफ़ताब, सूर्य्य ।

(३) घोड़ा ।

(४) भूमिका एवं स्फुट काव्य के छन्द नं० ३ का नोट नं० ३ देखिए ।

(५) महाराज साहू जी छत्रपति शिवाजी के पौत्र थे । शिवा जी के पुत्र और साहू जी के पिता का नाम शम्भा जी था । साहू जी के ही राज्य काल में मुग़ल सम्राज्य पूर्ण रूप से ध्वस्त हो गया था । साहू जी ने बहुत वर्ष राज्य किया था । शाही क़ैद से इनका स० १७०७ ई० में छुटकारा हुआ था ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्फुट काव्य ।

॥ दोहा ॥

रेवा[1] ते इत देंत नहिँ पत्यिक म्लेच्छ निवास ।
कहत लोग इन पुरनि मैं है सरजा को त्रास ॥ १ ॥

कवित्त मन हरन ।

[2] बाजि बम्ब चढ्यो साजि बाजि जब कलां भूप गाजी महाराज राजी भूषन बखानते । चंडी की सहाय महि मण्डी तेजताई ऐंड़ छण्डी राय राजा जिन दण्डी औनि आन ते[3] ॥ मन्दी भूत रवि रज[4] बन्दी भूत हठ धर नन्दी भूतपति भो अनन्दी अनुमान ते । रङ्की भूत दुवन [5]करङ्की भूत दिगदन्ती पंकी[6] भूत समुद सुलंकी के पयान ते[7] ॥२॥

---

(१) नर्म्मदा नदी ।

(२) यह छन्द शिवा बावनी से आया है क्योंकि यह शिवाजी विषयक नहीं है ।

(३) देवीजी की सहायता से (सुलंकी ने) पृथ्वी तेज से ता (छादित) कर मढ़ दिया, और उन राय राजाओं ने भी जिन्हों ने औरों से भूमि दंड में लेलिया था ऐंड़ छोड़ दिया ।

(४) राज श्री ।

(५) कलंकी; दिग्गज श्वेत वर्ण थे सो इस रज से आच्छादित होने से वे मैले होगये और इसी कारण वे कलंकी कहे गये ।

(६) चहला (कीच) से भरा हुआ ।

(७) अनुमास । पँवार आदि जो चार अग्निकुल के क्षत्री हैं उनमें एक सुलंकी भी हैं । बघेले क्षत्री सुलंकी क्षत्रियों में हैं । बघेल खंड के अतिरिक्त ये लोग बांधव गढ़ और गुजरात में भी राज्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहत अछक पै मिटैन धक[1] पीवन की निपट जु नाँगी डर काहू के डरै नहीं । भोजन बनावै नित चोखे खान खानन के सोनित पचावै तऊ उदर भरै नहीं ॥ उगिलत आसौ[2] तऊ सुकल समर बीच राजै रावबुद्ध[3] कर बिमुख परै नहीं ॥ तेग या तिहारी मतवारी है अछक तौलों जौलौं गजराजन की गजक[4] करै नहीं ॥ ३ ॥

करते थे । इनके राज्य अब भी बहुत से हैं जिनमें रींवा प्रधान है । मेवार में भी इनकी एक शाखा है जिसकी सोलह उप- शाखायें हैं । यह छन्द हृदयराम सुत रुद्र के विषय हैं । शि० भू० छन्द २८ नोट देखिये ।

(१) बड़ी चोप ।

(२) आसव, मदिरा । तलवार के लिये लाल रंग का खून क्यों कि उत्तम मद्य भी लाल रंग का माना गया है ।

(३) छत्रसाल हाड़ा बूँदी नरेश के भाई भीमसिंह के पौत्र अनिरुद्धसिंह थे । राव बुद्धसिंह इन्हीं अनिरुद्धसिंह के पुत्र थे । औरंगज़ेब के मरने पर उसके पुत्र शाह आलम (बहादुर शाह) और आज़म में राज्यार्थ जाजऊ पर जो घोर युद्ध हुआ था उसमें राव बुद्धसिंह शाह आलम की ओर थे । इसी दिन इन्हें रावराजा की उपाधि मिली । जैपुर के राजा जैसिंह ने अन्त में राव बुद्ध का राज्य छीन लिया था परन्तु इनके पुत्र उम्मेदसिंह ने फिर उसे प्राप्त कर लिया ।

(४) शराबी लोग जो शराब के साथ थोड़ी सी नमकीन या चटपटी ग़िज़ा खाते हैं वही गज़क है । यह छन्द छत्रशाल दशक से आया है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जादिन चढ़त दल साजि अवधूतसिंह[1] तादिन दिगन्त लौं दुवन दाटियतु है। प्रलै कैसे धाराधर[2] धमकैं नगारा धूरि धारा ते समुद्रन की धारा पाटियतु हैं॥ भूषन भनत भुवगोल को कहर तहां हहरत तगा[3] जिमि गज काटियतु है। काँच से कचरि जात सेस के असेस फन कमठ की पीठि पै पिठी सी बाँटियतु[4] है॥४॥

मेचक[5] कवच साजि बाहन बयारि बाजि गाढ़े दल गाजि रहे दीरघ बदन के। भूषन भनत समसेर सोई दामिनी है हेतु नर कामिनी के मान के कदन के॥ पैदरि बलाका[6] धुरवान[7] के पताका गहे घेरियत चहूँ ओर सूतेही सदन के। नाकरु निरादर पिया सों मिलु सादर यै आये बीर बादर बहादर मदन के[8]॥५॥

---

(१) इनका इतिहास में पता नहीं लगता। भूमिका देखिए।

(२) मेघ।

(३) तागा, डोरा।

(४) पूर्णोपमा, सम्बन्धातिशयोक्ति।

(५) काला।

(६) बगुला।

(७) जब बादल बड़े ज़ोर से उठता है तब उसमें दूर से जो लम्बे लम्बे खड़े दूसरे प्रकार के पतले धूम्र वरण बादल दौड़ते हैं उन्हें धोरवा कहते हैं।

(८) सम अभेद रूपक, उत्तमा दूती की मानवती नायका प्रति शिक्षा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उलदत[1] मद अनुमद[2] ज्यों जलधि जल बल हद भीम कद काहू के न आह के। अबल प्रचण्ड गंड[3] मंडित मधुप वृन्द बिन्ध्य से बिलन्द सिन्धु सातहू के थाह के॥ भूषन भनत झूल झम्पति झपान झुकि झूमत झुलत झहरात रथ डाह के। मेघ से घमंडित मजेजदार[4] तेज पुंज गुंजरत कुंजर कुमाऊं नर नाह के[5]॥ ६॥

बलख बुखारे मुलतान लौं हहर पारै कपि लौं पुकारै कोऊ धरत न सार है। रूम रूँदि डारै खुरा-

---

(१) डालते हैं।

(२) मद पर मद।

(३) कनपटी।

(४) एक प्रभाव सूचक पद। इसके शुद्ध अर्थ का पता नहीं लगता।

(५) अनुप्रास, पूर्णोपमा। इस छन्द के साथ एक जन श्रुति है। भूषण ने जब कुमाऊं नरेश के यहां जाकर यह छन्द सुनाया था तो उन्हें सन्देह हुआ कि स्यात् जो यह सुनते थे कि शिवा जी ने इन्हें लाखों रुपये दिए वह अशुद्ध है नहीं तो ये मेरे यहां क्यों आते; परन्तु तो भी इस बात पर निश्चय न होने से इन्हें राज सन्मानित कवि समझ कर उसने एक लाख रुपये भूषण को बिदाई में दिये परन्तु भूषण ने वह धन कुमायूं नरेश (उद्योत सिंह) को वापस करके कहा कि उनका प्रयोजन कुमायूं जाने से केवल शिवा जी का यश वर्द्धन था, शिवाजी की कृपा से अब उन्हें रुपये पैसे की कोई आवश्यकता नहीं रह गई थी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सान खूँदि मारैं खाक खादर[1] लौं झारै ऐसी साहु[2] की बहार है ॥ ककूर[3] लौं बक्खर[4] लौं मक्कर[5] लौं चले जात टक्कर लेवैया कोऊ वार है न पार है। भूषन सिरोंज[6] लौं परावने परत फेरि दिली पर परति परिन्दन की छार[7] है ॥ ७ ॥

सारस से सूबा कर बानक से साहिजादे मोर से मुगल मीर धीर मैं धचै[8] नहीं । बगुला से बंगस बलूचियौ बतक ऐसे काबिली कुलंग याते रन मैं रचै

---

(१) खादर नदी के निकट की नीची भूमि को कहते हैं । इस में रूखापन बहुत होता है ।

(२) शिवा जी का पौत्र । छ० द० छन्द नं० १० नोट देखो ।

(३) एक कोकर देश मुलतान के पास है; एक कोकरा देश उडीसा और दक्षिण के बीच में है । कोक्करमंडा का एक दुर्ग तापती नदी के उत्तर किनारे पर है ।

(४) एक भक्खार गुजरात के पास थी और एक भाकर मुलतान के निकट था ।

(५) मकरान नामक एक स्थान सिन्ध के निकट था ।

(६) शीराज़ हो सकता है । सिरोज नामक एक स्थान बुन्देल खण्ड के पास भी है ।

(७) पूर्णोपमा, भयानक रस ।

(८) धरै नहीं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहीं ॥ भूषन जू खेलत सितारे मैं सिकार सम्भा[1] सिवा को सुवन जाते दुवन सचै[2] नहीं। बाजीं सब बाजकी चपेटैं चंग चहूँ ओर तीतर तुरक दिल्ली भीतर बचै नहीं[3] ॥ ८ ॥

राखी हिन्दुवानी हिन्दुवान को तिलक राख्यो स्मृति औ पुरान राखे वेद विधि सुनी मैं। राखी रजपूती रजधानी राखी राजन की धरा मैं धरम राख्यो राख्यो गुन गुनी मैं। भूषन[4] सुकवि जीति हद्द मर हट्टन की देस देस कीरति बखानी तव सुनी मैं। साहि के सपूत सिवराज समसेर तेरी दिली दल दाबि कै दिवाल राखी दुनी मैं ॥ ९ ॥

॥ समाप्तम् । शुभमस्तु ॥

(१) शम्भा जी महाराज शिवाजी के पुत्र थे। इन्होंने ९ वर्ष सन १६८९ ई० तक राज किया। ये महाराज बहादुर थे परन्तु अपने पिता की भांति मुन्तज़िम न थे। सन १६८९ ई० में औरंगजेब ने इन्हें पकड़ लिया और कहा "यदि तुम मुसल्मान हो जाओ तो तुम्हारा राज्य तुम को वापस कर दिया जाय" इस पर इन्होंने कहा "दुष्ट तुझ पर थू और तेरे मत पर थू"। इस पर औरंगजेब ने बड़े निर्दयी पन से इन्हें मरवा डाला।

(२) संचार नहीं करता।

(३) ये छन्द नं ७ व ८ शिवा बावनी से यहां आये हैं।

(४) इसे कुछ लोग मतिराम कृत मानते हैं ("कहै मतिराम" इत्यादि) परन्तु उनका शिवाजी के दरबार में जाना कहीं लिखा नहीं है। यह छन्द भूषण का ही जान पड़ता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषण-ग्रंथावली की

भूमिका।

"एक लहैं तप पुंजन के फल ज्यों तुलसी अरु सूर गोसाईं।
एकन को बहु सम्पति केशव भूषन ज्यों बलबीर बड़ाई॥
एकन को जसही सों प्रयोजन है रसखानि रहीम कि नाईं।
दास कबित्तन की चरचा गुनवन्तन को सुखदै सब ठाईं"॥

वास्तव में दास जी का उपरोक्त सवैया भूषण जी के विषय में जो कुछ कहता है वह बिलकुल ठीक है। सम्पति और बड़ाई जैसी कुछ कविता से भूषण जी को प्राप्त हुई वैसी औरों को नहीं मिली।

हमारी भाषासाहित्य में वीर रौद्र तथा भयानक रसों का सर्वोच्चपद है क्योंकि हिन्दी कविता इन्हीं रसों का अवलम्ब ले पृथ्वी पर अवतीर्ण हुई है। सबसे प्रथम जिस ग्रन्थ के निर्मित होने का हाल हम लोगों को ज्ञात है वह चन्दकृत पृथ्वीराज रासो है और वह विशेषतया इन्हीं रसों के वर्णन का भंडार है। उसके पश्चात् बीसलदेव रासो आदि जो ग्रन्थ बने उनमें भी विशेषतया इन्हीं रसों को आदर दिया गया है। मलिक मुहम्मद जायसी ने भी यत्र तत्र उपर्युक्त ग्रन्थों की भांति इन रसों का समावेश पद्मावत में किया है। तदनन्तर "चौथे पन जाइय नृप कानन" की बात स्मरण कर चौथे की कौन कहै श्रीरामचन्द्र जी की भाँति प्रायः पहिले ही पन में हमारी भाषा काव्य कानन चल दी और भगवत भजन करने लगी। अतः ऐसे रसों को छोड़ तुलसीदास, सूरदास, कबीर इत्यादि कवीश्वरों की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहायता से इसने शान्त* रस के बड़े ही मनोरंजक राग अलापे परन्तु असमय की कोई भी बात चिरस्थायी नहीं होती सो हमारी साहित्य का चित्त शांत रस में न लगा। शांत का वास्तविक प्रादुर्भाव तो शृंगार के पश्चात् होता है, जब विषयों का उपभोग कर प्राणी कुछ थक सा जाता है तभी उसके चित्त में राजा ययाति की भांति उन विषयों की तृष्णा हट कर निर्वेद का राज्य होता है। सो हमारी साहित्य ने अपना पुराना उत्साह तो छोड़ ही दिया था पर अब वह निर्वेद को भी तिलांजलि दे अपना शृंगार करने में पूर्णतया प्रवृत्त हो गई और हमारे कवियों ने पुण्यात्मा सरस्वती देवी को "नायकाओं" के गुण कथन में लगाया। इस कार्य्य में (जैसा कि हम हिन्दी काव्य आलोचना‡ में लिख चुके हैं) उनको विषयी और उद्योग-शून्य राजाओं से विशेष सहायता मिली। शृंगार रस के वर्णन में उसी समय से अब तक हमारी कविता ऐसी कुछ उलझ पड़ी है कि उस का छुटकारा होना ही कठिन दीखता है। वहां तो जहां देखिए पति अथवा उपपति और पत्नी का विहार, मान, दूतीत्व, पश्चात्ताप, बिरह की उसासैं, उपपतिओं और जारों की ताक झांक, सुरतान्त के लटके, नायकाओं के नखशिख और विशेष करके कटि नेत्र व नितम्बों के वर्णन, उलाहने, गणिकाओं का अधिक धन

---

* अवश्य ही सूरदास जी ने शृंगार एवं अन्य कतिपय कवियों ने और रसों की भी कविता की है पर प्रधानता शांत रस की ही रही।

‡ सरस्वती भाग १ संख्या १२ देखिए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वसूल करने का प्रयत्न इत्यादि इत्यादि विशेषतः यही हमारी कविता हम को दिखा रही है ! हमारे इस प्रबन्ध के नायक भूषण महाराज ऐसे ही समय में उत्पन्न हुए थे पर इन्हैं ऐसे वर्णन पसन्द न थे अतः वे लिखते हैं—

ब्रह्म के आनन ते निकसे ते अत्यन्त पुनीत तिहूपुर मानी ।
राम युधिष्ठिर के बरने बलमीकि हु व्यास के संग सोहानी ॥
भूषन यों कलि के कविराजन राजन के गुन पाय नसानी ।
पुन्य चरित्र सिवा सरजै बर न्हाय पवित्र भई पुनि बानी ॥

हमारे भूषण महाराज का यह भी एक बड़ा गुण है कि केवल शृंगार को ही नहीं बरन सभी अनुपयोगी विषयों को लात मार कर इन्होंने भारतमुखोज्वलकारी महाराज शिवाजी भौंसला एवं छत्रशाल बुंदेला जैसे महापुरुषों के गुण गान में अपनी अलौकिक कवित्व शक्ति को लगाया और ऐसे उपयोगी वर्णनों की ओर लोगों की रुचि आकर्षित की यहां तक कि इन्होंने सिवाय एक छन्द के (स्फुट कविता छन्द नं० ५ देखिए) और कुछ शृंगार रस के वर्णन में न कहा और उसमें भी, मानो प्रायश्चित्तार्थ, उन्होंने युद्ध का ही रूपक बाँधा है ।

हर्ष की बात है कि जैसे इन्होंने शृंगार एवं अन्य अनुपयोगी विषयों को लात मार बीर, रौद्र, भयानक रसों ही को प्रधानता देकर अन्य कवियों को सदुपदेश सा दिया वैसेही इनका मान भी ऐसा हुआ जैसा इससे श्रेष्टतर कवियों का भी कभी स्वप्न तक में न हुआ, जैसा कि दास जी के शिरोभाग में उद्धृत छन्द से भी प्रकट होता है । बिहारी लाल जी सदैव कलियुग के दानियों की निन्दाही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करते रहे ("तुम हूं कान्ह मनो भए आजु कालिह के दानि") परन्तु यह न विचार किया कि उन्हीं के समकालीन भूषण कवि किस प्रकार की कविता करने से किस स्थान को पहुंच गए हैं। अस्तु

शिवसिंह सरोज तथा अन्य पुस्तकों में इन महाशय के बनाए चार ग्रन्थ लिखे हैं, (१) शिवराज भूषण, (२) भूषण हजारा, (३) भूषण उल्लास, (४) दूषण उल्लास। इनमें अन्तिम तीन ग्रन्थों को आद्यावधि मुद्रण का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ है, और न हमने उन्हें कहीं देखा ही। नहीं मालूम उनके रचयिता भूषण जी हैं या नहीं। एक यह भी प्रश्न है कि शिवाबावनी एवं छत्रशालदशक कोई स्वतंत्र ग्रन्थ हैं अथवा भूषण की स्फुट कविता के संग्रह मात्र। प्रथम प्रश्न के उठने का यह कारण है कि किसी महाशय ने भूषणजी के उक्त चार ग्रन्थ होने का कोई प्रमाण नहीं दिया है। उन्हों ने केवल यही कह दिया है कि भूषण के ये चार ग्रन्थ हैं। यदि वे लिखते कि उन्होंने इन चार ग्रन्थों को देखा है अथवा उनका होना किसी स्थान विशेष पर किसी प्रामाणिक रीति पर सुना है, तो उनका कथन अधिक मान्य होता। हमारा इस विषय में यह मत है कि यद्यपि हम नहीं कह सकते कि भूषण महाराज के कौन कौन और ग्रन्थ हैं। ("हजारा" का होना कालिदास त्रिवेदी ने लिखा है, और उसका नाम यों भी बहुत सुन पड़ता है) तथापि इसमें सन्देह नहीं कि इन्होंने कुछ अन्य ग्रन्थ निर्माण अवश्य किए होंगे। इस मत की पुष्टि में निम्न लिखित बातें ध्यान देने योग्य हैं।

(१) भूषणजी ने शिवाजी के सन् १६७४ वाले राज्या-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भिषेक के वर्णन में एक भी छन्द न लिखा हो ऐसा सम्भव नहीं। ऐसे प्रधान उत्सव में कविजी अवश्य ही सम्मिलित होंगे अथवा घर से लौटने पर उसका पूर्ण वृत्तान्त तो उन्होंने सुना ही होगा। अवश्य ही भूषण शिवाजी को सदैव से राजा और महाराज कहते थे, पर शिवाजी भी तो ऐसा ही करते थे, सो जब उन्होंने अपना विधिवत् शास्त्रानुकूल अभिषेक बड़ी धूम धाम से करना आवश्यक समझा तब भूषण जी उसका वर्णन करना कैसे अनुचित मानते? जान पड़ता है कि कहीं न कहीं भूषण जी ने इसका वर्णन किया ही होगा पर जिस ग्रन्थ में यह वर्णन होगा वह अभी तक कहीं छिपा ही पड़ा हुआ प्रतीत होता है।

(२) इन महाशय ने कितनी ही अन्य सुप्रसिद्ध घटनाओं का अपने विदित ग्रन्थों में समावेश नहीं किया है, सो यदि इनके अन्य ग्रन्थों का प्रस्तुत होना न मानें तो आश्चर्य्य सागर में मग्न होना पड़ेगा। इसी प्रकार उस समय के कितने ही इनके निकटस्थ प्रसिद्ध व्यक्तियों के नाम तक इनके विदित ग्रन्थों में नहीं मिलते। भला शिवाजी और छत्रसाल की भेंट का हाल भूषणजी कैसे न लिखते? अथवा तन्नाजी, मोरो पंत एवं गुरुवर श्रीरामदासजी तथा कविवर तुकाराम जी का हाल लिखे बिना भूषणजी कैसे रहते? शम्भाजी के प्रधान कृपापात्र कुलूष नामक एक कन्याकुब्ज ब्राह्मण थे, जिन्हें औरंगज़ेब ने पकड़ कर मरवा डाला था। भूषण भी कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे तथापि क्या वे कहीं कुलूष का नाम ही न लिखते? शिवाजी का शील स्वभाव बनाने का उनके पालक दादाजी सोनदेव तथा उनकी माता जीजी बाई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का बड़ा प्रभाव पड़ा था तथापि क्या भूषणजी इनका कहीं नाम तक न लेते ? क्या यह सम्भव है कि भूषणजी ब्राह्मण होकर महात्मा रामदास के एवं कवि होकर मराठी कवियों के शिरोमणि तुकारामजी के विषय में एक दम मौन धारण कर लेते ? भूषणजी, जैसा कि आगे लिखा जायगा, साहूजी के राजत्व काल तक अवश्य जीवित थे, परन्तु इनके प्रस्तुत ग्रन्थों में साहूजी के विषय में केवल एक छन्द मिलता है । इन सब बातों से स्पष्ट विदित होता है कि भूषणजी के कई ग्रन्थ देखने का अभी हम लोगों को सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ है ।

(३) भूषणजी दीर्घजीवी हुए हैं, और प्रायः ८० वर्ष की अवस्था में उनका देहान्त हुआ । पर शिवराजभूषण उन्होंने केवल छः सात साल के भीतर (सन् १६६७ में १६७३--७४ ईसवी तक) बना डाला । उस समय के ४०-४१ वर्ष पीछे तक वे जीवित रहे, सो क्या इतने दिनों में उन्होंने दो चार भी अन्य ग्रन्थ न लिखे होंगे ? यह तो विदित है कि अन्तिम समय तक वे कविता करते रहे ।

शिवाबावनी एवं छत्रशालदशक के विषय में हमारा यह मत है कि वे स्वतंत्र ग्रन्थ कदापि नहीं हैं वरन भूषणजी के अन्य ग्रन्थों अथवा स्फुट कविता से संग्रहीत हुए हैं ।

कवि की जीवनी ।

भूषण महाराज कान्यकुब्ज ब्राह्मण कश्यप गोत्री त्रिपाठी (तेवारी) थे । इनके पिता का नाम रत्नाकर था, और यह त्रिविक्रमपुर (वर्तमान तिकवांपुर) में रहते थे । यह तिकवांपुर यमुना नदी के बाएं किनारे पर ज़िला कानपुर परगना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व डाकखाना घाटमपुर में मौजा "अकबरपुर बीरबल" से देा मील की दूरी पर बसा है। जो पक्की सड़क कानपुर से हमीरपुर को गई है, उसके किनारे कानपुर से ३० वें एवं घाटमपुर से ७ वें मील पर 'सजेती' नामक एक ग्राम है जहां से तिकवां-पुर केवल देा मील रह जाता है । "अकबरपुर बीरबल" अब भी एक अच्छा मौजा है जहां अकबर बादशाह के सुप्रसिद्ध मंत्री और मुसाहब महाराज बीरबल उत्पन्न हुए (शायद तब इसका कुछ और नाम हेा) और रहते थे (शि० भू० के छन्द नं० २६ व २७ देखिए) ।

सुना जाता है कि उक्त रत्नाकरजी श्रीदेवीजी के बड़े भक्त थे और उन्हींकी कृपा से इनके चार पुत्र उत्पन्न हुए । अर्थात् चिन्तामणि, भूषण, मतिराम और नीलकंठ उपनाम जटाशंकर ।

शिवसिंह सरोज में भूषणजी का जन्मकाल संवत् १७३८ विक्रमी लिखा है, परन्तु यह नितान्त अशुद्ध है । शिवसिंह जी के वास्तव में हम लेाग इस "सरोज" के कारण बड़े ऋणी हैं पर कहना ही पड़ता है कि उसमें सन संवत का बड़ा गड़बढ़ रहता है । शिवसिंहजी भूषण महाराज का शिवाजी एवं छत्रशाल के दरबारें में रहना मानते हैं पर शिवाजी सन् १६८० ईसवी (अर्थात् १७३६-३७ विक्रमी) में गेालेाकवासी हुए थे सेा क्या भूषण जी अपने जन्म के साल डेढ़ साल पहिले ही शिवाजी के यहां पहुँच गए ? भूषणजी लिखते हैं कि संवत् १७३० में उन्हेांने शिवराज भूषण समाप्त किया पर शिवसिंहजी भूषण एवं मतिराम देानें ही का जन्म संवत् १७३८ का लिखते हैं ! शेाक का विषय है कि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषण के ग्रन्थों से उनके जन्म काल का कुछ भी पता नहीं चलता न मतिराम कृत रसराज और ललितललाम अथवा चिन्तामणि कृत कविकुल कल्पतरु से ही कुछ सहायता मिलती है एवं मतिराम और चिन्तामणि कृत (अपूर्ण) पिंगलों में भी इसका कुछ पता नहीं । इन कवि-बंधुओं के कोई अन्य ग्रन्थ हमारे देखने में नहीं आए । भूषण-ग्रन्थावली की बंगवासी वाली प्रति की भूमिका में लिखा है कि चिन्तामणि जी के ग्रन्थ सन् १६२७ से १६५६ ईसवी तक बने । हम नहीं कह सकते कि इस कथन का क्या प्रमाण है परन्तु यदि वह सत्य मान लिया जाय तो चिन्तमणिजी का जन्म सन् १६११ ईसवी के पीछे का नहीं माना जा सकता क्योंकि १६ वर्ष की अवस्था के पहिले कोई मनुष्य कदाचित ही काव्यग्रंथ रच सके । इस हिसाब से भूषण का जन्म सन् १६१४ ईसवी के आसपास या उससे पहिले का मानना पड़ेगा । परन्तु हमने आगे सप्रमाण लिखा है कि भूषण जी प्रायः सन् १७१५ ईसवी तक जीवित रहे सो यदि वंगवासी वाली बात ठीक हो तो भूषण का एक सौ वर्ष से कुछ अधिक काल तक जीवित रहना पाया जायगा जो असम्भव नहीं तो संदिग्ध अवश्य है ।

यहां तक हम खण्डनालोचना (Destructive Criticism) की बातें लिखते आए अब इसी विषय पर मण्डनालोचना (Constructive criticism) लिखना उपयुक्त होगा । यह बात प्रसिद्ध है कि पहिले भूषण जी बिलकुल अपढ़ और निकम्मे थे एवं चिन्तामणि जी कमासुत और कुटुम्ब के आधार थे । भूषण सदा घर बैठे बैठे बग़लें बजाया करते और बड़े भाई की कमाई से पेट भरते थे । एक दिन भोजन करते समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषण ने अपनी भावज से लवण मांगा तो उसने क्रोध से कहा "हां, बहुत सा लवण तुमने कमा कर रख दिया है, जो उठा लाऊं !" यह बात इन्हें असह्य हो गई और इन्होंने मुँह का ग्रास उगल कर कहा "अच्छा अब जब नमक कमाकर लावेंगे तभी भोजन करेंगे ।" ऐसा कह भूषण जी खाली हाथ घर से यों ही निकल पड़े और कहते हैं कि इन्होंने अपनी जिह्वा काट कर श्रीजगदम्बा जी पर चढ़ा दी और ये एक दम भारी कवीश्वर होगए। इस बीसवीं शताब्दी में लोग शायद ऐसी बातों पर पूर्ण विश्वास न कर सकें पर कम से कम जीभ का काटना सम्भव हो सकता है। हमने एक भाट को देखा है, जिसने इसी भांति श्रीदेवी जी पर अपनी जिह्वा कुछ ही दिन पूर्व चढ़ाई थी पर शोक की बात है कि उसमें हमने कवित्व शक्ति कुछ भी न पाई। अस्तु जो हो, इसमें सन्देह नहीं कि भूषण जी ने इसी समय से विद्याध्ययन में बहुत चित्त लगाया और वे थोड़े ही दिनों में कविता करने लगे। इसके बाद वे चित्रकूटाधिपति हृदयराम के पुत्र रुद्रराम सुलंकी के आश्रय में कुछ दिन रहे। इनकी कवित्व शक्ति से प्रसन्न हो रुद्रराम ने इन्हें "कवि भूषण" की उपाधि दी और तभी से ये भूषण कहाने लगे यहां तक कि इनके मुख्य नाम का अब पता भी नहीं लगता (शि० भू० छन्द २८ देखिए) इन महाराज रुद्रराम सुलंकी का हमने चित्रकूट जाकर एवं बाँदा से जहां हम डेढ़ साल तक रहे हैं बहुत कुछ पता लगाया लेकिन कुछ भी न विदित हो सका और न बुन्देलखंड गजेटियर में ही इनका नाम मिला। कदाचित ये चम्पतिराय की मातहती में कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटे जमीदार हों अथवा रीवां वाले सुलंकियों के बबुवाने में हों । अस्तु ।

यहां से भूषणजी महाराज शिवाजी के दरबार को गए। यह वह समय था जब शिवाजी दक्षिण के अनेक दुर्ग जीत कर रायगढ़ में राजधानी नियत कर चुके थे । (शि० भू० छं० १४ देखिए) अर्थात् सन् १६६२ ईसवी के पश्चात । अनुमान होता है कि भूषणजी महाराज शिवाजी के यहां उस समय के कुछ ही पीछे पहुँचे थे जब वे दिल्ली से निकल आए थे, और छत्रसाल बुन्देला से मिल चुके थे अर्थात् सन् १६६७ ईसवी के अन्त में । निम्न लिखित विचारों से इस अनुमान की पुष्टि होती है ।

(१) शिवाजी के यहां पहुँचने पर भूषण उसका वर्तमान निवासस्थान रायगढ़ बतलाते हैं और सिवाय उसके और कहीं शिवाजी का रहना भूषण नहीं लिखते । शिवाजी रायगढ़ सन् १६६२ ईसवी में आए थे अतः भूषण उनके दर्बार में सन् १६६२ के पश्चात पहुँचे होंगे (शि०भू०छं१४व१६)

(२) शिवाजी सन् १६६६ में दिल्ली गए थे और वहां से लौट कर घर तक पहुंचने में उन्हें नौ मास लगे थे । अतः यदि इस समय के पहिले भूषणजी शिवाजी के यहां पहुँचे होते तो इस नौ मास के बीच में हतोत्साह होकर वे घर लौट आते । उन्होंने सन् १६७३-७४ ईसवी में शिवराज भूषण समाप्त किया और जान पड़ता है कि सन् १६६७ ईसवी में ही उन्होंने उसका निर्माण प्रारम्भ कर दिया था क्योंकि ग्रन्थारम्भ ही में तीन बड़े प्रभावशाली छन्दों में शिवाजी के दिल्लीश्वर से साक्षात्कार का वर्णन है । (छन्द नम्बर ३४,३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व ३८ देखिए)। यदि भूषणजी सन् १६६६ के पहले शिवाजी के यहां पहुँचे होते और हतोत्साह होकर लौट आते तो इतना शीघ्र एक ही साल के भीतर उस समय के भयावने मार्ग का इतना लम्बा सफर करके अपने घर से फिर महाराष्ट्र देश तक न पहुँच सकते। इससे विदित होता है कि शिवाजी के दिल्ली से लौटने के पश्चात् भूषणजी उनके दरबार में हाजिर हुए (अर्थात् सन् १६६७ में)।

(३) यदि भूषणजी सन् १६६७ के बीच तक शिवाजी के यहां पहुँच गए होते, जब कि छत्रशाल बुन्देला ने शिवाजी से भेंट की थी (लालकृत छत्रप्रकाश देखिए) तो वे इस भेंट का हाल शिवराजभूषण में ही कहीं न कहीं अवश्य लिखते। इससे जान पड़ता है कि १६६७ ईसवी के अन्त में भूषण शिवा जी के यहां पहुँचे होंगे।

अब यदि भूषण जी की भावज ने बीस वर्ष की अवस्था में उन्हें लवण सम्बंधी कटुवाक्य कहे हों (क्योंकि इससे कम अवस्था के लड़कों से ऐसी चानक की बात कदाचित कोई भी न कहेगा) और यदि तत्पश्चात भूषण के पांच वर्ष विद्याध्ययन और दूसरे पांच वर्ष कवित्वशक्ति सम्पादन एवं भूषण की उपाधि प्राप्त करने में लगे हों तो तीस बत्तीस वर्ष की अवस्था में ये महाशय शिवाजी के यहां (सन् १६६७ ईसवी में) पहुँचे होंगे। अतः इनका जन्मकाल सन् १६३५ ईसवी (सवत् १६९२) के लगभग मानना पड़ेगा। ऐसा मानने से इनकी पूरी अवस्था अस्सी वर्ष के आस पास पहुँचती है जो अयुक्त भी नहीं जान पड़ती। हमें इस मत के विरुद्ध कोई युक्तियुक्त बाधा नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देख पड़ती और इसलिये हम भूषण जी का यही जन्मकाल ठीक मानते हैं। इसके विरुद्ध दो एक महाशयों ने कुछ लिखा है पर किसी ने अपने कारण नहीं विदित किए अथवा उनके कारण ठीक नहीं जँचते।

भूषण जी के जन्म से लेकर रुद्रराम सुलंकी के यहां जाने तक में तो कोई दो मत नहीं हैं पर वहां से कतिपय लोग इनका दिल्लीश्वर औरंगज़ेब के यहां जाना बतलाते हैं और बादशाह से लड़ाई झगड़े की बातें करके उनका शिवाजी के यहां जाना मानते हैं पर ये बातें सर्वथा अग्राह्य हैं। बादशाह कोई साधारण जमीदार तो था ही नहीं, सो उनके सम्बंध में ऐसी कहावतें केवल लड़कों की कहानी मात्र मानी जा सकती हैं। शिवाबावनी में दो छन्द (नं० १४ व १५) ऐसे हैं कि जिन पर लोगों को ऐसी कहानियां गढ़ डालने का अच्छा अवसर हाथ लग गया। एक तीसरा छन्द (शिवाबावनी, छं० नं० ४१) अब तक प्रसिद्ध न था और न मुद्रित प्रतियों में उसका उल्लेख ही पाया जाता है नहीं तो ऐसे लोग इस खूंटी के सहारे कदाचित् कोई और भी आश्चर्य्यजनक कहानी लटका देते। कहानी यों है कि एक दिन बादशाह ने अपने कवियों से कहा कि आप लोग हमारी सदा प्रशंसा ही किया करते हैं सो क्या हममें कोई दोष है ही नहीं? इस पर भूषण जी ने क्षमा का बचन पाकर शिवाबावनी के कवित्त नं० १४ व १५ पढ़े जिससे औरंगजेब बहुत नाराज हुआ और भूषण जी उसकी सभा से चलदिए। तत्पश्चात् वे अपनी कबुतरी घोड़ी पर चढ़े चले जाते थे और उधर औरंगज़ेब जुमा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मस्जिद को नमाज़ पढ़ने जा रहा था*, सो भूषण ने उसे सलाम न कर उसके साथ वाले कवीश्वरों को प्रणाम किया। बादशाह ने क्रोधांध हो भूषण के पकड़ने को सवार दौड़ाए पर वे कबुतरी घोड़ी † मारे हुए निकल गए और किसी के हाथ न आए। भला ऐसी बातें क्या लड़कों की सी कहानी नहीं हैं? इस कथा पर जिस तरह से बिचार कीजिए वैसेही वह उटपटांग प्रतीत होती है। इसके विरुद्ध कुछ लोग एक दूसरी ही कहानी उड़ाते हैं कि भूषणजी ने औरंगजेब से यह कहा था कि मेरे भाई (चिन्तामणिजी) की शृंगार रस की कविता सुन कर आपका हाथ ठौर कुठौर पड़ता होगा पर मेरी वीर काव्य सुन कर वह मुच्छ पर पड़ेगा सो पहिले पानी से धोकर हाथ शुद्ध कर लीजिए। निदान ऐसी ऐसी कहानियों का खंडन करना व्यर्थ ही प्रतीत होता है। क्योंकि अवश्य ही वे साधरण आदमियों की चलाई हुई हैं, जिन्हें ऐसी बातों के विचारने की योग्यता ही न थी कि इतने बड़े बादशाह का कितना बड़ा और कैसा दरबार होगा और उसमें कैसी बात चीत होती होगी एवं औरंगजेब जैसे बादशाह के सम्बन्ध में ऐसी बातें कहां तक युक्ति युक्त मानी जा सकती हैं?

औरंगजेब के यहां भूषणजी के जाने का कोई भी प्रमाण नहीं मिलता अथवा यों कहिए कि हिन्दी के किसी भी कवि का उस दरबार में जाना प्रतीत नहीं होता।

---

* मानो वह कोई साधरण गांव का लम्बरदार हो। बादशाहों की सवारी ऐसे ही निकलती है!

† घोड़ी क्या मानो स्टीम एंजिन थी!

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरंगजेब के पुत्र आज़मशाह को अवश्य हिन्दी की प्रीति थी और उसने बिहारी सतसई को क्रमबद्ध कराया एवं देव-कृत भावविलास भी उसने "सुन्यो सराह्यो ग्रन्थ यह अष्ट याम संजूत"। औरंगजेब जैसे परधर्मद्वेषी कट्टर मुसल्मान का हिन्दी कवियों को आश्रय देना ही ध्यान में नहीं आता और दूसरे सिवाय एक भँडौवा के और दूसरा कोई कवित्त औरंगजेब के सम्बन्ध में हमने नहीं देखा न सुना ही। वह भँडौवा यों है।

तिमिर लंग लइ मोल रहीं बाबर के हलकें।
चली हुमाऊं संग गई अकबर के दल के॥
जहांगीर जस लियो पीठ को भार हटायो।
साहजहां करि न्याव ताहि पुनि माड़ चटायो॥
बल रहित भई पौरुष थक्यो भगी फिरत बन स्यार डर।
औरंगजेब करनी सोई लै दीन्हीं कबिराज कर॥

इस भंडौवा में किसी कवि का नाम नहीं और न यही ध्यान में आता है कि इतना बड़ा बादशाह किसी कवि को ऐसी बुड्ढी हस्तिनी देता। अवश्य ही यह षट पद कविराज श्री सुखदेव मिश्र का नहीं है। सम्भव है कि किसी उर्दू या फ़ारसी के कवि को बादशाह ने कोई हस्तिनी दी हो क्योंकि कवि यह नहीं कहता कि स्वयं उसी ने वह करिणी पाई अथवा यह भी सम्भव है कि औरंगजेब की कट्टरता से नाराज़ होकर किसी ने उसका उपहास करने को यों ही भंडौवा बना डाला हो॥ अस्तु।

या तो भूषण जी रुद्रराम सुलंकी के यहां से सीधे शिवाजी के यहां गए होंगे अथवा "अवधूतसिंह"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाडल बहू प्रसंस, वेतस विदाम बंस ॥ १२ ॥
बटबोर सिरिबोर, जानियै सुवर्ण जोर ।
सुपारी सरोस सेव, सिंदूरी सदा सुटेव ॥ १३ ॥
संगर सरस दल, सुरुझना सदाफल ।
बाग में गिनै विवेक, इत्यादि तरु अनेक ॥ १४ ॥
करत विहंग केल, मिथुन मिथुन मेल ।
मैन सारि सुआ मोर, चंचल बहू चकोर ॥ १५ ॥
सुनिये सबद्द सारु, हरष कुही हजारु ।
कोकिल करैं कुहक्क, मंजरी भषैं नहक्क ॥ १६ ॥
काबरि कपोत कोरि, तूती फरु लेत तोरि ।
लावारु तीतर लख, चंचु चारु मेवा चख ॥ १७ ॥
बटेर बाज बखान, सग गरुड़े सिंचान ।
जोराबर जहां जन्त, अश्व ते न आवे अन्त ॥१८॥
महल तहां महन्त, कनक कलस कन्त ।
रायांगन बहु रूप, भले भले बैठे भूप ॥ १९ ॥
चह बचा पिखे चारु, छुट्टत नल हजारु ।
दतीनिके सुंडादंड, उदक धारा अखंड ॥ २० ॥
बंगले बने विवेक, आछी कोरनी अनेक ।
सजल तहां सुसर, कमल कनक झर ॥ २१ ॥
रच्यौ राणा सीह, अनभ सदा अभीह ।
सरब रितु बिलास, बगीचा सदा सुबास ॥ २२ ॥
कुंअर पनै सुकेलि, बहू बिधि वृक्ष बेलि ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिनत न आवै गान, कहत कविंद मान ॥ २३ ॥

इति श्री मन्मान कवि विरचिते श्रीराजविलास शास्त्रे मच्छ ऋतु बिलास बोग बर्णन चतुर्थ बिलासः सम्पूर्णः ॥ ४ ॥

॥ दोहा ॥

पालिय प्रबर कुंआर पद, बरस तेइस बखान ।
पाट बइट्ठे पुहबी पति, राजसिंह महारान ॥ १ ॥

छन्द लघु नाराच ।

श्री राज सिंह रान जू, प्रभूत पुन्य प्रान जू ।
बइट्ठियें यु पाटकों, थटे यु भूप थाट कों ॥ २ ॥
अनूप हेम आसनं, सचिट्ठिके सुखासनं ।
महक्कि चारु मज्जनं, सुमज्जए दुसज्जनं ॥ ३ ॥
कलं कनक्क कुम्भ सौं, अनाइ गंग अंभ सों ।
शरीर कीन स्नानयं, बिराजि अंग बानयं ॥ ४ ॥
सकोमलं सुरंगयं, अंगुच्छि चीर अंगयं ।
सुधौतकं सु बासयं, षीरोदकं यु षासयं ॥ ५ ॥
ध्रुवं जनेउ धारये, कही सुबन्स कारये ।
प्रधान बन्धि पाघयं, सुबर्ण सूत साधयं ॥ ६ ॥
जरीस जोंति जामयं, दिपंत कण्ठ दामयं ।
प्रसंसि पाइ मोजरी, जराउ हेम संजुरी ॥ ७ ॥
करं गृहै कृपानयं, बियौ सु पंचबानयं ।
चढ़े तुरंग चंचलं, दहक्कि आसुरी दलं ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जमाति भूप जुत्तयं, सभा तहां सँपत्तयं ।
बजे अनेक बज्जनं, गंभीर गेन गज्जनं ॥ ९ ॥
ढमक्कि जंगि ढोलयं, रचे सुरंग रोलयं ।
निहस्सियं निसानयं, मृदंग मेघ मानयं ॥ १० ॥
बजन्त शङ्ख बीनयं, नफेरियं नवीनयं ।
तुटंत तान तालयं, सुघंट घोष सालयं ॥ ११ ॥
सहनाइयं सुहावईं, भनंकि भेरि भावईं ।
झणं झणंकि झल्लरी, द्रमंकियं दुरव्वरी ॥ १२ ॥
हुडक्कि जंत्र हट्टयं, सारंगि चंग सट्टयं ।
गोरीश गीत गावईं, प्रमोद चित्त पाँवई ॥ १३ ॥
बदन्त बिप्र बेदयं, अनेकसं उमेदयं ।
धषन्त ज्वाल धोमयं, हवी प्रभृति होमयं ॥ १४ ॥
भनैं बिरुद्द भट्टयं, सुबोलि बन्दि थट्टयं ।
तिलक्क कट्टि ताँमयं, सु प्रोहितं स काँमयं ॥ १५ ॥
उच्छारि मुत्ति अखए, यहै आसीस अखए ।
रधू नरिन्द राजयं, करौ स्वचित्त काजयं ॥१६॥
समप्पितं सु गामयं, दए सुलख दामयं ।
उतंग अश्व अंबरं, कनक्क चारु कुंजरं ॥ १७ ॥
दियौ सु अन्न दानयं, गिनै यु कोन गानयं ।
पयोद जानि पूरयं, दरिद्द कीन दूरयं ॥ १८ ॥
छजंत शीश क्षत्रयं, समिट्टि सर्व सत्रयं ।
छुरन्त चौर उज्जलं, दिपैं हयं गयं दलं ॥ १९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अभङ्ग जास सासनं, मनौं सुरेश आसनं ।
रजंत राज रान जू, कहैं कवीन्द मानजू ॥ २० ॥

॥ कवित्त ॥

पुष्कर गङ्ग प्रयाग तिच्छ अभिराम त्रिवेनिय ।
जगन्नाथ जालिपा देवि सुख संपति देनिय ॥
काशी बर केदार द्वारिका नाथ सु देखिय ।
गोदावरि गुनगेह बैजनाथह सु बिशेषिय ॥
इक लिंग ईश अवलोकियं दुष दोह गरुरहि टरैं ।
राजेश राण निरखत नयन मान मनोबंछित फरैं ॥२१॥
रस कूपिका रसाल कलपतरु अज्ज चढ़े कर ।
पारस रस पौरसा वेलि चिंत्रा सु देव वर ॥
हय गय हाटक पीर अवर सनमान पटम्बर ।
संपत्ता सुर रयण अद्य दुझ्यौ मनु अम्बर ॥
तुम दरश सोई तेजन तुरी सकल लच्छि सुख संबरैं ।
राजेश राण निरखत नयन मान मनोंबंछित फरैं॥२२॥

छन्द भुजङ्गी ।

तुही राम रूपं रवी बंश राजा, बजैं जास तिहुं लोक मैं सुयश बाजा । तुही लच्छ ईशं लहैं लच्छ लाहं, निराबाध तू ही सदा हिन्दु नाहं ॥ २३ ॥

तुही शंकरं एक लिङ्गं सरूपं, भनौं आदि बंभे तुही हिन्दु भूपं । तुही ब्रह्म गोपाल ब्रह्माबिराजै, नवै निद्धि अप्प पहूनं निवाजै ॥ २४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इला इन्द तूहीं दलै आसुरानं, करैं बज्र रूपं बिराजै कृपानं । तुही हिन्दुआं भान अरि तेज हारी मधूसूदनं तुंहि दरसे मुरारी ॥ २५ ॥

तुही चारु मुखं मनो पूर्ण चन्दं, अवै अमृतं बैन लहरी समुद्दं । तुही नाग नच्छे तुही दैत नागं, तुही पुष्करं तित्थ तूही प्रयागं ॥ २६ ॥

रजैं रूप तुहीं जगन्नाथ रायं, सदाचार रक्खैं सु भृत्यं सहायं । तुहीं गङ्ग गोदावरी तिच्छ गाजै, तुही कीन केदार कालंकि काजै ॥ २७ ॥

धरा मध्य तुही बियौ मानधाता, तुहीं छत्र धारी बहू भूमि त्राता । तुहीं काशिका बिबुध जन पाल कहहिये, सदा सैलराजां सिरैं तंस लहिये ॥ २८ ॥

तुही द्वारिकानाथ निज नैन दिठ्ठो, मनौ अमृतै बरसयौ मेघ मिठ्ठो । तुही कंस हर्त्ता कह्यौ सृष्टि कर्ता, भटौ कोटि सेवै पदं भूमि भर्ता ॥ २९ ॥

तुही जोग माया महा जङ्ग जित्तै, मधू शुंभ निशुंभ महिशेष हत्तै । तुही ज्यौति ज्वालामुखी रूप जागैं, मही छंडि तो अग्ग खल जूह भागैं ॥३०॥

जिते बिरुद धारंति जालंधरानी, कही देव तैसी तुम्हारी कहानी । तुही कंटकं मेटने कालकूटं, तुही अप्पई हेम माया अटूटं ॥ ३१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुंही बिश्वनेता तुंही कल्पवृक्षं, तुंही पात्र पौरसं ज्यौं प्रत्यक्षं । तुंही बीर धीरं तुंही चित्र बेली, करैं तं सुषल षंड रनरङ्ग केली ॥ ३२ ॥

महादान अप्पैं तुंही मेघ माला, सुदै हच्छि हेमं दुरंमा दुशाला । तुंहीं नाथ सुर रत्न तूंही निधानं, तुंही सर्व्व रस कुंपिका के समानं ॥ ३३ ॥

सदातं रधूराण श्रीराज सीहं, अजेजं अनंमो अभंगं अबीहं । लियें तंसु भुज अप्पने हिन्दु लाजं, रसा एक तूंही सु राजाधिराजं ॥ ३४ ॥

तुंहीं धर्म राजा धरा धर्म धारैं, तुंही आपदा खंडि कें के उधारे । निवेरे बहू भांति तं हद्द न्यावो, यहूं शंकरैं लख लखें पसावो ॥ ३५ ॥

तुंही ईह को वृन्द पूरन्त आसा, तुंही अक्खई दान चितें उल्हासा । लसें साइ तो राज लीला हजारं, कहो कोन लोपै तुम्हारो सुकारं ॥ ३६ ॥

भरैं दंड तुम अग्ग भारी भुवाला, बरं बारणं बाजि वृन्दं विसाला । तुंही कामिनी वल्लहं रूप कामं, नज निद्धि पावै लियै तं सुनामं ॥ ३७ ।

निपावन्त देवालये तं नवीनैं, पढ़े वेद तो अग्ग ब्रह्मा प्रवीनैं । तुंही एक दातार पुहवी अनूपो, रसा रखना राजतं राज रूपो ॥ ३८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिहों लोक धाराधरासं त्रिवेनी, दिशा व्योम तो लों शिवा सौख्य देनी । गिरा मान तोलों नईं किन्ति गाजै, रिधू राज सी राण मेवार राजै ॥ ३८ ॥

॥ कवित्त ॥

राजसिंह महाराज बन्धु बर बीर महाबल ।
महाराज अरि सिंह मोज अप्पै हय मेंगल ॥
सुरही बिप्र सहाय अनम अरि जूह उथप्पन ।
मृग रिपु कुल मृगराज क्रूर दुख दोहग कप्पन ॥
सुलतान गहन मोषन सगति टेकवन्त रिन नन टरैं ।
संसार सरन महाराज के आवे ते दर उग्गरैं ॥४०॥

छन्द वृद्धिनाराच ।

श्री राजसिंह रान के रिधू सुबन्धु रद्यए ।
गिरा नरिन्द क्रित्ति गाज गंग जानि गज्जए ॥
लिए सु सत्थ लक्ष नील लच्छि इन्द लद्यए ।
तपंत जास खग्ग तेज तिख मिच्छि तद्यए ॥ ४१ ॥
बहू बिबेक बुद्धि बीर बिश्व मैं बखानिए ।
प्रताप पुञ्ज पुन्य पाज प्राक्रमी पिछानिए ॥
परोपगारवन्त पुज्य पावनं प्रमानियैं ।
यु जातरूप रूप तैं अनूप रूप जानियैं ॥ ४२ ॥
अजेज गाढ़ आगरे इला धनी अभङ्गयं ।
जुरे सजूह सत्थ जोध जीतई सु जंगयं ॥
प्रधान दान देत प्रेम पुष्करी पवंगयं ।
पयोद ज्यों प्रसंसिए चवन्त भास चंगयं ॥ ४३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदार चित्त अखियें अहो निशं उल्हासकं ।
सु जास सर्व ग्रंथकार सिख वैस हासकं ॥
विचित्र वित्त बाम बाजि बारनं विलासकं ।
विशाल कित्ति चन्दवान सा प्रथी प्रकाशकं ॥४४॥
करन्त केलि केारि कन्त कन्ति जानि काम जू ।
विशिष्ट वान बाल वेस विंटयेा सु बाम जू ॥
नचन्त पात्र नायका गृहंति राग ग्राम जू ।
सदैव सौख्य सागरं सु मान ईस धाम जू ॥ ४५ ॥
सहाय साधु श्याम सेव सत्यता सुहावई ।
पुरान वेद पाठ के पढे प्रमोद पावई ॥
सु देत लक्खु २ दान दुःख को दुरावई ।
महीन्द महाराज को गुनी सु बोल गावई ॥ ४६ ॥
कृपान पानि दुठ काल क्रूर युद्ध कारई ।
धसक्कि मिछि जास धाक धुज्जि भीति धारई ॥
सुकज्ज सज्ज साहसी कसंबरं सुधारई ।
बजन्त सिन्धु बद्यनं महन्त सित्रु मारई ॥ ४७ ॥
तनू उतङ्ग तत्त तेज तीर बेग से तुरी ।
षिवन्त जानि विद्यु पाय षेगसं करैं षुरी ।
मदोन्मत्त रूप मेहकाय से लसे करी ।
करैं सु दत्त कित्ति काज सार सार जासिरी ॥४८॥
धपक्क कन्ति मिच्छि धारि धरा जाल धक्क हैं ।
सुसद्द बेधि अंग शंभु हद्द सीह हक्क हैं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढन्त पुठि चंचलं चमक्क च्यारि चक्क हैं।
गिरिन्द गाढ़ मैन गात संगि राग हक्क हैं॥ ४८॥
नऊ निधान लछि नाथ न्याउसं नरिन्द जू।
दिपन्ति कन्ति देह रूप देखते दिनिंद जू॥
पवित्त शीश आतपत्र चारु चौर चंचलं।
मुरद्य जास देश सन्धि सित्तु को न संचलं॥ ५०॥
नराधि रूप नाहरं निरन्तरं निसंकयं।
करी षलो विभछि कुंभ क्रूर नख कंकयं।
बलिठ मुठि वीर सो वहै विरुद्द बंकयं।
अनाथ नाथ विश्व उंट आन भुल्लि अङ्कयं॥ ५१॥
तिधार तिख तेग तिग्ग तेज ताप तोरई।
छतीश सत्थ धार छोह छीनि बन्धि छोरई॥
मजेज जङ्ग मण्डलों मसन्द मीर मोरई।
जयं जयं जपैं कविन्द जास कित्ति जोरई॥ ५२॥
निहस्सई निसान नाद नेज नूर नायकं।
लसे करी तुरंग लछि लक्ष लील लायकं॥
सनातनं सधर्म साहु सज्जनं सहायकं।
दबट्ट ई दरिद्द दोस दन्ति मत्त दायकं॥ ५३॥
मृजाद मेर महाराज मही सीस मंडलं।
बदै सुबोल जास विश्व वैहितं विहंडनं॥
षलौं दलों सु सज्जि खेग खग्ग वेग खंडनं।
दयाल देव दूबरेनि दुठ सठ दंडनं॥ ५४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुरेन्द चन्द सूर तें शरीर तास रूप हैं ।
अनेक जूथ सत्थ भूप भेटई सु भूप हैं ॥
समप्पई सुपत्त सिद्धि सोबनं सु सूप हैं ।
धराल शुद्ध जा दुधार धारि हत्थ धूप हैं ॥ ५५ ॥
डहक्कि मिल्हि जास डिम्भ डिम्भ बाम संभरे ।
जिहान आन केान जोध जंग आइ सो जुरे ॥
भुजाल भीच भारथों भयङ्क भीम ज्यों भिरैं ।
अरस्सि महाराज को गुनी सुबोल उच्चरैं ॥ ५६ ॥
अतेव अन्स अखियें इला अभङ्ग आन जू ।
दिनं दिनं सुमान देत राज सिंह रान जू ।
तवंत त्रैपुरा त्रिलोक उक जान त्रान जू ।
सु सद्द ए सुधा समं कहे कविन्द मान जू ॥ ५७ ॥

॥ कवित्त ॥

राजसीह महाराण कुंअर करमेत कुलोद्धर ।
जयवन्ता जग जोध जंग जीतन जोरावर ॥
अरि उलूक आदित्य घाउ मेारे पर गज घट ।
देत सुकवि कर दत्त प्रवर करि अश्व कनक पट ॥
कुंजर समिल्हि कुंभहि कलन कहिय कँधाला केहरी ।
जयसीह कुंअर दिन २ जयो उमगि गहन धर आसुरी ॥ ५८ ॥

छन्द उद्धोर ।

जय जय कुंअर श्री जय सीह । अति अवगाह अङ्ग अबीह ॥ उत्तम रूप सुक्रत अन्स । प्रवर पुहवि मांझ प्रसंस ॥ ५९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कट्टन दरिद दुख कलङ्क। मुख दुति जानि सकल मयङ्क॥ अप्पय लछि चित्त उदार। सच्चा सूर कुल अँगार॥ ६०॥

कमनीय काय अप्प कुँआर। अभिनव मदन को अवतार॥ उंपिति सहज पर उपगार। हरषत देत द्रव्य हजार॥ ६१॥

अंकुश सरिस जो अरि इभ। गाहत आसुरी धर गर्भ॥ धुज्जत असुर बर तस धाक। हक्कत सीह बन घन हाक॥ ६२॥

ए अवतार रूप अनूप। भेटहि जास बड़ बड़ भूप॥ राज कुंआर राजस रीति। उथपि जिनहि सकल अनीति॥ ६३॥

झलकत मस्म नर वर झुण्ड। प्रकट कि तरनि तेज प्रचंड। महिमा मेरु सबर मृजाद। वसुमति को न मंडय बाद॥ ६४॥

महि तल सकल मान महन्त। आनहि कुंअर अरि कुल अन्त॥ सुरही विप्र करन सहाय। गीपति सरस जसु जस गाय॥ ६५॥

गिनियहि मेरु गिरि वर गाढ़। डङ्कहि पिसुन नर असि डाढ़॥ घन तें अधिक दूढ़ घन घाउ। दिसि दिसि देत पर धर दाउ॥ ६६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्धुर तुरग श्री श्री कार । आखय अवल जन आधार ॥ सागर तोल चित्त समाव । परतक्ष करन लख पसाव ॥ ६७ ॥

बामा सत्थ वैरिन बन्धि । आनहि जेह अप्पन सन्धि ॥ निहिसित सत्थ नद्द निशान । उदधि सु नीर दल असमान । ६८ ॥

दुज्जन भरत हय गय दण्ड । अधिक प्रताप आन अखण्ड ॥ बिलसत बिबिधि बाम विलास । मनु रति नाथ द्वादस मास ॥ ६९ ॥

रीझत देत रीझ रसाल । मेंगल मत्त मोतिन माल ॥ सूरति सहसकिरन समान । अरि तम हरण इन उनमान ॥ ७० ॥

शस्त्र छतीस धार सुजान । पीरन प्रबल दुज्जन प्रान ॥ नाहर ज्यों सदैव निसङ्क । कूर सु कविन जनु नष कङ्क ॥ ७१ ॥

पिल्लहि पिशुन ईष प्रबन्ध । सहज उस्वास मरुत सुगन्ध ॥ वसुमति विभव विलसन बीर । निरमल सुजस सुरसरि नीर ॥ ७२ ॥

प्रवर सुमग्ग धरन प्रवीन । षग बल करत षल दल षीन ॥ मन्थर गति सु राजमराल । परठत अहित जनहि पयाल ॥ ७३ ॥

सोवन सरिस कन्ति शरीर । सुन्दर सबल सा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हस धीर ॥ लछिन चारु तसु तनु लछि। पर उपगार-वन्त प्रतछि ॥ ७४ ॥

ससि रवि सुर सुरेस्वर शंभु। उदधि सुमेरु सुर-सरि अम्भु ॥ अविचल ज्यौं लुए अवदात। बोलहि मान त्रिजग विख्यात ॥ ७५ ॥

॥ कवित्त ॥

बसुमति रखन बीर बिमल मति धरन क्षत्री वट।
सीसोदा कुल सेाभ झारि नंषैं अरि षग झट ॥
लीलापति बहु लछि सुगुनगाहक दृढ़ सायक।
न्यायवन्त गुरु नयन दत्त हय गय धन दायक ॥
भारथ समत्थ भुवि सुजसभर भागवन्त सु अभंगभर
श्रीराजसिंह महाराण केा भीमसिंह कूँवर सबर॥७६

छंद दण्डक।

भीमसिंह कुंआर मह भट। झूरि नंषहि अरिन बग झट ॥ घाउ घल्लन सीह गज घट। विरुदवन्त सुमन्त कुलवट ॥ ७७ ॥

बिभव तेज सदैव बट्टइ। कुंति ते कंटकन कट्टइ। गिरि समान गुमान गट्टइ। चढ़त हय रिपु चाक चट्टइ ॥ ७८ ॥

दुज्जनें सिर करत दंडह। अछि हय गय बल अखंडह। खग्ग बल खल खेत खंडह। अकल अप्प सदा अदंडह ॥ ७९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जङ्गजीतन जोध जग जस । रपटि रिपु रल तलहि रिन रस ॥ गोर गात सु गोध गुरु गस, बसु मती जिन कीन निज बस ॥ ८० ॥

बन्धि आनत सिन्धु वामहि, गाहि धर गढ़ कोट गामहि । जानि ऋतु पति अट्ट जामहि, धूपटे धन राज धामहिं ॥ ८१ ॥

सरस सुर सङ्गीत सज्जइ । नृतत पातुर नारि नज्जइ ॥ राग रङ्ग सु तान रज्जइ । मधुर धुनि सुनि मोद मज्जइ ॥ ८२ ॥

सुरहि सज्जन जन सहायक, लछिपति सम लील लायक ॥ प्रचुर हय गय सेन पायक, नर प्रधान नराधिनायक ॥ ८३ ॥

भीम भय गढ़ कोटि तज्जइ, ध्रसकि आसुरि धरनि धुज्जइ ॥ राजराण सु पुत्त रज्जइ, तिक्ख अरि तनु नेह तज्जइ ॥ ८४ ॥

सकल रद्य धुरा समत्थह । पिशुन पटकहि ज्यों सु पछह । सबल दल जिन चढ़त सत्थह । हेम हय गय देत हत्थह ॥ ८५ ॥

मत्त मीर मजेज मोरन । तुंग तर मेवास तोरन ॥ बीर बर गत धन बहोरन, जगत जय जस बाद जोरन ॥ ८६ ॥

क्रूर जसु कर कठिन कंकह, झाक बज्जत धुनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भनंकह । नित्य नाहर ज्यों निसंकह, बिरुद मरद सु बहय बंकह ॥ ८७ ॥

गहकि आसुरि सेन गाहत, ढुंढि ढुंढि सु शत्रु ढाहत । बज्र सम करबाल बाहत, सज्जि दल सुलतान साहत ॥ ८८ ॥

नूर नर नागर निरोगिय, अभय मन अह निसि असोगिय । भोगवे बहु भूमि भोगिय, स्वामि ज्यों सुन्दर संयोगिय ॥ ८९ ॥

स्वर्ण रङ्ग शरीर सुन्दर । प्रगट मनु पुहवी पुरन्दर । केवि जिन डर दुरत कन्दर, मानई षट ऋतु सुमन्दिर ॥ ९० ॥

निसुनि चढ़त निसान भद्दह, रङ्क रिपु कुल होत रद्दह । भीम दल जनु मेघ भद्दह, सुकवि बोलत तसु सुसद्दह ॥ ९१ ॥

राज राण सु नन्द रङ्गह । भीम रिपु दल करन भङ्गह । गाजई जस जानि गङ्गह । चन्द पूरन मास चङ्गह ॥ ९२ ॥

चिरञ्जीवि प्रताप जसु चिर, थान हय गय हों बहू थिर । शृष्टि तब लो अचर सुरगिर, गहकि बोलत मान जसु गिर ॥ ९३ ॥

इति श्री मन्मान कवि विरचिते राज विलास शास्त्रे राणा श्री राजसिंह जी कस्य पट्टाभिषेक विरुदावली प्रभृति वर्णनं नाम पञ्चमो बिलास ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ कवित्त ॥

चढ़े सेन चतुरङ्ग राण रवि सम राजे सर ।
मनो महोदधि पूर बारि चहु ओर सु विस्तर ॥
गय बर गुञ्जत गुहिर अंग अभिनव एरावत ।
हय बर घन हीसन्त धरनि खुरतार धसक्कत ॥
सल सलिय सेस दल भार सिर कमठ पीठि उठि
कल कलिय । हल हलिय असुर धर परि हलक
रबनि सहित रिपु रलतलिय ॥ १ ॥

छन्द पद्धरिय ।

सम्बत प्रसिद्ध दह सत्त भास । वत्सर सु पञ्च
दस जिठ मास ॥ सजि सेक राण श्री राज सीह ।
असुरेश धरा सज्जन अबीह ॥ २ ॥

निर्घोष घुरिय नीसान नद्द । सहनाई भेरि जङ्गी
सु सद्द ॥ अति बदन बदन बट्टी अवाज । सब मिले
भूप सजि अप्प साज ॥ ३ ॥

किय सेन अग्ग करि सेल काय । पिखन्त रूप
पर दल पुलाय ॥ गुंजंत मधुप मद झरत गळ ।
चरषी चलन्त तिन अग्ग पळ ॥ ४ ॥

सोभन्त चौर सिन्दूर शीश । रस रङ्ग चङ्ग अति
भरिय रीस ॥ सो झाल घटा मनु मेघ श्याम । ठन
कन्त घंट तिन कण्ठ ठाम ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उनमत्त करत अग्गग् अग्राज । बहु वेग जान पावै न बाज ॥ ढलकन्त पुठि उज्जल स ढाल । बर बिबिध वर्ण नेजा बिसाल ॥ ६ ॥

बोलन्त चलत बन्दी बिरुद्द । दीपन्त धवल रुचि शुचि विरद्द ॥ गुरु गाढ गेंद गिरिवर गुमान । पढ़ि धत्त धत्त मुख पीलवान ॥ ७ ॥

एराक अारबी अश्व ऐन । सोभन्त अवन सुन्दर सुनैन ॥ काश्मीर देश कांबोज कछि । पय पन्थ पौन पथ रूप लछि ॥ ८ ॥

बंगाल जात के बाजि राज । काबिल सु केक हय भूप काज ॥ खंधार उतन केहि खुरासान । वपु ऊंच तेज बर बिबिध बान ॥ ९ ॥

हय हीस करत के जाति हंस । कविले सुकि हाड़े भोर बंस ॥ किरडीए खुरहडे केसु रत्त । पीलडे केकली लेप वित्त ॥ १० ॥

चञ्चल सुवेग रहबाल चाल । थेइ थेइ तान् नञ्चन्त थाल ॥ गुंथिय सुजान कर केस बाल । बनि कन्ध वक्र सोभा विसाल ॥ ११ ॥

साकति सुबर्ण साजे समुख । लीने सु सत्थ हय एक लख ॥ रवि रथ तुरङ्ग सम ते सरूप । भनि विपुल पुठि तिन चढ़े भूप ॥ १२ ॥

पयदल सु सज्जि पोरष प्रधान । जंघालु जङ्ग

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जौतन जवाँन ॥ भट विकट भीम भारत भुजाल। साधर्म्मि सूर निज शत्रु साल ॥ १३ ॥

निलवट सनूर रत्ते सु नैंन । गय थाट घाट अप घट गिनैन ॥ धमकन्ति धरनि चल्लत धमक्क । धर हरत कोट जिन सबर धक्क ॥ १४ ॥

बंकी सु पाघ वर भृकुटि बंक । निर्भय निरोग नाहर निसंक ॥ शिरटोप सज्जि तनु त्रान संच । प्रगटे सु बन्धि हथियार पंच ॥ १५ ॥

कटि कसे कटारी अरु कृपान । बंदूक ढाल कोदण्ड बान ॥ कमनीय कुन्त कर तोन पुठि । मारन्त शद्द सुनि सबल मुठ्ठि ॥ १६ ॥

गल्हार करत गज्जन्त गैन । बोलंत बंदि बहु विरुद बैन ॥ मुरन्त मुंछ गुरु भरिय मान । गिनि कोन कहै पायक सु गान ॥ १७ ॥

बहु भूप थट्ट दल मध्य बीर । सुरपति समान शोभा सरीर ॥ श्रीराज सिंह राणा सरूप । गजराज ढाल आसन अनूप ॥ १८ ॥

शीशे सु छत्र बाजन्त सार । चामर ढलंत उज्जल स चारु ॥ घन सजल सरिस दल घाघरट्ट। भाषन्त विरुद बर बन्दि भट्ट ॥ १९ ॥

कालंकि राय केदार कत्थ । अस कत्ति राय थप्पत समच्छ ॥ हिन्दू सु राय रखन सुहद्द। मुगलाँन राय मोरन मरद्द ॥ २० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविलान राय कट्टन सु कन्द। दुतिबंत राय हिन्दू दिनेंद॥ अरि विकट राय जाड़ा उपाड। बलवन्त राय बैरी विभाड॥ २१॥

अन पुट्ठि राय पुट्ठिय पलाँन। भल हलत रूप मध्यान भान॥ रायाधिराय राजेश रान। जगतेश नन्द जय जय सुजान॥ २२॥

बाजीनि चरन खुरतार बग्ग। मह अनड कट्टि कीजन्त मग्ग॥ झलझलिय उदधि सलसलिय सेस। कलकलिय पिट्ठि कच्छप असेस॥ २३॥

रजथान सजल जलथान रेनु। धुन्धरिग भान रज चढ़ि गगेनु॥ अति देश देश सु वढ़ी अवाज। नट्ठे सु यवन करते निवाज॥ २४॥

हलहलिय असुर धर परि हलक्क। षलभलिय नैर पर पुर षलक्क॥ थरहरें दुर्ग मेवास थान। रचि सेन सबल राजेश रान॥ २५॥

सुलतान मान मन्नी ससङ्क। वलवन्त हिन्दुपति बीर बङ्क॥ आयौ सुलेन अवनी अभङ्ग। आलम सु भयौ सुनि गात भङ्ग॥ २६॥

॥ कवित्त॥

ऊचलि गयो अग्गरो दन्द मच्यौ अति दिल्लिय।
हाजीपुर परि हक्क डहकि लाहौर सु डुल्लिय॥
थरस लयौ रिनथम्भ धसकि अजमेर सु धुज्जिय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूनौ भयौ सिरोंज भगग भै लसा सु भज्जिय ॥
अहमदाबाद उज्जैनि जन थाल मूंग ज्यों थरहरिय ।
राजेस राण सु पयान सुनि पिशुन नगर खरभर परिय॥२७

छन्द मकुन्द डामर ।

चतुरङ्ग चमूं सजि सिन्धुर चञ्चल बङ्क बिरुद्द दान बहैं । अवधूत अजेज तुरङ्ग उतंङ्गह रङ्गहि जे रिपु कट्टि रहैं ॥ अवगाढ़ सु आयुध युद्ध अजीत सु पायक सत्थ लिये प्रचुरं । चित्रकोट धनी सजि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥ २८ ॥

अति बट्टि अवाज भगी दिसि उत्तर पंथ पुरंपुर रौरि परी । वह कन्त सु त्रम्बक नूर वहं वह षेंग महा षिति बज्जि षुरी॥ उडि अम्बर रेन बहूदल उम्मडि सोषि नदी दह मग्ग सरं । चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय माल पुरं ॥२९॥

करते बहु कूच सुकाम क्रमं क्रमि पत्त सु नागर चाल पहू । भहराय भगे धर लोक महा भय सून भये अरि नैरस हू ॥ असुरेश कै गेह सुवट्टि उदंगल डुल्लिय दिल्लिय सन्नि डरं । चित्रकोट धनी चढ़ि राज सी राण युमारि उजारिय माल पुरं ॥ ३० ॥

दल बिंटिय माल पुरा सु चहौं दिसि उपम चन्दन जान अही । तहँ कींन मुकाम घुरंत सु त्रंबक सोच परयौ सुलतान सही ॥ नरनाथ रहे तह सत्त अहो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निशि सोवन मारस धीर धरं। चित्रकोट धनी चढि राजसी राण यु मारि उजारिय माल पुरं ॥ ३१ ॥

भर चौकिय देत चहौं दिशि भूपति सोरभ टक्क आराब सजैं। हुसियारि कहैं बर जोध हंकारहि हींसत है गजराज गजैं ॥ सुहलाल हजार जरै सब ही निसि घोष सु नौबति नन्द घुरं। चित्रकोट धनी सजि राजसी राण यु मारि उजारिय मालपुरं ॥३२॥

धक धूनिय धास सु कोट धकाइय गौषरु पौरि गिराइ दिये। ढम ढेर करी हट श्रेणि ढुढारिय कंकर कंकर दूर किये ॥ पति साह सु दज्झन नैर प्रजारिय अंबर पावक झार अरं। चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मार उजारिय माल पुरं ॥ ३३ ॥

तहां श्रीफरु पुंगिय लौंग तमारह हिंगुल केसरि जायफलं। घनसार मृगंमद लीलि अफीमि अँबार जरन्त सु झारझलं ॥ उडि अग्गि दमग्ग सु दिल्लिय उप्पर जाय परे सु डरैं असुरं। चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय माल पुरं॥३४

धर पूरिय धोंम धराधर धुंधरि धाम भरे धन धान धषैं। रबि बिम्बति हौं दिन गोप रह्यौ लुटि लच्छि अनन्त सु कोंन लषैं ॥ सिकलात पटम्बर सूफ सु अम्बर इंधन ज्यों प्रजरैं अगरं। चित्रकोट धनी चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय माल पुरं ॥३५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति रोसहिं कीन इलातर उप्पर कंचन रू
निधान कड़े । भरि ईभष जान सुखच्चर सूभर वित्तहि
भृत्य अनेक बढ़े ॥ जस वाद भयौ गिरि मेरु जितौ
हरषे सुर आसुर नूर हरं । चित्रकोट धनी चढ़ि राज
सी राण युमारि उजारिय माल पुरं ॥ ३६ ॥

जय हिन्दु धनी यवनेशहिं जीतन मारन तूं ही यु
म्लेछ महो । अवतार तुहीं इल भार उतारन तोका
षग्ग प्रमान कहीं ॥ जगतेश सु नंद जयौ जगनायक
बंस विभूषन बीर बरं । चित्रकोट धनी चढ़ि राज
सी राण यु मारि उजारिय माल पुरं ॥ ३७ ॥

निज जीति करी रिपु गाढ़ नसाइय आए
देत निसान खरे । पयसार सु कीन सिंगारि उदयपुर
आइ अनेक उछाह करे॥ कबि मान दिए हय हत्थिय
कंचन बुट्ठिय जानि कि बारि धरं । चित्र कोट धनी
चढ़ि राजसी राण यु मारि उजारिय माल पुरं ॥३८॥

॥ कबित्त ॥

माल पुरहिं मारयौं कनक कामिनि घर घर किय।
गारिय आसुर गाढ़ नीर चढ़यौ सु बन्स निय ॥
इन कुल नीति सु एह गट्ट आलम गहि मोषन।
अनमी अनड अभङ्ग नित्य निर्म्मल निरदूषन ॥
अज सिंह पियै जल घाट इक षग्ग तेज लीयै सुषिति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजेश राण जगतेश सुत पुन्यवन्त मेवार पति॥३८

इति श्री मन्मान कवि विरचिते श्रीराजविलास शास्त्रे
राँणा श्रीराज सिंह जी कस्य दिग्जय वर्णन
नाम षष्टम विलास: संपूर्ण: ॥ ६ ॥

॥ दोहा ॥

मारु बारि महि मंडले, रूप नगर बहु रूप ।
राज करै तहं रट्ठ बर, मानसिंह मह भूप ॥ १ ॥
सो नृप औरंग साहि कौ, अकुली बल उमराव ।
सूर बीर सच्चौ सुभट, दैंन पर धरहि दाव ॥ २ ॥
भगिनी तस घर एक भल, सुभ लच्छिनी सयान ।
बेष बाल षोरस बरस, नख सिख रूप निधान ॥३॥
रमा रूप के रम्भ रति, गौरीसै गुन ग्राम ॥
रूपसिंह राठौर की, सुता सु लक्षन धाम ॥ ४ ॥

॥ कवित्त ॥

धरनि प्रगट मरू धरा बसैं तहं रूप नगर वर ।
मान सिंह तहं महिप रज्ज रज्जन्त रट्ठ बर ॥
बहनि तास गृह प्रवर रमा रूपें कि रम्भ रति ।
रूपसिंह पुत्ती स गात कञ्चन गयन्द गति ॥
बोलन्त मधुर धुनि पिक बयन निशिपति आनन
मृग नयन । चउसठ कलान कुंवरी चतुर मन मोहन
मन्दिर मयन ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छन्द गुणावेलि ।

कहिये सुभ राज कुंआरी, अच्छी अपच्छरी अनुहारी । वपु सोभा कञ्चन बरनी, हरि हर ब्रह्मा मन हरनी ॥ ६ ॥

सचि सुरभि स कोमल सारी, कव्वरि मनु नागिनि कारी । सिर मोती मांग सु साजैं, राषरी कनक मय राजैं ॥ ७ ॥

लखि शीश फूल रवि लोपैं, अष्ठमि शशि भाल सु ओपैं । बिन्दुली जराउ बखानी, अलि भृकुटि ओपमा आनी ॥ ८ ॥

छवि अञ्जन दृग मृग छोना, पतनिय श्रुति जरित तरोना । नकबेसरि सोहति नासा, पयनिधि सुत लाल प्रकाशा ॥ ९ ॥

पल उपचित गच्छ प्रधानं, अति अरुन अधर उपमानं । रद दारिम बीज रसाला, पढ़िये मनु बिम्ब प्रवाला ॥ १० ॥

कलकण्ठ सुरसना कुहकें, मुख स्वास कुसम वर महकें । चित चुभी चिबुक चतुराई, ससि पूरन वदन सुहाई ॥ ११ ॥

मनु काम लता इह मोरी, नीकी गर पोतिन बोरी । कँठसिरी तीलरी कहियै, चम्पकली हंस सुभ चहियै ॥ १२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मयगल मोतिन की माला, मनि मण्डित झाकझमाला । चोकी चामीकर चंगी, रतनाली छबि बहुरंगी ॥ १३ ॥

अष्टादश सर अभिरामं, नव सर षट सर किहि नामं । हारावलि मण्डित हेमं, पहिरी बर कण्ठहि पेमं ॥ १४ ॥

उर उरज उभय अधिकाई, श्री फल उपमा सम भाई । लीलक कंचुकी निहारी, भुजदण्ड प्रलम्ब सभारी ॥ १५ ॥

बर करन कनक मय बन्धं, बिलसत दुति बाजू बन्धं । चूरो कंकन सो चहिये, गजरा पोचिय गुन गहिये ॥ १६ ॥

मुद्रिय अंगुरि मन मानी, कंचन नग जरित कहानी । महदी मय बेलिसु मंडी, तिन पानि सोभ बहु तंडी ॥ १७ ॥

मच्छोदरि तिवलिय मध्भे, वापी सम नाभि सु बुध्भे । कटि मेषल मनि कुन्दन की, तरनिय सी सोभा तिनकी ॥ १८ ॥

चरना रङ्गित बहु चोलं, पहिरन बर पीत पटोलं । वर समर गेह सुचि बिम्बं, नीके गुरु युगल नितम्बं ॥ १९ ॥

करि कर जंघा जुग कन्तं, झंझरि पय धुनि झमकन्तं । पाइल क्षुद्राबलि रंगं, आभूषन और उपंगं ॥२०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुचि सहज पाइ तल रत्तै, जावक वर सोभ सु जित्ते। गोरी सी सागय गवनी, रम्भा रति केहरि रवनी ॥ २१ ॥

जसु रूप अधिक इक जीहा, लहियें क्यौं पार सुलीहा। कवि मान कहै सुखकारी, नन ता रुम को वर नारी ॥ २२ ॥

॥ कवित्त ॥

इक दिन आलम अखि बचन विपरीति रज्ज बल। सुनि राठोर सु जानि मान मृगराज राज कुल। हमहिं देहु चित हरषि बहिनि तुम सुनिय रूप बर देहु तुमहि धर देश गाउ हय गय समान गुर ॥ रठोर ताम आधीन रुख तुरक बचन किन्नो तहति। कलि युग प्रमान कवि मान कहि कमधज कछ-वाहा कुमति ॥ २३ ॥

दोहा।

मान सिंह नृप सोचि मन, तुरक बिचारिस तप्प। कन्या तब ब्याहन कही, औरंजेबहि अप्प। २४ ॥

छन्द त्रोटक।

सुनि बत्त सु रूप सुता अबनं, विलखाइ बदन्न भई विमनं। तिहि सोचहि अन्न रु पान तजे, भह-राइ परी नन धीर भजे ॥ २५ ॥

करुना करते इह रीति करी, अब आसुर गेह तिया अमरी। गुरु संकट तें मुहि कोंन गहें, कुन-नन्ति सखी जन मंझ कहें ॥ २६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरि शृङ्ग उतंगनि तें यु गिरों, कुल कज्ज हलाहल पान करो । जरतें झर पावक कुण्ड जरों, बरिहो सुर आसुर हो न बरों ॥ २७ ॥

जिन आनन रूप लंगूर जिसो, पल सर्व भषें सुर सौं युग सौं । जिन नाम मलेछ पिशाच जनो, सुर ही रिपु होन न स्याम मनों ॥ २८ ॥

मन सोचति ही उपज्यो सु मतो, छिति छत्रपती बर हिन्दु छतो । श्रीराजसि राण खुमान सदा, अब ओट गहो तिन की सु मुदा ॥ २९ ॥

पुहवी नन तासम छत्रपती, रविबन्स विभूषन भाल रती । धर आसुरि मारन हिन्दु धनी, सरनै मो रक्खन सोइ धनी ॥ ३० ॥

लहि ओसरि सुन्दर पत्र लिखें, चित्रकोट धनी अबरूय रखे । हरि ज्यों सु रुकुंमनि लाज रखी, अब ला यों रखहु आस मुखी ॥ ३१ ॥

गजराज तजे खर कोन गहें । सुर बृक्ष छतें कुन आक चहें । पय पान तजे विष कोन पिये, लहि पाचरु काचहि कोन लिये ॥ ३२ ॥

बग हंसनि क्यों घर बास बसें, न रहे फुनि कोकिल कग्गर से । सस सिंहनि ज्यों नन देखि सके, बिन बुद्धिय आसुर बादि बके ॥ ३३ ॥

नर नायक तो सम ओर नही, सरणागय बत्सल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू जसही । प्रभु के सु लुली लुलि पाय परों, कर जोरि इती अरदास करों ॥ ३४ ॥

सजि सेन सु आवहु नाह इतें, अबला सु छुड़ावहु आसुरतें । सु लई ज्यों राघव सीत सती, हठ कार करावन राय हती ॥ ३५ ॥

करि भीर प्रभू निज कामिनि की, बलि जाउ सदा तुम जामिनि की । इन कज्जहि लाइक तूजइला कुल नीर चढ़ाउन देव कला ॥ ३६ ॥

लिखि लेख समै द्विज सट्टि लियौ, कहि भेद सु कग्गद हत्थ दियेा । मुष बैन दिढ़ाइरु शीष करी, धर पत्त बहू सुउमङ्ग घरी ॥ ३७ ॥

पहुंच्येा सु उदय पुर माझ पही, महाराणहि भेटि असीस कही । जय हिन्द धनी जगतेश सुतं, श्री राजसि राण जगत्त जितं ॥ ३८ ॥

गुदराइय लेख कुमारि गिरं, अति हर्ष भयेा नर नाह उरं । करुनाकरि विप्र समान कियेा, दिल उत्सक उंचित दान दयेा। । ३९ ॥

महि मानिनि जानि दसारु मिलैं, घर आवत लच्छिय कौन ठिलै । इह चित्तहि ठानि के बीरु बली, रति पाइ महा रस रङ्ग रली ॥ ४० ॥

घन नोवति नद्द निसान घुरे, अवनीस अनेक उछाह करे । चढ़ि चंचल वाम मिलाप चहें, कवि नायक येां कवि मान कहें ॥ ४१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ कवित्त ॥

अवलाकृत अरदास विप्र मुष वसु निरु विष खन ।
चित्रकोट पति चढ़े रूप कुंअरी पति रखन ॥
घुरत निसाननि घमस गुहिर घन ज्यों गय गज्जन।
सुभ बन्दी जन सद्द बाजि खुरतार सु बज्जन ॥
हय हंस चढ़े चामर ढलत धवल छत्र शीशहिं धरिय ।
सोवन जराउ युत सेहरो सुन्दरि ब्याहन संचरिय॥४२॥

॥ दोहा ॥

दैन बधाई सोइ द्विज, रूप सुता प्रति रंग ।
आयो सेना अग्ग तें, उद्यमवन्त अभङ्ग ॥ ४३ ॥
अखिय आइ बधाइ इह, बारी तो बड़ भाग ।
राण राजसी राज बर, आए धरि अनुराग ॥४४॥
सुनि सु बधाई नृप सुता, उपज्यो उर उल्हास ।
कनक रजत पटकूल करि, पूरन किय द्विज आस ४५
रूप नगर महाराण की अधिक बढ़ी सु अवाज ।
मानसिंह नृप हरषि मन, सजै ब्याह वर साज॥४६॥
बंधे तोरन रतन मय, थप्पि रजत युग थम्भ ।
कनक कलस मंडित मुकुर देषत होत अचम्भ ॥४७॥
चोरिय मण्डिय चित चुरस, कनक भण्ड बहु आनि ।
मंडप खम्भ सु कनक मय, गूडर जरकस तानि ४८।

छन्द रसावल ।

राण राजेसरं, बीर हिन्दू बरं ।
ऊंच तनु अम्बरं, सुरति सा डंबरं ॥ ४८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हंस हय सुन्दरं, स्वर्ण साकति धरं ।
प्रगट गति पातुरं, आरुहे आतुरं ॥ ५० ॥
सीस बर सेहरं, जरित हेमं जरं ।
षग्ग करि षंडरं, सेत छत्रं सिरं ॥ ५१ ॥
चारु दो चामरं, कनक दंडं करं ।
बिझए दो नरं, रूप एतं बरं ॥ ५२ ॥
भीर मत्ती पुरं, नेन नारी नरं ।
निरष ए नर बरं, उल्हसं ते उरं ॥ ५३ ॥
बाजि घन घुम्मरं, भूरि चढ़े भरं ।
सेन बहु सिंधुरं, प्रचुर पायक चरं ॥ ५४ ॥
घोष नौवति घुरं, सोर वन्दी सुरं ।
धरनि रज धुन्धरं, ढंकियं दिनकरं ॥ ५५ ॥
सोषि सलिता सरं, थान रिपु थर हरं ।
अमग मग्गं परं, पत्त पहु सुर धरं ॥ ५६ ॥
राग रमनी रसं, नाह अद्धी निसं ।
पत्त पुर गेयरं, तूर त्रम्बक घुरं ॥ ५७ ॥
पील सों तें जरे, पार को उच्चरें ।
हिंस ई हेम्बरं, गज्ज घन गैम्बरं ॥ ५८ ॥
सरल सरनाइयं, गायनं गाइयं ।
राग षंभा इती, अवन सम्भा इती ॥ ५८ ॥
सोर सग गट्टयं, भोंचपा छुट्टयं ।
विरुद बन्दी वदै, सरस जै जै सदै ॥ ६० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप नैरं रली, गेारि घन ऊछली ।
सैन सिंगारयं, सज्जि पैं सारयं ॥ ६१ ॥
बज्जनं बज्जई, गेन घन गज्जई ।
गावहीं गीतयं, वाम रस रीतयं ॥ ६२ ॥
कीन निवळाबरी, सू हवं सुन्दरी ।
स्वर्ण सालङ्करी, मुत्ति थारम्भरी ॥ ६३ ॥
उछरैं दामयं, रूप अभिरामयं ।
इन्द्र ज्यों वर्षयं, बन्दि बहु हर्षयं ॥ ६४ ॥
मांन रठोर के, द्वार कुल मेार के ।
तोरनं बन्दियं, अधिक आनन्दियं ॥ ६५ ॥
राजसी रान जू, प्रबल षग प्रान जू ।
रठबरि ब्याहई, सद्धि पत्ति साहई ॥ ६६ ॥

॥ कवित्त ॥

ब्याह बेर वपु प्रकर रूप पुत्ती सिंगार रचि ।
नषसिष रूप निधान सेाभ पाई सरूप सचि ॥
शिर सेहरेा सतेज स्वर्ण मणि जरित कांति कल
सखि चहु ओर समूह गीत गावन्त सु मङ्गल ॥
रढ लीन भली ते रठबरि परमेश्वर रखी सु पत्ति ।
श्रीराज राण जगतेशको पति पायेा सब हिन्दु पति६७
राजसिंह महाराण सरस कर ग्रहन समय लहि ।
सजि अमेाल शृङ्गार कान्ति सुरपति समान कहि ।
सेाहत सिर सेहरेा कनक नग लाल जरित शुभ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटि सुन्दर करबाल हंस हय चढ़े यट्ट दृभ ॥
बहु भूप सेन बिचि बीर बर हय गय मय गय
ताम हुअ । घन त्रम्बक बर नौवति घुरहि जोतिह
लाल अपार हुअ ॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

बहु सेना बिचि बीर बर, अश्व हंस आरोह ।
शीश छत्र वर सेहरो, चामर ढलत सु सोह ॥ ६९ ॥

॥ चन्द्रायन ॥

चामर ढलत सु सोह उबारत द्रव्य अति ।
बन्दी बोलत बिरुद चिरं चीतोरपति ॥
पिखत प्रजा असंखन बुझहिं अप्प पर ।
रङ्ग मण्डप रस रङ्ग प्रपत्ते ईश वर ॥ ७० ॥

॥ दोहा ॥

रँग मण्डप बहु रङ्ग रस, प्रवर दुलीच बिछाय ।
रूप सुता रस रङ्ग मैं, सकल सखी समुदाय ॥ ७१ ॥

॥ चन्द्रायन ॥

सकल सखी समुदाय सुहाइय सुन्दरिय ।
मण्डप मध्य सु आइय अभिनव अच्छरिय ॥
बिप्र पढ़त बहु बेद हवन करि करि हवी ।
सूर चन्द सुर साखिय सज्जन संठवी ॥ ७२ ॥

॥ दोहा ॥

सूर चन्द सुर साखि सब, बर गँठ जोरा बन्धि ।
बन्धी मनु हित गंठि दृढ़, दम्पति उभय सम्बन्धि ॥७३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना

———:o:———

अब तक ग्रन्थमाला की गत उन्नतीस संख्याओं में निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं।

संख्या १ और २

(१) ध्रुवदास की भक्त नामावली। भक्तों के संक्षिप्त वृत्तान्त सहित। सम्पादक बाबू राधाकृष्ण दास। मूल्य ॥≡)

(२) सदलमिश्र की चन्द्रावती। सम्पादक बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०। मूल्य ।=)

संख्या ३, ४, ५, ६, ७, ८ और ९

(३) सूदन कवि का सुजान चरित्र। सम्पादक बाबू राधाकृष्ण दास। मूल्य २)

*(५) लाल कवि का छत्र प्रकाश। सम्पादक बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए०। मूल्य १।)

(६) नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी। सम्पादक बाबू राधाकृष्ण दास। मूल्य ।=)

संख्या १०

(७) चन्द्रशेखर का हम्मीरहठ। सम्पादक बाबू जगन्नाथदास बी० ए० (रत्नाकर) मूल्य ॥)

संख्या ११ और १२

(८) श्रीधर का जङ्गनामा। सम्पादक बाबू राधाकृष्ण दास और पण्डित किशोरीलाल गोस्वामी। मूल्य ।॥)

(९) मलिक मुहम्मद जायसी का अखरावट। सम्पादक महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी। मूल्य ।=)

संख्या १३ और १४

---

* इस पुस्तकावली की चौथी संख्या का ग्रन्थ पृथ्वीराजरासो है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१०) मुंशीदेवीप्रसाद की महिलामृदुवाणी । मूल्य
संख्या १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४ और २५
(११) दादूदयाल की बानी । सम्पादक महामहोप
ध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी । मूल्य १
(१२) कवि नूरमुहम्मद कृत इन्द्रावती, पहिला भाग
सम्पादक बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए० । मूल्य १
(१३) कवि जोधराज कृत हम्मीर रासो । सम्पादक
बाबू श्यामसुन्दर दास बी० ए० । मूल्य
(१४) दादूदयाल का सबद । सम्पादक महामहोप
ध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी । मूल्य १
(१५) कवि आनन्दघन कृत बिरहलीला । सम्पाद
बाबू काशीप्रसाद जायसवाल । मूल्य
संख्या २६, २७, २८ और २९
(१६) कवि पद्माकर कृत बीरविरदावली । सम्पाद
लाला भगवानदीन । मूल्य
(१७) भूषणग्रन्थावली—सम्पादक पण्डित श्यामबिहारी
मिश्र एम० ए० और पं० शुकदेव बिहारी मिश्र बी० ए० (अपूर्ण)
(१८) मान कवि कृत राजविलास । सम्पादक लाला
भगवान दीन (अपूर्ण)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अङ्कसंख्या ३२] [पुस्तक संख्या १७ और १८

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला।

सम्पादक-माधवप्रसाद-पाठक।

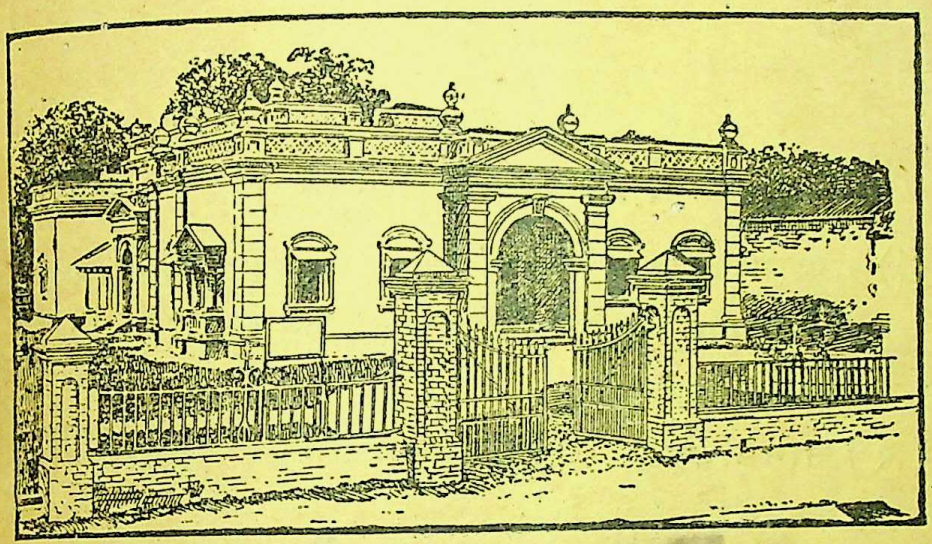

Fasciculus No. 32.] [Books Nos. 17 & 18

NAGARI-PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR—

MADHAVA PRASADA PATHAKA.

PUBLISHED BY

THE NAGARI-PRACHARINI SABHA.,

BENARES,

Under the patronage of the Government of the United Provinces.

मूल्य प्रति संख्या ॥) *Price per fasciculus As.8*

ISSUED ON THE 13th May 1910.

Printed by Madho Prasad, Bharat Press, Benares, for the Publisher.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका ।

(१) भूषणग्रन्थावली की भूमिका पण्डित श्यामविहारी मिश्र एम० ए० और पण्डित शुकदेव विहारी मिश्र बी० ए० लिखित (४७-७८)

(२) मानकविकृत राजविलास—लाला भगवानदीन सम्पादित (१४५-१७६)

ओ३म् ।

सं० संख्या _____ पंजिका संख्या _____

पुस्तकों पर सर्वप्रकार की निशानियां लगाना अनुचित है ।

कोई विद्यार्थी पन्द्रह दिन से अधिक पुस्तक नहीं रख सकता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है कि इस ग्रन्थ का आदि का भाग सन १६७० के पहिले लिखा गया है और अन्त का सन् १६७२ और १६७३ में बना एवं इसका मध्य भाग स १६७० और १६७१ के लगभग बनाया गया है।

इन सब विचारों से विदित होता है कि भूषणजी ने यह ग्रन्थ सन् १६६७ ई० के लगभग प्रारम्भ किया था और इसी क्रम से जो हम आज देखते हैं यह ग्रन्थ बना है परन्तु कुछ कुछ अलंकारों के उदाहरण उस समय नहीं बनाये गये थे, वे पीछे लिखे गए। इसी कारण कहीं कहीं आदि में भी सन् १६७० के पीछे तक की घटनाएँ आगई हैं। कहीं कहीं प्रथम उदाहरण में उस समय की घटनाओं का वर्णन है, और फिर अन्त में द्वितीय उदाहरण पीछे की घटनाओं से भरा हुआ रख दिया गया है। कहीं कहीं सम्भव है कि द्वितीय उदाहरण भूषणजी को ऐसा अच्छा लगा हो कि उन्होंने पहिला उदाहरण ग्रन्थ से निकाल दिया हो। पाठकों को उपरोक्त चक्र देखने से विदित होगा कि अधिक तर ज्यों ज्यों ग्रन्थ बढ़ता गया है उसी प्रकार सन भी बढ़ते गए हैं। इन सब विचारों से इस कुल ग्रन्थ को एक ही डेढ़ साल में बनाना ठीक नहीं जँचता। फिर यदि भूषण जी ग्रन्थ ऐसा शीघ्र बनाते होते कि डेढ़ साल में इतना बड़ा ग्रन्थ बना डालते तो शेष अपने कवित्व काल के पचपन सालों में न जाने कितना बना डालते।

छन्द नम्बर २७७ में करनाटक की चढ़ाई के वर्णन का भ्रम हो सक्ता है परन्तु होना न चाहिये। जिस समय शिवा जी ने परनाले का दुर्ग जीता था उस समय वे करनाटक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को नहीं गए थे। वर्णन से ऐसा जान पड़ता है कि शिवाजी परनाला ले कर तुरन्त करनाटक गए। इससे "करनाटक लौं" से करनाटक के सरहद तक का जाना मानना चाहिए।

मुद्रित प्रतियों में प्रायः ३$\frac{1}{4}$ सौ छन्द पाए जाते हैं, पर हमने शिवराज भूषण की इस प्रति में ३८२ छन्द दिये हैं। जितने छन्द इस प्रति में बढ़े हैं उनका मुख्यांश कवि गोविन्द गिल्ला भाईजी की हस्त लिखित प्रति से लिया गया है। गिल्लाभाई जी की प्रति में कई ऐसे अलंकारों के लक्षण और उदाहरण हैं जो भूषणजी की दी हुई अलंकार नामावली (छन्द नं० ३७१-३७९) के बाहर हैं। उन अलंकारों के लक्षणों को हमने भूषण कृत नहीं समझा परन्तु उदाहरणों को "शिवाबावनी" एवं "स्फुट" में रख दिया है। जान पड़ता है कि भूषण के इन कवित्तों में अलंकार निकलते देख लोगों ने इन्हें "शिवराजभूषण" में उन अलंकारों के लक्षण अपनी ओर से जोड़ कर रख दिए। इन नए कवित्तों में से दो चार के विषय में हमें भूषणकृत होने में सन्देह है, और सम्भव है कि उन्हें किसी ने अपनी ओर से बना कर लिख दिया हो पर शेष छन्द अवश्य भूषणजी के प्रतीत होते हैं।

भूषणजी ने युद्ध प्रधान ग्रन्थ होने के कारण इसमें श्री भगवतीजी की एक बड़े ही प्रभावोत्पादक छन्द द्वारा स्तुति की है। इस ग्रन्थ में कवि ने अधिकांश अलंकारों के लक्षण और उदाहरण दिये हैं और उदाहरणों में विशेषता यह रक्खी है कि प्रत्येक में शिवाजी का यश वर्णित है। इनके पहले किसी कवि ने अपने नायक के ही यश वर्णन में कोई ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थ नहीं रचा। ग्रन्थ के आरम्भ में रायगढ़ का बड़ा ही मनोहर वर्णन है, और अलंकार का बंधन रख कर भी भूषणजी शिवराज के यश वर्णन और तत्कालीन मनुष्यों के वास्तविक भावों के चित्र खींचने में पूर्णतया कृतकार्य हुए हैं। अलंकारों के उदाहरण भी इनके बहुत स्पष्ट हैं और एक ही छन्द में कभी कभी दो चार बार तक उसी अलंकार के उदाहरण आ जाते हैं। भूषण जी प्रायः सभी अलंकार इस ग्रंथ में लाये हैं, केवल निम्न लिखत छूट रहे हैं :-

धर्म्म लुप्ता से इतर लुप्तोपमा, तद्रूप रूपक, सम्बंधातिशयोक्ति, पदावृत्ति एवं अर्थावृत्ति दीपक, असदर्थ एवं सदर्थ निदर्शना, समव्यतिरेक, न्यूनव्यतिरेक, प्रस्तुतांकुर, द्वितीय पर्य्यायोक्ति, निषेधाभास, व्यक्ताक्षेप, तृतीय विषम, द्वितीय एवं तृतीय सम, प्रथम अधिक, अल्प, द्वितीय तथा तृतीय विशेष, द्वितीय व्याघात, कारक दीपक, द्वितीय अर्थान्तर न्यास, विकस्वर, ललित, प्रथम एवं तृतीय प्रहर्षण, मुद्रा, रत्नावली, गूढ़ोत्तर, सूक्ष्म, गूढ़ोक्ति, विवृतोक्ति, युक्ति, और प्रतिषेध।

अलंकारों की इस नामावली में बहुत से ऐसे हैं जिनमें मुख्य अलंकार का वर्णन हुआ है, परन्तु उसके किसी विभाग का नहीं हुआ। ऐसा ग्रन्थ के संक्षिप्त बनने के कारण किया गया है। कुछ अलंकार ऐसे हैं जिनके न वर्णित होने का कोई कारण नहीं है यही कहा जा सकता है कि वे ऐसे विदित अथवा आवश्यक नहीं हैं जिनके वर्णन करने पर कवि बाधित हो।

तद्रूप रूपक का भी वर्णन भूषणजी ने नहीं किया है। बिहारी ने भी सैकड़ों रूपक लिखने पर एक भी तद्रूप

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपक नहीं लिखा । वास्तव में तद्रूप रूपक एक निर्दिष्ट प्रकार का रूपक है । रूपक का मुख्य प्रयोजन है उसी रूप का होना, फिर कोई वस्तु किसी द्वितीय की पूर्ण प्रकारेण अनुरूप तभी हो सकती है जब उन दोनों वस्तुओं में कुछ भी भेद न हो । अतः मुख्यशः अभेद रूपक ही शुद्ध रूपक है । जब दो पदार्थों में विभिन्नता प्रस्तुत है जैसा कि तद्रूप रूपक में होता है तब रूपक श्रेष्ठ कैसे हो सकता है?

इन महाशय ने दो अलंकारों के उदाहरण अन्य सभी आचार्य्यों से उत्तमतर दिये हैं :-

(क) परिणाम । सर्वस्वकार का मत है कि जहां अप्रकृत प्रकृत का रंजन मात्र करै वहां रूपक और जहां अप्रकृत प्रकृत का उपयोगी होवे वहां परिणाम अलंकार है, यथा :-

मुख शशि देत अनन्द ... ... रूपक
मुख शशि हरत अंधार ... ... परिणाम

दूलह आदि ने इसके उदाहरण में यही कह मारा है कि "कपि बांध्यो सिन्धु राम पद पंकज प्रसाद ते", परन्तु वास्तव में यह रूपक है, क्योंकि पंकज यहां पद का रंजन मात्र करता है । किन्तु भूषण कवि ने इसका अत्यन्त शुद्ध उदाहरण दिया है "भूखन तीखन तेज तरन्नि सों बैरिन को कियो पानिप हीनों" । यहां तरणि तेज का रंजन मात्र नहीं करता वरन उसका उपयोगी भी है ।

(ख) दीपक । इसमें भाषा के आचार्य्य उपमेय उपमान का सम्बन्ध जोड़ते हैं । यह उन आचार्य्यों की भूल प्रतीत होती है । काव्य प्रकाश में यह लक्षण दिया है:-"सकृदुप-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्तु धर्मस्य प्रकृताप्रकृतात्मनाम्" अर्थात् प्रकृत और अप्रकृतों के धर्म्म के एक बार वर्त्तने में दीपक अलंकार है।

अहि फन मनि सिंह सुसटा कुल कलत्र कुल जान।
कृपन जनन को धन कहो को परसे छत प्रान॥
मुरारिदान।

भूषण ने भी उदाहरण में उपमेय उपमान का सम्बन्ध नहीं रक्खा है, यद्यपि न जाने लक्षण में वह कैसे वर्त्तमान है। यथा "कामिनि कन्त सों, जामिनि चन्द सों, दामिनि पावस मेघ घटा सों.....जाहिर चारिहु ओर जहान लसै हिन्दुवान खुमान सिवा सों॥ (शि० भू० छं० १३०)

दीपक में उपमेय उपमान का सम्बन्ध लगाने के कारण अन्य कवियों ने आवृत्ति दीपक तथा माला दीपक के उदाहरण देने में अपने लक्षणानुसार भूल की है, परन्तु भूषण के इन अलंकारों के उदाहरण भी शुद्ध हैं।

भूषण महाराज के बिकल्प एवं समान्य के उदाहरण अशुद्ध होगए हैं।

(क) बिकल्प में सन्देह ही सन्देह रहना चाहिऐ निश्चय न होना चाहिए। (शि० भू० छं० २५९)

मोरँग जाहु कि जाहु कुमाऊँ सिरी नगरै कि कवित्त बनाये।
.....
भूषन गाय फिरौ महि मैं बनि है चित चाह शिव हि रिझाये॥

इस छन्द में भूषण ने अन्त में निश्चय कर दिया सो अलंकार बन बना कर बिगड़ गया, परन्तु यहां इनका दूषण क्षन्तव्य है, क्योंकि इनका अलंकार बन चुका था, तथापि इन्होंने स्वयं उसे नायक के कारण बिगाड़ दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ख) सामान्य = सादृश्य के कारण जहां भिन्न वस्तुओं में भेद न जान पड़े । शि० भू० छन्द नं० ३०५ देखिए । इसमें तलवारों की चमक का चपला की भाँति चमकने से भेद खुल गया और अलंकार बिगड़ गया ।

भूषणजी ने छन्द नं० २६४ व २६७ में अर्थान्तर न्यास और प्रौढ़ोक्ति के लक्षण और कवियों के विरुद्ध लिखे हैं। उन्होंने छन्द नं० ३७९ में लिखा है कि उन्होंने अपने लक्षण अलंकार ग्रन्थ देख कर और "निज मतो" से बनाये हैं, सो यहां उनका मत समझना चाहिए । शिव० भूषण नं० ६०, १४६ और २५५ में भी ऐसे ही लक्षण हैं ।

इस महा कवि ने लुप्तोपमा, उत्प्रेक्षा, चंचलातिशयोक्ति असंगति, बिरोधाभास, बिरोध, पूर्व रूप आदि के बड़े ही उत्तम उदाहरण दिए हैं ।

शिवराजभूषण में कवि ने अलंकारों ही पर पूर्ण ध्यान दिया है अतः युद्ध प्रधान ग्रन्थ होने पर भी पूर्ण बीर रस के बहुत अच्छे उदाहरण इस ग्रंथ में नहीं मिलते, हां भयानक तथा रौद्र रसों के उत्तम उदाहरण भी यत्र तत्र देख पड़ते हैं, मुख्यशः भयानक रस के, जिस (रस) के वर्णन में भूषण महाराज बड़े पटु हैं । इन्होंने शिवाजी के दल का वर्णन इतना नहीं किया है जितना कि शत्रुओं पर उसकी धाक का । इसी हेतु इनके ग्रन्थ में भयानक रस का बहुत अधिक समावेश हैं । रसों के उदाहरण शिवाबावनी में अधिक उत्तम देख पड़ते हैं । भूषणजी अमृतध्वनि खूब उत्तम बना सकते थे । अन्य कवियों की अमृतध्वनियों में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निरर्थक शब्द बहुत आजाते हैं, परन्तु भूषण जी के छन्दों में ऐसा नहीं है।

सब बातों पर विचार करने से बिदित होता है, कि "शिवराजभूषण" एक बड़ा ही प्रशंसनीय ग्रन्थ है। इसमें प्रायः समस्त सत्य घटनाओं ही का वर्णन है, और शिवाजी का शीलगुण आद्योपान्त एक रस निर्वाह कर दिया गया है। इतिहास देखने से जो जो गुण शिवाजी में पाये जाते हैं उन सब का पूर्ण विवरण इस ग्रन्थ में मिलता है, हां एक बात में अवश्य विभेद है, और वह इस प्रकार है कि इतिहास से प्रगट होता है कि शिवाजी भवानी के बड़े भक्त थे और प्रायः समस्त बड़े कार्य्य उन्ही की अज्ञा से करते थे परन्तु भूषण जी ने इन्हें केवल शिवभक्त बताया है। इस बिषय में हमारा इन्हीं का प्रमाण मानने को चित्त चाहता है, कारण यह कि भूषण के पिता भवानी के भक्त थे और कहा जाता है कि भवानी ही की कृपा से उनके चार पुत्र हुये थे। फिर स्वयं भूषण ने ग्रन्थारम्भ में भवानी की स्तुति की है। तब यह कैसे सम्भव है, कि यदि शिवाजी भवानी के भक्त होते तो यह महाशय इस बात का वर्णन न करते, बिशेष करके जब भवानी ही इनकी कुलदेवी थीं, और ये स्वयं उनके भक्त थे? शिवाजी के शैव होने के विषय में छन्द न० १४,१५८,२३६ और ३२६ देखिये।

हमारे भारतवर्ष मे पृथ्वीराज के पश्चात चार स्वतंत्र राजा बड़े प्रभावशाली एवं पराक्रमी हुये, अर्थात महाराणा हम्मीरदेव, महाराणा प्रताप सिंह, महाराजा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवाजी, और महाराजा रणजीत सिंह। इन सब में हम लोगों से दूरतम वासी शिवाजी ही थे तथापि एतद्देशीय साधारण हिन्दू समाज में सबसे अधिक प्रसिद्ध येही महाराज हैं। इस साधारण प्रख्याति के कारण यही भूषण जी के ग्रन्थ हैं। यद्यपि महाराजा रणजीत सिंह के सब से पीछे होने के कारण उनका नाम लोग यहां जानते हैं, तथापि उनकी भी बिजय यात्राओं का हाल यहां बहुत कम मनुष्यों पर विदित है परन्तु शिवाजी की लड़ाइयों का समाचार ग्राम ग्राम तथा घर घर पूछ लीजिये।

एक यह भी प्रश्न है कि "शिवराज भूषण" कब समाप्त हुवा। छन्द नं० ३८० में भूषण जी ने सम्वत १७३० बुध सुदि १३ को इसका समाप्त होना लिखा है। हमारी प्रार्थना पर महामहोपाध्याय श्री पण्डित सुधाकर जी ने १७३० का पूर्ण पंचाग बना कर हमारे पास भेज दिया जिसके लिये हम उनके अत्यन्त कृतज्ञ हैं। इससे विदित होता है कि श्रावण और कार्तिक मास में शुक्ल त्रयोदशी बुधवार को उक्त सम्बत में पड़ी थी और कार्तिक में केवल १४ दंड ५५ पल वह तिथि बुध के दिन थी पर श्रावण में ३६ दण्ड ४० पला। जान पड़ता है कि श्रावण मास में ग्रन्थ समाप्त हुआ था।

श्रीशिवाबावनी।

जैसा कि हम उपर लिख चुके हैं यह कोई स्वतन्त्र ग्रन्थ नहीं किन्तु भूषण के बावन छन्दों का संग्रह मात्र है। मुद्रित प्रतियों में शिवराज भूषण के छन्द नं० २ और ५६ एवं स्फुट काव्य के छन्द नं० २,४,७, और ८ भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी ग्रन्थ में सम्मिलित हैं, परन्तु हमने प्रथम दो को अन्य ग्रन्थ के छन्द होने के कारण और शेषचार को अन्य पुरुषों की प्रशंसा के छन्द होने के कारण शिवाबावनी से निकाल डाले। इसमें तो शिवाजी ही की प्रशंसा के छन्द होने चाहिए परन्तु इन चारों में मुलंकी, अवधूतसिंह, साहू जी, और शम्भाजी का यश वर्णित है। इस ग्रन्थ का संग्रह होने के कारण हमने ऐसा करने में कोई दूषण भी नहीं समझा। इन छः छन्दों के स्थान पर हमने वर्त्तमान ग्रन्थ के छन्द न० १,२८,३१,४०,४१ और ५० स्फुट कविता से निकाल कर इस ग्रन्थ में रख दिए हैं। इनमें से छन्द न० ४० को छोड़ कर शेष कवि गोविंद गिल्ला भाई की प्रति से मिले हैं।

शिवा बावनी की मुद्रित प्रतियों में कोई क्रम नहीं था, अतः हमने ऐतिहासिक घटनाओं के विचार से पूर्वापर के अनुसार इसे क्रम बद्ध कर दिया है। इसमें बहुत सा वर्णन शिवराज के अभिषेकान्तर का है। यह समय ऐसा था कि जब शिवाजी बीजापुर तथा गोलकुण्डा को भली भाँति पद दलित कर चुके थे और ये दोनों राज्य उनके प्रभुत्व को स्वीकार करके ५ लाख तथा ३ लाख रुपये वार्षिक कर उन्हें देने लगे थे। इसी कारण इस ग्रन्थ में इन दोनों बादशाहियों का स्वल्प रूप से वर्णन हुआ है और मुख्यांश में शिवा जी के दिल्ली से झगड़े का वर्णन है।

इस ग्रन्थ के छन्दों का स्वतन्त्रता पूर्वक निर्मत होने के कारण इसमें प्राबल्य और गौरव विशेष आये हैं, और रसों के पूर्ण उदाहरण भी बहुत पाए जाते हैं, परन्तु यहां भी भयानक रस का प्राधान्य हैं। रौद्र रस के छन्द भी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यत्र तत्र दृष्टिगोचर होते हैं, तथापि इसमें भी शुद्ध वीर रस के दो ही चार छन्द हैं । इसमें भूषण ने शत्रुओं की दुर्गति का बड़ा सुन्दर चित्र खींचा है और शिवराज के प्रताप और आतंक के वर्णन भी बड़े ही बिशद हैं ।

यह छोटा सा ग्रन्थ बड़ा ही मनोहर है और इसके छन्द शिवराज भूषण के छन्दों से भी अधिक प्रभावोत्पादक हैं । इसकी जहां तक प्रशंसा की जाय थोड़ी है ।

बावनी में कही हुई घटनाओं का चक्र इतिहासानुसार नीचे लिखा जाता है :—

छन्द संख्या	किससकी घटना मुख्यशः वर्णित है	छन्द संख्या	किसस की घटना मुख्यशः वर्णित है	छन्द संख्या	किससन की घटना मुख्यशः वर्णित है
१४,१५	१६५८	२५,२६	१६७२	४३	१६७६
१६,१७	१६६६	२७	१६५९,१६७०,१६७२	४५	१६७८
२०,२१,२२	१६६९	३०	१६५५,१६५९,१६७३	५१	१६८०
२४	१६७०	३४	१६७४ (अभिषेक)		
		४२	१६७६		

श्री शिवाबावनी के बिषय बहुत लोगों का यह भी मत है कि जब भूषण पहिले पहिल शिवाजी के पास गए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और उन्हें "इन्द्रजिमि जम्भ" वाला छन्द सुनाया तब परम प्रसन्न होकर उन्होंने कहा "फिर कहो", (शि० भू० छं० नं० ५६)। इस पर भूषण ने एक अन्य छन्द पढ़ा। पुनः "फिर कहो" की आज्ञा पाकर एक और छन्द सुनाया, इसी प्रकार एक एक करके ५२ बार ५२ छन्द पढ़ के वे थक गए, वही ये ५२ छन्द शिवा-बावनी के नाम से विदित हुए। यह मत किसी अंश में शुद्ध नहीं है, कारण यह कि इस ग्रन्थ में करनाटक की चढ़ाई का भी वर्णन है जो सन १६७८ ई० के लगभग हुई थी। अतः इस मतानुसार यह सिद्ध होता है कि भूषण पहिले पहिल शिवाजी के यहां सन १६७८ के पश्चात् गए थे, परन्तु वे स्वयं लिखते हैं कि उन्होंने सम्वत १७३० (अर्थात सन १६७३ ७४ ईसवी) में शिवराज भूषण ग्रन्थ समाप्त किया। फिर इस बावनी में एक छन्द सुलंकी ("हृदयराय सुत रुद्र") और एक अवधूतसिंह की प्रशंसा सूचक लिखा था जिससे प्रत्यक्ष प्रतीत होता है कि वह शिवाजी को ग्रंथ रूप में कदापि नहीं सुनाई गाई। इसके स्वतंत्र ग्रन्थ होने के विरुद्ध यह भी प्रमाण है कि इसकी बन्दना वाला छन्द ही शिवराज भूषण से लिया गया था, एवं दो एक और भी छन्द ऐसे ही थे। इसमें आद्योपान्त कोई प्रबन्ध भी नहीं है, और न किसी ने इसे स्वतंत्र ग्रन्थ कहा ही है। यह अति उत्तम ग्रन्थ है और हिन्दी में इस के जोड़ के बहुत ग्रन्थ न मिलेंगे।

छत्रशाल दशक।

जान पड़ता है कि भूषण महाराज ने छत्रशाल के बहुत से छन्द बनाये थे क्योंकि उन्होंने सन १६८० से सन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

१७०५ तक सिवाय छत्रशाल के और किसी का यश वर्णन नहीं किया। उन्हीं छन्दों में से आठ घनाक्षरी और दो दोहे इस ग्रन्थ में रक्खे गए हैं, और दो घनाक्षरी बूँदी नरेश महाराज छत्रशाल हाड़ा विषयक इसमें हैं। इसकी मुद्रित प्रतियों में राव राजा बुद्धसिंह विषयक एक छन्द भी था जो अब हमने स्फुट काव्य के तीसरे नम्बर पर रख दिया है। उसके स्थान पर छन्द नम्बर नौ इसमें स्फुट कवित्त से ला कर हमने रक्खा है।

इस ग्रन्थ का भी क्रम हमने इतिहास के विचार से पूर्वापर क्रमानुसार कर दिया है। बूँदी नरेश के दोनों छन्द प्रथम रख देने का कारण भी स्पष्ट है। यद्यपि ये सन १७१० के लगभग बनाए गए थे, तथापि उनमें घटना सन १६५८ की वर्णित है। तृतीय छन्द हमारे अनुमान में सन १६७५ में बनाया गया था और उसी सन में चतुर्थ और पंचम छन्द बने (बुंदेलों के इतिहास सम्बन्धी भूमिकांश देखिए)। छन्द न० ६ सन १६९० और नम्बर सात १७०० की घटनाओं से सम्बन्ध रखता है। छन्द नम्बर आठ और नौ सम्भवतः सन १७०८ में बने और नम्बर दस सन १७११ के लगभग बना।

इस ग्रन्थ के छन्द भूषण की कविता में सर्वोत्कृष्ट हैं, और एक भी छन्द सिवाय उत्तमोत्तम के मध्यम श्रेणीतक का इसमें नहीं है। भूषण ने शिवराज और छत्रशाल सरीखे भारत-मुखोज्वलकारी युगुल मित्रों का वर्णन करके देश वासियों और हिन्दी रसिकों का बड़ा उपकार किया है। यह बात प्रसिद्ध है कि भूषणजी जब महाराज शिवराज के यहां सम्मानित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हो छत्रसाल के यहां पधारे तो इन्होंने कबिजी की बहुत सुश्रुषा की और चलते समय यह कह कर कि "अब हम आप को क्या बिदाई देसकते हैं ?" उनकी पालकी का डंडा स्वयम् अपने कंधे पर रख लिया ! तब भूषणजी अत्यन्त प्रसन्न हो चट पालकी से कूद पड़े और "बस महाराज ! बस" कहते हुए उनकी प्रशंसा सूचक कविता तत्काल बना चले, वेही कवित्त छत्रशाल दशक के नाम से प्रसिद्ध हुए। परन्तु जान पड़ता है कि भूषण ने इस समय कोई और ही छन्द बनाए होंगे। इस ग्रन्थ के छन्द किसी ग्रन्थ रूप में नहीं बने क्योंकि न इनमें बन्दना है न सन सम्बत का ब्योरा और न कोई क्रम विशेष, बरन यह स्फुट कबित्त मात्र हैं और बाद को लोगों ने इन छन्दों में भूषणकृत छत्रशाल विषयक दो एक और छन्द मिला कर "छत्रशालदशक" नामक १०–१२ छन्दों का "ग्रन्थ" पूरा कर दिया, क्योंकि इसमें छत्रशालजी बूंदी नरेश के भी दो छन्द हैं, जिनको छत्रशाल बुन्देला के ग्रन्थ में न होना चाहिये था। यह छोटा सा ग्रन्थ प्रावल्य में एक दम अद्वितीय है।

स्फुट काव्य।

इसमें भूषण के ११ छन्द (जो हमें मिले) लिखे गए हैं। इसमें कोई ऐतिहासिक क्रम नहीं रक्खा गया है, क्योंकि प्रथम और अन्तिम नम्बर पर शिवा जी की प्रशंसा के छन्द रखना हमें भला मालूम पड़ा। इसके छन्दों का ऐतिहासिक क्रम निम्नानुसार है :–

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छन्द संख्या	किस सन का वर्णन अथवा किस सन में बना	छन्द संख्या	किस सन का वर्णन अथवा किस सन में बना
१	१६७६	६	१६७५
२	१६६५	७	१७१५
३	१७१०	८	१६७८
४	१६६४	९	१६८०
५	अज्ञात		

इन छन्दों के विषय विशेष हमें कुछ वक्तव्य नहीं है। जैसे प्रभाव पूरित भूषणजी के और छन्द हुआ करते हैं वैसे ही ये भी हैं। स्फुट काव्य के सम्बन्ध में हमें केवल निम्न लिखित छन्द पर बिचार करना शेष है:—

मालती सवैया।

"बालपने मैं तहौवरखान को सैन समेत अँचैगयो भाई। ज्वानी में रुंडी औ खुंडी हने त्यों समुद्र अँचै कछु बार न लाई॥ बैस बुढ़ापे की भूँख बढ़ी गयो बंगस बंस समेत चबाई। खाये मलिच्छन के छोकरा पै तबौ डोकरा को डकार न आई।"

यह छन्द मुद्रित प्रतियों में भूषण के स्फुट छन्दों में लिखा हुआ है। इसमें छत्रसाल का वर्णन है क्योंकि तहौवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खां, समुद्र (अब्दुसम्मद), और बंगश से वेही तीस वर्ष, चालीस वर्ष और बयासी वर्ष की अवस्थाओं में क्रमशः लड़े थे। बंगस का युद्ध सन १७३२ में हुआ था, सो यदि यह छन्द भूषणकृत मानें तो उनकी पूरी अवस्था सत्तानवे साल से कम नहीं मान सकते। यदि बंगबासी वाली प्रति के मतानुसार भूषण का जन्म काल सन १६१४ माना जाय तो इस समय उनकी अवस्था ११८ साल की माननी पड़ेगी। अतः हमें दृढ़ सन्देह है कि यह छन्द भूषण कृत नहीं है। भूषणजी छत्रशाल से पन्द्रह साल बड़े थे सो वे बुंदेला महाराज को "डोकरा" कभी न कहते। यह छन्द किसी छोटी अवस्था के कवि ने बनाया है।

"भूषण की कविता का परिचय"

हम भूषण महाशय के चारो ग्रन्थों के विषय अलग अलग अपने विचार प्रकट कर चुके, अब चारो ग्रन्थ मिला कर इन की समस्त रचना पर जो कुछ विशेष कथनीय है वह नीचे लिखा जाता है।

भाषा—इन की भाषा विशेषतया ब्रज भाषा है, जैसे कि उस समय के प्रायः सभी कवियों की थी। जान पड़ता है कि उस समय के महाराष्ट्र बासी भी हिन्दी भाषा को भली-भाँति समझते थे नहीं तो भूषण की कविता का ऐसा आदर शिवा जी की सभा में कैसे होता? युद्ध काव्य लिखने के कारण भूषण जी को ब्रज भाषा के साथ प्राकृत मिश्रित भाषा भी लिखनी पड़ी है, तथापि इन्होंने उस समय के अन्य युद्ध काव्य रचयिताओं से बहुत कम इस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषा का प्रयोग किया है। यह बात भूषण के कवित्व शक्ति सम्पन्न होने का ही एक प्रमाण है। वीर कविता में अन्य कवियों को प्राकृत भाषा का अधिक प्रयोग करना पड़ा है। कि अन्य कवियों की युद्ध कविता में माधुर्य्य और प्रसाद गुणों की बड़ी न्यूनता रहती है परन्तु भूषण महाशय इन गुणों को भी अपनी कविता में बखुतायत से ला सके हैं।

प्राकृत मिश्रित भाषा और ब्रज भाषा के अतिरिक्त भूषण ने कहीं कहीं बुन्देलखण्डी बोली का भी प्रयोग किया है।

प्राकृत भाषा के उदाहरणार्थ शि० भू० छन्द नं० १४३ और खड़ी बोली के उदाहरणार्थ नं० १६१ तथा २०९ देखिये।

भूषण जी ने अपनी कविता में यत्र तत्र फ़ारसी के असाधारण शब्द रक्खे हैं, यथा:—जाबता करन हारे वतुजुक (शि० भू० नं० ३८) दरियाव (शि० भू० नं० १०८), गाजी, जशन, तुजुक व इलाम (शि० भू० नं० १९८), मुहीम (शि० भू० नं० १८०), बेइलाज (शि० भू० नं० २७९), गुस्लखाना, सिलहखाना, हरमखाना, शितुरखाना, करंज खाना, व ख़िलवत खाना (शि० भू० न० ३६१) इत्यादि। इस से विदित होता है कि भूषण जी फ़ारसी भी जानते थे परन्तु अच्छी तरह वे फ़ारसी नहीं जानते थे क्यों कि उपरोक्त उदाहरणों में भूषण जी ने जाबता करन हारे, इलाम, तथा बेइलाज का प्रयोग बेमहा वरे किया है। उपरोक्त उदाहरणों के अतिरिक्त निम्नलिखित छन्दों में फ़ारसी के असाधारण शब्द आये हैं। इनमें कई स्थान पर शब्दों का अशुद्ध प्रयोग है:—शिवराज भूषण छन्द नम्बर ३४, १०३, ११४, १५९, २०९, २४२, २५८, २८३, २९९, ३१५, ३६०; शिवाबावनी छन्द नम्बर २, ६, १०, १४, १७, २०, २१, २२, २३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

२९, ३०, ३३, ३४, ४०, ४१; छत्रशालदशक छन्द नम्बर १०; स्फुट काव्य छन्द नम्बर ४, ५, ६, ७, और ९।

भूषणजी ने कहीं कहीं असाधारण एवं बिकृत रूपधारी शब्द भी लिखे हैं, यथा--छिया (१०) कुरुख (३४) कहाब (५१) जोब (५२, १४२, १९८) बिगिर, (६३) धरबी (१५५ बुन्देल-खण्डी भाषा) बैयर (१७३) किरिरि (३४०) अंझा (३५१), छन्द नम्बर ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, का वृहदंश, खोम (३६०) जम्पत (१५) चकत्ता, खुमान, असाल (७३) गारौ (१८६) बिगूचे, (२०९) ऐल (शिवा बा० नं० २) बप (शि० बा० नं० १५) इत्यादि--

उपरोक्त उदाहरणों में जहां केवल अङ्क लिखे हैं और ग्रन्थ का नाम नहीं लिखा है वहां शिवराजभूषण के छन्दों के नम्बर समझना चाहिये।

परन्तु इतने ग्रन्थों और विशेष करके युद्ध वर्णन में यदि उन्हों ने इतने अथवा कुछ और शब्दों का अव्यबहृत एवं विकृत रूप में समावेश किया तो कुछ आश्चर्य्य की बात नहीं है वरन आश्चर्य्य तो यह है कि भूषण ने इतने कम शब्द मरोड़ कर अपना काम कैसे चला लिया।

यदि इस कवि के कुल शब्द गिने जायँ तो अन्य अनेक ग्रन्थ रचने वालों की अपेक्षा इस का शब्द समूह बड़ा ठहरेगा। अँगरेज़ी के सुप्रसिद्ध कवि शेक्सपियर ने इङ्गलैण्ड के हर एक कवि से अधिक शब्दों का प्रयोग किया है और यह उसकी कविता का एक बड़ा गुण समझा जाता है। यही गुण भूषण में भी विद्यमान है। भूषण महाशय की कविता में अनुप्रास बहुतायत से आये हैं तथापि बीरता प्रधान ग्रन्थों के रचयिता होने के कारण इन पर कोई दोषा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोपण नहीं कर सकता। फिर इन्हों ने पदुमाकर जी की भाँति अनुप्रास एवं यमक का स्वांग भी नहीं बनाया है।

उदाहरण ये हैं:—शिवराजभूषण में छन्द नम्बर १, ४२, ४८, ५६, ६८, ७३, ७७, ८३, १०१, ११० १३०, १३३, १३४, १६१, १६२, १६६, १८९, २१५, २२६, २४७, २५४, २६६, ३३६, ३४०, ३५१, ३५ से ३५९ तक ३६०, ३६१, ३६४; शिवा बावनी में छन्द नम्बर २, ६, ८, २६, ३७, ३८, ४०, ४२, ४३, ४५, ४८; छत्र शाल दशक के छन्द नम्बर १, ३, ४, ५, ८; स्फुट काव्य के छन्द नम्बर २, ५, ६, ७। भूषण जी ने कुल मिला कर दश प्रकार के छन्द लिखे हैं जिनके नाम नीमे लिखे जाते हैं। शिवराज भूषण के जिस नम्बर के छन्द के नोट में छन्द विशेष का लक्षण दिया है उसका ठ्योरा ब्रैकेट में यहां लिख दिया गया है।

छन्दों के नाम ये हैं।

मनहरण (१), छप्पय (२), दोहा (३), मालती सवैया (१५) हरिगीतिका (१६), लीलावती (१३६), किरीटी सवैया (३२०), अमृत ध्वनि (३५४), माधवी सवैया, (३६८), और गीति का (३७१)। भूषण ने अपने ग्रन्थों का मुख्यांश मालती सवैया और मन हरण में लिखा है। अलङ्कारों के लक्षण ये दोहे में लिखते थे। छप्पय भी कुछ अधिकता से पाए जाते हैं, शेष छन्दों का प्रयोग बहुत कम हुआ है। उस समय के कवियों में इसी प्रकार के छन्द लिखने का कुछ नियम सा पड़ गया था जो प्राचीन प्रणाली के कवियों में आज तक चला आता है।

भूषण जी पदान्त में विश्राम चिन्ह रहित छन्द बहुत कम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लिखते थे परन्तु शि० भू० के छन्द नम्बर ३४९, ३६३ में ऐसा हुआ है। इसीको अङ्गरेज़ीमें Run-on-lines कहते हैं।

भूषण की कविता में विश्राम चिन्हों पर विशेष ध्यान देना चाहिए। कोई कोई छन्द ऐसे हैं कि जिनमें विश्रामों पर ध्यान न देने से अर्थ में गड़ बड़ पड़ सकता है।

उदाहरण शिवराजभूषण छन्द नम्बर १,३, ४०, ४८, ८१, १०७, २४७, ३०९, ३६६, ३८१ इत्यादि।

कुल बातों पर ध्यान देने से विदित होता है कि भूषण की भाषा और शब्द योजना की रीति बहुत ही प्रशंसनीय है।

भूषण महाराज ने विषय और विशेषतया नायक चुनने में बड़ी बुद्धि मत्ता से काम लिया है। शिवा जी और छत्र शाल से महानुभावों के पवित्र चरित्रों के वर्णन करने वाले की जहाँ तक प्रशंसा की जाय थोड़ी है। शिवा जी ने एक ज़िमीं दार और बीजापुराधीश के नौकर के पुत्र हो कर चक्रवती राज्य स्थापित करने की इच्छा को पूर्ण सा कर दिखाया और छत्रशाल बुन्देला ने जिस समय मुग़लों का सामना करने का साहस किया था उस समय उनके पास केवल पाँच सवार और पच्चीस पैदल थे। इसी "सेना" से इस महानुभाव ने दिल्ली का सामना करने की हिम्मत की और मरते समय अपने उत्तराधिकारियों को दो करोड़ मुना फ़ेका स्वतन्त्र राज्य छोड़ा।

भूषण महाराज अन्य कवियों की भाँति ऐसे छन्द कम बनाते थे जो केवल नायक के नाम बदल देने से किसी की प्रशंसा के हो सकते हों। इन की कविता में सहस्रों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घटनाओं का समावेश है, हर स्थानपर इन्होंने सैकड़ों ऐति-
हासिक व्यक्तियों और ऐतिहासिक स्थानों का वर्णन इन्हीं
में किया है । इतने लोगों के नाम काव्य में ये महाशय लाये
हैं कि कितने ही ऐतिहासिक ग्रन्थ ढूंढ़ने पर भी किसी तरह
का पता लगाये नहीं लगता । मनुष्यों के नाम लिखने में प्राय:
उनके पिता का नाम और उनकी जाति और बासस्थान का
भी पता भूषण जी लिख दिया करते थे । भूषण ने प्रबन्ध
ध्वनि (Allusions) भी बहुत रक्खी है" ।

ऐतिहासिक घटनायें लिखने के साथ ही साथ भूषण
जी की सत्यप्रियता भी विशेष सराहनीय है । यद्यपि
शिवा जी ने इन्हें लाखों रुपये दिये तथापि इन्होंने उनके
हारने तक का वर्णन किसी न किसी प्रकार कर ही दिया
और जो बातें उनकी सत्यता एवं महत्व के प्रतिकूल थीं
उन्हें भी कह दिया है । (शि० भू० छन्द नं० ६३, ९९, २१२, २१३,
२५९ देखिए) । इसी प्रकार ये महाशय छत्रशाल के यहां बैठे
थे तब भी इन्हों ने कहा कि "साहू को सराहौं कै सराहौं
छत्रशाल को" । इनके चित्त में साहू का ख्याल अधिक
था और छत्र साल का उनके बाद । इस विचार को इन्हों
ने स्वयं छत्रशाल तक पर प्रकट करने में संकोच नहीं किया।
कनाऊं महाराज के यहां भी अपनी अप्रसन्नता प्रकट करने
में इन्होंने संकोच नहीं किया । इसको स्वतन्त्रता भी कह
सकते हैं परन्तु सत्यप्रियता का भी इन बातों में बहुत कुछ
अंश है । इन्हों ने शिवा जी के शत्रुओं को उनसे मेल करने
की बहुत सलाह दी है । शि० भू० नम्बर १५०, २६१, २७६,
२७९, ३१२ तथा शि० बा० नं० ३१ देखिये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषण महाराज ने घटनावों के साथ कभी कभी ख़याली अथवा भड़कीला वर्णन भी कर दिया है, पर ऐसी बातों को उन्होंने सत्य बातों की भाँति नहीं कहा है और न उन्हें असत्य प्रमाणित करके उनकी सत्य प्रियता के प्रतिकूल कुछ कहना चाहिए। वे केवल कविता का चमत्कार दिखाने और शत्रुओं का उपहास करने के निमित्त कही गई हैं।

उदाहरण—शिवराज भूषण के छन्द नम्बर ८९, ९०, ९३ ९४, ९६, १०५, २०९, २२८, २६३, २७०, २७६ ३२३, ३२४ व शिवा बावनी के छन्द नम्बर १३, २९, ४१।

भूषण जी ने शिवा बावनी के छन्द नम्बर १२में अमीर औरतों के विषय कहा है कि "किसमिस जिन को अहार" एवं "नासपाती खातीं ते बनासपाती खाती हैं"। नाश पाती अथवा किशमिश का आहार कोई बड़ी बात नहीं है। या तो भूषण ने ये बातें मज़ाक़ में कहीं हैं या उस समय नाश पाती और किशमिश बड़ी बहुमूल्य और अमीरपसन्द बस्तुवें होंगी।

भूषण जी ने कई जगह "ग़ोसलख़ाना" का वर्णन किया है (शि० भू० न० ३४, ७९, २०४ २०९, २६५ व शि० बा० न० १६ देखिये) परन्तु साफ़ साफ़ कहीं नहीं कहा कि ग़ुसलख़ाने में क्या हुवा। यह भी कई जगह कहा गया है कि दरबार में जाकर शिवाजी ने औरंगज़ेब को सलाम नहीं किया (शि० भू० नं० १८६. १९८, ३०९ शि० बा० छन्द नम्बर १६)। एक उपन्यास में हमने यह देखा है कि औरंगज़ेब ने जब सुना कि शिवा जी का इरादा उसे सलाम करने का नहीं है तो उसने फाटक में आराइश के कई सामान लगा कर उसे ऐसा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोटा कर दिया कि विना सर झुकाये कोई मनुष्य उसके भीतर घुस न सके। इस पर शिवा जी ने तन कर अपना छाना इतना बाहर निकाल दिया कि सर देह के बहुत पीछे हो गया, तब उसने पहिले अपना पैर अन्दर रख के कुल देह अन्दर निकाल कर तब सर फाटक के भीतर किया जिससे कि उसे सर झुकाना नहीं पड़ा। टाड राजस्थान में लिखा है कि सिरोही के महाराज ने लग भग सन १६८० ई० के औरंगज़ेबकेही राजत्व काल में बिलकुल ऐसा ही किया। इस से विदित होता है कि उस समय भी दरबार में जा कर अकड़ के कारण सलाम न करना सम्भव था। इसी प्रकार मारवाड़ के प्रसिद्ध अमरसिंह ने शाहजहाँ के सामने उसके मुसाहब सलाबतखाँ को दरबार में मार डाला था तब शाहजहाँ मारे डर के ज़नाने में भाग गया था। अतः शिवाजी ने सलाम न किया हो और औरंगज़ेब इस से डर कर ग़ुसलखाने भाग गया हो तो कोई आश्चर्य्य नहीं। शिवा बावनी के छं० नं० १६ के अनुसार शायद औरंगज़ेब के गुसुलखाने के पास जाते हुए शिवाजी को ज्ञात हुआ हो कि बादशाह उसी में है और वह उस ओर झपटा हो (शि० भू० छं० नं० ३४ से भी इसी का समर्थन होता है)। भूषण जी जब अपने नायक की ख्याति बढ़ाने को कोई असम्भव अथवा असत्य बात कहते थे तो उसे एकाध बार दबी ज़बान कह कर छोड़ देते थे (शि० भू० नं० ६२) परन्तु उसे बारबार बड़ा ज़ोर देकर नहीं कहते थे। फ़ारस के अब्बासशाह से शिवाजी से कभी लड़ाई नहीं हुई अतः एकबार कहकर फिर भूषण ने उसका नाम भी न लिया। परन्तु इस ग़ुसलखाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के विषय भूषण ने कई छन्द बड़े ज़ोर के कहे हैं और यही हालत सलाम की है। इतिहास में इसके प्रतिकूल कुछ लिखा भी नहीं है। अतः हम भूषण ऐसे सत्यप्रिय मनुष्य के कथन को अशुद्ध नहीं मान सकते। भूषण के कथन में केवल एकस्थान पर इतिहास से प्रतिकूलता पाई जाती है और वह यह है कि इतिहासों ने शिवाजी को भवानी का भक्त माना है और भूषण ने शिवका (शि० भू० नं० १४, १५८, २३६, ३२६ देखिये)। इस के विषय एक बहुत बड़ा आश्चर्य्य यह होता है कि भूषण जी स्वयं भवानी के भक्त थे (शि० भू० नं० २ देखिये) और कहा जाता है कि उनके पिता के चार पुत्र भवानी ही की कृपासे हुए थे। तब यदि शिवाजी भी भवानी के भक्त होते तो भूषण ऐसा क्यों न कहते? भूषण ने शिवाजी को सिवाय शिवके और किसी का भक्त नहीं बताया है। इधर और इतिहासों के अतिरिक्त स्वयं रानड़े महोदय ने उन्हें भवानी का भक्त कहा है। हमारे अनुमान में या तो इतिहासकारों को किसी कारण भ्रम होगया या भूषण ने किसी गुप्त कारण से (जैसे शिवाजी की आज्ञा से) अपनी कविता में भवानी का वर्णन नहीं किया।

भूषण ने शिवाजी की और बड़ाइयों में उन्हें अवतार भी माना है (शि० भू० नं० ११, १२, ७५, ८७, १०४, १४२, १६६, २२८, २९५, ३१३, ३४८, ३८१ देखिये)। यों तो प्रत्येक मनुष्य में आत्मा परमेश्वर का अंश है और इसलिये हर आदमी अवतार कहा जा सकता है परन्तु भूषण ने शिवाजी को कई बार हरि का अवतार कहा है। ऐसा करने में भूषण ने ठकुरसोहाती की सीमा के पार पहुँचा दिया। शि० भू० नं०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

३२६ में शिवराज का बहुत ही यथार्थ वर्णन पाया जाता है।

इनकी कविता की उद्दंडता दर्शनीय है । इन्होंने शिवा जी की चढ़ाइयों का बड़ा उद्दंड एवं शत्रुओं पर उनके प्रभाव का बड़ा भयानक वर्णन किया है

उत्तम छन्द ।

भूषण जी की कविता में बहुत से उत्तम छन्द हैं । हम उनके अत्युत्तम छन्दों की एक सूची नीचे देते हैं। इनमें से कई छन्दों में उद्दंडता भी पाई जायगी । शिवराज भूषण के उत्तम छन्द १६ से २३ तक, ३५, ३७, ३८, ४२, ४८, ५६, ६८, ८७, ९७, ९९, १००, १२३, १२५, १३०, १३४, १५०, १७३, १७६, १८२, १८६, २००, २०६, २०७, २२६, २४५, २४७, २५२, २५४, २५८, २७५, २८८, २९०, २९३, २९५, ३०१, ३०५, ३०७, ३१०, ३२६, ३२८, ३३१, ३३२, ३३४, ३४८, ३५०, ३६०, ३६१, ३७० । शिवाबावनी के उत्तम छन्द २, ३, ६, १७, २३, २४, २६, २७, ३२, ३५, ३७, ३८, ३९, ४०, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१ । छत्रशाल दशक के उत्तम छन्द १ से १० तक सभी ।

स्फुट काव्य के उत्तम छन्द २, ४, ६, ७, ८, ९ ।

जातीयता ।

भूषण महाराज को जातीयता का सदैव बड़ा ध्यान रहता था (शि० भू० नं० १०, १२, ६१, ६९, ७३, १३०, १४३, १८९, २३६, २४५, २५८, २७५, २९३, ३३६, ३३७ । शि० बा० नं० २०, २१, २२, २५, ४८, ५१, ५२। छत्र० दशक नं० ६ स्फुट नं० ९)। इन के जातीयता विषयक इतने छन्द होते हुये भी किसी ने शि० बा० छन्द नं० ४६ में "हिन्दुवानो हिन्दुन को हियो हहरत है" लिख दिया था । भूषण की लेखनी से ऐसे घृणित शब्द निकलना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रुहिलन हियो हहरत है" यथार्थ समझ पड़ता है। भूषण जी पूरे जातीय [National] कवि थे और टेनिसन की भांति इन्हैं भी प्रतिनिधि कवि (Representative poet) कहना चाहिये। जातीयता, जातिगौरव और हिन्दू पने का जितना इन्हैं ध्यान रहता था उतना हिन्दी के किसी दूसरे कवि को नहीं था। इसका एक भारी प्रमाण यह भी है कि इन्होंने छत्रसाल बुन्देला के सुप्रसिद्ध पिता चम्पत-राय का (जिन्होंने कुछ दिनों के लिये औरंगज़ेब की सेवा स्वीकार कर ली थी) एक भी कवित्त नहीं बनाया, पर उन के प्रतिद्वन्दी छत्रसाल हाड़ा के दो कवित्त कहे हैं क्योंकि हाड़ा महाराज औरंगज़ेब से लड़े थे। औरंगज़ेब से भूषण जी इस कारण विशेष नाराज़ थे कि वह हिन्दुओं को सताता था।

यद्यपि वर्त्तमान समय की दृष्टि से इस कवि की मुसल्मानों के प्रति कटूक्तियां बहुत ही अनुचित एवं विषगर्भित ज्ञात होती हैं तथापि हम लोगों को इनकी कविता को इस दृष्टि से न जाँचना चाहिये। उस समय औरंगज़ेब के अधम बर्ताव के कारण हिन्दू मुसल्मानों में मूषक मार्ज्जर की भाँति स्वाभाविक शत्रुता थी। अतः इन्होंने चाहे जो कुछ कहा उस समय यह अनुचित न था। फिर उस समय शत्रुओं के विषय परम कटु शब्द कहने की कुछ रीति सी पड़ गई थी यहां तक कि मुसल्मान इतिहासकार शिवा जी एवं मुसल्मानों के अन्य शत्रुओं के विषय साधारणतः यों लिखा करते थे कि "वह कुत्ता ख़ां साहब से पूना में लड़ा," "उस कुत्ते ने" अमुक स्थान पर अमुक ख़ां साहब से

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़ कर पराजय पाई। "उस कुत्ते ने" फुलाँ साहब सूबा
बड़ी बहादुरी से लड़ कर पराजित किया। मुसल्मान इतिहा
लेखकों ने एक महारानी तक के विषय लिखा है कि "
स्थान के कुल कुत्ते उस कुत्तिया से बड़ी भक्ति रखते थे"
इस प्रकार के वर्णन एलियट कृत मुसल्मान समय के इतिहा
के मुसल्मानी इतिहासों के उल्थावों में प्रायः पाये जायंगे
जब इतिहास लेखक ऐसे सभ्य थे तब कवियों से कोई कह
तक अशा कर सकता है? हर्ष का विषय है कि अब हिन्दू
मुसल्मानों में कभी कभी कुछ गड़ बड़ हो जाने परभी ऐस
मेल है कि इस प्रकार की बातें कोई भी नहीं लिख सकता
भूषण जी की कविता में जहां देखिये शिवा जी की विजय
से हिन्दुओं का प्रभुत्व बढ़ता देख पड़ता है। जिन दो ए
हिन्दुवों से शिवा जी से युद्ध भी हुआ उनके विषय इन्हों
यही कहा कि "हिन्दु बचाय बचाय यही अमरेस चँदावतलौं
कोउ टूटै"। शिवा जी ने राजा जय सिंह से युद्ध न कर के
अपनी हार मान ली और उन्हें अपने कुछ गढ़ दि
परन्तु युद्ध करके हिन्दू ख़ून नहीं बहाया। इस पर यद्यपि
शिवा जी की पराजय हुई तथापि भूषण की राय में उसका
यश वर्द्धित हुआ।

"तैं जयसिंहहि गढ़ दिये शिव सरजा जस हेत"।

फिर यद्यपि शाह जी मुसल्मानों के नौकर थे तथापि
इन्होंने उनके राज पद की प्रशंसा न करके उन्हें

"साहस अपार हिन्दुवान को अधार धीर सकल सिसौ
दिया सपूत कुल को दिया" (शि० भू० नं० १०) कहा है।
नौकरी के विषय में केवल इतना इशारा है कि "साहि
निज़ाम सखा भयो"।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इनके नायक छत्रसाल थे तथापि इन्होंने उनके पिता चम्पतिराय का एक भी छन्द न बनाया क्योंकि वे धौल पूर में औरंगज़ेब की ओर से लड़े थे जो हिन्दुओं का घोर शत्रु था। उसी युद्ध में छत्रसाल हाड़ा चम्पति के प्रतिकूल लड़े थे तब भी इन्होंने चम्पति की प्रशंसा न करके छत्रसाल हाड़ा की प्रशंसा की क्योंकि वे महाराज हिन्दुवों के शत्रु (औरंगज़ेब) के प्रतिकूल लड़े थे। वास्तव में भूषण की कविता के नायक हिन्दू हैं। जो मनुष्य हिन्दुओं के पक्ष में लड़ता था उसी का भूषण ने वर्णन किया है चाहे वह शिवराज हो या छत्रसाल या रावबुद्ध या अवधूत सिंह या शम्भा जी या साहू जी। इनको जातीयता का ऐसा ध्यान था कि इन्होंने शिवा जी के हिन्दू शत्रु उदयभानु आदि तक का प्रभाव पूरित वरणन किया है।

(परिणाम)

इन महाशय की कविता में कोई कहने योग्य दोष नहीं हैं। भाषा कवियों में इनका स्थान बहुत ऊँचा है और इनके भाँति सन्मान किसी का नहीं हुआ। वास्तव में युद्ध काव्य करने में इन्हों ने बड़ी ही कृतकार्य्यता पाई है। ऐसा उत्तम युद्ध का वर्णन किसी कवि ने नहीं किया।

भूषण के विषय में शिव सिंह सेंगर का मत यह है:— रौद्र, वीर, भयानक ये तीनों रस जैसे इनके काव्य में हैं ऐसे और कवि लोगों की कविता में नहीं पाये जाते"— (इन्होंने) "ऐसे ऐसे शिवराज के कवित्त बनाये हैं जिन के बराबर किसी कवि ने बीर यश नहीं बना पाया।" इन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की युद्ध कविता के विषय इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इन्होंने सरवाल्टरस्काट की भांति किसी युद्ध का पूर्ण वर्णन नहीं किया। स्यात इनका ध्यान इस ओर कभी आकृष्ट नहीं हुआ, नहीं तो जब ये महाराज शिवराज के साथ रहा करते थे और कितने ही युद्ध इन्होंने अपने नेत्रों देखे तो उनका वर्णन करना इन जैसे बड़े कबि के लिये कितनी बात थी? यह हिन्दी साहित्य का दुर्भाग्य था कि इन महाशय ने इस ओर ध्यान नहीं दिया। आज कल कतिपय महाराष्ट्र महानुभाव हिन्दी की अच्छी सेवा कर रहे हैं। मो मानो उनके उत्साह बर्द्धनार्थ भूषण ने पहिले ही से हिन्दी में महाराष्ट्र कुल चूड़ामणि महाराजा शिवा जी का यश वर्णन कर रक्खा है। जैसे कि अपने नायकों की प्रशंसा में भूषण ने केवल कोरी बड़ाई न कर के सत्य घटनाओं का वर्णन किया है वैसे ही यदि अन्य कविगण भी करते तो हिन्दुओं की ओर से भी भारतवर्ष का यथार्थ इतिहास लिखने में कोई कठिनाई न पड़ती। इस कवि की नरकाव्य करने में कुछ ऐसी हथौटी सी बँध गई थी कि जिस को यह कवि यश वर्णन करता था उस का रोम रोम प्रफुल्लित हो जाता था। इसी कारण इनका हर जगह असाधारण सत्कार होता था।

सब मिला कर निष्कर्ष यह निकलता है कि भूषण महाराज की कविता वास्तव में हिन्दी साहित्य की भूषण है। स्थिर लक्षणानुसार चाहे इनकी कविता को कोई महाकाव्य न कह सकै, परन्तु तो भी इन्हें हम बिना महाकवि कहे नहीं रह सकते।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमारा ग्रन्थ सम्पादन ।

भूषण जी की इस ग्रन्थावली के सम्पादन करने में हमने निम्नलिखित पुस्तकों से विशेष महायता ली है:—

(१) भूषण ग्रन्थावली बंगबासी प्रेस, कलकत्ता ।
(२) शिवराजभूषण नवलकिशोर प्रेस, लखनऊ ।
(३) " " पूनावाली प्रति
(४) " " निर्णय सागर प्रेस, बम्बई ।
(५) श्री शिवाबावनी व छत्रसाल दशक (व स्फुट कविता)
श्री कल्पतरु प्रेस, बम्बई ।
(६) शिवराज भूषण बारा बंकी में मुद्रित ।
(७) " " हस्त लिखित पं० युगुलकिशोर जी मिश्र के पुस्तकालय की गन्धौली (सीतापुर)
(८) " " हस्त लिखित कवि गोविन्द गिल्ला भाई जी काठियावाड़ के पुस्तकालय की ।
(९) ग्रैंटडफ़ कृत महाराष्ट्र जाति का इतिहास ।
(१०) रानाडे महोदय कृत महाराष्ट्र शक्तिका अभ्युदय ।
(११) टाड कृत राजस्थान ।
(१२) शिवसिंह सरोज ।
(१३) बुन्देल खंड गज़ेटियर ।
(१४) एलियट कृत मुसल्मानों के समय का इतिहास ।
(१५) लाल कवि कृत छत्रसाल प्रकाश ।
(१६) हंटर कृत भारतीय इतिहास ।
(१७) बर्नियर के ग्रन्थ में औरंगज़ेब का हाल ।

सप्तम और अष्टम ग्रन्थों से और विशेषतया अष्टम ग्रन्थ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से हमें विशेष सहायता मिली है । छन्द सब से अधिक गिल्ला भाई जी वाली प्रति में मिले परन्तु सब से शुद्ध प्रति पं० युगुल किशोर जी वाली पाई गई । तौ भी कहना ही पड़ता है कि बहुत शुद्ध कोई भी प्रति न थी और कतिपय तो महानष्ट भ्रष्ट थीं । अतः हमें अनेक छन्द अपनी ओर से सब प्रतियों को मिला कर एवं अपने कंठस्थ छन्दों द्वारा संशोधित करने पड़े । कतिपय छन्द किसी भी प्रति में शुद्ध नहीं मिले ऐसी दशा में विवश होकर हमें वे छन्द अपनी ओर से शुद्ध करने पड़े हैं ।

कविवर गोविन्द गिल्ला भाई जी की हम कहां तक कृतज्ञता प्रकाश करें जिन महाशय ने हम लोगों से भेंट न होने पर भी अपनी अमूल्य हस्त लिखित प्रति कृपा कर के हमारे पास भेज दी और कई महीने तक उसे हमारे पास रहने दिया । पण्डित युगुलकिशोर जी हमारे निकस्थ भतीजे ही हैं अतः उनके धन्यवाद के विषय हमें मौनावलम्ब ही उचित है ।

सहृदय पाठकों को ग्रन्थावलोकन से विदित होगया होगा कि इसमें शब्दों के लिखने में उनको शुद्ध संस्कृत के स्वरूप में न लिख कर बिगड़े हुए (हिन्दी)स्वरूप में लिखा गया है । यथा स्रम (श्रम) सकति (शक्ति) भूषन (भूषण) दुग्ग (दुर्ग) छिति (क्षिति) इत्यादि ।

इस के विषय हमें केवल यही वक्तव्य है कि भाषा में जो रूप उत्तम समझा जाता है और जो रूप भूषण जी एवं अन्य कविगण पसन्द करते हैं वही लिखा गया है ।

भाषा के कविगण केवल कटु बचाने एवं श्रुति माधुर्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाने के लिये ऐसा किया करते हैं और इस में कोई दूषण भी नहीं। इस प्रकार कविगण प्रायः निम्नलिखित वर्ण अपनी काव्य में न आने देने का प्रयत्न करते हैं। ट वर्ग, व, श, ड़, ऋ, ऋ, युक्त वर्ण, आधीरेफ, इत्यादि।

हमारे विचार में तो भाषा में इन संस्कृत व्याकरण सम्बन्धी झगड़ों के हटा देने से कोई दोष नहीं। फ़ारसी में ع الف, ظ ض ذ ز, ط ت, س ص ث, आदि के व्यवहार में जो कठिनाइयां पड़ती हैं वह सब पर विदित है। भाषा में ऐसी बातों के ख्यिर रखनेकी कोई आवश्यकया नहीं मालूम होती। हमें "कार्य्य, मर्म्म, लङ्क, मञ्च, कण्ठ, अन्त, कवि," इत्यादि को हिन्दी (देवनागरी) में कार्य या कारज, मर्म या मरम, लंक, मंच, कंठ, अंत, कबि," लिखने में कोई विशेष हानि नहीं प्रतीत होती। भाषा की लिखावट तो सुगम होनी चाहिए। यदि कोई मनुष्य बिना भाष्य पर्यन्त पढ़े देवनागरी भी न लिख सके तो हिन्दी सर्वव्यापिनी कैसे हो सकती है?

हमने इस संस्करण में अपनी टिप्पणियां दे दी हैं। कदाचित वह हमसे भी कम हिन्दी-परिचित महाशयों के काम आवें और हमारा साल डेढ़ साल का श्रम सुफल हो जावे।

श्यामबिहारी मिश्र
शुकदेवबिहारी मिश्र
४, ४, ०७।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धुरसे । राजेश राण महोदधि रूपहिं राज समुद्द रच्यो सुरसे ॥१५८॥

निरखन्त सरोवर जानि पयोनिधि पालि कि पव्वय रूप पहू । सलिता सम मिलन अधिक जल संचय विलसत जलचर जीव बहू । सारस कल हन्स बतक बग सारस चक्रवाक युग सुक्ख बसें । राजेश्वर राण महोदधि रूपहिं राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥१६०॥

प्रगटे जे तित्थ प्रयाग रु पुष्कर एकलिंग अर्बुद शिखरं । द्वारामति सेतुबन्ध रामेश्वर रेवत गिर मथुरेश वरं ॥ सुकृत तिन दरस स्नान जिन सलिलहिं कलिमल संकट दुष्ट नसें । राजेश्वर राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १६१ ॥

गुरु तर कल्लोल मरुत युत गज्जहि जग जन सेवित जास जलं । केई नर नारि चतुष्पद क्रीड़त दिशि दिशि पूरित नीर दलं ॥ आयो इह थान कि क्षीर उदधि इहि मेद पाट महि दरस मिसे । राजेसर राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १६२ ॥

नैन निरषन्त करहिं दृग निरमल स्नान सकल संताप हरे । पय पान करंत सु पीड़ प्रणासहि कवि मुख कित्तिक कित्ति करें ॥ अवतार सफल जिन दृग अवलोकित राज सरोवर चित्त रसें । राजेश्वर राण

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महोदधि रूपहि राज समुद रच्यो सुरसें ॥ १६३ ॥

कोटिन धन जिन लग्गौ जिन कमठानहि कोटिक धन युत जग्य कियो । निय नाउ सुजस प्रगटयो नव खण्डहि जय हिन्दूपति सफल जियो ॥ सुर भवन सुजस बोले इह सुरगुरु बिबुधाधिप सुनि सुनि बिहसे । राजेश्वर राण महोदधि रूपहि राज समुद्र रच्यो सुरसें ॥ १६४ ॥

चम्पक सहकार सदाफल चन्दन श्रीफल पुंगीसीयफलं । सहतूत अशोक विदाम सरौसिय रम्भा राइनि ताल कुलं ॥ दारिम जम्भीरि दाष बोलसिरी तर वर सरवर सकल दिसें । राजेश्वर राण महोदधि रूपहि राज समुद्र रच्यो सुरसें ॥ १६५ ॥

अषियात अचल युग युग अवनीपति निश्चल किय भल निज नामं । ससि रबि सुर शैल अवनिसुर सलितह कन्स मलन शिब बिधि कामं ॥ श्री देवि शिवा सावित्री सुरवर तोलें किन्ति कलानि हसें । राजेश्वर राण महोदधि रुपहि राज समुद्र रच्यो सुरसें ॥ १६६ ॥

अम्बर बर पत्र मिषी पयअम्बुधि लेखिनि वज्र सुरेश लिखे । अवदात तऊ परि पारन आवहि राण सु हिन्दू धर्म रखे ॥ सुरही जन सन्त सु विप्र सहायक बसुधा गयहय धन बगसे । राजेश्वर राण महो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १६७ ॥

रबिबंश बिभूषन जय हिन्दू रबि तिलक तुही सब हिन्दु जनं। असुरेस उथप्पन बीर अभङ्ग्ह घन दायक तुम सुजस घनं॥ राजे राजेन्द रिधू तुम राजस दौलत काइम प्रति दिवसें। राजेशर राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १६८ ॥

सविता ज्यों ससी सलिलनिधि ज्यों सर रटिये ज्यों बासर रजनी। केहरि मृग कनक लोह अन्तर मौक्तिक जल कन सुकर मनी॥ इह भांति सु राण असुरपति अन्तर यों उत्तम कवि उपदेसें। राजेशर राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥१६९॥

षल खण्डन देव तुम्हारो षग्गह को समरगन हेड़ करे। अवनीपति को तुव मीढ़ सुआवहि तोयधि को निज बाहु तिरें॥ जगराण सु नन्द सदा चिरजीवहु बोलत मान सु ज्ञान बसें। राजेशर राण महोदधि रूपहि राज समुद्द रच्यो सुरसें ॥ १७० ॥

॥ कवित्त ॥

सु रच्यो राज समुद्द रूप अट्ठम रयणायर।
राजसिंह महाराण हरष करि हिन्दू बायर॥
उत्तम तीरथ अवनि सफल भव होत संपिखत।
राज नगर रमणीक राज गढ़ सुख छहू ऋतु।
धनि धनि सु बंश पित माय धनि अवनि नाउ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नितु नितु अचल। जगतेश राण पाटे सु जय बदत
मान बानी विमल ॥ १७१ ॥
महियल जितै मंडान दखियें जिते दिगन्तह ।
सूर जिते संचरैं पवन जेते पसरन्तह ।
जिते दीप अरु जलधि जानि ससि तारक जहँ लग।
जिते वृष्टि जलधार जिते नर नारि रूप जग ॥
इल त्रितीक अष्ट कुली अचल बसुमति देखिय सम
विषम । कवि मान कहे, दिट्ठो न कहुं सरवर राज
समुद्द सम ॥ १७२ ॥

इति श्रीमन्मान कवि विरचिते श्रीराजविलास शास्त्रे श्री
राज समुद्र वर्णन नाम अष्टम विलासः ॥ ८ ॥

———:o:———

दोहा ।

श्री राजेश्वर राण जय, जित्तन औरंगजेब ।
षल षंडनि षूमान ए, टलें न ध्रुव ज्यों टेव ॥१॥
देव कहा दानव कहा, असपति कहा सु आइ ।
राजसिंह महाराण सें, जीति न कोई जाइ ॥२॥
अचल रज्ज इक लिंगवर, महियल ज्यों गिरि मेर।
रिधू राण राजेश्वर, जिन किय आलम जेर ॥३॥
किहि विधि बित्यो एक लह, उपज्यो क्यो सु उपाइ।
सो संबंध गुथिय सरस, सब प्रति कहो सुनाइ ॥४॥
आदि वैर हिन्दू असुर, धरनि धर्म दुहु काम ।
कोटिक इन बित्ते कलष, सबल करत संग्राम ॥५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बसुमति हिंदू नृप बड़े, इला हिंदु आधार ।
धरनि शीश हिंदू धनी, भामिनि ज्यों भरतार ॥६॥
जोर भये महि म्लेच्छ जब, तब हरि जानि तुरंत ।
आप धरे अवतार दस, आनन असुरनि अन्त ॥७॥
इल त्यों हरि अवतार इह, राजसिंह महरांण ।
औरंग से असुरेश सों जीते जंग जु आंन ॥ ८ ॥
असपति परि औरंग अति, कूर कपट के कोट ।
जिन मारे बंधन जनक, अल्लह दै बिचि ओट ॥९॥

छन्द पद्धरी ।

दिल्लीस साहि औरंग दिट्ठ, रुक्केव पिता रद्यहि बइट्ठ । विश्वास देइ तिन हने बंधु, अै अैसु दुष्ट उर रद्य अन्धु ॥ १० ॥

निय गोत सकल करिकें निकंद, सुलतान भयो बल बल सु छंद । मन्नैन चित पर बुद्धिमंत, दस मुख समान अहमेव वंत ॥ ११ ॥

जिन जीति प्रथम उज्जैनि जंग, सेना असंख कमधज्ज संग । दस सहस बुत्थि पर बुत्थि दिन्न, हय गय अनेक भय छिन्न भिन्न ॥ १२ ॥

संग्राम धोलपुर फुनि सु सज्जि,भय मन्नि साहि सूजा सु भज्जि । पत्तो सु भूमि दरियाव पार, इन साहि भीति तोऊ अपार ॥ १३ ॥

अल्लह सु देइ निज अंतराल, सु मुरादि साहि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उर जानि साल । करकरिय छुरिय लहु बंधु कंठि, गुरु भार बंधि जिन पाप गंठि ॥ १४ ॥

जय पत्त तृतिय अजमेर जुद्ध, बंधू सु साहि दारा बिरुद्ध । सोई कहंत लीनो संहारि, यों सकल सहोदर जर उखारि ॥ १५ ॥

एकल्ल भयो पतिसाह आप, पहु प्रगट कलंकी ज्यों प्रताप । न सुहाइ जास षट दरस नाँउ, धीधिट्ठ दुट्ठ बहु पाप धाउ ॥ १६ ॥

नव लख तुरीय पर वर सनाह, गय सहस पंच मनु वारि वाह । सज होत शीघ्र जिन चढ़त सैंन, रवि चंद बिंब ढके सुरेनु ॥ १७ ॥

जिन साहिजाद पन अप्प जोर, घंघल मचाइ गढ़ कज्ज घोर । दोलतावाद लिन्नो यु दुर्ग्ग, सुलतान तास पहुचाइ स्वर्ग ॥ १८ ॥

गुरु गाढ़देव गढ़ देश गुंड, नृप छत्रसाहि जसु देत दंड । हरिवर्ष हून इक्क लख हेत, लग्गो जु प्रेत मनु भरव लेत ॥ १९ ॥

फुनि लयो दुर्ग्ग पूना प्रधान, थिर धरिय तत्थ अप्पन सु थान । भारत्थ दक्खनिय राइ भंजि, रष्यो सु बेाल असपत्ति रंजि ॥ २० ॥

बस किंनह बीजापुर विसाल, भरि दंड भूमि रखै भुवाल । इहि भंति दिशा दक्षिनहि आंन, जिन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहि कीन जानत जिहान ॥ २१ ॥

दिशि पुब्ब सिद्धि आसाम देश, पयपंथ जास तिहु मास पेश । मंडलह सोइ दरियाव मच्छ, जगती सुलई जिन करिग झुच्छ ॥ २२ ॥

कुरु कासमीर कासी कलिंग, वैराट धाट बब्बरह बंग । बंगाल गोड़ गुज्जर विदेह, सोरट्ठ सिंधु सोबीर छेह ॥ २३ ॥

मुलतान खांन मरहट्ठ सार, पंजाब पंच पथ सिंधु पार । मेवात मालपद आदि देश, जिन साहि आन विब्बर विशेश ॥ २४ ॥

दरबार जास घन दोइ दीन, अनमिच्छ नेंन ठढ्ढे अधीन । सेवंत जोर युग कर सु ठीक, महाराज राज बर मंडलीक ॥ २५ ॥

उमराव षान इहि बिधि अनेक, अनमंत जास पय छंडि टेक । द्वादश हजारि जनु हुकमि दूत, परवार छंडि परदेश पूत ॥ २६ ॥

इक भरत दंड इक मिलत आइ, पारी यहि इक पतिसाह पाइ । इक परत बंदि जसु नृप उधुत्त, परिकर समेत तिय भ्रात पुत्त ॥ २७ ॥

चौरासि अवल्लिय रूप चारु, चौबीस पीरि क्रामाति धार । थप्पै स अप्प तुरकान थान, काजी कतेव कलमा कुरान ॥ २८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसना रटंत महमद रसूल, ईदह निवाज रोजा अभूल । बाराह छंडि गो सत्य बैर, सुदि पष्ष वीय बटै सुषेर ॥ २८ ॥

गरवर वदंत पारसि गुमान, प्रासाद तित्थ षंडे पुरान । महकाल थान मह जीव मंड, ओरंग साहि आलम अदंड ॥ ३० ॥

॥ दोहा ॥

करे रेछ असपति कुरस, सब दिन हिंदू सत्थि ।
जिन उज्जैनीं जंग जुरि, लुंठिय असुरनि लुत्थि३१॥
फुनि हुरंम धवला पुरहि, कर लुट्टी कमधज्ज ।
महाराय जसवंत नै, कोटिक कनकह कज्ज ॥३२॥
सेंसुख न मिले साहि सेां, कूर राय कमधज्ज ।
सिंह रुप जसवतसिंह, जोधपुरा युग रज्ज ॥३३॥
सो दुख सल्लै साहि उर, गस धरि बछै गैर ।
सुर धरपति महाराय सेां, वहै अहो निसि वैर ३४॥
सुंह मिट्ठो रुट्ठो सुमन, पारधि ज्यों सुर पुंगि ।
असपति ओरंग साहियेां, कमधज हनन कुरंगि ३५॥

॥ कवित्त ॥

अरवे ओरंगसाहि सुनहु जसवंत सिंह नृप ।
महियल तुम महाराय तरिण ज्यों प्रगट रह्यतप ॥
अब हम सेा असपती भये तप पुब्ब भाग बल ।
तुम आवहु हम सेव अधिक तेा देहु अप्प इल ॥
है विधि रसूल अब तुम रु हम बहुरि कबहु कर नह
बिरस । नन लषे कोइ इह निपुन हू गहिय साहि
इहि भंति गस ॥ ३६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ दोहा ॥

कपट सुलषि कमधज्ज कहि, साहि कहो सो संच।
परि तुम वा यक पलट ते, षिन न करो षल षंच॥३७॥
तिन कारन तुम दुसह तप, जिय हम सहो न जाइ।
दीजै हुकुम सु दूरि तें, धर त्यों लीजै धाइ ॥ ३८ ॥

॥ कवित्त ॥

सेंमुख न मिलों साहि निकट तुम सीस न नाऊं।
बन्दौ तुम बिश्वास और चढती रन आऊं॥ देस
सन्धि दिगपाल रहो रिपु यानहि रक्खन। मैं इह
मीनति होइ और कछु बहुत न अक्खन॥ सुविहान
आन शिर धारिहौं तपै सोइ दिल्ली तषत। कम-
धज्ज राइ जसवंत कहि राखों पतिसाही रषत ॥३९॥

॥ दोहा ॥

नावै ढिग कमधज्ज नृप, सुनियो औरँग साहि।
निफल पुब्बमति जानि निज, मते मंत मन मांहि॥

छन्द पद्धरी।

फुनि रच्यो एक पतिसाह फन्द। निय केद
करन कमधज नरिन्द॥ फिरि लिख्यो दुतिय फुर-
मान मान। बहु नरम भास राजस विनाम ॥ ४१ ॥

अवनी सुव धारे अधिक आन। परगना एक-
तीसह प्रधान ॥ सजि उभय तुरङ्गम कनक साज।
शिरपाव ऊंच जरकस ससाज ॥ ४२ ॥

सुख वैन और यों अक्खि मिट्ठ। आलम पगार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम बिरद इट्ठ ॥ ध्रुव टेक एक तुम साइ धर्म्म। कमधज्ज राय बर ऊंच कर्म्म ॥ ४३ ॥

पतिसाहि थंभ तुम भूमिपाल । दिल्ली सु मगर तुम ही सु ढाल । अहमदाबाद थानह सु सेन थिर रहो हुकम हम मन्ति चैन ॥ ४४ ॥

सुप्रसंस इती अनुगहि सिखाइ । पतिसाहि वेग दीनो पठाइ ॥ पहुंचो सु दूत महाराज पास। सुव धार अप्पि गुदरे नृहास ॥ ४५ ॥

अहमदाबाद थानह सु अक्खि । सिरपांव आदि गुदरे स सक्खि ॥ राखे सुथान फुरमान राज । बसुमती बधारह बाजिराज ॥ ४६ ॥

शिरपांव साहि पठयो सु सोइ । तिन सौं अमेल ज्यों तेल तोइ। तिहि कद्य तेहि पहिरयो न ताम । कछु जानि तत्थ कलिकूट काम ॥ ४७ ॥

पहुचयो सोइ षावास पानि । महाराय मन्त जनु देव मानि ॥ संतोषि दूत पाठयो साहि ॥ तपनीय साज हय दीन ताहि ॥ ४८ ॥

शिरपाव मुत्ति माला सतेज । शुभ षान पान आसन सहेज ॥ मनुहारि करी इक राखि मास। पठयो सु दिल्ली पतिसाह पास ॥ ४९ ॥

औरङ्ग साहि भेजो सु अत्थ । परख्यो नरिन्द सरपाव पत्थ ॥ पहिराइ अन्य पुरुषहिं सु प्रीति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर हंस तास तनु ते व्यतीत ॥ ५० ॥

ए ए सुबुद्धि कमधज्ज अंग । सब कहत सूर सामन्त संग ॥ घण घल्लि साहि विश्वासघात । महाराय करी सातूल मात ॥ ५१ ॥

पतिसाह जोर किंनो प्रपंच । राठोरराय चूक्यो न रंच ॥ जग मज्झ जास तप भाग जोर । किं करे तासु रिपु छल कठोर ॥ ५२ ॥

अवलोकि असुर पति कृत अनीति । भग्गेा विसास नृप मन अभीति ॥ अमरष गुमान बाढ्यो अछेह । राखे अमेल जनु अद्रि रेह ॥ ५३ ॥

इक कहे पुब्ब पच्छिम सु एक । पग पगहिं पन्थ भाषा प्रत्येक ॥ धर धरें इक्क वर क्षत्रि धर्म्म । कलि करें इक्क घन म्लेच्छ कर्म्म ॥ ५४ ॥

वाराह इक्क इक सुरहि बैर । इक हनत हक्कि इक करत गैर ॥ इहि भंति उभय नृप भो अमेल । सल्ले सु साहि उर जानि सेल ॥ ५५ ॥

नन छल्यो जाइ कमधज्ज नाह । अभिनव सु बुद्धि अंबुधि अथाह । चढ़ि समुष युद्ध जेा करो चूक । इनसेा न तऊ जित्तों अचूक ॥ ५६ ॥

सब एक होइ एहि हिन्दु साज । राजेश राण सगपन सकाज ॥ हाडा नरिन्द गढ़ पति हठाल । भल भाव सिंघ बुन्दी भुवाल ॥ ५७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तो लेहि दिल्ली चढ़े तुरङ्ग । जुरि जोर घोर हम सत्थ जंग ॥ बर बीर धीर बल बिकट बंक । सुलतान चित्त यों पत्त संक ॥ ५८ ॥

॥ कवित्त ॥

संकै चित्त सुलतान घोस निसि मन न मिटै डर । जोधपुरा जसवन्तसिंघ महाराइ जोर वर ॥ न मिलै चित्त निराट सैल पाषान रेह सम । अमुराइन उत्थपै धरै धर एक्क क्षत्रि भ्रम ॥ सिरपाव साहि औरंग को पहिरे नहिं कबहूं सु यहु । अति टेक लिये अमुरेस सों बैर भाव राखे सु बहु ॥ ५९ ॥

॥ दोहा ॥

जहां बैर तहां बैर बहु, मेल तहां बहु मेल ।
मन वित भग्गो ना मिलै तैसे तोय रु तेल ॥ ६० ॥

॥ कवित्त ॥

बढ़य बैर तें बैर मिलन तें मिलन बढ़य मन । चित्त वित्त तें बढ़य रिनह तें बढ़य अधिक रिन ॥ बुद्धि बुद्धि तें बढ़य रज्ज तें बढ़य रज्ज सिधि । लोभ लोभ तें बढ़य सिद्धि तें बढय सकल सिधि ॥ बढ़यं सु बीज बर बीज तें मान मान तें बढय महि । अबगाढ़ साहि औरंग तें गाढ़ अधिक राठोर गहि ॥ ६१ ॥

मन भग्गो नन मिलय मिलय नन भग्गो सुत्तिय । सार भग्ग नन संधे पल्लरै हासु प्रपत्तिय । कोटिक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किये कलाप दूध फट्टो न होय दहि। बाक हीन फिरि बाक किंपि नन होइ लोक कहि॥ तुट्ठो यु तार जोरे तऊ परैं गंठि दुहु मज्झ पुन। ओरंग करे सनमान अति मिलै नहीं महाराय मन॥ ६२॥

इक कहि क्षत्री ऊंच एक तुरकान सु अक्खहिं। बिधि रक्खहि इक बेद राह कुत वाहि करक्खहिं॥ बधै इक्क बाराह इक्क उर हुट्ट सुरहि उरि। रटें इक्क मुख राम इक्क रसना रसूल ररि॥ मन्नै सु इक्क दिशि पुब्ब मन इक पच्छिम दिशि अभिनमय। जसवन्त राय दिल्लीस युग राति द्यौस बादहि रमय६३

॥ दोहा॥

जसपति राजा जीव तें ससकत भग्गी साहि।
सल्लै आड़ो सेल ज्यों ओरँग के उर मांहि ६४॥

॥ कवित्त॥

जीवन्ता जसवन्तराय सुरधरहि रहुवर। मिलो न कबहूं मान साहि ओरंग हि सर भर॥ सँमुख न किय सलाम आन असपती न अक्खिय। कज्ज सु जान्यो कियो हद्द हिँदवानी रक्खिय॥ महराज सोइ पत्तो मरन ब्रह्म विष्णु शिव जासु बस। ए ए असार संसार इह सार एक युग युग सुजस॥ ६५॥

॥ दोहा॥

युगल पुत्त जसराज के, युग लहि लहु पन जान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरस इक्क पत्ते सु वय, सहसकिरन हस मान ॥६६॥
ते नृप सुत लहु जानि तव, अरि औरँग सुलतान ।
पिता बैर घन पुत्त सों, पोषन लगा सु प्रान ॥६७॥

॥ कवित्त ॥

बैरी न तजै बैर जानि निज समय जोर वर ।
मूसहि ज्यों मंजार मच्छ ज्यों बगल मज्झ सर ॥ राजा
जसपति स्यो अहोनिशि हम सो अज्झौ । अंगज
तिनके एह जोर इनको कुल जज्झौ ॥ पारोध पिशुन
ए पत्तले संपति हय गय लेहु सब । चित्त सु साहि
औरंग चित इह औसर आयो अजब ॥ ६८ ॥

॥ दोहा ॥

इह औसर आयो अजब महाराज गय मोष ।
भू असपति हू अब भयौ दूरि गयौ सब दोष ॥६९॥
बैरी थान बिडारिये कहें लोक यों कत्थ ।
यवन सु थप्पो जोधपुर, ए बालक असमत्थ ॥७०॥
राजा बिन को रट्ठबर जुरिहें हम सों जंग ।
धरो तुरक नृप सुरधरा इह चिन्तय औरंग ॥७१॥
पठयो दूत सु जोधपुर, करि पतिसाहि किताब ।
सकल रट्ठबर सत्थ सों, सो कहि जाइ सिताब ॥ ७२ ॥

॥ कवित्त ॥

सकल रट्ठबर सत्थ सुनहु सामन्त सूर वर ।
जे राजा जसवन्त अधिक संचे धन आगर ॥ सो मंगे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुलतान साहि औरंग समत्यह । तो सु येाधपुर तुम हि सकल मुरधर धर सत्यह ॥ बगसें सु फेरि सुबिहान बर महिरवान फिर होइ मन । षपि जाय षान उमराव तसु धरै सु साहि षजान धन ॥ ७३ ॥

॥ दोहा ॥

तागीरी न तरकि तुमहिं, मुरधर देश महन्त ।
प्रभु सेवा ते पाइहो, औरहि अवनि यु अन्त ॥७४॥
इहि पतिसाही रीति अति, कूर न मिट्टय कोइ ।
अचल चलय सलसलय अहि, जल जो उत्थल होइ ॥
सुनियो कमधज्जह सकल, मते मन्त मतिमान ।
पातिसाहि जान्यो पिशुन, अक्खै करि अभिमान ७६

॥ कवित्त ॥

हम जोधपूरा हिंदु धनी हम आदि मुरध्धर । हम कुल इनी न होइ दण्ड दैरहें साहि दर ॥ जो कोपै यवनेश तऊ इह धर शिर सट्टैं । राखै हम रजपूत कूर दानव दल कट्टैं ॥ आसुरी रीति नाहीं इहां धन गृह दै रक्खै धरनि । येां कहो साहि औरंग सों फुरमावै ऐसी न फुनि ॥ ७७ ॥

॥ दोहा ॥

जान्यो नृप जसवन्त को पत्तो ही पर लोक ।
ऐसी फुनि औ रंग जू फुरमाओ जिन फोक ॥७८॥
जानो कबहू एह जिन, हम तुम हुकमी होइ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धन सट्टें रक्खे धरनि, षग्ग महा बल षोइ ॥७८॥

॥ कवित्त ॥

षेती हम कुल षग्ग षग्ग हम अषय षजानह । षग्ग करैं बस षलक नाम हम षग्ग निदानह ॥ षल दल षंडन षग्ग षेत इच्छत हम षग्गह । क्षिति रक्षन फुनि षग्ग अहितु भग्गो इनि अग्गह ॥ षग धार तित्थ क्षत्री धरम आवागमनहि अपहरन । सो षग्ग बन्ध हम सूर सब धरय न साहि षजान धन ॥ ८० ॥

धन षजान नहि धरय करय नन एह नबल कर । जे कीनी जसराज सेव सेा करिहैं सुन्दर ॥ आगे हू आलमह भये बड़ बड़े महा भर । किनहि न ऐसी कीन धरे किन तुरक मुरध्धर । निश्चे यु एह ह्वै है नहीं रसना ए नर पट्टिहो । कमधज्ज रज्ज करतार किय महियल सो क्यों मिट्टिहों ॥ ८१ ॥

॥ दोहा ॥

जा ऐसी यवनेस सों जंपहु दो कर जोरि ।
किंपि न दै रट्ठोर कर कैसी लक्ख करोरि ॥८२॥
बेगि गयेा दिल्ली बहुरि दूत साहि दरवार ।
सकल उदंत सुनन्त ही असपति कुप्पि अपार ॥८३

॥ कवित्त ॥

कितिक एह कमधज्ज हमहि सत्थैं रखे हठ ।
दोलति हमहि यु दीन सु तेा समुझै न चित्त सठ८४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसा हमारी रहे बहुरि हम सों षग बंधै । राजा करि हम राखि सरयु हम ही पर संधै ॥ कृत हीन सकल कापुरुष ये कुटिल तें यु सूधे करें । असपती साहि औरंग हों धाराधर भुजबल धरें ॥ ८४ ॥

बैरी ए बिष बेलि फले जनु रूष सरिस फल । जैसो नृप जसवन्त भयो त्योंहीं ए हैं भल ॥ मार-वारि धर मारि बिदिग इन गिन गिन बट्टो । करि पद्धर गढ़ कोट के बिजन पद तें कट्टो । ल्याऊं सुख जन लछि सब कहों सोइ निश्चै करों । असपती साहि औरंग हों तों भल दिल्ली पै भरों ॥ ८५ ॥

यों कहि करि अभिमान तबल टंकार जहं किय । बज्जे चढ़न सुबग्ग हेट हय गय रथ हंकिय । नारि गोर धज नेजवान कमनैत बिबिधि परि । कुहकबान नीसान तोब सब्बान सोर भरि ॥ चतुरं-गिनि सज्जिय असंख चसु जनु उच्छरिय समुद्र जल । बढ़ी अवाज घन सकल बसु जग्गि अग्गि आराब झल ॥ ८६ ॥

सहस तीन सुंडाल मेघ माला विसाल मनु । अंजन गिरि उनमान अंग चंगह उतंग धनु ॥ झिलि कपोल मद झरत गुंज मधुकर ग्रहणंतह । दशन सउज्जल दिग्घ घंट घुघरू घ्रणणंतह । पचरंग झूल पट कूल मय सुज्झियर ढाल सिंदूर सिर । पिलवान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हत्थ अंकुश प्रबल बनि बहु बरन पताक बर ॥ ८७ ॥

उभय लक्ख बर अश्व सजड पर वर सपलानह । पंषी वेग पवंग पवन पय पंथ प्रधानह ॥ एराकी आरबी षेंग कबिला खुरसानी । साणोरा सिंहली कत्थि कांबोज किहाणी । काश्मीर किहाडा कोकनी चलत जानि मारुत चपल । षुरतार मार धरहरिय षिति प्रचलि शैल षुलि ईश पल ॥ ८८ ॥

पयदल सेन प्रचंड करषि कोदंड उदंडह । सनध बद्ध सायुद्ध चित्त अहमेव सुचंडह ॥ तीन सकति कटि तेग कुंत अरु ढाल सुकत्तिय । गुरज हत्थ किन गरुअ रोस भरि दिट्ठि सुरत्तिय ॥ सुररंत मुंड मय मत्त मनु केइ तोव कंधे बहय । धमकंति धरनि जिन पय धमक रुप्पि पायरिन मुखर हय ॥ ८९ ॥

सुभर रत्थ बहु शस्त्र कवच बगतर कल हंकित । षज्जर भरित खजान सहस इक डोरि सु शोभित ॥ बहु बिधि रषत वषत्त करभ भरि भार अनन्तह । चढ्यो बाजि चकतेस घोष नोबती घुरन्तह । मचि सोर जोर रव लोक मुष हय हीसतु गज्जंत गय । सुनियै न सद्द घन भरि अवन्न भूमि सकल हयकंप भय ॥ ९० ॥

सत्तरि षांन सुसत्थ बलिय उमराव बहत्तरि । तरु बन घन तुट्टंत पुहवि उन मग्ग मग्ग परि ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रवि नभ ढंकिय रेनु चलत गिरि भय चकचूरह। सर सलिता दह सुक्कि पसरि दिसि दिसि दल पूरह। फनधर सभार संकुरिय फन कठिन कुम्भ घुप्परि कटकि। परि पंच कोस सुपराव यहु झंड रुप्पि बहु विधि झटकि॥ ८१॥

कूंच २ करि षरिग त्रय २ सकोस षिति। आए गढ़ अजमेर प्रगटि आवाज जगत प्रति। मारवारि मेवार षंड षेरार खरभरि॥ बागरि कुप्पन बहकि डहकि गढवार चित्त डरि। कांबोज कुक्कू परि कलकलिय प्रचलिय कच्छ विभच्छ पह। चलचलिय चहों दिशि चक्कू चढ़ि औरँग साहि प्रतात यह॥ ८२॥

॥ दोहा॥

गज्जि झंड अजमेर गढ़ अप्प साहि औरंग॥
सवा लाख हय सेन सों रहयो सुरढ़ घन रंग॥ ८३॥
सत्य तुरँग सत्तरि सहस सहिजादा सजि सैन॥
पठयो सुरधर देश पर लछि कमधज्जी लेन॥ ८४॥
सो सिताव आवत सुन्यौ सज्यौ रट्ठवर सत्थ॥
हय गय पयदल घनह सम सहस बतीस समत्थ॥८५॥
जोधपुरह तें यवन दल पंच कोस सु प्रमान॥
आइ परयो जानकि उदधि आडंबर असमान॥८६॥
अनुग सुक्कि तिन अक्खि इह सुनहु रट्ठवर सूर॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करो कलह हम सत्थ कैं सौंपो धन संपूर ॥ ८७ ॥
लेहु निमिष विश्राम लटि आए हो तुम अज्ज ॥
कल्हि सही हम तुम कलह कही बहुरि कम धज्ज ॥८८॥
बित्यौ बासर बत्तही परी निसा तम पूर ॥
छल करि के तब रिपु छलन सजे रट्ठबर सूर ॥ ८९ ॥

॥ कवित्त ॥

अद्ध रयनि तम अधिक छलन रिपु इक्क कियो छल । संढ पंच सय शृंग जोइ युग युगह लाल झल ॥ हंकिय सो वर हेट उभय चर अरि दल अभिमुष । अप्प चढ़े दिशि अवर लिये बर कटक इक्क लष ॥ पेखिय चिराक प्रद्योत पथ संड समुष धाए असुर ॥ उत तें सुवीर अजगैब के परे आइ अरि सेन पर ॥ १०० ॥

छन्द भुजंगी ।

परे धाइ अरि सेन परि रोस पूरं । सजे सेन सायुद्ध रट्ठोर सूरं ॥ किये कंठ लंकालि कंकालि कूरं । झनंकी यु षगौ बजी झाक झूरं ॥ १०१ ॥

मची मार मारं जनं मूख मूखे । मिले जानि गो मंडलं सीह भूखे । सरं सोक बज्जी नभं ढंकि सारं । भटक्कै घनं सोर आराब भारं ॥ १०२ ॥

घटक्कै धरा धुन्धरं पूरि धोमं । बढ़े बीर बीरार संलग्गि ब्योमं ॥ फुरे योध हत्थं महा कूह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुट्टी । इतें आसुरी सेन पच्छी उलट्टी ॥ १०३ ॥

धये धींग धींगं धरालं धमक्के । चहों कोद तें लोकपालं चमक्के । जपे इट्ठ जप्पं जुरे जोध जोधं । करो कंक बंके भरे भूरि क्रोधं ॥ १०४ ॥

मुरे सार सारं ननं मुष्ष मोरे । पटे टट्टरं वान सन्नाह फोरे ॥ धरे शीश नच्चैं कमंधं प्रचंडं । मही भिन्न भिन्नं रुरे रुंड मुंडं ॥ १०५ ॥

लरें दोन के शीश पच्छैं लटक्कें । कहूं कंठ ज्यों हड्ड जुडे कटंकें । घने घाउ लग्गे किते बीर घूमें । झुकंते धुकंते किते फेरि झूमें ॥ १०६ ॥

हहक्कं तहक्कं किते हायहायं । परे घंषि षित्तं झरे हत्थ पायं । परे दीप मज्झे कितें ज्यों पतंगा । उछं छेनि छंछे करे होम अंगा ॥ १०७ ॥

भभक्कंत ओनं कटे के भसुंढं । बिना दंत दंती परे हैं बिहंडं ॥ बहू बान बेधे कुनंनन्ति बाजी । गए चून हैं पैदलं मीर गाजी ॥ १०८ ॥

शिवें संग है ऊतमंगा सरोजा । चवंशट्ठि लागी टगी चित्त षोजा । पिये ओन पानं बहे बाह पूरं । बहे बाहु जंघा भुजंतं बिरूरं इ १०९ ॥

बिना सत्थ केते परे लत्थ बत्थें । रतं रोस रत्ते रुपे पाइ हत्थे ॥ मचे मुठ युद्धं मनौं मल्ल मल्लं । अरे मत्त माहिष्ष ज्यों द्वै अडुल्लं ॥ ११० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किते कातरा काय ज्यों एन कंपैं । नचे नारदं तुंवरुं जैति जंपैं॥ गहक्कैं शिवा चित्त गोमायु गिद्धं। लहक्कैं पशू पंखिनी मंस लुद्धं ॥ १११ ॥

किते डूब जमदाढ़ कट्टैं कटारी । भरं झुंझरा भीम ज्यों रोस भारी ॥ तिनं मोह माया तजे गेह तीयं । पुकारें बकारें मनू ढाक पीयं ॥ ११२ ॥

सराहें रु बाहैं किते सेल सेलं । चुवै रत्तआरत्त ज्यों नीर चैलं ॥ तुटें चाप चम्मं धजा तेग त्रानं। बरं युद्ध आनुद्ध में भो बिहानं ॥ ११३ ॥

फिरे पील सूने परे पीलवानं। लुटैं लछि लुंटाक पिक्खे सु प्रानं । हयं नंषि रुंडं नियं छन्द हिंडै। बली तत्थ बड़ हत्थ रट्ठोर तंडै ॥ ११४ ॥

मनो पाय पायोधि छंडी मृजादा । सबै सेन सत्थे भगे साहिजादा ॥ भगी सेन सुलतान की सन्निभीतं । बढ़ी जेति कमधज्ज सत्थे वदीतं ॥११५॥

नियं जेति मन्नी यु बग्गै निसानं । जपै देव जे जे सुरंगे न यानं । षलं षंडि षग्गेंवरं खेत सुज्झयो। बहू लुत्थि आलुत्थि किन जाइ बज्झयो ॥ ११६ ॥

परे मीर सैयद्द रन इक्क पंती । गिनैं कोंन है पैंदलं और दन्ती । भयो षेम पेमं सबै अप्प सत्थें। कहे मान यों छन्द रट्ठोर कत्थें ॥ ११७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ कवित्त ॥

कलह जीति कमधज्ज सेन भग्गी सुलतानी । भंड नेज झकझोरि तोरि डेरा तुरकानी ॥ हय गय बुट्टि हजार लुट्टि केउ लख धन लिन्नो । स्वामि बिना संग्राम कहर अरि दल सं किन्नो । पैंतीश कोश पच्छो फुल्यौ सहिजादा सुबिहान को । पत्ते सुबीर सब जोधपुर हठ रख्यो हिँदुवान को ॥ ११८ ॥

॥ दोहा ॥

परि पुकार अजमेर पुर सुनि औरंग सु बिहान ।
कमधज जुरि जीते कलह सेन भगी सुलतान ॥ ११९ ॥
जाने हिंदू जोर वर न तजें टेक निदांन ।
कलह किये नावे सुकर सोचे चित सुलतान ॥१२०॥
करते तो हम ए करी राठोरनि सें रारि ।
इन अग्गें फुनि आहटें ह्वै पतिसाही हारि ॥१२१॥
फिरि बसीठ फुरमान लिषि पठयो से पतिसाह ।
करन मेल कमधज्ज पें राखन रस दुहु राह ॥१२२॥

॥ कवित्त ॥

बुल्लय बचन बसीठ मिट्ठ घन इट्ठ सुद्ध मन । सुनहु रट्ठवर सूर वीर तुम युद्ध बियक्खन । कीनो हम रण संग प्रबल तुम प्रान परखन ॥ परि तुम बड़ रजपूत राह रखन अभंग रन । हम तुम सु प्रीति ज्यों आदि है त्यों राखहु रस रीति तुम ॥ आखे सु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहि ओरंग अब भूलि न को रक्खेा भरम ॥ १२३ ॥

भूलि न राखहु भरम नरम अति करिग चित्त तिय । सजि चतुरंगिनि सेन प्रबल हय गय पयदल प्रिय ॥ हम पै आवहु हरषि निरषि नृप जसपति नन्दन ॥ रीझि करौं राजेंद्र अप्पि सुरधर आनंदन । इनमें अलीक जेा होइ कछु सुक्रत तेा हम फोक सब ॥ कमधज्ज सतेा सुलतान कहि अलिय टेक मंडेा न अब ॥ १२४ ॥

॥ दोहा ॥

अलिय टेक मंडेा न अब जंपै येां यवनेश ॥
रस राजस दुहु राखिये करि सब दूरि कलेश ॥१२५॥
मन्नी सब कमधज्ज मिलि शांत लष्येा सुलतान ॥
नृप सुत करि अग्गै न्टपति सजि दल बल संघान ॥
आए चढ़ि अजमेर गढ़ पय भेटे पतिसाह ॥
नृप सुत यूग किन्नै नजरि असपति चित्त उमाह १२७

॥ कवित्त ॥

इक दह हय गय एक सज्ज सेावन सिंगारिय । मनि इक मुत्तिय माल उभय चामर अधिकारिय ॥ इक करवाल अनूप एक जमदाढ़ सु अच्छिय । पातिसाह प्रति पेष लखइ गरु २ बसु लच्छिय ॥ कमधज्ज करी रस रंग करि भयो मेल दुहुं दीन भल । हरष्यो सु साहि ओरंग हिय आण दाण बरती अचल ॥१२८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ दोहा ॥

कहि आलम कमधज सुनहु योगिनि पुर हम जाइ।
नृप गुरु सुत करिहे नृपति, बहु सनमान बढ़ाइ १२८॥
तिहि कारन हम सत्य तुम चलो सकल चित चंग ।
प्रभु सब करिहैं पद्धरी भूलि न जानहु भंग ॥ १३० ॥
बहु बिधि बचन बिसास तें चूक न चिंतय चित्त ।
ढिल्लि नेर दिल्लीस सों सब कमधज संपत्त ॥ १३१ ॥
सेव करत नृप सुतन सों बासर बहुतक बित्त ।
परि न देत महराय पद असपति चित अपबित्त १३२॥

॥ कवित्त ॥

दिल्ली पति लखि ढिल्ल कथन कमधज्ज कहावहि । पातिशाह परवरदिगार कद गहर लगावहि ॥ हम आए प्रभु हुकुम देश हम हमकूं दिज्जे । यप्पि जोधपुर थान नृपति गुरु सुत नृप किज्जे ॥ सत पुरुष बैन डुल्लै न सहि ध्रुव सुराह उर धारियहि । रस किये रसहि रस राखिये । अरज इती अवधारियहि ॥ १३३ ॥

सुनि सुबोल सुलतान उलटि उलटी इह आखिय । रह हम तुम कहा रह्यो सो व तुमही चित साखिय ॥ आगे हू तुम ईश वह्यो हमसेा गुमान बहु । जुरिग उजेनी जंग सेन हय गय मिंडिय सहु ॥ फुनि लुट्टि हुरम धवलापुरहि सल्लरीति सल्ले सदुष ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेा राज रीति तुम संगही सेाचि कहो रहि क्यों न सुष ॥ १३४ ॥

रयण कनक अरु रूप धनी तुम जे संचिय धन। सेा हम अप्पहु सञ्च गिनिब हय गय खञ्चर गन ॥ तेा सुमेल हम तुमहिं पुहबि तबही तुम पावहु । अब हम सेां अरदास कहा इह बृथा कहावहु ॥ मन्नै सु कोन महाराय के पुत्त न जाने कब प्रगटि । मय मत्त भयेा जनु पंचमुष पातिशाह बचनहि पलटि ॥ १३५ ॥

॥ दोहा ॥

रिपु जन मन राखें न रस, गुन परि केा न महंत ।
पन्नग केा पय प्यावतें, समझि करे चित संत ॥१३६॥

॥ कवित्त ॥

रिपु जन के रस कहा कहा तिन बचन बिसासह । कहा पिशुन सु प्रतीत कहा अरि केाइ कलासह ॥ महुरे केा कहा मीठ कहा हिमशैल शीत जग । कहा स्व प्रगटित अगनि कहा पय पेाषित पन्नग ॥ पतिशाह सुबेाल पलट्टि कें रढ़ लग्गो सुख जान रुष । शुभ सीष तास केा सीखवै लायक नर जेा मिलय लष ॥ १३७ ॥

॥ दोहा ॥

सुनि एसी राठोर सब, भये रोस भर भार ।
सब पतिसाही सेन पर, तुट्टें ज्यों षहतार ॥ १३८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ छंद मोती दाम ॥

जगे कमधज्ज महा रन येाध । किये दृग रत्त भये भर क्रोध ॥ बजी बर बीरन हक्क बहक्क । छुटे जनु इभ्भ महा मद छक्क ॥ १३८ ॥

धरातलि धावत उठ्ठि धमक्क । चहूं दिशि दानव देव चमक्क ॥ कढ़ी कर नागिनि सी करवाल । जितं तित ढ़ाहत है गज ढाल ॥ १४० ॥

लसे मनु लोह कि आग्गि लपट्ट । झनंकत नद्द षरी षग झट्ट । षलं दल कीजत षंड बिहंड । जितं तित मीर परे बिन मुंड ॥ १४१ ॥

खड़क्कत हड्डु सुजड्डु करार । करे जनु कट्ठिय शैल कषार । भभक्कत आेन सु इभ्भ भसुंड । जितं तित जोर मच्यो षल षंड ॥ १४२ ॥

परे जनु पत्थर रूप पठान । हये जम दाढ़नि कट्ट जुवान ॥ भजे नर कायर भारथ भीर । गजें प्रति सद्दनि ब्योम गुहीर ॥ १४३ ॥

किते बिन शीश नचन्त कमन्ध । लड़ब्बड़ मत्थ लटक्कत कन्ध ॥ किते घन घाइनि छक्क घुमन्त । जितं तित देारत पीसत दन्त ॥ १४४ ॥

उभंटिय आसुरि सेन अलेख । जितं तित सत्थर ह्वै रहे सेस ॥ गिते कुन गरबर भक्खर ग्यान । षलेाचिय लेादिय बिद्धिय बान ॥ १४५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ररब्बरि षब्बरि रुम्मिय रुंड । झंझोरिय झूरिय तप्तर झुंड ॥ रनं घन रोलिय मत्त रुहिल्ल । जितं तित मञ्जिय रत्त चिहल्ल ॥ १४६ ॥

षुरेसिय षग्ग किये षय काल । हवस्सिय होइ रहे यु बिहाल ॥ सुसेंधर मुच्छिय केसरि बानि । जितं तित जाइ परे पय पानि ॥ १४७ ॥

इही विधि आलम के मुँह अग्ग । जितं तित झंग महा भर जग्ग । भरयो दरबार भग्यो भहराय । भगे यवनेश सु अन्दर जाय ॥ १४८ ॥

षरब्भरि आसुर षान जिहान । जितं तित रुक्किय आवन जान ॥ जरे दरबाननि दुर्ग कपाट । घनं परि घेर रुके जल घाट ॥ १४९ ॥

रलं तलि लोग परी पुर रोरि । दुरे नर भग्गि दई द्रढ़ पौरि ॥ गृहं गृह कंचन रूब गडंत । भगे बहु भामिनि बाल रडंत ॥ १५० ॥

गहै कुन कप्पर सार किरान । घरप्पर ठिप्पर ठिल्लहि धान ॥ मची घन लम्बी कूह कराल । चहो दिग होइ रहो ढकचाल ॥ १५१ ॥

सुषं सुष जक्किय मारहि मार । हये नर मेछिय केउ हजार ॥ ढंढोरिय ढिल्लिय किन्न सुढिल्ल । किये गढ़ कोट उथल्ल पुथल्ल ॥ १५२ ॥

बिहंडिय खंडिय श्रेणि मुहट्ट । जितं तित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीजत गेह कुघट्ट ॥ लबक्कहिं लुट्टहिं लुट्टक लच्छि। गए तिन नाहर नंचन गच्छि ॥ १५३ ॥

बिहस्सिय योगिनि बीर बेताल महेश सु गुंथहिं मच्छय माल ॥ झरप्फहि पंषिनि गिद्धिनि झुंड। उड़ नभ कंक गहे पल तुंड ॥ १५४ ॥

जितं तित लग्गिय लुच्छित जेट। पशू पल-चारिनि पूरिय पेट ॥ बढ़यो रस बैरिन सेन बिभत्स। सुरासुर मन्निय अद्भुत अच्छ ॥ १५५ ॥

अरे नन आसुर अड्डुह आइ। लगी जनु मारुत ग्रीषम लाइ ॥ चकत्तह चूरि चमू किय चून। फिरे हय हीसत सिंधुर मून ॥ १५६ ॥

मसक्कहि थक्कहि औरंग साहि। कलंमलि चित उठंत कराहि। हहक्कहि तक्कहि मिड्डुहि हत्थ। महल्ल-नि मज्झ डुलावहि मत्थ ॥ १५७ ॥

गए कितहू तजि मीर गँभीर ॥ नहीं सु नवाबनि के मुंह नीर। तुरक्क न कोइ रह्यो हम तीर। भिरे इन सत्थ करे हम भीर ॥ १५८ ॥

इही बिधि युग्गिनिनैरहि आइ। बली कमधज्ज सुषग्ग बजाइ। चले चतुरंग चमू निय लेइ ॥ दमा-मह दुट्ठनि के सिर देइ ॥ १५९ ॥

॥ कवित्त ॥

दिल्लि नयर करि ढिल्ल ढाहि आबास ढँढोरिय। दुठ महल दलमलिय बग्घ से असुर बिरोलिय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चूरि चक्कत्ता चमू चंग हय गय चतुरंगह । लुट्टि अनंत सुलच्छि रजत अरु कनक सुरंगह ॥ भयभीत साहि औरंग भय जरि कपाट अंदर दुरिय । कमधज्ज सकल रक्खन सुकुल कलह केलि इहि बिधि करिय ॥ १६० ॥

॥ दोहा ॥

करि यौं दिल्लिय पुर कलह रिन अभंग राठोर ।
उद्धंसिय असुरान अति अरयन को मुंह और ॥ १६१ ॥
पहर तीन युग्गिनि पुरहि पारी धारि प्रजारि ।
कीन कुरूप कुदरसनी नाइक बिन त्यों नारि ॥ १६२ ॥
करि अग्गें महराइ के पुत्त प्रभाकर रूप ।
चले सज्जि चतुरंग चमु अप्पन इला अनूप ॥ १६३ ॥
आड़े जे आए असुर सकल लिए सु सँहारि ।
मारवारि पत्ते सुमहि प्रमुदित सब परिवार ॥ १६४ ॥

॥ कवित्त ॥

आए सुरधर इला जीति योगिनिपुर जंगह ।
सूर रट्ठवर सैन सकल हय गय भर संगह ॥ घोष निसान घुरंत जोधपत्ते सु जोधपुर । जिन जिन की जो अवनि थप्पि तिन तिन सथान थिर ॥ आलम औरंग महत अरि अति उद्धत आसुर अकल । भारत्थ युद्ध तिन सत्थ भिरि बसुमति लीनी अप्प बल ॥ १६५ ॥

कितक दिनमि कबिलेश किन्न निय महल मंत कजि । जुरे यवन घन जूह षान उमराव खूब सजि । हय गय केउ हजार पार पायक को पावहि ॥ गुरज-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दार छरिदार जोरि इतमाम जनावहि । जुरि सेन सेनपति जोहरिय काजी कुल्लि दिवान बर ॥ कोत-वाल दूत सँधिपाल कै दल बद्दल जनु साहि दर ॥१६६॥

कहि तब असपति कुप्पि सुनहु अवननि नवाब सब । कहो सोइ कीजिये अरि सु आवै न हत्थ अब॥ मुरधर कै मेवासि तेग बंधी हम सों तिन । हमहू अदब उथप्पि लरे हम महल झुलक्खन ॥ उमराव षांन उद्धंसि कें निधि लुट्टी दिल्ली नगर । हम सल्ल भंति सल्ले हिये पत्ते ते रिपु जोधपुर ॥ १६७ ॥

॥ दोहा ॥

तिन कारन हम मन तुरित भंजन रिपु जनु भीम ।
काजी पूछहु बेगि कैं, सजैं ब किन दिन सीम ॥१६८॥
करत प्रश्न दिन शुद्धि कहि, काजी पिक्खि कुरान।
भद्दव सित दुतिया भली, सजो सेन सुलतान ॥१६९॥

॥ कवित्त ॥

संवत्सर छत्तीस सीम सतरासें संवत । भद्दव दुतिया धवल चढ्यो पतिसाह चंड चित्त ॥ दोय सहस गुरु दंति पंति जनु हल्लिय पब्बह। उभय लक्ख उत्तंग बाजि बर बेग सु सब्बह ॥ आराव नारि गोरह अधिक रथ जंत्री दो सहस रजि । औरंग साहि आडंबरहि सेन कोटि पायक सु सजि ॥१७०॥

आवत सुनि औरंग साहि दल बद्दल सज्जह ।
दुर्ग दास निँगदेव कलह कारक कमधज्जह ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि सकल रट्ठौर भए इक मिक्क मंनि भय। मंत इक्क बर मतें युद्ध जिहि भंति लहे जय॥ रिपु दुट्ठ धिट्ठ आरिट्ठ रिन चमू जोर आवंत चलि। किज्जे ब जुद्ध कबिलेश सो टेक छंडि ज्यों जाय टलि॥ १७१॥

जंपे ताम सुजानराय सोनिंग रट्ठबर। ईश बाल अप्पने सुकल दुतिया जनु ससि हर॥ सो न जोग संग्राम नृपति जसवंत सुनंदन। सुभट लरें प्रभु संक करें भारथ पिपु कंदन। अप्पन अनाह सबही सु सम हिंडहि अरि सुष किन हुकम॥ तिन काज रांण श्रीराज सों मिलि रक्खे षित्री धरम॥१७२॥

ए हिंदूपति आदि धनी हिंदवान धरमधर। इन सुबंस अकलंक षग्ग असुरान षयंकर॥ इन सों मिलत न ए ब एह सरनागय बत्सल। कालंकित केदार नीति गंगा जल निर्म्मल॥ नर नाह और इन से नहीं अप्पहिं रक्खन जो सुपहु। श्री राज रांण जगतेश सुअ बंके बिरुद बदंत बहु॥ १७३॥

अबल राय आधार सबल सुलतान सु सल्लह। सुरगिरिवर समतुल्ल अप्प अज्जे ज अडुल्लह। चित्र-कोट पति अबल जास इकलिंग ईसवर॥ ब्रह्म वेद बाहरू उदधि जल दल आडम्बर। पुहवी प्रसिद्ध ए छत्र पति दुज्जन जन घन दल दमन॥ श्री राज राण जगतेश सुअ राजे ज्यों सीता रमन॥ १७४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना ।

अब तक ग्रन्थमाला की पिछली संख्याओं में निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं ।

संख्या १ और २

(१) ध्रुवदास की भक्तनामावली । भक्तों के संक्षिप्त वृत्तान्त-सहित । सम्पादक-बाबू राधाकृष्णदास । मूल्य ॥≋)

(२) सदलमिश्र की चन्द्रावती । सम्पादक-बाबू श्यामसुन्दर-दास बी० ए० । मूल्य ।-)

संख्या ३, ४, ५, ६, ७, ८ और ९

(३) सूदन कवि का सुजानचरित्र । सम्पादक-बाबू राधाकृष्ण दास । मूल्य २)

* (५) लाल कवि का छत्रप्रकाश । सम्पादक-बाबू श्यामसुन्दर-दास बी० ए० । मूल्य १)

(६) नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी । सम्पादक-बाबू राधाकृष्ण-दास । मूल्य ।≋)

संख्या १०

(७) चन्द्रशेखर का हम्मीरहठ । सम्पादक-बाबू जगन्नाथदास-बी० ए० (रत्नाकर) । मूल्य ॥)

संख्या ११ और १२

(८) श्रीधर का जंगनामा । सम्पादक बाबू-राधाकृष्णदास और पण्डित किशोरीलाल गोस्वामी । मूल्य ।॥)

(९) मलिक मुहम्मद जायसी की अखरावट । सम्पादक-महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकरद्विवेदी । मूल्य ।≋)

संख्या १३ और १४

(१०) मुंशी देवीप्रसाद की महिलामृदुवाणी । मूल्य १)

---

* इस पुस्तकावली की चौथी संख्या का ग्रन्थ पृथ्वीराजरासो है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४ और २५

(११) दादूदयाल की बानी। सम्पादक महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकर द्विवेदी। मूल्य

(१२) कवि नूरमुहम्मद कृत इन्द्रावती, पहिला भाग। सम्पादक-बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०। मूल्य

(१३) कविजोधराजकृत हम्मीररासो। सम्पादक-बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०। मूल्य

(१४) दादूदयाल के सबद। सम्पादक-महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकरद्विवेदी। मूल्य १॥)

(१५) कविआनन्दघनकृत विरहलीला। सम्पादक-बाबू काशीप्रसाद जायसवाल। मूल्य

संख्या २६, २७, २८, २९, ३० और ३१

(१६) कविपद्माकरकृत वीरविरदावली। सम्पादक लाला भगवानदीन। मूल्य ॥)

(१७) भूषणग्रन्थावली। सम्पादक-पण्डित श्यामविहारी मिश्र एम० ए० और पण्डित शुकदेवविहारी मिश्र बी० ए० [अपूर्ण]

(१८) मान कवि कृत रोज विलास। सम्पादक लाला भगवानदीन (अपूर्ण)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अङ्कसंख्या ३३] [पुस्तक संख्या १८ और १९

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला।

सम्पादक-माधवप्रसादपाठक।

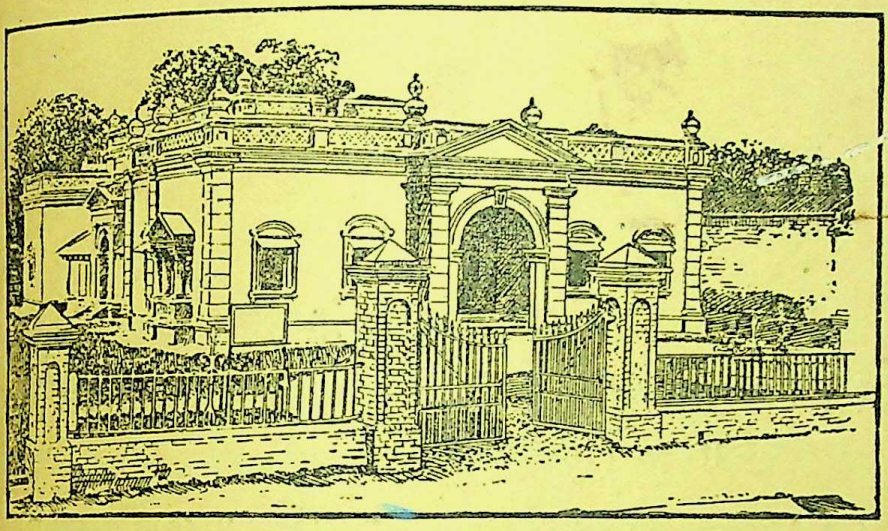

Fasciculus No. 33.] [Books Nos. 18 & 19

NAGARI-PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR—

MADHAVA PRASADA PATHAKA.

PUBLISHED BY

THE NAGARI-PRACHARINI SABHA.,

BENARES,

Under the patronage of the Government of the United Provinces.

मूल्य प्रति संख्या ॥) *Price per fasciculus As.8*

ISSUED ON THE 20th October 1910.

Printed by Madho Prasad, Bharat Press, Benares, for the Publisher

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका ।

(१) मानकविकृत राजविलास—लाला भगवानदीन सम्पादित (१७७–२०८)

(२) देवग्रन्थावली—पण्डित गणेशविहारी मिश्र सम्पादित (१–३२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव ग्रन्थावली।

प्रेमचन्द्रिका।

——:o:——

महाकवि देवजी विरचित।

सवैया।

आँखिन आँखि लगाए रहौं सुनिए धुनि कानन को सुखकारी। देव रही हिय मैं घरु कै न रुकै निसरै बिसरै न बिसारी॥ फूल मैं बासु ज्यों मूल सुबासु को है फल फूलि रही फुलवारी। प्यारी उज्यारी हिये भरि पूरि सु दूरि न जीवनमूरि हमारी॥ १॥

जागत सोवत हू सपने अपनेई अयानपने को अँध्यारो। केहू छिपै न छिनौ न दिनौ निसि दीपति देह सदेह उज्यारो॥ नैनन ते निचुरयो परै नेह सु रोकत बैनन प्रेम पत्यारो*। दूरि रहै कित जीवन मूरि जु पूरि रह्यो प्रतिबिंब ज्यों प्यारो॥२॥

दोहा।

राधा कृष्ण किशोर युग पद बन्दौं जग बंद।
मूरति रति सिंगार की सुद्ध सच्चिदानंद॥ ३॥

---

* एतिबार, पत्याना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सवैया ।

देव सबै सुखदायक संपति संपति दंपति दंपति जोरी । दंपति सोई जु प्रेम प्रतीति प्रतीति कि रीति सनेह निचोरी ॥ प्रीति महागुन गीत बिचार बिचार कि बानी सुधारस बोरी । बानी को सार बखान्यो सिँगार सिँगार को सार किसोर किशोरी ॥ ४ ॥

जेा सुभ बानी बसै बिधि संग सदा सिव अंग लसै सु भवानी । जेा कमला[1] कमलापति के सँग देव सचीस[2] सची सुखदानी ॥ दीपसिखा ब्रज मंदिर सुन्दर जागत जेाति सबै जग जानी । साधु कि साधिका सिद्धि समाधिका सेा ब्रजराज की राधिका रानी ॥५॥

दोहा ।

मरदनसिंह महीप सुत बैस बंस विद्योत[3] ।
करौ सिंह उद्योत को राधा हरि उद्योत[4] ॥ ६ ॥
करत समाज सु साज सुख राज हंस जेहि सेव ।
सुजसु चंद उद्योत रसु रची चंद्रिका[5] देव ॥ ७ ॥
पूरन पुन्य उदोत जेहि प्रेम पियूष[6] पयोधि[7] ।
निकसी निरमल चंद्रिका बिकसी सब जग सोधि ॥८॥

---

१ लक्ष्मी ।
२ इन्द्र ।
३ विदिति, ।
४ उदय ।
५ किरण ।
६ अमृत ।
७ समुद्र ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ प्रेमरस बरनन । कवित्त ।

जाके मद मात्यौ सेा उमात्यौ[1] ना कहूँ है कोई बूड्यौ उछल्यौ ना तर्‌यौ सेाभासिंधु सामुहै । पीवत ही जाहि कोई मार्‌यो सेा अमर भयेा बौरान्यौ जगत जान्यौ मान्यौ सुख धामु है ॥ चख के चखक[2] भरि चाखत ही जाहि फिरि चाख्यौ ना पियूष कछु ऐसेा अभिरामु है । दंपति सरूप ब्रज औतर्‌यौ अनूप सेाई देव कियेा देखि प्रेमरस प्रेम नामु है ॥ ९ ॥

एकै अभिलाख लाख लाख भाँति लेखियत देखियत दूसरेा न देव चराचर मैं ॥ जासेा मनु राचै तासेा तनु मनु राचै रुचि भरि कै उघरि जाँचै साँचै करि कर मैं ॥ पाँचन के आगे आँच लागे ते न लौटि जाय साँच देइ प्यारे की सती लौ बैठे सर मैं । प्रेम सेा कहत कोई ठाकुर न ऐंठेा सुनि बैठेा गड़ि गहिरे तौ पैठेा प्रेम घर मैं ॥ १० ॥

अथ प्रेम स्वरूप बरनन । सवैया ।

स्याम सरूप घटा ज्यौं अनूपम नीलपटा तन राधे के भूमै । राधे के अंग के रंग रँग्येा पट बीजुरी ज्यौं घन सेा तन भूमै ॥ है प्रति मूरति दोऊ दुहू की बिधेा प्रतिबिंब वही घट दूमै । एकहि देह दुदेव दुदेहरे देह दुधा यक देव दुहू मै ॥ ११ ॥

---

१ निर्मद ।

२ गजक । अर्थात् मद्य पीते समय जेा चटपटी चीजै शराबी लेाग खाते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपुस मैं रस मैं रहसैं बहसैं बनि राधिका कुंजबिहारी । स्यामा सराहत स्याम की पागहि स्याम सराहत स्यामा कि सारी ॥ एकहि दर्पन देखि कहै तिय नीके लगौ पिय प्यौ कहै प्यारी । देव सु बालम बाल को बादु बिलोकि भई बलि हौं बलिहारी ॥१२॥

अथ प्रेम महात्म बरनन । सवैया ।

सर्पन मेलि गरे निगरो जिन काल हलाहल सिद्ध समर्पनु । खेाज मनेाज को खेाइ कियेा हँसि वाको सिवा को बिबाह सतर्पनु[1] ॥ पाटी के अंकन लेखिबे को कर कंकन देखिबो को कहा दर्पनु । नेम महातम मेटि कियेा प्रभु प्रेम महातम आतम अर्पनु॥१३॥

दोहा ।

दंपति उर कुरखेत बिधि बीज भीजि रस भाव ।
प्रेम हेम ज्यौं हेात बढ़ि ढेर सुमेर सुभाव ॥ १४ ॥
सेा सिंगार अधार रति नव दंपति अनुरूप ।
दंपति सुख सर्बसु सदा पर्बसु प्रेम अनूप ॥ १५ ॥
तबही लौ सिंगार रसु जब लगि दंपति प्रेम ।
मलिन हेात रस प्रेम बिन ज्यौं कलई को हेम॥१६॥
रसनि सार सिंगार रस प्रेमसार सिंगार ।
बिना प्रेम दंपति बिपति संपति सुख दुख भार॥१७॥
मुख्य प्रेम मुग्धा बधुनि पूर्बनुराग, बियेाग ।
सेा अनूढ़, ऊढ़ान हू बर, उपपतिन, अयेाग ॥ १८ ॥

१ तृप्तकरना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम कलह मध्या कलुष प्रौढ़ा मानस गर्ब ।
रोख दोख सोँ मिलत नहिँ प्रेम पोष सुख पर्ब १९॥
प्रेम पियूष पयोधि मैँ मिलत बिमल निरद्वन्द ।
न्यारो होत न एक व्है ज्यौँ जल तें जलबुन्द ॥२०॥

यथा । सवैया ।

व्है गई एक दुधा बसुधा[1] बहुधा मैँ सुधा[2] सी सुधा मैँ सिठाई । गाड़ अगूढ़न गाड़ि रही सु गई ढहि ढाढ़स ही की ढिठाई ॥ आठहु अंग गई उठि देवजू टूटि के ओठनि ही की इठाई[3] । को करै कूकन चूकन सोँ मन मूक भयो सुख प्रेम मिठाई २१॥

कवित्त ।

औचक अगाध सिंधु स्याही को उमड़ि आयो तामैं तीनौ लोक बूड़ि गए यक संग मैँ । कारे कारे आखर[4] लिखे जु कारे कागद सुन्यारे करि बाँचै कौन जाँचै चित भंग मैँ ॥ आँखिन मैँ तिमिरि अमावस की रैनि जिमि जम्बूनद[5] बुन्द जमुनाजल तरंग मैँ । यौँ ही मन मेरो मेरे काम केान रह्यो माई स्याम रंग व्है करि समान्यो स्याम रंग मैँ ॥ २२ ॥

---

१ पृथ्वी ।
२ भूँठ ।
३ दृष्ट ।
४ अक्षर ।
५ सोना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

दंपति सुख संपति सजत तजत बिषय बिख भूख।
देव सुकबि जीवत सदा पीवत प्रेम पियूष ॥ २३ ॥

सवैया ।

जाके न काम न क्रोध बिरोध न लोभ छुवै नहिँ छोभ को छाहौ । मोह न जाहि रहै जग बाहिर मोल जवाहिर ता अति चाहौ ॥ बानी पुनीत ज्यौँ देव-धुनी[1] रसआरद[2] सारद के गुन गाहौ । सील ससी सबिता छबिता कबिताहि रचै कबि ताहि सराहौ २४॥

व्है गुरु को सुरको न कहूँ सुरकेरिपु[3] कौ डर कै चित चीते । प्रेम के गृंथ के पंथ चलै सु अमी ते भले लगैँ मीत अमीते ॥ बानी सुढार ढुरानी न देव पुरानी कथान बृथा दिन बीते । बूझै न जो रसरीतैं भरै तौ गरे परे ज्यौँ रसरी रस रीते ॥ २५ ॥

दोहा ।

बानी बनिता रस मधू प्रभु प्रिय प्रेम अनूप ।
आसीबिष[4] फाँसी बिखम बिषय बिष महा कूप॥२६॥
स्वल्प प्रेम बैकल्प[5] ते तजी अहिल्या कंत ।
पंचाली[6] पिय पंचहू प्रेम सुखद सुचिवंत ॥ २७ ॥

---

१ गंगा ।
२ आर्द्र, गीला, भीगा ।
३ विष्णु ।
४ साँप ।
५ फेर पड़ने से ।
६ द्रौपदी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिषयी जन व्याकुल बिषय देखैं बिषुन पियूष ।
सेठी सुख मीठी जिन्हैं जूठी ओठ मयूष ॥२८॥
पति को भूलै तरुन तिय भूलै प्रेम बिचार ।
ज्यौं अलि को भूलै खरी फूले चंपक डार ॥ २९ ॥
सहज लाजनिधि कुलबधू प्रेम प्रनय परबीन ।
नव यौबन भूखित सदा सदय हृदय पन पीन ॥३०॥
प्रेमवती पदुमिनि रहै मधुकर की रस प्यास ।
सूलि मरै अलि धूलि गड़ि तकि केतकि अभ्यास ॥३१॥

यथा, कबित्त ।

वारौं कोटि इंदु अरबिंद रस बिंद पर मानै ना मलिंद बिंदु सम कै सुधा सरो । मलै मल्लि[1] मालती कदंब कचनार चंपा चापे हू न चाहै चित चरन टिका-सरो ॥ पदुमिन तुही षटपद[2] को परम पदु देव अनु-कूल्यो और फूल्यो तौ कहा सरो । रस रिस रास रोस आसरो सरन बिसे बीसो बिसवासरो कि राख्यो निसि बासरो ॥ ३२ ॥

सवैया ।

जौ लगु जीवतु है जग मैं नहिं तौलगि जीव सुभाव टरैगो । बात यही जिय जानिए जू जन जो करि आयो है सोई करैगो ॥ देव कहै कोऊ प्रान

---

१ चमेली ।
२ भौंरा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरे बिन हारिल[1] की लकरी न हरैगो । भूलि हू भौंर चलावै न चित्त जो चंपक चौगुनो फूलि फरैगो ॥ ३३ ॥

कबित्त ।

आमकुल बकुल[2] कदंब मल्लि मालती मलै-जन[3] को भीजि कै गुलाबन की गली ह्वै । को गनै अलपतरु[4] जी सों जो कलपतरु तासों बिकलप क्यौं अलपमति अली ह्वै ॥ चित जाके चाय चढ़ि चंपक चपायो कोन सोचि सुख सोचि है सकुचि चुप चली ह्वै । कंचन बिचारे रुचि पंचन मैं पाई देव चंपा बरनी के गरे परयो चंपकली ह्वै ॥ ३४ ॥

दोहा ।

नव सुन्दर दंपति जदपि सुख संपति को मूल ।
प्रेम बिना छिन छेम नहिँ हेम सलाका तूल[5] ॥ ३५ ॥
बिषई कहिए सरस उर रुख[6] रूखे मुख बैन ।
चित्त चुभत अति चाहियत नेह चीकने नैन ॥ ३६ ॥
भरो प्रेम रस माधुरी साधु असाधु सरूप ।

---

१ होरिल पक्षी (जिसके बाबत प्रसिद्ध है कि जमीन पर बिना पंजा में लकड़ी लिए नहीं बैठता) ।
२ मौलसिरी, केसर ।
३ मलयज, चंदन ।
४ छोटा, दरख़्त या ख़राब दरख़्त ।
५ समान ।
६ मुँह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राखत है मृगमेद[1] को भाल बिंदु करि भूप ॥ ३७ ॥
ऊपर रूप अनूप अति अंतर अंतक[2] तूल ।
इन्द्रायन[3] के फल यथा करियारी[4] के फूल ॥ ३८ ॥
ऊपर रूखो अतिहि फल अंतर अति रस राखि ।
सुरुचि जीभ जौहर करत कौहर[5] फल मुख चाखि ॥ ३९ ॥
मौलसिरी फल फूल गुन निपुन जाति हिय पैठि ।
सूँघत घूटत खात हू जीभ जाति है ऐंठि ॥ ४० ॥
ऐसे ही बिन प्रेम रस नीरस रस सिंगार ।
प्रेम बिनासिंगार हू सकल रसायन सार ॥ ४१ ॥

यथा सवैया ।

सौति सँतापिनि साँपिनि ज्यौं मुख है विष फूँकन ही सोँ फिकान्यो । भोर को चंद चितौत चकोर ह्वै पौन ज्यौं झार हि झार झिरान्यो[6] ॥ लाजनि राखै जु रूखो किए मुख देखि हिए पिय प्रेम ठिकान्यो । प्यारी ससंक लई भरि अंक सु बंकबिलोकनि ही पै बिकान्यो ॥ ४२ ॥

---

१ कस्तूरी ।
२ काल ।
३ एक किसिम का फल जो कि देखने में उत्तम होता है परंतु जहर है ।
४ लाल रंग का फूल जो जहर होता है ।
५ फल लाल रंग का ।
६ मुरझाया हुआ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोकुल या ब्रज गोकुल दोकुल दीपसिखा सी ससी सी रहीँ भरि । त्यौँ न तिन्हैँ हरि हेरत री रँगराती न जो अँगराती गरे परि ॥ जो नवला नव-इंदुकला[1] ज्यौँ लची परै प्रेमरची पिय सोँ लरि । भेटत देखि बिसेखि हिये ब्रजभूभुज[2] देव दुहूँ भुज सोँ भरि ॥ ४३ ॥

अथ प्रेमवती सवैया ।

बिना जल मीन जियै तौ जियै बिन देखे पियै तौ हमैँ दुखदाह । यहू कहिये उठै हूक हिये मुख जीवन काज अकाज उराह[3] ॥ हितू कह्यो काहू हितारथ को न सुस्वारथ ऊखिल[4] को चित चाह । करै न करै हितु देव हमैँ तौ गरे परि प्यारे सोँ प्रेम निबाह ॥ ४४ ॥

प्रान जियै पिय प्रान के प्रानन देह सोँ प्राननि राखै न न्यारो । देव ज्यौँ दीप समीप बसै सुख सोँ नियरे नहिँ रैनि अँध्यारो ॥ प्यार कुप्यार हू प्यारो सु प्यारो कहा कहुँ प्यारी कहैयत प्यारो[5] ।

---

१ दूज का चाँद ।

२ राजा ।

३ उराहना ।

४ गैर, बेगाना ।

५ "प्यारी" कहने से प्यारा नहीँ होता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पीके सुहाग मनी[1]के सदा हम नीके फनी[2] ज्यौं मनी के उज्यारे ॥ ४५ ॥

आँखिमिहीचनी[3] खेलत माँहि दुहू बिधि सोध कहूँ नटि जाइ न । चोर ह्वै सोर कै नंद किसोर री जाइ छपै औ कहूँ बढ़ि जाइ न ॥ नैन मिहीचो जु पै उनके तजि लाज सनेह कहूँ हटि जाइ न । नाथ हा हाथ सरोज सो मेरे करेरे कटाच्छ कहूँ कटि जाइ न ॥ ४६ ॥

अथ प्रेम वात्सल्य शृंगार सवैया ।

है कबकी बक बाँधि बकी जु बकी, बक, बच्छ, बृषासुर, मारयौ । जानैं को देव दुहू की दसा जो अघासुर, केसी, औ कंस, पछारयौ ॥ केवल राधिका के बल कान्ह कलिंदि ते कालियनाग निकारयौ । सैल सँभारयौ लला अँगुरी धरि पै अबला अँगु[4]री न सँभारयौ ॥ ४७ ॥

ह्वै बहुधा बिधि बुद्धि सुधा[5]करि सुद्धि[6] बुधाधिप[7] हू की हरी है । सो अब राधिकै ही अवराधि[8]

---

१ मणि ।
२ सर्प ।
३ आँख मुँदौव्वल ।
४ अंग ।
५ फ़ज़ूल, बेकार ।
६ बुध ।
७ चन्द्रमा ।
८ ध्यान धरके, पूजा करके ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कै देव की आधि उपाधि टरी है ॥ है ब्रजराज को या ब्रज काज इलाज बतावत लाज भरी है । नेम नहीं गिरधारी को कौतिक प्यारी के प्रेम सों छेम परी है ॥ ४८ ॥

तीर धरयो जु गहीर[1] गुहा गिरि धीर धरयो सु अधीर महा हैं । पूँछती पीर भरे दृग नीर सु एकै समीर करैं औ सराहैं ॥ छोर भिजै यक पोंछती चीर लै राधे रहै तिरछी करि छाहैं । भेटतीं भीर अहीरन की बर बीरज की बलबीर[2] की बाहैं ॥४९॥

अथ सानुराग प्रेम दोहा ।

[3]छेम छिमा छिति प्रेम की हेम भरै तेहि साखि ।
छिद्यो भिद्यो औधो पियो अंग संग अभिलाखि ॥५०॥

यथा सवैया ।

प्रेम की भूल सहौं न कहूँ कुल नेम की सूल सहौं हौं अलेखे । को है जनी जन जाने सु हौंहू बिछोह करै ना टरौ पुनि पेखे ॥ या ब्रज बास कहा उपहास हौ बीसौ बिसे बिसवास बिसेखे । देव जू तारे[4] रहौ सब नैन बनै नहीं मोंहि उन्हैं बिन देखे ॥५१॥

---

१ गहिरा ।

२ बलदेव के भाई अर्थात् कृष्ण ।

३ सोना अंग संग रहने की अभिलाष से अपने को छेदवाता, भिदवाता, लटकता, और साँचे में भरा जाता है ।

४ तारे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धार मैं धाइ धसीं निरधार ह्वै जाय फँसीं उकसीं न अँधेरी । री अँगराइ गिरीं गहिरी गहि फेरे फिरीं न घिरीं नहिं घेरी ॥ देव कछू अपनो बसुना रस लालच लाल चितै भईं चेरी । बेगिही बूड़ि गईं पँखिया अँखिया मधुकी सखिया भईं मेरी ॥ ५२ ॥

दोहा ।

यहि बिधि बाढ़त प्रेम के छूटि जात कुल नेम ।
तार तार कीजत हियो होत जाति को हेम ॥ ॥५३॥

इति श्री महाराज कुमार श्री कुँवर उद्योत सिंह आनन्द हेत देव दर्शित प्रेमचंद्रिकायां साधारण प्रेम वर्णन प्रथम प्रकाशः ।

अथ प्रेम भेद बर्णन । दोहा ।

सानुराग, सौहार्द्र, अरु भक्ति, और बात्सल्य, ।
प्रेम पाँच बिधि कहत अरु कार्पण्य बैकल्य[1] ॥१॥
सानुराग सिंगार गति सुकिया परकीयानि ।
प्रीतिपात्र, परिजन, सुजन, सौहारद पहिचानि॥२॥
भक्ति भाव भक्तनि बिखे लघुनि प्रीति बात्सल्य ।
कार्पण्य निज जन कृपण साति सोक सासल्य[2]॥३॥

---

१ विकलता ।
२ पीड़ा के सहित, सल्य युक्त ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ सानुराग शृंगारात्मक प्रेम बर्णन । दोहा ।

सरस भाव उर अंकुरित फूलि फलै सुख कंद ।
स्रवन, दरस, सुमिरन, परस, बरसत रस आनंद ॥ ४ ॥
दंपति सुख संपति प्रथम सुरति सुरति सिंगार ।
सो सुभाव भावनि बढ़त चढ़त चित्त सुखसार ॥ ५ ॥
द्वै बिधि सो सिंगार रस है संयोग बियोग ।
ते दोउ गूढ़ अगूढ़ गति द्वै द्वै बरनत लोग ॥ ६ ॥
सुख संयोग सु एक है है बियोग बिधि चारि ।
पूर्बनुराग, सकरुन, अरु मान, प्रबास, बिचारि ॥ ७ ॥
सुकिया, परकिय, बेस्या, त्रिबिधि नायका जानि ।
इनहीं मैं सिंगार रस प्रगट परत पहिचानि ॥ ८ ॥
मुग्ध, मध्य, प्रौढ़ा, त्रिबिधि कही सुकीया बाम ।
अरु अनूढ़, ऊढ़ा, द्विबिधि परकीया के नाम ॥ ९ ॥
प्रेम हीन त्रिय बेस्या है सिंगाराभास[1] ।
कंचन कलई हेम पर त्यौं गुन रूप प्रकास ॥ १० ॥
[2]पति, उपपति, ब्यसनी, त्रिबिधि नायक तिहू सकेत ।
प्रेम सुसुख दुख दुरव्यसन होत तिहू ते हेत ॥ ११ ॥
मुख्य प्रेम सिंगार रस मुग्धनि, पूर्बनुराग ।
सो अनूढ़, ऊढ़ानि हू गूढ़गूढ़ा[3] बिभाग ॥ १२ ॥

---

१ शृंगार की चमक मात्र ।

२ पति का प्रेम से, उपपति का अपने सुख के वास्ते दुख देने वाला, और व्यसनी का दुर्व्यसन के वास्ते स्नेह होता है ।

३ छिपा हुआ और प्रकट ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ शृंगार मैं मुग्धान बिषे पूर्वानुराग बियोग आदि मुख्य प्रेम बर्णन । दोहा ।

स्रवन, दरस, सुमिरन, सरस होत परस्पर नाहिँ ॥
सो पूरब अनुराग जहँ दुहू दसा दस आहिँ ॥१३॥
अभिलाषादिक दस दसा दुहु पूरबअनुराग ।
मुग्धा, सुकियन, परकियन, मुख्य प्रेम बड़ भाग ॥१४॥
मान, कलह, मध्या, सुकिय, प्रौढ़ा, सरस न गर्ब ।
प्रेम कलुषता सी दुहू सामान्या अति खर्ब ॥१५॥
बिबरन सुबरन होत व्है उन्मद पद निर्बान ।
संग प्रेम पाखान उत माखन होत पखान ॥ १६ ॥

सवैया ।

एरी अबै इत ह्वै निकस्यौ बिकस्यौ मुख ओज सरोज हँसोहै । माधुरी बानि सुधा मुसकानि मैं रूप कलानि कलानिधि[1] मोहै ॥ तोरत सो अँग मोरत भौहन जोहनि[2] मैं हित जोरत जो है । तावरी[3] आवै चितौनि चितै चित देव सो सुंदर साँवरो को है ॥ १७ ॥

---

१ चंद्रमा ।
२ देखने में ।
३ मूर्छा, ग़श ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कबित्त ।

प्रेम गुन बाँधि चित चंग[1] सो चढ़ायो उन सुनि सुनि बंसी धुनि चंग[2] सुहचंग[3] की । मधुर मृदंग सुर ऊरझि उतंग भई रंग परबीन ऐसी बा- जनि अभंग की ॥ बधिक बिहंग बधू ब्याधि ज्यौं कुरंग नारि हनी है कुरंगनैनी पारधी[4] न अंग की । संग संग डोलत सखीन के उमंग भरी अंग अंग उठत तरंग स्यामरंग की ॥ १८ ॥

दोहा ।

स्रवन दरस सुमिरन बिरह सो पूरबअनुराग ।
अभिलाषादिक दस दसा तब संयोग सुहाग ॥ १९ ॥

अथ श्रवण दर्शन । सवैया ।

मोहनी मंत्र कि योगिनी यंत्र बसीकर तंत्र बस्यौ ब्रज गाँवरो । मैं न सुनो तबते कछु औरु सुन्यौ जबते गुन दीरघ दावरो[5] ॥ देवजू जाल को मीन भयो मन त्यौं तन झीन भयो झुरि झावरो । पेखनो[6] सो अपनो कछु पेख्यौ जितै जित देख्यौ तितै तित साँवरो ॥२०॥

---

१ पतंग ।
२ तेज़, घुमाने वाला ।
३ मुरचंग बाजा ।
४ बहेलिया, शिकारी ।
५ आप (इशारा है पुरुष विशेष की तरफ)
६ खेल, तमाशा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनि देव अनूप कथा ब्रजभूप की रूप कला अकुलान लगी। पहिचानन प्रीति अचान[1] लगी लखिबे को कछू ललचान लगी॥ भरि भावन भौंह कमान चढ़ाय कै तानन लोचन बान लगी। कहूँ कान्ह कहाय सकान लगी तब ते तन प्रान बिकान लगी॥ २१॥

॥ कवित्त ॥

भावत न खेलु खेलि आवत खिलाएहू न खेल मैं हँसावत न आवत तहाँ हँसी। लोगन के सोच को सकोच सों चलत चढ़ि चातुरी चितौनि मैं चढ़ी है चित चाहसी॥ आँखिन मैं देखत न देखो देव काहू है कहत कछु कान मैं गहत आवै बाँह सी। काल्हि ही ते बोलत तिरीछे हँसि को है वह आगे पीछे डोलत लगे हैं पर छाँहसी॥ २२॥

इति श्रवण सुमिरन भाव।

अथ चित्र दर्शन। सवैया।

बातन ही मैं बिहारत चित्तु निहारत नाँहिं बिहार की भूमै। सोचित[2] की गति सोचि सखी सँग सुन्दर को लै घरै घर घूमै॥ भीतर भीति लिखी ललिता चलि तागृह आँखिन आनँद झूमै। मित्र

---

१ एक बारगी।

२ सोच मे पड़ी हुई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चरित्र बिचित्र चितै चरि चित्र की मूरति चाहत चूमैं ॥ २३ ॥

सखी को बचन सखी सौं । सवैया ।

हौं ही भुलानी कि भूलो सबै कोई भूल को मंत्र समूल सिख्यो सो । भोजन पान भुलानो सबै सुख स्वैबो सवाद विषाद बिख्यो सो ॥ चित्र भई हौं बिचित्र चरित्र न चित्त चुभ्यो अवरेख[1] रिख्यो[2] सो । चित्र लिख्यो हरि मित्र लिख्यौ नवते सिगरो ब्रज चित्र लिख्यो सो ॥ २४ ॥

अथ स्वप्न दर्शन । सवैया ।

मोंहि बनै न कहेहू बिना कहि पूछै जो कोज कहा कहौं जैसो । आँखि मिहीचि दुरो यहि बीच हि साँवरो सुन्दर और न ऐसो ॥ पाँय परौ तू पलोटै न पाँय बताइदे को है कहाँ अब है सो । हौं अपनो ढिग ढूँढ़ि थकी बिसवासपनो सपनो यह कैसो ॥२५॥

ह्वै सपने तिय को पिय आय दई उर लाय बनाय बिरी त्यों । चूमत ही चख चौंकि परी सु चितै चकि सेज ते भूमि गिरी त्यौं ॥ देव जू द्वार किवारन हू झँझरीन झरोखन झाँकि फिरी त्यौं । दीन ज्यों

---

१ देख कर ।

२ रेखा खींचा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीन जरा की भई सु फिरै फरकै पिँजरा की चिरी[1] त्यौं ॥ २६ ॥

अथ साक्षात् दर्शन । सवैया ।

प्रेम कहानि सोँ पहिले हरि कानन आनि समीप किए तैँ । चित्र चरित्र न मित्र भए सपने महँ मोँहि मिलाइ लिए तैँ ॥ देव जू दूरि ते दौरि दुराय कै प्रेम सिखाय दिखाइ दिये तैँ । बारिज[2] से बिकसे मुख वै निकसे इत ह्वै निकसे न हिए तैँ ॥ २७ ॥

भोरही भोरही श्री बृषभान के आयो अकेलोई केलि भुलान्यो । देव जू सोवत ही उत भावती झीनेा महा झलकै पट तान्यो ॥ आरस ते उघरी यक बाँह भरी छबि हेरि हरी अकुलान्यो । मीड़त हाथ फिरै उमड़ो सो मड़ो ब्रज बीच फिरै मड़रान्यो ॥ २८ ॥

बाल लतान मैँ बाल को बोल सुन्यो कहूँ संग सखीन को टेरत । काहू कह्यो हरि राधा यही दुरि देख जु देखि इतै मुख फेरत ॥ है तब ते पल एक नहीँ कल लोखन लौ अभिलाखन घेरत । वाही निकंजहि नन्दकुमार घरीक मैँ बार हजारक हेरत ॥ २९ ॥

अथ नायका सखी प्रति बचन । सवैया ।

देव न देखत हौँ दुति दूसरी देखे हैँ जादिन ते

---

१ चिड़िया ।

२ कमल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रज भूप मैं । पूरी रही री वही धुनि कानन आनन आनन ओप अनूप मैं ॥ ए अँखिया सखिया न हमारी ए जाय मिलीं जल बुंद ज्यौं कूप मैं । कोटि उपाय न पाइए फेरि समाय गईं रँग राय के रूप मैं ॥३०॥

इति पूर्वानुराग ।

अथ अभिलाष वर्णन । सवैया ।

पहिले सतराइ रिसाइ सखी जदुराइ पै पाय गहाइए तौ । फिरि भेंटि भटू भरि अंक निसंक बड़े खन[1] लौं उर लाइए तौ । अपनो दुख औरनि को उपहासु सबै कवि देव जताइए तौ । घनस्यामहिं नेकहूँ एक घरी को इहाँ लगि जो करि पाइए तौ॥३१॥

प्रति उत्तर । सवैया ।

लाल बुलाई है को हैं वे लाल न जानती हौं तौ सुखी रहिबो करि । री सुख काहे को देखे बिना दिख साधन ही जियरा न परयो जरि ॥ देव तौ जानि अजान क्यौं होत इती सुनि आँसुन नैन लए भरि । साँची बुलाई बुलावन आई हहा कहु मोंहि कहा करिहै हरि ॥ ३२ ॥

बाम हथेरी दै बाम के सीस सखी कर दाहिने ठोढ़ी लई धरि । देव कछू मुसकाय उसास लै लाज

१ क्षण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरी अँखिया समुही करि ॥ भाख्यो भले जू भले मृग-लोचनि याही सकोचनि जैहौ नहीं अरि । जैहौ तौ जैहौ तिहारी भई सिर जो न हिए की बिया हरि-हौ हरि ॥ ३३ ॥

अथ चिंता । सवैया ।

वा बिसवासिनि[1] बाँसुरी के रस मैं न कहूँ बस मैं परि जैये। चैन परै चित मैं न कहूँ इत मैन की ज्वालन सेाँ जरि जैये ॥ कानन्हि को सुख तानन्हि को पै नए दुख प्राननि को धरि जैये । देवन जू वे कहूँ काहू मिलै जो मिलैं न मिलैं तो भले मरि जैये॥३४

ऊजर ही करिबे को हँसै सु बसैं ब्रज गूजर[2] लोग घनेरेई । क्योंहू मुरै न भुरै मनु लेत दुरे रहैं प्रेम घुरे घरु घेरेई ॥ आपु पियो बिष जो अँखियान इतै सखियानन तै हरि हेरेई । मेरे तौ जान अरे मन मूढ़ निदान परयो मरिबो सिर तेरेई ॥ ३५ ॥

अथ ध्यान । सवैया ।

लेत उसासै कँपै पुलकै न बतावति ध्यावति चित्त कहूँ दै। प्यास मरयो गुन पाले परयो पिय पाल्यो सुवा अँसुवान की बूँदै ॥ विद्रुम[3] से अधरान धरे मुख दाड़िम बीज से दंतनि गूँदै। देव जू मोह मड़ी उमड़ी बड़ी आँखिन क्यों बड़ी बार की मूँदै ॥३६॥

---

१ विष में बसी हुई । २ अहीर । ३ मूँगा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जागत जागत खीन[1] भई अब लागत बंग सखीन को भारो । खेलिबोऊ हँसिबोऊ कहा सुख मौं बसिबो बिसे बीस बिसारो ॥ प्यौ सुधि द्यौस गँवावति देव जू जामिनि[2] जाम[3] मनौ जुग चारो । नीरजनैनी निहारिए नैनन धीरज राखत ध्यान तिहारो ॥ ३७ ॥

अथ गुणकथन । सवैया ।

जे बिन देखे गए दिन बीति नयो पछिताउ अरो हिय हैए । देव जु देखि उन्हैं हौं दुखी भई या जिय को दुख काहि दिखैए ॥ देखेबिना दिख साधनही मरि देखुरी देखत ही न अघैए । देखत देखत देखतही रही आपनी देहौ न देखन पैए ॥३८॥

॥ कवित्त ॥

सुन्दर सरूप ब्रजभूप को कुमार उर आनँद अनूप अँखियानि खुभि[4] रह्यो है । लागत न एकौ पल[5] जागत बिबेकौ नहिँ को पल[6] लगावै मनु छोभ खुभि[7] रह्यो है ॥ देव चितवनि लोल बोलनि हँसनि फँस्यो कुंडल अमोल बिन मोल लुभि रह्यो है । देखत न भूलै बिन देखे उर सूलै हित लालच लगाइ चित लाल खुभि रह्यो है ॥ ३९ ॥

---

१ क्षीण । २ रात । ३ पहर । ४ गड़ रहा है । ५ क्षण । ६ पलक । ७ क्षुब्ध ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ उद्वेग । कवित्त ।

देखे दुख देत चेत[1] चन्द्रिका[2] अचेत करि चैन न परत चन्द चन्दन को टारि दै। छीजन लगी है छबि बीजन[3] न करै बीर नीरज[4] सुहात ना सखीजन निवारि दे। सेाए सजि सेजन करेजन मैं सूल उठै जारिदे उसीर[5] कुटी रावटी उजारि दै। फूँकै ज्यौं फनी[6] री फूलमाल को न नीरी करि एबीरी बरी ऐ जाति या बीरी बगारि दै ॥ ४० ॥

॥ सवैया ॥

जीभ कुजाति न नेकु लजाति गनै कुल जाति न बात बहयो करै। देव नयो हिय नेह लगाय बिदेह[7] कि आँचन देह दह्यो करैं ॥ जीव अजान न जानत जान जो मैन[8] अयान के ध्यान रह्यो करै। काहे को मेरो कहावत मेरो जु पै मन मेरो न मेरो कह्यो करै॥४१॥

कवित्त ।

नाखिन[9] टरत टारे आँखिन न लगत पल आँखिन लगेरी स्याम सुंदर सलोने से। देखि देखि

---

१ चैत । २ किरण । ३ पङ्खा ।
४ कमल । ५ खस । ६ सर्प ।
७ जिस के देह नहीं है (काम) ८ काम । ९ क्षण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गातन अघात न अनूप रस भरि भरि रूप लेत आनँद अचोन से ॥ एरी कहि कोहौ हौं कहाँ हौं कहा कहति हौं कैसे बन कुंज देव देखियत भौन से । राधे हौ सदन बैठी कहती हौ कान्ह कान्ह हाहा कहु कान्ह वे कहाँ हैं कोहैं कौन से ॥ ४२ ॥

सखी बचन । सवैया ।

मैं न सुनीरी कहा भयो तोंहि कहूँ मति मानिक सो मनु खोलै। आई गँवाय कहाँ ते कहाँ कहौं बातन ही उत पातन तोलै ॥ बाहेर पौरि न दीजिए पाँउरी बावरी होय सो डावरी[1] डोलै । तेरी बलाय बकैरी बलाइल्यौं चूमति तो मुख तू मति बोलै ॥ ४३ ॥

अथ उद्वेग निवेदन । कवित्त ।

अपनेई जी के सुख नीके आपु आन कहूँ जानत न तापन ते जीकी जरि जायगी। नीर बिन मीनज्यौं समीर बिन छिन छिन आधि मैं विषम विष ब्याधि भरि जायगी । अंग अंग व्याकुल उसास लेत पल पल दुख के सदन बीच देव परि जायगी । खंजरीट-[2] नैनी मृदु मंजरी सहज माँझ झार मैं उरझि कै मुरझि मरिजायगी ॥ ४४ ॥

---

१ सखी ।

२ खंजन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ उन्माद । सवैया ।

कान्ह भई वृषभान सुता भई प्रीति नई उनई जिय जैसी । जानै को देव बिकानी सी डोलै लगै गुरु लोगनि देखि अनैसी ॥ आवत है मुख जो सो बकै अरु खान औ पान नहीं सुधि कैसी । ज्यों ज्यों सखी बहरावति बातनि त्यौं त्यौं बकै वह बावरी ऐसी ॥४५॥

॥ कवित्त ॥

बंसीधर धरी बंसी बंस तेरे बंस ही की बंसी-बट तैं ही छबि छाँह छहराई है । मेरे बीर मौर मोर चन्द्रिका दई है तैं चकोर ब्रज चंद और डीठि ठहराई है । देव सुख मानि मानि पल्लव लतानि पूँछै बावरी न बानि तजै केती बहराई है । बिमल बिसाल गुन गूँदि कै गोपाल गरे मालती पुहप माल तैं ही पहिराई है ॥ ४६ ॥

अथ उन्माद निवेदन । सवैया ।

ए अपनी करनी किन देखत देव कहौं न बनाइ कछू मैं । घायल ह्वै करसायल[1] ज्यौं मृग त्यौं उतही उतरायल[2] घूमै । मेटिबे को तन ताप दुहू भुज भेटिबे को झपटै झुकि झूमै । चित्र के मंदिर मित्र तुम्हैं लखि चित्र की मूरति को सुख चूमै ॥ ४७ ॥

---

१ काला मृग ।
२ आतुरता से ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ व्याधि । कवित्त ।

[1]सुघर सुनार रूप सुबरन चोर दृग कोरे हीरा लेत रवा राखत न राई सी । एहो बलबीर बलबीर की सौं कैसे काम आखिर अहीर पीर जानौ ना पराई सी ॥ घर घरिया मैं घुरी घरी मैं उघरि आई फैली जाति फूल नहीं फिरत गराई सी । देव जू सुहाग रंग आँचन तचाई सोई रंचना सिराति तची कंचन सिराई सी ॥ ४८ ॥

॥ सवैया ॥

नेह लगाय निहोरे करावत नाहक नाह कहावत जैसे । साथ ते सेकत हाथ जरे घर कौन बुझावै मिले सब तैसे ॥ वाहि न घूँघट की घट की सुधि अंग अनंग जरे पर जैसे । कौन गहै करततिनके जिनकी करतूतिन के फल ऐसे ॥ ४९ ॥

अथ जड़ता । सवैया ।

[2]साँसन ही सौं समीर गयो अरु आँसुन ही सब नीर गयो ढरि । तेज गयो गुन लै अपनो अरु भूमि गई तन की तनुता[3] करि ॥ देव जियै मिलिबेई की आस कै आस हू पास अकास रह्यो भरि । जादिन ते मुख फेरि हरे हँसि हेरि हियो जु लियो हरि जू हरि ॥ ५० ॥

---

१ सुनार की दुकान के सामान इस छंद में कहे गए ।
२ पञ्च भूत वरणन हवा, पानी, तेज, भूमि, आकाश ।
३ दुबलापन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ कवित्त ॥

जागुरी जगावै जगु जागुरी जगै न ऊजगैन[1] जोति[2] जागे होति ही सुजगजगरी[3]। द्वार की डगर डगरी परत कापै डग डगरी परत डील डोलै डगडगरी। देव गुनअगरी उसासै भरै अगरी[4] दबाए दंत अँगुरी अचल अँग अगरी। लंक लग बगरी[5] कलंक लग[6]बगरी सखीन संग बगरी[7] सखीन संग बगरी ॥ ५१ ॥

निवेदन। सवैया।

देखिबे को दिख साधन ही पल आधन ही हँसि नींद लही है। देवजू देखत देखत ही मग चैन चले पग सेज गही है। देखिबे को इतो देखिए दौरि कि देह दसा बिन देखे दही है। साथ रही दृग पाथ[8] रही घुरि पाय[9]र ही तन[10] हाथ रही है ॥ ५२ ॥

---

१ सजग नहीं होती।
२ प्रेम की ज्योति।
३ जगर मगर, प्रकाशित।
४ विशेष।
५ लचलची।
६ कलंक तक फैली है अर्थात उसका पता नहीं लगता।
७ फैली।
८ रास्ता।
९ ओला।
१० सूक्ष्म, लघु, त्याग,।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ कवित्त ॥

निर्मल ह्वै मलिन ससंक बंक सलज सिथिल दीन सालस सचिंत सँभरति है । मद उनमाद धीर चपल अमर्ख हर्ख नींद जाग्र स्वपन बितर्क बिसुरति है । ब्याधि गर्ब उग्र उत्कंठा दुख आवेग अचल बच खोट सबै जानति डरति है । मोहति मुरति आँसू स्वेद तंभ पुलक बिबर्न स्वरभंग कंपि मूरछि परति है ५३॥

मरण । सवैया ।

राधे के बाढ़ी बियोग की बाधा सु देव अबोल अडोल डरी रही । लोगन की बृषभान के भौन में भेर ते भारियै भीर भरी रही । वाके निदान ह्वै प्रान रहे कढ़ि औषधि मूरि करोरि करी रही । चेति मरू[1] करि कै चितई जब चारि घरी लौ मरीयै धरी रही ॥ ५४ ॥

निवेदन । सवैया ।

पूछत हौ पछिताने कहा फिरि पीछे ते पावक ही को पिलौगे । काल की हाल में बूड़ति बाल बिलोकि हलाहल ही को हिलौगे ॥ लीजिए ज्याय सुधामधु प्याय कि न्यायन ही बिष गोली गिलौगे । पंचनि[2] पंच मिले परपंच में वाहि मिले तुम काहि मिलौगे॥५५॥

---

१ मुश्किल ,

२ पंच भूत पंच भूत में मिलने बाद अर्थात मरने के बाद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ दोहा ॥

यहिबिधि मुग्ध बधूनि के पूर्बनुराग बिशेखि ।
अभिलाषादिक दस दसा प्रेम मुख्यता देखि ॥५८॥
कुच कठोर कोमल हृदय रूखी निचुरै नेह ।
भय लज्जा की ओट कै पतिहि अर्पतीं देह ॥५७॥

इति श्री महाराज कुमार श्री कुँवर उद्योत सिंह आनंद हेतु देवदर्शित प्रेम चन्द्रिकायां मुग्धानि पूर्वानुराग दस दसा मुख्य प्रेम वर्णन द्वितीयो प्रकाशः २

॥ दोहा ॥

पात्र मुख्य सिंगार को सुद्ध सुकीया नारि ।
प्रथम संग नवनेह के बरे[1] परे दिन चारि ॥ १ ॥
प्रथम संग नवनेह पति मुग्ध बधूनि प्रसिद्ध ।
मध्य प्रौढ़ हू प्रेम पति सुख संपति सों बिद्ध ॥२॥
गति अनन्य[2] मुगधानि मैं तनमयता[3] नित होति ।
अन्धकार जरिजात उर प्रेम दीप की जोति ॥ ३॥

अथ मध्या, प्रौढ़ा को प्रेम । सवैया ।

लाज सकाम सु मध्यम बाम बिषयमति सोँ पतिसोँ सतराती । नैन सनेह निहारि नबोढ़ बिहारि

१ विवाह हुए ।
२ न, अन्य = अनन्य अर्थात जिस को दूसरी गति न हो ।
३ लीन हो जाना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पगेढ़नि लौ ललचाती ॥ जोबन रूप जवाहिर हेम जेौं दै चुकीं कँचुकी छोरि कै छाती । देव छिपावत छेम सोँ नेम सोँ प्रेम को प्रौढ़ बधू पछिताती ॥ ४५ ॥

॥ दोहा ॥

मुग्धा मध्या प्रेम बिन केवल कुल बृत साधि ॥
पति परमेसुर बुद्धि सोँ साधैँ योग समाधि ॥ ५ ॥
पग जावक पति सेज पै पग पावक सर सेज ।
तपन तपत तेहि सत कपत तिनही वत[1] तप तेज ॥

सवैया ।

मानती जे मनभावन संग मनाए ते सेज बसैं करि लज्जा । भीजी सुहाग सुबर्नसराग[2] सी राजती छाजती हैं छबि छज्जा ॥ पैठि के पावक जावक पाइ दै होमती मोमती है तनु मज्जा । भीषम हू दै सखी खन सीख गरे परि धाय परै सर सज्जा ॥७॥

॥ दोहा ॥

परकीया उपपति बिरह होति प्रेम आधीन ।
पति संपति तन बिपति मैं दौरि परै पनपीन ॥८॥
पर रस चाहै परकिया तजै आपु गुन गोत ।
आपु औटि खोवा मिलै खात दूध फल होत ॥९॥
काची प्रीति कुचालि की बिना नेह रस रीति ।
मार रंग मारू मही बारू की सी भीति ॥ १० ॥

---

१ समान । २ सोने की सलाका ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ मध्यामान कलहकलुष उदाहरण । सवैया ।

वे बड़ भाग भरे अनुराग इतै अति भाग सुहाग भरी है। देव तासों कत रूसत जा गृह देवता सी पग पूजि फरी है॥ मानत जो सुमतो सुनिए तुम तो हम जानी सयान खरी है॥ हेरत बाट कपाट लगे हरि बाटपरी तुम खाट परी है॥ ११॥

प्रौढ़ा सगर्वप्रेमकलुष उदाहरण । सवैया ।

औगुन जाल पासरती है दृग मीनन की गुन जाल करी है। सौतिन के उर सालकरी गुरु गोतिन मैं सु रसाल[1] करी है॥ जो नव इंदु ज्यौं चंदन कै-[2]तव बंदन बिंदु ज्यौं भाल करी है। लै अपने उर माल अगोछिहि लै हिय मैं उरमाल करी है॥१२॥

अथ मध्या को सानुराग प्रेम उदाहरण । सवैया ।

भाँवरि होत निछावरि ह्वै गुन दामरि[3] मेलि गरे गहिरान्यो। चित्त चुभ्यो मद आठनि को हिय नेह नयो ढरि कै ढहरान्यो। देव दुहूँ रस लोभ बढ्यो भय लाज के छोभ कछू छहरान्यो। दूलह प्रेम पियूष[4] पियो सुर रूख ज्यौं जलहि कै लहरान्यो॥ १३॥

---

१ उत्तम रस—आल अर्थात् रसका घर।
२ छल, व्याज, मिस।
३ रसी।
४ अमृत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ मुग्धा की चेष्टा । सवैया ।

काननि कोननि कूदि फिरैं करि सौतिन के उर खेत की खूँदनि । देवजू दौरि मिले ठगि ज्यौं मृग जेन फँदे फँदवार[1] के फूंदनि ॥ घूँघट की घट की नट की सुछटी[2] लटकी लटकी गुन गूँदनि । केहू कहूँ न छुरे[3] बिछुरै[4] बिचरै न चुरै[5] निचुरै जल बूँदनि[6] ॥ १४ ॥

दूलह नौल सु ऊलहे नेह नबोढ़ बधू बिधिकी बिधि[7] दूँदै । प्यास छुधा रस और उदास पियै दृग प्रेम सुधा रस बूँदै । देव कहूँ घट मैं न घटैं उलटे पट नैन लटै घट मूँदै । लोग मैं लाग लगा रहै नाहिं अगारनि दौरि पगारनि[8] कूदै ॥ १५ ॥

मधु मैं गड़ि बूड़ि गईं अँखिया मखिया मखियान सों लागी रहैं । नलनीर[9] महानल[10] झीलर[11] मैं झखिया[12] झखियान सों लागी रहैं ॥ कवि देव देव दुखी लखिकै सखियाँ सखियाँ सखियान सों लागी रहैं । पिय प्रीतम प्यारे के प्रेम पगी अखियाँ अखियान सो लागी रहैं ॥ १६ ॥

---

१ बहेलिया फंदा लगाने वाला । २ अलाहिदा अलग ।
३ नहीं छूटती है । ४ न हटती है । ५ न छिपती है ।
६ लटका वरणन है । ७ ब्रह्मा की रीति । ८ दीवार ।
९ नलका पानी अर्थात जो कुवां वगैरा से भरा जावे ।
१० बड़ा धारा । ११ छोटा तालाव । १२ मछली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानपुरहि मारयो दाह दिल्लीपुर दिन्नह। रूप पुत्ति रट्ठवरि साहि तें सबल सुलिन्नह॥ गुरु हठ कै गोमती बंधि सलिता सु राजसर। सीरोही सिर दंड किन्न राना राजेसर॥ कितेा ब कहूं मुँह कितेा जस बल अनंत हिन्दू सु बर। अब धाइ गहै तिन पय शरन भंजहि फिरि असुरान भर॥ १७५॥

इन अनिट्ठ औरंग रज्ज कज्जे राजंधहि। बाप हन्यो हनि बंधु पुत्त हनि सकल प्रबन्धहि॥ कूर गेह कलि गेह जानि अहि ज्यों दो जिभ्भह। बचन जास चल बिचल मान मय मत्त कि इभ्भह॥ करतें मुकुंद सेवा करत पुत्ति देत होतन प्रसन। मिलिये ब राण राजेश सें पातिशाह आवै पिशुन॥ १७६॥

॥ दोहा ॥

सुनत एह सारी सभा, सोनिग देव सुमंत।
राजा रावत रट्ठवर, भल भल सकल भनंत॥१७७॥
जान्यों जग प्रभु जेार बर, राजसिंह महरान।
सरन तक्कि कमधज्ज सब, जीवित जन्म प्रमान १७८॥
ठीक मंत ठहराइ के, लिखे ललित फुरमान।
राना श्री राजेश केा, बिनय बिबिध बाषान॥१७९॥

॥ कवित्त ॥

स्वस्ति श्री सुभ थान प्रगट पट्टन उदयापुर।
राजे श्री महाराण रूप राणा राजेश्वर॥ सुर नायक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ससि सूर जास ऊपम युग जानिय । सुरतरु सुरमनि सिंधु देव ज्यों अधिक सुदानिय ॥ अरदास सकल कमधज्ज की मन्नहु सांईं प्रसन मन । पतिसाहि पिशुन पच्छें फिरयो आवहिं हम अब प्रभु शरन॥१८०॥

संग्रामहि असमत्थ समझि बिन लहु हम सांई । सांई बिनु कहा सेन तेज सांई ही तांई ॥ महा राय गय मोष सोइ होते समत्थ पहु । अब प्रभु ही सों अदब रहै रटिये कितीक बहु ॥ कमधज्ज कहे इन कलह में करि उप्पर निज जानियहि । राजेश राण जगतेश सुअ आलम तो बस आनियहि ॥१८१॥

मारे हम बहु मुगल दंद रचि जोर साहि दर । युग्गिनिपुर परजारि पारि कीनी धर पद्धर ॥ लच्छि अमित तहँ लुट्टि चंड चौकी चकचूरिय । हय गय रथ भर हनिय पेट पशु पंखिनि पूरिय ॥ कीने यु षूंत असपत्ति के केतक मुख करि कित्तिये । राजेश राण जगतेश सुअ पहुप साय अब जित्तिये ॥ १८२ ॥

नागोरिय नृप कज्ज दीन पतिसाह जोधपुर । इहै आदि हम उतन सो ब आवै प्रभु उप्पर ॥ यदु-पति ज्यों पंडवनि कलह में आरति कप्पहु । नृप के नंद रु नारि थान निर्भय तहँ थप्पहु । आयो ब साह औरंग चढ़ि हम लरिहैं सब प्रभु हुकम ॥ राजेश राण जगतेश सुअ रट्ठोरनि राखहु शरम ॥ १८३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रबि बंशी महाराण राण राहप हरि रूपह ॥ श्री दिनकर सक बंध न्याउ नरपाल अनूपह ॥ कृतब उंच जस करन पुन्य पालह प्रथवीपति । पीयल राण प्रचंड भाण सी राण देव भति ॥ भल भीम अजै सी लषम सी अर सी राण महा अडर । सुलतान गहन मोषन सकल राण एह राजेश बर ॥ १८४ ॥

राण हमीर सुरीति राण खेतल अभंग रिन । लाषन सी बहुलील राण मोकल उदार मन ॥ कुंभ राण जग कित्ति राण कुल रूप परय मल । सबल राण संग्राम उदय नित उदय राण इल ॥ कायम प्रताप अमरह करण जगत सिंह जग जोर बर । सुलतान गहन मोषन सकल राण एह राजेश बर ॥ १८५ ॥

रामचंद राजेन्द बंधु लच्छन सु बीर बर । कृष्ण देव रिपु काल कंस आसुर बिधंस कर ॥ कौरव कण कण करण जंग जोधार जुधिष्ठिर । अर्जुन भीम अभंग सूर सहदेव अचल सर ॥ नरनाह बिरुद पंडवन कुल असुर सँहारन बिरुद इन । राजेश राण जगतेश सुअ पुहवि रखी सो क्षत्रियन ॥ १८६ ॥

तुम हिन्दूपति प्रगट तुमहिं दिनकर हिन्दूकुल । तुम हिन्दू उद्धरन बिरुद सरनागय बत्सल ॥ तुम करुना कर सुकृत तुम सु कलियुग दुख कप्पन । अबलनि तुम आधार तुम सु असुरेश उथप्पन ॥ इन धर अनादि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवनीश तुम षग्ग तेज बंदे षलक। राजेश राण जगतेश सुअ तुम सब हिन्दू शिर तिलक ॥ १८७ ॥

शीसोदा चहुआंन तुँअर पांवार रट्ठवर। हाड़ा कूरँभ गोड़ मोरि यद्दव बड़गुज्जर ॥ झाला भट्टी डोड दह्या देवरा बुंदेला। बड़गोता दाहिमां डाभि बारड बग्घेला ॥ खीची पड़िहार सु चावड़ा संषुल गोहिल धंधलह। राजेश राण सब हिन्दुपति टांक पुँडीर सु सिंधलह ॥ १८८ ॥

तिन प्रभु शरनहि तक्कि धाइ आवहि आसा धरि। राखहु श्री महाराण हिन्दुपन सकल असुर हरि ॥ दिशि दिशि में दीवान सांइ सम कोइ न दिट्ठो। सुलतानह हम सत्य रोस करि औरँग रुट्ठो ॥ अमरख सुचित्त रक्खें अधिक क्षत्रीपन मेटंत खल। असुराइन सों ब उथप्पि के बसुमति लीजै अप्प बल ॥ १८९ ॥

॥ दोहा ॥

इहि बिधि गुरुता लषि अधिक पठयो दूत प्रसिद्ध॥
पत्तो सो उदयापुरहिं अबिलंबन अबिरुद्ध ॥ १९० ॥
हिन्दू पति भेटे हरषि दिय पय नमि अरदास ॥
बिनय सु अक्खें मुष बचन सानन्दित सोल्लास ॥ १९१॥
बंची सो अरदास बर उपमा बिनय अनूप ॥
कमधज्ज रु कबिलेश को सकल लिख्यो सु सरूप॥१९२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देइ दिलासा दूत को फेरि लिषे फुरमान ॥
सब राठौरनि सत्य कों सुन्दर बिधि सनमान ॥१८३॥

॥ कवित्त ॥

राज राण मति मेर तदपि इह लषि चतुरंतन । महाराय रावरह राव रावत सब राजन ॥ पूछे निय उमराव कहो कैसो मत किज्जै । काम परयो कमधज-नि साहि दल सज्यो सुनिज्जे ॥ अक्खे सुताम उमराव इह जानि चित्त वृत्तीहि जिन । बेगे बुलाउ प्रभु रट्ठवर पुहवी रक्खहु अप्प पन ॥ १८४ ॥

सुनि इह श्री महाराण लिषे फुरमान सुलाषन । सुनहु रट्ठवर सूर सदा हम तुमहिं सग्गपन ॥ सजि आवहु हम शरण भूलि नन धरहु चित्त भय । हों अभंग बर हिन्दु षग्ग सब असुर करों षय ॥ सुलतान समर करि संहरों म्लेछ रहें को हम सँमुष । सत षंड करों बर समर सजि दुष्ट तुमहिं जो देइ दुष ॥१८५॥

सेष सकल संहरों सैद पारों सब सप्पर । पच्छारों सु पठान लोदि बल्लोची भक्खर ॥ सरवानी भंभरिय हनो हबसी निय हत्थहिं । रन रोलवो रुहिल्ल मुगल सु करो बिन मत्थहिं ॥ गाडों धर रूमी गक्खरी उजबक्कनि सद्धों सु असि । कहि राजराण कमधज्ज हों रक्खों यों तुम रंग रसि ॥ १८६ ॥

उज्जरि करि अग्गरो ढाहि ढिल्ली ढंढोरों । लाहो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिय धर बुट्टि तटकि तुरकानी तोरें ॥ षनि नंषो षंधा
बेगि खुरसान बिहंडों । परजारें पट्टनहि देश भक्ख
सब दंडों । सुबिहान साहि ओरंग को गज समे
जीवत गहों ॥ हौं राजराण तो हिन्दुपति कहा अधि
तुम सें कहों ॥ १८७ ॥

बिस्तारों बर बेद पुहवि रक्खों सु पुरानह। काजी
सत्यक ते ब करों सब ठार कुरानह ॥ चकता कों
सुचून थान निज दिल्ली थप्पौं । रक्खों हिन्दू रीति
आसुरी रीति उथप्पों ॥ ईश्वर प्रसाद बर उद्धरों
म्लेछ तित्थ षंडों सु महि । रक्खों सु सकल रट्ठौर कों
कोपि राण राजेस कहि ॥ १८८ ॥

मीर मलिक मस्संद भूत सम तेह भयंकर।
घन घेरे रिपु घल्लि चुनिग चुनि हनों निशाचर॥
युग्गिनि रख सज्जरक बीर पंखिनि बेतालह । देत
भूत भष देहु करों असपति षय कालह ॥ रक्खों सु
हिन्दुपन बीर रस बसुमति रक्खों अप्प बल । तो राज
राण जगतेश सुअ षग्ग प्रान जित्तों यु षल ॥ १८९ ॥

॥ दोहा ॥

बल बँधाइ सुबिशेष तें, दल लिषि अनुगहि दीन।
बेगि बुलाए रट्ठवर, हिन्दूपति सु प्रबीन ॥ २०० ॥
रंग बढ़े सब रट्ठवर, ले निय परियन लच्छि ।
मेद पाट पति सों मिले, अब झख सारो मिच्छि॥२०१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ कवित्त ॥

इभ गरुये इगबीस दोय दस सहस तुरंगम । कोटिक रूप रु कनक पवर बहु रथ पवनंगम ॥ सतक जंत्रि भर शस्त्र करभ युग सहस मत्त कल । कलहंत-नहि सकज्ज सहस पण बीस पयद्दल ॥ इतनै सु सत्य परिकर अमित महाराइ सुत मज्झ बर । राजेश राण सों रहु वर आइ मिले असुरेश डर ॥२०२॥

गरूअ गात गजराज सकल शृंगार सुसोभित । कनक तोल तिन मोल अश्व एकादश उप्पित ॥ षग्ग एक खुरसान कनक नग जरित कटारह । इक हीरा सु अमोल दाम दस सहस दिनारह ॥ कमधज्ज सकल कर जोरि करि प्रभु नमि मुक्किय पेस-कस । श्री राज राण जगतेश के रक्खी हित धरि रंग रस ॥ २०३ ॥

॥ दोहा ॥

सबही सनमाने सुभट, बर बैठक सु बताइ ।
बीरा अैार कपूर बर, सें कर अप्पै साइ ॥२०४ ॥
षरच कद्य सुबिचारि षिति, दीने द्वादश ग्राम ।
नगर कैल वासो निरषि, अवनि सकल अभिराम॥२०५॥
किहि मुक्ताफल माल किहिं, हय गय गांउ सहेत ।
रीझि राण राजेश बर दिन २ सुभटन देत ॥२०६॥

इति श्रीमन्मानकबिबिरचिते श्रीराजबिलास शास्त्रे महाराणा श्रीराजसिंह जी का शरणागत बिजय पंजर बिरुद बर्णनं नाम अनेक सुमति प्रकाशः नवमो बिलासः ॥९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ कवित्त ॥

करिय अहो निसि कूच साहि अजमेर सँपत्तह ।
बंकागढ़ बिंठुलिय राज पट महल सुरत्तह ॥ रहे
तत्थ असुरेस बिकट चौको बैठाइय । परिय कटक
गढ़ परधि जलधि ज्यों दीप जनाइय ॥ निसु नीव
तत्थ आसुर नृपति जाने हिंदू जोर बर । रबि वंश
राण राजेश को शरन गह्यो बर रट्ठवर ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

तपो अधिक तुरकेश तहँ सुनि हिन्दूपति नाम ।
कलमलि उर कर मिंझि कहिं, हा हिय रही सुहाम ॥२
हम सों लरि भिरि रक्खि हठ, गए सुतजि धर गेह ।
क्यों करि रहिहें इक्खियें, राण शरण अब एह ॥ ३ ॥
जहां जाइ तहां जाइ कैं, गहो युवतिन परि गैल ।
तरु तरु पत्त सुपत्त करि, सब ढंढोरों सैल ॥ ४ ॥
स्वर्गहिं सेढिय जाल जल, पर्बत गुहो प्रदीप ।
षनि कुदाल पोताल षिति, अरि आनो अवनीय ॥५॥

॥ कवित्त ॥

करियें मानस कोप दिन्न फुरमान दिग्घ गस ।
कैलपुरा प्रभु कद्य बढ़हि जिन सुनत बीर रस ॥
सुनहु राण राजेश साहि औरंग समक्खिय । हम सु
शत्रु बहु हठी रट्ठवर क्यों तुम रक्खिय ॥ अप्पो
सुएह हम कज्ज अब के कलहंतन सद्य करु । नन
रहे एह कीनहि नृपति उदय अस्त रबि चक्कतर ॥६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इन लुट्टो अग्गरो देश दिल्ली धर दाहिय।
कियो कलह हम महल पालि सवही पतसाहिय॥
मारि थान मेंढता अप्प बल लयौ योधपुर। सल्लै
उयों नटसल्ल राह सल्लै यु अम्ह उर॥ रक्खे यु तुम्ह
तिन रिपुन को बढ़ि हेतो अप्प न बिरस। राजेश
राण रट्ठौर दै साहि सत्य रक्खेा सुरस॥ ७॥

॥ दोहा॥

बंचि साहि फुरमान बिधि, पाइय सकल प्रवृत्ति।
राण लिषे फुरमान फिरि, साहि जेाग सब सत्ति॥८॥

॥ कवित्त॥

रक्खैं हम रट्ठौर सत्य जसवंत राय सुत। इन
जो सत अपराध किये तोऊ इह संमत॥ करन मतो
सो करहु जोर कह कहिय जनावहु। कहो सु आवन
कल्हि अद्य सोई किन आवहु॥ जेहो सु लेइ तब
जानियहि प्रभु पन औार सुपुरुष पन। राजेश
राण कहि साहि सुनि बसुमति रहिहैं बर बचन॥९॥

आइ गहै को इनहिं देव कह दैत रु दानव।
रक्ख सज्ज खरिसाल मिलिहि जो कोटिक मानव॥
अब हम त्योंही एह स्नेह हम इन गुरु सद्यन।
अप्पै जो इन छेह तेा ब कैसो क्षत्रीपन॥ कहिये
सु आदि ही अम्ह कुल सरनागय बत्सल बिरुद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजेश राण कहि साहि सुनि महि उपगार बहु मरद ॥ १० ॥

॥ दोहा ॥

गयो अनुग अजमेर गढ़, असपति कर फुरमान ।
दीनों हिन्दु दिनेन्द को, बीरा रस बाखान ॥ ११ ॥
बंचि बंचि दिल्लीश बर, बाढ्यो रोस विशेष ।
फेर दुतिय फुरमान दिय, नागद्रहा नरेश ॥ १२ ॥

॥ कवित्त ॥

मिंडि देश मेवार कोट गढ़ ढाहि ढेर करि ।
आजं उदयापुरहि गाहि हय गय पाइनि गिरि ॥
रावर रावत राइ आइ फिरि हें जे अडु ।
संहरि तिन संग्राम यवन धर थप्पो जडु ॥ जरि थान थान थाना यतन रुंधि राह चहुं कोद रुष ।
राजेश राण सुलतान कहि मंडय को हम सेन मुष ॥ १३ ॥

तोयधि भुज बल तिरै कवन तुल्ले गिरि कद्यहि ।
पावक को मुंह पिवै सिंह सनमुष रिन सद्यहि ॥
महि को थंभय मरुत नाग कहु कवन सु नत्थय ।
गयन षंभ को देय सेा ब जित्तै हम सत्थय ॥
हठ छंडि अलिय इन देहु हम सीख कहा तुम सिक्खवें ।
राजेश राण सुलतान कहि अनम सोइ हमसों नवें ॥ १४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ दोहा ॥

हिन्दू पति फुरमान येां, बंचिहु तिय बरजोर ।
अप्प दयो फुरमान इह, साहि करो किन सोर॥१५॥

॥ कवित्त ॥

जरहि थान तुम जिते इक्क दिन तिते उठावहिं ।
आलम प्रथम उथप्पि बहुरि औरहि बैठावहिं ॥
भेद पाट महि रज्ज सहस दस गाम ईश बर । एक-
लिंग अम्ह दिये कबहुं नावै किनही कर । आवो
असुरेस अनेक इहि कट्टि बंधि सूधे करें ॥ राजेश
राण कहि साहि सुनि तोयधि येां भुजबल तिरें ॥१६॥

ऊजर करि अग्गरो धाइ लाहोर लेहुँ धन ।
दिल्ली करो दहल्ल तोरि तुम तखत ततष्षन ॥ अलवर
नरवर आइ थान थप्पै रिनथंभहिं । उज्जैनी आहनों
धार मंडव हनि डिंभहिं ॥ गुजरात देश लै दंड
गुरु सज्जों दल सोरठ सकल । राजेश राण कहि
साहि सुनि तुल्लों येां सुरगिरि अतुल ॥ १७ ॥

॥ दोहा ॥

रोस राण परवान कों, बंचत बढ़यो बिशेष ।
तृतिय बहुरि फुरमान तिन, अप्पो बहु असुरेश॥१८॥

॥ कवित्त ॥

श्री पुर तुम संहरयो कोप हम बिलय सु किन्नह ।
रूप पुत्ति रहुवरि लग्गि हम सों फुनि लिन्नह ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दंड देत देवल्या नालिबंधन सु निरंतर । दी
सहस दीनार ऐन सल्लै उर अंतर ॥ सल्ले सु
ए तुम शरन सेा ब सिताब समप्पियहि । राजे
राण सु बिहान कहि कलह मूल तें कप्पियहि ॥१८

राजथान निय रचो बास चित्तोर बसाइय ।
आनें दिल्लिय यहां सेन धन लच्छि सजाइय ॥ नौ-
बति नद्द निसान घोष इहि तषत घुराजं । सज्जै
तौ हूं साहि बहुत कहि कहा बताजं ॥ फुरमान लिषे
कहा सु फिरि तिहूं तिबेर कही सु तुम । राजेश
राण सुलतान कहि अब जिनि कट्टों दोस हम ॥२०॥

॥ दोहा ॥

येां तीजो फुरमान पहु, राण बंचि राजेश ।
क्रूर कोप करि लिषि कहें, सुनि औरँग असुरेश ॥२१॥

॥ कवित्त ॥

जिहिं रक्खैं जगदीश अप्प इकलिङ्ग ईश बर ।
तिहिं रक्खें जोधार राण अनमी राजेशर ॥ जिहिं
रक्खैं येागिनी रधू चित्तोर सुरानी । जिहिं रक्खैं बावन्न
बीर मुष कह कह बानी । पतिसाह मात आवै
प्रगट बरस सहस लौं जो बिढ़य ॥ सुलतान साहि
औरंग तदपि चित्रकोट कर ना चढ़य ॥ २२ ॥

जो हेमालय गरहु गहेा जो कासी करवत ।
जो जीवत धर गडहु पढ़हु जो चढ़ि गढ़ परबत ॥ जो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जालंधर जादू सीस कालिका समप्पै। जो दिशि दिशि बल देइ काइ तिल तिल करि कप्पै। जागती जोति ज्वालामुषी जेा ज्वालावलि में धँसै॥ राजेश राण कहि साहि सुनि बहुरि जनम ले भल बसै॥२३॥

॥ दोहा ॥

अनुग हत्य फुरमान इह, दयेा त्टतीय दिवान।
तहि फुनि करिकें गति तुरत, सौंप्येा जइ सु बिहान।२४।
बंचि साहि सब ही बिगति, जानि हिन्दुपति जोर।
बढ़न कज्ज तबहीं बिपल बज्जी बंब बकोर॥ २५॥
धुर कत्तिय पंचमि सु ध्रुव, सागर जल ज्यों सेन।
सज्जि चल्येा दिल्लीस वर, रबि नभ ढंकिय रेनु॥२६॥

॥ छंद भुजंगी ॥

चढ़यो सेन सज्जें सुबाजी षकत्ता। मनेा मास भद्दो महा मेघ मत्ता॥ सजें सिंधुरं पाखरंगं सनांहं। करे बंधि षग्गं दुधारा दुबाहं॥ २७॥

किनं पिट्ठि सज्जे लसे नारि गोरं। किनं पिट्ठि नेजा धजा बै किशोरं॥ किनं पिट्ठि सोहै ढलक्कंति हल्लैं। किनं लोह कोठी हठे मग्ग हल्लैं॥ २८॥

किनं बंधि कट्टार सुंडार दंत्ते। किनं पिट्ठि डोला चले इक्क पंत्ते॥ ठनंकार घंटा रवं तं घनंके। घनं घुंघरं पाइ ग्रीवा षनंके॥ २८॥

झरे दान गंधं भवें भोंर झौरं। लसे तेल सिंदूर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फुनि शीश चौरं ॥ पढ़ें धत्त धत्ता सुहं पीलवानं । अगं गग्ग गज्जें महा मेघ जानं ॥ ३० ॥

चलैं अग्ग पच्छें सभाला चरष्षी । पुले वायु वेगं नभं जोति पष्षी । जरे शृंखला पाइ गट्टे जँजीरं । किनं शात कोंभं सु कुंभं कठीरं ॥ ३१ ॥

किते अग्ग करिणी करे ताम चल्ले । उमत्ते घुमंते तरू के उषल्ले । किनं पिट्ठि नोबत्त बज्जै निहस्सै । सुभे सेन मज्झे करी देा सहस्सै ॥ ३२ ॥

हयं हंस बंसा तुला हेम तुल्ला । किते अंगए एक देसी असीला ॥ किते कोकनी वाजि कच्छी कबिल्ला । किहाडा षुडा रत्तडा के कनिल्ला ॥ ३३ ॥

किते सिंघली जंगली श्रैासिंघाला । किते जाति साणोंर सारंग फाला ॥ पंषाला जंघाला हिंसाला पवंगा । किते आरबी काश्मीरा उतंगा ॥३४॥

किते जाति कांबोज बंगाल देशा । षुरासानि षंधारि षेंगा षुरेसा । किते भोंर भारी जनो अंग भ्रंगा । चले चंचलं चाल चाला सुचंगा ॥ ३५ ॥

किते पौन सत्थी धरा पौन पत्था । रजै रूप राजी मनो सूर रत्था । किते पानि पंथा तुटे जानि तारा । किते जाति तेजी तुरक्की तुषारा ॥ ३६ ॥

किते पर्ब्बती अश्व आक्रंम पूरे । सजी साकती स्वर्ण शोभा संपूरे ॥ किते थाल मज्झे ततत्थेइ नच्चें ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिनं लोय नं लोल संसार रच्चें ॥३७॥

झिलंती जरी झूल सा पंचरंगे। रजे पूछ ज्यों चौर सालं तरंगे॥ शिषा दीप ज्यों उंच सोभे सु कर्णं। गुही केसवारं कचं स्याम बर्णं ॥३८॥

बढ्यो हेष हेषा रवं सोर सोरं। किये कंध बंके चले बंधि कोरं॥ उभे लष्ष यों पष्षरेहे अनूपं। चढ़े षान सुलतान राजान चोपं॥ ३९॥

पुलें अग्ग पाले हठाले पघाले। रिसाले रुपाले रंगाले सिंघाले॥ मदाले सुढाले मदाले मरद्दं। दझाले दुझाले कितं नाद रद्दं ॥४०॥

झुझारे करारे अकारे झिलंते। षिलारे षुमारे अषारे षिलंते॥ डिंभारे डरारे डरें ना डहक्कैं। गिरा गुंज तेगैं गरज्जें गहक्कैं ॥४१॥

हसंते लसंते धसंते लहक्कैं। कलं कूदते षुंद रत्ते किलक्कैं॥ सजे आयुधं स्वांग छत्तीस संधैं। कटारी कृपानं दुदो तोन बंधैं ॥४२॥

गहे तोब कंधे भरे सोर गोरी। गुरू गज्जि आवाज जानो कि होरी॥ धनुर्बान कंमान जे हत्थ धारे। प्रहारे उडंते षहं पष्षि पारे ॥४३॥

सजे टोप संनाह यं जुद्ध मंत्ता। गदा गुर्ज करी किनं हत्थ कुंता॥ दुरंती लसें पिट्ठि गट्टी सुढल्लं। मिले कोटि पाला दलं जानि मल्लं ॥४४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरे यान जंत्री सु आराब भारं । सयं पंच वीरं सजे साज सारं ॥ धुरा अश्व जोरा किनं श्वेत धोरी । जुपे जंत्रि किहि संबरं रोझ झोरी ॥४५॥

दलं मध्य दिल्लीसरं अप्प दीपैं । जनो मान लंकेश को सोइ जीपैं ॥ बन्यो रूप आरोहए एक बाजी । सुभे स्वर्ण माणिक्य साकत्ति साजी ॥४६॥

छजे दंड सोवर्ण जा शीश छत्रं । उभे उद्यलं चौर दुरते पवित्रं ॥ चहूं ओर जा गुर्ज बरदार चल्लें । छरीदार हज्जार केसे न ढिल्लें ॥४७॥

भरी खज्जरं सहस स्वर्णं खजानं । गिने कोन करहा दलं नत्थि गानं ॥ सजी नारि पिट्ठें छुटंती हवाई । किते स्वान चीता सु सत्थे सजाई ॥४८॥

उडे रेनु ब्यूहं सु ढंक्यो अयासं । भयो भानु बिम्बं मनो संझ भासं ॥ महा सेल कट्टें वरे सुद्ध-मग्गं । भरं भूरुहं भर करं क्रषि भग्गं ॥ ४८ ॥

करंते पयानं उरझें कुरंगा । जनों जलधि संमेल कालिंदि गंगा । नदी ताल इह कुंड बहु सुद्धि नीरं ॥ घुरे घोष निर्घोष नोबति गुहीरं ॥ ५० ॥

मच्यो सेन सोरं सुने कोसु सद्दं । गजे नारि गोरा मनो मेघ भद्दं ॥ प्रति द्यौस दर हाल कीये पयानं । प्रपत्तो दलं मज्झ मेवार थानं ॥ ५१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ दोहा ॥

भेद पाट पत्तो सुमहि, चढ़ि औरँग असुरेश ।
बोलि सकल उमरावबर, राण तदा राजेश ॥ ५२ ॥

छन्द पद्धरी ।

रस राजनीति राजेश राण । दरबार जोरि बैठे दिवान ॥ छाजंत शीश नग जरित छत्र । पढ़ि उभय वीर उद्यल पवित्र ॥ ५३ ॥

हय हत्थि पयद्दल मिलि असंख । जिन सजत दिल्लिपति होइ झंष । महाराय सबल पद धरन धीर । बोले सु ताम अरि सीह बीर ॥ ५४ ॥

जय सीह कुँअर बोले सुजान । भल हलत तेज जनु जिट्ठ भान ॥ भल भीम रूप भीमह कुमार । बोले सु जंग बहु जैतवार ॥ ५५ ॥

रावर सु बोलि जस करन रंग । असुरेस सल्ल अन मी अभंग ॥ भल मंत भेद धर भाव सिंघ । राना उत रक्खन जोर रिंघ ॥ ५६ ॥

महाराय मनोहर सिंघ मान । गिरि मेर नंद गिरिवर गुमान ॥ दल सिंह सिंह रिपु दलन दुट्ठ । कंकाल कलह जनु काल कुट्ठ ॥ ५७ ॥

भगवंत सिंघ कुंवर सभाग । बर फते सिंघ गुरु पाग त्याग ॥ सु गुमान सिंघ अरि सिंघ नंद । दरबार आइ जनु ससि दिनेंद ॥ ५८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रजवट्ट रूप सबलेश राव । चहुवान चंड कि
लरन चाव ॥ झाला नरेंद सट्टे जुझार । कहि चंद्र
सेन जसु अचल कार ॥ ५८ ॥

केसरी सिंघ रावत सु कित्ति । जसु कुंवर गो
मह जंग जित्ति ॥ झनकंत षग्ग झाला सुजैत । दिल्ली
स गहन जो दाव देत ॥ ६० ॥

गढ़ पति पँवार दाता दुझल्ल । बर बीर रा
भनि बैरि सल्ल ॥ महसिंघ बंक रावत उमत्त । चकि
यें सु चोंड हर चंड चित्त ॥ ६१ ॥

रन अचल सुरावत रतन सेन । फंदेस रिपु
उयों फंदि एन ॥ सामलह दास कमधज्ज क्रूर । नर
नाह बिरुद जिन मुक्ख नूर ॥ ६२ ॥

रावत रढाल रिन मान सिंघ । जित्तन सुजंग
भुज सबल जंघ ॥ केसरी सिंघ चहुवान राव । घन
घटे मिच्छि जिन षग्ग घाव ॥ ६३ ॥

लीयें सचोंड हर नीति लद्य ॥ केसरी सिंघ
रावत सकद्य ॥ महुकंम सिंघ सगता सुभास । राठौर
राय बर दुर्ग दास ॥ ६४ ॥

सोनिंग देव सामंत सूर । चालुक्क राव बिक्रम
बिरूर ॥ रावत रुषमांगद सुभट रूप । जसवंत सिंघ
झाला सु भूप ॥ ६५ ॥

गोपी सुनाह राठौर राइ । लहि समर समय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनु सेर लाइ ॥ प्रोहित सु राजगुरु जग प्रसिद्ध । सु गरीबदास बहु मंत शुद्ध ॥ ६६ ॥

गढ़पती महेजा अमर सिंह । बर रतन राव बीची अबीह ॥ सद्दे सुअनी उमराव सब्ब । आदर समान जिन गुरु अदब्ब ॥ ६७ ॥

प्रणमेबि सकल महाराण पाइ । बैठक सुकीय बैठे सुआइ ॥ श्री राज सिंघ राना सनूर ॥ कहि नाम देत बीरा कपूर ॥ ६८ ॥

॥ कवित्त ॥

सुनहु सकल सामंत रान जंपे राजेसर । सजि दल बल सब्बान इत्थ आवहि असुरेश्वर । युद्ध करे जिहि थान बेगि सेा थान बतावहु । भज्जैं जहँ यवनेश असुर संहरि घर आवहु । बिन युद्ध किये बुज्झै न इह दिल्लीपति औरँग दुमन ॥ इक मंत होइ सब अवनि पति पत्थोए पारो पिशुन ॥ ६९ ॥

अक्खें तब उमराव जोरि कर युगल साइ सम । असुर कहा हम अग्ग अवहि ठिल्लें करि उद्धम ॥ सिहांसन सेाभियहि साँइ हम हुकम सुकिज्जै । दिशि दिशि सज्जिब दुर्ग रटक रिपु सेां इहि लिज्जै ॥ जैहै सुभज्जि इह यवन दल कबलेां रहि करिहें कलह । गहि लेहु असुर पति गज चढ़्यो संजि चतुरँग पष्षर सिलह ॥ ७० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ दोहा ॥

गरिब दास प्रोहित सुगुरु, अक्खिय तिन फिरि एह ।
एक सुमंत सु अरज इक, अब धारहु सु सनेह ॥७१॥
प्रभु मैं सकल पहार पति, जित्तहु पर्व्वत जोर ।
घाट घाट रिपु घेरि के, बेगे देहु बहोर ॥ ७२ ॥
विग्रह इह के बरस लौं, सुबढ्यौ जानि विशेष ।
अगनित दल असुरेस पें, हम मन इह अंदेश ॥७३॥

॥ कवित्त ॥

ये सब अद्रि अभंग नीर छाया युत निर्भय ।
जंग करहुं यवन सेां जरिग घन घाट सदा जय ॥
लगें न तह इन लगा असुर कोटिक जेा आवहिं । बंके
निज बर बीर मंडि अब असपति ढावहिं ॥ आपके
पंच सत पंच अरि होइ तऊ रक्खैं यु हनि । इहि
मंतहि श्री महाराण निति असपति दल अकनूल
गिनि ॥ ७४ ॥

उदयाराण अभंग सक्क चीतौर समेसर । आए
इन ही अचल अरयो जब साहि अकब्बर ॥ सर भर
किय संग्राम बरस द्वादश लेां बिग्रह । अंत भगेा असु-
रेश गयो सिर पटकि स्ववं गृह ॥ ए अचल किए इक
लिंग हर अचल राज कै काज तुम्ह । इह मंतहि श्री
महाराण निति अंप्प सु जानि सुमल्लि अम्ह ॥७५॥

प्रगटे राण प्रताप जंग फुनि इहि गिरि जित्ते ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोघुंदा पुर घाट घेरि आसुर सब षत्ते ॥ अबदुल्ला सु नवाब गिरुआ गज सहित गिराइय। मान सिंघ निय मान गयेा कूरंभ गमाइय ॥ दल सहस बहत्तरि असुर दलि हिन्दू पति रक्खिय सु हद। इह मंतहि श्री महाराण नित मुगल ईश छंडे सु मद ॥ ७६ ॥

अमर राण अवदात साहि जहँगीर सज्जि दल। आयेा चढ़ि असुरेश मज्झ मेवार सु महियल ॥ थप्पि च्यारि असि थान लेन बसुमति सु बढ्यो बहु। सत्त बरस लेां सीम नेटि अरि भग्गि रहे नहु। असि च्यारि थान इक दिन उठे अकरराण लिन्नी सु इल। इहि मंतहि श्री महाराण निति बसुधा धोरण अतुल बल ॥ ७७ ॥

कुशल रहें निय कटक बैरि दल होइ बिहंडह। रुक्कै आवति रतन भूष मरिहे अरि भंडह ॥ भग्गें असपति भेार हत्थ ज्येां बहुरि न आवहिं। इहे मंत अब्ज ईश किये सज्जन सुख पावहिं॥ करिये न पिशुन भायेा कबहिं कत्थन खल क्येां करि कहे। राजेश राण इहि मंत तें दूध डंग दोऊ रहै ॥ ७८ ॥

॥ दोहा ॥

सु बचन प्रोहित के य सुनि राजसिंह महाराण।
कुशल जैति दुहु कज्ज ए मन्येा मन्त प्रमान ॥ ७९ ॥
करन दुर्ग सजि के कलह जित्तन दल असुरेश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानि सु परबत दल प्रबल राण चढ़े राजेश ॥ ८० ॥

॥ कवित्त ॥

राण चढ़े राजेश सहस पण बीश तुरग सजि । घुरत निसाननि घोष रबि सु ढंकिय हय पुरजि ॥ मयंगल दल मय मत्त घटा उट्ठी कि श्याम घन । पयदल सहस पचीस सज्ज सायुध सूरं तन ॥ रथ जंत्रि सहस सस्त्रहि भरिय कर हां गिनति परंत किहिं । जग मज्झ कवन जननी जन्यो जंग आइ जित्तै सु जिहिं ॥ ८१ ॥

सत्थ चढ़े अरि सिंघ वंक ये महा बीर बर ॥ जैत हत्थ जै सिंघ कुंवर करमेत कुलोधर ॥ भीम कुमार सभाग जोध रावर जसवंतह । भाव सिंघ भूपाल अरिन जन करन सु अन्तह ॥ महाराय मनोहर सिंघ चढ़ि नृप दलसिंह सु बीर बर । सामंत राण राजेश के कलह कूर कंकाल कर ॥ ८२ ॥

नृप अरसीह सु नंद कुंवर भगवंत सीह बर । फते सिंह करि फते गुनी सु गुमान सिंह गुर ॥ सबल राव सबलेस चंद झाला सु जैत चिर । सगतावत रावत्त केसरी सिंघ सिंह बर ॥ पांवार सु बैरी सल्ल पहु महा सिंघ रावत मरद । रावत चौंड़ावत रतन सी महुकम सिंघ सु बड़ बिरद ॥ ८३ ॥

सांवल दास सकाज राज रक्खन सु रट्ठवर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान सिंह रावत सुमन्त चौंडावत सुन्दर ॥ चाहुवान चतुरंग राव केहरि रिन केहरि। रावत केहरि रूप चंड चौंडावत उच्चरि ॥ रावत रुषमांगद बीर रस सोलंकी बिक्रम सु ध्रुव। नृप दुर्गदास सोनिंग सम सकल रठ्ठवर सत्य हुव ॥ ८४ ॥

युग झाला जसवंत गोप रट्ठोर जैत कर। प्रोहित गिरवर प्रगट बषत बल बषत सीह बर ॥ रतन सेन षीची सु बीर कन्हा सगतावत। अबू मलिक अजेज डोड महासिंह सुहावत ॥ गढ़ पती महेजा अमर गिनि झाला नृप बर सिंघि झिलि। चढ़ि चले सज्जि चतुरंग चमु मनो उदधि सुरसरित मिलि ॥ ८५ ॥

॥ दोहा ॥

मनो उदधि सुरसरित मिलि गुरु लहु अगिनत भूप।
सत्य राण राजेश के चढ़े बीर रस चूप ॥ ८६ ॥
देवी पानिय देव गिरि, पंच कोश सुप्रमान।
प्रथम मुकाम तहां प्रवर, मंडि महा मंडान ॥ ८७ ॥
सोर भटक अरु सेन सुर गिरिबर अंबर गाज।
श्रवनन सद्द सुन्यो परै अरि दल बढ़त अवाज ८८॥
प्रथम मुकामहिं हिन्दुपति मिले आइ मेवासि।
पानेारा मेरह पुरा जूरापुरा जवासि ॥ ८९ ॥
सजि पुलिन्द सब पल्लि पति सहस पचासक सत्थ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ध्रुव पय रोपन धनुष धर समर सूर सु समत्थ ८० ॥
तरकस युग २ पिट्ठि तिन संपूरित सर युद्ध।
कथे कत्थ नट बिकट लों दुरय न तिन रिपु युद्ध ॥८१॥
तरु दल छेदे तक्कि कैं व्योमहिं उड़त बिहंग।
बदि लाखक में दुज्यनहि बेधन बान अभंग ॥ ८२ ॥
प्रनमि हिंदुपति पाइ सब ठट्ठे महलहिं ठट्ट।
मनो गंग यमुना मिली सलिल समेल सुघट्ट ॥ ८३ ॥
हुकम दयो तिन करन हर भारहु घाट सभार।
दस दस सहस रहो सु भर पिशुन न ह्वै पैसार ॥ ८४ ॥
षरच सु लेहु षजान तें ध्रुव पद रोपो धीर।
रशित रुक्कि रिपु रुक्कि के मारो बड़ बड़ मीर ८५ ॥
यों कहि सब अभिमानि के सबनि दये शिर पाव।
अश्व कनक भूषन अषय बसुधा ग्रास बढ़ाव ८६ ॥
पंच फौज तिन रचि प्रबल रहे घाट गिरि रुक्कि।
आवन जान न लहें अरि थान २ मग थक्कि ॥ ८७ ॥
पत्तनेन बारा सु पहु गिरिवर तहँ गुरु गाढ़।
भार अठारह तरु भरित अह निसि लगत असाढ़ ८८॥

॥ कवित्त ॥

अह निसि लगत असाढ़ नित्य बरषे तहँ नीरद। नदी नाल नीझरन सरस बसुधा रसाल सद ॥ चहूं ओर गुरु अचल घाट दुर्घट घन घट्टिय। बंकोगढ़ बहु बिकट नारि अरि दलन निहट्टिय ॥ पत्ते

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सु थान महाराण तिन नेनवारा गुरु गढ़ निपट ।
असपति अनेक आवे तऊ जयति हिंदुपति खग्ग
झट ॥ ८८ ॥

संमुह दल जैसिंघ कुँवर रक्खें स कलापह ।
दल सुभीम दक्खनहिं मंडि बहु सुभट मिलापह ॥
भुजा बाम भगवंत सिंह महशय बंधू सुअ । रखे
पीठि महराय मनोहरसिंह मेरु धुअ ॥ दिसि च्यारि
रक्खि दिग्वाल ए च्यारि च्यारि हाजार हय । नव
सहस तुरग बिचि हिंदु नृप जुद्ध राण राजेश जय॥१००॥

पातिसाह दल प्रबल तदपि महराण तेज तिन ।
परे न अग्गे पाउ हिरनपति ज्यों हूतासन॥ तरु तरु
थंभतु तकतु जकतु जहं तहं गुरु जंगल । ज्यों कुरंग
जंगली समै सम तल महि मंडल ॥ सापुरस सीह
सीवान इन अचल अचल कै आदरत । औरंग सुसेवत
ओझेत चौंकि चौंकि उट्ठंत चित ॥१०१॥

॥ दोहा ॥

असपति अहनिसि ओझकतु राणतेज अहहेज ।
आयो के आयो सुभव अनमी हिंदु अजेज ॥१०२॥
मंडै भूलि न हूं महल सहल न चढ़त जगीस ।
दहल राण राजेश की दुरयौ रहत दिल्लीश ॥१०३॥
डरत डरत असुरेश दल करत सुकास सकोस ।
आए उदयापुर निकट दुज्जन पूरित दोस ॥१०४
वसुधाधर देखे निकट ओघट घाट अजीत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थंभयो निज दल तिनहि यह भयो साहि भयभीत ।
धसे न को धाराधरहि धर सम आए धाइ ।
राणनि सुनिये वत्त रुचि कविलेश सेां कहाइ ।

॥ कवित्त ॥

अब तज्जि न अहमेव उनहिं अहमेव सुआवहु ।
देखि देखि निज दुर्ग्ग कहा निज मन कंपावहु ॥ धर
सम आए धाइ धसो अब क्येां न धराधर । जुरो
आइ इत जंग रोस करि लेहु रठा वर ॥ पिखिन
पहार परि क्यो रहे पय पय क्यों थंभो सुपथ ।
राजेश राण कहि साहि सुनि पवन वेग परखरहु रथ ।

॥ दोहा ॥

लरो तेा आवहु अचल विच्चि, न नरु कि छंडिव देश ।
जासु शाहि जुग्गिनि पुरहि, राण कहत राजेश ॥
संदेशा येां श्रवन सुनि, लग्गी अरि उर लाइ ।
रोस पूर महराण को, सद्द हिये न समाइ ॥ १०८ ॥
मनु मद पीवो मक्वडहि, डसि वृश्चिक लसि भूत ।
किंकिं कौतुक ना करै, सो दिल्लीपति सूत ॥१११॥

॥ कवित्त ॥

कथन राण अति क्रूर भूरि भृकुटी चढ़ाइ करि ।
दब्बि अधर करि मींडि भूत भासुर सरोस भरि ॥
चढ़न कह्यो चकतेस बरजि तब खान बहादर । अहो
कवि ले आलंस विकट आयो पहार वर ॥ नन लाग
नारि गोरान को हय सहथी निवहे न तहं । इहि मंत

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्य दल पाठवहु अप्पन साहि रहो सु इह ॥११२॥

मानि महादर मंत दिलीपति रहयो मानि उर ।
सहिजादा निज सद्दि अगुरु सुलतान अकब्बर ॥
सकल भांति सनमानि कहयो तुम करो कटक्की । जोर
हिंद गिरि जोर हलकि गहि लेहु हटक्की । आवै
सु धाइ दल लेहु अति शैल सकल करि के सरद ।
करि जोर हिंदु दल सो कलह मही लेहु बाडम
मरद ॥ ११३ ॥

साहि हुकम सुप्रमान लटकि शीशहि चढ़ाइ
लिय । सब्ब करी सुसलाम साहि नन्दन अनंत श्रिय ।
अद्ध लाख सजि अश्व सहस सिंधुर मनु सेलह ।
किते खान उमराव गर्व्व गाढ़े लिय गैलह । हर बल
हुसेन अगोर नारि आराबगुर? । चढि चल्यो अकब्बर
चंड चित पत्तन तक्खन उदयपुर ॥ ११४ ॥

प्रबल पौरि प्राकार पिक्खि प्रासाद गृहं गृह ।
गोष झरोषा गेरि अजरि तजरी सुजहां तहं ॥ बहु
देवल बाजार हट्ट भनि केउ हजारह । संगी काम
सपल्ल अटा चित्रसारि अपारह ॥ जहं तहं सुकुंड
वर बापिका वन उपवन सर वर सलित । भूनारि शीश
जनु भालि पल नगर उदय पुर चैन नित ॥ ११५ ॥

निरखि उदयपुर नैंन रिपु सुपत्ते अदभुत रस ।
भुल्लि रोस सुधि भुल्लि देखि कमठान चहों दिस ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेंमुंह करत सराह बाह फुनि वाह वदंतह । रा
थान सच्चा सुराण इत माम अनंतह ॥ पुर चहु
ओर पराव परि बिषधर ज्यों चंदन बिटपि
पतिसाह सु औरंग साहि पहु थान थान तब थाप
थपि ॥ ११६ ॥

थप्पि थान चीत्तोर थप्पि पुर मंडल थानक ।
मंडल गढ़ बैराट भेंस रोडहि सुभयानक ॥ दश पुर
नीमच दुर्ग चलहु सनकंध हचाचर । अरु जीरन
अंटाल कपासनि नगर राज सर ॥ जरि थान उदेपुर
भरि यवन अति अनीति बरती अवनि । पतिसाहि
साहि औरंग को जवन परत छिति रयनि दिन ॥११७॥

॥ दोहा ॥

थान जरे जहं तहं सुथिर, अरि औरंग असुरेश ।
मेदपाट महि मंडलें, राण सुनी राजेश ॥ ११८ ॥

॥ कवित्त ॥

मेदपाटपति महल भूप भूपह सु भूमि भर ।
महाराइ रावर महिंदरावत घन घुंमर ॥ राजा रावर
ढाल आदि उमराव अनेकह । हिंदूपति किय हुकम
सजो निज सेन सटेकह ॥ भंजो ब थांन असुरोन भर
निज निज धर रक्खो सुनृप । अनसंक कंक अरि
उत्थपहु तिलन गिनो तुरकेश तप ॥ ११८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ दोहा ॥

हिंदूपति श्रीमुख हुकम, सुवर वीर सुप्रमानि ।
अप्प अप्प रक्खन अवनि, चढ़े तुरंग पलानि ॥१२०॥

॥ कवित्त ॥

गोपिनाह कमधज्ज चढ़े विक्रम चालुक्कह । रावत रतन उदंड चंड चोडा उत रूपह ॥ कहि सगता उत कन्ह रंग रुख मागच रावत । चढ़े राव चहुवान केसरी सिंह सुहावत ॥ समलह दास कमधज्ज चढ़ि चढ़ि दयाल मंत्री श्वर । केसरी सिंह रावत चढ़े चोंड़ा उत नृप राघ चिर ॥१२१॥

चढ़े कुंवर वर गंग केसरीसिंह सुनंदन । सगता उत कुल सूर जोर अरि जूह निकंदन ॥ दुर्गदास सेानिंग चढ़े राठौर सुचंडह । महुकम सिंह मरद्द चोंडहर अकल अदंडह ॥ काल नरिंद जसवंत चढ़ि दिल्लीपति दल बल दहन । सामंत राण राजेश के गुरु गुमान गय घड़ गहन ॥ १२२ ॥

॥ दोहा ॥

चढ़ि उमराव चतुर्द्दसह, उद्धासन असुरान ।
सेन सहस दस अश्व सजि, निहसत नद्द निसान १२३

इति श्रीमन्मानकविविरचिते श्रीराजविलासशास्त्रे महाराण-
श्रीराजसिंहजीपातिसाहऔरंगसाहिसमरसंवाद-
वर्णनं नाम दशमो विलासः ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

।। दोहा ।।

सोलंकी विक्रम सुभट गोपिनाह कमधज्ज ।
रोमी तिन घनरल तले, साहसवंत सकज्ज ॥ १ ॥
आवत जब जाने असुर, देव सूरि पुरघट्ट ।
रोमी द्वादस सहस दल, बल आराव विकट्ट ॥ २ ॥
नारि तहां औंघट निपट पंचकोस परजंत ।
अश्व एक पथ अति क्रमें, चीटी ज्यों सुचलंत ॥३॥
दीनों आवनहु अन दल, नारि मध्य निरभार ।
रोके तबहु हुहाट के, पहुं निकरन पैसार ॥४॥
मारि मचाई हुहुमरद, विक्रम चालु कबीर ।
गोपिनाह कमधज्ज नैं, मारे बड़ बड़ मीर ॥ ५ ॥

छंद त्रिभंगी ।

विक्रम बलवंता रणरस रंता अति हित मंता सामंता । जे सुननि परत्ता तेजी तत्ता वसुह वदत्ता दुद्दंता । करबालउरु कुंता हत्थ फुरंता वीर बिरंता बाधंता । प्रजरंत पलित्ता जंगहि जुत्ता धम धक धुत्ता गुरुमत्ता ॥ ६ ॥

रोमी मुह रत्ता घेरि सुघत्ता, भय भय भित्ता चल चित्ता । अल्लह उचरंता असुर दधंता, खब्बड़ खंता मदमत्ता ॥ तक्के गिरि गत्ता शरण असत्ता मन सुमिरत्ता तिय पुत्ता । विसरे सुधि वत्ता के तरु छित्ता तरु तरु लित्ता विलपत्ता ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कितने क कविल्ला उररि अखिल्ला अक्खि इलल्ला महि मिल्ला । काजी बहु मुल्ला बिफुरि बिलुल्ला झर मुह झल्ला सिर खुल्ला ॥ नर निपट नवल्ला रंग रसिल्ला दंडहु झल्ला मनु मल्ला । खग तेजरु भल्ला बान बहिल्ला गुरु जग हिल्ला हर हुल्ला ॥ ८ ॥

कत्ती किल किल्ला सक्ति सलिल्ला तोप त्रिमुल्ला जाजल्ला । दल मचि दहचल्ला लोह उजल्ला नहिं बिचि पल्ला घर भल्ला ॥ घूमत घामल्ला छक्क छयल्ला तजि गृह तल्ला एकल्ला । तुटि तूरत बल्ला ढरि गज ढल्ला कापर डुल्ला अकतुल्ला ॥ ९ ॥

सोलंकी सूरा बबकि बिडूरा किय भक भूरा अरि झूरा । नाहर ज्यों तूरा बजि रन तूरा सुर सिंधूरा परि पूरा ॥ पर दल चकचूरा करि बल क्रूरा बरि बर डूरा रन रूरा । अरि बिष अंकूरा सकल समूरा ज्यों जर मूरा उनमूरा ॥ १० ॥

गोपी कमधज्जा सूर सकज्जा अटल अजज्जा गुरुलज्जा । सिंधुर हय सज्जा रूप सुरज्जा धरगिरि धुज्जा खग बज्जा । तीखे तनु तिज्जा भूरत भिज्जा गगन सुगज्जा आबिद्या । भय करि रिपु भज्जा शीश ससज्जा गिद्धि निषज्जा गहि बुद्या ॥ ११ ॥

दुज्जन दहबट्टा विमन विकट्टा खग भँग सुट्टा उदभट्टा । नर के ज्यों नट्टा उलट पलट्टा भरत कु-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लट्टा तँग तुट्टा ॥ जोधा रस जुट्टा घनदलघट्टा उप
दपट्टा गाहट्टा । झुकि झुकि ग्वग कट्टा जझट सझ
रण रस लुट्टा आहुट्टा ॥ १२ ॥

ररबरि घन रुंडा बिचलि बिहंडा महि पी
मुंडा खल खंडा । आसुर सुउदंडा बिलझ बितंड
प्रबल प्रचंडा भुज दंडा ॥ कर सर कोदंडा बहु बल
वंडा भल किय भंडा खल खंडा । करि कट्टि भसुंडा
अरिन अखंडा चढ़ि रण चंडा झर मंडा ॥ १३ ॥

॥ कवित्त ॥

मंड्यो झर मुंढाल काल रोमीन खयं कर
सोलंकी नृप सूर नाम विक्रम सुबीर नर ॥ साच वाच
साधर्म्म गोपिनायक युग कित्तिय । देव सूरि दुघाट
यवन सेना तिन जित्तिय । लुटि लच्छि खजान अनेक
विधि राणा राजेशर सुबल । जयपत्त प्रथम इहि जंग
जुटि भल भग्गो असुराण दल ॥ १४ ॥

इति श्रीमन्मानकविविरचिते राजविलासशास्त्रे
देवसूरिदुर्घाटे रोमीसार्द्धं प्रथमयुद्ध-
वर्णनं नाम एकादशो विलासः ॥११॥

॥ दोहा ॥

उदय भान कूअँर अमर, चाहुवान चतुरंग ।
उदयापुर थाने उररि, मारे म्लेच्छ मतंग॥ १ ॥
रुकमांगद रावार को कूअँर सूर सपच्छ ।
सहस पचीसक असुर पर, नंखी वग्ग समच्छ ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूचना ।

अब तक ग्रन्थमाला की पिछली संख्याओं में निम्नलिखित ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं ।

संख्या १ और २

(१) ध्रुवदास की भक्तनामावली । भक्तों के संक्षिप्त वृत्तान्त-सहित । सम्पादक-बाबू राधाकृष्णदास । मूल्य ॥≡)

(२) सदलमिश्र की चन्द्रावती । सम्पादक-बाबू श्यामसुन्दर-दास बी० ए० । मूल्य ।-)

संख्या ३, ४, ५, ६, ७, ८ और ९

(३) सूदन कवि का सुजानचरित्र । सम्पादक-बाबू राधाकृष्ण दास । मूल्य २)

* (५) लाल कवि का छत्रप्रकाश । सम्पादक-बाबू श्यामसुन्दर-दास बी० ए० । मूल्य १)

(६) नन्ददास की रासपञ्चाध्यायी । सम्पादक-बाबू राधाकृष्ण-दास । मूल्य ।≡)

संख्या १०

(७) चन्द्रशेखर का हम्मीरहठ । सम्पादक-बाबू जगन्नाथदास-बी० ए० (रत्नाकर) । मूल्य ॥)

संख्या ११ और १२

(८) श्रीधर का जंगनामा । सम्पादक बाबू-राधाकृष्णदास और पण्डित किशोरीलाल गोस्वामी । मूल्य ।॥)

(९) मलिक मुहम्मद जायसी की अखरावट । सम्पादक-महामहोपाध्याय पण्डित सुधाकरद्विवेदी । मूल्य ।≡)

संख्या १३ और १४

(१०) मुंशी देवीप्रसाद की महिलामृदुवाणी । मूल्य १)

* इस पुस्तकावली की चौथी संख्या का ग्रन्थ पृथ्वीराजरासो है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

संख्या १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४ और २५

(११) दादूदयाल की बानी। सम्पादक महामहोपा
पण्डित सुधाकर द्विवेदी।

(१२) कवि नूरमुहम्मद कृत इन्द्रावती, पहिला भा
सम्पादक-बाबू श्यामसुन्दरदास बी० ए०। मूल्य

(१३) कविजोधराजकृत हम्मीररासो। मूल्य
श्यामसुन्दरदास बी० ए०। सम्पादक

(१४) दादूदयाल का सबद। मूल्य
पण्डित सुधाकरद्विवेदी।

(१५) कविआनन्दघनकृत विरहलीला। सम्पादक-बाबू काशी
प्रसाद जायसवाल। मूल्य

संख्या २६, २७, २८, २९, ३० ३१ और ३२

(१६) कविपद्माकरकृत वीरविरदावली। सम्पादक ला
भगवानदीन। मूल्य

(१७) भूषणग्रन्थावली। सम्पादक-पण्डित श्यामबिहारी
एम० ए० और पण्डित शुकदेवबिहारी मिश्र बी० ए० मूल्य १

(१८) मान कवि कृत राज विलास। सम्पादक लाला भगवान
दीन (अपूर्ण)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अङ्कसंख्या ३४] [पुस्तक संख्या १७ और १८

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक, माधवप्रसाद पाठक ।

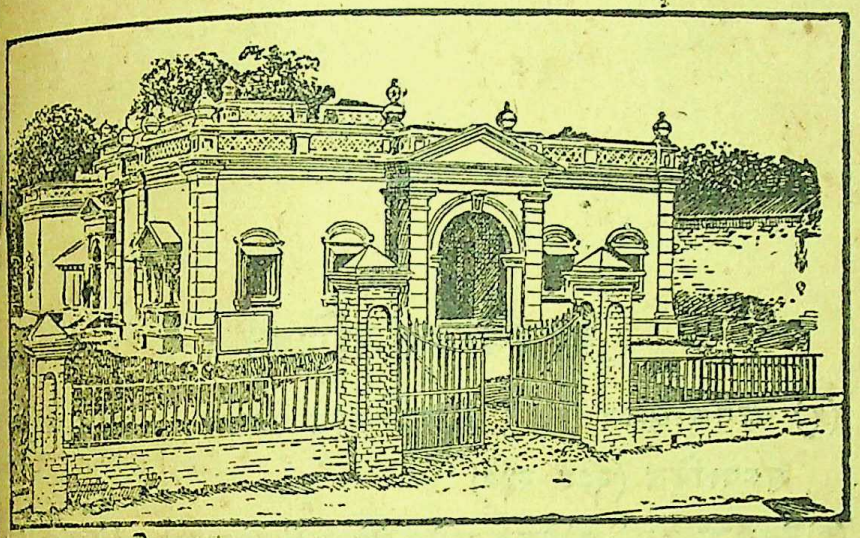

Fasciculus No. 34.] [Books Nos. 17 & 18

NAGARI-PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR—

MADHAVA PRASADA PATHAKA.

PUBLISHED BY

THE NAGARI-PRACHARINI SABHA.,

BENARES,

Under the patronage of the Government of the United Provinces.

मूल्य प्रति संख्या ॥) *Price per fasciculus As. 8*

ISSUED ON THE 30th MAY 1911.

Printed by Madho Prasad, Bharat Press, Benares, for the Publisher

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका ।

(१) नानकविकृत राजबिलास—लाला भगवानदीन सम्पादित (२०९–२४०)

(२)देवग्रन्थावली-पण्डित गणेश बिहारी मिश्र सम्पादित(३३-६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राग की रीझि बँधे मृग से दृग दोउन के गुन दामरि दोऊ। ए उनके रँग वे इनके सु रँगे रँगि साँवरे साँवरी दोऊ॥ देवजू सोच सकोचनि जोहनि भौंहन पारत भाँवरि दोऊ। दूरि ते दौरि दोऊ गृह पौरि पै होत दुहू पै निछावरि दोऊ॥ १७॥

॥ कवित्त॥

दुहू मुख चंद ओर चितवैं चकोर दोऊ चितै २ चौगुनों चितैबो ललचात हैं। हाँसनि हसत बिन हाँसी बिहसत मिले गातनि सों गात बात बातनि मैं बात हैं॥ प्यारे तन प्यारी पेखि पेखि प्यारी पिय तन पियत न खात नेकहूँ न अनखात हैं। देखि ना थकत देखि देखि ना सकत देव देखिबे की घात देखि देखि ना अघात हैं॥ १८॥

रीझि रीझि रहसि[1] रहसि हँसि हँसि उठैं साँसै भरि आँसू भरि कहत दई दई। चौंकि चौंकि चकि चकि उचकि उचकि देव जकि जकि बकि बकि परत बई[2] बई॥ दुहुन को रूप गुन दोऊ बरनत फिरैं घर न थिरात रीति नेह की नई नई। मोहि मोहि मोहन को मन भयो राधा मय राधा मन मोहि मोहि मोहन मई मई॥ १९॥

---

१ खुश।
२ अलग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ दोहा ॥

यहि बिधि मुग्धा बधुन हिय पूरन प्रेम उजास[1] ।
विषय प्यास तजि कैसिखैं प्रेम अलभ्य अभ्यास ॥

अथ मुग्धा को उदारण । कवित्त ।

गरबीली गुननि रँगीली ढीली ढीली भौंह ज्यौं ज्यौं नई जाति त्यौं नईए नेह तितई । बीधी बात बातनि समीधी[2] गात गातनि उबीधी परयंक पै निसंक अङ्क हितई ॥ अँसुवनि भीजी बीजी[3] छीजी औ पसीजी मीजी पीजी सौं पतीजी राग रंग नेह नितई । नाह नेह सोंहे के हँसोहे नाह सोहे करि केहू ना हँसोहे नाह सोंहे नेकु चितई ॥ २१ ॥

अथ पौढा सौं शिक्षा ओराहनो । सवैया ।

आसहू पास तिहारिये आस बिलासन बीसो बिसेख बसीठै । दास कै देव उदास क्यौं कीजत प्रेम सौं पूजत जो पद पीठै ॥ आठहूं सिद्धि उठाय धरी मुठि सीठी सुधा मधु मीठी अनीठै[4] । ही मैं हियो ठनि तो ठकुरायन ओठ सुधा न उबीठत ईठै[5] ॥२२

---

१ प्रकाश ।
२ समागई ।
३ बीजा पैदा हो गया (याने तन्मय)
४ अनिच्छित ।
५ इच्छा करता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ परकिया को प्रेम, अनूढ़ा। कवित्त।

जारीदार अँगिया उज्यारी उर कंठ माल सोहै सेत सारी रंग केसरि के छिर की। माँग मुकतारी लाल बेंदी लुरकारी दुति दन्त रतनारी सेा थिरन तज थिर की॥ लट लटकारी चटकारी दुति देव दृग दीपति अन्यारी दीठि न्यारी फिरै फरकी। रतन रवारी बीर बारी मोती नथवारी एक बारी उझकी किँवारी खेालि खिरकी॥ २३॥

सवैया।

देव जू दैचुकी कंचन सेा तन लैचुकी पंचन की गुरु गाढ़ति[1]। अंकुर ह्वै उरु के कुरुखेत मैं प्रेम की पौधि[2] अनौधि[3] सी बाढ़ति॥ बेाल तिया बतिया सुनि आँसुनि सींचति है छतिया छिति आढ़ति। नाम लिए सुधि मोचि सरीक[4] मैं सोचि घरीक मैं घुँघुट काढ़ति॥ २४॥

जब ते ज़दुराय दई दुहि गाय गए मुसकाय पठै खरकै[5]। तब ते तन ब्याकुल बाल बधू लखि लेाग लुगाई सबै धर कै॥ कहि देव न पावत बेदन[6] बैद रहै गुरु लेागन को डरकै। नहिँ जानत कान्ह कटाच्छ तिहारे कि केारैं करेजन मैं करकै॥ २५॥

---

१ गढ़ाई, गाढ़ापन, सख्ती।
२ बेलि। ३ जरुदी। ४ साथियेा में। ५ गाय बांधने गोड़ा।
६ पीर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अरि कै वह आजु अकेले गई खरिकै हरि के गुन रूप लुही[1] । उनहूँ अपनो पहिराय हरा मुख क्याय कै गायकै गाय दुही ॥ कबि देव कहौ किन कोई कछू तबते उनके अनुराग छुही[2] । सब ही सौं यहै कहै बाल बधू यह देखुरी माल गुपाल गुही ॥ २६ ॥

प्रेम की पीर न जानत बीर जु छैल कटाच्छ हूँ सेा छिन छ्वैहै। देव ततौ बसिहै हँसि है बलि बावरी ह्वै रस रूसि है रैहै ॥ आई तौ सीख सिखावन को सु सखी सुनि आपनीयो मति ख्वैहै। मोही सी मोही सी मोहि कहै फिरि नेक मैं मोही सी मोही सी ह्वैहै ॥ २७ ॥

जानदे मोंहि हहा जनि रोके तू होय न लाज अकाजिनि मेरी। पीतम देव बस्यो घट भीतर कौलौ रहौं घट घूँघट घेरी ॥ मैं कियो जोवन रूप निछावरि वा मुख ऊपर भाँवरि फेरी। हौं जिय जान की भेटी भुजान की होउँगी स्याम सुजान की चेरी ॥ २८ ॥

समाधान । सवैया ।

ह्वै दुलही उलही सुख बेलि ज्यौं फूलिकै दूलह को मुख हेरो। देव जू ज्याइ जिए हिय लाय सौं

---

१ लोट हुई ।
२ पूरी हुई ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाह सोँ नेह के न्याय निबेरो[1]। बातन ही बिष बीज से बोवत सौति परोसिन हू नित एरो। ए भुज दामरी सी गल मेलि कै साँवरे के सँग भाँवरि फेरो॥ २८॥

ब्याह बसीठी पठाइ नै आई बधू बृषभान के भौन प्रबीने। साधिकै राधिकै गोद लै बैठि बिनोद बढ़ावै प्रमोद अधीने॥ देखत प्यारी पयोज[2] के पातन घातन बातन मैं चित दीने। झाँकनी दै कर काकनी की सुनै काननि बैन अनाकनी[3] कीने॥ ३०॥

अथा ऊढ़ा। सवैया।

या जिय को दुखकासोँ कहौँ कहिबे हू को जीभ न डोलति डाही[4]। कौलौ छिपाइए छाती के घायन होत चबायन[5] की चित चाही॥ मेरियै गैल लग्यौ रहै लंगर[6] जो न लखौँ तौ मुरै छिन वाही। लाज निबाहन मोँहि परी यह बैरिनि लाज परै न निबाही॥३१॥

॥ कबित्त ॥

भीतरे भवन बसी निकसी न भूलि कहूँ तनिक सी लाजन बचन करयो रटसोँ। सखिन समाज गृह काजन गँवाए दिन रैनि सुख साजनिके साजन निकट सोँ॥ तिरछी चितौनि चित चुभी बरछी सी देव उरझी मरति वाकी कुटिल कुलट सोँ। टारी न

---

१ फैसला। २ कमल। ३ रुखापन, बहाना।
४ चुगुल खोरिनी। ५ जरी। ६ ढीठ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

टरत न छुटाय हारी छूटति न यामन मैं अरी गाँठि परी पीत पट सों ॥ ३२ ॥

॥ सवैया ॥

पीछे तिरीछे चितौनि सोई इत वै चितवैं री लला ललचोहैं । चौगुनो चाउ चबायन के चित चाह चढ़े हैं चबाउ मचो हैं ॥ जोबन आयो न पाप लग्यो कविदेव रहैं गुरुलोग रिसोहैं । जी मैं लजैए जु जैए कहूँ तित पैए कलंक चितैए जु सोंहैं ॥ ३३ ॥

अथ गोपना ॥ सवैया ॥

भीतरे भौन घनी फुलवारी मैं हौं न कहूँ यहि हाल हिली हौं । बेलिन बेलिन देव सुहेलिन सेवती बेलिन खेलि खिली हौं ॥ देखौ दुकूलन छाती के सूलन फूलन काज निकुंज पिली हौं । हेली चमेली कि केली के धोखे अकेली गुलाब गलीन गिलीहौं ॥३४

॥ कबित्त ॥

ननद हठाई उन सोवत उठाई सासु पेलिकै पठाई अधरातक अँध्यारेई । रैहौं ना बैठाई हौं ही जाऊँगी पठाई तुम्हैं उत वे हठीली हठ मोहीसों पसारेई ॥ पीतंबर खोलौमुखदेखौं हौं तिहारो नेक देखौ भोरु भयोजू बनैगो पगु धारेई । चोखी[1] जाति गैया कोई और न दुहैया देव देवर कन्हैया कहा सोवत सवारेई ॥

---

१ तेज गाय, उचकजाने वाली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ सवैया ॥

आइ खुभी[1] खिरकी मैं खरी खिनही खिन खीन लखाही। चाह भरी उचकैं चित चौंकि चितै चतुराई उनै चित चाही॥ बातनही बहरावति मोंहि बिमोहित गातन की परछाँही। ओड़ी किए उर ऐड़ती है भुज ऐंड़ि कहूँ उड़ि जैहौ तौ नाही॥३६॥

गौहरे[2] माँझ गई मिलि साँझ कछू छिति मैं कछू छैल के कोंछे। पौढि गई कसि अंग मैं अङ्ग उकासि कै कंचुकी नैं कुच ओछे॥ देव दोऊ करिकै सुख संग उलाहि तहीं उठि अङ्ग अंगोछे। साँस लई सुख चूमि बिदा भई त्यौं तियके अँसुवा पिय पोंछे॥ ३७॥

मारी बिथा की थकी सी मलीन भलीन दोऊ द्रग मीन निचोए। सेज बिछाय परी मुरझाय मनोरथ भाय मनै मन मोए॥ हौं न दई विधि हौं न दई रँग भौन मैं सेज सुजान सजोए। देव दुरे दुख दै दुखदानि सु आसरई निसिबासर खोए॥ ३८॥

रावरे रूप लला ललचानी पै जानी न काहू बिकानी ए ऐसी। है सतहीन सताई ततौ तुव संगति तै उतरी उत नैसी॥ न्याउ निबेरो न हो यह नेह को

---

१ गड़ी अर्थात (खड़ी) हुई।
२ गोंड़ा (गायों के बँधने का स्थान)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जानत हौ तुमहूँ हम जैसी । देखिबे ही को भरो सिसकी तिनसोँ रिसकी चरचा कहौ कैसी ॥ ३८ ॥

घेरी घरी घर मैँ न घरीक सरीकिन मैँ कहौ काहि गनैनी । हेलीसोँ ठाढ़ी अकेली कहै अरु, रोवै अँगूठनि भूमि खनैगी ॥ लाउ उन्हैँ गहि बाँह इहाँ लगि तौ लौ इतै तरु छाँह तनैगी । आजु तौ या बन वा मनमाली मिले बिन आली न मोँहि बनैगी ॥ ४० ॥

[1]दीरघ बंसु[2] लिये कर मैँ उर मैँ न कहूँ भरमै भटकी सी । धीर उपायन पाँउ धरै बरतै न परै लरकै लटकी सी ॥ साधति देह सनेह निराटक है मति केाऊ कहूँ अटकी सी । ऊँचे अकास चढ़ै उतरै सु करै दिन रैन कला नटकी सी ॥ ४१ ॥

॥ कवित्त ॥

प्रेम चरचा है अरचा[3] है कुल नेमन रचा है चित अौर अरचा है चित चारी को । छोड्यो परलोक नरलोक बरलोक कहा हरख न सोक ना अलोक नरनारी को । घाम सित मेह न बिचारै सुख देहहू को प्रीति ना सनेह उरु बन ना अँध्यारी को । भूलेहू न भोग बड़ी बिपति बियोग बिथा जोग हू ते कठिन सँयोग पर नारी को ॥ ४२ ॥

---

१ नट का सामान बांधा है ।

२ बांस, कुल ।

३ पूजा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेवर के बजत कलेवर कँपत देव देवरु जगै न लग सेवत [1]तनकते। ननद नछोछी[2] त्यौरी तोरति तिरीछी लखि बीछी कैसेा बिषु बगरावैगी भनकते॥ देखिए कठिन साथ गहैा जू न हठि हाथ कैसे कहौं जाहु नाथ आएहौ बनकते। बसना हमारे रंग रस[3] ना बनत चाँकि रसना[4] दसन दाबै रसना[5] झनकते॥४३॥

बारिध[6] बिरह बड़ी बारिध की बड़वागि बूड़े बड़े बड़े जहाँ पारे प्रेम पुलते। गरुआ दरब[7] देव योबन गरब गिरि परयो गुन टूटि छूटि बुधि नाउ डुलते॥ मेरे मन तेरी भूल मरीहौं हिए की सूल कीन्ही तिन तूल[8] तूल अति ही अतुलते। भावते ते भोड़ी करी मानिनि ते मोड़ी[9] करी कौड़ी करी हीरा ते कनौड़ी करी कुल ते॥ ४४॥

रीझे सुख पाऊँ औ न खीझे सुख पाऊँ मेरे रीझ खीझ एकै रँग राग्यौ सेाई रागि चुक्येा। जस अपजस कुबड़ाई औ बड़ाई गुन औगुन न जान्येा जीव

---

१ थेाड़ी देर के।
२ बेफायदा, छेाटी बात।
३ रसरंग।
४ जीभ।
५ करधनी।
६ समुद्र।
७ दर्प।
८ तुल्य, बराबर।
९ घुमा दिया, मोड़ दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाग्यो सोई जागि चुक्यो ॥ कौन काज गुरजन बरजै जु दुरजन कैसो कुलनेम प्रेम पाग्यो सोई पागि चुक्यो। लोगन लगायो सुतौ लाग्यौ अनलाग्यौ देव पूरोपर लाग्यौ मन लाग्यो सोई लागि चुक्यो ॥ ५५ ॥

कोई कहौ कुलटा कुलीन अकुलीन कहौ कोई कहौ रंकिनि कलंकिनि कुनारी हौं । कैसो परलोक नरलोक बर लोकन मैं लीन्हो मैं अलोक लोकलीकन ते न्यारी हौं ॥ तन जाहि मन जाहि देव गुरजन जाहि जीव क्यौं न जाहि टेक टरत न टारी हौं। बृंदाबनबारी बनबारी के मुकुट पर पीत पटवारी वहि मूरति पै वारी हौं ॥ ४६ ॥

[1]कैसी कुलबधू कुल कैसो कुलबधू कौन तूहै यह कौन पूँछै काहू कुलटाहिरी । कहा भयो तोहि कहा काहि तोंहि मोंहि कीधौं कीधौं औरि का है और कहा न तौ काहिरो ॥ जातिही से जाति कैसी जाति को है जाति एरी तोसों हौं रिसाति मेरी मोसों न रिसाहिरी । लाज गहु लाज गहु लाज गहिबे को रही पंथ हँसिहैं री हौं तौ पंचन ते बाहिरी ॥ ४७ ॥

बोरयो बंस बिरद[2] मैं बौरी भई बरजत मेरे बारबार बीर कोई पास पैठौ जनि । तुम बिगरी सयानी बिगरी अकेली हौं ही गोहन मैं छाँड़ौ मोसों भौंहन अमेठौ जनि ॥ कुलटा कलंकिनी हौं कायर

१ सखी से प्रश्नोत्तर । २ नेकनामी, कीर्ति ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमति क्रूर काहू के न काम की निकाम याते ऐंठौ जनि। देव तहाँ बैठियत जहाँ बुद्धि बढ़ै हौं तौ बैठी हौं बिकल कोई मोंहि मिलि बैठौ जनि ॥ ४८ ॥

जिन जान्यौ बेद ते तौ बाद कै बिदित हौं हि जिन जान्यो लोक तेऊ लीक पै लरि मरौ। जिन जान्यौ तपु तीनौं तापन सों तपि जिन पंचागिनि साध्यौ ते समाधिन परि मरौ ॥ जिन जान्यौ जोग तेऊ जोगी युग युग जियो जिन जान्यौ जोति तेऊ जोति लै जरि मरौ। हौं तौ देव नंद के कुमार तेरी चेरी भई मेरो उपहास क्यों न कोटिन करि मरौ ॥४९॥

चाखि कै चखक[1] चख भरि चोखी छबि छातो मैन छत छितिपरी पीर छतिया की हौं। गोकुल के छैल ढूँढ़ि ढूँढ़ि बन सैल हौं अकेली यहि गैल तो को ऐल[2] करि याकी हौं ॥ मंद मुसक्याय ले समाय जी मैं ज्याय लेरे प्याइले पियूष प्यासी अधर सुधा की हौं। मेरे सुखदाई देरे देवजू दिखाई नेकु एरे ब्रज भूप तेरे रूप रस छाकी हौं ॥ ५० ॥

याही भौन भीतर रहौ न हौंन जानौं मन कोन कोन ढूँढे कौन कौन भाँति लीने जानि। इतमैं निहारे सुने नित मैं तिहारे गुन रुचि मैं बिहारे पै

---

१ गज़क।

२ बहु नायत (अहिले से निकाला है)।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परे न प्यारे पहिचानि ॥ देव जू मुगहि गहे गहि की गोहैं[1] अब सोहैं क्योंन राखौ कोऊ भौहैं किं राखौ तानि । कैसी लाज कैसो काज कैसो धौं सखी समाज कैसो घरु कैसो बरु कैसो डरु कैसी कानि ॥५१॥

मोंहि तुम्हैं अंतरु गनै न गुरजन तुम मेरे हौ तुम्हारी पै तऊ न पघिलत हौ । पूरि रहे यातन मैं मन मैं ना आवत हौ पंच पूँछि देखे कहूँ काहू ना हिलत हौ ॥ ऊँचे चढ़ि रोई कोई देत न दिखाई देव गातनि की ओट बैठे बातन गिलत[2] हौ । ऐसे निर- मोही सदा मोही मैं बसत अरु मोंही ते निकरि फेरि मोंही न मिलत हौ ॥ ५२ ॥

दोहा ।

इमि परकीया बधू करि करि उपपति को ध्यान ।
तनमय लय आलय लहैं प्रेमालय बिज्ञान ॥ ५३ ॥

अथ मुग्धा परकीया ॥ कबित्त ॥

मुघर सरीकन मैं उघरै घरीकहूँ न घिरी घर बार परवार चरती रहैं । मनको न नेम छेम तन को न छेम हेम तन को न लोभ प्रेम ब्रत बरती रहैं ॥ पाय सबौ जोगही उपाय जोग जोगही के पाय परि पाय पूजा तीपै परती रहै । देव निसिजागी अनु-

---

१ रास्ते ।

२ कहते हो, निकालते हो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रागीहू बिरागी देह स्याम रस पागी बिरहागि बरती रहै ॥ ५४ ॥

इति श्री महाराज कुमार श्री कुँवर उद्योत सिंह आनंद हेतु देव दर्शित प्रेम चन्द्रिकायां स्वकीया परकीया प्रेम विधि साङ्गुराग वर्णन तृतीय प्रकाशः ॥ ३ ॥

अथ प्रेमानंद द्वितीयो भेदः ।

सौहार्द्र[1] रस गोपी बिरह वर्णन यथा ॥ सवैया ॥

को हमको तुमसे तपसी बिन जोग सिखावन आइ है ऊधो । पै अब एही कहौ उनको पिछली सुधि आवत है कबहू धो । एक भली भई भूप भए जिन्हैं भूलिगयो दधि, माखन, दूधो । कूबरी सी अति सूधी बधू बरु पायो भलो घनस्याम सो सूधो ॥१॥

रावरो रूप रह्यो भरि नैननि बैननि के रस सों श्रुति[2] सानो । गात मैं देखत गात तुम्हारेई बात तुम्हारिये बात बखानो ॥ ऊधो हहा हरि सों कहियो तुम हौन इहाँ यह हौं नहिं मानो । या तनते बिछुरे तो कहा मन ते अनते जु बसौ तब जानो ॥२॥

मोहन माई भए मथुरापति देव महामद सों मन मात्यौ । केार परे अब कूबरी के हरि याते कियो हमसों हित हात्यौ[3] ॥ गेाकुल गाँव के लेाग गरीब हैं

---

१ सुहृद, अपना ।

२ कान ।

३ खंडित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बासु बराबरि ही को यहाँ त्यौ । बैठि रहौ सपनेहूँ सुन्यो कहूँ राजन सौं परजान सौं नात्यौ ॥ ॥ ३ ॥

॥ कबित्त ॥

जौ न जीमैं प्रेम तब कीजै ब्रतनेम जब कंज मुख भूलै तब संजम बिशेखिये । ग्रास नहीं पीकी तब ग्रासन[1] ही बाँधियत सासन कै सासन[2] को मूँदि पति पेखिये ॥ नखते शिखा लौ सब स्याममई बाम भई बाहिर लौ भीतर न दूजो देव देखिए । जोग करि मिलैं जो बियोग होय बालम जु ह्याँ न हरि होयँ तब ध्यान धरि देखिये ॥ ३ ॥

जोगहि सिखैहैं ऊधौ जो गहि कै हाथ हम सो तौ मन हाथ ब्रजनाथ साथ कै चुकीं । देव पंच सायक[3] नचाय खेलि पंचन मैं पंच हू करनि पंचामृत सो ग्रचै चुकीं ॥ कुल बधू ह्वै कै हौब[4] कुलटा कहाईं ग्ररु गोकुल मैं कुल मैं कलंक सिर लै चुकीं । चित हेात हित न हमारे नित ग्रौर सेातौ वाहीं चित चोरहि चितौत चित दै चुकीं ॥ ५ ॥

देव प्रीति पंथा चीरि चीर गरे कंथा[5] डारि भसम चढ़ाय खान पानहू न छूजिए । दूरि दुख दुंद

---

१ योग के ८४ ग्रासन ।

२ स्वासा ।

३ काम ।

४ मैं, ग्रब ।

५ गूदरी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राखि मुंदरा[१] पहिरिकान ध्यान सुन्दरानन गुरू के पग पूजिए ॥ शृंगी की टकी[२] लगाय भृंगीकीट[३] कै मनु बिरागिनि हूँ बपु बिरहागिनि मैं भूजिए। केली तजि राधिका अकेली होय जोगिनि तौ अलख जगाय हेली[४] चेली चलि हूजिए ॥ ६ ॥

अंजन सौं रंजित निरंजनहि[५] जानैं कहा फीको लगै फूल रस चाखे ही जुबौड़ी को। तूरज[६] बजाय सूर सूरज को बेधिजाय ताहि कहा सबद सुनावतहौ डौड़ी को ॥ ऊधौ पूरे पारख हौ परखे बनाय देव पारही पै बेरौ पैरवैया धार औड़ी[७] को। मनु मनिका[८] दै हरि हीरा गाँठि बाँध्यो हम तिन्हैं तुम बनिज बतावत हौ कौड़ी को ॥ ७ ॥

कुबिजा कितेब[९] दुबिजा[१०] के रहे आपु देव अंस अवतारी अवतारी जिन गनिका। आरति न राखत

---

१ मुद्रा, (जो फकीर लोग काम में पहिनते हैं)
२ टक, धुनि।
३ लखेरी।
४ सखी हे-अली
५ ईश्वर।
६ तुरही।
७ तिरछी, उलटी।
८ गुरिया, जवाहिरात का टुकड़ा।
९ शासन जबर दस्ती।
१० कितै अब।
११ दबि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निवारत नरक ही ते तारत तिलोक चरनोदक की कनिका ॥ उनके गुनानबाद तुमसोँ सुने हैँ ऊधौ गोपिन को सूधो मत प्रेम की जवनिका[1] । कुंजन मैँ टेरिहैँ जू स्याम को सुमिरि नीके हाथ लै न फेरिहैँ सुमिरनी के मनिका ॥ ८ ॥

प्रेम मतवारी छबि छाते की खुमारी छिति सुरछित डारी नारी गारी मैन[2] रहिये । रोय रोय हँसि हँसि दौरि दौरि पौरि द्वार नंदक्वार नंदक्वार कहिकै उमहिये ॥ पापरो[3] सनेह[4] तरे ता मिलि अचारु[5] भलो देव योग अम्मृत न भोग सुख लहिये । गुर[6] की मिठाई हमैँ भाई सेा न होनी ऊधौ कै तौ रहौ मौन कै सलोनी बात कहिये ॥ ९ ॥

सखिन बिसारि लाज, काज, डरु, डारि मिली मोँहि मिल्यौ लाल डहकाए डहकत नाँहि । पात ऐसी पातरी बिचारी चंग[7] लहकत पाहन पवन लहकाए लहकत नाँहि ॥ हिलि मिलि फूलन फुलेल बासु फैली देव तेल की तेलाई महकाए महकत नाँहि । जौही लौ न जानी अनजाने रही तौही लौ हमारो मन क्यौँहू बहकाए बहकत नाँहि ॥ १० ॥

---

१ नाटक का पर्दा ।
२ काम ।
३ पापर दूसरे पक्ष में पांय परो । ४ घी, तैल दूसरे पक्ष सनेह ।
५ अचार (खाने का) । ६ गुड़ दूसरे पक्ष में गुरू ।
७ कनकौव्वा, पतंग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काली नाग नाथ्यौ संखचूर[1] चूर कियो अघ अजगर मारयौ पूतना की बात साचली। भारी विष-धर भोगी[2] ह्वै जीभन बोलै डोलै मीचु ह्वै समा को जादमा[3]की आँच आचली ॥ फूँकि फूँकि बाँसी वा बिसासी हम डासी फाँसी प्रेम फँसी भारन पहारन ते नाचली। कूबरी ह्वै कारो कान्ह द्वारिका निकारि गयो देव ब्रज क्वाँरिका निकारि गयो काचली[4] ॥११॥

मंद महा मोहक मधुर सुर सुनियत धुनियत सीस बँधी बाँसी हैरी बाँसी है। गोकुल को कुल बधू को कल सँम्हारै नहीं दोकुल निहारै लाज नासी है री नासी है ॥ काहि धौं सिखावत सिखै धौं काहि सुधि होय सुधि बुधि कारे कान्ह डासी है री डासी है। देव ब्रजबासी वा बिसासी की चितौनि वह गाँसी है री हाँसी वह फाँसी है री फाँसी है ॥ १२ ॥

ओठन ते उठतीं दवागिनि की जकै तिन्हैं बंसीधर बंसी मुख फूँकै फेरि फेरि कै। बासागिनि एरी बंसु बंसनि[5] को बोरयो वह कौन बीर गई ब्रज बासी टेरि टेरि कै ॥ बावरी बिचारति न बैरिनि

१ संख चूर नाम दैत्य का।
२ सर्प।
३ यादव।
४ केंचुल।
५ बाँसों का।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उबारी जेहि अधर सुधाकी बारी सींची हेरि हेरि कै
देव गति देखति न देखति खसम हम कीन्हे हैं भखर
घरही मैं घेरि घेरि कै ॥ १३ ॥

राखी गहि गातनिते गातनि न रही अधरातन
निहारैं अधरातन उसासुरी । पिकसी पुकारी एक
निकसी बननि देव बिकसी कुमोदिनि सी बदन बिका-
सुरी ॥ मोही अवलाजन मरत अब लाज औ इलाज ना
लगत बंधु साजन[1] उदासु री । जागि जपि जी है
बिरहागि उपजी है अब जीहै कौन बैरिनि बजी है
बन बांसुरी ॥ १४ ॥

पति कह्यो चाहैं जीति तिनकी बिपति सुनौ
क्वारी पै नगिन देखी ज्वारी[2] पैखरी करी ।
[3] ज्वारी लौ जनमु हारी कढ़ी ब्रज ग्वारी एकै कढ़ि
कै चढ़ाई कंध ब्याही ते घरी करी ॥ बनसी बिचारी
चारि बेध कै अधर धरी हरी ते सुखाई सुधि बेदन
हरी करी । हमैं जोगु देबे जोग कुबरी हुती पै ऊँचे
हायुरी उचाय माथुरीन को छरी [4] करी ॥१५॥

---

१ पति या स्वजन ।

२ ज्वानी ।

३ जुवारी ।

४ कुबरी ने धोखा किया, साथ साथ रक्खा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाँड़्यौ सुख भोग मान खाँड़्यौ गुरुलोगनि को माड़्यौ हम योग या बियोग के भगल[1] मैं। चेलीकै सहेली बन डोलति अकेली गहि मेली भुज बेली और सेली है न गल मैं॥ देव पहिले ही पाइ फारि चितु फार्यौ हितु फारखती चाहैं कान्ह फारिबो अगल मैं। नाथ सों सँदेस सूधो आदेस[2] कहैगो ऊधौ अलख जगावैं दाबैं कूबरी बगल मैं॥ १६॥

सवैया।

पूतना के पय पान करो तन पूत नाते बिसवास बगारन। देव कहा कहौं मातु पिता हित बंधुन सों हितु नीके निबाहत॥ कारे हौ कान्ह निकारे हौ कीलि रहे गुन लीलि पै औगुन थाहत। पन्नग[3] की मनि कीन्हे तुम्हैं तुम पन्नग की किचुली कियो चाहत॥ १७॥

॥ कवित्त ॥

कंसरिपु अंस अवतारी जदुबंस कोई कान्ह सो परमहंस कहै तौ कहा सरो। हमतौ निहारे ते निहारे ब्रजबासिन मैं देव मुनि जाको पचिहारे निसि बासरो॥ भ्रम न हमारे जप संजम न करैं कछू बहि गयो जोग जसुना जल बिलासरो। गोकुल गोसाइनि परम सुख

१ गेरुआ वस्त्र।
२ फकीरों की आवाज़।
३ सर्प।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दाइनि श्री राधा ठकुराइनि के पायनि को आसरो॥१७॥

मीठी मीठी बातनि बसीठी कुबिजा सों भेज ईठी[1] दुबिजा सो जोग चीठी दै पठायो है। तैसिये बिसासी सखा ऊधो दुख हाँसी देव कपट की फाँसी लिए साहस बढ़ायो है। गोपनकीडावरी[2] हमहिं जानि बावरी करी है आइ घावरी जु अलख जगायो है। धूँधौ[3] बिष बातन न रूँधौ रिस गातन न ऊधौ उठि जाउ ब्रज सूधो करि पायो है॥ १८॥

घरिक मैं घर ह्वै कै खरिक मैं खरी ह्वै कै परी है पुकार द्वार द्वार गोहरन के। लाड़िली कुँवरि की भुलानी अकुलानी जाको तौलियत मानिक के तुलासों हिरन[4] के॥ ऊधौ अबहूँ धौ ब्रज सूधौ जनि जानौ देव सिंगीनाद बाद सिंग बाधै को हरिन के। छिपि छिपि आवत न छावत छपावत वे छाती छहरावत बिछोह छोहरिन के॥ २०॥

बाहिर ही बैठौ मति पैठौ ब्रज कुंज ऊधौ बातनि बिरूधौ जनि सूधो ब्रज लोग पर। देव कौन देखै देखे गोपी वे दुसह दसा बिरह बिलोपी रोपी

---

१ इष्ट, चाह।
२ स्त्री।
३ ठगौ।
४ सोना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेम के प्रयोग पर ॥ कैसे कहि आवत कठिन हठ बात सठ बात न सुहात कुबिजा के सुख भोगपर। संजोग बिहारे ते अजोग ही निहारे जोग कोटिक तिहारे हम वारे या बियोग पर ॥ २१ ॥

इति गोपिकान को श्रीकृष्ण सानुराग सौहार्द्र प्रेम ।

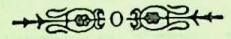

अथ भक्ति भाव प्रेम । दोहा ।

एक भक्ति गोपीन की प्रेम भाव संसार ।
दूजी भक्ति बिरक्त जन दास्यत[1] भाव बिचार ॥२२॥

अथ गोपिका शृंगारक प्रेम भक्ति । कबित्त ।

फूलत सुमूल जमुनाके कूल मोहैं सीरी नीरी तरु छाहैं वे उछाहैं भरि डारैं गहि। मंजुरस मंजरी सरस पुंज कुंजरत गुंजरत भौंर हिय लुंजकरि डारैं गहि ॥ देव कहै तहाँ बंसीवार वे किवार गहे एक बार हेरि हरि हियो हरि डारैं गहि। ठाढ़ी रहै लाज काज डारैं गलबाँह डारैं सोने कैसी डारैं डरु डारैं तरु डारैं गहि ॥ २३ ॥

फलि फलि फूलि फूलि फैलि फैलि झुकि झुकि झपकि झपकि आईं कुंजै चहुँ कोदते। हिलि मिलि हेलिन कै केलिन करन गई बेलिन बिलोकि बधू ब्रज की बिनोदते ॥ नंदजूकी पौरिपर ठाढ़े हैं रसिक देव मोहनजू मोहि लीनी मोहनी वे मोदते।

१ दासभाव ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गाथन[1] सुनत भूली साथन के फूल गिरे हाथन के हाथन ते गोदन के गोदते ॥ २४ ॥

उज्जल जुन्हाई मैं कन्हाई जमुना पुलिन[2] बाँसुरी बजाई रस रीझ ही रिलि गईं । ज्यौं की त्यौं तुरत उठि धाईं वा सुरति ही सौं सुरति न आस प्रेम पास मैं पिलि गईं ॥ तात मात पतिन गति न पाई गोपिन की मदन मदंध लाजबंधन ने ढिलिगईं । मंदिरनि रोकी गिरि कंदर बिलोकी ध्यान सुन्दरा लगाय सुन्दरानन मिलिगईं ॥ २५ ॥

मुरली सुनत बाम कामजुर लीन भईं धाई धुरलीक सुनि बिधी बिधुरनि[3] सौं । पावस नदीसी यह पावस नदीसी परैं उमड़ी असंगत तरंगित उरनि सौं ॥ लाज काज सुख साज बंधन समाज नाँघि निकसी निसंक सकुचैं नहीं गुरनि सौं । मीन ज्यौं अधीनी गुन[4] कीनी खैंचिलीनी देव बंसीवार बंसी डार बंसी के सुरनि सौं ॥२६॥

फूँकि फूँकि मंत्र मुरली के मुख जंत्र कीन्हो प्रेम परतंत्र लोक लीकते डुलाई है । तजे पति

---

१ किस्सा,

२ नदी का किनारा ।

३ चाँदनीरात, रनि=रैनि ।

४ रसी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मात तात गात न सँभारे कुलबधू अधरात बन भूमिन भुलाई है ॥ नाथ्यो जो फनिंद इन्द्रजालिक गोपाल गुन गाड़रू[1] सिँगार रूपकला अकुलाई है। लीलि लीलि लाज दृग मीलि मीलि काढ़ी कान्ह कीलि कीलि ब्यालनीसी ग्वालिनी बुलाई है ॥२७॥

अथ गोपीन को महात्म। कवित्त।

बासुदेव जानी ब्यासदेव जे बखानी देवजानी के जनक[2] देवजानी के निबेद की। वेई रूप अोपी रसरोपी ब्रजगोपी भईँ जाहिँ क्योँ बिलोपी लोप करी अ ति बेद की ॥ गाई जे बिचारि मुखचारि मुख चारि देव चारि मुख बंसी के बजाई चारि भेद की। आपु ही मिलापु करि चाहै चारि भेद करि चाहै चारि भेद करि चारु चारि बेद की ॥ २८ ॥

श्री कृष्ण सोँ प्रेम भक्ति। कवित्त।

घोर तरु नीजन[3] बिपनि तरुनीजन ह्वै निकसीँ निसंक निसि अातर अतंक मैँ। गनैँ न कलंक मृदु लंकनि मयंक मुखी पंकज पगन धाईँ भागि निसि पंक मैँ ॥ भूषननि भूलि पैन्हे उलटे दुकूल देव खुले भुजमूल प्रतिकूल बिधि बंक मैँ। चूल्हे चढ़े

---

१ वर्षका पकड़ने वाला।
२ शुक्राचार्य।
३ निर्जन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाँड़े उफनात दूधभाँड़े उन सुत छाँड़े अंक फी
छाँड़े परजंक मैं ॥२८॥

मुरली सुरनि प्रेम अंकुर उरनि बेधि छिपी
छपा मैं लीन्ही बिपिन बुलाय कै । रूखे बचनहि
दुख दूखे मुख सूखे पुनि देखिबे को भूखे दृग
मुकुलाय कै ॥ छोभन ही छीजी रसलोभन पसीजी
अँसुवान उर भीजी मीजी मदन मुलाय कै । एकै
नियरे कै हरि हेरे टेक टेके सौन एकै सबिबेकै उठि
बोलीं अकुलाय कै ॥ ३०॥

जानति न बाद[1] बिधि बेद मरजाद तुम प्रेम
के प्रमाद हू प्रमानन पनति हौ । प्रेम को महातम
महातम न मानै परमातम प्रधानै यहि आतम[2] की
गति हौ ॥ देव अनुकूल आय सरन चरन मूल हरिये
हिये के सूल सुन्दर सुमति हौ । ऊपर तिहारे पति
रति हम हारे न निहारे तनु प्रानन हमारे प्रान
पति हौ ॥ ३१ ॥

दृ भुज पकरि जदुभूभुज[3] सौं जोरे मुख पीयुष निचोरै
चितचोरै औससी करै । मिलिबे की घातन अघात
नख घातन हू गातनि मैं गात मृदु बातनि बसी करै ॥

---

१ झगड़ा, बिवाद ।
२ आत्मा ।
३ कृष्ण (यदुवंश के राजा) ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[1]गोहैं गहिबे की अरसोहैं औ रसोहैं अरसोहैं बरसोंहैं रस भौंहे बिलसी करै। आरँभ निरास परि-रंभन[2] बिलास निरदंभ[3] रुचि हासनि हुलासनि हँसी करै ॥३२॥

एकै बार उमग्यौ सुहाग अनुराग भरि पूरि रह्यो भाग अनुराग रह्यो रोकि कै। कंकन किंकिनि रव नू-पुर अनूप सुर मुरली मधुर रस भीने रव झोकिकै॥ बीच बीच बाम बीच बीच स्याम सुंदर ज्यौं बीजु-दाम स्यामघन देव घरि [4]घोकिकै। [5]कुंडलीस [6]चंडीस [7]कमंडली सहित मुनि मंडली बिमोही रासमंडली बिलोकि कै॥ ३३॥

गोकुल नरिंद इन्द्रजाल सो जुटाय ब्रजबालन भुलाय कै छुटाय घने [8]भाम सों। बिज्जुल से बास अंग उज्जल अकार करि बिबिधि बिलास रस हास अभिराम सों॥ जान्यो नहिं जात पहिचान्यो ना बिलात रास मंडल ते स्याम [9]भासमंडल ते घामसों। बाँहन के जोट काय कंचन के कोट गयो ओट कै दमोदर [10]दुरोदर के दाम सों॥ ३४

---

१ रास्ते, २ आलिंगन, ३ दंभरहित, विना बनावट, ४ रटकर, घोखकर ५ शेष ६ महादेव ७ ब्रह्मा ८ कुटुंब ९ प्रकाश मंडल (सूर्य) १० जुवारी,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पायन मैं पाय जंघ जंघनि भुजान भुज हाथनि मैं हाथ नए दृग दृग केार की । अंग अंग लचनि नचनि संग संग रास रंग की मचनि उझकनि झकझेार की ॥ ज्यौं की त्यौं तनीये ब्रजबनिता बनीये रहीं गनीये अभूत[1] गति देव चितचेार की। चौंकि चौंकि चकित चितौती चहुँ ओरी भईं साँझ की सी चकई चकेारी मनौ भेार की ॥ ३५ ॥

बंधन ते छूटीं प्रेम बंधन बधूटी चित चित हित लूटी सी निखूटी सी झगरि कै । तन मन जूटी ते बिकट बट बन टूटी आनि खाय बिषबूटी अंगनि अगरि कै ॥ डोलै डगमगी मगमगी[2] सी मनेारथ कै उमगी बिरह डगरनि मैं डगरि कै । दीपति बिलासै चलि रहीं ते गेापालै बिन सूर उर सालै फूल मालै सी बगरि कै ॥ ३६ ॥

कालिंदी के कूलनि तरुनि तरु मूलनि निहारि हरि अंग के दुकूलनि उघेरतीं । मल्ली मलैं[3] मालती नेवारी जाती[4] जूथी देव अंबकुल बकुल[5] कदम्बन मैं हेरतीं ॥ ताल दैदै तालनि तमालनि[6] मिलत फिरैं बेालि बेालि बाल भुज भेंटि भट भेरतीं। पुलकि पुलकि

---

१ जैसी कभी न हुई हेा २ मांगनेवाली
३ मल्लिका ४ चमेली
५ मौलसिरी, केसर ६ कृष्ण सर्प (काले साँप का दरख्त)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[1]पुलननि मैं पुलोमजा[2]सी बिलपि बिलोकि कान्ह कान्ह करि टेरतीं ॥ ३७ ॥

पूतना को बैरी यह पूत ना जसोमति को छोटे ही छपाचर[3]की छाती चढ़ो छोहरो । लौटि डारयौ सकट पछारयौ बच्छ फारयौ बक कालिय निकारयौ प्रान अघासुर को हरो ॥ मुख मैं दिखायो जगु विधि को भुलायो मनु साल्यो मघवा को उर पाल्यो ब्रज गोहरो । आँखिन को तारो ह्वै हमारो भयो आँखि ओट देव दुख हाँसी को देखावै अब सोहरो ॥ ३८ ॥

कालिंदी निकट घाट बाट ह्वै बिकट बन कुंजन बिलोकि भईं बिरह बिरागिनी । उज्जल जुन्हाई अति कोमल बिमल भूमैं बेली ज्यौं नवल घूमैं भूमैं बड़ भागिनी ॥ गुपित प्रिया के पद पीतम पदनि सेवा पेषि प्रतिबिंबन पुकारी अनुरागिनी । बाँह गहि लैगईं विपिनि धाम देखौ कोई स्यामाहे चुरायो बाम सुंदर सोहागिनी ॥ ३९ ॥

जाँचक जवनि ताकि अंकित अवनि ब्रजबनिता सबनि ताकि रही दुख दीन ह्वै । कुंजगृह गूढ़ उत सुंदर बिरुढ़[4] सुख मोह मद मूढ़ बोलि उठी परबीन ह्वै ॥ चल्यो ना परत मोपै प्यारे दीनबंधु लीजै कं-

---

१ किनारा
२ शची (पुलोमासे उत्पन्न)
३ निशाचर ४ विशेष दृढ़ ५ विशेष दृढ़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनि चढ़ाय त्यौं चढ़ाई पनपीन ह्वै । आदि अं
रहित भयो है अंतरहित[1] गिरीसी गोपी [2]आधि अ
अधिक अधीर ह्वै ॥ ४० ॥

न्यारी भई गोपी सेा गोपाल की गुपित प्यारी
पुहमी उज्यारी मैं पदुम पद न्यास ही । देव देवता
सी देखि पूछैं हरि देख्यो कहू देख्यो जेा न सनक न
नारद न ब्यास ही ॥ पच्छिम पयोधि के पुलिन[3]आयो
इंदु एऊ कालिंदी पुलिन आईं आनन उज्यास ही ।
लीला लगीं करन जु पूतनादि कीन्ही स्याम कोई
बनीं कान्ह कोई गोपी अनध्यास[4] ही ॥ ४१ ॥

फेरि फेरि टेरि टेरि हेरि हेरि हारीं कहूँ मिल्यो
न बिहारी बिहरैया ब्रज बन को । जमुना पुलिन खुलि
खुलिन नयन गुन गन गाय रोय रोय राच्यो मोह मन
को । बंसी कर लीने बंसीबट के निकट देव प्रगट्यौ हँसत
अनुरंजन[5] जेा जन को । दौरि दौरि हँसि हँसि रूसि
रूसि लियेा हरि हियेा भरि भेंट्यौ सब मेट्यौ ताप
तन को ॥ ४२ ॥

इति गोपिन को सानुराग सौहार्द्र ।

---

१ गुप्त, अंतर्धान
२ तकलीफ, व्यथा
३ किनारे
४ विस्मृत
५ खुश करने वाला,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ मौहार्द्र भर्तिया । सत्रैया ।

प्रानन के पति देह की दीपति सीपति[1] क्यौं न तुम्हैं चित चाहौ । अंतरजामी मनोरथगामी तिलोक के स्वामी कहा गुन गाहौ ॥ देव दुरे जुपै देखत होहु न दूरि जो होहु तौ [2]दंभु निबाहौ । ऊखिल[3] होहु तौ आदर हौं करौं दूसरे होहु तौ दौरि सराहौ ॥ ४३ ॥

॥ कवित्त ॥

[4]मोही मैं छिपे हौ मोंहि छ्वावत न छाँह तापै छाँह भए डोलत इते पै मोंहि छरिहौ । मच्छ सुनि कच्छप बराह नरसिंह सुनि बावन परसुराम रावन के अरि हौ ॥ देव बलदेव देव दानव न पावैं हरि को हौ जू कहौ जू जो हिये की पीर हरि हौ । कहत पुकारे प्रभु करुना निधान कान्ह कान मूँदि बौध ह्वै कलंकी काहि करि हौ ॥ ४४ ॥

धाए फिरौ ब्रज मैं बधाए नित नन्दजू के गोपिन सधाए नचौ गोपन की भीर मैं । देव मति मूढ़ तुम्हैं ढूढ़ैं कहाँ पावैं चढ़े पारथ के रथ पैठे जमुना के नीर मैं ॥ आँकुस ह्वै दौरि हरनाकुस को

---

१ श्रीपति, विष्णु

२ ठकोसला

३ गैर विराने

४ दशावतार का वरणन है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फारयौ उर साथी न पुकारयौ हते हाथी हिय तीर मैं बिदुर की भाजी बेर भीलिनी के खाय बिप्र चाव चबाय दुरे द्रोपदी के चीर मैं ॥ ४५ ॥

अथ गोपिन को मौहार्द्र भक्ति उपालंभ ॥ कबित्त ॥

कंपत हियेा न हियो कंपत हमारेा क्यों हँसै तुम्हैं अनेाखी नेकु सीत मैं ससन देह । अंबर हरैया हरि अंबर[1] उज्यारेा होत हेरिकै हँसौ न कोई हँसौ तौ हँसन देह ॥ देव दुति देखिबे को लोयन[2] मैं लागी लखौ लोयन मैं लाज लागी लोयन लसन देह । हमरे बसन देहु देखन हमारे कान्ह अबहूँ बसन देहु ब्रज मैं बसन[3] देह ॥ ४६ ॥

ईठि रस बातनि बसीठ बस करिवे को ढीठ मधुकर चख चखक चाखन चोर । ऊबट[4] लुटाऊ बट पारन बठाऊ[5] पटु लंपट लुटाऊ नट कपट भाखन चोर ॥ गैयन गोहन प्रेम गुन के पोहन देव मोहन अनूप रूप रुचि के राखन चोर । दूध चोर दधिचोर अंबर अवधिचोर बित हितचोर चितचोर रे माखन चोर ॥ ४७ ॥

---

१ वस्त्र २ आकाश
३ आंख
४ बसने दो
५ खराब रास्ता
६ हिस्सा लेनेवाले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ रुक्मिनी जी को सानुराग सौहार्द्र भक्ति ॥ कबित्त ॥

दारुन दुभीख[1] सो भभीख[2] दीजै भीषमहिं राखै मुख आभा अभिमान की अभिष्या[3] हौं। उत्तम गुन निधान निर्गुन गुन निधान गुननि तिहारे बँधी औगुन अलिष्या हौं ॥ चेदिपति[4] खेदि पति राख्यौ ब्याह बेदिक हौं अंतरु[5] निवारौ देव दासिनु की सिष्या हौं। अजित अजानभुज भुजगभोजन[6] जान[7] दूभुज[8] सो भारो जदु भूभुज की भिष्या हौं ॥ ४८ ॥

द्वारिका सँदेस नृप क्वारिका पठायो द्वारिकापति बिपत्ति हरि सुयसु भुजा परयो। कौन सुनै आरत पुकार प्रभु तुम्हैं बिन करुना निधान देव जानि जग पाँ परयो ॥ दीन के दयाल प्रतिपाल तुम्हैं संकि सिसुपाल दल जोरि पुर पौरि चहुँधा परयो। फेरि फेरि हेरि मगु बात हित वंछी पूँछी पँछी हू मृगंछी जैसे पंछी पिँजरा परयो ॥ ४८ ॥

अथ द्रौपदी को सौहार्द्र भक्ति कार्पण्य ॥ सवैया ॥

जो कछु अलोक बेद लोक मैं निषिद्ध ओक ओकनि प्रसिद्ध बात मोही पंचनारी की। एते पर

---

१ दुर्भिक्ष
२ भविष्य
३ अभिलाषिनी
४ चंदेरी के पति अर्थात् शिशुपाल
५ हमारा अपना अंतर मिटा दो
६ गरुड़ ७ सवारी ८ साधारण मनुष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जारी राज द्रुपद की क्वारी ताहि क्वारी ते कलू हारी ज्वारी बनचारी की ॥ न्याय निरधारी गि धारी हौं उघारी धाय कीरति पसारी सुरसरि की सारी की । ए सीपति देव मोंहि ऐसी पति दीन्ही आजु मेरी सी न दीपति नदीपतिकुमारी[1] की ॥५०॥

अथ राज सुतानि को सानुराग भक्ति कार्पण्य ॥ कवित्त ॥

सोरह सहस सत ऊपर ए भूपसुता भूपर के भूप जीति आनी यक बोरिए । भू सुत बिपच्छ ब्याध पच्छी लौ बिपच्छी करी हरी हरि नदी हरि दासीए तिहारिए ॥ महाराज राज ब्रजराज यदुराज देव दीन-जनबंधु देव बिरद सँभारिए । बिपतिहरन तुम बिपति परी हौं हमैं बिपति दाहन पति बिपति निवारिए ॥ ५१ ॥

अथ अहिल्या की भक्ति कार्पण्य ॥ कवित्त ॥

ईस चढ़ावत सीस सदा घनसार ज्यौं आँखिन आँजत हौं अज । इन्दिरा के उर की अरु साधुन के मुख की नितही सुखकी सज ॥ मोषधी,[2] औषधि ब्याधिन को अरु औगुन कौन गनै गनिका गज । देव दयानिधि राम तिहारे हौं बंदत हौं पद पंकज की रज ॥ ५२ ॥

---

१ सिंधुजा, लक्ष्मी
२ मोक्ष की बुद्धि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरा एकहि सहस सम, सहसहि सद्धत एक ।
सहसनि हू सद्धै नहीं, सूरा एक अनेक ॥ ३ ॥
धनि आसंगनि धीर धनि, धनि २ चित्त सुधर्म्म ।
सांई कज्जें रचि समर, मारे असुर अधर्म्म ॥ ४ ॥
पचीसोहि पवंग सों, सहस पचीसनि मध्य ।
असुरायन उद्धंस तें, निकरे सेन सुसद्धि ॥ ५ ॥

छन्द-हनुफाल ।

तुट्टे बज्यो षहतार, कलि उदयभान कुमार ।
मह यवन सेन सुमध्य, यें धार मंडिय युद्ध ॥ ६ ॥
करबाल कुंत रु कत्ति, आदेया देवि उमत्ति ।
रिपु उदरि परिय सुरेारि, दल मचिय देारादेारि ॥७॥
मुख वचन चूक रे चूक, भट बिकट अग्गि भभूक ।
बिफुरे सुहिंदू बीर, मारंत बड़ बड़ मीर ॥ ८ ॥
हय २ सुकेइ जकंत, के सिलह जीन कुकंत ।
उभके सुसोवत केक, कहि तेक तेक रे तेक ॥ ९ ॥
भुंजते के भय भीत, उठि भगे बारि अपीत ।
सतरंज पासा सारि, झरपे सुखेलहि झारि ॥ १० ॥
कितनेक करत निमाज, धावंत ध्यानहि त्याज ।
हलहलिय दल परिहाक, छबि उतरि उत्सक छाक ११॥
सुंदरिय नभ घन घोम, गडडंत गज्जत गोम ।
भरहरिय कायर भग्गि, लकलकिय उर उर लग्गि ॥१२॥
रिपु रुंड मुंड रुडंत, मुख मार मार बकंत ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उड़ि श्रोन छिंछि श्रपार, बहि चले रत्त प्रनार ॥१३॥
भल हलत सिलह सभान, झट उझट बज्जि श्रमान ।
किलकार बीर कुकंत, हलकार केक हकंत ॥१४॥
कटि शीश नचत कमंध, ज्यों फिरत नर जाचंध ।
कटकंत हड्ड कटक्क, षनकंत षग्गि झटक्क ॥ १५ ॥
भभकंत इभ्भ भसुंड, बहिरत्त दंड बिहंड ।
हय नरनि परि संहार, हरषंत हर रचिहार ॥ १६ ॥
गिद्धिनिय श्ररु गोमाय, पल लेइ केइ पुलाय ।
तुटि टोप तुबक रु त्रान, कोदंड कुंत क्रपान ॥ १७
चोसट्ठि पीवत चोल, भरि भरि सुपत्र श्रलोल ।
बिहसंत बीर बेताल, कलिकाल झाल कराल ॥ १८ ॥
श्ररि मित्र श्रप्पन श्रान, तन परत सुद्धि सयान ।
हहरंत के मुख हाय, लगि जानि ग्रीषम लाय ॥ १९ ॥
तरफरत के श्रधतंग, श्रसि छिन्न भिन्न सुश्रंग ।
संहरिय श्रासुर सेन, जनु परिय सिंह सुएन ॥ २० ॥
श्रटक्यो न किहि मुष श्राइ, बर बीर धार बलाइ ।
चहुवांन रिन चित चंड, श्रति सबल सकज श्रखंड २१
निकरे सु श्ररिन निहत्ति, श्रषियात श्रचल सुकित्ति ।
राणा महाराजेश, सनमान कीन विशेश ॥ २२ ॥

कवित्त ।

सनमानिय सुबिशेष दिए बर ग्राम दोय दस ।
सोवन साकति श्रश्व सरस शिरपाव जरक्कस ॥ कंक
बंक करवाल कनक नग जरित कटारिय । बीरा प्रवर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपूर बहुत चित हित बिस्तारिय ॥ रिन रुषमांगद रावत्त को उदयभान अत्थो कुंवर। चहुवान बीर रस चौगुने राण कहत राजेश वर ॥ २३ ॥

इति श्रीमन्मान कबि बिरचिते श्री राजबिलास शास्त्रे उदयपुर स्थान के कुंवर उदय-भानकृत द्वितीय युद्ध बर्णनं नाम द्वादशमो बिलासः ॥१२॥

॥ दोहा ॥

अंगज साहि औरंग को, अकबर साहि अमान।
धस्यो पहारनि मध्य धर, रिन जित्तन महारान ॥१॥
बाजी सह बत्तीस सों, नर वे केइ नवाब।
नारि गोर आराब गुर, सजि दल चढ्यो सिताब ॥२॥
हरवल अल्लि हुसेन हुअ, पक्को पंच हजार।
कलह कूर कंकाल कर, रढ छंडे नन रारि ॥३॥
झंड रुप्पि झारोल यह, द्वादश कोश प्रमान।
नेनबारा गिरिवर प्रगट, सुभट थट्ट महाराण ॥४॥
निसु निबत्त हिन्दू नृपति, सामंतनि सनमान।
पठये आसुरि सेन पर, जंगहि भीषम जान ॥५॥

कवित्त।

तिनहि बर तुरंत बीर बिफुरंत षिवंतह। तरित जानि तटकंत बिमल कलिकंत बधंतह ॥ महा सिंघ मुंछाल राज रक्खन बड़ रावत। रतन सीह गुरु रोस चढे रावत चोंडावत ॥ चहुवांन राव फुनि सजि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढ़े केसरि सिंह सुकंक बर ॥ त्रयबेनि सलित उठे सेन तिहुं उलटि जंग असुरान पर ॥ ६ ॥

बीर बैर बिडुरिय भीर उम्भरिय रोस भर। सिंधु राग संभरिय धोम धुन्धरिय व्योम धर ॥ सांई नाम संभरिय सद्द संघरिय सुत्रंबक । धक्क हक्क धम चक्क उदरि आसुर झक उझ्झक ॥ सुंडाल काल लंकाल सम झंड २ देते झपट । रावत्त राण राजेश के लोह छोह पावक लपट ॥ ७ ॥

दुट्ठह ठट्ठ ढमुट्ठ झुट्ठ आरूढ़ जुझारह । मंडि मार ढक चार बज्जि बैरिन शिर सारह ॥ बरसि बान दुरि भान रेनु नभ उज्झिर डंबर । कल कल मचि मचि कूह जहां कबिलान उझंझर ॥ तोबा करंत हहरंत हिय घूक भंति रन बन घुसत ॥ रावत्त मत्त महसिंघ मुख शत्रु सेन न धरंत सत ॥ ८ ॥

छंद गीतामालती ।

धसमसिय धर गिर शिहर उद्धसि बीर गुर गस उभ्भरे । कलकलिय परि मचि कूह कलकल झलल बिज्जुल उग्घरे ॥ झटझटिय बजि रिन झाक झरझट त्रिघट घन घट तच्छयं ॥ महसिंघ वंक उमत्त रावत बैरि करन बिभत्थयं ॥ ९ ॥

चल प्रचल अरि दल सकल चल दल होत रल तल सामुहें ॥ झलमलत सिलह सटोप झलमल चपल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंचल आरुहैं । करवाल रिपु कुल काल कर गहि मरद मारत म्लेछयं ॥ महसिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभत्थयं ॥१० ॥

सलसलिय फनधर सधर संकर कंध कच्छप कस-मसे ॥ झलझलिय जलनिधि सलिल थल जल अनल बिनल सु उद्धसे । डर बिडर दिशि दिशि बिदिशि डंबर यहउ झंषर पित्थहं ॥ मह सिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभत्थयं ॥ ११ ॥

चढ़ि चाक चहु चक उझक हकबक छैल मद छक छुट्टयं । किलकंत कंत हसंत कलरव जंग जहं तहं जुट्टयं ॥ मचि मार मार बकंत मुष मुष छज्यों नट इव कत्थयं । महसिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभत्थयं ॥१२॥

षनकंत षग्ग उनग्ग षग्गन झनकि जानि कि झल्लरी । भनकंत भेरि नफेरि चुंगल तूर त्रंबक दुरबरी ॥ गावंत सिंन्धु राग गोरिय पिशुन पारिन पत्थयं । महसिंघ बंक उमत्त रावत बैरि करन बिभत्थयं ॥ १३ ॥

कटि कंध अंध कमंध आसुर बीर नच्चत बावरे । झटकंत दिशि दिशि धाइ षग झट उझट सझट उतावरे॥ सलहंत सूर सनूर साहस मीर मीरन संमिले । रघु चौंड हर गुरु रतन रावत रिनहि रिपुदल रलतले ॥१४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिबि षंड वंड विहंड बाहू मित्थि मत्थय संभिरे।
लसि लोह छोर सुरत्त लोयन बीर रस बर बिस्तरे।
घट त्रिघट घाट त्रिघाट धाइय घुरिय घन घन घुंघलो।
रघु चोंड हर गुरु रतन रावत रिनहि रिपुदल रलतले ॥ १५ ॥

भभकंत इभ्भ भसुंड तुंडनि प्रचलि ओन प्रनालयं ॥ ढरि ढाल लाल सुपीत नेजा ढंग मिलि ढकचालयं । घूमंत असि छक त्रिछक घाइल टुट्टि खप्पर टल टले॥ रघु चोंड हर गुरु रतन रावत रिनहि रिपुदल रलतले ॥ १६ ॥

लटकंत किहि शिर पीठि लडलट तदपि घट थट ना घटें । असि कंक बंक उभारि अंबर फिरत टट्टर के फटें ॥ उड़ि छिंछि ओन सजोर संमुह चोल चञ्चर संचले । रघु चोंड हर गुरु रतन रावत रिनहि रिपु दल रलतले ॥१७॥

पय झरत रोपत कुंत धर पर लरत परत न लरथरें । जनु जनमि धर इक जंघ जनपद सूर सूरन संहरें ॥ रिण मिलित रोर सुयवन रजवट गलित गज थट गजगले ॥ रघु चोंड हर गुरु रतन रावत रिनहि रिपु दल रलतले ॥ १८ ॥

तुटि सिलह टोप सुत्रान तुरकनि तेक तुबक तुरंगमा । धज नेज तोरि झंझोरि झंडनि झाक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बज्जि झमंझमा ॥ गटकंत युग्गिनि रूहिर गट २ दबट दह बट दुज्जनां । केसरी सिंघ सुकंक गहि करि राव भल सज्जयो रिनां ॥ १९ ॥

गहगहिय षग गोमाय गिद्धिनि झुंड रुंडनि झरफरें । कुननंत अंत फुरंत फेफर तंग भंग सु तर-फरें ॥ धावंत शून तुरंग सिंधुर तोरि शृंखल बंधना । केसरी सिंघ सुकंक गहि करि राव भल सज्यो रिनां ॥२०॥

हर अट्टहास प्रहास प्रमुदित कमल गल माला गठै । बेताल बपु बिकराल ब्यंतर बीर बष बष करि उठै ॥ नच्चन्त नारद तान नव नव बीर बरत बरांगना । केसरी सिंह सुकंक गहि करि राव भल सज्यो रिना॥२१॥

लगि जेठ लुत्थि अलुत्थि लुत्थिन आन अप्पन को लषे ॥ परि दंति पन्ति पवंग पाइल धंष धर धरनी धुषे । लुट्टंत हेम सुरूप लुत्थिय करि तुरंगम कूदना ॥ केसरी सिंघ सुकंक गहि करि राव भल सज्यो रिनां २२

दुग सेन दह दिशि भर अचल सेा अचल दल कल कंदले । भरहरिय अल्लि हुसेन तग्गिय साहिजादा संपुले ॥ जय पत्त जंगहि राव रावत बेाल रक्खे बहु गुनां । केसरी सिंघ सुकंक गहि करि राव भल सज्यो रिनां ॥ २३ ॥

॥ कवित्त ॥

को अडुल्ल हरवल्ल को सु करवल्ल अठित्तह । किं गज ढल्ल मभिल्ल भूप छातल्ल छयल्लह ॥ दुज्जन केान

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुहिल्ल कहा कोतिल्ल रु सिल्लह। किं सु किन्न वरि
निल्ल नेत किं पित्त सुलल्लह। सादुल्ल मल्ल एकल्ल ने
हए भल्ल जे षल्ल जिन। रावत्त मत्त महसिंघ मुष रहे न
को आसुर मुरित ॥ २४ ॥

रावत चढ़ि रतनेश असुर दल कट्टि अपारह।
रर बरि रंक करंक भूमि बल लिय भर भारह ॥ सार
धार झकझार अंषि पिख्यो उद्धम अति। हरवल
अल्लि हुसेन भगो सुन बाबहि रन भति ॥ भय पाइ
साहि दल सब भगो भगो साहिजादा डरत। पय
गिरत परत लरथरत पथ धावत पल धीर न धरत २५

उद्धंसे असुरान षान सुलतान षुरेसिय। मत्य
य बिनु किय मुगल सैद संहरे बिदेसिय ॥ पिट्टे शेष
पठान लोदि बिल्लोचि बिडारे ॥ भंजे भंभर भूरि
सकल सरवानि संहारे। हबसी रुहिल्ल उजबक सुअ-
नि गक्खर भक्खरि परि गहन ॥ चहुवान राव केहरि
सुचढि महारान किय मह महन। २६।

॥ दोहा ॥

तजि पहार भग्गो तुरक, गिरत परत उरझंत।
घाट घाट घन घट घटतु, हिय सुहारि हहरंत ॥२७॥
कहुं सुनारि हथनारि कहुं, कहु रथ सिलह सभार।
हय गय भर आसुरन रनि, परि गय मग संहार ॥२८॥
फागुन मास सुफरहरत, तनु थरहरत सुशीत।
सब निशि कोश पचीस लों, भग्गोरिपु भयभीत ॥२९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आए साहि हुजूर सब, कटे बढ़े कद्रुप ।
कहे उद्दंत आलम कबिल, इहि रहना न अनूप ॥३०॥
जोरावर हिंदू जुरे, झुंड २ रहे झूमि ।
बेस भूमि के भूमिपति, अप्पन सकल अभूमि ॥ ३१ ॥
ए पहार पति आदि के, रहे पहारनि रुक्कि ।
लागत अपनो इहि लगे, थान २ मग थक्कि ॥३२॥
मारे पर्बत मध्य ए, फुनि जो करे प्रयास
गहो धाइ चीतोर गढ़, महां अचल मेवास ॥ ३३ ॥

॥ कवित्त ॥

साहि सुबचन प्रमानि सकल दल साज बेग सजि । कियो सुपत्थो कूंच तबल टंकार तूर बजि । बढ़ि अवाज बंसुमती हलकि ज्यों जलधि हिलोरह । उबट बट्ट गज थट्ट बंधि कंठल चहु ओरह । नरवै नवाब उमराव बहु पर अप्पन समुझि न परत । चित्रकोट जाइ बेगें चढ्यो अति दिल अंदर आदरत ॥ ३४ ॥

॥ दोहा ॥

पच्छो भय धरि दिल्लिपति, पुल्यो कोस पचास ।
गह्यो जाइ चीतोरगढ़, उपजी जीवन आस ॥ ३५ ॥

इति श्री मन्मान कबि बिरचिते श्रीराजबिलास शास्त्रे सुलतान मुखभंजन गोरीदलगंजन बर्णनं नाम त्रयोदशमो विलासः ॥ १३ ॥

॥ दोहा ॥

सज्यो सुदुर्ग बिशेष कै, पोरि बुरज प्राकार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नारि गोर आराब रुपि, अन्न सुसंचि अपार ॥ १ ॥
कबिल गल्ल एसी करत, महि मेवार बसाउ ।
रोकि चित्रकोटहि रहूं, जाव जीव नन जांउ ॥ २ ॥

कवित्त ।

पहिलोने पतिसाह बरस द्वादस करि विग्रह ।
गट लिन्ने बिनु गह्ये गरब गुरु छंडि २ ग्रह । हौं
अभंग ओरंग साहि गढ़ सुबस बसांउं ॥ महि सु लेहु
मेवार दाम निज नाम चलाऊं । दिल्ली न जाउ इहि
दुर्ग ही जां जाऊं तां लग रहौं । यो लोक सुनाउन
गल्ल गुरु साहि करत धर संगहौं ॥ ३ ॥

॥ दोहा ॥

रह्यो साहि ओरंग रुपि, चित्रकोट गढ़ चंग ।
केहरि ज्यों गिरि कंदरा , रोकि रहे रिन रंग ॥ ४ ॥
बिट्टिय गढ़ दल बल बिकट, ज्यों जलनिधि मधिदीप ।
ठोर ठोर चोकी ठई, उदभट भट अवनीप ॥ ५ ॥
गंग कुँअर गुन अग्गरो, सगताउत सिरमोर ।
आप जनाउन आसुरनि, चढि लग्गो चीतोर ॥ ६ ॥

कवित्त ।

बय किसोर तनु गोर समर बरजोर सूर तन ।
दिल उदार दातार बधत बड बार उंच मन । सब
सयान गुरु मान राज महारान सभा मुख । भर किवार
मेवार सुभट सिरदार सदा सुख । केसरी सिंह रावत
के कुंअर गंग बहु सेन बनि । चढ़िधाए गढ़ चित्तोड़

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को आप जनाउन आसुरनि ॥ ७॥ सौ कुंजर साहि के मग्ग बिचि मिले झरत मद । अंजस गिरि से संग रंग मचकुंद कुसुम रद । घम २ घूघर घमकि ठनन घंटानि ठनंकत । पीठि झूल पट कूल पढ़त पीलवान धत्त धत । अंकुस प्रहार मानै न जे तोरत संकर साख तरु। बर अगापच्छ चरखी चलत लेत लपेटें सुंड भर ॥ ८॥

सबल दरोगा सत्थ असुर असवार पंच सय । नेजा बजत निसान हेष हेषनि हीसतु हय । तकि २ मारत ताक कठिन कम्मान बान कर । पाषर जरित पवंग सार संनाह टोप शिर । दो दो कटार कटि तोंत दो दो दो तेग बंधे दुसन । चोकी सुदेत बन बन चोकसी गजनि सिखावत सुगति गुन ॥ ९ ॥

सुंडारे साहि के निरखि बहु रूप निट्ठवर । गरजे कुंवर गंग फोज असुरनि अड्डो फिरि । फेरो रे कहि पील हक्कि पीलवान हँकारे । सबनि अग्घ संहरो उररि असि बर उभ्भारे । महाराण दुहाई कहु सुमुख हत्थि ले चलो गेल हम । नन जान देहु कुंजर सु इक तेक तुबक समरोब तुम ॥ १० ॥

सुनि सु दरोगनि सेन आइ गय हत्थिन अड्डे । मार मार मुख बकत अधिक ढकवार उमंडे । असि उभारि झपरी कुंअर धायो जन केहरि । कबिल निकाल कराल झाक बज्जी सुझाट झरि । मारे सु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मीर बड़ २ मुगल उछरि २ उभ्भरि उररि । मचि कारे
कूह करि जूह मधि गंग जंग मंड्यो सु परि ॥११॥

छन्द बिज्जुमाला ।

गरज्जि कुंअर गंग, रोके करि जंग रंग । अंबा
उभारे तेग, बाहत पवन बेग ॥ १२ ॥

तुट्टे रिपु तुंड मुंड, बारुण करे बिहंड । लो
थरें परें लुत्थि, अंनो अन्य सं आलुत्थि ॥१३॥

आराब छुट्टे अछेह, मानों गज्जें भट्टो मेह । धा
गिरि धुआं धोर, उठे बीर चहूं ओर ॥ १४ ॥

किलकि २ केक, तुरकनि झारे तेक । लुंबि
झुंबि ललकारि, हक्कें बक्कें मारि मारि ॥ १५ ॥

उछरै उत्तंग ओन, छिंछि भिंछि धप्पी छोनि ।
टट्टर बहें गुरज्ज, प्रथक उड़ै पुरज्ज ॥ १६ ॥

सट्टे खुट्टे तुट्टें सत्थ, लग्गे योधा लत्थो बत्थ । धा किल्लें
उठिल्लें धाइ, किन्नें छिन्नें भिन्ने काइ ॥ १७ ॥

उरर देते उप्पट्ट, झाक बज्जें झट्टो झट्ट । खुप्प-
रि षनंके खग्ग, अरि भग्गे अग्गो अग्ग ॥ १८ ॥

कबिल नचें कमंध, छिछटें उछट्टें बंध । घाइन
छके घुमंत, जनों दंती दुरदंत ॥ १९ ॥

परिग सुदंति पंति, भरनि पहार भंत्ति । छायो
गेंन रेनु छाय, हहरे करें के हाइ ॥ २० ॥

कायर भगे कुरंग, समरि सुगेह संग । सम्हे भिरे सूर सूर,
त्रंबक त्रहक्कें तूर ॥ २१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुट्टे टोप तेग त्रान, नेारंगे नेजा निसान। अश्व भारे असवार, धावें लग्गें खग्गें धार ॥ २२ ॥

रोरें जोरे भारे कुंत, उभारे बाहें सुमंत। निकरें परें निनार, दरसें लसे दुमार ॥ २३ ॥

महि रुरें रुंड मुंड, भभकें करी भसुंड। वोसठि पीवें सुचोल, उछंगे रंगे अल्लोल ॥ २४ ॥

रुंडमाला गंठे रुद्द, निहस्सें नारद्द नद्द। पलवारी घष्षे प्रेत, डक्कारे हक्कारे देत ॥ २५ ॥

गिद्धनी झरघे गेंन, बुट्टे खुट्टे मंस चैन। भारी यों मच्यो भारत्थ, प्रगटे मनो पारत्थ ॥ २६ ॥

नग्गे ते दरेागे भेार, जैसे प्रात होते चोर। हाक फुक्की हाहाकार, दिल्ली पति दरवार ॥ २७ ॥

धाओ रे धाओ को धीर, माझी जोइ बड़े मीर। दंती सोई एक दोर, जाय लिए हिन्दू जोर ॥ २८ ॥

कवित्त ।

जीते कुंअर सुजंग कितक करि जूह भंग करि। कितक झारि पीलवान तेारि संकर गय भर हरि। सब में देखि सरूप हत्थि दस बीस सुहंके। कुंतअनी चुं करत सुभट हुंकरत सुबंके। निरभय निसंक बहु रे नि गम हत्थिन हल्लत तिन हनत। केसरी सिंघ रावत्त को गंग न आलम कों गिनत ॥ २८ ॥

सुनी साहि औरंग गंग कुंवर लिन्ने गज। बदत आइ बिलखाय शीत मारयौ मनु पंकज। उरहि ध्र-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सक्कि ससक्कि झुंझि झलमलिय स्वेद तन, गय सु गो
बर बुद्धि हत्थ दलमलत दीन मन । गहु २ सु जो
पावै न गज गहु सु गंग हम गज गहन । हंसिहैं जिहां
हत्थी गये इन सुबत्त कछु सोह नन ॥ ३० ॥

धपे धींग पर धींग धेंग चढ़ि २ सुसेंग गहि
परतनाल परताल बज्जि घुरताल धुज्जि महि
कवच त्रान पष्षरनि करी झंकुरिय झमंझम । तबल
तूर टंकुरिय निगम संकुरिय क्रमं क्रम । कलकलिय सुरव
बंबरि बहरि अरकउ झंषरि डरि बिडुरि । पिक्खे कुँआ
आवत पिशुन लुब्ब २ जलनिधि लहरि ॥ ३१ ॥

करि अग्गे करि जूह बग्ग थंभे सुबाजि बर । कल
हणि कंठल केार मंझि मोरछा मुहर भर, रुक्कि राह
खगबाह करहि करवाल झबक्कत । ज्यों सलिता जल
पूर आइ अड्डै गिरि रुक्कत । भय सेल मेल भयभीत
मचि दंग जंग दरवरि दवरि । बढ़ि लोह छोह तनु
मोह तजि समर ईश गंगा गवरि ॥ ३२ ॥

सार सार संघटे धार संधार संतुट्टत्त । झमकि
अग्गि झर जग्गि लग्गि षग झट षल षुट्टत्त । बज्जि
झनंक षनंक कंक झलमलत सुझांई । घुरिय सुघाट
त्रिघाट सेाह हंकरि निज सांई । कहि वाह २
भल २ सुकहि बीर पचारत बिबिहि भति । रिन रोर
धोर रलतल रुहिर गंग कुंअर झुझत सुमति ॥ ३३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भट किसोर उभि गोर भ्रटकि गरु भारि धरं धरि ॥
खरहरि शिहरि सु शृंग धरणि धर हरि परिकंधरि।
गज्जि गोम लगि व्योम बुन्द झर बरषत गोरिय ॥
अधिक गाज आग्राज झमकि बिद्युत षग जोरिय ॥
बजि डुंझ गुंझ आयुध बिषम अति झंझेारिय तनु
सुतरु। भारथ उमंडि भद्दव सुभर कुंअर गंग झुझत कहर३४

रुण्ड मुण्ड ररबरत परत धर पर हय बर षुर।
तंग भंग तरफरत ससत सरफरत चरन कर। सिंधुर दर बर
सबर कर बज्जत तनु पंजर। हर बर षर भर हेात समर
सज्जे भर सर भर ॥ झरहरत अरिन शिर रुहिर झर
बजि गुरुज्ज गुरु परि बिहर। चवै चले चेल रंग चेाल
ज्यों चलि प्रबाह चञ्चर सुचिर ॥ ३५ ॥

भभकि भसुण्ड बिहंड झरिय करि संड उदंडह।
उछरत परत उतंग जानि अजगर अहि जझर ॥ कटि
सनाह परवरनि कवच कटकंत षग्ग झट। तुट्टि सत्थ
लगि बत्थ लुत्थि आलुत्थि लट्ट पट ॥ झरफरत गगन
थट गिद्धिनिय चिल्ह चंचु जनु कुंत फर ॥ कर चरन
रु मत्थय आसुरनि गहत उड़त अंबर अधर ॥ ३६ ॥

परे मुगल सय पंच पंच सय परे पठानह ॥ शेष
जादे सत्त सै सैद इक सहस प्रमानह ॥ लेादि वलेाचि
अलेष परे सत्थर सरवानी। गक्खरीन केा गिनय भूरि
भंभर भर भानिय ॥ रूमी रुहिल्ल उजबक असुर परे
करंक करंक परि ॥ फुनि भगी फोज पतिसाहि की

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गंग जैति कीनी बहुरि ॥ ३७ ॥

कहुकनारि करिनारि कहुक करि करभ कहूहय ।
कहूं सिलह रथ सुभर कहुंक षच्चर षजान मय ॥ कहुं
नेज रु निसान जीन पक्खर तजि भारिय । नट्ठे आसु
निलज हीय हहरत अति हारिय । सगताउत गंग
कुँअर सुहर दिल्लीपति दल बल सुदलि । गजराज
नवंनव जूह गहि गृह आए जित्ते बकलि ॥ ३८ ॥

॥ दोहा ॥

एकहि बैर औरंग के, नव गजराज उतंग ।
भेट किए महाराण की, केहरि कूँअर गंग ॥ ३९ ॥
हरषे हिंदूपति सुहिय, दंती देष दिवान ।
सगता गंग कुंआर को, कियो अधिक सनमान ॥४०॥
हेम तोल चंचल सुहय, साकति हेम सरूप ।
वसुमति ग्राम बढ़ाउ बहु, अरु शिर पाव अनूप ॥४१॥

इति श्री मन्मान कवि विरचिते श्री राजविलास ।
शास्त्रे श्री सगताउत गंगकुंअर जी के न पातिसाह
कस्य हस्तीयूथ ग्रहण वर्णनं नाम चतुर्दशमो विलासः ॥ १४ ॥

॥ दोहा ॥

चगता पति चीतोर गढ़, रोकि रह्यो हठ पूरि ।
कितक बरस छाउन कहत, दिल्ली छंडी दूरि ॥ १ ॥
एह गल्ह असुरेश की, बियुरी सनि बिरुदाल ।
भीमराण राजेश को, कूंअर कोपि कराल ॥ २ ॥
दिल्लीपति को देश ते, कट्टन कियो सुमंत ।
सोरठ अरु गुजरात सब, मारन देश महंत ॥ ३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बज्जे त्रंबक बज्जने बढ़ी सकल मय बात ।
भीमसिंह कूंअर चढ़े मारन धर गुजरात ॥ ४ ॥
हय गय रथ पायक सजे, सजे सकल उमराव ।
तुंग २ फौजें मिलीं ज्यौं सलिता दरियाव ॥ ५ ॥
बोलत बहु बिरुदावली ढुरत चौंर दुहुं ओर ।
चढ़े बाजि चंचल चतुर भीम कुंवर दल जोर ॥ ६ ॥

॥ कवित्त ॥

भीम कुंवर दल जोर चढ़े गुज्जरि धर मारन । कटक बिकट भट उभट सुथट गज घट भट चारन । बोलत बहु बिधि बिरुद मरद भंजत आलम मद । गुर पगार मेवार सूर सुप्रताप ऊंच पद । जय कारजु धार अपार युध दूढ़ प्रहार करवार कर । जगतेश राण राजेश के तो सूं को मंडे समर ७॥

अंबर धर आवरिय रंग भंखरिय रजंबर । धाराधर धुंधरिय दुरिय दुति चंड दिवायर ॥ बढ़ी हेष पर हेष बहरि बंबरि कल रव बहु । सुनियत सद्दन अवन जूह हय गय रथ गहमहु ॥ अनुसरत इक्क इक अग्ग पग उमग मग्ग परि भरि अवनि । सजि चढ्यो सेन गुज्जरि सधर भीमसेन ज्यों भीम भनि ॥८॥

भई भूमि भय कंप प्रचलि पर धर पुर पत्तन । होत कोट संलोट गिरत गढ़ दुर्ग गाढ़ घन ॥ दिशि दिश उट्ठि दहक्क भुक्क भय गुरु भर भक्खर । सर सलिता इह सुक्कि रुक्कि दर राह धरद्धर ॥ थरहरिय

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थान थानह सुथिर बिथुरि प्रजा डुल्लत अथिर। भर
रंत नेर षरहर सुपरि जहँ तहँ मंनिय जोर डर ॥८॥

उजरि अहमदाबाद पीर पट्टन ससंक परि।
षंभायत षरहरिय मून मूरति धन संहरि॥ जूनागढ़
जंजरे कच्छ कलकलि सुमंनि डर। गोर सिंधु सोवीर
भूमि बहु भई उझंखर। मचि हक्क धक्क चहुं चक्क
मधि आप आप भय बढ़िय उर। चढ़ि भीमराण
राजेश को आयो के आयो कुंवर ॥१०॥

सुबच सुभग सुंदरिय दुरिय गिरि खरिय ससंकिय।
सालंकरिय सुबेस चित्रनिय चित्र कलंकिय॥ नव
योबन सोबन सुबान मानिनि मृगनैनिय। रूप रंभ
आरंभ दरस देषें सुख देनिय॥ पयतन प्रवाल पल्लव
सुपय सत्थन को सत्थी सुबिय। बहु भीमसेन कूंवर
सुभय डोलत बन घन शत्रु तिय॥ ११॥

छन्द पद्धरी।

सजि भीमसेन सेना बिशेश। दहबट्ट करन
गुज्जर सुदेश॥ दल बिंटि प्रथम ईडर दुरंग। भट
बिकट जानि चंदन भुजंग॥१२॥

गढ़ तोरि तोरि गट्टे कपाट। थरहरिय थान
असुरान थाट॥ नठ्ठो सु सैद हासा नवाब। गढ़ छंडि
छंडि किल्ला सिताब॥ १३॥

रलतलिय प्रजा बहु परिय रोरि। डर मंनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जात बन गहन दौरि ॥ बनिता धपंत लहु नंषि बाल । भूषन पतंत षिरि मुत्तिमाल ॥१४॥

तजि न्हाण बस्त्र इक तनु लपेट । चित चौंकि जात दीने चपेट ॥ ब्याकुलिय इक्क अधगुंथि बेनि । भरि फाल जात ज्यों जात एनि ॥ १५ ॥

निय निय सुकज्ज छंडे निनार । चलचलिय छलक भय भीत भार ॥ को गहय सार कप्पर किरान । नग हेम रूप बदरा निदान ॥१६॥

भूषन जराउ बहु रूच भंति । जहँ तहँ सुगड्डि धन लोक जंति ॥ जरकस सज्योति सुषमल अमोल ॥ सिकलात सूप तनु सुष पटोल ॥ मृदु तूल मसद्दर बिबिधि रंग । मिश्रू दुमास चीनी सुचंग ॥१७॥

षीरोदक अतलस सरस लहाइ । बुलबुल-चसंम मनु सुषद स्याइ ॥ पामरी पीत अम्बर दुपट्ट । साहिबी पाट अरु हीर पट्ट ॥ १८ ॥

भैरव भरुत्थि मलमल सुधोत । महमूदि बीर सेला सुपोत ॥ सिंदली झून सूसी सुपेद । खासा अटान टुकरी सुभेद ॥१९॥

श्रीसाष सालु इक पट सकोर । चोतार भार तनु पंच तोर ॥ बहु बिधि सुबस्त्र छंडे बजाज । भग्गे सभीति हटश्रेणि त्याज ॥ २० ॥

घृत खंड तेल सक्कर सभार । अति खास अन्न

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उघरे अँबार ॥ मधु रस सस्वाद मेवा मिठाइ । हरवा गरत सक्के उठाइ ॥२१॥

मृगमद कपूर केसर लवंग । अहिफेन हीर रेशम सुरंग ॥ तज जायपत्रि पत्रज तमाल । रस नारिकेल पुंगी रसाल ॥२२॥

हिंगरू अगर चंदन सुईठ । एलची जाइफल अरु मजीठ ॥ इत्याद्यनेक छंडे कृयाण । भग्गे सुगंधि रक्खन सुप्रान ॥२३॥

बिधि बरन च्यारि छत्तीस येानि । चोपय प्रत्येक बहु जीव येानि ॥ भरहरिय भग्गि भय यत्र कुत्र । परि गय बियेाग तिय भ्रात पुत्र ॥२४॥

ठट्ठोरि हट्ट पट्टन सुढारि । गृह गृहनि जारि सुप्रजारि पारि ॥ सिंघनी सुंघिनर के सुजान । खनि खेादि क्षोनि कट्टे खजान ॥२५॥

धरहरत धरनि खरहरत कोट । लगि बेलदार किन्ने सलोट ॥ आबास ऊंच भयतर उपार । जहँ तहँ सुभूमि परिगय बिहार ॥२६॥

इहि भांति दुर्ग ईडर उड़ाइ । संठे सुभृत्य अन धन सचाइ ॥ भरि कनक रूब धन कोटि भार ॥ हय हत्थि करभ खच्चर अपार ॥ २७ ॥

राजेश राण नंदन सरोस । भल भीमसेन कुंअर भरोस ॥ कट्टनह दूरि पतिसाह काज । रक्खन सुराह मेवार राज ॥२८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ।

ईडर दुर्ग उजारि पारि किन्नो धर पद्धर । खंखेरिय खनि खोदि किए मंदिर तर उप्पर ॥ ढंढोरिय हटश्रेणि केान झल्लें कर कप्पर । श्री फर सार किरान ठेलि श्रन धन पय ठिप्पर ॥ नट्ठो सु सैद हासा निलज गुरु नवाब छंडेव गढ़ ॥ जय कीन राण राजेश के भीमसेन रवखी सुरढ़ ॥२८॥

॥ दोहा ॥

ईडरगढ़ उद्धंसयेा, सुनी सकल संसार ।
भीमराण राजेश के, कूंवर कुल शृंगार ॥ ३० ॥
पच्छिम निसि पतिसाह दर, परिय सुकरल कराह ।
केान नींद श्रालम कबिल, सेाए तुम पतिसाह ॥३१॥
भीमराण राजेश केा, कूंवर केापि कराल ।
ईडरगढ़ लीनेा श्रचल, चढ़ि दल किय ढकचाल॥३२॥
हंस सैद हहरंत हिय, नट्ठो श्रप्प नवाब ।
श्रब सुजात गुजरात धर, करहु इलोज सिताब ॥३३॥

॥ कवित्त ॥

सुनि सुकूह सकराल रेनि पच्छिली श्रवन सजि ।
उझकि चोंकि श्रौरंग उठ्यो दिल्लीश नींद तजि ॥
निकट बुलाइ सुदूत बहुरि बुझ्झै दिल्लीबर । कितक
सत्थ सेा कुंश्रर श्रक्खि तिन दल श्रपरंपर । ईडर उजारि सुप्रचारि दिय उजरि देश गुज्जर सुधर । सेारठ
सिंधु सेाबीर लेां भीमसेन कूंवर सुडर ॥३४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ दोहा ॥

रह्यो ओटि पय ज्यों सरिस, म्लेच्छ ईस गहि मोन ।
बोल सुबोलत ना बने, शीशक चढ़ि भय सोन ॥३५॥

कवित्त ।

राजसिंघ महराण प्रजा पीहर प्रजपालक ।
प्रजाछत्र प्रजपोष प्रजामंडन प्रजधारक ॥ वरण
च्यारि बर शरण दीन उद्धरण दया पर । दीनबंधु
दुष हरण सकल षट दरस सुहंकर ॥ पीरंत पेखि पर
प्रज प्रबल कुंअर भीम कुप्पिय कहर । बड़नगर सुढ़ासा
सिद्धपुर प्रमुख सकल भंजे सहर ॥३६॥

लिखे एह परवान राज महराण भीम प्रति ।
प्रीति पोष संतोष सकल सनमान सरस भति ॥ कुल
दीपक तुम कुंअर सबलह मरद्द धुरंधर ॥ तजि वि-
देस सुबिसेस बेगि आवहु निज मंदिर ॥ परवानह
करि पर धरह तन अप्पन श्री इकलिङ्ग बर । प्रज
पीड़त पिक्खी जात इह अनुकंपा उपजंत उर ॥३७॥

॥ दोहा ॥

धरहि जाइ दीनो चपल, कुंवर हत्थ फरमान ।
कहि मुख बचन प्रसंस करि, बहु बिधि प्रीति बखान॥३८॥

कवित्त ।

महाराण परवान सीस सहिबान सुशोभित ।
प्रनमि बंचि बिधि पाइ झुंकि अनिखाइ झझकि
चित ॥ पिता हुकम सुप्रमानि दंद मुक्क्यो निज दारुन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुरे कुमर सुजान जानि अंकुस बर बारुन ॥ धन कोरि जोरि ढंढोरि धर बैर बहोरि अनंत बल । निज गेह आइ बिलसंत नित भीम भोग संजोग भल ॥३८॥

इति श्रीमन्मान कबि बिरचिते श्री राजविलास शास्त्रे श्री भीमसेन कुमारेण गुर्जर देशे द्वंद्वकरण नाम पंचदशमो बिलासः ॥१५॥

—:o:o:—

॥ दोहा ॥

बंकागढ़ बधनेार पति, सांवलदास सकाज ।
केतुबंध कमधज्ज कुल, मेरतिया महराज ॥१॥
भगति जोर तिनको भई, बंकेश्वरि बरदाइ ।
माता त्रिभुवन मंडनी, सांप्रति करन सहाइ ॥२॥
तेग बँधाई देबि तिन, पाती दे करि प्रीति ।
जहँ जहँ कीने जंग जिन, तहँ तहँ भई सुजीति ॥३॥

कवित्त ।

जहँ तहँ कीनी जीति रीति रक्खी रट्ठोरिय । महाराण के काम दंद रचि दल सजि दोरिय ॥ रुक्की आवति रस्त थान भंजे तुरकानी । पीरो परि पतिसाह श्रवन सुनि सुनि सुकहानी ॥ तिन दिन्हों महि मेवार तजि गय औरँग अजमेरगढ़ । मेरतिया सांवल दास सम देखि न को सा धर्म्म दृढ़ ॥४॥

बिंटि थान बधनेार परी सेना पतिसाहिय । धुपटे धर बर धींग गहन गज तन गिरि गाहिय ॥ हय मुंह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुप्पर कंण रत्त दूग मुंछ रोम बिनु ॥ भारषंध भु
सुभर भार भोजन रु भार तनु ॥ तिन नाम रुहिल्ल
नर भखन तजै न को पशु पंखि पल । जहँ तहँ परा
जल उदधि ज्यों उद्धम गति ओरंग दल ॥ ५ ॥

दोहा ।

नायक सब रुहिलानि में, नाम रुहिल्ला खान ।
लंबी तेग लिये रहें, आसुर जंग अमान ॥६॥
द्वादस सहस तुरंग दल, नेजा बंध नवाब ।
मदिरा मत्त सुरत्त मुँह, जिह तिह देत न ज्वाब॥७
बिंटि रह्यो दल बल बिकट, बसुमति किय बिपरीति
पारि प्रसाद प्रजारि गृह, अति ही मंडि अनीति॥८

कवित्त ।

सुनि इह सांवल दास मरद मेरतिया महिपति ।
खीजि खलनि षय करन थान उत्थपन अरिन थिति ॥
सजि सिताब हय गय दुबाह सन्नाह सपक्खर । कवच
करी झंकुरत कुंत झलमलत सूर कर ॥ बजि बंब न
गारनि घोष बहु बरन बरन धज नेज बनि । चढ़ि चले
फौज चहुं फेर घन उदधि जानि उलट्यो अवनि॥८॥

खिति धरहरि हय खुरनि चरन गिरि पल्ल
चुल्ल भय । उझिय रेन भरि गेंन भानु भंखरिय ताप
खय ॥ चारन भट्ट सुचंग रंग बोलत जस रूपक । सां-
वल दास सनूर कूर कमधज कुलदीपक ॥ जय करहु

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जंग घन हनि यवन आलम दल भंजहु अनम ॥ बैरिन बिनास किज्जै बसति त्रिपुरा दाहिन हत्थ तुम१०॥ संभ समै लहि संच प्रबल रतिवाह बिहारिय । खान पान खल दल बिलग्गि दीपक अधिकारिय ॥ तबहिं तरित ज्यों त्रटकि परे पतिसाह सेन पर । गाहत दाहत हनत भनत मुख मार मार भर ॥ रंलतलिय लहिल्लनि परि रवरि दहकि बहकि धकि परि दहल । तजि खान पान भग्गे तुरक कल कल कंदल मचि कबिल११

छन्द त्रोटक ।

हय चंचल सांवलदास चढ़े । कर गेंन उभारिय खग्ग कढ़े ॥ जुरि जोध बिजोध बजे जरके । कटि टोप कटक्कि करी करके ॥ १२ ॥

षिरि कंकनि कंक सुधार षिरें । झनकंत कृपान कृसानु झरें । मचि कंदल मीर गंभीर कटें । खननंकति वज्जति खग्ग झटें ॥ १३ ॥

तुटि सिप्पर खुप्पर लोनि हटें । फिरे श्वेद बिकेद ह्वै शीश फटें ॥ छिलि लोह पठान सुछाक छकें ॥ जल आतुर बारिहि बारि बकें ॥१४॥

दुहुं ओर दुबाह दुहाइ बदै । अप अप्पन सांइं चहंत उदै ॥ करि ताक संभारि संभारि कहें । बरसें घन ज्यों बहु बान बहें ॥ १५ ॥

कर कुंत कटारि सकत्ति धरै । फरसी हर हुल्ल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुपत्ति फुरै। गज मुग्गर नेज गुरुज्ज बजै॥ गगनं
गन गोर आराब गजै॥ १६॥

धर धुंधरि सोर सुरत्त धखें। जहँ अप्पन आन
कोई लषें॥ तजि साहस संकुर सांइ तजे। भय पाय
कायर जात भजे॥१७॥

घन घोष त्रंबागल सिंधु घुरे। सहनाइ सुभेरि गंभी
सुरें॥ कुननंत किते कलि कूह करें। रिन जोर रहि-
ल्लनि रुंड रुरें॥१८॥

उतमंग पतंत किते उचरें। सरनाथ किसो
सूल ररें॥ इक अल्लह अल्लह नाउं अखें। मिलि नेन
टोप मिलंत मुषें॥१८॥

भय रुकिनि टूकनि तेइ रुमी। निकरें दुहु लोइ
ग्रीव नमी। हबसी मिलि आपस मेंइ हने। अंधि-
यारि निसा नन सुद्धि गनें॥२०॥

नर आसुर केक कमंध नचें। शिर भूमि अट
टूटहास सचैं। हय हत्थि बिना असवार फिरें। घ
पक्खर भार सुढ़ार ढरें॥२१॥

तरफें अधतंग तुरक्क तुटें। चलि बज्जर बोल नद
उपटें॥ भभके करि सुंड बिहंड भई। महि कीन जह
तहँ रत्त मई॥२२॥

उड़ि ओनित छिंछि अयास तटें॥ पय कोकन
ज्यों पिचकारि छुटें॥ गवरीपति अंबुज माल गठें
सब केक हँकारि बेकारि उठें॥ २३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुरु गिद्धिनि तुंडनि मुंड गहैं । झरफैं गग-
नांगन झुंड बहैं ॥ रत ले युगिनी जल ज्यों अचवैं ॥
चवसठि जयं जय सद्द चवैं ॥ २४ ॥

धज नेज झंझोरिय जोरि धनं । टक चार ढंढो-
रिय ढान घनं ॥ कमधज्ज महा बलि जैति बगी ॥
भय मंनि रुहिल्लनि फोज गभी ॥ २५ ॥

तजि यानहि तंबु तुषार तई ॥ रथ कंचन बारुन
बस्तु नई ॥ निशि ही निशि भाग्गि हेरान भए ।
गति हीन ह्वै साहि के पास गए २६ ॥

कवित्त ।

गए असुर तजि गर्ब हसम हय गय रथ हारिय ॥
गिरत परत बन गहन भए भारथ भय भारिय ॥
निसि अंधियारी निपट सुबट थट घट्ट न सुज्झत ॥
कानन तरु कंटकनि अंग अंशुक ओलुज्झत । उझकंत
परस्पर पिक्खि अग सब रुहिल्ल सुगहिल्ल हुअ ॥ कमधज्ज
गहिय करवार कर जंग रंग मंड्यो सुजय ॥ २७ ॥

दोहा ॥

इहिं परि यान उथप्पि के रक्ख्यो जस रठौर ॥ स्वामि-
धर्म पन सज्ज्यो सकल सूर सिरमोर ॥ २८ ॥

इति श्री मन्मान कवि विरचिते श्री राज विलास
शास्त्रे सांवल दास कमधज्ज कृत द्वंद वर्णनं नाम षोड़शमो
विलास: १६ ॥

—:o:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

धर पुर हरि गिरिवर ध्रसकि, पयदल मसकि पयाल।
धारा नगर मालव सुधर, दोरयो साह दयाल ॥१॥
राजा उतपन रोस रस, तारन रित ज्यों तुट्टि ॥
मालव धर उद्धंसि महि, लच्छि अनंत सु लुट्टि ॥२॥
षाग त्याग दुहुं भांति षिति, नितु २ नाम नवल्ल ॥
बाग त्याग बिनु क्षत्रिपन, आख्यो यूं अकतुल्ल ॥ ३ ॥
मंगि हुकम महराणपें, सुवर सुभट संजोर ॥
चढ़यो लेइ चतुरंग चमु, अवनि कंपि चहुं ओर ॥४॥
धर गिरि अंबर धुंधरिय, दिशि २ उठि दहरिक्क ॥
आडंबर रबि आवरिय । चित दिगपाल चमक्क ॥५॥

कवित्त ।

प्रचलि चित्त दिगपाल भूमि तजि भग्गि आप
भय । उजरि नेरपुर उझकि बिझुकि गढ़ कोट दुर्ग गय॥
थक्कि राह थरहरिय थान थानह असुरायन । बजि
अवाज गुरु गाज जानि जग पो पंचायन ॥ थरहरिय
सुप्रज क्षितिधर षलक जनु धारा हर धरहरिय । मालव
सुदेश सद्धन सुमहि सजि सुसाह दल संचरिय ॥६॥

कहुक दंड किज्जियहि कहुक लिज्जियहि पेसकस।
थप्पि कहुक निय थान रिपुन रुक्कियहि रोस रस ॥
कहुक बंक बैरिन गहिब्ब घल्लियहि जेल गल । कहुक
लच्छि लुट्टियहि कहुक भेलियहि दुर्ग भल । कहु
कोट जोट कबिलान के उथलि पथलि थल बियल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किय । पारन्त रवरि पर धर प्रबल जानि प्रलय कालह जगिय ॥७॥

म्लेच्छ मुंछ मुंडियहि खंडि महजीदि मदारनि । काजी पकरि कुरान गरहि बंधे बगमारनि । वीरत बारि प्रयाग धाक बज्जी धागानी ॥ भेष बदलि रिपु भगत बदलि बानी तुरकानी । धकधुनी देश मालव सुधर बारुन ज्यों चंदन बिटपि । मुंह मिल्यो असुर नन मुक्कियहि थिर सुप्रतंग्या एह थपि ॥८॥

छंद मोतीदाम ।

चढ्यो दल सज्जि सुसाह दयाल । किधों कलिकालनि को षय काल । बहै बहु मग्ग कटक्क विकट्ट ॥ जनो जल अंबुधि गंग उपट्ट ॥९॥

सुभें दल अग्गहि श्याम सुंडार । चले जनु अंजन के पु पहार ॥ ठनंकति घंट सुग्रीवहि ठाइ । घमंकत घुंघरु नेउर पाइ ॥१०॥

झरे मदवाह कपोलनि झोर । भमैं तिन दान सुबासहि भौंर ॥ सुभें शिर तेल सुरंग सिंदूर ॥ बहैं बिरुदावलि बंक बिरूर ॥११॥

मनोहर कुंभहिं मुत्तिनमाल । मझें मझ पोइय पांच प्रबाल ॥ उभै अव शीशहिं चौर सुभंत । सभार स उज्जल दीरघ दंत ॥१२॥

झिलंतिय रंग सुरंगिय झूल । जिगंमिग योति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरी पटकूल । ढलक्कति ढंकिय बास सुढाल । बने किं पिट्ठहि डोल बिसाल ॥१३॥

पढ़ें धत धत्त सुंहें पिलवान । सचे कर अंकुस बिद्यु समान । पताक प्रलंब बने पचरंग । जरी पट कूल सुचिन्ह सुचंग ॥१४॥

जरे पय लोह सुलंगर जोर । किधें करि श्याम घटा घन घोर ॥ चरक्किय अग्ग रु पच्छ चलंत । खरे इतमाम महा मयमंत ॥१५॥

एराकिय आरबि अश्व उतंग । कछी कश्मीर कँबोज कलिंग ॥ बंगालिय कोकनि सैंधवि बाज । पयं पथ बायु पथे पँखराज ॥१६॥

मजंनस लाषिय रंग सुवंश । हरी हरडे अरु बोर सुहंस । किते किरडे तनु नील कुमेत । सुसिंहलि रोझिय रंग सभैत ॥१७॥

अँबारस भौंर मसक्की अपार । तुरंजे ताजि तुरक्क तुषार ॥ किलकिले कातिले केइ किहार । गंगाजल गारुडे के गुलदार ॥१८॥

बिराजति साकति स्वर्ण बनाव । जरे नग मुत्तिय हीर जराव । गुही बर बेनिय श्याम सुकंध । फुंदा गलि रेसम डोरि सुबंध ॥१९॥

ततत्थेइ नच्चत ज्यों नट तान । पुलंतन पंखिय पुज्जत प्रान ॥ सचंचल चालने चीकनें चोष । सपक्खर सज्जर हिंस सरोष ॥२०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बढ़े भर केइ महा चित चंड ॥ अरेणिय जानि कि भीम उद्दंड ॥ बंके बर बीर सभीर बिडूर ॥ झनंकति षग्ग करे झकझूर ॥ २१ ॥

भरे रथ सत्थि आराब सभार ॥ किते धन रूब रु हेम दिनार ॥ भरे बहु भारहि ऊंट अपार ॥ किती भरि बेसरि भार बिभार ॥ २२ ॥

पयद्दल बद्दल ज्यों दल पूर ॥ उड़ी रज अंबर ढक्किय सूर ॥ परे नन अप्पन आन की सुद्धि ॥ उपट्टिय जानि कि जोर अंबुद्धि ॥ २३ ॥

सुसंकर संकुरि कुंडलि शेश ॥ कटक्किय कच्छप पिट्ठि बिशेश ॥ भये भयभीत पुले दिगपाल। डगंमगि कोट रु दुर्ग दुकाल ॥ २४ ॥

थरत्थरि पत्थर सुत्थिर थान। भगे पुर पत्तन नैरभ यान ॥ रुके दर राह सुउट्ठि दहल्ल ॥ सुसे सलिता सर नीर सुहिल्ल ॥ २५ ॥

मच्यो भय मालव देश मझार ॥ उड़ै प्रज जानि कि टिड्डि अपार ॥ कहूं तिय पुत्त कहूं गय कंत ॥ रड़ै जननी कहुं बाल रडंत ॥२६॥

कहूं पति भृत्य कहूं परवार ॥ कहूं धन धान रहे निरधार ॥ कहूं भय चोप यहूं परहत्थ। नसे नर नारिन वृन्द अनत्थ ॥२७ ॥

लुटे केउ लुंटक झुंटक लक्ख ॥ परें बहु कूह

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कराह प्रतक्ख ॥ जनों कलपंतर अंतर जग्गि । लुकि-
ह्नुकि मानस मानस लग्गि ॥ २८ ॥

किये प्रति कूंचनि कूंच प्रलंब ॥ लसे दल बद्दल
सावन लुंब ॥ धसंमसि बिंटिय कोट सुधार ॥ परी
पतिसाह सुगेह पुकार ॥ २८ ॥

कवित्त ॥

मंडव भय मंनियेा उजरि प्रज भग्गि उजेंनिय ॥
सारंग पुर भय सून निकरि नट्ठी मृग नेनिय ॥ दहल
परिय देवास धरनि गड्डियहि हेम धन ॥ सुनिब स-
संकि सिरोज चलिय चंदेरि चक्रित मन ॥ जहं तहं अ-
वाज संके यवन जंजरि गढ़ करियहि यतन ॥ आयेा
सुसाहि यों अरिन पुर उझक अहेा निसि मिटय नन॥३०॥

अक्खें के असुरानि कंत तिल गहर न किज्जैं॥
आवत कटक उदंड छंडि गृह के तनु छिज्जैं ॥ कह
सेावत सुख सेज उट्ठि उठ राखि सुआतम ॥ मो कहुं
पूरन मास गहु सुगिरि गुहा क्रमंक्रम ॥ बिलपंत बालके
बाल तजि नट्ठि बनं घन गहन नग ॥ सकबंध साह
दल चढ़त सुनि बिभजि लेाक ज्यें बन बिहंग ॥३१॥

बिंटि कोट बर बीर भंति गेा सीस भुयंगम ॥
ज्यें पहार अरु जलधि प्रबल दल दंति पवंगम ॥
किल्ला तजि तिहिं काल पुले आसुर सु पठानी ॥ सेन
असुर घन सहस मुक्कि साहस समुदानी ॥ जगि लुट्टि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज रासो ।

यह हिन्दी साहित्य का सब से प्राचीन ग्रन्थ है जो अब तक प्राप्त हुआ है। इसमें कवि ने भारतवर्ष के अन्तिम क्षत्री सम्राट राजा पृथ्वी राज का जीवनवृत्तान्त विस्तार पूर्वक लिखा है जो आदि से अन्त तक विचित्र घटनाओं से भरा हुआ है। इतिहास प्रेमियों के लिये तो यह ग्रन्थ अनमोल रत्न है। इसकी भाषा कुछ कठिन है अतः सभा ने समस्त ग्रन्थ के सारांश को सरल हिन्दी भाषा में इसके साथ ही साथ छपवाया है जिससे मूल ग्रन्थ के पठन पाठन में बड़ी सहायता और आनन्द मिलता है। मनोरञ्जक तो यह इतना है कि कहीं से कोई पृष्ठ उठा कर इस पांच पंक्ति पढ़िये फिर कदापि आप समस्त ग्रन्थ पढ़े बिना नहीं रह सकते। जिन हिन्दी प्रेमियों ने इस ग्रन्थ को अब तक नहीं लिया है उन्हें इसकी एक प्रति अवश्य लेनी चाहिए। इसके ६६ पर्व्व १८ भागों में छपे हैं जिनका मूल्य २०॥।-) है। प्रत्येक भाग जुदा जुदा भी मिल सकता है। मूल्य १।) के लगभग है।

अन्य उपयोगी पुस्तकें ।

सुजान चरित्र (भरतपुर के राजा सुजान सिंह का इतिहास) २)
हम्मीर रासो (रणथंभौर के वीर शिरोमणि महाराज हम्मीर देव का जीवन चरित) २)
हम्मीर हठ ,, ॥)
जंगनामा (दिल्ली के बादशाह बहादुर शाह के पुत्रों का युद्ध) ॥।)
दादूदयाल की बानी १॥।)
दादूदयाल के सबद १।=)
इन्द्रावती १॥)
कवि आनन्द घन कृत बिरहलीला =)
भूषण ग्रन्थावली (प्रसिद्ध कवि भूषण के शिवराज भूषण, शिवा बावनी आदि ग्रन्थ) १॥।=)
महिला मृदुबाणी (भारत वर्ष की विदुषी स्त्रियों की संक्षिप्त जीवनी) १)
हिम्मत बहादुर विरुदावली (बांदे के प्रसिद्ध वीर हिम्मत बहादुर का चरित्र) ॥।)
नन्ददास की रासपंचाध्यायी ।=)
अखरावट ।=)
यूरोपीय दर्शन (यूरप के दर्शन शास्त्र का इतिहास) ॥।)
परिचर्याप्रणाली (रोगी की शुश्रुषा करने की विधि) ।)
संक्षेपलेखप्रणाली अर्थात् हिन्दी शार्टहेण्ड १)
महाराणा प्रतापसिंह (नाटक) ॥।)

ये सब पुस्तकें मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से मिल सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्तर वर्म्मन की बनाई

जूड़ीबुखार वा तिल्ली की दवा

२६ वर्ष की परीक्षित

(१) तीन चार मौताज ही में बुखार का आना बन्द होता है, (२) थोड़ेही दिन के सेवन से खून गाढ़ा होता है और दुबारा नहीं आता (३) यह पिल्ही वा तिल्ली को गलाती है। मोल छोटी शीशी ॥) बड़ी शीशी ॥।=) आने। डा: म: ।-) २ तक ।=) डा: म: ।=) २ तक ॥)

दाद की मलहम।

एक बार के लगाने से खुजली मिटती है। दो तीन बार के लगाने से दाद जड़ से छूट जाती है, जब सब दवाइयां लगा कर थक गये हो तो इसका व्यवहार करो। मूल्य ।) आने डिबिया डा: म: १ से ६ तक ।-) १२ तक ।=)। विशेष हाल वा प्रशंसापत्रों की पूरी पुस्तक बिना मूल्य मंगाकर पढ़िये।

पुराने मेलेरिया बुखार की गोलियां।

इन गोलियों में नाम मात्र भी कुईनैन नहीं है। वास्तव में जहां बार बार कुईनैन वा कुईनैन मिली हुई दवाएं खाने पर भी बुखार नहीं छोड़ता अथवा पुराना हो गया हो, ये गोलियां ऐसी हालत ही के लिये बनी हैं। जाड़ा बुखार पुराना पड़ जाने पर पारी से न आकर दिन रात थोड़ा बहुत बना रहता है। शरीर का खून पतला पड़ने से रंग फीका व मैला हो जाता है। थोड़े ही श्रम से कलेजा कांपता है, स्वास फूलता है, भूख घट जाती है, पिल्ही वो यकृत के बढ़ने से पेट निकल आता है, कभी कभी मुंह वो हात पैरों में सूजन आजाती है और ज़िन्दगी व्यर्थ जान पड़ती है, ऐसी हालत में भी ये गोलियां गुण देती हैं।

मोल २४ गोलियों की डिबिया ॥) आने।

डाक महसूल १ से ६ डिबिया तक ।-) १२ डिबिया ।=) आने।

डा: एस, बी, वर्म्मन ५, ह, तारा चंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. Mumukshu Bhawan Varanasi Collection. Digitized by eGangotri

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पुस्तक संख्या १९ और २०

[संख्या ३७]

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला।

सम्पादक, श्यामसुन्दर दास बी० ए०।

१०१२३
२२-८-६१

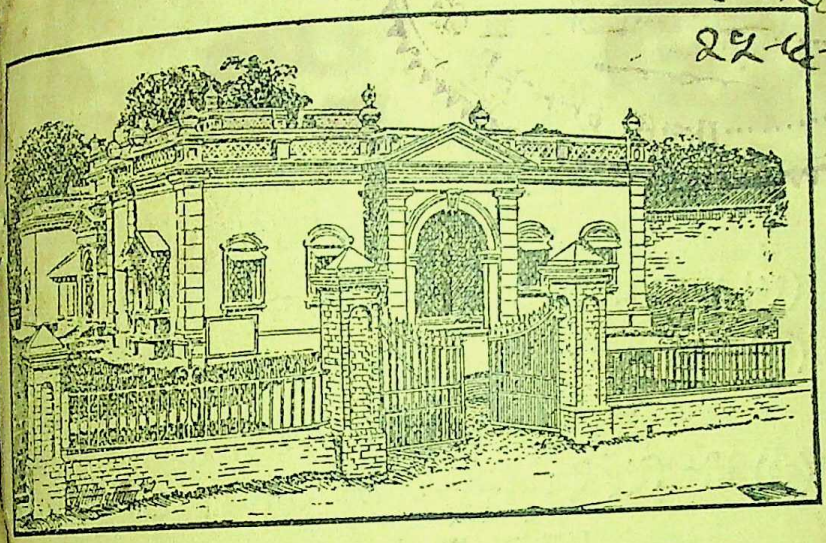

Fasciculus No. 37.] [Books 19 & 20.

NAGARI-PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR—

SYAMSUNDAR DAS. B. A.

६१
२८

PUBLISHED BY
THE NAGARI-PRACHARINI SABHA,
BENARES.

मूल्य प्रति संख्या ।।) [*Price per fasciculus As. 8.*

ISSUED ON THE 30th JUNE 1912.

Printed by Alopi Prasad, at the Medical Hall Press, Benares Cantt.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओ३म् ।

सा० संख्या———— पंजिका संख्या————

पुस्तकों पर सर्वप्रकार की निशानियां लगाना अनुचित है ।

कोई विद्यार्थी पन्द्रह दिन से अधिक पुस्तक नहीं रख सकता ।

विषयानुक्रमणिका ।

(१८) भूषण ग्रन्थावली का सूचीपत्र पृष्ठ ग और टाइटिल पेज
(१९) देवग्रन्थावली (सुजान विनोद) पण्डित गणेशविहारी मिश्र सम्पादित पृष्ठ ३३–८६
(२०) वीर सिंह देवचरित्र–पण्डित रामचन्द्र शुक्ल सम्पादित पृष्ठ २५–४०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Nagari-Pracharini Granthamala Series No 17.
Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूषणग्रन्थावली ।

श्यामविहारी मिश्र एम० ए० और

शुकदेव विहारी मिश्र बी० ए०

सम्पादित

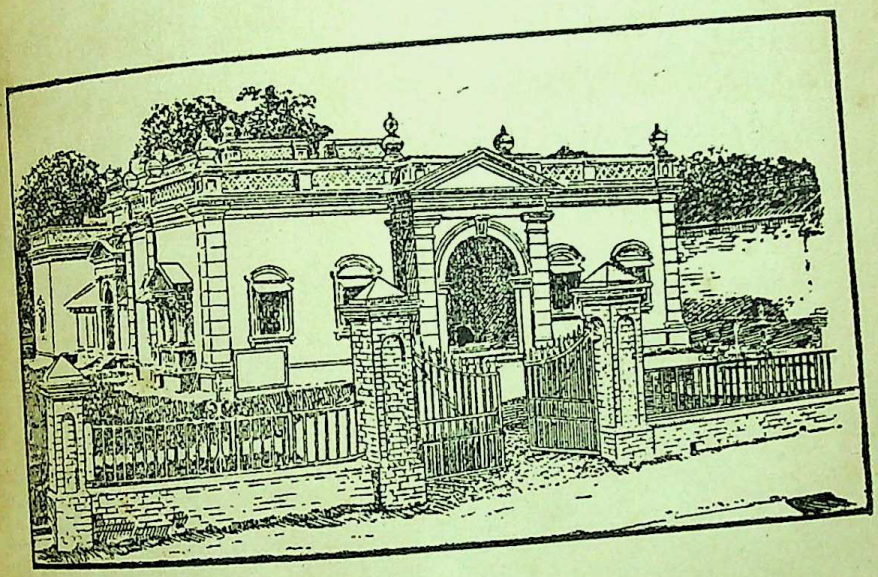

तथा

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित

१९१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Printed by Alopi Prasad at the Medical Hall Press, Benares.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग)

(३) श्रीशिवाभावनी ग्रन्थ पृष्ठ १२६–१४९
(४) श्रीछत्रशालदशक ग्रन्थ पृष्ठ १५०–१५६
(५) स्फुट काव्य पृष्ठ १५७–१६२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रिआ ॥ हहर हहर हँसि हँसिकै हिँडोरे चढ़ी यहर यहर तन कोमल यहरिआ । फहर फहर होत पीतम को पीतपट लहर लहर होत प्यारीकी लहरिआ ॥ ८ ॥

दोहा ।

मुग्धनिके दस दसा अरु मध्य अवस्था आठ ।
प्रौढ़निके दसहाव ए रसिक कहत सुखपाठ ॥ ९ ॥
दसा अवस्था हाव दस यद्यपि सकल तियान ।
तदपि रसिकक्रमते कहत मुग्ध मध्य प्रौढ़ानि ॥१०॥

अथ दशअवस्था नाम दोहा ।

प्रथम कहौं स्वाधीनपति, बासकसज्जा, फेरि ।
उत्कंठितारु, खंडिता, कलहंरिता, हेरि ॥ ११ ॥
बिप्रलब्ध,अभिसारिका, प्रोषितपतिका, बाम ।
आठ अवस्थाभेद करि यहि बिधि आठौ नाम ॥१२॥
नारि प्रबत्स्यत भर्तिका, आगतपतिका और ।
इन्है सहित दस अवस्था बरनत कबि सिरमौर ॥१३॥

क्रमते लक्षण ॥

सो कहिए स्वाधीनपति जाके पति आधीन ।
बासकसज्जा सेजको साजै बाल प्रबीन ॥ १४ ॥
पिय आगम बीतति समय उत्कंठित चितचीत ।
खंडित बार सो खंडिता प्रातहिँ आवै मीत ॥१५॥
कलहंतरिता कलह करि पुनि पाछे पछिताइ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिप्रलब्ध पिय ना मिलै जेहि संकेत बुलाइ १६
अभिसारिक पिय गृह चलै समय समान सरूप ।
प्रोषितपति परदेस पति दैगेा अवधि अनूप १७

स्वाधीनपतिका यथा कबित्त ।

मोती नग हीरनि गहीरनि बुनत हार चीरनि चुनत चोप चितै चित चाड़िली । फूलनि के भूषन सजत ब्रजभूषन तजत प्यास भूखन अनोखी उर आड़िली ॥ अतरनि तर करि चोवनि चुपरि देव उपटि न्हवाई है गुलाबनिमैं गाड़िली । आली या महल औरि टहल उठाय राखी आठहू पहर लड़वा-इयत लाड़िली ॥ १८ ॥

सखी नायका सेाँ यथा ।

लोचन लचाइ लचि लाजनि चलति त्यौं त्यौं लाल लचे जात चित लागी ललचई है । देव दृग दोऊ भरि हौसनि हियेा उभरि भुजभरि भाग अनुराग भरिलई है ॥ सौं हे सुखदानि तौ सुखद मुख देखि पल आध न अघात देख साध नित नई है । धनिधनि रूप गुन सधनि अनूप धन या गृहधनी को निधनी को धन भई है ॥ १९ ॥

नायका सखीसेाँ ।

लै परजंक धरै भरि अंक निसंकहै स्वावत प्रेम उपायनि । चौंकिपरै तौ परै उरलागि हिये-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सौं हियो अनुरागि सुभायनि ॥ लाजनि हौं लरजौं गहिरी बरजौं गहिरी कहि री केहि दायनि। जागत जानि कहानी कहै अरु सोवत जानि पलोटत पायनि ॥ २० ॥

अथ बासकसज्जा।

पामरिन[1] पाँवड़े परेहैं पुर पौरि लगि धाम धाम धूपनि के धूम धुनियतु है। कस्तुरी अतरसार चोवा रस घनसार दीपक हजारनि अँध्यार लुनियतहै ॥ मधुर मृदंग राग रंग के तरंगनिमैं अंग अंग गोपिन के गुन गुनियतु है। देव सुखसाज महाराज बजराज आजु राधाजू के सदन सिधारे सुनियतु है॥२१॥

सुख सेजहि साजि सिँगार सजे गुहि बार सुगंध सबै चसिकै। चुनि चूनरी लाल खरी पहिरी कबि-देव सुबेस रह्यो लसिकै ॥ पिय भेटिबे को उमगी छतियाँ सु छिपावति हेरि हियो हँसि कै। अँगिया की तनी खुलि जानि घनी सु बनी फिरि बाँधति है कसिकै ॥ २२ ॥

अथ उत्कंठिता।

बासके किवार निसि नेसुक अबार भई हेरति सवार की निवारति सु देहरी। एकै बाम सौतिधाम सोध लेन धाई है पठाई चहूँ घाई एक ठाई द्वार दे-

---

१ दुशाला, पश्मीना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हरी ॥ झाँकति झरोखनि झुकति मुरझाति देव बेनी मुरझाव तिय लपटी सनेहरी । जावक के रंग रपटी-सी दपटीसी लपटीसी लालपटी झपटीसी काम केहरी ॥ २३ ॥

खरी दुपहरी हरीभरी फरी कुंज मंजु गुंज अलिपुंजनि की देव हियेा हरिजाति । सीरे नदनीर तरु सीतल गहीर छाँह सेावैं परे पथिक पुकारैं पिकी करिजाति ॥ ऐसेमैं किसेारी भेारी कोरी कुम्हिलाने मुख पंकज से पाय धरा धीरज सेाँ धरिजाति । सौंहे घामस्याम मगहेरति हँथेरी ओट ऊँचे धाम बाम चढ़ि आवति उतरि जाति ॥ २४ ॥

अथ खंडिता ।

गातते गिरत फूल पलटे दुकूल अनुराग अनुकूल भाग जाके बड़भाग के । अंजन अधरबीच नखरेख लाललाल जावक तिलक भाल सघन सुहाग के ॥ भौंहै अलसौहैं पल सोहैं पगेपीक रसरगमगे नैन रैनि जागे लगेलाग के । काहेको लजात जलजात से बदन मेाँहि महा सुख देत आए देत पेंच पाग के ॥ २५ ॥

हित की हितू री नहि तू री समुझावैं आनि सुख दुख मुख सुखदानि को निहारनेा । लपने[1] कहाँलौ बालपने की बिकल बातैं अपने जनहि सप-

१ याद करना, कहना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेहू न बिसारनेा ॥ देवजू दरस बिनु तरसि मरयो है पगपरसि जियैगो मनबैरी अनमारनेा । पतिव्रतवती ए उपासी प्यासी अँखियन प्रात उठि पीतम पिआयेा रूप पारनेा ॥ २६ ॥

अथ कलहांतरिता ।

सखीके सकोच गुरुसोच मृगलोचनि रिसानी पिय सेाँ जु नेकु उन हँसि छुयो गात । देव वे सुभाय मुसक्याय उठिगए यहि सिसिकि सिसिकि निसि खेाई रोय पायेा प्रात ॥ कौन जानै बीर बिन बिरही बिरहबिथा हाय हाय करि पछिताय न कछू सेाहात । बड़े बड़े नैननि ते आँसू भरि भरि ढरि गेारेागेारो मुख आजु अेारो सेा बिलानेा जात ॥२७॥

प्रानप्यारे पति केा करत अपमान तब जानत न देव अब प्रान तन खेात क्यौं । रेागी ज्यौं सुबात बात कहत सम्हारत न इत उतपात उत पातकीन पेात क्यौं ॥ केासत है आप अपसेास करै आपही ते रेासकरि तबतौ रिसात अब रेात क्यौं । पूँछै किन केाई इन्है पीछे पछितात कहा सूर छत जेाय छिति मूरछित हेात क्यौं ॥ २८ ॥

सौति चितौति चितै दुचितै दुचितै न बिलेाचन की रुचि घूमै । ताहित नंत यकंतहि कंत सेा आँखिन मैं अँसुआ झुकि झूमै ॥ सेाचि बधू रिसके मिस लैगई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाह कौ बाँह गहे रँगभूमैं । देव दुहू कर लीन्ही बलाइ लगाइ हिये पियके पग चूमैं ॥२८॥

अथ बिप्रलब्धा ।

सुखदै बुलाइ बन सूनेा दुख दूनेा दियेा एकैबार उससे सरोस साँस सरकनि । अाँचक उचकि चित चकित चितौति चहूँ मुकुतहरानि थहरानि कुच थरकनि ॥ रूप भर भारे वे अनूप अनियारे दृगकोरनि डरारे कजरारे बूँद ढरकनि । देव अरुनई अरु नईरिसि छबि सुधामधुर अधर सुधामधुर की फरकनि ॥३०॥

प्यारी सँकेत सिधारी सखी सँग स्यामके काम सँदेसनि के सुख । सूनेा इतै रँगभौनु चितै चित मौन रही चकि चौंकि चहूँरुख[1] ॥ एकहीबार रही जकि ज्यौंकित्यौं भौंहनि तानिकै मानि महादुख । देव कळू रद बीरी दबी सो सु हाथकी हाथ रही मुखकी मुख ॥ ३१ ॥

अथ अभिसारिका यथा ।

सूझत न गात बीति आई अधराति अरु सोए सब गुरजन जानिकै बगरके[2] । छिपिकै छबीली अभिसार को केवार खोले खुलिगे खजाने चारु चंदन अगर के ॥ देव कहै भौंर गुंजि आए कुंजकुंजनि ते पूँछि पूँछि पीछे परे पाहरू डगरके । देवता कि दामिनी

१ चारो तरफ ।

२ घर के, अहाते के ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मसाल किधौं जोतिजाल झगरे मचत जागे सिगरे नगरके ॥३२॥

हँसत हँसत आई भावते के मन भाई देव कहै छबिछाई सोनेसे सरीरसों। तैसी चन्दमुखी के वा चंद मुख चंद्रमा सों होड़ परी चाँदनी औ चाँदनीसे चीरसों॥ सोधेकी सुबास अंगबास औ उसास बास आसपास बासि रही सुखद समीर सों। कुंज तजि गुंजत गभीर गिरि तीर तीर रह्यौ रँगभौन भरि भौरनि की भीर सों ॥३३॥

अथ प्रोषितपतिका दोहा।

प्रोषितपतिका तीनिबिधि चलीचले अवतंत्र।
पतिहि प्रवत्सत गतागत[1]पतिकहु कहु मतिमंत्र॥३४॥

अथ प्रवत्सत्पतिका यथा कबित्त।

नंदघरै बृषभान के भौनते जान कह्यौ हरि देव सुहासनि। ताही घरीसों घिरी पटलाज घरीकै घरी उघरी बतियाँ सुनि॥ प्रात अरंभ की खंभ लगी निरदंभ निरंभ सम्हारै न साँसनि। ठाढ़ी बड़े खनकी बरखै सु बड़ी अँखिआनि बड़े बड़े आँसुनि ॥३५॥

कल न परति कहूँ ललन चलन कह्यो बिरह दवा सों देह दहकै दहक दहक। लागी रहै हिलकी हलक सूखी हालै हियो देव कहै गरो भरो आवत गहक गहक॥ दीरघ उसासै लैलै ससिमुखी ससकति

[1] गत, आगत = गतागत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुलप सलोनो लंक लहकै लहक लहक । मानत न बरज्यो सुबारिज से नैननि ते बारिको प्रबाह बह्यो आवत बहक बहक ॥३६॥

अथ प्रोषितपतिका ।

बालम बिरह जिन जान्यो न जनम भरि बरि बरि उठै ज्यौं ज्यौं बरसै बरफ राति । बीजन डुलावत सखीजन सो सीतहू मैं सौतिन सराप तन तापनि तरफराति ॥ देव कहै साँसनि सों अँसुवा सुखात मुख निकसै न बात ऐसी सिसकी सरफराति । लौटि लौटि परति करौट खटपाटी लैलै सूखे जल सफरी[1] लौ सेजपै फरफराति ॥३७॥

चारोजाम जामिनि के युगसे जगाए जागि आगिसी जगावति उसासनि की फूक है । गगनके उड़गन गनत ही गए लखि लगन सो लाग्यौ उड़गन-पति ऊक है ॥ देव सुखदानि बिनु को दुख बटावै आनि केते दुखदानि परे सोवै सुखमूकहै । सखियाँ धौं मेरी मोंहि अँखिया न सींचती तौ याही रतिया मैं जाति छतिया छटूक ह्वै ॥३८॥

देव ब्रजचंद मुख आदरस धोखे तोहि सादर दरस देखो लाज हित हानि की । नाहीं तो समीप तोसों अहित समीप कहा तेरीसी न धुनि कुलबधुनि

१ मछरी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की बानि की ॥ तब तू सुधाकर सु दोषाकर देखो करते वे बिष बीची होती सीची प्रियपानकी। सकल कलानि तू कलानिधि कुटिल जानि परो सुखदानि कानि मेरे सुखदानि की ॥३८॥

अथ आगतपतिका।

धाई खोरिखोरि ते बधाई पिय आवन की सुनि कोरिकोरि रस भामिनि भरति है। मोरिमोरि बदन निहारति बिहारभूमि घोरि घोरि आनँदघरी सी उघरति है ॥ देव कर जोरि जोरि बंदत सुरन गुरु-लोगनि के लोरिलोरि पायन परति है। तोरितोरि माल पूरै मोतिन की चौक निवछावरि को छोरि छोरि भूषन धरति है ॥४०॥

आवन सुन्यौ है मनभावन को भावती ने आँखिन अनंदआँसू ढरकि ढरकि उठैं। देव दृग दोऊ दौरिजात द्वारदेहरी लौ केहरीसी साँसै खरी खरकि खरकि उठैं। टहलै करति टहलै न हाथ पाँय रंगमहलै निहारि तनी तरकि तरकि उठैं। सरकि सरकि सारी दरकि दरकि आँगी औचक उचौहैं कुच फरकि फरकि उठै ॥४१॥

बैठीही सुंदरि मंदिरमैं पतिको पथ पेखि पति-ब्रत पेखे। तौलगि आएरी आए कह्यो दुरि द्वारते देवर दौरि अनेखे ॥ आनँद सों गुरुकी गुरुता हू गनी गुनगौरि न काहु हूँ ओखे। नूपुर पाय उठे झननाय सो जाय लगी धन धाय झरोखे ॥४२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आगमन पीतम चलेकी सुनि चली स्वास आगे आँसू चले ते छिपाये छलछंदही । सिसकी भरत मिसकी न बात बिसकी सी बेलि बाढ़ी उतपात हिये दुख-कंद ही ॥ देव लखि लौटि पिय दीनो पग आइबेको बासही की स्वासमैं हुलास ह्वै अनंदही । निघट्यौ न दुख उघट्यौ न सुख घूँघुटहो ससक्यो सकान्यो मुसुकान्यो मुख मंदही ॥४३॥

अथ मध्याकी सखीकी उक्ति नायक सौं ।

केसरि किंसुक औ बरना[1] कचनारनि की रचना उर सूली । सेवती देव गुलाब मलै मिलि मालती मल्लि मलिंदनि हूली ॥ चंपक दाड़िम नूत महाउर पाडर डार डरावनि फूली । या मयमंत[2] बसंत मैं चाहत कंत चल्यो हमही किधौं भली ॥४४॥

देव जौ बाहिरही बिहरै तौ समीर अमीरस बिंदु लै जैहै । भीतर भौन बसै बसुधा ह्वै सुधा मुख सूँघि फनिंद लै जैहै ॥ जैये कहूँ यहि राखि गोबिन्द कै इन्दुमुखी लखि इन्दु लै जैहै ॥ राखिहौ जौ अर-बिंदहु मैं मकरंद मिलै तौ मलिंद लै जैहै ॥४५॥

मध्यासौं सखीकी शिक्षा ।

बारियै बैस बड़ी चतुरी हौ बड़े गुन देव बड़ी-ऐ बनाई । सुंदरी हौ सुघरीहौ सलोनीहौ सील भरी

---

१ वृक्ष विशेष ।

२ माया करनेवाले ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस रूप सनाई ॥ राजबहू बलि राजकुमारि अहो सुकुमारि न मानौ मनाई। नैसिक[1] नाह के नेह बिना चकचूरहैं जैहै सबै चिकनाई ॥४६॥

सखीको परिहास नायकासौं।

चोप दै चित्तहि मैं रसकी दिन रातिन देव दुरे दिखई हौ। वे दिन नाहिँ भटू भयके जब भीत भई भकि कै झिखईहौ ॥ ढीठ भई ढिग सोवत स्याम के कामकला लिपि ज्यौं लिखई हौ। आनहि क्यौं उर आनहु जू अबतौ हरि सौं बिषई सिखई हौ ॥ ४७ ॥

कुटिल कटीली भृकुटीन मैं उचाटु चाटुबचननि[2] चेटक कै ढिगही ढुरै लयो। सोखन सरोष मंदहाँसी मैं बसीकरन मारन मरोर मारसरनि मुरै लयो ॥ सौहैं सरसोहैं अरसोहैं औ हसौहैं हरि पीतम सौं देव प्रेम पूरन पुरै लयो। सैननि सौं चोराचोरी नैननि सौं जोराजोरी भोरीभोरी बातनि सौं भावतो भुरै लयो ॥४८॥

मध्याकी सौभाग्य चेष्टा।

खोलिकै कपाट दीन्हे अंतर कपाट रँगरावटी मैं ओट बैठी सोंधो सु बटति ही। पोंछति कपोलनि अँगोछति उरोजनि तिलोछति सु केस देस चोवा चुपटतही ॥ मैंहदी रचाय कर पावन महाउर दै

१ थोड़ा भी।
२ वचन चातुरी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखति कनखियनि सखी उपटति ही । केलि सुखसंग की उमंगनि अकेली दिवा देव सु गँवावै अंगअंग उबटति ही ॥४८॥

मध्याकोसुरतांत ।

पीके जिय जीकरति प्रीति उपजी करति नाँहीँकै नजी करति हिये हुलसी करति । त्यौरी तिरछी करति नासामोरि छीकरति छाती छूए छीकरति साँस उससी करति ॥ देव अस सीकरति करिबर सी करति येाँही अरसी करति सौँहे अरसीकरति । सीकरति ओठनि बसीकरति आँखिन रिसोहीँ सौँहतीकरति भौँहनि हँसीकरति ॥५०॥

सोवत आइ जगाइकै कंठ लगाइ कह्यो अँग देखि लिए मैँ । नींद उचाकि कै चोँकि कह्यौ तिय देव दिए दृग दोऊ दिये मैँ ॥ क्योँ रहै लाज जहाँ तुमसे लपटातहैँ लंपट ओठ किए मैँ । योँउठि ईठ सोँ रूठति भौँहनि ऐँठति पैठति जाति हियेमैँ ॥५१॥

सुरतांत ।

सेजते धरनि पर पाय की धरनि रदरेख अधरनि मधुरनि सुरबरी लेत । लूटिसी करत कलहंस जुग देव कहि टूटि मनिहार छिति छूटि दुरदरी लेत ॥ बारबार बसन निहारत न पावै मोर भौरन चकोरनि निहारि हुरहरी लेत । नैननि तरेरि टेरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैरिनिको फीकेमुख पीको मुख हेरि फेरिफेरि फुरहरी लेति ॥५२॥

अथ मानभेददोहा।

देखत बोलत भोगवत सौति रीझि पतिप्रान।
लघु गुरु मध्यम धीर क्रम लघु गुरु मध्यम मान ॥५३॥
धीरा रूसै धीर करि कोप अधीर अधीर।
मध्या प्रौढ़ा मान इमि मुग्धा लाज गँभीर ॥५४॥

मध्याधीरा यथा।

भारेहौ भूरि भुराई भरे अरु भाँतिन भाँतिन कै मनभाए। भाग बड़ो वहि भावती को जेहि भावते लै रँगभौन बसाए॥ भेष भलोई भली बिधिसौं करि भूलिपरे किधौं काहू भुलाए। लाल भलेहौ भलो सुखु दीनो भलीभई आजु भले बनिआए ॥५५॥

प्यारी हमारी सो आवो इतै कबिदेव कुप्यारी ह्वै कैसेकै ऐये। प्यारी कहोमति मोसौं अहो कहि प्यारी यौं प्यारकी प्यारी बुलैये॥ कै वह प्यार कै एतो कुप्यारु औ न्यारी ह्वै बैठिकै बात बनैये। प्यारे पराए सौं कौन परेखो[1] गरेपरि कौलगि प्यारी कहैये ॥५६॥

मध्याअधीर यथा।

मैं समुझायो नहीं समुझै मनको अपनो अपमान न सूझै। मोहन मान करै तौ गरेपरि देव मनैबे

१ भरोसा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को जाइ अरूझै ॥ काको भयो सबसों बिगरो यह जाको मरै सुतौ बात न बूझै । सौति हमारी सो प्यारेकी प्यारी ता प्यारे के प्यार परोसी सौं जूझै॥५७॥

मध्याधीराधीरा यथा ।

आजु कछू अँसुआनि भरे दृग देखिए सो न कहौ जिय जोहै। चूकपरी हमही ते कछू किधौं जापर कोप कियो वह कोहै ॥ चूक अचूक हमारी है आनको को नहिँ योबन के मद मोहै । स्याम सुजान सुजानै बलायल्यौं जोई करौ तुमको सब सोहै ॥५८॥

इतिश्री सुजानबिनोदे कबिदेवदत्तविरचिते, मध्या-सुंदरी नवकिशोर दशअवस्यादि बर्णन चतुर्थो बिलासः ४॥

अथ प्रौढ़ासुंदरी रसिकराइसौं मोदसमय शरदादिक ऋतु पूर्णशृंगार बिलास वर्णनं ।

दोहा ।

प्रौढ़सुंदरी भामिनी रसिकराय ब्रजनाथ ।
हाव भाव बस सरस चित बिहरत निसि दिन साथ॥१॥

राग सुनत अनुराग सौं परिहासरु उपहास ।
मान दान लीलादि करि उत्सव रास बिलास ॥२॥

मृदुबानी बीना बिमल नृत्य गीतरस लेत ।
रंगमहल मज्जन सुरभि सुखसज्जा संकेत ॥३॥

प्रगट सखी दूती प्रगट समय समय सामोद ।
सरद सिसिर हेमंत सुख नित बिहार गृह गोद ॥४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रौढ़ासुंदरी यथा ।

कंचन किनारी वारी सारी तासकीमैं[1] आसपास भूमी मोतिन की झालरि यकहरी । सीसफूल बेना बेंदी बेसरि औ बीरनि की हीरनि की भीर मैं हँसनि छबि छहरी । चंद से बदन भानु भई बृषभानुजाई नयन लुनाई की उवनि कीसी लहरी । काम घाम घी ज्यौं पघिलतु घनस्याम मन क्यौं सहै समीप देव दीपति दुपहरी ॥ ५ ॥

देखि न परति देव देखिबेकी परी बानि देखि देखि दूनी दिखसाध उपजति है । सरद उदित इन्दु बिन्दुसो लगत लखे मुदित मुखारबिंद इन्दिरा लजतिहै ॥ अदभुत ऊख सी पियूष सी मधुर सुनि सुनि धुनि स्रवननि भखसी भजति है । मंत्री करयो मैंन परतंत्री करयो बैन नीके बिना तार तंत्री जीभ यंत्री सी बजति है ॥ ६ ॥

रसिकराव यथा ।

देव दरसन वारे रस बरसन वारे अति अभिराम स्यामघन घनसी[2] वारे । कुंजगली बन वारे गोरस पिवन वारे ब्रजके जीवन वारे प्रान धन सी वारे ॥ अगम जतन वारे आगम मनन वारे कोटिन कृतन वारे तोषै तनसीवारे । ललित लकुट वारे मोहन

---

१ तारों से बिना हुआ कपड़ा ।

२ बादलों की शोभा वाले ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुकुट वारे पीतपट वारे नट वारे बनसी वारे ॥ ७ ॥

ब्रजपुर प्यारे ब्रजजननिके ज्यारे ब्रजजीवन उज्यारे रे पुजारे ब्रज पैयन के । ब्रजके अनंद ब्रजबंधु ब्रजचंद देव नित हितकंद ब्रजमंडल बसैयन के ॥ कुँअर कन्हैया बलभैया गोपी प्राननाथ तात हित प्रानन के प्रानधन मैयन के । महरि के बारे बंसीवारे रे कामरि वारे मोरपंख वारे रखवारे ग्वार गैयन के ॥८॥

दुहून की चेष्टा ।

फलि फलि फूलि फूलि फैलि फैलि झूलि झूलि झपकि झपकि आईं कुंजै चहुँकोद ते । हिलिमिलि हेलिन सौं बेलिन बिलोकि बधू बरजे सहेलिन के ब्रज के बिनोद ते ॥ नंदजू की पौरि पर ठाढ़े हे रसिक देव मोहनजू मोहि लीन्ही मोहनी प्रमोद ते । गाथनि सुनत भूलीं पायन के फूल गिरे हाथनि के हाथनि ते गोदनि के गोद ते ॥ ९ ॥

धौरे धौरहर पर सरद जोन्हाई छबि छाई ससि सरद बधूके अवतंस की । देव त्यौं बिमल मालती के फूलदलनि की सेज अनुकूली बेली परिमल बंसकी ॥ भरि मुकुतान रैनि रानीराधा माधौ संग जाकी सरि करति न रमा रूप अंस की । मेरु के सिखर सुधा-सागर रजतरेती जगमगी जोरी ज्यौं बिराजी राज-हंस की ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरन सरद ससि उदित मुदित दोऊ बिहँसि बिलसिबे को देव रस भरे हैं। छीरज[1] बरन बनि छबिसों छबीले छैल छबि ही की गैल छिपिबे को बेष धरे हैं॥ चाँदनी महल मिलि गए चारु चाँदनी मैं पून्यौ की रजनि परिजन अनुसरे हैं। मूढ़ भए ढूँढ़त अगूढ़ गूढ़ पैयत न साँझ है निहारे तौ सवारे सूझि परे हैं॥ ११॥

दंपति को प्रेम।

आपुस मैं रस मैं रहसैं बहसैं बनि राधिका कुंजबिहारी। स्यामा सराहति स्याम की पागहि स्याम सराहत स्यामा की सारी॥ एकहि दर्पन देखि कहै तिय नीके लगौ पिय प्यौ कहै प्यारी। देव सु बालम बाल को बाद बिलोकि भई बलि मैं बलिहारी॥ १२॥

दोहा।

पूरन रस भावन सहित तन मन प्रेम सुभाव।
मुग्ध, मध्य, प्रौढ़ानि के सहज होत रस हाव॥१३॥
तदपि प्रेमवति तरुनमद प्रौढ़ा तियनि बिसेखि।
चतुर चेष्टा हाव कहि परत निरंतर देखि॥ १४॥

अथ हावनाम।

लीला, अवर बिलास, गनि अरु बिच्छित्त, बिलोकि।

---

१ चन्द्रमा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिभ्रम, किलकिंचित, सहितमोट्टायित, बिब्बोकि॥१५
कह्यो कुट्टमित, अरु बिहित, ललित लह्यो दस हाव
तियके पिय संयोग बस उपजत प्रौढ़ सुभाव॥ १६ ॥

अथ लीलादि हावलक्षण दोहा ।

कपट वेष भाषान करि लीला मैं रस हास ।
सरस भाव तन मन रुचिर बचननि रचति बिलास॥१७

लघुमंडनहि बिछित्त मैं मन अभिमान विसेष ।
बिभ्रम सो जु प्रमाद ते उलटे भूषन बेष ॥ १८ ॥

किलकिंचित यकबार भय मद सुद रस रिस मान ।
मिलै कपट मोट्टायितौ मन बच अन तन आन ॥१९

मन मैं सुख संकट कपट प्रगट कुट्टमित हाव ।
पिय सदोष बिब्बोक वह ट्रग भौंहन के भाव ॥ २०॥

अपनी तौ मिस लाज छल बिहित आन तन आन ।
ललित सरस रचना ललित बरनत सुमति सुजान॥२१॥

अथ लीलाहाव यथा कबित्त ।

रच्यो कचमौर सुमोरपखा धरि काकपखा मुख राखि अराल[1] । धरी मुरली अधराधर लै सुर ली सुर लीन ह्वै देव रसाल ॥ पितंबर काछनी पीतपटी धरि बालम बेष बनावति बाल । सरोजन खोज निवारन को उर पैन्ही सरोजमई मृदु माल ॥ २२ ॥

---

१ कुटिल । घुघुराला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रेमगर्बलीला यथा।

स्याम सनमुख अभिराम सुख आठौ जाम सरस सकाम व्है बढ़ायो नेह नूतना। प्रेम ते पुकारी वृषभानकी कुमारी देव हौं ही गिरधारी मैं ही मारी प्रेतपूतना॥ नीलपट झपटि लपेटि छिगुनी पै राखि टेरि टेरि कहै हँसि हँसि हरिजू तना। बात बिज्जुपात महा मेह उतपात करि सात दिन रात क्यौं रिसात पुरहूत[1] ना॥२३॥

अथ वियोगलीलास्मरण यथा।

हौं भई दूलह वे दुलही उलही सुखबेलि सी केलि घनेरी। मैं पहिरो पिय को पियरो पहिरी उन री चुनरी चुनि मेरी॥ देव कहा कहौं कौन सुनै री कहा कहे होत कथा बहुतेरी। जे हरि मेरी धरैं पग जेहरि ते हरि चेरी के रंग रचे री॥२४॥

अथ बिलास हाव यथा।

पीछे परबीनैं बीनैं संग की सहेली आगे भार डर भूषन डगर डारै छोरि छोरि। चौंकति चकोरनि त्यौं मोरैं मुख मोरनि त्यौं भौरनि की ओर भीरु देखै मुख मोरि मोरि॥ एक कर आलीकर ऊपर ही धरे हरे हरे पग धरै देव चलै चित चोरि चोरि। दूजे हाथ सायनि सुनावति बचन राजहंसनि चुना-

---

१ इन्द्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वति मुकुतमाल तोरि तोरि ॥ २५ ॥

पीतरंग सारी गोरे अंग मिलि गई देव श्रीफल उरोज आभा आभासै अधिक सी । छूटी अलकनि छलकनि जलबूँदन की बिना बेंदी बंदन बदन सोभा बिकसी ॥ तजि तजि कुंज पुंज ऊपर मधुप गुंज गुंजरत मंजु रव बोलै बाल पिक सी। नीबी उकसाइ नेकु नयन हँसाय हँसि ससिमुखी सकुचि सरोवर तैं निकसी ॥ २६ ॥

अथ विछित्त हाव यथा ।

पैन्हति न चीर चारु भूषन बनावति न बाँधति न बार हिय हार की अगेज[1] नहि । पैन्हे पट फीके अति नीके अनआँजे दृग मीजे न अतर मुख साजै सुखसेज नहि ॥ चारिक चुरी कर सोहाग माँग मोती इतने ही इतराति सालै सौतिन करेजनहि । अँसुवनि भीजै बिछुरत छीजै छैल पिय देव क्यौं पतीजै मीजि मारै जु मजेजनहि ॥२७॥

भूषन भेष जराउ जरे परे छोरि सुगंध तमोर बिसारेई । पैन्हे फिरै पियरे पट फीके सुनीके लगैं मुख ही के उज्यारेई ॥ बंदन बेंदी लिलार लसै चुरी चारि सोहाग की रारि पसारेई । लाज लगै अरबिंदन देव रची मेंहदी करबिंदु निहारेई २८ ।

---

१ बरदाश्त (अंगेज़)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ बिभ्रम यथा ।

कामकलोलनि केलि करी निसि प्रात उठी थिर ह्वै यहराय कै । आपने चीर के धोखे बधू पहिरो पट पीतम को फहराय कै ॥ बाँधि लई कटि सोँ बनमाल न किंकिनि बाल लई ठहराय कै । भावती की रसरंग की दीपति संग की देखि हँसीँ हह-राय कै २८ ॥

आई उठि सेज ते सुजान संग जागी निसि नींदन दिनहि लागी नींदन परति है । देव सुनै बोल न बोलाए बिनु बोलि उठै बौरई मैँ औरई की औरई रटति है ॥ हाँसी मिसु रोइ रोइ सौति उरहनो दैहै झूठे उरहने हेरे छतियाँ जरति है । अनखु न लागत अनोखी कुल टेव सिखी उलटे बसन पैन्हैँ जलदु करति है ॥ ३० ॥

इति बिभ्रम । अथकिलकिंचित ।

लंक गहि लीनी परजंक मैँ मयंकमुखी सुंदरी ससंक अंक अंक मैँ धसति सी । ओठनि अमेठति कटीली भौँहै ऐठति मरोरति सु नासा तन तोरति तसति सी ॥ सौँहै सतराति इतराति बतराति औ भुलाति अकुलाति उर अंतर बसति सी । आँसू दृग डोलति उसास हिय खोलति सी बोलति रिसाति सी कपोलनि हँसति सी ॥ ३१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

रतिकोबिद प्रौढ़ा यदपि रस बिमोह आनंद ।
किलकिंचित व्है जाति सेा सुग्धा अति सुखकंद ॥३२॥

कबित्त ।

लागत ही पिय के हिय सेाँ हिय मोहि रही तिय कामकलानि मैँ । देव सँजोग जगे उमगे उर एक हि बार सबै सुखदानि मैँ ॥ ही मैँ हुलास गरे सिसकी अधरानि हँसी अँसुवा अँखियानि मैँ । स्वास मैँ बास बिलास मैँ रोसु सु भौंहनि भैअन भै कुलकानि मैँ ॥ ३३ ॥

इति किलकिंचित । अथमेाट्टाइत ।

राधिका रूठी कछू दिन ते कहि देव कछू न हँसै नहिँ बेालै । नेकु चितौति नहीँ चितु दै रसहास किये हूँ हियेा नहिँ खेालै ॥ आवत लेाक की लाज के काज यही मिसि सौतिन केा सुखु छेालै । स्याम के अंग सेाँ अंग लगावै न रंग सेाँ संग सखीनु के डेालै ॥ ३४ ॥

रैनि मैँ पुरैनि लौं कमलमुख मूंदे रहै देव दिनकर दुति देखै दौरि दिन केा । बाँई बाँह नाह के नगीचही उछाह भरी छाँह भई डेालति न छुवै छाँह छिनकेा ॥ बैरु किधौँ प्रीति यह केा जानै अनेाखी रीति अनख अनीति कै सुनैये किन किन केा । औगुननि उर हेरि इनहि सुनावै केाई इनकेा न हावै समुझावै नेकु इनकेा ॥ ३५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इति मोट्टाइत। अथ कुट्टमित।

नाह सों नाहीं करै मुख सों मुख सों रति केलि करै रतिया मैं। लागे नखच्छत सी सी करै करुनाय करै पै बकै बतिया मैं॥ देव किते रतिकुंज तकै तन कंप सजै न भजै घतिया मैं॥ जानु भुजानहु को भहरावति आवति छैल लगी छतिया मैं॥३६॥

कंचुकी सँकोचि कुच कुंचित कै सुचितति अरुन निचोल सजि सूधी समुहाति है। मार रत घूमै बर मार गहे घूमै देव रसना गुननि दंत दाबे बिहसाति है॥ बिमुख न होति ज्यों दुखित सुख पावत त्यों सनमुख मुख पै घनेई घाइ खाति है। अंग अंग पति के बिपति रंग संगर मैं लोह देखि सूर ज्यों बिसेष समुहाति है॥ ३७॥

इति कुट्टमित। अथबिब्बोक।

बाग तमासे कहूं निसि काल्हि की देव बसे घनसों मन जोटै। लोपकलोप कटाच्छ कजाक[1] परे इत आवत भौहनि ओटै॥ नैन तुरंग नचाय अचानक ए करी तीखी चितौनि की चोटै। मान दिवान के गाँव गई लुटि पीतम साह की प्रीति की मोटै॥३८॥

पीक भरी पलकैं झलकैं अलकैं जु गड़ी मुलसैं भुज खोज की। छाय रही छबि छैल की छाती

---

१ क़ज़्ज़ाक़ लुटेरे (अरब के रहनेवाले)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं छाप बनी कहूँ ओछे उरोज की ॥ ताहि चितौति बड़ी अँखियान ते ती की चितौनि चली अति ओज की । बालम ओर बिलोकि कै बाल दई मनौ खैंचि सनाल सरोज की ॥ ३९ ॥

इति मिठबोक । अथ बिहित व्याज ।

बंसीबट बट के निकट जमुना के तट खेलति कुँअरि राधा सखिन के पुंज मैं । रसिक कन्हाई आइ बाँसुरी बजाई धुनि सुनि कै रही न मति गति मन लुंज मैं ॥ चलि न सकति बृन्दाबन की गलिन बीच बिकल नलिननैनी अलिन की गुंज मैं । देव दुरि जाय अकुलाय सु सस्मितमुखी कुसमित बकुल कदंब कुलकुंज मैं ॥ ४० ॥

लाज ।

भेट भई हरि भावती सों यक ऐसे मैं आली कह्यो बिहसाय कै । कीजै लला रसकेलि अकेलिये केलि के भौन नबेली को पाय कै ॥ भौंह नवाय कछू इतराय कछू रिसाय कछू मुसक्याय कै । खैंचि खरी दई दौरि सखी के उरोजन बीच सरोज फिराय कै ॥ ४१ ॥

इति बिहित हाव । अथ ललित हाव ।

देव सुबरन गुन बीध्यो है मधुर महा अधर अखारे केई सुघर घटार[1] मैं । मंद मुसुकानि पटु तानि

१ घाटी जगह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पटुता निपट न थकी ये नथ की निरत निराधार मैं॥ घूँघुट बितान तान तोरत तरयोननि सौं तिलक कपोल बेंदी तूल कै लिलार मैं। मोती लटकन की नवल नटु नाचै सदा नैन नटवानि की चटुल चटसार मैं॥ ४२॥

लागत समीर लंक लहकै समूल अंग फूल से दुकूलनि सुगंध बिथुरो परै। इंदु सो बदन मंद हाँसी सुधाबिंदु अरबिंद ज्यों मुदित मकरंदनि मुरयो परै॥ ललित लिलार रंगमहल के आँगन के मग मैं धरत पग आवक घुरयो परै। देव मनिनूपुर पदुमपदहू पर व्है भू पर अनूप रंग रूप निचुरयो परै॥ ४३॥

इति ललित। दोहा।

यहि बिधि दस बिधि हाव कबि बरनत मत प्राचीन।
सरस भाव बस चेष्टा बहु बिधि कहत नबीन॥ ४४॥

प्रौढ़ा सुंदरी रसिकराय की चेष्टा।

आगे दौरि दौरि आपु आपुही टहल करै पाछे पाछे डोलति रँगीली बरगजी[1] सी। सौति उर सूली अनकूली प्रीति प्रीतम की फूली ये रहति निसिद्यौ स रँगरजी सी॥ माधुरी की मूरति मधुर मधु भरी स्याम मधुकर मीजी मंजरी सु मरगजी[2] सी। केसरि

---

१ हाथिनी (हाथी की गति से प्रयोजन है)।
२ मींजी, कुँभिलानी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कपूर चोवा चन्दन कुरंगसार रंगनि कुरंगनैनी लागै अरगजी सी ॥ ४४ ॥

इंदीबरनैनी इन्दुमुखी सुधाबिंदुनिधि इंदिरा सी सुंदरि गोबिन्द चिंत चाहीसी । नैननि उनैसी लाज सैननि सुनैसी रुचि चैननि चुनैसी हाँसी बैननि मैं नाँहीसी ॥ प्रीति भीति प्रगट प्रतीति रीति गुपित दिपति देव दीपति छिपति छबि याहीसी । आगे आगे आनन अनूप को उज्यारो रूप पीछे पीछे प्यारो लग्यो डोलै परछाँही सी ॥ ४६ ॥

प्रौढ़ाकी सखी को परिहास ।

सापरतीति रतीक कहूँ रति आनँद की रतिया रितवो किनि । सौति न हौहूँ सरीकिनि देव घरीक तौ बातन ही बितवो किनि ॥ काहे को डीठि चोरावती मोहूँ सोँ आवती हौं तौ हियो तितवो किनि । सूधी किए भृकुटी कुटिलै चिकुटी[1] चित चापि इतै चितवो किनि ॥ ४७ ॥

उपहास ।

भई रँगराती अँगराती नियराती न सकुचि पियराती खेल अखिल अखंडितै । द्यौस दुःख ज्यौं सु प्यो सु संगहि चलावती न बदन हलावती सगुन गुन-मंडितै ॥ वेई हौ कि औरई निहारौं हौं तिहारो रूप कीनी जित देव सब सौति रस खंडितै । रैनि सुख-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दैनी रानी इन्द्रानी करै न सरि वारियत रंग पति-संग रतिपंडितै।

प्रौढ़ा धीरा यथा।

प्रेमरस पूरन तरंग रंग रंग अंग अंगनि उमंग संग संग सजि डोलती। भरी नवलाज नवला जु नवलाल उर बसी कमला है हियकमल कलोलती॥ सेवकिनि भई देव सेव किन करो हौं सनाथ कीनी नाथ साथ आई क्यौं न बोलती। लाल लाल पूतरी लै कपट सुओठ नैन खिरकी पलकपट मूँदि मूँदि खोलती॥ ४८॥

प्रौढ़ाअधीरा यथा।

को न भयो दिन चारि नयो नवजोबन जोतिहि जात समाते। पै अब मेरी हितू हमै बूझै को होत पुरानेन सों हितहाते[1]॥ देखिए देव नए नित भाग सुहाग नए ते भए मदमाते। नाह नए औ नई दुलही भए नेह नए औ नए नए नाते॥ ५०॥

प्रौढ़ा धीराधीरा यथा।

रावरे पायनि ओट लसै पग गूजरी बार महावरु ढारे। सारी असावरी[2] की झलकै छलकै छबि छोर महानि घुमारे॥ आवो जु आवो दुराहु न मोंहू सों देवजू चंद दुरै न अँध्यारे। देखौ हो कौनसी छैल छिपाय तिरीछे हँसै वह पीछे तिहारे॥ ५१॥

---

१ खंडित।

२ तार और सुरुख रेशम का बिना हुआ कपड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मैं समुझायो नहीं समुझै मन को अपनो अप-
मान न सूझै। मोहन मान करै तौ गरे परि देव मनैबे को
जाय अरूझै ॥ काको भयो सबसों बिगरो यह जाको
मरै सु तौ बात न बूझै । सौति हमारी सु प्यारे की
प्यारी ता प्यारे के प्यार परोसी सेा जूझै ॥ ५२ ॥

दोहा ।

बक्र उक्ति करि गर्बिता दूषित अन्य सँभोग ।
प्रौढ़ा धीरा मान करि हेात खंडिता जोग ॥ ५३ ॥

अथ रूपगर्बिता ।

देखुरी दर्पन ओर चितै रचि मेरे सिँगार
बिगारत हैं हरि। कंचनहू रुचि रंच रुचै नहिँ मोतिन
की सरि मेा तन की सरि ॥ देव रहै दबिसी छबि
छाती की बेाझ मरौं मनिमाल बृथा धरि । भाल मृग-
मदबिंदु बनाय कै इंदुसेा मोंहि गेाबिंदु गयेा करि॥५४॥

प्रेमगर्बिता यथा ।

आजु गई हुती कुंजनि लौं बरसैं उत बूँद घने-
घन घेारत । देव कहै हरि भीजत देखि अचानक
आय गए चित चेारत ॥ पेाटि भटू तट ओट कुटी के
लपेटि पटी सेां कटीपट छेारत । चौगुनेा रंगु चढ्यौ
चित मैं चुनरी के चुचात लला के निचेारत ॥ ५५ ॥

अन्य सँभेाग दुःखिता यथा ।

देव पुरैनि के पात निचान ते हैं जुगचक्र सिचान
गहेरी । चीते के चंगुल मैं परि कै करसायल घायल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ह्वै निबहेरी॥ मीजि कै मंजु दली कदली लरि केहरि कुंजर लुंज लहेरी । हेरि सिकार रहे री कहूँ ब्रजराज अहेरी ह्वै आजु अहेरी ॥ ५६ ॥

मानवती ।

मनहि मसूसि मन साँवरे सों रूसि सखी दासिन सो दूसि रही रंभा[1] झुकि झंझासी । आरसीमहल चित्रसारी सी चहल बिनु आनँद टहल देव मंद विधिबंझा सी ॥ सोचै सुख मोचै सुकसारिका लचाए चोंचै रोचैं न रुचिर बानि मानि रहे अंझासी । संगके सकल अंग अचल उछाह भंग ओज बिनु सूखति सरोज बन संझासी ॥ ५७ ॥

प्रौढ़ा सुरति ।

आगे धरि अधर पयोधर सधर जानि जोरावर जघन सघन लरे लचिकै । बार बार देति बकसीसै जैत-वारनि को बारनि को बाँधै जे पिछार दुरे दबिकै ॥ उरुनि दुकूल दै उरोजनि को फूलमाल ओठनि उठाय पान खाय बाल पचिकै । देव कहै आजु मानौ जीतो है अनंग रिपु पी के संग संग ही सुरति रंग रचिकै ॥५८॥

गूजरी बजावै रव रसना सजावै कर चूरी झन-कावै गरो गहति गहकि कै । मुख मोरि त्यौरी तोरि भौंह नासिका मरोरि देव ईबी सीबी करि बोलति

---

१ केला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहकि कै ॥ अँखिया अधर चूमि हाहा छाँड़ौ कहै झूमि छतिया सोँ लागी रहै लगीसी लहकि कै । कीनो रतिरंगु पति संग मनभायो कोई अंगु न देखायो पिय डीठिहि दुहकि कै ॥ ५८ ॥

सुरतांत ॥

महल ते आई सुनि चहल चिरैयनि की कहलसी कोई हाथ पाई उनमूलसे । अरगजे भीजे औ पसीजे अँगरात अंग मीँजे मरगजे रंग संगम दुहूलसे ॥ देव सुखदैन झपि झपि उघरत नैन सखि सोँ बचन सुने सौतिन के सूल से । मैले मैले फूल हरे सिथिल दुकूलनि ते ऐले ऐले गात जात फैले फैले फूल से ६० ॥

इति श्रीसुजानविनोदे देवदत्त बिरचिते प्रौढ़ा-
सुंदरी रसिकराय नायक वर्नन पंचमविलासः
समय भेदसमाप्तः ।

अथ ऋतुभेद । प्रथम शिशिर ऋतुवर्णनं ।

दोहा ।

माघशुक्ल श्रीपंचमी जन्म लियो रतिकाम ।
आगम नवलबसंत सुर पंचम सुख अभिराम ॥१॥
प्रगट प्रेम मुग्धानि हिय प्रीतम प्रथम सँयोग ।
मध्या अरु प्रौढ़ानि के अति उत्सव सुख भोग ॥ २॥

अथ श्रीपंचमीसुखोत्सव सखीन की उक्ति ।

बौरि उठे नव आमके पल्लव काम के मल्ल मनो सर तानै । पौन डुलै मुकुलै सुखुलै मनौ मैनमहीपति के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमानै[1] ॥ कोकिल कूकि सुनावति बाँचि सु साँचे सबै सुनिये करिकानै । ह्वै नवला नवलालन सों न बलाय ल्यौं कोऊ कहूँ हठ ठानै ॥

फूले अनारनि पाँड़रडारनि देखत देव महाउर माचै । माधुरी भौरनि अंब के बौरनि भौरनि के गन मंत्र से बाँचै ॥ लागि उठै बिरहागिनि की कचनारनि की सु अचानक आँचै । साँचे हँकारि पुकारी पिकी कहै नाचे बनैगी बसंत की पाँचै ॥ ६४ ॥

मेरी सोहागिनि एरी भटू उठि भेटि तू आजु यकंतहै कंतहि । दंपति की सुख संपति साँचै सुपाँचै रची अनुराग अनंतहि ॥ कुंजनि बेली की बेली नबेली बुलावती बालम लाल हसंतहि । फूलि उठीं नलिनी चलि नीकहि कौलमुखी लखि नौल बसंतहि ॥ ६५ ॥

मुग्धा नवकुमार प्रथम पूर्बानुरागोत्सव यथा ।

नौलबसंत उठे अकुलाय सुने कल कोकिल की किलकारी । भाँवरी सी भरैं साँवरी साँवरे होत निछावरि से सहचारी ॥ देव दुहूँको दुहूँ दुरिकै रँगि दैपठई रँग रंग की सारी । केसरिया खुल्यो नँदकिसोर किसोरी कि केसरि की रँग सारी ॥ ६६ ॥

मुग्धाकी गुप्त दूती यथा ।

सुमन समूल ते समूल रसमूल फूले फूलत रसाल

---

१ परवाना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनमाल उमगावनेा । तरुन तरुन मिलौं अरुन अरुन बेली तरुनी तरुन घरघरन मिलावनेा ॥ कंत के समागम मैं आगम बसंत देव मधुर सुरनि अलि कोकिल केा गावनेा । भूषन सुबेस सजि भावती गनेस करि लगन सेाहागही केा सगुन सुहावनेा ॥ ६७ ॥

उमग्येा परत अनुराग बन बागनि मैं राखिहै सेाहाग केा सेाहागिनि व्है कंत की । कोकिल कलापी अकुलावत अकेलिन केा अलिन अलापी धुनि आनँद अनंत की ॥ या रितु सेाहाई मैं सेाहाई न करेारी केाई फिरत देाहाई देव मैन मतिमंत की । चाहति सुजान नवलाल मधुकर मिल्येा नवला बिमल नवजेाबन बसंत की ॥ ६८ ॥

आगम बसंत के अनंत अनुराग फैल्येा राग फैल्येा गलिन सुहागु अँग अंग केा । पंचति बिरह डर दँपति की छाती सुख संपति सुहाती समुहाती पिय संगकेा ॥ मदन बिसासी ढिग फाँसी सी बेालायेा पौन देव दुख हाँसी करै कौन भुवभंग केा । पावक सी लागै बन जावक सेा लागैं मन चाबक[1] सेा लागै जन चतुर तुरंग केा ॥ ६९ ॥

दूतीवाक्य नायका सेाँ यथा ।

दमकति देहदुति महक सनेह काम सुघर सदेह गढ़ी मानिक कनक कनी । बसन बसंती तन कुसुमसुरंग अंग नारँगी उरेाज आँगी तनी है तनक तनी ॥

१ चाबुक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देव जू सुजान आनि देखिहै जगी है घरी फूली है फली है सुख संपति गनक गनी। नवला नवल बाल लाल अलि मोहिनी सी नवल बसंत नव जोबन बनक बनी ॥ १० ॥

दारयो से दसन बेंदी भाल मौरसिरीमाल कुंदहि मँदार मृदु मकरंद महमहाति। राची रुचि रचना दिपति कचनारनि की मिली मलै माधुरी गुलाबनि गहगहाति ॥ भरी रस पुंज कुंज कुंज मञ्जु मञ्जु देव रसिक सुजान सुनि कोकिल कहकहाति। नवल बसंत नव जोबन हसंतमुखी सरस रसाल मंजरी सी हरी लहलहाति ॥ ११ ॥

आवत बसंत अलि गावत अनंत गुन कंत बिनु दिवस दुरंत पल आधुरी। धनि ते सोहागिनि बधू जे बड़ भागिनि ह्वै बालम सों बिमल बिलोकैं मुख साधुरी। उज्जल महल सेज जिनमें बिमल जोन्ह सीतल सुगंध मंद पवन अगाधुरी। देव केलि कानन मैं कहकहा कोकिल की सुने धुनि लहलहा महा-मोद माधुरी ॥ १२ ॥

बाला की उक्ति सखी सों।

नैननि मैं ठाढ़ेई सुनावैं श्रवननि बैन बैन बस रसना हिये हू परसी मरौं। देखौं न सुनौं न बैन बोलि न मिलौं न बिनु देखि सुनि बोलि मिलि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आँसु बरसी मरौं ॥ देखत दुखति सुनि सूखति बिलाति बोल मिलेहु मलिन ह्वै कै लाज सरसी मरौं । एते पर देखिबे को सुनिबे को बोलिबे को देव हियो खोलि मिलिबे को तरसी मरौं ॥ १३ ॥

आँगन देहरी द्वार अटानि ठढ़ी न झरोखनि झाँकन पाऊँ । प्राननि मैं मन मैं तन मैं सखि आनि बस्यो अखियाँनि अगाऊँ ॥ पै बतिया न कहै कढ़ि कै छतिया मैं छप्यो कबलौ धौं छिपाऊँ । मानै तऊ न जो तोहूँ भटू कबि देव पियै हिय खोलि देखाऊँ । १४ ।

श्रीपंचमीशिशिरोत्सवमिलन ।

दुलही दुलह नौल चाह अनुकूल फूले उलहे फिरत गोपी गोपनि की भीर मैं । तैसिये बसंत पाँचै चाय सोँ चरचि नाचै रंग राचै कीच माचै केसरि के नीर मैं ॥ करत न कानि जानि भरत भुजानि देव धरत न धीर उर अधिक अधीर मैं । संबरारि[1] डंबर मैं बूड़ि रहे दोऊ मुख सोभा के अडंबर मैं अंबर अबीर मैं ।१५।

इति बसंत पंचमी शिशिरोत्सव समाप्तं ।

अथ फाल्गुणोत्सव । दोहा ।

रति उपजति श्रीपंचमी उत्सव सुख शृंगार ।
फागुन मास महोतसव उमगत मदन उदार ॥ १६ ॥

---

१ काम ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बकुल आमकुल मुकुल लखि सुनि पिक निकर बिराव।
प्रेम प्रौढ़ नौढ़ा मुदित प्रौढ़ा नौढ़ सुभाव ॥ १७ ॥
मुग्धा तिय पिय मिलन की उत्कंठा तजि लाज।
मध्या पिय मिलि मुदित मन प्रौढ़ा सुभग समाज १८।
गूढ़ अनूढ़ा रूढ़ रस प्रेम बिकल परकीय।
कुलधर्मनि उलटावती ब्याकुल कुलटा तीय ॥ १९ ॥
मुग्ध मध्य प्रौढ़नि प्रगट परकीयनि अनुरागु।
ब्याज लाज गृहकाज तजि खुलि खुलि खेलहिँ फागु २०॥

उदाहरण कबित्त।

आवत फागु चढ़्यो अनुरागु सोहागिनि भाग सुहाग सोहानी। मानिनि जे न मनायहू मानती ते तजि मान मिलैँ मनु मानी ॥ देव जे दूभर देखिबे हेत झरोखनि झांकत ही मुरझानी। काँड़ि सहेली भुलै गृहकेली अकेली ह्वै एकै फिरैँ अकुलानी ॥ २१ ॥

मुग्धानि की सखी की उक्ति।

माधुरी भौरनि फूलनि भौरनि बौरनि बौरनि बेलि बची है। केसरि किंसु कुसुंभ कुरौ किरवार कनैरनि रंग रची है ॥ फूले अनारनि चंपक डारनि लै कचनारनि नेह तची है। कोकिल रागनि नूत परागनि देखु री बागनि फागु मची है ॥ २२ ॥

सीतल मंद सुगंध खुलावति पौन डुलावति को न लची है। नौल गुलाबनि कौल फुलावनि जोनकु-लावनि प्रेम पची है ॥ मालती मल्लि मलैज लवंगनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवती संग समूह सची है । देव सुहागनि आजु के भागनि देखु री बागनि फागु मची है ॥ २३ ॥

हेरी कैं सेरु परयो ब्रज पौरि किसोरी को चित्त बिछोहनि छीज्यो । दौरि फिरै दुरि देखिबे को न दुरै मनु आज मनोज को मींज्यो ॥ केसरिया चकचौंधत चीर ज्यौं केसरि नीर सरूप लसी ज्यो । लाल के रंग मैं भीजि रही सो गुलाल के रंग मैं चाहति भीज्यो ॥ २४ ॥

दुलही नवल नव दूलह पिया की रितु नवल बसंत मैं नवल हितु जोरिया । बैठी रंगमहल तरंग रसरंग देव भीजी अंग अंगनि अनंग चितचोरिया ॥ गुपित सखी कह्यो गुलाल लीन्हे आए लाल चौंकि उठी चपल उतारयो चीर डोरिया । पीरी जरतारी की उज्यारी कंचुकी को कसि न्यारी चितवनि प्यारी पैन्ही पचतोरिया[1] ॥ २५ ॥

इतिमुग्धा । अथमध्या ।

आँगन देहरी द्वार टु द्वै जन नैननि सैननि सौं नियराई । गूँदति हारनि मूँदति बारनि भूषन बास सुगंध लै धाई ॥ आजु कहा है कहो किन देव उला-हिते[2] ईठि बसीठि पठाई । प्रीतम सौं करि प्रीति

---

१ एक प्रकार का महीन कपड़ा ।

२ जल्दी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पतो तुम तौ इत आजु मतो करि आई ॥ २६ ॥

सखी।

होरी मैं आजु भिजै रँग रोरी के आपनो प्यौ अपने बस कै लै। यौं कहि देव सखी गहि गोरी को ल्याई हैं गोकुल गाँव की गैलै ॥ लाज की गारी सुनी कबहूँ न सु गावत लोग लगावत छैलै। खेलति फागु नई दुलही दृग आँसुनि लीलि उसासनि लै लै ॥२७॥

आई अति आदर सौं फागु की बधाई जब धाई सखि सुहित पठाई प्रेम पतियाँ। संग लै जुवति जाल अंग रंग पीरे लाल लाल के गुलाल भरिबे की लेत पतियां ॥ अनुराग भरे भाग भरी राग भरे भरे बसन त्यौं हसनि सोहाग भरी बतियाँ। होरी भरी गोरी होरी होरी कहै गोरे मुख देखत दरकि गईं सौति-न की छतियाँ ॥ २८ ॥

केसरि कुसुम रंग अंग की किसोरी रंग केसरि की बोरी देव प्रेम के पहुँच कै। जगमगे गातनि उठत रँगमगे रोम नाभि के नगीच त्रिबली के बीच तुचकै ॥ लालन गुलाल लै दुहू करनि मीँजे रस भीजे जे पसीजे हियरा मैं लेत हुचकै। अंचल मैं कंचन कमल कलिका से कुच कंचुकी मैं रंचक उसास आए उचकै ॥ २९ ॥

इतिमध्या। अथ प्रौढ़ नायका की उक्ति सखी सौं कवित्त।

जोरे रँगु रागु फागु आवत कुँअरि राधा सुनि-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यतु आवती समूह साजे सखियनि । गड़ि जैहै गोकुल गलीन मैं गुलाल उड़ि आनँद उमड़ि जैहै चहुँ चारु चखियनि ॥ देव ब्रजबासिनु को भाख्यो अभिलाषु ह्वै है वारिबी बनाइ लखि लाख लाख लखियनि । आज तो भिया[1] हो उर आनँद बढ़ाइ लीजो आय लीजो दरसु अघाय लीजो अँखियनि ॥ ३० ॥

उयो ब्रजमंडलु मदन सुख सदन मैं नंद को नँदन चितचोर न डेरात है । अम्बर मैं राधामुख चंद उयो चाहै तौ लौ फगुहारे पाहरुनि सोर सरसात है ॥ मारगु न सूझति अरूझतु सुमारग न बूझतु न देव कोई गूझतु न गात है । तरुनी तरुन प्रेम धूंधरि मैं आँधरे से अरुन अबीर के अँधेरे अधिरात है ॥ ३१ ॥

भेटि भुज भुजन समेटि उर सोँ जु उर अधर अधर धरे अधिक अधीर की । जोरि अँग अंग सोँ लचाइ गुलचाइ भाल दीनी लाल बेंदी बोरि खैंचि कै अबीर की ॥ देव दुखभंजन लला के दृग खंजन मैं अंजन की लीक पीक पलक लकीर की । तन मन वारी बनवारी की बनक पर चंद बलिहारी बलिहारी बलवीर की । ३२ ॥

इति स्वकीया । अथ परकीया ।

एकन बैननि ही ललचाय लचाय लए यक सैननि दै दै । दै गुलचाय नचाय लला सु बचाय है ओठनि

---

१ भाई भैया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को रसु लै दै ॥ एकन भेटि दुहूँ भुज देव दियो दृग अंजन रंग उनैदै। चंचल पैने दृगंचल मोरि हँसै मुख रंचक अंचल दैदै ॥ ३३ ॥

अनूढ़ा।

काहु की कानि करैं री न ए उनऐ से अनोखे खिलार नए हरि। देव अहीरन पीर न सोचु बिलोचन बीर अबीर दए भरि ॥ रूसि सकी न भरी सिसकी सु उसासन ही अँसुवा सुखए ढरि। लाल रँगीले गुला-ल रँगीले रँगीली की चूनरि गीली गए करि ॥ ३४ ॥

अथ ऊढ़ा।

लोग लोगाइन होरी लगाय मिला मिली चारु न मेटत ही बन्यो। देवजू चंदन चूर कपूर लिलारन लैलै लपेटत ही बन्यो ॥ ए यहि औसर आये इहाँ समुहाय हियो न समेटत ही बन्यो। कीनी अनाक-निये मुख मोरि पै जोरि भुजा भटू भेटत ही बन्यो ॥३५॥

ज्येष्ठा कनिष्ठा।

खेलत फागु खेलार खरे अनुराग भरे बड़ भाग कन्हाई। एक ही भौन मैं दोउन देखि कै देव करी यक चातुरताई ॥ लाल गुलाल सों लीनी मुठी भरि बाल की भाल की ओर चलाई। वै दृग मोरि उतै चितयो इन भेंटी इतै बृषभान की जाई ॥ ३६ ॥

इति स्वकीया परकीयादि बिलासः।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ शुद्ध स्वकीया ।

न्याज[१] निकाम है बाम बिरानिये जाति हिरानियै सामुहै हेरेई । बीरन की सौं अहीर न पीर न बीरन को घर आवत घेरेई । होरी के औसर भौ जी को भेटन भौजी को भेटन आये सबेरेई । देवर है जू लड़ायते देवर नेबर मेरे सुने बर मेरेई। ॥३७॥

बियोगिनी ।

कंत बिन बासर बसंत लागे अंतक से तीर ऐसे त्रिबिधि समीर लागे लहकन । सान धरे सार से चँदन घनसार लागे खेद लागे खरे मृगमेद लागे महकन ॥ फाँसी से फुलेल लागे गाँसी से गुलाब अरु गाज अरगजा लागे चोवा लागे चहकन । अंग अंग आगि ऐसे केसरि के नीर लागे चीर लागे जरन अबीर लागे दहकन ॥३८॥

भूजि रही बिरहा जुरसौं सुभ पावन जानि जनीतु जगाई । घोरि घनो रँग केसरि को गहि बोरी गुलाल मैं बाल रँगाई ॥ साँस लई गहिरी कहि री हमसौं उन सौं अब कौन सगाई । ऐसे भए निरमोही महा हरि हाय हमैं बिन होरी लगाई ॥ ३९ ॥

कुलटा ।

आँगी कसे उकसे कुच ऊँचे हँसै हुलसै फुफुदीन की फूँदै । चन्दन चोट करै पिय जोट पै अंचल ओट दृगंचल मूँदै ॥ देवजू कुमकुम केसरि किंसुक बारिज

१ न्याय से ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीच बिराजति बूँदै । बाढ़यो बिनोद गुलाल लै
गोदनि मोद भरी चहुँकोदनि कूदै ॥ ४० ॥

इति श्री सुजानबिनोदे देवदत्त विरचिते शिशिर बसंत श्रीपंचमी सुख फाल्गुणोत्सव वर्णनं षष्टमो विलासः ६ ।

अथ ग्रीष्म वर्षा शरद हेमंत सुखोत्सव वर्णनं ।

दोहा ।

ग्रीषम ऋतु सीतल महल निसि चंद्रिका कलोल ।
सौधसिखर पावस निसा दिन उत्सव हिंडोल ॥ १ ॥
सरद प्रभात सरोज सुख कुमुद मालती साह ।
जलबिहार दिन जोन्ह निसि सुभग सुंदरिन माँह ॥२॥
सुभ संयोग सतूल पट हेमँत निसि एकंत ।
सिसिर तथा निर्बात निसि दिन बन केलि बसंत ॥३॥
सारँग अरु मल्लार अरु बेलावल कल्यान ।
कान्हर, पंचम आदि दै ग्रीष्म आदि क्रम गान ॥४॥
मल्ली पृथ्वी मालती कमल कुंद कचनार ।
जूड़न भीजन न्हान तनुगोपन तपन बिहार । ५ ।
जलधारा गृहकेलि गिरि सरवर घरनिर्बात ।
अग्निसदन बनकुंज गृह ग्रीषम आदि सोहात । ६ ।
चंदन अरगज कमल अग मृगमद अतर सतीत ।
पाटल लाल कखायपट हरित चित्र अरु पीत । ७ ।
इतिश्री ग्रीष्मादि ऋतु सामग्री अथ ग्रीष्म ऋतु वर्णन ।

कवित्त ।

दोऊ अनुराग भरे आए रँग भौन भागु मघवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सची को लखि लागत सहलहै । बैठे एक आसन पै एकै संग एकै रंग चल्यो न परत अंग कोमल कहल है॥ एकनि लै अतरु लगायो देव दुहुन के छिरक्यो गुलाब कीनों बीजन बहलहै । लैकै कर बीनै परबीनै आली अलापी सु मंजु सुरपुंजनि सोँ गुंजत महल है ॥८॥

सीतल महल महा सीतल पटीर[1] पंक सीतल कै लीप्यो भीति छिति छाती दहरै । सीतल सलिल भरे सीतल बिमल कुंड सीतल बिमल जलजंत्र धारा छहरै॥ सीतल बिछौननि पै सीतल बिछाई सेज सीतल दुकूल पैन्हि पौढ़े हैं दुपहरै। देव दोऊ सीतल अलिंगननि देत लेत सीतल सुगंध मंद मारुत की लहरै।९।

ग्रीषम प्रचंड घामु चंडकर मंडल ते घुमरयो है देव भूमिमंडल अखंड धार । भौन ते निकुंज भौन लहलही डारनि ह्वै दुलही सिधारी उलही ज्यों लहलही डार॥ नूतन महल नूत पल्लवनि छ्वै छ्वै स्वेद लवनि सुखावत पवन उपबन सार । तनक तनक मनि कनक नूपुर पायँ आय गई झनक मनकनि झनकवार।१०।

खरी दुपहरी हरी भरी फरी कुंज मंजु गुंज अलिपुंजनि की देव हियो हरि जाति । सीरे नदनीर तरु तीरनि गँभीर छाँह सोवैं परे पथिक पुकारैं पिकी करि जाति॥ ऐसे समै गोरी भोरी कोरी कुँभिला-

---

१ चंदन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेमुख पंकज से पाँय धरा धीरज सेाँ धरि जाति। सौं हे घनस्याम मगु ताकत हथेरी ओट उँचे धाम बाम चढ़ि आवति उतरि जात ॥ ११ ॥

इतिग्रीष्मदिन। अथरात्रि।

फटिक सिलानि सेाँ सुधारयौ सुधामंदिर उदधि दधि को सेा अधिकाई उमगै अमंद। बाहिर ते भीतर लौ भीति न देखैये देव दूध को सेा फेनु फैलो आँगन फरसबंद ॥ तारा सी तरुनि तामैं ठाढ़ी झिलमिलि होति मोतिन की जोति मिली मल्लिका को मकरंद। आरसी से अंबर मैं आभासी उज्यारी लागै प्यारी राधिका को प्रतिबिंब सेा लगत चंद ॥ १२ ॥

उज्जल अखंड खंड सातएं महल महा मंडल सवारो चंदमंडल की चोटही। भीतर ही लालनि के जालनि बिसाल जोति बाहर जुन्हाई जगी जोतिन की जोटही ॥ बरनति बानी चौर ढारति भवानी कर जोरे रमा रानी ठाढ़ी रमन की ओटही। देव दिगपालनि की देवी सुखदाइनि ते राधा ठकुराइनि के पायन पलोटही ॥ १३ ॥

छीर की सी लहरि छहरि गई छिति माँह जामिनी की जोति भामिनी को मानु रोप्यो है। ठौर ठौर छूटत फुहारे मनौ मोतिन के देव बनु याको मनु का को न भमेठ्यो है ॥ सुधा के सरोवरु सेा अंबर उदित ससि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुदित मराल मनु पैरिबे को पैठो है । बेलि के बिमल फूल फूलत समूल मनौ गगन ते उड़ि उड़गन गन बैठो है ॥ १४ ॥

घूँघुट खुलत अबै उलटु ह्वै जैहै देव उद्धत मनोज जग जुद्ध जुटि परैगो । को कहै अलोक बात सोकहै सुरोक सिद्ध लोक तिहुँलोक की लुनाई लूटि परैगो ॥ दैयनि दुराउ सुख नतरु तरैयनि को मंडल हू मटकि चटकि टूटि परैगो । तो चितै सकोच सोचि मोचि मदु मूरछि कै छोर ते छपाकरु छता सो छूटि-परैगो ॥ १५ ॥

हँसत हँसत आई भावते के मनभाई देव कहै छबि छाई सोने से सरीर सोँ । तैसी चंदमुखी के वा चंद्रमुख चंद्रमा सौँ होड़ परै चाँदनी औ चाँदनी से चीर सौँ ॥ सोँधे से सुबास अंग बास औ उसास बास आस पास बासि रही सुखद समीर सोँ । कुंज तजि गुंजत गँभीर गिरि तीर तीर रह्यो रँगभौन भरि भौरन की भीर सोँ ॥ १६ ॥

इति ग्रीष्म । अथ पावस । कवित्त ।

इतै तौ सघन घन घिरि कै गगन उतै घन उपबन बन बनक बनाये हैँ । तैसिये उलहि आये अंकुर हरित पीत देव कहै बिबुध बहूटिन[1] सोहाये हैँ ॥ बोलै

१ बीरबहोटी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इत मोर उत गरज मधुर धुनि मानौ मैनभूप जंग जीति घर आये हैं। अंबर बिराजै इतै उतै घन छाए छिति पीरे हरे लाल ज्यौं जवाहिर बिछाये हैं ॥१७॥

सुनि कै धुनि चातक मोरनि की चहुँओरनि कोकिल कूकनि सौं। अनुराग भरे हरि बागनि मैं सखि रागत राग अचूकनि सौं॥ कबि देव घटा उनई जु नई बनभूमि भई दल दूकनि सौं। रँगराती हरी हहराती लता झुकि जाती समीर के झूकनि सौं ॥१८॥

घन घेरि घटान को सोरु परयौ सु अटा पर मोर पुकारनि सौं। सुनि चातुर आतुर आतुर धाय चढ़ी कहि देव सुधारनिसौं॥ इत बाजि उठे बर नेवर जेवर किंकिन की अनुरागनि सौं। मनिमै रँगभौन उतै अति ही झननाइ उठो झनकारनि सौं॥ १९॥

गुनगौरि कियो गुरुमान सु मैन लला के हिये लहराय उठो। मनुहारि कै हारि सखीगन हू रँगभौनहु ते भहराय उठो॥ तब लौ चहुँघाय घटा घहराय कै विज्जु छटा छहराय उठो। कबि देव जू भागते भावती को भयते हियरा हहराय उठो॥ २०॥

इभ[1]से भिरत चहुँधाई सौं घिरत घन आवत फिरत झीने झरसौं झपकि झपकि। सोरन मचावैं नचैं मोरन की पाँति चहुँ ओरन ते कौंधि जाति चपला लपकि लपकि॥ बिन प्रानप्यारे प्रान न्यारे

१ हाथी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होत देव कहै नैन बरुनीन रहे अँसुवा टपकि टपकि। रतिया अँधेरी धीर नतिया धरति मुख बतिया कहै न उठैं छतिया तपकि तपकि ॥ २१ ॥

पावस प्रथम पिय ऐबे की अवधि सौं जो आवत ही आवैं तौ बुलाऊँ अति आदरनि । नाहीं तौ न हील[1] होन दे री झील झाबरनि ग्रीषमहि राखु खाली भाखु खल खादरनि ॥ बीजुरी बरजु कहु मेघ न गरजु इन गाजमारे मोर मुखमोरि री निरादरनि । कंठ रोकि कोकिलनि चोच नोचि चातकनि दूरि करि दादुर बिदा करि री बादरनि ॥ २२ ॥

इति मेघाडंबर । अथ रिंगुलाउराक[2] । कवित्त ।

सहर सहर सौंधो सीतल समीर डौलै घहर घहर घन घेरि कै घहरिया । झहर झहर झुकि झीनी झरि-लायो देव छहर छहर छोटी बूँदनि छहरिया ॥ हहर हहर हँसि हँसि कै हिंडोरे चढ़ी थहर थहर तन कोमल थहरिया । फहर फहर होत पीतम को पीत पट लहर लहर होत प्यारी की लहरिया ॥२३॥

सोने की सी बेली बाल छाड़ि कै सहेली चली कुंजनि अकेली घन घेरि घटा घहरैं । गोरे गोरे अंगनि पै चूनरी सुरंग सबै गहने जराऊ गात सोहत सुनहरै ॥

---

१ कीचड़, पानी हरकाना ।

२ झूला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई जुरि जोटी कहै देव ज्यौं बहोटी चारु चोया चुनि चोटी छोटी छाती छबि छहरैं। रंग भरी राग भरी खरी अनुराग भरी भाग भरी सागर सुहाग की सी लहरैं ॥२४॥

आली झुलावति झूँकनि सों झुकि जाति कटी झननाति झकोरे। चंचल अंचल की चपला चलबेनी बड़ी सो गड़ी चित चोरे॥ या बिधि झूलत देखि गयो तब ते कबि देव सनेह के जोरे। झूलत है हियरा हरि को हिय माँह तिहारे हरा के हिँडोरे॥ २५॥

झूलत ना वह झूलनि बाल की फूलनि माल की लालपटी की। देव कहै लचकै कटि चंचल चोरी दृगंचल चाल नटी की॥ अंचल की फहरानि हिये रहि जानि पयोधर पीन तटी की। किंकिनि की झननानि झुलावनि झूकनि सों झुकि जानि कटी की॥ २६॥

झूलनहारी अनोखी नई उनई रहती इतही रँगराती। मेह मैं ल्यावैं सु तैसियै संग की रंग भरी चुनरी चुचुहाती॥ झूला चढ़े हरि साथ हहा करि देव झुलावत ही ते डराती। भोर हिँडोरे की डोरिन छाँड़ि खरे ससवाइ गरे लपटाती॥ २७॥

दौरयौ दल साजि रतिराज महाराज जानि नीजन मवास[1] मानिनीजन गरीब से। पवन तुरंगम मतंग

---

१ छिपने की जगह, मजबूत छिपी हुई जगह।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महा मेघनि पै चढ़े तम तरुन छपद छबि छीव[1] से ॥ दादुर दमामे झांझ झिल्ली गरजनि धौंसा दामिनी मसालै देखि दुरे जग जीव से । छैल छल छोभक छपा-चर चुरैल आगे पाछे गैल गैल ऐल पारत नकीब से ॥२८॥

इति पावस । अथ शरद ।

राजत रजतसैल रच्यो केलि कयलास सोन मनि सिखर सुमेरुहि समादरैं । रंग रंग अंगन अनंग रंग-महल उदित रंग राधे रति रंभा को निरादरैं ॥ भाँति भाँति कोरनि अमंद चंदकाँति पाँति चंद को दरस देव बरसति बादरैं । बरनि सोपाननि ऊपर रह्यो भूपर को चारिहू तरफ फहरातीं रस चादरैं ॥ २९ ॥

पीत रंग सारी गोरे अंग मिलि गई देव श्रीफल उरोज आभा आभासै अधिक सी । छूटी अलकनि झलकनि जलबूँदनि की बेना बेंदी बंदन बदन सोभा बिकसी ॥ तजि तजि कुंजपुंज ऊपर मधुप पुंज गुंजरत मंजु बर बेलै बाल पिकसी ॥ नीबी उकसाय नेक नैननि हँसाय हँसि ससिमुखी सकुचि सरोवर ते निकसी ॥ ३० ॥

आई बरसाने ते बुलाई वृषभानसुता निरखि प्रभान प्रभा भानु की अथै गई । चक चकवानि के चकाये चकचोटन सौं चौंकत चकोर चकचौंधी सी चकै गई ॥ देव नँदनंद जू के नैननि अनंदमई नंद जू

---

१ मस्त ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के मंदिरनि चंदमई ह्वै गई । कुंजनि कलिनमई गुंजनि अलिनमई गोकुल की गलिन नलिन[1]मई कै गई ॥३१॥

पीछे परबीनैं बीनैं संग की सहेली आगे भार डर भूषन डगर डारैं छोरि छोरि । मोरे मुख मोरनि त्यौं चौंकत चकोरनि त्यौं भौंरनि की ओर भीरु देखै मुख मोरि मोरि ॥ एक कर आली कर ऊपर ही धरे हरे हरे पग धरै देव चलै चित चोरि चोरि । दूजे हाथ साथ लै सुनावति बचन राजहंसनि चुनावति सुकुतमाल तोरि तोरि ॥ ३२ ॥

धौरे धौरह पर सरद जोन्हाई छबि छाई ससि-सरद बधू के अवतंस की । देव त्यौं बिमल मालती के फूल दलनि की सेज अनकूल बेलि परिमल बंस की ॥ भरी मुकुताभरनि[2]रानी राधा माधौ संग जाकी सरि करत न लच्छि लच्छ अंस की । मेरु के सिखर सुधासागर रजत राति जगमगी जोरी ज्यौं बिराजै राजहंस की।३३।

पूरन सरद ससि उदित मुदित दोऊ बिहसि बिलसिबे को देव रस भरे हैं । छीरज बरन बनि छबि सों छबीली छैल छल बल छपिबे को धौरे भेख धरे हैं ॥ चाँदनी महल मिलि गए मिलि चाँदनी मैं पूनो की रजनि परिजन अनुसरे हैं । ढिगही अगूढ़ गूढ़ ढूँढ़त हैं

१ कमल ।
२ मोती के गहने ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मूढ़ तिन्हैं साँझते निहारे पै सवारे सूझि परे हैं ॥३४॥

जोतिन के जूहनि दुरासद दुरूहनि प्रकास के समूहनि उजासनि के आकरनि । फटिक अटूटनि महारजत टूटनि मुकत मनि जूटनि समेटि रतनाकरनि ॥ छूटि रही जोन्ह जग लूटि दुति देव कमलाकरनि झूटि फूटि दीपति दिवाकरनि । नभ सुधासिंधु गोद पूरन प्रमोद ससि समोद बिनोद चहूँकोद कुमुदाकरनि ॥ ३५ ॥

आसपास पुहुमि प्रकास के पगार सूझै बन न अगार डीठि गली औनिबर ते । पारावार पारद अपार दसौ दिसि बूड़ी चंड ब्रहमंड उतरात बिधु बरते ॥ सरद जोन्हाई जिन्हुजाई[1] धार सहस सुधाई सोभासिंधु नभ सुभ्र गिरवर ते । उमड़ो परत जोतिमंडल अखंड सुधामंडल मही मै बिधु मंडल बिबरते ॥३६॥

प्रेम सुधासागर बिसद बसुधा बिनोद ब्रजजन समोद कुमुद मुद मकरंद । जमुना पुलिन[2]धरनीतल बिमल सेज बीजन पवन बन सीतल सुगंध मंद ॥ सोहत समाज ब्रजराज राजहंस बने देव सुख देखत बिमुख होत दुखदंद । जोबन उज्यारी प्यारी राधा राति कातिक की पूरन अनूप रूप भूपर बदन चंद ॥३७॥

नगर निकेत रेत खेत सब सेत सेत ससि के

---

१ गंगा ।
२ किनारा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदेत कछु देत न देखाई है । तारका[1]मुकुत माल झिलिमिलि झालरनि निर्मल बितान नभ आभा अधिकाई है ॥ सामोद समोद ब्रज कोमोद बिनोद देव बहुँकोद चाँदनी की चादर बिछाई है । राधा मधुमालतिहि माधव मधुप मिले पालिक पुलिन झीनी परिमल झाई है ॥ ३८ ॥

इति शरद । अथ हेमंत ।

रूपे के महल धूपे अगर उदार द्वार झँझरी झरोखा मूँदे चारु चिकराती मैं । ऊध[2] अध मूल तूलपटनि लपेटे मूल पटल सुगंध सेज सुखद सोहाती मैं ॥ सिसिर के सीत प्रिया पीतम सनेह दिन छिन से बिहात देव राति नियराती मैं । केसरि कुरंगसार अंग मैं लिपत दोऊ दुहू मैं दिपत औ छिपत जात छाती मैं ॥ ३९ ॥

रेसमी सतूल साल सुपट लपेटि मंजु महल के भीतरनि निसि की निकाई सी । भीतर गहीर नग हीरनि की काँतिन रतनखंभ पाँतिन अदंभ छबि छाई सी ॥ जगमगी सेज पै सनेह सगमगी रंगरस रँगमगी अँगअंग उमगाई सी । ऊषमनि दाही सी मयूख मनि मानिकनि अगिनित चामीकर[3] अगिनि तपाई सी ॥४०॥

---

१ तारे ।

२ ऊपर, ऊरध ।

३ सोना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सखी की उक्ति ।

मेरे मिलाए मिली दिनद्वैक दुरे दुरे आइबो ओघ अघाती । सोच सकोच तयो चितचाही पै सोच सकोचनि सोँ लखि जाती ॥ देव कहाँ ते बनै बिधि दोऊ इतै मुख देखि लला को लजाती । हेउँत सीत मैं पीतमै संग लै हैँ उत सोइबे को ललचाती ॥ ४१ ॥

कंपत हियो न हियो कंपत हमारो यों हँसी तुमैँ अनोखी नेकु सीतमैँ ससनदेहु । अंबर[1] हरयो हरि अंबर[2] उजेरो होत हेरिकै हँसै न कोई हँसै तौ हसन देहु ॥ देव दुति देखबे को लोयन मैँ लागी रहै लोयन मैँ लाज लागै लोयन लसन देहु । हमरे बसन देहु देखत हमारे कान्ह अजहूँ बसन देहु ब्रज मैँ बसन देहु ॥ ४२ ॥

फूली रूपमंजरी समूली है रसाल नवलाल अनुकूली है बसंत मैँ बसंती सी । ग्रीषम ससी सी निसिद्योस सरसी सी रितु पावस सनेह घन मेह बरसंती सी ॥ सरद सरोजनि की ओजन उज्यारी प्यारी न्यारी नहिँ होति हंस सारस रसंती सी । बालम की छाती ते न छूटति छिनुक बाल सिसिर सनूलसाल हेमत हसंती सी ॥ ४३ ॥

सीत बसंत बिनीत बिनोद सु लज्जित भीत

---

१ कपड़ा ।

२ आकाश

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिये झपटी सी। ग्रीषम पावस प्रेम प्रमोद सकोच मनोज दुहूँ दपटी सी॥ सारद हेउँत देव समोद समै बस ह्वै रस मैं रपटी सी। बालम के उर मैं उरमैं मुदा लपटी रहै सालपटी सी॥ ४४॥

वियोगिनी।

बालम बिरह जिहि जान्यो न जनम भरि बरि बरि उठै ज्यौं ज्यौं बरसै बरफ राति। बीजन डोला-वति सखीजन त्यौं सीतहूँ मैं सौति के सराप तन तापति तरफराति॥ देव कहै साँसनि ही ग्रँसुवा मुखात मुख निकसै न बात ऐसे सिसकी सरफराति। लौटि लौटि परति करौट खटपाटी लैलै सूखे जल सफरी[1] ज्यौं सेज पै फरफराति॥ ४५॥

पैज करि पौढ़े परजंक मैं मयंक सम सोवैं न निसंक ग्रंक ग्रंकनि धसी उठैं। पलकैं लगैं न मूँदि बलकै रहत तऊ लोचन उछलकै पै छलकै ससी उठैं॥ राखी न रहति जऊ हाँसी कसिराखी देव नेसुक उकसि मुख ससि से लसी उठैं। ऊपर न बोलैं मन मन ही कलोलैं करैं पुलकैं कपोलै ग्रनबोले ही हँसी उठैं॥ ४६॥

तन मन ग्रोट पट कपट घूँघुट खोलि उरसों लगाए इतने पै ग्ररसात हौ। थाकी ग्रपनाइ ग्रपनेसों

१ मछली

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हौं उपाय करि भए अपने न सपने नहीं थिरात हौ॥ कैधौं किहि गैल छैल छतियाँ छिपाई जाके बिरह बौराने देव बोलत न बात हौ । प्यारे परजंक हू मैं मेा मुख मयंकहू मैं साँसै लै ससंक अंकहू मैं अकुलात हौ ॥ ४७ ॥

मोती सी परात हिय जानिकै प्रभात ढिग ढीले करि प्रीतम के गात सुलफनि के । उतरत सेज ते सखीन सुखदेनी प्यारी बेनी लखे लाजमरैं कुल कुलफनि[1]के॥ दासी देवता सी पग दंपति के दाबि चलीं दाबे पग बसन दबाये गुलफनि के । लाल के चरनसेव आये दास देव रँगमगी अंग जेब जगमगी जुलफनि के ॥ ४८ ॥

इति श्री सुजान विनोदे श्रीदेवदत्त विरचितायां रसानंद लहरी नायका वर्णनम् समाप्तम् ।

---

१ सर्प ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाँति उताइले भये। साहि अकब्बर नरवर[1] गये॥ सुनि कंदरा सिंह की बनी। छोड़ि गयंद जात यह बनी॥ त्यौं सुनि बीरसिंह की ठौनि। अकबर डेरी दई बड़ौनि॥ १८॥ नरवर तैं जब घाटी गए। तब देखे पुर ऊजर भए॥ १९॥ भागे इंद्रजीत के लये। साहि कछू सुनि रोसिले[2] भये॥ ताही बिच अहदी फिरि गए। तिन सौं वचन भाँति इमि भये॥ २०॥ जाइ कहौ को सेवा करै?। नैकहु वीरसिंह नहिं डरै॥ रामसाहि बोले, सुलतान!। कह्यो वचन यह बुद्धि निधान॥ २१॥ तू या भूमंडल का राज। अरु तेरे बहु दल बल साज॥ इंद्रजीत अरु बिरसिंह देव। के करि दूरि, कराऊँ सेव॥२२॥ बिनती करी राम कर जोरि। देहु बडौनि तजौं पुर कोरि॥ वाहि मारिकै मारौं याहि। दक्षिन कौ पगु धारौं साहि॥ २३॥ साहि कह्यौ सुनु राजाराम। जौ दोई ये करिहै काम॥ राह चलाइ बड़ो जस होहि। पंचहजारी[3] करिहौं तोहि॥ २४॥ जौं तू बचिहैं भैया जानु। मेरो बचन सत्य करि मानु॥ जितने भूमि बुँदेला जीउ। सबही कौ करिहौं निर्जीउ॥ २५॥ बोले राजसिंह नरनाथ। पठये रामसाहि के साथ। घोरौ दै दीनौ सरपाउ॥ साथ दिये दूनैं जुवराउ॥२६॥तब उन कूच कियौ सुरतान। ये पठये इत बुद्धि निधान॥ दुहू राज तब दलबल साजि। घेरी तिन बडौन गलगाजि॥ २७॥ राउ प्रताप आपुही गए। इंद्रजीत जोधा पाठए॥ गए बडौन माँझ करि मोद। बहु भट बीरसिंह की कोद॥ २८॥ पाइ सबै छल बल दल दाम। राजसिंह पहिराये ताम॥ मतौ कियौ दुहु राजनि तबै। कीजै संधि न विग्रह अबै॥२९॥ पठै दिये तहँ राम बसीठ। हठ न करीजे कबहुँ ईठ॥ छांडि देउ दिन दोइ बडौन। हमफिरि जैहैं अपने भौन

---

१ एक स्थान का नाम। २ रुष्ट। ३ पांचहजार सवारों का अफसर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ ३० ॥ बीरसिंह यह उत्तर दियो । तुम हम बीच ईसही कियौ ॥ कैसे अबै हमै प्रतीति । छल सौं आपुन कीजैं प्रीति ॥ उठि सो बसीठ राम पै आइ । बात बीर सों कहीं बनाइ ॥ उत्तर दीनौ राजाराम । ए सब आहिं साहि के काम ॥३२॥ वेई बोलि हमारे चित्त । बोले बोल जु तुम सौं मित्त ॥ राजसिंह के पनहि मनाइ । फिरि बैठो अपने घर जाइ ॥ ३३ ॥ बीच दिये तब सर सिरमौर । अबकै दीजै बीच पचौर ॥ बहुरि बसीठ बडौनहिँ गये । उनके बचन सबै सुनि लये ॥ ३४ ॥ बीरसिंह तब कियो बिचार । जोपै है परमेश्वर सार ॥ जोऊ झूठौं परिहै जाहि । सोई हरि संहरिहै ताहि ॥ ३५ ॥ जेठो भैया दूजौं राज । इनकी हमैं सेव सोँ काज ॥ जो कछु राजा आयसु दियौ । सिर पर मानि सबै हम लियौ ॥ ३६ ॥ बीच लिये भैया हरिबंस । आनंदी प्रोहित द्विज अंस ॥ अरु देवा पायक परवान । बीच लिये फिरि श्रीभगवान ॥३७॥ दुहं नृप सौंहैं करी सुभाउ । बीरसिंह तब छोडयौ गाउं ॥ जारि उजारे भवन प्रकार । भूझी राजहि सौंह सम्हार ॥ ३८ ॥ रामसाहि रामसिंह सो कही । साहि दई मोकों यह मही ॥ तब उनि कही दिखावहु छाप । रामदास की राखहु थाप ॥ ३९ ॥ ऐसै ही क्यौं दीजै ठांउ । ये तौ लगत पवांवै गांउ ॥ यह विचार किय राजाराम । परो साहि को दक्खिन काम ॥ ४० ॥ भैयै हतिये परम अजान । रामसिंह तब कियो पयान ॥ राम चले तब दुचिते भये । रामसिंह तब डेरहिँ गये ॥४१ ॥ बीरसिंह पुर सूनो सुन्यौ । यह विचार मनही मन गुन्यौ ॥ थोरे सुभट संग तब लये । बीरसिंह जू बड़वनि गये ॥ ४२ ॥ मैना एक गयो तब देखि । राजसिंह सो कह्यो बिसेखि ॥ बीरसिंह पुर में नरनाथ । सुभट पचासक ताके साथ ॥ ४३ ॥ सोवत जहां तहां भुव परे । कहुं घोरे कहुं आपुन खरे ॥ बड़ प्रात तुम घेरहु राज । तुमको जस दीनो ब्रजराज ॥ ४४ ॥ सुन्यौ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूत कौ वचन समाज । सबै लयो सँग सेना साज ॥ चले दमोदर औ जुवराज । डेरा रहे अकेले राज ॥ ४५ ॥ पूजी भली कुँवर की बात । घेरे घनै बड़े ही प्रात ॥ अकबकाइ रावल सँगृहे । लोगनि रूपकि खड़िहरा[1] गहे ॥ ४६ ॥ बकसराइ सुंदर परधान । केसो, चंपत राइ प्रमान ॥ मुकट गौर जादौ बलवंत । रूपाराम सुभ सावँथ संत ॥ ॥ ४७ ॥ निकसे सबै एकही मूठि । उमगे अपने पिय सौं रूठि ॥ एक एक इन माऱ्यौ दौरि । दल सिगरे मै पारी रौरि[2] ॥ ४८ ॥ उठ्यो दमोदर सपदि सम्हारि । सुभट दिये सब पुर में झारि ॥ तब ये अपने अपने ठौर । उठे उठाये जादौ गौर ॥ ४९ ॥ इन्हैं उठत गो धीरज नाठि[3] । फूठि गई सुभटनि की गांठि ॥ भैया बगस राइ तरवारि । हनै दमोदर दल संहारि ॥ ५० ॥ इहि विधि बीरसिंह उठि परे । गज दल हय पय दल खरभरे ॥ जहां तहां भाजि चले नरिंद । सिंह देखिके मनो कारिंद[4] ॥ ५१ ॥ सोदर लै दामोदर भग्यो । भगे दमोदर सब दल डग्यो ॥ काहुहि काहू की न सम्हार । पवन पाइ ज्यौं पत्र अपार ॥ ५२ ॥ भदौरिया जागरा अपार । जादव बडगूजर तिहि बार ॥ कौन गनै सुभटन को साज । जूझे जूझ तहाँ जुवराज ॥ ५३ ॥ एकति ढीहनि तें गिरि परे । बूडि इके सरिता महँ मरे ॥ इके गयंदनि मारे चापि । इके मरे अपडर ही काँपि ॥ ५४ ॥ ऐसो सुन्यो न देख्यो चाल । गोपाचल भगि बच्यो भुवाल ॥ बीच दिये ही त्रिभुवनराइ । बीरसिंह को कियो सहाइ ॥ ५५ ॥ बीरसिंह के जय की गाथ । जग मों गावत नर नरनाथ ॥ ५६ ॥

भुजंगप्रयात ।

सुनो दान लोभा । तबै चित्त छोभा ॥ सुनौ साधु सुद्धा ।

---

१ खाड़ा = तलवार । २ रोर = हलचल । ३ कारिंद = हाथी । ४ नाठिगयो = नष्टहोगया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चवत्थो विरुद्धा ॥ कह्यौ तैं जु बूझ्झो । सुन्यौ मैं समुझ्झो ॥ जहां बीर पैजै[1] । तहाँ वेगि जै जै ॥ ९७ ॥

इति श्रीमत्सकल भूमंडलाखंडलेश्वर महाराजाधिराज श्रीवीरसिंहदेव-चरित्रे दानलोभसंवादे विंध्यवासिनीवर्णनं नाम चतुर्थ प्रकाशः ॥४॥

लोभ उवाच । चौपही ।

सुनिजै सकल लोक की माइ । कहा कह्यौ सुनि दिल्ली राइ ॥ कह्यौ आगिलौ सब व्यवहारु । राजसिंह अरु राम बिचारु ॥ १ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

सुन्यौ साहि जूझ्यौ जुवराज । तमकि उठयो काविल सिरताज ॥ तैसहि बिच आये मेवरा[2] । साहि भये अहि तैं जेवरा[3] ॥ २ ॥ साहि नंद अरु मान[4] नरेस । छोड़ि सबै राना कौ देस ॥ घरही कौं फिरि कियौ पयान । सुनि यह दुचितौ भौ सुलतान ॥ ३ ॥ उपजे बहुत भाति के छोभ । इनकी कौन चलावै, लोभ ॥ लै औसरै रोस हिय धरे । अकबर साहि गए आगरे ॥ ४ ॥

दान उवाच ।

होहु कृपाल जगत की मात । कहिये बीरसिंह की बात ॥ राम साहि सौं कैसी चली । बैर बेलि कित फूली फली ॥ ५ ॥

श्रीदेव्युवाच ।

सुने जलालदीन घर गए । वीरासिंह अति दुचिते भए ॥ गोविंद मिरजा, जादो गौर । बाली मुकट मते मह और ॥ ६ ॥

बीरसिंह उवाच ।

साहि सत्रु अरु घर में बैर । यहै चलतु है घर घर घैर[5] ॥

---

१ पैज करता है = प्रण रोपता है । २ मेवरा = मेवाड़ के लोग । ३ जेवरा = रस्सी । ४ राजा = मानसिंह । ५ घैर = चबाव, चर्चा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहै कौन बिधि पति अरु प्रान। अपनी अपनी कही सयान ॥ ७ ॥ मुकट कह्यौ सुनु राजकुमार। आपुस में उपजै जंजार ॥ आए अबही सुनियतु साहि। कैसी चलै पूत सों ताहि ॥ ८ ॥ दक्खिन चले जाहि-उमराउ। खुरासान तन जिन्हैं प्रभाउ ॥ इत राना सों बढ्यौ विरोध। उत हैं मानसिंह सों क्रोध ॥ ९ ॥ सुनि लीजै सबही की गाथ। तब तैसी करि लीबो नाथ ॥ घर के बैर कहौ को डढ़ै। मारे मिटै मिटाए बढ़ै ॥ १० ॥ बोल्यौ मिरजा गोविंददास। जौ पै है जिय घर को त्रास ॥ करिहै राजा दिन दिन प्रीति। बलि बलि ऐसी साहिब रीति ॥ ११ ॥ यह सुनि बोल्यौ जादौ गौर। पहिलो सो अब नाहीं ठौर ॥ फेरि अकब्बर के फरमान। कछुवाह सों बैर विधान ॥ १२ ॥ इंद्रजीत सों हती समीति। कछू दिनान तैं ऐसी रीति ॥ कोइ कैसोई हितु रचै। घातैं पाइ न राजा बचै ॥ १३ ॥ छोड़ो सब पुर घर की आस। चलौ सलीमसाहि के पास ॥ घटि बाढि अपने करमाहि लगी। उद्दिम सबकी कीरति जगी ॥ १४ ॥ जानै कौन करम की गाथ। काहू के ह्वै रहिये नाथ ॥ सबही कीनौ यही बिचार। चलौ प्रातही राजकुमार ॥ १५ ॥ अहीछत्र[1] किय कुँवर मिलान। मिल्यौ मुजफ्फर सैद सुजान ॥ तासौं मतो कुँवर सब कह्यौ। सुनि सुनि समुझि रीझि हिय रह्यौ ॥ १६ ॥ कह्यौ सु तिहि सुनि अरि कुल हाल। चलिये तौ चलिये इहि काल ॥ जौ लौं काहू कछू न कियौ। उमग्यौ जाहि न अरि कौ हियौ॥ १७॥ जौ त्यां ह्वैहै कछू उपाउ। दियौ न जैहै आगे पाँउ ॥ घर के रहे बिगरिहै काज। दुहूं भांति चलनौं है आज ॥ १८ ॥ मन क्रम बचन धरौ यह नेम। तुम सेवक प्रभु साहिसलेम ॥ सैद मजफ्फरखां की बात। सुनि सुख भयो कुंवर के गात ॥ १९ ॥ चल्यौ चपल

१ अहिच्छत्र = चम्बल नदी से लगा हुआ देश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गति बुद्धि निधान । साहिजादपुर कर्‌यौ मिलान ॥

दोहरा ।

पूरब पूरे पुन्य तरु फलित भयौ बड़ भाग । सजल मनोरथ दान दिन देख्यौं आनि प्रयाग ॥ २० ॥

चौपही ।

जब प्रयाग को दरसन भयो । जीवन जनम सुफल करि-कयौ ॥ २१ ॥ देखत पाप हरै प्राचीन । परसत दुरित न देह नवीन ॥ चारू महँ बारू दुति लसै । ताहि देखि मति अति हित बसै ॥ २२ ॥ सूक्षम अंस करै सब सेव । जनु प्रयाग कहँ देव अदेव ॥ हरहि जु जग जीवनि के पाप । दूरि करत जनु तिनके दाप ॥ २३ ॥ जमुना संग लिये मतिथिरा । गंग मिलन कहँ आई गिरा[1] ॥ मृगमद केसरि घाँसि घनसारु । कीनौ चर्चित चंदन चारु ॥ २४ ॥ बंदित देखि देखि अवनीप । तिलक कियौ जनु जंबूदीप ॥ जहां तहां जल नरपति न्हात । देखत आनँद उपजत गात ॥ २५ ॥ नारी नर बहु बुडकी लेत । जनु अपने अभिलाषनि हेत ॥ हरि पूजत सब बारहि पार । जहा तहां षोडश उपचार ॥ २६ ॥ होति आरती तिनकी जोति । प्रतिबिंबित पानी महँ होति ॥ अपनौ जनम करन कौ सुखी । जनु अन्हाति जल ज्वालामुखी ॥ २७ ॥ अति अरुनाई अति उद्दोत । धूम सहित जहँ तहँ जल होत ॥ देखि देखि उपमा बड भाग । धूमकेत जनु न्हात प्रयाग ॥ २८ ॥ इहि विधि सोभा सुखद अपार । बरनै सोभा को संसार ? ॥ पहिरि धोवती, बसन उतारि । कूप तोय तब पाय पखारि ॥ २९ ॥ करि आचवन परम सुचि भए । वीरसिंह गंगा महँ गए ॥ कुस मुद्रिकनि मुद्रित कै हाथ । नारिकेल

---

१ गिरा = सरस्वती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कर सुवरन साथ ॥ ३० ॥ भेंट दई यह राजकुमार । लीनी मागी-रथी उदार ॥ मंजन करि तब तरपन कियौ । मंत्र जप्यौ करि पावन हियौ ॥ ३१ ॥ अनत अनेकनि जात न गने । पाट जटे पट हाटक घने ॥ महिषी, सुरभी, हय गय ग्राम । भूषन भाजन भोजन धाम ॥ ३२ ॥ पुष्पित फलित ललित बन बाग । सकल सुगन्ध सहित अनुराग ॥ छत्र चौंर गजराजनि बने । कोक बितान विमाननि घने ॥ ३३ ॥ अति दीरघ अति पीवर साज । दीबे कौ आन्यो गजराज ॥ जब गज गंगाजल महँ गयो । बहुत भांति करि सोभित भयौ ॥ ३४ ॥ स्वेत कुसुम चौंसर मय स्वच्छ । सोहत तुलसी कैसो वृच्छ ॥ अमल सुमिल मोतिन के हार । ता महँ मनो नीलमनि चार ॥ ३५ ॥ मानहु कुमकुम पूर प्रमान । ता महँ मृगमद बुंद समान ॥ कुंदकली अवली महँ सोभ । जनु अलि बस्यौ गंध के लोभ ॥ ३६ ॥ सुभ कैलास सिला के माहँ । मानहु सजल जलद की छांह ॥ सूरज सेत संज मन हरै । तापर जनु शनि क्रीड़ा करै ॥ ३७ ॥ नारद को उर उज्वल लसै । ता महँ मनो कृष्ण तनु बसै ॥ देवसभा महँ मन मोहियो । बैठे व्यासदेव सोभियौ ॥ ३८ ॥ जब सब अंग जलन मिलि जाइ । केवल इभ कुंभै दरसाइ ॥ मनौ गंग पौढी परजंक । स्याम कंचुकी सोहति अंग ॥ ३९ ॥ कहौं कहां लगि सोभासार । कहौं त बाढे ग्रंथ अपार ॥ आयौ जल वाहिर गजराज । सोभित सकल अंग को साज ॥ ४० ॥ तनु चर्चित चंदन कर्पूर । कुंभ कलित वंदन सिंदूर ॥ चारु चंद्रमा भाल लसंत । रच्यो पुष्प मय एकै दंत ॥ ४१ ॥ जल ज हार देखत दुख भगैं । मानिमय नूपुर पायनि बजैं ॥ बीरसिंह से विप्रहि दये । लेत विप्र को हरखत हियो ॥ ४२ ॥ मनो पढावन-को मन कियौ । सिव गनपति गरु को सौंपियो ॥ दै सब दाननि परम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उदार । डेरहिं आए राजकुमार ॥ ४३ ॥ सरीफखाँहि देखि सुख भयो । छीरनीर ज्यौं मन मिलि गयो ॥ गुदऱ्यो जब सरीफखां जाइ। हरख्यो दिल दिल्ली को राइ ॥ ४४ ॥ बोलहु बेगि कह्यो सुलतान। मेरे बीरसिंह तन प्रान ॥ साहि सभा जब गयो नरिंदु। सूरज मंडलमैं मनो इंदु ॥ ४५ ॥ देखत सुख पायो सुलतान । ज्यौं तन पायौ अपने प्रान ॥ कै तसलीम गहे तब पाय। उमग्यो आनंद अंग न माय॥४६॥ सोभ्यो वीर देखि यों साहि । जैसे रहे सुमेरहि चाहि ॥ वीरसिंह की बाढी सौंह । पारस सों परस्यो जनु लोह ॥ ४७ ॥ परम सुगंध नीम है जाइ ॥ जैसे मलयाचल कौं पाइ । कह्यौ साहि नीके हो राइ॥ अब नीके, जब देखे पाइ ॥ ४८ ॥ भली करी तैं राजकुमार । छोड्यौं सब आयो दरबार ॥ हौं तौ भलैं पूजिहै आस। जौं तू रहि है मेरे पास ॥४९॥ यह कहि पहिराये बहु बार। हाथी हय औरहु हथियार॥ भीतर गो दिल्ली कौ नाथ । बह्यो खां सरीफ गहि हाथ ॥५०॥ जब जब जाइ कुंवर दरबार । लै बहुरै अहलाद अपार ॥

कुंडलिया ॥

सुख पायो बैठे हते एक समै सुलतान । खां सरीफ तिनि बोलि लिये बीरसिंहदेव सुजान ॥ विरसिंहदेव सुजान मान मन बात कही तब ॥ या प्रयाग में कुवर सौं ह करिये मोसौं अब ॥ तो सौं करौं बिचार करहि अपने मन भाए ॥ अनत न कबहूं जाउ रहहु मो संग सुख पाए ॥ १ ॥ पायनि परि तसलीम करि बोल्यो बिरसिंह राज ॥ हौं गरीब तुम प्रगटही सदा गरीबनिवाज ॥ सदा गरीबनिवाज लाज तुमही लघु लामी ॥ बिनती करिये कहा महाप्रभु अन्तरजामी ॥ लोभ मोह भय भाजि भजैं हम मन बच कायनि ॥ जौ राखहु मरजाद तजौं सपनेहु नाहि पायनि ॥ २ ॥

गुदऱ्यो = गुज़रा । सामने गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ चौपही ॥

सोँ हैं कीन्ही माँझ प्रयाग । बीरसिंह सुलतान सभाग ॥ तुम ही मेरे दोई नैन । तुम हो बुधिबल भुज सुखदैन ॥ ९१ ॥ तुमही आगे पीछे चित्त । तुमही मंत्री तुमही मित्त ॥ मात पिता तुम पार्‌यो पान । तुम लागि छाडौं अपने प्रान ॥ ९२ ॥

बीरसिंह उबाच ॥

इक साहिब अरु कीजतु प्रीति । सब दिन चलन कहत इहि रीति ॥ ९३ ॥ तुम्हे छोड़ि मन आवे आन । तौ भूलौ सब धर्म बिधान ॥ यह सुनि साहि लह्यो सब सुख । लाग्यो कहन आपनौं दुःख ॥ ९४ ॥ जितनो कुल आलम परवीन । थावर जंगम दोई दीन[1] ॥ तामँ एकै बैरी लेख । अब्बुलफ़ज़ल कहावै सेख ॥ ९५ ॥ वह सालतु है मेरे चित्त । काढ़ि सकै तो काढ़हि मित्त ॥ जितने कुल उमरावनि जाने । ते सब करत हमारी काने ॥ ९६ ॥ आगे पीछे मन आपने । वह न मोहिँ तिनका करि गने ॥ हजरत को मनै मोहित भयों । याके पारे अंतर पर्‌यो ॥ ९७ ॥ सत्वर साहि बुलायो, राज । दक्खिन ते मेरेही काज ॥ हजरत सोँ जो मिलिहै आनि । तो तुम जानहु मेरी हानि ॥ ९८ ॥ बेगि जाउ तुम राजकुमार । बीचहि बासो कीजै रारि ॥ पकरि लेहु कै डारो मारि । यह मन निहचै करहु बिचारि ॥ ९९ ॥ होहि काम यह तेरे हाथ । सब साहिबी तुम्हारे साथ ॥ ऐसो हुकुम साहि जब कियो । मानि सबै सिर ऊपर लियो ॥ १०० ॥ राजनीति गुनि भय भ्रम तोरि । विनयो वीर सिंह कर जोरि ॥ वह गुलाम तू साहिब ईस । तासौं इतनी कीजहि रीस ॥ १०१ ॥ प्रभु सेवक की भूल विचारि । प्रभुता इहै जु लेइ सम्हारि ॥ सुनिजतु है हजरत को चित्त ॥ मंत्री लोग कहत है मित्त ॥ १०२ ॥

---

१ दोनों दीन, हिन्दू और मुसलमान ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तौ लगि साहि करैं जब रोष ॥ कहिये यौं किहि लागैं दोष ॥ जैन की जुवती कैसी रीति ॥ सब तजि साहिब ही सौं प्रीति ॥६३॥ताते वाहि न लागै दोष । छाँड़ि रोष कीजै संतोष ॥ दोहा ॥ सहसा कछु नहिं कीजई कीजै सबै विचारि ॥ सहसा करें ते घटि परैं अरु आवै जग गारि ॥ ८ ॥

साहसलीम उवाच ।

वरन्यौ मीत मते को सार ॥ प्रभु जनको सब यहै विचार ॥ ६४॥ जौ लाग यह जीवतु है सेख ॥ तौ लगि मोहि मुओ ही लेख ॥ सबै विचार दूरि करि चित्त ॥ बिदा होहु तुम अबही मित्त ॥ ६५ ॥ कसि तुरतहि वखतर तन वेगि ॥ लै बांधी कटि अपने तेग ॥ घोरौ दै सिर पाग पिन्हाइ ॥ कीनी विदा तुरत सुखपाइ ॥ ६६ ॥ दरखाने तें राजकुमार ॥ चलत भई यह सोभा सार ॥ रविमंडल ते आनँदकंद । निकासि चल्यो जनु पूरन चंद ॥ ६७ ॥ सैद मुजफ्फर लीने साथ ॥ चलै न जानै कोऊ गाथ ॥ बीच न एकौ कियौ मोकाम ॥ देख्यो आनि आपनो ग्राम ॥ ६८ ॥ आनंदे जनपद सुखपाइ ॥ नीलकंठ जनु मेघहि पाइ ॥ पठये चर नीके नरनाथ ॥ आवत चले सेखके साथ ॥ ६९ ॥ चारन कही कुवर सों आइ ॥ आए नरवर सेख मिलाइ ॥ यह कहि भये सिंधे[2] के पार॥ पलपल लखैं सेख की सार ॥ ७० ॥ आये सेख मीच के लिये ॥ पुर पराइछे डेरा किये ॥ आबुलफजल बडेही भोर ॥ चले कूंच कैं अपेन जोर ॥ ७१ ॥ आगे दीनी रसद चलाइ ॥ पीछे आपुनु चले बजाइ ॥ बीरसिंह दौरे अरि लेखि ॥ ज्यौं हरि मत्त गयंदनि देखि ॥ ७२ ॥ सुनतहि बीरसिंह को नाउँ ॥ फिरि ठाढौ भयो सेख सुभाउ॥ परम सरोष सो सेख बखानि॥

---

(१) दास। सेवक (२) सिंध—मध्यभारत में एक छोटी नदी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे अपर नृसिंहहिं जानि ॥७३॥ दौरत सेख जानि बड़ भाग ॥ एक पठान गही तब बाग ॥

पठान उवाच ।

नहीं नवाब पसर को ठौरु ॥ भूलि न सत्रुहि सामुहँ दौरु ॥७४॥ चलु चलु उयौं क्यौंहूं चलि जाहि ॥ तोहि पाइ सुख पावे साहि ॥ पुनि अपने मन में करि नेम ॥ जैबो चढि तहँ साह सलेम ॥ ७५ ॥

सेख उवाच ।

जूझत सुभट ठांवहीं ठावँ ॥ कहियो अब कैसे चलि जावँ ॥ आनि लियो उन आलमतोग ॥ भाजे लाज मरैगो लोग ॥ ७६ ॥

पठान उवाच ।

सुभटन को तो यहऊ काम ॥ आप मरे पहुचावहि राम ॥ जो तू, बहुते आलमतोग । जौत् बाचि है रचि हैं लोग ॥७७॥

सेख उवाच ।

मैं बल लीनौं दक्खिन देस ॥ जीत्यौ मैं दक्खिनी नरेस ॥ साहि मुरादि स्वर्ग जब गये ॥ मैं भुवभार आपु सिर लये ॥ ७८ ॥ मेरो साहि भरोसो करै ॥ भाजि जांउ मैं केसे घरै ॥ कह, यों आलम तोग गँवाइ ॥ कहिहौं कहा साहि सौं जाइ ॥ ७९ ॥ देखत लियो नगारो आइ ॥ कहा बजाऊं हौं घर जाइ ॥ घर को मेरे पाइन परै? ॥ मेरे आगे हिंदू लरै ॥ ८० ॥

पठान उवाच ।

सेख बिचारि चित्त महँ देखु ॥ काजु अकाजु साहि कौ लेखु ॥ सुनु नवाब तू जूझहि तहाँ ॥ अकबर साहि बिलोकै जहाँ ॥ ८१ ॥ प्रभु पै जाइ जमातिहि जोर ॥ सोक समुद्र सलीमहि बोर ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेखउवाच ।

तू जु कहत चालि जैये भाजि ॥ उठे चहूँ दिसि वैरी गाजि ॥ भाजे जातु मरनु जौ होइ ॥ मोकौ कहा कहै सब कोइ ? ॥ ८२ ॥ जौं भाजि ये लरिये गुन देखि ॥ दुहू भांति मरिबोई लेखि ॥ भाजौ जौ तौ भाजौ जाइ ॥ क्यौं करि दैहै मोहिँ भजाइ ॥ ८३ ॥ पति की बेरी पाइ निहारु ॥ सिर पर साहि मया कौ भारु॥लाज रही अँग अँग लपटाइ । कहु कैसै कै भाज्यो जाइ॥ ८४ ॥ छाँड़ि दई तिहि बाग बिचारि ॥ दौरयौ सेख काढि तरवारि ॥ सेख होइ जितही जित जवै ॥ भर भराइ भागैँ भट तबै ॥८५॥ काढे तेग सोह योँ सेख ॥ जनु तनु धरे धूमधुज देख ॥ दंड धरै जनु आपुन काल ॥ मृत्यु सहित जम मनहु कराल ॥ ८६ ॥ मारै जाहि खंड द्वै होइ ॥ ताके सम्मुख रहै न कोइ ॥ गाजत गज, हींसत हय ठारे ॥ विनु सूंडनि विनु पायनि कारे॥ ८७ ॥ नारि कमान तीर असरार ॥ चहुँ दिसि गोला चले अपार ॥ परम भयानक यह रन भयौ ॥ सेखहि उर गोला लागि गयौ ॥ ८८॥ जूझि सेख भूतल पर परे ।। नैकु न पग पाछे को धरे ॥

सोरठा ॥

अवधि धर्म की लेख द्विज दीनन प्रतिपाल तै ॥ रन में जूझे सेख अपनी पति लै साहि की ॥ ८९ ॥ जब खुरखेट निपट मिटि गई रन देखन की इच्छा भई ॥ ८९ ॥ कहूं तोग[२] कहु डारे तास ॥ कहुं सिंदूख पताक प्रकास ॥ कहुँ डारे रेजा तरवारि ॥ कहुं तरकस कहुं तीर निहारि ॥ ९० ॥ कहूँ रुंड कहुँ डारे मुंड ॥ कहूं चौंर झुंडनि के झुंड ॥ हिलत लुढत कहुं सुभट अपार ॥ टूटिनि टिकि टिकि उठत तुषार ॥ ९१ ॥ देखत कुँवर गये तब तहाँ ॥ अम्बुज फजलि सेख है जहाँ ॥ परम सुगंध गंध तन भरयौ । सोनित सहित धूरि धूसरयौ ॥९२॥ कछु सुख कछु दुख व्यापत भये ॥ ले सिर कुँवर बडौनहिँ गये ॥

---

१ धूम धुज = धूमध्वज, अग्नि । २ तोग = नगाडा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कवित्त ॥

आवतु है जीते जोर दक्खिन, अभयपद लैनहार दैनहार दक्खिन नगर कौ ॥ सालनि ज्यौं, तालनि ज्यौं, केसव तमालनि ज्यौं तेरे भुवपाल साल ईस धीरधर कौ ॥ दीनौ छाडि छिति नाम साहिब सलीम साहि महावीर बीरसिंह सिंह मधकुर कौ॥ अब्बुलफजलि मदमत्त गजराज राज मारि डार्यौ सखा सेख साहि अकबर कौ ॥ ९२ ॥ देव सु बड़गूजर सुत भले ॥ चंपतराइ सीसु ले चलै ॥ ९३ ॥ सीसु साहि के आगे धर्यौ ॥ देखत साहि सकल सुख भर्यौ ॥ किधौं बिसेष बिटप कौ मूल ॥ किधौं सकल फूलनि कौ फूल ॥ ९४ ॥ ऐसी सोभा सीस कि भनौ ॥ साहि मनोरथ कौ फल मनौ ॥ सबके सुनत साहि यह कह्यौ॥ दिल्ली के घर कौ बध रह्यौ ॥ ९५ ॥ बीरसिंह की यहई ठई ॥ हम को सकल साहिबी दई ॥ बीरसिंह हमै लीने मोल ॥ करी साहिबी निपट निडोल ॥ ९६ ॥ फिरि थाप्यौ काबिल कौ राज ॥ कीनौ सकल खलक कौ काज ॥ राख्यौ आजु हमारौ राज ॥ अब हम दैहैं उनको राज ॥९७ ॥ तबही मांग्यौं कंचन थारु ॥ मुक्ता फल कै रोचन चारु ॥ अरुन तरनि[1] उडगननि समेत ॥ सूरज मंडल ज्यौं सुख देत ॥९८॥ नेजा नवल जरायनि जर्यौ ॥ चवँर छत्र ससि सोभा भर्यौ ॥ बिदा कर्यौ तब बिप्र बुलाइ ॥ चंपति बडगूजर पहिराइ ॥ ९९ ॥ दयौ नगारौ अति सुख पाइ ॥ पठये साहि निसान बजाइ ॥ आये घर आनंद्यौ लोग ॥ मित्रनि सुख सब सत्रुन सोग ॥ १०० ॥ सुभ ससि बरन नखत तिथि जानि ॥ बैठारे सिंहासन आनि ॥ सकल मरातिब ठाढ़े किये ॥ हरसिंह देव छरी कर लियै ॥ १०१ ॥ दै सिर छत्र छबीलौ साज ॥ अलक तिलक दै दीनौ राजु ॥

---

१ तरनि = तराजि. किरण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ॥

कुल में बढयौ बिरोध सुनु दान लोभ यह भेव ॥ रामसाहि जीवत भये राजा बिरासिंह देव ॥ १० ॥

इति श्रीमन्भूमंडलाखंडलेश्वर महाराजाधिराज राजा श्रीवीरासिंह देवचरित्रे दान लोभ विंध्यवासिनी संवादे राज प्राप्ति वर्णनं नाम पंचम प्रकाशः ॥ ९ ॥

—o—

दान उवाच ।

सुन्यौ साहि जब मारयौ सेख ॥ कहा करयौ कहिये सुबिसेख ॥ कहा आपने मन मै गुन्यौ ॥ सब व्यौरा हम चाहत सुन्यौ ॥ १ ॥

श्रीदेव्युवाच ॥

मारयौ सेख जहीं जिहिं सुन्यौ ॥ अपनों सीसु तहीं तेइ धुन्यौ ॥ नहां तहां उमरावनि सोच ॥ क्यौं कहिनै यह बड़ो सकोच ॥ २ ॥ यह काहे उठे साहि दिन एक ॥ सुनत हते उमराउ अनेक ॥ आवत सेख कहत सब लोइ ॥ रह्यौ कहां यह जानत कोइ ॥ ३ ॥ काहू कछू न उत्तर दियौ ॥ साहि कछू मनु दुचितौ कियौ ॥ ४ ॥ तब प्रभु रामदास सौं कह्यौ ॥ सेख सोध तुमहीं नहि लयौं ॥ रामदास यह उत्तरु दयौ ॥ सेख साहि सिर सदके भयौ ॥ ५ ॥ सुनत साहि ह्वै गये अधीर ॥ परे धरनि सुधि विगत सरीर ॥ सबही हाइ हाइ ह्वै रही ॥ पूरि रही सब आँसुनि मही ॥ ६ ॥ अति निःशब्द भयौ दरबार ॥ पवन हीन ज्यौ सिंधु अपार ॥ घरीं चारि मै आई सुद्धि ॥ तब उठि बैठयौ साहि सुबुद्धि ॥ ७ ॥ रामदास तू कहहि सम्हारि ॥ किसा सेख कौ बचन बिचारि ॥ कहिधौं कछू औसिलौं भयौ ॥ कै काहू बन जीवन हयौ ॥ ८ ॥ परयौ किधौं बैरिन सौं काम ॥ कै काहू सौं भयो संग्राम ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रामदास उवाच ।

आवत हौं अपने मग चल्यौ ॥ अब्बुलफजल सेख सुख फल्यौं ॥ ९ ॥ साहि सलेम हेतु गहि सेल ॥ उठ्यौं बीच बिरसिंह बुँदेल ॥ तासौं तबहि जुझ अति भयो ॥ जुझि सेख परलोकाहि गयौं ॥ १० ॥ सोक न कीजे आलमनाथ ॥ ताकहँ तुरत लगावहु हाथ ॥ ऐसे वचन सुनै नरनाह ॥ नैन नीर के चले प्रवाह ॥ ११ ॥ कोलाहल महलानि में भयो ॥ तिनकी प्रतिधुनि सुनि मन रयो ॥ मुग्धा मध्या प्रौढा नारी ॥ उठि दौरी जहँ तहँ डर डारी ॥ १२ ॥ भूषन पटन सम्हारत अंग ॥ अधिक सोभ बाढी अँग अंग ॥ चंचल लोचन जल झलमले ॥ पवन पाइ जनु सरसिज हले ॥ १३ ॥ चिलके अलिक अलक अति बनी ॥ तरकी तन अँगिये की तनी ॥ राजकुमारि हसैं मुंह मोरि ॥ तुरकिन के उपजे दुख कोरि ॥ १४ ॥ रोवति तन तोरति अति बनी । बिच बिच बाजति ढोलक घनी ॥

॥ सवैया ॥

केसौराइ अब्बुलफजलि मारयौ बीरसिंह साहि के महल जहँ तहँ उठि धाई है ॥ पीरी पीरी पातरी निपट पट पातरेई कटितट छीन उर लट लटकाई है ॥ भृकुटी सौं व झुकी सी, झझके से लोचनि, उझके से उरजनि, उर छबि छाई है ॥ खानजादी खान डारि, पान डारि सेखजादी, साहिजादी पान डारि पीटनै को आई है ॥ ४ ॥

चोपही ॥

खाँ नाज़िम कछुवाहो राम ॥ सेख फरीदहि भूल्यौ काम ॥ राउ भोज अरु दुरगाराउ ॥ जगन्नाथ औरै उमराउ ॥ खत्री त्रिपुर साथ के लये ॥ सब मिलि निकट साहि के गये ॥ १५ ॥ साहि बिलोके आजमखान ॥ बोलि उठ्यो दिल्ली सुलतान ॥ मेरे प्रान जातु हैं देख ॥ आँखिन आनि दिखावहु सेख ॥ १६ ॥ हाथी हय हाटक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनि धीर ॥ गाइक नाइक गुनी गभीर ॥ राग वाग फल फूल विलास ॥ डासन आसन असन सुवास ॥ १८ ॥ भूषन भाजन भवन वितान ॥ संपति सकल कितेक पुरान ॥ पसु पच्छी भट सेना अंग ॥ विद्या बिबिध बिनोद प्रसग ॥ १९ ॥ देस नगर साँथर गढ़ ग्राम ॥ सेख बिना मेरे किहि काम ? ॥

खान उवाच॥

जैसो सेख हतौ इहि धाम॥ तैसे तेरे बहुत गुलाम॥२०॥ता लगि कब तैं करियतु दुःख ॥ खान पान छाडत सब सुक्ख ॥ भारामल सिर सदके भयौ ॥ भव भगवानदास कित गयौ ॥ २१ ॥ खान जहांन कुतुबदीखान ॥ आलमखान मदफ्फरखान ॥ नृपति गुपाल सदा रनधीर ॥ टोडरमल्ल राजबलबीर ॥ २२ ॥ को यह सेख सुनै सुलतान ॥ जा लगि छाँड़न कहत जहान ॥ मीचु कौन पर राखी जाइ ॥ कीजै राज काज सुख पाइ ॥ २३ ॥

॥ कुंडरिया ॥

कहै खान आजम जवन समझावन के बैन ॥ समुझे साहि न काहि थके समुझे नेक न ऐन ॥ समुझै नेकु न ऐन नैन जलधर गति धारी ॥ अति धारा संपात होत केसी भ्रमकारी ॥ उमग्यो सोक समुद्र कहो क्यो राखे रैहै ॥ बार बार समुझाइ रहै थकि जाइ जु कैहै ॥ कवित्त ॥ अमिठि अमिठि निरवारि जाति आपुही तैं केसौ दास भृकुटी लतासी गिरिवर की ॥ जरि जरि सीरी होति, सीरी ह्वै जरति छाती, क्वैला कैसी दाही देह दीह हेम हरकी ॥ भरि भरि रीति जाति, रीति रीति भरै पुनि रहट[1] धरी सी आंखि साहि अकबर की॥ मधुकरसाहि सुत राजा बीरसिंह जू की कीनी है कथा विरंचि न्याइ घर घर की ॥ ४ ॥

---

१ रहट एक यंत्र जिससे पंजाब और बुंदेल खंड में खेत सींचने के लिए पानी खींचते हैं। इसमें छोटे छोटे बहुत से घड़े लगे रहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज रासो ।

यह हिन्दी साहित्य का सब से प्राचीन ग्रन्थ है जो अब तक प्राप्त हुआ है। इसमें कवि ने भारतवर्ष के अन्तिम क्षत्री सम्राट राजा पृथ्वी राज का जीवनवृत्तान्त विस्तारपूर्वक लिखा है जो आदि से अन्त तक विचित्र घटनाओं से भरा हुआ है। इतिहास प्रेमियों के लिये तो यह ग्रन्थ अनमोल रत्न है। इसकी भाषा कुछ कठिन है अतः सभा ने समस्त ग्रन्थ के सारांश को सरल हिन्दी भाषा में इसके साथ ही साथ छपवाया है जिससे मूल ग्रन्थ के पठन पाठन में बड़ी सहायता और आनन्द मिलता है। मनोरञ्जक तो यह इतना है कि कहीं से कोई पृष्ठ उठा कर दस पाँच पंक्तियां पढ़िये फिर कदापि आप समस्त ग्रन्थ पढ़े बिना नहीं रह सकते। जिन हिन्दी प्रेमियों ने इस ग्रन्थ को अब तक नहीं लिया है उन्हें इसकी एक प्रति अवश्य लेनी चाहिए। इसके ६६ पर्व्व २० भागों में छपे हैं जिनका मूल्य २३।-) है। प्रत्येक भाग जुदा जुदा भी मिल सकता है। मूल्य १।) के लगभग है।

अन्य उपयोगी पुस्तकें ।

हम्मार रासो (रणथंभौर के वीर शिरोमणि महाराज हम्मीर देव का जीवन चरित) २)
हम्मीर हठ „ ॥)
जंगनाम (दिल्ली के बादशाह बहादुर शाह के पुत्रों का युद्ध) ॥।)
इन्द्रावती १॥)
कवि आनन्द घन कृत बिरहलीला =)
भूषण ग्रन्थावली (प्रसिद्ध कवि भूषण के शिवराज भूषण, शिवा बावनी आदि ग्रन्थ) १॥।=)
सुजान चरित्र २)
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवनचरित्र ॥=)
महिला मृदुबाणी (भारत वर्ष की विदुषी स्त्रियों की संक्षिप्त जीवनी) १)
हिम्मत बहादुर विरुदावली (बांदा के प्रसिद्ध वीर हिम्मत बहादुर का चरित्र) १)
नन्द दास की रासपंचाध्यायी ।=)
अखरावट ।=)
यूरोपीय दर्शन (यूरप के दर्शन शास्त्र का इतिहास) ॥।)
परिचर्याप्रणाली (रोगी की शुश्रुषा करने की विधि) ।)
संक्षेपलेखप्रणाली अर्थात् हिन्दी शार्टहेण्ड १)
महाराणा प्रतापसिंह (नाटक) ॥।)

ये सब पुस्तकें मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से मिल सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डाक्तर बर्म्मन की बनाई

जूड़ीबुखार वा तिल्ली की दवा

२६ वर्ष की परीक्षित

(१) तीन चार मौताज ही में बुखार का आना बन्द होता है, (२) थोड़ही दिन के सेवन से खून गाढ़ा होता है और दुबारा नहीं आता (३) यह पिल्ही वा तिल्ली को गलाती है। मोल छोटी शीशी ॥) बड़ी शीशी ॥।=) आने। डाः मः ।-) २ तक ।=) डाः मः ।=) २ तक ॥)

दाद की मलहम।

एक बार के लगाने से खुजली मिटती है। दो तीन बार के लगाने से दाद जड़ से छूट जाता है, जब सब दवाइयां लगा कर थक गये हो तो इसका व्यवहार करो। मूल्य ।) आने डिबिया डाः मः १ से ६ तक ।-) १० तक ।=)। विशेष हाल वा प्रशंसापत्रों की पूरी पुस्तक बिना मूल्य मंगाकर पढ़िये।

पुराने मेलेरिया बुखार की गोलियां।

इन गोलियों में नाम मात्र भी कुईनैन नहीं है। वास्तव में जहां बार बार कुईनैन वा कुईनैन मिली हुई दवाएं खाने पर भी बुखार नहीं छोड़ता अथवा पुराना हो गया हो, ये गोलियां ऐसी हालत ही के लिये बनी हैं। जाड़ा बुखार पुराना पड़ जाने पर पारी से न आकर दिन रात थोड़ा बहुत बना रहता है। शरीर का खून पतला पड़ने से रंग फीका व मैला हो जाता है। थोड़े ही श्रम से कलेजा कांपता है स्वास फूलता है, भूख घट जाती है, पिल्ही वो यकृत के बढ़ने से पेट निकल आता है, कभी कभी मुंह वो हात पैरों में सूजन आ जाती है और ज़िन्दगी व्यर्थ जान पड़ती है। ऐसी हालत में भी ये गोलियां गुण देती हैं।

मोल २४ गोलियों की डिबिया ॥) आने।

डाक महसूल १ से ६ डिबिया तक ।-) १ डिबिया ।=) आने।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पुस्तक संख्या १८, १९, २०

ग्रंथ संख्या ३८]

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक, श्यामसुन्दर दास, बी० ए० ।

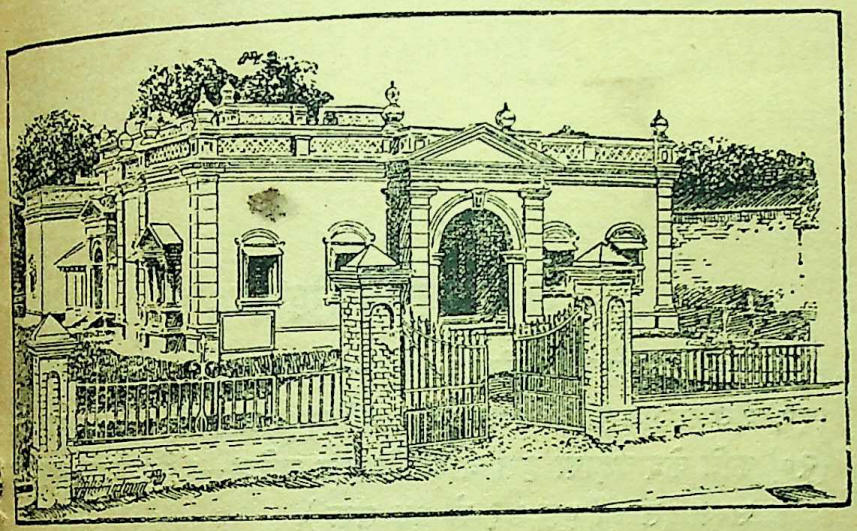

FASCICULUS NO. 38.] [BOOKS NO. 18, 19, 20.

NAGARI PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR

SYAM SUNDAR DAS, B.A.

PUBLISHED BY

THE NAGARI PRACHARINI SABHA,

BENARES.

मूल्य प्रति संख्या ॥) [*Price per fasciculus As. 8.*

ISSUED ON THE 20TH FEBRUARY 1913.

PRINTED BY APURVA KRISHNA BOSE AT THE INDIAN PRESS,

ALLAHABAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका।

(१८) राजविलास की भूमिका आदि—(१२ पृष्ठ)
(१९) देव ग्रंथावली के प्रथम भाग की भूमिका आदि—(२८ पृष्ठ)
(२०) कवि केशवदास कृत वीरसिंह देव चरित्र—पंडित रामचन्द्र शुक्ल सम्पादित। (पृष्ठ ४१ से ६४ तक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Nagari Pracharini Granthamala Series No. 18.

कवि मान कृत

राजविलास

भगवानदीन सम्पादित

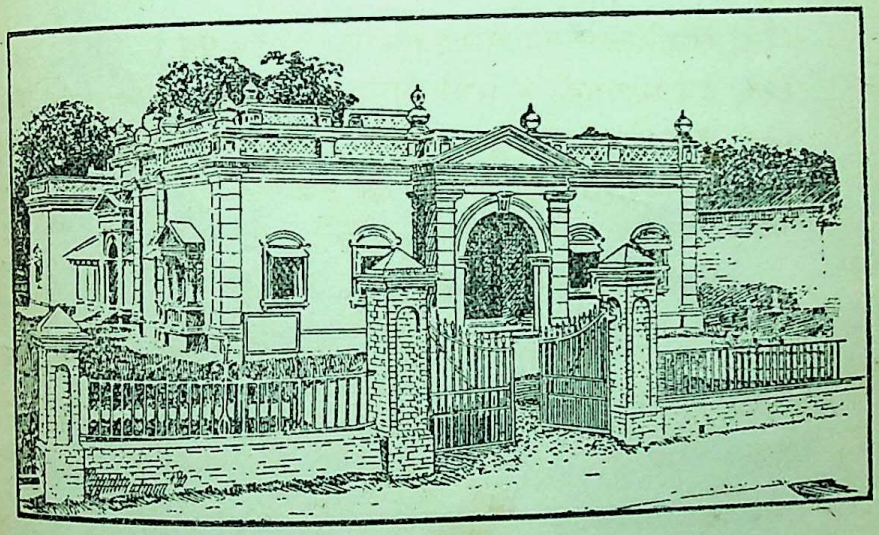

तथा

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित ।

मेडिकल हाल प्रेस में बाबू अलोपी प्रसाद द्वारा मुद्रित हुआ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विलाससूची ।

(१) पहिला विलास	...	...	पृष्ठ १	से	३४	तक
(२) दूसरा विलास	...	...	३५	,,	६१	,,
(३) तीसरा विलास	...	...	६१	,,	७९	,,
(४) चौथा विलास	...	...	७९	,,	८२	,,
(५) पांचवां विलास	...	...	८२	,,	८५	,,
(६) छठां विलास	...	...	८६	,,	१०३	,,
(७) सातवां विलास	...	...	१०३	,,	११८	,,
(८) आठवां विलास	...	...	११८	,,	१४८	,,
(९) नवां विलास	...	...	१४८	,,	१८३	,,
(१०) दसवां विलास	...	...	१८३	,,	२०५	,,
(११) ग्यारहवां विलास	...	...	२०६	,,	२०८	,,
(१२) बारहवां विलास	...	...	२०८	,,	२११	,,
(१३) तेरहवां विलास	...	...	२११	,,	२१७	,,
(१४) चौदहवां विलास	...	...	२१७	,,	२२४	,,
(१५) पन्द्रहवां विलास	...	...	२२४	,,	२३१	,,
(१६) सोलहवां विलास	...	...	२३१	,,	२३५	,,
(१७) सत्रहवां विलास	...	...	२३६	,,	२४२	,,
(१८) अठारहवां विलास	...	...	२४३	,,	२६३	,,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका ।

साहित्य में इतिहास का बहुत ऊंचा दर्जा है। हिन्दी में अभी इतिहास की बहुत कमी है। हिन्दी-साहित्य-संसार में अभी तक सच्चे इतिहास लेखक तथा इतिहास पाठक बहुत कम देखे जाते हैं। परंतु अब लोगों का ध्यान इस ओर कुछ कुछ झुका सा जान पड़ता है। इसी लिये सभा ने भी इतिहास ग्रन्थों के प्रकाशन में अधिक ध्यान देना आरंभ किया है।

इतिहास एक रूखा सूखा विषय है। इसी कारण लोग उस ओर कम ध्यान देते हैं। परंतु जब सच्चे इतिहास के साथ सुन्दर कविता का मेल हो जाता है तब उसकी छटा दुगुनी मनमोहनी हो जाती है। इस हेतु साहित्य पर उन कवियों का बड़ा भारी एहसान होता है जो ऐतिहासिक काव्य लिखते हैं। ऐसे ऐतिहासिक काव्य ही अजर और अमर होकर साहित्य की शोभा बढ़ाते हैं।

यह ग्रंथ भी ऐसा ही एक ऐतिहासिक काव्य है। इसे राजपूताना निवासी "मान' कवि ने विक्रमी संवत् १७३४ में लिखना आरंभ किया था। मालूम होता है कि इस ग्रन्थ को कवि ने तीन वर्ष बाद समाप्त किया है क्योंकि सं० १७३७ तक की घटनाओं का वर्णन इसमें पाया जाता है। इसमें उदयपुराधीश महाराणा राजसिंह के समय का वर्णन है। जिस समय का वर्णन कवि ने इस पुस्तक में किया है उस समय का साधारण कालज्ञान पाठक को अवश्य होना चाहिये, नहीं तो कहीं कहीं कुछ बातों के समझने में

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठिनाई पड़ेगी। यह ग्रन्थ ठीक उसी समय लिखा गया है जिस समय इसमें वर्णित घटनायें हो रही थीं। अतएव इसके वर्णन प्रामाणिक मानने योग्य हैं। उस समय की देशदशा यों थी। अकबरी समय की सुख और शांति की छटा पर मलिनता आ गई थी। औरंगज़ेब ने बाप को कैद और भाइयों को धोखे से मार काट कर राज्य को अपने हस्तगत किया था। हिन्दुओं पर जज़िया (एक प्रकार का कर) जारी हो चुका था। राजघरानों की रूपवती बहू बेटियों पर औरंज़ेब की बुरी दृष्टि प्रबलता से पड़ने लगी थी। औरंगज़ेब की कौन कहे उस समय के छोटे छोटे सूबेदार वा सैनिक अफसर भी हिन्दुओं की रूपवती बहू बेटियों को अपना ही माल समझते थे। देवमूर्तियां तोड़ी जा रही थीं, मंदिरों के मसाले से मस्जिदें तैयार हो रही थीं। ऐसे समय में हिन्दुओं की धार्मिक दशा कैसी संकटापन्न रही होगी, और उनके मनोभाव कैसे रहे होंगे इसका भी विचार पाठक को कर लेना चाहिये।

जिस समय समस्त भारत में औरंज़ेबी जुल्म उपद्रव मच रहा था उसी समय संयोगवश राजपूताना में बड़े प्रबल पराक्रमी और नामी नामी राजा हुए। जयपुर के सिंहासन पर वीर श्रेष्ठ महाराजा जयसिंह जी, जोधपुर के सिंहासन पर प्रसिद्ध वीरवर महाराजा यशवन्त सिंह जी, और मेवार के पवित्र राजसिंहासन पर वीरकेशरी महाराणा राजसिंह जी विराजमान थे। ये तीनों महाराज बड़े ही तेजस्वी और स्वधर्मानुरागी थे। इनको औरंगज़ेब अपने हाथ की कठपुतली बनाना चाहता था परंतु बना न सका। तब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उसने प्रथम दो महाराजों को धोखे से (टाड साहेब के लेखानुसार) विष दिलवा कर मरवा डाला और यशवंत सिंह के कई एक पुत्रों को भी धोखे ही से मार डाला। महाराजा यशवन्त सिंह का केवल कई मास का एक बालक पुत्र (अजित सिंह) बच गया था। औरंज़ेब ने उसे भी हथियाना चाहा। परंतु उस बालक की माता मेवार की राजकन्या थी। इसी रिश्ते से उस बालक की माता ने मेवारपति महाराणा राजसिंह की शरण ली। राजसिंह ने बालक अजित सिंह को अपने पास बोला लिया और उसकी रक्षा की। राज सिंह पर औरंगज़ेब की ख़फ़गी का यही मुख्य कारण था।

इसके पहिले ही रूप नगर की राजकुमारी प्रभावती पर औरंगज़ेब मोहित हुआ था और उसके साथ विवाह करना चाहता था। विवाह होने ही को था, और कुछ शाही सेना भी रूप नगर तक पहुंच चुकी थी कि उक्त राजकुमारी ने राजसिंह की शरण ली, और राजसिंह ने शाही सेना को मार काट कर उक्त राजकुमारी का उद्धार करके उसके साथ विवाह कर लिया। इससे औरंगज़ेब चिढ़ा हुआ था ही। बस अजित सिंह को शरण देने से उसके क्रोध का पारा १०८ डिगरी से भी अधिक ऊंचा चढ़ गया और राजसिंह पर हल्ला बोल दिया गया।

महाराणा राजसिंह भी उन दिनों जवानी की उमंगों पर थे। सच्चा और उच्च कुलीन क्षत्रिय रक्त उनकी नसों में दौड़ रहा था। उन्हों ने भी कमर कस कर औरंगज़ेब का मुक़ाबला किया और ऐसी धीरता और निपुणता से युद्ध किया कि औरंगज़ेब के दांत खट्टे हो गये। इसी युद्ध का वर्णन इस ग्रन्थ में किया गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी युद्ध के समय मेवार में एक घोर अकाल भी पड़ा था। उस समय महाराणा राजसिंह ने 'राजसर' नामक एक बड़ा तालाब और उसी तालाब के किनारे एक बड़ा विष्णु मंदिर और निकट ही 'राजनगर' नामक ग्राम बसाकर अपनी प्रजापालकता और नीतिनिपुणता का भी परिचय दिया था। इस बात का भी वर्णन इस पुस्तक के आठवें विलास में आया है।

पुस्तक में १८ विलास हैं जिनका संक्षेप यों है—

(१) सरस्वतीविनय। संवत् १७३४ में ग्रंथारंभ। मौरी वंशज चित्रांगद का मेदपाट नामक नगर बसाकर १८ प्रान्तों पर राज्य करना। सातवीं पीढी में चित्रंग नामक राजा का होना। शिव वर से बप्पारावल की उत्पत्ति। हारीत मुनि के वर से बप्पा रावल का राजा होना और चित्रांगद को जीत कर चित्तौर लेना। स्वप्न में हारीत सिद्ध का दर्शन देकर रावल की पदवी देना।

(२) बप्पा रावल की वंशावली। जगत सिंह की सभा का वर्णन। उदयपुर नगर का वर्णन (बहुत ही अच्छा है)। संवत् १६८६ में जगतसिंह जी के पुत्र राजसिंह का जन्म। उनकी जन्म कुंडली और फल। ११ वर्ष की आयु तक का वर्णन।

(३) राजसिंह जी का प्रथम विवाह बूंदी में होना। बूंदी नरेश छत्रसाल हाड़ा की दो लड़कियां थीं। दोनों का विवाह एकही समय रचा गया था। जेठी पुत्री का विवाह राजसिंह के साथ; छोटी का विवाह जोधपुर के राजकुमार यशवंत सिंह के साथ। दोनों बरातें साथ ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आई थीं। प्रथम किस की भांवरें होनी चाहियें इस विषय में दोनों बरातों में कुछ झगड़ा हुआ, परंतु छत्रसाल जी के समझाने से झगड़ा शान्त हुआ और मंडप में पहिले राजसिंह ही की भांवरें हुईं।

(४) 'ऋतुविलास' नामक बाग का वर्णन-(वर्णन बहुत ही सुन्दर है)।

(५) राजसिंह जी का २३ वर्ष की अवस्था में सं० १७०८ में सिंहासनासीन होना।

(६) सिंहासनासीन होने पर 'टीकादारी' की रस्म के अनुसार दिग्विजय को निकलना और मुगल राज्य के 'मालपुर' नामक ग्राम को लूट लेना। उस समय मुगल बादशाह शाहजहां का साम्राज्य था।

(७) रूपनगर के राजा मानसिंह राठौर की बहिन रूपकुमारी (प्रभावती) को औरंगज़ेब ने ब्याहना चाहा। रूपकुमारी ने स्वयं पत्र लिख कर राजसिंह को बोलाया। राजसिंह ने वहां जाकर रूपकुमारी से विवाह किया।

(८) ७ वर्ष का अकाल पड़ा। राजसिंह ने सं० १७१७ में कैलपुरा के निकट 'राजसर' नामक बड़ा तालाब बनवाया, एक विष्णु मंदिर बनवाया, और तुलादान किया।

(९) औरंगज़ेब और जोधपुराधीश यशवंत सिंह की नोक झोक का वर्णन। राजसिंह ने जोधपुर की सहायता की। वहां के बालक राजा को अपनी शरण में रक्खा।

(१०) औरंगज़ेब ने जोधपुर के बालक राजा (अजितसिंह) को मांगा, राजसिंह ने इनकार किया, औरंगज़ेब ने चढ़ाई की। दोनों ओर से युद्ध की तैयारियां हुईं। औरंग-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ज़ेब अजमेर में पड़ा रहा और अपने शाहजादा अकबर को उसने लड़ने भेजा। सामंतों की सलाह से राजसिंह ने लड़ाई करना ही ठीक ठहराया।

(११) 'देवसूरी' की घाटी में विक्रम सोलंकी और गोपीनाथ कमधज्ज ने रूमी सेना का विनाश किया।

(१२) कुंवर उदयभान को दूसरे युद्ध का वर्णन।

(१३) नोनवारा युद्ध में महासिंह, रतन सिंह, और केशरी सिंह नामक सामंतों ने गोरी फौज को पराजित किया।

(१४) गंगासिंह सगतावत (केशरीसिंह के पुत्र) ने मुगलसेना का 'हस्तीयूथ' छीन लिया।

(१५) भीमसिंह (राजसिंह के बड़े पुत्र) ने गुजरात पर चढ़ाई कर के (मुगल राज्य का एक सूबा समझ कर) उस देश को लूट लिया परंतु पिता की आज्ञा से वे शीघ्र ही वहां से लौट आये।

(१६) सांवलदास (बधनौर नरेश) ने बधनौर की ओर से आती हुई मुगल सेना को छिन्न भिन्न कर के भगा दिया। रुहेला खां इस सेना का सर्दार था और कुल सेना १२००० थी।

(१७) दयालसाह (राज्यमंत्री) ने मालवा पर (मुगलराज्य का सूबा समझ कर) चढ़ाई की। उज्जैन नगर लूट लिया और मालवा जीत लिया।

(१८) शाहज़ादा अकबर (औरंगज़ेब का पुत्र) ने चित्तौर पर चढ़ाई की। उस के साथ ५०००० सेना थी। (यह घटना संवत् १७३७ की है) राजसिंह के पुत्र जयसिंह ने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अकबर का मुकाबला किया। बहुत कठिन युद्ध हुआ। अंत में शाहज़ादा हार कर अजमेर को भाग गया।

पुस्तक का अंतिम उल्लास पढ़ते पढ़ते भास होने लगता है कि कवि यहीं पर ग्रंथ को समाप्त नहीं करना चाहता था, परंतु इसी वर्ष (संवत् १७३१ वि०) महाराणा राजसिंह का देहान्त होगया। इस लिये कवि ने अचानक ग्रंथ की समाप्ति की है।

सभा ने इस पुस्तक का सम्पादन भार मुझे सौंपा और मैंने सहर्ष स्वीकार किया। मैं युक्तप्रदेश का निवासी हूं। पुस्तक में राजपूताना के शब्दों की भरमार है। मैंने अपनी शक्ति भर तो कसर कोताही नहीं की, परंतु बहुत सम्भव है कि इसमें अनेक अशुद्धियां हो गई हों। इस लिये पाठकों से नम्रतापूर्वक निवेदन है कि उन अशुद्धियों के कारण सभा पर कोई दोषारोपण न करें वरन् उसका कारण मेरी अल्पज्ञता ही समझें। यदि सुविज्ञ पाठक इतनी कृपा और करें कि अशुद्धियों से सभा को सूचित कर दें तो मुझे पूर्ण आशा है कि द्वितीय संस्करण में सभा उन पर ध्यान देकर संशोधन कर देगी।

काशी
२९-११-१९१२

विनीत,
भगवानदीन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Nagari Pracharini Granthmala Seris No 19

देव ग्रन्थावली।

प्रथम भाग।

गणेश विहारी मिश्र सम्पादित।

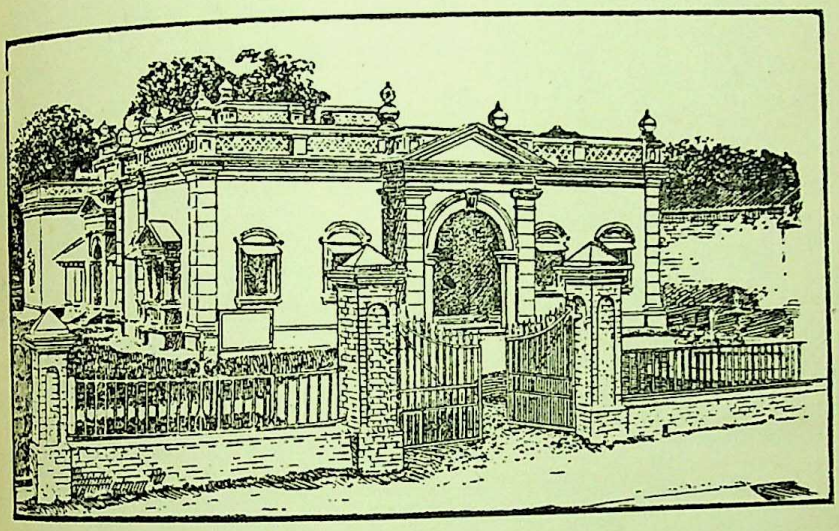

तथा।

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

१९१२.

मेडिकल् हाल प्रेस में बाबू अलोपी प्रसाद द्वारा मुद्रित हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्धि पत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
		प्रेमचन्द्रिका	
७	१३	पदुमिन बढ़ि	पदुमिनि सटि
११	५	कार्यण्य	कारपण्य
१३	१५व१८	परस,	परस
१४	३	प्रवास,	प्रवास
१४	८	गूढ़गूढ़ा	गूढ़ागूढ़
१४	१८	स्नेह	स्नेह
१४	२२	आप	आप का
१६	२२	परौ	परौं
१८	१३	कहानि	कहानिन
१८	४	निकंजहि	निकुंजहि
१८	१७	देवन	देव
२१	८	॥ सवैया ॥	प्रलाप ।
			सवैय ।
२३	१७	सलोने	सलौन
२३	१८	किरण	चाँदनी
२४	२	अचोन	अचौन
२४	२	कोहों	कोहौं
२५	२०	सुख	मुख
२६	१३	करतति न	करतूतिन
२८	२	निर्मल	बिमल
२८	५	उत्कंठा	उतकंठा
३०	३	४५	४
३१	८	पासरती	पसारती
३२	५	छटी	छुटी
३२	१५व१६	देव देव	देव
३२	२३	बड़ा	बड़ी
३३	३	सांवरी	सांवरि
३३	२०	मई	भई
३४	३	अलस्य	अलभ्य
३५	६	फरकी	फिरकी
३५	१६	ज़दुराय	जदुराय
३७	२२	जरी	चुगली करने वाली
४०	४	गनैनी	गनैगी
४२	४	५५	४५
४३	२२	बहुनायत	बहुतायत
४४	५	हौं	हौं
४४	२०	रहै	रहैं
४५	२	रहै	रहैं
४५	११	गयो	गये
४६	१०	३	४
४६	१२	तौ	न
४६	१६	हौब	हाय
४७	आदि	७४	४७
४७	१३	कुबिजा कि तेबर्ट दुबिजा १०	कुबिजाट कितेब१० दुबिजा११
५८	२२	खहिर	खदिर
५८	२३	५ विशेष दृढ़	०
६१	३	चाहौ	चाहौं
६१	४	गाहौ	गाहौं
६१	५	निबाहौ	निबाहौं
६१	७	सराहौ	सराहौं
६१	२१	ठकोसला	ढकोसला
६२	२२	खाराब	खराब
६५	१५व१६ केबीच	०	अथ यशोदा क शुद्ध वात्सल्य
६७	१८	बहनाम	०
६७	२०	घृणास्प	घृणास्पद

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
		रागरत्नाकर	
१	२	रचित ।	रचित
२	६	दायद्दये	दाद्दये
२	१४	उज्जवल	उज्ज्वल
३	१५	भुजग	भुजंग
३	७	उभय	उभै
३	१५	छुटी	छुटीं
३	१६	घोष	घोस
६	८	अनूप	०
८	२४	सगमनी	सगमपनी
१०	१७	नयन	नैन
११	२३	खड़ाष	खाड़व
१६	२३	ग, म,	ग, म, प,
१८	२३	ओढ़व	ओड़व
१८	२	कुमकुम	कुंकुम
१८	६	मावति	भावति
		सुजानविनोद ।	
५	१०	रससमय	रस मै
८	१८	ओठ अ- मैठ्यो	ओठनि ऐठ्यो
८	१	सकोचनि	सकोचन
८	८	पटाई	पठाई
८	१८	गिरत	गिरति
८	२३	देरी	दैरी
१०	१	बैरिन	बैरिनि
१०	३	चेरी	चैरी
११	१८	ठाढ़ै	ठाढ़े
१२	५	यथा	पुनर्यथा
१२	११	पुनः	अवश
१२	१८	आवन	यावन
		गेलनि	गैयनि
१३	५	उत्तपत्ति	उत्पति
१५	१३	का	की
१५	१४	लिखा	लिखी
१५	२२	धीरत	धीरति
२०	१५	सी	सो
३३	८	तियान	तियानि
३५	८	लुनियत	लुनियतु
३८	१५	सुहासनि	सहासुनि
३८	१७	सांसनि	सांसुनि
४०	१३व१५	है	ह्वै
४४	१८,२१, २३	लेत	लेति
५३	११	रटति	ररति
५८	२	४४	४५
७२	२२	कुमकुम	कुंकुम
७५	३	जात	जाति
७५	२०	रोठ्यो	ऐठो
७५	२२	अमेठ्यो।	अमैठो
७८	२०	सुनहरै	सुनहरँ
७८	२	छहरै	छहरँ
८१	१	कुंजनि	कंजनि
८२	१२	जिन्हु	जन्हु
८३	२	निर्मल	बिमल

— 0 —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका ।

—◇—

महाकवि देव जी का जन्म १७३० सं० में इटावे में हुआ था। इन्होंने लिखा भी है—

सुभु सत्रह सै छियालिस चढ़त सोरहीं वर्ष ।
कढ़ी देव मुख देवता भाव विलास सहर्ष ॥
धौसरिया कवि देव को नगर इटायो बास ।

उपरोक्त चरणार्द्ध से यह भी विदित होता है कि ये धौसरिया (सनाढ्य) ब्राह्मण थे। इनका जीवनचरित्र हिन्दी नवरत्न में हम लिख चुके हैं, सो यहां सूक्ष्मतापूर्वक उसे लिखते हैं।

इन्होंने संवत १७४६ के लगभग औरंगज़ेब के बड़े पुत्र आज़मशाह को भावविलास और अष्टयाम नामक ग्रन्थ सुनाये और उन्होंने इन ग्रन्थों की प्रशंसा की। इसके पीछे इन्हों ने क्रमशः भवानीदत्त वैश्य, कुशलसिंह फफूंद-इटावा-निवासी और राजा उद्योतसिंह बैस के लिये भवानीविलास, कुशलविलास और प्रेमचन्द्रिका नामक ग्रन्थ बनाये, परन्तु इन आश्रयदाताओं के यहां इनका अच्छा सम्मान न हुआ। इसके पीछे ये महाशय भारतवर्ष भर में घूमते रहे और इस अनुभव के फल-स्वरूप इन्होंने रसविलास और जातिविलास ग्रन्थ लिखे जिनमें भारतवर्ष भर के देशों की ललनाओं का सांगोपांग वर्णन किया। रसविलास संवत १७८३ में राजा भोगीलाल के लिये बना। इस आश्रयदाता से देव बहुत प्रसन्न हुये, परन्तु थोड़े ही

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिनों में इनसे किसी कारण से यह राजा भी छूट गया इनका सर्वोत्कृष्ट ग्रन्थ शब्दरसायन किसी को भी समर्पित नहीं हुआ। तदनन्तर आपने अपनी शृङ्गारकविता का संग्रह स्वरूप सुखसागरतरंग संग्रह लिख कर पिहानी के अकबर अली खां को समर्पित किया। अन्त काल में इस शृङ्गारी कवि ने कुछ वैराग्य के भी ग्रन्थ रचे। इनका मरण काल संवत १८०२ के लगभग अनुमान किया जाता है।

देव जी हिन्दी के तीन सर्वोत्कृष्ट कवियों में से एक हैं, परन्तु शोक है कि इनको कोई परमोदार आश्रयदाता बहुत काल के लिये नहीं मिला। यदि इनको अच्छा आश्रयदाता मिलता, तो इनके नर काव्य के भी अच्छे अच्छे छन्द देखने में आते।

इन के ग्रन्थों की गणना के विषय में अब तक कोई निश्चय नहीं हुआ है। कोई इन्हें ७२ ग्रन्थों का रचयिता बताते हैं और कोई ५२ का। देवकृत ग्रन्थों में वेही छन्द प्रायः बराबर देख पड़ते हैं। हम को इन के निम्न लिखित ग्रन्थों का अब तक पता लगा है, जिनमें से प्रथम १५ ग्रन्थ हमने देखे भी हैं—

(१) भावविलास, (२) अष्टयाम, (३) भवानी विलास सुन्दरीसिन्दूर, (५) सुजानविनोद, (६) प्रेमतरंग, (७) राग-रत्नाकर, (८) कुशलविलास, (९) देवचरित्र, (१०) प्रेमचन्द्रिका, (११) जातिविलास, (१२) रसविलास, (१३) काव्यरसायन (शब्द रसायन), (१४) सुखसागरतरंग, (१५) देवमायाप्रपंच नाटक, (१६) वृक्षविलास, (१७) पावसविलास, (१८) ब्रह्म दर्शन पचीसी, (१९) तत्वदर्शन पचीसी, (२०) आत्मदर्शन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पचीसी, (२१) जगदर्शन पचीसी, (२२) रसानन्द लहरी, (२३) प्रेमदीपिका, (२४) सुमिल विनोद (२५) राधिका विलास, (२६) नीतिशतक, और (२७) नखशिख ।

इन २७ ग्रन्थों में से, जहां तक हमें ज्ञात है, ग्रन्थ नम्बर १, २, ३, ४, १२ और १४ प्रकाशित हो चुके हैं और ५, ७ और १० इस ग्रन्थावली के प्रथम भाग में प्रकाशित किये गये हैं । इनके अतिरिक्त यदि पाठकों को रुचिकर हुआ, तो इस ग्रन्थावली में क्रमशः ग्रन्थ नम्बर ६, ८, ९, ११, १३ और १५ छपवाये जांयगे । इनमें से नम्बर ६ और ११ हमारे पास अपूर्ण हैं । यदि किसी महाशय के पास ये ग्रन्थ पूर्ण हों तो हम बड़ी कृतज्ञतापूर्वक उनके द्वारा पूर्ण करके ये ग्रन्थ प्रकाशित करावैं । इन ग्रन्थों के अतिरिक्त किसी महाशय के पास नम्बर १६ से अन्त पर्य्यन्त अथवा कोई और ही ग्रन्थ यदि हो, तो वे हमें सूचित करने की कृपा करें । यदि वे चाहें, तो स्वयं उन्हें सम्पादित करें, अथवा हमारे पास सम्पादनार्थ भेजने की कृपा करें । हर दशा में उसके प्रकाशन का प्रबन्ध होना चाहिए ।

इनके ग्रन्थों में से भावविलास में भाव, रस, एवं अलंकार का; अष्टयाम में दिन के घड़ी पहरों का; भवानी विलास में रस का; सुन्दरीसिन्दूर में स्फुट विषयों का; सुजानविनोद में नायकाभेद एवं षट् ऋतु का; प्रेमतरंग में सविस्तर नायकाभेद का; रागरत्नाकर में रागों एवं उपरागों का; कुशलविलास में भावभेद का; देवचरित्र में कृष्णकथा का; प्रेमचन्द्रिका में प्रेम का; जातिविलास में विविध जातियों की स्त्रियों का; रस विलास में नये प्रकार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से नायका भेद का; काव्यरसायन में पदार्थ निर्णय, रस विचार, पात्रविचार, रसरीति, शब्दालंकार, अर्थालंकार, एवं छन्द भेद का; सुखसागरतरंग में नायकाभेद का; देव मायाप्रपंच नाटक में माया एवं बुद्धि का; एवं अन्य ग्रन्थों में उन्हीं के नामानुसार विषयों का मुख्यतया कथन किया गया है। हिन्दी नवरत्न में इन ग्रन्थों के वर्णन कुछ कुछ विस्तारपूर्वक किये गये हैं।

इस भाग में प्रेमचन्द्रिका, रागरत्नाकर, और सुजानविनोद प्रकाशित किये गये हैं। अतः इन के विषय में कुछ विस्तारपूर्वक कथन आवश्यक है।

प्रेमचन्द्रिका में चार प्रकाश हैं। ग्रन्थ का नाम चन्द्रिका है, इसीलिये अध्याय के स्थान पर प्रकाश नाम रक्खा गया है। चन्द्रिका आदि नाम रूपकमय है, से प्रकाशादि भी रूपक द्वारा अध्याय का बोध कराते हैं। प्रथम प्रकाश में ५३ छन्दों द्वारा साधारण प्रेम का वर्णन किया गया है। इसमें प्रेममाहात्म्य, प्रेम रस, प्रेम स्वरूप, प्रेम वात्सल्य, सानुराग प्रेम आदि के बहुत मनोरम छन्द कहे गये हैं। प्रेम के तत्त्व, गम्भीरता, महत्त्व, निःस्वार्थपन, तल्लीनता, चाह आदि का इस कविरत्न ने इन छन्दों में जैसा चित्र खींचा है वैसा अन्यत्र पाना बहुत कठिन है। प्रेमी जन प्रेमपात्र के लिये समस्त शेष संसार को कैसे और क्यों तृणवत् छोड़ देते हैं इसका प्रत्यक्ष वर्णन यहाँ प्रस्तुत है। इस कवि ने विषयानन्द को तुच्छ कह कर ऊँचे प्रेम का वर्णन किया है। विषयजन्य प्रेम को यह कवि फीका और पोच समझता था। इस महाशय की रचनाओं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में शृंगार रस का प्राधान्य होने पर भी विषयवासनाओं से उत्पन्न प्रेम का बहुत कम कथन है।

द्वितीय प्रकाश में प्रेम के भेद कहे गये हैं। प्रेम पाँच प्रकार का होता है, अर्थात् सानुराग, सौहार्द्र, भक्ति, वात्सल्य और कार्पण्य। सानुराग प्रेम शृंगारमय कहा गया है, सौहार्द्र प्रीतिपात्र परिजन स्वजन सम्बन्धी, भक्ति भक्त-गण-वाला, वात्सल्य छोटों प्रति और कार्पण्य शोक एवं शल्ययुक्त जनों का। शृंगार सम्बन्धी प्रेम श्रवण, दर्शन स्मरण और स्पर्श से सुख देता है। शृंगार संयोग और वियोग सम्बन्धी होता है और वह गूढ़ एवं अगूढ़ भी कहा गया है। वियोग शृंगार के पूर्वानुराग, सकरुण, मान एवं प्रवास भेदान्तर हैं। शृंगार रस नायिकाओं में पहिचान पड़ता है, जिनके स्वकीया, परकीया और वेश्या नामक तीन भेद हैं। इन्हीं से सम्बन्ध रखने वाले पति, उपपति और व्यसनी नामक तीन प्रकार के नायक होते हैं। पति में प्रेम, उपपति में सुख दुःख और व्यसनी में दुर्व्यसन प्रधान हैं। स्वकीया के मुग्धा, मध्या और प्रौढ़ा, तथा परकीया के ऊढ़ा एवं अनूढ़ा नामक भेदान्तर माने गये हैं। शृंगार रस का मुख्य प्रेम कवि ने मुग्धाओं के पूर्वानुराग वियोग में माना है। इसमें श्रवण, दर्शन और स्मरण होते हैं, परन्तु साक्षात् नहीं। इसी से इस में दशाओं का कथन होता है। यह वर्णन करके कवि ने दो छन्दों में साधारण कथन के पश्चात् श्रवण दर्शन के ३, चित्र दर्शन के २, स्वप्न दर्शन के २ और प्रत्यक्ष दर्शन के ४ छन्द कहे हैं। तदनन्तर अभिलाष (३), चिन्ता (१), ध्यान (२), गुण कथन (२), उद्वेग (२), प्रलाप (३), उन्माद (३),

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्याधि (२), जड़ता (४) और मरण (२) का कवि ने २५ छन्दों में वर्णन किया है और एक छन्द में दसों दशाओं को कह दिया है। इसी स्थान पर द्वितीय प्रकाश समाप्त होता है। इसमें ५७ छन्द हैं और प्रथम प्रकाश की भाँति इसमें भी प्रेम का परमोत्कृष्ट कथन हुआ है।

तृतीय प्रकाश मुग्धादिक के प्रेमनिरूपण से प्रारम्भ होता है। देव जी कहते हैं कि मुग्धाओं में तल्लीनता ख़ूब होने से उनका प्रेम उत्कृष्ट है। मध्या का प्रेम कलह से और प्रौढ़ा का मान एवं गर्व से कलुषित होता है। इसी प्रकार परकीया की प्रीति कुचालजन्य होने से कच्ची है। वेश्या में प्रेमाभाव से शृंगाराभास है। इस प्रकाश के ५४ छन्दों में से ३० द्वारा स्वकीया का और २४ में परकीया का वर्णन हुआ है, जो सर्वतो भावेन प्रशंसनीय है। इस प्रकाश में काव्याँगों पर विशेष ध्यान न रख कर कवि ने प्रेम को प्रधान रक्खा है, इस कारण छन्द प्रायः उत्कृष्ट पाये जाते हैं। परकीया की कवि ने निन्दा तो की परन्तु फिर भी उसका वर्णन बड़ा ही विशद है। इससे देव की सर्वव्यापिनी शक्ति प्रकट होती है। साधारण कविगण ऐसे विषयों का जिनमें उन्हें पूर्ण रुचि न हो, अच्छा कथन नहीं करते हैं, परन्तु देव जी सभी विषयों को ख़ूब कहते हैं।

अन्तिम प्रकाश में ६३ छन्द हैं और यह शेष प्रकाशों से प्रौढ़तर है। अब तक सानुराग प्रेम का वर्णन होता चला आया था, परन्तु यह अध्याय सौहार्द्र प्रेम से प्रारम्भ होता है और गोपियों का प्रेम इसका मुख्यांश एवं विशिष्टांश है। इस में २१ छन्दों द्वारा गोपिकाओं का उद्धव से उलहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा गया है। इसमें उद्धव का कथन स्वरूप एक भी छन्द नहीं है और अनेकानेक छन्दों में प्रेमगाम्भीर्य्य ख़ूब देख पड़ता है। इसमें कलेजा निकाल कर रख देने वाले छन्दों की विशेषता है। योग और वियोग के भी चमत्कारिक कथन इसमें पाये जाते हैं। सौहार्द्र प्रेम का भी २१ ही छन्दों द्वारा कथन हुआ है। इनमें प्रेम का सच्चा स्वरूप कवि ने प्रत्यक्ष दिखला दिया है।

भक्ति-भाव-पूर्ण प्रेम के कथन में २१ छन्दों द्वारा कृष्ण की रासलीला का परमोत्कृष्ट वर्णन हुआ है। इसमें मुरली धुनि, शरदपूनो, गोपिकाओं की प्रेमासक्ति, राम, विरह विकलता आदि के चमत्कारिक कथन हैं। इसके पीछे कवि ने २१ छन्दों द्वारा सौहार्द्र, भक्ति, वात्सल्य एवं कार्पण्ययुक्त प्रेम का कुछ मिला हुआ वर्णन किया है, जिस में प्रधानतया गोपी, रुक्मिणी, द्रौपदी, अहिल्या, कुन्ती, सुदामा, यशोदा, वसुदेव देवकी और राजा नृग के प्रेमों का कथन है। यह छन्दावली इस प्रकाश की प्रथम दो छन्दावलियों की सर्वत्र समता नहीं कर सकती, परन्तु फिर भी यह शिथिल कहीं भी नहीं पड़ने पाई है। इसी स्थान पर यह अपूर्व ग्रन्थ समाप्त होता है।

देव ने प्रेमचन्द्रिका में काव्यांगों पर विशेष ध्यान न रख कर प्रेमसम्बन्धी एक अनोखा प्रबन्ध बाँधा है और अपने अनुभव से विशेष काम लेकर अच्छे अच्छे निष्कर्ष और भाव ग्रन्थ में रक्खे हैं। इस ग्रन्थरत्न में कवि ने बाहरी आडम्बर छोड़ कर पाठकों को मानो अपना कलेजा दिखा दिया है। प्रेम सम्बन्धी ऐसा अद्भुत ग्रन्थ मिलना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कठिन है । मर्दनसिंहात्मज राजा उद्यनो सिंह धन्य था, कि जिस के लिये ऐसा उत्कृष्ट ग्रन्थ बना ।

रागरत्नाकर में केवल दो अध्याय हैं, प्रथम ८१ छन्दों का और द्वितीय केवल १५ दोहों का । प्रथम अध्याय में रागों का कथन है और द्वितीय में उपरागों का।

षड़ज, रिषभ, गंधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद नामक सात स्वर होते हैं, जिनकी उत्पत्ति मयूर, चातक, अजा, कुरज, कोकिल, अश्व और गज की ध्वनियों से है । रागों की ओड़व, खाड़व और सम्पूर्ण नामक तीन जातियाँ हैं । ओड़व में पाँच, खाड़व में छः और सम्पूर्ण में सातों स्वर होते हैं । भैरव, मालकौस, हिंडोल, दीपक, श्री और मेघ नामक छः राग हैं । इन सब की पाँच पाँच भार्य्यायें हैं जो रागिनियां कहलाती हैं । इनके नाम इस प्रकार हैं:—

राग ।	भार्य्यायें ।
भैरव	भैरवी, बरारी, मधु माधवी, सिंधवी और बंगाली।
मालकौस	टोड़ी, गौरी, गुणकरी, खम्भावती और ककुभ।
हिंडोल	रामकली, देशाख, ललित, बिलावली और पटमंजरी।
दीपक	देवी, कामोद, नट, केदारा और कान्हरा ।
श्री	मालसिरी, मारू, धनाश्री, बसन्त और आसावरी।
मेघ	मल्लारी, गूजरी, भूपाली, देशकार और टंक।

ये राग शरद ऋतु से लेकर क्रमशः छहों ऋतुओं में एक एक गाये जाने चाहिये । इस ग्रन्थ में कवि ने तीन स्फुट छन्द रागों के विषय में कह कर प्रत्येक राग को ले लिया है और उसके विषय में एक एक दोहा और कवित्त या सवैया

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहा है। इन छन्दोँ मेँ प्रत्येक राग और रागिनी के गाने की ऋतु, समय, उसके रूप, वाद्य, भूषण, वस्त्रादि, सवारी, स्वर इत्यादि सब कुछ कह दिया है। इन वर्णनोँ से यह प्रकट किया गया है कि किस राग मेँ कैसा विषय भला लगैगा। इस प्रकार केवल रीति ग्रन्थ लिखते हुये भी इस महा कवि ने उत्कृष्ट छन्द लिख कर अपना असीम रचनासामर्थ्य दिखलाया है। यदि कोई परम असाधारण कवि न हो कर ऐसे विषय पर छन्द बनाता, तो छन्दोँ में शैथिल्य अवश्य आ जाता। यह इन्हीँ महाराज का काम था, कि ऐसे विषय पर भी अनमोल छन्द बना कर रख दिये। द्वितीय अध्याय मेँ कवि ने सारँग नाट, नट कल्याण, छाया नट, नाट, सोरठ, हाड़ी, देवगिरि, जैत श्री, शुद्ध बंगाली, बिभास और सामन्त नामक उपरागोँ का सूक्ष्म वर्णन किया है। हिन्दी नवरत्न मेँ हम ने लिखा था कि यह ग्रन्थ हमारे पास अपूर्ण है, परन्तु पीछे और प्रतियाँ देखने से जान पड़ा कि यह दो ही अध्यायोँ मेँ पूर्ण हुआ है।

सुजान विनोद मेँ ८६ पृष्ठ और सात विलास हैँ। इस मेँ ऋतुओं के वर्णन का प्राधान्य है। देव जी के मतानुसार शिशिर वसन्त मेँ रसोत्पत्ति का; ग्रीष्म वर्षा में विलास का और शरद हेमन्त मेँ सुरस प्रकाश का वर्णन करना चाहिये। पन्द्रहवेँ वर्ष से ३० वर्ष के वय पर्य्यन्त नायकाओँ की मुग्धा, मध्या और प्रौढ़ा अवस्थायेँ होती हैँ। प्रेम की विशेषता के कारण पूर्वानुराग, एवं अभिलाषादिक दश दशाओँ का वर्णन शिशिर वसन्त मेँ होना चाहिये। पहिले श्रवण, फिर दर्शन, तदुपरि वियोग और तब संयोग कहना

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उचित है। मुग्धादिक वयभेद, मान, सुरति और सुरतान्त साहित्य के मत से कहे जाते हैं, परन्तु उत्तम नहीं हैं। कविजन मुग्धाओं ही में दश दशा, मध्याओं में दश अवस्थाओं एवं प्रौढ़ाओं तीनों ही में दश हावों का वर्णन करते हैं, यद्यपि वास्तव में दशा, अवस्था और हाव तीनों अवस्थाओं में होते हैं। देव जी ने अपने उपरोक्त ख़ास सिद्धान्त इस ग्रन्थ में लिखे हैं। उपरोक्त सात विलासों में से प्रथम में २६ छन्दों द्वारा कवि ने सामान्य प्रेमभेद से नायकाओं का वर्णन किया है। इन्हीं ने लिखा है कि प्रेमी जन विषयासक्त मनुष्यों को परम नीच मान कर विषयवासनाओं से इतर शुद्ध प्रेम की उपासना कर के ब्रह्मानन्द को प्राप्त होते हैं। देव जी के सिद्धान्त बहुत ऊँचे और प्रेमसम्बन्धी छन्द परमोत्कृष्ट हैं। इनके प्रेम में तल्लीनता की मात्रा बहुत रहा करती है (देखिये छन्द नम्बर १९ तथा २०), इस विलास में स्वच्छन्द प्रेम का कथन है, सो उत्तमता में यह प्रेमचन्द्रिका से कुछ कुछ समानता करता है।

द्वितीय विलास में प्रेम के विशेष भेदों का निरूपण है। इसका उत्थान मुग्धा के वर्णन से होता है। मुग्धा में मान लघु, एवं सुख गूढ़ रहता है वैसे संधि, नवला, नवल यौवना, नवल अनंगा तथा सलज्ज-रति नामक मुग्धा के पाँच भेद हैं। छन्द नम्बर १६ तक मुग्धा का परमोत्कृष्ट वर्णन करके कवि ने ४ छन्दों में नायक का वर्णन किया है। इसके पीछे दर्शनों का कथन चलता है। कवि ने चित्र, स्वप्न और प्रत्यक्ष नामक तीन दर्शन माने हैं और श्रवण दर्शन का कथन नहीं किया है, परन्तु फिर भी दर्शनों के अन्त में हो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छन्द श्रवण दर्शन के रख दिये हैं। दर्शनों के पीछे कवि ने विभाव अनुभाव सात्विक संचारी आदि के छन्द कह कर दो छन्द पूर्ण शृंगार के कहे हैं। इसके पीछे पूर्वानुराग का वर्णन ३९ वें छन्द से चलता है। दशाओं का नाम तो कवि ने गिना दिया है परन्तु इस विलास में उनके उदाहरण नहीं दिये हैं, हाँ अभिलाख के कुछ स्फुट छन्द लिखे दिये हैं और पचासवें छन्द पर विलास पूर्ण हो गया है। इस विलास में मुग्धा का प्राधान्य है जिसके छन्द सोहावने हैं।

तीसरा विलास दश दशाओं के वर्णन से उठता है। इसका पहिलाही छन्द बड़ा चमत्कारिक है और ऐसे ही उत्कृष्ट छन्द बराबर चले गये हैं। तीस छन्दों में दशाओं का वर्णन समाप्त होता है। प्रत्येक दशा के उदाहरण में कवि ने उसका रूप दिखला दिया है। इन उदाहरणों में प्रेमोन्मत्तता की मात्रा अच्छी आई है। दशाओं के पीछे तीन परमोत्कृष्ट छन्दों द्वारा विरह कह कवि ने पाँच छन्दों में संयोग कहा है। इन छन्दों में भी मुग्धा की लाज का बहुत अच्छा निर्वाह हुआ है। इसके पीछे दो छन्दों में मुग्धा का मान कहा गया है और अन्त में कवि ने लिख दिया है कि साहित्य के मत से मान, सुरत, सुरतान्त आदि का मैंने वर्णन कर दिया है, परन्तु यह विषय उत्तम नहीं है।

चौथे विलास में मध्या नायकाओं का ५८ छन्दों में वर्णन है। इस कथन में प्रमोद की मात्रा विशेष होने से इसका ग्रीष्म वर्षा में कहा जाना श्रेष्ठ माना गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मध्या सुन्दरी के आठ उत्तम छन्द कहकर कवि ने दश अवस्थाओं का वर्णन उठाया है, जो ४३ वें छन्द पर समाप्त होता है। तदनन्तर ५२ वें छन्द पर्य्यन्त सुरतांतादिक कहे गये हैं और तब मान का कथन चलता है जो ५८ वें छन्द के साथ समाप्त हुआ है। इस वर्णन में ध्वनियों का अच्छा आनन्द है।

पाँचवें विलास में प्रौढ़ा सुन्दरी का कथन है, जो देव जी की अनुमति से शरद शिशिर में होना चाहिये, क्योंकि इस में हाव, भाव, राग, परिहास, उपहास, उत्सव, रास विलास आदि का बाहुल्य रहता है। इस विलास के आरम्भ में कवि ने १२ छन्दों में उपरोक्त बातों को लिये हुये, प्रौढ़ा का स्फुट वर्णन किया है। ये छन्द बड़े ही उत्कृष्ट हैं। इन में विलासादि की अच्छी बहार है। उसके पीछे ४३ वें छन्द पर्य्यन्त प्राचीन मत से लीलादिक दश हावों का चमत्कारपूर्ण वर्णन हुआ है। देव जी कहते हैं कि नवीन मत से बहुत से और हाव कहे जाते हैं। इन में से इन्हों ने परिहास उपहास मान आदि कहे हैं। तदनन्तर कवि ने गर्बिता एवं अन्य-संभोग-दुःखिता कह कर एक छन्द में मान कहा और फिर दो छन्दों द्वारा सुरति और सुरतान्त कह कर प्रौढ़ा का वर्णन ६० वें छन्द पर समाप्त कर दिया। देव ने मुग्धा एवं मध्या की सुरति न कह कर केवल प्रौढ़ा की कही और उसका भी विस्तार नहीं किया। इस से इन का ऐसे विषयों से बचना प्रकट है।

छठें विलास से षट् ऋतु का परमोत्कृष्ट वर्णन चलता है। यही इस ग्रन्थ का उत्कृष्टतम भाग है। इस विलास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में शिशिर और वसन्त के साथ कवि ने पंचमी सुखोत्सव एवं होली का ४० छन्दों में अच्छा वर्णन किया है । इस में नैसर्गिक सुघराइयों के साथ कवि ने माननीय प्रकृति के वर्णन को खूब ही मिलाया है।

सातवें विलास में ग्रीष्म, वर्षा, शरद और हेमन्त के वर्णन हैं। इस कविरत्न ने षट् ऋतु का हिन्दी के सभी कवियों से अच्छा वर्णन किया है और उसमें भी प्रत्येक ऋतु का वर्णन दूसरों के वर्णनों से बढ़चढ़ कर समझ पड़ता है। इन दोनों विलासों का प्रत्येक छन्द एक अनोखी छटा दिखलाता है।

सब मिलाकर यह ग्रन्थ भी एक अनमोल रत्न है। प्रेम चन्द्रिका में प्रेम का वर्णन बहुत ही अच्छा होने से वह इससे अधिक प्रशंसनीय है, परन्तु इसमें भी प्रेम का अच्छा कथन है और षट् ऋतु का जाज्वल्यमान वर्णन इस की प्रतिष्ठा को बहुत बढ़ाता है।

देव जी के सद्गुणों का पूर्ण कथन करना बड़ा कठिन कार्य्य है, क्योंकि इनकी रचना में सर्वत्र गुण भरे हैं। फिर भी 'निज पौरुष परमान ज्यौं मशक उड़ाहिं अकास' के अनुसार हम भी यथामति गति इनके गुण कथन में प्रवृत्त होते हैं। हिन्दी नवरत्न में एक बार यह कथन हो चुका है सो यहां अधिक विस्तार की आवश्यकता नहीं समझ पड़ती।

(१) इस कवि ने छन्दों में घनाक्षरी सवैया और दोहों का विशेष आदर किया है, जिनमें भी इन का साहित्यानन्द विशेषतया उपरोक्त प्रथम दो छन्दों ही पर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निर्भर है। दोहों से इन्हों ने प्राय: काव्यांग या अर्थ समझाने का ही काम लिया है, जो आज कल हम लोग गद्य से लेते हैं। कहीं कहीं छप्पै छन्दों में भी इन्हों ने काव्यांग अथवा अर्थ समझाये हैं। देवमायाप्रपंच नाटक इन कथनों से अतिरिक्त है, क्योंकि उस में बहुत से छन्दों का प्रयोग हुआ है। बिहारी अथवा मतिराम की भाँति इन्होंने चमत्कारिक दोहे लिखने का प्रयत्न नहीं किया। काव्य की उत्तमता दिखलाने के लिये अपने अधिकांश ग्रन्थों में देव जी ने सवैया एवं घनाक्षरी को ही उपयुक्त माना है।

(२) इन की भाषा शुद्ध ब्रज भाषा है, यद्यपि उस में कहीं कहीं फारसी के भी शब्द पाये जाते हैं। भाषा गौरव इन का एक प्रधान गुण है। भाषा सम्बन्धी सभी सद्गुण इन की रचना में परम प्रचुरता से पाये जाते हैं। इन्हों ने प्रसाद, समता, माधुर्य्य, सुकुमारता, अर्थव्यक्तता, समाधि कान्ति और उदारता नामक गुण भाषा में प्राय: सर्वत्र रक्खे हैं और स्थान स्थान पर ओज का भी इनके यहाँ खूब चमत्कार है। श्लेष का इन्हों ने अधिक प्रयोग नहीं किया है, परन्तु वह भी इनकी रचना में पाया जाता है। पर्यायोक्ति, सुधर्म्मिता, सुशब्दता, संक्षिप्त, प्रसन्नतादि गुणों की भी इनकी भाषा में बहुत अच्छी बहार है। देव ने भारी भारी विशेषण खूब रक्खे हैं और लोकोक्ति, छेकोक्ति आदि को रचना में सन्निविष्ट करने में अच्छी सफलता दिखलाई है। इनके तुकान्त ऐसे चमत्कारिक होते हैं कि देखते ही बनता है। ये सभी प्रकार के तुकान्त रख कर उन्हें सफ-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लता पूर्वक निभा ले जाते थे । (देखिये सुजान विनोद छन्द ६, १८ ५२, ८, २३ २७, ४४ और ५७ / पृष्ठ ३२, ३४ ४४, ४८, ५१ ५२, ५८ ६१)

इन्होंने यमक एवं अनुप्रास का अपनी भाषा में बड़ा ही विशिष्ट चमत्कार दिखलाया है । ये जो शब्द उठाते थे, प्रायः उसी प्रकार के कई और शब्द उसके पीछे रखते चले जाते थे और जब वह श्रेणी छोड़ते थे, तब उसके अन्तिम शब्द का कोई अन्य अक्षरक्रम उठाकर उसकी सामानता के शब्द रखने लगते थे । इस प्रकार एक एक छन्द में देव जी कई भांति का यमक एवं अनुप्रास क्रम रखते थे । प्रेमचन्द्रिका के छन्द ४३ पृष्ठ १० में कवि ने पहिले को कुल, गोकुल, दोकुल कहा और इसे छोड़ने पर दोकुल का द अक्षर लेकर 'दीपसिखा सी' कह दिया और फिर 'सी' लेकर ससीसी' कहा । दूसरे पद में 'त्यौं तिन्हैं' 'एवं हरि होरकरी' एक से हैं और तब 'री' का रकार लेकर कवि ने रँगराती और अँगराती कहा और अँगराती का गकार एवं रकार लेकर 'गरे परि' कह दिया । तृतीय पद में 'नवला' 'नव इन्दु कला' कहे गये तथा 'जो ज्यौं' भी ऐसे ही शब्द हैं । फिर कला का लकार लेकर देव ने लची 'परै प्रेम रची' कहा, एवं 'पिय सौं लरि' में कला का लकार और परै का पकार लाये गये । अन्तिम पद में देखि, बिसेखि, भेटत, भूभुज देव दुहूज भरि आदि ऐसे ही शब्द हैं । इस प्रकार अनुप्रास बाहुल्य लाकर भी भाव गाम्भीर्य्य औवल दर्जे का रखने में केवल येही समर्थ हुये है

प्रेमचन्द्रिका के छन्द ४७, ५१, १४, २३, ४२ / पृष्ठ ११, २७, ३२, ३५, ४० में ऐसा ही शब्दचम-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्कार देख पड़ेगा। यही दशा सुजान विनोद के $\frac{१५}{९}$, $\frac{१७}{१०}$, $\frac{२२}{२५}$, $\frac{४०}{४१}$, $\frac{५०}{४४}$, $\frac{३१}{८१}$, $\frac{४२}{८४}$ आदि छन्दों में हैं।

(३) भाषा सम्बन्धी काव्यांगों के साथ इस कवि ने अन्य काव्यांग भी अपनी रचना में बड़ी ही प्रचुरता से रक्खे हैं। इन के एक एक छन्द में अनेकानेक अलंकार, गुण, लक्षण व्यंजना, ध्वनि, भाव, वृत्ति, पात्र, रस आदि के उदाहरण मिलते हैं और मानुषीय प्रकृति के निरीक्षण का फल सर्वत्र प्रगट है। शब्दरसायन की टीका में इनके प्रत्येक छन्द के अनेकानेक काव्यांगों के कथन करने का प्रयत्न किया जा रहा है। जब यह ग्रन्थ प्रकाशित होगा, तब साधारण पाठकों को भी इनके छन्दों में काव्यांगों के चमत्कार निरीक्षण का अवसर मिलेगा। अभी प्रधान प्रधान काव्यांगों का केवल मोटे प्रकार से दिग्दर्शन कराया जाता है।

(क) इस महाकवि ने उपमा और उससे मिले हुये रूपकादि अलंकारों का सर्वत्र अच्छा समावेश अपनी कविता में किया है। इनकी उपमायें बहुत अनूठी और चटकीली होती हैं और सर्वांग रूपक बड़े ही हृदयग्राही हैं। प्रेम चन्द्रिका के छन्द $\frac{५२}{१३}$, $\frac{२६}{१९}$, $\frac{४८}{२६}$, $\frac{२७}{५५}$ और $\frac{३५}{५८}$ में इनकी अच्छी बहार है। यही दशा सुजान विनोद के छन्द $\frac{७}{७}$, $\frac{९}{७}$, $\frac{४५}{१८}$, $\frac{३१}{२८}$, $\frac{२६}{३६}$, $\frac{२७}{३७}$, $\frac{३७}{४०}$, $\frac{५}{४७}$, $\frac{१०}{४८}$, $\frac{३७}{५५}$, $\frac{३९}{५६}$, $\frac{४२}{५७}$, $\frac{४३}{५७}$, $\frac{५८}{६१}$, $\frac{६९}{६४}$, $\frac{१२}{७५}$, $\frac{१४१५}{७६}$, $\frac{१७}{७७}$, $\frac{२१}{७८}$, $\frac{२५}{७९}$, $\frac{२८}{८०}$, $\frac{४४}{८५}$, आदि में पाई जायगी। $\frac{५६}{६१}$ में इसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषय से मिलता हुआ रूपकातिशयोक्ति का अच्छा उदाहरण है।

(ख) उक्तियाँ का भी इन के यहां अच्छा समावेश हुआ है। देखिये प्रे० चं० $\frac{३२}{७}$ (अन्योक्ति), $\frac{१}{४५}$ (अत्यन्त तिरस्कृत वाच्यध्वनि। सु० वि० के $\frac{५५}{४५}$ में भी यही है।), $\frac{४४}{११}$, $\frac{३}{४६}$, $\frac{७}{४७}$, $\frac{१७}{५१}$, (लोकोक्ति। तथा सु० वि० में $\frac{१५}{९}$, $\frac{२६}{२६}$ $\frac{३२}{२८}$, $\frac{१९}{३४}$, $\frac{५६}{४५}$, $\frac{३०}{८०}$), सुजान विनोद $\frac{४}{२०}$ (काकु), $\frac{२४, २५}{१२}$, $\frac{२९}{१३}$, $\frac{२४}{३६}$, $\frac{४१}{४१}$, $\frac{९}{४८}$, $\frac{२६}{५२}$, $\frac{२७}{६९}$, स्वभावोक्ति)।

(ग) अन्य काव्यांगों के कुछ परमोत्कृष्ट उदाहरण लीजिये—

सु० वि० $\frac{३२}{५३}$ (किल किंचित हाव), सु० वि० $\frac{११}{४९}$ (मीलित), $\frac{२३}{२५}$ (द्वितीय पूर्व रूप) $\frac{३७}{१६}$, $\frac{२३}{२५}$ (समुच्चय)।

(४) भाषा और कव्यागों का अपनी रचना में परम प्रगाढ़ समावेश कर के भी देव जी ने साहित्योन्नतिकारी अनेकानेक खूबियां परम प्रचुरता से कविता में रक्खी हैं। इन के प्रायः सभी छन्दों में कुछ न कुछ उत्तमता देख पड़ेगी, परन्तु मुख्यतया ख़ास ख़ास गुणों के उदाहरण स्वरूप सुजान विनोद के कुछ छन्दों का यहां हवाला दिया जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छन्द ४३ पृष्ठ ५७ (कोमलता), ३३, ३४ ८१, ३५, ३६ ८२, ३८ ८३ (चांदनी का उत्कृष्ट वर्णन), २२ ७८ (बल), ३६ १६, ४३ ८४, ४४ ८५ (संचिप्त गुण), ६३ ६३ (चमत्कारिक भाव), ४५ ८५ (वियोग का अच्छा वर्णन) ३ ३१ (होड़) आदि। यह देव जी का ही काम था कि एक छन्द में ३३ संचारी भावों के उदाहरण दे दिये।

(क) इस कविरत्न ने बहुत स्थानों पर इशारे एवं ध्वनि से ऐसे कथन कर दिये हैं कि वे उसी प्रकार अच्छे लगते हैं। सुजान विनोद के छन्द ४१ पृष्ठ ५६ तथा ५१ ५९ में नखी के उरोजों में कमल मारा गया और न नायक के पीछे वास्तव में कोई स्त्री है। यहां कमल से कर कमल का प्रयोजन है और प्रौढ़ा नायिका का दूसरी स्त्री का प्रत्यक्ष होना कहना एक तो भाविक भूषण लाता है और दूसरे इस प्रकार के कथन से नायक का दोषी होना जानने की इच्छा है, क्योंकि यदि यह सुन कर वह चौंके, तो जान पड़ैगा कि वह वास्तव में दोषी है।

(ख) देव जी ने अनेकानेक भावों का एकही एक छन्द में ऐसा साथ वर्णन किया है कि चित्त प्रसन्न हो जाता है। ऐसा भाव निश्चय अन्य कवियों में प्रायः नहीं देखा जाता। उदाहरणार्थ प्रे० चं० ३२ ५७ एवं सु० वि० छन्द ३१ पृष्ठ ५३ तथा ३३ ५४ विशेषतया दृष्टव्य हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(ग) लाज, मन आदि का सम्बोधन कर के इस कवि ने बड़े मार्के के छन्द कहे हैं। देखिये सु० वि० $\frac{४४}{१७}$, $\frac{१५}{२३}$।

(ङ) देव जी के समान स्यात् कोई भी कवि अमीरी के सामान न बाँध सका होगा। देखिये सु० वि० $\frac{२१}{३५}$, $\frac{५}{४७}$, $\frac{१०}{४८}$, $\frac{९}{७४}$, $\frac{१२, १३}{७५}$, $\frac{३५}{८२}$, $\frac{३९, ४०}{८३}$, $\frac{४८}{४६}$।

(च) बहुत से छन्दों में इस महाकवि ने तसवीर सी खींच दी है, देखिये सु० वि० $\frac{२५}{५१}$, $\frac{२६}{५२}$, $\frac{६०}{६२}$, $\frac{२६}{७९}$।

(छ) प्रेम एवं योग को एक ही में मिला कर देव जी ने कई बार बड़ा चमत्कारिक कथन किया है। देखिये प्रे० पं० $\frac{३}{४६}$, $\frac{६}{४७}$, $\frac{८}{४७}$।

(ज) इन्होंने ऊंचे ख़यालात एवं अतिशयोक्ति का अपनी रचना में बहुत ही अधिक समावेश किया है। इस के उदाहरण सर्वत्र मिलेंगे।

(५) देव महाराज ने अन्य गुण जैसी प्रचुरता से अपनी रचना में रक्खे हैं, वैसे ही प्रकृति निरीक्षण का फल नहीं रख सके हैं। मानुषीय प्रकृति पर तो उन्हों ने कलम तोड़ दी है और उस के ऐसे ऐसे भाव एवं भावमिश्रण तथा विचार रक्खे हैं, कि पाठक अवाक रह जाता है, किन्तु प्रकृति पर इन्होंने विशेष ध्यान नहीं दिया, फिर भी परमोत्कृष्ट कवि होने के कारण उन्हो ने जो कुछ थोड़ा सा प्रकृति वर्णन कर दिया है, वह बहुत अच्छा तथा मनो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस है। उत्कृष्ट कवि किसी विषय पर अधिक ध्यान न देकर भी उस का परमोत्कृष्ट वर्णन कर सकते हैं। प्रकृति वर्णन में देव जी के ये छन्द दर्शनीय हैं– प्रे० चं० छन्द ३२/७, ३४/८, ३८/९, सु० वि० ३२/१४, ४४/४२, ६३/६३, १७, १८/७७।

मानुषीय प्रकृति के उत्तम वर्णन इन की रचना में प्रायः सर्वत्र पाये जाते हैं। मनुष्यों के भावों एवं विचारों पर इन के समान बहुत कम कवियों ने ध्यान दिया है और उन को तादृश व्यक्त करने में और भी कम कविजन समर्थ हुये हैं। इन्होंने अपने छन्दों में दिखला दिया है कि कवि की दृष्टि कितनी पैनी होती है। मानुषीय प्रकृति के उदाहरण स्वरूप इन के सैंकड़ों छन्द लिखे जा सकते हैं परन्तु यहां केवल चार छन्दों का हवाला दिया जाता है। देखिये प्रे० चं० ४९/१२, ३२/२०, १८/३३, २४/५४।

(६) देव जी ने प्रेम का सर्वोत्कृष्ट वर्णन किया है। ये प्रेम के बहुत बड़े उपासक थे। इन का प्रेम सम्बन्धी विचार बहुत ही ऊंचा था, जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है। उसे व्यक्त करने में भी ये खूब ही कृतकार्य्य हुये हैं। प्रेमोन्मत्तता का भी इन्हों ने बहुत ही अच्छा वर्णन किया है। इन के प्रेम कथन में गाम्भीर्य, निःस्वार्थता तथा तल्लीनता की मात्रा बहुत अच्छी रहती है। देखिये प्रे० च० छन्द ४५ से ५२ तक/पृष्ठ ४१ से ४४ तक, ५/४६, २९/५६, सु० वि० २०, २१/४, ९/२१, १८/२४, २०/२४, २७/२६।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) इस महाकवि ने परमोत्कृष्ट छन्द सब से अधिक कहे हैं। ऐसे छन्दों की संख्या एवं प्रति सैकड़ा पड़ते में यह कवि औरों से बहुत आगे बढ़ा हुआ है। देव जी की रचना में यदि कोई कवि शिथिल छन्द ढूढ़ना चाहे, तो उस का श्रम नितान्त विफल होगा। इन की कविता में चोज़ अधिक न मिलेंगे, परन्तु उत्कृष्ट छन्द भरे पड़े हैं।

उदाहरण, प्रे० चं० छन्द १, २, ३, ४, ९, १०, ११, १२, २१, २२
पृष्ठ १ २ ३ ४ ५

२४, २५, ३२, ३४, ४३, ४७, ४९, ५२, २७, ३०, ३१, ४१, ५०, १९,
६ ७ ८ १० ११ १२ १३ १९, २०, २० २३ २६ ३३,

२६, ३३, ४३, ७, २३, २४, ४४, ४६, राग रत्नाकर ५, १६, २३,
३६ ३८ ४१ ४७ ५३ ६१, ६२ २ ५ ६,

२५, २७, २९, ४२, ४४, ४५, ५७, ६०, ६६, ७०, ७३, ७५, ७९, सु०
७ ८ ११ १२ १४ १५, १६ १७ १८ १८ १९,

वि० २, १९, २०, २१, २३, २४, २६, ७, ११, १५, १७, २७, ४४, १,
१ ३ ४ ५ ६ ७ ८ ९ १०, १२ १७ १९,

४, ८, १४, १५, २५, २६, २९, ३३, ३, ४, २६, २७, ४६, ६, १२,
२० २१ २३ २६ २७, २८ ३१ ३७ ४३ ४७ ४९,

२२, २४, ४२, ५४, ५५, ६४, ६५, ६७, ६८, १५, २४, ३५, ३८, ९
५० ५१ ५७ ६० ६३ ६४ ६६ ६८, ७१ ७२ ७४

२४, २९
७९ ८० ।

(८) देव जी के ग्रन्थों का वर्णन ऊपर किया गया है, जिन के विषयों से विदित है कि ये एक बहुत ही बड़े पुरुष थे। इन्हों ने कितने ही अनमिल विषयों पर सफलतापूर्वक रचना की और किसी वर्णन को शिथिल नहीं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होने दिया। ये महाशय भाषा साहित्य के बहुत बड़े आचार्य्य थे। इन्होंने अनेकानेक रीति ग्रन्थ दशांग कविता पर बनाये और भाव भेद, रस भेद, तथा प्रेम का कई बार भिन्न भिन्न प्रकार से अनूठा हृदयग्राही एवं मनोरम वर्णन किया। इन्होंने शृंगार रस का वर्णन अवश्य विशेषतया किया, परन्तु फिर भी सदैव सदुपदेश दिये और प्रेम का भाव अत्यन्त ऊंचा रक्खा। शृंगारी कवि होने पर भी देव ने वैराग्य, राग, माया, आत्मज्ञान, वृत्त, पावस, नीति आदि विषयों पर अनमोल ग्रन्थ रचे। इन के कितने ही ग्रन्थों का अब तक पता नहीं लगा है। उन में भी अनेकानेक उपकारी विषयों पर रचनायें होंगी। हिन्दी प्रेमियों ने पूर्वकाल में शृंगारी ग्रन्थों ही पर विशेष रुचि रक्खी, जिस से अन्य विषयों के अच्छे ग्रन्थ भी लुप्त अथवा लुप्तप्राय हो गये। इस कारण से विविध ग्रन्थों के रचयिता भी आजकल शृंगारी कवि समझ पड़ते हैं। जिस समय इन के उपकारी ग्रन्थ मिलेंगे और मुद्रित होंगे, तब इन की साहित्य गरिमा संसार को विदित होगी। इनके प्रेम चन्द्रका के $\frac{\text{छन्द } २४}{\text{पृष्ठ } ६}$ से प्रकट होगा कि ये कवि कर्तव्य को कैसा उच्च समझते थे। हम इनको स्वामी तुलसीदास एवं सूरदास के समान और शेष हिन्दी कवियों से श्रेष्ठतर मानते हैं।

निवेदक

गणेश बिहारी मिश्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थ सूची ।

(१) प्रेम चन्द्रिका — पृष्ट १ से ६८ तक
(२) राग रत्नाकर — पृष्ठ १ से २१ तक
(३) सुजान विनोद — पृष्ठ १ से ८६ तक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ चोपही ॥

साहिं कह्यो तव प्रगट प्रभाउ ॥ सुनो सकल मेरे उमराउ ॥ मैं सब कीने बड़े बढ़ाइ ॥ मो कहँ काम परयो यह आइ ॥ २४ ॥ मारनहारो सेख कौ चाहि ॥ लै आवहु जीवत गहि ताहि ॥ सब सुनि रहे न उत्तरु दियौ ॥ सबही को डर डरप्यौ हियौ ॥ २५ ॥ कह्यौ राम राजा यह तबै ॥ हिन्दू तुरक सुनत हैं सबै ॥ कै तसलीम सो करयो प्रनाम ॥ जिनके मो सारिखौ[1] गुलाम ॥ २६ ॥ सो प्रभु कैसे दुचिताँ होइ ॥ ल्यावौं गहि जीवत वह सोइ ॥ तौं मोपै ह्वैहै सब काम ॥ मेरे सँग दीजै संग्राम ॥ २७ ॥ यह सुनि साहि उठे मुसुकाइ ॥ ताकी बिदा करी पहिराइ ॥ बोल्यौ साहि, साहि संग्राम ! ॥ कह्यौ वृद्ध भो राजा राम ॥ २८ ॥ तू यह करै हमारौं काज ॥ कंटकहीन करहि निज राज ॥ इंद्रजीत बिरसिंह कराल ॥ ये दोई हैं मेरे साल ॥ २९ ॥ इनही हतें होइ सब काज ॥ येई हरिहैं तेरो राज ॥ पायनि परयौ दौरि संग्राम ॥ हौं करिहौं ये केतिक काम ॥ दयो कछौंवा, दई बडौन ॥ पहिरायौ पगु धारचौं भौंन ॥ तब कछु सुख पायौं सुलतान ॥ बदन पखारयौं खाये पान ॥ ३१ ॥ राजासिंह अरु तुरसीदास ॥ ये पहिराइ चलाये पास ॥ दिये राय राया के साथ ॥ अकबर दुहूँ दीन के नाथ ॥ ३२ ॥ गोपाचल गढ मेले जाइ ॥ जोरयौ अधिक कटक्क बनाइ ॥ सिकरवार जादौ, जागरे ॥ तौंवर, हाडा, खीची खरे ॥ ३३ ॥ गूजर, मैना, जाट अहीर ॥ मुगल, पठाननि की अति भीर ॥

छंद नाराच ॥

बेरछा पवाँर पाइ ॥ अर्त्ति[2] कै लिये बुलाइ ॥ पैस ही प्रतापराइ आपुही मिले त जाइ ॥ दीह दुःख देह साहि ॥ साज साहि मैं डिढ़ाहि ॥ चैति चित्त शत्रु साहि ॥ मित्र भैं सुजानसाहि ॥ १ ॥

---

१ सारिखो = सरीखा, समान । २ अर्त्त = पीड़ा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ॥

जबही मिल्यौ पँवार सुजान ॥ खत्री मानौ करिकै प्रान ॥ मेल्यो तिपुर आनि आतुरी ॥ पुनि मेल्यौ उचाट की तरी ॥ ३४ ॥ साहि सलैम कियो फरमान ॥ तबही आयौं परम प्रधान ॥ बीरसिंह तू परम सुजान ॥ तो पर अति कोप्यौ सुरतान ॥ पठई तोपर फौंज प्रचारि ॥ तिन सौं तू मौंड जनि रारि ॥ ३६ ॥ सो फुरमान मानि सिर लयौं ॥ बडवानि छाँडि सु दतिया गयौं ॥ तबही राससाहि अकुलाइ ॥ मिल राइ राया कहँ जाइ ॥ ३७ ॥ तिपुर राम जब एकैं भये ॥ बीर सिंह तब ऐरछ गये ॥ तब तिहि समय तिपुरु अकुलाइ ॥ एरछगढ महँ मेंले जाइ ॥ ३८ ॥ ऐरछ घेरि लई तब खरी ॥ पहिल उठान पठाननि करी ॥ उठयौं गाजि तब हरिसिंह देव ॥ गहैं सांग मानौं बलदेव ॥३९॥ ऊके सी निकसी तरवारि ॥ परैं तीर तुपकानि की मारि॥ लोह चहूं दिसि बरसत घनैं ॥ नेकहु हरसिंहदेव न गनै ॥ ४० ॥

सवैया ॥

सकल सयान गन, नाहिन गुमान उर, केसौदास जानहु अजान मन भायौ हैं ॥ लरती के आगे आगे, भागती के पाछे पाछे, बाएँ दाहिने ई लरत बतायो है ॥ सेना केसो नाह सेनानाह को सनाह जग-नाह कैसो मीत जगजीव गीत गायो है ॥ राजा बीरसिंह जू को बंधु हरीसिंहदेउ हरीसिंह की दुहाई हरिसिंह कैसो जायो है ॥ ४१ ॥ जूझे पर सामुहे सपूत । जमल जमालखान के पूत ॥ भागे सुभट सबै भहराइ ॥ लोथिन तन[1] चितयौं नहिँ जाइ ॥ ४२ ॥ सिगरो दिन बीत्यो इहि भांति । जूझ बुझानी, आई राति ॥ चहूं ओर गढ़ यह गति भई ॥ अति औड़ी खाई खनि लई ॥ ४३ ॥ सिगरे उमरावनि दुख भयो ॥ साहि सलैमहि इक सुख छयो ॥ राति भये आरात्ति अलेख ॥ कितनि करेगो चंचल भेख ॥ ४४ ॥ प्रगटी अवराती चांदनी । भारी

१ तन = तरफ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दृग आनंन्दकादनी ॥ मीरा सैद मुदफ्फर बोलि ॥ चलन कह्यो सबही भय खोलि ॥ ४५ ॥

दोहा ॥

पावक पानी पवनपति निकसे सिंह समान ॥ सबहीं के देखत चले गाजि बजाइ निसान ॥ ४६ ॥

कवित्त ॥

बीरसिंहदेव पौरि बाहिर दपेटि दौरि बेरिन को सेनु बेर बीसक कचैाँ-दिगो ॥ कंचन बुँदेलमनि सेलहनि ढकोलि कोरि हाथी पेलि चौकीदार बेतवै में सौंदिगो[1] ॥ दुंदुभी धुकार सौं हजार कौं चुनौंती देत भीम कैसी पैंज लेतु रेत खेत खोदिगो॥रामसीं को नाम स्योरि[2] ग्राम सी जुन्हाई माँझ तामसी तिपुर के तनाउ तंबुरौ दिगो ॥४७ ॥ साहिब सलैमसाहि जू के कहे बीरसिंह छाडि दीनी बड़ननि दतिया उदीह तर । केसौदास तिपुर तुरक है दुनी को घेऱ्यौ आइ एरछे मै घेर होत घनी घर घर॥कोट फेरि, फौज फोरि, सलिता[3] समूह फोरि हाथिनि को बैठँ फोरि कटक विकट वर । मारू दै दमामौ दै कै गारी दै गरूर महं पाउ दै सिधारै सिरदार ही के सिर पर ॥ ९ ॥ जात जात सबही दल होइ । पीछे लागि सकै नहिं कोइ ॥ तिपुर गयन्द हीनमद भयो । बीरसिंह दतिया फिरि गयौ ॥ ४७ ॥ दतिया तेँ फिरि कऱ्यौ मिलान । जहां सलैम साहि सुलितान ॥ ४८ ॥ गयौ साहि के जब दरबार । पहिरायौ बहु दै सुखवार ॥ खीझि रीझि खत्री रस रयौ । उचक्यौ तुरक कछौवहि गयौ ॥ ४९ ॥ पग पग पेलि तिपुर कौ त्रास । गये आगरे केसौ-दासु ॥ तुरत तिपुर कौ भौ फरमान । बोले इन्द्रजीत मतिमान ॥९०॥ दै गढु इन्द्रजीत कौ राइ । तबही कूच कियौ अकुलाइ ॥

---

१ सौंदिना = सानना २ स्योरि = सुमिर कर, स्मरण कर के ।
३ सलिता = बरिसा, नदी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ दोहा ॥

उचकायौ रिपु ग.उँ तै लै आए फ़रमान । केसव को यह रीझ म। लीनौ दीनौ दान ॥ ५३ ॥ जात बीच लागी नहिं बार । गये राय राया दरबार ॥ ५१ ॥ कन्हर के सिर दीनो भार । छाड़्यो घर को सबै बिचार ॥ राजा राम विदा करि दये । इन्द्रजीत हजरति पै गये ॥ ५२ ॥

॥ इति श्री भूमण्डलाखंडलेश्वर महाराजाधिराज राजा श्रीबीरसिंह देवचरित्रे दान लोभ विन्ध्यवासिनी सम्वादे साहिरोष वर्णन नाम षष्टम अध्याय ॥ ६ ॥

———:o:———

॥ दान उवाच ॥

सुनहु जगतजननी मति चारु । साहि कियौ पुनि कहा विचारु ॥ साहि साहिजादे की बात । कहियौ हमसौं उर अवदात ॥ २ ॥

॥ श्रीदेव्युवाच ॥

जबहिँ तिपुर घर के मग लगे । जहां तहां के थानैं भगे ॥ सूनो जानि भड़ैरि मुकाम । बैठे आइ साहिं संग्राम ॥ २ ॥ गये साहि पै साहि सलैम ॥ भयौ साहि के तन मन छैम । दतिया राखे बिरसिंह देव ॥ भसनेहे मैं हरसिंह देव ॥ ३ खड़गराइ सोँ भौ संग्राम । जूझे हरसिंहद्यौ बलधाम ॥ बीरसिंह सुनि कीनो रोस । मनही मन मान्यो बहु सोस ॥ ४ ॥ भइ यहि समै प्रीति अति नई । बिरसिंह देव संग्रामै भई ॥ तब संग्रामसाहि हिय हेरि । बीरसिंह को दई भड़ेरि ॥ ५ ॥ बीरसिंह संग्रामहि ऐन । कह्यौ लबूरागढ ले दैन ॥ खड़ग राइ खल खेरो जिहान । महामत्त मातंग समान ॥ ६ ॥ बीरसिंह बरुता पर चढयौ । बन्धुबरग बहु बिग्रह बढ़्यौ ॥ तज्यौ लबूरा आवत दीठ । चमू चली ताकी परि पीठ ॥ ७ ॥ रुक्यौ लौटि अमिलौटा गाँउ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खड्गराइ जूझ्यौ जिहि ठाउँ ॥ जूझ्यो तब ताको परिवार । काटे सिर सब तज्यौ विचार ॥ ८ ॥ लीनौ जीति लचूरा ग्राम । बैठारे तहँ साहि सँग्राम ॥ मूड़ काटि दै घाले तहां । साहि सलैम छत्रपति जहँ ॥९॥ अकबर साहि सुनी यह बात । मूड दीखि सुख पायो तात ॥ उपज्यौ रोस सुनतही बात । जालिम जलालदीन के गात ॥ १० ॥ पठयो तहँ कछवाहौ राम । साहि सलैम जहां बलधाम ॥ करि तसलीम समै जब लह्यौ । बचन निवारि राम सब कह्यौ ॥ ११ ॥ दुहूँ दीन प्रभु साहि जलाल । तुम ऊपर अति भए कृपाल ॥ तुम सुख सकल साहिबी करौ । सत्रुन के सिर पर पग धरौ ॥ १२ ॥ बीरसिंह वासुकी गनेहु । जो तुम सुख सरीफखां देहु ॥ हय गय माल मुलक उमराउ । इन पर कीजै प्रगट प्रगट प्रभाउ ॥ १३ ॥ इतनौ बचन कहतही थम । साहि सलेम हँसे बलधाम ॥ रामदास सुनु मेरी गाथ । यह साहिबी ईस के हाथ ॥ १४ ॥ स्वर्ग नरक दस दिसि धाइये । काहू की न दई पाइये ॥ रंकाहि राजा होत न बार । राजा रंक भये ते अपार ॥ १५॥ जी मैं कत उपजावत छोभ ? । याको हमैं दिखावत लोभ ॥ बाबाजू के पग उद्धरै । अपनौ सीस निछावर करै ॥ १६ ॥ बीरसिंह अरु बासकि भूप । सुनि सरीफखां बुद्धि अनूप ॥ इन्हैं देत कैसो देखिये ॥ हौं हजराति को सुत लेखिये ॥१७॥ रामदास तब ऐसो कह्यौ । अब सरीफ़खां बासकि रह्यौ ॥ अपने घर मैं सुख कीजई । राजा बीरसिंह दीजई ॥ १८ ॥ सुनि सुनि साहि कह्यौ बुधि लही । रामदास तैं नीकी कही ॥ मेरो बीरसिंह जो होइ । तो मैं वाहि देउँ पति खोइ ॥ २० ॥ मन क्रम बचन चित्त यह लेखि । मो कहँ वीर-सिंह कह देखि ॥ देन कहत जगती कौ राज । ता कहँ तू चाहत है आज ॥ २१ ॥ वाके साथ विपति बरु परौं । वा बिनु राज कहा लै

---

१ सांत = पुत्र

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करौं ? ॥ तू मेरो सदई सुखकारि । और जो होतो डारौं मारि ॥२२॥ जाहि वेगि जो चाहत छैम । चले कूच कै साहि सलेम ॥ करयौ कूच पै कूच सभाग । गयौ प्रगट प्रभु तुरत प्रयाग ॥ २३ ॥ रामदास सब ब्यौरा कह्यो । समुझि साहि सुनि चुप ह्वै रह्यो ॥ तेही समै गयौ अकुलाइ । खड़गराइ को लहुरो भाइ ॥ २४ ॥ करी साहि सोँ जाइ फिरादि । अधिक अनाथन दीजि दादि ॥ साहि मुरादि जबै उत गये । रामसाहि तब आगी भये ॥२५॥ तब बोले हम साहि मुरादि । हमसे दीनन दीनी दादि ॥ सेवा देखि कृपा दृग दिये । खड़गराइ उन राजा किये ॥ २६ ॥ सुनिये आलमपति इहि भेव ॥ मारे सब हम बिरसिंह देव ॥ राजा वीरसिंहदेउ, संग्राम । इन्हीं दुहुन कौ एकै काम ॥ २७ ॥ हमहि मारि तब सुनहु सभाग । बीरसिंह नृप गये प्रयाग ॥

दोहरा ।

बोलि तिपुर सौँ यह कही दिल्ली के सुलतान ।
इनको नीकै राखियै दै भोजन परधान ॥ २८ ॥

चौपही ।

रामदास सोँ कहियेहु येहु । कोऊ एक बिदा करि देहु ॥ देखैं जाइ ओड़छौ ग्राम ॥ ल्यावै बेगि बोलि संग्राम ॥२९॥भीतर भवन गयें तिहि घरी । पहिरावन पठई पामरी ॥३०॥ रामदास सारो आपनो । पठै दियौ अपनी प्रति मनौ॥ कहै साहि आलम रिस भऱ्यौ । बहुत गुनाह बुन्देलनि कऱ्यौ ॥ ३१ ॥ माडौला तपै खाली देस । मेरे सुत को भयौ प्रवेस ॥ बहुत बुन्देलनि बढ़यौ प्रभाउ । करिहैं साहि सलैम सहाउ ॥ ३२ ॥ रोस उठयो मेरे मन महा । इन्द्रजीत कौ कीजे कहा ॥ बोल्यौं असरफखां चित चाहि । घालै आज बुँदेलनि साहि ॥ ३३ ॥ बिमुखनि को कीजैं कुल नास । पद सनमुखनि बढ़ाव अकास ॥ अर्ज मेरि यह मानिय आज । इन्द्रजीत को दीजै राज ॥ ३४ ॥ रामदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सो कह्यौ बुलाइ । करौं नवाज सुबा की जाइ ॥ सुभ दिन होइ तौ चेला करौं । चेला करि विपदा सब हरौं ॥ ३५ ॥ यह कहि साहि झरोखहि गये । इन्द्रजीत को देखत भये ॥ इन्द्रजीत तें जैहै तहाँ । सठ संग्राम गयो है जहां ॥ ३६ ॥ इन्द्रजीत तब ऐसो कह्यो । मैं तो साहि चरन संग्रह्यौ ॥ मेरे मन यहई प्रन धर्‌यौ । हजरति चरन कमल घर कर्‌यौ ॥ ३७ ॥ इन्द्रजीत तसलीम जु करी । साहि दई आपनि पामरी ॥ बूझे साहि सभासद सबै । बीरसिंहदेव कहां है अबै ॥ ३८ ॥ इतहिं नाउ कहि आयो बैन । उत अति जल भरि आए नैन ॥ जब जब साहि सुनत यह नावँ । भूलत तन मन सुक्ख सुभाव ॥ सूल हिये तब हित सब सलै । नैननि तें जल धारा चलै ॥

॥ सवैया ॥

सूरनि को भूखन कै, दूखन असूरनि कौ कैधौं प्रति सूरनि कौ साल उर परिहै । राजनि को तिलक विराजै किधौं केसौराइ अरि गजराजनि कौ अंकुस निगरिहै ॥ मागनै कौ पारस, कि रानश्री कौ सारस कहौ न हौं बनाइ धैर होत घर घर है । राजा बीरसिंह जू को नाउ किधौं जानै यह अकबर साहि नैन नीरद की कर है ॥ ४० ॥

॥ चौपही ॥

आवतही सुभ दिन सुभ घरी । रामदास तब बिनती करी ॥ ४१ ॥ आयसु साहि सुफल फर फरी । इन्द्रजीत सिच्छा की धरी ॥ साहि कह्यौ सुनु कूरम तात । इन्द्रजीत सो कहु यह बात ॥ ४१ ॥ मन क्रम वचन कहौ व्रत धरै । कह्यौ गुरू को चेला करै ॥ जो याके ह्यां ख्यारी होइ । देउ राज जाने सब कोइ ॥ ४३ ॥ इन्द्रजीत सौं यहई बात । जाइ कही ऊदा के तात ॥ इन्द्रजीत यह उत्तर दियौ । मैं अखत्यार सबै कछु कियौ ॥ ४४ ॥ जो कछु साहि कहैंगे आजु । सबै करौं पै लेहुँ न राजु ॥ यहै कही हजरति सौं जाइ । भीतर भवन गए दुख पाइ ॥ ४५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

॥ दोहरा ॥

दासी सब कुल तिय तनै ज्यौं जड़ त्यौं यह जान । इन्द्रजीत किय कुमति हित राजश्री अपमान ॥ ४६ ॥ बोलि तिपुर ताही छन साहि । दीनौ राज कृपा करि ताहि ॥ मन क्रम वचन कियो अति मीत । तासों कह्यो विक्रमाजीत ॥ ४७ ॥ तासो मतो कर्‌यो करि नैम । बोल्यो हौं मैं साहि सलैम ॥ हौं अब रोकि राखिहौं ताहि । तू अब बेगि औड़छे जाहि ॥ ४८ ॥ चल्यौ तिपुर उत इतहि बसीठ । पठये साहि पुत्र पर ईठ ॥ गए तहां जहँ साहि सलेम । प्रगटयो जाइ पिता को प्रेम ॥ ४९ ॥ तुम बिन सुनो साहि को चित्त । कल न परत सुनु आलम मित्त ॥ बेगमखाँ तन तजि यह लोक । छोडि गयो लीनो परलोक ॥ ५० ॥ तिन को दुःख रह्यो पारिपूर । दूर करै को तुम अति दूर ॥ इतनो सुनत छूटि गयो छेम । सोक संग्रहे साहि सलेम ॥ ५१ ॥ दिन देई यह दुख अवगाहिं । आये बाहिर आलम साहि ॥ मुजरा कियो बसठिनि आनि । पूछी तिन्हें बात जिय जानि ॥ अकबरसाह गरीबनेवाज । इन्द्रजीत को दीनों राज ॥ कहे बसीठनि सब व्योहार ॥ जैसो कछू भयो दरबार ॥ ५३ ॥ तब हँसि बोल्यो सरीफखान । बीरसिंह ताजि को तन त्रान ॥ राजा बासुकि केसोराइ । तिनसों कह्यो चित्त को भाइ ॥ ५४ ॥ मोपै बेगम जू को सोग । रह्यो न जाइ भगे सब भोग ॥ मेर मन उपज्यो यह भाउ । देखौं पाति साहि के पाउ ॥ ५५ ॥ राजा बासुकि उत्तर दियो । अपने चित्त सबै समझियो ॥ करन कहो है साहि न सोग । सोग किये तें उपजै रोग ॥ ५६ ॥ रोग भये भागे सब भोग । भोग भगे नहि सुख संजोग ॥ सुख बिन दुख कर दिन उद्योत । दुख तें कैसे मंगल होत ॥ ५७ ॥ ताते सोग न कीजै साहि । गवन तुम्हारौ भावत काहि ॥ केसौराइ अरज जब करी । लीने हाथ छबीली छरी ॥ ५८ ॥ साहि समीप गए

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

है तब । कहा जाइ पुनि कीजै अब ॥ हजरत के नक यहई हिये । होत प्रसन्न न सेवा किये ॥ ॥ ५ ९ ॥ करिये साहि जु करनै होय । गति न तुह्मारी जानै कोय ॥ करि तसलीम सुमिरि नरहरी । बीरसिंह तब बिनती करी ॥ ६० ॥ जैयत हैं बेगम के हेत । आलम प्रभु के नगर निकेत ॥ जिहि सुख होय साहि के गात । सोई कीजै तजि सब बात ॥ मोहि साहि कौं सौंपो जाइ । जातैं कुल कौ कलह नसाइ ॥ हौं हजरत सिर सदकै भयो । एक गुलाम भयो नहिं भयो । खांसरीफ बोले रिस भरे बीरसिंह तुम राजा करे ॥ सु तौ साहि अब देत न बनै । राजा दीनै पातक घनै ॥ ६३ ॥ तातैं मोहि मया करि देहु । बैठैं साहि सौं दिन दिन नेहु ॥ उपाजावत छिति मण्डल छेम । बोलि उठे तब साहि सलेम ॥ तुह्मैं देउँ हजरत हित काज । काहि बढ़ाऊं आपनै राज ॥ बहुरि न मोसौं ऐसी कहौ । मेरे जीवत निरभै रहौ ॥ ६५ ॥ साहि सलैम साहि पै गये । साहि बहुत तिनकौं दुख दये ॥ दूरि सरीफखान भगि गयौ । सबै मुलक अति दुचितो भयो ॥ बिरसिंघदेउ भैया संग्राम । देख्यो आनि औंड़छौ ग्राम ॥

इति श्री भूमण्डलाखण्डेश्वर महाराजाधिराज राजा श्रीबीरसिंह देवचरित्रे दान लोभ विन्ध्यबासिनी सम्बादे क्षितिपतिछल वर्णनं नाम सप्तम प्रकाशः ॥ ७ ॥

———:o:———

दान उवाच । चौपही ।

कहौ, देवि, कित गयौ अभीत । साहि कियो जु बिक्रमाजीत ॥

श्रीदेव्युवाच ।

मेल्यो तिपुर सिन्धु के तीर । भूमियां मिले रीछ तजि धीर ॥ तबहि तिपुर दतिया तन गये । इन्द्रजीत अपने घर भये ॥ २ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोजा अबदुल्लह आइयौ । मिलि भदौरिया सुख पाइयौ ॥ तिपुर सुजानसाहि सौं कहै । चलौ बैतवै जल संग्रहै ॥ ३ बेहड़ काटत चल्यौ सुभाउ । रह्यौ आनि खम्हरौली गांउ ॥ इन्द्रजीत बिरसिंघ देव आप । लीने सुभट दरैं अरि दाप ॥

दोहरा ।

दुहूं कटक अरु ओंड़छैं आधकोस कौ बीच । बेहडु काटत मिसि पर्‍यौ काटतु काट लै नीच ॥ ५ ॥

चौपही ।

इत कठ गरु उत सरिता कूल । मारग कियो परम अनुकूल ॥ तदपि न गयो ओड़छे परैं । निसिबासर सिंगरौ दल डरै ॥ एक समय सिंगरे उमराउ । लगे विचारन मगन उपाउ ॥ जौ कोऊ कछु करै विचार । मानै नहीं तिपुर तिहिं बार ॥ राजा रामसिंघ तब कह्यो । हमसों बैठे जाइ न रह्यो ॥ भोर होत नहिं लाऊं बार । जारि ओड़छौ करिहौं छार ॥ मारू कह्यौ सुनौ नरनाथ । हौं आयौं राज के साथ ॥ तिपुर तिन्है बहु बरजत भये । बरजत ही उठि डेरहि गये ॥ राज अगे बड़ै ही भोर । बजे दमामैं जनु घनघोर ॥ ६ ॥ सकिलि सकल दल सज्जित भयौ । रह्यो न मारू हठ कौ लयौ ॥ सजि चतुरङ्ग चमू नृप चल्यौ । गाजत गज चालत भुव हल्यौ ॥ दुदुंभि सुनि कासीसुर चढ्यौ । चढ्यौ तिपुर सबही बर बढ्यौ ॥ राजाराम साहि गल गज्यौ । बीरसिंह कौ दुदुंभि बज्यौ ॥ तमकि चढ़्यौ तब साहि संग्राम । ताकं चित्त बस्यौ संग्राम ॥ इन्द्रजीत अरु राउ प्रताप । बाँधे कवच लिये कर चाप ॥ उग्रसेन अरु केसौदास । जानत हैं बहु जुद्ध बिलास ॥ ठाकुर और कहां लौं कहौं । कहन लेउँ तौ अन्त न लहौं ॥ दोऊ दल बल सज्जित भये । बहुधा व्योम बिमानन छये ॥ रानसिंह की पति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पद्मिनी । नव दुलहिनि गुन सुख साझिनी ॥ सिर सब सीसोदिया सुदेस । बानी बड़गूजर बर बेस ॥ श्रुति सिरफूल सुलङ्की जानु । लोचन रुचि चौहान बखान ॥ भनि भदौरिया भूषित भाल । भृकुटि भाटी भूपाल ॥ कछवाहे कुल कलित कपोल । नैषध नृप नासिका अमोल ॥ दीखत दसन सुहाड़ा हास । बीरा बसै बनाफर बास ॥ मुख रुख मारु चिबुक चंदेल । ग्रीवा गौर, सुबाहु बघेल ॥ १७ ॥ कुल कनौजिया कंचुकिं चारु । कुच करचुली कठोर विचारु ॥ पान पँवैया परम प्रबीन । नृप नाहर नख कोर नबीन ॥ कोसल कटि, जादौ जुग जानु । पदप लवा कैकेय बखानु ॥ तोंबर मनमथ, मन पड़िहार । पद गठौर सरूप पँवार ॥ १८ ॥ गूजर वे गति परम सुबेस । हावभाव भनि भूरि नरेस ॥ केसौ मारू सखि सुखदानि । दामोदर दासी उर जानि ॥

दोहा ।

राजसिंघ पति पद्मिनी दुलहिनि रूपनिधान । दूलह मधुकर साहि सुत बिरसिंघदेव सुजान ॥२१॥

चौपही ।

तिनकौ सिर स्वयंभुमय मानि । श्रवननि कौ वैश्रवन बखानि ॥ भाल भलौ भागनि मय मानि । वृष कन्धर सुरमेब बखानि ॥ भुज जुग भनि भगवती समान । अति उदार उर तुम हिय मान ॥ कटि नर केहरि के आकार । जानु बरुन मय रूप कुमार ॥ पदकर कँवल सुवाहन बास । आयुध सक्र समान सहास ॥ जय कङ्कन बाँधै निज हाथ । पनरथ परम पराक्रम गाथ ॥ टोपा सोभत मोर समान । बागे सम सोहै तन-त्रान ॥ पावक प्रगट प्रताप प्रचण्ड । रच्छक नारायन नवखण्ड ॥ २५ ॥ पञ्च सब्द बाजत अवदात । सुभट बराती फौज बरात ॥ दोऊ दल बल बिग्रह बढ़े । देखत देव बिमानन चढ़े ॥२६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

बीरसिंह नृप दूलहै नृपपति दुलहिनि देखि । घूँघट काढ्यौ भ्रम सहित सभय सकंप बिसेखि ॥

चौपही ।

घूँघट सौं पट दुलहिनि नई । बीरसिंघ राजा गहि लई ॥ देखी पति कासीसुर हाथ । कोप कियो कूरम नरनाथ ॥ जहँ तहँ विक्रम भट प्रगटये । गज घोटक संघटित सुभये ॥ तुपक तीर बरछी तिहि बार । चहूं ओर तैं चले अपार ॥ जंग जागरा जङ्गल जुरे । काहूके न कहूं मुँह मुरे ॥ हीसत हय, गाजत गज ठाट । हांकत भट बरम्हावत भांट ॥ जहँ तहँ गिरि गिरि उठि उठि लरैं । टूटै असि काढ़ै जम धरैं ॥ भूलि न कोऊ जानै भाजि । मारत मरत सामुहै गाजि ॥ अपने प्रभुको सङ्कट जानि । उठ्यो दमोदर गहि असि पानि ॥ सकल जागरा जुद्ध अमोर । चमू चांपि आई चहुँ ओर ॥ घोरौ कट्यो घरनि धुकि[1] गयौ । तब संग्राम पयादो भयो ॥ तापर आयौ राउ प्रताप । सङ्ग लिये बहु सूरनि आप ॥ कियौ हथ्यार आपने हाथ । गावत गाथा सुर नरनाथ ॥ सकतसिंघ कछवाहे आनि । गयौ अगावझ तैं पहिचानि ॥ घोरनि तैं दोऊ गिरि गये । भूतल लोथ क पोथा भये ॥ राउ प्रतापहि देखत आसु । तिन पहँ दौरे फेसौदासु ॥ ३५ ॥ हन्यौ दमोदर हाथहि हेरि । बरछा हन्यौ बरछौ लै फेरि ॥

हरिकेस उवाच । कवित्त ।

कारी पीरी ढालैं लालैं देखियैं बिसालैं अति हाथिन की अटा घन घटा सी अरति हैं । चपला सी चमक चमूनि माझ तरवारि सोरही सौं सार फूलझारी[2] सी झरति हैं ॥ प्रबल प्रतापराउ जङ्ग जुरै

१ धुकि गयो = गिर पड़ा । २ फूलझारी = फूलझड़ी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

केसोदास हनै रिपु करै न छिपा पनु भरति है । पैस हरिकेस तहां सुभट न जाय जहां दुहूं बाप पूतै दौड़ हौड़सी परति है ॥

चौपही

देखि पयादो बल कौ धाम । भरु संग्राम साहि संग्राम ॥ दौरयो उग्रसेन रननीत । दौरै इन्द्रजीत सुभ गीत ॥ दल बल सहित उठे दोइ बीर । मनौ घनाघन घोर गँभीर ॥ धुन्ध धूरि धुरवा से गनौ । बाजत दुन्दुभि गर्जत भनौ ॥ जहां तहां तरवारैं कढ़ी । तिनकी दुति जनु दामिनि बढ़ी ॥ तुपक तीर ध्रुव धारापात । भीत भये रिपुदल भट ब्रात ॥ श्रोनित जल पैरत तिहिं खेत । कूरम कुल सब दलहि समेत ॥ परम भयानक भौ यह ठौर । भागि बच मारू हरधौर ॥ जगमनि प्रोहित घोरो दियो । चढ़ि संग्रामसाहि हरखियो ॥ जूझि पस्यो दामोदर जबै भागि बच्यो कूरमदल तबै ॥ जगमनि दामोदर तिहिं बार । पठये सिरिसाटै सिरदार ॥ राजसिंह भये अति बहबहे । जाइ औंड़छें रावर[1] गहे ॥ अति रूरी राजति रन थली । जूझि परे तहँ हय गय बली ॥ खण्डनि सुण्ड लसैं गजकुम्भ । श्रोनित भर भमकन्त भसुण्ड ॥ रुधिर छाँड़ि अँग अँग रुचि रवे । गैरिक धातु सैल जनु द्रवै ॥ धावत अन्ध कबन्ध अपार । छिदी सौंहथी उरनि उदार ॥ हीन भये भुज बल के भार । जनु हिय हरखि गहे हथियार ॥ उठि बैठे भट तरु की छांहि । लागी सांगि तिन्हे मुँह माहिं ॥ दांतन की किरचन रँग रँगे । बहु बिधि रुधिर हलूका लगे ॥ भखि तमोर बिषई मनु हरै । मनहुँ कपूर करूरा करै ॥ घन घाइनि घाइल घर परैं । जोगिनि जोरि जंघ सिर धरैं ॥ अञ्चल मुख पौंछति जगमगी । कण्ठ श्रोन पिय मारग लगी ॥ सांचहु मृतक मानि भय दली । मानहु सती छोड़ि सत चली ॥

---

[1] रावर = रावल = महल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गीधिनि के सुत सोभित घनैं । लीलत पल मुख श्रोनित सनैं ॥ चन्द्र जानि बासर चहुंओर । चुंचनि चुनत अँगार चकोर ॥ श्रोनित सोभा रचे शरीर । तहँ देखिये डरे बर बीर ॥ खेलि फागु मानौ फगुहार सोइ रहे मदमत्त गँवार ॥ एक जूझि भूतल पर परे । एक बूड़ि सरिता महँ मरे ॥ गय घोटक करभनि[1] को गने । छूटे बन बन डोलत घनै ॥ ऐसो भयौ करम को जोग । तज्यौ नकारो आलमतोग ॥ जहँ तहँ हसम खसम बिन भये । जल थल रखत बखत भगि गये ॥ माही महल मरातब साथ । आई पति कासीसुर हाथ ॥ लीनौ खलक खजानौ लूटि । कूरम भगे चहूँ दिसि फूटि ॥ देखै तिपुर तमासौ आप । ऊपर होहि नहीं परताप ॥

कबित्त ।

ह्वै गयो बिठान बल मुगल पठाननि कौ मंभरे भदौरियाउ संभ्रम हिये छयौ । सूखे मुख सेखनि के, खन्योई खिसान्यौ खत्री गाढ़ौ गह्यौ गाढ़ पांउ एकौ न इतै दयो ॥ बीरसिंघ लीनी जीति पति राजसिंह की तुसार कैसो मान्यो मारू केसौदास ह्वै गयो । हाथीमय हयमय हसम हथ्यारमय लोहमय लोथिमय भूतल सबै भयौ ॥ ५२ ॥

चौपही ।

बीरसिंह अति हरषित हियै । राजसिंघ पति दुलहिनि लियै ॥ घेरचौ नगर ओड़छौ जाइ । मारू केसौदास रिसाइ ॥ ५३ ॥ घुस्यौ घूंसि ज्यौं घर के कोन । तजि रजपूती साधी मौन ॥ राजा राजसिंह हिय डर्यो । सोक छाँड़ि मन संसै पर्यो ॥ अमल कमल दल लोचन ऐन । स्यामल जल भरि आये नैन । पति दुलहिनि करुनारस भरी । बीरसिंह सौं बिनती करी ॥ महाराज जौ करहु सनेहु । इनकौ धर्म द्वार अब देहु ॥ इतनौ कहत आइयौ रोय । ह्वै गयौ करुनामय सब

---

१ करभ = ऊँट ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोय ॥ बीरन बोलि अंभै कौं दये । बीरसिंह तब डेराहि गये ॥ मारू सहित सोक रँग रये । राजसिंघ तब कुठौली गये ॥

सवैया ।

ओरनि[1] लै अरु ओम उसीर उवे जब केसव जोन्ह बिभाती । घोरि घनौ घनसार तुसार सों अङ्क लगावत पंकजपाती ॥ सोधि सबै सियरे उपचारनि ज्यौं ज्यौं सिरावत त्यौं अति ताती । केसब मारू गये पुर जारन सो न जर्‍यो पै जरी उठि छाती ॥ ५८ ॥

चौपही ।

ता दिन तैं सिंगरे उमराउ । चल दल कैसो गह्यौ सुबाउ[2] ॥ आवन जान न पावै कोय सब दल रह्यौ महा भय होय ॥

इति श्री भूमण्डलाखण्डलेश्वर महाराजाधिराज राजा श्रीबीरसिंह देवचरित्रे दान लोभ विन्ध्यबासिनी सम्वादे युद्धजयविवाह वर्णनं नाम अष्टम प्रकाशः ॥ ८ ॥

———— :o: ————

लोभ उवाच ।

राजसिंह मारू की हार । कहा कर्‍यौ सुनि साहि बिचार ॥ सो तुम कहो जगतबंदिनी । जिनके जस की चिरचंदिनी[3] ॥

श्रीदेव्युवाच ।

राजसिंघ के युद्ध विधान । सुनि सुनि सीस धुन्यो सुलतान ॥ उमराउनि की प्रगट प्रमान । यह लिखि पठै दियो फ़रमान ॥ कै तुम गहियो हज को राहु । कै उनकी बसहिनि परजाहु ॥ उन नृप पति लीनी करि नेहु । तुमहू उनकी पतिनी लेहु ॥ ३ ॥ जँह जँह जाइ तहां तुम जाउ मैटो मेरे उर कौ दाउ ॥ यह सुनि बीरसिंह सुख पाय । वसहिनि मांझ

१ ओरनि = ओले । २ हिलते पत्ते के ऐसे चंचल हुए । ३ सदा चांदनी रहती है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चले अकुलाय ॥ को मन मीच अधर मधु छकै । को मेरी दासी ह्वै सकै ॥ बरजि रहे बहु राजा राम । ऐसो करि छोड़ौ घर धाम ॥ ५ ॥

सवैया ।

कालिहि बैठि गुपाचल[1] से गढ़ सोधि सुरेसन कै गुन गाहौं । दान कृपान विधानन केशव दुष्ट दरिद्रन के उर दाहौं ॥ खानिनिहान के खान करौं सब खानजमान बृथा अब गाहौं । मेरे गुलामनि ह्वैहैं सलाम सलामति साहि सलेमहि चाहौं ॥

चौपही ।

बीरसिंह राजा बरबीर । बसही जाय लई धरि धीर ॥ तेही समय छांड़ि भुव लोक । अकबर साहि गये परलोक ॥ काशीसुर जँह तँह गल गजे । जहां तहां तै थानै भजे ॥ पातसाहि भौ साहि सलेम । मानौ छिति मण्डल को छेम ॥

कवित्त ।

दाम बल, दल बल, बांहु बल बुद्धिबल बंसहू कौ बल जु निधानौ जान्यौ जबही । बांधि कटिपट फैंट पीतपट की निकट पांइनि पयादौ उठि धायो प्रभु तबही ॥ निपट अनाथनाथ दीनानाथ दीनबंधु दयासिंधु केसौदास सांचे जाने अबही । हाथी की पुकार लागे काननि सुन्यो है हरि औड़ढ़े कौं लागत पुकार देख सबही ॥ ६ ॥

दोहा ।

दान लोभ सब आदि दै कही जु बूझी मोहि । जाहु जहां जाके गुननि रही सकल मति तोहि ॥

दानउवाच ।

जग माता औरौ कहौ जो परिपूरन प्रेम । वीरसिंघ कहँ का दयौ साहिब साहि सलेम ॥

---

१ गुपाचल = गोपाचल = ग्वालियर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्री देव्युवाच—चौपही ।

दान लोभ तुम परम सुजान । जानत है सब के परमान ॥ अकबर साहि गये परलोक । जहांगीर प्रभु प्रगटे लोक ॥१२॥गाजी तखत बैठियो गाजि । सोक गये लोगनि के भाजि ॥ पारस सो सबको गिरि गयो । चिंतामनि सो कर पर गयो॥१३॥अच्छैबर सो भयौ अरिष्ट । सुरतरु सो देख्यौ दृग इष्ट॥ अर्थै गयो ससि सो,सुनु,दान । सूरज सो भयो उदित जहान॥१४॥रज, तम सत्व गुननि के ईस । तिन करि मंडल मंडित दीस ॥ बैठे एक छत्र तर लसैं।छांह सबै छिति मण्डल बसैं॥१५॥ऐसो राज रसा[1] महँ करै । भुमिया के नाके[2] भुव धरै ॥ गढ़नि गढ़ेई[3] के बलदेव । सेवत कर जोरे नरदेव ॥१६॥ राजसिंह सोहत चहुँ पास । दिन देखत गजराज प्रकास ॥ बैठे तखत सकल सुख लिये । सुधि आई हजरत के हिये॥१७॥राजा बीरसिंहले आउ । दियौ तुरङ्गम स्यौं[4] सिरु पाउ ॥ पठयौ लेखि अंबिका जानु । अपनै हाथ लिख्यौ फरमानु॥१८॥डांग[5] चौकिया पहुँचे सेख । बीरसिंह देख्यौ सुभ बेख ॥ जो पायौ प्रभु को फरमान । महा मृतक जो पावै प्रान ॥१९॥ लै सँग भारथ बीर सुठाउँ । तब प्रभु आये एरछ गाउँ ॥ हिलिमिलि राम साहि नर नाथ । ह्वै गयौ इन्द्रजीत कौ साथ॥२०॥खेलत हँसत बहुत दिन भरे । आये निकट नगर आगरे ॥ ऐसौ मग देख्यौ बाजार । मनौ गना गन कवित विचार॥२१॥देख्यौ जोई सोइ अपार । मनहुँ धनपती को व्यवहार ॥ जाहि देखि भूल्यौ संसार । देख्यौ अति अद्भुत बाजार ॥२२॥

कवित्त ।

परम बिरोधी अविरोधी ह्वै रहत सब दीनन के दानि दिन हीननि कौ छेम है । अधिक अनंत आप सोहत अनंत अति असरन सरननि राखिबे

---

१ रसा = पृथ्वी । २ नाका = छोर । सीमा । भुइया के नाके भुव धरै = पृथ्वी के छोर तक राज्य करता है (जहांगीर) । ३ गढेई = किलेदार । ४ स्यो = साथ ५ डांग = सघन जंगल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौ नेम है ॥ हुतभुक हित मति[1] श्रीपति बसत हिय जदपि जलेस गंगा जलही सों नेम है । केसौदास राजा बीरसिंहदेव देखि कहैं रुद्र है समुद्र हैं कि साहिब सलेम हैं ॥ २३ ॥

चौपही ।

जहाँगीर जगती कौ इन्द्र । देख्यो बिरसिंहदेव नरिन्द्र ॥ कर जोरे सेवत दिगपाल । बिद्याधर, गंधर्ब रसाल ॥२४॥ सोभत है गजराज चरित्र । ढारत चँवर कलानिधि, मित्र[2] ॥ सकल मंजुघोषा सुन्दरी । गावति सुखद सुकेसी खरी॥२५॥पूरब दिव दुति दीपित करै । मनि गति मण्डित बज्रहि धरै ॥ साहि देखि राख्यौ उरलाय । ज्यौं हरि सुखद सुदामहिं पाय॥२६॥देखत दुःख दूरि सब गयौ:पाइनि परि जब ठाढ़ौ भयौ॥ पूछैं साहि सबनि सुख पाय । नीके हैं राजन के राय ॥२७॥ अब नीकै देखे जब पाय । उज्जल अमल कमल से राय ॥ हय गय हीरा बसन हथ्यार । हजरत पहिरायौ बहु बार ॥२८॥ भारतसाहि बहुरि इन्द्र जीत । मिलवत भयौ साहि के मीत ॥ जब जब गयौ बीर दरबार । तब तब सोभा बढै अपार ॥२९॥ खान राउ राजा मनहार । ऊपर बीर लिये हथियार ॥ कटरा[3] कटि दाबैं तरवारि । साहि समीप रहे सुख कारि ॥३०॥ कबहूं हय गय हेम हथ्यार । कबहू खग मृग बसन अपार ॥ कबहूं बाने भूखन छेम । दै बहुरावत साहि सलेम॥३१॥कौन गनै राजा अरु राउ । खोजा देखै सब उमराउ ॥ काहू को न जाय मन जहाँ । बीरसिंह को आसन तहां ॥३२॥ एक समय हजरति हँसि कह्यौ । बीरसिंह तू दुख सो रह्यौ ॥ और बडौ बड़ौ परिगन सेखि । मेरौ राज आपनौ लेखि॥३३॥जाहि भुवन त्रिभुवन सुख देखि । सबै तुमारो जो कछु पेखि ॥ सकल बुँदेलखण्ड है जितो । तुमको मैं दीनो है तितो ॥३४॥

---

१ हुतभुक=अग्नि । २ मित्र=सूर्य्य । ३ कटरा=कटार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औरौ बडे बडे परिगने । तो कह मैं दीने बहु धने ॥ हौं जु भयो महनि सिरताज । तुहू होइ रायनि को राज ॥३५॥ तोहि न भानै मारौं ताहि । बिदा होय अपने घर जांहि ॥ बीरसिंह कीनी तसलीम । गाजी जहांगीर के भीम ॥३६॥ तब तिन बोलि इन्द्रजित लये । करन बिचार मुडेरहि गये ॥ कियौ बिचार बहुत बिधि जाय । एकहु भांतिं न जिय ठहराय ॥३७॥ कोऊ छांडै कोऊ धरै । कछु बिचार नहिं जिय मैं परै ॥ जाइ गही आगे आपनै । हमै जतहरा लेत न बनै॥ ३८॥ कह्यो सरीफ खान समुझाय । बीरसिंह सो अति सुख पाय ॥ अपनी भुइ मैं तू प्रभु होहि । मुगल गये दुख ह्वैहै तोहि॥३९॥कीनी बिदा बेगि पहिराय । दिये परिगने बहु सुख पाय ॥

दोहा ।

राजा बिरसिंहदेव की, बिदा करी सुलितान ।
एरछ गढ़ आये सुने, केशव [९] निधान ॥ ४० ॥

चौपही ।

आये घर तब भारतसाहि । कही राज सों बात निबाहि ॥४१॥ पटहारी आये नृप राम । सबही जान्यो बिग्रह काम ॥ यह सुनि प्रताप राउ बुलये । बीरसिंह पुर एरछ गये ॥ ४२ ॥ यह सुनि रामसाहि गुन ग्राम । बैठे मतै आपनै धाम ॥ बिजैनरायन देवा राय । लीनै गिरधरदास बुलाय ॥ ४३ ॥ मंगद पैमु बहादुर अली । बूझी बात इन्है प्रभु भली ॥ कहौ मतौ तुम बुद्धि बिसाल । करनै मोहि कहा यहि काल ॥ ४४ ॥ ऐसी बात बुँदेलनि कही । एक सूझ हम कीने सही ॥ जूझ गयौ हमरौ परिवार । तब तुम कीजहु और बिचार ॥४५॥ कह्यो पायकनि मन्त्र सु येहु । उनहीं की बातैं नि लेहु ॥ तब करि लीबौ तैसो मतौ । अबही तें उनसो जनि दतौ ॥४६॥इहं पारिन कहि

९ दैता = भडो, डो ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीनो जबै । मिश्र उदीन बोलियो तबै ॥ हौं जु कहौं सब सुनिबौ आप । मिले सुने हम राउ प्रताप ॥ ४७ ॥ उनको बेटा केसोदास । तिनही देस दियो उदबास ॥ इन्द्रजीत घर नाहीं राज । उग्रसेन बीधे[1] यहि काज ॥ ४८ ॥ बेटा ऐसो भयो न होय । मानौ जानि हमारो लोय ॥ भैया बन्धु मिलतही जात । परिजहु लोग सबै अकुलात ॥४९॥ नाही फौज मांझ सरदार । कीजो कैसो बुद्धि बिचार ॥ एरछ ही जैए सब छोड़ि । हौं जु कहत हौं ओली ओड़ि[2] ॥५०॥ उहाँ गए मिटि जैहै भर्म । इहि बिधि रहत सबनि कौ धर्म ॥ मीठो खाए बिनसै ब्याधि । कौन मरै औषध कटु साधि ? ॥ ५१ ॥

दोहा ।

मुगलनि आए जो करहु, अपने चित्त बिचार ।
तौ अबहीं सब समझिए, बूझो प्रभु परिवार ॥ ५२ ॥

चौपही ।

यह सबनि ठहराई बात । कियौ पयानौ होतहि प्रात ॥ रामदेव एरछगढ़ गए । बीरसिंह आनन्दित भए ॥ ५३ ॥ बहुत भांति तिन आदर कियौ । फाट्यौ देखि राये कै हियो ॥ कीनौ सब जन कैसौ काम । मनहुँ भरत के आये राम ॥ ५४ ॥ भोजन करि कीनो बिश्राम । भयौ दिवस को चौथौ नाम ॥ जितने साहि परिजने दिए । तिनके पटे आपु कर लिए ॥५५॥ बीरसिंह अति आदर भेर । रामदेव के आगे धरे ॥ रामदेव बिष्टारौ कर्यो । बातनि बातनि अन्तर पर्यो ॥ ५६ ॥

दोहा ।

निपट अटपटी काल गति, करन गय हे प्रीति ।
भूलि सयान सबै गए, ह्वै गइ उलटी रीति ॥ ५७ ॥

---

१ बीधे = उलझे, फंसे । २ ओली ओढि = अंचल वा दामन रोपकर। विनय के साथ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

बहुत विनौ बिरसिंहदेव कियो । राजा तिन में चित्त न दियौ ॥
कियौ मतौ कूरौ[1] सु अपार । भूलि गयौ सब चित्त बिचार ॥५८॥

दोहरा ।

जन परिगहु उमराउ सब, बेटा भैया बन्ध ।
बीरसिंह को मिलि गये, विविध भांति प्रतिबन्ध ॥ ५९ ॥

नृप पटहारी आये जबै । बीर चले एरछ तैं तबै ॥ आए वीरसिंह पिपरहा । मिल्यौ खान अबदुल्ला तहां ॥६०॥ छाडि लचूरा छाडि गुमान । मिल्यौ तुरतही दरियाखान ॥ छूटि गयौ पुनि गढ कुंडार । छूट्यो जन्त्र घटा गढ सार ॥ ६१ ॥ छांडी पटहारी नृप राम । मेले आनि बनिगवाँ ग्राम ॥ ६२ ॥

दोहरा ।

प्रात भये तारानि ज्यौं रवि कौ होत प्रवेस ।
हरैं हरैं छूटत चल्यौ केसव दीरघ देस ॥ ६३ ॥

इति श्रीमत्सकलभूमण्डलाखण्डलेश्वरमहाराजधिराज राजा श्रीबीरसिंह-देवचरित्रे दानलोभविन्ध्यबासिनीसम्बादे जनपदसंग्रहवर्णनो नाम नवमः प्रकाश ॥ ९ ॥

———:o:———

दान उवाच ॥ चौपही ॥

राजाराम साहि के लोग । पुरिखा गति तैं सुख संजोग ॥ पायक, प्रोहित परिगहु, दास । फौजदार, सिकदार खवास ॥ १ ॥ सुत, सोदर, परिवार अपार । वृती[2] सुरजु जानै संसार ॥ राजा बीरसिंह कौं अबै । कैसै मिलन बूझिये सबै ॥ २ ॥

---

[1] कूरौ=बुरा । [2] वृत्त=वृत्ति धारी, बिरतिया नाऊ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीदेव्युवाच ।

रामराज बैठे तहि खरे । उदासीन सिगरेई करे ॥ सुनि अभिषेक सबै नरनाथ । एकौ रानी लेइ न साथ ॥ ३ ॥ सुतनि समेत सबै त्रिय त्रसीं । अपने अपने गांवनि बसीं । रिपु दल खण्डन दुरगादास । दान कृपान विधान निवास ॥ ४ ॥ जासौं प्रेम हिये जब हयौ । उदासीन सिगरो कुल भयो ॥ रन भैरव भनि खानजहान । जाके जस कौं जपै जहान ॥५॥ ताकौ विरति[1] विविधि विधि रयौ । सो लै अपनै पुत्रनि दयौ ॥ सैद समुद्र गहिर अति घोर । बूझ्यौ आमनदास अमोर ॥६॥ ताके सिरसांटे कौ गांउ । अपनै सुत कौ दयौ सुभाउ ॥ मुगल बुलाय बानपुर लियौ । राउ प्रताप परावो कियौ ॥ ७ ॥ तजि पँवार भगवान सुधीर । कीनौ साहिब भांट वजीर ॥ सुन्दर जिहि लोभहि दुख दिये । ऐसे पुरिख दूरि तिन किये ॥ ८ ॥ रैयत राउत भये उदास । जाचक जीव न आवै पास ॥ दोऊ अपनै अपनै धाम । देखत तरुनिन के गुन ग्राम ॥ ९ ॥ राजा श्री घर घर पग धरै । दुवा बिकल रक्षा को करै ॥ तारा चन्द पैम के पूत । अरु प्रोहित मन्त्री रजपूत ॥ १० ॥ इहि बिधि उदासीन सब भये । बीरसिंह राजहि मिलि गये ॥ लै पटहारी बीर सुभाउ । मेले आनि बरेठी गांउ ॥११॥

दोहा ।

बीर बरेठी, बनिगवां राजाराम सुजान ।
आध कोस कौ अन्त है दुहू भूप उर आन ॥ १२ ॥

चौपही ।

आवत जात गुपाल खवास । दुहूं ओर कौ करि उपहास ॥ यहीं बीच खुसरो सुलतान । भाग्यौ दुचितौ भयौ, जहान ॥१३॥ पीछे लग्यौ

---

१ विरति = वृत्ति । जागीर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साहि सिरताज । ज्यौं सुवास पीछे अलिराज ॥ बीरसिंह के सुत सँग गये । इन्द्रजीत घर आवत भये ॥ १४ ॥ आनि राम के पांयन परे । मानौं लछिमन आनँद भरे ॥ रामदेव भेटे सुख पाय । जैसे प्यासो पानिहि पाय ॥ १५ ॥ आनन्दे जनपद चहुँ ओर । मेघ गजे ज्यौं चातक मोर ॥

राम उवाच ।

तुमही मेरे सुत के ठौर । भैया बन्धुन के सिरमौर ॥ १६ ॥ तुमही बल बुधि बचन बिचारु । तुमहि बाहु लोचन उर चारु ॥ तुमही सेनापति सरदार । तुमहीं कर तुमही करवार ॥ १७ ॥ तोही राज काज को भार । सौंप्यो तुमहीं सब परिवार ॥ बीरसिंह उत राउ प्रताप । जूझ करहु कै करहु मिलाप ॥१८॥ तर्जा आजु तैं मैं सब बात । सबै लाज तेरे सिर, तात ॥ पति अरु सम्पति सब सुखदाय । तुम राखौ ज्यौं राखी जाय ॥ १९ ॥ मन्त्री मित्र बोलि नरनाथ । सौंपे इन्द्रजीत के हाथ ॥ दुहुं दिसि भटन होय भट भेर । दिन उठिइत उत टेराटेर ॥२०॥ बिरसिंघ को सौंप्यों परिवार । इहि बिच मिले कटेहरावार ॥ एक बेर गोपाल खवास । स्यामदास परतीतिनिवास ॥ २१ ॥ पायक दुर्जन लीनें सङ्ग । गये बरेठी बात प्रसङ्ग ॥ बीरसिंह सौं बात बनाइ । भारथसाहिहि गये लिवाइ ॥ २२ ॥ सुख सौं सौंपे भारतसाहि । सबै साहिबी सौंपी ताहि ॥ भैया बन्धु हते भट जिते । रैयति राउत सौंपे तिते ॥२३॥ जेते राज काज के गाउ । राखे सब बाहिरे सुभाउ ॥ बीरसिंह अरु भारथसाहि । कीनी सौह दुहू चित चाहि ॥२४॥ इतनी बात जु मेटै कोय । ताको भलौ न कबहूँ होय ॥ ताके बीच दये जगनाथ । हरि २ सामुहे पसाऱ्यो हाथ ॥ २५ ॥ राजा अपने बचन रहाय । तजि बनिगवा ओड़छे जाय ॥ इन बातन की करी पतीठि । आये

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुवँरहि छोडि वसीठि ॥ २६ ॥ जब यह बात सुनी नृप राम । भूलि गये सिगरेई काम ॥ अब हम तुमको ऐसी कही । करि यह सौंह छांहु यह मही ॥२७॥ सबै बसीठी झूठी करी । बिन पूछे जु छुवै नरहरी । तब बसीठ उठि एकै लये । इन्द्रजीत केरावर गये ॥ २८ ॥ इन्द्रजीत सुनियौ यह बात । तन मन दुख पायौ निज गात ॥ करि करि अपने चित्त बिचार । गये राजा पहँ राजकुमार ॥ २९ ॥ तिनि यह बात नृपति सौं कही । अब तौ सबै बसीठी रही ॥ जब भगवन्त होय प्रति कूल । फूल फूल ते होय त्रिसूल ॥३०॥ ताजि वानिगवां चलहु नरनाथ । हरि राखिये आपने हाथ ॥ गये औरछै जबहि नरेस । तबहीं जानौ छूट्यो देस ॥ ३१ ॥ राजा नगर ओडछें आय । बहुत भांति मन को समुझाय ॥ कहा होय गुन गन के नाथ । फाट्यो दूध न आवै हाथ ॥३२॥ मङ्गद पायक पैम बनाय । पठये केशवमिश्र बुलाय ॥ जो कछु करि आवहु सु प्रमान । यों कहि पठये राम सुजान ॥ ३३ ॥ गये बरेठी कहँ बहु घने । वीरसिंह पै तीनो जने ॥ पाहिले देखे केशवदास । वीरसिंह नृप रूप प्रकास ॥३४॥ बैठे सिंहासन सिर छत्र । चौंर ढुरत भूमि भाज तसत्रु ॥ निकट भयो देख्यो भव भूप । जैसो कछु सुभाव कौ रूप ॥३५॥ नियरे ही बैठारे भूप । कुसल प्रश्न पूछे बहु रूप ॥ पायक पैम चलाई बात । सुनन लग्यो नृपउर अवदात ॥३६॥ प्रेम कहै जोई जब बात । बीरसिंह सुनि हँसि हँसि जात ॥ समुझे पैम सहज कौ हास । मङ्गद जान्यौ है उपहास ॥३७॥ बोलि कह्यौ यह नृप सिरमौर । मेटहू सौंह चलावहु और ॥ केसवमिश्र कही यह बात । सुनिये महाराज के तात ॥३८॥ राजनि सौं बैठे दीवान । बिनती करत परम अज्ञान ॥ जब हम समय पायहैं, राज । विनती करिहैं नृप सिरताज ॥३९॥ इतनी सुनि हिय अति सुख पाय । बैठे न्यारे ह्वै नृप जाय ॥ बोलि लिये कवि केसवदास । कियौ नृपति यह वचन प्रकास ॥४०॥ कासीसनि के तुम कुल देव । जानत हो सबही के भेव ॥ जानत भूत भविष्य

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज रासो ।

यह हिन्दी साहित्य का सब से प्राचीन ग्रन्थ है जो अब तक प्राप्त हुआ है । इसमें कवि ने भारतवर्ष के अन्तिम क्षत्री सम्राट् राजा पृथ्वीराज का जीवनवृत्तान्त विस्तारपूर्वक लिखा है जो आदि से अन्त तक विचित्र घटनाओं से भरा हुआ है । इतिहास प्रेमियों के लिये तो यह ग्रन्थ अनमोल रत्न है । इसकी भाषा कुछ कठिन है अतः सभा ने समस्त ग्रन्थ के सारांश को सरल हिन्दी भाषा में इसके साथ ही साथ छपवाया है जिससे मूल ग्रन्थ के पठन पाठन में बड़ी सहायता और आनन्द मिलता है । मनोरञ्जक तो यह इतना है कि कहीं से कोई पृष्ठ उठा कर दस पांच पंक्तियाँ पढ़िये फिर कदापि आप समस्त ग्रन्थ पढ़े बिना नहीं रह सकते । जिन हिन्दी प्रेमियों ने इस ग्रन्थ को अब तक नहीं लिया है उन्हें इसकी एक प्रति अवश्य लेनी चाहिए । इसके ६८ पर्व्व २१ भागों में छपे हैं जिनका मूल्य २४॥) है । प्रत्येक भाग जुदा जुदा भी मिल सकता है । मूल्य १।) के लगभग है ।

अन्य उपयोगी पुस्तकें ।

हम्मीर रासो (रणथंभौर के वीर शिरोमणि महाराज हम्मीर देव का जीवनचरित) २)
हम्मीर हठ ,, ॥)
जंगनाम (दिल्ली के बादशाह बहादुर शाह के पुत्रों का युद्ध) ॥)
इन्द्रावती १॥)
कवि आनन्द घन कृत बिरहलीला =)
भूषण ग्रन्थावली (प्रसिद्ध कवि भूषण के शिवराज भूषण, शिवा बावनी आदि ग्रन्थ) १॥=)
सुजान चरित्र २)
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवनचरित्र ॥=)
महिला मृदुबाणी (भारत वर्ष की विदुषी स्त्रियों की संक्षिप्त जीवनी) १)
हिम्मत बहादुर विरुदावली (बांदा के प्रसिद्ध वीर हिम्मत बहादुर का चरित्र) १)
नन्द दास की रासपंचाध्यायी ।=)
अखरावट ।=)
यूरोपीय दर्शन (यूरप के दर्शन शास्त्र का इतिहास) ॥)
परिचर्याप्रणाली (रोगी की शुश्रूषा करने की विधि) ।)
संक्षेपलेखप्रणाली अर्थात् हिन्दी शार्टहैण्ड १)
महाराणा प्रतापसिंह (नाटक) ॥)

ये सब पुस्तकें मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से मिल सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीर्ण व अजीर्ण के दस्त की दवा।

खाना पचानेवाले रसों के घटने बढ़ने वा विकार से अजीर्ण रोग होता है जिसके यह लक्षण हुआ करते हैं—खाने के बाद पेट

भारी जान पड़ना, पेट में वायु होना, जी मिचलाना, खट्टी वा व्यर्थ डकार आना, छाती जलना, मुंह में पानी भर आना, पेट में थोड़ा थोड़ा दर्द होना, चित्त की ग्लानि, आलस्य आदिक। जब तक खाना हजम की थैली में रहता है और पाचनक्रिया कठिनता से होती रहती है यही हालत होती है। जब यह अनपचा खाना अँतड़ियों में उतर जाता है तब पेट में गड़गड़ाहट होती है, पेट फूलता है व दस्त की चेष्टा होती है। दस्त पतला वा पानी के ऐसा होता है। कभी कभी खाने के थोड़ी देर पीछे ही दस्त हो जाता है। दस्त होने से शरीर क्षीण होता है। ये सब हालतें कभी कम, कभी अधिक होती रहती हैं और महीनों तक चलती हैं। रोगी का शरीर दिन पर दिन गलता जाता है। अन्त को असाध्य हो जाता है।

शरीर की साधारण पुष्टि का घटजाना इस रोग का कारण है। नीचे लिखी हुई हालतों में ऐसाही होता है—

वृद्ध अवस्था, कोई विशेष रोग के बाद कमज़ोरी, कम खाना (जैसा कि व्रत, लङ्घन, पारण आदिक में लोग करते हैं), धातु के व्यर्थ नष्ट होने से क्षीणता, अधिक श्रम, दुश्चिन्ता वा शोक, प्रसव के विकार से कमज़ोरी।

इन विषयों को विचार कर डाक्टर बर्म्मन ने अजीर्ण की दवा बनाई है। खाना हज़म करने व अजीर्ण के दोषों को मिटाने में इसकी विशेष शक्ति है। यह दवा छोटी छोटी टिकिया की ऐसी बनी हुई है। पंदरह रोज़ के सेवन योग्य ३० टिकिया की एक शीशी का मोल १) रुपया। डाक महसूल १ से ४ शीशी ।-) आने।

डा: एस. के. बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थ संख्या ४२] [पुस्तक संख्या २१

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक, श्यामसुन्दर दास, बी० ए० ।

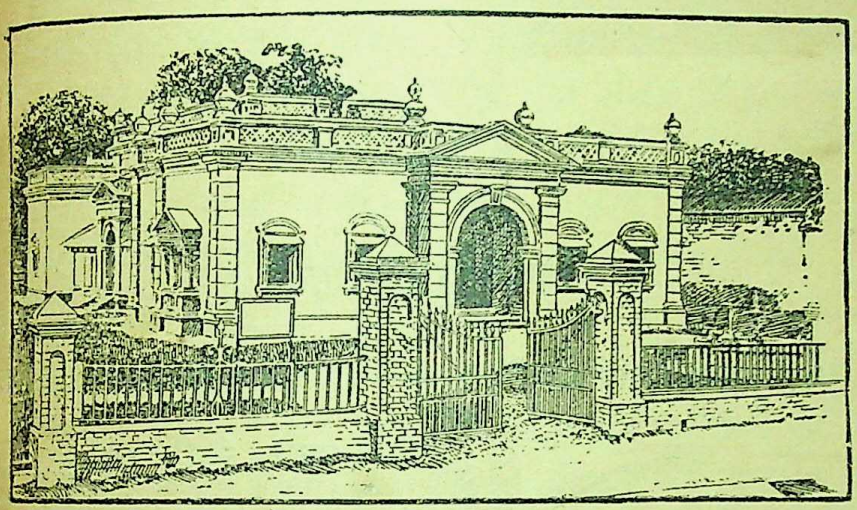

FASCICULUS NO. 42.] [BOOK NO. 21.

NAGARI PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR

SYAM SUNDAR DAS, B.A.

PUBLISHED BY

THE NAGARI PRACHARINI SABHA,

BENARES.

मूल्य प्रति संख्या ॥) [*Price per fasciculus As. 8.*

ISSUED ON THE 20TH NOVEMBER 1912.

PRINTED BY APURVA KRISHNA BOSE AT THE INDIAN PRESS,

ALLAHABAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका।

(२१) उसमान कवि-कृत चित्रावली—बा० जगन्मोहन वर्म्मा सम्पादित

(पृष्ठ ६५ से १२८ तक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुरि जो कुँअरउ सोइ कै जागा(क), बैठ सँभारि गहिस सिर पागा।
तौ पुनि कहिस ऊभ लै साँसा; ए देनिहार निरासहि आसा॥
वोह सो चित्र जो मोहि दुख दीन्हा, बरबस जीउ मोर हरि लीन्हा।
जीउ लेइ तन दूरइ डारा, हौं तौ वही चित्र कर मारा॥
वही चित्र मैं सपने दीठा, चित्त माँहिँ वहि चित्र बईठा।
वही चित्र बिनु जीउ बिहूना[1], जिउ हरि लीन्ह कीन्ह तन सूना॥
वही चित्र जो नैन समाना, सौं तुक सपन जाइ नहिँ जाना।
वही चित्र हम हिये महँ, जो तैँ कीन्ह बखान।
हौं अब रहा सरीर होइ, वह भा जीउ समान॥ १६५॥

जेहि दिन ते नैनन भा लाहा, बहुरि न पायौं कतहूँ चाहा।
पंथ न पावउँ केहि दिसि जाऊँ, पूछौं काहि न जानउँ नाऊँ॥
मैं निरास औ बिनु जिउ आहा, आस दई तैँ जिउ घट बाहा[2]।
आजु आस तैँ पुरएसि मोरी, तन मन धन न्योछावरि तोरी॥
अब कहु पंथ गवन जेहि पावौं, चलउँ बेगि खिन बिलँब न लावौं।
तुम्ह जहँ चहहु सिधारहु तहाँ, मोहि अब कहहु पंथ सो कहाँ॥
कै अब जाइ चित्र सो पावौं, कै अपान वहि पंथ लगावौं।
जिउ चितसारी महँ रहा, देह रही हम साथ।
देहु सोई उपदेस मोहिँ, जेहि जिउ आवै हाथ॥ १६६॥

जोगी कहा कुँअर सुनु बाता, अबहीँ देखि चित्र तूँ राता।
वह सो चित्र तैँ देखा नाहीँ, जाकर ऐस चित्र परछाहीँ॥
चित्र देखि तैँ चित्रै जाना, ता महँ अहा सो नहिँ पहिचाना॥
चित्रहि महँ सो आहि चितेरा, निर्मल दिष्टि पाउ सो हेरा॥
जैसेँ बूँद माँह दधि होई, गुरु लखाव तौ जानै कोई।
जा कहँ गुरू न पंथ देखावा, सो अंधा चारिहुँ दिसि धावा॥
मूरख सो जो चित्र मन लावै, सेमर सुआ जैस पछतावै[3]॥

(क) फरकि कुँअर सोइ अस जागा। पाठा। १—विकल। यह पद उर्दू की प्रति में नहीं है। २—डाला। ३—मि० सेमर सेइ सुआ पछुताना। मारिसि ठोर भुआ डधिराना॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह मूरति औ चित्र जग, जो बिधि सरा सुजान।
परगट देखहि नैन यह, गुपुत जो पूजहि आन ॥ १६७ ॥
अति सरूप चित्रावलि बारी, जनु बिधिनै कर चित्र सँवारी।
चित्रहिँ कहाँ जोति छबि ओती, वह सजीव यह बिनु जिउ जोती ॥
चित्र अबोल होइ जनु गूँगा, वोहि क बोल जस मानिक मूँगा।
चित्र कटाच्छ भाव बिनु नैना, वोहि क नैन सब मोहन सैना[1] ॥
चित्र अडोल न डोल डोलावा, वोहि गौनत जनु हंस सोहावा।
सायक बरुनि भौंह धनु ताना, सौंरत जाहि लागु उर बाना ॥
चंद-बदन तन चंपक सारी, अलि सँग फिरहिँ जानि फुलवारी।
काहि लगावौं उपम तेहि, अच्छर पूज न छाँहिँ।
सुर नर मुनि गन पचि मरहिँ, दरसन पावहिँ नाहिँ ॥ १६८ ॥
बदन जोति केहि उपमा लावौं, ससिहर पटतर[2] देत लजावौं।
ससि कलंक पुनि खंडित होई, है निकलंक सँपूरन सोई।
ससि बंदी जब दूजिक[3] दीसा, ओहि बंदी[4] नित देहिँ असीसा ॥
जो मुख खोलि करै उजियारा, नषत छपाहिँ होइ ससि तारा ॥
नैन कुरंग कहे नहि पारौं, खंजन मीन ताहि पर वारौं।
तीन रंग जा महँ नित लहिये, तेहि कुरंग[5] कहुँ कैसे कहिये ॥
जाकहँ नैन एकौ छन हेरा, सो विष बान क भयौ अहेरा।
ऐसन चित्र अहेरिया, मारि न खोज करेइ।
जेहि उर लागे बान सो, रहसि रहसि जिउ देइ ॥ १६९ ॥
औ तेहि संग अनेग सहेली, सबै सरूप अनूप नवेली।
उन्हक रूप बिधि अपुरुब कीन्हा, करि करि चित्र जानु जिउ दीन्हा ॥
कोउ कुमुदिनि कोउ पंकज-कली, एकतेँ एक चाहे अति भली।
अबहीँ सबै कली मुँह-मूँदी, भौंर चरन तेँ बेलिन खूँदी ॥
सब चित्रिनि औ पदुमिनि जाती, सेवा करत रहत दिन राती।

१—सयन = कटाक्ष। २—उपमा। ३—मुसल्मान लोग द्वितीया के चाँद को देख कर बन्दना करते हैँ। रमजान के पहीने में मास भर रोजा रद कर द्वितीया के दिन ईद मानते हैँ। ४—बन्दीजन। ५—कुसित रंग का = बदरंग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अग्या होइ करहिँ पै सोई, मेटि न सकैँ रजायसु कोई ॥
औ जिहि ठाँव करहिँ बिसरामा, जपत रहहिँ चित्रावलि नामा।
निसि बासर ठाढ़ी रहहिँ, लीन्हें आपन साज।
जो पठवहिँ सिष एक कहँ, धाइ करहिँ दस काज ॥ १७० ॥

पुनि सो चित्र लिखै भल जाना, उनसौँ जगत न कोऊ सयाना।
आपन चित्र अपु पै लीखा, और को लिखै जान ? नहिँ सीखा ॥
जगत चितेर रहे पचि हारी, ओकर चित्र न सकैँ सँवारी।
जो कोई आपन चित आनै, अंतरजामी तबहीँ जानै[1] ॥
आपन चित्र छीन कै लेई, औ तेहिँ देस निकारा देई।
आपन चित्र जाहि लिखि दीन्हा, तै सो घालि हिये मो लीन्हा ॥
एहि डर कोऊ न बीसरैँ, अह-निसि आठौ जाम।
लिये रजायसु नित रहहिँ, जपत फिरहिँ सो नाम ॥ १७१ ॥

औ तेहिँ संग निपुंसक जाती, पठवै जहाँ जाहिँ लै पाती।
गुन विद्या सब जाना बूझा, निरमल दिष्टि पंथ भल सूझा ॥
अन्न न खाहिँ पानि नहिँ पीयहिँ, नाउँ अधार रैनि दिन जीयहिँ।
काम क्रोध तिसना मन माया, पंचभूत सौँ तिन्ह की काया ॥
अग्या काज बिलंब न लावा, करहिँ सोई जेहिँ दोष न पावा।
सब की बात जनावहिँ जाई, अग्या होई कहहिँ सो आई ॥
अग्या बिना पैग जो धरहीँ, अनल-तेज-सिखा लहि जरहीँ।
दूरि रहहिँ तेहिँ गनति नहिँ, निकट रहहिँ तै चारि।
रचना सिरजनहार की, नावै पुरुष न नारि ॥ १७२ ॥

हौँ तेहि माहँ पेरेवा नाऊँ, सेव करौं चित्रावलि ठाऊँ।
वह सो गुरू हौँ ओकर चेला, वहिक नाउ हम मुँदरा मेला ॥
वही पंथ मोहि दीन्ह देखाई, वेहि के वचन सिद्धि मैँ पाई।

१—मि० دل بدست آور کہ حج اکبر است * از ہزاراں کعبۂ یکدل بہتر است

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औ सुमिरन दीन्ही वोहि केरी, वेहि क नाउँ सुमिरौं हरि फेरी॥
भूख नाहिँ औ नींद पियासा, चित्रिनि सुरति ध्यान घट आसा।
भा अग्या करि साज महेसू, दिन दस फिरहुँ देस परदेसू॥
जौ लगु फिरत होइ नहिँ रोगी, तौ लगि सिद्ध होइ नहिँ जोगी।
भसम अँग पग पाँवरी, सीस कलपि करि केस।
कंथ पहिरि लै दंड कर, देखन निसरयौं देस॥ १७३॥
सुनत कुअँर जेागी के बैना, उघरे दोऊ हिये के नैना।
मन महँ कहेसि साँचु यह साजा, वह सेा कौन जाकर उपराजा॥
जेहिक चित्र अस जिउ लेनिहारा, दुहुँ[1] कस होइहि सिरजनहारा।
साजा होई मेटि पुनि जाई, सिंभू[2] सरीर न कोऊ मिटाई॥
जौ न आपु आपहि पहिचाना, आन क पेम कहाँ हुत जाना।
जैसे कुबुध जानि कै देवा, बहुत करहिँ पाहन की सेवा[3]॥
पाहन पूजि सिद्धि किन पाई, से मर सेइ सुआ पछिताई।
कस न बूझि खेाजौं सेाई, जेहिक चित्र सब कीन्ह।
जीउ देई जो चाहई, लेइ जो चाहै लीन्ह॥ १७४॥
कुअँर कहा अब सुनहु परेवा, मैं तेार सीष[4] मेार तैं देवा।
मैं तजि पंथ जात बौराना, तैं गहि बाँह पंथ पर आना॥
बूडत मेार नाउ मँझनीरा, तूँ खेवक हेाइ लाइसि तीरा।
सेाअत हौं जो अहा सेा जागा, मन तजि चित्र चितेरहिँ लागा॥
चित्र देखि न चितेरा जाना, बिनु चितेर अब दिष्टि न आना।
अब फिरि कहु चित्रावलि बाता, जेहि के रूप आजु मन राता॥
सुनतहि नाम दूरि भइ दाहा, दहुँ मुख देखत होइहै काहा।
मरत जियाए जोई कहि, फिरि फिरि कहु सेा बात।
सुनिबे कहँ अमिरित कथा, श्रवन भए सब गात॥ १७५॥

१—कौन जानता है। २—स्वयं भू = जो बिना किसी के बनाये बना हो।
३—मि० प्रतिमा स्वल्पबुद्धीनाम्। ४—शिष्य, चेला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोगी सँवरि कहै पुनि बाता , वह चित्रावलि जेहि रंगराता ।
बदन मयंक मलयगिरि अंगा , चंदन वास फिरहिँ अलि संगा ॥
जो अलि अंग वास वह पाई , सो तजि आन फूल नहिँ जाई ।
बहुतन्ह सिर करवट गहि सारा , हिंछा करि मधुकर औतारा ॥
बहुत नाउँ सुनि जोगी भए , मूँड मुँडाइ देसंतर गए ।
ससि सूरज औ नषतन पाँती , बरने होहिँ दिवस औ राती ॥
भूषन सोभ पाव तेहि अंगा , तातें निसि दिन छाड़ न संगा ।

चाँद न सरवर पावई , रूप न पूजै भानु ।
अब सुनु तन मन कान दै , नख सिख करौं बखानु ॥ १७६ ॥

प्रथमहिँ कहौं केस की सोभा , पन्नग जनौं मलयगिरि लोभा ।
दीरघ विमल पीठि पर परे , लहर लेहिँ विषधर बिषभरे ॥
कच अहि डसा जनम नहिँ जागा , मंत्र न मानै मूरि न लागा ।
बिथुरी अलक भुअंगिनि कारी , कै जनु अलि लुबुधे फुलवारी ॥
कै जनु बदन तरनि जौ तपा , सिमिटि सुमेरु पाछु तम छुपा ।
किमि कच बरनौं राजकुमारा , मति न समाइ देखि अँधियारा ॥
मृग-मदवास आव तेहि केसा , पौन जाइ लइ देस बिदेसा ।

सिरजी तब बिधि स्यामता , जब जग सिरजै लीन्ह ।
ते कच सिरजे सार लै , सेष बाँटि कै दीन्ह ॥ १७७ ॥

सीस सिँगार माँग विधि कीन्ही , तातेँ ठाउँ माँग पर दीन्ही ।
सूर किरन करि बालहि धारा , स्याम रैनि कीन्ही दुई फारा ॥
पंथ अकास विकट जग जाना , को न जाइ वेहि पंथ भुलाना ।
तहाँ देखि अलकावरि[२] फाँसा , पंथिन्ह परा जीउ कर साँसा ॥
जिउ परतेजि[३] चलहिँ तेहि माहीँ , औरु बाट नहिँ केहि दिसि जाहीँ ।
बेनी सीस मलयगिरि सीसा , माँग मोति मनि माथेँ दीसा ।
सूर समान कीन्ह बिधि दीया , देखि तिमिर कर फाट्यो हीया ॥

१—मलयागिरि, चंदन । २—अलकावली । ३—सं० परित्यज्य = त्यागके ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्याम रैनि महँ दीप सम, जेहि अँजोर जग होइ।
अछज भुअँगम मांहि बसि, दिया मलीन न होइ ॥ १७८ ॥

पुनि लिलाट जस दूजि क चंदा, दूजि छाड़ि जग वो कहँ बंदा।
पटतर दूजि होति, जौ होती, दूजि माँह पुँन्यो कै जोती॥
भाग भरा अस दिपै लिलारा, तीनहुँ भुवन होइ उजियारा।
होइ मयंक[1] खीन जेहि रीसा, सेा लिलाट कामिनि पहँ दीसा॥
कुंदन तिलक सोभ कस पावा, मनहुँ दुइज माँ जीउ मिलावा।
मुकुता पाँति चहूँ दिसि पाई, मानहुँ मिली किरितिका[2] आई॥
जाहि लिलाट भाग मनि होई, अस सँजोग सुभ देखै सोई।

सुभ सँजोग वहि एक छिन, जा कहँ सनमुख होइ।
जौ जग लागै गरह जिमि, बार न बाँकै कोइ ॥ १७९ ॥

कुटिल भौंह जानौं धनु ताना, इंद्रधनुष तेहि देखि लजाना।
जानहु काल जगत कहँ कढ़ा, निसि दिन रहै पयच[3] जनु चढ़ा॥
भौंह फिराइ जाहि तन हेरा, देखत काल होइ तेहि केरा।
एही धनुष जुध मनमथ लीता, कै परनाम काम तन जीता॥
भौंह धनुष लखि इंद्र सँकाना, सब जग जीति सरग कहँ ताना[4]।
कौन सेा बली जो न गै मारा, तीनहु लेाक एक हुंकारा॥
ऐस धनुष जग और न दूजा (क), देवतन्ह आइ बाहुबल पूजा।

अहिपुर नरपुर जीति कै, सुरपुर जीतेा जाइ।
अब दहु कछू न जानियै, का कहँ धरे चढाइ ॥ १८० ॥

बाँके नैन तीष अति दोऊ, जगत जाहि सर पूजि न कोऊ।
राते कौंल मधुप तेहि माहीँ, कहत लजाउँ तेउ सर नाहीँ॥
कौंल देखि ससिहर कुम्हिलाने, ए ससि संग सदा बिगसाने।

१—मृगांक, चन्द्रमा। २—कृतिका = कचबचिया। ३—प्रत्यंचा।
४—यह उर्दू की प्रति में नहीं है। (क) अस धनुधारी और न दूजा। पाठां०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्याम सेत अति दोऊ सोहाए, खंजन जानु सरद रितु आए।
के दुइ मिरिग लरत सिर नीचे, काजर रेख डोर गहि खींचे॥
दोउ समुंद्र जनु उठहिँ हलोरा, पल महँ चहत जगत सब बोरा।
तीछे हेर जाहिँ चषु आछेँ, चली मीन जनु आगेँ पाछेँ॥
बर कामिनि चषु मीन सम, निमिष हेर तन जाहि।
बहुरि जनम भरि मीन जिमि, पलक न लागै ताहि॥ १८१॥
बरुनी बान तीख अरु घने, सोई जानु जाहि उर हने।
मद सिराय ते भाल सँवारे, जाके हने सबै मतवारे॥
तापर विष काजर सोँ बाँधा, सोई मरै जाहि तन साँधा।
लाग न बरुनि बान जेहि हीया, सो जग माँह अमिरथा जीया॥
जेते अहैँ जीव जग माहीँ, साधन जाइ बान सो खाहीँ।
जगत आइ होइ रहा निसाना, मकु हौँ सौँह मारि तेहि बाना॥
गलि गलि हाड़ रहे जो आई, बैठ जो लागि जाइ तो जाई।
एक मूँठ[1] के छाड़ते, लागे बान अलेख।
जग महँ ऐसन पारधी[2], दूसर काहु न देख॥ १८२॥
सुभग सरूप सुरंग अमोला, जनु नारँग बरनारि कपोला।
ईँगुर केसर जानु पिसाए, दोऊ मिलाइ कपोल बनाए॥
और सो देखि कपोल लुनाई, मती हीन कछु बरनि न जाई।
तेहि पर तिल सो देइ अस सोभा, मधुकर जानु पुहुप पर लोभा॥
कै विधि चित्र करत कर धरे (क), करत उरेह बूँद खसि परे।
बदन सिँगार सोभ जो पावा, रहेउ न दिन पुनि सो न उचावा॥
वह तिल जाहि दिष्टि तल परा, भयो स्याम तस तिल तिल जरा।
नहि चीन्हत कोउ काहु कहँ, जो जग माहिँ न होति।
परछाहीँ तिल एक की, सब नैनन्ह महँ जोति॥ १८३॥

१—जितना एक बार छोड़ा जाय। २—तीर चलानेवाला।

(क) कै विचित्र करता-कस्धरे। पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किमि बरनौं नासिका सोहाई, नासिक सुनि मति नियर न जाई।
खरग धार कहि आवै हाँसी, कौन खरग जेहि उपमा नासी॥
तिल क फूल कबितन्ह चित धरा, उहौ लजाइ पुहुमि खसि परा।
(क) इह रुआँर पुनि कीर कठोरा, उपम देत मन मान न मोरा॥
उह सुर भौन जगत उपराई, ससि सूरज जहँ उदै कराई।
तेहि पर हेरि रही मति मोरी, उपमा नहिँ केहि लावौं जोरी॥
बेसरि जो पहिरै रहसाई, नग कुंदन छवि पाउ सोहाई।

मुकुता डोलत निरखि मन, सुर नर इहै गुनाहिँ[1]।
कहत सोहागिनि नासिका, तिहुँ पुर पटतर नाहिँ॥ १८४॥

अधर सुधा निधि बरनि न जाई, बरनत मति रसना पनियाई[2]।
छुए न काहु अछूते राखे, प्रेम दिष्टि मुख अजहुँ न चाखे॥
विद्रुम[3] अति कठोर औ फीके, सुरँग मृदुल दुख दायक जीके।
बिंब अरुन सो सरि न तुलाना, अति लजान बन जाइ दुराना (ख)॥
बदन मयंक जगत उँजियारा, अमिरित अधर प्रानदेनिहारा।
का बरनौं का मति भइ मोरी, उत्तम अधम लगाएउँ जोरी॥
ससि अमिरित देवतन्ह कै जूठा, जगत जान यह अधर अनूठा।

लोयन जाहि कटाच्छ सर, मारि प्रान हरि लीन्ह।
अधर बचन तत-खिन दोऊ, अमिय सौंचि जिउ दीन्ह॥ १८५॥

दसन जानु हीरा निरमरे, बदन आनि मुख संपुट धरे।
इक इक नग दुहुँ जग कर मोला, जो जिउ देइ कहै सो खोला॥
पान खात कछु भए उघारे, दिष्टि परे मंजुल रतनारे[4]।
जनु दुइ लर मुकुता रँग भरे, मंजन लागि आइ मुहँ धरे[5]॥

क, से ख, तक उर्दू प्रति में नहीं है।

१—विचारते हैं। २—पानी आता है। ३—वैदूर्य्य, मूँगा।
४—भंजन लागि अमी मुहँ धरे। पाठा०। ५—अमिरित छियो आनि के धरे। पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कै देवतन्ह ससि कीन्ह कियारी, अमिरित सानि बारि अनुसारी।
दाड़िम बीज तहाँ लै बोए, रखवारे राखे अहि पोए॥
निसि वासर ते निकट रहाहीं, मकु सुक पिक खंजन चुनि जाहीं।

इक दिन विहँसी रहसि कै, जोति गई जग छाइ।
अबहूँ सौंरत वह चमक, चौंधि चौंधि जिय जाइ॥ १८६॥

तेहि भीतर रसना रस भरी, कौंल पाँखुरी अमिरित भरी।
दसन पाँति महँ रही छिपानी, बोलत सो जनु अमिरित बानी॥
बोलत बैन अमी जनु चूआ, सुनत जियै बरषन कर मूआ।
जे मन अहि कुंतल[1] के खाए, बोलि बोलि धन सबै जियाए॥
जाके सवन बचन उन डारा, ताकर बचन जीउ-देनिहारा।
उकतिन[2] बोलत रतन अमोली, आँब चढी जनु कोइल बोली॥
व्याकरनौ जानै संगीता, पिंगल अमर पढ़हि पुनि गीता।

रहहिँ रैनि दिन बाद मह, चित्रिनि चखु अौ बैन।
त्यों त्यों रसन जियावई, ज्यों ज्यों मारहिँ नैन॥ १८७॥

आँब सूल[3] सम ठोढ़ी भई, वह आमिल यह अमिरित भई।
तेहि तर गाड़ अपूरब जोवा, पाक आँब जनु अँगुरी टोवा॥
पाका आँब गात पियराना, वह कुमकुम जनु ईंगुर साना।
चिबुक कूप अति नीर गँभीरा, बिंब अधर सँजीव जेहि नीरा॥
अमिरित कुंड अगम अौगाहा, जो तहँ परा निकास न चाहा।
ताहि कूप ढिग रहस न जाहीं, बूड़न कहँ मुनि लाल[4] कराहीं॥
परहिँ जाइ मन रहइ न देई, कुंतल काँट काढि कै लेई।

नैन पियासे रूप जल, पीवत जेहि न अघाहिँ।
कूप चिबुक जो मन परै, बूडि बूडि रहसाहिँ॥ १८८॥

१—केश, बाल। २—उक्तिन = युक्ति से। ३—नोक।
४—चाउ, इच्छा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिंधु सुता सम[1] सवन अमोला, जल सुत[2] बचन लागि बिधि खोला।
जे अमोल नग जगत बखाने, नारि सवन महँ सबै समाने॥
ग्यान बात बिनु आन न सुना, सुनत मोति, तबहीं सिर धुना।
निसि दिन मुकुता इहै गुनाहीं, खंजन झाँकि झाँकि जिमि जाहीं॥
कंचन खुटिला जा न बखाना, गुरु सिष देइ लाग ससिकाना[3]।
राहु जुद्ध कहँ सपरि निसंका, दुहुँ कर लीन्हे सेलि[3] मयंका॥
ग्रो पुनि सोभै खुभी[4] सोहाई, अबही तरिवन चढा न जाई।
कलभ दसन खँभिया देाऊ, सोऊ पट तर नाहिँ।
एक छिन देखेँ जनम भरि, खुभी रहैँ जिउ माहिँ॥ १८९॥
अब सुनु बरनौं गीँव सुहाई, बिधि कर चाक भँवाइ[5] चढाई।
अँगुरिन बीच रही जेा रेखा, सोइ चीन्ह रेखा तहाँ जेा देखा॥
केलि समै कौतर[6] की रीसा, तत षिन चलेा लाइ भुइँ सीसा।
नाचत मेार गीँव सर जेावा, तबहीं सीस पाइ धरि रेावा॥
संख न सम भा साँझ सँकारा, तातेँ जहँ तहँ करै पुकारा।
तबही छरन[7] जान अपछरा, भूषन लाग न बाँधै छरा॥
वेाहीँ कंठ जानु जिन्ह दीठी, अमिरित चाहि न पूरै मीठी।
सेाहत हाँस[8] जराउ गर, बदन हेठ निकलंक।
सर[9] न मयंक सूर जनु, दुरत राहु के संक॥ १९०॥
दीरघ बाहु कलाई लेानी, अति सुंदर जग भई न हेानी।
दुहुँ पैानाल सेाऊ सर नाहीँ, तातेँ रंध्र[10] कलेजे माहीँ।
सुभ्र भुजन पर टाँड[11] सेाहाई, टाँड तहाँ छबि पाव सवाई॥
देखि धुनहि गन गंधब माथा, एक सेा इंद्र वज्र पुनि हाथा।

१—सीप। २—मेाती। ३—ढकेल के, धक्का देकर; अथवा खड्ग। ४—चुभी, धुस गई। ५—घुमा कर। ६—कबूतर। ७—छरण = विनाश, हीनता; वा छल। ८—हँसुली, गले का एक आभूषण। ९—बराबरी कर सका। १०—रंध्र = छेद। ११—एक बाहु का आभूषण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखि सो मंजुल सुभ्र कलाई , को न गयो बनफलै सिधाई(क) ॥
वहि संग देखु जो जुरी हथोरी[1] , कौंल पाँखुरी ईंगुर बोरी ।
विद्रुम बेलि सो अँगुरी दीसी , वह कठोर यह मूँगफली सी ॥
अँगुरिन मुँदरी जरित की , सोह छला प्रति पोर ।
अमीकरन नग आँखि जनु , गाँठि कनक कै जोर ॥ १९१ ॥
हेात उतंग सिहन[2] निरमरे , एक डारि दोइ नारँगि फरे ।
कनक कटोरी दुइ गुन भरीं , संकर पूजि उलटि जनु धरीं ॥
झीने पट महँ झलकत दीसी , जनु भीतर द्वै कँवल कली सी ।
मुकुताहल बिच सोभा कैसी , चकवा छवा बिछुरि जनु बैसी ॥
हेात उतंग दोऊ अति लोने , जनु द्वै बीर छत्रपति होने ।
अबहीं छत्र सीस नहिँ छाजू , छत्रिन जहाँ तहाँ कर साजू ॥
दान दुंद जोरी गुन भरी , दुई जनु डँका[3] उलटि कै धरी ।
गढपति हयपति दुरदपति , सुनि कुच कथा अकाथ ।
होइ भिखारी सब चहहिँ , जाइ पसारन हाथ ॥ १९२ ॥
रोमावलि अबहीं उर छीनी , बरनि न सकै दिष्टि मति हीनी ॥
संधि सुमेरु लही अहि पोवा , सीतल ठाँव पाइ जनु सोवा ।
अमिरित अधर वास सुनि माती , उर जनु चढ़ो पपील क पाँती ॥
द्वै नृप सींव लागि रिस बाढ़ी , रतिपति आनि लीक जनु काढ़ी ।
सौंरत रोमावली सोहाई , हेवर[4] जाय दरलि सी खाई ॥
पाँहन हिये जोरि वहि दीसी , होइ लीक वह पाहन की सी ।
नींद न परी जनम भरि जागा , जिन्ह नैनन्ह होइ रही सरागा ॥
खैंची लीक हदीस की , विधिना हियेँ विचार ।
तिहुँपुर रोमावलि सरी , आन न दूजी नार ॥ १९३ ॥
नाभि कुण्ड पुनि अति गहिराई , जब चित चढ़ै बूड़ि जिउ जाई ।
सिंधु भौंर जहँ पानि फिरावा , तहँ परि जनम निकास न पावा ॥

१—हथेली । २—फ़ा० सीना = छाती । ३—डंका । ४—छाती ।
(क) को न किये बल बली सिहाई । पाठा० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विगसत पंकज कली सोहाई, अजहूँ भौंर बास नहिँ पाई।
छीर सिंधु मथनी जब काढ़ी, नाभि भौंर आही जहँ ठाढ़ी॥
नैनूँ[1] ते कोमल सो ठाऊँ, जीभ कठोर लेउँ का नाऊँ।
रोमावलि सोभा तेहि पासा, नैनूँ ते जनु बारि विकासा[2]॥
जासोँ ग्यान हाथ भा हीना, जनमत धाइ नार किमि छीना।
नारि पेट जेहि अंत नहि, बारिधि गहिर गँभीर।
नाभिकुंड मन जो परै, बहुरि न निकसै तीर॥ १९४॥
पातर पेट कहै का कोई, जनु बाँधी ईँगुर की लोई[3]।
मनहु महाउर दूध सौ पागा, संतत[4] रहै पीठि सौ लागा॥
छीर न पियै अतिहि सुकुवारा, कै तँबोल कै फूल अधारा॥
बिनु रस पान आन नहि खाई, सोऊ बिकल करै अधिकाई।
तेहि तर त्रिबली अति सुख देई, गढ़ी बिधातै काम पसेई[5]॥
सोभित तीनौ रेख सोहाई, तीन भुवन नहिँ उपमा पाई।
सिसुता जानि तरुनता मिली, तीनौं रेख खाँचि कै चली॥
सिरजत भार नितंब के, मिलत न कीन्ह सँबंधि।
मनु कटि राखे बाँधि कै, त्रिवली बँधन बंधि[6]॥ १९५॥
अति सुकुँवारि लँक पुनि छीनी, दिष्टि न परै बारहु तब खीनी।
देखत सकुचै देखनहारा, टूटि न परै दिष्टि के भारा॥
काम कला दुई साँचे भरी, सकत सोहाग जोरि जनु धरी।
बिधिनै तेरि जोरि पुनि लीन्हे, तातैं नाउ निगम कटि कीन्हे॥
अपने थल भूखे केहरी, कोऊ कहै कटि तिन्ह की हरी।
देखि लंक भृंगी[7] कटि टूटी, भँवति फिरै जनु संपति लूटी॥
तहँ सोहै किंकिनि कटि-कसी, काछे जनु आहै उरबसी॥

१—नवनीत = मक्खन। २—निकला। ३—लौंदा। ४—सतत = नित्य, सदा।
५—पसाकर, सत्त निकाल के। ६—गाँठ। ७—एक कीड़ा, बिलनी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोभित किंकिन निकट कटि, मान उपम जी आइ।
हंस-पाँति तजि मानसर, परबत बैठे जाइ ॥ १९६ ॥

सुभ्र नितंब नितंबनि केरे, गए हेराइ सोई जनु हेरे।
जनु संगम दुइ परबत अहहीं, एक बार के बाँधे रहहीं ॥
तेहि पर कटि सोभित निरमरी, जनु सिंहिनि गिरि ऊपर धरी।
दुइ गिरि सम दोउ मगु जहँ नाहीं, चित के चरन चढ़त बिछलाहीं ॥
मति नितंब बरनत झिझकाई, मति की दिष्टि न आगे जाई।
परगट सो कवि कीन्ह बखाना, गुपत सो अंतरजामी जाना ॥
जहाँ जात मन पिंडुरी काँपी, तहँ की बात रहो सब झाँपी।

गुपुत जो रचना बिधि रची, परगट नहिँ होनिहार।
ग्यान तहाँ नहि संचरै, जानै सिरजनिहार ॥ १९७ ॥

पुनि जंघा अति सुंदर साजी, जुगल जंघ तिहुँ लोक बिराजी।
केरा खंभ कलभ कर हेरी, जंघ निकट वे दोऊ करेरी।
अति सुंदर सम तूल[1] सुहाए, जनु बिधि अपने कर चिकनाए ॥
सुरति करत सुख संपति हरी, मन की दिष्टि थलकि तहँ परी।
गौन समै जनु चमंकत चूरा, हंस गयंद गरब धरि चूरा[2] ॥
सीस धुने गज लज्जित भए, हंस मानसर बूड़न गए।
छवाछीन भूषन छबि हरी, पायल आइ पाय लै परी ॥

चकइ जराऊ जेहरी[3], जेहरि जिउ लै जाइ।
सुर नर हैं झाँझर भए, देखि सो झाँझरि[4] पाइ ॥ १९८ ॥

चरन कँवल पर मन बलि गए, जेहि मगु चलै तहाँ रज भए।
मकु तेहि पंथ गौन पुनि करई, भूलि पाँव इन्ह नैनन धरई ॥
तरवा ऊधरेख[5] सुभ बाँची, सुरनर हियँ लीक जनु खाँची।

१—सुडौल। २—नाश किया। ३—एक आभूषण। ४—झाँझ, एक पैर का आभूषण। ५—ऊर्ध्वरेखा पांव में होना सामुद्रिक में शुभ माना जाता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेहि जेहि पंथ चरन ते चले, केते हिये पाँय तर मले॥
रकत लाग रह पायन संगा, जानहिँ लोग महाउर रंगा।
चलत चरन भुइँ परै न देहीँ, सुर नर मुनि नैनन पर लेहीँ॥
अनवट बिछिया अंगुरिन भरे, मैन सोनार रतन नग जरे।
जेहिँ चित चित्रावलि चरन, चित्र किए बिधि आनि।
ते चषु मगु बाहर कियेा, हियेँ सरोवर पानि॥ १९९॥
वह चित्रावलि आहै सोई, तीन लोक बंदै सब कोई।
सुर पुर सबै ध्यान ओहि धरहीँ, अहिपुर सबै सेव तेहि करहीँ॥
मृतुमंडल[1] जो देखा हेरी, घर घर चलै बात तेहि केरी।
पंछी वोहि लगि फिरहिँ उदासा, जल के सुत[2] ओहि नाउँ पियासा॥
परबत जपहिँ मौन होइ नाऊँ, आसन मारि बैठि एक ठाऊँ।
पुहुमी दहु जो सरग लहु बढ़ी, सेवा करतहिँ एक पग ठाढी॥
जानि बूझि जो ताहि बिसारा, सेा मनु जियतहिँ मरा अड़ारा।
अति सुरूप चित्रावली, रवि ससि सर न करेइ।
धन सेा पुरुष औा धन हिया, ओहि क पंथ जिउ देइ॥ २००॥
भए सुनत चित्रावलि बरना, कुँअर नैन पर्बत के झरना।
गयेा चेत चित रह्यो न ग्याना, जनु एहि सागर लच्छ हेराना(क)।
माथेँ चढी लहर जनु आई, विसम्हरि[3] परा पुहुमि मुरझाई।
गहि जोगी पुनि कुँअर उठावा, खेह झारि सन्मुख बैठावा॥
कहेसि कुँअर कस भए अचेता, बैठु सम्हारि हियेँ करु चेता।
एकौ बात कहै नहिँ पूछी, जनु गा जीउ देह भइ छूछी॥
मूँदे नैन साँस पुनि लेई, सुनै न कछू उतर नहिँ देई।
प्रेम मंत्र जोगी कहै, कुँअर स्रवन महँ तब्ब।
सुनत नाउ चित्रावली, निजन[4] गयौ विष सब्ब॥ २०१॥

१—पृथिवी। २—जल-जन्तु। (क) जनुएहि दसा मरग नियराना। पाठा०।
३—बेहोश हो के। ४—निरयन = नाश।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जबहि कुँअर जागा जनु सोई, गहिसि पाउ जोगी कर रोई ॥
सो तुम रूप बखाना देवा, भइ मनसा होइ उडउँ परेवा।
पुनि मन महँ अस होइ गियाना, जाउँ कहाँ जो पंथ न जाना।
कहु सो केहि दिसि नगर अनूपा, जहाँ बसै वह नारि सुरूपा ॥
चलौं न करौं बिलँब एक घरी, निहफल जाइ घरी जो टरी।
और न मोरे हियेँ विचारा, सीस मोर औ चरन तुम्हारा ॥
किंचित रैनि जाइ तहँ ताईँ, चरन लाइ लै चलहु गोसाँईँ।
लोचन रहे चकोर होइ, हिया सकल उनमाद।
मकु ससि मुख चित्रावली, देखौं तुव परसाद ॥ २०२ ॥
कहेसि कुँअर यह पंथ दुहेला, अस जनि जानु हँसी औ खेला।
अगम पहार विषम गढ़ घाटी, पंखि न जाइ चढ़े नहि चाँटी ॥
खोह घराट जाइ नहिँ लाँघी, देखि पतार काँप नर जाँघी।
जाइ सोई जो जिउ परतेजा, सार पाँसुली लोह करेजा ॥
तैँ अबहीँ घट आप न बूझा, बार देखि पिछवार न सूझा।
बैठे देइँ सेँध पिछवारे, मूँसहिँ तसकर घर अँधियारे ॥
तैँ दै बार रहा गहि कूँजी, रही न एकौ घर महँ पूँजी।
निसिबासर सोवहि परा, जागेसि नहिँ पल आध।
घर न सँभारसि आपना, का लेबे एहि साध ॥ २०३ ॥
एहि मगु केर करै जो साधा, चलत निचिंत न होइ पल आधा।
चाहै चरन चुभै जो काँटा, चलै बराइ मारग नहिँ छाँटा[1] ॥
जौ पल एक कोऊ बिलँमावै, साथ जाइ पुनि पंथ न पावै।
एहि मगु माहँ चारि पुनि देसा, जस जस देस करै तस भेसा ॥
चारिहुँ देस नगर हैँ चारी, पंथ जाइ तेहि नगर मँझारी(क)।
चारिहु नगर चारि पुनि कोटा, रहहिँ छिपे एक एक के ओटा ॥
जो कोउ जान न चार[2] विचारा, बीचहिँ मारि लेहिँ बटमारा।

१—छोडे। (क)—बीचहिँ मारि लेहिँ बटपारी। पाठा०। २—आचार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारि देस बिच पंथ सो , अब सुनु राजकुमार ।
बेगर बेगर[1] बरन गुन , जस कछु तहँ ब्यवहार ॥ २०४ ॥
प्रथम भोगपुर नग्र सोहाया , भोग बिलास पाउ जहँ काया ।
दुइ दुआर कर कोट सँवारा , आवागमन यही दुइ बारा ।
पुनि दूनहुँ दिसि अपुरुब हाटा , अनबन भाँति पटन सब पाटा ॥
जो कछु चाहिय सबै बिकाई , मिरतक देखि जीभ ललचाई ।
कहूँ पंचअमिरित जेवनारा , कहूँ सुगंधि करै महकारा ॥
कहूँ नाच कहुँ कथा अनूपा , कहुँ मिरदुल अति ससिहर रूपा ।
इंद्रपुरी जनु चहुँ दिसि छाई , जो आवा सो रहा लुभाई ॥
घर घर मोहन जानहीँ , पंथहिँ बस कै लेहिँ ।
माया रूप देखाइ कै , आगे चलै न देहिँ ॥ २०५ ॥
बसै सोई ओहि नगर मँझारी , लेखा जानि होइ बैपारी ।
सूधेँ मारग आवै जाई , माँटी लेखेँ विषै पराई ॥
सो देखै जेहि दोष न पावा , सुनै सोई जो पँडित सुनावा ।
खाइ सोई जेहि ऊठै साँसा , फिरै न माथ लेइ सो बासा ॥
मिलि कै पाँच देहिँ जेउनारी , भुगतै ताहि सोई बैपारी ।
आपन अंस माँगि कै लेई , राज अंस विनु माँगे देई ॥
पाँच जूनि कै राजजोहारू[2] , करत रहै जस जग बेवहारू ।
धरै छोह चित नेह सौँ , रिँस की ठौर रिसाइ ।
ऐसी चलन चलावहि , तेहि भल पाँच कहाइ ॥ २०६ ॥
पंथी जेहि आगे है जाना , सो ब्यवहार कहौँ करु काना ।
अंध होइ तस मूँदै नैना , बहिर होइ तस सुनै न बैना ॥
रसना मौन होइ नहिँ भाषा , षट रस अमी न पावै चाषा ।
मूँदै नास साँस नहिँ आवै , काम क्रोध कै छार जरावे[3] ॥
दुष्ट के हनत न पाछे टरई , पगु जो उठाइ आगु मन धरई ।

१—अलग अलग । २—राजा की वंदना = निमाज । ३—मि० ।
گوش بند و چشم بند و لب بہ بند * گر نہ بینی سر حق بر من بخند

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिलँब न लावै मन जग मंदा, निसरै तैारि मीन जिमि फंदा ॥
पंथी जो ग्रोहि बार लहु जाई, ग्रापु केवार उघारि कै जाई।
चित रहसत पट ऊघरत, मिटै नैन ग्रँधियार।
जैसेँ बीतै स्याम निसि, होइ विमल भिनुसार ॥ २०७ ॥

ग्रागे गोरखपुर भल देसू, निबहै सोई जो गोरख भेसू।
जहँ तहँ मढ़ी गुफ़ा बहु ग्रहहीँ, जोगी जती सनासी रहहीँ ॥
चारिहु ग्रोर जाप नित होई, चरचा ग्रान करै नहिँ कोई।
कोउ दुहुँ दिसि डोलै बिकरारा, कोऊ बैठि रह ग्रासन मारा ॥
काहू पंचग्रगिन तप सारा, कोऊ लटकइ रूखन डारा।
कोऊ बैठि धूम तन डाढ़े, कोउ विपरीत रहे होइ ठाढे ॥
फल उठि खाहिँ पियहिँ चलि पानी, जाँचहि एक बिधाता दानी।
परम सबद गुरु देइ तहँ, जेहि चेला सिर भाग।
नित जेहिँ ड्योढ़ी लावई, रहै सो ड्योढ़ी लाग ॥ २०८ ॥

ताहि देस बिच ग्राहि सो पंथा, चलै सोई जो पहिरै कंथा।
तेल नाहिँ सिर जटा बरावै, रजक नासि जे बसन रँगावै ॥
भसम देह पग पाँवरि होई, एहि मग बिकट चलै पै सोई।
मेखलि[1] सिंगी[2] चक्र ग्रधारी, जोगौटा[3] रुद्राष[4] धँधारी[5]।
भल मँद बसैँ तहाँ इक भेसा, होइ बिचार न राँक नरेसा ॥
एही भेष सिद्ध बहु ग्रहहीँ, एही भेष बहुत ठग रहहीँ।
एही भेष सोँ बहु ठग ग्राए, एही भेष सोँ बहुत ठगाए ॥
जो भूले एहि भेष जग, खुले न तेहि हिय ग्राछ।
ग्रागे चलैँ न तहँ रहैँ, वहु फिरि ग्रावैँ पाछ ॥ २०९ ॥
जो कोउ ग्रागे चाहै चला, परगट देह भेष सो रला।

१—मेखला। २—सृङ्गी = एक बाजा जिसे गोरखपंथी रखते हैं। यह सींग का होता है ग्रौर इसे पूजा में बजाते हैं। ३—भोरी। ४—रुद्राक्ष। ५—डंड।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पै अंतर सब जानै धंधा, भेष पत्याइ[1] सोई जग अंधा॥
घटही माँहि भेष सो लेखै, हिय के लोचन मारग देखै।
काया कंथा ध्यान अधारी, सींगी सबद[2] जगत धंधारी॥
लोचन चक्र सुमिरनी साँसा, माया जारि भस्म कै नासा।
हिय जोगोट मनसा पाँवरी, प्रेम बार लै फिरि भाँवरी॥
परगट भेख तहाँ दइ डारै, आगे चलै सो पँवरि उघारै।

रहहि नैन जो जोति बिनु, दीपक पहिल मिलानु।
पुनि ससिहर सम दूसरे, होहिँ तीसरे भानु॥ २१०॥

आगे नेहनगर भल देसू, राँक होइ जहँ जाइ नरेसू।
भूलै देखि देस की सोभा, जहँवहिँ देखतही चित लोभा॥
जाइ तहँहिँ जहँ कोइ लै जाई, ऊँच खाल सम एक देखाई।
खाइ सोई जो कोई खिआवै, बिष अमिरित एक स्वाद जनावै॥
भल औ मंद दोऊ एक लेखा, दुइ न जान सब एक कै देखा।
मारि गारि जिय राख न कोहू, रहस न होउ किए कछु छोहू॥
उतर न देइ जो कोउ कछु कहा, ऐसेँ रहै तहाँ सो रहा।

पंथ नाहिँ पुनि पंथ सो, ताहि देस निज पंथ।
बिनु गुरु कोऊ न जानई, औ पुनि पढ़ै गरंथ॥ २११॥

आगेँ पंथ चलै पै सोई, जाके सँग कछु भार न होई।
डारै कंथा चक्र धँधारी, करै मया जिय काया सारी॥
ऐसन जिअ जेहि लोभ न होई, रूपनगर मगु देखै सोई।
हेरत तहाँ पंथ नहिँ पावा, हेरन चहै जो आपु हेरावा॥
पथिक तहाँ जो जाइ भुलाना, बिमल पंथ तेहीँ पहिचाना।
आवहिँ रूपनगर के लोगा, परषत फिरहिँ कौन तेहि जोगा॥
जो तेहि जोग लषहिँ जिय माहीँ, आगेँ होइ नगर लै जाहीँ।

१—प्रतीति करै। २—अनहद शब्द वा अलख।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप भेष उतहिँक सजहिँ, औ सिषवहिँ सब भाव।
ऐस न जानहिँ तेहि कोऊ, आन कहूँ ते आव ॥ २१२ ॥

रूप नगर अति आह सोहावा, जेहि सिर भाग सो देखै पावा।
अतिहिँ डेरावन अतिहि सो ऊँचा, कोटि माँह कोउ एक पहूँचा ॥
बहुतन्ह कीन्ह जोगि कर भेसा, चले छाँड़ि घर मन ओहि देसा।
तैं सुखिया सुख कौतुक राता, का जानसि दुख पंथ कि बाता ॥
भोजन बिनु मुख जाइ सुखाई, पानी बाजु कँवल कुम्हिलाई।
छीन बसन जेहि अँग न सोहाई, कंथा कैसेँ सकै उठाई ॥
सैरि माँह जिन बनउर टोवा[1], कुस साथरी सो कैसेँ सोवा।

बसन अपूरब पहिरि तन, लावहु मोद सुबास।
अहहिँ नारि अछरी सरस, मानहु भोग विलास ॥ २१३ ॥

---

(१४) उद्योग खंड।

कहिसि कुँवर सुनु गुरू परेवा, सुनि सो पंथ उपजे उर केवा।
अब मोहि उहै पंथ पै जाना, प्रेम प्रीति लै कीन्ह निदाना ॥
मैं सुख तजि दुख लीन्ह सम्हारी, कै जिउ जाइ कि मिलै सो नारी।
मोर दुख आदि सँघाती आहा, मिलै आइ मैं सोइ संग्राहा ॥
काकर सुख काकर यह राजू, दुखियहि अपने दुख सौं काजू।
भलेहँ नारि अछरी सम पाई, मेघ पियास कि ओसहि जाई ॥
जौं चकोर चँदहि चित लावा, कहा सो तरागन महँ भावा।

राज पाट सुख सकल अब, मोहिँ न कछू सोहाइ।
चित लाग्यो चित्रावली, दुहुँ बिधि कब लै जाइ ॥ २१४ ॥

जब तै चित चित्रावलि महियाँ, इहाँ क रहन न जानौं कहियाँ।
संक सँकोच न एकौ हियेँ, मोहि अब प्रेम पंथ सिर दियेँ ॥
अस साहस उपजा जिय माहीँ, आहै नियर दूर जनु नाहीँ।

१—टटोला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो बिधि देत पंख तन मोरे, अबहीं चलि उड़ि देखत तोरे॥
अगिनि होइ तौ सनमुख धाऊँ, समुँद होइ तौ सौंह धसाऊँ।
अँकरौरी सम गनौं पहारा, लेखौं समुंद हिये महँ नारा॥
कबलौं रहौं परा घर घेरे, कहु उठि लागौं पंथ सबेरे।
मैं अनाथ तुम्ह नाथ गुरु, गहि खेँ चहु मम डोर।
तैं मोर अगुवा पंथ तहँ, मैं पिछलगुवा तोर॥ २१५॥

निहचैं प्रेम सुरा इन्ह पिया, उतरै माँत[1] न जौ लहु जिया।
सुना परेवा कुँअर कि बाता, निहचै कहसि कि यह ओहि राता॥
निहचै प्रेम-पंथ इन्ह गहा, राज पाट तजि दुख संग्रहा।
अब लै चलौं विलँब नहिँ लावौं, लै चित्रावलि आस पुरावौं॥
वै पुनि अबलहुँ बहु दुख सहा, दहुँ घट मँह किमि जिउ ओहि रहा।
जस वह यहि के दरस पियासी, तस यह वोहि लगि दून उदासी॥
अब जो मिलहिँ बहुत सुख होई, औ सुख तिनहिँ जो देखै कोई॥
मान जगत तेहिँ जनम लै, बहुत भाँति सुख होय।
इहि सम सुख नहि और सुख, मिलै जो माते दोइ[2]॥ २१६॥

कहेसि कुअँर तैं साहस बाँधा, चल अब तोर भार मैं काँधा।
अब तोहि रूपनगर लै जाई, चित्रावलि सौं देउँ मेराई॥
पै कहु मोहिँ घर छाड़ब कैसे, मया फाँस निरवारब[3] कैसे।
मात पिता लागहिँ सँग दोऊ, एकसर तोहिँ न छाड़ैं कोऊ॥
कुटुँब लोग जन परिजन तोरा, सब मिलि करहिँ मया नहिँ थोरा।
मया मोह घर घेरै आवा, बिछुरत लोग सबै दुख पावा॥
यह सो पंथ खरग की धारा, सहस माँह कोउ गवनै पारा।
बन बीहर नारा नदी, लाँघत बहु दुख होय।
आपनि आपनि तहँ परै, काहु कि सुनै न कोइ॥ २१७॥

१—नशा, मद। २—मि० खूब निबुटैगी जो मिल बैठैंगे दीवाने दो।
३—दूर करना, छोड़ना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहेसि कुँअर पूछहु का मोहीँ , आपन भार दीन्ह मैँ तोहीँ ।
हौं अजान तू पँडित सयाना , पंडित पूँछै जानि अजाना ॥
करहु सोई जा महँ भल होई , जो तुम कहहु करौं मैँ सोई ।
मैँ विचारि देखा मन माहीँ , भाइ बंधु कोउ काहु क नाहीँ ॥
का कर पितु ग्रौ का कर माता , कहाँ क लोग कुटुँब कर नाता ।
जस दिन बीतैँ परै अँधेरा , पंछि आइ तरु लेहिँ बसेरा ॥
भएँ भोर दिनकर परगासा , नैन कौंल पुनि करहिँ विगासा ।
रबि प्रसाद पथ सूझई , मिटै नैन अँधियार ।
जाहिँ जहाँ तैँ आइ इत , तजि तरुवर की डार ॥ २१८ ॥
कहिसि कुँअर अब आपु सम्हारहु , राज काज कर साज उतारहु ।
काढ़हु दगल सुहावन राता , पहिरहु चिरकुट कंथा गाता ॥
मनि कुंडल मकराकृत डारहु , फटिक मुंदरा[1] स्रवन सँवारहु ।
धोवहु चंदन भसम चढावहु , किँगिरी गहहु वियोग बजावहु ॥
तजहु सेल कर लेहु धँधारी , ग्रौर सुमिरनी चक्र अधारी ।
सिंगी पूरहु जटा बरावहु , खप्पर लेहु भीख जेहि पावहु ॥
काँधे लेहु बाहि मृगछाला , गीवँ पहिरुहु रुद्राष क माला ।
करहु कान जनि एकहू , कहै कोऊ जौ लक्ख ।
पहिरि लेहु पग पाँवरी , बोलहु सिरीगोरक्ख ॥ २२० ॥

---

(१५) प्रस्थान खंड ।

कीन्ह कुँअर जो जोगी कहा , देखत लोग अचँभौ रहा ।
बोलि सुबुधि सोँ कहा बुझाई , मात पिता सोँ कहियहु जाई ॥
पहिलेँ पालागन जस अहा , तौ पुनि कहब कुँअर अस कहा ।
आपन जिउ मैँ खोआ जहाँ , पाएउँ चाह चलेउँ उठि तहाँ ॥
रूपनगर है दक्खिन देसा , चलेउँ तहाँ करि जोगि क भेसा ।

१—कुंडल, यह चक्र के आकार का होता है और गोरखपंथी साधू इसे कान पहिनते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रावलि राजा की बारी, जिहि क बिरह दुख अहौं दुखारी॥
परम सँजोग जाइ मकु पावौं, आपन जीउ माँगि लै आवौं।
तुम्ह चित चिंता जनि करहु, हम अस आउ बिचारि।
जौ घट जिउ है फिरि मिलहिँ, नरबर कोटि जोहार॥ २२१॥
तत षन दोउ जन करि उपचारी[1], झोलि मंतरा लीन्ह सँभारी।
नैनन्ह महँ लुकअंजन दीन्हा, औ मुख घालि गोटिका लीन्हा॥
डंडा ठोंकि चले उठि दोऊ, वै देखहिँ उन्ह देख न कोऊ।
देखत लोग अचक होइ रहे, कहाँ भए बिधि ए जो अहे॥
जत कत धावहिँ जहँ तहँ जोवा, दिष्टि न आव करैँ सब रोवा।
देखि चरित्र नैन हिय जागे, आपु आपु कहँ रोवन लागे॥
जस ये देखत गए हेराई, एक दिन हमहूँ जाब बिलाई।
कौन भरोसा देह का, छाड़हु जतन उपाइ।
कागद की जस पूतरी, पानि परे घुलि जाइ॥ २२२॥
कही काहु राजा सौं जाई, कुँअर गयो कछु चेटक[2] लाई।
जोगी एक कतहुँ तेँ आवा, नहिँ जानी का भेद सुनावा॥
कै कछु आनि खियाएसि मूरी, कै पढ़ि कै सिर मेलेसि धूरी।
झगा[3] फारि वह पहिरिसि कंथा, कोऊ न जान गयो केहि पंथा॥
गयो सभन्हि पुनि चेटक लाई, देखत देखत गयौ हेराई।
गयौ कौन दिसि काहु न जाना, कै अकास कै धरनि समाना॥
बल एक सुबुधि निकट पै रहा, तासो कछुक सँदेसा कहा।
राजा सुनि पुहुमी परे, परी मँदिल महँ हूल।
धाइ लछिमिदेइ माता, ब्याकुल फारि दुकूल॥ २२३॥
घर घर नगर परा सुनि सोगू, रोवैँ बार बूढ़ सब लोगू।
फिरि फिरि राजा खाइ पछारा, रानी बदन रुहिर कै धारा॥
तोरि केस औ सीस उघारा, को ले गयौ भोर मोँ बारा।

१—तान्त्रिक प्रयोग। २—तन्त्रिक प्रयोग। टोटका। जादू।
३—लबादा = जामा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकट होत अस होत न भंगा, जोगिनि होइ जाति हौं संगा ॥
मैं पापिनि कछु जिय न विचारा, बारे दिनन दूरि कै डारा ।
पूत वियोग मरत हौं झूरी, छूँछे जानु मेलि सिर धूरी ॥
को अस आह देखावैं पंथा, जोगिनि होउँ पहिरि गर कंथा ।

गात गात झागा भए, टूटे सिर सिर केस ।
राउ राँक सब रोवई, रोवै नगर नरेस ॥ २२४ ॥

---

(१६) सुबुद्धि खंड ।

सुबुधि आइ तहँ देखै कहा, घर घर सोग नगर महँ अहा ।
राजा विकल सँभार न आपू, औ रानी बहु करै विलापू ॥
कहेसि बाँह गहि चेतहु राजा, तुम्ह पुहुमीपति सोग न छाजा ।
जौ तुम्ह पुरुष मरौ अस रोई, मेहरिन्ह[1] का समुझावै कोई ॥
छमा करहु अब सुनहु नरेसा, चलत कहा जो कुँअर सँदेसा ।
लाग्यौ मातु पिता के पाया, कहेसि तजहु जनि जिय ते माया ॥
सपने जीउ खोइ जहँ आएउँ, तेहि की चाह इहाँ अब पाएउँ ।

दच्छिन देस नरेस एक, चित्रसेन तेहि नाउँ ।
तेहि घर धिअ[2] चित्रावली, ससिमुखि कहत लजाउँ ॥ २२५ ॥

रूप नगर तहँ बसै सो नारी, पुहुमी बिधि अछरी औतारी ।
चित्र एक वै लिखा बनाई, मोर जीउ ते लिन्ह चोराई ॥
सो न चोर जिन जीउ चोरावा, चोर सो जो अस चोर बनावा ।
पाएउँ खोज चोर बस जहाँ, अगुवा मिलो चल्यौं उठि तहाँ ॥
चोर सुनत जो बिलँब न लावै, उठि धावै तहँही पै पावै ।
जो बिधि करै न आगे भंगा, आनौं जीउ चोर लै संगा ॥
भा विचार अस हम चित माहीं, तुम्ह चित करुन[3] करहु कछु नाहीं ।

१—स्त्रियों को । २—संदुहिता = कन्या । ३—करुणा = विलाप ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इहै सँदेसा कहत खन, ठाढ़ भयौ उठि राउ।
लुकअंजन चखु देइ कै, तहँवहिँ गयौ छपाय ॥ २२६ ॥
अब तुम्ह चिंत करहु जनि हीयेँ, मिलै न पुनि कछु चिंता कीयेँ।
देहु दान पर हाथ उँचाई, विकट पंथ किन होइ सहाई॥
भूखेहिँ भोजन बस्तर नाँगा, देहु पियासहिँ जल बिनु माँगा।
इहाँ देइ जो उहाँ सो पावै, इच्छा मिलै बेगि घर आवै॥
दुहुँ जग हितू दान सम नाहीं, बूड़त दधि काढै गहि बांहीं।
खेवक दान होइ मँझनीरा, गहि गुन खेइ लगावै तीरा॥
एक देइ दस पावहिँ लाहू, दै देखहु जो ना पतियाहू।
धरनीधर नृप चेत चित, वैस्यो खोलि भँडार।
देइ दान जो माँगई, करै न कछू बिचार ॥ २२७ ॥

(१७) यात्रा खंड।

जोगी चला कुँअर सँग लाई, जैसे पौन पात लै जाई॥
आगे चला जाइ सो जोगी, पाछे लागा कुँअर वियोगी॥
बन बीहर जहँ लहु नदि नारा, गिरि सायर[1] गहि बाँह उतारा।
परबत लाँघि देस एक पावा, दिष्टि परा एक नगर सुहावा॥
कंचन कोट जराउ कँगूरा, चहुँ दिस बाजहि मंदिल तूरा।
घर घर होइ गीत झनकारा, चंदन मेद बास महकारा॥
औ चारिहु दिसि तरुवर पाँती, सीतल छाहँ सुहावन भाँती।
देखत भावै चहूँ दिसि, स्रवनन गीत सोहाय।
छाँह देखि भा कुँअर मन, छिनक तहाँ विलम्हाय[2] ॥२२८॥
जोगी कहि कुँअरहि समुझावा, हम पंथी यह नगर परावा।
जो अति सुंदर कोट विराजा, पंथिहि दिष्टि न ऊपर छाजा॥
पंथिहि चाही दिष्टि तराहीँ, चलत न चुभै काँट पग माँहीँ।
औ तुम्ह कीन्ह जोग कर साजू, जोगिहिँ कहा भोग सौं काजू॥

१—सागर। २—विश्राम लेवे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection,. Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औ अति आह सुहावन गाऊँ, छाडे गाँव केर का जाऊँ।
नियरहिँ आह देस पुनि तोरा, अब केहिँ बिलँब कौन दहुँ ओरा॥
आगे अबहिँ दूरि है जाना, एहि रे गाँउँ तो पहिल पयाना।

नाँच कूद कसबा[1] इहाँ, ठाँव ठाँव बहुताइ।
जा कहँ जाना दूरि है, नियरहिँ कस बिलँमाइ॥२२९॥

ठौर ठौर पुनि छाँह सोहाई, पंथी होइ सो कस बिलँमाई।
पंथिहि कहा धूप औ छाहाँ, चलै जरत पग भूँभर माहाँ॥
जोगी सोई दरस कर राता, छाला पाँवरि सूरज छाता।
आगे दूरि नदी औ नारा, निबहै सोइ जो तिसना[2] मारा॥
यही नगर देखत मनियारा, एही नगर बसहिँ बटपारा।
एही नगर जहँ मोहनि डारहिँ, पूँजी लेहिँ जीउ पुनि मारहिँ॥
सोई पुरुष जो बिलँब न लावै, आँखि मूँदि कै पाँव उँचावै[3]।

बहुत इहाँ लगि आवहीँ, देखत नगर लोभाहिँ।
कोऊ एक आगे चलै, नत इहवैँ रहि जाहिँ॥ २३०॥

सुनिकै कुँअर चेत चित चेता, हीरदै लिखा कहा गुरु जेता।
लोचन मूँदे चरन उँचाए, छिन महँ नगर नाँघि कै आए॥
औरि देस महँ औरै भावा, कीन्ह सो जो कछु गुरू सिखावा।
देखि देस औ देसाचारा, गिरि सायर सब उतरे पारा।
सुना सो जो कछु सुना न काना, देखा सो जो न जाइ बखाना॥
गुरू जाहि चेला सँग होई, ताहि कहा बिलँमावै कोई।
नदी नार परबत की घाटी, गुरुप्रसाद सब लेखे माटी॥

मूँड़ मुड़ायेँ जग फिरे, जोगी होइ न सिद्ध।
जा कह गुरु किरपा करहिँ, सो पावै नौ निद्ध॥ २३१॥

ततखन पौन बास लै आवा, भा हुलास हिय लागु सुहावा।
जगमग जोति दिष्टि जो परी, भा भिनुसार गई सरवरी[4]॥

१—नगर। २—तृष्णा। ३—उठावै। ४—शर्वरी = राति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कै जनु चमकै बिज्जु अकासा, कै जनु भोर सूर परगासा।
कहेसि गुरू ! अचरज एक हूआ, पूरब छाड़ि दखिन रवि ऊआ॥
ठावँ ठावँ तारागन अहहीं, सूरज उए नषत किमि रहहीं।
चौंधी दिष्टि निहारि न जाई, कहुँ ससिहर कहुँ सूर दिखाई॥
पौन आजु पुनि सीतल बहा, मिलत सिरान हिया जो दहा।
मिटत जाइ अँधियार चखु, होत आउ उजियार।
जैसे बीते स्याम निसि, होइ आव भिनुसार॥ २३२॥

सुनि कै बोला गुरू सरेखा, निहचै रूपनगर तुम्ह देखा।
एही नगर जहँ बसै सो नारी, जेहि लगि कया भसम कै जारी॥
एही नगर तुम्ह सुना सो देखा, रूप नगर कबिलास विसेखा।
यही नगर जा सौं जग राता, इंछ तुम्हार पुजाव[1] बिधाता॥
इहहिँ छाड़ि जिउ गयौ सरीरा, अब जिउ मिलिहि राखु मन धीरा।
दुख की रैनि बीति सब गई, सुख रवि किरन सो परगट भई॥
एही नगर जेहि लागि वियोगी, इहवहिँ सिद्ध होहिँ सब जोगी॥
एही ठौर कबिलास सम, रूपनगर तेहि नाउँ।
कतहुँ होइ कोउ जोगी, सिद्ध होइ एहि ठाउँ॥ २३३॥

ऊँच जो देखहि जैस सुमेरा, सो मंदिल चित्रावलि केरा।
अति विचित्र जहँ कीन्ह कटाऊ, चढ़ि न जाइ अति विकट चढ़ाऊ॥
ता ऊपर जो कुंदन मंडी, सो चित्रावलि की चौखंडी[2]।
रतन पदारथ मानिक जरी, सुरपुर हियेँ आनि जनु धरी।
सात धौराहर ऊपर ठाऊँ, कहहिँ सबै सुखमंदिर नाऊँ॥
तहाँ निवास करै सो बारी, जीउ देइ सो देख अँटारी।
जिउ हारहिँ देखत उपराहीँ, चलै जगत सब दिष्टि तराहीँ॥
ऊपर कोउ न निहारइ, बरु मग चलहि बराइ।
दिष्टि तराहीँ कै तहाँ, सब जग आवै जाइ॥ २३४॥

१—पूरी करै। २—चौपाल, बैठक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरब दिसि जो आहि पहारी, जनु बिसुकरमैं आपु उतारी।
झरना झरै सोहावनि भांती, तरुवर लागे पाँतिन्ह पाँती॥
बोलहिं पंछी अनबन भाषा, आपन आपन बैठे साषा।
सिखर चढे कूकहिं बहु मोरा, परबत गूँजि उठै चहुँ ओरा[1]॥
जोगी आइ रहैं तेहि ठाऊँ, सुमिरहिं बैठि बिधाता नाऊँ[2]।
पाहन काटि गुफा बहु साजी, ठौर ठौर पुनि मढी बिराजी॥
तुम बैठहु तेहि ठाउँ सोहाई, मैं अब चाह सुनावौं जाई।

चाह सुनावौं प्रथम मग, पाछे दरसन पाइ।
कै वह तुम्ह पहँ आवइ, कै तुम्ह लेइ बुलाइ॥ २३५॥

सुनतै कुँअर दरस की बाता, अहा जो पीतबरन भा राता।
कहेसि कि मोहिं भावै सो ठाऊँ, जहाँ जपैं चित्रावलि नाऊँ॥
कुँअर चला सो ताकि पहारी, उड़ा परेवा ताकि अँटारी।
देखा कुअँर जाइ सो ठाऊँ, जल थल जपै बिधाता नाऊँ॥
पंछी सुमिरहिं अपनी भाषा, सुमिरैं पात पात तरु साषा।
परबत धरे ध्यान जनु तपा, गुपुत जपहिं परगट नहिं जपा॥
जो बीरो उपजै ओहि ठाऊँ, सबै लेइँ परमेसर नाऊँ।

देख कुँअर चित रहस भा, अतिहि सोहावनि ठाउँ।
बैठेउ आसन मारि कै, लागा जपै सो नाउँ॥ २३६॥

जौलौं ध्यान धरै नहिं कोई, तौलौं दरस न प्रापत होई।
घट मैं परमरूप परछाहीं, जा बिनु जग महँ जीवन नाहीं॥
पै तिन्ह नैन न अंजन सोई, जेहि ते दरसु न प्रापति होई।
गुरु बचन चषु अंजन देहू, हिया मुकुर मंजन करि लेहू॥
माया जारि भसम कै डारौ, परमरूप प्रतिबिंब निहारौ।

१—परबत धरैं ध्यान जसतपा। गुपुत जपैं परगट नहिं जपा। पाठा०।
२—सबै लेयँ परमेसर नाहूँ। पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो वह जोति नैन ठहरावै, चौदह भुवन दिष्टि सब आवै[1] ॥
कुँअर ध्यान धरि बैठे तहाँ, परम रूप की आसा जहाँ।
परम आस लगि जिमि भयो, कुँअर चित्त उतपात ॥
तिमि चित्रावलि विरह की, कहौं सुनौ अब बात ॥ २३८ ॥

(१८) बिरह खंड ।

चित्रावलि चितवै पँथ लागी, भँवै चहूँ दिसि चितवन लागी।
भूख गई औ नींद नसानी, कंत पियास पियै का पानी ॥
परगट ढारि सकै नहिँ आँसू, बिरहा गुपुत करै तन नासू।
दारुन धाइ संग दिन राती, प्रेम दुरावै तिय मृदु छाती ॥
कुल की लाज बिरह तन गोवै, परट हँसै गुपुत महँ रोवै।
निकट न बोल अहित जो होई, आँसु उसास न चरचै कोई ॥
कुटुँब लाज नहिँ करै सिँगारा, बैसंदर होइ होइ सब जारा।
मंजन करि पहिरावहीँ, बरन बरन तन चीर।
तेउँ तेउँ दूनी परचरै[2], बिरहा अनल सरीर ॥ २३९ ॥
जौ तन पहिर चीर रतनारा, बिरह अगिन जनु धुकै अँगारा।
सिखा फुलेल सखी जो डारा, जनु सिर परी बिरह की धारा ॥
कंचन तिलक मदन की गाँसी[3], जरी सीस जनु ताहि कि डासी।
अंजन पल सुहाइ नहिँ लागा, दुहूँ नैन जनु बिरह सरागा ॥
बेसर बरत जानु बिष मढी, छिन छिन डसै बदन पर चढी।
पान खात मुख भा रतनारा, बिरह पीर जनु रकत उडारा ॥
मोति हार गर कंचन हाँसा, जनु गिँव परा विरह कर फाँसा।
भुजा टाँड़ औ बलै कर, अँगुरिन मुँदरी टूट।
सब तन बंधन बिरह के, प्रान सकैँ नहिँ छूट ॥ २४० ॥

१—मि०
२—प्रगट हो, सुलगै।
३—बाण की नोक।

تامل در آئینهٔ دل کنی * صفائی بهتدریج حاصل کنی
شود بوے از عشق مستت کند * طلبگار عهد الستت کند

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुँभिया[1] कान सेल की जोरी, बिरहै आनि हनी दुहुँ ओरी।
हियँ डोल मुकुताहल हारू, बिरहा जनु उर हनै कटारू॥
कटि किंकिनि काटै तन दाधा, मानहुँ कीन्ह चहै दुइ आधा।
चूरा चूरै देह दुहेली, पायल मानहुँ पाँवरि[2] मेली॥
अनवँट महँ जनु विष अैारसा[3], बिछिया बीछु होइ पग डसा।
दाहै सब सिँगार तन जेता, कुल की लाज सहै दुख एता॥
जरै अँगार परै जनु छारा, चंदन लागि दहै तन सारा॥
मान जगत परगट जरै, पावक बिरह सरीर।
धन बिरहिनि अैा धन हिया, गुपुत सहै जो पीर॥२४१॥
धाई मुख चरचै चषु जोआ, कबहूँ परगट हँसि कै रोआ।
कबहूँ रहै सूर तम जोई, आँसू ढरै न चरचै कोई॥
कबहुँ सखी सो मन मुख जोवा, करि करि याद करै दिन रोवा।
कबहुँ अगर लै निकट जरावै, धूम देखि चषु जल भरि आवै॥
देखै धाइ सेज दिन भीजी, कहै राति हौं बहुत पसीजी।
निसि मुख गोइ सेज जो सोवै, नींद न आउ भोर लहुँ रोवै॥
लोयन सजल उठै बौरानी, धोवै बदन बेगि लै पानी।
गुपत प्रेम जल लोयन, चाहहिँ परगट कीन्ह।
अतिहि चतुर चित्रावली, बातन्ह गोवै चीन्ह॥ २४२॥
दिन एक रोइ रँगमति सौं कहा, अब नहि जाइ बिरह दुख सहा।
कब लगि जरौं बिरह की आगी, अब परगट होइ चाहै लागी॥
बिरहा बली अनल हौं दही, हिरदै लागि रहै नहिँ गही।
दूतन्ह भए बहुत दिन गए, तेऊ जाइ तहँहिँ के भए॥
कै सो देस अति आह सुहावा, जो तहँ गा सो बहुरि न आवा।
कै सो अजहुँ तेहि पाइन्हि नाहीँ, कै वह रूप नहीँ जग माहीँ॥
बीते बारह मास दुहेली, गुपत रोइ छह ऋतु परहेली[4]।

१—खूँटी, कान में पहिनने का एक आभूषण। २—बेड़ी। ३—भरा हुआ। ४—बिताया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनु सखि छन एक कान दै , कहौं पीर सब तोहिँ ।
जैसे बारह मास ए , छह ऋतु बीते मोहिँ ॥ २४३ ॥

ऋतु बसंत नौतन बन फूला , जहँ तहँ भौंर कुसुम रँग भूला ।
आहि कहाँ सेा भौंर हमारा , जेहि बिनु वसत बसंत उजारा ॥
रात बरन पुनि देखि न जाई , मानहुँ दवा दहूँ[1] दिसि लाई ।
अंग सुबास चढै जनु चाँटे , फूल अंगार कली जनु काँटे ॥
कोकिल पपिहा करै पुकारा , बोलत बोल साँग उर मारा ।
रतिपति दुरद रितुपती[2] बली , कानन देह आइ दल मली ॥
दहुँ केहि बन बस सिंह हमारा , कस न आइ जग बिरह संहारा ।

पुहुप सरासन पनच अलि , मनमथ धरे चढाइ ।
पंचबान छिन छिन हनै , बिरहिनि उर समुहाइ[3] ॥ २४४ ॥

ग्रीषम तपनि तवै जग माहीँ , जिय कायर ताकै परछाहीँ ।
सूर आगि सिर पर बरसावै , बिरहा भीतर देह जरावै ॥
हौं बिच जरौं अगिन दुइ माहीँ , जरत न परै दिष्ट परछाहीँ ।
जेठ जरनि दुख जाइ न काढ़ा , कंत कलप दहुँ केहि बन बाढ़ा ॥
बिरह दवा पुनि जाइ न हेरी , परगट भई अगिन की ढेरी ।
कोइ न मया मरोही आवै , कतहुँ छाँह की चाह सुनावै ॥
रसना पिउ पिउ रटत सुखानी , प्रेम पियास पियै को पानी ।

ग्रीषम पुहुमि अनल भई , पथिक चलै किमि कोइ ।
मगु जोवत नैना जरे , धुआँ न परगट होइ ॥ २४५ ॥

दूभर रितु जब पावस लागी , घन बरसे घिउ हम तन आगी ।
जिमि जिमि परै मेघ जल धारा , तिमि तिमि उर सोँ उठै लुआरा ॥
स्याम रैनि मँह कोकिल बोला , बिरह जराइ कीन्ह तन झोला ।
दामिनि सरग दीन्ह जनु बाढी , चमक देखाइ लेइ जिउ काढ़ी ॥

१—दशों । २—बसंत । ३—सामने करके, ताक के ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कासौं कहौं विथा जिउ केरी, काकी होउँ पाँव परि चेरी।
स्याम घटा औ सेज अकेली, जागि जाइ सब रैनि दुहेली॥
बिरह समुंद जानु अति बाढ़ा, को गहि भुज जलबूड़त काढ़ा।

ऊँच खाल जग जल भरे, भए समुँद औगाह।
सखी पथिक जहँ तहँ टिके, को लै आवै चाह॥ २४६॥

सरद समै अति निरमल राती, कंत बाजु[1] सँहि बिहरै छाती।
राति निखँड चकाव पुकारा, मानहुँ काढि सेल उर मारी॥
ससि पारधि भा पारस[2] बाँधा, किरन बान चारिहुँ दिस साँधा।
कहाँ जाँय यह मन मृग भागी, बिरह आगि चारहु दिस लागी॥
केतिक जाइ सकल निसि बीती, बरबस रहौं बाँधि उरथीती[3] (क)।
आपु माँह किमि सखी मिलाहीँ, जल परवाह दुहूँ पल माहीँ॥
झुँकै नींद बरबस चखु आई, आँसु दरेर साथ बहि जाई।

गुपत मदन दौ पर चरै, प्रगट दहै दुजराजु[4]।
सखी प्रान घट क्यौं रहै, कंत पियारे बाजु॥ २४७॥

हिम ऋतु यह विरहानल बाढा, कंत बाजु दुख जाइ न काढा।
परै तुषार बिषम निसि सारी, सिसकी लेति रहौं मै बारी॥
ते न फिरे जो गए बसीठी, बरै लागि उर मदन अँगीठी।
बिरह सराग करेज पिरोवा, चुइ चुइ परै नैन जो रोवा॥
उरध उसास पौन परचारा, धुकि धुकि पंजर होय अँगारा।
बड़ी रैनि जीवन सुठि थोरा, चेत न परै दिष्टि जनु भोरा॥
पूस मास अति निसि अधिकाई, सेा धन जान जेा बिरह जगाई।

थके नैन बरु देखते, घटै न कोऊ दुःख।
बाढे सिर पर गुर दोऊ, एकसरि परि ये दुःख॥ २४८॥

१—सं० बाह्य = बाहर। २—सं० पार्श्व = किनारा, घेरा। ३—स्थिति, धैर्य्य। (क) उर्दू में नहीं है। ४—चंद्रमा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिसिर समीर सरीर सँतावै, जाडेहुँ नैन नीर भरि आवै।
झुरकै पैान करेजा काँपा, बरिया बिरह रहै नहिँ झाँपा॥
श्रीपंचम मानहीँ सब लोगू, पूजहिँ देवता विलसहिँ भोगू।
हौँ कुल कान प्रेम बिच बसी, हिरदै रुदन अधर पर हँसी॥
सखिन गुलाल आनि सिर डारा, परगट भा जनु बिरह लुवारा।
अब लहु रही गुपुत यह आगी, अब परगट होइ चाहै लागी॥
केहि आगे लै यह सिर मारौँ, सिर की आगि सहे नहिँ पारौँ।

अब तन होरी लाइ कै, होइ चहौँ जर छार।
चहुँ दिस मारुत सँग होइ, ढूँढौँ प्रान अधार॥ २४९॥

अबलहुँ सखी गुपत हौँ जरी, अब जिउ रहिय न एकौ घरी।
पिँजरा महँ जस पंछी घेरी, ओ पग परी लाज की बेरी॥
पंछी बन महँ करैँ पुकारा, हाइ न कोऊ बरजन हारा।
हम तन बिरह रहा होइ रोगू, परगट होउँ तौ मारैँ लोगू॥
परगट लाज कहत पै माटी, दुइ कर बीच भई हौँ चाँटी।
घट पिंजर चहुँ दिस ते टूटा, प्रान परेवा चाहै छूटा॥
अधरन आइ रहा जिउ मोरा, जाइ बहुर मन लाज निहोरा।

कबहूँ अधर कबहुँ हिएँ, जानति हौँ केहि भाइ[1]।
अति ब्याकुल तेहि कंत मगु, झाँकि झाँकि जिउ जाइ॥ २५०॥

सुनि कै बिथा कहै रँगमती, ऐसी जरै सोई धन सती।
परगट जरै सती सो नाहीँ, गुपत जरै सो सती सराहीँ॥
जेहि कारन दुख सहै सरीरा, मिलिहै आइ राखु मन धीरा।
पहिलेँ दुःख सहै जो कोई, तौ पाछै सुख पावै सोई॥
(क) पहिले दुख पाछे सुख होई, तब अनूप नग पावै कोई।
कागहि सब तन करिखा[2] सारा, छुवै जाइ तब पद मनियारा[3]॥

१—भाँति। (क) यह उर्दू की प्रति में नहीं है। २—कारिख = काला।
३—कौआ ने अपना सारा शरीर काला किया तब सीता जी का पैर छूने पाया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मान हिअस्थल[1] बाँधि जौ, लावै बीरौ दुक्ख।
सींचि नैन जल तरु करै, तौ पावै फल सुक्ख॥ २५१॥

सुनु चित्रिनि एक बात सोहाई, मिलै कंत सो कहौं उपाई।
कोटि जतन कै चहुँ दिसि धावै, बिनु सेवा कोई कंत न पावै॥
महादेव देवतन्ह के पीता[2], इंद्र सेइ इंद्रासन जीता।
जो इच्छा करि सेवै कोई, परसन होइ देइ पै सोई॥
महादेव कर खपर भरावहु, जोगिन्ह कहँ बैसाइ जेंवावहु।
तापर बोलि देहु कछु दाना, दान हींचि[3] सरगहुँ तेँ आना॥
दान देत जनि लावहु धोखा, हींछा मिलै होइ संतोखा।

गाँठ दीन्ह चित्रावली, उन गौनी कहि बात।
खप्पर भरौं सहस दस, जब आवै सिउरात॥ २५२॥

---

(१६) परेवा आगमन खंड।

तेहि दुख माँह परेवा आवा, चित्रिनि देखा जीउ जनु पावा।
पूछिसि कुसल कहहु सो बाता, मिला सो भौंर कँवल जेहि राता॥
कहहु बेगि जीउ अधर बईठा, निकसि जाइकै हियँ पईठा।
धरि लिलार भुइँ कहेउ परेवा, आवा मधुप कंज-रसलेवा॥
अब जनि जरहु मरहु तपि बारा, तुम्ह दुख रैनि भयेा भिनुसारा।
रहा मलीन कौंल जेहि आसा, आउ सूर अब करहु बिलासा॥
चातक होइ रही दिन राती, करु आनँद अब मिली सेवाती।

सुनि रहसी चित्रावली, पीत बदन भा रात।
जैस उगवत सूर के, पदुम होत परभात॥ २५३॥

पुनि पूछौं निजु कहहु परेवा, कहाँ सो मधुप कौंल रसलेवा।
औ कहु कहाँ सो पाए जाई, कैसे काढ़े प्रेम चिन्हाई॥

१—हृदयस्थल। २—पिता। ३—खींच के।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करै ऊँच कै नीच बिचारी, राजा राउ कि राँक भिखारी।
काह नाउँ काकर सुत आही, एक एक बैठि बखानहु ताही॥
जेहि सुनि रहइ जीउ मम गाता, फिरि फिरि कहहु ताहि की बाता।
आजु सिरान हिया दुख जरा, मुए धान जनु पानी परा[1]॥
कै चकोर ससि किरन देखाई, पपिहा जानु सेवाती पाई।
नियर होहु तुअ चरन परि, सहस बेर बलि जाउँ।
एक जीउ घट माँहि तेहि, वारत अधिक लजाउँ॥ २५४॥
कहिसि कि ताहि सराहौं काहा, धन तूँ धनि जाकर बर आहा।
नषत कि लखै तराइन ओरा, ससिहर होइ सूर कर जोरा॥
उत्तर देस नगर नैपालू, राजा धरनीधर नृप सालू।
दान खरग चहुँ जुगत बखाना, कोस सहस दस ताकी आना॥
तेहि कर सुत सरूप बुधिवंता, छत्री कुल पवाँर कुलवंता।
नाउँ सुजान चहूँदिसि जाना, बल विद्या गुन केर निधाना॥
रतन एक जनु ससि मनियारा, रहा होइ सब कुल उँजियारा।
बिधिचरित्र सोवत तेहि, कोउ चितसारि लै आइ (क)।
गयौ चित्र तुव देखि कै, आपन चित्र बनाइ॥ २५५॥
जस तोर जिउ ओहि के रँग राता, वह पुनि आह तोर मद-माँता।
नाउँ न जाना ठाँउ नहिँ सूना, चित्र सरूप हिए महँ गूना॥
तुव दरसन इच्छा मन वारा, देइ लाग सब खोलि भँडारा।
धरमसाला महँ होइ रसोई, भोजन आइ खाहिँ सब कोई॥
नित उठि भोर सौंटिया धावहिँ, जंगम जती ढूँढि लै आवहिँ।
सब की हिंछा पुरवहिँ दासा, एक हीँछा तुअ दरसन आसा॥
तोरे भाग कीन्ह अगुवाई, सूध पंथ मोहि दीन्ह देखाई।
एक दिन निसरेउँ करमगति, ओही नगर मँझार।
देखि सौंटिया लै गए, जहँ हुत राजकुमार॥ २५६॥

१—मि० सूखे धान परा जनु पानी। (क) बिधि चरित्र सोवत कोऊ चित्र सारि ले आई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखि कुँअर पुनि निकट बोलावा, पूँछेसि कौन देस ते आवा।
कौन नगर तुअ कौन नरेसा, भल गुन कौन तुम्हारो देसा॥
देखत ही सो कुँअर पहिचाना, आनँद कछू न जाइ बखाना।
कहेउँ बइसि सब नगर कि बाता, बरनेउँ चित्र जेहि क रँगराता॥
सुनतहि चित्र पाउँ लै परा, कहेसि वही चित सपने हरा।
कहूँ लेइ अलि भूलि बसेरा, चित्र कमोदिनि कँवल चितेरा॥
तोर रूप जब बरनि सुनावा, तजि छाया चित कायहि लावा।
राज साज सब छाड़ि कै, कीन्ह जोगि कै भेस।
लुकअंजन चख देइ कै, लै आयौं एहि देस॥ २५७॥
झरना तीर आहि सो जोगी, जो तुअ दरसन लागि वियोगी।
आसन मारि बैठ होइ तपा, नाउँ तुम्हार करै मुख जपा॥
तुअ तन परिस पौन जो जाई, सन्मुख होइ लेइ कँठ लगाई।
सीतल मंद समीर जो पावै, जरत आगि हिय लाइ सिरावै॥
लै आयौ दै सरबर आसा, आइ तीर अब मरै पियासा।
ठाँवहि ठाँव जरत पुनि आवा, आसा जल मुख मेलि जियावा॥
अब जो मरै सो बिरह बियोगी, हत्या तोहिँ जाहि लगि जोगी।
मूरि मंत्र गुन मोरि कै, ले आएउँ करि जोग।
अब न मोहिँ कछु लागई, बैद जान औ रोग॥ २५८॥
सुनि चित्रावलि चितहिँ हुलासी, कौंल कली रबि उदै बिगासी।
रही साँस मन हिय गा दंदू, सुनि कुलीन भा अधिक अनंदू॥
कहेसि परेवा तूँ सो कीन्हा, निक्ख[1] तोर मोहि जाइ न दीन्हा।
तैं सो बचन अमिरित अस भाखा, निसरत प्रान फेरि घट राखा॥
मोहिँ लगि सकति होति जिय हानी, तैं हनु[2] होई सजीवन आनी।
दानौ दुःख अहा घट पूरी, तै होइ भिम जमकातरि चूरी[3]॥
का तोरे नेँवछावरि सारौं, लाजन एक जीउ नहिँ वारौं।

१—सं० निष्क = एक प्राचीन सिक्का जो सोने का होता था। यह चार असर्फी का होता था। द्रव्य, दाम, मूल्य = बदला। २—हनुमान। ३—नाश किया, तोड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तन पंचाल थाल सम, होत जो पूरित प्रान।
काढि काढि तुअ चरन पर, वारि देत मन मान॥ २५९॥
पै यहि आहि जगत कर लेखा, अंध पताइ नैन जो देखा।
सवन[1] सोत[2] सुनि अमिरित बानी, नैनन तपनि दूनि अधिकानी॥
जस सुनिपावा सवन संतोषा, नैन देखाउ जाइ जियु धोखा।
मोर निकास न एकौ घरी, परी पायजो[3] पुनि साँकरी॥
बैठे रहहिँ बार रखवारा, मारु मारु होइ झाँकत बारा।
धावत हटकै[4] दारुन धाई, रहस कूद लइ गै लरिकाई॥
कहाँ आहि दहुँ सरिवर बारी, सपनेहुँ नहिँ देखौं चितसारी।
एहि बिधि जोबन जाउ जरि, सिसुता होइ अनूप।
निसरत बरज न कोउ जेहि, देखौं जाइ सरूप॥
अब फिरि जाहु कुँअर जहँ आही, कहेहु कहै तिय दरस-उमाही[5]।
जाहि लागि तुम्ह भएहु भिखारी, तुम्हतै अधिक सो बिरह दुखारी॥
तुम्ह दुख रैनि अँधेरि बिहाना[6], करु मन धीर भोर नियराना।
हौं छा एक हिये हम पूजी, तुम्ह दरसन मम हौं छा दूजी॥
अलप दिनन्ह आवै सिउराती, नेवत जेंवावब जंगम जाती (क)॥
तुम्ह तेन्ह संग बोलावब तहाँ, बैठहु हेठ झरोखा जहाँ।
पाछे दहुँ का करै गोसाईं, नैन मिलाव होइ तेहि ठाईं।
जोबन बेड़ी पग परी, गौनत महा सँदेह।
नाहिँ तो बरुनिन आइ कै, झारति तुअ पग खेह॥
यौ पुनि आपन दरपन दीन्हा, कहेसि दिहेहु लै यह मोर चीन्हा।
कहेहु राखु लै हिरदै लाई, माँजत रहब परै नहिँ काई॥

१—श्रवन। २—श्रोत। ३—पायजा = लोहे का चुल्ला जिससे कैदी का पैर बांधा जाता है—एक प्रकार का अंदुआ। ४—डाटती है।
५—आतुर। ६—बिगत हुई या प्रभात में परिणत हुई।
(क) पूजब शिवहि चढ़ाउब पाती। पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राखेहु सजग देसि जनि काहू, छाड़ि परेवहि जनि पतियाहू।
नैन लाइ रहु दरपन माँहीं, पहिले देखु रूप परिछाहीं॥
दरपन चषु ठहराइहि तोरा, बिगसि देखु तब दरस न मोरा।
एकहि बार जो सनमुख देखा, होइ तूर[1] पर मूसक[2] लेखा॥
मोरे रूप आहि सो जोती, बारह भान किरन की गोती।
माँजत दरपन जीउ दै, नैनन्ह धरब अकास।
जेहि दिन पूजै देव जग, पूजै हम तुम आस॥ २६०॥
दरपन लइ सो परेवा आवा, कुँअर आइ झरना ढिग पावा।
लेयन मूँदि माल कर जपा, चित्रावलि चित्रावलि जपा॥
कहेसि चेतु जोगी सिधि आई, लेहु सजग होइ गुरू पठाई।
अस लौलीन कुँवर होइ रहा, बचन परेवा मारुत बहा॥
तब गहि भुजा कुँअर झकझोरा, उघरे नैन देखि मुख ओरा।
कहेसि कि जोगी बैठु सँभारी, सिद्ध कहत सुनु सवन उघारी॥
मैं सब बाति गुरु सौं कही, औ जत बिरह बिथा तोर अही।
रहस गुरू चित ऊपजा, सुनि जोगी कर भेस।
मया बोलि औबहु असिष, दीन्ही लै आदेस॥ २६१॥
कहेसि कि जौं इहवाँ लहु आए, चिंता करहु न सिधि अब पाए।
आए लाँघि समुंद पहारा, अब नैनन महँ ठाँव तुम्हारा॥
जो दुख मोहिं लागि तुम्ह पावा, सो दुख सब मोहिं ऊपर आवा।
जनि जानेसि मैं अकसर दुखी, तुमते दुखी दून ससिमुखी॥
जेते चुभे काँट पग तोरे, सुनि सालैं सबहियरैं मोरे।
औ छाला जत पायन्ह परा, फूटि पानि मम नैनन्ह ढरा॥
औ जत पातल गड़ी अँकोरी[3], सुनु मम पुतरिन समुहँ ददौरी[4]।
आवत मारग औरु जत, सहा तेज रबिभार।
होइ बैसंदर मोर हिय, जारि कीन्ह सब छार॥ २६२॥

१—एक पर्वत का नाम जहां मूसा को खोदा का प्रकाश देख पड़ा था वा दर्शन मिला था। २—मूसा-एक यहूदियों का पैग़म्बर जिसे ईश्वर तूर पर दिखाई पड़ा था। ३—अँकरी = कंकडी। ४—ददोरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरसन चाउ अधिक जिय माहीँ , अबहिँ उहाँ मोर आवन नाहीँ ।
भा दुर्जन जोबन हतियारा , जातेँ रहहिँ संग रखवारा ॥
अब दहुँ कब आई सिउराती , पूजब सिंभु चढाउब पाती ।
जहँ लहु जती सनासी अहहीँ , जोगी जती खपर जे गहहीँ ॥
मंदिर तर बैठाउब आनी , भरि भरि देब खपर अनपानी ।
तुमहूँ कहँ पुनि लेब बोलाई , हेठ झरोखा ठाँउ बिठाई ॥
ओही ठाँउ होइ नैनमिलावा , सिउ परसन होइ हीँछ पुरावा ।
ऊपर ग्रीषम तेज रबि , हेठ सेा चैत गँवाउ ।
दीन्हाँ आपनु मुकुर यह , जेहिँ महँ दरस मिलाउ ॥ २६३ ॥
यह दरपन तुम्ह लेहु सँभारी , जेहिँ महँ देखहु दरस पियारी ।
एही मुकुर सिद्धन कर गहा , मन की इच्छ इही मधि चहा ॥
चौदह भुवन रहहिँ एहि माहीँ , तिल समान कछु बाहर नाहीँ ।
नैन होइ गुरु अंजन आँजा , दरपन होइ नीक करि माँजा ॥
जहँ लगि धरती सरग पतारू , परैँ दिष्टि सब बाँच न बारू[1] ।
अब नहि लावहु चित बैरागा , माँजत रहब जेा मैल न लागा ॥
औा पुनि माँग देहु जनि काहू , मोहिँ तजि जनि आनहिँ पतियाहू ।
तब लहु सहियै बिरह दुख , जब लगि आव सेा बार ॥
दुःख गए तब सुक्ख है , जानै सब संसार ॥ २६४ ॥
सिउ सिउ करत बार सेा आवा , चित्रावलि जानहु जिउ पावा ।
भेारेहिँ नेगिन्ह कहा हँकारी , बेगिहिँ करहु रसेाईँ सारी ॥
आजु आहि सिउबार सुहावा , घर घर दंपति सिंभु मनावा ।
हिंछा एक हमारी पूजी , औा हींछा मन आहि न दूजी ॥
साजहु अनबन भाँति रसेाई , जहँ लहु घिउपक जलपक होई ।
जेागी नाउँ जहाँ लहु पावहु , भरि खप्पर बैसाइ जेँवावहु ॥
होइ न काहु परेासत धेाखा , मैँ पुनि देखब बैठि झरोखा ।

१—बालू = रेणु ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेगि होहु बिलमाहु जनि, आजु सो उत्तिम बार।
होंछा हरि परसाद हम, पुरवै मकु करतार ॥ २६५ ॥

जोगिन्ह साजी बेगि रसोई, जेहि के खात प्रेम रस होई।
सब मीठे परकार सलोने, भए न एकौ खट्टे अलोने ॥
घीपक जलपक जेते गने, कटुवा बटुआ ते सब बने।
धौराहर तर ठाँउ सँवारा, जोगिन्ह जहाँ होइ जेवनारा ॥
पाक रसोईं सोंटिया धाए, जोगी जती ढूँढि ले आए।
जोगी नाउँ जहाँ सुनि पावा, एक एक कहँ जाइ बोलावा ॥
आदर सौं लै आवहिँ जोगी, जोगी सेवा करैं सो भोगी।
भोगी जोगी सेवई, इहै सो भोग आचार।
जोगी बाँचहिँ भोग सौं, तबही पावैं सार ॥ २६६ ॥

चित्रिनि कहा हँकारि परेवा, कहाँ सो जोगि करौं जेहि सेवा।
आइ बैठ सब बार बराती, दूलह कहाँ जाहि धनि राती।
धन सो दिवस धन बार सुहावा, धन सो घरी जेहि होइ मिरावा ॥
सुनि कै बात परेवा बोला, ए सुंदरि वह रतन अमोला ॥
कंचन बरन मलिन[1] जरि गयऊ, बिरह अगिन जरि कुंदन भयऊ।
आनि देखावौं रूप सुजाना, कसौ कसौटी दहुँ कस माना ॥
अपने जान धोख नहि लायेउँ, बारह बान सँपूरन पायउँ।
वह पिउ रतन अमोल नग, तू धनि कुंदन हेम।
जो बिधि जोरी है लिखी, जरै सो जरिया प्रेम ॥ २६७ ॥

चला परेवा कहि यह बाता, आवा जहँ जोगी रँगराता।
कहेसि कुँअर दुख रैनि बिहानी, उठि चलु अब सुखघरी तुलानी[2] ॥
तोहि मया कै गुरू हँकारा, सिद्धि देत अब लाग न बारा।
आजु दरस जेहि लागि बियोगी, आजु सिद्धि जेहि कारन जोगी ॥
आजु सो औषध जेहि लगि पीरा, आजु प्रान फिर मिलिहि सरीरा।

१—मैल, मलीनता। २—आगई।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजु सो भोजन जेहि लगि भूखा , आजु सो पान अधर जेहि सूखा ॥
आजु सो कौंल भौंर जेहि रंगू , आजु दीप जेहि लागि पतंगू ।
आजु सेवाती घन बरिस , चातक हसि जेहि लागि ।
आजु उदधि जल ऊमडेउ , बुझै हिये की आगि ॥ २६८ ॥
दरस नाउँ सुनि कुँअर हुलासा , जनु पंकज रवि सूर प्रकासा ।
रहसा बदन पेम कर गहा , भा मजीठ केसर जो अहा ॥
कहेसि कीन सो बासर आजू , दरसन मिलै होइ सिध काजू ।
दाहिन भयेा भाग हम आई , भयेा भेार दुख रैनि बिहाई ॥
मोहिँ न करम केरि परतीता , दीरघ दुःख होइ लहु[1] बीता ।
कहहि बहुरि मन मान न मोरा , जिउ देनिहार बचन है तोरा ॥
तैँ अब लहु जिउ घट महँ राखा , नाहिँ त जात सुआ तजि साखा ।
कहेसि आजु है सोई दिन , अंत होइ दुख तोर ।
सरग उए ससिहर किरन , पीयै पुहुमि चकोर ॥ २६९ ॥

---

(२०) दरसन खंड ।

चला परेवा ले सँग जोगी , जहाँ बैद तह गौनै रोगी ।
आनि झरोखा तर बैसारा , नखतन्ह महँ जनु ससि मनियारा ॥
भा अकूत[2] जहँ जोगिन्ह मेला , आवा गुरू होहु सब चेला ।
जत कतहूँ तै होइ आदेसू , देइ असिष बैठाइ नरेसू ॥
बैठे जोगी पाँतिन्ह पाँती , धरे खपर सब भाँतिन्ह भाँती ।
गेरुआ वस्त्र चढाइ बिभूता , शिव शिव बोलहिँ उठै अकूता ॥
कोई संख लै पूरै नादू , कोई करै जोगी गुनबादू[3] ।
कोई बीन बजावई , कोइ धंधारी फेर ।
कोई सुमिरनी कर गहे , जपे नाउ बिधि केर ॥ २७० ॥
ततखन भोजन अगिनित सारा , भाँति भाँति जे हुत परकारा ।
आने सब पकवान जो कीन्हे , कथा बाढ तेहि नाँवन लीन्हे ॥

१—सं लघु, प्रा० लहु = छोटा । २—बात । ३—गुणानुवाद, प्रशंसा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहिले खपर जो भोजन भरा, लाइ गुरू के आगे धरा (क)।
ता पाछे जो खप्पर भरहीं, जोगिन्ह के लै आगे धरहीं॥
लागे खपर भरैं चहुँ ओरी, दे दछिना बिनवहिं कर जोरी।
मानहु सेवा देहु असीसा, जेहिते होंछा पुरवहिं ईसा॥
जोगी जेवहिं पीवहिं पानी, होइ सँतोष हियँ मनमानी।
मन बच क्रम बिनती करहिं, हे देवन्ह के ईस।
सुंदरि हिंछ पुरावहु, कहहिं लाइ भुइँ सीस॥ २७१॥

कुँअर न जेँवै बैठु भँवाई, रहा नैन दुहुँ दरपन लाई।
लागी बार न पूजी आसा, बिष भोजन भा जानु गरासा॥
अमिरित भोजन लै कर काहा, सो न मिला जा कहँ चित चाहा।
दरपन देखि सो देखै नाहीं, उठै मरोर करेजे माहीं॥
बरी आगि उर बाढ़ि सनेही, पिघिलत चली नैन जिउ देही।
तपि तपि मरै रहै धुनि माथा, बिनु दरपन कछु आउ न हाथा॥
बिरह न करै जनम भरि तेता, औधि आस कर छिन महँ जेता।
मान तेज बल सब घटा, हियँ सोच अधिकान।
औधि घरी नियराति है, निकसि जाइ जनु प्रान॥ २७२॥

चित्रावलि नौ सात बनाई, दरसन लागि झरोखा आई।
तन गुजराती चीर अमोला, लहर लेइ जनु उदधिहि डोला॥
देखि चकोर दिब्ब[1] मुख बारा, जनहु मयँक कीन्ह उजियारा।
भरे माँग मोती मनियारे, नखत पाँति ससि आइ जोहारे॥
सीसफूल कच ऊपर बासा, स्याम रैनि मधि सूर बिगासा।
भौंहैं सौंह न होइ गियानू, लोचन मोचन सुरपति ध्यानू॥
बेसरि सरि न काहु कहँ छाजा, गयो अगस्त सरग कहँ लाजा।
पान खाइ भा अधर रँग, औ चौका रतनार।
परगट देखिय खरग जनु, रुहिर भरा हथियार॥ २७३॥

क—पहिले खप्पर भोजन भरा—आनि गुरू के आगे धरा। पाठा०। १—दिव्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सरवन खुटिला[1] बने सभागे, जनु गुरु सूक सवन ससि लागे।
तरिवन बना तरनि की कला, जनु रथ सजि सरग कहँ चला॥
गाँव माल मुक्ता मनि बसी, सुरसरि जनु सुमेरु हुत धँसी।
ग्रौ तन बनि कटाव की चोली, रही फूलि फुलवारि अमोली॥
भौंर भए दुइ स्याम सवाई, तेहि फुलवारिन्ह बैसे जाई।
बाँहन चूरी कंकन हाथा, देखि धुनहिँ गन गंधब माथा॥
कटि किंकिनि धुनि सुनि मन मोहै, चूरा चमकि चौंधि घन जोहै।
कहहिँ देवता अजहुँ हम, हेम होहिँ छिति जाइ।
परसहिँ विछिया होइ मकु, चित्रावलि के पाइ॥ २७६॥

चित्रावली झरोखे आई, सरग चाँद जनु दीन्ह देखाई।
भयो अँजोर सकल संसारा, भा अलोप दिनकर मनियारा॥
चौंधे सुर सब सुरपुर माहीँ, चौंधे नाग देखि परछाँहीँ।
चौंधे महिमंडल नर नारी, चौंधे जल थल जिव सब भारी॥
चौंधे जोगी अहे तराहीँ, कस अँजोर कोउ जाने नाहीँ।
दरपन माँह कुँअर देखि छाया, गयौ मुरछि सुधि रही न काया॥
सूर जोति दरपन महँ ऊई, यहि दुहुँ बीच कुँअर भा रूई।
ग्यान ध्यान सबही गयो, परा पुहुमि खसि राइ।
देखि झरोखा चित्रिनी, बिहँसि मँदिर महँ जाइ॥ २७७॥

हँसि पूछहिँ तै सखी सयानी, चित्रिनि भेद बात जिन जानी।
भाखहु सत्ति रैनिपति[2]-मुखी, सो देखा जेहि लगि हुति दुखी॥
नैन कसौटी कंचन कसा, बोलहु हियेँ बान कै बसा।
है वह रतन-पदारथ सोई, कुंदन मिलि जराउ जेहि होई॥
सो पुनि हमहिँ देखावहु आनी, जेहि बिनु तुम्ह जुग रैनि बिहानी।
तेहि क उतर चित्रावलि कहा, देखा अजहु बिरह कर दहा॥
ससिहर सुरनगरी जेहि रूपा, सूरज चाहि सो अधिक सरूपा।

१—कर्णफूल। २—चन्द्रमा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखत माथे भागमनि , निरमल रतन अनूप ।
छपै न कैसहु जोग महँ , प्रगट देखिये भूप ॥ २७८ ॥

दरपन माँहि निरखि मुखछाया , परा मुरछि गा जिउ तजि काया ।
अबहीं कंचन कैसें देखाऊ , कुंदन भान जो होइ जराऊ ॥
बिरह अगिन जरि कुंदन होई , निरमल तन पावै पै सोई ।
अबहीं आहि सो कंचन काँचा , सहि न सका दरसन की आँचा ॥
रंचक देखि दीप की करा[1] , चौंधि पतंग पुहुमि खसि परा ।
पुनि जो चेत होइ अब आई , तुम्हहूँ कहँ सो देखावौं जाई ॥
बोलि परेवा कहा बुझाई , मरै न जोगि सँभारहु जाई ।

कहहु जाइ दरपन अबहि , सनमुखहु ते न टार ।
पुनि मैं झाँकब आइकै , बैठहु आपु सम्हार ॥ २७९ ॥

परा जोगि खसि पुहुमी माहीं , चेत न आपु सम्हारै काहीं ।
कहूँ चक्र कहुँ खपर उदारा , कहूँ परा तिरसूल निनारा ॥
कहूँ सुमिरनी कहूँ अधारी , जीउ बाजु सब भयो धँधारी ।
जौ लहु तन जिउ दीप अँजोरा , मोर मोर कै सबै बटोरा ॥
दीप बुझा घर भा अँधियारा , जो हुत जहाँ सो तहाँ बिसारा ।
सिद्धन्ह भलेहिं पढा यह पंथा , तापी झारि मेखली कंथा ॥
भार जानि के मंत्रा-झोली , गौने पंथ खेलि कै होली ।

आवै मान बसंत जब , फूलहिं तरुवर बेलि ।
हौं पहिलहिं गुरु बचन लै , निसरौं होली खेलि ॥ २८० ॥

चेला देखि गुरू बिकरारा , दौरि आइ दुकि करहिं सम्हारा ।
टोवहिं हाथ पाँव जिउ नाहीं , रही सास कछु हिरदै माहीं ॥
गहे मुकुर कर जानि अँगूठी , छोरि न जाइ मरे की मूँठी ।
सबै कहहिं अबहीं भल आहा , पल भीतर यह होइगा काहा ॥
कोऊ कहै मिरगी कर भावा , कोऊ कहै सनपात[2] सँतावा ।

१—कला । २—सन्निपात ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोऊ कहै भोजन विष बासा, कोऊ कहै गिव गहा गरासा॥
कोउ कहै काहू देखि जेा भूला, परगट प्रेम कौंल मुख फूला।
कहहिँ चलहु सब जीउ लै, तजहु नगर कै सौंव।
जहाँ गुरू अस मारिये, चैला बाँच न जीव॥ २८१॥
घरी चारि बीते भा चेतू, उठेउ सँभार सौंरि हिय हेतू॥
आस पास पूँछहिँ सब जेागी, कहहु कया काहे भा रोगी॥
उह सेा गुटका कहाँ अडारा[1], जेहि बिनु सिद्ध होइ नहि पारा।
कहाँ सेा बीरउ लेान अनूपा, जेहि सेाँ होइ सेान औ रूपा॥
तुम्ह अस गुरू सँभारहु नाहीँ, हम चेला दुहुँ काह कराहीँ।
अब सेा कौन बिथा जिय केरी, औषध मूरि सेा आनहिँ हेरी॥
फिरि फिरि पूछहिँ चेला बाता, गुरू न बेाल प्रेम मद माता।
रहा अचक मन जेागना, ना हँसि आउ न रोइ।
खाइ रह ठगमूरि सी, गयेा जानि गँथ[2] खेाइ॥ २८२॥
आइ परेवै सबद सुनावा, चेत मुछंदर गेारख आवा।
अस भिखारि हम देख न केाई, बारहिँ आइ रहै परि सेाई॥
जागत गयेा सकल अँधियारा, गयेा सेाइ जब भा भिनुसारा।
काया पिंड कमाइ न पारा, गा होइ धूम अनल के झारा॥
इन नैनन्ह तुम्ह रूप सेा देखा, परेहु चेाँधि तेा कौन परेखा[3]।
अब फिरि गुरू मया तेाहि कीन्हा, लेहु सँभारि सिद्धि जेा दीन्हा॥
रहहु नैन पुनि दरपन लाई, चाँद झरेाखा देखहि आई॥
इन्ह नैनन्ह देखै न केाइ, वह सेा रूप अपार।
हिये नैन पट खेालि कै, देखहु राजकुमार॥ २८३॥
सिद्ध नाउँ जेागी सुनि जागा, गा बैराग भयेा अनुरागा।
दरपन सौंह लाइ चषु रहा, काहू दिष्टि कुंज मन गहा॥
सरग उदै भा दिनकर केरी, कुँअर जेाति दरपन महँ हेरी।
नैनन्ह भीतर जेाति समानी, जेातिहिँ मिली जेाति ठहरानी॥

१—डारा = फेँका। २—सं० ग्रन्थ गांठ। ३—परीक्षा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अस परगट भा रूप सरेखा, सौन जो सुना सहस गुन देखा।
पाइ रूप जल नैन पियासे, जिउँ जिउँ पीवैं अधिक पियासे॥
पुनि भा सोच हिये कछु आई, राता बदन गयौ पियराई।
मान दरस महँ कौन गुन, चढ़ै सोच चित आइ।
देखि रूप झुरवै मनहि, पुनि जस करहुत चाइ[1]॥ २८४॥
ससि के सँग जो अहैं तराईं, तेऊ सरग चढ़ि देखन आईं।
देखि कला रबि की जो अही, गई खोइ सुधि गात न रही॥
बोलीं सबै देखि ससि ओरा, धनि तू धनि जाकर अस जोरा।
तस दुख देखि तु अस पिउ लहिए, अस पिउ लागि कस न दुख सहिए॥
तुम्ह ससिहर यह रबि उजियारा, तुम्ह कुंदन यह नग मनियारा।
तुम्ह रानी यह आहि सो राजा, तुमही कहँ पै अस बर छाजा॥
तुम्ह अंबुज यह दिनकर साईं, मिलै कँवल अब रहसि तराईं[2]।
अब बिधना सो कौन दिन, मिटै हिये जेहि दुंद।
ससिहर मिलै चकोर कहँ, तरइन होइ अनंद॥ २८५॥
पुनि नेगिन्ह सौं कहा बुलाई, सिउ सेवा सुख उपजेउ आई।
जोगिन जेंवत कौतुक होई, कौतुक देखि चाह सब कोई॥
औ पुनि दान देई चित भावा, इहाँ क दीन्हा तहँ पर पावा।
कौतुक पुनि दोऊ सँग पाई, जोगी रहहिं दिवस दस छाई॥
नित उठि भोर करहिं जेवनारा, उभय भाँति साजहु परकारा।
भरि भरि खपर परोसा देहू, दै दै दान आसिषा लेहू॥
बहुरै नेगी अग्या मानी, चेरी करैं कहै जो रानी।
ठाकुर अग्या होइ जब, सबै करैं जो नेगि।
जहँवाँ कारज पुन्य कर, कसन सँवारैं बेगि॥ २८६॥
लाग होइ प्रति दिन जेवनारा, जोगी जंगम करहिं अहारा।
चित्रावली झरोखा आही, कुँअर देखु दरपन पर छाँही॥
दोऊ उदधि पै दोउ पियासे, पीपी जल पुनि रहहिं पियासे।

१—चाह। २—सं० तरणि = सूर्य्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखत काहू होइ न साँती, दिवस चारि बीते पहि भाँती॥
हुत जो कुटीचर देस निसारा, वै पुनि सुना जोगि जेवनारा।
कहेसि कि महूँ जोगि होइ जाऊँ, मकु परसाद जाइ कछु पाऊँ॥
सनमुख भाग होइ जौ आई, जोगिन साथ लेउँ सिधजाई।
आइ सो जोगिन्ह महँ मिला, कै तपसी कर भेस।
बोले सबै कि गुरु सेव हौं, जाइ करो आदेस॥ २८७॥

---

(२१) कुटीचर खंड।

गुरू पास चेला चलि आवा, चित्र चीन्ह मुख देखत पावा।
औ दरपन चित्रावलि केरा, परतष[1] देख कुँअर जेहि हेरा॥
मन महँ कहेसि आह यह सोई, जाहि लाग यह कौतुक होई।
एही लागि होइ जेवनारा, एही लागि एता बिस्तारा॥
एही लागि हम देस निसारे, एही लागि हम पुनि पुनि जारे।
अब मिलि लेउँ सो आपन दाऊँ, पुनि अस दाँउ हाथ कब आऊ॥
बैठो जाइ कुँवर के पासा, कहेसि कि हम चित्रावलि दासा।
जैस परेवा तैस हौं, सो पठयो तुम्ह पाँहि।
कहेसि कि कबलगि ससि किरन, कुमुद पियै जल माँहि॥२८८॥
तेहि देखि सो कौंल हुलासा, आए भौंर होइ जेहि आसा।
कौंलहि सूर सँतोष न देई, जौ लहु भौंर बास नहिँ लेई॥
कसा कसौटी निकसा बाना, कौंल क मुख मधुकर पहिचाना।
अब उठि चलहु कौंल बस जहवाँ, सेज सुगंध सँवारी तहवाँ॥
यह विचारु तूँ जोगि सयाना, जल न पाव पावस ऋतु आना।
चंदबदन देखहु भरि नैना, औ सुनु सरवन अमिरित बैना॥
अधरन्ह टूटि अधर रस लेहू, भुजनि भुजा आलिंगन देहू (क)।

१—प्रत्यक्ष। (क) यह पद उर्दू की प्रति में नहीं है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लीन्हेसि दरपन माँगि पुनि , कहेसि चलहु अब राय ।
कुदिन आइ नियराइ जौ , पहिलेहिँ बुधि मिटि जाय ॥ २८९ ॥

जोगी अंग समाइ न फूला , बैन कुटीचर की सुनि भूला ।
कहिसि कि भाग निसेनी आई , अब चढ़ि सरग मिलौं ससि जाई ॥
देखौं सौंह जाइ सो रूपा , नैन सिराहिँ जरे जो धूपा ।
अंक म गहौं जो हिया सिराई , अमिरित बैन सुनौं अब जाई ॥
अस न जान अमिरित बिष बसा , यह बिष नाग चाह उर डसा ।
बहु दुख पाइय ससिहर छाया , कैसे चढिय वेगि उठि काया ॥
ऐसे केत बिगूचे[1] पाए , थोरा छाड़ि बहुत कहँ धाए ॥

कीन्ह न सोंच कुँअर जिय , चल्यौ कुटीचर संग ।
कोऊ न सकै सँवारि जो , कीन्ह चहै बिधि भंग ॥२९०॥

कहा कहौं मैं जग व्यवहारा , यह मन कैसहुँ मरै न मारा ।
तपि तपि लुहि लुहि एक जो पावा , होइ न सँतोष देइ कहँ धावा ॥
पाछिल दुःख बिसरि सब जाई , सुख ऊपर सुख ढूँढै धाई ।
सोन लागि जो पाव सुमेरू , रतन लागि रतनाकर हेरू ॥
मुकुता होहिँ समुँद के ढेरी , पुहुमी होइ सरग बहु चेरी ।
करै जोहार सकल संसारा , भँवहिँ न नैन बाजु जेहि झारा[2] ॥
विक्रम नैन पुहुमि सब आँटी , भरी जाइ मरघटि की माटी ।

कहाँ सो विक्रम सकबँधी , कहाँ सो राजा भोज ।
हम हम करत हेराइ गे , मिला न खोजे खोज ॥ २९१ ॥

वह लै मुकुर चला होइ आगे , जाइ कुँअर पुनि पाछे लागे ।
झोली हुत एक अंजन काढ़ा , सनमुख कुँअर भयो फिर ठाढा ॥
कहेसि कि यह लुकअंजन सोई , नैन दिये , जो देखन कोई ।
सो चित्रावलि पठवा तोकाँ , नैनन्ह देइ चलहु सिवलोकाँ[3] ॥

१—धोखा । बहाली । २—ईर्षा । ३—कैलाश = स्वर्ग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रहसि कुँअर लुकअंजन लीन्हा, बेगिहिँ दुहूँ नैन महँ दीन्हा।
अंजन देत भयो अँधियारा, रहा अचक तब राजकुमारा॥
भयौ असूझ न जब कछु सूझा, दूत भेद तब मन महँ बूझा।
हाथ मलै औ सिर धुनै, अंजन धोवै रोइ।
पहिलहिँ जो न बिचार भा, अब रोए का होइ॥ २९२॥
कहेसि कुँअर सुनि हौं सो अहऊँ, आपन भेद बात तोहि कहऊँ।
तोर चित्र चितसारी हुता, देखा चित्रसेन की सुता॥
उपजा प्रेम चित्र के देखे, कौतुक आन न आनै लेखे।
मोरे जिय भल काज न आवा, रानि लाई मैं चित्र धोआवा॥
ते रिस लगि हौं देसनिसारा, अब लहुँ सहा बिरह की भारा।
तैं सब कीन्ह मोर सुखहानी, गादुर[1] भयौं सूर सो रानी॥
खोजत रहेउँ मिलेहु नहि राऊ, पाएउँ आजु मिलेउ सो दाऊँ (क)।
कहाँ सो गोडिया तुच्छ तन, कहाँ किसन[2] अस राउ।
बैरी जो बस कै मिलै, लेइ सो आपन दाउ॥ २९३॥
यह कहि गहि भुज कुँअर उठावा, सात समुंद्र पार लै आवा।
डारेसि लै तेहिँ खोह अँधेरा, जहँ न मिलै दिन दीपक हेरा॥
दिन न सँचार किरन रबि जहाँ, रैनि नाहिँ ससि तरई तहाँ।
अँधे ठाँव अँधेरी पाई, जनहु मसि ऊपर मसि लाई।
चला तहाँ तजि कै दुखदाता, चलती बेर कहेसि एक बाता॥
बहुत कोह उपजा मन माहीँ, जीउ न मारौं जानेसि काहीँ।
जस हौं बिरह अगिनि महँ जरा, तस तू जरसि इहाँ अब परा॥
मैं तोहि डारा लै तहाँ, जहाँ न डोलै पाँखि।
जो जस करै सो पाउ तस, कुँअर देखि ले आँखि॥ २९४॥
गा उठि गुरू देखि सब चेला, भयो भंग जहँ जोगिन्ह मेला।
जत कत चले झारि मृगछाला, पंखी सबह[3] डोल जनु घाला॥

१—चमगीदड़। (क) यह उर्दू की प्रति में नहीं है। २—कृष्ण। ३—प्रातःकाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उठि उठि आपन मारग गहहीं, गुरू बाजु चेला कहँ रहहीं।
चले पंखि उडि पींजर टूटा, उड़सा नाच पखाउज फूटा॥
चित्रिनि खोलि झरोखा बारा, देखै कहा बसंत उजारा।
ना सो फूल न सो फुलवारी, दिष्टि परी उकठी सब बारी॥
ना वह भौंर जाहि रँग राती, विहरै[1] लाग कौल कै छाती।

बिगसत कौल न बार भइ, गयौ अथै जग भान।
मारेसि ईंट देखाइ गुड़, सोई भा उपखान[2]॥ २९५॥

यह कहि कौल कली कुँभिलानी, भा रवि अस्त सूखि गा पानी।
कौल देखि सब कुमुदिनि धाईं, ससि गरास भा डरीं तराईं॥
कहहिं कि यह अजुगुत[3] भा कहा, राहु न कोउ चाँद कँ गहा।
इहै घरी हम बारत[4] अहहीं, लागी सैान कहत पुनि रहहीं॥
आनन ढाँक देखाउ न काहू, चाँद सँपूरन लागै राहू।
लागीं सब मिलि करै सम्हारा, पूछहिं कस भा जीउ तुम्हारा॥
चंद बदन जो दमकत अहा, कहा मलीन रानि तब कहा।

का पूछहु किन देखहु, खोलि झरोखा बार।
फूला रहा बसंत जहँ, तहाँ उडै अब झार[5]॥ २९६॥

ऋतु विपरीत भई चहुँ ओरी, गा बसंत तब लागी होरी।
पलही माहँ भयो सब कहा, सौंतुक[6] हा कि सपन विधि अहा॥
धाएउँ देखि रही घर की सी, गई अथै हरिचंद पुरी सी।
चेटक लाइ गयौ कछु जोगी, उठिगा बैद जियै नहिं रोगी॥
जोगिन आह छंद बहु सीखा, घर घर फिरहिं लेत पुनि भीखा।
जे जग छार लपेटी कया, तेहि का होइ काहु की मया॥
तासौं सकति प्रीति तुम्ह लाई, जो नहिं भयौ काहु कर आई।

१—विहरना = फटना। २—उपाख्यान = कहानी। ३—सं० अयुक्ति = असंभव, अचंभा। ४—मना करती। ५—धूल। ६—जाग्रत अवस्था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काज परा तेहि कठिन सौं, जे न कोइ अपनाइ।
गयो अकारथ यह जनम, बरु न जनमती माइ ॥ २९७ ॥

जो जानत वह अस निरदई, कत हौं प्रीति करत घर गई।
जरौं मरौं जिउ उठै परेखा, दीप पतंग भयो मोर लेखा ॥
सहस[1] पतंग जो आपु जरावा, एक न दीपक भाएँ आवा।
हम तन इहाँ रहा अधजारा, गयो दीप घर कै अँधियारा ॥
कहाँ जाउँ तन पंख न पाऊ, मरौं खाइ विष इहै उपाऊ।
कर हुत रतन जाइ जो खोई, भागन बहुरि पाव जग कोई ॥
आपन दोष कहौं का काऊ, गइउँ सोइ लाग्यो ससि राहू।
सीख लेहु सखि मोहि सौं, जनि करि हठ मकु खोउ (क)।
प्रेम पंथ चढि सोउ जो, सो ऐसें पुनि रोउ ॥ २९८ ॥

सखिन्ह कहा सुनु चित्रावली, वह सो भौंर तुम्ह पंकज कली।
फूल फूल करि मधुकर फेरा, आइ कौंल पुनि लेइ बसेरा ॥
जौ तैं जीव ओहि पर परछेवा, उहौ परिहि होइ घिरिनि[2] परेवा।
पै दिन दस पुनि काढ़हु पीरा, मिलिहि आइ जौ जीउ सरीरा ॥
गुपुत रहहु कोउ लखै न पावै, प्रगट भएँ कछु हाथ न आवै।
गुपुत रहे ते जाइ पहूँचै, परगट बीचहि गए बिगूचै ॥
रहिये गुपुत भेद नहिँ कहिये, जैसी परै तैसि अब सहिये।
खीन मयंक जो दुइज भो, पुनि सो मयंक अकास।
ए सब बिधिना के चरित, जनि जिय होउ निरास ॥ २९९ ॥

---

(२२) अजगर खंड।

कुँअर अँधेरें हा जहँ परा, बिधिना कहँ विनवै भा खरा।

(क) सीख लेहु सखि मोहिँ सौं, नगर जेकर हुत खोउ।
प्रेम पंथ चढ़ि सोउ जो, सो पुनि यहि विधि रोउ। पाठा०।
१—सहसा। २—घिन्नी = चक्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ए गुसाँइ जग—रच्छ विधाता, तोहि बिनु और न दुख संघाता (क)॥
अह निसि जगत कीन्ह सब तोरा, तैं सिरजा अँधियार अँजोरा।
तहीं सरग ससि सूर बनावा, तहीं कीन्ह दधि अंत न पावा॥
तहीं सकल गिरि मेरु सँवारा, तैं सब कीन्ह नदी औ नारा।
तुहीं पताल कीन्ह बलि बासू, तैं पति और सबै तोर दासू॥
तुहीं सोई जो सब जग पूजा, सुमिरौं काहि और नहिं दूजा।
तैं सुखदायक दुहूँ जग, दुख भंजन जेहिं नाउँ।
तहीं बिछोवसि[1] दुइ मिले, तहीं करसि एक ठाउँ ॥३००॥
मैं जबहीं जिय सौंरा तोहीं, तहीं मया करि काढ़े मोहीं।
कूप माहिं जे सुमिरन साजा, काढि किये तैं देस के राजा॥
प्रेम बिछोह अंध जेहि कीन्हे, बहुरि मिलाइ जोति तेहि दीन्हे[2]।
अगिन जरत जे तहीं सँभारा, किये ताहि फुलवारि अँगारा[3]॥
मैं अब परा आइ तेहि ठाऊँ, अपनी सकति निकास न पाऊँ।
मकु तैं होइ दयाल बिधाता, तोरे निकट कहाँ यह बाता॥
मैं जस हा तस कीन्ह गोसाईं, अब तूँ कर जस चाहसि साईं।
हेरु गोसाईं आप कहँ, मोरे काँ जनि हेरु।
आपन नाउँ दयाल गुनि, हेा दयाल एहि बेरु॥ ३०१॥
जहाँ कुँअर चित सुमिरन ठाना, अजगर एक आइ नियराना।
ओदर[4] खोह जाहि नहिं अंतू, लीलै हस्ति और को जंतू॥

(क) दुख सुख दाता—पाठा०। १—बिछुड़ाता है। २—यूसुफ़ को उसके भाइयों ने कुएँ में फेंक दिया था और कह दिया था कि यूसुफ़ को भेड़िये खा गये। उसका बाप शोक में अंधा हो गया। यूसुफ़ को कारवान ने निकाल कर मिश्र में बेचा। वह वहाँ भाग्यवश राजा हो गया। कनान में काल पड़ने से उसके भाई मिश्र गये। वहाँ यूसुफ़ ने उनकी रक्षा की। चलते समय अपना यत्र दिया और कहा इसे अपने बाप को देना। उन लोगों ने जब कपड़ा अपने अंधे बाप को दिया तो वह उस कपड़े को मुँह पर डालने से देखने लगा। ३—हदीस में लिखा है कि खलील पैगंबर को काफ़िरों ने चिता में फूँक दिया था पर खुदा ने उनके लिये चिता को बाग़ और अंगारे को फूल कर दिया था। ४—उदर = पेट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिखर डाँग[1] तस आवै चला, बन बीहर सब काँ दलमला।
औ तहँ पाइस मानुष बासा, खोह लाइ मुख पैंचिस साँसा॥
पाहन रूख डार भरमाना, साँस संग पुनि कुँअर समाना।
गयौ कुँअर पुनि साँसहि लागी, उठी खात ओहि ओदर आगी॥
परयो उलटि भा उदर दुहेला, डारिसि उगिलि जेत हुत लीला।

भाजा अजगर जीउ लै, परा कुँअर बिसँभार।
जे तापे विरहा अगिन, तेहिँ को निजवै[2] पार॥ ३०२॥

कुँअर सँभारि बैठु पुनि तहाँ, नैन न जोति जाइ उठि कहाँ।
टोइ टोइ तहँ ठाँव सँवारा, टारे पाहन औ द्रुम डारा॥
बनमानुष एक तेहि बन अहा, कुँअर चरित सब देखत रहा।
कहेसि जाहि बिधि चहै न मारा, अस अहि ओदरहु ते निसारा॥
जौ जम सौं बिधि जीउ उबारा, रहे न नैन जोति विष झारा।
कौन जिअन जो नैन न जोती, सोत न लहै पानि बिनु मोती॥
हाथ पाँव बर बुधि सब आही, एक बिनु नैन करै का काही।

मान न बातैं इमि करै, जौलहु घट महँ पैान।
विधिना एतना राखु थिर, नैन बैन औ सैान॥ ३०३॥

बिधि तेहि हिये दया उपजाई, नियरे होइ पुनि देखेसि आई।
देखि रूप मन किहिसि बिचारी, यह सुरपुर हुत दिये अँडारी[3]॥
जग न होइ अस कोई मानवा, निहचै यह गन गंधव छवा।
अब पूछौं एहि की सब बाता, कौन जाति कस कीन्ह बिधाता॥
केहि अभाग के दीन्ह सरापा, अस कारन दहुँ भै केहि पापा।
कहेसि रे अंध विधाताद्रोही, कहु सो सत सत पूछौं तोही॥
जो सत संग साथ लष गोती, हियेँ सत्त लोचन सिर जोती।

सती मरै जौ सत चढ़ै, सत्त सहस दस आउ॥
तन मन धन बरु जीउ किन, जाउ सत्त जनि जाउ॥ ३०४॥

१—पहाड़। २—निगलना। ३—गिरा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्य सपत दै पूछौं तोकाँ, का तोर जाति जन्म केहि लोकाँ।
का तोर सरग देव(क) ओतारा, इंद्र सराप लहे महि डारा॥
कै रे जनम बल बासुकि देसा, कै तपि मही आइ परवेसा।
केहि गुन सकति इहाँ तैं आवा, मानुष इहाँ न आवै पावा॥
जौ मानुष तौ गुन कहु मोहीं, जेहि तें साँप न निजवै तोहीं।
कै तैं जनम अंध चषु पाए, कै अबहीं भौ अहि के खाए॥
देखौं सब मानुष कै भावा, कहु सत इहाँ कौन लै आवा।

देखत लोना रूप तोर, छोह उठै जिय मोहिं।
कहेसि सत्त सत पूछौं, सपथ सिंभु दै तोहिं॥ ३०५॥

---

(२३) बनचर खंड।

बनचर बचन कान जब परे, कुँवर रोम तन भै सभ खरे।
मानुष जानि रहस उपराजा, कहिसि किहौं मानुष विधि साजा॥
जंबूदीप देस जग जाना, धरनी धर पितु पूत सुजाना।
दच्छिन दिसा गएउँ होइ जोगी, चित्रावलि के रूप वियोगी॥
रूप नगर जहँ चित-मन-हरा, तहाँ जाइ कांह्न हौं छरा।
दै अंजन चषु कै अँधियारा, छिन महँ इहाँ आनि हौं डारा॥
तैं कहु सत को हसि का नाऊँ, गाढ़े मीत भएसि एहि ठाऊँ।

कहेसि कि जस तूँ तैस हौं, कोइ बस बन कोइ देस।
हम सब सेवक ताहि के, जो जग दुहूँ नरेस॥ ३०६॥

अब चित चिंत करहु जनि भाई, कहौ मीत तौ करौं उपाई।
औषध देउँ नैन होइ जोती, अब फिरि पानि चढ़ै चख मोती॥
यह कहि बनचर बन कहँ धावा, घरी चारि बीतें पुनि आवा।
अंजन धसा पात पर कीयें, नैन्हन होइ जोत जेहि दीयें॥

(क) लोक-पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुँअर हाथ पर पात अँडारा, आपु ठाढ़ भा कूदि निनारा[1]।
कहेसि देहु यह अंजन आँखी, हम तुम बीच बिधाता साखी॥
कुँअर नैन लै अंजन दीन्हा, गा तम मेटि उदै रवि कीन्हा।
परा कुँअर कहँ दिष्टि जग(क), मन बच कहेसि पुकार।
चषु निरमल जग सूर हो, जो जग पर उपकार॥ ३०७॥
दिष्टि परा बनचर जो अहा, ओहि कौं देख कुँअर तब कहा।
नियरे आउ रे परउपकारी, तन मन जीउ करौं बलिहारी॥
कहसि तो हौं नियरे चलि आवौं, तुव चरनन रुचि आँखें लावौं।
निमिष न जाइ निखादे तोरा, तैं सहदेव धनंतर मोरा॥
कहेसि कितैं केहि देसक अहई, छाँडि झूँठ कोउ साँच न कहई।
आन क दरब लेहु जिउ मारी, निसि चोराइ दिन कइ बटमारी॥
आन क मानुस आन जो होरा, कहु परतीत कौन तेहि केरा।
जौ हम जानत सत्त बिनु, असत न तहाँ समाइ।
छाड़ि देस संपति सकल, कत रहते बन आइ॥ ३०८॥
यह कहि बनचर बन कहँ चला, देखि देखि हाथ कुँअर पै मला।
रहेउ ठाढ़ सनमुख चखु लाई, जौ लहु बन मौं गयो छिपाई॥
कहेसि हेतु जो इन्हके नाहीं, तौ तजि देस रहहिं बन माहीं।
अब उठि चलौं तजौं एहि ठाऊँ, करम सँजोग पंथ मकु पाऊँ॥
चला कुँअर उठि बन खँड माहीं, संग न कोउ बाज[2] परछाहीं।
सौंरि हियें चित्रावलि नेहाँ, नैनन्ह चुवै मघा कर मेहाँ॥
नदी नार बन चहुँ दिस फूला, भटकत फिरै कुँअर तहँ भूला।
पंथ न सूझ असूझ बन, चलत राह नहिं पाइ।
खन बैसइ खन धावइ, खन रोवइ बिलखाई॥ ३०९॥

१—नियारे अलग। (क) दिष्टि परा जग कुँअर कहँ। पाठा०। २—मिला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२४) हस्ती खंड ।

बीते चलत पाख दुइ चारी, परा दिष्टि एक कुंजर भारी ।
ऊँच सीस जनु मेरु देखावा, सूँड़ जानु अजगर लरकावा[1] ॥
तरुवर जनु चबाइ दुइ दाँता, डारत आउ खेह मदमाता ।
धावत जाइ पुहुमि जनु धसी, आवै पीठ सरग सेाँ खसी ॥
भागहिँ और हस्ति मद बासा, कुँअर देखि जिय भयेा तरासा ।
कहेसि मीचु अब पहुँची आई, एहि आगे कहँ जाब पराई ॥
अस्त्र नाहिँ जो सम्मुख धाऊँ, मारौँ एहि जैपत्र[2] जौ पावौँ ।
जनम अकारथ जगत भा, गई अमिरथा आउ ।
चित्रावलि के दरस कर, रहा हियेँ पछताउ ॥ ३१० ॥
अस्त्र न जो सनमुख हेाइ लरौं, जो निजु मरन भागि का मरौँ ।
कुंजर धाइ कुअँर पर परा, रहा ठाढ़ ही नेक न डरा ॥
धाइ लपेटि सूँड़ सेाँ लीन्हा, चाहेसि मूड़ डाढ़ तर दीन्हा ।
कुअँर हिये बिधि सँवरा तहाँ, जेा बिधि केर मीचु तेहि कहाँ ॥
ततखन राज-पंछि एक आवा, परबत डोल जो डैन डोलावा ।
ओहि हस्ती पर टूटा आई, गहि ले उड़ा सरग कहँ जाई ॥
सूँड़ समेटि जो कुंजर रहा, कुअँर न छूट डरन्ह सुठि गहा ।
उडा जाय अंतरिख महँ, दीखै जैस पहार ।
घरी चारि महँ लै गयेा, सात समुंदर पार ॥ ३११ ॥
बारिधि तीर जहाँ हुत रेतू, परा तहाँ छुटि कुअँर अचेतू ।
भरि गये सीस देह सब खेहा, जेहि तन नेहाँ गति देहि एहा ॥
जेहि के हिए बस प्रान पियारा, संतत देह चढ़ावै छारा ।
जिमि जिमि छार देह पर चढ़ा, तिमि तिमि रूप मुकुर जिमि बढ़ा ॥
छार चढ़ावैँ बहु गुनि जेागी, छार मरम का जानै भेागी ।
मानुस देह छार हुत कीन्हा, छारबुद्धि[3] जिन छार न चीन्हा ॥
कवन जनम केहि तप करतारा, मूँठी छार अमित बिस्तारा ।

१—लटकाया हुआ । २—जयपत्र । ३—बुद्धिहीन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखि बड़ाई छार की, बसेउ आइ करतार।
छारहि ते कीन्हेसि सबै, अंत कीन्ह पुनि छार ॥ ३१२ ॥
पहर एक गइ उठा जो चेती, देखा परा समुँद की रेती।
ना सो हस्ति जेहि के बस अहा, ना सो पंछि जो कुंजर गहा ॥
सौंरिस हिये विधाता सोई, जेहि के करत खेल सब होई।
ऐ गोसाइँ तै दुहुँ जुग राजा, ए सब चरित तोहि पै छाजा ॥
जिअतेहिँ मारि मिलावसि छारा, चहसि तो देसि फेरि औतारा।
गिरि परबत कै पानि बहावसि, पानिहि साजि सुमेरु देखावसि ॥
छत्रिन अछत[1] राँक सम करई, चहइ तू छत्र राँक सिर धरई।
भंजन गठन समस्त तू, और न दूजा कोइ।
तही अहा अरु है तही, औ पुनि आगे होइ ॥ ३१३ ॥
कुअँर सवँरि चित्रावलि नेहा, उठि के चला झारि तन खेहा।
गिरि परवत औ कानन घना, प्रेम प्रसाद न लेखे गना।
निडर जाहि तेहि बन खँड माहीँ, जम सौं बाच मीच अब नाहीँ ॥
बीता चलत मास एक सारा, बन औरान[2] औ भा उजियारा।
रहसा हिए देस जब पावा, दृष्टि परा एक नगर सोहावा ॥
कहेसि जाउँ अब नगर मँझारी, मकु मिलि जाय कोऊ बैपारी।
पूछि लेहुँ तेहि नगर की बाटा, चित बिकान है जेहि की हाटा ॥
देखेसि पुनि फुलवारि एक, फूले फूल अमोल।
अलि गुंजारहि जहाँ तहँ, करहिँ मजोर कलोल ॥ ३१४ ॥
देखि अपूरब ठाउँ सोहाई, कुअँर तहाँ छिनु बैठेउ जाई।
संपति कुसुम देखि चित लावा, लोचन जरे निहारि सिरावा ॥
जूही फूल दिष्टि भरि हेरा, लखै भाव चित्रावलि केरा।
देखि गुलाल अधर चित चढ़ा, दारिम दसन रहसि हिय बढ़ा ॥
चंपक माँहि सरीर की शोभा, नारँगि लखि उरोज मन लोभा।

१—अछत्र = निश्छत्र। २—समाप्त हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अली माल फूलन पर हेरी, होइ सुरति अलकावलि केरी।
गीव मजोर देखि मन आवा, लोचन खंजन आइ देखावा॥
जाहि होइ चित की लगनि, मूरख सों सेा दूरि।
जान सुजान चहूँ दिसि(क), वेाहि रहा भरि पूरि॥ ३१५॥

---

(२५) कौलावती खंड।

सागर-गढ़-पति सागर राजा, सागर नाउँ ओहि पै छाजा।
दारिद गहा आउ जेा दुखी, एकन लहर करै पै सुखी॥
तेहि कै सुता कौंलापति बारी, सखिन साथ आई फुलवारी।
सब मुगुधा[1] जोवन अँगिराता, कोइ ज्ञाता[2] कोई अज्ञाता[3]॥
काहू तन अजहू लरिकाई, काहू घेरि लीन्ह तरुनाई।
जेावन सिसुता सम तन काहू, कोउ न जान होई कस नाहू[4]॥
सबै कँवल जनु सूरन देखा, सब कुमुदिनि जनु चाँद न पेखा।
अजहूँ मनमथ उपनत[5], पेम न जानहि नाम।
अजहुँ काहु देखा नहीँ, सुरति[6] सेजसंग्राम॥ ३१६॥

कौंलावति गुन सागर रानी, पढ़ी अमर पिंगल सुर[7] ज्ञानी।
लागी तजन गात सिसुताई, आए सँचार कीन्ह तरुनाई॥
आइ जेा रतिपति गात समाना, भूषन चाउ हिये अधिकाना।
घरी घरी पुनि लाज सुहाई, लोचन दसन झाँपि कै जाई॥
भौंहँ धनुख उतँग होइ चढ़ी, लोचन कोर दुहूँ दिसि बढ़ी।
उर अँगिरात भाँति अति भली, कँचन बेलि कपूर की कली॥
राजत रेामावली सेाहाई, कुँदन कोविदार सी खाई।

(क) कइ सुज्ञान सेा जानइ। पाठा०

१—मुग्धा। २—ज्ञात-यौवना। ३—अज्ञात-यौवना। ४—नाथ = पति।
५—उत्पन्न। ६—संभेाग। ७—स्वर = संगीत।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिसुताई तन कोटि गहि, रही अटक दिन चारि।
चलि निकसि पुनि हारि कै, तरुनाई बरि आरि ॥ ३१७ ॥

कौंलावती आइ फुलवारी, फैलि गईं चहुँ दिशि सब बारी।
देखि पुहुप चित भयो हुलासा, लागी तोरन कुसुम सुबासा॥
गूँधहि हार गींव लै डारहि, करहि गेंद आपुस महँ मारहिं।
मारत सीस केस मुकुलाई[1], धावत उर अंचल फहराई॥
खेलहि त्रिया सबहिं बिलम्हाई, रति[2] के रूप रंभ[3] की जाई।
साजि गेंद कौंलावति रानी, सखी एक कहँ मारि परानी[4]॥
हँसति आय धाइ कै तहवाँ, कुँअर सुजान बैठ हुत जहवाँ।

देखत रूप कुँअर कर, रही अचक होइ ठाढ़ि।
जम होइ हिये समाइ गा, लीन्हेसि जिउ जनु काढ़ि ॥३१८॥

आनन देखि रही खिन खरी, पुनि मुरछाइ पुहमि खसि परी[5]।
प्रान परा प्रेमानल आँचा, उड़िगा रहा हाथ पै साँचा[6]॥
सखी सबै चहुँ दिसि तें धाईं, देखि चरित सब रहीं ठगाईं[7]।
करहिं सँभार न जागै रानी, मेलहिं दसन खोलि मुख पानी॥
घरी एक बीते भा चेतू, आहि अचेत आउ हिय चेतू॥
पूछहिं बात उतर नहिं देई, घूमत रहै साँस पै लेई।
करहिं बसन लै मुख पर छाहाँ, कहहिं भयो का खेलत माहाँ॥

पुनि जो देखिन विरिछ तर, तपसि एक अनचीन्ह।
कहा सबन मिलि निहचै, ए जोगी कछु कीन्ह ॥३१९॥

१—मुकुलित होता था = खुल जाता था। २—कामदेव की पत्नी। ३—रंभा, एक इंद्र लोक की अप्सरा। ४—भागी। ५—गिरि परी। ६—ढाँचा = ठटरी। ७—ठकमारी = विस्मित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छरी[1] काहु एहि खेलत माहीँ , अब धौँ इहाँ रहे भल नाहीँ ।
पुनि जो एकमत होइ सब आईँ , डाँड़ि[2] घालि मंदिल लै आईँ ॥
औ पुनि सबै गईँ लै तहाँ , कौँलावति की माता जहाँ ।
गंगा नाउँ उदधि की जोरी , धन जननी जेहि बिमल किसोरी ॥
बोलीँ सखी नैन भरि पानी , खेलत कँवल कली कुम्हिलानी ।
दाडिम डार गहे हुति खरी , कै दानो कै चुरइलि छरी[3] ॥
सुनतहिँ लहरि चढ़ी चित गंगा , होइ गइ बिकल भयेा सुख भंगा ।

देखि अवस्था धीय कै , उठी करेजे पीर ।
बूड़ि गई[4] नख सिखर लौँ , दुहुँ लोचन भरि नीर ॥ ३२० ॥

कंठ लाइ मुख चूमै रानी , धोवै बदन नैन के पानी ।
पूछै बात प्रान कहु मोरा , काहे बूड़ि गयेा जिउ[5] तोरा ॥
कै तुइ तन कोउ पीर उपाई[6] , कै कछु दिष्टि परा हुत आई ।
कहसि बेगि जेहि औषद मागौँ , प्रान होइ तौ देत न खाँगौँ[7] ॥
वैद बुलाइ खिआवौँ बरी[8] , जोगिन्ह आनि बँधावौँ जरी[9] ।
जोगी नाम कान जब परा , बहुरा चित जो चित हुत हरा ॥
देखा नैन खोलि चहुँ ओरा , देखेसि सीस माता की कोरा ।

लाज सकुच चित ऊपजी, उठी बेगि अकुलाइ ।
बैठी ओढ़ि सँभारि पट, लोचन गए सुखाइ ॥ ३२१ ॥

रहसि रानि जब देखिसि चेतू , कंठ लाइ पूछै करि हेतू ।
नित गौनति खेलति फुलवारी , आजु बिकल काहेँ भइ बारी ॥
कहेसि सखी सँग अपने जाई , भँवति[10] फिरत हुति बाल सुभाई ।
फिरत सीस चखु भा अँधियारा , ताँवरि[11] आइ परी बिकरारा ॥
तुम माता जनि बिस्मै करहू , अब जिय कुशल, हियेँ जनि डरहू ।

१छली = मंत्र मारा । २—डोली । ३—आवेश किया । ४—मुरछा गई । ५—जी बूड़ना = मूर्छा आना । ६—उपाई = उत्पन्न हुई । ७—कमी करो । ८—बटिका = गोली । ९—जड़ी = औषध । १०—भ्रमित = घूमती हुई । ११—भाईँ = मूर्छा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनि रानी जिय भयो अनन्दू, छाड़ेउ राहु पून कर चन्दू॥
परतिहार[1] सौं कहा हकारी, अब जनि जान देहु कहुँ बारी।
दिन भर आय यहँ छइन[2], परी साँझ जब आइ।
बिकल भई कौंलावती, चढ़ि धौराहर जाइ॥ ३२२॥
बिकल कँवल अथएव जनु सूरा, हिरदै जमेउ बिरह अँकूरा।
लोचन नीर सेज सब बूड़ी, कौंलहि अछज भई जर जूड़ी॥
दहकि सरीर अगिनि जनु लाई, जहँ जहँ भीजै जाइ सुखाई।
सायक अनिल अनल भइ ससी, साँपिनि सेज अंग अँग डसी॥
भवन भयेउ निखंड अँधियारा, बोली चुरइलि नाहर ढारा[3]।
कुमुदिनि नाउँ सखी एक अही, तासौं बोलि बिथा सब कही॥
सुनु कुमुदिनि तै कँवल की जोरी, संगिहु सन ना भावै चोरी।
हम तुम्ह ठाँइ एक संग, अब प्रगटेउ सोइ नात।
तोहि सौं कहौं उघारि कै, सुनै न पावै मात॥ ३२३॥
तोहि सो कहौं जो मोर मन माना, परै न पाउ आन के काना।
कालि जो गई सखी सँग बारी[4], बीनत अहि फूल फुलवारी॥
जोगी एक अहा तहाँ लोना, देखत जनु सिर मेलिसि टोना।
भौंह धनुष बरुनी सर साँधा, मारेसि हियँ बान विष बाँधा॥
सुधि न रही बुधि लैगा हरी, बिनु जिउ होइ पुहुमि खसि परी।
मैं अचेत वह अहा सचेतू, गयो बिछोहि[5] हिए दै हेतू[6]॥
नहिँ जानौं दहुका भा जोगी, भई जाहि कारन हौं रोगी।
खोजहु सखी सो जोगना, जो रे गयो मोहि मारि।
नाहि तौ करिबौं काँथरी, तन दुकूल मैं फारि॥ ३२४॥
अबहीं एही नगर महँ सोई, पावै बेगि जो खोजै कोई।
आजु जो इहाँ खोज सो पावा, काल्हि जो जाइ रहै पछतावा॥

१—प्रतिहारी = रखवारा। २—क्षय हुआ। ३—ढहार = गर्जन।
४—वाटिका। ५—छोह रहित = निर्मोही। ६—प्रेम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंथिन्ह दया होइ सुनु थोरी, मन जहँ रमै चलै तेहि ओरी।
हौं अधीन वह अति निरदई, दहुँ केहि भाँति निबाहै दई।
पंथी पंछी थिर को राखा, छिन छिन बैठ आन तरु साखा॥
ओहि सुपंख बहु तरु वर डारा, हौं पींजर महँ करौं पुकारा।
कौन सो हितू मिलै अब आई, व्याधा होइ फँदावै[1] जोई॥
हाथहुँ तँ जौ उड़ि गयो, पुनि कहुँ दिष्टि न आउ।
तेहि पंखी के पाछु महँ, जनि बूझि जिव घाउ[2]॥ ३२५॥
कौंल बिथा सुनि कुमुदिनि रोई, अस दुख दुखी कहसि जग कोई।
अबहिँ न सूरज किरिन समानी, अनगुन[3] कौंल कली कुम्हिलानी॥
अबहिँ न बैठि रहस रस कीन्हा, भौंर बियोग आनि बिँधि दीन्हा।
उपजेउ प्रेम हियेँ जौ आई, करु न चिंत मैँ करब उपाई॥
प्रीतम नेह अगिनि जनु डरिये, एकहि बार धाइ नहिँ परिये॥
धरै धीर दुख सहै जो बारी, ताहि सो अगिनि होइ फुलवारी।
हौं कुमुदिनि पढ़ि पारथ जानौं, कहसि तौ मोहि सरग ससि आनौं॥
तोर बिथा सुनि मोर हिय, जामेउ बिरह अँकूर।
अब निसि बीते कौंल कहँ, भोर देखावौं सूर॥ ३२६॥
कुमुदिनि सो मन रचा उपाई, भोर होत गंगा पहँ आई।
कहेसि राति मैं सपना दीठी, जोगी सँग जनु बार बईठी॥
तिन्ह मह एक सिद्ध जो आहा, कौंलावति कर अंचल गाहा।
हौं जनु बरबस जाइ छोड़ाई, जोगी माँगै खपर भराई॥
एको नाहिँ जौ देखौं जागी, तब ते नैन चटपटी लागी।
कस यह सपन कैस बेवहारा, तुम रानी अब करहु बिचारा॥
काल्हि जो कबँल अंग भरि आवा, मकु कछु होइ देव कर भावा[4]।
बोली गंगा साँचही, महादेव कर भाव।
जोगिन्ह आनि जेवावहू, जाइ कौंल अरसाव[5]॥ ३२७॥

१—फाँदा लगा के फँसावै। २—घाला = लगाया। ३—अज्ञात।
४—भाव = आवेश। ५—बाधा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमुदिनि रहसि रसोई साजी, सगरे नगर दुंदभी बाजी।
जोगी जन कोइ कतहुँ न जाई, जो आवै राखौ बिलमाई॥
आनि जेँवावै अपने दोसा[1], राजबार कर लेइ परोसा।
पाक रसोई ठाँव सँवारा, जत कत गये बुलावनहारा॥
जोगिन पाँति आनि बैसाई, कुमुदिनि कौंलावति पहँ आई।
चीन्हँहु आइ कौंल रवि मानी, जेहि बिनु रहसि रैनि कुम्हिलानी॥
को अस जोगि काहि सिर जटा, जेहि के विरह परी हिअ कँटा।

सुनि धाई कौंलावती, भा अनन्द हिय माँझ।
चितवत भई निरास जिअ, होइ गई जनु साँझ॥ ३२८॥

कहेसि कुमुदिनी एह गन तारा, वह निहँ आउ सूर उजियारा।
बेगहिँ खोजहु देवसहिँ जाई, जनि रहि जाई रैनि हिय झाँई॥
आसन आसन ढूँढ़हिँ दासा, दहु केहि आसन मिलै सो आशा।
कुँअर गवन सर साज सँवारा, तत खन आवा राज हँकारा[2]॥
कहेसि आजु है राज बुलावा, जोगिन कतहुँ जाइ नहिँ पावा।
पहिले राजपरोसा खाहू, पाछे जहँ भावे तँह जाहू॥
अग्या राज न मेटइ कोई, का जोगी का भोगी होई।

जोगिन्ह सुना अतीथ एक, आवा अग्या मानि।
बहु आदर कै लइ गए, सिंह पुरुष पहिचानि॥ ३२९॥

कुमुदिनि देखि कुँअर की ओरी, कहेसि किये अलि पंकज जोरी।
निहचै यही बिदेसी जोगी, परगट जोगि गुपुत कोउ भोगी॥
निहचै यही सूर उजियारा, जेहि बिनु कौंल आहि बिकरारा।
निहचै यही सो भौंर उदासी, जेहि बिनु जल मँह जलज पियासी॥

१—दिवस = द्योस = दिन को। २—बुलावा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निहचै यहि पहँ पेम ठगौरी[1], जो धन[2] देखै होइ सो बौरी।
जानि बूझि कोउ जीव न देई, लोयन कोर छोरि जिउ लेई॥
धनि सो कँवल धनि यह रबि साईं, हम कुमुदिनि कहँ लखैं तराई।

गई धाइ सो देखिकै, कँवलावति के पास।
कहेसि कि मलिनाई तजो, सूर कीन्ह परगास॥ ३३०॥

सुनत सूर कौंलावति रानी, अति हुलास चखु भरि गए पानी।
तब कुमुदिनि हँसि पूछा बाता, कहु दहुँ मोहिं सूर परभाता[3]॥
जहँ हुलास तहँ हँसी बखानी, लोचन पानि भरे का जानी।
कौंलावति तब उत्तर दीन्हाँ, सुख कर ठाँव दुःख हुत कीन्हाँ॥
निसि जो अथैगा पीतम[4] सूरा, हिय सर रहा दुःख जल पूरा (क)।
अब पिउ आइ चाह तेइँ दीन्हा, सुनि सुख हंस फुरहुरी लीन्हा॥
तेहि की पाँख पानि जो अरा, सेा दुहु लोचन के मगु ढरा।

दिष्टि लपेटी सुरति पिय, अब सुनि दरसन होइ।
दुहुँ लोचन के नीर सेाँ, बेगिअ डारौं धेाइ॥ ३३१॥

कौंल आइ दिनकर पहिचाना, भा रतनार[5] बदन पिअराना।
दरसन देखि दंडवत करी, कहेसि कि एही अली हौं छरी॥
यही मेार जिउ लीन्ह चेाराई, यही मंत्र पढ़ि हौं बौराई।
जेहि बिनु राति अही कुम्हिलानी, सेा तैं सूर देखावा आनी॥
तैं बरबस हौं चेरी कीन्हा, अेा बिनु दाम मेाल पुनि लीन्हा।
अेाहि के हेरत हिय न सेराई, नियर जाउँ करु सेाइ उपाई॥
असमन आवै हेाउ जो हेाना, नियर जाइ मुख देखौं लेाना।

१—ठगने की जड़ी। लोगों का विश्वास है कि साधुओं के पास कोई जड़ी होती है जिसे छुला कर लोगों को मुग्ध कर उन्हैं अपने वश कर लेते हैं फिर उनसे ठग कर जैसा चाहते हैं कराते हैं। गद्द। २—स० धन्या = स्त्री। ३—उगा।
४—प्रियतम। (क) हिय यहँ रहा दुःख कर कूरा। पाठा०। ५—लाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कह कुमुदिनि संसय कछु, जनि जिअ माहिँ करेहु।
आपन हाथ परोसि कै, भोजन जोगिहिँ देहु॥ ३३२॥

कौंल सोरहो साज बनाई, रहसि संभु[1] सेवा कहँ आई।
अपने हाथ परोसा लेई, दुनौं हाथ जोगिन कहँ देई॥
दइ भोजन बिनवै कर जोरी, मन अरु नैन कुँअर की ओरी।
कुँअर न देखै सीस उँचाई, रहा नैन दुइ पाएन्हँ लाई॥
कौंलावति कहँ सबै सिंगारा, अंग अंग होइ लागु अँगारा।
जाहि लागि सब साज सो साजा, देख जो सेा न आव केहि काजा॥
बहुरि हिये महँ करै बुझाऊ, जौ न देख तौ का पछिताऊ।

मोरे मुख सौं सहसगुन, सुन्दरता ओहि पाउ।
जौ दिन दीप न दीखई, यहि कर का पछताउ॥ ३३३॥

पुनि रानी छर[2] एक उपावा, भोजन भीतर हार चेारावा॥
तेहि भोजन सौं खप्पर भरा, लै सुजान के आगे धरा॥
ओ पुनि ठाढ़ भई कर जोरी, सुनहु देव एक बिनती मोरी।
बारी गयेउँ काल्हि एक घरी, खेलत तहाँ काहु हौं छरी॥
तेहि घरी सेती अब ताईं, डोलै गात पात की नाईं।
ओ जो चित्त काहु हुत हरा, अबहीं आइ फेरि घट परा॥
परसन होहु करौं नित पूजा, मोरे तुम बिनु और न दूजा॥

देखु न हिये बिचारि कै, तेार सबै यह भाव।
करु सुदिष्ट ओ कृपा जेहि, जाइ मेार अरसाव॥ ३३४॥

सुनि के कुँअर हिये तब जाना, चलत पंथ भाँखर[3] अरुझाना॥
जेा बरि चलौं कहैं मति छोटी, अरझत होइ बात पुनि खोटी।
मोरे करत न एकौ होई, जेा बिधि करै होए पै सोई॥

१—शिव = योगी। २—छल = चालबाज़ी। ३—कँटीली झाड़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज रासो ।

यह हिन्दी साहित्य का सब से प्राचीन ग्रन्थ है जो अब तक प्राप्त हुआ है। इसमें कवि ने भारतवर्ष के अन्तिम क्षत्री सम्राट् राजा पृथ्वीराज का जीवनवृत्तान्त विस्तारपूर्वक लिखा है जो आदि से अन्त तक विचित्र घटनाओं से भरा हुआ है। इतिहास प्रेमियों के लिये तो यह ग्रन्थ अनमोल रत्न है। इसकी भाषा कुछ कठिन है अतः सभा ने समस्त ग्रन्थ के सारांश को सरल हिन्दी भाषा में इसके साथ ही साथ छपवाया है जिससे मूल ग्रन्थ के पठन पाठन में बड़ी सहायता और आनन्द मिलता है। मनोरञ्जक तो यह इतना है कि कहीं से कोई पृष्ठ उठा कर दस पांच पंक्तियाँ पढ़िये फिर कदापि आप समस्त ग्रन्थ पढ़े बिना नहीं रह सकते। जिन हिन्दी प्रेमियों ने इस ग्रन्थ को अब तक नहीं लिया है उन्हें इसकी एक प्रति अवश्य लेनी चाहिए। इसके ६६ पर्व्व २० भागों में छपे हैं जिनका मूल्य २३।-) है। प्रत्येक भाग जुदा जुदा भी मिल सकता है। मूल्य १।) के लगभग है।

अन्य उपयोगी पुस्तकें ।

हम्मीर रासो (रणथंभौर के वीर शिरोमणि महाराज हम्मीर देव का जीवनचरित) २)
हम्मीर हठ ,, ॥)
जंगनाम (दिल्ली के बादशाह बहादुर शाह के पुत्रों का युद्ध) ॥।)
इन्द्रावती १॥)
कवि आनन्द घन कृत बिरहलीला=)
भूषण ग्रन्थावली (प्रसिद्ध कवि भूषण के शिवराज भूषण, शिवा बावनी आदि ग्रन्थ) १॥।=)
सुजान चरित्र २)
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवनचरित्र ॥=)
महिला मृदुबाणी (भारत वर्ष की विदुषी स्त्रियों की संक्षिप्त जीवनी) १)
हिम्मत बहादुर विरुदावली (बांदा के प्रसिद्ध वीर हिम्मत बहादुर का चरित्र) १)
नन्द दास की रासपंचाध्यायी ।=)
अखरावट ।=)
यूरोपीय दर्शन (यूरप के दर्शन शास्त्र का इतिहास) ॥।)
परिचर्याप्रणाली (रोगी की शुश्रूषा करने की विधि) ।)
संक्षेपलेखप्रणाली अर्थात् हिन्दी शार्टहैण्ड १)
महाराणा प्रतापसिंह (नाटक) ॥।)

ये सब पुस्तकें मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से मिल सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीर्ण व अजीर्ण के दस्त की दवा।

खाना पचानेवाले रसों के घटने बढ़ने वा विकार से अजीर्ण रोग होता है जिसके यह लक्षण हुआ करते हैं—खाने के बाद पेट

भारी जान पड़ना, पेट में वायु होना, जी मिचलाना, खट्टी वा व्यर्थ डकार आना, छाती जलना, मुंह में पानी भर आना, पेट में थोड़ा थोड़ा दर्द होना, चित्त की ग्लानि, आलस्य आदिक। जब तक खाना हजम की थैली में रहता है और पाचनक्रिया कठिनता से होती रहती है यही हालत होती है। जब यह अनपचा खाना अँतड़ियों में उतर जाता है तब पेट में गड़गड़ाहट होती है, पेट फूलता है व दस्त की चेष्टा होती है। दस्त पतला वा पानी के ऐसा होता है। कभी कभी खाने के थोड़ी देर पीछे ही दस्त हो जाता है। दस्त होने से शरीर क्षीण होता है। ये सब हालतें कभी कम, कभी अधिक होती रहती हैं और महीनों तक चलती हैं। रोगी का शरीर दिन पर दिन गलता जाता है। अन्त को असाध्य हो जाता है।

शरीर की साधारण पुष्टि का घटजाना इस रोग का कारण है। नीचे लिखी हुई हालतों में ऐसाही होता है—

वृद्ध अवस्था, कोई विशेष रोग के बाद कमज़ोरी, कम खाना (जैसा कि व्रत, लङ्घन, पारण आदिक में लोग करते हैं), धातु के व्यर्थ नष्ट होने से क्षीणता, अधिक श्रम, दुश्चिन्ता वा शोक, प्रसव के विकार से कमज़ोरी।

इन विषयों को विचार कर डाक्टर बर्म्मन ने अजीर्ण की दवा बनाई है। खाना हज़म करने व अजीर्ण के दोषों को मिटाने में इसकी विशेष शक्ति है। यह दवा छोटी छोटी टिकिया की ऐसी बनी हुई है। पंदरह रोज़ के सेवन योग्य ३० टिकिया की एक शीशी का मोल १।) रुपया। डाक महसूल १ से ४ शीशी ।-) आने।

डाः एस.के. बर्म्मन ५, ६, तारचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पुस्तक संख्या २१

अङ्क संख्या ४३]

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक, श्यामसुन्दर दास, बी० ए० ।

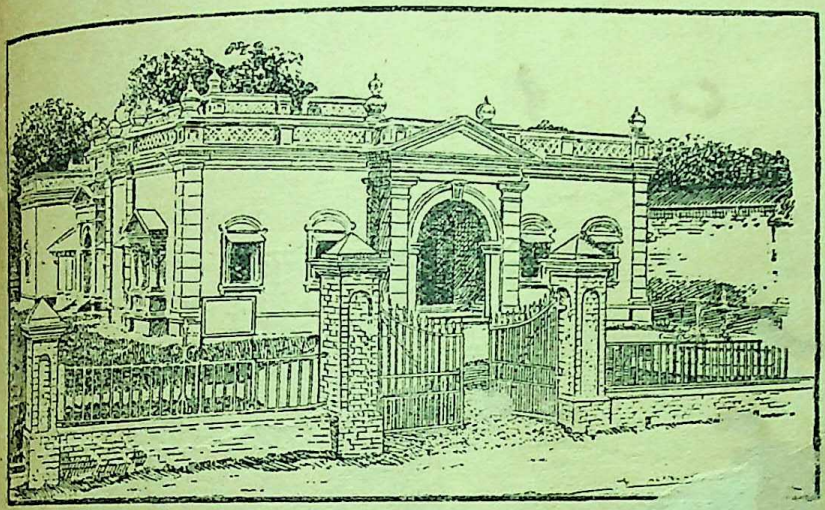

FASCICULUS NO. 43.]

कंथा झारि [ढूँढ़ि कै झोली , गहि
चलत दिगंवर कोउ न पूछा , गहै न
देखि दिगंवर सब पछताने , जोगि पंथ न
काहे लागि समेटी झोली , तापी कस न

PUBLISHED BY
THE NAGARI PRACHARINI SABHA,
BENARES.

[Price per fasciculus As. 8.

Issued on the 10th December 1912.
Printed by Apurva Krishna Bose at the Indian Press,
Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका।

(२१) उसमान कवि-कृत चित्रावली—बा० जगन्मोहन वर्म्मा सम्पादित

(पृष्ठ १२९ से १९२ तक)

साही होता है—

ई विशेष रोग के बाद कमज़ोरी, कम खाना

न, पारण आदिक में लोग करते हैं), धातु के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह सुनि खप्पर झोली पाहा[1], उठि भा ठाढ़ कौंल नहिँ चाहा।
गुरु के उठत उठे सब चेला, कौलहिँ भा जनु निसि सौं मेला॥
पंकज सौं कुमुदिनि हँसि बोली, आजु सोह घन बेलि कि चोली।
बना अंग अँग सबै सिँगारा, पै कस गीँव न पहिरे हारा॥
सुनि कै देखेसि उरज कँह, कहेसि अबहिँ है टूटि।
इहँवहि काहू लीन्ह है, और कहूँ नहिँ छूटि॥ ३३५॥
भा अँदोर सब काहुन जाना, कौंलावति कर हार हेराना।
ढूँढ़हिँ सखी जहाँ तहँ पूँछी, जोगि भारहिँ झोली छूछी॥
कौलै नेगिन्ह कहा हँकारी, साधु चोर कै लेहु बिचारी।
ठाढ़ होहु घेरि कै बारू, रोकहु घाँघी और सेवारू॥
एक एक सब काढ़हु हेरी, सीप सीधरी[2] केका[3] बेरी[4]।
कौतुक देखै सब संसारा, साधु चोर कर होइ बिचारा॥
आजु कसहु कंचन कै ताता, दहुँ को पीत होइ को राता।
जोगी बोले सहज सो, मुंद्रा मुकटा बार।
जाना एही पंथ अब, दै दै आपु बिचार॥ ३३६॥
नेगी ठाढ़ भए तेहि बारा, एक एक कर लेहिँ (क) बिचारा।
कंथा झारि ढूँढ़ि कै झोली, गहि भुज काढ़ि देहु भल बोली॥
चलत दिगंवर कोउ न पूछा, गहै न कोऊ देखि कै छूछा।
देखि दिगंवर सब पछताने, जोगि पंथ तब भये अचाने॥
काहे लागि समेटी झोली, तापी कस न लाए कै होली।
काहे के हम कंथा सीया, काहे लागि हम धंधा कीआ॥
भा भरि जनम काँध कर भारा, आजु सो गीँव केर फँसियारा।
भा गिँव कंथा काल अब, औ जम झोली काँख।
झारन अरुझा जाइ के, अपने सीगन्ह झाख॥ ३३७॥

१—डाला। २—एक मछली। ३—नीलकुमुदनी। ४—बेरी = कुईं का फल। (क) लाग—पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२६) जोगी बंधन खंड ।

देखि देखि सब काढ़े जोगी, रहा पाछ तब बिरह बियोगी।
कहेसि कि महूँ निकसि कै जाऊँ, जोगिन साथ पंथ मकु पाऊँ॥
अस नहिँ जानै जोगि अजाना, राज-परोसा विष सौं साना।
जे रुचि राज-परीसा खावा, जानि बूझि ते जोग नसावा (क)॥
जोगिहिँ राज संग तस लागा, फूलहिँ आँजन कर जस दागा।
निसरत अबहि बार महँ आहा, संकट कै तब नेगिन्ह गहा॥
झोरि खोलि जब कंथा झारा, गिरा हार जग भा उजियारा।

हार हेराना पाउ जब (ख), चहुँ-दिसि बढ़गा सोर।
निकसि चले जोगी सबै, कुअर धरा कै चोर॥ ३३८॥

लागा छर जो कौंलै साँधा, मिलि जन चार चोर कहँ बाँधा।
कुअँर देखि मन अचक रहा, कहेसि कि बिधि यह होइगा कहा॥
बोती आउ मीचु पुनि आई, चित्रावलि नहिँ देखै पाई।
गा सब जनम अमिरथा मोरा, कत मैं खर कतवार बटोरा (ग)॥
ऐ बिधना जो तोहिँ अस भावा, महूँ जीव ओहि मारग लावा।
मन वच तोहिँ सुनावउँ भाखी, अहसि तुही अब मोरी साखी॥
जेहि कारन गिँव पहिरा कंथा, जीव देत हौं तेहि के पंथा।

मान इहै पछताव मन, सौंरि उठै जिउ आगि।
इतना जान न चित्रिनी, मुवा जोगी मोहिँ लागि॥ ३३९॥

बाँधि चोर राजा पहँ आना, देखि रूप सब जग पछताना।
अस रुपवंत चोर नहिँ होई, अौ जो होइ मार नहिँ कोई॥
सागर नगर इहै एक रीती, संतत यही रीति महँ बीती।
तसकर जाको विषै चोरावै, ता कहँ राजा पूँछि पठावै॥

(क) जे केहु राज परोसा खावा, जानि बूझि तिन जोग नसावा। पाठा०।
(ख) पावा हार हेरान जब। पाठा०।
(ग) जममा आई मोर यह झोरा। पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जौ सो कहै तौ सूरी देहीं , नाहिं तौ बांधि डाँड़ कछु लेहीं ।
औ जो सोइ छुड़ावै आई , बिलँब न लाव देइ मकुलाई ॥
आपन काँध भार नहिं लेई , तेहि की अग्याँ अग्याँ देई ।
नृप कह जाकर चोर है , ताकहँ पूछहु जाइ ।
नेगी आगे कौंल के (क) , ठाढ़ भए सिरनाइ ॥ ३४० ॥

कौलै नेगिन्ह अज्ञा दीन्हा , आजु सिंभु की सेवा कीन्हा ।
जोगी जेंवाएँ जो फल पाऊँ , जीउ मारि का पुन्य नसाऊँ ॥
मैं ससिरूप अहौं वह राहू , गहा रहै तौ मुसै न काहू ।
राखहु बाँधि याहि बँद माँही , ऐसन चोर छुटा भल नाहीं ॥
नेगिन्ह चोर बाँधि बैसारा , औ सँग दिये पाँच रखवारा ।
पाँचो भूत रहैं नित घेरे , कोह भरे चखु सौंहन हेरे ॥
कै अनेक नेगी रखवारी , माँगहिं आपनि आपनि बारी ।
जोगी परा पाँच बस , तातैं भा बिकरार ।
पाँचो नाच नचावहीं , आपनि आपनि बार ॥ ३४१ ॥

दिन बीता निसि भई अँधेरी , कौंल हिए खरकी वह बेरी ।
कुमुदिनि कहँ लै मतै बईठी , कहेसि चोर पहँ जाउ बसीठी ॥
कहु तैं ऐस निछोही जोगी , जीउ लेइ कीन्हेसि हौं रोगी ।
हार दिए नहिं छूटसि चोरा , जौ लौं जीउ देसि नहि मोरा ॥
जनु देखसि अपनहिं साँकरी , तुम्हते हौं सुठि सँकरी परी ।
जौ है परी तोरे पग बेरी , मोरैं हिए जो देखसि हेरी ॥
जौ तोरे हाथन्ह है फाँसा , मोरे गिँव जेहि आव न साँसा ।
पंछी पंथी बन बसै , तिन्ह क भरोस न होइ ।
तबहीं लौं ए थिर रहहिं , रहहि जौ घेरे कोइ ॥ ३४२ ॥

(क) आइ कौंल के आगे । पाठा० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहसि सत्य को हसि का नाऊँ, कौन काज आएसि पहि ठाऊँ।
अरु कहवाँ को मनसा तोरी, कहु सो जाइ जिउ संसय मोरी॥
जोगि न होइ कोउ पहि रूपा, प्रगट होसि वैरागी भूपा।
जौ हसि भूप तो परगट होहू, होइ भरोस हिए कछु मोहू॥
जौ हसि जोगि आदि गिँव कंथा, देहु सबद लागौं तुअ पंथा।
तोरैं पंथ पंथ है साईं, दाहिन होहु देहु जनि बाईं॥
तोरे नाव चढ़ी हौं वारा, गहि गुन खेइ लगावहु पारा।

जस तू मोरे बन्द महँ, तस हौं तोरे बन्द।
तोरे तन जो एक दुख, मोरे मन सो दंद[1]॥ ३४३॥

जहाँ कुअँर बँद भीतर अहा, कुमुदिनि जाइ सँदेसा कहा।
कुअँर कौंल जस कौतुक कीन्हा, सुना सबै पै उतर न दीन्हा॥
बहुत बिनति कुमुदिनि कै हारी, देखा सौंह न नैन उघारी।
होइ निरास कुमुदिनि फिरि आई, कहेसि कँवल सौं अल निठुराई॥
सुनु पदुमिनि कुमुदिनि हौं सोहौं, बातनि रैनि नखत ससि मोहौं।
एह पाहन जल परै न भीजा, कहौं रोइ दुख तौ न पसीजा॥
सुनि कै कौंल लीन्ह उर साँसा, कह अब परा कठिन गिँव फासा।

बाँधी डोरी प्रेम की, बर सौं जाइ न छूट।
दीपक प्रीति पतंग ज्यौं, प्रान दिये पै छूट॥ ३४४॥

पुनि आपन मन कहँ समुझावा, अबही वै मो सौं दुख पावा।
मकु बीते बासर दुइ चारा, जोगि निछोही होइ मयारा॥
कहहु जाय जे हैं रखवारा, जोगी दुःख सहै नहिँ पारा (क)।
औ कछु तिन कहँ दहु अँकोरी[1], कहहिँ न कतहुँ कथा यह मोरी॥
भूतन्ह जबही पूजा पाई, होए गए पानी गइ कठिनाई।
लालच बाँधा सब संसारा, लालच सो मृदु होइ पहारा॥
लालच हस्ती कर बल हरा, लालच सौं हरनाकुस धरा।

१—द्वन्द। (क) जोगी दुःख न पावैवारा। १—घूस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो सिर होइ सरग लागा , नवै न कौनी कानि[1] ।
लालच बेगि लगावै , पुहुमी सीस सेा आनि ॥ ३४५ ॥

कौलैं राता चीर उतारा , औा जत भूखन बाजनहारा ।
पहिरि अपूरब साँवरि सारी , तम कहँ मिली दिये अँकवारी ॥
जानहु चखु लुकअंजन दीन्हा , कोउ न देख भेष तस कीन्हा ।
दूरहिँ वैसी बारि की ओरी , देखै ससि मुख होइ चकोरी ॥
मनहिँ कहै भौा दरसन लाहा , सुनेउँ न बात रही उतसाहा ॥
इह नैनन्ह दहुँ का तप कीन्हा , जासोँ यह सुख दरसन लीन्हा ।
ए सवनन के सदा सुभागे , पिय मुख बचन सुनी अनुरागे ॥

अधरन लागी चखु रहीँ , अब कह अब कह बात ।
तमचुर[2] एही सोच महँ , बोलि उठा परभात ॥ ३४६ ॥

तमचुर सबद सुनत सुधि आई , जनु सोवत कोउ आनि जगाई ।
तमचुर बोल बान अस लागा , चहुँ दिसि उठे रोर कै कागा ॥
उठत देखि रबि किरिन कि धारा , जीउ छाड़ि भागी तेहि बारा ।
जेहि जन के मन प्रेम अँकूरू , ताके बैरी तमचुर सूरू ॥
परी सेज पर मंदिर जाई , जिउ बिनु जानु चित्र लिखि लाई ।
अहा जो अंबुज बदन बिगासा , भा कुमुदिनि रवि के परगासा ॥
ज्यों ज्यों होइ जगत उजिआरा , त्यों त्यों लागै मदन लुवारा[3] ।

मीत न बैरी होइ जग , होइ मीत रिपु अंत(क) ।
मोहि मीत दुरजन भयेा , जौा मुख फेरा कंत ॥ ३४७ ॥

कहेसि रोइ हे दिनकर देवा , मैँ सन्तत कीन्ही तोर सेवा ।
सरवर माहँ एक पग खरी , सिर की धूप सकल तन जरी ॥
सुमिरत सब निसि रहौा मलीनी , तुमरी सेवा भइ तन छीनी ।

१—खनि, विधि । २—एक पक्षी जो प्रातःकाल में बोलता है । चुहचुहिया ।
३—आग की ज्वाला । मदन दँवार । पाठा० । (क) होइ भंद रवि अंत । पाठा० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुख महँ सेइउँ दै दुख जीवा , गाढे आइ न छडावहु सीँवा[1] ॥
टुक दुखदिन महँ बैरी होहू , बिनु अपराध धरहु अब कोहू ।
अजहूँ सो सेवा सौंरहु नाहीँ , अथवहु वेगि धरी दुइ माहीँ ॥
एहि बिधि बिनवत सब दिन बीता , भई रैनि भा हीवर[2] सीता ।
पहिरि चीर तन साँवरी , भेस कीन्ह अभिसार ।
देखेसि चंद चकोर ज्यौं , जौ लगि लग भिनुसार ॥ ३४८ ॥
एहि विधि अहनिसि कौलहिँ जाई , कुअँर रहा चित्रिनि लव लाई ।
अस भा लीन ध्यान ओहि केरेँ , देखे ओही आन को हेरें ॥
चित्रिनि सुरति रहै चखु घेरी , सकै न दिष्टि आन मुख हेरी ।
जौ काहू पर बरबस जाई , उहै सुरति तेहि लेइ छिपाई ॥
ता तेँ सबै निअर औ दूरी , आपुहिँ आप रहा जग पूरी ।
बिधिना दे कै सुदिष्टि दे मोहीँ , लोचन सौहँहिँ देखौं तोहीँ (क) ॥
दूजा जाइ न हिय महँ लँखा , जहँ देखौं तहँ एकै दीखा ।
तुही रहा सब पूरि जग , पै सुदिष्टि नहिँ मोहिँ ।
देहु सो अंजन प्रेम चखु , जेहि सब देखौं तोहि ॥ ३४९ ॥

---

(२७) सोहिल खंड ।

सोरठ[2] देस विमल विधि साजा , सोहिलसेन जहाँ हुत राजा ।
तेहि के निकट जाइ जग जाना , कौंलावति कर रूप बखाना ॥
सागर-पति सागरगढ ठाऊँ , तेहि घर धिय कौंलावति नाऊँ ।
अति सुरूप जनु पंकज कली , सुनि महि सकल भौंर होइ चली ॥
कौंल बदन जनु दिनकर दीठा , कौल नैन जनु भौंर बईठा ।
कौंल पत्र तन सोंहै सारी , कौंल उरज लखि जगत भिखारी ॥
नाभी कौंल फिरैँ जेहि घेरेँ , बार न होहिँ फिरैँ नहि फेरेँ ।

१—सीमा = मर्य्यादा । २—हृदय । (क) लोचन चीन्हि बुझावहु तोहीँ । पाठा० । ३—सं० सौराष्ट्र ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राते अंबुज पग दोऊ , कौंल-चरन जग-मोह ।
सुनत बिकल राजा भयेउ , हिये लाग जनु लोह ॥ ३५० ॥
लागा हिये जो रति पति बाना , घूमै जनु सावज भरमाना ।
होइ बिसँभार परा भुइँ राऊ , लगे लोग सब करै उपाऊ ॥
पुनि जो चेत चितहि भा आई , नेगिन्ह कहेसि करौ कटकाई[1] ।
सुनेउ आजु जो कँवल बखाना , जेहि ते मन होइ भौंर भुलाना ॥
माँगि बिआहौं जाइ सो बारी , भा जेहि पेम हिया फुलवारी ।
सागर सदा मोर तरहेलू[2] , कौन जगत जो अज्ञा पेलू ॥
जौ हित देइ तौ मया करेऊँ , नाहिँ तौ हठ बरिआईं लेऊँ ।
हित सौं थापौं राज फिरि , और देस पुनि देउँ ।
नातरु दधि सब भुज वरन , मथि के मानिक लेउँ ॥ ३५१ ॥

फिरै लाग सब नगर दोहाई , साजहु लोग भई कटकाई ।
इँहहि क साज काज पुनि आवा , नहि तौ रहिय हाथ पछतावा ॥
गाठि खोलि कै लेहु बेसाहा[3] , अपनेहिँ साथ होइ निरबाहा ।
करौ निपट जेहि करना होई , उहाँ काहु की सुनै न कोई ॥
अपनहिँ सीस जो लागै घाई , आन की कौन सिरावै जाई ।
परिहै जबहि आनि सौं काजू , होइहै विष यह सब सुख साजू(क) ॥
सभा सराहे होइ न सूरा , रन खंडै सो राउत[4] पूरा ।
मान कसौटी सुभट रन , कंचन सम नर गात ।
तहाँ कसे पै जानिऐ , कौन पीत को रात ॥ ३५२ ॥

सुनि कटकाई कटक सँभारा , घरेँ घरेँ पुनि परी पुकारा ।
साजै लाग लोग सब साजा , बाज निसान[5] गौन कर बाजा ॥
अहा सोच जेहि एहि दिन केरा , कै राखा ते साज सबेरा ।
सुनतहि अगमन उठि कै चले , सबै सराहहिँ राउत भले ॥

१—तय्यारी । चढ़ाई । २—दबायल । मातहत । ३—मोल, खरीद् ।
(क) सखराजू । पाठा० । ४—राजपुत्र = रायउत = राउत = क्षत्री, वीर । ५—डंका ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जेहि कहँ एह दिन घरी न सूझी, रैनि नींद सुख संपति बूझी।
अपनैं नाहिन पावहिँ माँगा, का लै चलहिँ साथ सब खाँगा।
खेलत दिवस सोइ निसि गई, जब सिर परी सूझि तब भई॥
लाजनि गोवहिँ मुख झुरहि, कहहिँ हाथ धरि माथ।
अपने गुन पाछे परे, चला निकसि सब साथ॥ ३५३॥
सोहिलसेन साजि दल चला, कमठ कसमसा अहि खलबला।
डरे पुहुमि सब राउत राना, का पर सोहिल-राउ रिसाना॥
को अस बली सौंह जो रोपा, का कहँ ऐस साजि कै कोपा।
एह अगस्त सम सूर बिसेखा, उदधि सुखाइ सौंह जो देखा॥
हम सरिता केहि गिनती माहीं, चलहु दंड[1] लै सेव कराहीं।
सेवा पाहन भयेउ मयारा, अचयेउ छीर जान संसारा॥
ठाकुर जाहि चहै जिउ मारा, सेव देखि पुनि होइ मयारा।
बहुरि कहै हम किंच[2] नर, इह इँदरेसर देव।
चलहु जाइ बिनती करहिँ सकब कहा कै सेव॥ ३५४॥
बाजत गाजत चला निसाना, कोस एक भा पहिल पयाना।
जीत नाउँ तहँ बिप्र सयाना, सगरे नगर रहा पुजमाना[3]॥
काँध जनेऊ सीस असीसा, गौनत राजहिँ आइ असीसा।
कहेसि कि बचन एक सुनु राजा, है तोहिँ उहाँ आन सौं काजा॥
जनि भूलहु करु आपन राजू, का कह भा जग ऐसन साजू।
को जग राज एकछत कीया, जो नहि मीचु पिआला पीआ॥
जब जम आइ सीस कच गहही, भाइ बन्धु कोइ संग न रहही।
अपनेहि माथ तहाँ परै, खोजे मिलै न साथ।
गाढ़े सोई उपकरै[4], होइ दीआ जौ हाथ॥ ३५५॥
दान कि बात सुनहु रे भाई, देहु दान नित हाथ उठाई।
हितू दान सम आन न पावा, एक जाइ दस कहँ ले आवा॥

१—कर उपहार। २—निःकिंचन = दरिद्र दीन। ३—सं० पूज्यमान।
४—(क्रि० उपकरना) काम आता है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दान खरग होए बैरिहिँ लागै, दान पास होइ पहरु जागै।
दान दुहू जुग होइ सहाई, उहाँ मुकुति देइ इहा बड़ाई॥
दान नाव लै भार चढ़ावै, ग्रौकरिआ[1] होइ पार लगावै।
रक्षा करै दान मँझनीरा, बूड़त आनि लगावै तीरा॥
बिरिधि निमिखि दान हुत पावै, जगत जान जिउ जाइ छड़ावै।
तेरे दरब न लेख मह, हस्ति घोर पुनि साज।
गौन करहु दै दान कछु, सीद्ध होइ सब काज॥ ३५६॥

राजा कहा विप्र सन आई, दरब अकारथ दिया न जाई।
दरबहिँ तेँ यह राज पसारा, दरब लागि जग आइ जोहारा॥
जौ लहि दरब कटक सब संगा, रन जिउ देत न सँवरहिँ अंगा।
एह जग माहिँ दरब मनिआरा, दरब दिवाकर अस उजिआरा॥
दरबवंत जो तपसी भेसा, दरब रहै घर दिपै[2] विदेसा।
प्रान देइ एह दरब बटोरा, सेतीँ दीजै कौन निहोरा॥
जग दुइ भाँति पखारिहिँ पाई, कै सुख देहिँ कि करैँ बड़ाई।
जहँ लालच तहँ कौन सुख, लोभहिँ बहुत उपाइ।
कुलपति तन दुति सो दरब, बातन्ह दियो न जाइ॥३५७॥

सोहिल चला कटक संग लीन्हे, कौल प्रेम मन मधुकर कीन्हे।
प्रेम खोर महँ अति सकराई, जतन जतन मन तहाँ समाई॥
जौ लौं मन तहँ ठाउ न पावा, तौ लहु तन तेहि वार न आवा।
तेहि कारन ए लोग सनेही, गलि गलि माँसु हाड़ रह देही॥
सुख संपति घर बार बिसारा, बावर भए फिरहि संसारा।
प्रेम मेरु अति दुर्गम ऊँचा, सहस माह कोउ एक पहूँचा॥
एह मगु देखि कटक जो फूला, अपनेहि कटक आपु सो भूला।
सोहिल ऊठा गरव कै, चला कटक लै साथ।
सिंधु मरजिया होइ धसै, रतन चढ़ै तब हाथ॥ ३५८॥

१—उपकारी। २—प्रकाशित हो, चमकै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटक असूझ जाइ जेहि बाटा , बन अमराइ बिहर जा पाटा।
जेहि जल तीर राति बस जाई , पानि ठाँव तहँ धूरि उड़ाई॥
अति असूझ दल अगम पहारा , कहत न बनै जेत बिस्तारा।
जेतिक राति कटक परि जाई , चलै दिवस तेहि की चौथाई॥
एहि विधि नित उठि करत पयाना , सागर नगर आइ निअराना।
गरब कहै गढ़ छेँकहु जाई , मति कह प्रथम बसीठ पठाई॥
गर्वहि मंत्रि बाद खिन आवा , मति बरिअर भै गरब निवावा[1]।
एक बामन अरु माट पुनि , चातुर बकता ढीठ।
ढूँढ़ि पठाओ दुइ जना , सागर पाँहि बसीठ॥ ३५९॥
सागर गढ़ बसीठ चलि आए , दर असीस राजहिँ जोहराए।
कहिन कि धनि सागर गढ़ देसा , औ धनि सोहिलसेन नरेसा॥
तैँ ससिहर वह रवि मनिआरा , तुम दुहुँ निसि वासर उजिआरा।
तैँ निसिपति वह दिनपति साईँ , तैँ ससिहर वह अग्नि सबाईँ॥
नियरहि आन न पुहमी आँटी , साँझ भोर सेवा दोउ बाँटी।
सोहिल सेन तरुन रुपवंता , छत्री छत्रपती कुलवंता॥
दुहुँ छत्री जो होइ सगाई[2] , तिहुँ पुर मानहिँ अनँद बधाई।
तुम घर कौंल सो उपना , तिहु पुर पसरी घानि[3]।
सोहिल आयो भौंर होइ , लेहु जो आदर मानि॥ ३६०॥
बोला सागर सुनहु बसीठा , अस बसीठ जग काहु न दीठा।
कौन सो घर जेहि बारि न होई , सन चढ़ि माँगै नहि कोई॥
घर सोँ पठवत बाभन बारी , जेहि घर धिआ सो पावै गारी।
भलेहिँ जो सोहिल राउ कुलीना , मद्दू नाहिँ अपने कुल हीना॥
अज्ञा राज परछि सिर लेतेउँ , बूझि बिचारि उतर तब देतेउँ।
वै मोपर कीन्ही कटकाई , अब जो मानौं कौन बड़ाई॥
कहब जाय अब मोर सँदेसा , राजा पलटि जाहु सो देसा।

१—दबा। २—संबन्ध। ३—महँक, सुगंधि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेहि घर गारी दीजिये , जहाँ बारि संजोग ।
कवँल कली कौलावती , नाहिँ बिआहन जोग ॥ ३६१ ॥

बसीठैं कहा नैन कै राता , सोहिल सेन सूर परभाता ।
रिसि औ मया दोउ तेहि पासा , जो जेहि चाहै सोइ प्रगासा ॥
मया करै तौ सीँव छड़ावै , जौ रिसि करै अगिनि बरिसावै ।
तेहि कारन जग जिउ डर होई , भोरहिँ उठि बन्दै सब कोई ॥
गादुर नैन जो जग औतारे , सूर छाड़ि ते बन्दहिँ तारे ।
उतर सँभारि देहु तुम राजा , ऐसो गरब न काहू छाजा ॥
वह अगस्त तैँ उदधि अपारा , अनरस किए परसि किमि वारा ।
जौलहु नहि सनमुख भयउ , कुसल तबहि लौ जानि ।
को सागर जग जल भरयो , जेहि न उतारेसि पानि ॥३६२॥

सुनि राजा होइ सिंह बईठा , कहेसि गरब जनि बोलु बसीठा ।
सोहिल सोँ सैना बर हेरा , मोरे बर एक विधना केरा ॥
देखु कि बहै(क) दुहूँ दिस धारा , बिधना हाथ जीत औ हारा ।
दहुँ का कहँ हनि धूरि मेरावै , काके माथे छत्र फिरावै ॥
एहि कलि महँ औतरे जो आई , कोऊ न संतत अमर रहाई ।
बूढे कैस जिअन का हेरौँ , खरग नाउँ सुनि का मुख फेरौँ ॥
जेतिक जीवन जियउँ नहि तेता , राते करौँ केस यह सेता ।
जाय कहहु सागर कहँ , हाथ लेइ चौगान ।
हाल आउ जो आएव , यहै गोइ[1] मैदान ॥ ३६३ ॥

जाइ बसीठ कही तब बाता , सुनि सोहिल भा ज्यौँ घन राता ।
कहेसि कि सागर कब अस अहा , सोहिल सौँह खरग जो गहा ॥
निहचै औहि मीचु निअरानी , चिउँटिहि चढ़ेउ पाँख तन आनी ।
आजु छेँकि सागर गढ़ भानौँ[2] , सागर मारि कौल घर आनौँ ॥
माँगा वेगि तुरंग सवारी , सोहिल तमकि कीन्ह असवारी ।
बाजा दुंद जूझि कर बारा , जहँ तहँ पखरे[3] बीर जुझारा ॥

(क) खडग । पाठा० । १—[फ़ा० گوی] = गेंद । २—तोडों । ३—पाखर डाला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूरन्ह जहँ तहँ खरग सम्हारा, कोपि चढ़ा मुख भा रतनारा।
सूरन मन उतसाह भा, हुलसहिँ मारू गाइ।
काएर जिउ संसै परा, गयो बदन पिअराइ॥ ३६४॥
चली फउज जनु सावन घटा, चमकहिँ खरग सेल ज्यौं छटा।
बाज दुंद जनु घन घहराई, सेत धजा बग पाँति सोहाई॥
जहँ तहँ मारू[1] ते सुर पूरा, देखि छटा जनु कुहुक मजूरा।
हाथिन पीठि अँबारी कसी, आवहि जानु सरग सौं खसी॥
मिलि जब चलहि तुरंगम बली, पौन झँकोर घटा जनु चली।
चली कमानै[2] गरब गहीली, जौ जिउ हरनी तऊ रसीली॥
जिउ मानिनी गरब-जोबना, एक एक पाइ लाग सौ जना।
पाएन लागे ना चलै, खैचहिँ हाथिन्ह पाँति।
गरबन तऊ न डोलैँ, अस जोवन-मद-माति॥ ३६५॥
बनी तुपक[3] जस बिरहिनि सती, सब तन हाड़ माँस नहि रती।
कांधे चढ़ी फिरै जो रोगी, परगट भेख किये जनु जोगी॥
लीन्हे सँगि अगिन परगसी, बसन अरुन जनु डोरी कसी।
गुटका[4] लीलि लेइँ पुनि साँसा, भसम खाइ मुख धूम निकासा॥
जान प्रतीति सोइ पै गहई, सहज नेह छाती चढ़ि रहई।
ज्यौं ज्यौं बिरह चढ़ावै छाती, त्यौं त्यौं रिसिन्ह होइँ पुनि ताती(क)॥
जिअत न जाइ सरग की माँखी, मारहिँ आँखि जो ताकहि आँखी।
अरिगंजन ते बिधि रची, कसे रहइँ निति लाँक।
पुहमी लावहिँ सीस तर, जौ रन मारहिँ हाँक॥ ३६६॥
हाथ कमान सुन्दरी नारी, हरी लँक पातरी पिआरी।
गुनवन्ती रँग भरी सोहाई, अपने कर करतार बनाई॥
वासौं बरजि पीढ़ी सम देई, बान कटाच्छ जीउ हरि लेई।
बर सौं करै पाट बंधनी, सनमुख आइ नवै मोहनी॥

१—एक बाजा २—तोप। ३—बंदूक। ४—गोली।
(क)त्यों त्यों डसहिँ होइँ ज्यों ताती। पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिअ लगाइ देखै रँग पागी, एक अंक पै नहिँ पै लागी।
भौंहन दिए गाँठि निति रहई, देखि द्रोन ओ सूरपति दहई।
पारबती जिमि पिय सँग रहई, सवन लागि गुनवंतहि कहई॥
मूढ़ न मारै गुन भरी, दुरजन देखि डेराइ।
अस धनि जेहि नर कर चढ़ै, निभरम जहँ तहँ जाइ॥३६७॥

भरे निखंग बान अनिआरे, जनु मँजोर नित पंख पसारे।
राउत सदा सीस पर बाँधे, नवैं न काहु बीच रन काँधे॥
कर बत देइ सीस जग रहै, नैन बाजु सिर करवट सहै।
पंखी अँत्रिख भँवहिँ उदासी, नख सिख लौं सो रहै पिआसी॥
तापी बैरी तीती नाऊँ, एक सर अरथ तीनि तेहि ठाऊँ। (क)
सिसिरन काल-अगिनि पुनि बूझी, जेहि जस लाग ताहि तस सूझी॥
देखत सूध गाँठि हिय माहीँ, अरि भेंटत उर माँह समाहीँ॥
आप माँह पुनि हेतु बहु, एक घर सहस रहाहिँ।
अज्ञा कारी धनुख के, जहँ पठवै तहँ जाहिँ॥ ३६८॥

चमकैँ हाथ साँगि अनि पारी, लहलहाहिँ जनु सांपिनि कारी।
कंचुकि तजैँ बीसदँति कैसी, दृष्टि साथ उर चाहै पैसी॥
जौ करता दै बान बुझाई, तऊ न बूझहि रुहिर निखाई(ख)।
पौन पिए पुनि सीस उभासैँ, अँत्रिख डोलहिँ रसन निकासैँ॥
परसहिँ सबै जानि कै सूधी, प्रान लेहिँ जब होहिँ बिरूधी।
सूर किरन ससि संपति लूटैँ, स्याम बरन जानहु जम छूटै॥
कर लीन्हे पैदर असवारा, जानहुँ परी पुहुमि विषधारा।
साँगि सुवंसी नागिनी, स्याम रूप रससाल।
हित जन कहँ सुख दायिका, समर चढ़े अरिकाल॥३६९॥

बाँधी कटि करवारि विराजी, अति राजी पै नाउ न राजी।
देखत रूप पदुमिनि नागिनि, धामिनि जेउ उठि उठी लागिनि।

१—विषदन्ती = सांप।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जब लगि माँदी[1] महँ रहि गोई, तबहीं लहु निरभै सब कोई॥
नख सिख पानी तेउ उदासी, जीभ निकासे रुहिर पिआसी।
सुन्दरि सदासोहागिनि नारी, जेहि कर चढै ताहि की प्यारी॥
मूठिन मोरि गहै कर कोई, सान दिए पै तीखी होई।
निभरम सोवहिँ नहिँ जहँ जागी, रहै सकल निसि पाटैँ लागी॥

बाँकी बाँकी भौहँ सो, करै कटाछ कलोल।
सूधे नाहीँ जो नवै, सोई जगत अमोल॥ ३७०॥

बारह हाथ बनी पुनि फरी[2], सुंदरि नारि सदा रँगभरी।
अस बरिआरि नारि बिधि कीन्हा, पुरुषन्ह जाइ सरन जेहिं लीन्हा॥
पाछे मेलि सरन जो आवा, सनमुख खाइ आपु तन घावा।
कोमल हिया कौँल जहँ रहई, गात कठोर घाव जहँ सहई॥
दरपन सम पुनि मंजुल गाता, पानी पर जनु पुरइनि पाता।
एकै बात बोलि को बुवरी, फूल बिलोकि कहै जग फरी॥
दूजी अमर बेलि जग आई, जहाँ तहाँ अँत्रिख लपटाई।

संतत पर कारन दुखी, जानत नहिँ अपकारि।
जहँ कहुँ दुइ जोधा लरहिँ, बर बस जाइ मँझारि॥३७१॥

पुनि कटि बाँधे विषम कटारा, जा कहँ आपु कहैँ जमधारा।
सूरा सौँह धसै रन माहीँ, दाहिन पाँव निकारै नाहीँ॥
रन अमेट हथियार मतंगा, जब तब छार चढ़ावै अंगा।
निसि दिन दिये अँधारी रहई, छुटै हस्त बिना को गहई॥
कालरूप कटकहिँ सिंगारा, साँवर लोह लियेँ मतवारा।
बाल बिलोकहिँ अंग उघारी, नाँगा देखि बजावहिँ तारी॥
बरत किये पुनि चित्त न धरई, भोग लिये बल पारन करई।

मान कटारी बुंद जल, हिये समात न बार।
महा अचज संसार मेँ, एक बुंद दुइ धार॥ ३७२॥

१—मियान। २—ढाल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सागर जब बसीठ बहुराए[1], चारिहुँ दिस बारी[2] दौराए।
औ पुनि समाचार लिखि दीन्हा, कौंल लागि सोहिल बर कीन्हा॥
हौं पति लागि पैज रन ठानी, तुम पुनि आवहु अस जिउ जानी।
जौ लहुँ सागर अगम गँभीरा, तौलहुँ पूरक सरिता नीरा॥
जौ वारिध न रहै जग माही, एक छिन महँ सब नदी सुखाहीं।
एह सुनि सरिता हिए सकानी, उतरि जाइ जनि सागर पानी॥
जो जैसेहि तैसेहि उठि धाए, सागर ढिग सब गए हेराए।

जिन जिन हिय अभिमान हा, नवै न सीस नवाहिँ।
सूझि परा सागर विकट, हम नहिँ लेखे माहि॥ ३७३॥

बाज दुन्द जनु घन घहराई, राता सेत धुजा फहराई।
सागर हिये कोप सुनि बाढ़ा, घर तजि सपरि पार भा ठाढ़ा॥
देखा पाहुन आनि तुलाने, आदर कहँ डग चारि पयाने।
बीर अगुमने[3] भुजा पसारी, दुइ दल माँह भई अँकवारी॥
छूटी तुपकैं छूटे बाना, जहँ तहँ होइ लाग घमसाना।
तरुनि भौंहँ सम धनुष बिसेखे, नोचहिँ बान कटाछ अलेखे॥

कहुँ अरुझे पखरैत दुइ, कहुँ गयंद चौदंत।
कहूँ अखारे पुहमि महँ, जनु दुइ मान भिरंत॥ ३७४॥

जहाँ सेलि लागे उर आई, मनहुँ कँवल जल धार सोहाई।
जेहि सिर परी खरग की धारा, मानहुँ बेनी कर पतसारा॥
जाके ओर होई धनुताना, निफरि जाइ सर ज्यौं चखुबाना।
छूटहि चन्द्र बान उजियारे, मानहुँ नट मुख आगि निकारे॥
जब अरसाइ कमान जम्हाई, चुटकिहिँ हनत जीउ लै जाई।
घायल परे जहाँ तहँ हाथी, मानहुँ आहि लोहार की भाथी॥
माथे छूटी सोनित धारा, भाथि फूँकि जनु आगि निकारा।

१—फेरा, लौटाया। २—एक जाति जो दास का काम करती है। ३—आगे बढ़े।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहूँ चरन तनु पग कहूँ, कहुँ गज बाज भुसुंड।
राते लोटहि पुहुमि परि, कहूँ रुन्ड कहुँ मुंड ॥ ३७५ ॥

नैन अगस्त तेज अति जानी, गयो सूखि सागर मुख पानी।
साथिन्ह उलटि कोट तन हेरा, खरग आँच लागे मुहँ फेरा॥
सागर धाइ कोट तब लीन्हा, बज्र कपाट टारि कै दीन्हा।
चढ़ि चढ़ि बीर कंगूरन लागे, हथ हथनालन्ह गोला दागे॥
चारहुँ दिसा अगिन बरसाई, ग्रीषमऋतु भै गई सवाई।
कटक जो आगे आवत अहा, सनमुख आगि ठटकि सब रहा॥
जहाँ तहाँ मुरचा नेउँ परी, सनमुख आइ कमानी धरी॥

दुरुग कोट गाला लगे, जहँ जहँ कोट ढहाइ।
तहं तहं सागर सजग होए, रातिहिँ लेइ उँचाइ॥ ३७६॥

मास चारि गढ़ छेका रहा, जानहु राहु बिधुहि पै गहा।
अन्न घटा जल कूप सुखाने, मुरुचन आइ कोट निअराने॥
भा निरास तब सागर राजा, कहेसि परा अब जिय सौं काजा।
का मैं कीन्ह जनम लै अवनी, एह दिन कारन कियेउँ सँजवनी॥
जिन्ह सौं हितू जानि चित बाँधा, तिन्ह महँ कोउ न देखौं राधा।
जाकर अहा नैन महँ ठाऊँ, पहिलेहि छाडि चले ते गाऊँ॥
गरब बोलि जेहि के बर बोला, तिन सत छाडि तजा एह टोला।

जिन्ह कहँ हुत एक छन लगी, उतकंठा दिन रैन।
अब चित मरूँ पुकारिकै, सुनहि न एकौ बैन॥ ३७७॥

इत सागर रन कटक बनाई, उत सोहिल की भई अवाई।
गा सब जनम अमिरथा मोरा, कत मैं खर कतवार बटोरा॥
कस न ताहि जिउ लाएउँ धाई, गाढ़े आजु उपकरत आई।
नैन अंध मैं सोइ न चीन्हा, ग्रौ कै सेउ न आपन कीन्हा॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औ पुनि जा सौं आहि चिन्हारी , कान न कीन्हौं रह्याँ पुकारी ॥
तब जो जाइ न चीन्हेउँ ओही , अब कैसहु पतिआइ न मोहीं ।
अब तौ ओहि बिनु और न कोऊ , करौं पुकार होउ सो होऊ ॥
ऐ अबली कहँ बल देनिहारे , गरबिहिं गरद मिलावनहारे ।

गाढ़ें करौं पुकार दुख , पारिध होइ बढ़ि आउ ।
बूडत हौं मजधार महँ , गहि भुज नाउ चढ़ाउ ॥ ३७८ ॥

राजैं तब रनिवाँस हँकारा , कहिसि करहु अब कुल उजियारा ।
हौं सिर सेत करत हौं राता , तुम रचि चिता जरहु परभाता ॥
जस पुहुमी दीन्हा सुख संगा , चलहु सरग तस मानौ रंगा ।
सरगपंथ अति विकट अँधेरा , जो उजियार जाइ पै हेरा ।
एह सर निमिखि एक तन ताता , पुनि संतत सीतल सुख गाता ॥
रानिन उतर कहा सुनु राजा , सौंह कहत आवत है लाजा ।
हम तुम गाँठि आदि सौं जोरी , मुए जिअत जो छूट न छोरी ॥

हम इन्ह नैनन देखहीं , तुम सिर ऊपर धाउ ।
पहिले हम सब जरि मरहि , पाछे करहु जो भाउ ॥ ३७९ ॥

कौंलावति सुनि मरन कहानी , कवँल नैन भरि आए पानी ।
हियरे अगिनि रही नहिं गही , उठि आई जहँ कुमुदिनि रही ॥
कहिसि कि जम सँदेस पुनि आवा , जोगी नीठुर न बचन सुनावा ।
कुमुदिनि भएउँ बिरह ससि लागी , दिन मलीन ससि पलक न लागी ॥
नैन जलज नित बूड़त रही , एकहु बेरि बात नहिं कही ।
अब पुनि जाइ कहसि दुख मोरा , कुलिस ते कठिन करेजा तोरा ॥
जो सब तजि पकै मुख हेरा , सो कैसे तासौं मुख फेरा ।

दुहुँ जुग जाकर आस तैं , तेहि कत करसि निरास ।
एक दिन तोर मोर न्याव पुनि , होइहै जाइ अकास ॥३८०॥

कुमुदिनि चलि जोगी पहँ आई , कहिसि रे मूढ़ औधि नियराई ।
जाके हिए हनेसि चखु बाना , करिहै भोर सो सरग पयाना ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घायल परी पुहुमि तलफाई, प्रान रहे पुनि कंठहिँ आई।
एक बोल लगि सवन निरासे, अधर सूखि तुअ अधर पियासे॥
अजहुँ न जाइ आस तेहि देहू, मरत जिआइ पहर एक लेहू।
जाहि लागि यह परलै होई, सेा तेाहिँ लागि मरै अस रोई॥
अमिय बचन लागहिँ विख साँधे, भेार मरहि हत्या तुअ काँधे।
सघन तिमिरि निसि जोह लगि, जल बिनु कंटक हार।
नत रहई पछताव कर, बिथरेँ भसम अँगार॥ ३८१॥

कहिसि जाय कहु राजकुमारी, हौं निरगुनि सुठि जोगि भिखारी।
एकतेा बिधि दुखिया मोहिँ कीन्हेँ, तूँ पुनि बाँधि अधिक दुख दीन्हेँ॥
कतहूँ प्रेम कि बाँधे होई, बरबस प्रेम करै नहिँ कोई।
सेाहिल हनि हौं कटक लुटाऊँ, सागर नगरहिँ फेरि बसाऊँ॥
ताहि मारि करि सगरहिँ राजा, अब तेा आइ परेउ हम काजा।
कर गहि खरग करौं अब घाता, राखौं कटका करि आघाता॥
जदपि सेाहिल सुख जूझ सवारा, हौं सुजान सरदूल पँवारा।
परघट हेाउँ बचाइये, दीन्हेाँ कर गहि खर्ग।
बचौं तेा लीन्हेाँ कमल फल, मरूँ तेा जैहेाँ सर्ग॥ ३८२॥

सुनि के मया कुँअर जिय(क) भई, मैान गाँठि अधरन छुटि गई।
कहिसि जाइ कहु राजकुमारी, हौं निरधिन केहि जेाग भिखारी॥
हौं भिखारि तुम गढ़पति राजा, राज भिखारिन नेह न छाजा।
अपनेहिँ दुःख अहौं बौराना, आन क दुःख करौं का काना॥
भेार निदान हेाय जेा चाहा, परगट हेाउँ रहौं छिपि काहा।
अब जेा परी सीस हम आई, जेाग माँह का रहौं छिपाई॥
भेार हेात अस जल बरिसावेां, बड़वानल जेा हेाइ बुझावेां।
केापि चढ़ेां रन पैजि करि, मारेां सेाहिल बीर।
सूर छुड़ावेां राहु हनि, कौंल धरेा मन धीर॥ ३८३॥

(क) चित, पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनि सँदेस कुमुदिनी सिधारी , कुअँर कहा रखवार हँकारी ।
जाइ जनावसि राय नरेसा , छत्री एक जोगी के भेसा ॥
कहै छाडु. मोहिँ राज जोहारौँ , पैज बाँधि रन सोहिल मारौँ ।
रखवारे नृप जाइ जनावा , राजै(क) सुनत जीउ अस पावा ॥
हिए आगि जनु परि गा पानी , जानहुँ भइ अकास की बानी ।
जन कौँलावति पाँह पठावा , जोगी चोर जो आहि बँधावा ॥
छाड़ि पठावहु जौ हम पासा , पूछौँ बात देइ मकु आसा ।

जँहवाँ लहु हम बँद हुते , ते दीन्हा सब छोरि ।
तुमहू छोड़हु बन्द सब , मानहु अज्ञा मोरि ॥ ३८४ ॥

रहसि कँवल जोगी पहँ आई , कहिसि तजहु अब अलि निठुराई ।
कहु को हसि का नाउँ सोहावा , केहि कारन सिर जटा बढ़ावा ॥
कौन देस ते आएउ राऊ , काके पंथ धरेहु भुइँ पाऊ ।
जौ लगि कहसि न आपन बाता , बन्ध न छोरौँ सपथ बिधाता ॥
अमिरित बचन कुँअर जब बोला , अधरन पोए रतन अमोला ।
जाति कहिसि औ पिता क नाऊँ , आपन नाम जनम कर गाऊँ ॥
औ जेहि कारन जटा बढ़ाई , नाम लेत चखु जल भरि आई ।

कहिसि निकारहु हथकरी , खरग गहौँ अब हाथ ।
पल मंझे भारथ रचौँ , जौ कौरौ दल साथ ॥ ३८५ ॥

सुनि कै कौँल बिकल होइ गई , मानहुँ साँझ उदय ससि भई ।
मनहि कहेसि कर रहा परेखा , भयो मोर मधुकर कर लेखा ॥
मधुकर भँवै कंज बैरागा , कंज क मन सूरज सौँ लागा ।
सूर दरस जब कौँल बिगासा , तब पूजै मधुकर मन आसा ॥
अपने करत जाइ नहिँ देऊँ , जीअत नैन न ओट करेऊँ ।
यह पंछी बरु रहै पडेली , अब राखौँ छल बन्धन मेली ॥
यह अरजुन जेइ भारथ काँधा , अरजुन रहै बचा कर बाँधा ।

(क) सागर, पाठा० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन, वच, क्रम अब जो रहै, सेव करूँ निसि बार।
सेवा हुत पाहन हिया, मकु होइ जाइ मयार॥ ३८६॥
कहिसि कुँअर सुनु अम्बुज बाता, तुअ मन मधुकर केतकि राता।
का जो कौंल राख हिय लाई, अंत मौंर केतकि पहँ जाई॥
बिनती एक करूँ करजोरी, इहै हिये अब इच्छा मोरी।
जो तू इच्छ पुराउ गोसाईं, मोहिं जनि जाउ कंत दै बाईं॥
जौ सँग लेहु मया चखु हेरी, रहौं होइ चित्रावलि चेरी।
सपथ देहु जो करत पयाना, सपथ आस घट रहइ पराना॥
ना तरु देखि बिरह दुख दाइ, होइ निरास मरिहौं बौराइ।
आजु सपथ जो देहु पिय, बाजु कहे नहि जाहु।
बन्द छोरि कर खरग गहि, सूर छुड़ावहु राहु॥ ३८७॥
मन गुनि कुँअर कँवल मुख हेरी, कहिसि सपथ चित्रावलि केरी।
जो एहि रन बिधना जय देई, पूजी प्रान रहे घट सेई॥
तोहिं दै बाचा चलौं सो देसा, जेहि कारन निसरेहुँ एहि भेसा।
सुनतहि सपथ कौंल भा राता, जनु रवि किरिनि उदै परभाता॥
बंध छोड़न आगे अगुसरी[1], पाय न जाय यही मिसु परी।
पायन परसि हिये सुख पावा, अति लालच बँदि छोरि सि भावा॥
सखिन कहा चित चेतु गियाना, बिलम न लाउ भोर नियराना।
सुनत भोर कौंलावती, भयेा चेत चित आय।
छोरि बंद मंदिर चली, परसि कुँअर के पाय॥ ३८८॥
कुँअर आनि राजहिं जोहरावा, राजै मुख देखत सुख पावा।
आदर सहित लाइ कँठ लीन्हा, अपने पास ठाउँ तिन्ह दीन्हा॥
कहिसि कि तुम छत्री रस-भोगी, कहहु भये केहि कारन जोगी।
औ पुनि कत अस हार चोराए, जेहितै बंदि माँह दुख पाए॥
कुँअर कहा जनि पूछहु राजा, करहु सोइ जो करबे काजा।
जाकर आइ फिरी जब दसा, बाट जात लागै अपजसा॥

१ अगुआई, बढ़ी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छत्री तबहिँ चोर पै होई, बरबस चोर करै जो कोई।
हौं नैपाल नरेस सुत, छत्री बीर पँवार।
यह सोहिल बरिआर जो, हनौं हेात भिनुसार॥ ३८९॥
राजै सुनि संग्या मन बूझी, ज्ञान कि दिष्टि दूरि लौ सूझी।
कहिसि कि तजहु जोग बैरागा, पहिरहु अब छत्री कर बागा[1]॥
सिर धरि मुकुट सेल कर लेहू, सोहिल मारि मुकुट सिर देहू।
जौ जै खरग देइ करतारा, छात पाट औ राज तुम्हारा॥
पुत्री नैन कौंल पुनि मोरी, झारिहि पद पंकज कर जोरी(क)।
कुँअर कहा सुनु राज भुआरा, छात पाट मैं अपनै डारा॥
अस कैसे कहि आवै तोहीं, हौं जोगी तिय छाज न मोहीं।
क्षत्री सुनि जौ ना करै, तिय अरु गाय गोहारि।
पुहुमी कुल गारी चढ़ै, सरग होइ मुख कारि॥ ३९०॥
एहि मँह रैनि बीति सब गई, प्राची दिसा अरुन तब भई।
जहँ जहँ घुमिरे घोर निसाना, छूटै लागे दुहुँ दिसि बाना॥
कुँअर तौखार[2] साजि कै माँगा, बाँधि कटार खरग कै नाँगा।
सौंरसि हिये बिधाता सोई, जेहि की मया सुमिरि जै होई॥
ततछन तमकि चढ़े हय पीठी, चढ़त न परा काहु की डीठी।
जबही कुअँर भयो असवारा, जै जै जै सब जगत पुकारा॥
उच्चस्रवा सूर संघ लीन्हे, छिन महँ पुहमि सहस ससि कीन्हे।
कुँअर निकसि बाहर भयो, राउ ठाढ़ करि आस।
देखहिँ धौराहर चढ़ी, सब रानी रनिवास॥ ३९१॥
कौंलावति दीउ अम्बुज हाथा, छिन छिन धरै सहस सिउ माथा।
एह जोगी पर कारन दुखी, हौं रुद्राक्ष अहौं एक मुखी॥
परसन होइ दान जै करहू, जीतपत्र एहि के सिर धरहू।
तुम तें सबै असुरपति हारे, तुमहीं अंधक कंधक मारे।
तुमहीं दच्छ प्रजापति मारा, जीति मार तिपुरारि सँघारा।

१—पहिनावा। (क) झारी पदुम चरन रज तोरी० पाठा०। २—सफेद रंग का घोड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरि भरि जल पुनि नैन कटोरी, लागि स्रवै माता की चोरी॥
बिनवै पुहमि लाइ कै माथा, जोगिहिँ देहु आनि जै नाथा।
तुम हि सकल सुर देवता, जीत हार तुअ हाथ।
एह परदेसी एकसरा, देहु मया करि साथ॥ ३९२॥

एक तौ कुँअर गरब अस बाढा, सागर सँपरि बार भा ठाढा।
आयो सूर पैज रन ठानी, सोहिल बदन सूखि गा पानी॥
जेइ देखा तेहि इहै सुनावा, सोहिल काल सरग सौँ आवा।
सूर सौँह छिन जाइ न हेरा, जिन मुख देखा तिन मुख फेरा॥
सोहिल देखि कटक मन ढीला, रिस सो बोला बैन कसीला।
ऐ छत्रो ऐ बीर जुझारा, कहा जानि तुम पौरुख हारा॥
तुम कहँ पालेउँ दै अन पानी, काल बान कर आदि न जानी।
खरग सँभारैँ सूरमा, बैरी मुख समुहात।
तौ लहुँ पौरुष ना तजैँ, जौलहुँ आव न रात॥ ३९३॥

बीर सिंह जब साहस हारा, सो नहि मारे जान सिआरा।
नृप बैसाव[1] बचन जब कहे, सुनि सब माथ आँधि कै रहे॥
सोहिल हाँकि तुरै रन चढ़ा, नख सिख लौँ तन लोहे मढ़ा।
ओ तेहि मारेसि साँगि पचारी, झुकि सो दिष्टि पर कुँअर उबारी॥
पुनि गहि खरग कुअँर सिर झारा, कुअँर सजग ओड़न[2] दै टारा॥
खरग टूटि रह ओडन साँथा. छूछि मूँठि सोहिल के हाथा।
तब रिसि कै कुअँरहि लपटाना, कुँअरौ पुनि सरवई[3] सु जाना॥
सोहिल बीर धरि कुँअर कटि, चाहेसि देइ गिराय।
खंभा केरा सरवइ, उपरहि गा लपटाय॥ ३९४॥

दोउ लपटाइ पुहुमि मेँ परे, जनु दुइ माल सरबइँ[4] भिरे॥
कबहूँ कुँअरहि सोहिल चाँपा, कबहुँ कुँअर तर सोहिल काँपा।

१—व्यवसाय। २—रोक। ३—लड़ते थे। ४—सरो, कसरत।

CC-0. In Public Domain, Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पलटेउ आनि कुँअर करि दाऊ, काढ़ि कटार कीन्ह तब घाऊ॥
एकहिँ घाउ कीन्ह अरि घाता, रुहिर देखि सागर भा राता।
सागर लहरि पौन जिमि धाई, सोहिल कटक फाटि गौ काई।
जो जेहि गहा सो तेहि गहि चला, होइ गइ पुहुमी माहँ जनु हला॥
काटि काटि सिर कीन्ह मुनारा[1], लूटै हय गय सोन भँडारा।

हिआ अंध ते दरप बर, गरबि चले मुख फेरि।
ज्ञानी हिरदय सोच भा, बिधि कर कौतुक हेरि॥ ३९५॥

सोहिल परा मीचु मद पीये, उपजा ज्ञान कुअँर के हीये।
का भा सो जेा डोलत आहा, जेहि बिनु पुहुमी थकि सब रहा॥
का भा सो जेा गरब बर बोला, जेहि बिनु भुजा डोलाव न डोला।
का भा सो जो कटक बटोरा, सोन भँडार हस्ति औ घोरा।
अब तेहि बिनु केाउ रहा न साथी, छिन महँ होइ गए उड़ि पाथी[2]॥
मैं का जानि खरग कर लीन्हा, यह कारन केहि कारन कीन्हा।
जोग पंथ महँ बैर न आवा, जानि बूझि मैं जोग नसावा॥

यह गुनि हिये अगिनि बरी, चखु छूटी जल धार।
सागर फिरि फिरि रहसै, लूटै सोन भँडार॥ ३९६॥

---

(२८) कँवलावती विवाह खंड।

सागर पलटि कुँअर पह आवा, हाथ चूमि गहि अंक लगावा।
कहिसि कि धनि जननी धनि पीता, धनि हीअर[3] जेहि यह रन जीता॥
ततछन कीन्ह कूँअर असवारा, अपने हाथ चौंर सिर ढारा।
आनि फिरावा माथे छाता, जनु दूलह लै चले बराता॥
बाजा पुनि बाजन गहगहा, पुहुमी सरग सोर होइ रहा।
जबहि भाँट बीरुद उच्चार, चहुँ दिसि उठा बिरुद झनकारा॥
पैसत राजअबास सोहाईं, मंगल गावत चेरिन आईं।

१—शिखर। मीनार। स्तूप। २—पथिक, राही। ३—हृदय, साहस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुरै चरन रज पूजि के, टीका लावहिँ माथ।
कहैँ कि बाहन धन्य तू, औ धनि तेरो नाथ ॥ ३९७ ॥

पुनि जहँ हाट कपाट सँवारा, कुँअर आनि कै तहाँ उतारा।
आरति लै आईँ रनिवाँसा, जनु ससि उडगन सँग परगासा॥
पूजहिँ दोउ भुज चँदन चढ़ाई, कहैँ कि धनि तूँ धनि तुअ माई।
तैँ हनि राहु मयंक छुड़ावा, तैँ तम हरि दिनकर देखरावा॥
तैँ होइ इन्द्र अमी बरसावा, छत्र अगिनि जग जरत बुझावा।
जौ न होत तैँ अस बरिआरा(क), को बहुरावत जम बरिआरा(ख)॥
तैँ वसंत किय नगरी मोरी, नाहिँ तौ होत आज जरि होरी।

सरवन मोँ तरिवन रहा, औ पुनि सेँदुर सीस।
जो तुम इच्छा सो मिलै, जीवहु लाख बरीस ॥ ३९८ ॥

पुनि रानी राजा सोँ कहा, तव जग दूसर कोउ न रहा।
मोरी कोखि सो कौँल बिगासा, चहुँ खँड पसरी जेहि की बासा॥
औ पुनि भयो आइ संजोगा, करहिँ चबाउ जहाँ तहँ लोगा।
यह कुलीन छत्री बरिआरा, एहि आँकौ[1] जौ होइ बिचारा॥
राय कहा का कहहुँ छिपाई, मैँ पहिलहिँ संकलपि सुनाई।
औ संग्या हुति सो पुनि कही, गंगा सुनि लजाइ हिए रही॥
कहिसि कि जोगी भोग न जाना, जौ बर दीजै तौ पै माना।

सो कर गहि कौँलावती, लै मेली ओहि पाउ।
यह चेरी तुअ सेव कहँ, संकलपी जो राउ ॥ ३९९ ॥

कै मत राजा बाहार आवा, आपन कुटुँब लोग हँकरावा।
कहिसि कि मैँ अपने मुख हारी, एहि सौँपौँ कौँलावती बारी॥
बरु मैँ आपु नाहिँ ओहि दीन्हा, सोहिल मारि जीति वै लीन्हा।
तुम यह बचन मानि पुनि लेहू, औ मिलि पंच बड़ाई देहू॥
कहिनि कि यह बर बिधनै गढ़ा, सोई फूल जो महेसहिँ चढ़ा।

(क) धरहरिया, पाठा०। (ख) अस बेरिया, पाठा०। १—परीक्षा करो, परखो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हमहुँ भाउ जो तुम्ह कहँ भावा, बिलम न लावहु करहु बधावा ॥
बाजन लागे बाजन बारा, घर घर उठा मंगलाचारा।
ततछन आए जोतिषी, गनि गुनि देखी रास।
शुभ दिन औ शुभ मास पुनि, उत्तम लगन बिलास ॥ ४०० ॥
चहुँ दिसि बाजन बाज सोहावा, कुँअर जान यह जीत बधावा।
अस न जान यह बाजन सोई, जेहि तेँ अन्त महा दुख होई ॥
गात चढ़ा जत चन्दन माला, होइहै भोर अगिन कर ज्वाला।
औ जत जगत निछावरि सारा, होइहै भोर काँध कर भारा ॥
हाट कपाट जराव क छाता, होइहै काल होत परभाता।
मानुस अंध जाहि नहिँ सूझा, दैव करै सब आपन बूझा ॥
होइ चेत कछु आन सु जाना, बिधना करै आन कै आना।
आपन चिन्ता मान जौ, जगत न पावै कोइ।
कस न सोइ चित चेतिऐ, जाकर चेता होइ ॥ ४०१ ॥
साँझ आय पुनि राउत राना, आँगन ताने आनि बिताना।
अनबन भाँति बिछौना कीन्हा, दै दै लाख लाख एक लीन्हा ॥
बैठे आय तहाँ सब राजा, माथेँ छत्र विचित्र बिराजा।
धरे आनि चहुँ दिसि मसिआरे, पुहुमी सकल भये उजिआरे ॥
ऊपर समियाना जनु नभा, तर बैठी जनु सुरपति सभा।
गीतन्ह आन कीन्ह झनकारा, जनु पुहुमी मेँ अमिय सँचारा ॥
पुनि पैरिन काछेँ अतिलसो[1], जनु आईँ रंभा उरबसी।
नाच कूद भा पहर दुइ, दीन दान बहुताइ।
पुनि आए तहँ सहस एक, बाभन बेदूराइ ॥ ४०२ ॥
आयो सागर सभा मँझारी, गहे बाँह कौंलावति बारी।
बारह सोलह साज बनाए, आठो अंग बतीसो पाए ॥
प्रगटेउ जनु मयंक मनियारा, अकसमात होइगा उजियारा।
कुँअर पाइ तर मेलि किसोरी, आपुन ठाढ़ भए कर जोरी ॥

१—(फा० اطلسي) अतलस का बना हुआ परिधान।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहिसि लेहु येहि चेरी जानी, मै संकलपी दै कुश पानी।
बोलहु स्वस्ति जैस जग रीती, तैं अपने भुज बल यह जीती॥
बरु मैं नहिं अपने मुख हारी, तुम जीता सोहिल संघारी(क)।
सुनि कै कुँअर अचक रहा, सोस गयो गड़ि लाज।
बकनि न कछु मुख आवै, जनहुँ परी सिर गाज॥ ४०३॥
छिन एक जिय भीतर गुनि ज्ञानी, बोलिसि स्वस्ति लीन्ह कुस पानी।
तत छन आनि कीन्ह गँठजोरा, वेद पढ़हिं बाभन चहुँ ओरा॥
तरुनिन्ह पुनि कल कंठ सुनावा, कौलहिं लाइ सुजानहिं गावा।
गाँठि जोरि फेरी सतफेरी, जोगिहिं गाँठि परी सत फेरी॥
भा बिआह बाभन जब गए, लै दूलह कहँ कोहबर गए।
उठत न भौंर चरन अति भारी, नाचत कौंल होत बलिहारी॥
कौंलावति जिअ रहस अनन्दू, डरपै कुँअर जानि दुख दंदू।
पाँलग साजि जराउ की, डासी सेज सुरंग।
कौंलहि सीतल जानु जल, कुँअरहि अगिन समंग॥ ४०४॥
दुलहिन दूलह कोहबर मेली, ओ पुन बाहर भईं सहेली।
घूँघट कै कौंलावति रही, फिरि सुजान पुनि पाटी गही॥
अंबुज मान मनावन आसा, भँवर निठुर पुनि लेइ न बासा।
कौंलावति मन कीन्ह गियाना, कौन मान जौ कंत न माना॥
मोहिं पीतम अंतर जहँ होई, घूँघुट लाज जाउ जरि सोई।
कुलिस तैं कठिन सो आहि करेजा, जो तिय मान न कर पिय सेजा॥
लोयन राखौं घूँघट हेरी, अंतमान[1] को राखै फेरी।
मोहिं मूँदत चखु सकल तन, दीन्ह अगिन जनु बारि।
नहिं जानौं पिय सेज पर, मान करहि किमि नारि॥ ४०५॥
कौंल खोलि मुख बचन हुमासा, ऐ दिनकर साईं जग आसा।
अब जौ जग जाना मैं तोरी, का जिय जानि रहहु मुख मोरी।

(क) वरु मै अपने मुख यहि हारी। तुमहूँ जीते सोहिल सँघारी। १—आत्मा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सघन तिमिरि हिय फाटै मोरा, मुख देखाउ जग होइ अँजोरा ॥
पिता सँकलप दीन्ह सजि तोहीँ, कस न मया करि हेरहु मोहीँ ।
तोरे मया बनस्था मोरी, जो आदरहु तौ हौं मैं तोरी ॥
पिता राज सब भयेा परावा, तोरे मया एक चित लावा ॥
मोहिँ बिनु तोरे नाहिँ कछु छूछा, तोहि बिनु मोहिँ कोउ बात न पूँछा ।

सब औगुन गुन एक नहिँ, का परगासौं आनि ।
मोहिँ निरगुनियहिँ मानि ले, आपु बड़ाई जानि ॥ ४०६ ॥

बिनती सुनि भा कुँअर मयारा, बिनती एक जगत निस्तारा ।
बिनती सब औगुन गुन होई, सेवक बिनत[1] तजै नहिँ कोई ॥
गरब अगिन गहिरे सब जरा, बिनती ओड[2] खरग निसतरा ।
रिसि वैसन्दर जहँ पर जाई, बिनती पानि परे बुझि जाई ॥
जहँ सेवा तहँ बिनती जानहु, बरु दोनौं कहँ एकै मानहु ।
ठाकुर कबहुँ दोष जो गहई, सेवक आगे बिनती कहई ॥
तब सेवक हिय माँह समाई, जहँ लहुँ औगुन गुन होइ जाई ।

आपन अवगुन सँवरि के, गरब करहु जनि मान ।
जौ औगुन पति मानई, सोई गुन परिमान ॥ ४०७ ॥

कुअँर कहा सुनु राजकुमारी, हौं जोगी जस भँवर दुखारी ।
खोजत अहा जो केतकि बासा, बीचहिँ अंबुज कीन्ह गरासा ॥
जौलहुँ भौंर न केतकि पावै, कौंल आस तौ लौं न पुरावै ।
तजि तोरे मोहिँ बाजु न आना, महूँ तोहिँ आपन कै जाना ॥
जो सँतोख मानहु जिअ बारी, तोहि सौं भाषौं बात रसारी ।
नैन कौंल तुअ नैनन लावौं, अंक मेँ गहि तव हिया सेरावौं ॥
मोहिँ न अपन प्रेम रस चाऊ, तोहि लागि यह करौं सुभाऊ ।

हम तुम मानहिँ सबै रस, जहँ लहु प्रेम सुभाउ ।
एक प्रेम रस होइ तब, जब चित्रावलि पाउ ॥ ४०८ ॥

१—विनीत, नम्र । २—रोक, ढाल,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौलैं रहसि कहा सुनु साईं , चित्रावलि पावहु जब ताईं ।
हँसि बोलहु देखहु मम ओरा , जानहुँ पायो लाख करोरा ॥
हौं अबही रस रीति न जानौं , चितवनि हँसनि प्रेम सुख मानौं ।
तब हँसि कुअँर उलटि मुख हेरा , बरबस लाज कौंल मुख फेरा ॥
घूँघट ओट रही मुख गोई , तरुनिन मान सुभावन होई ।
पुनि गहि कुअँर नारि कँठ लाई , कौंल लागि हिय जरनि सिराई ॥
अधरन लाइ अधर रस लीन्हा , एक रस छाड़ि और सब लीन्हा ।
अधर रदन छद उरज नख , उधसि[1] गई पुनिं माँग ।
प्रथम समागम जनु कियेा , सिथल भयेा सब अँग ॥ ४०९ ॥
भोर कुँअर जब बाहर आवा , देखि सखिन सब मंगल गावा ।
रानी कौंलावति पहँ आई , माँग चूमि लीन्हिसि कँठ लाई ॥
सभा बैठि पुनि सागर राजा , देइ लागि सब दाएज साजा ।
रतन पदारथ मानिक मेाती , सेान रूप ससि दिनकर जेाती ॥
दीन्हे हय उदन्त[2] औ दाँते , औ हस्ती पुनि निमते माते ।
दीन्ह अनेक पेटारी भरी , पाटम्बर जरकस पाँवरी ॥
आनि कुँअर कहँ सब देखरावा , कुँअर कहा हम काज न आवा ।
हम गौनब तेहि पंथ जहँ , साबर[3] साथ न देइ ।
उहवहिँ लागहि चेार सँग , अस बैरी को लेइ ॥ ४१० ॥
राउ कहा जहँ लहु कछु मेारा , सब तेारै मेारि कौन निहेारा ।
है हम सेा सब थाती तेारी , जब चाहब तब लेब बटेारी ॥
पुनि राजै सब कुटुँब बुलावा , जेा जस हुता सेा तस पहिरावा ।
दै पहिराव बिदा करि आये , रहसत सब अपने घर आये ॥
भा हुलास जिय गा सब दुंदू , पति परजा सब करै अनन्दू ।
परगट कुँअर कौंल मुख हेरा , हिएँ ध्यान चित्रावलि केरा ॥
अस ओहि गुपुत लाइ चित रहा , कौंल कहत चित्रावलि कहा ।

१—उधिर गइ, उकसिगई । २—अदन्त, बेदांत वाले । ३—मृगछाला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुँअर जैस पींजर सुआ, छिन छिन मन अकुलाइ।
गाढ़े बंधन बचन के, निकसि न सकै न जाइ(क) ॥ ४११ ॥

---

(२६) गिरिनार यात्रा खण्ड।

एहि महँ काहू आनि जनावा, गढ़ गिरिनार परब दिन आवा।
आवहिँ जोगि जती सन्यासी, तीरथ अस जस मथुरा कासी॥
आवहिँ लोग बहुत घरबारी, बार बूढ़ तरुनी नर नारी।
एक मास लहुँ लागै हाटा, कौतुक कहि नहि पाइय बाटा॥
ऊँच पहार सरग लहुँ बाढ़ा, एकै पैंडि[1] छोलि जनु काढ़ा।
एक दिस सींग[2] दूरि लौं बढ़े, अँत्रिख जानु विधाता गढ़े॥
बीर नाउँ तेहि देवन्ह धरा, जो तहँ परै बीर सो परा।

जेहि इच्छा कछु जिय रहै, आगिल जनम विचार।
करवट लेहि पराग महँ, बीर परहि गिरनार॥ ४१२॥

कुँअरहि चाउ उठा सुनि नाऊँ, कहिसि महूँ तेहि तीरथ जाऊँ॥
मकु कोइ मिलै जोगि सन्यासी, आवै रूपनगर कर बासी।
कहै कुशल चित्रावलि केरा, बूझि पंथ उठि चलौं सबेरा॥
मँदिर जाइ कौंलावति पासा, कहिसि कि ऐ अछरी कबिलासा।
जौ दिन दस की अज्ञा पाऊँ, महूँ जाइ तीरथ कै आऊँ॥
कौंल कहा का आज्ञा देऊँ, जियत न नैनन ओट करेऊँ।
तबहीँ लहु नीरज डहडहा, जब लहुँ सूरज सनमुख रहा॥

जो तुम साईँ सूर जिमि, जाउ बचन मोरि पेलि।
सोइ रहब मैँ कौंल जिमि, गरल डारि मुख मेलि॥ ४१३॥

जब तुम कंत पीठि मोहिँ दीन्ही, मैँ निहचै अपने जिय कीन्ही।
बिधि जौ साईँ होइ मयारा, तीरथ जाइ करूँ गिरिनारा॥

(क) करि नहिँ सकै उपाइ—पाठा०। १—मार्ग, राह। २—शृङ्ग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहूँ (क) कंत लेहु सँग लाई, सिव पूजौं गिरिनारहि जाई।
कुँअर कहा जौ निहचै होई, पुन्य काज कहँ बरज न कोई॥
तीरथ लागि सुजान पयाना, परे सहस हय पीठि पलाना।
साजे सब हस्ती सिंघली, एक तें एक छरक औ बली॥
चले कुँअर पुनि चढ़ि चँडोला, झूलहिं मानिक रतन अमोला।
साठि सहेली कौंल सँग, एक तें एक सुरूप।
जिन देखा तिन कहा निजु, एह इंदर सुरभूप॥ ४१४॥
जाइ कुँअर गिरिनारहिं चढ़ा, देखिसि गढ़ बिधनै कर गढ़ा।
जहँ तहँ देखी अनबन हाटा, चारिहुँ ओर पटन सब पाटा॥
जुरे आइ सब जोगी जती, तीरथ कहँ आए गढ़पती।
रहा बिबेक न राजा परजा, बैरिहुँ कोऊ तहाँ न बरजा॥
पहिले गरब सीस तें डारा, पाछे नए देव के बारा।
कोइ लव लाइ बैठि एक ठाऊँ, जल थल जपै बिधाता नाऊँ (क)॥
कोउ गावै गुण कृष्ण मुरारी, कोऊ मौन होइ बैठ पहारी।
देखि परावा लोग सब, लीन्ह कुँअर उर साँस।
आपन कोऊ न तहँ मिला, बहुरा होइ निरास॥ ४१५॥
प्रेम पंथ अकसर पग दीजे, एहि जा कोऊ संग नहिं लीजे।
एहि मारग महँ दूसर नाहीं, होय भरम देखैं परछाहीं॥
कुँअर कटक लै ढूँढ़न चाला, संग सकल माया जंजाला।
जो सेना गौनत एहि पंथा, गोपिचन्द नहिं पहिरत कंथा॥
अगसर होइ जो परयो अधावा, कुँअरहिं ढूँढ़ि बेगि लै आवा।
दूत जो कुँअरहिं खोजन गये, ते हम आइ सुरत हम भये॥
जहँ तहँ ढूँढ़त फिरे उदासा, अब तिन्ह के लै परूँ अकासा।

(क) मोहिं पुनि। पाठा०।

(क) कोऊ बीर वरी जिव देई। कोउ कह बीर साँस उर लेई॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ न मानुस संचरे, निरजन जान मरम्म।
जम्बुदीप के मानई, भरतखंड ग्रागम्म ॥ ४१६ ॥

---

(३०) जोगी ढूँदन खण्ड।

चित्रावलि जब चतुर चिन्हारी, कुँअर खोज पठई जन चारी।
एहि महँ सूध पंथ जो पावै, बेगिहिँ खोजि कुँअर लै आवै ॥
ग्रौभट परे जो अहै अयाने, पंथ न सूझा भवहिँ भुलाने।
जिन पच्छूँ दिस कीन्ह पयाना, पहिलहिँ गा सो देस मुलताना ॥
देखेसि सिन्धी लोग सबाईँ, महिरावन सब सेवहिँ साईँ।
हेरेसि ठट्ठानगर सुहावा, बिहग हरिन सेवैँ गंजावा ॥
बरन बरन सब मानुस रूचा, जान उहा लरका न बलूचा।

ढूँढ़हि बहुतै नद हटी, रनखर घक्कर जान।
पुनि पेशावरहिँ जाइ के, हेरेसि सकल जहान ॥ ४१७ ॥

काबुल हेरि मोगल कर देसा, जहाँ पुहमिपति होइ नरेसा।
बदख़सान जहँ दीन सम्हारा, खुरासान महँ वाद पसारा ॥
देखेसि रूम सिकंदर केरा, स्याम रहा होइ सकल अँधेरा।
देखेसि मक्का बिधि ग्रस्थाना, हीय ग्रंध तैँ पाहन जाना ॥
हाजी सँग मिलि गयेा मदीना, का भा गए जो साफ़ न सीना।
गा बगदाद पीर के तीरा, जेहि निहचै तेहि संग हमीरा ॥
इस्तम्बोल[1] मीसर पुनि हेरा, गा लदाख लहु कीन्हिसि फेरा।

घर घर नर नारी सकल, हेरेसि पुनि गिरि मेर।
जौ लहुँ दीप न उर बरै, तौ लहुँ जगत अँधेर ॥ ४१८ ॥

दखिन देस को जे पगु धारा, चला ताकि सो लँक पहारा।
पहिलेहि गै हेरेसि गुजराता, सुन्दर धनी लोग सुख राता ॥

१—कुस्तुन्तुनिया का एक नाम।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गयो जाम जहँ कच्छो होई, लोग सुरूप सुखी सब कोई।
पंथिन्ह मिलि पुनि गौ सैलाना, बाबा आदम कर अस्थाना॥
सेतुबंध रामेश्वर लाँघा, जहँवा जात काँप नर जाँघा।
देखेसि लँका कंचन केरा, सरंदीप सब घर घर हेरा॥
सिंघलदीप दीप उजिआरा, जो देखा सो मनि मनिआरा।
नर नारी सुन्दर सबै, बसगित जनु कबिलास।
ऊँच नीँच घर पदुमिनी, मानहिँ भोग बिलास॥ ४१९॥
बलंदीप(क) देखा अँगरेजा, जहाँ जाइ नहिँ कठिन करेजा।
ऊँच नीच धन सम्पति हेरा, मद बराह भोजन जिन केरा॥
जहाँ जाइ उँह बन्दर साजा, लगा संग चढ़ि गयो जहाजा।
हेरा करनाटक नौरंगा, कुखर उडीसा औ तैलंगा॥
स्याम बरन हबसी अरु जंगी, तामिल देखी जाय फिरंगी।
देस उड़ैसा साधन धावा, हुगली बेली बंदर लावा॥
उलटि बरार जाइ पुनि हेरा, घर घर दक्खिन कीन्हेसि फेरा।
देखा गढ़ देवगिरि कर, पुनि आसेरहि आइ।
ऐसा कोइ न सँग मिला, जो चितउर लै जाइ॥ ४२०॥
जे पूरब दिस कहँ मुहँ फेरा, पहिलेहिँ आइ सो मथुरा हेरा।
बिन्द्राबन महँ ढूँढ़े जोगी, जैसे गोपी कृष्णबियोगी॥
दिल्ली तख़त जो साहन केरा, सो देखा अगरा पुनि हेरा।
आइ पयाग कीन्ह तिरबेनी, करवट देखी सरग निसेनी॥
कासी माहिँ बिसेसर पूजा, जाहि देव सर आहि न दूजा।
रहि दिन चारि फिरा पँचकोसी, पूछे फिरि फिरि बाभन जोसी॥
आस न पाएसि चला निरासा, हेरेसि चढ़ि के गढ़ रोहितासा।
पानी पूरक होइ अन, घाटिन बिकट चढ़ाउ।
बरिस सहस जौ लागै, बरबस हाथ न आउ॥ ४२१॥
मग्गह देखि फिरा सिर धुनी, तिरहुति मेँ विद्यापति[1] सुनी।

(क) वलदीज, पाठा०।

१—एक मैथिल कवि।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनि आवा जहँ गढ़ीदुआरा, एकै पंथ चलै संसारा॥
दक्खिन परबत उत्तर गंगा, सोई चलै जेहि पौरुष संगा।
पहिलहिँ जो नहिँ करै विचारा, बीचहिँ मारि लेहिँ बटमारा॥
जहाँ तहाँ देखहि परिकर डंका, राम जूधि जस रावन लंका।
जो पुहुमी बलि दरबन राता, तहाँ जात कोउ पूँछ न बाता॥
आपुहिँ आपु जनावहि जाई, जो वेाहि मारग देइ बताई।

प्रविस परेवा नगर महँ, परा कुतुब के पाय।
ढूँढ़िसि भाठी माहिँ पुनि, बारी बारी जाय॥ ४२२॥

पुरुब अपूरब देस बँगाला, पुहमि हरियरी तीनिहुँ काला।
कटहर नरिअर आम सोपारी, अपनी बारी धनी बखारी॥
हरियर सदा फूल फर डारा, जनम न सुनी नाउँ पतझारा।
पाँच मास भूमि जल पूरी, धूरी नाउँ पै देखे न धूरी॥
सूखे पंथन चलै बटाऊ, नाउँ पाउ कै देहली पाऊ।
अन धन सुक्ख दुःख नित गाली, दया हिये पै लोग बँगाली॥
जहँ लहु हिंछा तहँ लहु मिन्ता, होंछा मिलै बिसारै चिन्ता।

सब कहँ अमिरित पाँच है, बंगाली कहँ सात।
केला काँजी पान रस, साग माछरी भात॥ ४२३॥

उतरा ब्रह्मपुत्र के पारा, पीर बँदर चढ़ि नाउ पुकारा।
गयो सोनारगाँव जब जोगी, परसे पाँच पीर जनु रोगी॥
देखेसि मलुआ औ चटगाऊँ, सोनदीप[1] पुनि उत्तम ठाऊँ।
देखेसि पीगु मनीपुर राजा(क), निभरम अपने देस बिराजा।
औ पुनि हेरेसि कूँच कछारी, जहँ माटी के परबत भारी।

१—वर्म्मा। (क) देखेसिनी को औ चित राजा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मखरहंग भ्रौ हेरेसि आवा , आव नाउ पै कोउ न पावा ॥
देखेसि जाइ असाम कै साजा , सरग देव जहवाँ कर राजा ।
निसि दिन रहै मचान पर , बाहन हस्ती नाउँ ।
हारिल ज्यौं अँत्रिख बसै , पुहमी धरै न पाउँ ॥ ४२४ ॥
हेरेसि जाइ देस पुनि चीना , भँवत भँवत जोगी भा हीना ।
जो जहँ हुत सो तहँ अकुलाना , कहहिँ देस कर भयो निदाना[1] ॥
पुहुमी नाहिँ कहा अब धावहिँ , सरग जाइ हेरहिँ मकु पावहिँ ।
बीर परहिँ अब गै गिरिनारा , सरग निसेनी एहि संसारा ॥
तीनौं चले परब दिन जानी , हरि हरि कहैँ मीचु निअरानी ।
घाटी चढ़त तिनहुँ भा मेला , जानहुँ प्रान गात सौं खेला ॥
पाउ न उठै सरग भइ घाटी , को लै कै पहुँचावै माटी ।
कहहिँ कि हम सब जग फिरे , ओहि मूरति छित नाहिँ ।
अब निहचय एहि बीर चढ़ि , चलहु सरग कहँ जाहिँ ॥४२५॥
जो जेहि आस मरन निजु काँधा , अवसि सोई आवै सैँ राधा ।
विनु जिउ दिए न पावै कोई , कै जिउ होइ कै प्रीतम होई ॥
चढ़ि गिरिनारहिँ देखहिँ कहा , लोग चहूँ दिसि धावत अहा ।
पूछहिँ कहा लोग सब धावा , कौन अपूरब कौतुक आवा ॥
कहहिँ आह एक राजा लोना , देखत जनु सिर मेलै टोना ।
अस सुन्दर मानुष नहिँ होई , निहचै देवता आहै कोई ॥
जोगी सुनि आए पुनि तहाँ , पूरन ससि जग वन्दै जहाँ ।
मुख देखत सुखमा हिए , परा अगिनि उर पानि ।
बन्देउ पुहुमि लिलाट धरि , चतुर चिन्हि पहिचानि ॥४२६॥
पुनि जौ देखा ससि मनिआरा , धरा पुहुमि सिर दूजी बारा ।
कहहिँ कि धन बिधि धन वह राजा , जेहि कुल अस मयंक उपराजा ॥
हम रेनुक वह रबि अति ऊँचा , रबि रेनुक पुनि कहाँ पहूँचा ॥

१—अन्त ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

को अस मिलै कहै जो नाऊँ, जाति बखान जनम कर गाऊँ ॥
जेहि पूछै सो कोऊ न कहा, जगत देखि बावर होइ रहा।
एहि महँ कुअँर उतरि गढ़ आवा, लोगहिँ रहा हाथ पछतावा ॥
जत कत जगत चला उठि लोई, देवता नहिँ का पूजै कोई।
जोगी आयो उतरि गढ़, चले कटक सँग जाहिँ।
होइ हुलास अनन्द अति, कंथा महँ न समाहिँ ॥ ४२७ ॥
पंथी चलत जो भयो सँघाता, पूछो ताहि कुँअर की बाता।
तेई कीन्ह सब बात उघारी, एह राजा हुत आदि भिखारी ॥
दोष न जाने दहुँ का अहा, पाँच मांस वँद भीतर रहा।
कौँल लागि सोहिल चढ़ि आवा, सागर राय बहुत दुख पावा ॥
एह गहि खरग दीन्ह तब आसा, जरत अगिनि राखा रनिवाँसा।
हनि मारिसि सोहिल बरिआरा, सागर लूटा सहन भँडारा ॥
अब सोई तेहि दीन्ह बिआही, किस्न सुजान कौँल जनु राही।

सुनत कथा संतोष भा, जोगिन पाई सिद्धि।
जनु बैपारी घर चले, लै लाहा[1] नव निद्धि ॥ ४२८ ॥

---

(३१) चित्रावली-बिरह खंड।

चित्रावलि चित भएउ उदासा, पिउ न गए दै अवधि की आसा।
बिरह समुँद अति अगम अपारा, बाज अधार बूड़ मँझ धारा ॥
चहुँ दिसि हेरहुँ हितु कोउ नाहीँ, बूड़त काह उँचावै बाहीँ।
निसि दिन बरै अगिन की ज्वाला, दुरगा मँदिल भयो है बाला ॥
बुझै न लूम सगर लहु बाढ़ा, पंथी गयो लाइ हिय डाढ़ा।
जोगी सुरति रहै चखु माहीँ, ज्यौँ जल महँ दीपक परछाहीँ ॥
झलमल जोति होइ उजियारा, पानी पैन बुझाव न पारा।
बिरह अगिन उर महँ बरै, एहि तन जानै सोइ।
सुलगै काठ बिलूत[2] ज्यौँ, धुँआ न परगट होइ ॥ ४२९ ॥

१—लाभ। २—[अ० بلوط] एक वृक्ष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन कहिसि कि ऐ रँगमाती[1], करिया भयेा रूप रँगराती।
रूप रंग सब लै गा जोगी, लेाग कुटुँब जानै यह रेागी॥
जोगी गयेा छाड़ि तजि माया, भेार कि धुईं भइ मम काया।
जोगी करत कहा दहुँ फेरी, आसन परी छार की ढेरी॥
बिरह पवन जो करै झँकेारा, बिथुरे छार न केाऊ बटेारा।
जोबन गज अपसर[2] मद कीन्हे, अब न रहै अँधियारी[3] दीन्हे॥
निसि बासर तन कानन गाहा, जाकी साल हिये तेहि चाहा।

जोबन सखी मतंग गज, तौ लहुँ लाग गेाहार।
जौलहुँ अपसर हेाइ कै, सीस न डारेसि छार॥ ४३०॥

सुनि रँगमती कहा सुनु बारी, जोबन मैगल मद दिन चारी।
अपसर हेाइ देइ नहिं केाई, जौ तिय आपु महाउत हेाई॥
अंकुस सकुच गहै कर नारी, दै आँखिन्ह घूँघुट अँधियारी।
औ कुल-कानि महादिढ़ अंदू[4], निसि दिन राखै मेलि के फंदू॥
जौ हठि कै अरि पाँव निकारा, हटक बुद्धि चरचा गड़दारा।
एह संसार रीति अस अहई, जो जेहि लाग दुःख जिय सहई॥
जो तजि ठाउँ सकै नहि जाई, आपुहिं तहाँ मिलै सेा जाई।

आजु बदन तेार कौंल सम, औरै रंग सुभाउ।
सब तन लागै मधुप पुनि, मकु केाउ चाह सुनाउ॥४३१॥

एहि महँ सखी एक हितकारी, आई हँसति भई रतनारी।
कहिसि कुँअरि सुनु बचन सुहाए, गए बिदेस नपुंसक आए॥
बदन अरुन हिय हुलसत अहहीं, जानहुँ बचन कछुक सुभ कहहीं।
सुनतहिं चली धाई बरनारी, गिरी रही पै सखिन्ह सँभारी॥
जोगी आइ मनावत नाथा, दरस पाइ भुइँ लायेउ माथा।

१—एक सखी। २—मनमाना, मनजौकी। ३—आँख ढँकने का ढोका।
४—हाथी के पैर बाँधने के लिये एक यन्त्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहिन कि हम पुहमी सब धाए, चित्र सरूप चीन्हि अब आए ॥
सुनि रहसी चित्रावलि हीया, चित्रहिँ जानु फेरि रँग दीया।
हिय हुलास बिहँसे अधार, औ कपोल रँग होइ।
पुनि उपजै उर धक धकी, होइ न औरे कोई ॥ ३३२ ॥

पूछिसि कौन रूप सो देखा, केहि दिन कौन भाँति केहि लेखा।
जोगिन रहसि रहसि जस जानी, आदि अंत लहुँ कथा बखानी ॥
सुनि चित्रावलि हिय संतोखा, निहचै जानि गयो जिय धोखा।
कहिसि कि हौं तुम्ह ऊपर वारी, मोरे दुख बहु भए दुखारी ॥
अब सुख करहु बैठि एहि ठाऊँ, करिहौं सेव जगत जब ताईं।
मैं सब इच्छ तुम्हार पुराई, तुम जग इच्छा पुरवहु जाई ॥
सेवक सेव तजौ जनि कोई, सेवा ठाकुर आपन होई।
मान सेव सोइ कीजिए, जासौं पति पहिचानु।
ठाकर आपन जो भयो, सब जग आपन जानु ॥ ४३३ ॥

---

(३२) पाती खंड।

चित्रावली हँकारि परेवा, कहिसि बखानि नपुंसक सेवा।
जोगी भँवर जगत फुलवारी, भँवइ बास लागि बारी बारी ॥
मालति आवै भवँर भुलाना, कँवल कोस लै रहै निदाना।
अब पुनि गवँनहु सागर देसा, कहहु जाइ यह मोर सँदेसा ॥
ऐ अति निठुर निछोही पीया, मानुस होइ न पाहन हीया।
जाके सीस ठगौरी डारी, तेहि कैसे एहि भाँति बिसारी ॥
जोगी भेष फिरहु संसारा, कहाँ जाइ घर बार सँवारा।
रोइ रोइ चित्रावलि कहा, जस कछु जोगी कीन्ह ॥
औ जहवाँ लगि दुख सहा, सो पुनि सब लिखि दीन्ह ॥ ४३४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पहिले लिख्यो परसि सिर पावा, तुम बिदेस दुख हम तन छावा।
बिरह अनेक कटक दल साजा, हम उर पीर आइ भा राजा॥
मदन परथ[1] ह्वै धनुख सँभारा, सुख कौरौ दल मारि निसारा।
अगिन सोंटिया चहुँ दिसि धावै, जत सुख साजि सो ढूढ़ि जरावै॥
मैन मतंग गज देइ मकलाई, तोरि तोरि तन कानन खाई।
बिछुरन साल जानु तन पूरा, हस्ती मदन हस्त कर चूरा॥
जेहि दिसि गिरि पावै नहिँ रहई, तिय तन तुछक किमि कै कहई।
दुःख दगध संताप मिलि, परा फाँद कैँ आइ।
बिरह अहेरी गुंजरत, मन कुरंग कित जाइ॥ ४३५॥
ग्रौ निहचै जानहु जिय माहीँ, दुख दिन कर कोउ साथी नाहीँ।
हित जो अहे अहित होइ गए, बिरहानल अब बैरी भए॥
सीतर हुत समीर तुम संगा, अब सो अनल होइ लागे अंगा(क)॥
सेज जो आहि हेमंचल पूरी, अब सो जरै लाग जनु होरी॥
पुहुप भए कंटक अरु सूआ, देखि न जाइ हाथ को छूआ।
चन्दन जो घनसार मिलावा, जनु करवार[2] सान पर लावा॥
जो सुख देत अहे सुखदीना, सब दुख देइ लाग पिय बीना॥
हिया न उघरै नैन पट, जौ चीन्हति पिय तोहिँ।
तुमहीँ सब महँ होइ कै, देत दुःख सुख मोहिँ॥ ४३६॥
किमि निरबहे दिवस पिय बीना, जुग भै पहर कलप भै दीना।
जिमि जिमि दिनकर किरन पसारा, मानहुँ बान मकरधुज[3] मारा॥
मदन भुअंग डसै निसि आई, तरनि देखि बिष तन छहराई।
दूभर घरी पहर को पावै, एक पल माँह लहर दस आवै॥
दुपहर बरस अगिन की धारा, सिर की आगि सहै को पारा।
नवत बेर सब कोउ न लखाई, चढ़त बेर मोहिँ कछु न सोहाई॥
बूड़त रबि जिय बूड़ै मोरा, कंत आउ सुठि जीवन थोरा।

१—परथ = अर्जुन। (क) रहै उसन सम दाहत अंगा। २—सं० कृपाण-तलवार। ३—कामदेव।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साँझ परत तरिवर चलत , चित्त बिहंगम जीव ।
दुख सँताप बिरहा अनल , आनि बसत हम जीव ॥ ४३७ ॥
स्याम रैनि बिनु स्याम दुहेली , छिन न परै कल सेज अकेली ।
स्याम रैनि देखी जिय डरा , अँगन बिरह आगि जनु जरा ॥
लोयन सिंधु थाह को पावै , बुडिबे के डर नींद न आवै ।
पिय बिनु पोढ़ फाट नहि छाती , तारे गनत जात सब राती ॥
बाहौं रास बरग कस बना , बैरी गगन लगन को गना ।
कबहूँ धनु देखाइ जिय हरई , कबहुँ राहु करवट सिर धरई ॥
कबहुँ बिछू होइ साजै डंका , कबहुँ सिंह ते उपजै संका ।
बुधि न रही सुधि सब गई , जीव सहै दुख केत ।
मोरे मंगलचार तब , पिउ आवै करि हेत ॥ ४३८ ॥
सहि न जाइ पुनि रैनि अँजोरी , कौन मास लागै जग होरी ।
हौं तौ जरौं जो कंत न आहा , ससिहर जरै कहौ गुन काहा ॥
कै बिधि जग दो ससि निरमयो , एक तातो एक सीतल भयो ।
सीतर हुत सो गा तुम्ह संगा , रहो उसन[1] मम दाहत अंगा ।
कै दधि मथा घिरित सो आही , परेउ बिरहनल[2] तौ मैं दाही ॥
कै बिसरा जु अहा अतिहिता , कै देखि कुदिन न मानै नता[3] ।
अजहूँ आइ सँभारहु नाहाँ , लेहु उबारि जरत गहि बाहाँ ।
जौ पिउ चाहसि जीउ मम , आउ तोहिँ जिउ देउँ ।
तन जरि जिमि दूरद[4] भयो , कहसि तौ कर कै लेउँ ॥ ४३९ ॥
जौ न पसीजसि जिउ मोर भाखी , पूछि देखु गिरि कानन साखी ।
करैं पुकार मज़ोरन गोवा , कुहुकि कुहुकि बन कोकिल रोवा ॥
गयो सीखि पपिहा मम बोला , अजहूँ घोखत बन बन डोला ।
उड़ा परेवा[5] सुनि मम बाता , अजहूँ चरन रकत सौं राता ॥

१—उष्ण = गरम । २ विरहानल । ३ अ० نَاطَ नाता, संबन्ध ।
४—सं० द्विरद = हाथी अर्थात् काला । ५—कबूतर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हारिल दुख सुनि भयो बिपाऊ, अजहूँ धरती धरै न पाऊ।
गा भुजंग होइ गृह बासा, दहि भा स्याम बिरह के उसासा॥
कियो भँकार बिरह के आँचा, बाएस भस्म होत तहँ बाँचा।
कुकनूँ पंखी जहँ बसै, तहँ प्रगटी यह पीर।
उठी आगि सुनि कै हिये, लगा सँवारै चीर॥ ४४०॥
बनसपती[1] सुनि बिथा हमारी, बरहे मास होइ पतझारी।
टेसू जरि पुनि भयो अँगारा, फरहद आगि लाइ सिर जारा।
दारिम हिया फाट सुनि पीरा, पै पिय तोर न दया सरीरा॥
भीतर जस खजूर कर बीआ, रहै छिपान मोर तस हीया।
रोइ रकत घुँघुँची भइ दुखी, तजी न बेल रही करमुखी॥
भयो खीन जस चल दल पाता, पौन उसास डोल मम गाता।
जो जग सुनी बिथा यह मोरी, तै सराहि पिय छाती तोरी॥
कहत फिरत मारुत बिथा, पातन सौं बन माहिँ।
धुनत सीस सुनि सुनि सब, पीय दया तोहिँ नाहिँ॥ ४४१॥
एक दिन भूलि मधुप उर लागा, दहि भा स्याम तबहिँ उड़ि भागा।
गै सरवर मम दुख परगटा, कौंलहिँ हिए परे सुनि गटा[2]॥
गयो तेज सुनि कुमुदिनि केरा, बुड़िबे के डर बाँधी बेरा।
सरवर पुनि बिरहै झकझोरा, निसि बासर तन उठै हलोरा॥
डरन मीन चखु पलक न लावा, मोति सीप दुख बिरह जरावा।
बैसंदर रज पानि सर्मारू, सब महँ रही ब्यापि मोर पीरू॥
जौ इन्ह माहँ होत तोर गाता, तौ तोर हिय मम पीर पिराता।
बरन बरन कहँ जानिये, जगत सिष्टि सब झारि।
कौन बरन महँ साइँ तुम्ह, जेहि नहिँ चेत हमारि॥ ४४२॥

१—बनस्पति। १—कमल के फूल के बीच का छाता जिसमें बीज होते हैं। गांठ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चैत माहिँ जब कीन्ह बिछोई , जग एहि समय न बिछुरै कोई ।
बिछुरत गयो प्रान तजि देही , पिय बिनु परी पुहुमि खसि खेही ॥
बिरह जो आह घात कहँ लागा , लागि आइ ज्यों मरघट आगा (क)।
मैन आनि कीन्हेउँ तन नासू , सब कहँ मधु हम कहँ बिख बासू[1] ॥
खाइ माँसु मधु होइ निहाला , बिरह कीन्ह तन मिरिग क छाता ।
नवपल्लव बन तरु अवसारे[2] , कत तोरे नहिँ नेह पिआरे ॥
पलहत फूलत जो बन बारी , बिरह आइ जरि मूरि उपारी ।
कहाँ बसत केहि कुसुम गुन , मधुकर हिए बिचारु ।
भूलि रहा कहँ कौल कहँ , मालति बेलि सँभारु ॥ ४४३ ॥
भा बैसाख(ख) आँसु चखु दूना , भा तन जान पान कर चूना ।
जँह जँह परै नैन जल धारा , तहँहि अंक हुत उठै लुवारा[3] ॥
परी बिजाग पुहुमि सब जारी , जरहि मैन जौ जानि उघारी ।
भा चन्दन घनसार दुहेला , जनु घृत आनि अगिन महँ मेला ॥
चीर हार तन चोली ताती , तुम बिनु कंत सिराइ न छाती ।
दानव दिवस साँझ अहि भारी , रकसिनि[4] रैनि भूत भिनुसारी ॥
सो तन जानु बिरह जेहि पीरा , निसि बासर छिन कल न सरीरा ।
हौं जोगिन जोगी भई , तौ पिउ खेह अँडार ।
अब तिय बिरहा जरि जरी , आनि समेटहु छार ॥ ४४४ ॥
जेठ तपै रबि सहसन तेजा , सोइ जाने जेहि कंत न सेजा ।
अस जग तपन तपै एहि मासू , पुतरिन्ह माहँ सुखावै आँसू ॥
बिरह न रहै छपाए छिपा , सहस तेज होइ हम तन तपा ।
पंकज दल मलेज घनसारा , लागत अंग होइ सब छारा ॥
बूड़ी अमिय दिष्टि पुनि सारी , तेहितेँ अमर जरी नहि जारी ।
बिरह बवंडर भा बिनु नाँहा , जिमि जिउ पात फिरै तेहि माँहा ॥
पौन उसास उठै जस आँधी , परगट होइ न लाज कि बाँधी ।

(क) कागा-पाठा० । १—बासुकि = नाग । २—निकाले । (ख) भाधव मास, पाठा० । ३—ज्वाला । ४—राक्षसी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्याधा बिरह सरीर बन, दाँव दहा जिअ मोर।
छाँह न पावै कंत बिनु, आगि बरै चहुँ ओर॥ ४४५॥

मास असाढ़ गगन घहराना, बरखा रितु आगम सब जाना।
बादर सेत स्याम होइ आए, बैरी बक कै पाँति देखाए॥
लाग लोग घर आपन छावै, पंछी बन बन गेह बनावै।
मोर कन्त जोगी बनबासी, मँदिर सँवारि करौं का हाँसी॥
जेहि उजारि पिउ बसै हमारा, बसती सो यह सबै उजारा।
बिरहा बैठ हिए होइ थानी, अब निहचै जानेहुँ जिउ हानी॥
गये विदेस देस कहँ आए, हम कहुँ कंत सँदेस न पाए।
गिरही एहि रितु घर तकै, साँझ परे पुनि गाउँ।
जोगिहिँ जहवहिँ साँझ भै, सोई गाँउँ सोइ ठाउँ॥ ४४६॥

जो एहि मास लोग घर साजा, मोहिँ बिनु कंत न छाजन[1] छाजा।
एह दुहु मास मीजि सुटि रोई, बिरहा बली निचिंत न सोई॥
आगर दुख दूलम सरबरी, निसि दिन पंथ निहारौं खरी।
बाक न मुख कैसे दुख कहऊँ, बन्धन पास आँधि चखु रहऊँ॥
नेकु नं कोऊ बिरह घुन घूनी, भइ बिनु तेज थाकि अब थूनी।
को रि चलै लइ पिउ की ओरी, थाँमि उँचाइ वाहिँ लै मोरी॥
हौं जेहि लगि यह ठाट सँवारा, कहाँ जाइ दहुँ भयो मयारा।
अजहूँ आइ सँभारु रे, बैरी कहउँ कि मिंत।
भोगी होइ तु सँवरइ, जागिहि का की चिंत॥ ४४७॥

सावन बिरह बढ़ावन आवा, उनई घटा गगन सब छावा।
बरसन लाग मेघ अतुवानी, घर आँगन सब भरि गा पानी॥
की दुख देखि मोर अति रोवा, कै कतहूँ भा प्रेम बिछोवा।
जो न बिरह धन सम्पति लूटी, रकत रोव कत बीर बहूटी॥
बोलहिँ बिरही बिरह कि बोली, हम तन जारि कीन्ह जेहि होली।

१—छान = छप्पर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दादुर शबद जाइ नाहिँ सहा , निसरत प्रान लाज गा कहा ॥
तरुनिन पूजि तीज रितु मानी , झूल हिँडोल गाय पिक बानी ।
दुख हिँडोल मो मन चढ़ा , बिरहा दिये झुलाय ।
खन पुहुमी खन सरग कहँ , निसि दिन आवै जाय ॥ ४४८ ॥

भादौं भरन भरी बिख धारा , मौं कहँ भवन भयो अँधिआरा ।
अस कहि सकल तमी तम चौरा , तमचुर बोल जानु भा भोरा ॥
रबि ससि नखत सबै छिपि गए , दिन औ राति दोऊ एक भए ।
कंत न सेज अंत[1] निसि नाहीँ , नागिनि भई आस्तीँ[2] बाहीँ ॥
यह अँधिआरि भयावनि राती , बिहरि न जाइ बजर की छाती ।
नैनन नीर नदी होइ गई , बूड़त सेज भई घरनई[3] ॥
नैया-डोलन उदधि गँभीरा , बिनु खेवक को लावै तीरा ।
रैनि अँधेरी भँवर जल , चहुँ दिसि लहरि झँकोर ।
बैठे तीर निचिंत सोँ , का जानैँ दुख मोर ॥ ४४९ ॥

आसुन मास खंज परगटा , घन छीने पुहुमी जल घटा ।
सरद समौ सीतल ससि राती , घनहिँ सिरान जगत की छाती ॥
हम घट बिरह दून कै दहा , लोयन नार[4] समुँद होइ बहा ।
हम तेस निरखेँ तीरन लागा , जस बर लहरि सिवारि क धागा ॥
लोचन भए मीन तेहि माँही , एकहु पल पल[5] लागैँ नाहीँ ।
हीआ संख भा तजि तन साथा , मकु रे चढ़ै कैसौँ तुअ हाथा ॥
तैँ जोगी भूला केहि नादू , ए सब खेल तोर परसादू ।
नैनन होइ सब निसि गई , पलउ न सीतल लाग ।
अजहुँ आउ रे एहि समै , कहाँ लगावसि आग ॥ ४५० ॥

कातिक कहँ तक रह घट सँसा , पिय न गए दै अवधि की आसा ।
देस न जानउँ दहुँ कहँ पीऊ , कहु का कहि समुझावउँ जीऊ ॥

१—सं, अन्त समाप्ति । २ (फा آستیں) आसतीन, बहोरी । ३—घन्नाई (सं० घट+नौ) घडों को बाँध के जो बेड़ा बनाते हैं । ४—जल । ५—पलक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मानहिँ परब देवारी लोगू, पूजहिँ गाइ करहिँ रस भोगू।
जग सेरान एहि समय सोहाई, हम तन दीन्ह दवाँ[1] जनु लाई॥
भोरहिँ मारुत सीतल बहा, घर घर जाइ सँदेसा कहा।
लोग सुपेती साजै लागा, हम हिअ भयो दून वैरागा॥
पिउ सँदेस कोउ कहै न आई, सपनेहुँ जाहि न ठावँ सुनाई।
नींद न अवत रैनि दिन, होइ करेजँ छेद।
धनि सो नारि जेहि पिय गयो, सपने कहि कहि भेद॥ ४५१॥
अगहन सकल गहन की घरी, धन सीता रावन जेहिँ हरी।
बिरह असोक सोक फल फरा, तेहि की छाँहँ धूप जिउ जरा॥
राम कि हनुवँत से सुधि लीन्हा, तूँ पिय निठुर सुरत नहिँ कीन्हा।
उहो जोगि हुत जे सुधि पाई, रावन हनि सिय जाइ छोड़ाई॥
तू जोगी कस लेसि न चाही, जानि बूझि तैँ बरबस बाही।
अजहूँ आइ सँभारहु कंता, बिरहा जाड़ भए एकमन्ता[2]॥
सीव[3] सजान[4] भयो बिनु नाहाँ, दबका फिरै जीउ घट माहाँ।
बिरहा दैत कुरंग होए, चरै सकल सुख बारि।
आइ दिवस एक राम होइ, कसन जाहु पिय मारि॥ ४५२॥
पूस मास जग जाड़ा मारा, दिनकरहूँ दिसि अगिन सँभारा।
पाला परै पौन झुरकाई, जाड़न देह सून होइ जाई॥
कबहूँ जाड़ न छोड़ै छाती, बासर घरी और सब राती॥
जेतिक ओढ़ौँ सँवर सपेती, हहलि हहलि उर कापौँ तेती।
रे जोगी एहि दूभर मासू, जेहि पल घटा न नैना आँसू।
हम कहँ मेलि हिवंचल कूईँ, कहाँ जाइ सुलगाई धूईँ॥
का कहँ रबि होइ प्रगटेहु पीऊ, काकर जाइ छड़ायहु सीऊ।
जाड़न मरौँ दुकूल मैँ, अजहुँ सवँरि पिय आउ।
तू जोगी हौँ जोगिनी, कंथा आनि ओढ़ाउ॥ ४५३॥

१—दावाग्नि। २—एक मत। ३—शीत। ४—सज्ञान = चेतन, प्रबल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूभर माघ भयो बिनु नाहाँ, रहत न जिउ देखौं घट माहाँ।
पिय बिनु हिय घन गहबर आवा, नैनन्ह मिलि माँहट[1] बरिसावा॥
पौन उसास झँकोर झकोरा, हिया करेजा काँपै मोरा।
बाढ़ी दिवस दुक्ख तन बाढ़ा, बरबस जीउ जाइ नहिँ काढ़ा॥
सिरीपंचिमी खेलैँ लोगू, मोहिँ बिनु कंत दून भा सोगू।
तरुनी फिरहिँ सीस[2] के राता, हम तिन देखि भूलि सुधि साता॥
सखिन्ह आनि हौं भरी गुलाला, प्रगटी रोम रोम तन ज्वाला।
जौ न हसौं तौ सब हँसहिँ, हँसौं तौ हँसी न आउ।
दुहुँ दूभर हौं बिच परी, पिय तुम्ह नेह सुभाउ॥ ४५४॥

फागुन बिरह पवन अधिकाना, हम तन जस तरु पात पुराना।
सुख तरुवर सेती बरु तोरा, ता पर दुख आँधी झकझोरा॥
आसा सुख बसंत फुलवारी, तजि न सकै यह खाखरि बारी।
चातक बोल जो हम सुख मूला, दहुँ केहि नौतम मंजरि भूला॥
कहाँ जाइ इन्ह चाचरि जोरी, हम तन मैन लाइ दह होरी।
धुआँ सबै दुहुँ नैन समाना, तातेँ अहि निसि नीर बहाना॥
स्वारथ लागि के न कछु कीन्हाँ, पै बिधि लिखा न काहू चीन्हाँ।
राम हेतु जिमि जानकी, तजि कुल कीन्ह पयान।
अस न जान जो लंकपति, करहि आन की आन॥ ४५५॥

जोगी हेतु लीन्ह अस जानी, हिया होइ जस दीपक पानी।
मकु चारिहुँ दिस लागि बिजागी, जाइ छाड़ि जस धुईँ कि आगी॥
जोगी जोग पथिक कहँ बूझै, पंथ अँधेर नाहिँ कछु सूझै।
निकसे मेलि भवन अँधिआरे, दै तारा उठि जाइ सवारे॥
जोगी संग लीन्ह यहि काजा, वेदन खोवे सुख उपराजा।
मकु दै मुरी जाइ कै रोगी, औषद आन न जानै जोगी॥
जोगी हेतु कीन्ह गुन हीए, छूटै फाँद सबद के दीए।

१—माघ की वर्षा, महावत। २—शिशिर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नेकु धंधारी हाथ दै , जाइ फाँद अरुझाइ ।
ज्यौं ज्यौं कोउ सुरझावै , त्यौं त्यौं अधिक फँदाइ ॥ ४५६ ॥

अब जो परी फाँद पिय तोरे , कहा होइ पछताएँ मोरे ।
ब्याधा जो बन बिचहिँ फँदावै , मरै न पाउ सँभारि उठावै ॥
पै तुम्ह देख निछोही ब्याधा , काहे लेसि एत अपराधा ।
कै अब आइ लेहु सँग लाई , कै कटु फाँद जाहुँ मोकलाई ॥
तैं मोहिँ देखत खन पहिचाना , मै तोर भेद न एकौ जाना ।
आन क भेद लिए जो लेहू , आपन भेद न काहुहिँ देहू ॥
जौ मैं तब पावति तुअ अंतू , करत सोई जेहि बिलम्हत कंतू ।

मान इहै पछताव मन , रहा जनम भरि मोहिँ ।
बूझि लिएउ मैं सेा बिखै , अहा हेतु जो तोहिँ ॥ ४५७ ॥

जौ तोर पीत खपर सौं साईं , आन न देखु नारि की ताईं ।
बिरह बैठि उर(क) खपर परोवा , भीजा नैन नीर जत रोवा ॥
जौ तोर हेतु भसम सों जोगी , आइ देखु तिय बिरह बियोगी ।
तन मन जारि भसम कै राखा , कागन आइ ठोर[1] भरि चाखा ॥
हीवर आगि लाइ सेा राखी , तुम्ह नहिँ गए होए मोर साखी ।
जेा चाहसि अंबर[2] रतनारा , आइ देखु मम लोचन धारा ॥
रकत सुरंग धार सब टूटा , बसन जेा रंगा जनम नहिँ छूटा ।

हीवर छाला चकर चखु , पलक पाँवरी भेख ।
दहुँ सेा जेागी दिष्टि भरि , काहि जानि कस देख ॥ ४५८ ॥

पाती लिखी समापति भई , चूमि परेवा के कर दई ।
किहिसि पाइ गहि बहुत बिनाती , कहिसि लेहु यह दुख की पाती ॥
बिरहिन कर लागे पिअरानी , भीजी नैन नीर के पानी ।
जतन जतन कै राखी पाती , सेँकी लाइ लाइ धन छाती ॥

(क) उर पाठा० । १—चोँच । २—वस्त्र ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंजन सब आखर होइ लागा, बाँचत हिए उठै वैरागा।
पाती देखि देखि उठै मरोरा, भरि भरि जनम पात बन तोरा॥
पाती चढ़िहि जाए पिय हाथा, हौं आखर होइ चली न साथा।

तन पीअर मुख साँवरा, रही तुचा[1] होइ अंग।
तिय यहि गुनि पाती भई, कसन लेहु मोहिँ संग॥ ४५९॥

चला परेवा लै दुख पाती, बिहरै सुनत बज्र छाती।
पुहुमि न धरै पाँउ अनुरागी, पाती जानु पवन सँग लागी॥
थारेन्ह दिवस जाइ निआरावा, देखेसि सागर देस सुहावा।
ठाँवहि ठाँव सोहावनि बारी, सोन रूप फूली फुलवारी॥
पोखर घाट चहूँ दिसि बाँधे, कुआँ अनेक रहट पुनि साँधे।
अनबन भाँति सवाँरि कियारी, सींचहिँ अपनी अपनी बारी॥
झुंडहिँ भरहिँ पानि अच्छरी[2], माथे सोन रूप की घरी।

नीबी छबि लटकी झबा, पाएन नेउर बाज।
ठुमुकि धरहि जब पुहुमि पगु, परै इन्द्र सिर गाज॥ ४६०॥

परगट रहट आइ यह अवनी, मूरख जन कहँ भई चेतवनी।
समुझ न कोउ अधिक दुख कहा, होइ कुरंग तन पंजर रहा॥
निसि दिन नैन ढरै जल धारा, ऊँच सबद सुनि करै पुकारा।
तबहुँ न चेत हिये के आँधे, हम इहँ बाँध घरे[3] जिमि बाँधे॥
जौलहुँ होइ न यह तन नासा, छूट न कैसेहुँ गिँव कर फाँसा।
कोउ आगे कोउ पाछे परे, एकहि ठावँ आइ सब ढरे॥
भरी ऊँच सिर कीन्हे आई, छूछो चली जाहिँ सिर नाई।

रहट बिसह[4] एह मूढ़ मन, दिएँ अँधौटा नैन।
कहा जो हाँक्यो जनम भरि, चलेहु न एकौ कैन॥ ४६१॥

१—त्वचा = खाल। २—अप्सरा, सुन्दर स्त्रियाँ। ३—घड़े। ४—बैल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गै देखेसि पुनि सागर गाऊँ, चारिउ दिसा लगा अँवराऊ।
ऊँच कोट अति सुन्दर साजा, धन राजा जाकर उपराजा[1]॥
नौ खिरकी तहाँ रहहिँ उघारी, लागी सोन दुआरि केवारी॥
दुइ मसिआर ऊँच कै बारा, सरग माँह चमकै जनु तारा।
राउत राजा पातिन पाँती(क), बैसे बार अपूरब भाँती॥
बाहर चित्र विचित्र बनावा, भीतर जानु अंत जिन पावा।
आठ खंड आठौ मनिआरे, ठाँव ठाँव सब मोहनहारे॥
सेव करहिँ सब देवता, अस राजा बरिआर।
अगिनि रसोइँआ जल रजक, पौन बहारै बार॥ ४६२॥

देखि परेवा देस भुलाना, हुपुमी सरग जाइ नहिँ जाना।
कहिसि कि धनि पुहमी धनि ईसा, जाकर सब कौतुक तहँ दीसा(ख)॥
लोभ चार बाझै जग पाँखी, मधि एहि देस बिदेसी माखी।
निहचै जो आवै एहि गाँऊँ, आन देस कर लेइ न नाऊँ॥
इहवाँ राजकुअँर सुख भोगी, हौं परदेसी निरधिन जोगी।
राजा राउ न पावहिँ बारा, को हमार लै कहै जोहारा॥
राउत राना ठाढ़ तँवाहीँ[2], हम बपुरे केहि लेखे माहीँ।
भसम अंग गेरुआ बसन(ग), जटा धरै जनि कोइ।
मान सो आसन आन है, जातेँ दरसन होइ॥ ४६३॥

सवँरि परेवा गुरु-उपदेसा, सरवर तीर ठाँव एक लेसा।
तहँ बैस्यो गुरु आसन मारी, लाइ समाधि ब्रह्म की तारी॥
मारग बाँधि पौन परचावा, पेट खलाई पीठि सौँलावा।
उपजी अगिन तेज तन बरा, भितरहिँ भीतर मंदिर जरा॥
अमिअ कुंड कर बार उघारा, बरसाई अमिरित की धारा।

१—बनाया हुआ। (क) बत्तिस परतिहार की पांती—पाठा०। (ख) जाकर यह पुहुमी जगदीसा। पाठा०। २—प्रतीक्षा करते हैं। (ग) कंथा से ली चिरकुटी—पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हीरवर सर अमिरित जल भरा , दहि दहि कँवल नाल भा हरा ॥
पौन तेज जल उठेउ हलोरा , डगमग नाल कौंल झकझोरा ।
हंसा सकती ध्यान धरि , रँग रँग हेरै लाग ।
जो मन चाहै सेा मिलै , महा सिद्ध सिर भाग ॥ ४६४ ॥

---

(३३) सिद्धसमागम खंड ।

भयेा सोर सब नगर मँझारी , करहिँ बखान सकल नर नारी ।
सागर गाँव सिद्ध एक आवा , मुख देखत मन इच्छ पुरावा ॥
कुष्ठी कया बाँझ सुत पावै , अंधहिँ चखु दै जग देखरावै ।
कहै चाह परदेसी केरी , बिछुरेहिँ आनि मिलावै फेरी ॥
सुनि के धाए सब नर नारी , बार बूढ़ तरुनी औ बारी ।
जेहि निहचै ते निधि लै आए , निहचै बिना बादि सब धाए ॥
निहचै नग जानि डारेा कोई , निहचै सिद्धि परापति होई ।
निहचै इच्छा सरग हुत , आनि मिटावै दुंद ।
जैसे नैन चकेार कहँ , अमी पियावै चंद ॥ ४६५ ॥

सुना कुँअर पुनि सिद्ध बखाना , अकसमात चित रहस[1] समाना ।
कहिसि कि भाग जोर समुहाई[2] , तब अस सिद्ध मिलै कोउ आई ॥
करूँ जाइ मन बच कै सेवा , मकु तेा नहिँ होइ जाइ परेवा ।
चित्रावलि कर कुसल सुनावै , रूपनगर कर पंथ दिखावै ॥
चला कुँअर निहचै यक-हाथा[3] , सेवक पाँचन न छोड़हिँ साथा ।
महत गरब दोऊ तहँ त्यागे , मन बच कर्म तिनेा संग लागे ॥
सनमुख आइ दरस जब कीन्हाँ , वै ओकहँ वै ओकहँ चीन्हाँ ।
देखत दुहूँ आनन्द भा , रहसत आगेँ आय ।
परेउ परेवा कुँअर पग , कुँअर परेवा पाय ॥ ४६६ ॥

१—उत्साह । इच्छा । २—सामने आता है, उदय हेता है । ३—अकेला ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहै कुँअर सुनु हनिवँत बीरा , लागु कंठ ज्यौं सीत समीरा।
कहु कुसलात बेगि सिय केरी , निसरत प्रान राखु घट फेरी॥
हौं जिमि राम भयेा बैरागी , नख सिख परी बिरह की आगी।
राम संग हुत लछिमन भाई , हौं अकेल दुख पुनि अधिकाई॥
हनिवँत कहा सीय कुसलाता , राघव बदन सुनत भा राता।
औ पुनि बिथा कहिसि ओहि केरी , जेहि दिन ते तुम ओहि औडेरी॥
तहँहीं दिवस देखि अकसरी , रावन बिरह नारि से हरी।
सीता रावन बस परी , करौ न कोटि उपाइ।
तौ लहुँ नाहिँ उधार निजु , जौलहुँ राम न जाइ॥ ४६७॥
पुनि दीन्हेसि चित्रावलि पाती , खोलि कुँअर लाई लै छाती।
सुलगत काठ लागु जनु लूका , दुहूँ आगि मिलि उठा भभूका॥
हिया जरत जो लिहिसि उसासा , धूम बरन होइ गयेा अकासा।
अमिरित बचन भरी हुत छाती , ता सोँ अगिन मुख बाँची पाती॥
पाती पावस सलिता भई , दूनहुँ[1] कवँल दुःख जल मई।
आखर मगर गोह घरिआरा , अरथ भँवर परि कठिन निसारा॥
भँवर अनेक पैठि मन तरा[2] , एक तेँ निकसि ऐक महँ परा।
पाती जनु पावस नदी , मन तकि पार तराइ।
चित्रावलि दुख अगम जल , बूडि बूडि तहँ जाइ॥ ४६८॥
पाती पढ़ी समापति भई , बिरह झकोर कुँअर सुधि गई।
हीवर जिमि ग्रीषम रबि जरा , जिउ जनु पात बवंडर परा॥
बर कै उठा चला लै चाहा , पाइ फिरा जैसे उतसाहा।
पुनि जो चेत होइ देखा हेरी , पायन परी बचा की बेरी॥
कहिसि कहौं का दुःख बखानी , जनम सिराइ न कहत कहानी।
हौ पंछी भूला हुत आवा , जाल मेलि एहि गाँव फँदावा॥
चार लेाभ वैसेउँ एहि आड़ा[3] , अचक आइ खोँचा उर गड़ा।
पाँखन लासा प्रेम का , बाचा बंधन पाइ।
दै दै मारौं मूँड बहु , निकस न केहु उपाइ (क)॥४६९॥

१—किनारा। २—तैरा। ३—अड्डा। (क) दै दै मारौं मूँड इहँ निकसि न कैसेहुँ जाइ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब तौहि मिलेँ भयो संतोखा , आसा मिली गयो जीउ धोखा ।
करहु उपाइ गवँन जेँहि होई , मैँ आपन बुधि मति सब खोई ॥
बोरीँ चले धरम की हानी , परगट चहुँ दिसि रोकहिँ रानी ।
सुनि कै बिथा परेवैँ कहा , अब दुख सब बीता जित अहा ॥
परगट जाइ सँवारहु कंथा , अंजन लाइ गुपत चलु पंथा ।
रहसि कुँअर मंदिर महँ आए , कौँलावति कहँ निअर बुलाए ॥
कहेसि सुनहु अब राजदुलारी , हौँ परदेसी आदि भिखारी ।
आउ न हमरे काज यह , राज पाट सुख भोग ।
चित्रावलि हियरे बसी , जाकर बिरह बियोग ॥ ४७० ॥
अब लहुँ मिला न अगुआ कोई , जेहिँ परचय ओहि दिस कै होई ।
अगुआ मिला चल्योँ उठि संगा , तुम जनि करहु कौँल मन भंगा ॥
जौ बिधि आस पुरावै मोरी , तौ मैँ चेत करब पुनि तोरी ।
सुनतहिँ गवँन धसकि उर गयऊ , कंचन अँग राँग पुनि भयऊ ॥
कहिसि कि ऐ जग जीवन साईँ , मोर जिअन तुअ दरसन ताईँ ।
जो तुम होब बिदेसी राजा , इहवाँ मोर कौन अब काजा ॥
पाछेँ महा दुःख पुनि कीता , जहवाँ राम तहाँ पुनि सीता ।
जैसे पनहीँ पाँव की , तैसे तिया सुभाउ ।
पुरुष पंथ चलु आपने , पनहीँ तजै न पाउ ॥ ४७१ ॥
कहै सुजान सुनहु वर नारी , तुम सयानि औ बूझनिहारी ।
मेहरिहिँ कहैँ लोग सब देहरी . धरै असन अथिर सोइ मेहरी ॥
औ पुनि घरनि कहै सब कोई , घरहिँ सँभारै घरनी सोई ।
राघव जौ लाई सँग सीता , बिछुरेँ जनम दुःख सब बीता ॥
तुम कछु चित चिंता जनि करहू , जो हम कहा सोई चित धरहू ।
इतना कहि कंथा गिवँ डारा , औ पुनि अंग चढ़ापउ छारा ॥
लुकअंजन लै आँखिन दीन्हा , गा छिपाइ चटेक[1] जनु कीन्हा ।

१—इंद्रजाल, दृष्टिबन्दी का खेल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौंला देखि अचक रही, जनु ठगलाव देखाए।
पुनि लागेँ बिरहा धका, गिरी पुहुमि मुरछाए॥ ४७२॥
देखि सखी सब कीन्ह अँदोरा[१], गहि उठाइ बैठीँ लै कोरा।
सुनि कौंलावति मंदिर कूका[२], परी अचल गंगा जिय हूका[३]॥
राजा पुनि बिसँभर होइ धावा, नंगे पाँव तहाँ चलि आवा।
देखि अवस्था धिय कर रोवा, दूनहुँ बदन नैन जल धोवा॥
पूछहिँ बिथा सुनावहिँ ईठा[४], गुर गूँगा कर तीत न मीठा।
रानी पूँछि हारि जब रही, कौंल बिथा तब फूलन कही॥
प्रति उत्तर जस दूनहुँ बीता, औ सुजान चेटक पुनि कीता।
आदि अंत बहु सखिन सब, एक एक कीन्ह बखान।
सुनत आगि दुहुँ उर परी, ओ ओहि पारा प्रान॥ ४७३॥
राजकुँअर कर सुनत बिछोहा, धाह[५] मेलि पुनि राजा रोआ।
कौंलावति दुख दीरघ जानी, उमड़ि चली गंगा चखु पानी॥
सखी सहेली पुनि सब रोईँ, ससि अथई जानहुँ सर कोईँ।
पर आपन जन परिजन लोगा(क), सगरेँ नगर परा सुनि सोगा॥
नर नारी जुबती औ जरा, सब के सीस गाज जनु परा।
मलि मलि हाथ कहैँ सब कोई, अस परजापति[६] आन न होई॥
पहर एक बीता होइ रोरा, कोऊ साँच कोउ झूँठ निहोरा।
छमाँ[७] कराए सब जना, पँडितन्ह ज्ञान बुझाइ।
मारे बिरह बयारि के, कौंल रही कुम्हिलाइ॥ ४७४॥
जोगी खेल जो चेटक खेला, छाड़ि मँदिल होइ चला अकेला।
आवा बार जहाँ जग रोका, भीर लागि पै काहु न टोका॥
देखि भीर जिय कौतुक होई, सब संगी पै चीन्ह न कोई।

१—शोर, चीत्कार, हल्ला, २—गूँज। ३—पीर। ४—सं० इष्ट = मित्र, हितु। ५—ढाढ, चीत्कार। (क) परे आइ जेते पुर लोगा पाठा०। ६—प्रजापति = ठाकुर। ७—शान्ति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आदि पंथ सो आगे कीता[1] (ख) , यह कौतुक जनु सपना बीता ॥
बेगिहिँ आइ परेवहिँ मिला , संगिहि देखि कौंल जनु खिला ।
पंथ चले तजि सागर गाऊँ , जपत चले चित्रावलि नाऊँ ॥
सूध पंथ अगुवा लै आवा , बेगहिँ रूपनगर निअरावा ।
कहिसि कि एही ठाँव तुम , बैठि रहहु लै लाइ ।
हौं चित्रावलि निअर होइ , चाह[2] सुनावौं जाइ ॥ ४७५ ॥

---

(३४) कथक खंड ।

जब दीन्हा सोहिल कहँ दागा[3] , धुआ तस उठा गगन कहँ लागा ।
सागर नगर जो अहै बसाए , धुआँ देखि चखु जल भरि आए ॥
कहहिँ कि जे एकछत यहि मारा , औार को आहि जगत लघु तारा ।
हम हैँ सब सलिता लघु नीरा , वह निजु सागर गहिर गंभीरा ॥
देस देस सब राउ सँकाने , अहै अडंड डंड तिन्ह माने ।
भाँटन जोरि भटन्त[4] सुनावा , गुनियन उहै गीति पुनि गावा ॥
कथक देखावहिँ कथा बखानी , घर घर बालक कहैँ कहानी ।
सोहिल गरब न थिर रहा , गरब करै जनि काउ ।
निसि बासर सब देस महँ , घर घर इहै चबाउ ॥ ४७६ ॥
बीजानगर केर एक गुनी , आवा रूपनगर जस सुनी ।
धन लगि घर तजि भा परदेसी , गावै कथा देखावै भेसी ॥
गावै सत संती कर जानी , हरिचँद भरा डोम घर पानी ।
रामचन्द्र जिमि रावन हना , सीता आनि दीन्ह पुनि बना ॥
गावै पुनि किसुना औतारा , मधुपुर जेस कंसासुर मारा ।

१—किया । (ख) लीता । २—खबर, समाचार । ३—दाह । ४—काव्य ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारथ आइ कोप उदगरा, जिमि पांडव कौरव कुल मारा॥
नौतम[1] कथा जोरि पुनि गाई, सोहिल सागर भई लड़ाई।
ऊघट घटै न ताल सुर, भाव देखावनिहारि।
तीनौं विद्या महँ निपुन, जोग वीर सिंगार॥ ४७७॥
रूपनगर चलि आवा गुनी, चित्रसेनि की कीरति सुनी।
राजा महा सुबुध गुन ज्ञानी, पंडित गुनगाहक अरु दानी॥
गुनि गन ज्ञान सुनत सुख पावा, वेगहिँ राजदुआरहिँ आवा।
बीन बजाय सुनाइसि रागा, जत कत नैन टकटकी लागा॥
मानहुँ मृगा बैन सुनि भूले, लागे बान जहाँ तहँ झूले।
काहू जाइ नरेस जनावा, गुनी एक कतहूँ तेँ आवा॥
बीन बजाइ चित्त हरि लेई, गावत पुनि दहुँ काह करेई।
राजहिँ सुनि उतसाह भा, बेला गुनी रसाल।
गुनी जनन कहँ निद्धि नौ, मूरख के उर साल॥ ४७८॥
राजा निकट गुनी चलि आवा, बीनहिँ माँह असीस बजावा।
बढ़ै प्रताप अखंडित राजू, जुग जुग रहौ पुहमि एहि साजू॥
मनहुँ बीन रसना तेँ कहा, आनन गुनी देखि सब रहा।
राजै कहा कहा तुम्ह जाना, आपन गुन सब करहु बखाना॥
कहिसि प्रथम हम राग सुनावहिँ, कथा कहहिँ भेसी देखरावहिँ।
आदि अंत लहुँ नौ औतारा, और अनेक बीर सिँगारा॥
सोहिल जूझि कथा पुनि भई, अमिरित बात सुरस रस नई(क)।
सुनबे को अमिरित कथा, डठी सभा हिय चाउ।
अज्ञा भई नरेस की, नौतम कथा सुनाउ॥ ४७९॥
सोहिल कथा कथक परगासी, गाए कंठ छन्द चौरासी।
पहिलहिँ गाएसि कौँल सिँगारा, सुनि कै भवँर भयो संसारा॥

१—नवीन। (क) कुरस रस भई। पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनि सोहिल कर बिरह सुनावा , कटक जोरि सागर गढ़ आवा ।
औ जस तेज बसीठन्ह कीन्हा , सागर सुनि उत्तर जस दीन्हा ॥
सागर पुनि गढ़ बाजेउ आई , जस दूनहुँ दल भई लड़ाई ।
बारि मास गढ़ घेरे रहा , सागर जौहर साजै चाहा ॥
जोगी एक बन्द महँ अहा , अस न जान दहुँ कारन कहा ।
पैज बाँधि गहि खरग जिमि , कीन्हेसि सोहिल हानि ।
दीन्हेसि कौंल बियाहि जस , एक एक किहिस बखानि ॥४८०॥
गाइ कथक जब कथा सुनाई , रही सभा ठगलाडू[1] खाई ।
अरथ भाव सब काहू बूझा , जेहि जस भाउ ताहि तस सूझा ॥
काहू हिए भाउ सिंगारा , काहू बीर चाउ हथियारा ।
काहू जोग सुनत रस हीए , उपजी जोति ज्ञान के दीये ॥
चित्रसेन चित चेत जनावा , दीनेहुँ दान गुनी बहुरावा ।
कहिसि कि जौ घर धिय औतरी , तौ एह कथा जगत परचरी ॥
अकसमात बिधि भयो मयारा , तौ मारा सोहिल बरिआरा ।
नाहिँ त को सनमुख लरत , चितवत नेकु नरेस ।
सिंधु सूखि रज होति छिति , सकुचि जात पुनि सेस ॥ ४८१ ॥
का सवँरहु बैरी जग माहीँ , दुहिता सम बैरी जग नाहीँ ।
गरबि सीस जो नवत न नावा , जनमत आइ सीस भुइँ लावा ॥
जाही दीन जनमी घर बारी , माथे आनि चढ़ाई गारी ।
लाज नैन तजि मारग गहई , ना लजाइ चढ़ि छाती रहई ॥
जौ सुबंस(क) राखै कुल कानी[1] , तबहीँ रहै पिता मुख पानी ।
नातरु कुकरम कै अपकारी , मातु पिता मुख लावै कारी ॥
सिद्ध बचन सुनि भयो सँतोखा , अपुत न उपजै धरमी कोखा ।

१—वह लड्डू जिसके खाने से खानेवाला खिलानेवाले के वश में हो जाता है। इसे खिला कर ठग यात्रियों को ठगा करते हैं ।

(क) सुबंशि । पाठा० । १—मर्य्यादा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तजहु पुरुष परतिय रवन , सुपूरुष बाचासार ।
तुम घर रच्छा सेा करै , जो जग राखनिहार ॥ ४८२ ॥

राजैँ मन महँ कहा बिचारी , हमहूँ घर सँजोग पुनि बारी ।
पुहुमी दुंद न एकै बाजा , एक ते एक कीन्ह बड़ राजा ॥
मकु कोइ सुनि हठि माँगै आई , तब न मरन बिनु आन उपाई ।
अबहीँ खेाजौँ कोऊ कुलीना , जेहि तेँ आगिल[1] परै नहि हीना ॥
यह मन गुनि उठि मँदिर सिधारा , झलमल दुति माथा मनिआरा ।
चित न ठाउँ मन धूमिल जानी , पूँछि नीअर होइ हीरा रानी ॥
तुम पुहुमीपति चहुँदिसि नाऊँ , कारन कौन जो चित्त न ठाऊँ ।
राजैँ सरब कथा कही , सेाहिल सागर जूझि[2] ।
अै पुनि उपजी चेत कछु , हिए परा जनु बूझि[3] ॥ ४८३ ॥

रानी कहा सुनहु नरनाहाँ , मेाहिँ पुनि खरक[4] उठी जिय माहाँ ।
चित्रावलि संयेाग सयानी , कीजै सेाई रहै कुल पानी ॥
खेाजिअ कतहूँ एहि लगि जेारा , जेहि दीपक कुल होइ अँजेारा ।
यहि पुहमी बहु राजा राना , बिप्र पठाइय जहँ मन माना ॥
केाउ कुलीन क्षत्री सहसी[5] का , सुँदर देखि चढ़ा बहु टीका[6] ।
यहि जग जियन भरेासा नाहीँ , आन क तान होइ पल माहीँ ॥
भागवंत जग सेाई कहाई , संतति तीर घाट जिन लाई ।

संतति बिलँब न कीजिए , जियन भरेासा काहि ।
थेारा बहुता लाइ कै , दुहिता देहु बिआहि ॥ ४८४ ॥

राय कहा यह सेाइ बिसाहा , फिरै न फेरे घट अै लाहा ।
जो पहिलेहिँ न बिसाह बिचारी , तेहि हँसि लेाग बजावैँ तारी ॥
दिन दस अैार न चरचा करहू , यह बिचार अपने चित धरहू ।
राज लागि मेाहिँ आगम सूझा , निअरे आपन बैरी बूझा ॥

१—भविष्य । २—युद्ध = संग्राम । ३—बुद्धि । ४—चिन्ता ।
५—साहसी । ६—तिलक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुर जानि एह पुहुमी केरे, पठयौं चारहुँ ओर चितेरे।
राजा राजकुँअर जहँ पावहिँ, चित्र उरेहि आनि देखरावहिँ॥
ते दिन दस महँ आवनिहारा, चित्र देखि तब करब बिचारा।

पूँछब सब एक एक कै, जाति पाँति बेवहार।
सामुन्द्रिक मत हेरि कै, लच्छन करब बिचार॥ ४८५॥

महा गरंथ सोइ जग माहीँ, सामुन्द्रिक सब जानहिँ नाहीँ।
जेरे पढ़ा ते लक्खन[1] जाना, चित्र देखि सब कीन्ह बखाना॥
जाति पाँति गुन औगुन बूझा, जैसे मुकुर माहँ मुख सूझा।
पुहमीपति दुइ रतन बटोरा, सामुन्द्रिक औ रँगधर[2] जोरा॥
यह दुहुँ मता जो मुकुर समाना, गुन औगुन पुहुमी कर जाना।
पहिलहिँ चित्र हाथ जो कीन्हाँ, नौसाईँ इस कंदर चीन्हाँ॥
बाउर लोग चतुर सेँ करहीँ, सिरजनिहार नाउँ तेहि धरहीँ।

जौ लहु गुरु जग बिधि करै, सब कर कीन्ह बखान।
मानुष औंधी खोपरी, बूझै आन की आन॥ ४८६॥

कै बिचार हीरा उठि आई, चित्रावलि के मँदिल सिधाई।
देखि साज चित्रावलि केरा, रानी उलटि सखिन्ह मुख हेरा॥
तुम सब मिलि एह काह सिखाई, केहि कारन अस मैलि रहाई।
आजु मोहिँ ढँग नीक न लागा, एहि कर चित देखौं बैरागा[3]॥
सखिन्ह देखि रानी कहँ रूखी, जो जैसहिँ तैसहिँ सो सूखी।
चित्रावलि तब कहा बुझाई, हम चित चढ़ी आजु लरिकाई॥
गयो हसन खेलन सुख भोगा, ताहि सँवरि जिअ मानौं सोगा।

कहाँ सरोवर कहँ कुसुम, कहँ चितसारी रंग।
सँवरि मरोहा[4] हिय उठै, होइ सकल सुख भंग॥ ४८७॥

१—लक्षण। २—चितेरा। ३—विराग युक्त। बिरही। ४—मसोस।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३५) परेवा-बंधन खंड ।

चेरी एक अहित जो आही, ते छिपाइ हीरा सौं कही।
एक दिन देखत अहेउँ छिपानी, चित्रावलि निकसी कुम्हिलानी॥
रोइ परेवा सौं कछु कहा, पाती दीन्ह पावँ पुनि गहा।
गयो परेवा लै कहुँ चीठी, तेहि दिन सौं पुनि परा न डीठी।
पेम बाउ[1] जो बाउर[2] करही, सेवक पाय[3] तबहि पति धरही।
देखा अहा कहा मैं सोई, अब तुम्ह करहु जो करबें होई॥
सुनि कै हीरा हिएँ सँकानी, धसकि गयो हिय अजुगुति[4] जानी।

केहि अधरम केहि पाप बिधि, हंस कोखि भा काग।
अपने जान न बिसतुरेउँ[5] चित्र परेउ कहँ दाग॥ ४८८॥

पुनि मन कछु गियान उपराजा, जाँघ उघारेँ मरिये लाजा।
अधिक उदगरी[6] काठी झूरी, राखौं आगि मेलि सिर धूरी॥
बाट बाट सब लाई भूता, रोकहिँ राह परेवा दूता।
आवइ कहुँ पूछे बिनु नाहीँ, आनि बाँधि राखहु बँद माहीँ॥
जो जहँ तहाँ रोकि मगु रहा, आवत पंथ परेवा गहा।
बाँधि आनिकै बँद महँ राखा, अचक रहा कछु आव न भाखा॥
मन महँ कहिसि रहा पछतावा, कुअँर क आवन कहन न पावा।

वह पुनि रहिहै रैनि दिन, मारग लाएँ आँखि।
वह परदेसी बापुरा, मरिहि अकेला झाँखि[7]॥ ४८९॥

रहा सुजान नैन मगु लाई, का दहुँ कहै परेवा आई।
सो पुनि अज्ञा काह करेई, कौन भाँति दरसन पुनि देई॥
सगर दिवस यहि सोच गँवावा, साँझ परी न परेवा आवा।
ज्यौं ज्यौं छिन छिन रैनि बिहाई, त्यौं त्यौं बिरह आगि अधिकाई॥

१—वायु। २—उन्मत्त। ३—पैर। ४—अयुक्ति।
५—अलग किया। ६—प्रज्वलित। ७—रोकर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोयन दोऊ रहेँ मगु लागे , आहट कहँ सरवन पुनि जागे ।
सकल रैनि पुनि ऐसेहिँ बीती , जानु कँवल जिय भानु कि पीती[1] ॥
दिनकर उठत उठै हिय आगी , बिरह बयारि सरग गै लागी ।
कहिसि कि प्रीतम हिया सर , सूखि गयो जल नेह ।
फाट न हिया तड़ाक जेउँ , हंस चलेउ तजि देह ॥ ४९० ॥

जौ वै मो सौँ निज मुख फेरा , तौ काया परान केहि केरा ।
जीउ लेइ जो जम बरिआरा , छुटै प्रान यह दुःख अपारा ॥
जौ अब मरौँ होइ अपघाती , जगत नसाइ जनम औ जाती ।
मैँ बिरही मोहिँ नाँच नचावा , अंत सो यह कौतुक देखरावा ॥
अब नाचौँ किन परगट होई , ओहि के पंथ लै मारै कोई ।
तिसरा कुँअर डारि सिर छारा , चित्रावलि चितरवलि पुकारा ॥
कोऊ आहि अस पर-उपकारी , आनि देखावै राजकुँआरी ।
खनक देखाउ सरूप मुख , लिहिसि चोर जिय मोर ।
यह राजा हत्यार बड़ , घर महँ राखै चोर ॥ ४९१ ॥

सुनि कै लोग अचंभौ रहा , जोई सुना सोई मुख गहा ।
बिरह उसास अगिन कर ज्वाला , लागत परै हाथ महँ छाला(क) ॥
दूरहिँ हटकि रहैँ सब कोई , कोउ मुख मूँदै नियरे होई ।
होइ गा सगरे नगर चबावा , रूपनगर एक बाउर आवा ॥
कहै सोई जो कहा न जाई , मरै लागि एह बुद्धि उपाई ।
राजसभा सब काहू सुना , सुनतहि चित्रसेन सिर धुना ॥
बदन सुखान अंग दुति छाड़ी , लाजन सीस पुहुमि गा गाड़ी ।
कहिसि कि जाकहँ जिय डरत , सँवरि सुहात न राज ।
सोई आनि हम सिर परी , अचक कहूँ हुत गाज ॥ ४९२ ॥

१—प्रीति । (क) कर लाला—पाठा० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३६) दलगंजन खंड ।

पुनि सँभारि कै बैसेउ राजा , कहिसि कि भल नाहीँ यह काजा।
किन भिखारि घर कीन्ह अगासा , जिन अस बचन असुभ परगासा॥
काढ़ि जीभि जिय मारहु सोई , जो अस सुनै कहै नहिँ कोई।
राजनीति एक मंत्री अहा , तिन उठि सीस नाइ के कहा॥
यहि संसार बेद अनुमाना , बाउर बचन न कोऊ माना।
जाकर बचन नाहिँ परतीता , ताके मारे होइ अनीता॥
लाज लाग जो मारै कोई , अस मारेँ भल कहै न कोई।

गहि जो भीखारी मारई , दुइ घट यहि जग होइ।
एक हत्या काँधे चढ़ै , पुनि भल कहै न कोइ ॥ ४९३ ॥

यह चरचा पुनि मंदिर भई , रानी सुनत सूखि जिय गई।
कहिसि कि मुई न ऐसन बारी , जे अपने कुल लाइसि गारी॥
अपने जानि बिसारेउँ नाहीँ , पैान न पाउ छुवै परछाहीँ।
एहि क रूप कहँ काहु न देखा , मिटी न सीस करम की रेखा॥
मकु यह भेद परेवा जाना , पूछहुँ बोलि कहै अनुमाना।
बहुरि कहिसि यह पावक जरई , ज्यों ज्यों खुदी त्यों उदगरई॥
बाहर नगर परा जन-कूका , कहुँ घर लागि जाइ जनि लूका।

तब कछु हाथ न आवई , होइ आन की आन।
ततेँ बरजे सकल जन , परै न चित्रिनि कान ॥ ४९४ ॥

राजै मते महाउत लावा , पान दीन्ह औ कहि समुझावा।
जहाँ कहूँ वह बाउर होई , अस जस दूसर जान न कोई॥
अपसर गज दलगंजन नाऊ , छलि मकुलाइ[1] देहि तेहि ठाऊँ।
मकु गज धाइ हनै सो जोगी , बिनु औषद जिय होइ निरोगी॥
लै सो पान महाउत आवा , मूरी दइ गज अतिहि मतावा।

१—खोल के।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खोलि गयंद ओहि दिसु चला, कोऊ न जान गुपुत की कला ॥
जहँ बाउर सिर डारत छारा, उतरि महाउत भयो निनारा।
छूटि चला मैमंत गज, चहुँ दिसि परी पुकार।
जग लै भाजो जीउ सब, छूटा जम बरिआर ॥ ४९५ ॥

भा अँदोर मैगल[1] मकुलाना, सुनि चारिहुँ दिस परा बखाना।
देखि देखि लोग हीय सब कूटा, भा अजुगुत दलगंजन छूटा ॥
एहि सों जिअत बँचा जो आजू, ताकर नवा जनम कर साजू।
आपु आपु कहँ परजा राजा, जहँइ सुना सो जिउ लै भाजा ॥
पूतहिँ बाप सँभारै नाहीँ, कुटुँब लोग केहि लेखँ माहीँ।
जेहि सँग अहा कटक हय हाथी, अकसर जाइ न कोऊ साथी ॥
जाकर अंग न छुअत समीरा, गहै आनि अनचीन्ह सरीरा ॥
जेहि तन लागै रैनि दिन, चोआ चन्दनसार।
तिन्ह तन बन महँ संग बिनु, निभरम लागै छार ॥ ४९६ ॥

चले छाड़ि बनियाँ बैपारी, रही जहाँ तहँ हाट पसारी।
छाड़ि चले जत मंदिर लोना, जहवाँ लाग रूप औ सोना ॥
छाड़ि तिया जासों रँग कीन्हा, चले जाहिँ जानहुँ अनचीन्हा।
छाड़हिँ अन धन घोर घोरसारा, छाड़हिँ दरब झूठ संसारा ॥
छाड़हिँ अगर कुमुकुमा चोवा, छाड़हिँ रतन जो माल परोवा।
छाड़हिँ कस्तूरी घनसारा, अंत आइ तन लागी छारा ॥
सगरे जनम सौंति[2] दुख पावा, छिन एक महँ सब भयउ परवा ॥
यहि बिचार कै मान कबि, महा पुरुष जग माहिँ।
तासों जीउ न लवहीँ, अंत जो साथी नाहीँ ॥ ४९७ ॥

कुँअर देखि हस्ती मतवारा, मरन जानि जिय कीन्ह बिचारा।
जा कह अंत मरन जिय माहीँ, मीचु देखि सो भागै नाहीँ ॥

१—पागल = मदमत्त। २—एकट्ठा करके।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोहिँ एहि मारग निजु जो मरना , भागि रहौं लै का की सरना।
बिनु साहस जो तजउँ सरीरा , कोउ न कहै यह छत्री बीरा॥
बाजौं आजु भीम की नाईं , मारौं जो जय देइ गोसाईं।
मरौं तौ लेाग कहै यहि देसा , छत्री अहा जोगि के भेसा॥
पुनि चित्रावलि सुनु यह बाता , जूझि मुवा जेागी रँगराता।
बाँधि काछ दृढ़ होइ रहा , मन महँ मरन बिचारि।
जेहि जिय डाँड़ा पेम कर , सब जग जीतनि हार॥ ४९८॥

आवत हस्ति चुवत मदगंधा , तेारत तरुवर धावत कंधा।
गज बाजी कहँ परलै[1] कोपा , अंगद पाँव पुहुमि जस रोपा॥
कुँअरहिँ देखि धाइ अस परा , बीर पँवार न पाछे टरा।
कंथा डारि गयंद झुकावा , आपु सजग होइ पाछूँ आवा।
गहि कै पूँछि गयंद घुमाइसि , येही भाँति धरी एक लाइसि॥
जनु चकई गहि डोर फिराई , पुहुमि परा गज ताँवरि खाई(क)।
मस्तक आइ मूँक तब मारा , सीस फेारि गजमेाति निकारा॥

पुहुमी परा गयंद ढहि , जानहुँ परा पहार।
देखि अचंभित[2] जग भवेा , चहुँदिस परी पुकार॥ ४९९॥

कहै लेाग यह को बरिआरा , जिन गयंद दलगंजन मारा।
वह राजा कर हस्ती सेाई , जेहि ते बली आन नहिँ होई॥
यह जेागी भल कीन्ह न काजा , परलै करहि आजु सुनि राजा।
राज दुआरे भई पुकारा , जेागि बली दलगंजन मारा॥
एहि जेागी कहँ सिव परसना , नाहिँ तौ अस परबल को हना।
मानुष अस बल करै न पारा , निज यह पुहुमि भीम अौतारा॥
अौरौ हस्ति सँभारहु नाहीं , मति कहँ भटकी सिर कहँ जाहीं।
सुनि कै राजा थकि रहा , रुहिर सुखि गा गात।
हिएँ थरथरी पेट डर , मुख नहिँ आवै बात॥ ५००॥

१—प्रलय। (क) आई, पाठा०। पांवरी = पैर। २—विस्मित।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३७) सुजान-बंधन खंड ।

पुनि सँभारि के बोला राजा, साजहु बेगि जूझि कर साजा ।
हनुमत जस लंका हुत आवा, तस छलि कै यहि काहु पठावा ॥
काहू केर पठावन होई, जिअत न जाइ करहु अब सोई ।
बाजन बार जूझि कर बाजा, जानहुँ सरग मेघ दल गाजा ॥
साजे हस्ती सिंघलदीपी, चीता[1] माथ छोट जनु छोपी ।
साजे तुरै समुँद[2] जलगाहा[3], पखरै राउत पहिरि सिनाहा ॥
राजा सपरि भयो असवारा, चले बीर चढ़ि तुरी तुखारा[4] ।
बाजे बाजन जूझि के, धुका[5] दमामा भेरि ।
छेंका जोगी कटक लै, मंडल चहुँ दिस फेरि ॥ ५०१ ॥

जुझि साज जौ कुअँरहि सूझा, कै बिचार अपने मन बूझा ।
जाकर दोस करै जो कोई, का बसाइ जो मारै सोई ॥
मोहिँ नहिँ इहाँ जुझि सौं काजा, मारौं लै पुहमीपति राजा ।
एह गुन बैस्यो आसन मारी, जैसे निरगुन जोगि भिखारी ॥
सीस नाइ पुहमी तिन हेरा, कटक आउ सब करत करेरा ।
मंत्री राज-बाग तब गही, सीस नाइ के बिनती कही ॥
जूझि केर जग अस बेवहारा, मारिय सोइ जो गहै हथिआरा ।
जोगी बाँधिय जिअत गहि, मारि न करी अनीत ।
पूँछि भेद पुनि लीजिए, को बैरी को मीत ॥ ५०२ ॥

घेरत घेरत आए राँधा[6], पाँच जने मिलि जोगी बाँधा ।
अस कै ढील दीन्ह दुइ बाहीँ, जानहुँ एक रती बल नाहीँ ॥
राजा सनमुख जोगी आना, देखि रूप सब कटक भुलाना ।
पूछै को हसि कहँ तेँ आवा, केहि कारन केहि केर पठावा ॥

१—रंगा, छापा । २—घोड़ा । ३—दरियाई । ४—स्वेत = उज्ज्वल घोड़ा ।
५—बजा । ६—समीप ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुँअर न बोल मौन मुख गहा, सीस नवाइ आँधि चखु रहा।
एहि अंतर एक चतुर चितेरा, सागर नगर कीन्ह जे फेरा॥
कुँअर चित्र लिखि अति मतिमाना, सोहिल जूझि भेद पुनि जाना।
आइ पहूँचा राज ढिग, देखि नवाइसि माथ।
लीन्हे चित्र अनेक जे, देस देस के नाथ॥ ५०३॥
वै कुँअरहिँ देखा पहिचाना, कहिसि कि यह जस कुँअर सुजाना।
वह उहवाँ पुहमीपति भारी, राज छाड़ि कत होत भिखारी॥
पुनि वह अस कुकरम कत करई, जेहि कोइ बाँधि चोर कै धरई।
चित्र काढ़ि जो पटतर[1] देखा, सोई कुँअर सुजान सरेखा॥
कहिसि कि यह पुहुमीपति राजा, पुहुमी रहा सदा ओहि साजा।
यह पवाँर छत्री बरिआरा, यही हाँकि रन सोहिल मारा॥
यह पुहुमी पति देस क राजा, अचरज मोहिँ देखि यह साजा।
कुँअर चित्र लै कर दिहिसि, कहिसि कि अचरज हीय।
बाँधा सिंह सिआर ज्यों, का कौतुक बिधि कीय॥ ५०४॥
इहाँ नरेस जूझि कहँ आवा, रानी उहाँ अँदोर बढ़ावा।
जे मारा दलगंजन सोई, तेहि के जूझि आजु कस होई॥
हिए सोच करि हीरा रानी, पूँछौं बोलि परे वा ज्ञानी।
वह पंडित औ चतुर परेवा, आमग[2] न चलै जानि पति सेवा॥
जिन मारा दलगंजन हाथी, मकु वह होइ परेवा साथी।
खोलि मँगावा सीध परेवा, आइ देखाइसि कन्तहिँ सेवा।
होइ अकसर लै मंत बईठी, कहिसि कहाँ लै गवनेहु चीठी॥
बिनु पूछे किछु ना कहै, तैँ पंडित सहदेव।
को जन यह हस्ती हना, कछु जानसि यह भेव॥ ५०५॥
कहिसि कि सदा-सोहागिनि रानी, तुम सयान पंडित औ ज्ञानी।
मैँ यह सुफल सुआ सो खोजा, चीन्हहु होइ सो राजा भोजा॥

१—सामने। २—कुराह, कुमार्ग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज रासो ।

यह हिन्दी साहित्य का सब से प्राचीन ग्रन्थ है जो अब तक प्राप्त हुआ है। इसमें कवि ने भारतवर्ष के अन्तिम क्षत्री सम्राट् राजा पृथ्वीराज का जीवनवृत्तान्त विस्तारपूर्वक लिखा है जो आदि से अन्त तक विचित्र घटनाओं से भरा हुआ है। इतिहास प्रेमियों के लिये तो यह ग्रन्थ अनमोल रत्न है। इसकी भाषा कुछ कठिन है अतः सभा ने समस्त ग्रन्थ के सारांश को सरल हिन्दी भाषा में इसके साथ ही साथ छपवाया है जिससे मूल ग्रन्थ के पठन पाठन में बड़ी सहायता और आनन्द मिलता है। मनोरञ्जक तो यह इतना है कि कहीं से कोई पृष्ठ उठा कर दस पांच पंक्तियाँ पढ़िये फिर कदापि आप समस्त ग्रन्थ पढ़े बिना नहीं रह सकते। जिन हिन्दी प्रेमियों ने इस ग्रन्थ को अब तक नहीं लिया है उन्हें इसकी एक प्रति अवश्य लेनी चाहिए। इसके ६६ पर्व्व २० भागों में छपे हैं जिनका मूल्य २३।-) है। प्रत्येक भाग जुदा जुदा भी मिल सकता है। मूल्य १।) के लगभग है।

अन्य उपयोगी पुस्तकें ।

हम्मीर रासो (रणथंभौर के वीर शिरोमणि महाराज हम्मीर देव का जीवनचरित) २)
हम्मीर हठ " ॥)
जंगनाम (दिल्ली के बादशाह बहादुर शाह के पुत्रों का युद्ध) ॥।)
इन्द्रावती १॥)
कवि आनन्द घन कृत बिरहलीला ।=)
भूषण ग्रन्थावली (प्रसिद्ध कवि भूषण के शिवराज भूषण, शिवा बावनी आदि ग्रन्थ) १॥।=)
सुजान चरित्र २)
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवनचरित्र ॥=)
महिला मृदुबाणी (भारत वर्ष की विदुषी स्त्रियों की संक्षिप्त जीवनी) १)
हिम्मत बहादुर विरुदावली (बांदा के प्रसिद्ध वीर हिम्मत बहादुर का चरित्र) १)
नन्द दास की रासपंचाध्यायी ।=)
अखरावट ।=)
यूरोपीय दर्शन (यूरप के दर्शन शास्त्र का इतिहास) ॥।)
परिचर्याप्रणाली (रोगी की शुश्रूषा करने की विधि) ।)
संक्षेपलेखप्रणाली अर्थात् हिन्दी शार्टहैण्ड १)
महाराणा प्रतापसिंह (नाटक) ॥।)

ये सब पुस्तकें मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से मिल सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीर्ण व अजीर्ण के दस्त की दवा।

खाना पचानेवाले रसों के घटने बढ़ने वा विकार से अजीर्ण रोग होता है जिसके यह लक्षण हुआ करते हैं—खाने के बाद पेट

भारी जान पड़ना, पेट में वायु होना, जी मिचलाना, खट्टी वा व्यर्थ डकार आना, छाती जलना, मुंह में पानी भर आना, पेट में थोड़ा थोड़ा दर्द होना, चित्त की ग्लानि, आलस्य आदिक। जब तक खाना हज़म की थैली में रहता है और पाचनक्रिया कठिनता से होती रहती है यही हालत होती है। जब यह अनपचा खाना अँतड़ियों में उतर जाता है तब पेट में गड़गड़ाहट होती है, पेट फूलता है व दस्त की चेष्टा होती है। दस्त पतला वा पानी के ऐसा होता है। कभी कभी खाने के थोड़ी देर पीछे ही दस्त हो जाता है। दस्त होने से शरीर क्षीण होता है। ये सब हालतें कभी कम, कभी अधिक होती रहती हैं और महीनों तक चलती हैं। रोगी का शरीर दिन पर दिन गलता जाता है। अन्त को असाध्य हो जाता है।

शरीर की साधारण पुष्टि का घटजाना इस रोग का कारण है। नीचे लिखी हुई हालतों में ऐसाही होता है—

वृद्ध अवस्था, कोई विशेष रोग के बाद कमज़ोरी, कम खाना (जैसा कि व्रत, लङ्घन, पारण आदिक में लोग करते हैं), धातु के व्यर्थ नष्ट होने से क्षीणता, अधिक श्रम, दुश्चिन्ता वा शोक, प्रसव के विकार से कमज़ोरी।

इन विषयों को विचार कर डाक्टर बर्म्मन ने अजीर्ण की दवा बनाई है। खाना हज़म करने व अजीर्ण के दोषों को मिटाने में इसकी विशेष शक्ति है। यह दवा छोटी छोटी टिकिया की ऐसी बनी हुई है। पंद्रह रोज़ के सेवन योग्य ३० टिकिया की एक शीशी का मोल १) रुपया। डाक महसूल १ से ४ शीशी ।-) आने।

डाः एस. के. बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पुस्तक संख्या २१

ग्रन्थ संख्या ४४]

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक, श्यामसुन्दर दास, बी० ए० ।

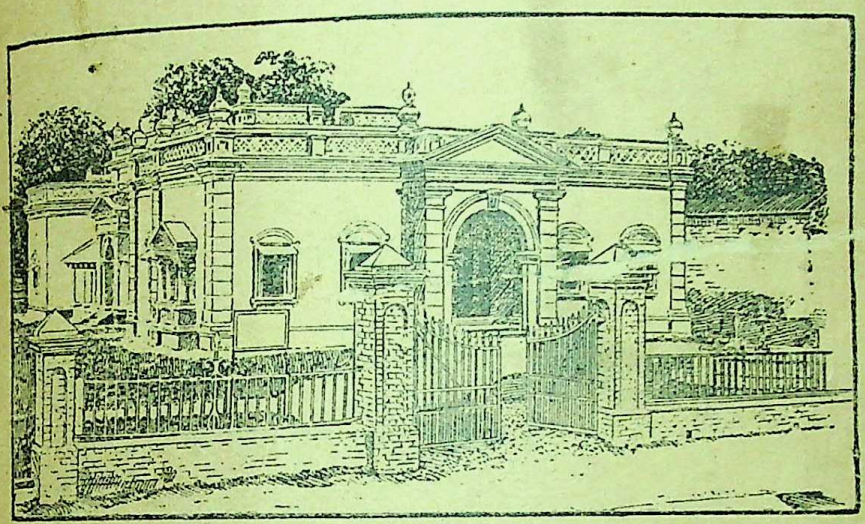

FASCICULUS NO. 44.] [BOOK NO. 21.

NAGARI PRACHARINI GRANTHAMALA.

EDITOR

SYAM SUNDAR DAS, B.A.

PUBLISHED BY

THE NAGARI PRACHARINI SABHA,

BENARES.

मूल्य प्रति संख्या ॥) [*Price per fasciculus As. 8.*

ISSUED ON THE 20TH JANUARY 1913.

PRINTED BY APURVA KRISHNA BOSE AT THE INDIAN PRESS,

ALLAHABAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका ।

(२१) उसमान कवि-कृत चित्रावली—बा० जगन्मोहन वर्म्मा सम्पादित
(पृष्ठ १९९ से १७२ तक तथा भूमिका आदि)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जाकहँ भोर सदा सिर नाई, चहै मारि तो कहा बसाई।
कथा कहत लागिहि बड़ि बारा, उहाँ न होइ जाइ संघारा॥
थोर कहौं जौ बिलँब न होई, सोहिल जिन मारा वह सोई।
धरनीधर नैपाल भुआरा, एह सुबंस औ बीर पवाँरा॥
चित्र माहँ चित्रावलि जानी, भा जोगी सुनि रूप-कहानी।

एहि सो रतन जेहि कीजिये, कुन्दन घालि जराउ।
जनि गहि डारहु समुँद महँ, नतु रहिहै पछताउ॥ ५०६॥

रानी कहा बेगि चलि जाहू, लगै न पाउ मयंकहि राहू।
जाइ जनाउ नरेस रिसाना, जौ लहुँ छुटै पाव नहिँ बाना॥
दसरथ धोखे सरवन मारा, पाइ सराप भयो हत्यारा।
अज्ञा मिली परेवा धावा, निमखि माँह राजा पहँ आवा॥
देखिसि राजहिँ रिसि मन नाहीँ, हाथ चित्र चित चिन्ता माहीँ।
औ पुनि कुँअर बाँधि कै आना, कीन्ही जल चखु जानि सुजाना॥
आइ नवाइस पति कहँ माथा, कहिसि हे पुहमीपति नाथा।

एह सोइ जिन बैरी हना, सोहिल अस बारि आर।
जंबूदीप नरेस सोइ, निरमल जाति पँवार॥ ५०७॥

एह जस बिक्रम राजा भोजा, मैं चित्रावलि कहँ बर खोजा।
चित्रावलि कर रूप सुनाई, कै जोगी आनेउँ बौराई॥
मैं राजा सौं कहै न पावा, बीचहिँ बैरी मोहिँ बँधावा।
तौ एह कौतुक सब बिधि कीन्हा, रतन खेह महँ काहु न चीन्हा॥
राजा हिय सुनि कुँअर बखाना, तजि चिंता चित रहस समाना॥
जो जहँ चित्र मूँदि वै राखी, तब भा आनि परेवा साखी।
एह पंडित औ बिधि सो डरई, पंडित काज बूझि कै करई॥

छोरे बन्धन दुःख के, महाबीर पहिचानि।
राजा उतरि तुखार सौं, अंक मिलायेा आनि॥ ५०८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ततखन तहाँ कुँअर अन्हवावा , राज साज सब आनि पन्हावा।
औ पुनि लीन्ह चढ़ाइ अँबारी , दूलह जानि बरात सँवारी॥
रहसत चला तुरै चढ़ि राजा , बाजत अनँद बधावा बाजा।
एकै बाजन जेहि जग जाना , आवत आन जात भा आना॥
गहगह बाजन बाजत आवा , नगर लोग सब देखै धावा।
जिन देखा तिन धनि धनि कहा , रूप निहारि चित्र होइ रहा॥
धनि सो चित्र धनि सोई चितेरा , कहहिँ जोर चित्रावलि केरा।

निकसा हाट मँझार होइ , चहुँदिसि रहस अनन्द।
देखै आईं उतरि जनु , सूर तराईं चन्द॥ ५०९॥

चढ़ि अँटारि देखाहँ रनिवाँसा , जनु ससि नखत सरग परगासा।
देखि कुँअर मुख हीरा रानी , हिए अनन्द अधर बिहसानी॥
कहिसि कि जानु आहि एह सोई , जेहिक चित्र चितसारी धोई।
पुनि तिन्ह साथिन्ह आनि देखावा , जे अपने कर चित्र नसावा॥
जिन देखा तिन मुख अनुसारा , यह सोई गँधरव औतारा।
जब तैं हम वह चित्र नसाई , नैन हिए जानहुँ लिखि लाई॥
धनि यह दिन धनि घरी सरेखा , हिया इंछ इन्ह नैनन्ह देखा।

मान न मन्त निसारहिँ , सिँह पुरुष मुख बैन।
जो मूरति हिअरे बसी , सो निजु देखी नैन॥ ५१०॥

रानिहिँ यह सुनि भयो अनन्दा , सीस पुहमि धरि बिधना बन्दा।
जिन्ह काहू यह भेद न जाना , सो बिधि कौतुक देखि भुलाना॥
कहै कि यह कस बैरी होई , आदर चाह करै सब कोई।
सखी एक चित्रावलि केरी , चढ़ि मंदिर पुनि देखिसि हेरी॥
कौतुक लखि चित कीन्ह हुलासा , गई धाइ चित्रावलि पासा।
कहिसि कि ऐ कुल मनि मनिआरी , तोरी जोति पुहुमि उजिआरी॥
फिरेउ जीति संग्राम भुआरा , गहि आना बैरी बरिआरा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखौं सोइ हस्ती चढ़ा, नहिँ जानौं केहि काज।
पुहुमी आवै इंद्र जनु, तजि इंद्रासन राज॥ ५११॥

मेहरिन्ह महँ पुनि चरचा होई, चित्र जो मेटा जनु यह सोई।
सुनतहि चित्र चाउ चित बाढ़ी, होइ व्याकुल धीराहर ठाढ़ी॥
देखत मुख सुधि बुधि सब हरी, होय अचेत पुहुमी खसि परी।
सखी सो हाथन हाथ उतारी, सेज सुवाइ ओढ़ाइन्ह सारी॥
डरहिँ कहैँ बिधि का भा आई, भीर माँह काहू डिठि लाई।
सुनै पाउ जनि राजा रानी, हम जिय करहिँ घरी महँ हानी॥
ततखन मँदिर परेवा आवा, सखियन्ह कहँ सब भेद सुनावा।

कहिसि कि ऐ पति कलप जुग, हम माथे तुम छाँह।
अब किमि जरिए धूप दुख, छत्र आउ घर माँह॥ ५१२॥

सुनत बैन चित्रावलि जागी, देखि परेवा के पाँ लागी।
कहिसि कि ऐ हीरामन[1] सूआ, रतन लागि कस कौतुक हूआ॥
कैसे जाइ भेराएहु[2] साईँ, कैसे आनेहु इहवाँ ताईँ।
का कहि चित्रसेन समुझावा, काहि लागि मंदिर लै आवा॥
बैसि परेवा प्रेम-कहानी, आदि अंत लौं कहिसि बखानी।
चित्रावलि चित भयेा सँतोषा, गा सेा सेाच अहा जेा धेाखा॥
बर बिआह सुनि मनहिँ लजानी, घूँघुट ओट दिये मुसुकानी।

कहिसि परेवा सुमति तैँ, पूरन सेवा कीय।
जेा चित भावै सेाइ करु, मैँ तुअ अज्ञा दीय॥ ५१३॥

१—देखेा पद्मावति-हीरामन सुआ राजा रत्नसेन को पद्मावती के लिए चितौर से सिंहलद्वीप ले गया और वहां उसे पद्मावती से मिलाया। २—भुलवाया वशीभूत किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३८) चित्रावली-विवाह खण्ड ।

मँदिर आनि ले कुँअर उतारा, लै कलधौत पाट बैसारा।
बैठेउ कुँअर सिंह-आसना, कह नर अहै पाकसासना[1] ॥
वह मघवा[2] परतच्छ देखावा, तजि सुरभौन छरै कहँ आवा।
जो देखै सो रहै लुभाई, अति लालच घर जाइ न जाई ॥
चित्रसेन औ हीरा रानी, तीसर बोलि परेवा ज्ञानी।
राज नीति मंत्री हँकरावा, आदि अंत लहुँ भेद सुनावा ॥
एकमत होइ कै कीन्ह बिचारा, बिलँब न करिय धरम ब्यवहारा ॥

ततखन आये जोतषी, रास बरग गनि लेखि।
बदि बैसाखी पंचमी, मीन लगन सुभ देखि ॥ ५१४ ॥

मीन लगन ससि बार सरेखा, नवएँ दिष्टि बृहस्पति देखा।
महागनक पंडित गन भले, थापि बिआह लगन लै चले ॥
आखत दूब भरो चकमका, रूप क थार सोन कर ढका।
महता राय सो बिनती कीन्हा, मोरी सम्पति तुम्हरी दीन्हा ॥
पै बिधि दीन्ह न संतति बाँटा, जेहि निसरै मोरे हिअ काँटा।
आज्ञा देहु तौ हिया सुधारौं, कुँअरहि लै बरिआत सँवारौं ॥
सुनि के हरषे राजा रानी, धरम बात हमहूँ मन-मानी।

जब तें दुहिता ऊपनी, सतत हिये उतपात।
निकसै काँटा तबहिँ, जब, आँगन आउ बरात ॥ ५१५ ॥

राजनीति रहसत घर आबा, कुटुम लोग कहँ भेद सुनावा।
सुनि कै रहसे सब नर नारी, अनँद बधावा बाजहिँ बारी ॥
नेगिन्ह दीन्ह भँडार कि कूँजी, धोख न लाउ लगावत पूँजी।
आपन जानि दरब मैं जोरा, अब जो निसरै सोई मोरा ॥
अबहीँ लेहु बेसाहु सो जाई, जेहि बिनु तेहि दिन मुँह न गोआई।

१—पाकाशासन = इन्द्र। २—इन्द्र।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तियरेहि आहि सो दिन हम आगे, काज सवाँरहु सब जिउ त्यागे ॥
पुहुमीपति घर जाइ बखानी, सोई करब रहै मुख पानी।
सजि काज पुनि नेवत ले, चहुँ दिस पठए बारि।
ततखन पहुँचे आइ सब, लोग कुटुँब सब झारि ॥ ५१६ ॥
सोधि सुघरी महूरति पला, साजि बराति महत लै चला।
चढ़ि चंडोल कुँअर अभिलाखा, माथेँ मुकुट जराउ क राखा ॥
चमकहिँ चुन्नी कुंदन रली, झूलहिँ झालर मुकुताहली।
पुनि नैनन महँ काजर कीन्हा, दिष्टिनेवार चौखंडा[1] दीन्हा ॥
हार हमेल फूल पहिराए, औ मुख पान कपूर खवाए।
ढारहिँ चौंर चार जन लोने, कनक खंभ मानहुँ चहुँ कोने ॥
चढा तुरंग चपल एक सरा, चोवा चन्दन कुमुकुम भरा।
ढका[2] दमामा कान्हरा, सहनाई औ भेर।
पुहुमी रहेउ अकूत होइ, सात कोस के फेर ॥ ५१७ ॥
यह कौतुक के रूप पराजे, कागद पात लाह फर साजे।
सुभग डारि फर फूल बनाई, ठावँ ठावँ पंछी बैसाई ॥
देखत तन बेसक कछु नाहीं, जनु सजीव पंछी भरकाहीँ।
अरुन बसन मधि नाव बनायेँ, सुंदर बीरन थान चढ़ायेँ ॥
बाट जात पुनि कहैँ बटाऊ, सूखेँ चली दान की नाऊ।
सरस कंठ सब गावत चलीँ, चन्दन बदन संग घर अलीँ ॥
कथक कलावत गावत चले, भाँट पढ़हिँ गरजहिँ घन कले।
फूले साँझ सुभग समौ, गगन बरन पुनि रात।
चित्रसेन के बार लहि, पहुँची आनि बरात ॥ ५१८ ॥
कनक कलस जल भरि दुइ जनीँ, आईँ जानु अपछरा बनीँ।
नैन मीन मुख दधि सब सारा, कुँअरहि सबहिँ सगुन बैसारा ॥

१—काली बिंदु जो बच्चों के शिर में इस लिए स्त्रियां लगाती है कि उन्हें नजर न लगे। डीठा। अंखा। २—सं० ढक्वा = डंका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनि आदर कहँ आये लोगा, आहु कुटुम्ब जो आदर जोगा।
गारी दै दै गावहिँ चेरी, जाहिँ लजाइ कुँअर मुख हेरी॥
राजनीति पुनि अपनी बारी, समधी नाईँ पावै गारी।
ससुर की रीति अहै सो लेहीँ, सहस लरैँ न्योछावरि देहीँ॥
पुनि जस नेग अहा जेहि केरा, राजनीति दै दै सब फेरा।
पुन अगुवानहिँ ले चल्यो, जहँ साजा जनवाँस।
नियरहिँ अगुआ बाहिरेँ, जानहुँ कोस पचास॥ ५१९॥

जनवाँसे कहँ चली बराता, बाजन बाजे उठेउ अघाता।
सहस चारि एक दीपक बारे, निभरम चले पंथ उजिआरे॥
हिया अंध कहँ जग अँधियारा, सौ ससि सूर न करै उजारा।
जोई रँग दै तेल मेरावा, सोई बरन जोति देखरावा॥
जौलहुँ तेल खरी[1] सँग होई, तौलहुँ देइ लेउ रँग कोई।
तेल खरी जौ भई निनारी[2], रंग न चढै न बास बसारी॥
चरबस कोऊ जो रंग चढ़ावै, बास करै तन काम न आवै।
मान तेल मन तन तिली, जौ लहुँ नहिँ बिगराइ।
तौलहुँ गुरुमुख फूल लै, लेहु सो बास बसाइ॥ ५२०॥

अगिनचक्र[3] बहु कीन्हे फेरा, पूरन ससि जनु बिरहिन केरा।
अतिहि रहस तहँ चली हवाई[4], रतन पदारथ डारत जाई।
ठावँ ठावँ भुइँ चंपा[5] गाड़ा, नत मुख जनु बैसन्दर[6] छाड़ा॥
छाड़त सेत अरुन अति जूही[7], नरम फूल बैसन्दर फूही।
चन्द्रजोति[8] कीन्ही उजिआरा, उयो जानु दिनकर मनिआरा॥
फूली माहताब[9] बहु साखा, चारिहुँ दिसि वसंत कै राखा।
फूटहिँ लौकी उड़गन भरी, चारहुँ ओर छुटै फुलझरी[10]॥

१—खली। २—अलग ३—एकतमाश = चरखी। ४—एक तमाशा। ५—एक तमाशा। ६—आग। ७—एक तमाशा। ८—एक तमाशा। दुपहरिआ। ९—एक तमाशा। महतावी। १०—एक तमाशा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरी अगिन भुइचक[1] हुते, नील बरन सुख मूल।
फूलि रहे जनु पुहुमि महँ, चहुँ दिसि तीसी फूल ॥ ५२१ ॥

जनवासेँ बरात बैसारी, मंदिर माहँ रसोईँ सारी।
चौका दै आँगन भरि बेदी, लीपा चन्दन कुमकुम मेदी ॥
सोन रूप के थार बनाए, दोना पतरी बारी[2] लाए।
जूडेँ जल जेहि लाग पिआसा, मेलि कपूर कुमकुमा बासा ॥
औ जत सोँध जगत महँ आए, सब पकवान साथ लगवाए (क)।
भारी गडु.आ लोग सँभारी, लै जल पहिले पावँ पखारी।
बैसि गए सब पातिन्ह पाँती, साथ साथ सब अपने जाती ॥

पहिले डारी पातरीँ, तौ पुनि राखे थार।
लगे परोसन सहस जन, भाँति भाँति परकार ॥ ५२२ ॥

गोहूँ प्रथम दूध सोँ धोए, खीरि खाँड़ मिलि माँड़ा पोए।
चउर अति सुगन्ध महँकाए, कौलन माहँ भौँर अकुलाए ॥
मूँग चना कै बहु परकारा, लेत न बनै नाउँ बिस्तारा।
डुहुका छीमी औ खँडबरा, अमिरितबरी फुलौरा बरा ॥
दूध जमाइ दहेँड़ी आनी, भाजन छूट न तबउ नसानी।
लपसी कर का कहौँ मिठाई, मुख न फेर जेा मन भरि खाई ॥
अमरस अनबन भाँति अँचारा, कहत न बनै जेत परकारा।

लोन समोसा मीठ मधु, खीर खाँड़ बहुताइ।
जेा सवाद नहिँ जानई, पहिलेहिँ खाना खाइ ॥ ५२३ ॥

बाँटि सगौती बहु फर साजे, पान फूल तेहि संग बिराजे।
खात सवाद सोई पहिचानी, मानहुँ चीरि डार हुत आनी ॥
औ बिपरीत स्वाद बहुताई, आंब माहँ कटहर कि मिठाई।
नेबू खात दाख जनु खाहीँ, खात खजूर बदाम चबाहीँ ॥

१—एक तमाशा। २—एक शूद्र जाति जेा पत्तल बनाते हैं और खाने पर जूठी पत्तल उठाते हैँ। (क) पुनि जेवन कहँ पाहुन आये। पागा तजि धोती पहिराये—पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनि सवाद मिसरित बहु कीन्हें, खात सो जानहिं जाहिं नहिं चीन्हे।
कोऊ एक मुख मेलि जो खाहीं, घरी एक दुइ समुझत जाहीं॥
सुनि कै फिरि जेवनार उसारी, पतरी जूठ समैटै बारी।
अरुन कौंल नीलोतपल, फूलि रहे सब बार।
बन्दनवारन तें निकसि, भौंर करहिं गुंजार॥ ५२४॥
भरि भरि थार मिठाई आनी, भाँति भाँति आव अन पानी।
लडुआ कर का करौं बखाना, हाथ खाँड़ मुँह महँ खँड़वाना॥
खाजा[1] कैसेहुँ खाइ न जाई, सांस पौन सों उड़ि उड़ि जाई।
फेनि[2] पातरि मुँह न समाई, टाँक देा एक जोखँह लुआई॥
सीँक समान जिलेबी काढ़ी, रस रस भीजि अधिक रस बाढ़ी।
एहि मिठास जनि भूलहु लेाई, घी मधु एक ठाँव बिष होई॥
तौ लहुँ मीठ जौ लाँध न घाटी, घाटी उतरि होइ पुनि(क) माटी।
मान न जाती आन बिनु, खीर खाँड़ तन पेाख।
नहिं जानौ परलोक तुअ, होइहै केहि बिधि मोख[3]॥ ५२५॥
अँचै उठे खरिका कर लिन्हे, हाथ धेाआइ पान पुनि दीन्हे।
चित्रसेन बागा मँगवाये, बड़ औ छोट सबै पहिराये॥
चेावा चन्दन कुमकुम लावा, इंद्रहिं देखि चाउ हिय आवा।
नृप कर जोरे बिनती करई, फिरि फिरि महत पाउँ लै परई॥
तुम सब आपनि जानि बड़ाई, मोँ औगुन सब लेब छिपाई।
जेँइ भोज जनवाँस सिधाए, चित्रसेन तब बिप्र पठाए॥
बहु आदर कै कुँअर बुलावा, आनि सेा माँड़ेा तर बैसावा।
माँड़ेा देखत ही बनै, रसना कहा न जाय।
कै जेा ब्याहा जान सेा, कै जेा बरातहिं जाइ॥ ५२६॥

१—एक मिठाई। २—एक मिठाई। (क) सब—पाठा०।
३—मि० विषं सः केवलं भुङ्क्ते यः पचत्यात्मकारणात्।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अतिहिँ अपूरब माँड़ौ छावा, जरकसि पाट पटंबर लावा।
कनक खंभ जनु बीच सुमेरा, चौंधी दिष्टि ताहि जो हेरा॥
आँब पात दल अंबुज केरा, बन्दनवार कीन्ह चहुँ फेरा।
मंडल कै दीपक पुनि बारे, छिटकि रहे मानहुँ ससि तारे॥
दिष्टि फिराइ देखि जो लेहीं, नखत सुमेर पदच्छिन[1] देहीं।
कलस बनाइ खम्भ तर धारा, तेहि पर चौमुख दीपक बारा॥
चारिहुँ दिस दीपक जग भाई, एही सगुन दुहूँ जिय पाई।

धरेउ जराऊ बेदि लै, चहुँदिस अंतरधानि[2]।
बहु आदर सौं कुँअर कहँ, तहँ बैसारेउ आनि॥ ५२७॥

चित्रसेन परिवार कि बारी, जनु बिधने अछरी औतारी।
काँधा बाहीं सब एक दाईं, मिलि कै कुअरहिँ देखन आईं॥
मंडल कै दुहुँ दिस ते गोरी, भईं ठाढ़ि मुख सौं मुख जोरी।
कलपवृक्ष जनु कुँअरहिँ कीन्हा, सब के बारि देवतन्ह कीन्हा।
अमिरित अधर तहाँ लै सींचा, देखत नियर न आवै मीचा॥
लोयन कोर कोर पुनि मेले, चोरी चोरी खंजन खेले(क)।
देव कँवल जब पुहुप ऊतारा, दूसर बन्दनवार सँवारा॥

करनफूल गज मुकुता, सोभत कानन जोर।
कंज सेत जनु विकसि कै, मोति झरै चहुँ ओर॥ ५२८॥

जुरे आनि बाभन बेदुआई, होम जाप कहँ अगिन जराई।
कुँअर नैन दोउ चकित चकोरा, पून इन्दु ऊवै केहि ओरा॥
जेउँ जेउँ पला जाइ निसि बासी, मंदिल होइ कुँअर कहँ फाँसी।
सुभग मुहूरत आइ तुलानी, नौ सत कै चित्रावलि आनी॥
दिनकर उदै मेटि तम गयऊ, ससि मंडल तारा गन भयऊ।

१—सं० प्रदक्षिणा। २—अंतरवट=वह बिछावन जो चाँदनी के नीचे बिछाया जाय। (क) जोरी जोरी खंजन खेले। पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पढ़ी बेद बाभन बेदुआई, चित्रावली सुजानहिँ लाई ॥
ततखन आन कीन्ह गँठ जोरा, बन्धन सेा जो छूट न छोरा।
जेउँ जेउँ फेरी देहिँ दिज, होइ अधिक अरुझेरि।
दिढ़ बंधन निज एक है, और अमिरथा फेरि ॥ ५२९ ॥

पुनि चित्रावलि चौसर हारा, सकुचत कुँअर गौंव लै डारा।
कुँअरहि लै पुनि हार सुहावा, चित्रावलि के गिँव पहिरावा ॥
प्रेम खेल खेलत दिन बीते, दोऊ खेलार हार दै जीते।
चित्रसेन पुनि लै कुस पानी, संकलपी धिय सब जग जानी ॥
कुँअर बेालि पुनि स्वस्ति सुनाए, तीनि लेाक भये अनँद बधाए।
कोहबर सेज सुरँग पुनि डासी, सुखसाला कबिलास बिलासी ॥
कुँअरहिँ तहाँ सखी लै गईँ, हँसतहिँ हँसत अनंदित भईँ।
कहहिँ कि बैसहु सेज चढ़ि, छिन एक रहहु अकेल।
हम आनी चित्रावली, करहु रहसि सुख केल ॥ ५३० ॥

कुँअरहि सेज सुरँग बैसाई, चित्रावलि पहँ गईँ सबाई।
आस पास सब घेरेँ अलीँ, सुँदरि कहँ कोहबर लै चलीँ ॥
प्रथम समागम बाला डरई, कैसहुँ आगे पाव न धरई।
चित्रावलि जनु गज मतवारी, छुद्रावली घंट झनकारी ॥
आँदू[1] सकुचि पाव दुहुँ धरा, परगहिँ परग होइ अरगरा[2]।
छलि आँखिन्ह अँधिआरी[3] मेली, धक्कारहिँ गड़दार सहेली ॥
कल बल गई सेज जहँ अही, पाटी तीर ठाढ़ होइ रही।
चित बहलावहिँ निज सखी, और समुझावहिँ साथ।
सेज सुरँग जहँ नदि बहै, चित्रिनि छुवै न हाथ ॥ ५३१ ॥

१—एक काठ का बना हुआ हाथी का बंधन जिसमें कांटियाँ लगी रहती है। इससे मतवाला हाथी बांधा जाता है। यहां मत्तहाथी।
२—रुकावट।
३—आंख बन्द करने का आवरण। छेाका।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनि सखियाँ सब एकमत भईं, लै बैसाय सेज पर गईं।
चित्रावलि पुनि जी हठ ऐसी, पीठ दिये घूँघट कै बैसी॥
कुँअर कहा हे परम सनेही, केहि कारन घूँघट अब देई।
मुख देखाउ कहु बतियाँ मीठी, काहे करेसि हिया जस सीठी॥
जेहिँ लगि कइउ(क) जनम दुख सही, सेा कैसे निठराई गही।
जाहि लागि काया नित नई, सेा दुखरे दुखदायक भई॥
जो अस कठिन हिया भा तोरा, तेा अस भयेा हाल सब मोरा।

डारेउँ प्रेम अँदोर जग, तोर मया के काज।
जो तोर हिया दया बिना, जनम अमिरथा आज॥ ५३२॥

यह बिनती कै रहेउ सुजाना, चित्रिनि कही न एको माना।
तब उठि कुँअर भुजा कर गहा, झिझकि हाथ चित्रावलि कहा॥
गहु न हाथ रे बावर जीगी, तासेाँ लागु होइ तोरे जेागी।
जाके छाँह छुए नहिँ पावसि, एकहिँ बार हाथ किमि लावसि॥
कस चकोर अस करै ढिठाई, बिहँसै सरग सेज ससि जाई।
तू भिखारि हौं राजा बारी, राज भिखारिहिँ कौन चिन्हारी॥
जेा कै कीन्ह भँवर कै माना, वह परगट यह अँतर सयाना।

बारी बारी देाऊ भनेउ, अस्थिर हियेँ न प्रीति।
जेागी भौंरा के जुगुति, केहि सेाँ कवन परतीति॥ ५३३॥

जो मधुकर अंबुज रस पीए, मालति नेह न राखै हीए।
जूठ अधर औ कपटी हीआ, नागेसर रस चाहै पीआ॥
कपट रूप गुंजार सुनाई, जोरहि प्रेम सेा नहिँ पतियाई।
जेागी सेाउ जो सेज अनूपा, जेागी नाहिँ आहि बहुरूपा॥
जेागी जेा घर घर परसादी, जेागी नाहिँ आहि रसबादी।
जेागी जो घरबारी हेाई, जेागी नाहीँ कुटीचर सेाई॥
तोर मन भौंरा अंबुज हीए, लेाक छरसि धंधारी दीए।

(क) केाऊ-पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुअ सँग सुन्दरि नारि एक , परगट सूझै मोहिँ ।
रूप सलोना आपना , काह देखवौं तोहि ॥ ५३४ ॥

कुँअर कहा सुनु राजकुमारी , हौं राजा तोहिँ लागि भीखारी ।
मैं खप्पर लै तोरेँ बारा , आसन दरसन भीखि अधारा ॥
तैं सो बिस खप्पर लै आवहि , आपन बार की साध नसावहि(क) ।
हिय चखु रूप रसन तुअ नाऊँ , आन समाइ कहै केहि ठाऊँ ॥
बाँधि जो लेइ काम कर खोजू , जो मन होइ तौ पाउँ मनोजू ।
मन राखे तैं अपने बारा , छूँछी कया फिरै संसारा ॥
देखहु पैठि दूँढ़ि मोर हीया , सूरज आगे जोति न दीया ।

आहि अनूपम काम बन , छुइ न सकौं तुअ माथ ।
हिरदय पर परतछ सिव , कहु तौ राखौं हाथ ॥ ५३५ ॥

कुँअर सपत कामिनि मन माना , सिंभु सपति बाचा परमाना ।
रही अंक हेवर समुझाई , लै सुजान तब अंक मेँ लाई ॥
घूँघुट खोलि रूप अस देखा , सो देखा जेहि सीस सुरेखा ।
अधर घूँट सो अमिरित पीआ , जेहि के पिअत अमर भा हीया ॥
राहु गरास कलानिधि काँपा , लोयन पल आनन पट झाँपा ।
पुनि मनमथ रति फागु सँवारी , खोलि अछूत कनक पिचकारी ॥
रंग गुलाल दोऊ लै भरे , रोम रोम तन मोती झरे ।

सेद[1] थंभ[2] रोमंच तन , आसु पतन सुरभंग ।
प्रथम समागम जो कियो , सितल भा सब अंग ॥ ५३६ ॥

दिन कर उदय होत परभाता , आयो कुँअर जहाँ बरिआता ।
सुखसाला सखिआँ मिलि गईँ , सेज बिलोकि अनंदित भईँ ॥
चित्रावलि करि पाउँ अडारी , परी बिसुध जानहु मतवारी ।

(क) तैं सो बिष खप्पर लै बाही । आन बार की साध नचाही । पाठा० ।

१—स्वेद । २—स्तंभ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उघरि माँग अलकावलि छूटी, बेनी खुली बली कर फूटी ॥
सखी एक हीरा पहँ आई, बिकसे अधर दसन चमकाई।
कहिसि कि आइ देखु धिय साजा, मोहिं कहत आवै मुख लाजा ॥
रानी आइ देखि मुसुकाई, माँग चूमि चित्रिनी जगाई।
कहिसि कि धन दिन धन घरी, धनि माथा धनि भाग।
नैन सिराने निरखि कै, चित्रावलि के भाग ॥ ५३७ ॥

लै सखियन बाला अन्हवाई, चित्र फेरि नौ सात बनाई।
चित्रसेन पुनि सभा बईठा, लिखै लाग दायज कर चीठा ॥
हाथी घोड़ हिरा नग जोती, रतन पदारथ मानिक मोती।
पाटम्बर जरकसी पाँवरी, खाँड़ा मूँठि जराऊ जरी ॥
हंडा गगरा थार अपारा, सोन रूप के गँडुआ थारा।
जो देखी सो अगिनित दीन्हा, धनि सो पिता जिन यह जस लीन्हा ॥
राजनीति कर चीठी दीन्ही, बाँ गहि पाँय बीनती कीन्ही।
राज पाट धन देस सब, मोर कुँअर कर जान।
तासौं कहा विवेक[1] कछु, जा कहँ दीन्ह परान ॥ ५३८ ॥

---

(३६) कुटी-चर-दहन खंड।

महत चला लै दायज साजा, चहुँ दिस दुंद[2] दान कर बाजा।
भाँट कलावत सब पहिराए, दान देइ कर बिदा कराए ॥
निगुनी गुनी भिखारी नेगी, दै दै सब पहिराए बेगी।
बाजत गाजत घर लै आवा, आँगन गै पुनि नाच बधावा ॥
नाच कूद पुनि मेहरिन कीन्हा, जेहि जस लाग ताहि तस दीन्हा।
उहाँ महत घर होइ बधाई, इहाँ सखिन्ह चित्रिनी बनाई ॥
ऊँच धुराहर जनु कबिलासा, तहाँ कुँअर कहँ दीन्ह निवासा।

१—भेद। २—दुंदुभी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राम समौ अभिराम सुख , छलि कै गईं लेवाइ ।
रति बामा चित्रावली , देखत सेज डेराइ ॥ ५३९ ॥
गहि कै कुँअरि सेज बैसाई , अति बिहबल कै अंक मेँ लाई ।
तिया बिचित्र सँकानी चीन्ही , सुख ही सुख मेराइ मन लीन्ही ॥
तब चित्रावलि बचन उभासा , ऐ साईं दुहुँ जग तुअ आसा ॥
कहहु मोहिँ अब बात सुहाई , केहि औगुन मोहिँ कीन्ह अदाई[1] ।
कौन रूप मोर औगुन हेरा , जेहिँ देखत तुम खन मुँह फेरा ॥
मोरे नैन मेघ झरि लावा , तुम दहुँ कहाँ जाइ घर छावा ।
हौं अकसर जाड़ा तन काँपी , तुम दहुँ कौन नारि उर चाँपी ॥
हौं बिरहिन रबि तेज जरि , कोइला भई झुराइ ।
तुम कहुँ सुंदरि बेलि गहि , परबत भूले जाइ ॥ ५४० ॥
सुनि कै कुँअर साँस उर काढ़ी , कहिसि कि ऐ सुन्दरि दुख-डाढ़ी ।
जो हम करत जीउ तन सूना , तू जानति हम प्रेम बिहूना ॥
तुम्हरे गाँव काहु बैरावा , नैन खोइ दधि पार अड़ावा ।
कहिसि कि तुम्ह कारन हम आँखी , भई सूर लगि गादुर पाँखी ॥
पिरम बैरि जिउ मारिसि नाहीं , बिरह खोह डारिसि गहि बाहीं ।
साँप लीलि हौं उगलि अँडारा , रच्छक प्रेम निजहिँ को मारा ।
जो तुअ रूप रहा चखु माहीं , पायेँ नैन जोति पुनि ताहीं ॥
राजपंखि कुंजल कथा , सागर गढ़ क बयान[2] ।
बर बिआह पुनि कौंल कर , एक एक कीन्ह बखान ॥५४१॥
चित्रावलि चित उपजी दाया , सुनि दुख अगसाईं भइ काया ।
मनहिँ कहिसि यह बैरी कोई , बिना कुटीचर आन न होई ॥
जो अस कौंल प्रेम उरुझेरा , अंत भौंर कै लेइ बसेरा ।
अब सो करौं जेहि भौंर लेाभाई , मालति छाड़ि न सरवर जाई ॥
कहिसि कि जो अस दुख चित सहई , सोइ कबिलास राज लै रहई(क) ।

१—अनाथ । २—वर्णन । (क) करई । पाठा० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

माँ उर निकट बैठि अब साईं, भूजहु[1] राज इन्द्र की नाईं ॥
तैन कुरङ्ग गौन गज साजा, दल कटाच्छ एहि भाँति विराजा।
नौबति कटि छुद्रावली, धुज अंचल फहराइ।
पूरन सेवा जो करै, सो अस राज कराइ ॥ ५४२ ॥

भोरहिं चित्रनि जन दौरावा, कुटिल कुटीचर बाँधि मँगावा।
अज्ञा चेरिन आनि सुनाई, अगिनकुंड लै डारहु जाई ॥
परम दोष जासौं कछु होई, ताहि कुंड लै डारहिं सोई।
निसि दिन उठै अगिन की कला, घोर अगिन जेहि आगें जला[2] ॥
बांधि कुटीचर तहँ लै डारा, पाप मूल सौं भूमि उबारा।
देखै लोग कुटीचर जरई, अंत पाप माथे अस परई ॥
जे देखा तिन चखु पल झाँपी, परम पाप वैसन्दर काँपी।
मान अजहुँ तजु ज्ञान कै, पाप जो बन्ध विचारि।
नहिं तो बहुरि विचार नहिं, घोर अगिन के बारि ॥ ५४३ ॥

बैरिहिं अगिनकुंड महँ मेली, करहिं दोउ निसि दिन सुख केली।
कुँअरि पाइ धनि मलय सरीरा, लइ लइ छाती करै समीरा ॥
कौलहि जानि भौंर सँग लटा, चित्रावलि जिअ खरके कँटा।
बरजी सखी सहेली सोई, सेज कौंल दरसो जनि कोई ॥
औ पुनि कहहिं जो मोरे गाऊँ, रहै न सरवर कौंल क नाऊँ।
औ जो कौंल कहै मुँह भाखी, आपन नाउँ सो मिरतक राखी ॥
रस पंडित मुख नाउँ जो लेई, अँबुज निरज बारिज कहि देई।
कौंल चितेरा जो लिखे, ततखन कलपौ[3] हत्थ।
मुख परगासै नाउँ जो, रसना खोउ अकत्थ ॥ ५४४ ॥

पंथ पंथ पुनि जन बैसावा, सागर नगर जो जन कोऊ आवा।
छोरि छोनि कागद सब लेहीं, तबहिं देस पैसारी देहीं ॥

१—भोगो। २—ज्वाला। ३—कलम करो, काटो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एहि बिधि रोकि पंथ सब राखा, सरवर रहेउ न अँबुज साखा।
चित्रावलि चित कै चतुराई, सौति डाह हिय हुतें मिटाई॥
जेते सुख पुहुमी बिधि दीन्हें, तेते दुहूँ बिलसि जिअ लीन्हे।
रंगनाथ पाँड़े मति बढ़ी, चित्रावलि के पाठ संग पढ़ी॥
संतति[1] संग कुँअर के रहई, तरक बात रस कथा जो कहई।
कुँअरहि भूला और सब, रहा दूई संघात।
चित्रावलि कर प्रेम हिय, रंगनाथ की बात॥ ५४५॥

---

(४०) हंस खण्ड।

कौंलावती नारि पर घटा, बाढ़ी अगिन सीस जनु जटा।
दिवस उसास पवन अधिकावै, रैनि कलानिधि धिउ बरसावै॥
ता ऊपर पुनि मनमथ दानी[2], अति जिअ त्रास रहै केहि पानी।
बचन एक कहि गयो जो पीऊ, ताहि अधार रहै घट जीऊ॥
डरै अकेली मंदिल सूना, सब जग सूना एक बिहूना[3]।
बिरह समुंद्र अथाह देखावा, औधि तीर कहुँ दिष्टि न आवा॥
सुरति समीरन लहरैं लेई, बूड़त कोऊ न धीरज देई।
साईं सविता बाहरें, रहेउ कौंल कुम्हिलाइ।
भोर भौंर तन प्रान भा, निकसै कहँ अकुलाइ॥ ५४६॥
रूप नगर कर एक बनिजारा, सागर नगर बनिज लै ढारा।
कौंलावति सुनि व्याकुल भई, भेस फेरि के पूँछन गई॥
कहिसि कि हौं कौंलावति दासी, पिय गौने दहुँ कौंल कलासी।
पूछै समाचार तेहि केरा, मोरे भौंर जेहि लीन्ह बसेरा॥
कुँअर जो गयो एक होइ जोगी, चित्रसेन धिय बिरह बियोगी।
कसा कि नाहिं कसौटी सोना, भा बिआह की अबहीं होना॥
सुनि बनजारै कथा सोहाई(क), आदि अंत लहु बकति[4] सुनाई।

१—स,तत = निरन्तर। २—दुःख दिया। ३—विना। (क) सबाई। पाठा०। ४—उक्ति, कथा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जैसे दलगंजन हना, औ पुनि भयो बियाह।
औ मानहिँ सुख केलि जिमि, खोइ दुंद औ दाह ॥ ५४७ ॥

कौंल दाह जिमि चित्रिनि नारी, कौंल बेलि जरि मूरि उपारी।
कहै न कोऊ कौंल मुख भाखी, औ जिमि बाट रोकि कै राखी ॥
सो वै सब पुनि कहिसि बखानी, कौंल नैन आए भरि पानी।
मन महँ कहिसि कठिन भा काजा, बैरिन सौति कुफुत[1] उपराजा ॥
तहँ राखिस पिअ मोर छिपाई, जहाँ सँदेस न पहुँचै जाई।
मन्दिर उठि आई दुख-दही, सबै कथा साथिन सौं कही ॥
को अस मया-मरोही अहई, छलि कै बिथा मोर लै कहई(क)।

हौं निज बिसरी कंत कहँ, तौ छाड़ी सब भीर।
एक बार बिधि चित चढ़ौं, जेहि व्यापै मम पीर ॥ ५४८ ॥

हंस मिसिर गुन केर निधाना, चौदह बिद्या पढ़े सुजाना।
रसबिद्या कहँ और न पावा, कौंलावति कै बिरह सँतावा ॥
कहिसि कि हे सुन्दरि दुखियारी, तोरे दुख जिय भयौं दुखारी।
पैज बाँधि गौनौं वहि देसा, लै पहुचावौं तोर सँदेसा ॥
औ जोगी कुँअरहिँ लै आऊँ, हंस मिसिर तौ नाउँ कहाऊँ।
सुनि कै कौंल पाउँ लै परी, कहिसि कि अब जनि बिलँबहु घरी॥
हिअ गह-बरै कहत नहि आवै, सो कहिए जो तुमहिँ जिय भावै।

जहँ उनई सावन घटा, जाइ चाह सो लेइ।
हंस चला तजि मानसर, कौलहिँ धीरज देइ ॥ ५४९ ॥

रूपनगर गै हंस पहुँचा, देखेसि राज इन्द्र हुत ऊँचा।
एकसर भँवै न कोऊ साथी, खोजै बिद्या बिद्याराथी ॥
पँडितन पास जाइ लै बानी, बिद्या देखि होइँ सो पानी।

१—फा० कोफ्त = मानसिक पीड़ा, जलन।

(क) कोउ नाहीँ अस बन्धू मोहीँ, कहि दुख कथा सुनावे वोहीँ। पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन दुइ माहँ अँदोर बढ़ावा, रूपनगर एक पंडित आवा॥
विद्या जान जहाँ लगि अहई, काम-सासतर कंठे कहई।
पंडित बात कुँअर पुनि सुनी, बाभन एक आउ बहुगुनी॥
ततखन पंडित निअर बुलावा, तरुनन काम सासतर भावा।

आयेा पंडित रहसि सोँ, देखेसि बदन अनूप।
मन महँ कहिसि कि आह एह, निजु मकरद्धुज[1] भूप॥ ५५०॥

---

(४१) काम शास्त्र खण्ड।

पंडित बैठा देइ असीसा, रस रस पूँछै विद्या ईसा।
काम-सासतर तुम्ह जो जाना, हम आगे सब करहु बखाना॥
पंडित बैठेउ आप सँभारी, कहिसि कुँअर सुनु बात हमारी।
जबलगि सुरति नारि नहिँ होई, तब लगि रस परगास न होई॥
रसविद्या मकरद्धुज बाना, पाँच होइ सेा सुनेा सुजाना।
जे यह वान सैाँह होइ खावा, एहि जग जिअन अमर पद पावा॥
धनि सेा धन धनि पुरुष सुजाना, धनि बिद्या धनि धनि सेा बाना।

सुनहु कुँअर चित कान दै, रस-कंथा अभिराम।
पहिले बरनौ चारि तिय, तौ पाछै रति काम॥ ५५१॥

काम भेद जेा जानै कोई, दंपति सेज महा सुख होई।
रंग अनेक(क) जान जेा पीऊ, तिय तन कहाँ समर[2] लै जीऊ॥
काम भेउ बिनु माँगै रंगा, जस पसु करै पसू सेा संगा।
एहि जग माहँ एक रस सारा, रस बिनु छूछ सकल संसारा॥
रस बिनु आम न पंछी खाई, रस बिनु ऊखहिँ देहिँ जराई।

१—कामदेव। २—समर = कामदेव। (क) अंग अनंग, पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस कहँ भौंरा भँवै भुलाना , बिनु रस दादुर कौंल न जाना ॥
बिनु रस अवनि जनम जे पावा , सूने घर जस पाहुन आवा ।
मान जाय सोइ प्रेम रस , जो बस नैन पसार ।
नेह निहारै जगत महँ , केलि कुरंगिनि सार ॥ ५५२ ॥

सुनहु पदुमिनी केर बखाना , आनन पूरन इन्दु समाना ।
हेम कँवल तन सुन्दरताई , फूल सरीख गात कुँवराई[१] ॥
चित्रा[२] सारँग सावक नैनी , सुक नासिक मराल सुभ गैनी ।
कुच उतंग मांसल[३] बरनारी , पिक-बैनी लंबी लहकारी ॥
पुहुप सरोज बास तन बासा , लज्जावति मानति बिसरामा ।
तीनि रेख कटि त्रिबली बनी , हंसमुखी औ अलपासनी[४] ॥
बास नाभि रस मन मथ चाला , सेत बसन रुचि सुन्दर काला ।
देव पुजन की रुचे हिए , औ सब उत्तिम बान ।
उत्तिम नारिन्ह माहँ पुनि , सो पदुमिनी बखान ॥ ५५३ ॥

नैन चपल पुनि चित्रिनि नारी , पातर मुख औ अलप-अहारी ।
मोट न पातरि बीचहिँ(क) बनी , जेहि घर होइ पुरुख सो धनी ॥
अति कटि छीन मृदुल पुनि होई , सबद मँजोर कंठ सुर होई ।
सुभग नितंब पयोहर[५] खीना , कमिनि सुघर बजावै बीना ॥
चित्र लिखै चतुराई करई , सुन्दर बचन सेज मन हरई ।
छोट बड़े सौं मया जनावै , स्याम चिहुर[६] सिर भौंर न पावै ॥
अलप काम जल मद की बासा , अलप रोम तन काम निवासा ।
सुंदर जंघा पातरी , अछवाई पुनि चाउ ।
अंग बास पै अधिक है , चित्रिनि माहँ सुभाउ ॥ ५५४ ॥

कहौं संखिनी कै गुन राऊ , दिरघ बाँह औ दीरघ पाऊँ ।
कुटिल नैन तन बरन मँजारि , तरहुँड[७] किए रहै सिर नारी ॥

१—कोमलाई = कोमलता । २—चित्रसार मृग । ३—गुदार = मोटा । ४—कम खाने वाली । (क) भेटहिँ = माढा । ५—पयोधर = स्तन । ६—चमकीला । ७—नीचे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सीस न घने न बिड़रे[1] बारा, चलै उतावलि बहुत अहारा।
अरुन बसन रुचि औ कँठ माला, संतत बरै देह जनु ज्वाला॥
चंचलि व्याकुलि काम सँतावै, चढ़त सेज नख छाती लावै।
कुच छोटे कटि मोटी नारी, कपटी क्रोधी लावै जारी॥
अति बिगंध जल काम बसाई, खर खर महा बचन करुआई।
दयाहीन हिय कठिन अति, काम करै पुनि रोइ।
जेहि घर ऐसी नारि होइ, कंत दुखित नित होइ॥ ५५५॥

नारि हस्तिनी जानहु सोई, हस्तिनि के गुन जा महँ होई।
मोटि देह कुंतल पिअराई, हस्ती-मद जल काम बसाई॥
कूरांगी पुनि कपट लबेढ़ी[2], पाँउँ न सुन्दर आँगुरि टेढ़ी।
मंद गौन चखु लाज न गहई, काँध नवाए निसि दिन रँहई॥
बहु भोजन औ बहु जल कामा, गटपट मिलै सेज पर बामा।
अधर थूल[3] औ गद्गद् भाषा, अंकुस दिये रहै सो राखा॥
जस कछु अहै बेद अनुमाना, चारि नारि गुन कहेउँ सुजाना।
बरतमान अब जगत महँ, मिसिरत गुन रसवन्त।
बरनत बहु बिस्तार होइ, चीन्हि लेहिँ बुधिवन्त॥ ५५६॥

सुनहु कहौं अब तिथि परमाना, जेहि तै सेज रवन सुख माना।
परिवा दुइजि चौथि तिथि पाई, पदुमिनि कह पंचमि सुखदाई॥
अंत पहर रजनी पिउ रावै[4], पदुमिनि सेज महा सुख पावै।
छठि अठईं द्वादसि औ दसा, चित्रिनि के चित ए तिथि बसा॥
प्रथमे पहर जो पिउ रति करई, सेज समय चित्रिनि चित हरई।
सपत चतुरदस एकादसी, तीनौं तिथि संखिनि उर बसी॥
तीसर पहर रैनि रति माना, करै बसन[5] जो होइ सुजाना।

१—सं० विरल। २—लपेटी। ३—स्थूल = मोटा।
४—एमै। ५—व्यसन: संभोग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवमी तीजि तिरोदसी , पंद्रह तिथि सुख पाउ ।
मदन आउ दोपहर दिन , हस्तिनि कहँ रति चाउ ॥ ५५७ ॥

अब सुनु कहौं जोग नर नारी , रसिक जानु यह बात रसारी ।
जोगहिँ जोग मिलै जो आई , अति आनन्द महा सुखदाई ॥
मेहरिन मदन ठाँउ क्रम होई , बिनु रति जोग कुठाहर[1] सोई ।
जोग न मिलै होइ सुख हानी , अंत कंत कहँ तजै परानी ॥
जो कुलीन होइ हेतु[2] न राखै , नाहिँ तौ जाइ आन फर चाखै ।
तीनि जाति बिधि तिया सँवारी , हरिनी[3] असुनी[4] करिनी[5] नारी ॥
तीनि भाँति बिधि नर उपराजा , ससा वृषभ औ तुरै[6] बिराजा ।

पहिले एक एक कर कहौं , जाति पाँति बेवहार ।
ता पाछे कहि देउँ सभ , जोग बियोग बिचार ॥ ५५८ ॥

ससा सरूप सुनहु नरनाहाँ , उत्तिम जाति सो पुरुषन्ह माँहाँ ।
मुख पातर तन सुन्दरताई , दसन छोट पुनि कछुक मेटाई ॥
कोमल चिहुर सीस नहि घने , हाथ पाउँ जंघा सब बने ।
दीरघ चखु सूछम करिधनी[7] , अलपरती औ अलपासनी ॥
अति गंभीर महा सुखदाई , बैठत उठत अधिक गरुआई ।
बास सुगंध मदनजल[8] आवै , मृग नैनी तेहि सँग सुख पावै ॥
भोजन अधिक दूध रुचि होई , दस महँ पुरुष एक अस होई ।

मदनांकुस[9] रसबेद[10] मत , षट अंगुल परिमान ।
इह परकीरति[11] जो पुरुष , सोई ससा बखान ॥ ५५९ ॥

लच्छन बिरिष कहौं सुनु राऊ , थोर लाँब भुज बल ब्यवसाऊ ।
दीरघ लोयन कोरैं राते , बरन असेत जनहुँ मदमाते ॥

१—कुठोर, कुठांव । २—हिताई, प्रेम । ३—मृगी । ४—बडवा ।
५—हस्तिनी । ६—अश्व । दे० बात्स्यायनकृत कामशास्त्र । ७—कमर ।
८—वीर्य्य । ९—लिंग १०—कामशास्त्र । ११—प्रकृति, स्वभाव, लक्षण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मन्द गँवन अस्थिर तन राऊ, जहँ बैठै तहँ उठै न भाऊ।
अरुन हथौरिनि[1] पीत गरेरा, सेज मान जो नखछत केरा॥
एहि गुन पुरुख रूप पहिचाना, नव अंगुल अंकुस[2] परिमाना।
मध्यम बिरिख पुरुख जग होई, उत्तम सोई जो चीन्हे कोई॥
औ उत्तम जो कहि समुझावे, उत्तम रसिक सतत सुख पावै।

अस्थिर लोयन कोरन, अश्वी सौं रति चाव।
अब आगे सुनि कान दे, गुन तुरंग के भाव॥ ५६०॥

गुन तुरंग सब कहौं सुजाना, लिंग अदित अंगुल परिमाना।
दीरघ अंगुल दीरघ बाहीं, दीरघ दसन तुरे मुख माहीं॥
लाँब मौलि सिर केस सुहाये, सदन नैन बिसम्हारि पियाये।
टेढ़ जंघ नख करबुद[3] टेढ़ा, सीस पाय लहुँ क्रोध लबेढ़ा॥
पातुर लोभी अधिक ढिठाई, मन्मथजल[4] बिरगिन्ध[5] बसाई।
नींद अधिक चंचल गति पावै, इस्त्री रति लालस दहकावै॥
लाँब गीवँ अरु अस्थुल नेता, बदन लाँब लज्जा हत-हेता।

पुरुख जात पहचान यह, एहि गुन भाव बिचारि।
अब निरवल[6] के बरनबउँ, तीनि भाँति पर नारि॥ ५६१॥

अब सुनु हरिनी केर बखाना, मन-चित-हरिनी सोई सुजाना।
कुटिल केस सीस सम घने, तनवी[7] कुच अनंग उर बने॥
अंबुज नयन भँवर हिय मोहा, नासिक अल्प छिद्र मुख सोहा।
चंचल भुजा बैन पिक कहै, सेज समय नहिँ इस्थिर रहै॥
अधर अरुन जनु पुंज निवारी, गज गवनी अपुरुब बर नारी।
मदन-जला जनु कँवल बसाई, अलप-असन नितंब समताई॥
सुघर पाय औ कर सुकुमारी, कोमल नवै तेज जेउनारी।

१—गदोरी, हथेली। २—मदनांकुश = लिंग। ३—नखमंडल।
४—वीर्य्य। ५—दुर्गंधि। ६—विवरण, ब्यवरा। ७—छोटी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कामागार गरन्थ मत , रस अंगुल परमान ।
यह परकीरति बैठि गुनु , हरिनी जानु सुजान ॥ ५६२ ॥

दूजे कहौं अस्वनी नारी , बिरिख पुरुष की नारि पियारी ।
घने बार सिर डीठि तरौंहीं , पलक मोंट पुनि बरन हथौंहीं ॥
नील कँवल सम लोचन ज्ञाता , अरु न कँवल जिनु करबुद राता ।
लाँब बदन औ कोमल देहा , सभर[1] नितम्ब पयोहर जेहा ॥
लाँबी गीवँ भुजन सहराये , सुभगवती हिरदै डर खाये ।
यह केहरि किरोधती नारी , खीर खाँड रुचि नींद पियारी ॥
काँख रोम बहु औ मद-जला , करै रोज चितुराई कला ।

नव अंगुल परमान पुनि , मकरध्वज-भंडार ।
एहि परकीरति जानहीं , असुनी के बेवहार ॥ ५६३ ॥

हस्तिनि के गुन कहौं सबाई , बहु भोजन मन पाप बसाई ।
थूल हाथ औ दोऊ बाहीं , सील लाज नहिं आँखिन माहीं ॥
ओंठ लाँब औ तीछन दाँती , संतति रहै काम मदमाती ।
सबल देखि नैन पिअराई , मद गयंद जल काम बसाई ॥
सुर गँभीर सोहिनि उर लाँबा , राते देह जनहुँ दुति ताँबा ।
कष्टहिं होइ सेज रति दानी , मदन-भँडार बहै नित पानी ॥
कामगार मिति अंगुल भाना , हस्तिनि के गुन सुनहु सुजाना ।

जाति भाँति सब मैं कही , जेहि जस आह सुभाउ ।
अब जासौं सुख सेज रति , सोऊ कहौं सुनु राउ ॥ ५६४ ॥

पाँच भाँति रति जोग सुजाना , ऊँच नीच सम जोग बखाना ।
औ अति ऊँच नीच अति होई[2] , बिनु रस रसिक न जानै कोई ॥
जहँ सम जोग तहाँ हित प्रीता , संतत जनम हेत महँ बीता ।
ऊँच नीच दोउ एक सम भाँती , एक जिअ दुखी एक नहिं साँती ॥

१—भारी ।
२—रति संयोग के पांच भेद ऊंच, नीच, सम, अति, ऊंच, अति नीच ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहँ अति ऊँच कि अति होइ नीचा, संग न सहै सहै बरु मीचा[1]।
कंतहिँ तिय तिल-अंजुलि देई, जाइ ढूँढ़ि सम जोगिहिँ लेई॥
एहि कारन जग महँ अति पापा, कामदेव सोइ दीन्ह सरापा।
अब लहुँ मैं संज्ञा कही, सब कहँ बूझि न जाइ।
सुनहु रसिक रस कान दै, कहौं सबै बिलगाइ[2]॥ ५६५॥

हरनी ससा जोग सम अहहीं, दंपति सदा सेज सुख लहहीं।
असुनी वृषभ जोग सम आवा, एहि दोउ मिलि संतत सुख पावा॥
सम जोगा हस्तिनी तुरंगा, दोऊ सेज चढ़ि मानहिँ रंगा।
हरनी वृषहिँ ऊँच रति होई, असुनी अस्व ऊँच पुनि सोई॥
असुनी ससा नीच कै जानहु, हस्तिनि वृषहिँ नीच रति मानहु।
अतिहिँ उँच तुर हरिनी रसा, अतिहिँ नीच हस्तिनि औ ससा॥
ऊँच नीच लगि बुद्धि बिचारी, जेहितेँ होवै बस बरनारी। (क)।

काम गौन जेहि बिधि करै, नर नारी के गात।
सो सब कहौं बखानि कै, सुनहु रसिक यह बात॥ ५६६॥

चढ़ै काम नर दाहिन अंगा, बाएँ अंग नारि पर संगा।
सुकुल पछ परिवा जब आवा, आवै काम अँगूठा पावा॥
परिवा दुइजि तीजि बस फीली, गहै चौथि के जाँघ रसीली।
पँचमी बसै मदन की ठाऊँ, षष्ठी बसै नितँब जेहि नाऊँ॥
नाभी रहै सत्तमी मदना, अठएँ बसै आइ उर सदना।
नौमी बसै मैन कुच माहीं, दसमी आवै काँख तराहीं॥
एकादसी गाल महँ आवै, द्वादसि काम कपोल समावै।

तेरसि आवै अधर पर, बसै चतुरदसि नैन।
जेहि दिन पूरन चन्द्रमा, रहै माँग चढ़ि मैन॥ ५६७॥

१—मृत्यु। २—पृथक पृथक विवरण करके।

(क) अब सुनु राजा कहा हमारा। निहचै कहा बचन जो सारा। अधिक।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कृष्ण पच्छ परिवा रह माँगा, पुनि उतरे होइ दाहिन आँगा।
जैसे बाएँ चढै अनंगा, तैसेँ उतरै दाहिन अंगा॥
जौ लहुँ योंनि खलित नहिँ होई, तौ लहुँ हिअ संतोष न सोई।
माँग नखच्छत चूमिय नैना, खेदन अधर बिभेदन मैना॥
रसिक कपोल कपोलहिँ घसई, जब कपोल मकरध्वज बसई।
केलि काँख अँगुरी लिखि लेई, गहि कुच कठिन नखच्छत देई॥
उर सहराइ देइ नख नाहाँ, उलटि हाथ हन नाभी माहाँ।
और सबै चुटकी गहै, बसै अंग जेहि काम।
निहचै मैन न थिर रहै, होइ बस्य[1] पुनि बाम॥ ५६८॥

आदि सुरति जनि काम सतावहु, अंत करहु जातेँ सुख पावहु।
पहिलहि जाइ काम तजि अंगा, काकर सुख का कर रति रंगा॥
मूरख सौं हम भेद छिपावैँ, रसिक जानि रस बात सुनावैँ।
काम भेद कहि हंस बताना[2], नायक और नायका बखाना॥
नौ रस के पुनि भेद सुनाए, अभिनव भाव सबै समुझाए।
सोरह हाउ भाव पंचासा, जेहि आलंबन माहँ निवासा॥
जो एह भेद कहैँ कमुझाई, आन कथा एक लिखैँ बनाई।
कहौँ थोर जेहि भाव बहु, बूझहिँ बूझनहार।
कहँ लगि बरनौँ नायका, नायक गुन बिस्तार॥ ५६९॥

---

(४१) चित्रावली गवन खंड।

हंस मिसिर अस गुन परगसा, कुँअर हिए भीतर होए बसा।
रंगनाथ और हंस गियानी, जनु गुरु सुक्र दोउ गुन ज्ञानी॥
कुँअर पास नित बैसे रहहीँ, उत्तम उकुति तरक पुनि कहहीँ।

१—वशीभूत। २—कहा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक दिन एक मधुप उड़ि आवा, कुँअर कान गुंजार सुनावा॥
कुँअर कहा जो अलि गुंजारा, ताकर पुहुमी कहा बिचारा।
कहहिँ कि अलि गुंजार नरेसा, आनि सुनाउ कहूँ क संदेसा॥
कुँअर कहा तुम पंडित दोऊ, पूछौं कहौ समुझि जिअ दोऊ।

मधुप पिऐ मकरंद रस, निसि दिन कुसुम निवास।
केहि कारन एह स्याम तन, संतत भँवै उदास॥ ५७०॥

रंगनाथ पाँड़े सुनि बोला, सुनहु कुँअर एह भेद अमोला।
भौंर बिबेकी हेत न हीए, मुहँ रस पिए कपट मन कीए॥
पीऐ एक पुहुप जो रसा, दूसर फूल रहै मन बसा।
बारी बारी भँवै अधीरा, तेहि औगुन भा स्याम सरीरा॥
चंदहि जो चकोर मन लावा, एक हेत भा रंग सुहावा।
तब उठि हंस कहा सुनु राऊ, भौंर स्याम गुन कहौं सुभाऊ।
सूर बिरह जो अंबुज दही, मधुकर तहाँ राति एक रही। (क)

पुहुप हेत मकरंद गुन, अहा सेत अभिराम।
बिरह अगिन जरि कै तहाँ(ख), भौंर भयो तन स्याम॥५७१॥

कुँअरहिँ सुनत तरकि जिय लागी, औ सुनि सभा सकल अनुरागी।
कहिसि कि धनि सरवर धनि हंसा, धनि गुरु धनि कुल धनि जेहि बंसा॥
जेहि अस बुद्धि होइ हिय माँहीँ, कस न पुहुमिपति लाल कराहीँ[1]।
बुद्धि दीप जाके हिय बरई, पुहुमी सरग उजेरा करई॥
तेहि अँजोर जो करै पयाना, हेरि लेइ सब जोई हेराना।
एक दीप बिनु जग अँधिआरा, बादि[2] सूर ससि कर उजिआरा॥
निअरीह रतन न चीन्हे नैना, धावै दूर दूर सुनि बैना।

(क) सूर बिरह जब कौंलहि देई, मधुकर निकसि निवास करेई। पाठा०।

(ख) नीरज भोर अगिन जरी। पाठा०।

१—लाल करना = खुश करना। २—अतिरिक्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कया भवन महँ बहइ नित , पाँच झकोरा बाउ ।
एहि बिधि किरपा ओट कै , दीपक बुद्धि बचाउ ॥ ५७२ ॥

हंस बचन सुनि कुँअर सँचेता[1] , चढ़ेउ आइ हिय अंबुज हेता ।
ततखन हिए अगिन उदगरी , मया पौन परि छाती जरी ॥
मन महँ कहिसि नियाउ न होई , वह मोरी मैं वह क न कोई ।
औरहिँ प्रेम भयो मैं अंधा , हौं सो दूर वह मोरे रंधा[2] ॥
वह मो कहँ राखै चित माहीँ , मोरे ओहि की चरचा नाहीँ ।
अब कै लेहुँ चाह तेहि केरी , जौ हौं जीउ उठे औड़ेरी[3] ॥
चलौं बिदा होइ अपने देसा , मकु भेटै जो जियत नरेसा ।

एह मन गुनि आयो कुँअर , उठि चित्रावलि पास ।
मुख मलीन ज्यों निसि कँवल , चितवति भयो उदास ॥ ५७३ ॥

चकित भइ मुख देखि चकोरी , के मयंक दुति लीन्ह अँजोरी ।
के सनमुख भाषा कछु हीना , जेहि उदास भा मुखर मलीना ॥
मोरे मँदिर पौन नहिँ आवै , दीप जोति किमि छीन देखावै ।
को होइ दूत नगर महँ आवा , सौति केर जिन बिरह सुनावा ॥
नाहिँ तौ जहाँ समीर न चाला , बिनु मधुकर पंकज नहि हाला ।
पूछौं रसहिँ पैठि हिय माहीँ , बिनु कारन एह कारन[4] नाही ॥
कहिसि कि ऐ साईँ सुखदाई , कारन कौन बदन मलिनाई ।

तैं दिन मन सोइ जगत महँ , जेहि अँजोर संसार ।
काहे बदन मलीन कै , करसि जगत अँधिआर ॥ ५७४ ॥

कुँअर कहा सुनु प्रानपियारी , हम चित आनि चढ़ेउ दुख भारी ।
मैं अपने कुल सरवन अहऊँ , अंधी अंधा काँवरि बहऊँ ।
तोरे पेम पिआस सँतावा , बाट छाड़ि एहि सरवर आवा ॥
जम दशरथ आहै सर साँना , मकु बोलत मारै बिख बाना ।

१—स्मरण किया अथवा बुद्धिमान् । २—रंध्र = समीप । ३—उद्गार ।
४—क्रिया, चेष्टा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इहवाँ लागि जाइ जम बाना , अंधा अंधी तजहिँ पराना ॥
उन कहँ अंकन कौन दुहेला , अंध लकुटिआ महीँ अकेला ।
जौ एहि भेस जाइ सुधि लेहूँ , मुए जिअत दूनहुँ गति देहूँ ॥

जब ते यह चिंता भई , भाउ न एकौ काज ।
अब गौनब निज देस कहँ , साजहु गौन क साज ॥ ५७५ ॥

चित्रावलि सुनि चिंता गही , सीस नवाइ आँधि होइ रही ।
दोउ दूभर मिलि दुख उपराजा , इत प्रीतम उत कुटुम कि लाजा ।
काहु जाइ मंदिल महँ कहा , आजु सुजान कहत अस अहा ॥
हीरा बदन सूखि सुनि गयऊ , बरमा बेध हिये मँह भयेऊ ।
सुनि कै गई जहाँ हुत राजा , कहिसि कि परी अचक सिरगाजा ॥
अब सुजान निज देस संभारा , करत आह घर गौन बिचारा ।
राजा हिएँ अग्नि पुनि बरी , तरहुँड माथ रहेउ एक घरी ॥

नैन नीर भरि कहिसि नृप , कछु न हमार बसाइ[1] ।
को जग ताकर कर गहै , जेा आपन ले जाइ ॥ ५७६ ॥

हम जबतेँ ओकहँ जिउ दीन्हा , आपन सुख न्योंछावरि कीन्हा ।
अब जामहँ सुख पावै राऊ , करहु सोइ नहिँ आन उपाऊ ॥
ओकहँ आन कहहिँ हम आना , जनम हेतु कर होइ निदाना ।
जो वह करै होइ सब सोई , कीन्ह हमार अमिरथा होई ॥
कस न करै सब ताकर कहा , जाकर कहा होत सभ अहा ।
औ जौ लहुँ धिय गौन न होई , लेाग कुटुँब भल कहै न कोई ॥
जौ लहुँ धिय ससुरेँ नहिँ जाई , तौ लहुँ नहिँ छूटै लरिकाई ।

नैहर महँ सब केलि सुख , निमिखि न आगेँ सूझ ।
परै जाइ ससुरारि महँ , पर आपन सब बूझ ॥ ५७७ ॥

१—व्यवसव ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानी राउ बचन जब सुनी, भा चिंता चितही महँ गुनी (क)।
कहिसि कि भला कहै नर लोई, मेहरिन्ह जगत नेक[1] बुधि होई॥
दुहिता सोन अगिनि ससुरारा, सासु सँडासी कंत सोनारा।
दै सोहाग सब निसि दिन केली, आँटै सदन धरी[2] महँ मेली॥
ननँद नाल फूँकत नित रहई, सुलगि हिया कोइला जिमि दहई।
घाउ बोल घन[3] छिन छिन खाई, ठाउँ न छाड़ै जानि निहाई॥
तब तिरिया कुन्दन की नाईं, मेटै अंक मैं भरि नग साईं।

नैहर जानि न जाइ कछु, गुन औगुन एक मान।
सोई सोहागिनि भामिनी, जाकर ससुरे मान॥ ५७८॥

पुनि राजैं सुजान हँकरावा, बदन हेरि हिय गहबरि आवा।
अति बिहबल मधु-बचन उभासा, कहिसि कहा चित कीन्ह उदास॥
आइउ सूर निअर भा मोरा, एह सब राज पाट धन तोरा।
का बिचारि छाड़हु एह राजू, बिलसहु बैठि इन्द्र कर साजू॥
कहा सुजान पुहुमि धै माथा, दीन्ह न जाइ निमिषि तुअ साथा।
हौं निरिघिनि भिखारि हुत आवा, तुम राजा मोहिँ राज करावा॥
हौं परदेसी अहा अनाथा, तुम किरपा करि कीन्ह सनाथ।

मैं तुमरे परसाद सब, सुख अनेक जग कीय।
पिता राज अब चित चढ़े, धसकि उठै मम हीय॥ ५७९॥

पिता राज यहि जग महँ मूला, मूल छाड़ि पल्लौ को भूला।
जौ अपने देसहिँ निजु जाना, कस न अबहिँ फिरि करौं पयाना॥
पलटी दिष्टि फिरै नहिँ फेरे, मन पुनि परा दिष्ट के घेरे।
जेहि जेहि पंथ चला हौं आवा, लोयन माँह अहै सब छावा॥
अज्ञा देहु तौ साजौं साजू, इहवाँ नहिँ हमार अब काजू।

(क) भा चित चेत हिये महँ गुनी। पाठा०। १—तनिक = थोरि। २—घरिया। जिसमें सोना आदि धातु गलाते हैं। ३—हथौड़े की चोट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनि के उतर राउ गहबरा[1], उमड़ी नैन दुहूँ जल धरा॥
कहिसि कि जौ तुम जिय अस भावा, करहु सोइ जो जिय महँ आवा।

जाकर चित चलबे बसा, करै न राखै ढील।
कहा जो राखे दिवस दस, अंत चलै तजि सील॥ ५८०॥

रानी सुनि धिअ गौन बिचारा, बिसुधि गिरी भुइँ खाइ पछारा।
चूल[2] तोरि मोती छितराई, लोयन मोती माल पुराई॥
जन परिजन सब भा बिकरारा, ज्यौं तन बिछुरे प्रानपिआरा।
सुनि चित्रावलि गौन क नाऊँ, घर घर बिसमादा[3] सब गाऊँ॥
राज मँदिल जो रोर[4] बढ़ावा, राजनीत मंत्री चलि आवा।
देखेसि आइ बूढ़ औ बारा, आपु आपु कहँ सब बिकरारा॥
कहिसि कि जो कोइ आपन थाती[5], लेइ तौ कहा बिदारिय[6] छाती।

करहु चेत चित रोर तजि, साजहु गौन क चार।
दूनहुँ जग महँ होइ जेहि, तुम्हरो मुहँ उजियार॥ ५८१॥

महत बचन सुनि चेतो राजा, साजै लाग गौन कर साजा।
चन्दन चीर कीन्ह चंडोला, चहुँ दिसि लाए रतन अमोला॥
अपुरब एक ओहार सुहावा, बिबिधि भाँति कै आनि ओढ़ावा।
झूलहिँ चहुँ दिसि झालरि मोती, छिटकि रही जग जगमग जोती॥
कुसुम गूँधि बहु हार बनाये, ठाँव ठाँव पुनि आनि लगाये।
अगर मेद मलयज घनसारा, बास सुगंध कीन्ह महँकारा॥
आँगन कै राखेउ चंडोला, दाएज कर भँडार पुनि खोला॥

सोन रूप मनि मोति नग, हाथि घोर बहुताइ।
पाटम्बर जरि पाँवरीं, दीन्ह अनेक लदाइ॥ ५८२॥

१—विकल हुआ, घबराया। २—चूड़ा = जूड़ा, सिर का बँधा हुआ बाल।
३—दुःखी हुआ। ४—शोर। ५—धरोहर। ६—फाड़िये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छोह भरी रानी पुनि आई, चित्रावलि लै अंक मेँ लाई।
कहिसि दीऊ लोचन भरि नीरा, मुख छबि पर बलिहारी हीरा॥
अब तुम्ह करब तहाँ कर गौना, जहँक संदेस न पावहिँ सौना।
पिउ बरिआर[1] बिबस लै जाई, हम देखहिँ पै कछु न बसाई॥
सकल जनम नैहर सुख सारा, अब तुम चलहु जहाँ ससुरारा।
कठिन आहि ससुरारि कि रीती, सोई जान जाहि सिर बीती॥
नैहर महँ जिन गुन औरावा[2], ससुरे जाइ सोइ सुख पावा।
अब जो घरि दुइ माँह पिउ, लै गौनहिँ गहि बाँहि।
बचन दो एक उपदेस हित, कहौं धरब हिय माँहि॥ ५८३॥

सजग रहब गवने ससुरारा, अहित अलेखित हित दुइ चारा।
पर आपन जौ लहुँ न चिन्हाई, सब सोँ राखब बदन छिपाई॥
ओबरी[3] माँह रहब दिन गोई; आँगन होब रात जब होई।
बैसब सदा बार दै पीठी, परै न सौँह आन की डीठी॥
संतति रहहि मुकुर कर माहीँ, चीन्हब पर आपन परछाहीँ।
पुनि डर मानब गुरुजन केरी, सनमुख काहु न देखब हेरी॥
उतर न देब कहै जौ कोई, लाजन रहब चरन तर जोई।
ननदी औघर[4] जौ कहै, रिसि राखब जिय मारि।
परिछि सीस पर लेब नित, सामिनि देइ जो गारि॥ ५८४॥

औ चित लाइ करब पिउ सेवा, एक पीउ दीउ जग सुख देवा।
मंत्र जंत्र साधब जनि कोई, सेवा एक पीउ बस होई॥
जौ बस होइ तौ गरब न करिऐ, आपु अधीन होइ मन हरिऐ।
औ काहू सोँ भेद न कहिये, धन ज्योँ करेँ छपाए रहिये॥
लोगन आगे रहब लजाई, चोरीँ चढ़ब सेज पिय जाई।

१—बरियार = बलवान्। २—(सं० ऊरीकरण) संग्रह किया, सीखा।
३—कोठरी, घर। ४—अवघट = कटुवचन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिउ दुख दै सेवब सुख त्यागी , सगरी रैनि गँवावब जागी ॥
सौतिन्ह कर इरखा[1] नहिँ करना , साईँ संग सदा जिय डरना ।
अलप मान सेवा अधिक , रिसि राखब जिउ मारि ।
जेहि धन महँ ये तीन गुन , सोई सोहागिनि नारि ॥५८५॥

सुनि उपदेस नारि गृहबरी , रोइ जननि के पायन परी ।
रानी पुनि लै अंक मेँ लाई , तजि न जाइ अति हियेँ छोहाई ॥
उन्ह दूनहुँ के मया निहोरा , होइगा सगरे नगर अँदोरा ।
जहँ लहु सखी सहेली चेरी , रोवहिँ चित्रावलि मुख हेरी ॥
राजा सुनि अँदोर पुनि आवा , देखि अवस्था दुःख जनावा ।
चित्रावलि तजि जननि कि छाती , पिता के पाउँ परी बिलखाती ॥
राजै पुनि उठाइ गिँव लाई , नैन नीर पुत्री अन्हवाई ।
पिता कंठ धिय गहि रही , छोहन छाड़ि न जाइ ।
ज्योँ ज्योँ जननि छुड़ावइ , त्योँ त्योँ गहि लपटाइ ॥५८६॥

रानी बर कै धिय बिलगाई , राजैँ बहुत प्रबोधि बुझाई ।
जनि जानसि हौँ दूरि अडारी , जात रहहिँ हौँ बाभन बारी ॥
समाचार इहवाँ कर मोरा , कहि सँदेस लै आइहहिँ तोरा ।
औ पुनि कटक मोर सँग जाइहि , नाव चढ़ाइ बिदा होइ आइहि ॥
कै परबोध नरेस बिनानी , समदि[2] चल्यौ धिय चखु भरि पानी ।
चित्रावलि कहँ होइ बिकरारा , कंठ लाए समदैँ परिवारा ॥
समदैँ सखिआ लै लै फेरी , पायन परि परि समदहिँ चेरी ।
कोई रोवै कंठ गहि , कोई पाएन्हि लागि ।
सँवरि सँवरि सब संग सुख, उठै करेजँ आगि ॥ ५८७ ॥

एहि महँ आवा कन्त बुलावा , चित्रिन कुछ नहि समदै पावा ॥
जहाँ तहाँ सब देखहिँ नारी , चढ़ी जाय चंडोल सवारी ।

१—ईर्षा । २—मिलकर ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाड़ेउ सकल फूल फुलवारी, छाड़ेउ सुख सरवर चितसारी ॥
छाड़ेउ अगर चँदन सुखदाई, छाड़ेउ पालक[1] सेज सुहाई।
छाड़ेउ पिता राज नवरंगा[2], छाड़ेउ बाल-सँघाती संगा ॥
छाड़ेउ हीरा अरथ भँडारा, छाड़ेउ पाट नैन भिनु सारा।
ठाढी देखहिँ सखी सहेली, अन्त छाड़ि सब चली अकेली ॥

हसन खेल औ कूद सुख, बालापन के रंग।
चली सोहागिन छाड़ि सब, गुन औगुन लै संग ॥५८८॥

चढि चंडोल चली बर नारी, संग साथ घर बार बिसारी ॥
चारि कँहार बाँस धरि काँधा, ऊपर डारि जायँ भाराँधा।
आवहि ऊभ साँस उर लेई, फिरि के काहु न धीरज देई ॥
सगर नगर पुनि देखी धावा, मलि मलि हाथ करै पछतावा।
दायज पुनि सब लादि चलावा, कुँअर सुजान बिदा कहँ आवा ॥
बिनती करैं राउ औ रानी, बरखहिँ नैन सेवाती पानी।
चित्रावलि अब अगसर जाई, तुम जानहु औ कुल कि बड़ाई ॥

जात अहौ तुम्ह संग लै, हम दुहुँ घट कर प्रान।
आपु बड़ाई हेरि के, राखब एहि करिमान ॥ ५८९ ॥

चढ़ि जो तुरंग सुजान पयाना, सहस पखरिआ संग पलाना ॥
लाख सहस दासी जो दीन्हे, बिबि दस दुरद छोरि सँग कीन्हे(क)
साजि कटक लै चल्यो सुजाना, बिबिधि भाँति नहि जाई बखाना।
हंस मिसिर कीन्हेउँ अगुआई, पाछेँ लागि कटक सब जाई ॥
सूध पंथ सागर गढ़ ताका, पौन डोर कहँ मन रथ हाँका।
जाइ तुलाने सागर गाऊँ, कुँअर देखि चीन्हा अँबराऊँ ॥
कहिसि हंस हम अनतहिँ जाहीँ, इहाँ हमार परोजन नाहीँ।

१—सं० स्फलक = पलंग। २—(फा० رنگ) औरंग = राजसिंहासन।
(क) जे दल साथ सहस दस कीन्हे, तब सब लोग बड़ाई कीन्हेँ। पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आजु लेब हम कटक सँग , एहि अँबराउ सुबास ।
होइहै कोऊ हमार जौ , सुनि आइहि हम पास ॥ ५९० ॥

---

(४२) कौलाँवती-गवन खंड ।

देखि कटक जिमि बादल छाहाँ , परी हूल सागर गढ़ माहाँ ॥
यह अब को जस सोहिल राऊ , कटक साजि भुइँ चापे आऊ ॥
वह हुत कौंलावति अनुरागी , एह अब दहुँ आवै केहि लागी ।
ओ कहँ हुत सुजान संघारा , अब कहँ पाउब तस बरिआरा ॥
सागर मन पुनि चिंता भई , साहस बाँधि मीचु पुनि भई ।
जहँ तहँ सजग बीर हित बासे , सूर बदन जनु कौल बिगासे ॥
एहि महँ हंस पहूँचा आई , कहिसि करहु अब अनँद बधाई ।
जो जोगी सोहिल हना , औ राखा तुअ प्रान ।
आयो बहुरि नरेस होइ , चलहु करहु सनमान ॥ ५९१ ॥

हंस बचन जब सागर सुना , भा जिअ सोच हिया महँ गुना ।
अब लहु कौंल आस जल अहा , अब जो राखिय कारन कहा ॥
लोग कुटुम मिलि कै मत ठाना , कौंल न काज आउ बिनु भाना ।
जस बर कै ओहि दीन्ह बिआही , अब बर कै पुनि सौंपहु ताही ॥
दुहिता केर कठिन है भारा , तबहीं पति[1] जो जाइ ससुरारा ।
जनम पिता माता घर लेई , दुख सुख माथे बिधि लिखि देई ॥
यह बिचारि कै डाँड़ी फाँदी , गौन जान कौंलावति साँदी[2] ।
समदी गंगा गोद गहि , औ कुमुदिनि कँठ लाइ ।
पुनि समदेउ परिवार सब , लोगन आँगन आइ ॥ ५९२ ॥

कौंलावति चढ़ि चली विमाना , जेहि अँबराउ सुरेस सुजाना ।
सागर साजि कटक पुनि चला , कौंल गौन-दुख जग कलमला ॥

१—मर्य्यादा । २—समदी = मिली । कांदी, पाठा० ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

औ जहँ लहु हुत दायज दीन्हा, सो सब लाइ पुरोहित लीन्हा।
सागर आइ सुजानहिँ भेँटा, मुख देखत सब दुख गा मेँटा॥
कंठ लाय हिय सीतल कीन्हाँ, भुजा जोरि अँकवारी दीन्हाँ।
औ जहँ लहु पर आपन अहे, छुइ छुइ पाँउ दूरि तकि रहे॥
सागर तब बिनती औधारी[1], कस घर तजि के उतरेउ बारी।

जौ राखहु नीरज चरन, सोभ पाउ हम माथ।
चलउ आप घर जानि कै, कीजै हमहिँ सनाथ॥ ५९३॥

तब सुजान बोला सुनु राऊ, एहि मारग हम लोग बटाऊ।
पथिक पंथ जौ छाड़ै कोई, भूलै अंत महा दुख होई॥
सूध पंथ तजि उत्तर केरा, कौल[2] बचा आएउँ एहि फेरा।
कौंलावति कर बिदा करीजै, अगुआ एक संग पुनि दीजै॥
तुम परसाद जाउँ अब देसा, मकु भेटउँ कै जियत नरेसा।
राय कहा कछु आहि न खाँगा[3], को राखै जो आपन माँगा॥
सूख पंथ बहु दुख जगजाना, पानी पानी बहुत मिलाना।

अज्ञा देहु तौ जाइ घर, साजौं बोहित साज।
लीजै सभै लदाय जो, आउ तुम्हारे काज(क)॥ ५९४॥

कुअँर गहे सागर के चरना, कहिसि बेगि कीजै जो करना।
सागर राउ पलटि घर आवा, चित्रावलि पहँ कुअँर सिधावा॥
कहिसि कि सुन्दरि प्रान पियारी, तोहि बिनु प्रान होइ घट भारी।
एही नगर जहवाँ हौं कहा, पाँच मास पग साँकर रहा॥
एही नगर हम कहँ दुख बीता, इहाँ हाँकि सोहिल रन जीता।
एही गाँव सागर गढ़ आही, कौंलावति जहाँ दीन्ह ब्याही॥
मोकहँ तुम्ह बिनु आन न भावा, वै मोहिँ बिरह बहुत दुख पावा।

१—किया। २—(अ० قول) वादा। ३—सं० खंग = रुकावट। अड़चन।
(क) दीजै सबै जराइ जो आउ न तुम्हरे काज। पाठा०।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ओहि के दूसर आन नहिँ , मोहिँ बिनु एहि संसार ।
तजि आपन घर बार सब , आई कै अभिसार ॥ ५९५ ॥

अब लहुँ रही इहाँ औडेरी , आजु अवधि पूजी ओहि केरी ।
जो जेहि कारन तन मन जरई , सो पुनि ताकर चिंता करई ॥
सौति जानि जनि होहु दुखारी , वह तुम्हारि जस आज्ञाकारी ।
सुनि चित्रावलि हिए सँताई , नैन दुराइ कहिसि बिलखाई ॥
तुम साईँ अपने सुख राजा , तिरियहि नाउँ सौति सिर गाजा ।
जौ बिधि ससी करावत[1] देई(क) , सहै न तौ अब काह करेई ॥
निसि आयो तहँ कुँअर सुजाना , कौंला जहाँ कीन्ह अस्थना ।

कंत बचा परतीति पर , सोरह साजि सिँगार ।
बासक-सेजा[2] होइ रही , लाइ नैन दुइ बार[3] ॥ ५९६ ॥

पदुम कोस अलि लीन्ह बसेरा , हिए सोच भइ मालति केरा ।
नीरज लोयन रूप अतिसाए , दिन कर देखि नीर भरि आए ॥
बिहँसि कंत कामिनि कँठ लाई , बिरह दगधि उर लाइ बुझाई ।
मनमथ दाब जाँघ पुनि काँपी , रावन बार लंक गहि चाँपी ॥
दीन्हीँ चार नखच्छत छाती , फूट सिँधोर[4] सेज भइ राती ।
होइगा अंग भंग नव साता , अति परसेद[5] सिथल भइ गाता ॥
भयो प्रभात गयो उठि साईँ , कौंल पास कुईँ[6] चलि आईँ ।

हँसि हँसि पूछहिँ रैनि सुख , रहसि करहिँ परिहास ।
लाजन गोवै कौंल मुख , सखियन अधर बिगास ॥ ५९७ ॥

१—कलावत = कला कला घटना बढ़ना ।

(क) जो करता सिर गिरिवर देई । पाठा० ।

२—वासकसय्या । ३—वारि जल, अथवा बार = द्वार ४—सिंधोरा = सिंदूर रखने की डबिया । ५—प्रस्वेद = पसीना । ६—कुमुदनी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रावलि कहँ बिनु ससि साईं, गई रैनि सब गनत तराईं।
सौति संग साले जनु काँटा, अंग अंग लागै जनु चाँटा॥
सुलगी उरध आगि सन सेजा, औटि होइ जल रकत करेजा।
करम करम कै सो निसि गई, पिअ देखत तिअ खंडित भई॥
रही सोइ मिसि बदन छिपाई, नायक सकुचत आनि जगाई।
परी चौंकि लागै कर सीरा, दच्छिन नाहिँ नायका धीरा॥
कहिसि अहिउँ सुख सपने माहीं, कहा जगाइ लीन्ह गहि बाहीं(क)।

अहिउँ महा सुख सपन महँ, तुम कर लागे अंग।
गए नैन पट उघरि कै, भयो सकल सुख भंग॥ ५९८॥

जानहुँ तुम एक सुन्दरि संगा, मानत अहे केलि रति रंगा।
मोहिँ देखि नौ सात बनाए, तजि सो नारि आनि कँठ लाए॥
हिये लागि हिय मोर सिराना, पाएउँ अधर अमिय कै पाना।
और सकल सुख कहे न जाहीं, उठै आगि सँवरत मन माहीं॥
भई दोहागिन[1] बिकल सरीरा, जनु गिरि गयो हाथ ते हीरा।
वह रोवै परि सेज अकेली, हौं हँसि हँसि मानौं रस केली॥
मोरे छरै कुसुम जनु गाथा, वह लगि रहै हाथ सौं माथा।

सेज अकेली रैनि सब, सहेउ सकल उतपात।
चतुर नारि चित्रावली, रस काढ़ै रस बात॥ ५९९॥

---

(४३) बोहित खंड।

उहवाँ सागर बोहित साजा, इहवाँ दुंद गौन कर बाजा।
पखरे घोर पलाने हाथी, सँभरि चले पुनि अंत के साथी॥

(क) सपना देखि अखंडित जाही। सौति क डाह हिए दुःख नाही। अधिक पाठ।

१—दूसरी स्त्री = सवति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चली दोऊ धनि करत कलोला, अपने अपने चढ़ि चंडोला।
एक बाएँ एक दहिने जाई, एकहिँ एक न पास सुहाई॥
कुँअर साजि पुनि कटक सुहावा, रहसत साज समुँद लहुँ आवा।
बोहित साज देखि मन भावा, चित्रिनि कर चंडोल चढ़ावा॥
पुनि कौंलावति समदि भुआरा, चढ़ी जाइ तजि सब परिवारा।

अगिनित दायज दरब जेहि, देखि हिया हरखंत।
एक एक सबै चढ़ाइ कै, कुँअर चढ़ा पुनि अंत॥ ६००॥

बोहिते चढ़ेउ कुँअर लै भारा, समदि चले पहुँचावनहारा।
समदे लोग कुटुँब हय हाथी, सोई साथ अंत जो साथी॥
लोकाचार तीर लहुँ आए, नाव चढ़े सब भए पराए।
पीठ देत ही मिंत बिसारा, सब काहू घर बार सँभारा॥
कुँअर पेलि बोहित लै चला, भार देखि केवट कलमला[1]।
कहिसि कीन्ह तुम दूर पयाना, बोहित नाहिँ भार अनुमाना॥
बोहित चढ़े बहुत उतपाथा[2], ऊँचे भौंर ऊठहिँ पुनि साथा।

भौंर फेर जलजंतु डर, तेहि पर आँधी आउ (क)।
जिउ आवै तब पेट महँ, तीर लाग जब नाउ॥ ६०१॥

सोन रूप तुम कहा बटोरा, भार बहुत देखत पुनि थोरा।
गाढ़ परे पुनि होइहि भारी, अबहीँ कस नहिँ देहु अडारी[3]॥
कुँअर कहा सुनु बोहित-पती, दरब न डारि जाय एक रती।
बोहित साजा दरब हि लागी, का ले जाब संग यहि त्यागी॥
जो मानै जिय अस डर भारी, चढ़ै न कोऊ नाव नवारी[4]।
तुम खेवहु जनि मानहु संका, मेटि न जाइ सीस कर अंका॥
हँसि कै बोहित केवट पेला, चला जाइ जल माहँ अकेला।

१—विकल हुआ। २—उतपात। (क) सिरचढि आंधी बाउ।
३—फेँकना। ४—नाव पर चढ़ने वाला।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखत बारिधि अगम जल , प्रान न धीर धराइ ।
सोई चलै निचिंत होइ , जो कोउ आवै जाइ ॥ ६०२ ॥

रैनि एक बादर जुरि आए , दुहुँ दिसि होइ रिखि सात[1] छपाए ।
मारग भूला केवट डरा , बोहित जाइ भौंर बिच परा ॥
भँवै लाग तहँ बोहित भारी , कुँअर कहा कछु देहु अडारी ।
जाके अहा संग कछु भारा , पहिलहिँ तेँ सब रूप अडारा ॥
हरुआ होइ बोहित अगुसरा , दूजे भौंर जाइ कै परा ।
जहँ लहु अहा सोन कर नाऊँ , सो सब डारि दीन्ह तेहि ठाऊँ ॥
तीजे भौंर जहाँ नग हीरा , चौथे अन जाकर नर कीरा ॥

पँचयेँ भौंर भयो सेस नर , अंत जानि पुनि मीच ।
कुँअर जिअन जिअ सौंरि कै , परे कूदि जल बीच ॥ ६०३ ॥

छठएँ भौंर मरन निज हेरी , साहस बाँधि गिरीँ सब चेरी ।
सतएँ भौंर जो आइ तुलाना , कौलावति कर जिउ अकुलाना ॥
कहिसि कि हौं बलि देउँ सरीरा , मकु ये दीउ लगि लागैँ तीरा ।
पुनि मन कहिसी रहा पछितावा , चित्रिनि रूप न देखै पावा ॥
मरन बेरि मुख देखौं जाई , मकु अजहूँ तजि कोह छोहाई ।
चित्रिनि पहँ आई गुन-भरी , बदन बिलोकि पाउँ लै परी ॥
कहिसि कि हौं अपराधिनि तोरी , करहु छोह सुनि बिनती मोरी ।

रहै सदा तुअ सीस पर , सेँदुर भाग सोहाग ।
हौं समदति हौं चरन गहि , इहै मोर अनुराग ॥ ६०४ ॥

चित्रावलि सुनि हिए छोहाई , कौंलावति कह कंठ लगाई !
कहिसि कि तजहु सौति कर नाता , मोरि तोरि एकै जनु माता ॥
हौं जिउ देउँ रहउ तुम्ह दीऊ , मोरे मुए होउ सो होऊ ।
मरन लागि दुहुँ बाद पसारा , सुनि सुजान धायो बिकरारा ॥

१—अ० रकसात (قصات) आसमान; अथवा ऋषि सात = सप्तर्षिमंडल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहिसि कि मेहरिन्ह बुद्धि न रती , हौं अब मरौं होहु तुम्ह सती।
तीनिहुँ गही मरन की टेका , मरन न पाउ एक तें एका॥
देवता सरग जो देखत अहे , इन्ह कर प्रेम देखि थकि रहे।
ससि सूरज कुज दोउ गुरु , राहु बुद्ध सनि केतु।
कहहिँ कि अब लहुँ भूमि महँ , अस न कीन्ह कोउ हेतु ॥६०५॥

---

(४४) जगन्नाथ खंड ।

तब अगस्त सों कहिन हँकारी , मरै न पावहिँ लेहु उबारी ।(क)
कोपि अगस्त भुजा देखराई , समुँद लहरि तब गयउ बुताई[1] (ख)॥
तनिक अगस्त दिष्टि किय तेजा , थर थर काँपेउ समुँद करेजा।
एकहि लहरि सोइ अस जागा , बोहित निकसि तीर गै लागा।
कुसल देखि सब कीन्ह अनन्दा , आपु आपु कहँ बिधिना बन्दा॥
ऐ दयाल सुख दुख के दाता , तोहिँ बिनु दूसर नाहिँ बिधाता।
संकट देसि तौ कौन छुड़ावै , मुकुति देसि तौ कौन फँदावै॥
देसि भिखारी राज जो , लिये न काहू साथ।
राजहिँ करसि भिखारि तौ , कौन गहै तुअ हाथ ॥६०६॥
आदित उगवत बोलत कागा , बोहित आइ तीर पहँ लागा।
बाभन एक करत अस्नाना , देखि कुँअर चित रहस[2] समाना॥
पुनि पुकारि कै पूँछिसि राई , बोलहु कौन नगर यह भाई।
कहिसि कि कस आँखिन अँधियारा , जगन्नाथ जेहि जग उजियारा॥
पुहुमि सकल जेहि सेवा करई , पग परसत दुख पातक हरई।
कुँअर कहा तुम दोऊ पियारी , एहि झलफलें[3] रैनि अँधियारी॥
जौ लहुँ कोऊ मिलै न दूजा , तौ लहुँ जाइ लेहु कै पूजा।

(क) सँभारी-पाठा० । (ख) सुखाई, पाठा० १—बुताना, निवृत्त होना।
२—हर्ष, आनंद । ३—उषाकाल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहाँ राज सुख साज सब , कहँ वह सरग विवान ।
जिमि जिमि पुहुमी पग धरै , झंखै[1] कुँअर सुजान ॥६०७॥

आयो जगन्नाथ दरबारा , ससिहर लिये संग दुइ तारा ।
दोऊ नारि दोऊ दिसि लसी , इन्द्र साथ रंभा उरबसी ॥
परसि देव पुनि बिनती कीन्ही , संपति हम बारिधि कहँ दीन्ही ।
अब निरधन परदेसी जानी , मानि लेहु यह पाती पानी ॥
कै अस्नान बिप्र पुनि धावा , पुजा दरब समेटै आवा ।
जबहीं दिष्टि कुँअर पर परी , दोउ नैनन आए जल भरी ॥
कुँअर कहा तुम देव हमारे , कहा जानि चखु आँसू ढारे ।
कहिसि हमार नरेस सो , यही रूप अनुहारि ।
निकसि गयो एक जोगि सँग , बसत बसंत उजारि ॥ ६०८ ॥

तेहि दिन तें पुनि खोज न पावा , सपनेहुँ कोउ न सँदेस सुनावा ।
पिता नाउँ धरनीधर राजा , बैठेउ छाड़ि राज कर काजा ।
माता रोइ अंधि पुनि भई , देसहिं आन समय होइ गई ॥
हौं बाभन जो परोहित अहा , देखि न सकेउँ देस दुख सहा ।
सेयौं आइ देव जग-नाथा , हिँछा कै मकु मिलै सो नाथा ॥
तुअ मुख देखेउँ ओहि अनुहारा , गहबर आयो हिया दुखारा ।
अगुआ पुनि बाउर होइ गए , परजा छाड़ि देस सब गए ।
कुँअर हिया पुनि गहबरा[2] , लोयन नीर भराय ।
चीन्हि परोहित आपना , परा पाउँ पर आइ ॥ ६०९ ॥

कहिसि कि तुम हौ पाँड़े केसी , हौं सुजान सोई परदेसी ।
जोगी होइ गएउँ तेहि देसा , जहँ न आइ कोइ कहै सँदेसा ॥
जेहि लगि सहा जनम दुख भारी , सोइ यह चित्रावली पियारी ।
तब पुनि जहँ लगि दुख सुख अहा , बैसि कुँअर एक एक सब कहा ॥

१—रोवै, पछतावे । २—भरि आया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंडित रहसि आसिषा[1] दीन्हा, मनहीँ माहँ बड़ाई कीन्हा।
कहिसि कि जिअ जनि चिंता करहू, अब सुख सकल हिए दुख हरहू।
वरष दिवस भा सेवत देवा, दारिद गयो समुँद की सेवा॥
समुँद आउ एक दिन चलेा, जगरनाथ कहँ सेइ।
मोहिँ भिखारी जानि कै, गयेा पाँच नग देइ॥ ६१०॥
काहुहिँ मोहिँ देखाइ न जाई, छेरी मुँह कोहँडा न समाई।
अब जो तुमरे आवहिँ काजा, लेउ करहु सब आपन साजा॥
बाभन आनि पाँच नग दीन्हा, पारखि नग अमोल तब चीन्हा।
पूछेसि इहाँ साहु कोउ अहई, धन-पातर[2] जा कहँ जग कहई॥
कहिसि कि लच्छन साहु सयाना, महाधनी पुहुमीपति जाना।
कुँअर बेालि कै नग कर दीन्हा, लच्छन रतन अमोलि क चीन्हा॥
औ पुनि धरनीधर सुत जानी, आदर कीन्हेसि सेव बखानी।
कुँअर कहा हम पंथ सर, बिलँब एक दिन नाहिँ।
करहु साज अब सोइय, जेहि अपने घर जाहिँ॥ ६११॥
लच्छन कहा दरब बहु आही, जो चाहिय सेा लेहु बेसाही।
देस तुहार मोर है देखा, उहइँ आइ मैँ पारब लेखा॥
सेान रूप पाटम्बर आना, साजे मेहरिन्ह लागि बिवाना।
अभरन सभै जराऊ साजे, मुकुतमाल उर माहँ बिराजे॥
हाथि घोर पुनि जाए बेसाहे, सहस एक राखे खँड़वाहे[3]।
कटक साजि कै कुँअर पयाना[4], बाजा पुनि गहगहा निसाना॥
चमकत चले बिवान सोहाए, जानहुँ अमरपुरी तेँ आए।
राति दिवस जावैँ चले, आन न कछू सुहाय (क)।
रहसहिँ अपने देस को, पुहुमि न लावहिँ पाय॥ ६१२॥

१—आशिष = आशीर्वाद। २—धनपात्र = धनी।
३—खांडावाले, योद्धा। ४—चला।
(क) राति दिवस चलि जाहिँ पुनि, बिलम न कहूँ सुहाय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४५) अभिषेक खंड ।

चलतहिँ चलत देस नियरावा , बन बीहर सब लाग सुहावा ।
केसी पाँड़े कहिसि बुलाई , आगे राय जनावहु जाई ।
अज्ञा पाइ उठाइसि पाऊ , आयो जहँ धरनीधर राऊ ॥
कहिसि राउ अब करहु बधावा , कुँअर सुजान कुसल सोँ आवा ।
सुनतहि नाउँ राउ रहसाना , जनहुँ मृतक तन प्रान समाना ॥
राती नैन जोति सुनि पाई , घर घर बाजै लागु बधाई ।
फिरि फिरि पूछै कुसल सुजाना , केसी कहा जहाँ लहु जाना ॥

राजा सँग आगे चले , राउत राना झारि ।
उठे धाइ सब नाउँ सुनि , बाभन बनियाँ बारि ॥ ६१३ ॥

देखि सुजान पिता असवारा , उतरि पियादे होइ पगु धारा ।
धरनीधर पुनि उतरि के भेँटा , बिछुरन दुःख सबै धरि मेँटा ॥
सुत कर बदन हेरि भा छोहा , घरी घरी हिय उठै मरोहा[1] ।
हिय गहबरि मुख बात न आऊ , फिरि फिरि गहै पिता कर पाऊ ॥
फिरि फिरि राउ गहै अँकवारी , लोग कुटुँब नेउछावरि सारी ।
पुनि दोउ जना भये असवारा , पूँछत चले कुसल बेवहारा ॥
जौ लहुँ कुँअर मँदिल नहिँ आवा , हाथ हाथ सोँ छूट न पावा ।

कुँअर परे लइ मातु पगु , भरि लोचन दोउ नीर ।
मातु मया चर्राइ पुनि , उतरा अस्तन छीर ॥ ६१४ ॥

माता लै सुत कंठ लगावा , चूमि बदन कर आँखिन लावा ।
कहिसि कि धनि दिन धनि यह घरी , पूतहिँ भेटिउँ अंक मेँ भरी ॥
मानिक मोती भरि भरि थारा , नेवँछावरि साजैँ परिवारा ।
चित्रावलि लै मँदिल उतारी , औ पुनि सँग कौँलावति बारी ॥
सासु चरन लागीँ दोउ आई , रानी गहि दुहुँ अंक मेँ लाई ।

१—उद्गार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिरि फिरि आँचर डारै रानी, चन्द सूर अपने घर जानी॥
लोग कुटुँब परिवार सबाई, लै लै आए राज बधाई।
राजै छत्र उतारि कै, धरा कुँअर के सीस।
टीका काढ़ेउ राज कर, औ पुनि दीन्ह असीस॥ ६१५॥
कुँअरहि राज-पाट बैसाई, बैसे नृप बिधना लौ लाई॥
राउत राना आइ जोहारे, दे पहिरावरि सब प्रतिपारे[1]।
मन्दिर मन्दिर बजेउ बधावा, घर आँगन सब भयउ सुहावा॥
चित्रावलि कौंलावति बारी, बिलसहिँ आपनि आपनि पारी।
निसि बासर आनँद सुख होई, दुख की चरचा करै न कोई॥
देख तिया सब अचक रहाई, जनहुँ दुओ एक जननि की जाई।
धन माता धन पिता सबाईँ, मानुख कोखि अपछरा आईँ॥
पान फूल सुख भोग लै, चन्दन बास बसाहिँ।
सुख सर कुरलहि हंस ज्यों, निसि दिन केलि कराहिँ॥६१६॥
कथा मान कबि गायेउ नई, गुरु परसाद समापत भई।
जे रे सुना ते हिरदै राखी, औ अति चाउ आन सो भाखी॥
जो जेहि पंथ दुःख जिअ सहई, सो पुनि अंत सुक्ख निधि लहई।
मनहिँ कहेउ ते अति दुख देखा, अब जिउ मानहिँ सुख कर लेखा॥
कबितन्ह मरन कथा कै गाई, मोहिँ मरत हिय लागु छोहाई।
औ जे प्रेम अमी रस पीया, मरै न मारे जुग जुग जीया॥
एक जियन एक मरन सँसारा, मरि मरि जियइँ ताहि को मारा।
ज्ञान ध्यान मद्धिम सबै, जप तप संजम[2] नेम[3]।
मान सो उत्तम जगत जन, जो प्रतिपारै[4] प्रेम॥ ६१७॥

॥ इति ॥

१—प्रतिपाला। २—संयम, यम। ३—नियम। ४—निबाहै।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

NAGARI PRACHARINI GRANTHAMALA SERIES No. 21.

उसमान कवि कृत

चित्रावली ।

जगन्मोहन वर्म्मा सम्पादित

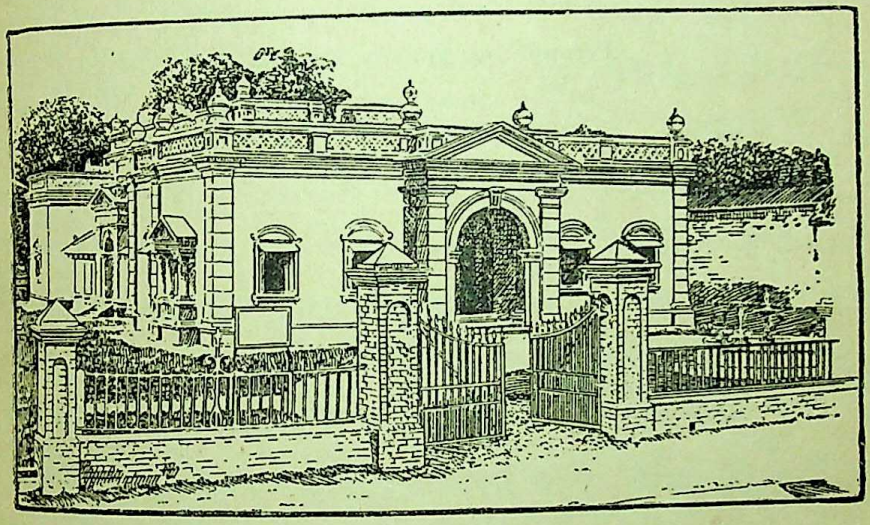

और

काशी नागरीप्रचारिणीसभा द्वारा प्रकाशित ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Printed by Apurva Krishna Bose
at the Indian Press, Allahabad.

All rights reserved

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका

—:o:—

काव्यशास्त्रविनोदेन कालो गच्छति धीमताम्।
व्यसनेन च मूर्खाणां निद्रया कलहेन वा॥

काव्य साहित्य का एक प्रधान अंग है। हिन्दी भाषा का साहित्य महाकवि चन्दबरदाई के पृथ्वीराज रासो* से प्रारंभ होता है। इसके पूर्व इसमें ग्रन्थ थे या नहीं इसके विषय में हम कोई निश्चित सम्मति नहीं दे सकते। रासो से पुराने भाषा के किसी ग्रन्थ का आजतक हमको पता नहीं चला है, आगे चलेगा या नहीं हम यह भी कहने में असमर्थ हैं। रासो के भिन्न भिन्न, और संस्कृत के छन्दों से विलक्षण, छन्दों को देखते इतना कहने का साहस होता है कि संभव है इससे पहिले भी भाषा के ग्रन्थ रहे हों। पर जब तक कोई और ग्रन्थ इससे पुराना न मिल जाय हमइसे भाषा का आदि ग्रन्थ और इसके रचयिता चन्दबरदाई को हिन्दी भाषा का आदिकवि कहने के लिये वाध्य हैं।

चन्दबरदाई के रासो में दोहे और चौपाई भी हैं। चौपाई को उसमें 'विअक्खरी' कहा है,। उनके उदाहरण ये हैं—

चरित लक्ख साहाब चर, गए पास सुरतान।
सजी सेन सामंतपति, आयो योजन थान॥

---

* सुनते हैं कि खुमानरासो ९ वीं शताब्दी का बना हुआ है, पर हमने इसे देखा नहीं है, अतः इसके विषय में हम कुछ नहीं कह सकते। सभा इसकी प्रतिलिपि कराने के लिये उद्योग कर रही है यदि मिला तो यह छाप कर सर्वसाधारण के सामने उपस्थित किया जायगा और तब इसकी भाषा आदि के विषय में कोई निश्चित सम्मति दी जा सकेगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनि चरित्त साहाब तास चर, बोलि मीर उमराव महाभर।
दिय निरघात घाव नीसानं, चल्यो सेन सज्जै सद्वानं॥
बाजित्र वीर अनेक सुबज्जे, धर पडिहाय सु गोमह गज्जे।
उग्ग्यो सूर चढ्यो सुरतानं, बज्जि निहाब नाल गिरि वानं॥

इससे अनुमान होता है कि दोहा चौपाई की सृष्टि महा कवि चन्द के समय में या उससे पहिले हो चुकी थी। दोहा और चौपाई को रासो के अन्य ग्रन्थों में भी यथास्थान इतस्ततः लिखने की प्रथा देखी जाती है, पर पन्द्रहवीं शताब्दी के पूर्व का एक भी ग्रन्थ ऐसा नहीं मिलता जो विशुद्ध दोहे और चौपाई में हो। इससे अनुमान होता है दोहा और चौपाई का छन्द पश्चिमीय कवियों और पच्छिमी हिन्दी के लिये उपयुक्त न था।

दोहा और चौपाई के ग्रन्थ प्रायः मुसल्मान कवियों के रचे हुए हैं और प्रायः पूर्बी हिन्दी वा अवधी भाषा में हैं। पूर्वी भाषा में कविता करने की प्रथा भी मुसल्मानों ही की चलाई हुई है। सब से पहिले मीर खुसरो ने तेरहवीं शताब्दी में कुछ दोहे और पहेलियां पूर्बी भाषा में रचीं। उनके दोहों के उदाहरण ये हैं।

गोरी सोवै सेज पर, मुख पर डाले केस।
चल खुसरो घर आपने, साँझ भई चहुँ देस॥
मोर परोसिन कूटै धान, ओखरि क सबद परा मोरे कान।
ऊ...मोहि ऐसन छरी, मोरे हाथन छाला परी॥
दही परोसन गैहौं भोर, अँगुरिन गडी दही कै कोर।
ए सखी मैं ऐसी मरी, दिन दस रही पीर से परी॥

शोक है कि खुसरो के ग्रन्थ सिवाय चुटकुले दोहे आदि और ख़ालिकबारी के नहीं मिलते, नहीं तो खुसरो पूर्वी भाषा के महाकवि कहे जाने योग्य थे।

दोहा और चौपाई के छन्द पूर्बी वा अवधी भाषा के लिये इतने उपयुक्त प्रतीत हुए कि पीछे कवियों ने इन्हीं छन्दों को

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कविता में प्रधानता दी। कथा के ग्रंथों के लिये दोहे और चौपाई इतने उपयुक्त हुए कि प्रायः कथाग्रन्थ पूर्वी भाषा और दोहे चौपाइयों में ही लिखे गए। इस प्रकार के ग्रन्थों को लिखने में मुसलमान कवि अग्रसर हुए और उन्होंने कितने ही ग्रन्थ लिखे। सब से पुराना ग्रन्थ जो इस कोटि का मिला है और छप कर पाठकों तक पहुँच चुका है वह पद्मावति है। इसे मलिक मुहम्मद जायसी ने सन् ९४७ हिजरी में अर्थात् १५४० इस्वी में लिखा है। इसी आधार पर कितने लोग जायसी को इस प्रकार के ग्रन्थों का आदिकवि मानते हैं। पर जायसी ने पद्मावति में एक जगह अपने पूर्व के रचे हुए कितने ही ग्रन्थों का उल्लेख किया है। आप लिखते हैं—

विक्रम धँसा पेम के बारा, सपनावति लग गयो पतारा।
सिरीभोज खँडरावति लागी, गगनपूर होइ गा वैरागी॥
राज-कुँअर कंचनपुर गैऊ, मिरगावति लगि जोगी भैऊ।
साधा कुँअर मनोहर जोगू, मधुमालिति कहँ कीन्ह वियोगू॥

इससे अनुमान होता है कि जायसी के पहिले भी कवि लोग सपनावति, खँडरावति, मिरगावति, मधुमालति आदि ग्रन्थ लिख चुके थे। इनमें मिरगावति का पता तो सभा को सन् १९०० में लग चुका है। इसका विवरण भी सभा की खोज की रिपोर्ट पृष्ठ १७, १८ में लिखा है। उसके देखने से मालूम होता है कि मिरगावति को कुतुबन ने सन् ९०९ हिजरी में अर्थात् सन् १५०२ इस्वी में लिखा था। शेष अन्य ग्रन्थों का पता आज तक सभा को नहीं लगा।

मधुमालति की एक अपूर्ण प्रति मुझे इस वर्ष काशी के गुदड़ी बाजार में मिली। यह ग्रन्थ १७ पन्ने से १३२ पन्ने तक है। पुस्तक उर्दू लिपि में अत्यंत शुद्ध और सुन्दर अक्षरों में लिखी हुई है। भाषा मधुर और पाँच पाँच चौपाई के बाद एक एक दोहे हैं। आदि और अंत के पृष्ठ न होने से ग्रन्थकर्ता के ठीक नाम (सिवाय मंझन के जो उसका

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उपनाम है) और उसके निर्माण काल आदि का पता नहीं चलता। ग्रंथ के आदि के ३९ पन्नों तक बायें पृष्ठ पर के किनारे पर दो दो पंक्ति में फारसी भाषा में कुछ याददाश्त लिखे हैं जिसके अंत में ११ रविउस्सानी सन् १०६९ हिजरी की मिती है। याददाश्त में उसी समय की घटना का वर्णन है। इससे अनुमान होता है कि यह प्रति उस समय के पहिले की लिखी हुई है। भाषा का उदाहरण हम कुछ नीचे दिये देते हैं—

मधुमालति जो सोवत जागी, बिरह अगिन नख सिख तन लागी।
ऊभ साँस हिय गह गह आवै, लज्जा तजि चख रुधिर बहावै॥
नैनन भरनधार जनु छूटी, सयन पूर जनु बीरबहूटी।
जबही दसन डफारत खोला, दामिनि चमकि चमकि जनु बोला॥
मुकुलित केस रैनि अँधियारी, सहज भाउ भादों झनकारी।
रुदन करति मधुमालति, बिरह बिथा तन साल।
लोगहि अचज सदा बरखा एक, अबहु दुइ बरखा-काल॥

जिस प्रकार मधुमालति में पांच पांच चौपाई के बाद एक एक दोहे हैं इसी प्रकार कुतुबन की मिरगावति में भी पाँच पाँच चौपाई के बाद एक एक दोहे हैं। इससे अनुमान होता है कि जायसी के पूर्व ग्रन्थों में पांच पांच चौपाई के बाद एक एक दोहे लिखने की प्रथा थी। सात सात चौपाई के बाद एक एक दोहे लिखने की प्रथा जायसी ने चलाई जिसका उनके पीछे के कवियों ने अनुसरण किया। केवल तुलसीदासजी ने अपनी रामायण में आठ आठ चौपाई के बाद दोहे या छन्द आदि लिखने का क्रम रक्खा है। इसका कारण यह मालूम होता है कि मुसलमान कवियों ने अज्ञानवश चौपाई को दो दो चरण का मानकर, अर्थात् आधी चौपाई को ही पूरी चौपाई मान, पाँच पाँच वा सात सात चौपाई के बाद, वास्तव में साढे तीन और ढाई चौपाई के बाद, एक एक दोहा लिखा था। तुलसीदासजी संस्कृत के विद्वान् थे, उन्होंने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखा कि यह प्रथा ठीक नहीं है इस लिये उन्होंने अपनी रामायण में आठ आठ चौपाई, अर्थात् वास्तव में चार चार चौपाई के बाद दोहा वा छन्द आदि लिखा। अतः मधुमालति, कुतबन की मिरगावति के नियम पर उसमें पाँच पाँच चौपाई बाद एक एक दोहा होने, पद्मावति में उसका नाम आने, और भाषा के विचार से, पद्मावति से पुरानी है। इसकी भाषा में शुद्ध संस्कृत शब्द की कमी और ठेठ हिन्दी के शब्दों की अधिकता से तथा उपनाम से भी यह अनुमान होता है कि यह किसी मुसलमान कवि की बनाई हुई है।

मिरगावति और मधुमालति के मिलने से यह आशा होती है कि कभी सपनावति और खंडरावति भी मिल जायँगी। अतः मलिक मुहम्मद जायसी को हिन्दी-भाषा वा अवधी भाष की कविता और दोहे चौपाई में आख्यायिका वा कथा ग्रन्थों का आदिकवि कहने वालों का मत ठीक नहीं मालूम पडता। पर इस में कुछ सन्देह नहीं कि इस प्रकार के कथाग्रन्थों के लिखने की प्रथा मुसलमान कवियों की ही चलाई हुई है और कथा ग्रन्थ रामायणादि दो एक को छोड़ प्राय सब के सब मुसलमान कवियों ही के लिखे हुए है।

अवधी-भाषा में कविता तेरहवीं शताब्दी में अमीर खुसरो ने प्रारंभ की और तब से मुसलमान कवि अठारहवीं शताब्दी तक इस भाषा में कविता करते रहे। उर्दू वा फारसी मिली हुई भाषा का उस समय नाम वो निशान न था। उस समय कविता दो भाषाओं में होती थी एक अवधी भाषा में दूसरे व्रज भाषा में। व्रजभाषा की कविता काल के विचार से अवधी भाषा की कविता से पीछे प्रारंभ हुई और जैसे दोहा और चौपाई के लिये अवधी भाषा उपयोगी हुई उसी प्रकार कवित्त आदि के लिये व्रजभाषा उपयुक्त प्रतीत हुई। इस भाषा में सूर और विहारी आदि की कविता अच्छी है।

यद्यपि व्रज भाषा के कवियों ने दोहा और चौपाइयों के रचने की चेष्टा की और उनमें अच्छे अच्छे भाव भरे पर व्रजभाषा के दोहे और चौपाइयों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

में वह लालित्य और माधुर्य्य न आसका जो अवधी दोहों और चौपाइयों में था। इसी लिये भाषा के रस के ज्ञाता गोसाँई तुलसीदास ने अपने रामायण, सतसई बरवे आदि को अवधी में और विनयपत्रिका, कवितावली आदि को व्रजभाषा में लिख कर यह प्रमाणित कर दिया कि किस भाषा के लिये कौन कौन भाषा और छन्द उपयुक्त हैं।

हम यहाँ कुछ थोड़ी से दोनों भाषाओं के दोहे और चौपाइयों को थालीपुलाक न्याय से नीचे उद्धृत करते हैं जिससे इस विचार का स्पष्ट पता चल जायगा कि व्रजभाषा के कवियों को दोहे और चौपाइयों के रचने में कहाँ तक सफलता हुई।

राजा सों अर्जुन सिर नाई, कहो सुनो विनती महराई।
बहु दिन भे हरि सुधि नहिँ पाई, आज्ञा होइ तो देखौं जाई॥
यह कहि पारथ हरिपुर गये, सुन्यो सकल यादव क्षय भये।
अर्जुन सुनत नयन जलधार, परयो धरणि पर खाइ पछार॥
तब दारुक संदेस सुनायो, कह्यो जो हरिजू गीता गायो।
सो सुरूप मम हिर्दय आन, रहिये सदा करत मम ध्यान॥
तब अर्जुन मन धीरज धारि, चल्यो संग लै जे नर नारि।
तहँ भिल्लन सों भई लराई, लूटे बिन सब स्याम सहाई॥
अर्जुन बहुत दुखित तब भये, इहँ अपसगुन होत दिन नए।
रोवै वृषभ तुरंग अरु नाग, श्याल दिवस निशि बोले काग॥
कंपै भुव वर्षा नहि होई, भए सोच चित यह नृप जोई।
इहि अंतर अर्जुन फिरि आयो, राजा के चरणन सिर नायो॥
राजा ताको कंठ लगाई, कह्यो कुशल है यादव-राई।
बल वसुदेव कुशल सब लोइ, अर्जुन यह सुनि दीने रोइ॥
राजा कहे कहा भयो तोहिं, तू क्यों कहि न सुनावै मोहिं।
काहू असत्कार तोहिं कियो, कै कहि दान न द्विज को दियो॥
कै शरणागत को नहि राख्यो, कै तुमसों काहू कटु भाख्यो।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कै हरिजू भयो अन्तर्ध्यान, मोसों कहि तू प्रगट बखान ॥
तब अर्जुन नैनन जल डारि, राजा सों किय वचन उचारि।
सूरज प्रभु वैकुंठ सिधारे, तेहि बिनु को मम काज सँवारे ॥

ये चौपाइयां सूरदासजी के प्रसिद्ध ग्रन्थ सूरसागर की हैं। इनकी भाषा और कविता के विषय में मुझे विशेष कहने की आवश्यकता नहीं। पर यदि आप इन चौपाइयों को जायसी आदि मुसलमान कवियों की कविता और तुलसीदास जी के रामायण की चौपाइयों से मिलाइये तो आपको मालूम होगा कि सूर जैसे महाकवि को व्रजभाषा में चौपाई रचने और उसमें पदलालित्य लाने में कहाँ तक सफलता हुई है। फिर जब सूर ऐसे महाकवि को व्रजभाषा की चौपाई रचने में अकृतकार्य्यता हुई तो अन्य कवियों की तो कथा ही क्या है।

व्रजभाषा में दोहा रचने में विहारी सिद्धहस्त थे और उनके दोहों में बड़े गूढ भाव पाये जाते हैं जिसके वषय में 'सतसय्या के दोहरे अरु नावक के तीर' की जनश्रुति प्रख्यात है। पर पदलालित्य में उनके दोहे भी पूर्वी भाषा के दोहों को कभी नहीं पहुँच सकते। हम यहाँ उदाहरण के लिये दो एक दोहे विहारी के उदाहरण रूप पूर्वी भाषा के दोहों के साथ साथ उद्धृत करते हैं और इसका निर्णय पाठकों पर छोड़ते हैं।

सहज सचिक्कन स्याम रुचि सुचि सुगन्ध सुकुमार।
गनत न मन पथ अपथ लखि विथुरे सथुरे बार ॥
छुटे छुटावै जगत तें सटकारे सुकुमार।
मन बाँधे बेनी बँधे नील छबीले बार ॥
कुटिल अलक छुटि परत मुख बढ़िगौ इतौ उदौत।
बंक बँकारी देत ज्यों दाम रुपैया होत ॥

(विहारी)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिरजी तब बिधि स्यामता , जब जग सिरजै लीन्ह ।
ते कच सिरजे सार लै , सेष बाँटि कै दीन्ह ॥

(मान)

छिटकी चिहुर सुहागिन जगत भयो अँधकाल ।
जनु बिरही जन जिय बध कारन मन्मथ रोपा जाल ।
चिहुर बास मधुमालति जब से बही बतास ।
तेहि दिन सो निसि बासर संतत भँवति उदास ॥
तर मयंक ऊपर निसि पाती बनी आह कस रीति ।
जानहु ससि औ निसि स्यौं, भई सुरति विपरीति ॥

(मंझन)

नेकु हँसौंही बान तजि लख्यो परत मुख नीठि ।
चौका चमकनि चौधमें, परति चौंध सी दीठि ॥

(विहारी)

एक दिन बिहँसी रहसि कै जोति गई जग छाइ ।
अबहूँ सौंरत वह चमक चौंधि चौंधि जग जाइ ॥

(मान)

नासा मोरि नचाय दृग करी ककी की सौंह ।
काटे लों कसकति हिये गड़ी कटीली भौंह ॥

(विहारी)

जीति तिलोक निवासी भौहैं रहा न जगत जुझार ।
देखत जाहि हिये सर निभरी तेहि को जीते पार ॥

(मंझन)

अहिपुर नरपुर जीति कै सुरपुर जीतेउ जाइ ।
अब दहुँ कछू न जानिये का कहँ धरे चढ़ाइ ॥

(मान)

उर्दू भाषा वा फ़ारसी मिली हुई भाषा में कविता की नींव सन् १७५९ ईस्वी में शाहआलम बादशाह ने डाली और इसी ने अपना उपनाम आफ़ताब रख कर चार दीवान लिखे । यद्यपि कोई कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

'वली' को जो सत्रहवीं शताब्दी में हुए हैं, उर्दू कविता का आदि आचार्य्य मानते हैं पर यह उनका भ्रम है। वली की कविता में फ़ारसी शब्द हैं तो जरूर पर उसमें फारसी और अरबी शब्दों की उतना भरमार और हिन्दी का बहिष्कार नहीं है कि वह हिन्दी से पृथक भाषा की कही जा सके। उदाहरण के लिये वली के इस पद को देखिये।

सजन टुक मुख सेतों खोलो नकाब आहिस्ता आहिस्ता।
कि ज्यों गुल से निकलता है गुलाब आहिस्ता आहिस्ता॥

इस पद भर में सिवाय 'नकाब' और 'गुल' के तीसरा कोई शब्द ऐसा नहीं जिसके समझने में किसी अनपढ़ हिन्दुस्तानी को कुछ कठिनता हो, जिसमें 'गुल' को तो बहुतेरे लोग समझते होंगे। अस्तु

इन मुसलमान कवियों ने अपनी कविता विशुद्ध हिन्दी भाषा में की है जिसे साधारण अनपढ़ हिन्दुस्तानी भी समझ सकता है। सीधे सादे रोजमर्रा की बोल चाल में कविता करना और उसमें भाव लाना साधारण काम नहीं है। पर पद्मावति, मिरगावति, मधुमालति, माधवानल-कामकंदला, इन्द्रावति आदि ग्रन्थों में से किसी को हाथ में ले लीजिये तो आप को मालूम होगा कि इन मुसलमान कवियों ने कैसी योग्यता से अपनी कविता को निबाहा है।

इन्हीं मुसलमान कवियों के ग्रन्थों में एक चित्रावली भी है जिस के सम्पादन का भार सभा ने मुझे सौंपा था। यह ग्रन्थ उसमान कवि का रचा हुआ है जिसने अपना उपनाम 'मान' लिखा है। उसमान गाजीपुर का रहनेवाला था। उसके पाँच भाई थे और उसके बाप का नाम शेख हुसेन था। वह जहाँगीर के समय में था और उसने यह ग्रन्थ सन् १०२२ हिजरी अर्थात् सन् १६१३ ईस्वी में रचा। ग्रन्थ का पता सभा को सन् १९०४ में मिली। सभा की ओर से उस समय बाबू अमीरसिंह जी खोज का काम करते थे। उन्हीं को पहिले पहिल इसकी प्रति महाराज साहेब बनारस के पुस्तकालय में मिली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रति कैथी लिपि में सम्वत् १८०२ की लिखी हुई है जिसके अंत में निम्न लिखित वाक्य है—

इति श्री चित्रावली कथा संपुरन, जो देखा सो लिखा पंडित जन सो विनती हमारी, भुला आछर लीजियो संभारी। पोथी हजारी अजबसिंह जी ने लिखाया साकिन चिनारगढ़ दूध बहेलिए दसख़त फ़कीर चंद के हाथ का वेतन कड़ेमानिकपुर कोम श्रीवास्तव कायथ दूसरे ॥ १ ॥

संवत् १८०२ मिती सावनसुदी १५ रोज सोमवार को पोथी तैयार हुआ पोथी चित्रावली लिखा या हजारी अजबसिंह जी ने खोम खास बहेलिया—वेतन चिनारगढ़ पातसा महंमदसाह सन् २८ अजीमाबाद में पोथी लिखाया, अजीमाबाद के सूबा नवाब जैनदी अहमदखांजी के अमल में लिखा गया दसखत फ़कीरचंद कायथ के हाथ का वेतन कड़ेमानिकपुर के बासिंदे ॥१॥ पोथी में पैसे लगे रुपैया एक सौ एक १०१) सिक्का मोसौवरुआ लिखाई आ कागज़ रोसनाई आ जिल्दसाज ॥ १ ॥

इस ग्रन्थ की कथा का सारांश भी उस समय सभा की आज्ञा से उक्त बाबू साहेब ने लिखा था जो सन् १९०४ की पुस्तकों की खोज की रिपोट के पृष्ठ ३०–३२ में छपा है। आप लिखते हैं—

"इस में नैपाल के राजा धरनीधर के पुत्र सुजान और रूपनगर के राजा चित्रसेन की कन्या चित्रावली के असीम प्रेम की कहानी है जो इस प्रकार है–राजा धरनीधर पँवार कुल का क्षत्री था। इसके सन्तान न था, इस ग्लानि से उसने राज छोड कर तप करने का मन किया। फिर मंत्रियों के उपदेश से घरही शिवाराधन कर क्षेत्र (सत्र) चलाना आरंभ किया। तब शिव पार्वती ने परीक्षार्थ आकर इससे इसका सिर माँगा। जब यह दृढ होकर सिर देने को प्रस्तुत हुआ तब उन्होंने प्रसन्न हो वर दिया कि तुझे एक अपूर्व पुत्र होगा जो कुछ दिन जोग साधेगा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और किसी स्त्री से प्रेम भी करेगा। इस आशीर्वाद से पुत्र हुआ। ज्योतिषियों ने कुण्डली बनाई और सुजान उसका नाम रक्खा। यह अति प्रतापी और बुद्धि विद्या निधान हुआ। एक दिन जब यह शिकार खेलने गया तो वहाँ मार्ग भूल गया और एक पर्वत की मढ़ी में जा सोया। यह स्थान किसी देव का था। उसने इसे देख कृपा कर इसकी रक्षा करनी स्वीकार की। इसी अवसर में उसका एक मित्र आया और उसने रूपनगर में चित्रावली की वर्षगाँठ का उत्सव कह उससे भी देखने के लिये कहा। उसने उससे उस कुमार की रक्षा करने की प्रतिज्ञा कही। तब वह बोला कि इसे भी उठा ले चलें फिर आवेंगे तब ले आवेंगे। यह सलाह कर ये उसे ले उड़े और और चित्रावली की चित्रसारी में जाकर सुला दिया और आप दोनों उत्सव देखने चले गए। जब रात में कुमार की आँख खुली तो वह आश्चर्ययुक्त हो चित्रसारी देखने लगा। वहाँ उस कुमारी का भी एक चित्र था, उसे देख वह आसक्त हो गया और फिर रंगादि रक्खा पाकर अपना भी एक चित्र बना उसी के पास रख सो गया। सवेरे देव उसे उठा कर वहीं ले आए। जब वह जागा तो उसने स्वप्न का भ्रम किया परन्तु अपने वस्त्रों में रंग लगा पा कर सच मान उसके प्रेम में विह्वल हो चिन्तायुक्त बैठ रहा। सेवक लोग ढूँढते ढूँढते वहाँ आ पहुँचे और उसे राज में ले गए परंतु वह प्रेम में बेसुध रहा। अंत में इसके एक सहपाठी सुबुद्धि नाम ब्राह्मण ने युक्ति से इसका हाल पूछा और ये दोनों परामर्श कर फिर उसी मढी पर जा कर रहे। वहाँ उन्होंने अन्नसत्र जारी कर दिया। उधर इसका चित्र देख कुमारी भी आसक्त हो गई और उसने अपने नपुंसक भृत्यों को जोगी के वेष में उसे ढूँढने को भेजा। उन में से एक यहाँ भी आन पहुँचा। इस बीच में एक कुटीचर ने कुमारी की मां हीरा से चुगली करी जिससे उसने उस चित्र को धो डाला। इसी अपराध पर उसका सिर मुँडा कर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुमारी ने उसे निकाल दिया था। अब यह जोगी जब कुँअर से मिला और परस्पर बातों से दोनों को पता लगा तो कुमार उसके साथ रूपनगर पहुँचा और योगी के वेष में हो चित्रावली को और इसको शिव मंदिर में परस्पर दर्शनलाभ हुआ। फिर इसी अवसर में उसी कुटीचर ने उसे अपना शत्रु मान कर अन्धा कर दिया और बहका कर एक पर्वत की गुफा में डाल दिया। वहां एक अजगर उसे लील गया परंतु विरहाग्नि की ज्वाला से घबरा कर उसने उसे उगल दिया। यह घटना एक बनमानुस देखता था उसने उसे एक अंजन दिया जिससे वह फिर देखने लगा। फिर बन में घूमते हुए एक हाथी ने उसे पकड़ा और उस हाथी को एक सिंह (मूल में 'पक्षिराज') ले उड़ा। हाथी ने अपने प्राणसंकट से घबरा कर इसे छोड़ दिया। वह एक समुद्र के तट पर जा गिरा। फिर वह घूमता हुआ सागरगढ़ नगर में जा पहुँचा। वहाँ के राजा सागर की बेटी कौलावती की फुलवारी में विश्राम कर रहा था कि उस अवसर पर सखियों के साथ वह आई और इस पर मोहित हो गई। अंत जोगी जेवाने के बहाने से इसे भी बुलवा के भोजन की वस्तु में अपना हार छिपा इसके पात्र में डाल चोरी में फँसा इसे कैद कर लिया। फिर एक राजा (सोहिल) कौलावती का रूप सुन इसे जीत कर लेजाने को चढ़ आया पर सुजान ने उसे हटा दिया (मारा) और कौलावती से यावत् चित्रावली मिलन की प्रतिज्ञा करा विवाह किया। इधर चित्रावली ने फिर उसी जोगी को भेजा जो पूर्व गया था। कुँवर कौलावती को ले गिरनार यात्रा को गया था वहाँ योगी ने उसे पाया और उसका समाचार ले चित्रावली के पास गया। चित्रावली का पत्र ले वह सागरगढ़ आया और योगी बन धुईँ लगाई। कुँवर योगी की सिद्धि को सुन उसके पास आया और उसने उसे पत्र दिया। फिर उसे रूपनगर ले गया और सीमा पर बैठा कुमारी से कहने गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसी अवसर में राजा को एक कथक ने जो सागरगढ़ का निवासी था कुछ लाभ की आशा से सोहिलराजा के युद्ध का गान सुनाया जिसे सुन राजा को कन्या के विवाह की चिन्ता हुई। राजा ने चार चितेरे राजकुमारों के चित्र लाने को भेजे। रानी चित्रावली के पास गई। उसे उदास देख हाल पूछा पर उसने बहाना किया परन्तु किसी चेरी ने द्वेष से रानी से दूत भेजने का समाचार कह दिया। उसी समय राजकुमार को बैठा वह दूत ख़बर देने को आ रहा था। रानी ने उसे मार्ग ही में पकड़वा कर कैद करा दिया। इस विलम्ब होने के कारण चित्रावली का नाम ले कुमार पागल की नाईं दौड़ने लगा। राजा तक हाल पहुँचा। राजा ने अपयश के भय से गुप्त भाव से उसे मारने को हाथी छोड़वा दिया। कुँवर ने उसे भी पराक्रम कर मार डाला। तब राजा इसे मारने को चढ़ा। उसी अवसर पर एक चितेरा सागरगढ़ से कुँवर का चित्र लेकर आ पहुँचा और सोहिल के मारने का समाचार कह कर चित्र दिखाया, तो वह इसी कुमार का ठहरा। इस पर राजा कुमार को ले गया और उससे चित्रावली को ब्याह दिया। कुछ दिन पीछे कौलावती ने विरह से संतप्त हो हंस मिश्र को दूत बना कर भेजा। उन्होंने भेंट कर एक भ्रमर पर आक्षेप कर कुमार को चेताया। कुमार ने अपने पिता तथा कौलावती का स्मरण कर विदा माँगी और वहाँ से विदा हो सागरगढ़ आ कौलावती की भी विदा करा लिया। समुद्र पार होने में तूफान आया, किसी प्रकार वे सब प्राण बचा जगन्नाथ पुरी में पहुँचे। वहां पुरोहित (केशीपांडे) से भेंट हुई। वहाँ से अपने देश में आये। पिता माता से मिले। पिता ने आनंदबधाई की। माता अन्धी हो गई थी पुत्र के आगमन से हर्षित हो पुनः उसके नेत्र खुल गये। राजा ने पुत्र को गद्दी पर बैठा आप भजन करना आरंभ कर दिया। कुमार अपनी रानियों सहित आनंदराज्य भोग करना लगा।"

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसकी भाषा की सुन्दरता और कथा की मनोहरता को देख सभा ने इस पुस्तक की प्रतिलिपि कराई। इस ग्रन्थ की आधी नक़ल बाबू अमीरसिंह जी ने की थी पर शेष रमाकान्त ओझा ने की। प्रति लिपि ९ जनवरी सन् १९०९ को समाप्त हुई। नकल के अन्त में निम्न-लिखित वाक्य, काशी की प्रति की समाप्ति के अन्तिम वाक्य, "पोथी में रुपैय्या लगे रुपय्या एक सौ एक १०१) सिका मोसौअर और लिखाई और कागद रोसनई और जिल्द साज।" के नीचे लिखा है—

"उसी पुस्तक की नक़ल श्री महामहोपाध्याय पं० सुधाकर द्विवेदी जी की आज्ञा से रमाकान्त ओझा ने ता० ९ जनौरी सन् १९०९ ई० को लिख कर तैयार किया।" "द० रमाकान्त ओझा-मौजे ओझौली"।

इस प्रतिलिपि वा नक़ल को महामहोपाध्याय सुधाकर द्विवेदी ने किसी उर्दू पुस्तक से मिलाया था अथवा किसी अपने शिष्य द्वारा मोकाबिला कराया था। ग्रन्थ में उर्दू का पाठ ऊपर लिखा था। पर इस ग्रन्थ में पाठान्तर या शोधने के कोई अक्षर द्विवेदी जी के हाथ के नहीं थे, जिससे अनुमान होता है कि उन्होंने इसे उर्दू प्रति से अपने किसी शिष्य आदि द्वारा मिलान करा कर उर्दू पाठ ऊपर लिखाया था, और उनका इसे स्वयं शोधने का विचार था। मिलान करनेवाला उर्दू को ठीक नहीं पढ़ सकता था इसलिये पाठ में कहीं कहीं कठिन भूल रह गई थी। जिसका उदाहरण यह है—पृष्ठ-१

'दूसर जगत नामु जिन पावा, जैसे सहरी[१] उदधि कहवा'

इसमें 'लहरी' की जगह 'सहरी' पाठ रह गया है। हिन्दी प्रति के नक़ल करने वाले ने 'लहरी' को 'सहरी' लिखा था और उर्दू प्रति से मुकाबिला करने वाले ने भी इसे शुद्ध माना था। इसी पर विश्वास कर मैंने 'सहरी' पर '१–शफरी। एक प्रकार की मछली' नोट लिखा। इस अशुद्धि का पता मुझे एक उर्दू प्रति के मिल जाने से लगा। यह प्रति मुझे ६४ पृष्ठ तक छप जाने पर अलईपुर के रमजान मियां उपनाम पोथी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मियाँ से मिली। इस में देखा तो लहरी पाठ था। अनुमान होता है कि हिन्दी प्रति से नक़ल करने वाले ने कैथी 'ल' को 'स' समझ कर 'लहरी' को 'सहरी' लिख दिया था और उर्दू प्रति से मुकाबिला करने वाले ने उर्दू लिपि में लहरी और सहरी की समानता से उसे सहरी समझा। वास्तव में यह भ्रम उनको उर्दू लिपि की दुरूहता के कारण हुआ। इस लिपि में एक शब्द का दूसरा शब्द पढ़ा जाना कोई असाधारण बात नहीं है। कचहरियों में इसके उदाहरण नित्य प्रति देखने में आते है।

अभी थोड़े दिन की बात है सन् १९१० के अन्त में ६ महीने के लिये मैं इलाहाबाद की कायस्थ पाठशाला में हेड क्लर्क था। पाठशाला का कुल दफ़्तर उर्दू में है। वहाँ केवल हाज़िरी का रजिष्टर अंग्रेजी में है और कालिज और स्कूल की चिट्ठी पत्री जो अन्य स्कूलों और अफ़सरों से होती है, अंग्रेजी में होती है। उन दिनों मनेजर के शिरिस्ते से एक रजिष्टरी चिट्ठी लायलपुर को जो पंजाब में है भेजी गई। पता लिखा था उर्दू में। चिट्ठी लायलपुर की जगह मिर्ज़ापुर चली गई और वहाँ पर किसी आदमी को जिस का भी वही नाम था दे भी दी गई और रसीद चौथे दिन कायस्थ पाठशाला की शरिस्ते में पहुँच गई। लोगों को चौथे दिन रजिष्टरी की रसीद पा अत्यन्त अचंभा और कुतूहल हुआ पर जब रसीद देखी गई तो उसपर लायलपुर मुहर की जगह मिर्ज़ापुर की मुहर थी। तब लोगों को उर्दू लिपि की दुरूहता का स्पष्ट प्रमाण मिला। ख़ैरियत इतनी ही थी कि उस लिफ़ाफ़े में नोट आदि नहीं थे।

ग्रन्थकर्ता निज़ामुद्दीन चिश्ती की शिष्यपरम्परा में था और सूफ़ी था। मुसलमानों में सूफी मत हिन्दुओं के वेदांत मत का एक रूपान्तर है इसीलिये कट्टर मुसलमान सूफियों के द्वेषी होते हैं और कितने सूफियों को मुसल्मान बादशाहों ने मरवा डाला है। कवि ने इस ग्रन्थ में ठौर ठौर पर वेदान्त और अद्वैतवाद की झलक दिखलाने में कमी नहीं की है। कथा ऐतिहासिक घटना से नहीं ली गई जान पड़ती

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बल्कि कल्पनाप्रसूत है। नैपाल के राजसिंहासन पर एक भी पँवार राजा नहीं हुआ है। कथा विचारने से आध्यात्मिक प्रतीत होती है और इसीलिये ग्रन्थ में सुजान को शिव का अवतार लिखा है। महादेव खंड में जब शिव पार्वती धरनीधर की परीक्षा करने गये और उससे उसका सिर माँगा तो राजा सिर देने पर उद्यत हो गया। इस पर महादेवजी प्रसन्न हो उसे बर देने लगे वहाँ कवि ने उनके मुँह से यह कहलाया है—

देखु देतहौं आपन अंसा, अब तोरे ह्वैहौं निजु वंसा।

यही नहीं कौलावती और चित्रावली अविद्या और विद्या की ही प्रतिरूप मालूम पड़ती हैं। सुजान शब्द का अर्थ बुद्धिमान् है इसीलिये उसने कौलावती का विवाह होने पर भी उससे तब तक समागम नहीं किया जब तक चित्रावली वा विद्या उसे प्राप्त नहीं हुई। इसी लिये उपनिषदों में कहा गया है—

अंधन्तमः प्रविशन्ति येऽविद्यामुपासते।
ततो भूय इव तमो य उ विद्याꣳ रताः॥
विद्याञ्चाविद्याञ्च यस्तद्वेदोभयꣳसह।
अविद्यया मृत्युं तीर्त्वा विद्ययामृतमश्नुते॥

कविने ग्रन्थ में धरनीधर के प्रतिज्ञा पालन वा दान, सुजान के अटल प्रेम, परेवा की स्वामिभक्ति और कौलावती के आत्मोत्सर्ग, का अच्छा चित्र खींचा है। इसके अतिरिक्त चित्रावली की वाटिका का वर्णन, उसका नख सिख, उसका विरह, षट्ऋतु और बारहमासा आदि देखने योग्य है। कुँवर ढूँढ़न खंड में कवि ने कितने ही देशों और प्रदेशों का वर्णन किया है। यद्यपि इनमें कई एक की दिशा और स्थिति का ज्ञान भ्रमपूर्ण है तो भी जिस समय यह ग्रन्थ लिख गया उस समय एक साधारण नगर के रहनेवाले के लिये भूगोल का इतना ज्ञान होना कुछ कम नहीं है। सब से अचम्भे की बात तो यह है कि कवि ने उसमें अँग्रेज़ों का नाम भी लिखा है और उनके देश और उनके आचार व्यवहार का वर्णन उसने दो चौपाइयों में किया है। चौपाइयाँ ये हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बलंदीप देखा अंग्रेजा, तहाँ जाइ नहिँ कठिन करेजा।
ऊँच नीच धन संपति हेरा, मद बराह भोजन जेहि केरा ॥

उस समय अंगरेज़ों को आये इस देश में बहुत थोड़े दिन हुए थे। ईस्ट इंडिया कंपनी सन् १६०० में लंडन में बनी थी और १६१२ में सूरत में कंपनी ने अपना गुदाम बनाया था। उसके एक वर्ष बाद १६१३ का रचा हुआ यह ग्रन्थ है। उस समय में कवि का एक साधारण गाजीपुर ऐसे छोटे नगर में रह कर अंग्रज़ों के विषय में इतनी जानकारी रखना कोई साधारण बात नहीं है। हम मान सकते हैं कि वह मक्का हज्ज करने गया होगा पर तो भी उसका इतनी जानकारी रखना और ग्रन्थ में लिख जाना उसकी बहुज्ञता का स्पष्ट प्रमाण है।

सब से उत्तम अंश चित्रावली में चित्रावली की माता का वह उपदेश है जो उसने उसे बिदा होते समय दिया था। यह उपदेश स्त्रियों के बड़े काम का है और बालिकाओं के लिये अत्यंत उपयोगी है।

इस ग्रन्थ में सबसे अधिक विलक्षण बात यह देखी जाती है कि कवि अपनी कविता में लोकोक्तियों का संग्रह यथास्थान करता गया है। हम उसके दो चार उदाहरण यहाँ दिये देते हैं।

मान करहु जो करि सकहु, कथनी अकथ अपार।
कथे न कर कछु आवइ, करनी करतब सार ॥
कौन भरोसा देह का, छाड़हु जतन उपाइ।
कागद की जस पूतरी, पानि परे घुलि जाइ ॥
तब लहु सहिये बिरह दुख, जब लगि आव सो वार।
दुःख गये तब सुक्ख है, जानै सब संसार ॥
कहाँ सो गोड़िया तुच्छ तन, कहां किसन असराउ।
वैरी जो वस कै मिलै, लेइ सो आपन दाउ ॥
सब कहँ अमिरित पाँच है, बंगाली कहँ सात।
केला काँजी पान रस, साग माँछरी भात ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षत्रिय सुनि जो ना करै, तिय अरु गाइ गोहारि।
पुहुमी कुल गारी चढ़ै, सरग होइ मुख कारि॥
खरग सँभारै सूरमा, वैरी मुख समुहात।
तौ लहु पौरुख ना तजै, जौलहुँ आव न रात॥
गहि जो भिखारी मारइ, दुइ घट यहि जग होइ।
एक हत्या काँधे चढ़ै, पुनि भल कहै न कोइ॥
जैसे पनही पाउँ की, तैसे तीय सुभाउ।
पुरुष पंथ चलु आपने, पनहीं तजै न पाउ॥
विनसत कौल न बार भइ, गयो अथै जग भान।
मारेसि ईंट देखाइ गुड़, सोई भा उपखान॥
मैं तोहि डारेहुँ लै तहाँ, जहाँ न डोलै पाँखि।
जो जस करै सो पाव तस, कुँअर देखु ले आँखि॥

मैं न कवि हूँ और न मुझे कवित्त और छन्दों का कुछ ज्ञान ही है। मैंने हिन्दीभाषा के साहित्यग्रन्थों को भी अच्छी तरह नहीं देखा है। मेरी आयु का विशेष भाग भारत के प्राचीन वैदिक ग्रन्थों और शुष्क दर्शनों के अवलोकन और पर्य्यालोचन में बीता है। मुझे संस्कृत भाषा के काव्य आदि के देखने का भी कभी उतना अवकाश नहीं मिला है और न मैं उन विषयों को जानता ही हूँ। ऐसी अवस्था में मुझ से ऐसे ग्रंथ के संपादन की क्या आशा की जा सकती है?। मुझ से यह काम लेना सूखे अमचुर को बलात् मुरब्बा बनाना है। फिर भी सभा की आज्ञा को शिरोधार्य्य कर इस ग्रन्थ को जहाँ तक हो सका है मैंने शोधा है और कठिन देहाती वा ग्रामीण शब्दों का अर्थ भी टिप्पणी में दे दिया है। संपादन के काम से अनभिज्ञ होते हुए भी मैंने यथाशक्य इसको संपादन करने में अपनी ओर से कसर नहीं की है। प्रूफ़ देखने और तदनुसार शुद्ध करने में असावधानी होने तथा ६४ पृष्ठ तक उर्दू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

की प्रति न मिलने के पूर्व छप जाने से अशुद्धियाँ रह गई हैं जिनके लिये शुद्धिपत्र लगा दिया है।

ग्रन्थ का विभाग ठीक नहीं था मैंने इसे विषय के अनुसार खंडों में विभक्त कर दिया और पाठकों के सुभीते के लिये उसकी सूची भी लगा दी है। 'काम शास्त्र खंड' 'हंस खंड' का अनुखंड है, स्वतन्त्र खंड नहीं, भ्रम से इस पर (४१) का अंक लिख गया है। पाठकों को इसे सुधार लेना चाहिये। ४१वां खंड 'चित्रावली गवन खंड' है।

इस ग्रन्थ के संपादन और संशोधन में मुझे रमजान उपनाम पोथी मियां की उर्दू प्रति से बड़ी सहायता मिली जिसके लिये मैं उन का कृतज्ञ हूँ। यदि मुझे यह प्रति न मिलती तो मैं इस ग्रन्थ को ऐसा संपादन न कर सकता और कितने ही अंश संदिग्ध रह जाते।

फिर भी संभव है कि दृष्टिदोष वा भ्रम से कुछ और अशुद्धियाँ रह गई हों। आशा है कि पाठक उनको सुधार लेंगे क्योंकि मनुष्य सर्वथा निर्भ्रान्त नहीं हो सकता।

जगन्मोहन वर्म्मा।

स्थान, काशी नागरीप्रचारणी सभा
२४ दिसम्बर सन् १९१२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खंड-सूची

		पृष्ठ
१	स्तुतिखंड	१
	मंगलाचरण	१
	महम्मद की प्रशंसा	५
	महम्मद के चार मित्रों की प्रशंसा	६
	राजा की प्रशंसा	६
	शाह निज़ाम की प्रशंसा	९
	बाबा हाजी की प्रशंसा	१०
	ग़ाज़ीपुरवर्णन	११
	अपने पाँच भाइयों का वर्णन	१२
	प्रस्तावना	१४
२	कथा-खंड	१५
३	महादेव-खंड़	१७
४	जन्म खंड	२०
५	देव खंड	२७
६	चित्रदर्शन खंड	३३
७	मढी खंड	४१
८	धर्मसाल खंड	४३
९	चित्रावली जागरण खंड	४५
१०	सरोवर खंड	४७
११	चित्रावलोकन खंड	४८
१२	चित्र-धोवन खंड	५२

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

	पृष्ठ
१३ परेवा खंड	५६
१४ उद्योग खंड	८३
१५ प्रस्थान खंड	८५
१६ सुबुद्धि खंड	८७
१७ यात्रा खंड	८८
१८ विरह खंड	९२
१९ परेवा-आगमन खंड	९७
२० दरसन खंड	१०४
२१ कुटीचर खंड	११०
२२ अजगर खंड	११४
२३ बनचर खंड	११७
२४ हस्ती खंड	११९
२५ कौलावती खंड	१२१
२६ जोगी बंधन खंड...	१३०
२७ साहिल खंड	१३४
२८ कौलावती विवाह खंड	१५१
२९ गिरिनार यात्रा खंड	१५७
३० जोगी ढूँढन खंड	१५९
३१ चित्रावली-विरह खंड	१६३
३२ पाती खंड	१६५
३३ सिद्ध-समागम खंड	१७७
३४ कथक खंड	१८१
३५ परेवा-बंधन खंड	१८६
३६ दलगंजन खंड	१८८
३७ सुजान-बंधन खंड	१९१
३८ चित्रावली-विवाह खंड	१९६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

		पृष्ठ
३९	कुटीचर-दहन खंड	२०५
४०	हंस खंड	२०८
४१	चित्रावली-गवन खंड	२१७
४२	कौलावती-गवन खंड	२२६
४३	बोहित खंड	२२९
४४	जगन्नाथ खंड	२३२
४५	अभिषेक खंड	२३५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शुद्धिपत्र ।

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१	१८	जैसे सहरी[३] उदधि कहावा ...	... जैसे लंहरी उदधि कहावा ।
	२१	३ (शफरी) एक प्रकार की मछली	० ०
३	३	कोऊ बिसरत नाहीँ ...	कोउ बिसरत नाहीँ
७	४	खोदु हिय इन्दू ...	खोइ हिय दुंदू
	६	कही न जग पति याइ कोउ,	कहे न जग पतियाइ कोउ,
८	४	अस भा अदल मते हरि बानी ...	... अस भा अदल मथे हरिबानी,
	७	सहस खाट कंचन के साजे, ...	... सहस घाँट कंचन के साजे,
	२२	चौंधे दृष्टि सौंहे जेहि हेरे...	चौंधि दिष्टि सौंहे जेहि हेरे,
९	१०	बादिहि लोगि ...	बादिहि लोग,
	१२	मानसा होइ ...	...मनसा होई
१०	९	तेहि देई जगाई ...	तेहि देइ जगाई
११	९	सुमर समै पुनि सूर ...	समर समै पुनि सूर
	२२	तजहि न एकौ तिनहु कहाला ...	... तजहिँ न एकौ तीनिहुँ काला ।
१३	९	कीय व्योहारा ...	किय व्यवहारा
	२१	प्रेम अँकूर जहँ सिर काढ़ा,	प्रेम अँकूर जहाँ सिर काढ़ा,
	२३	प्रेम कुमुर जहँ बदन उधारा, बिरह आई तहँ मंजन सारा ।	बिरह आइ तहँ मंजन सारा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१४	२	हौं तीनहु के भेद कहु ...	हौं तीनिहुँ के भेद कहि
	७	मन होई गियाना ...	मन होइ गियाना।
	१७	जहँ लहु सुझि ...	जहँ लहु सूझि
१६	१६	दीया बाजु मग ...	दिया बाजु माग
२१	१	राहु केतु दोऊ ...	राहु केतु दोउ
२४	१	जहँ लौउ राउत रान ...	जहँ लहु राउत रान
	१८	मारहु खाँड पचरि ...	मारहु खाँड प्रचारि
	२३	बिष भारा	विष भरा
३७	२३	कुँअर जहाँ आवा। ...	कुँअर जहँ आवा,
४२	३	रहहु जाई	रहहु जाइ
	१५	चित्र विचित्र सिँगरा ...	चित्र विचित्र सिँगारा,
४४	२०	जब कीरात	जब किरात
४८	१३	भौंर कँवाल तेहि संग ...	भौंर कँवल तेहि संग
५१	४	दीसत आना	दीस न आना
५५	२२	कायहि लगा	कायहि लागा
५९	७	अस लगेउ तुअ भाग ...	अस लागेउ तुअ भाग
६०	२१	पानि मोती	पानि मोति
६१	११	चकइ चकवा	चकई चकवा
६२	७	बहु कर नास	बहु कटनास
	२१	ठौर ठौर सौ अधिक बसाहीँ ...	ठौर ठौर सो अधिक बसाहीँ
२६, २७		बहु कर बास रहहि ...	बहु कटनास रहहिँ
६६	२४	बेलिन खूँदी	बेलि न खूँदी
६७	६	आपन-चित्र अपु पै लीखा,	आपन चित्र आपु पै लीखा,
	१८	अग्या होई	अज्ञा होइ

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६८	१०	सिंभू सरीर ...	... संभु सरीर
७३	२०	रहस न जाहीँ	... रहसन जाहीँ
७४	११	सोइ चीन्ह रखा तहाँ जो देखा ...	... सोई चीन्ह रेखा जो देखा
७५	१२	दुई जनु डँका	... दुइ जनु डंका
८३	१९	कहा सो तरागन महँ भावा	कहाँ सो तारागन महँ भावा
८९	१५	हीरदै लिखा ...	... हिरदय लिखा
९१	२२	गुरु बचन ...	... गुरू बचन
९२	१०	परट हँसै ...	... परगट हँसै
९५	७	सेल उर मारी	... सेल उर मारा
९६	३	श्रीपंचम मानहीँ	... श्री पंचमि मानहिँ
९७	१३	चित्र देखा ...	... चित्र देखि
	१५	जीउ अधर बईठा	... जिउ अधर बईठा
	२१	जैस उगवत सूर के	... जैसै उगवत सूर के
९८	२०	धरमसाला महँ	... धरमसाल महँ
१०१	१४	गुरुसोँ कही ...	... गुरूसोँ कही
१०३	१०	भेाग आचार ...	... भेाग अचार
१०८	१३	खाइ रह ठग मूरि सी	... खाइ रहा ठग मूरि सी
१३०	५	राज-परीसा खावा	... राज परोसा खावा
	७	बार महँ आहा	... बार महँ अहा
१३२	२२	दहु अँकोरा	... देहु अँकोरा
१३३	१	सरग लागा ...	... सरग लगा
१३४	१२	बिधि देकै सुदिष्टि दे मोंही,	बिधिना अस सुदिष्टि दे मोहीँ,
	१३	दूजा जाइ न हिय महँलँखा,	दूजा जाइ नहि यमहँ लेखा,
		जहँ देखौं तहँ एकै दीखा ।	जहँ देखौं तहँ एकै देखा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३७	१	पहरु जागै ...	... पहरू जागै
	७	सीद्ध होइ सब काज	... सिद्ध होइ सब काज
१३८	८	एक बामन अरु भाट पुनि,	इक बाभन अरु भाँट पुनि,
	२०	सन चढ़ि मागे नहिँ कोई,	ऐसन चढ़ि मागै नहिँ कोई
१४१	२५	देखत रूप पदुमिनि नागिनि ...	... देखत रूप पदुमिनी नागिन
		धामिनि जेउ उठि उठी लागिनि ...	... धामिनि जीउ उठि-उठी लागिन
१६५	३	हिय हु लास बिहँसे अधार ...	... हिय हुलास बिहँसे अधर
	४	होइ न औरे कोई	... होइ न औरै कोइ
	६	बैठि एहि ठाऊँ	... बैठि यहि ठाईँ
	१६	भँवइ बास लागि बारी बारी ...	... भँवइ बास लगि बारी बारी
१६६	७	तिय तन तुछक किमि कै कहई ...	... तिय तन तुच्छक किमि कै सहई
१६९	५	मिरिग क छाता	... मिरिग क छाला
१७०	२०	जागिहि काकी चिंत	... जोगिहि काकी चिंत
१७१	२३	रह घट सँसा	... रह घट स्वासा
१७२	६	नीँद न अवत रैनि दिन,	नीँद न आवति रैनि दिन,
१७५	६	बिहरै सुनत बजर छाती,	बिहरै सुनत बज्र की छाती
	८	जाइ निआंरावा	... जाइ नियरावा
१७६	१०	हुपुमी सरग	... पुहुमी सरग
१७७	१२	निहचै नग जानि डारो कोई ...	... निहचै नग जनि डारो कोई

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
	२२	देखत दुहूँ आनन्द भा,	देखत दुहूँ अनंद भा,
१७८	१६	एकते निकसि ऐक महँ परा ...	... इक तेँ निकसि एक महँ परा
१७९	२५	गा छिपाइ चटेक जनु कीन्हा ...	... गा छिपाइ चेटक जनु कीन्हा
१८१	८	धुआँ तस उठा	... धुअँ तस उठा
१८३	४	सागर जेाहर साजै चाहा,	सागर जेाहर साजै चहा
	१९	जाही दीन जनमी	... जाही दिन जनमी
१८४	१	सुपूरुष बाचासार	... सुपुरुष बाचासार
	६	आगिल परै नहि हीना,	आगिल परै न हीना
	८	पूँछि नीअर होइ	... पूँछि नियर होइ
१८५	१	दुर जानि एह पुहुमी केरे,	दूर जानि यहि पुहुमी केरे
१८६	२	अहित जेा आही	... अहित जेा अही
१८८	९	गहि जेा भीखारी मारई,	गहि जेा भिखारी मारइ
	१९	ततेँ बरजे सकल जन,	तातेँ बरजे सकल जन
१८८	२२	तासोँ जी उन लवहीँ, तासोँ जीउ नलावहिँ, अन्त जो अंत जो साथी नाहीँ ।	साथी नाहिँ।
१९०	२४	रुहिर सुखिगा गात	... रुहिर सूखिगा गात
१९१	११	जुझि साज जो कुँअरहि सूझा,	जूझिसाज जेा कुअँरहिँ सूझा,
	१३	जुझि सोँ काजा	... जूझिसोँ काजा
१९४	१०	चढ़ि अटारि देखाहँ रनिवाँसा ...	... चढ़ि अँटारि देखहिँ रनिवाँसा,
१९६	१३	रूपकथार सेान करढका,	रूपकथार सेान कर टका,
२००	९	फेनि पातरि मुहँ न समाई,	फेनि पातरी मुहँ न समाई,

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०१	१६	पुहुप ऊतारा ...	पुहुप उतारा
२०३	१७	बारी बारी देाऊ भनेउ;	बारी बारी देाउ भनेउ
२०५	२३	उँच धुराहर ...	ऊँच धुराहर
२०६	१६	पिरम बैरि	परम बैरि
२१०	७	(४१) काम शास्त्र खण्ड	
२१२	११	काँध नवाए निसिदिन रँहई,	काँध नवाएँ निसि दिन रहई,
२१८	२२	निअरही रतन न चीन्हे नैना	नियरहिँ रतन चीन्है नैना
२२७	२२	कौँलावति जहाँ दीन्ह व्याही	कौँलावति जहँ दीन्ह बियाही
२३१	१५	पुनि मन कहिसी ...	पुनि मन कहिसि

नोट—इसके अतिरिक्त कहीं कहीं अनुस्वार (ं) का चन्द्रविन्दु (ँ) और चन्द्रविन्दु का अनुस्वार छप गया है, जिन्हें पाठकों को यथास्थान शुद्ध कर लेना चाहिये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज रासो ।

यह हिन्दी साहित्य का सब से प्राचीन ग्रन्थ है जो अब तक प्राप्त हुआ है। इसमें कवि ने भारतवर्ष के अन्तिम क्षत्री सम्राट् राजा पृथ्वीराज का जीवनवृत्तान्त विस्तारपूर्वक लिखा है जो आदि से अन्त तक विचित्र घटनाओं से भरा हुआ है। इतिहास प्रेमियों के लिये तो यह ग्रन्थ अनमोल रत्न है। इसकी भाषा कुछ कठिन है अतः सभा ने समस्त ग्रन्थ के सारांश को सरल हिन्दी भाषा में इसके साथ ही साथ छपवाया है जिससे मूल ग्रन्थ के पठन पाठन में बड़ी सहायता और आनन्द मिलता है। मनोरञ्जक तो यह इतना है कि कहीं से कोई पृष्ठ उठा कर दस पांच पंक्तियाँ पढ़िये फिर कदापि आप समस्त ग्रन्थ पढ़े बिना नहीं रह सकते। जिन हिन्दी प्रेमियों ने इस ग्रन्थ को अब तक नहीं लिया है उन्हें इसकी एक प्रति अवश्य लेनी चाहिए। इसके ६६ पर्व्व २० भागों में छपे हैं जिनका मूल्य २३।-) है। प्रत्येक भाग जुदा जुदा भी मिल सकता है। मूल्य १।) के लगभग है।

अन्य उपयोगी पुस्तकें ।

हम्मीर रासो (रणथंभौर के वीर शिरोमणि महाराज हम्मीर देव का जीवनचरित) २)
हम्मीर हठ ,, ॥)
जंगनाम (दिल्ली के बादशाह बहादुर शाह के पुत्रों का युद्ध) ॥।)
इन्द्रावती १॥)
कवि आनन्द घन कृत बिरहलीला =)
भूषण ग्रन्थावली (प्रसिद्ध कवि भूषण के शिवराज भूषण, शिवा बावनी आदि ग्रन्थ) १॥।=)
सुजान चरित्र २)
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवनचरित्र ॥=)
महिला मृदुबाणी (भारत वर्ष की विदुषी स्त्रियों की संक्षिप्त जीवनी) १)
हिम्मत बहादुर विरुदावली (बांदा के प्रसिद्ध वीर हिम्मत बहादुर का चरित्र) १)
नन्द दास की रासपंचाध्यायी ।=)
अखरावट ।=)
यूरोपीय दर्शन (यूरप के दर्शन शास्त्र का इतिहास) ॥।)
परिचर्याप्रणाली (रोगी की शुश्रूषा करने की विधि ।)
संक्षेपलेखप्रणाली अर्थात् हिन्दी शार्टहैंड १)
महाराणा प्रतापसिंह (नाटक) ॥।)

ये सब पुस्तकें मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से मिल सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीर्ण व अजीर्ण के दस्त की दवा।

खाना पचानेवाले रसों के घटने बढ़ने वा विकार से अजीर्ण रोग होता है जिसके यह लक्षण हुआ करते हैं—खाने के बाद पेट

भारी। जान पड़ना, पेट में वायु होना, जी मिचलाना, खट्टी वा व्यर्थ डकार आना, छाती जलना, मुंह में पानी भर आना, पेट में थोड़ा थोड़ा दर्द होना, चित्त की ग्लानि, आलस्य आदिक। जब तक खाना हज़म की थैली में रहता है और पाचनक्रिया कठिनता से होती रहती है यही हालत होती है। जब यह अनपचा खाना अँतड़ियों में उतर जाता है तब पेट में गड़गड़ाहट होती है, पेट फूलता है व दस्त की चेष्टा होती है। दस्त पतला वा पानी के ऐसा होता है। कभी कभी खाने के थोड़ी देर पीछे ही दस्त हो जाता है। दस्त होने से शरीर क्षीण होता है। ये सब हालतें कभी कम, कभी अधिक होती रहती हैं और महीनों तक चलती हैं। रोगी का शरीर दिन पर दिन गलता जाता है। अन्त को असाध्य हो जाता है।

शरीर की साधारण पुष्टि का घटजाना इस रोग का कारण है। नीचे लिखी हुई हालतों में ऐसाही होता है—

वृद्ध अवस्था, कोई विशेष रोग के बाद कमज़ोरी, कम खाना (जैसा कि व्रत, लङ्घन, पारण आदिक में लोग करते हैं), धातु के व्यर्थ नष्ट होने से क्षीणता, अधिक श्रम, दुश्चिन्ता वा शोक, प्रसव के विकार से कमज़ोरी।

इन विषयों को विचार कर डाक्टर बर्म्मन ने अजीर्ण की दवा बनाई है। खाना हज़म करने व अजीर्ण के दोषों को मिटाने में इसकी विशेष शक्ति है। यह दवा छोटी छोटी टिकिया की ऐसी बनी हुई है। पंदरह रोज़ के सेवन योग्य ३० टिकिया की एक शीशी का मोल १।) रुपया। डाक महसूल १ से ४ शीशी ।-) आने।

डाः एस, के, बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पुस्तक संख्या २२, २३

ग्रन्थ संख्या ४५]

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक, श्यामसुन्दर दास, बी० ए० ।

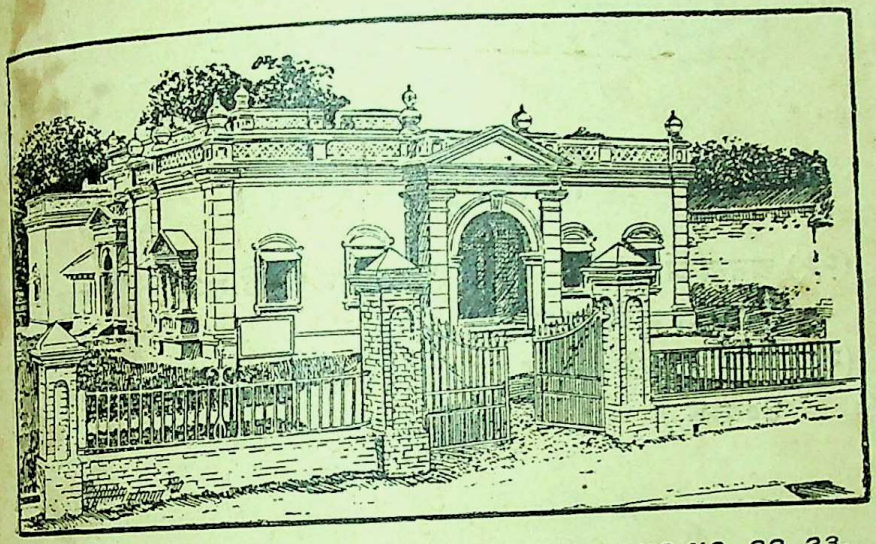

FASCICULUS NO. 45.] [BOOKS NO. 22, 23.

NAGARI PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR

SYAM SUNDAR DAS, B.A.

PUBLISHED BY

THE NAGARI PRACHARINI SABHA,

BENARES.

मूल्य प्रति संख्या ॥) [*Price per fasciculus As. 8.*

ISSUED ON THE 15TH AUGUST 1913.

PRINTED BY APURVA KRISHNA BOSE AT THE INDIAN PRESS,

ALLAHABAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका।

(२२) अनन्य ग्रंथावली—ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा सम्पादित (पृष्ठ १—१६ तथा भूमिका आदि)
(२३) परमाल रासो—बाबू श्यामसुन्दर दास सम्पादित। (पृष्ठ १—४० तक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Nagari Pracharini Granthamala Series No. 22.

अनन्य-ग्रन्थावली

(राजयोग, ज्ञानयोग, विज्ञानयोग और विज्ञान-बोध)

ठाकुर सूर्यकुमार वर्म्मा

द्वारा सम्पादित

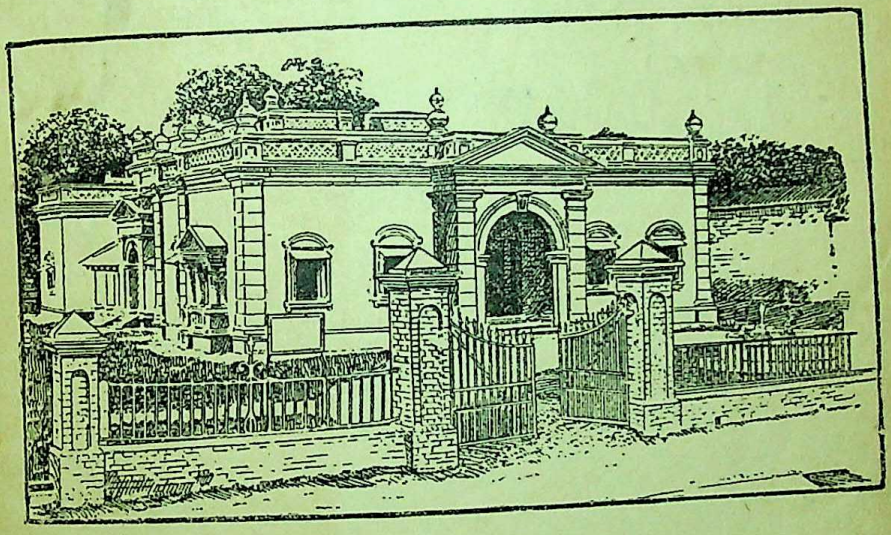

और

काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित।

१९१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

समर्पण

जिनकी कृपा और सहायता से मैं
आज यह काम कर सका उन
अपने पूज्य पिता, कविताप्रेमी,
ठाकुर गणपतिसिंह जी
की सेवा में
सादर
समर्पित।

सूर्यकुमार वर्म्मा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परिचय

बाल्यावस्था में जब हमने राजा शिवप्रसाद सितारेहिन्द कृत गुटका पढ़ा था उस समय, उसमें हमने अनन्य कवि की राजयोग कविता का कुछ अंश भी पढ़ा था। वह कविता हमें बहुत पसन्द आई थी। हमारी इच्छा थी कि हमें अनन्य कविकृत और भी कविता पढ़ने को मिले परन्तु अब तक हमें वह कहीं भी प्राप्त न हो सकी। दो तीन वर्ष हुए जब एक दिन एक साधु हमारे पास आए। बात चीत में अनन्य का भी ज़िक्र निकला। आपने कहा अनन्य के ४ ग्रंथ हमारे पास हैं। हम आपको देंगे। आपने ही कृपाकर अनन्य की यह कविता हमें लिखा दी। कविता रोचक, हृदयग्राही, सरल, सबके समझने योग्य और भावमय है। कविता तो साधु महाराज से प्राप्त हो गई परन्तु अनन्य कवि का परिचय बहुत खोज करने पर भी हमें बहुत समय तक न मिल सका।

शिवसिंहसरोज में अनन्य कवि तीन हुए ऐसा लिखा है। एक तो अक्षर अनन्य संवत् १७१० में हुए। दूसरे अनन्य कवि १७९० में हुए। तीसरे अनन्य के सन् संवत् का पता नहीं चलता। अनन्य ने अपनी कविता में "राजा प्रथीचन्द" का सम्बोधन करके कविता की है। परन्तु इस बात का ठीक ठीक पता नहीं चलता कि ये राजा प्रथीचन्द कौन थे। हमारे एक मित्र ने हमें सूचना दी है कि मौजा गिरवासा परगना सोंढाँ रियासत दतिया निवासी राजा प्रथीचंद के लिये ही यह कविता अनन्य कवि ने बनाई थी। उनके कथन और कविता की भाषा देखकर जाना जाता है कि अनन्य कवि बुन्देलखंडवासी ज़रूर थे। अनन्य कवि ने अपनी कविता में अपने निवासस्थान का कहीं पर भी परिचय नहीं दिया और न अपने ग्रंथों के बनाने का समय ही दिया है। सुना जाता है आप जाति के कायस्थ थे और राजा प्रथीचन्द

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

के दीवान थे। एक दिन वे राजा के व्यवहार से विरक्त होकर घर से निकल साधु हो गए। जब आप घर पर कई दिन हो गए वापस न आए तब राजा ने तलाश करवाई। आपका पता लगने पर राजा स्वयं लेने गए। जिस समय राजा आपके पास गये आप पैर पसारे लेटे थे। आपने राजा के आने पर न तो उनका स्वागत किया और न उठकर बैठे। राजा ने अपना अनादर समझकर पूछा! "पैर पसारे कब से?" आप ने उत्तर दिया—"हाथ समेटा तब से" अर्थात् जब से हाथ समेट लिया, माँगना या लेना छोड़ दिया तब से पैर फैला दिए। राजा जवाब सुनकर बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें समझा बुझाकर फिर वापस ले गए। उसी समय राजा के लिये आपने राजयोग ग्रंथ बनाया।

पहले तो हमने सोचा था कि अनन्य का पूरा परिचय मिल जाने पर ही पुस्तक छपाने के लिये भेजते परन्तु दो तीन वर्ष की खोज पर भी जब कोई विशेष पता न चला और न पता चलने का कोई भरोसा पाया गया तब यही निश्चय किया कि अनन्य की जीवनी के अभाव से उनकी कविता से हिन्दी कविता के प्रेमियों को वंचित रखना उचित नहीं। सम्भव है पुस्तक प्रकाशित होने पर अनन्य की कविता का प्रचार बढ़ने से उनकी जीवनी का पाठकों द्वारा ही पता चल जाय। अतएव यह अनन्यग्रंथावली प्रकाशित की जाती है। अगर हमारे पाठकों में से किसी को अनन्य के विषय में कुछ ज्ञान हो तो वे सूचना दें दूसरे संस्करण में वह छाप दिया जायगा।

सूर्यकुमार वर्म्मा।

ग्वालियर—२१—६—१३

——:०:——

मेरा अनुमान है कि जिन अनन्यकवि के चार ग्रंथ इस पुस्तक में दिए हैं उनका दूसरा नाम अक्षर-अनन्य था। ये दतिया राज्य के

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेंहुड़ा ग्राम के रहनेवाले थे और जाति के कायस्थ थे। इनका जन्म सन् १६५३ में हुआ था। दतिया के राजा दलपतराय (१६९७ से १७०९ ई०) के पुत्र पृथीराज या पृथीचंद के ये गुरु थे। ये बुंदेलखंड के प्रसिद्ध महाराज छत्रसाल के समकालीन थे। इनके गई ग्रंथों का पता लगा है जिनके नाम ये हैं—

(१) अनुभव तरंग। (२) राजयोग, जो इस पुस्तक में सम्मिलित है। (३) प्रेमदीपिका, जिसमें उद्धव का मथुरागमन वर्णित है। (४) ज्ञानबोध, जो विज्ञान योग नाम से इस पुस्तक में प्रकाशित है। (५) ज्ञान पचासा, जो ज्ञानयोग नाम से प्रकाशित है। (६) दैवशक्तिपचीसी जिसे शक्तिपचीसी या अनन्यपचीसी भी कहते हैं। (७) भवानीस्तोत्र। (८) वैरागतरङ्ग। (९) योगशास्त्र। (१०) कविता संग्रह। एक ग्रन्थ जो विज्ञानबोध नाम से प्रकाशित है उसका पता अब तक नहीं चला था।

सन् १९०६—०८ की हिन्दी पुस्तकों की खोज की रिपोर्ट में मैंने इनका उल्लेख इस प्रकार किया है—

"Akṣara Ananya (Fl. 1653 A. D.). He was a Kâyastha of Senhurâ, a village in the Datia State. He was a Sannyâsî well-versed in the Vedantic system of philosophy. He was so skilled in metrical composition that he often spoke in verse. Once Mahârâja Chhaṭṭrasâla of Pannâ invited him to his court, but he declined to attend. He was the first man to translate the Durga Saptaśaṭi into Hindi verse. His descendants are still found in the Datia State, Being the spiritual preceptor of Kunwar Pṛithirâja, he received from him some villages in the way of a *jagir*, which he handed over to his brother."

इसी रिपोर्ट में राजा पृथीचन्द या पृथीराज के विषय में यह लिखा है—

"Kunwar Pṛithirâja, son of Ḍalpaṭ Rai (1697-1709) of Datia. He was himself a good poet and wrote under the *non-de-plume* Rasanidhi. The poet Akṣara Ananya flourished at his court."

श्यामसुन्दर दास।

१८—७—१९१३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनन्य-ग्रंथावली

—:o:—

अथ राजयोग ।

आत्मा ज्ञान सेा ज्ञान वहै परमात्मा ध्यान सेा ध्यान सुरेश्वर ।
वेद विधान विधान वहै सतपात्रहि दान सुदान धनेश्वर ॥
अन्तर भक्ति सुभक्ति वहै गति अंतर की परखे परमेश्वर ।
वेद प्रमाण अनन्य भने यह भेद सुनेा पृथिचन्द्र नरेश्वर ॥ १ ॥

त्रोटकछंद ॥

यह भेद सुनेा प्रथिचंदराय । फलचारिहु को साधन उपाय ।
यह लेाक साध लेाकीक लेाग । खानह कमान रुचि कामभेाग ॥१॥
यह लेाक सधे सुत सुक्ख बाम । परलेाक नसे बसि नर्क धाम ।
परलेाक साध यक है अतीत । तप तीरथ व्रत करि कष्ट नित्त ॥२॥
यह लेाक न तिनको सुख विलांस । परलेाक सधे सुख स्वर्गवास ।
परलेाक लेाक देाउ सधें जाहि । सुई राजयेाग सिद्धांत आहि ॥३॥
निज राजयेाग ज्ञानी करंत । हठि धर्म्म मूँठ साधत अनंत ।
यक पवन खेंचि आसननि जेारि । यक हाथ पाँउ कटि ग्रेाव तेारि ॥४॥
यक धाम शीत जल सहत अंग । यक पंच-अग्नि तपि देह भंग ।
एक लँघत फिरत रेागरा खात । यक भ्रमत फिरत तीरथनि जात ॥५॥
यह बिबिध पंथ काया कलेश । दुर्लभ करि पावत पद प्रवेश ।
जैसे भुजंग बामी मझार । यक मूढ खेादि काढहि प्रचार ॥६॥
ते हठि करि पकरें फारि खाई । त्यों हठि साधनि के पंथराई ।
यक ऊपर नहि खेादन करंत । पढि मंत्र खेंचे पवारहि तुरंत ॥७॥
त्यों राजयेाग सुख सहज माहि । सिद्धांत लहत तन कष्ट नाहि ।
ऊपर बिलास बिलसे समस्त । निज ज्ञान ध्यान मनसा दुरुस्त ॥८॥
अपनेा करि कछु रहिये न मानि । सब ईश्वरही को विभव जानि ।
करि त्रकुटि बीच ध्वनि शब्द मूल । सुइ मनसा सुमिरन ध्यान कूल॥९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैठे सबमें रहिये सुचैन । दिखिये सब कुछ मुँदिये न नैन ।
करिये सब कुछ करिवे जुहोइ । मनसा सुमिरन धुनि ध्यान लोइ १०
बातें करिये तौ चारि उक्ति । यक धर्म्म अर्थ की काम मुक्ति ।
इन चारिहु में जो सधै न एक । तौ मिथ्या जन्म बिना विवेक ॥११॥
हाँसी चबाउ गिल्ला विवाद । काइन बातनि में है सवाद ।
कहिबो सुनिबो मतलब प्रमान । करि सेवा सुमिरन सुरति ध्यान १२
बैठत उठत चितवत चलंत । खातहु कमात सुमिरन करंत ।
जो अन्तर सुमिरन सुरति आहि । तौ बाहिर कर्म्मन लगे ताहि १३
यह मनसा गति यह कहत वेद । मति गति साधत यह ज्ञान भेद ।
जो मति न सधे मन कर्म्म भोइ । तौ टोपी दिये नहि मुक्ति होइ ॥१४
जो मति गति साधन सुरति ज्ञान । तौ पाग नहीं रोकंत ध्यान ।
यह मनही को कारन विचार । सुत बंधु और परिवार नार ॥१५॥
का होत मुँडाये मूंढ़ बार । का होत रखाये जटाभार ।
का होत भामिनी तजें भोग ? जोलौं न जगे थिर चित्त योग ॥१६॥
थिर चित्त रहै सुमिरन मझार । ऊपर साधे परलोक चार ।
यह राजयोग सुख को निधान । कोइ ज्ञानवंत जानत सुजान ॥१७॥
अर्जुन जनकादिक आदि लोग । इन राजनि साधे राजयोग ।
सुख राजयोग करो अरु सिद्ध । को अतिथ भयो इनतें प्रसिद्ध ॥१८॥
यह अतिथन तनहूँ में अति अनूप । सुनु राजयोग सिद्धांत भूप !
सुखमारग यह प्रथिचंदराइ । इहि सम न आहि दूजो उपाइ ॥१९॥
यह राजयोग कै भक्ति ज्ञान । सेवा सुमिरन सुरति ज्ञान ।
जो यह न सधे बिन ज्ञान मूढ । तौ अजपा साधे स्वाँस रूढ ॥२०॥
जो यह न सधे अजपा उचार । तौ इष्टदेव धरि ध्यान सार ।
जो ध्यान न आवे बिना देख । तौ प्रतिमा थापहु अष्टभेख ॥२१॥
निज प्रतिमा थापहु दरस नित्त । सुइ मूरति राखहु हृदय चित्त ।
यहि भाँति ज्ञान उर बसे आन । यह ईश ध्यान नरनाह जान ॥२२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो ध्यान सधे नहि लगे चित्त । तौ नेम सहित जप मंत्र नित्त ।
जो मंत्रहु बिधि नहि सधे राउ । तौ पावन प्रभु को लेइ नाउ ॥२३॥
तन शुद्ध होइ मुख शुद्धवान । मन शुद्ध होइ सर्वज्ञ जान ।
मन को स्वभाव भ्रमिवो अकत्थ । तौ सुमिरन साधन ज्ञान गत्थ २४
मुख को स्वभाव बकिवो नरेश । तौ करे ज्ञान चरचा सुवेश ।
करि भक्ति भजन सुमिरन सुबुद्धि । मेटे मन की भ्रमना कुबुद्धि २५
जित जित मनसा भरमें अनंत । तित तित सुमिरन मन में करंत ।
कछुक दिननि करिये उपाइ । परि जाइ बहुरि मंसा सुभाई ॥ २६ ॥
मनसा सुमिरन ध्वनि ध्यान लीन । यह राजयोग जानहु प्रवीन ।
जो राजयोग यह सधे राज । तौ मनबांछित सब होइ काज ॥२७॥
अरु कर्म्म लिप्त कबहूं न होइ । जग जीवन मुक्त सदा सुहोइ ।
यह ज्ञानभेद अरु वेद साषि । अक्षर अनन्य सिद्धांत भाषि ॥२८॥

दोहा ॥

राजयोग सिद्धांत यह, सुनो राज प्रथिचंद ।
या सम और न दूसरो, सोधि शास्त्र स्वच्छंद ॥ १ ॥
जो चाहो संसार सुख, अरु सिद्धांत प्रकास ।
तौ साधो सरवज्ञ यह, राजयोग अनयास ॥ २ ॥

इति राजयोग सम्पूर्णम् ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ ज्ञानयोग ।

सवैया ॥

विधि भेद निषेधन जाने कछू मति के अनुसार लही सेा लही ।
समुझाये नहीं समुझे गुरु के मन के अनुमान कही सेा कही ॥
नहीं वेद पुरान की रीति गुने अनरीति सौ टेक ठई सेा ठई ।
यह तामस ज्ञान अनन्य भने हठि मूरख गांठि गही सेा गही ॥१॥
जु करे सुविवेक विचारि करे फल चारि विषे हित साजत है ।
करि सेवहि देव रिझाव भले बहु पाइ भुवा पर गाजत है ॥
... ...
यह राजस ज्ञान अनन्य भने तै धर्म्म सेा राज विराजत है ॥२॥
शील संतेाष सुबुद्धि सुलक्षन धीर गँभीर भने जग न्यारे ।
धर्म्म दया निर्लोभ निरासक निर्भय भक्ति अराध न हारे ॥
धर्म्म करे सुकरे प्रभु अर्पण नहीं फल चाहत बेाध उजारे ।
सात्विक ज्ञान अनन्य भने यह संत सदा भगवंत पियारे ॥३॥
राग न देाष न हर्ष न शेाक न बंधन मेाक्ष की आस रही है ।
बैर न प्रीति न हार न जीति न गारि न गीत सुरीत गई है ॥
रक्त विरक्त न मान कछू शिव शक्ति निरंतर जेाति लही है ।
पूरन ज्ञान अनन्य भने अवधूत अतीत की रीति यही है ॥४॥
का हरि केा हर केा सुर केा नर केा तर केा वरु और न आसेा ।
केा घर केा बन केा प्रभु केा जन निर्गुन सर्गुन भर्म्म विनासेा ॥
केा पुनि संत असंत गने सबसेा समिता व्रत रूप प्रकासेा ।
पूरन ज्ञान अनन्य भने परिपूरन ज्ञान अखंडित भासेां ॥५॥
मूरख के प्रतिमा परमेश्वर बालक रीति गही सुलही है ।
उत्तम जेाति स्वरूप बिचार सुआत्मा ध्यान में बुद्धि दई है ॥
एक वेतत्व की माँड़ सवे कहि केवल ब्रह्म बसें सुवही है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पूरन ज्ञान अनन्य भने सरवज्ञनि कों शिवशक्ति मई है ॥६॥
कोऊ कहे वैकुंठ वसें प्रभु कोइ कहे निज धाम हुलीचे ।
कोऊ कहे ब्रह्माण्ड परे परब्रह्म सबे कहे सो अवधीचे ॥
वस्तु प्रत्यक्ष अनन्य भने जिमि आपुहि गोप्य करें दृग मीचें ।
व्योम समान अखंडित्त ईश्वर तै सोइ ऊपर तै मुई नीचें ॥७॥
प्रभु जो बरनें वैकुण्ठहि में कहि व्यापक कौन चराचर है ?
स्वरमंडल खंडल दुष्ट कहो तौ अखंड समस्त बराबर है ॥
हरि राधिक कुञ्ज विहारी कहो तौ विहारु तौ तासु घराघर है ।
तत सर्वस्व रूप अनन्य भने परिपूरन ब्रह्म परापर है ॥८॥
हरि में हरी सो स्वर में स्वर सो हर में हरसो सुखदायक है ।
नर में नर सो तर में तर सो घर में घर सो घर घायक है ॥
बड़ में बड़ सो सुअनन्य भने घर में घर सो घट नायक है ।
हम में हम सो तुम में तुम सो सब सों सब में सब लायक है ॥९॥
जल में जल सो थल में थल सो तल में तल सो जग जोति छई ।
बन में बन सो घन में घन सो तन में तन सो तम माहि दई ॥
सुर में सुर सो सुअनन्य भने यह भेद लहें सरवज्ञ मई ।
बहु रूप अनेक सुभाई सुहै जित देखि तितें शिव शक्ति मई ॥१०॥
सब रूप को रूप स्वरूप वहै अनरूप को रूप सबै लहिये ।
सब सार को सार विचार यहै सब सार असार सबे गहिये ॥
सब भेद को भेद अभेद मतौ अनभेद को भेद वहै थहिये ।
सब नाम सुनाम अनन्यभने अननाम को नाम कहा कहिये ॥११॥
निर्गुन सर्गुन नाम अभेद यह भेद सनातनही चलि आयो ।
निर्गुन रूप है एक चिदात्मा सर्गुण रूप अनेक है छायो ॥
वाही तें भेद बढ़ो जग में जिहि जोई सुनो तिहि सो ठहरायो ।
अंग अनंग अनन्य भने सरवज्ञनि सो सरवज्ञ बतायो ॥१२॥
आपुहि निर्गुन आपही सर्गुन आपुहि निर्भय भेद बताया ।
आपुहि शून्य है आपुहि ज्योति है आपही व्यापी चराचर काया ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आपुहि मंत्र अनन्य भने शिवशक्ति अखंड परापर छाया ।
आपुहि जीव है आपुहि ईश है आपुहि ईश्वर आपुहि माया ॥१३॥
माटी की भूमि है भूमि सेा माटी मांटिहि भूमि न भेद न माया।
पानी को सिंधु है सिंधु सुपानी है पानिहि सिंधुहि द्वै न बताया ॥
येां अनभेद अनन्य भने कहिवे मँह भेद गुरु समझाया ।
दीपक ज्वाल है ज्वाल सुदीपक माया सुब्रह्म है ब्रह्म सुमाया ॥१४॥
ज्वाल कहे कोउ ज्योति लहे वै सादर में पुरुषारथ आया ।
देह कहै नर नाम लहें अरुनारि कहें जबही कहै काया ॥
येां अनभेद अनन्य भने हठि मूढनि वाद विवाद बढ़ाया ।
एकवै तत्व की माड सबै भल वाहि कहें सेा कहें भलमाया ॥१५॥
ब्रह्म कहेा ब्रह्म माया कहेा कहिवे में कहा है कहा कहि कीजे ।
वस्तु है एक अभास अनेक हैं सर्व विषे निहचे मन लीजे ॥
एक अनेक अनन्य भने सुअनेक में एक विवेक धरीजे ।
एकही साधे सधें सबही सुवरी दुवरी प्रति भेद न दीजे ॥१६॥
अन्न अभाव अनन्न सुभावही पूरन ब्रह्म प्रभाव अखंडित ।
रूप विराट निराट निराटक फाटक कोटिक ओट कदंडित ॥
आपुही झझके बिझुके गुर भेद यहै सब जानत है मतिमंडित ।
आपमें आप अनन्य भने सुवहे तत्वज्ञान कहें सत पंडित ॥१७॥
छोटे बड़े सब पंथ उपासक ग्रंथ उपासक बहुधा है ।
ब्रह्म वहै सर्वज्ञ अखंडित व्यापक सर्व समान उदा है ॥
वेद है तेई प्रमान यहै मसजिद यहै नहीं तत्व जुदा है ।
आतश आगि अनन्य भने जग सेाइ सदा शिव सेाई खुदा है ॥१८॥
कोऊ राम कहे पर नाम कहे कोऊ कान्ह गुपालजु वानत है ।
अरिहंत कोऊ भगवंत कहे कोउ दत अलेख बखानत है ॥
वह ईश्वर एक अनेक मते अपने अपने उर आनत है ।
जग बंधन ग्रंथ अनन्य भने यह भेद सुजान सुजानत है ॥ १९ ॥
यक निर्गुन रूप निरूपत है यक सर्गुन रूपही देखत है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यक ज्योति स्वरूप बखान करें यक शून्य स्वरूपही लेखत है ।
यक मानत है अवतारिन कों करता विधि एक विशेखत है ॥
सरवज्ञ सो धन्य अनन्य भने प्रभुमय सबकों सब देखत है ॥ २० ॥
धर्म्म विना सतसंग नहीं सतसंग बिना नहि भक्ति हुलासे ।
भक्ति बिना नहि शुद्ध हियो हिय शुद्ध बिना नहि बुद्धि विलासे ॥
बुद्धि बिना अनुमान नहीं अनुमान बिना नहीं ज्ञान प्रकासे ।
ज्ञान बिना जु अनन्य भने परमात्मा तत्त्व स्वरूप न भासे ॥ २१ ॥
भूषन हाटक सागर घाटक काटक पाटक नाम कहे हैं ।
भूमि सो भौननि खांड खिलोननि पौननि के उनमान कहे हैं ॥
... ...
अनि वस्तु अनन्य भने शिव शक्ति समस्त स्वरूप सुआप लहे हैं ॥२२॥
हाटक के बहु भूषण है तिन भूषण में नहीं हाट कहानी !
सागर में लहरें लहिये लहरेनि बिषे वह सागर पानी ॥
येतत रूप अनन्य भने न विना ततरूप यहै उर आनी ।
एक ते रूप अनेक लहें सुअनेक में एक लखे सुई ज्ञानी ॥ २३ ॥
ब्रह्म स्वरूप वेदांत कहें अरु न्याय कहे करता उर सूरे ।
बोध कहै प्रभु बोध स्वरूप पातञ्जलि योग सुभाव गरूरे ॥
जैनि कहै अरहंस स्वरूप विषई प्रकृति नरोत्तम रूरे ।
तत्व स्वरूप अनन्य भने प्रभु सर्व प्रभा पुरुषारथ पूरे ॥ २४ ॥
बिधि रूप रचो रचना विधि सो हरि रूप प्रजे प्रतिपालत है ।
शशि सूरज रूप पकाश करें धरि रूढ़ स्वरूप सँधारत है ॥
शिव शक्ति विलास अनन्य भने मकरी जिमि जाल पसारत है ।
नहीं दूसरो कारन कारज में प्रभु आपुहि आप विहारत है ॥२५॥
आपुहि पूरन ब्रह्म अखंडित आपु भरे जग जीव विहारे ।
ज्यों निधि में लहरें लहरें निधि एक अनेक सुभाव सो धारे ॥
यों लहि भिन्न अनन्य भने अपकर्म्म के बंधन फंदन पारे ।
भेद कहा यह भेद कहें जुई वेद कहें सुई भेद हमारे ॥ २६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जनि वेद पुराननि में भरमो जनि संत असंतन सों उरझो।
जनि इन्द्रिन के वश भूलि रहो जनि राजस तामस सों खुरजो॥
लहि आतम ब्रह्म प्रमोद रहो जनि जीव दशा गहि के उरझो।
करि तत्व विचार अनन्य भने क्रम तें इन कर्म्मनि तें सुरझो॥ २७॥
चाहत कर्मनि तें सुरझो तौ तजो फल कर्मनि की अभिलाषो।
पूरन ब्रह्म लहो सबमें निज आपु में ईश्वर भिन्न न भाषो॥
बंधन मानि ना मुक्ति की आशा को पूरन ज्ञान सुधारस चाखो।
आपु अपान अनन्य भने करतूति सबे कर तापर राखो॥ २८॥
तनु गर्भ बनावत जन्म जनावत कर्म्म कमावत कै अपनो।
प्रति स्वांस खिझावत छुद्रि रमावत भक्ति पचावत है तपनो॥
दृग ज्योति जगावत रैनि सुआवत सुतनि दिखावत है सपनो।
करता करतूति अनन्य भने न करो कृत हौत कछू अपनो॥ २९॥
तारन बोरन बंधन छोरन मारन पालन हार रहे है।
सोषन पोषन तोष बितोषन दूषन भूषन लोक लहे है॥
रक्षन भक्षन यो सब लक्षन वेद विचक्षन टेरि कहे है।
कारन कर्म्म अनन्य भने सरवज्ञ मतें सरवज्ञ वहे है॥ ३०॥
वहे स्वरलोक वहे नरलोक वहे तरलोक अलोक भयो है।
वहे बन बाट वहे घर घाट वहै पुर हाट बिराट छयो है॥
वहै सब ठौरन दूसर औरु वहै सब कोटिक ठौर ठयो है।
व्यापक सर्व अनन्य भने यह भेद विचारत भेद भयो है॥ ३१॥

वाही की रैनि है वाही को वासर वाही की ग्रीष्म वाही को सावन।
वाही की शून्य है वाही की जोति है वाही की भूमि अकाश उपावन॥
वाही को माठ अनन्य भने बड़ छोट चराचर रूप उपावन।
वाही को कंस है वाही को कान्हरा वाही को राम है वाही को रावन॥३२॥
वाही स्वरूप को रूप सबे तव आपु कहा पर वाही रहे।
कहि काहि को देवन ध्यान करो तब होय इतें मन मारि रहे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तजि दूसरि मान प्रमान यहै भल कर्म्मनि तें अनचाह रहे ।
वह तत्व विचार अनन्य भने सबही पै दुरो अहि जाहिर है ॥३३॥
आवे सुगंध कुरंग की नाभि कुरंगन सो समझे मन माहीं ।
दूधहु धाई धरें सुरभी न सवाद लहै सुरभी तिहि ठाँई ॥
जान को सार असार अजान कों जाने विना सब बात वृथाहीं ।
ईश्वर आपु अनन्य भने इमि है सब में सब जानत नाहीं ॥ ३४ ॥
है सबमें सबही तें परें यह निर्गुण सर्गुण है गति जाकी ।
दर्पण ज्यों प्रतिबिम्ब धरे इतभास उतै अनभास प्रभा की ॥
ज्यों निधि एक अनन्य भने सो अनेक तरंगनि सोभ है ताकी ।
कारन कारज करतूतिहि भेद कथा कहि भेदनि भेदनि वाकी ॥३५॥
आपु निरीह निरंजन है अरु आपुनि राह समस्त में हे है ।
आप अभास प्रभास नहीं ससभा सकरादि न भास लहै है ॥
आपु अभेद निरागुण है गुण भेदनि में निरभेद रहे है ।
आपु अरूप अनन्य भने सब रूपनि को निज रूप वहे है ॥ ३६ ॥
रूप न रेख न भेद कछू सब रूपनि रेषनि भेष निरो है ।
जाति न पाँति न भाँति कछू सब जाति न पाँति न भाँतिन मोहै ॥
भेद न भाव प्रभाव गुने सब भेदनि भावनि सों मनु मोहै ।
ईश्वर ज्ञान अनन्य भने प्रभु एक अनेक यथाविधि सोहै ॥ ३७ ॥
एक कहों तो अनेक लहो जो अनेक कहों तौ एक सुभाऊ ।
रूप कहों निररूप लहों बिन रूप कहो सतरूप प्रभाऊ ॥
भेद अभेद कहे न बने पर भेदहू में है ताहि न पाऊँ ।
ईश्वर गाथ अनन्य भने न यहाँ न वहाँ सुकहाँ करि गाऊँ ॥ ३८ ॥
यह सर्व मई सरवज्ञ लहै करि पूरन सर्व कला करि के ।
उनि सर्व परे नहि जानि परे श्रुति गावत नेति थके अरि के ॥
सर्गुन निर्गुन भेद धरें प्रभु आपु अभेद रहे भरि कें ।
अनरूप स्वरूप अनन्य भने बिन रूप स्वरूपहि का करिकें ॥ ३९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूप अखंड कहो तौ विराट अनेक ब्रह्माण्ड परें तन तूरण ।
सूक्षम रूप कहौं तौ विराट न दृष्टि लहे है तहाँ मति कूरण ॥
दूरि कहो तौ अलेख अपार नजीक कहौं पल को पल दूरण ।
लाय के नेति अनन्य भने शिव शक्ति समस्त प्रभा परिपूरण ॥४०॥
सब परें वरनो तौ पर पर सर्व तरें तौ धरें धरशायक ।
सर्व अतीत कहौं तौ निरञ्जन सर्व गती सगुनो गुन नायक ॥
सर्व स्वयं सरवज्ञ अखंडित निर्गुन सर्गुन सर्व सथायक ।
सर्व प्रकाश अनन्य भने शिव शक्ति समस्त कला सब लायक ॥४१॥
बिन रूप निरूप रचे सबकों बिन थाननि देत सबे थुनियाँ ।
बिन पाइन पावन कोऊ जिन्हें बिन हाथनि हाथ धरे दुनियाँ ॥
बिन लोकनि लोक लियें सबही बिन दामनि मोल लयो मुनियाँ ।
बिन भासही भास अनन्य भने गुन निर्गुन गान करे गुनियाँ ॥४२॥
निर्गुन सर्गुन कौन गुने अनुरूप निरूप नहीं चित काया ।
लोक अलोक विलोक नहीं पुनि दूरि नजीक नहीं ठहराया ॥
अनिर्वचनीय अनन्य भने मुनि मूक सवाद मनोमय छाया ।
पूरन ब्रह्म सबे परिपूरन पूरन भ्यो हिति पूरन पाया ॥ ४३ ॥
देवनि में अनदेवनि में गनदेवनि में तत व्यापक है सो ।
तारन में अवतारन में नर नारिन में करता कृतिकैसो ॥
चेटिहू में अरु माटिहू में सबही में सदा जलपावन जैसो ।
करतूतिन भेद अनन्य भने ततरूप अभेदन रूपन ऐसो ॥ ४४ ॥
चैतनि में कृत चैतनि चैष्ट अचेतनो में जड़ता जनु जो है ।
देवन में कृत देव चरित्र अदेवनि में कृत विक्रम रोहै ॥
साधुनि में कृतयोग विवेक विषे न विषे विष में सुख मोहै ।
भेद अनन्य अनन्य भने सबमें सब शक्ति सबे बिधि सोहै ॥ ४५ ॥
वेद पुरान सिंगार कथा कविता सब ईश्वर के गुन जानो ।
चारिहू खानि चराचर जे नर नारिहू रूप स्वरूप सुजानो ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भावना सिद्धि अनन्य भने तजि दूसर भाव चहें उर आनो ।
पूरन ज्ञान विचार यहै मनुजाहि लगे सुख खोजि अमानो ॥ ४६ ॥
जानि वहै अपमें सब में समता मत में मन दीजतु है ।
शुभ कर्म दुनी विभचार सबे सहजें तनु धर्म्म धरीजतु है ॥
यह ज्ञानन रीति अनन्य भने कछू आपन मानिन लीजतु है ।
जग सागर सागर अर्पन ज्यों इनि शब्द सदा सब कीजतु है ॥४७॥
वह प्रीति नटी वृत्त नीति नटी अरु रीति घटी बहु राग मई ।
जनमान मिटी प्रभु कानि घटी उलटी बुधि बोधहि लीन भई ॥
विधि विश्व पिता पर जंतु जिते कन कंचन भूषन दृष्टि दई ।
शिवही शिव शक्ति अनन्य भने समता महि भक्ति समाइ गई ॥४८॥
पहिले तप तीरथ धर्म्म करे अरु संगति संतन की कर सो ।
पुनि भक्ति करे अवतारनि की अरु जोगनि जुगते करे सो ॥
फिरि आतम तत्व विचार करे तब पूरन ज्ञान प्रभा सरसो ।
क्रम सों इमि रीति अनन्य भने शिव शक्ति सदा सुख सो दरसो ॥४९॥
हरि में हर में स्वर में नर में गिरि में तरु में घर मंडित है ।
तन में मन में घन में जन में बन में घर में सुब्रह्मंडित है ॥
हम में सब में सुअनन्य भने परिपूरन ब्रह्म अखंडित है ।
सब अंगनि में सरवज्ञ वहै सरवज्ञ लहै सोई पंडित है ॥ ५० ॥

दोहा ।

सोई पंडित सुई सिद्ध है, सुइ दोनी सिरमौर ।
सर्व रूप ईश्वर लहै, रहै न दुबिधा और ॥ १ ॥

इति ज्ञानयोग पंचाशिका

सम्पूर्णम्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ विज्ञान बोध ।

छंद चौबोला ।

प्रथीचन्द्र नृपराज तुम्हारे ज्ञान सुनन की इच्छा ।
भाँति भाँति को ज्ञान जगत में सुनों हमारी शिक्षा ॥ १ ॥
एकै वेद पुराण शास्त्र सब व्याकर्ण काव्य पढ़ि जाने ।
नाना अर्थ कथानि को कहिबो यहै ज्ञान करि माने ॥ २ ॥
अंतर गति की खबरि नहीं बाहिर चातुरि विस्तारी ।
यहै ज्ञान नाहीं सुन राजा उद्यम गति संसारी ॥ ३ ॥
एकै छंदवद्ध कविता रचि ग्रंथ कवित्त बखाने ।
नाना उक्ति युक्ति को वर्णन यही ज्ञान करि माने ॥ ४ ॥
दातनि की किनकी की आशा प्रभु की आस विसारी ।
यही ज्ञान नाहीं सुन राजा उद्यम गति संसारी ॥ ५ ॥
येकै ज्योतिष गने मुहूरत लग्न गनोतर जाने ।
पूछहु तो बहु विधि मिलवत है यही ज्ञान करि माने ॥ ६ ॥
विधी मिले तो भीख मिले, नहिँ कहें कर्म्म गति न्यारी ।
यही ज्ञान नाहीं सुन राजा उद्यम गति संसारी ॥ ७ ॥
एकै साध स्वरोदय लावे स्वरभेदन मन लावे ।
जो कोइ आइ प्रश्न को पूछे स्वर को भेद बतावे ॥ ८ ॥
यह तो रीति सगुन पन कैसी जगत यहाँ सुखकारी ।
यही ज्ञान नाहीं सुन राजा उद्यम गति संसारी ॥ ९ ॥
एकै भूत वीर बस करिके यहै सिद्धि करि माने ।
खबरि मगाइ लइ इत उत की सबसों आप बखाने ॥ १० ॥
यहि विधि यतन लगावत जगमें आखिर कुगति विचारी ।
यही ज्ञान नाहीं सुन राजा उद्यम गति संसारी ॥ ११ ॥
एक लोग प्रयोग साधक है कहत सिद्धि कर देवे ।
क्यों न सिद्धि करि लिये आपको मिस करि धन ठग लेवे ॥१२॥
कहो सिद्धि किमि होत भगति बिन बेंचत इष्ट भिखारी ।
यही ज्ञान नाहीं सुन राजा उद्यम गति संसारी ॥ १३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एकै और कहाँ लों कहिये भाँति भाँति गुन लावे ।
अपनी अपनी गौंकी बातें, दातनि को भरमावे ॥ १४ ॥

यद्यपि है अति चतुर विचक्षण लोभ लहरि उरसानो ।
तासों तिनसों ज्ञान न हिये करता को नहिँ माने ॥ १५ ॥

जग मिथ्या करतार सत्य है ज्ञान कहत है तासो ।
जग प्रपंच में भूलि न रहिये सुरति बाँधिये तासो ॥ १६ ॥

दुख सुख हानि लाभ संसारी होनी होइ सुहोई ।
मन बच कर्म्म विचार चित्त में सुरति राखिये सोई ॥ १७ ॥

यही ज्ञान यह भक्तियोग है सुमिरन सुरति लगावे ।
विनसे वाको करे राजसुख करनी को फल पावे ॥ १८ ॥

तपतें राज राज तें नर्कहु कहत मूढ़त मति वारे ।
क्यों न युधिष्ठिर गये नर्क कों देह सदेह सिधारे ॥ १९ ॥

पाप धर्म्म तें स्वर्ग नर्क गति बरनत वेद पुराना ।
राजा रंक अतीत यहीं को करनी फलत निदाना ॥ २० ॥

आतमब्रह्म सकल घट देखे दया भाव की पूजा ।
शब्दब्रह्म को साधन करिये जासम और न दूजा ॥ २१ ॥

आतमब्रह्म अंध पुनि कहिये शब्द ब्रह्म है पंगा ।
कारज तबही होइ राज पुनि जुरे दुहुनि को संगा ॥ २२ ॥

शब्द ब्रह्म आत्म ब्रह्म सों जोग मिले तो जोगी ।
नातरु पशु पक्षीनि बराबरि खान पान रस भोगी ॥ २३ ॥

नर देही को फल यह राजा ! शब्द ब्रह्म आराधे ।
और सकल संसारी कारज धर्म्म नीति सों पागे ॥ २४ ॥

जो कोइ आप आकरि आवे बनि आवे सो दीजे ।
जो कोइ आप लगे लटे तौ दया सबनि पर कीजे ॥ २५ ॥

तनकर मनकर वचन कर्म्म कर दुःख न काहू देनो ।
सौ बातनि की बात एक है नाम धनी को लेनो ॥ २६ ॥

अक्षर अनन्य देत सिख पूरी बड़ो ज्ञान गुरु अर्चा ।
प्रथीचन्द नृप राज जानिये या सम और न चर्चा ॥ २७ ॥

इति विज्ञान योग सम्पूर्णम् ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ विज्ञानबोध ।

प्रथी चन्द्र नृपराज आपसेा ज्ञान कथा हम भाखें ।
भाँति भाँति संबोधन करिकें संभ्रम कछू न राखें ॥ १ ॥
अपनेा पक्ष महातमही को सब कोई ज्ञान सुनावे ।
तत्व ज्ञान हम सेा सुन राजा यथा वेद समझावे ॥ २ ॥
तत्व एक चैतन्य सनातन निर्गुन सगुन न सोई ।
उत अभास इत भास जानिये नृप दर्पणगति जोई ॥ ३ ॥
निर्गुन ब्रह्म अखंड सदा शिव परम जेाति गुर जेावे ।
सर्गुन ब्रह्म आदि नारायन क्षीर समुद्र हि सेावे ॥ ४ ॥
नारायण की नाभि कलम तें उपजे आप विधाता ।
तिन अपने मन की इच्छा तें प्रगट किये सुत साता ॥ ५ ॥
तिनके बेटा नाती संती पंती बढ़ि संताना ।
भयेा जगत परिवार परस्पर सात गेात्र परमाना ॥ ६ ॥
बाप अजा परपजा खेाजि कें नमल तमल जेा देखें ।
सप्तरिषिन मिल नारयन लै सब की नसल विशेखें ॥ ७ ॥
नसल मांहि संदेह नहीं नर भयेा कुसंगति कच्चा ।
परस्वारथ की खबरि न जाने नारायन को बच्चा ॥ ८ ॥
पांच सात दस साखि खेाजि कें सब कोई साखि बखाने ।
उन पुरिखनि की खबरि भूल गे तातें फिरत दिवाने ॥ ९ ॥
कौन कर्म्म कीन्हे उन पुरिखन कौन कर्म्म ठहराये ।
ते शुभ कर्म्म सुने नहि समुझें मिथ्या कर्म्म उपाये ॥ १० ॥
जेा पंडित को नातो बेटा जाति वर्ण कुल सोई ।
बिन पंडित की विद्या जाने क्यों पंडित पद होई ॥ ११ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जो गुरू पास पढ़े कोई विद्या सो पंडित पद पावे ।
ना तर खेती वणिज चाकरी नीच कर्म्म उपजावे ॥ १२ ॥
त्योंही नारायण कुल जन्मो परो अविद्या माँही ।
नारायण की राह लहे तौ नारायण को आही ॥ १३ ॥
नारायण की राह लहे बिन वृथा जन्म नर देही ।
भ्रमत फिरत जैसे पशु पक्षी कह अतीत कह गेही ॥ १४ ॥
गेही लोग ज्ञान यह समझें खेरो खूंट बतावै ।
ब्राह्मण क्षत्री वैस्स शूद्र अरू अंतिज जाति कहावै ॥ १५ ॥
सोनो गढ़े सुनार कहावे लोहा गढ़े लुहारा ।
तेल पिरंता तेली कहिये यो जग जाति विचारा ॥ १६ ॥
वेद साखि कुल जाति न बूझत नहि पूरो गुरु पायो ।
जगत भगत निज जाति भूलिगे मन सुख संभ्रम छायो ॥ १७ ॥
जैसे एक बाघ को बच्चा डरो गडरिया पायो ।
जाति कर्म भूलो कुल अपनो गाडर नाम धरायो ॥ १८ ॥
चरे पिये गाडर संग डोले, देखि गडरिया कंपे ।
सिंह प्रभाव कछू नहि जाने दातनि मासनि खेंचे ॥ १९ ॥
एक दिना बन चरत फिरत में तहाँ बाघ यक गाजो ।
भजो गडरिआ लै सब गाडर तिही संग वह भाजो ॥ २० ॥
तब वह बाघ बाघ कहँ देखो आपस मानहि सोहै ।
गाडर भजो पकरि तेहि पूंछे कहे बाघ तैं को है ॥ २१ ॥
तब वह बाघ बाघ नहिं जाने गाडर ओक बतावे ।
बिन देखे बिन सुने कहै को देखे सो कहि आवे ॥ २२ ॥
तब वह बाघ बताइ आप गति जानि बरन समझायो ।
भयो बाघ को बाघ गयो भ्रम तब अपनो पद पायो ॥ २३ ॥
त्यों जब जीव अंश ईश्वर को परो अविद्या माहीं ।
मानि रहो भ्रम जाति वर्ण कुल आपहि जानत नाहीं ॥ २४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बाघ समान मिले जब सद्गुरु तब सब भरम भगावे।
हरे अविद्या विद्यमान हो जीव ब्रह्म पर पावे ॥ २५ ॥

जीव ब्रह्म निज जाति एक है यह संदेह न मानो।
मिलें अविद्या जीव भयो मिलि विद्या ब्रह्म बखानो ॥ २६ ॥

विद्या नाम पढ़न को नाहीं नहिं पोथी न पुराना।
जैसे कों तैसो ही समझे यही विदित विज्ञाना ॥ २७ ॥

अक्षर अनन्य देत सिख पूरी यहै ज्ञान गुरु अर्चा।
प्रथीचन्द्र नृपराज जानिये या सम और न चर्चा ॥ २८ ॥

इति विज्ञानबोध सम्पूर्णम्

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परमाल रासो

(१) चन्दब्रह्म उत्पत्ति खंड ।

दोहा ।

गनपति गनपतिमात[1] के, वंदौं चरन उदार ।
जिनकी किंचित कृपा तें, बाढ़त बुद्धि[2] अपार ॥ १ ॥
बिधि अंकज उपदेस दिय[3], रघुपति जस जग गाव ।
तब गणपति गिरिजा सुमिरि, बालमीक मुनिराव ॥ २ ॥

चौपही ।

बालमीक रामायन किन्नव । व्यास साष भारथ महँ दिन्नव ॥
तिन कृत ग्रंथ लोक बस एसह । तब प्रसाद प्रभु गौर गनेसह[4] ॥३॥

दोहा ।

भारथ किय भुवलोक महँ, गनतिय लक्ष प्रमान ।
चाहुवान जस चंद कवि, किन्हिय ताहि समान[5] ॥ ४ ॥
दुरजोधन अवतार नृप, सत साँवत सक-बंध ।
भारथ सम किय भुवन महँ, तातैं चंद प्रबंध ॥ ५ ॥
चारी गन विधि से सरस, तँवर राज के पास ।
जग जोती रँग जोति हर, व्यास जोति अघनास ॥ ६ ॥
चार जोति जग ऊपजी, विद्या विमल अपार ।
पारासर सुत व्यास लिय, चार कला अवतार ॥ ७ ॥
ससा-हिरन-रिपु सकुन- रिपु, लिन्निय स्वान अपार ।
अनँगपाल उत्तर दिसा, खेलन चल्यौ सिकार ॥ ८ ॥

---

(१) गंगा गौरि । (२) ग्रंथ । (३) बुद्धि अकथ करि कै सोई । (४) भारत किय भुवलोक प्रवेसह । (५) दिन्नव ताइ प्रमान ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरवर तीर तरंगिनी , कानन भीम लखाय ।
जहाँ बसै मृगराज बन , तहाँ गये नृप राय ॥ ९ ॥
जत्र तत्र पादी खड़े , मृगया दई विसारि ।
भयो इक आचर्ज बन , भूपति नैन निहारि ॥ १० ॥
लघु छौना ही कर दियै , भेड़ भूम बल धार ।
अष्ट बाघ आहुर रहे , अष्टौ देति बिड़ार ॥ ११ ॥

चौपही ।

मृगनिय क्रोध अधिक उर धारहि । अष्ट बाघ अति भीम बिड़ारहि ।
फेर मोह करि तूरन धावहि । छौना छोट सोंघ सह लावहि ॥ १२ ॥

दोहा ।

देखि राज बिसमित भयौ , व्यासहि लीन बुलाइ ।
भेड़ लरै क्यौं व्याघ्र सौं , कहौ बैन दुजराइ ॥ १३ ॥
लखि विक्रम बन भेड़ कहँ , म्हाँ चरित्र चित पाइ ।
इक जाम आहुरि रहिय , बाघ बिमुख हो जाइ ॥ १४ ॥

दोहा ।

सेस नाग के मथ्थ पर , भेड़ भूरि बल धारि ।
अष्ट बाघ केतिक सुनृप[1] , लक्खन देहि बिडारि ॥ १५ ॥
दीन भेड़ अहिराज प्रभु , आपु सरन दिय डारि ।
फूतकार किय अंच दिय , आठौ बाघ बिडारि ॥ १६ ॥
उत्तमांग नहिं सिंधु लिय , करत न तीच्छन दंत ।
करैं पलायन सेस बल , मृग जूहन के कंत ॥ १७ ॥
अद्य मंथ अहिराज कौ , सत्त गज्ज पर सोइ ।
अनँगपाल नृप व्यास कौ , सुनौ बैन चित लोइ ॥ १८ ॥
अनुग भेजवहु दो सहस , खनिक पहुंचै आइ ।
हुकुमु कियौ महाराज नै , पान दये सुखु पाइ ॥ १९ ॥

---

(१) अष्ट बाघ सोहै कहाँ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्त गज्ज भुव खनिक खनि , अनँगपाल सुख पाय ।
सोधि बनावेा सुभ घरी , व्यास बचन चितु लाय ॥ २० ॥

चौपही ।

सत्त सेर नृप लोह मँगायव । लोहकार दह छिप्र बुलायव ।
बन्हि बारि घन घननि गढ़ाइय । पंच हत्थ नृप कील बनाइय ॥२१॥

दोहा ।

पंच हथ्थ नृप कील लै , दीन्ही घनन गड़ाइ ।
सेस नाग के मत्थ में , अंगुल तीस समाइ ॥ २२ ॥
गड़िय घनन जंघान करि , व्यास बचन नृप लीने ।
ग्यायस किय तीक्षन अनिय , सेस मत्थ अगभीन ॥ २३ ॥
व्यास वदति नृप कील यह , सेसनाग के मत्थ ।
अद्य राजनी दीजिये , कीजे राज अकत्थ ॥ २४ ॥
वदति व्यास छलु होहिगै , सुनहु तँवरि नृपराय ।
जौ आयस करि चतुर मुख , तौ न कील उचकाय ॥ २५ ॥
येह वचन बर व्यास कहि , गयेा आपु घर सोय ।
रितुवंती[1] ताही समय , भइय आनि घर जोय ॥ २६ ॥
होनहार को मिंटियव , वदति चंद बरदाय ।
रचि रक्खिव करतार जो , ताकौ कहा उपाय ॥ २७ ॥
रामचंद्र त्रैलोकपति , कनक कुरंग न मानि ।
बावन बल नहिं जानियेा , भावी बड़ी बखानि ॥ २८ ॥
सेसनाग तक्षक अनुज , लीन्हौ आसु बुलाय ।
कील उचक्कै सीस मेा , सेा तू जतन कराय ॥ २९ ॥

चौपही ।

सुनहु अनुज तच्छक चितु लाइय । लोह कील मेा सीस समाइय ॥
सामादिक सेा जतन कराइय । जातें कील उचक्के भाइय ॥३०॥

---

(१) हिमवंती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

सेस बंधु सह विनय करि, तक्षक जू सुख पाय ।
कील उचक्के आसु सो, जतन करौ चितु लाय ॥ ३१ ॥

वाचनीक । तब सेसबंधु कह विनय करि तक्षक विप्ररूप इंद्रप्रस्थ पहुँचे ।

दोहा ।

धरयो रूपु वर विप्र कर, बानी सरल उचारि ।
अनहोनी कलि होत है, छलौ तँवर निरधारि ॥ ३२ ॥
वैन हारि अहिराज सह, तक्षक जू सुख पाय ।
हाथ पत्र लिय सिर जटा, बाड़व भेष बनाय ॥ ३३ ॥
उज्जल धोती माल उर, चरण पाँवरिय धारि ।
बृद्धरूप हो चालिया, चारि वेद उच्चारि ॥ ३४ ॥
पढ़त वेद बानीन सह, सब विद्या अवगाहि ।
घनै जनै नंकत गयौ, जहाँ तँवरपति आहि ॥ ३५ ॥
राजा कहँ तक्षक लख्यौ, मनौं भूमि मह लेषि ।
उच्च पान करि वेद पढ़ि, आसिष दये असेष ॥ ३६ ॥
तँवरराज दंडवत करि, दिक्खि विप्र सुख पाय ।
इच्छा भोजन दान बहु, मंगौ जो मन भाय ॥ ३७ ॥
बदति विप्र नरराज सुनि, मंगहु जो मन होहि ।
इक बत्त बिस्मित सुनी, सो पुंछहुँ नृप तोहि ॥ ३८ ॥

चौपही ।

राजा बोलि सुनहु दुजराइय । कवन बात बिस्मित चित आइय ॥
सोइय अद्य बत्त उच्चारहु । संक होति मानस मम टारहु ॥ ३९ ॥

दोहा ।

तब बाड़व इमि बुल्लियव, सुनु नृप बात अकथ्थ ।
कील गाड़ि क्यौं माझ कलि, सेस नाग के मथ्थ ॥ ४० ॥
बदति बत्त सो मंत्र सम, म्हाँ उर महँ धरि रक्खि ।
सुन दुज इहि कलिकाल महँ, व्यास झूठ नहि भक्खि ॥ ४१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

म्हा विद्य पढ़ि संसकृत, जोतिष गुन समुदाय ।
सेस सीस जो कील यह, तौ मम मथ्थ कटाय ॥ ४२ ॥

पंच मनै दुज कढ़िढतकै, दिज्जव जैत लगाय ।
सेस मथ्थ जौ कील यह, तौ मम ग्राम खपाय ॥ ४३ ॥

सुनत भूप दुज के बचन, लिन्हिय कील उखारि ।
स्रवत स्रोन राजा लख्यौ, तब काढ़िय तरवारि ॥ ४४ ॥

कढ़िव कोस तैं खड्ग वर, भूपति चित रिस ल्याइ ।
लखन न पायौ नैन भरि, भूतल गयव समाइ ॥ ४५ ॥

तँवरन कौ दिन पलटियौ, लिन्हिय कील उचाय ।
उठो स्रोन जलजंत सम, धार अखंडित आय ॥ ४६ ॥

सूर चंद उड़गन उगे, शब्द होत आघात ।
व्यास वदति दिल्लिय नगर, हौन लगे उतपात ॥ ४७ ॥

सर्पराज छल करि गयौ, तँवरराज सह आस ।
उच्च वैन धावा करैं, आइ गये तब व्यास ॥ ४८ ॥

भूलि गये थाँकौ वचन, राजत श्री अनुरत्त ।
तँवरराज विसमित भयौ, कहिय व्यास सह बत्त ॥ ४९ ॥

सुनहु भूप तक्षक छलिव, करिव बंधुकर श्रेय ।
भागि गयौ था पावतौ, तुंडिक ज्यौं गहि लेय ॥ ५० ॥

जनमेजय मख मंडि महि, तात वैर चित लाय ।
बम्हन के मंत्रन परै, अगिन कुंड अहि आय ॥ ५१ ॥

भज्जि कुटिल सुरपुर गयौ, सुरपति सदन सहाय ।
सो तक्षक वासव सहित, बम्हन लये बचाय ॥ ५२ ॥

कस्यप ऋषि तैं ऊपजे, यह जानत बुध लोय ।
सर्प तेज आधिक्क क्यौं, ब्रह्मतेज तैं होय ॥ ५३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

तँवरराज बुल्लिव इमि बानिय । भा श्रीमत्त बत्त नहिँ जानिय ॥
अब विरथा उपचार बतावहु । जातें भां दूषण भुव जावहु ॥ ५४ ॥

दोहा ।

तँवरराज बहु मोह करि, सोक वोक उर आनि ।
संबोधन हित तासु के, व्यास भविष्य बखानि ॥ ५५ ॥

बाचनीक । अथ तँवरराज सह व्यास भविष्य कहत हैं ।

चौपही ।

व्यास वदति सुनिजै नृप राइय । गयव राज तुव वंस न आइय ॥
अब भुव चाहुवान नृप होइय । पीछै तुरक कहत बुध लोइय ॥ ५६ ॥

दोहा ।

चाहुवान चंदेल सह, ह्वैहै समर अगाह ।
श्रोणित की सरिता बहै, भूतल भूर प्रवाह ॥५७॥
चाहुवान चंदेल लरि, राजु जाइ बिय खोय ।
ता पीछैं कवि कतह यह, भुव तुरकाना होय ॥५८॥
तँवरराज कर जोर कह, हम नृप नीति प्रमत्त ।
गयव राज्य भुव जानि कछु, कहि आगम की बत्त ॥५९॥
द्वापर गत कलि आदि महँ, पुहुमिय करी पुकार ।
तब संबोधन विधि करी, चाहुवान अवतार ॥६०॥
चाहुवान चंदेल सह, झरय परसपर सार ।
इक भाग तुव भूमि सुनि, ढरय सीस कौ भार ॥६१॥

चौपही ।

सत सांवत पीथल के संगह । महा विक्रमिय दानव अंगह ॥
उत चंदेल सूर अधिकारिय । बल्ल सल्ल करता अवतारिय ॥६२॥

दोहा ।

कवन वंस चंदेल नृप, व्यास सुबुद्धि उदार ।
कवन वंस महँ अवतरे, बल्ल सल्ल अवतार ॥६३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम भूमि की विनय सुनि, तौं वर पति अवतंस ।
महा धर्म्मधारी मही, फिरि बुल्लिव त्रय वंस ॥६४॥
पीत वरण आरक्त खुर, सिर सिंगुल सुकुमार ।
कमलासन के अग्र अरि, गो गोरूप पुकार ॥६५॥

चौपही ।

तारक मयसुत जुग संगर करि । कालनेम गहि चक्र हते हरि ॥
त्रेता राम भीम करि रारिय । कुंभकरण रावन रन मारिय ॥६६॥
द्वापर तँवर पंडुदल कट्टिय । जादव कट्टि भारु सिर घट्टिय ॥
अब कल साँस लेत अधिकरिय । भूमि भागि विधि अग्ग पुकारिय ॥६७॥

दोहा ।

कलिजुग अति पातिक भये, यह भवसिंधु अपार ।
चतुरानन सुनि चतुर चित, मम सिर भार उतार ॥६८॥

पायाकुल ।

बल्लि सल्लि अवतार रूप जनु मार है ।
प्रगट बनाफर आल्ह उद्द अवतार है ॥
प्रथियराज चहुवान महोबे आईहैं ।
करि खग्गन के ख्याल खलक्क खपाइहैं ॥६९॥
नृत्य करै शिव आय हार उर कह करै ।
श्रोणित सरित अपार सुजुग्गिन गन अरैं[1] ॥
बांहहि अत्र अपार चँदेले वीर हैं ।
पछिल न धारहि पाँय महा रनधीर हैं ॥७०॥
छत्रसाल सकतेस दुरज्जन वीर हैं ।
चक्रपान गहिलौत दला रनधीर हैं ॥
दशहर के जुग पुत्र अत्र कर धारिहैं ।
पर्वत से अति उच्च करी रण मारिहैं ॥७१॥

(१) जल भरैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलहिं कलापि कमान चलत घन बान हैं।
परत सत्रु रणभूमि फुट्टि किकियान हैं॥
विय भारथ भुव होइ देवगन हर्षिहैं।
परिय नृत्यमन मोद सुमन गन बर्षिहैं॥७२॥
इक्क भाग भुव भार बंध जुग ढारिहैं।
त्रतिय भाग निकलंक कुप्पि उत्तारिहैं॥
ब्रह्मवचन सुनि भूमि चलिय निजु धाम कौ।
मम सिर उतरे भारु धरौं तब नाम कौ॥७३॥

दोहा।

चाहुवान सम्हर-धनिय, अरु अल्हन अरि कट्टि।
भूतल सुन तव भार कहँ, इक्क भाग लिय बट्टि॥७४॥
संबोधन पय उदधितट, सुनु मंगल की माय।
चतुरानन उर धरि वचन, गइय मोद मन पाय॥७५॥
भूमि बत्त रगजोति कहि, तँवरराज सह आइ।
सुनहु श्रवन त्रय बंस अब, पूरब कथा सुनाइ॥७६॥
प्रथम गोड़ ककाशी नृपति[1], गहिरवार फिर होइ।
ता नृपकैं प्रोहित भयौ, हेमराज कहि सोइ॥७७॥
ता दुजवर की कन्यका, प्रगटे बंस चँदेल।
बल्ल सल्ल अति दास होय, करैं जुद्ध असि खेल॥७८॥
तँवरराज बिसमित भयव, फिरि पुंछिव रगजोति।
ब्रह्मन तैं छत्रियन की, कैसे उतपति होति॥७९॥
बाड़व दोनो पक्ष कहि, अनँगपाल भुव राव।
कैसव छत्रिय होत हैं, सो संजोग सुनाव॥८०॥
व्यास वदति नृपराज सुनि, मानस चित्र न मान।
जो देवा आयस करहि, सोइय बरन बखान॥८१॥

---

(१) प्रथममेव पुनि गौड़ नृप।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहिरवार को वंस सुनु, तँवरपत्ति चितु लाय ।
फिरि चँदेल उतपत्ति किय, कथा कहौं सब गाय ॥८२॥
गहिरवार कासिय भयव, तासु नाम दुज गाय ।
तासु वंस के नृपति कहि, फिरि चंदेल सुनाय ॥८३॥
गहिरवार काशिय भयव, करमचंद भुवपाल ।
जिहि के राज प्रजा सबै, बसै करै सुख जाल ॥ ८४ ॥

भुजंगी ।

महा धर्मधारी करमचंद भूपं । तिनक्कै रनंसिंघ मनमथ्थरूपं ॥
रनंसिंघ पुत्रं नरंनाथ शूरौ । भयौ पुत्र तिनके जयस्सिंघ रूरौ ॥ ८५ ॥
जयस्सिंघपुत्रं जगन्नाथ रायं । जपौ रत्नदुर्गं सुरीमा छिड़ायं ॥
तिनक्कै भयौ पुत्र नरसिंघ राजा । लई जीति माहिष्मती गौड़ भाजा ॥८६॥
तिनक्कै हरीसिंघ आनंदकारी । भयौ पुत्र महराज मानहु मुरारी ॥
तिनक्कै भयौ इंद्रजीतं भुवालं । जिन्हें बिंध देवी दियौ दर्श हालं ॥ ८७ ॥

दोहा ।

तिन राजा कैं विप्र हुव, हेमराज सुखदाय ।
ताकै एक सुता भई, मनहु सुकेसी आय ॥ ८८ ॥
कासी कल भय कन्यका, हेमवती धरि नाँव ।
अति सुन्दर तनु चित्रनी, सोभत सील सुभाव ॥ ८९ ॥

चौपही ।

हेमवती बर सुन्दर नारिय । गहिरवार नृपराज सँवारिय ॥
ग्रीषम रितु अस्नान जु किन्निव । कुमुदबन्धु तब दरसन दिन्निव ॥९०॥

दोहा ।

कुमुदबंधु दरसन दये, हेमवती कहँ आय ।
सिथिल अंग कंपित तिया, ताहि सुदिक्खि लजाय ॥ ९१ ॥
गुलक विराजत कर्ण महँ, शीरष शुभ दनियार ।
हर चंदन कौ तिलक बर, उर सुमनन के हार ॥ ९२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाराच ।

गुलिक्क कर्ण राजही । बिसद्द हार साजही ॥
पदिक्क सीस शोभयं । रिषीस पुंज लोभयं ॥ ९३ ॥
बिहस्सि खिस्सि सुंदरी । करी सु इक्क अंगरी ॥
सरीर भोग कीन्हयं । चलन्न चित्त दीन्हयं ॥ ९४ ॥
पुकारि बुल्लि नीरियं । सराप भा सम्हारियं ॥
मुरक्कि बुल्लि चंदयं । करत्ति या अनंदयं ॥ ९५ ॥
सराप मो न दिज्जियं । कुमार राज किज्जियं ॥
धरा बिलास भोगियं । सरीर स्यौं अरोगियं ॥ ९६ ॥
सहस्त साष भूपयं । करै सु राज रूपयं ॥
बिचारि नारि नित्तयं । सराप मुंचि चित्तयं ॥ ९७ ॥

दोहा ।

यह कहि करि द्विजराज चलि, फेरि रोकि कहि नारि ।
म्हा कलंक को मिट्टइय, उड़पति कहहु बिचारि ॥ ९८ ॥
प्रतिउत्तर उड़पति न दिय, त्रिया क्रोध मन मानि ।
जनु तनु धरि दामिनि दवरि, गहिब कंत कव पानि ॥ ९९ ॥

अंतर कथा । वाचनीक । राजा व्यास कहँ पूछी के वह संजोगिनी वियोगिनी हती, अरु कौन समै शशि भोगई सेा कथ्यते ।

दोहा ।

कितिक वर्ष महँ कन्यका, पति किय के पतिहीन ।
कौन काल शशि भोगई, कहि जग जोति प्रवीन ॥ १०० ॥

चौपही ।

षोडस बर्ष सुता तब भई । इंद्र श्राप ते विधवा भई ॥
सुक्र मास गरमी तन आइय । निसि अस्नान करत सुखदाइय ॥१०१॥
दिक्खि कलानिधि काम सताइव । उतरि तासु कहँ कंठ लगाइव ॥
चारि जाम जामिनि रितु मानिय । देव तेज त्रिय कछुव न जानिय ॥१०२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

उदधिनंद रितु दै चलिव, धरिव धाइ तिय हथ्थ ।
मोहिँ कलंकित करि चलिव, लै सराप समरथ्थ[1] ॥ १०३ ॥

हनूफाल ।

दुजकन्यका तब आय । दुजराज कर गहि धाय ॥
तब कहिय को तूँ आइ । अपराध मो तन लाइ ॥ १०४ ॥
बिन नाथ की मैं दीन । विधवा सु वपुष नवीन ॥
जगसिंधु घोर अपार । ता मद्धि मो तनु डारि ॥ १०५ ॥
अब कवन कढ्ढत तीर । भँजि जात अधम सरीर ॥
कातिक्क माह अन्हाउ । तजि अन्न फल भख पाउ ॥ १०६ ॥
भा करत तुरत उपाउ । गौतम सुत्रिय नहिँ आउ ॥
सुनि डरपि बुल्लिव चंद । रजनीस आनँदकंद ॥ १०७ ॥
बुल्लिव सुता सह बत्त । तिय पुन्यतम अनुरत्त ॥
शुभ कर्णवति कैं तीर । तुव पुत्र होय सुबीर ॥ १०८ ॥
षज्जूरपुर फिरि जाय । दिय दाय जज्ञ कराय ॥
हय गय सु सुभट समाज । करिहै महोबै राज ॥ १०९ ॥
सजि सैन चलि चतुरंग । पर पुंज कर सर भंज ।
बड़ भूप करि करतार । जाकी न पारावार ॥ ११० ॥
पुनि परस मुनिवर पाय । आयस सु स्वर्ण कराय ॥
रचि देव देवल जाल । षणि षणिक दीरघ ताल ॥ १११ ॥
फिरि रचि कलिंजर दुर्ग । नर तजत तनु लहि स्वर्ग ॥
तनु तज कलिंजर बीच । अपवर्ग पावहि मीच ॥ ११२ ॥
बामां सु बत्त उचारि । रौरव सो मो तनु डारि ॥
भुव पुत्र करिहै राजु । म्हां कह तु नर्क समाजु ॥ ११३ ॥
तुव दिष्ट कुटिल कराल । म्हां परिग सोक बिसाल ।

(१) मम मथ्थ ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुहि देत तुरत सरापु । सठ बुद्धि पापिय पापु ॥ ११४ ॥
तब कहिय जामिनिकंत । यह लिखिय तिय बरतंत ।
मिटि भविष बत्त न जाइ । तुव पुत्र भुवपति राइ ॥ ११५ ॥
तुव केतु जामहँ जाइ । सेा बत्त देत सुनाइ ॥ ११६ ॥

दोहा ।

षोडस बरष कुमार तब , होइ भूर बल दाय ।
भांड्य जज्ञ करि भूमि तल , पातक पुंज बहाय ॥ ११७ ॥
तब उडपति उपदेश दिय , ता तिय कहँ भय आस ।
जब जब थां पाठन करहु , तब तब ऊ भा पास ॥ ११८ ॥
तब उड़पति यह बत्त कहि , मेा मतु बनिता मंडि ।
कालिंजर कहँ जाहु तुम , तुरत पुरी यह छंडि ॥ ११९ ॥
घनैं दिना बिलमैा न तिय , कालिंजर के तीर ।
कछुक काल रहि जाइयेा , कर्णवती कहँ वीर ॥ १२० ॥
आसमुद्द लगि राज करि , बदति बत्त बिधु सेाइ ।
हेमवती तुव पुत्र बड़ , छैानी छत्रिय हेाइ ॥ १२१ ॥
यह कहि करि उड़राजजू , भये सु अंतरध्यान ।
हैमवती बिधु कंत की , कीनी मंत्र जुबान ॥ १२२ ॥

चौपही ।

काशिय तजि कालिंजर आइय । चार मास तिय तहँ बिलमाइय ॥
करि तीरथ अस्नान सुहाये । पुत्र काज सब देव मनाये ॥ १२३ ॥

दोहा ।

छंडि कलिंजर सुंदरिय , गइय धाम इक सेाय ।
रहिय ग्रामपति सदन महँ , भयेा पुत्र इक जेाय ॥ १२४ ॥
दीपति उपजी देह की , मानहु विधु बिय हेाय ।
पाहर निशा रहि प्रात की , सेामवार गन सेाय ॥ १२५ ॥
माधव सुदि एकादशी , चंदब्रह्म नृप हेाय ।
अन्तरिक्ष आनंद बजि , सुरतिय मंगल जेाय ॥ १२६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बर्षत कुसुम विमान चढ़ि , सर्बेसुर समुदाय ।
गान करैं किन्नर सुखद , महा मोद सुख पाय ॥ १२७ ॥
छीर बही भूतल नदी , त्रिबिधि चले पवमान ।
हेमवती सुत जाइया , जाहिर सकल जहान ॥ १२८ ॥
हेमराज की सुता कहँ , सगुन भये अधिकाय ।
बायीं दृग फरकंत अति , आइ गये निशिराय ॥ १२९ ॥
गुरस्यौ बहु सुर आइयौ , किन्नर गम किय गान ।
हेमवती पाइन परी , निशिपति कहिय जुबान ॥ १३० ॥
हेमवती तुव पुत्र बड़ , भूपति याहि निहारि ।
सहस साष लगि राज्य करि , द्वीतादिक तजि चारि ॥ १३१ ॥
बिस्वा बारुनि ब्रह्म हति , द्वीत करें नहिं कोइ ।
राज्य भूमि तल बंस मैं , सहस साषि लग होइ ॥ १३२ ॥
जनम पत्र सुरगुरु लिखिव , सुरतिय मंगल गाय ।
बंचि अंगिरा पुत्र तब , सब कहँ दीन सुनाय ॥ १३३ ॥

छप्पय ।

बज्जे देव निशानि जनमपत्रिय गुरु बंचिय ।
कुसुम वृष्टि भुव परति मोद अक्षरि जुरि नंचिय ॥
भयव बंस कुल चंद पंथ सतजुग्ग चलावहि ।
आसमुद्र लगि राज करहि कबि कोबिद गावहि ॥
जज्ञ दान अर्बुद अवनि परमेस्वर पावन सुध्रुव ।
बिय चंद आप षर्जूरपुर चंदब्रह्म भुवपाल हुव ॥ १३४ ॥

दोहा ।

यह कहि कै गुरुदेव सब , गये आपने धाम ।
चंदब्रह्म दिन दिन दिपै , मानहु भूतल काम ॥ १३५ ॥
भयो कुँवर षोडस बरष , गय केदार सम्हार ।
लरिव आनि इक बाघ बर , लयौ उपल इक मार ॥ १३६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वादस हथ्थ मयंद वर , भिंडपाल लिय मारि ।
जब बहु कर सिंघिनि गहै , को जित्तै नृप नारि ॥ १३७ ॥
ग्रामपत्ति केदार तैं , चल्यो कुँवर चितु लाय ।
पहुंच्यौ आनि षजूरपुर , अप आलय कहँ आय ॥ १३८ ॥
हेमवती मिलि सुवन कहँ , उर आनंद बढ़ाइ ।
पठन करच्यो ता मंत्र कौं , निशिकर पहुंचे आइ ॥ १३९ ॥
चुंमि बदन बिधु पुत्र कर , नर बाहन बुलवाय ।
पारस मनि स्यौं ल्याइयौ , चंदब्रह्म थपि जाय ॥ १४० ॥

चौपही ।

सब सेना सह धनपति आयव । किन्नर गान करत रव छायव ॥
नचत मैनका सी तहँ नारिय । आनँद बजत मोद अधिकारिय ॥१४१॥

दोहा ।

हेमवती बिधु मोद मन , फल दल जल बहु साज ।
सब देवन मिलि कैं दयो , चंदब्रह्म कहँ राज ॥ १४२ ॥

चौपही ।

जीव जीव धनपत्ति सुहाइय । बैठ ठाढ़ इक मंत्र कराइय ॥
चंदब्रह्म बर कुँवर बुलावहि । राजनीत त्रयदेव सिखावहि ॥४३॥
कुबिज खंज अरु स्यामदंत नर । कोढ़ी कुटिल बधिर बावनतर ॥
माठापत्ति मंद अति होइय । काना पुरुष बिलोकव कोइय ॥१४४॥
बिलखिय पति बिस्वा कर साइय । धूत मित्र पाँवर अधिकाइय ॥
सुनु बर कुँवर सिखावन लिज्जे । ये नर निकट न आवन दिज्जे ॥१४५॥
इनके संग भाग मति जाइय । कोविद कहत पुरान सुगाइय ॥
कबि कोबिद भाषत सब लोइय । इन सतसंग कुसल नहिं होइय॥ १४६॥

श्लोक मत्स्यपुराणे ।

शतं खञ्जेषु कौटिल्यं सहस्रं बन्धराधयोः ।
कुब्जवामनयोर्लक्षं काणे संख्या न विद्यते ॥ १४७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

कवि कोविद रख्यहु वर लेाइय । इनके निकट बुद्धि वर होइय ॥
वीर धीर सावंत हरष्षहु । तिन सह कुँ वर वचन बर भष्षहु ॥१४८॥
बहु मृगया महँ चित्त न दिज्जिय । राज्य नष्ट कल वेद कहिज्जिय ॥
प्रथम धर्म मंत्रिन गति जानहि । नगर पुरिष कव मत हिय आनहि ॥१४९॥
चर चंचल जुग नैन कराइय । बहु जनपद देखहि चितु लाइय ॥
गुपित प्रीति अरु रोष कराइय । ताहिय समय प्रगट्ट दिखाइय ॥१५०॥
कोमल प्रीति कठोर क्रोध मन । ताहिय समय करे ताही जन ॥
जतन बहुत आकर हिय रक्खहि । रण तीरथ महँ मोक्ष शुभक्खहि ॥१५१॥

दोहा ।

राजनीति सिख दै सबै, धनपति गुरु निशिनाह ।
पारस मणि दिय पान कर, षोडस किन्नव व्याह ॥१५२॥
चंदब्रह्म सिर हथ्थ धरि, निसिपति यहै उचारि ।
सहस साष लगि राजु करि, दूतादिक तजि चारि ॥१५३॥
अनंदित जनपद सबै, पुरतिय मंगल गाय ।
चंदब्रह्म परिणयन करि, सुर अप धामनि जाय ॥१५४॥
इक महूरत चंद रहि, सुततिय निकट बुलाइ ।
सेा कामिनि कल किज्जियै, ब्रह्म शब्द नहिं जाइ ॥१५५॥

चौपही ।

यह कहि चलि जामिनिपति सूरे । उठि कामिनि परसे पग पूरे ॥
बोलि नाह सुनि वचन हमारै । ब्रह्मनाम कुल तें नहिं टारै ॥१५६॥

रसावला ।

चल्ल्यो सुबारिधिनंद । चक्कोर आनँदकंद ॥
धनपत्ति दीन पठाय । लिय परसमणि सुख पाय ॥१५७॥
दिन्नव सु सुत के हथ्थ । महि माँझ दीरघ गथ्थ ॥
यह चंदब्रह्म सुनाव । सुर नाग नर सुर गाव ॥१५८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

चंद ब्रह्म आयस सिला, पारस लइय छुवाइ ।
करिय हेम सत कोटि लिय, कालिंजर कहँ जाइ ॥१५९॥

छप्पय ।

चंदब्रह्म महाराज भयव दशसत्त बरष कव ।
कलिंजर अस्नान नीलकंठह सुपूजि भव ॥
तहँ दुजराज अपार भूप दिक्खन जुरि आये ।
केसर चंदन गात वेद जाते हल जाये ॥
तिन देखि विप्र शतकोटि हिम दान काज मँगवाइयव ।
दिय अर्घ पुन्य पथ भू स्वरग अद्ध अनुगहित जाइयव ॥१६०॥

दोहा ।

तीस सहस सादिय सुरखि, करि धावा नृपराय ।
पंच पहर भीतर लये, जनपद जुगल छिड़ाय ॥१६१॥
सिहुड़ा अवर गहोर लिय, हय गथ दर्व समाज ।
कालिंजर फिर जाइयव, चंदब्रह्म महराज ॥१६२॥
गहिरवार भय मानि भगि, काशी तजि अकुलाइ ।
चंदब्रह्म अवतार सब, जनपद लये छिड़ाइ ॥१६३॥
कहौ महातम विप्रवर, कालिंजर अब कौन ।
जहाँ होत अस्नान के, करत देवपुर गौन ॥१६४॥
सतजुग कहि पुनि महत गिरि, त्रेता पिंगल आय ।
स्वर्गरोह द्वापर सुभनि, कलि कालिंजर गाय ॥१६५॥

चौपही ।

वृद्धा सहित वृद्ध तीरथ जहँ । कोट तीर्थ बहि मृगधारा जहँ ॥
इनके दरस परस अस्नानह । कोटि जन्म अघ दहत निदानह ॥१६६॥

दोहा ।

राजन ग्रैवल राज यह, यहु तीरथ महँ सार ।
जौ पूजै नृप सुमन सह, याकौ पुन्य अपार ॥१६७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुस बिछाइ प्रनु पौढ़िया, सुरन स्वप्न दिय आय ।
बीस साष लग राज्य करि, मम गिरिदुर्ग बनाय ॥१६८॥

चौपही ।

सुनत सुरन मुख सुंदर बानिय । मन वच काय करहु रजधानिय ॥
चहुव भागि गिरिकोट बँधायव । द्वार द्वार प्रति अरर लगायव ॥१६९॥
गुरजन गुरजन दारुण भारिय । तोप तोम तिन पर हित रारिय ॥
अष्टधात ता गढ़ महँ धारिय । पथ्थर पुंज धरे हित रारिय ॥१७०॥
तिनादार कंकर बिनवावहु । मृत्यपात्र दीरघ धरवावहु ॥
राजद्दन कंदू गन बेलह । तिंतुक चलदल फल सब मेलह॥१७१॥
बहु पादप पाकरि तरि सालह । इत्यादिक फल फूल तमालह ॥
उद्यंबर गुड़फूल मंगावहु । तिनके गनि खनि खास भरावहु॥१७२॥
बहु गोधूम चनक तंदुल अति । राहर ज्वार मसूर लेहु रति ॥
मूँग मौठ बटुरा बहु ल्यावहु । राजमाष अरु माष मंगावहु ॥१७३॥
तिनकिय रोचक पहित बनावहु । दीरघ पात्र तऊ धरवावहु ॥
घृत अरु तैल धरा गढ़ माहीं । आसव पात्र धरा बहुधाहीं ॥१७४॥
गुर अरु लौन धरव अधिकारौ । ओषध पुंज दुर्ग महँ डारौ ॥
गोलागन दारुव बनवावहु । दीरघ गर्त तेऊ भरवावहु ॥१७५॥
दीरघ दीह कोल पग धारिय । महिषिय रक्खहु बहु पय वारिय ॥
अविक अजा मृगिनी मृगजालह । ते रक्खहु बहु दुर्ग विसालह ॥१७६॥
पीपर मरिच मंगलिय आनहु । शुंठी हरर बहेर बखानहु ॥
येला जू अजवाइन भाषहु । देवा कुरम कोट महँ राखहु ॥१७७॥
सकल किनावन जे कबि गावहिं । ते सब अद्य कोट महँ आवहिं ॥
व्याघ्र तिंदु रिछ बाल मँगावहु । अवर ऐन ईहामृग ल्यावहु ॥१७८॥
सरमारिपु सीघोस चिताहन । ते गहि ल्यावहु आसु महा वन ॥
वानर बालि बराह मँगावहु । लोह साँकरन ते बँधवावहु ॥१७९॥
मृगमद मृग बन स्वान बखानहु । ग्राम स्वान बहु गढ़ महँ आनहु ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुरर बाज बहु कुही कुहेला । चरगल गरवा साँकरि भेला ॥१८०॥
बहिरिय बाल बहिर मँगवावहु । धूती धारि तुरम तिय ल्यावहु ॥
पारावत जन हंस बखानहु । कोकिल कीर केकि बहु आनहु ॥१८१॥
सरस कुरच चकोर गैगमन । वे समीप राखत भूपति जन ॥
तूरन तुर तुंडिक बुलवावहु । सूक कीट बहु व्याल मँगावहु ॥१८२॥
स्याह अजा कर दूध पियावहु । वंशपात्र तेउव धरवावहु ॥
बभ्रुव बाल पालिये आखू । इतने जीव दुर्ग महँ राखू ॥१८३॥

दोहा ।

इन जीवन कब तेल अग, अस्थि चर्म अरु मास ।
जानि नाटिका विषम ते, सर्वे रोग बिनास ॥१८४॥
सामग्री यह दुर्ग की, सर्वे कहत पुरान ।
चंदब्रह्म आयस करैं, जब कालिंजर आन ॥१८५॥

---

(२) चन्द्रवंश-वर्णन खंड ।

दोहा ।

थलथल विशद गँभीर जल, सुर सुभ मुनिगन वास ।
ता गढ़ महँ दुजराज सुत, राखैा सब रनवास ॥ १ ॥
ता गढ़ थानैा राख नृप, चित्रकोट कहँ जाय ।
कर प्रदक्षिणा राम के, चरन रह्यो लपटाय ॥ २ ॥
इक महूरत चरन तर, परयो रह्यो चितु लाई ।
तब प्रसाद सेाई भग्त कहँ, दरस दये रघुराई ॥ ३ ॥
कहत राम विधुबंस सुनि, धर्म न नृप तव तुल्य ।
जैा चाहैा मंगल मही, चंद बचन नहिँ भुल्य ॥ ४ ॥
यह बचन्न प्रभु उच्चरे, भये सु अंतर ध्यान ।
चंदब्रह्म जनु जानिके, दयेा सिखावनु कान ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजा मन मोदित भयो, धीरज धर्म निधान।
पंच कोटि मँगवाइ हिम, दिय विप्रन कहँ दान ॥ ६ ॥
आतपत्र लिय कनक को, मानिक बज्र लगाइ।
चंदब्रह्म महराज सो, रघुपति सीस चढ़ाइ ॥ ७ ॥

चौपही।

फिरि विंध्याचल गयव सिकारह। दरस दीन हनुमान सुचारह ॥
कहिय वत्त रघुवीर सुधामह। मृगया कर नृप होत अकामह ॥८॥

दोहा।

यह सुधाम रघुवीर के, जज्ञ दान कर राज।
मृगया कर मङ्गल न मन, भूतल होत अकाज[1] ॥ ९ ॥
मारुत सुत को भग्त बहु, चंद ब्रह्म महराज।
बुद्धि चरन पर रक्खियौ, इहि कलिकाल समाज[2] ॥ १० ॥

चौपही।

तब भूपति यह विनय कराइय। दिनप्रति दरस देव कपिराइय ॥
बुल्लि पवनसुत दिय वरदानह। मम सरूप इहि लिखिव बखानह ॥११॥

दोहा।

तब हनुमति हँसि बुल्लि सुनु, चंदब्रह्म नृपराय।
चैत्र मास मुहि पुज्जियौ, सब कल्यान कराय ॥१२॥

चौपही।

चंदब्रह्म प्रतिमा बनवाइय। ता महँ बसै पवनसुत आइय ॥
जनपद जन कोटिन बुलवाइय। बजि निसान पूजा करवाइय॥१३॥

दोहा।

पूजा करि कर जोर जुग, ऊभी सकल जहान।
जो जिहि नर मन माँगिया, सो दिन्निव बरदान ॥१४॥

---

(१) बुल्लि चरन पर राखियहु, कालहु काल समाज। (२) हा० प्रति में नहीं है

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंदब्रह्म प्रभु पूजिया, कूचु किन्न सुखु पाइ।
पहुँचौ आइ षजूरपुर, सत्त अहनि महँ राइ ॥१५॥
कालिंजर थानौ सुरखि, रानी लइय बुलाय।
परिव भूप बनिता सहित, हेमवती के पाय ॥१६॥
ग्रामपतिय कहँ ग्राम दश, दये भूप चितु लाय।
बैठक करिय षजूरपुर, आयस बहुत मँगाय ॥ १७ ॥

चौपही।

बिंध्याचल तैं आयस आयव। पारस मनि सह सर्व लगायव ॥
लगत भयौ कंचन के ग्रामह। तिन सह भरत खास बहु धामह ॥१८॥
भारमल्ल भंडारिय किन्नव। तिनहि सौंपि सब स्वर्ण नविन्नव ॥
बुल्लि सुजान करेय दीवानह। काइथ सब लायक बुधवानह ॥१९॥
बलाधिक्ष चिंतामनि राइय। बंनाफर भूतरज सु गाइय[1] ॥
स्वामिधर्म निशु दिन चितु लाइय। दिय निसान भूपति सुखु पाइय ॥२०॥

दोहा।

दिसि दिसि दर्ब पठाइ नृप, भेजँ सथ्थ सरदार।
साठ अहन बिच आइयौ, साठ लक्ख असवार ॥ २१ ॥
राजा रहिव षजूरपुर, सेना दइय पठाय।
चार मास भीतर लइय, चारौ दिसा छिड़ाय ॥ २२ ॥
अनँगपाल कहि व्यास सह, सुनु दुजराज प्रवीन।
भांड्य जज्ञ किहि बिधि करिग, कितिक दान नृप दीन ॥ २३ ॥
करिय जज्ञ जननिय हुकुम, चंदब्रह्म महराज।
चंद बचन जे उच्चरे, तै भक्खत सुनु राज ॥ २४ ॥
जब लगि रहि तुव बर्स महँ, मम आयस कव बत्त।
तब लगि प्रभु पिय धाम रहि, कहिय हिमाकर बत्त ॥ २५ ॥

---

(१) चिंता पर भूतल जग छाइय।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

आगै कहिय हिमाकर बत्तह । सुनहु सुकेश चवत निजु मत्तह ॥
जौ तुव वंश सीख मम ल्याइय । सहस साप लगि राज न जाइय ॥२६॥

दोहा ।

कान मंडि कामिन कहतु, मम सु बैन ठहराय ।
अंत नाम जब लगि दुज, तब लगि राजु कराय ॥ २७ ॥
भांड्य जज्ञ तुम किजियौ, भांड्य चित्र लिखवाय ।
पचासी मठ देवजुत, तब तुव पातक जाय ॥ २८ ॥
निकट निकट सरसी रचौ, निकट निकट पर बाग ।
जे कवि कहै पुरान महँ, ते किज्जिय अनुराग ॥ २९ ॥
पुनह पुनह मम कथियौ, सुन कामिन बड़ भाग ।
द्वीतादिक जब लगि तजै, तब लगि श्री अनुराग ॥ ३० ॥
इतनो आयस चंद किय, तजि बनिता हिय सोक ।
चंदब्रह्म सिर हथ्थ धरि, हरषि गये हरलोक ॥ ३१ ॥
हेमवती कहि पुत्र सह, कोटिन धन लगवाय ।
मोहि उधारौ भूमितल, भाँड्य जज्ञ बनवाय ॥ ३२ ॥
सुनि जननी के वचन बर, भूप मोद मन कीन ।
रूपराज कहँ आदि दै, मंत्री बोलि सु लीन ॥ ३३ ॥

छप्पय ।

चंदब्रह्म नृप चवहि सुनहु मंत्री सुजान वर ।
अर्जुन के मठ रचहु कलस दीनार हार भर[1] ॥
चहुव भाग षज्जूर कोट उन्नत अति साजहु ।
दस दरवाजे करहु अरर विद्रुम के लाजहु ॥
काइथ सुबुद्ध कर जोर कहि आन राज्य उड्डहि सु सब ।
तिहि तुल्य पर्ण पाहन धरहु जौ हुकुंम महराज अब ॥३४॥

(१) आरज कौ मंडिल रचहु कल हीर हार भर ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

मंत्रिन के नृप वचन सुनि, चित्त हित्त अति ल्याइ ।
पाहन रचहु विचित्र तुम, बहु धन देहु लगाइ ॥ ३५ ॥

चौपही ।

जंबूनद को मेरु बनायव । पंच वृक्ष सुर तहाँ लगायव ॥
दुतिय रजतगिरि जहाँ सुहायव । ताहि नाम कैलाश धरायव ॥३६॥
दुहुव भाग वर बाग लगायव । नँदन चैत्ररथ नाम धरायव[1] ॥
नर बाहन शिव वपुष धरायव । तहाँ नगर अलिका रचि लायव ॥३७॥
पदि पंना[2] मानिक मँगवाये । गौमेदिक लीलागन ल्याये ॥
लहसुनिया विद्रुम सेा लिन्नव । चंदब्रह्म नृप भूपर किन्नव ॥ ३८ ॥
जंबू नद के वृक्ष बनाये । तिहि सह गुलिक गुच्छ लगवाये ॥
वेद वदति सेा कर नृपराइय । चलय पहुम पर सुजस सुहाइय ॥३९॥

दोहा ।

इन्द्रादिक सब सुरन सह, बुल्लिव तब निसिराज ।
चंदब्रह्म मख करत भुव, करब सफल सब काज ॥ ४० ॥
आयस करि सब सुरन कहँ, देवराज सुख पाय ।
पहुँच्यो जाय षजूरपुर, बाड़व वेष बनाय ॥ ४१ ॥

चौपही ।

कारियगर मंत्रिन[3] बुलवाये । आयस सुनि सिलिपी उठि धाये ॥
कंचन कटक करण पहिराये । पाहन मठ किज्जिय चितु लाये ॥४२॥
कुमुदवंध कव आयस पाये । सिलिपि बप्पु बिसकर्महि आये ॥
पदिककनी कलमन लगवाइय । देव रचित तिन पर फिरवाइय ॥४३॥
प्रथम देव विन्नायक किन्नव । चंद सर्वतन भूषित दिन्नव ॥
बाहन आखु रचौ चितु लाइय । मोदकजुक्त पानि सुखदाइय ॥४४॥

---

(१) नंदन चित्र घनी अमराइय । (२) पदिक खंभ । (३) गुणवान ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नंदिय सहित रचे त्रिपुरारिय । हंस विधाता किय मुख चारिय ॥
राम अनुज स्यौ सिया बनाइय । षडमुख रचि दुर्गा बलदाइय ॥४५॥
मोर सिंह तिन बाहन किन्नव । शस्त्र त्रिशूल पानि लिख दिन्नव ॥
इहि क्रम देव लिखे समुदाइय । होय सेस सम गनित कराइय ॥४६॥
फेर रचे देवल बिस्तारह । कहूँ कहूँ भडकुट्ट अपारह ॥
तत घन सुषिर सु आनँद बज्जहि । मंजीरन अच्छिर पग सज्जहि ॥४७॥
नृत्य करै बर सुर नर नारिय । तिन सिर थार मुक्त गन वारिय ॥
बहुरूपी रूपन बनि आवहिँ । क्रंत गीत असमंजस गावहिँ ॥४८॥
असिय पंच प्रासाद बनाये । तिन सिर धुजा वृंद फहराये ॥
सहस पंच बेदिय बनवाइय । जातवेदता मध्य बसाइय ॥४९॥
समिध पलास छमी जन ल्याइय । हविष वृंद होमत दुजराइय ॥
बेद पढ़ैं चारौं विधिही के । भोजन करहिँ कोटि दिनही के ॥५०॥

दोहा ।

बनिक हजारन छाइयौ, बारह कोस बजार ।
लुट्टि स्वर्ण षज्जूर नग, मेवा कोटि हज़ार[1] ॥५१॥
रहट चलत वा ग्राम तहँ, ठहरत प्रीति अपार ।
लगे पनारे रहट के, परत अखंडित धार[2] ॥५२॥

चौपही ।

बिसुकर्मा आयुध कर लिन्नव । पाहन छुवत मदन सम किन्नव ॥
घटिका चार कलम जिन फेरिय । रचना रुधिर रची बहुतैरिय ॥५३॥

दोहा ।

पचासी मठ देव सब, बाहन जुत त्रिपुरारि ।
बिसुकर्मा कौं रचत ही, लगीं न घटिका चारि ॥५४॥

---

(१) लुट्ट सुनी खज्जूर पुर माया कोटि हजार ।
(२) ज० प्रति में नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुजंगी ।

कहै चंदब्रह्म सु बत्तं भुवालं । रचौ मक्ख कुट्टं सु मट्ठं विशालं ॥
तहाँ आयसं पाय सिलिपी हँकारे । रचे मट्ठ चित्रं विचित्रं सँवारे ॥५५॥
जहाँ जज्ञ कौ आइ विप्रा अपारं । पढ़ै पत्त मंत्री मुखं वेदसारं ॥
भरे घृत्तकूपं रहट्टं चलाये । परै बन्हि कुंडं घनी धार जाये ॥५६॥
सतं इक्क तालं विशालं बनायं । चलै इक्क धारं सुनीरं सुहायं ॥
सबै भूसुरं इच्छ कौ भोग पावैं । जपै इंदिरापत्ति चित्तं लगावैं ॥५७॥
सुरं शब्द बाजंत बाजे अपारं । नचै नृत्यकी भृत्यकी भेद भारं ॥
धरै रूप जीवान कौं रूप सारी । तहाँ मेनका आदि दै अग्र धारी ॥५८॥
धरैं रूप देवान कौं भूमि देवा । फिरैं जज्ञ है भाग त्यागं सु लेवा ॥
दियं सत्त कोटी दिनं दान रूरौ । कहै व्यास जोती भयौ जज्ञ पूरौ ॥५९॥

चौपही ।

चंदब्रह्म भुवपाल सुजानह । तहाँ दीन अर्बुद दिन दानह ॥
धन्य धन्य दुज देवन रट्टे । हेमवती के पातिक कट्टे ॥६०॥

दोहा ।

भयौ जज्ञ पूरन्न जब, देव गये अपलोक ।
चंदब्रह्म राजा भये , रैयत बसी असोक ॥ ६१ ॥
हेमवती तन छुट्टियव , बैठिव देव विमान ।
मृत्यलोक निर्मल भई , जानी सकल जहान ॥ ६२ ॥
पुनह व्यास रगजोत सह , अनँगपाल कहि बत्त ।
चंदब्रह्म नृप कवनपुर , बसहि चित्त अनुरत्त ॥ ६३ ॥
करिव जज्ञ षज्जूरपुर , बहु धन दीन लुटाय ।
रानिय चंद्रावति सहित , बस्यो महोवे आय ॥ ६४ ॥
रच्यौ सहर जोजन जुगल , षट जोजन विस्तार ।
रैयत अति राजी बसै , घर घर मंगलचार ॥ ६५ ॥
अन्न खात केदार के , वृद्धि होत अधिकाय ।
सरद सरद के अमल कौ , आयस लेत मँगाय ॥ ६६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगमाल ।

पारस मनि लिय भूपं । परसत लोह जंबुनद रूपं ॥
जज्ञ करत नृप रायं । जन जन देइ कढ़ायं ॥ ६७ ॥

दोहा ।

जीवतु जन सह आयु भर , बीच न आवै काल ।
मख मंडी चहुँ पास पुर , जय जय शब्द रसाल ॥ ६८ ॥
रामकुंड अस्नान करि , पंच पद्म दिय दान ।
रानिन स्यौं हरिपुर गयव , ब्रह्मरंध्र तजि प्रान ॥ ६९ ॥
सो राजा सुरपुर गयव , परिगह सौं सुख पाय ।
बालब्रह्म[1] राजा भयव , तिनके बसुधा आय ॥ ७० ॥
चंद्रब्रह्म कै पुत्र हुअ , बालब्रह्म महराज ।
रचि बारी गढ़राज करि , हय गय सुभट समाज ॥ ७१ ॥
कूप बावरिय पंच सत , इक सत सरस विसाल ।
बाग बनाये सहस सत , दिय बिप्रन बड़ माल ॥ ७२ ॥
करे जज्ञ अन्नेक जग , धन घन प्रभु प्रतिपाल ।
तिनकैं सुत समरथ्थ भय , पारब्रह्म[2] नृप भाल[3] ॥ ७३ ॥

रसावला ।

भय रूपब्रह्म भुवाल[4] । दुजपाल रिपुगन साल ॥
कुबेर अति सुखु पाय । पारस्स मनि दिय आय ॥७४ ॥
नृप थापि भूमि असोक । पुनि गये आप अपलोक ॥
रूपचंद कै भय बाल । वृज भूमि ब्रह्म कृपाल ॥ ७५ ॥
वृज सरस रचि भुव सोइ । किय जज्ञ मल महि खोइ ॥
नृप बेलब्रह्म प्रवीन । बेला सुबंधन कीन ॥ ७६ ॥
भुव पंच जज्ञ कराय । सुरलोक ऊभा जाय ॥
तिनकैं सु नंदन मान । तिन दान विदित जहान ॥ ७७ ॥

(१) वार ब्रह्म । (२) बालब्रह्म । (३) भुवपाल । (४) गय चंद्रब्रह्म भुवाल ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन पुत्र ब्रह्म सुथान । जिन जित्ति सकल जहान ॥
गजब्रह्म ता सुत होय । सम भूमि भूप न कोय ॥ ७८ ॥
भय ज्ञानब्रह्म सुपुत्र । रिषिराज राजन मित्र ॥
हुव जानब्रह्म सुजान । गनपत्ति से भव गान ॥ ७९ ॥
जिन शक्तिब्रह्म भुवाल । रिपु राज रण मैं काल ॥
प्रथुब्रह्म विदित नरेस । जिन जीति पच्छिम देस ॥ ८० ॥
भय भग्तब्रह्म भुवाल । रघुनाथ जेम कृपाल ॥
जग जग्तब्रह्म नरेस । जिन जीत पूरब देस ॥ ८१ ॥
जनि कीलब्रह्म सुजान । तिन पुत्र श्रीकल्यान ॥
बिनके सुपुत्र नवीन । सूरजब्रह्म प्रवीन ॥ ८२ ॥
जिन सूरकुंड बनाय । अद्धुर सु दस करवाय ॥
जिन रूपब्रह्म सुराज । बिधुब्रह्म धर सिरताज ॥ ८३ ॥
राहिल सु तिन सुत पाय । जसु जगत जन सुखु गाय ॥
दस दीह बंधे ताल । करि बीस जज्ञ बिसाल ॥ ८४ ॥

दोहा ।

अंबरीक हरचंद सम , प्रथु जिमि पहुमि बिराज ।
आसमुद्र लग राज किय , राहिल श्री महराज ॥ ८५ ॥

छप्पय ।

आसमुद्र लग राज करिय रैयत सुख भारिय ।
गहिव सत्रु जिहि अत्र सर्ब खंडिव पुर जारिय ॥
बीस लक्ख असवार सिमर रामेश्वर किन्निव ।
लिय जहाज हज्जार दंड सिंघलपति दिन्निव ॥
बरष हेम कुब्बेर नभ लोक लोक जा जसु रयव ।
बिंकट दिवाल रचि सुर समर राहिल विष राजा भयव ॥८६॥
बड़व राम कर भग्त दुतिय शंकर जिहि ध्यायव ।
करिय जज्ञ जिहि बीस रसन जिहि सहर बसायव ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कियव हुकुम महराज अतिथ वृंदन जे आवहिं ।
मन बंछित जो भोग तुरत जिहि पुर महँ पावहिं ॥
वर राजमंत्र इमि उच्चरहि कितिक दर्ब हम लिज्जियव ।
चंदेल मुसक बुल्लिव बचन कोटि कोटि दिन दिज्जियव ॥ ८७ ॥

दोहा ।

रसन सहर राहिल रच्यौ , धर्म मूल महि माँह ।
अभ्यागत दस दिसन के , बिलम रहे ता छाँह ॥ ८८ ॥
जाके राज रसा बिषै , रैयत बसत असोक ।
रानी राजमती सहित , हर्षि गयौ हरिलोक ॥ ८९ ॥

चौपही ।

राहिलब्रह्म गयव सुरलोकह । रसा बसत जिहि राज असोकह ॥
दान दीन दिन्नय मन भाये । लोक लोक जाके जस गाये ॥ ९० ॥

दोहा ।

मदनब्रह्म राजा भये , जिनके जगती माँह ।
तिनकै भूपति सब बसै , आतपत्र की छाँह ॥ ९१ ॥
तिन राजा गुजरात महँ , करयौ अखंडित राज ॥
हेम हीर गजराज हय , दिय बिप्रन बहु साज ॥ ९२ ॥
नगर मध्य सरसी रच्यौ, देवल दीप बनाइ ॥
जुगुल जज्ञ महुबै करे , जुग जुग राज्य कराइ ॥ ९३ ॥

नगमाल ।

भय मदनब्रह्म महीप । चंदेल कुल कर दीप ॥
कीरत्त प्रगट कुमार । धरि बपुष अवतर मार ॥ ९४ ॥
लिय बच्छराज बुलाय । बलधच्छ बुध बल दाय ॥
दसराज बुल तुव पुत्र । यह मिट्टि भुवतल सत्र ॥ ९५ ॥
बछराज बुल्लि कुमार । कीरत्त कव दिय भार ॥
फिरि ताहि सिछ्या दीन । रहि स्वाम धर्म प्रवीन ॥ ९६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

कीरत राजकुमार कौं , दशरथ कौं दिय भार ।
पंच कोटि नीसान दै , सेनापति सरदार ॥ ९७ ॥
कीरति सुत कब रूप लखि , मोदित भय नरनाह ।
सोमवधू कौं आदि दै , षोड़स करे विवाह ॥
पारस मनि कहँ आदि दै , हय गय दिय सब साज ।
आखंडल पुर कौं गयो , मदनब्रह्म महराज ॥ ९९ ॥

नगपाल ।

कीरतिब्रह्म भुवपाल । किय धर्म भूरि विसाल ॥
तहँ पंच जज्ञ कराय । कीरत्त सर बँधवाय ॥ १०० ॥
दिय भूर बिप्रन दान । भय नाम सकल जहान ॥
तिन पुत्र श्री परिमाल । मतहीन प्रगट भुवाल ॥ १०१ ॥

दोहा ।

पंच वर्ष के पुत्र हुव , तजि रैयत जिय सोक ।
गये सकल बनितान सौं , कीर्तिब्रह्म सुरलोक ॥ १०२ ॥
अनँगपाल महराज सुनि , कहत व्यास जदुराइ ।
अब भूपति परमाल किय , संतति कहत सुनाइ ॥ १०३ ॥
रतन कुँवर कुसुमावती , कन्या रूप अपार ।
ता पीछें परमाल कै , प्रगटे चार कुमार ॥ १०४ ॥

चौपही ।

तिन परिमाल चार सुत जाये । ब्रह्म कामजित तहँ सुखदाये ॥
अवर पुत्र रणजीत बखानहु । सभाजीत संसत मन मानहु ॥१०५॥

दोहा ।

चार पुत्र परिमाल के, राजन के सिरमौर ।
सुंदर सूर कृपाल से, ब्रह्मा से नहि और ॥१०६॥
सुनिय बंस उतपत्ति सब, भूपति गयो लजाय ।
अब बुधधर मम बंस महँ, दिज्जिय ब्रह्म मिटाय ॥१०७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब रानी मल्हन कह्यौ, सुन चँदेल भुवराय ।
आदि सेत मिट्टै सबै, श्रीकुल जै उड़ि जाय ॥१०८॥
रानी सह झुक राय कहि, तू बनिता नहिं जान ।
आयौ अंतु चँदेल कौ, बुधवर कहत बखान ॥१०९॥
ब्रह्म नाम नृप मिट्टियो, देव चित्त चित भाय ।
मिट्टि बचन निसिराय के, अब को कुसल कराय ॥११०॥

नीसानी ।

वचन चंद कौ मिट्टिया परिमाल भुवाला ।
ब्रह्म नाम तुव वंस मैं दिय देव कृपाला ॥१११॥
होइ निर्भई सोइया सेा किय करतारा ।
छन मह सत त्रै कोटिया करि मिटत न बारा ॥११२॥
ब्रह्म शब्द नृप मिट्टिया नीसान बजाई ।
कहि परिगह सैां बत्तिया मम देव कहाई ॥११३॥
ता तन सह जित जित कहा अस भूपति बोला ।
बचन पच्छिला मिट्टिया अंतर मत खोला ॥११४॥
अनँगपाल महराज सैां यह व्यास बखानी ।
राज गयव परिमाल को नरदेव न जानी ॥११५॥

दोहा ।

अनँगपाल सह व्यास कहि, पूर्वकथा सब गाइ ।
सत जज्ञै करि इंद्र कव, आसन लैंहु छिड़ाइ ॥११६॥
यह सुबत्त अंकज सुनिव, कही इंद्र सह आइ ॥
सत जज्ञै चंदेल कर, तुव पुर लेत छिड़ाइ ॥११७॥
सुनत बत्त विधि पुत्र मुख, दृग आरक्त कराइ ।
करिव कोप आरंभ मन, रंभा लइय बुलाइ ॥११८॥
इंद्र बुलि रंभा सुलिय, राग नृत्त करि खेल ।
नगर महोत्सव जाव तुम, छलौ भूप चंदेल ॥११९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरहु रूप नर नारि को, किज्जिय नगर प्रवेस ।
मोहहु भूप चँदेल कहँ, छिप्र छुड़ावहु देस ॥१२०॥
निस दिन मोहौ नगर नर, गान करौ चित लाइ ।
सुघर सुघर बिस्वा सबै, कहैं भूप सह आइ ॥१२१॥
रंभा कहिया चित्त मैं, चक्रिय सीख समाज ॥
गिरिजापति मोहन कर्यौ, कितिक बत्त नरराज ॥१२२॥
हाहा हूहू संग जो, मोहे सुर समुदाय ।
रंभा नगर महोब कहँ, बज्री दइय पठाय ॥१२३॥
उतरी आनि महोब महँ, कोतवाल दीवान ।
सभा सुगंधित हो रही, बोलत इक्क जुबान ॥१२४॥
मोहि गये सब नगर नर, सबु धनु दयौ लुटाय ।
प्रात होत जन करणजी, कहिय भूप सह आय ॥१२५॥

चौपही ।

बिस्वा सुघर सहर इक आइय । मृदुल मैनका मनहु सुहाइय ॥
मुसक बत्त बोलिव नृप सोइय । सो सब सभा सुगंधित होइय ॥१२६॥
जब राजन वह रूप निहारिय । जापर इंद्र अपछरा वारिय ॥
मदन नारि भज्जिय समसाहर । निरभय राज महोस्त कीन घर ॥१२७॥
दिवि तैं परी परी इह राइय । सुरतरु लता भूमि जनु आइय ॥
सब संगीत कहत मुख अग्गह । सुनत शब्द नर मृग खग पग्गह ॥१२८॥
जहँ नच्चति तहँ सहसन धावति । महा मिष्ट सुरराग सुनावति ।
जिहि सुर सुनै बस्य सो किन्नव । स्यौ धनु सहर लुट्टि सब लिन्नव ॥१२९॥
मुसकि बत्त जब कहत सुहाइय । रहत सुगंध सभा महँ छाइय ॥
कहत बत्त जन करण सुहाइय । सुनत बत्त चंदेल सुभाइय ॥१३०॥

दोहा ।

इतिय सिपारस आसु किय, देव करण लघु भाय ।
सुनत भूप परिमाल कहि, बिस्वा लेहु बुलाय ॥१३१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानी मल्हनदे कहै, सुनु चंदेल सुबत्त ।
राज अथ्थवत विधुवचन, बिस्वा सहन न रत्त ॥१३२॥
मकरध्वज बस भूप हुव, बहु जन दये पठाय ।
तुंबिक धर तंत्री लिये, बिस्वा पहुँचिय आय ॥१३३॥
बिस्वा कहँ दृग दिक्ख तब, इकटक चित्त लगाय ।
गयौ पुन्य परिमाल कौ, पातक रहि तन छाय ॥१३४॥

चौपही ।

रानी वचन भूप नहिं किन्नव । बिस्वा बुल्लि राग सुनि लिन्नव ॥
सुरवनिता जब बीन बजाइय । त्रिविध चलयौ मारुतपितु आइय ॥१३५॥
हाहा हूहू तान उचारिय । अर्बुद बिंस भूप धम वारिय ॥
धुरपद इक्क अड़ाना गाइव । चारू जुग नृप नाँउ सुनाइव ॥१३६॥
ते तन तजि नृप गये पराइय । काहुव संग भूमि नहिं जाइय ॥
मोह्यौ नृप दीवान उठाइय । अंतहपुर बिस्वा बुलवाइय ॥१३७॥
तब विस्वा यह बुल्लिय बानिय । चार बस्त मम कहो सुमानिय ॥
महा बस्य किन्नव नृपराइय । जोइ जोइ कहि सोइय ठहराइय ॥१३८॥

दोहा ।

बिस्वा कै बस भूप हुव, मनमथ ग्रस्यौ विसाल ।
चारि बत्त बरजी ससिहि, तै किन्हिय परिमाल ॥१३९॥

चौपही ।

नृप परिमाल मेटि मरजादह । बिस्वा बुल्लि राग सुनि सादह ॥
बार बार बिहँसत रति मानिय । चारि जाम निसि कहिय कहानिय॥१४०॥
बार बधू सँग द्वोतहि मण्डिय । पुन्य रीति कुल की सब छंडिय ॥
पिस तमोल भूपति मँगवावहि । बारबधू सँग भोजन पावहि ॥१४१॥
गंगाजल पीवन कहँ मंगिय । भरि भाजन बारुनि धरि अंगिय ॥
पियत स्वाद भूपति जब पायव । कुप्पि बिप्र सिर भाजन लायव॥१४२॥
तुरत बिप्र के छुट्टे प्राणह । कुमुद बंधु वरदान उड़ानह ॥
वपुष धार अंबर अधिकाइय । व्योम बानि यह बचन सुनाइय १४३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

जे बरजी दुजराज प्रभु, ते तुम करि परिमाल ।
छल्यौ आनि दिवअंगना, बिस्वारूप विसाल ॥ १४४ ॥
दसौ दिसा धुंधरि रहिय, जलद श्रोण बरषंत ।
चिंत मानि मन कंपियौ, मल्हनदे कौ कंत ॥१४५॥

चौपही ।

चंपि दंत अंगुलि रिस आनिय । तुरत भूप की कढ़िय कृपानिय ॥
गहत केस सुरपति की रानिय । लखत नैन छिन माँझ उड़ानिय ॥१४६॥
छंडिय भूमि बपुष वर बढ़िढय । अमर नारि अंबर महँ ठढ़िढय ॥
ऊभिय गगन बदति इमि बानिय । सुनहु भूप चंदेल गुमानिय ॥१४७॥
ससिय बचन भा बेद बखानिय । अब चंदेल छोड़ि रजधानिय ॥
इंद्रबचन भा भूतल आइय । थाकव अंत राज को पाइय ॥१४८॥
थां पर कुप्पि चढ़य चहुवानह । व्यास वचन हूहै परिमानह ॥
भगहि जुद्ध देखत दल भारिय । सावन पुत्र करै तरवारिय ॥१४९॥
विन्ध्याचल कहँ जाहि सिकारह । तहँ हनि मृग मृगराज अपारह ॥
सब बनराज आसु नृप क्रीड़हि । बिन अपराध सिद्ध बहु पीड़हि ॥१५०॥
तारिय छुट्टि बपुष बर काँपहि । कुप्पि सिद्ध तुव देहि सरापहि ॥
पच्छिम दिसा उवै जो भानह । पूरब दिसि अथवै बलवानह ॥१५१॥
पर्वतसिखर पदम जौ फुल्लहि । पढ़त वेद जो ब्रह्मा भुल्लहि ॥
कालहि पाय बदत बुध लोइय । सीतल अगिनि मेरुचल होइय ॥१५२॥
वेद भेद कथ्थत रिषिराइय । कर्मरेख मिट्टत नहिं जाइय ॥
तपु घट्टै यह करिव बिचारुव । नल दिन्नव भैयन सिर भारुव ॥१५३॥
भैयन राजु कीन सुखु पाइय । नल दमयंतिय दये भगाइय ॥
तुव पद छीन भयव नृपराइय । समता करहि इंद्र सह आइय ॥१५४॥
आपु बंस किय तजिय भलाइय । अलप बुद्धिता कहँ भुव आइय ॥
भां कह मूढ़ पसारत बाँहिय । को गहि लेत जौन्ह किय छाँहिय ॥१५५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिहि नृप कै ऐसी मति होइय । सो सब जात राज महि खोइय ॥
यह सुबत्त कहि उच्च उड़ानिय । सुर वनिता सुरपुर ठहरानिय ॥१५६॥

दोहा ।

तंत्री तूँबरि सारिका, हाहा हूह उड़ान ।
रम्भा अक्षर संग ही, ऊभे देव दिवान ॥ १५७ ॥
राज्य मेटि चंदेल सों, करि आई आरंभ ।
पाय परस प्रभु के प्रिया, कहे बचन ये रंभ ॥ १५८ ॥
रंभा के ये बचन सुनि, इंद्र महत सुखु पाय ।
सिंहा अवलोकन कथा, नगर महोवै आय ॥ १५९ ॥

चौपही ।

पटक दीन भूतल नृप हथ्थह । बाफक गिरत धुनत अप मथ्थह ॥
हाय हाय यह शब्द बखानिय । हम मायाबस कछुव न जानिय ॥१६०॥

दोहा ।

चतुर बत्त बरजी ससी, तिन तिनके कहि नाव ।
धरिस भूप परिमाल कहँ, पारस मनि कहँ जाव ॥१६१॥

चौपही ।

पारस मनि सह विनय सु किन्नव । बसहु धाम मम इक्क नविन्नव ॥
पुनह जाउ भां रक्खतु नाहिय । तीस अहन किय दिज्जिय बाँहिय ॥१६२॥

दोहा ।

सुनत बचन परिमाल के, मनि करुना चित आय ।
इक्क मास तुव भवन बसि, तब अलकापुर जाय ॥ १६३ ॥
तीस अहन बसि भवन महँ, बहु आयस मँगवाय ।
पारस मनि नृप हथ्थ लिय, लीन्हौ सर्ब छुवाय ॥१६४॥
पंच दिवस रहि अवधि कर, भूपति करि मन ज्ञान ।
पारस मनि लिय अप्प कर, दिय प्रोहित कहँ दान ॥१६५॥
पारस मनि प्रोहित सु लिय, कहि भूपति सहँ बत्त ।
कंचन बस्तु नृप उच्चरहु, दीह दान नन रत्त ॥१६६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

प्रोहित वचन सुनत नृपराइय । बिहँसि बुलि दुज सह सुखुदाइय ॥
जाहि परस आयस ह्यौ कंचन । दारिद दाह होइ नहिं रंचन ॥१६७॥

दोहा ।

महा दान दुज जानि करि , फेरि दियौ नृप हथ्थ ।
जनम जनम नहिं ऊबरौं , यह कहि धुनियव मथ्थ ॥१६८॥

चौपही ।

धुनत सीस राजा रिस किन्निय । पारस मनि अपने कर लिन्निय ॥
कर्महीन थां भय दुजराइय । यह कहि कर सर मध्य चलाइय १६९

दोहा ।

पारस मनि नृप नंखियौ , करि कंचन के ग्राम ।
अंतरीछ उड़ि कै गयौ, नरबाहन के धाम ॥ १७० ॥
गहिरवार चंदेल कौ, सुनियौ बंस अपार ।
बल्लि सल्लि जहँ अवतरे, सेा कहि कल करतार ॥ १७१ ॥
बंसावरि बरनत सु सुनि, तँवरराज मतिधीर ।
बंस बनाफर अवतरे, बल्लि सल्लि ह्यौ बीर ॥ १७२ ॥
चिंतामनि असि पुत्रिका, कढ्ढि लीन चितु लाय ।
अप्पन सीरष छिन्न करि, संभु अग्र धर आय ॥१७३॥
चिंतामनि शिव सेइयौ, द्वादस बर्ष प्रमान ।
ह्यौ प्रसन्न कालीपतिय, सीस जोर धरि ठान ॥ १७४ ॥
उठि चिंतामनि चरन परि, बुल्लिय संभु जुबान ।
भां प्रसन्न थां परस दां, मंगु त्रई बरदान ॥ १७५ ॥
चिंतामनि कहि मुक्ति बर, बंस सुभट दिय सेाय ।
तृतिय देव चंदेल घर, सदा राजधर होय ॥ १७६ ॥
पुरिष उपजै विक्रमी, समर अमर सम सेाय ।
चिंतामनि तुव बंस महँ, भयौ न है नन होय ॥१७७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चिंतामनि मुख मंगिया, सेा दिन्नव बरदान ।
बिहँसि भूतपति भूमितल, भये सुअंतर ध्यान ॥ १७८ ॥

चिंतामनि सब बंसधर, भये प्रगट परधान ।
सेाइय क्रम चलि बंस कव, शिव दिन्नय बरदान ॥१७९॥

चंदब्रह्म कव आदि दै, अवर भूप बहु धीर ।
बलाधच्छ तिनकै, भये बन्नाफर मतिवीर ॥ १८० ॥

छप्पय ।

चिंतामनि ससिपाल राजपति ब्रह्म अग्ग हुव ।
जगतब्रह्म जगपाल तासु मकरंद मंत्रि धुव ॥
बालब्रह्म महाराज जासु परधान अकूरह ।
शक्तिब्रह्म घर सभा चंद मंत्रिय बर सूरह ॥
कीरति कुमार घर अल्ह हुव जाहि राज हुव खग्ग बर ।
बिधु ब्रह्म आदि परिमाल लग इतेय बनाफर राजघर ॥१८१॥

भुजंगी ।

भयेा सुभट चिंतामनिहि भूमि गायेा । तिनन्नै ससियपाल सुत सुभट जायेा ॥
कृपाचंद पुत्रं सभाचंद सूरेा । सभाचंद कै नंद मकरंद रूरेा ॥१८२॥
अकूरं भयेा भीम सेा भूमि गायेा । तिनन्नै अभयराज सुत सुभट पायेा ॥
महा साहसी पुत्र मनिकंठ राजै । जुरै जंग मैं सत्र तजि अत्र भाजै ॥१८३॥
मनीकंद नंदं तराचंद रायं । तिनं भूप चंदेल की भक्ति भायं ॥
तिनक्कै सिसू सेा दियै दीप चंदं । बन्यैा बंधुरं अंग आनंद कंदं ॥१८४॥
जन्यैा सेाठरं पुत्र पहुमी सपूतं । जिनं जेाठरं नंद पायेा अकूतं ॥
बक्षनासी भयेा जासुकैं सत्रुमारी । भयेा तासु दसरथ्थ सेा नामधारी ॥१८५॥
तिनकै भये आल्ह ऊदल कुमारं । दिसा जीति सर्वं गहै कोपि सारं ॥
भये दीह बलवान विक्रम अपारं । तिन्है देखि कै सत्रु धारै न सारं ॥१८६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

दसरथ कैं प्रगटे सुबर, आल्हन ऊद कुमार ।
बंस बनाफर अवतरे, बल्लि सल्लि अवतर ॥१८७॥
हच्यौ प्रसन्न मारुत-सुवन, गरुड़ बान दै सोइ ।
दुतिय भूमितल कृपाकर, गुरु गोरख गो होइ ॥१८८॥
सरद इक्क सेवन करच्यौ, चित के अग्ग चलाय ।
अस्त्र शस्त्र दै अवनि तल, गोरख अमर कराय ॥१८९॥
बुद्धि करण के जसकरण, जस के पृथु जसपाल ।
तिनके प्रगट भये मही, महियपाल भुवपाल ॥१९०॥
बसीकरन मूरति सही, तब किन्नव मन माँह ।
तिनके भूपति हुकुम महँ, गनै धूप नहिं छाँह ॥१९१॥
चंदब्रह्म के बंस महँ, धारि स्रवन जौ लेहि ।
ताकौ श्री-संपति सहित, श्रीपदमापति देहि ॥१९२॥

छप्पय ।

चंदब्रह्म मख मंडि त्रइय सुनि स्रवननि धारहि ।
जथा सकत करि दान पुरिष फल को पुर तारहि ॥
दारा पुत्र पवन्न भूरि भूतल महँ पावहिं ।
निर्मल होहि सरीर रोग नर तीर न आवहिं ॥
यह फल बिचारि उड़राज कहि आन भाँति नहिं होइ भुव ।
पावहि अटूट धनधाम बर सत्रु जित्त रन मभ्भ हुव ॥१९३॥

दोहा ।

चंदब्रह्म मख बंस त्रय, सुनै बार त्रय कोप ।
अयुत पुत्र पावै घनैं, अटुट धाम धनु होय ॥१९४॥
अनँगपाल सहँ व्यास कहि, रावल सहँ कहि चंद ।
अब चँदेल चहुवान की, कहत रारि बहु छंद ॥१९५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३) अल्हनसंबोधखंड ।

दोहा ।

विप भारथ चंदेल किय , चाहुवान नृपराय ।
सो रावल स्रवनन सुनो , बदति चंद बरदाय ॥१॥
अनँगपाल महराज सह , व्यास भविष्य बताय ।
वर्तमान बरदाइ कहि , सुनि रावल श्रीराय ॥२॥
अनँगपाल सह व्यास कहि , रावल सो कहि चंद ।
चाहुवान चंदेल को , बरनत छंद प्रबंध ॥३॥
कहै चंद गुन छंद पढ़ि , क्रोध उदंगल सोइ ।
चाहुवान चंदेलकुल , कंदल उपजत सोइ ॥४॥
समुद सिखर गढ़ पर्व नृप , पकरि साहि लिय संग ।
चलि बहीर आई महुब , बढ़ि विरंग दुहु अंग ॥५॥
जनमेजय मानी नहीं , कहिय व्यास करि ग्रंथ ।
अवर दिसा भुल्लिय भवन , चलिय महोवे पंथ ॥६॥
बुद्धवान बहु बुद्धि करि , मंत्र मझ्झ मन मोइ ।
जन आपन सब बहुत कर , भावी करै सु होइ ॥७॥

चौपही ।

इंद्रादिक सब देव बखानहु । अनुसुइया घर भृष्टित जानहु ॥
नल नृघु नृप रघुवीर सुजानह । भावीबस सब भये अजानह ॥८॥

दोहा ।

सुर-नर नाग अजान सब , भावी कै बस होय ।
को मिट्टै करतार गति , भुवमंडल महँ सोय ॥९॥
वेद भेद सब दीनई , सबै पुरान सिखाय ।
गुपित कर्मविधि बुधन कहँ , हरषे सबै छपाय ॥१०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पदम सैन कंमोद की , सैना दली बिसाल ।
गोरी गहि कट्टिय कटकु , असिय सहस्र कराल ॥११॥
तीन चमूगू खंडन करिय , जे मृत तिन तजि वास ।
जीत भइय चहुवान किय , घाइल भये पचास ॥१२॥

चौपही ।

ते चहुवान दीन पठवाइय । बहु बहियर नृप संग लगाइय ॥
तिन महँ गुनमंजरि सुखदाइय । कनकसिंघ सरदार गनाइय ॥१३॥

दोहा ।

गैयर दये पचास सँग , हय दिय जुग हजार ।
सब परिगह के सँग पठय , कनकसिंघ सरदार ॥१४॥

छप्पय ।

समद सिषिर गढ़ परन राज दिल्ली दिशि चल्लिव ।
पातसाहि सुनि खबर धाइ बीचहि रन झिल्लिव ॥
सकल सिमिटि सामंत चंद कयमास बुद्धिवर ।
लहिव जुद्ध चहुवान गहिव प्रथिराज साहि कर ॥
रजपुत्त टुट्टि पचास रन लुट्टि जबर सैना घनिय ।
पट्ठान सहस पचास पर जित्ति चलिव दिल्लिय धनिय ॥१५॥

चौपही ।

राजा दिल्ली दिसि चलि आइव । चुक्किय राह बहीर सुभाइव ॥
घाइल आइ महोबे थानं । सो परिमाल सुनी यह कानं ॥१६॥

दोहा ।

पंच बुल्लि परिमाल नृप , पुंछि बत्त अपतीर ।
कवन कमुक तैं आइयव , कवन कमुक के बीर ॥१७॥
पदमसैन[1] भानैंज की , कन्या हरी सुजान ।
कट्टि कटक बिय नृपतिकव, फते लइय चहुवान ॥१८॥

१—परनसेन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इता जुद्ध गोरी करिय , कट्टे कोप पठान ।
तमकि आपु नृपराई बर , गहिय कोप कम्मान ॥१९॥

छप्पय ।

पदमसैन दल कट्टि जासुकिय सुता हरण किय ।
कट्टि भूप कंमोद मोद मन मज्झि बीर किय ॥
फिरि गोरिय साहाव सैंन मिट्टिय गहि लिन्नव ।
परि पचास हज्जार मीर भूतल धरि दिन्नव ॥
रजपुत्त परे पच्चास रन तीस बीस घाइल भये ।
ते बिदा कीन चहुवान भर जुग्गिनपुर संमुह भये ॥२०॥

दोहा ।

प्रथम खबर परिमाल नृप , क्रोध कीन चितु लाय ।
तहु लग घाइल कनक लै , नगर महोबै आय ॥२१॥
घाइल संग पचास अरु , गुनमंजरि सुखदाय ।
भूलिय राह बहीर सब , नगर महोबा आय ॥२२॥
व्यास बचन को मिट्टइव , वदति चंद बरदाय ।
चाहुवान चंदेल सह , संगर हेात बनाय ॥२३॥
पदमावति किय भाँवरिय , नट्ठो नृप चहुवान ।
उत महोब मट्टी परे , घाइल मुक्कत प्रान ॥२४॥
उत घाइल महुबे सुकटि , लेत स्वर्ग की राह ।
चाहुवान दिल्ली नगर , करत बरन सों व्याह ॥२५॥

पद्धरी ।

बरनी बिबाह चहुवान रान । सेा व्यास वचन करि जुग प्रमान ॥
जद्दव गरब्ब भंजैा सुबीर । कंमोदमनिय जीत्यौ गहीर ॥२६॥
रन कट्टि पंच सत्रह हजार । जद्दव कमोद दल कटि दुतार ॥
सुरतान पकर लिय आसु आपु । रुस्तम ततार मिटि गयव दापु ॥२७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुग्गिनि पुरेश दिसिराज पाय । भुल्लिय बहीर महुबै सु आय ॥
घाइल कितेक रजपूत संग । दासी सुमंजरी गुन उतंग ॥२८॥
पहुँचे सु महोबै नगर आय । बरष्यौ सु मेघ बुंदन अघाय ॥
भय बिकल लोग घाइल उतापु । नृप बाग माँझ चलि गयव आपु ॥२९॥
जहँ महल ठाम सोभित सुभेक । बल भलिय जोध चढ़ि चढ़ि अनेक ॥
सत इक्क आइ मालिय सुधाय । रुक्के सुवीर चहुवान राय ॥ ३० ॥
कहि नगन जटित प्रासाद येह । तुम कवन जात बरषंत मेह ॥
जलजंत छुट्टि महराज आय । रानीन जुक्त मन मोद पाय ॥ ३१ ॥
सुचि मास रहिय तन तपन छाय । उत्तर न दीय सोपान पाय ॥
फिरि रुक्कि राह मालीन सोय । बुल्लिय कुवेाल अति क्रोध होय ॥३२॥
गारिय सु दीन उग्गार हथ्थ । विरच्यो सुवाहि पथ्थर समथ्थ ॥
लाग्यौ सु जाय रजपून सीस । धाये सुतेग कर करिव रीस ॥ ३३ ॥
दिन्निय सु सीस तिहि घाल सोइ । उड़ि परचो मथ्थ धर बिभग होइ ॥
भय सोर सुनिय परिमाल राज । पठये सुजोध करि हुकुम साज ॥३४॥
चंदेल जागरा वीर सूर । चेरे सहस्र इक मल्हन रूर ॥
इक सहस लोग परिगहि सुतीन । तिन कहँ भुवाल आयस्सु कीन ॥३५॥
जादव सुलंखि साँवत सुभेक । सजि गहिरवार गोहिल अनेक ॥
सज्जे सु बनाफर जूथराय । हरिदास बघेला बिरचि भाय ॥३६॥
आये सुसज्जि दरबार सोय । गुद्दरिय बात ततकाल होय ॥
रानीय मल्हन दे है खजूर । गुद्दरिय बत्त दरबार दूर ॥ ३७ ॥
ऊचे अवास साजे सु सुद्ध । परमाल तहाँ बैठो बिरुद्ध ॥
मालिनि पुकार करि करि नवीन । परमाल जुद्ध कहँ हुकुम कीन ॥३८॥

[दोहा ।]

हुकुम कीन परमाल नृप , घाइल बचन उचार ।
अनाहक्क चंदेल नृप , क्यौं मंडित महि रार ॥ ३९ ॥
बुल्लि अग्ग हरिदास कहँ , पान दये चितु लाय ।
ना मानी परमाल नृप , घाइल देहु खपाय ॥ ४० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज रासो ।

यह हिन्दी साहित्य का सब से प्राचीन ग्रन्थ है जो अब तक प्राप्त हुआ है। इसमें कवि ने भारतवर्ष के अन्तिम क्षत्री सम्राट् राजा पृथ्वीराज का जीवनवृत्तान्त विस्तारपूर्वक लिखा है जो आदि से अन्त तक विचित्र घटनाओं से भरा हुआ है। इतिहास प्रेमियों के लिये तो यह ग्रन्थ अनमोल रत्न है। इसकी भाषा कुछ कठिन है अतः सभा ने समस्त ग्रन्थ के सारांश को सरल हिन्दी भाषा में इसके साथ ही साथ छपवाया है जिससे मूल ग्रन्थ के पठन पाठन में बड़ी सहायता और आनन्द मिलता है। मनोरञ्जक तो यह इतना है कि कहीं से कोई पृष्ठ उठा कर दस पांच पंक्तियाँ पढ़िये फिर कदापि आप समस्त ग्रन्थ पढ़े बिना नहीं रह सकते। जिन हिन्दी प्रेमियों ने इस ग्रन्थ को अब तक नहीं लिया है उन्हें इसकी एक प्रति अवश्य लेनी चाहिए। इसके ६९ पर्व्व २२ भागों में छपे हैं जिनका मूल्य २५॥) है। प्रत्येक भाग जुदा जुदा भी मिल सकता है। मूल्य १॥) के लगभग है।

अन्य उपयोगी पुस्तकें ।

हम्मीर रासो (रणथंभौर के वीर शिरोमणि महाराज हम्मीर देव का जीवनचरित) २)
हम्मीर हठ ,, ॥)
जंगनाम (दिल्ली के बादशाह बहादुर शाह के पुत्रों का युद्ध) ॥)
इन्द्रावती १॥)
कवि आनन्द घन कृत बिरहलीला ।=)
भूषण ग्रन्थावली (प्रसिद्ध कवि भूषण के शिवराज भूषण, शिवा बावनी आदि ग्रन्थ) १॥=)
सुजान चरित्र २)
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवनचरित्र ॥=)
महिला मृदुबाणी (भारत वर्ष की विदुषी स्त्रियों की संक्षिप्त जीवनी) १)
हिम्मत बहादुर विरुदावली (बांदा के प्रसिद्ध वीर हिम्मत बहादुर का चरित्र) १)
नन्द दास की रासपंचाध्यायी ।=)
अखरावट ।=)
यूरोपीय दर्शन (यूरप के दर्शन शास्त्र का इतिहास) ॥)
परिचर्याप्रणाली (रोगी की शुश्रूषा करने की विधि) ।)
संक्षेपलेखप्रणाली अर्थात् हिन्दी शार्टहैण्ड १)
महाराणा प्रतापसिंह (नाटक) ॥)

ये सब पुस्तकें मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से मिल सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीर्ण व अजीर्ण के दस्त की दवा।

खाना पचानेवाले रसों के घटने बढ़ने वा विकार से अजीर्ण रोग होता है जिसके यह लक्षण हुआ करते हैं—खाने के बाद पेट भारी जान पड़ना, पेट में वायु होना, जी मिचलाना, खट्टी वा व्यर्थ डकार आना, छाती जलना, मुंह में पानी भर आना, पेट में थोड़ा थोड़ा दर्द होना, चित्त की ग्लानि, आलस्य आदिक। जब तक खाना हजम की थैली में रहता है और पाचनक्रिया कठिनता से होती रहती है यही हालत होती है। जब यह अनपचा खाना अँतड़ियों में उतर जाता है तब पेट में गड़गड़ाहट होती है, पेट फूलता है व दस्त की चेष्टा होती है। दस्त पतला वा पानी के ऐसा होता है। कभी कभी खाने के थोड़ी देर पीछे ही दस्त हो जाता है। दस्त होने से शरीर क्षीण होता है। ये सब हालतें कभी कम, कभी अधिक होती रहती हैं और महीनों तक चलती हैं। रोगी का शरीर दिन पर दिन गलता जाता है। अन्त को असाध्य हो जाता है।

शरीर की साधारण पुष्टि का घटजाना इस रोग का कारण है। नीचे लिखी हुई हालतों में ऐसाही होता है—

वृद्ध अवस्था, कोई विशेष रोग के बाद कमज़ोरी, कम खाना (जैसा कि व्रत, लङ्घन, पारण आदिक में लोग करते हैं), धातु के व्यर्थ नष्ट होने से क्षीणता, अधिक श्रम, दुश्चिन्ता वा शोक, प्रसव के विकार से कमज़ोरी।

इन विषयों को विचार कर डाक्टर बर्म्मन ने अजीर्ण की दवा बनाई है। खाना हज़म करने व अजीर्ण के दोषों को मिटाने में इसकी विशेष शक्ति है। यह दवा छोटी छोटी टिकिया की ऐसी बनी हुई है। पंदरह रोज़ के सेवन योग्य ३० टिकिया की एक शीशी का मोल १) रुपया। डाक महसूल १ से ४ शीशी ।-) आने।

डाः एस. के. बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पुस्तक संख्या २३

ग्रन्थ संख्या ४६]

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक, श्यामसुन्दर दास, बी० ए० ।

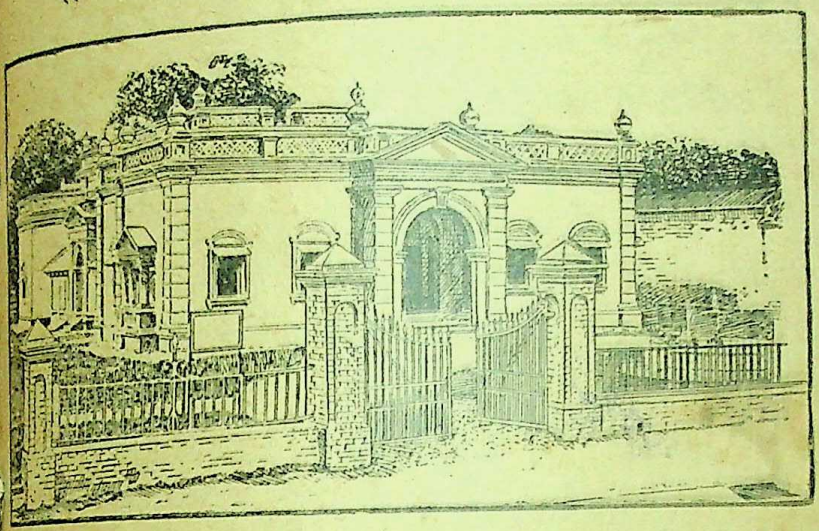

FASCICULUS NO. 46.] [BOOK NO. 23.

NAGARI PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR

SYAM SUNDAR DAS, B.A.

PUBLISHED BY

THE NAGARI PRACHARINI SABHA,

BENARES.

[Price per fasciculus As. 8.

ISSUED ON THE 15TH SEPTEMBER 1913.

PRINTED BY APURVA KRISHNA BOSE AT THE INDIAN PRESS,

ALLAHABAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका।

(२३) परमाल रासो—बाबू श्यामसुन्दर दास सम्पादित। (पृष्ठ ४१—१०४ तक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पकरि बाग रजपुत्त जब , क्रोध जानि परमाल ।
सिर लग्गे असमान कौ , पग दिय परम पताल ॥ ४१ ॥

मोतीदाम ।

कियौ परिमाल हुकुम्म सुगाज । चले सब सावँत जंग पै साज ।
चँदेल बनाफर मुख्य सो सूर । बघेल सु गोहिल लोह करूर ॥४२॥
चले भर जागर मल्हन सोय । सजे भर जद्दव भद्दव होय ॥
नबाजिय बैस नरेस हुकुंम । सनम्मुख सक्र सुबक्र सकुंम ॥४३॥
चल्यौ हरिदास बघेल बलिष्ट । पचारय सक्र उचारय इष्ट ॥
सुनी रजपूतन बत्त कुढंग । बधे वपु घाव उपाव सु अंग ॥४४॥
कहैं रजपुत्त सुन्यो जब घैर । अहो नृपराय करौ जिन वैर ॥
उँचे अति सौध जहाँ नृपराय । कहै रजपुत्त बचन्न सुनाय ॥४५॥
सुनै चहुवान न छोड़हि दाव । करौ मम अद्ध चँदेल उपाव ॥
करौ प्रथिराज सों काजु बिरुद्ध । तजै तब खेत जुरौ जब जुद्ध ॥४६॥
यहै सुनि बानि करे रत नैन । कहै नृप मारहु मारहु बैन ॥
चली सब साजि चँदेल कि फौज । पिलै रजपूत सनम्मुख चौज ॥४७॥
भिदी तब दिष्टि सों दिष्टि करूर । जुरे रजपुत्त मरद्द मरूर ॥
मिले मुख आइ मुछाल जुवान । उछालत आवत क्रोध अमान ॥४८॥
लगे वर सायक छत्तिय आय । किधौं विष आसिय फाँसिय नाय ॥
लगे उर संग सकत्तिय सेल । करैं दुहुँ वीर यहै विधि खेल ॥४९॥
कटकत घायल खग्गन काट । खटकत सेल्हन खेलनि राट ॥
गटकत गोटिय गिद्धिनि दौर । घटकत घायल दायल मौर ॥५०॥
चटकत चौप बहै करबाल । नरकत नंचिय धाय मुछाल ॥
छटकत सूर धर प्पर आय । जटकत गुंथिय जुग्गिन धाय ॥५१॥
झटकत इक्कन कौ गहि इक्क । नटकत जुक्कत कुट्टत इक्क ॥
टटकत टट्टिय लौं लगि सैन । लरैं बिन सीस परैं धन ऐन ॥५२॥
ठठकत कायर दिक्ख अबद्ध । डडकत डौरुव वज्र विरुद्ध ॥
ढुंकिय रुकिय कायर पाय । रनंकत रुंड खनंकत जाय ॥५३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तथेई नंचत वीर तमंकि । थरथ्थर काइर जाइ रमंकि ॥
दरब्बन दौरिय बीर तुरत्त । चरच्चर चाल भयानक रत्त ॥५४॥
नरद्दर रूर करूर लखाय । परप्पर फुट्टत जुट्टत काय ॥
फरप्फर फौज तरप्फर मार । बरब्बर बाजत घाइन तार ॥५५॥
भरभ्भर भज्जिय फौज चँदेल । मरम्मय सुद्धय बिद्धय सेल ॥
उरद्धर छेदहि घाइल घाय । लरै प्रथिराज की सैन सुभाय ॥५६॥
तबै उमरावन खायव चाल । भजी सब फौज लखी परिमाल ॥
हजार सु तीन परे धर मद्ध । भजी परिमाल की फौज प्रसिद्ध ॥५७॥
कटे रन तीसक घायल सोय । रुपे रन बीसव पंडव होय ॥
गह्यौ गुनमंजरि पानिय धाइ । उठावत प्यावत कीन सुचाइ ॥५८॥
लगे सर सेल्ह सु सत्रह गात । कटी गुनमंजरि जुग्गिन बात ॥
नबाजिय बैस चँदेल रतन्न । बली हरिदास कौं कीन पतन्न ॥५९॥
सुनी नृप सोचु कियौ इक जाम । इहाँ रजपूत कठिन्न कौ काम ॥
कही नृप ऊदल लेहु बुलाय । करैं रजपूतन सौं जुध जाय ॥६०॥

छप्पय ।

कुप्पि आपु परिमाल वीर उद्दल बुलावाइव ।
कटे तीन हज्जार भग्गि भग्गुल घर आइव ॥
महियपाल भुवपाल कहिय आयसु हम पावहिं ।
डैंगर से सामंत सोम सकतेस पठावहिं ॥
कीर्तब्रह्म नन्दन नवल फिरि सुबत्त इमि उच्चरय ।
मम चित्त हित्त यह आइयव उद्दलसी विधि जय धरय ॥६१॥

मोतीदाम ।

तबै नृप उद्दल लीन बुलाय । सुनी यह काम सुजादव आय ॥
पठाइ सु मल्हन दै तरवार । अहो इन घाइल लिज्जिय मार ॥६२॥
कहै तब उद्दल बैन प्रसिद्ध । सुनौ नृप ये रजपूत अबद्ध ॥
कह्यौ यह राजन कौ भ्रम ताफ । करौ इनकौ यह चूक जु माफ ॥६३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनौ बिनती चितु दै महराज । हनै इनकै जस भूतल जाल ॥
कहैं यह बत्त सुवेद पुरान । अबद्ध सुबद्ध न किज्जिय रान ॥६४॥
भये सरनागत भूप चँदेल । तिनं पर कोप न घालिय सेल ॥
बिना बिनया नृप बद्ध कराय । सदेह चल्यौ जमलोकहि जाय ॥६५॥
कहै परिमाल सुबैन नवीन । हती इन फौज हजार सु तीन ॥
हनौ इन जोधन उद्दल सोइ । तबै दृग चैन हृदै मम होइ ॥६६॥

दोहा ।

तब उद्दल विनया करिय, सुनहु भूप चंदेल ।
माँ छत्री घायल अबध, क्यों मंडौं असिखेल[1] ॥६७॥

छप्पय ।

तब उद्दल उच्चरहि सुनव महराज अरज इक ।
घाइल कहे अबद्ध कहिय परवान व्यासवक ॥
होय चोप चहुवान रोष सावंतन भारिय ।
अतुल तेज प्रथिराज करव विनतिय हितकारिय ॥
चंदेलराज मानहु अरज अर्थ सरै सोइ किज्जिये ।
रजपूत दूत हनियै नहीं जीवदान नृप दिज्जिये ॥६८॥

दोहा ।

भूप कान लगि बत्त कहि , भूपति सौ चितु लाय[2] ।
तीनि सहस हनिये सुनै , उद्दल गयव डराय ॥६९॥
तीन सहस सेना हनिय , मारि न सक्के कोय ।
दुरजन सब हाँसिय करै , जग में अपजस होय ॥७०॥
उद्दल कहि पडिहार सौं , सजौ सनाह सु अंग ।
खड्ग बजावहु बाग में , सैन लेहु सब संग ॥७१॥

---

(१) मैं छत्री घायल अवध , क्यों मंडहु अस पेल ।
गुनमंजरि दासी हनी , अरु घायल रन पेल ॥
(२) जाइ नृपति के करन लगि , बोले दोनों भाय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब सब बंधहिँ न हम , अवध वीर तरवार ।
आइ कर्ण लगि बत्त कहि , ये बद्धहि पड़िहार ॥७२॥
सत्य वचन उद्दल कह्यौ , संबद सबै सिहाय ।
तमकि भूप के निकट ही , बोले दोनौ भाय ॥७३॥

चौपही ।

सुनि उद्दल किय बानिय सोइय । माहिल भूपति बोले दोइय ॥
हम दरबार भाइ दोइ दंडहि । रजपूतन पर पाप न मंडहि ॥७४॥

दोहा ।

महिला भोपति बानि सुनि , रिस पाये परिमाल ।
दौरहु उद्दल मारिये , घाइल घाइ निहाल ॥७५॥
सुहृद सुभट सत पुरिष सौं , तासौं कहा बसाय ।
सीख मानि उद्दल चले , नृप सौं कहा कहाय ॥७६॥

भुजंगी ।

सुनी बत्त चँदेल भूपत्ति भाषी । चढ्यौ बेग ऊदल यहै बैन साषी ॥
गहौ तेग हथ्थं समथ्थं सु धावो । लरौ खोल खग्गं तमासा दिखावो ॥७७॥
दिये राजफुरमान डेरा पधारे । किये कवच अंगं निहंगं हकारे ॥
दिये पंच हज्जार सथ्थं चँदेलं । चले बाग काजै समाजै सुझेलं ॥७८॥
निकट्टं सुबागं बचन्नं पुकारे । निकसि आव रजपुत्त प्रथिराज बारे ॥
सुनी कान बानी कृपानी गहाये । अभंगं बली बाहु जंगं मिलाये ॥७९॥
करै खंड खंडं भसुंडन्न भारे । हथ्थारं धरै वीर ऊदल पुकारे ॥
लखे सावँतन वीर ऊदल अमोले । बिहँसि आइ सनमुक्ख कनकेस बोले ॥८०॥
नहीं चावँडं कन्ह कयमास जानं । इहाँ उद्दलं कवन थांके बखानं ॥
तबै उद्दलं बैन सर्वं सुनाये । महाराज की सासना मानि आये ॥८१॥
घनी विनय कीन्हो न भूपत्ति मानी । अहं ज्ञातयं काल थाकौ बखानी ॥
अहो उद्दलं बात बुल्यौ गुमानं । लरे त्रय उमराव जाहिर जहानं ॥८२॥
नहीं रत्न हरिदास बघ्घेल रायं । अहो उद्दलं काल थाकौ सु आयं ॥
सुनौ नंद दसराज के साधु बोलै । प्रथियराज को लौन खायौ सु खोलै ॥८३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अहो वीर अभिलाष पूजे हमारे । बड़े सावतं उद्द कनकेस मारे ॥
यहै बुल्लि बानी दलं मद्धि आयं । बिरच्चे बली बाहु अत्रं चलायं ॥८४॥
मिलावंत सूधी बँदूखैं बरत्ती । परैं फुट्टि न्यारी उरं लग्गि छत्ती ॥
बरं तीर मारैं परे मुंड हंकै । उरं फुट्ट सन्नाह धरनी ठमंकै ॥८५॥
लगै सेल्ह छत्ती समस्ती भनारे । मनौ जावकं माठ कीनै पनारे ॥
वहै तेग कंधं करैं सीस न्यारे । परैं टुट्ट तरबूज धरनी पनारे ॥८६॥
लगै हीक जमदाढ़ पीकं पनारी । मनौ दुलहिनी हाथ कढ़्ढै अटारी ॥
जटारी धरैं रंजकं बीर नावै । मनौ सर्पिनी तक्र पूछं बनावै ॥८७॥
भये लथ्थबथ्थं दुहूँ सैन वारे । मनौ आभिषं काज जुट्टे मुनारे ॥
लगै खंजरं पंजरं पार फोरै । भुजा जोरिकै तोर मुक्की डरेरै ॥८८॥
भजी फौज चँदेल की उद्द जानी । लखी नैन परिमाल मल्हन सु रानी ॥
कटे उद्द की सैन के सहस्र दोयं । भजे तीन सहसं लखे भूप सोयं ॥८९॥
कटे द्वादशं घायलं सुभट खेतं । रुपे भीम से बीस सिर बाँधि नेतं ॥
चल्यौ सैन रन सौंप कै उद्द भारी । रह्यो हथ्थ सेल्हं सुमेलं पचारी ॥९०॥
उतै कनक चहुवान रजपूत धायं । वरं वीर उद्दल्ल पै कूदि आयं ॥
बली उद्दलं अद्य अत्रै चलावो । परम्माल कै सूर नामी कहावो ॥९१॥
कहै ऊदलं चित्त संकं न ल्यावो । करौ पहिल वारं सु अत्रं चलावो ॥
लख्यौ कनिक चहुवान ऊदल्ल भारी । हन्यौ सेल्ह अस्वं सुकत्ती पचारी ॥९२॥
हन्यौ ऊद कौ अस्व धरनी मिलायौ । कियौ जुद्ध रजपूत चहुवान ठायौ ॥
तबै ऊदलं इक्क बैनं उचारौ । अहो कनक सम्हार सेल्हं हमारौ ॥९३॥
सबै अंग लोहं सु हथ्थं गहायौ । मनौ जंबु पै बज्र बज्री चलायौ ॥
लग्यौ हीक ऊदल्ल कौ आय नेजं । परयौ फुट्टि चहुवान धरि अंत सेजं ॥९४॥
हन्यौ कनक कौ फेरि असि कढ़्ढ धायौ । हते अष्टऊ सूर धरनी मिलायौ ॥
लगी तेग कनकेस के सीस वारौ । भयौ मुर्छि तहँ घाइ ऊदल्ल भारी ॥९५॥

दोहा ।

भगे जोध चँदेल के , छाँड़ि उदल की आस ।
क्यौं चालै दसराज सुव , हनै बीस बिन त्रास ॥९६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुगल सहस भर कट्टियौ , त्रतिय भगे भहराय ।
तब उद्दल विक्रम करिव , घाइल हनै बनाय ॥९७॥

छप्पय ।

कटे खेत चँदेल सूर इक सहस अमानह ।
कटे बनाफर साठ इक्क उद्दल घटि जानह ॥
परि पड़िहार पचास परे चैरा सत सोइय ।
गहिरवार सत सत्त परे अंतर गिर होइय ॥
चहुवान परे घाइल कनक अवर बीस सगपग्गइय ।
कविचंद कहइ परिमाल सह प्रथियराज सह लग्गइय ॥९८॥

दोहा ।

परे बीस घायल समर, और कनक चहुवान ।
गिरे उद्द रन मूरछा, कटि दासिय बपुयान ॥९९॥

छप्पय ।

कटि दासिय बपुयान लखिय परिमाल अवासह ।
सहस इक्क चंदेल सेल खेलह करि ताकह ॥
प्रथियराज परिमाल रारि सुर भनत जिअंबर ।
कहै चंद बरदाय बीस घायल पर सम्मर ॥
सन मध्यह पंथ्थ हयरण घाइल हो महुवे गवन ।
हैनै बिरुद्ध चहुवान सह भभिष बत्त मिट्टै कवन ॥१००॥

दोहा ।

परिव कनकसिय खेत महँ, कन्हरसी लघुभाय ।
इक उद्दल नहिं आवतौ, साठ सहस्र खपाय ॥१०१॥

चौपही ।

परे बीस घाइल रजपूतह । सहस इक्क चंदेल सपूतह ॥
गहिरवार सत सत्त बखानहु । साठ इक्यावन सोभर जानहु ॥१०२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

हन घाइल चहुवान के , और मंजरिय वाम ।
चढ़ि सिविका पर आसुही , कूदि गये निज धाम ॥१०३॥
घाइल हनै पचास ही , बित्त गयौ वह काल ।
मृगया महँ यह वचन सुनि , मुरकि आल्ह ततकाल ॥१०४॥
मुरकिव आल्ह महोब कहँ , दारुन बुलिय स्यार ।
चाहुवान चंदेल सह , कहत सगुन यह रार ॥१०५॥

चंद्रायन ।

आल्ह गयौ निज धाम मातु कहँ बुल्लियं ।
उदल कहँ अवलोकि गूढ़ मत खुल्लियं ॥
भूपब्बि की मति मंद भई हम जानियै ।
भूपति माहिल मत्त रत्त जग मानियै ॥१०६॥

दोहा ।

सुनि अल्हन के वचन वर , कहत दिवल दे वाम ।
ऐगुन तजि सब भूप के , स्वामि-धर्म सह काम ॥१०७॥

चौपही ।

स्वामि-धर्म किन्निव हनुमानह । वाम अंत सब जगत सुजानह ॥
स्वामि-धर्म संगर चितु लावहि । दीरघ वास देवपुर पावहि ॥१०८॥

दोहा ।

सदा पुत्र जीवै न कोइ , भूतल कौ यह रंग ।
जौ भूपति भय मंदमति , आयसु करौ न भंग ॥१०९॥
माता के ये वचन सुनि , गयौ आल्ह दरबार ।
भूप उठे भहराय सब , नृप चंदेल जुहार ॥११०॥

चंद्रायन ।

आल्ह गयव दरबार कहिय परिमाल सौं ।
घाइल हति बिन चुक्क लुट्ट लिय माल सौं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धृक धृक तुव दीवान अवध बध किज्जिये ।
छत्रिय धर्म न होय सीख सुनि लिज्जिये ॥१११॥

दोहा ।

आल्हन को वर वचन यह , सतपुरुषन सुखदाय ।
महियपाल भुवपाल उर , लग्यौ वज्रसम जाय ॥११२॥
माहिल भेपत कोप कहि , सुनु जसरथ के नंद ।
राजन सह कटु बैन कहि , तिन कहँ सब जग बंद ॥११३॥
भूपति महिल बिलोक कै , आल्हन रिस दृग आन ।
बिहँसि भूप परिमाल दे , गहिव सूर के पान ॥११४॥
संबोधन राजा करे , आल्हन अंक लगाय ।
होनहार सेा हेा गई , को अब मिट्टय राय ॥११५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(४) मलखान संन्नायन वर्णन खंड ।

वाचनीक ।

भविष्य राजा सह चंद कही हती तह लग चर पहुँचे तिन कही। येती बात प्रथीराज सुनि चंद गुरराम बुलाये। कयमास राय, संजम राय, चावंडराय, चंदपुंडीर, बिझ्झुराज, सलष पवाँर, लषण बघेले, पहारसिंघ तोंवर, गोइंदराज गुहिलौत, इतनै आदि दै सत सावंत बुलाये। यह कही कै भासौ चंदेल बड़ो विरुद्ध करौ छै।

दोहा ।

कहै प्रथ्थु कानन सुनिय , घायल हतन सुजान ।
चाहुवान चंदेल बिय , कलि मंडिय घमसान ॥१॥

छप्पय ।

सुनिय बत्त चहुँवान करिव चंदेल विरुद्धह ।
हनि घायल बिन चूक अवर दासिय तिन सथ्थह ॥
सुनहु कन्ह कयमास सुनहु जादव राजा मह ।
सुनहु चंद पुंडीर सुनहु गुज्जर रा रामह ॥
चावंड जैत सुनिजै श्रवन सलष पजून विचारिये ।
सँजमराय लष्षन सुनहु तंत सुमंत्र उचारिये ॥२॥

दोहा ।

सावंतन सह पुंछि नृप , सोच कीन उर ग्राम ।
भविष बत्त इहि काल कछु , कथ्य चंद गुरुराम ॥३॥
भविष बत्त गुरुराम कहि , साँवत सिरै रिसाय ।
छंडि महोवौ नगर वर , कनवज्जह पुर जाय ॥४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तहु लग नृप रिस मारि मन , कहि दुजवर बरदाय ।
जौ जित्तौ परिमाल धर , इक्क वर्ष बिसराय ॥५॥

चौपही ।

गुरु गुरुराम कही सेा मानिय । इक्क वर्ष नृप चित्त न आनिय ॥
बीत वर्ष सावंत रिसानय । फेर कोप पीथल उर आनिय ॥६॥

दोहा ।

जब चालय प्रथिराज नृप , महुवे कज्ज रिसाय ।
भीमसाहि जब जब सुजुरि , जनपद लेहि छिड़ाय ॥७॥
ऐसहि वसु वर्षै गई , भये दोइ घमसान ।
भग्गि भीम गहि साहि कहँ , तब चल्यौ चहुवान ॥८॥
कहै चंद प्रथिराज सुनि , थां महोब पर जाय ।
कछुक काल महँ आसु हिय , साँवत पहुँचै आय ॥९॥
साँवत बहु बलवान हैं , बल्लि सल्लि अवतार ।
जौ रन महँ ऊभौ नृपति , कटौ सहित परिवार ॥१०॥
चंद गुरू गुरुराम कहि , प्रति उत्तर नृप लीन ।
चल्यौ दुर्ग दरबार कहँ , मौन वृत्य नृप कीन ॥११॥
सावंतन सह बत्त कहि , किन्नव खेद अपार ।
महा मौन मृग चर्म गय , दुर्गा के दरबार ॥१२॥
सुनिय बत्त चहुवान नृप , घायल हनै चँदेल ।
साँवत बल हमसेां करैं , जुरत समर असि-खेल ॥१३॥
चाहुवान उर सेाचु करि , गय कालीमठ माँह ।
सिरु छिन्नन छुरिका लई , गहिए अंबिका बाँह ॥१४॥
किहि कारन सिरु छिन्नइय , बदति अंबिका बत्त ।
अब भूपति तुम छिप्रही , कहौ खोलि निजु मत्त ॥१५॥
करिय विनय कर जोरि नृप, परि चंडी के पाँय ।
मान मरद चंदेल मम , सैना हतिय बनाय ॥१६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुगल वीर चंदेल के , बल्लि सल्लि अवतार ।
ते साँवत संग्राम महँ , सैना हनै अपार ॥१७॥
फिरि विनती भुवपति करी , दुर्गा के पग लाय ।
जित्ति होइ बर दै उमा , सत साँवत बगसाय ॥१८॥
इक्क खंडिहै जुगल महँ , सत्त सूर सब खंडि ।
जित्ति होइ बर हम दयौ , कहिय बत्त बर चंडि ॥१९॥
इक्क कीजियै मम वचन , कहति अंबिका माय ।
प्रोहित वर गुरुराम कहँ , मारन मंत्र जपाय ॥२०॥
भट्ट जान नृप मो वपुष , या सम भूमि न कोय ।
बयन मान चंडी वदति , चंद कहै सो होय ॥२१॥
चंद वचन गुरुराम के , जब मिट्टय नृपराय ।
तब तेरे तन स्यौ सहित , राज्य इन्द्रपथ जाय ॥२२॥
सीख दई जननी जगत , सो मानी प्रथिराज ।
चरन परयौ आनंदमन , करौ समर महँ काज ॥२३॥

चौपही ।

आनँद भय भूपति परि पाँइय । महिष अजा सत सत कटवाइय ॥
पूजी उमा ध्यान उर लाइय । आयव गृह नृप कीन बधाइय ॥२४॥

दोहा ।

दियव दान षट भेष कहँ , चाहुवान सुखु पाय ।
सुकवि चंद गुरु राम कहँ , लिय समीप बुलवाय ॥ २५ ॥
जो वरु श्री दुर्ग्ग दियौ , सोइय कह्यो सुनाय ।
प्रोहित गुरु गुरुराम तुम , मारन मंत्र जपाय ॥ २६ ॥

चौपही ।

गुरु कवि चंद बुल्लि वर बानिय । कहिय बत्त भूपति महमानिय ॥
सत संगर जित्ते चंदेलह । आल्ह उदल खग्गन के खेलह ॥ २७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बड़िय सिद्धि सिद्धन पर पाइय । सेवन करि फलु पर्न भखाइय ॥
गोरख वर वरदान सुदिन्नव । सो सब आलह नाइ सिरु लिन्नव ॥२८॥
जिन जमनन किय चमू खपाइय । उदधि अंत लग सेतु बँधाइय ॥
रछ्यामंत्र सरीर सहाइय । बिना देवबल जित्ति न जाइय ॥२९॥

दोहा ।

दिन्नव वर बर अंबिका , बुल्लि गहीर जुबान ।
अब जित्तहु चंदेल कहँ , समर मध्य चहुवान ॥ ३० ॥
चुक्क वृंद भां चित न धरि , बेल बहिन के ब्याह ।
तब तैं मन चंदेल बढ़ि , कीन्हैं जुद्ध उछाह ॥ ३१ ॥
मो मन यह चंदेल सह , तुरत मंडितौ रार ।
हितुव जानि सोमेस पुनि , किन्नव संधि विचार ॥ ३२ ॥
अवध बद्ध घायल करे , अरु गुनमंजरि नारि ।
अनहोनी चंदेल करि , दिक्ख्यो वीर विचारि ॥ ३३ ॥
सुनहु सर्व सावंत हौ , यह पन किन्नव मैंहु ।
कै खंडौं चंदेल कै , सीस महौबै देंहु ॥ ३४ ॥

हनूफाल ।

यह कहिय भूपतिराय । सामंत सर्व सुनाय ॥
घायल सु दीन बिसाल । बिन चूक हनि परिमाल ॥ ३५ ॥
गुनमंजरी सुभ नारि । बध करत चित न बिचारि ॥
भां जानि मानि सरंक । चंदेल करिय न संक ॥ ३६ ॥
बहु दर्बि भरिव गुमान । सावंत लखि परिवान ॥
भानैज कौ लिय दाव । चंदेल मन सुखु पाव ॥ ३७ ॥
इकु मालि मारिव सोय । मम सुभट हनतौ दोय ॥
यह करिव कौन विचार । किन्नव विरुद्ध अपार ॥ ३८ ॥
अबला सु खंडिय दीन । चंदेल नृप मतिहीन ॥
नृप जानहार जु होय । मन महँ न आनय कोय ॥ ३९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सठ सभा कौ ज्यौं सेय । बुधिवान बुद्धि न लेय ॥
जाके सु कोविद पाँच । तिनकी न मानिय आँच ॥ ४० ॥
मतु राजनीति न होय । डोलंत राज्य सु सोय ॥
यह कहत सकल पुरान । मानंत नहिं अज्ञान ॥ ४१ ॥
यह रतिय की सब बत्त । मति पलटि सुरभिय पत्त ॥
मन माँझ बड़ अति छोह । धारत्तु कर अब लोह ॥ ४२ ॥
नित तजतु राज समाज । वैराग्य मत मन साज ॥
ये बचन कहि चहुवान । बुलिय सु अबर जुबान ॥ ४३ ॥

दोहा ।

चाहुवान ये बचन कहि , मौन गह्यो अति क्रोध ।
मन मुंचे सावंत सब , करत नृपति कर बोध ॥ ४४ ॥
सत्य बचन सब सभा महँ , उच्चरि संभर-कंत ।
मारु मारु चंदेल धर , बोले सब सावंत ॥ ४५ ॥

पद्धरी

उच्चरि बघेल लष्षण समथ्थ । गंजौ सुदेश महुवौ सपथ्थ ॥
उच्चरिय बत्त चहुवान कान । भंजियै भूप परिमालथान ॥ ४६॥
चावंड बुलि बिरदालि बंक । धारहु चँदेल मारहु निशंक ॥
बुल्यौ सु चंदपुंडीर वीर । पष्षरि नरिंद प्रथिराज धीर ॥४७॥
संजमहराय बुल्यौ विरत्त । कढ़ियैं सुवीर बढ़ियैं तुरत्त ॥
सारंग बुलि बानी विराट । लुट्टहु सुमाल परिमाल थाट ॥४८॥
सुनि बत्त कमध निडुर नरेस । मारहु सुवेग महुवौ सुदेस ॥
बुल्यौ सु जैत मत तत्तसुद्ध । कीजै सुबेग चहुवान जुद्ध ॥४९॥
भौहा चँदेल बुलिलव बिरद्द । कीजै हुकुम्म चहुवान सद्द ॥
अचलेस बुलि भट्टी सुधीर । दाहियै देस चंदेल हीर ॥५०॥
गोइंद बुलि गुहिलौत बात । किज्जियै राज परिमाल मात ॥
बिझ्झर सुराज कहि दाव साज । बढ़ियै सुवीर चढ़ियै सु साज ॥५१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरबत्त साषुला कहिय सोय । चढ़ियै सुराज अति तेज होय ॥
धाँधू सु बुल्लि जोधा सु टाँक । जित्तियै राजगढ़ मद्दुब बाँक ॥५२॥
रयपाल बाक साधू सुराय । हनियै चँदेल बाहनि बनाय ॥
सावंत सूर सब बिरत होय । थप्पियौ मंत्र कयमास सोय ॥५३॥
दाहिम सु बुल्लि आगै नरेस । चिंतयौ मत्त भर सुद्धनेस ॥
जयचंद करहि उप्पर चँदेल । किज्जिये मत्त सवधान खेल ॥५४॥
कयमास बत्त सुनि भूप तीर । फिरि बिहँसि सर्व बुल्ले सुवीर ॥
कनवज्ज ग्रैार महुवौ सुनेस । भंजियै भूप नृप जुगुल देस ॥५५॥
थप्पियौ मंत्र चहुवान सुद्ध । धारहु परम्म चंदेल जुद्ध ॥
बुल्लाइ चंद बरदाय सोय । भव भविष बत्त तिहि अगम होय ॥५६॥
बुल्लाइ राम गुरु पास राज । वर होइ मद्दुरति करहु साज ॥
गुरुराम मंत्र मारन बखानि । आल्हन नरेस किय संक मानि ॥५७॥
रचि कुंड मंडि सुचि होमसार । साकिल्ल कीन मारन विचार ॥
बन जाय खनिक शिवदान काटि । राजाभिलाष ता होम बाटि ॥५८॥
अहि अस्तमाल जपि रुद्र मंत्र । त्रयलोक विजय भुवमंडि तंत्र ॥
केतकी पुष्प हर पर चढ़ाय । कास के फूल हित करि बढ़ाय ॥ ५९॥
चक्कोर आय नृप दरस दीन । खंजन सिखंडि बपु परस कीन ॥
भय होमसिद्धि दुजगुरु उचारि । पुनि गवन कज्ज नव ग्रह विचारि ॥६०
रवि जोग पुष्य त्रय नाथ चंद । पंचमौ राहु आनंद कंद ॥
सत्तमौ सुक्र दस गुरो जानि । नवमौ सु बुद्ध बनि अधिक पानि ॥६१॥
शनिवार तीसरौ छटौ केत । भौ पंचमेक अरिदहन नेत ॥
ग्यारहौ राहु बलि चढ़ि निरंद । पारथ्थ जेमि बल बढ़य दंद ॥ ६२ ॥
छत्रिय सुवंस हय वर मँगाय । सब जटित साजु वज्राणि बनाय ॥
असवार होय प्रथिराज राय । किन्नव मुकाम नृप बाग आय ॥६३॥

दोहा ।

परस्थान नृप बाग महँ , पीथल उतरे आय ।
काम कला प्रगटी घनी , पटरानी पधराय ॥ ६४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाचनीक—करनाटी, हंसावती, पदमावती, ससिवृता इच्छिन पवांरी, ये पंच पटरानी बुलवाय हजूर लई। विररह बाग मै तीन जाम रहे।

अरिल्ल।

बाग आय नृप कियो विनोदं। इच्छिनि राजनि बैठे मोदं॥
चंद बुलाय कह्यो नृप ही कौ। कबियन बरन बागु बहु नीको॥ ६५॥

भुजंगी।

बनी अस्त्रवारी फरे वृक्ष टेकं। रटैं बैठ पक्षी सुभाषा अनेकं॥
ठठे अंब निंबू सु जंबू वरीसं। लुटैं भुंमि झुम्मिय यहौ हार हीसं॥६६॥
कहूं चंपकं चौर चीनी चुनीयं। मनौ दीपकं माल मन्मथ्थ दीयं॥
कहूं नालकेरं रुचे रूव दाम। सुवा सारिका बोल बोलंत तामं॥६७॥
कहूं पक्क डारै अनारै दरक्कै। कहूं सोभसारं सुभारं दरक्कै॥
कहूं केछुवारी सुपारी नियारी। कहूं केवरे केतुकी भीर भारी॥६८॥
कहूं साल नालं गुलालं सुपुंजं। कहूं जात पक्षी भरं भार गुंजं॥
करैं केलि मैं केल मोरं चकोरं। कहूं केर केलं कहूं नार वोरं॥६९॥
फरे फालसे, औ लवंगं सुचल्ली। दरै दुष्ष सोकं सदाषं प्रचल्ली॥
कहूं कंचनं कंदनं ताप तापं। जहां काम क्रोधै गहै राज चापं॥७०॥
कहूं पाडरं डार बैठे परेवा। कहूं विज्जपूरी सिँदूरी करेवा॥
कहूं सारनी फेर कै वाय ल्यावै। कहूं नागवल्लीन कों नीर प्यावै॥७१
कहूं घट्ट घट्टं रहट्टं चलावै। कहूं मालिनी चारु माला बनावै॥
कहूं ठेकुरी ढारि कै वारि ढारै। कहूं थान ऊचै सजै नारि चारै॥७२॥

दोहा।

वर सर सर सरसिज सरस, रहट बहुत वस जाम।
वापी कूप तड़ाग तै, भरै चहवचा ताम॥ ७३॥
इहि विधि सुवरन वासनै, सुख पायौ लखि बाग॥
जिन निरष्यौ तिन या कह्या, धन्य हमारे भाग॥ ७४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय ।

यह लखत बाग महराज अति आनंद उछंडिय ।
बनि बनितागन बीच मतौ कन्हर गुन मंडिय ।
गहत एक को पानि औरे आलिंगन रुप्पै ।
ता मुख चुंबत प्रेम गहै कुच चीरन चंपै ।
कविचंद कहै वरदाय वर काम केल नर कुशल नृप ।
तीन जाम जग भा गवन भोर चल्यो पुनि दहन रिप ॥ ७५ ॥

दोहा ।

तीन जाम क्रीडा करिय , पटरानिन सँग राय ।
चतुर जाम लागंन नृप , विदा कीन सुख पाय ॥ ७६ ॥ [1]

छप्पय ।

गैर महल प्रथिराज सीख सावंतन दिन्निय ।
कुसुमपाट सिर पाग लाग कंद्रप रस किन्निय ॥
पहर निसा रहि जग्गि कीन क्रिय कर्म सु अंगह ।
सीख दीन सुंदरिनि वीर किन्नव वपु जंगह ॥
कयमास बुलि अंगै लियव दीरघनाद बजाइयव ।
चहुवान कन्ह नृप चन्द गुरु सब सावंत जु आइयव ॥७७॥

दोहा ।

जज्ञ सीख सुंदरिनि दय , पहिर कपच कलकंद ।
सारे भट ऊभे भये , किये नगारे दंद ॥ ७८ ॥

हनूफाल ।

नृप जज्ञ बंब कराय । कयमास अग्ग बुलाय ॥
चहुवान कन्हर चंद । गुरुराम आनँदकंद ॥ ७९ ॥
साँड़िनिय सब्बय साज । बिलहंन बंदन राज ॥
हय मोर कन्हर दीन । अयराक वंस नवीन ॥ ८० ॥

---

(१) छंद ६६ से ७६ तक ज० प्रति में नहीं है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिरताज आरब सुद्धि । कयमास दीन विवुद्धि ॥
हयराज चाँवड़ कज्ज । खंधार उपजिव बज्ज ॥ ८१ ॥
हय रतन चंद पुँडीर । मंगौ न साहि सुर धीर ॥
हय सूर नरसिंघ दीन । ढाठी[1] सुवंस नवीन ॥ ८२ ॥
हय भीम गोइंद देव । तुरकी सुहेव रहेव[2] ॥
हयराज जैत पमार । लटिया लगै गन मार ॥ ८३ ॥
मनय्यार निड्डुर ल्याइ । उतफाल मृग सम आइ ॥
हय तेज रूप सुरज्ज । दिय राज देवन कज्ज ॥ ८४ ॥
हंजिय सुहय मतिनेस । बड़ गुज्जरं कनकेस ॥
तुराक के हय नून । सँमप्यौ सुराज पजून ॥ ८५ ॥
बगसौ मलेसी काज । सँमप्यौ सुमानिक बाज ॥
अस कुसुम अरि दल ठेल । बिलहनौ भौंह चँदेल ॥ ८६ ॥
चहुवान हरिपद काज । समप्पियौ मोती बाज ॥
सुभ सिंधु हेवर लीन । अचलेस कारन दीन ॥ ८७ ॥
सुरखा सु सनमुख सूर । दिय आल्ह काज हजूर ॥
नवलेस कौं हय दीन । नृप हेम सरवर लीन ॥ ८८ ॥
हाहुलिय कारन हीर । ताजी सुतेज गँभीर ॥
हम्मीर काजै हंस । उपज्यौ सुतुरकी बंस ॥ ८९ ॥
गंभीर काज तुरंग । रेसमिय रंग सुरंग ॥
संजम्म काज सकाज । दिय खुरिय राज सुबाज ॥९०॥
मृगपत्ति रग मृग चाल । सँमप्यौ सुर नरय साल ॥
मंगाय हय रनवीर । अवरोह धाँधुव धीर ॥ ९१ ॥
उर सर्व साहन काज । दिय सुद्ध राज सुबाज ॥
सावँत अवर कुलीन । अन्ने हयवर दीन ॥ ९२ ॥
सिंगारि पील नरिंद । बगसीस कीन सुचंद ॥
गुरुराम काज नवीन । दो सहस हेम सुदीन ॥ ९३ ॥

(१) राठौर । (२) हय मुकुट गोइँद राज । मानिक बाज समाज ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंगाय पार सिंगार । मदगलित गति जिमि मार॥
उत्तंग गिरिवर अंग । जनु सिखिरि कज्जर स्रंग ॥९४॥
सिर चरचि लाल सिंदूर । जनु तड़ित घन महँ पूर॥
असवार ह्यौ प्रथिराज । कयमास संग समाज ॥ ९५ ॥
आकास देव सु स्वच्छ । सेना सु दिक्खत अच्छ॥
सन्मुख्ख सारस शद्द । अहि जीवनौं फनमद्द ॥ ९६ ॥
जा सीस बैठी देवि । जलजात खंजन सेवि ॥
बगु दछिन ऊँचौ पाउ । मुख सैमली भख चाउ ॥ ९७ ॥
जल माँझ चकवन मेल । जग करय अदभुत खेल॥
भय सगुन आनँदकंद । हँसि गाँठि बाँधिय चंद ॥९८॥

दोहा ।

चलिव सज्जि संभर धनिय , सावँत सूर सुकज्ज ।
बेारन धर चंदेल किय , लेापित सागर लज्ज ॥९९॥

छप्पय ।

चढ़िव राज चहुवान लीन सावंत सूर वर ।
अतुल तेज बल अतुल सतुल सुरधर्म महापुर ॥
बीस सहस सब अंग अंग कंगल कसि भारिय ।
चाहुवान राठौर गौर कूरम बड़वारिय ॥
गुहिलौत बघेलेय बागरिय मेारिय बड़गुज्जर मिल्यव ।
तौंवर पहार खीची मल्हन दाहिमार हाड़ा चल्यव ॥१००॥

दोहा ।

साठ सहस दह सैन महँ, बीन लीन बलिवान ।
बीस सहस जनपदन कहँ, बिदा कीन चहुवान ॥१०१॥
चाहुवान सँग सैन लिय , किन्नव कोप अपार ।
ता समयै भेापत्ति को , पहुँचि आनिं प्रतिहार ॥ १०२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंडलिया ।

पत्री भोपति पाठई , प्रथियराज कहँ लिख्खि ।
पहिल मार मलखान फिर , नगर महोबा दिख्खि ॥
नगर महोवा दिख्खि , सैन-सह निसि दिन धावहु ।
सिरसवाह लघु भीर , बीर तुम वेग खपावहु ॥
जो सम्हरय बलवान , कटक कुट्टहि गहि कत्तिय ।
अपनै कर लिखि भेज , दइय भोपत सो पत्तिय ॥ १०३ ॥
सावंतन सिरताज सो , कनवज गयव रिसाय ।
चंदेलौ भौ मन्दमति , रह्यो महोवै छाय ॥
रह्यो महोवै छाय, करै हमहूँ सो हैइय ।
हम रख्खत हैं राजु, देस दिसि भूतल सोइय ॥
करहु कौल चहुवान , बात निबहै सो अंत न ।
बुझ्झि चंद गुरुराम , अवर सर्वे सावंतन ॥ १०४ ॥

दोहा ।

अर्धराज चहुवान नृप , जो भां कौ थां देहु ।
पकरि दैहि परिमाल कहँ , नगर महोवा लेहु ॥ १०५ ॥
यह पत्री कासिद्द दिय , प्रथियराज के हथ्थ ।
खोलि वंचि आपुन नृपति , आनँद कियौ अकथ्थ ॥ १०६ ॥
प्रतिउत्तर तत्काल लिखि , भूपति कहँ नृपराय ।
जौ हारै चंदेल तौ , अर्धराज्य बँटवाइ ॥ १०७ ॥
फेरि लिखी पड़िहार कहँ , बोलु होइ नहिं गस्त ।
अर्ध राज्य थां कहतु भां , अप्फव राज समस्त ॥ १०८ ॥

वाचनीक—भोपति के चर गोप्य वचन राजा सन कहा । ये कहा ।

दोहा ।

आल्ह उद्द कनवज्ज तैं , जौ कदाच नृप आय ।
भांके थांके बोल वर , मिथ्या सर्व पराय ॥ १०९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीह दुख्य राजा दियौ , पुर तै दए निकारि ।
संकट सुनि पुनि पां धरै , स्वामि धर्म उर धारि ॥ ११० ॥
सीख मंगि चर राह लिय , बुल्लिय सत्य जुबान ।
देश दहन चंदेल के , चाले दल चहुवान ॥ १११ ॥
बारह सै चालीस[1] भनि , ईष मास बुधवार ।
करयौ कोपु चंदेल पर , संभरि संभरि वार ॥ ११२ ॥

चौपही ।

जब दल जुरि दिल्लिय तै चालिय । टुट्टत तर छोनिय धर हालिय ॥
आगे कीन पंच सत हथ्थिय । मानहुँ दिसि दिग्गज के सथ्थिय ॥११३॥
सत सावँत लिन्नैं सुखु पाइय । इक्कु इक्कु लख्खन मुरकाइय ॥
कन्ह भुवाल हरौल जु दिन्निव । डेरा गढ़ गोपाचल किन्निव ॥११४॥

दोहा ।

बीस सहस असवार सँग , तीस करी बरदाय ।
चित्रकोट तैं अमरसी , दिन्निय कुमक पठाइ ॥ ११५ ॥
गोपाचल डेरा करे , प्रथियराज सुखु पाय ।
भुमिया भाजे भवन तजि, बन गिरि खोह लुकाय ॥ ११६ ॥

चौपही ।

तब कैमास कहै बुध बानिय । मलष महाबल आप गुमानिय ॥
पूज बटेसुर को छल किज्जिय । मलषे मार जगत जसु लिज्जिय ॥११७॥
जो कैमास कहिय सो मानिय । बाजे नंद निसान गुमानिय ॥
चली फौज धरनीधर हल्लिय । सेस सहसफन भार सुभिल्लिय ॥११८॥

---

(१) दोनों प्रतियों के इस दोहे में चंदेल पर चढ़ाई का संवत् ११४० दिया है पर मदनपुर के शिला लेख में (देखो आरकियोलाजिकल सर्वे आफ़ इंडिया भाग १० प्लेट ३२, तथा भाग २१ पृष्ठ १७३–७४) परमाल के जीते जाने का संवत् १२३६ वि० दिया है। जान पड़ता है भ्रम से १२ के स्थान पर ११ लिखा गया है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

बट्टेस्वर के पंथ चलि , पुज्जि मंगि वरदान ।
देस चँदेलन हो रहै , बहुरि गयौ चहुवान ॥ ११९ ॥
गोपाचल चँदेल कव , थाना खबरि न पाय ।
पुज्जि वटेस्वर छल्ल सौं , परौ सरसवा जाय ॥ १२० ॥
मानि मतौ कयमास कव , चाहुवान चितु लाय ।
बट्टेस्वर के पंथ ही , सेना सबै चलाय ॥ १२१ ॥
मत्त महावथ हथ्थ महँ , मल्लारी अति डील ।
चाहुवान भूपत्ति के , दस सहस्र भरि पील ॥१२२॥
इक्क इक्क सावंत लिय , पंच पंच भर सथ्थ ।
जब चाले चहुवान दल , हले धरनिधर मथ्थ ॥१२३॥
गोपाचल दिन सत्त बिच , फेर कुंच किय राय ।
शिव दर्शन की इछ्यच करि , प्रथियराज सुखु पाय ॥१२४॥

चौपही ।

गोपाचल तैं भूप चलाइय । मत्त मतंग घटा जनु थाइय ॥
आतपत्र गन सह नभ छाइय । हय खुर थार छार गिरिराइय ॥१२५॥
दर कूचन चाल्यौ चहुवानह । सावँत शूर शोभिजतु जानह ॥
वजत निशान निशान सुहाइय । सेना सबै बटेस्वर आइय ॥ १२६ ॥

दोहा ।

सब सावँतनि सथ्थ लिय , गुरु बरदाय सुजान ।
मोदित सन मानस करैं , ब्रह्मनाल असनान ॥ १२७ ॥

चौपही ।

करि असनान दान करि राइय । दह मतंग सत अस्व मँगाइय ॥
हेम सहस जुग भूपति लिन्निय । इत्तव दान विप्रगन दिन्निय ॥१२८॥
बुल्लि लीन गुरु कवि वरदइय । बट्टेस्वर मंदिर चलि आइय ॥
पांय परसि परदच्छिन दिन्निय । मानस मझ्झ विनय बहु किन्निय ॥१२९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

पदमादिक फल फूल सब, कंदमूल लिय हथ्थ ।
सुरभी सहित सुगंध सब, धरे बटेस्वर मथ्थ ॥ १३० ॥
कुशसज्या बैठिय नृपति, विनय कीन कर जोरि ।
बिजय होय अहिनाथ प्रभु, दरसन करव बहोरि ॥१३१॥
सत्त ऊन जुग सत बचैं, कहत भूत गनराय ।
जित्ति होय चहुवान सुनि, सेना सबय खपाय ॥१३२॥
घन घायल संगर गिरहिँ, तन किय सुद्धि भुलाय ।
तुव रछ्या कहँ रचे विधि, गुरु गोरिख्ख बरदाय ॥१३३॥
सुनि नृप अति आनंद मन, परसि प्रभुहि सिर नाय ।
जित्ति होय भुवलोक फल, यह तनु रहय कि जाय ॥१३४॥
चलिव सदा शिव सदन तैं, मोद मानि चहुवान ।
कियव कोप सेना गजिय, बज्जे घोर निशान ॥१३५॥
बट्टेस्वर तैं चालिया, दये पील अगिवान ।
चम्मावति पर मिल्लिया, प्रथियराज चहुवान ॥१३६॥

चौपही ।

बज्जे घोर निसान सुहाइय । मिले भूप भुमिया बलदाइय ॥
हय गय भार सेस अकुलाइय । सब दल अवनि इंद्रगढ़ आइय ॥१३७॥

दोहा ।

सिंधु सरित पर मिल्लिया, चाहुवान बलवान ।
प्रात होत चरराज मुख, सुनिय बत्त मलिखान ॥१३८॥

चौपही ।

चाहुवान बासव गढ़ आयव । मलखान कहँ चरन सुनायव ॥
सुनत वचन मंत्रियगन बुल्लिय । बंधव बोलि मंत्र बर खुल्लिय ॥१३९॥

दोहा ।

महल रख्खियै पास कै, मदुवै देहु पठाय ।
बंधु मंत्र मिलि उच्चरौ, जो तुव मानस आय ॥१४०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

बंधु सुमंत्र बत्त बर बुल्लिय । मंत्रायन मानस किय खुल्लिय ॥
महुवै भेजि महल सुख पाइय । फिर संगर किज्जिय चितु लाइय ॥१४१॥

दोहा ।

बंधु मंत्रि के बचन सुनि , मल्लखान चितु लाय ।
सीख देन रनिवास कहँ , अंतहपुर महँ जाय ॥१४२॥
मल्लखान तिय सह कहिव , मंगहु जो मन चाहु ।
भाँ पर आइव संभरिय , नगर महोवे जाहु ॥१४३॥

चौपही ।

मलख्खान वनिता वर बुल्लिय । मंत्त सुबत्त कंत ढिग खुल्लिय ॥
अर्धअंग वनिता कहँ वेदह । उपजतु सीख देत यह खेदह ॥१४४॥
विना वृक्ष बल्लिय आरोहति । त्यौं बिन कंत कामिनिय सोहति ॥
आपु कहत मंगौ मन होइय । मंगहुँ कंत दरस दिय सोइय ॥१४५॥

दोहा ।

माया पुत्र पवत्र है , वेदन कहे बखानि ।
सेवहि इक्क अनिन्नता , कंत मुक्त कव दानि ॥१४६॥

श्लोक ।

वामनं बधिरं काणं कुब्जं खंजं पतिं तथा ।
सेवते विष्णुबुद्धया या सा नारायणमाप्नुयात् ॥१४७॥

दोहा ।

कुबिज खंज बावन बधिर , इक्क-अक्ष पिय पाय ।
परमेस्वर करि कंत तिय , जो जानै चितु लाय ॥१४८॥
मृत्युलोक निर्मल रहै , मरै देवपुर होय ।
दोउव कुल के पक्ष कहँ , र सोय ॥१४९॥
मलख्खान तिय मौन गहि , करिव विष्णु कव ध्यान ।
हो प्रसन्न प्रभु छुट्टहिय , कंथ सथ्थ मम प्रान ॥१५०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्ति जान मलिखान तिय , फेरि न बुल्लि जुबान ।
उठि राजा पुनि पा धरिव , जहाँ जननि जसखान ॥१५१॥
चरन छिये प्रमुदित महा , बिहंसि कही मल बत्त ।
चाहुवान माँ पर चढ्यौ , जाहु महोवे मत्त ॥१५२॥

चौपही ।

सुनत बैन जसखान महामति । आनन चुम्मि बलाइ लई अति ॥
स्वामधर्म कथ्थनि सुनि लिन्नव । सो श्रुति लग्गि सिखापन दिन्नव ॥१५३॥
परि परजंक छुट्टि तन सोइय । महिमंडल सुत नाव न होइय ॥
स्वामधर्म संगर तन खंडव । दीरघ वासुदेव पुर मंडव ॥१५४॥

दोहा ।

लघु भारत भूतल करहु , बुल्लि मलख इमि बानि ।
बच्छराज मम तात मा , जस जाहिर जसखानि ॥१५५॥
नगर महोवै पाधरौ , मिलौ मल्हन कहँ जाय ।
ये वचन्न मलखान कहि , परिव मात के पाँय ॥१५६॥

चौपही ।

माता तत्त तत्त अधिकारिय । भूत आदि त्रय काल विचारिय ॥
पुत्र बंध कव मतु सुनि आवहु । सो थां मां कहँ आनि सुनावहु ॥१५७॥
फेरि भूप दरबारहि आयव । मंत्रिय गन सब सूर बुलायव ॥
चाहुवान मां पर चढ़ि आयव । कहव मंत्र जाके मन भायव ॥१५८॥
तब मंत्रिन बुल्लिय इमि बानिय । सुनहु भूप मलखान सुज्ञानिय ॥
धारि दुर्ग कम्मान चढ़ावहु । इहि बिधि चाहुवान बिलमावहु ॥१५९॥
सुनत छिप्र आल्हनसिय आवहि । प्रथियराज दल दीह खपावहि ॥
मलखे मंत्र चित्त नहिँ आनिय । सब मंत्रिन सह बत्त बखानिय ॥१६०॥

दोहा ।

जौ न उगै निसि मैंससिहि , अहन उगै नहिँ भान ।
कालकूट शंकर तजै , तौं न छपै मलिखान ॥१६१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

सूर धीर भाँकी सुनि बानिय । इक्क बत्त अप अप चित आनिय ॥
जाहि जोय जग माँह पियारिय । आलय जाय छाँड़ि सेा रारिय ॥१६२॥
तब बुल्लय जोधन के जालह । मलखान भूपति तुम बालह ॥
भाँ अंगौ जौ थां असि बाहिय । तौ हम बुड्डि सरित दह माहिय ॥१६३॥
फेर सुभट इमि बदत जुबानह । स्वामधर्म श्रुति सुनै पुरानह ॥
लरहि स्वाम जौ सुभट पराइय । वर्ष सहस तन नर्क पराइय ॥१६४॥

दोहा ।

शिव हथ्थह गतिवंत धरि , रौरव नर्क पराय ।
मित्रद्रोह गुर स्वामि करि , जौ मलखे तजि जाय ॥१६५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(५) मलखान जुद्ध वर्णन खंड ।

चौपही ।

सुन जसखान सिखावन दिन्निय । पूत महारन करौ न विन्निय ॥
जय जय होइ इहाँ को राजू । मरै करैंगे सुरपुर राजू ॥१॥
पर परजंक छूट नहि सोइय । महिमंडल सुरराज सु होइय ।
स्वामिधर्म इत जो रन खंडहि । दीरघ बाल देवपुर मंडहि ॥२॥

दोहा ।

सुनी सीख जसखान की , विहँसि बुल्लि मलखान ।
स्वामिधर्म हित मातु मन , देव परस्पर पान ॥३॥

वाचनीक । तब मंत्रायन बिषै सुभट मंत्रिन नै जे वचन कहे ते रानी जसखान प्रमुद्रित हो कही कै थांकौ छत्रिय धर्म सध्यौ छै ।

अरिल्ल ।

मत्त सुनौ मलखान मत्त कहँ बुल्लियै ।
जाहु महोवे कज्ज तत्त इमि खुल्लियै ॥
लेहु पवत्रहि संग अद्य पग धारियै ।
करहि भूप परिभाव कनौज पधारियै ॥४॥

दोहा ।

देवल मातुल सौगमुखि , सब परिवार बसाय ।
बधुव सहित सुखवास बसि , कनवज्जह पुर जाय ॥५॥
अर्ध सहस सादी सुदिय , पंच करी वर जान ।
कुँवर बहोरन संग दै , बिदा करिय जसखान ॥६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

बारुव अवर बंध किय नारिय । चलिय सथ्थ जिमि देव कुँवारिय ॥
सबरौ सहर भग्गि तिन संगह । बीरनि कसि कटि तेग निषंगह ॥७॥
सूनव सहर सिरसवा किन्नव । जन गन भज्जि महौवा लिन्नव ॥
सुभट भूप सँग रहे सुहाये । लरन मत्त मन महँ अति ठाये ॥८॥

दोहा ।

चले जात मग जन घने , शिविका स्यन्दन बाह ।
परब पाय मानौं चली , गंगाजू की राह ॥९॥
नगर सिरसवा भज्जियव , मलखे कव गढ़ बाग ।
धाम धाम प्रति बैठि कै , बुल्लन लग्गे काग ॥१०॥
आल्ह ऊद गय रूसि करि , दिन पलटौ चंदेल ।
सेत नंकि को आवतौ , जो मंडै असि खेल ॥११॥
आल्ह ऊद मलिखान भट , संगर तीन लराय ।
कवन हेात चहुवान नृप , जग कहँ देत चलाय ॥१२॥
पुरवासी इमि उच्चरत , भगे पंथ महँ जाहिँ ।
चंदब्रह्म के वंस तैं , गयव राज महि माँहि ॥१३॥
मलखन शूर सहाय कहँ , भेजि भूप नहिँ कोइ ।
निविवेकी चंदेल कव , क्यौं भल भूतल होइ ॥१४॥
इतिय बत्त पुरजन कहत , भजे पंथ महँ सोय ।
सिंहा अवलोकन कथा , नगर सिरसवा होय ॥१५॥

चौपही ।

सुरभिय सहस स्वर्ण किय साजुव । जीन जराय देत सजि बाजुव ॥
विप्रनि गननि बुल्लि नृप लेइय । दान लक्ष प्रति दिन करि देइय ॥१६॥
कुस बिछाइ पुनि देवहिं ध्यावहि । दरस सरस भूसुत के पावहि ॥
विनय करहि मलिखान भुवालह । तब कर परसि देहि करबालह ॥१७॥

वाचनीक । राजा परिमाल कौ स्वामधर्म्म अरु आल्ह की भगत परमेस्वर महँ चित्त हनुमान कौ इष्ट ये मलिखान साधे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

नृप चहुवान इन्द्रगढ़ आयव । सवा लाख सेना सँग ल्यायव ॥
जा सह जुद्ध जुरै नहिँ कोइय । सिंधु सरित पर मिल्लिव सोइय ॥१८॥
संग पंच सत पील अमानह । तोप तोम आयसमय बानह ॥
दिन प्रति दौर करत अधिकाइय । नृप चंदेल देस दिय ल्याइय ॥१९॥
पुरजन भग्गि गये इक संगह । सावँत रहे करन भुव जंगह ॥
मलख्खान सँग सत्त हजारह । इक्क इक्क थम्है दल भारह ॥२०॥

दोहा ।

नगर सरसवा तैं चल्यौ , महुबे को रनिवास ।
मनहुँ सुरभि ऋतु पाइ कै , फूले गहन पलास ॥२१॥
चले महल बछराज के , सब पुर संग लगाय ।
पंच अहन महँ ऊतरे , कीरत सर पर जाय ॥२२॥
सुनत भूप पड़िहार कव , थाना दयव उठाय ।
आल्ह उदल के महल महँ , महल रहे सब छाय ॥२३॥
रानिय आई मल्हन दे , बहु मिजमानिय कीन ।
मिलि रानिय जसखान दे , पूछै वचन नवीन ॥२४॥
स्वामिधर्म भुल्ले न भर , कवन बत्त नृप कीन ।
आल्ह उदल के महल वर , पढ़ि पारन क्यों दीन ॥२५॥
पहरा पुत्र बड़ो खरी , खंडि रूठि गय वीर ।
पड़िहारन घर सोक भय , तन मन धरत न धीर ॥२६॥
तब नृप तिन आलय गयव , संबोधन बहु कीन ।
बाग बावरिय सौध सर , पढ़ि पारण सब दीन ॥२७॥
ये वचन्न कहि मल्हन दे , आप सौध फिरि आय ।
तहु लग चर परिमाल पर , मलखे दये पठाय ॥२८॥
मलख्खान पत्रिय लिखी , दइय चरन के हथ्थ ।
चाहुवान छल आइया , देस राखि समरथ्थ ॥२९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंच सहस सेना सुसँग , पुहमी पूरि प्रभाव ।
मम सहाय कहँ भेजियै , डैंगरसी उमराव ॥३०॥

छप्पय ।

डैंगरसिय उमराव पास म्हांके थां भेजहु ।
मारि मरय सत सूर आपु सूतौ सुखसेजहु ॥
छल आयव प्रथिराज फौज मम जुरन न पाइय ।
बट्टेस्वर कहँ पूजि बाहनी निसु दिन धाइय ॥
किन्नव मुकाम महि इंद्रगढ़ सिंधु सरित पर सिविर किय ।
चर कहिय आय अधरात अति तब मंत्रिन मुहिं खबर दिय ॥३१॥

दोहा ।

सवा लख्ख सेना सु सँग , कियव कन्ह अगिवान ।
यह पत्रिय परिमाल कर , दइय चरन वर आन ॥३२॥
बंचि भूप मुरछा गयव , करिव सोक उर खान ।
मंत्रिन सह नृप बुल्लि कहि , पत्री लिखि मलखान ॥३३॥
पत्रिय दिय परिमाल नृप , परिगह सकल बुलाय ।
मल्लखान कव सिरसवा , किज्जिय अब्ब सहाय ॥३४॥
भल भल सब उमराव वर , कहत भूप सन वैन ।
महियपाल भुवपाल के , भये लाल रँग नैन ॥३५॥

छप्पय ।

महियपाल भुवपाल बुल्लि भूपति सह बानिय ।
साठ लख्ख कव देस खात मलखान बखानिय ॥
पुनह सेत किय लज्ज गहय संगर करबालह ।
अल्ह उदल के बंध जानि जयचंद भुवालह ॥
सेना सहाय किमि मंगइय जात चार इमि भख्खियव ।
अघ्घाय जुद्ध करि सत्रु हनि खाइ घाइ भुव रख्खियब ॥३६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

सुनत सभा चंदेल की , रह्यौ भूप गहि मौन ।
महियपाल भुवपाल को , आयस मिट्टय कौन ॥३७॥
साठ सहस परमाल ढिग , सेना अति बल लीन ।
महियपाल बरजंत नृप , इक्क अस्व नहिं दीन ॥३८॥
बिदा कीन चर हथ्थ दिय , कलगी तून कमान ।
मैड़े किय लज्जा सु सब , तुव मथ्थै मलखान ॥३९॥
महुवै तैं चर चालिया , कलगी तून कमान ।
पहुँचि अहन दिन दूसरे , जहाँ भूप मलखान ॥४०॥
दिख्खत चर कहँ दूर तैं , बिहँस उठे मलखान ।
दिन्निय भूपति भावतैं , कलगिय तून कमान ॥४१॥
करि जुहार मलखान लिय , कलगिय तून कमान ।
चर उच्चरि मलखान ने , मट्टिय कुमक अमान ॥४२॥
करि तसलीम महोत्स तन , नृप परिमाल जुहार ।
सत्त सहस मम लख्खसत , संमुह मंडय रार ॥४३॥
मरन मत्त मलखान किय , यह जानत बुध लोय ।
सिंहा अवलोकन कथा , चाहुवान दल होय ॥४४॥
व्याघ्रचर्म मृगचर्म धरि , तन विभूति अति होय ।
सीस जटा कर तूमरी , लिये बुल्लि चर दोय ॥४५॥

वाचनीक । चाहुवान चर पाठये सिरसवा गढ़ मलखान की खबर लै आवहु कितेक सेना सहित हैं लरिहैं कै भजि जैहैं ।

दोहा ।

चाहुवान की बत्त सुनि , बिदा भये चरराय ।
तीनि अहनि रहि खबर लिय , भूपति पर फिरि आय ॥४६॥

वाचनीक । चाहुवान सह चर बोला । येहा कहा कहा. केहा कहा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

सिंधु सरित पर मिल्लियौ , चाहुवान बलवान ।
चर आये यह उच्चरय , छरिय फौज मलिखान ॥४७॥

भुवपति सुनि चर वचन कह , तन मन अति सुख पाय ।
कन्हादिक सावंत सत , तूरन लेहु बुलाय ॥४८॥

कर मसलत सावंत सब , बुल्लिय इक्क जुबान ।
प्रात पसर करि सिरसवा , हनौ भूप मलिखान ॥४९॥

फिरि चावँड़ बिनया करिय , सुनहु भूप चहुवान ।
सिविर दवौहा किज्जिये , मिलिय भूप मलिखान ॥५०॥

वासवगढ़ तैं कूच करि , बज्जे घोर निसान ।
असवारिय असवार पुर , ऊभि उतरि चहुवान ॥५१॥

सहिदानै बज्जन लगे , उतरि बीर बलवान ।
सिविर कीन असवारि पुर , सैन सहित चहुवान ॥५२॥

उचक्यौ दल असवारि तैं , दये पील अगिवान ।
निकट दबोहां के करे , सिविर भूप चहुवान ॥५३॥

धन प्रताप तुव सोमसुव , इमि सत सूर कहाय ।
जौ आल्हन बल दिख्खतौ , अंतक देत चलाय ॥५४॥

दाहिम्मा दिय सिख्खपनु , स्वामि-धर्म के काज ।
हाहुलराइ हमीर की , बिदा करिय प्रथिराज ॥५५॥

चौपही ।

चाँवड़ राय सिखायन दिन्नव । चढ़ि आयव चहुवान नविन्नव ॥
करहु संधि मिलिकै मलिखानह । जो उब्बारहु अप्पन प्रानह ॥५६॥

दोहा ।

गय हमीरवर सिरसवा , जहाँ भूप मलिखान ।
अति आदर आसन दयव , अग्ग रख्ख किकियान ॥५७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

तब हम्मीर बुल्लि वर बानिय । संधि मानि मलखे बुध-खानिय ॥
चहुवान के अग्ग चलाइय । जनपद दून लेहु लिखावाइय ॥५८॥

दोहा ।

बिहँसि भूप मलिखान कहि , सुन हम्मीर भुवाल ।
स्वामिद्रोह ततकाल परि , रौरव नरक कराल ॥५९॥
संधि करहि विग्रह करहि , वर परिमाल भुवाल ।
म्हां सुसंधि चहुवान सह , प्रात करै करबाल ॥६०॥
बिदा भये हम्मीर नृप , फिरि सुसैन महँ आय ।
वचन कहे प्रथिराज सौं , मलखे प्रात लराय ॥६१॥
बचन सुने हम्मीर के , यह नृप बैन उचारि ।
स्वामिधर्म लघु सयन सँग , मलिखे मंडिय रारि ॥६२॥
सवा लख्ख सैना सुमम , सत सावँत वरदान ।
सत्त सहस सह आहुरयौ , सब्ब सब्ब मलखान ॥६३॥
सब सावंतनि बुल्लि नृप , यहै वचन उच्चारि ।
ऐसे छत्रिय सेां समर , किज्जिय धर्म विचारि ॥६४॥
सब दल मिलि दबोह महँ , यहै मत्त उच्चारि ।
सत्त सहस इक वीर लै , दिन प्रति मंडिय रारि ॥६५॥
भूरिसिंह पठवाइयव , सत्त सहस सह राय ।
उत आयौ मलखान नृप , ज्यों गजगन मृगराय ॥६६॥
दुहुव कोंध नीसान बजि , छुट्टिय तोम कमान ।
हला हला करि सूर स्यैां , परिव भूप मलिखान ॥६७॥
तुमुल जुद्ध दुहुँ दल भयव , अति जमदाढ़ जघान ।
खंजर असिपुत्रिय लरत , धरत सिखा गिरबान ॥६८॥
इत धावा करि भूरसी , टाक बंस बलवान ।
घल्लि सेल सम्हर लियव , सिप्परसी मलिखान ॥६९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सपथ स्वाम किय खाय मल , घल्लि सेल्ह सम्हारि ।
भूरिसिंह के कपच स्यौं , गयव उदर कहँ फारि ॥७०॥
जुद्ध कीन जुग जाम भरि , फेरि अंत रन पाय ।
भगिय सेन भहराइ करि , पंच सहस गिरि गाय ॥७१॥

चौपही ।

फेरि पदमसिय भूप पठाइव । सत्त सहस सेना सँग ल्याइव ॥
आमा हामा मंडिय रारिय । बरनि न होत परस्पर मारिय ॥७२॥
गदा बाहु जुद्धनि भट जुट्टत । इक असि कट्टि सीस भुव लुट्टत ॥
गहि मलिखान सेल्ह कर भारिय । पदमसिंह खंडयौ रन रारिय ॥७३॥
साधू राय सूर सत बाहिय । जिमि सत्रुन सेना अवगाहिय ॥
आनि अमाहै संमरु मंडिव । ताकौ सिर मलखे असि खंडिव ॥७४॥
जे सावँत चहुवान पठावहि । ते मलखे हनि भूमि गिरावहि ॥
मलखे पनु यह करिव विचारिय । दिन प्रति इक्क वरणि संहारिय ॥७५॥
सत सावँत जो वरनि न पाउव । सारे हत रन माँझ गिराउव ॥
फेरि पकरि प्रथिराज भुवालह । जित्ति होइ चंदेल विसालह ॥७६॥
इमि बिसमित मन भय चहुवानह । सेनापति सूरति लिय पानह ॥
सहस सत्त सँग सैन अपानह । जैतखंभ किय आयव ठानह ॥७७॥
गहिव सेल्ह मलखे कर भारिय । सूरत सिय सेना भजि हारिय ॥
हनिव सेल्ह सूरत किय छत्तिय । गिरिव घूमि मानहु मन मत्तिय ॥७८॥
भग्गुल नृप सह करिय पुकारिय । मलख्खान जोधा अति भारिय ॥
सुनिय सोर कोप्यौ चहुवानह । बरनिय मत मम सैन बढ़ानह ॥७९॥

दोहा ।

भूरसिंह भट पैढ़ियेा , पंच सहस परि सूर ।
इक्क सहस परिमाल भट , जित्ति सबद भरपूर ॥ ८० ॥

चौपही ।

सूरत पदमसिंघ पम्मारह । साधुवराय कोपि गहि सारह ॥
हठिय सिंह हरिचंद सुजानह । बरियसिंह हतियेा मलखानह ॥८१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

अष्ट अहन महँ मारियौ , आठौ भट मलखान ।
सत्त सहस सेना हतिय , कियव कोप चहुवान ॥ ८२ ॥

चौपही ।

चाहुवान सैना सजवाइय । कुरिय कुरी कुंजर चढ़वाइय ॥
विजयसिंह गजराज मँगाइव । चढ़िव भूप नीसान बजाइव ॥८३॥

दोहा ।

सिलहपोस सब वीर बजि , बीस सहस नीसान ।
ज्यों व्रज पर सजि धाइया , मेघन स्यौं मघवान ॥ ८४ ॥
पातसाहि जिहि खेत गहि , महावीर चहुवान ।
ता सह या भुवलोक महँ , को मंडै घमसान ॥ ८५ ॥
जुगम सहस सादिय कटे , सहस दोय किकियान ।
पंच सहस सह आहुरयौ , धन्य भूप मलिखान ॥ ८६ ॥
दोला सम लचकंत सिर , सेसनाग अकुलाय ।
सुंड सकोरहिं अष्ट गज , चलिय सैन कहराय ॥ ८७ ॥

छप्पय ।

गज्जत गन गजराज सुनत दिग्गजनि कंप धुव ।
हय खुर थारन छार फुट्टि गिरि समुद पंक हुव ॥
संक लंक महँ परिय धाय निसिचर त्रिकूट चढ़ि ।
सप्त दीप नव खंड रहिव दारुन सु शब्द मढ़ि ॥
मृग कलह मानि मृगपत्ति भजि पदमिनि दल सम डगिय भुव ।
कविचंद कहै बरदाइ बर न करु कोप सोमेस सुव ॥ ८८ ॥

दोहा ।

बीस सहस बलवान बर , कियव कन्ह अगिवान ।
चले सिरसवा संमुहै , जहाँ भूप मलिखान ॥ ८९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

माहिय तोप मरातब लिन्नव । चाहुवान नृप राय प्रविन्नव ॥
बलिय कुरिय करतार बनाइय । ते सब जुरि मलिखे पर आइय ॥९०॥
सप्त सहस अष्टौ सरदारह । समर जुरत इहि हनै अपारह ॥
सत सावंत लज्य चित ल्यावहु । खेत मंडि मलिखान गिरावहु ॥९१॥

दोहा ।

मरन मानि मन मैं लयो , चाहुवान के काम ।
सावंतन सब कुरिन के , कहत चंद कवि नाम ॥ ९२ ॥

मोतीदाम ।

सज्यो प्रथिराज सुसज्जिय सैन । सजे सब सावँत सूर सतैन ॥
सजे चहुवान सुकन्ह समथ्थ । सजे कछवाह पजून सुगथ्थ ॥९३॥
सजे सँग चालुक सारँग देव । सजे सु पँवार सुलख्खन येव ॥
सजे सँग दाहिम चाँवड़ सूर । सजे कयमास महा मुख नूर ॥९४॥
सजे कमधुज्ज सु निडुर राय । सजे परसंग सु किज्जिय चाय ॥
सजे सँग भौंह चँदेल सुधीर । सजे अचलेस सुभट्टिय वीर ॥९५॥
सजे पड़िहार सु अल्ह कुमार । सजे लहसामल साखुल भार ॥
सजे सु बघेले लख्खन लाय । सजे चहुवान सु संजम राय ॥९६॥
सजे अततताइय सूर सतन्न । सजे सँग हाहुलिराय हतन्न ॥
सजे सँग गंभिर हाड़ हवाल । सजे वरहद्द हमीर सुचाल ॥ ९७ ॥
सजे रयपाल निसान बजाय । सजे सँग धीर सु धाँधुवराय ॥
सजे जयपाल सु जादव वीर । सजे जयसिंघ सु संगर धीर ॥ ९८ ॥
सजे सँग चंद पुँडीर मरद्द । सजे सँग गौरस हादिय हद्द ॥
सजे हरिचंद मलेसिय कद्द । सजे सँग नाहरराय मरद्द ॥ ९९ ॥
सजे वर संग सु पल्हन देव । सजे सँग मल्ल विशाल सुयेव ॥
सजे सँग जादव जाम मरद्द । सजे गहिलौत सु गोइँद हद्द ॥१००॥
सजे सँग वीर मकुंद पगार । सजे बिभराज सु खेत खगार ॥
सजे सँग बादुल सा दुलमोय । सजे सँग मल्ल चँदेल सजोय ॥१०१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजे सँग भट्टिय भानु गहीर । सजे सँग राम रठौर सुवीर ॥
सजे निरबान सुवीर मवाह । सजे सँग सूर प्रसंग अथाह ॥१०२॥
सजे पड़िहार सु पीप मरद्द । सजे भर भीम भवाल सुहद्द ॥
सजे सँग मोरिय सादुल सूर । सजे कनकेस लिये मुख नूर ॥१०३॥
सजे सँग तारनमल्ल सहस्स । बलीभद्र पूरनमल्ल रहस्स ॥
सजे सँग धावर धीर परम्म । सजे सँग रावत राम गरम्म ॥१०४॥
लिये सँग सावँत सूर सधन्न । कियै जुध चाव उपाव मरन्न ॥
कियै दर कूच चले चहुवान । चँदेलन उप्पर क्रोध निदान ॥१०५॥
भजै भुमियानि जु छंडि कै देस । बसै बन मंदिर बंदर भेस ॥
चल्यौ दल सूधव लिन्निय बाट । पिले दल सावँत दारुन थाट ॥१०६॥
सुन्यौ परिमाल नै थानव ताम । सिरस्सव कोपि दह्यौ बड़ ठाम ॥
गयौ अब राज्य भये मतिहीन । कहैं सबरे जन बात प्रवीन ॥१०७॥

दोहा ।

कुरिय संग सब भूप जुत , तिहि बंधव सुलतान ।
तिन सह संगर ऊभिया , धन्य भूप मलिखान ॥ १०८ ॥
धन्य धन्य बछराज पितु , धन्य जननि जस खानि ।
तिहि मलिखे सुत जाइया , जा जसु विदित जहान ॥ १०९ ॥
नगर दहोवा[1] छंडिया , चले वीर बलदाय ।
सहस बीस सह कन्ह नृप , अग्गै दिय चित लाय ॥ ११० ॥
आमोहा महँ ऊतरयो , प्रथियराज गहि सार ।
मलखे सुनि बहु विक्रमिय , मंत्रिय करहु बिचार ॥ १११ ॥
तब मंत्रिय कयमास कहि , सुनहु भूप चहुवान ।
सत सावँत हम आपके , नहिं मल सूर समान ॥ ११२ ॥
या सम दो सावँत वली , कनवज गये रिसाय ।
छरिय भीर मलखान कहँ , संगर देव खपाय ॥ ११३ ॥

---

(१) दमोहा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यहै बत्त कयमास कहि , किय सब सुभट प्रमान ।
आनि अचानक ऐल परि , परिव आनि मलखान ॥ ११४ ॥

सुनत वीर गज तुरत चढ़ि , काइर पुंज पलान ।
आयौ आयौ ह्वै रह्यो , सब दल महँ मलखान ॥ ११५ ॥

लषन सलखसिय बुल्लियव , मलकिय दारुन रारि ।
अस्त्र सस्त्र सब सूर करि , चाहुवान किय बारि ॥ ११६ ॥

मलख्खान विक्रम बड़ो , स्वामिधर्म मन भोय ।
प्रथियराज लग पहुँचिहै , यह जानत सब कोय ॥ ११७ ॥

अग्ग पंच सत पील दिय , बज्जत घोर निशान ।
सिंहा अवलोकन कथा , जहाँ भूप मलखान ॥ ११८ ॥

मलखान के अग्ग बहु , गोपन करिय पुकार ।
थां परि आयव संभरिय , सेना संग अपार ॥ ११९ ॥

सवा लख्ख सेना सु सजि , बज्जत घोर निसान ।
इक्क कोस पर ऊभिया , चाहुवान बलवान ॥ १२० ॥

सुनत्त बत्त मंत्रिन सहित , लिये बुल्लि सब बंध ।
स्वामि धर्म परमाल कौ , धारि आपने कंध ॥ १२१ ॥

सिरसव तै महुवौ नगर , कोस तीस अरु चारि ।
अब लगि नृप परमाल दे , स्रवनन सुनिय न रारि ॥ १२२ ॥

नहिय अस्व असि कुमक नहिं , नहिं पत्रिय चर हथ्थ ।
सुनहु वीर परमाल नृप , कहा कीन समरथ्थ ॥ १२३ ॥

हम सुस्वामि हित सीस दिय , संगर करहिं विसाल ।
म्हा पीछे चहुवान सह , कहा करय परमाल ॥ १२४ ॥

बुल्लि बंध परिगह सकल , सुनि मलखान भुवाल ।
महियपाल भुवपाल के , मत्त रहत परमाल ॥ १२५ ॥

बादर से गैयर गजत , बज्जत घोर निसान ।
घेरत अब गढ़ सिरसवा , सुनहु बत्त मलखान ॥ १२६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय ।

मलख्खान सुन बत्त मत्त बजरंग उपायव ।
पिथ्थौरा पा धरिव सैन चौरै सजि आयव ॥
नहिय आल्ह ऊदल्ल करहि उप्पर भर संगह ।
माहिल भेापति चुगल चारु पड़िहार सुअग्गह ॥
अरिसिंघ कहत विरसिंघ सुनि नरसिँघ हम मतु दिज्जियै ।
मलखान कहै सब बंधु सह मिलय अनीकह किज्जियै ॥१२७॥

दोहा।

जे सावँत सुनियै स्रवन , साहिन चमुव खपाय ।
ते सावँत मलखान भट , परे अचानक आय ॥ १२८ ॥

चौपही ।

तब अरिसिंघ बुल्लिव वर वानिय । चलव पलाय महोवे मानिय ॥
महियपाल भूपति मत किन्निय । नृप परमाल खबर नहिं लिन्निय ॥१२९॥
जयसिंघ कहै सुनौ नृप बैनह । पंच सहस्स तुम्हारे सैनह ॥
सवा लख्ख उत्तै भर ज्वानह । दर कूचन आयव चहुवानह ॥१३०॥
बिरसिंघ कहि मलखान भुवालह । मैडे कज्ज गहौ करबालह ॥
जे भर पातसाइ गहि ल्याये । ते दल दीह अचानक आये ॥ १३१ ॥
महुवे आल्ह उदल नहिं भाइय । जे उच्चारहि म्हा कहँ आइय ॥
मम सु वैर माहिल भुवपालहि । निर्विवेक भूपति परमालहि ॥१३२॥
नरसिंह कहै सुनौ मलखानह । करहु भूरि जस सकल जहानह ॥
स्वामि धर्म अप चित्तह दिज्जिय । निर्भय राज स्वर्ग कव किज्जिय ॥१३३॥
हरिसिंह बंधु बत्त इमि बुल्लिय । गूढ़ सुमंत्र तत्त हिय खुल्लिय ॥
स्वामि धर्म हित गहि करबालह । करहु जुद्ध मलखान बिसालह ॥१३४॥
अब यह चमू अचानक आइय । म्हांकै कुमक होन नहिं पाइय ॥
अचल परय मस्तक पर भारय । आल्हा बिन को आय उबारय ॥१३५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

मसलत करि मलखान उठि, विहँसि बदत यह बत्त ।
पहिल स्वामिहित सीस दिय, फिरि पुच्छव मम बत्त ॥ १३६ ॥

चौपही ।

कासमीर अंसुक मँगवायव । पहिर भूप मलखान सुहायव ॥
भुकट पुरट मत्थे पर दिन्नव । मरन साजु मलखे मन किन्नव ॥१३७॥
हंबराज हयराज मँगायव । बंधि अस्सि मारुत मन ध्यायव ॥
चढ़िब अस्व विप्रन दिय दानह । व्याहन चलिव चमू चहुवानह ॥१३८॥
हँसय आल्ह ऊदल बलवानह । मैड़व छंडि भग्यौ मलखामह ॥
स्वामिधर्म धारहु चित चाइय । जीवन कितक भूमितल माइय ॥१३९॥

दोहा ।

स्वर्ग हेात संग्राम करि , स्वामि धर्म तन दीन ।
पूरन कहत पुरान सेा , पंच बंध मत कीन ॥ १४० ॥

हनूफाल ।

मत कीन पंचौ भाय । चित स्वामिधर्महि ल्याय ॥
दिय अग्ग पंच सुफील । गिरिराज सम सर डील ॥ १४१ ॥
बढ़ि चलेय तेज तुरंग । अति चपल मनहुँ पवंग ॥
चंदेल हित असि खेल । मेा जासु मुह रन मेल ॥ १४२ ॥
सिर पग्ग पर दीनार । झलकंत जेाति अपार ॥
उर माँझ मेातिनमाल । मनि मूठ लगि करबाल ॥ १४३ ॥
सब जटित हीरन लाल । जनु चंद दिनकर जाल ॥
कुंडिल सु झलकत कान । फंदा सु मनमथ जान ॥ १४४ ॥
राजीव नयन विशाल । अज्जानबाहु रसाल ॥
विस्तार उर अरु भाल । वृषकंध राज कृपाल ॥ १४५ ॥
बनि रूप मलखन राय । जनु अतन नल कव भाय ॥
यह वचन भूप उचारि । सब सूर मंडह रारि ॥ १४६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पग पछिल देहु न कोय । इक काल काल सुहोय ॥
रहि जुगल बीच सुचित्त । भ्रम स्वामि धरि हरि मित्त ॥ १४७ ॥
कहि वचन मलखन राय । फिरि बुल्लि बिरसिंघ भाय ॥
अब चलहु मलखन राय । तुव संग अंग खपाय ॥ १४८ ॥
जो करत जीवन आस । सो करहि रौरव-वास ॥
सब अनुज धरि असि हथ्थ । संग्राम तुव हित मथ्थ ॥ १४९ ॥
सुनु बंध अनुज जुबान । हँसि बुल्लि श्रीमलखान ॥
करि स्वामिधर्म सुवीर । भवसिंधु उत्तरि धीर ॥ १५० ॥
जे स्वामिधर्म कराहिं । तजि देह सुरपुर जाहिं ॥
संग्राम साज सजाय । निस्सान दीह बजाय ॥ १५१ ॥
साजी चमू चतुरंग । करि पिथौरा सह जंग ॥
म्हां करहु विक्रमजाल । बिन आल्ह नृप परिमाल ॥ १५२ ॥
करि सकति खग्गन ख्याल । परमाल लौन हलाल ॥
हय चरन लगि धरि धूरि । रहि भान भा कहँ पूरि ॥ १५३ ॥
सजि पंच सहस सु सैन । धरि स्वामिधर्म सुऐन ॥
चंदेल धर्म सहाय । करतार सह मन ल्याय ॥ १५४ ॥

दोहा ।

इत आयब चहुवान नृप , उत आयब मलखान ।
लखा लखै दुहुँ ओर हुव , बज्जे घोर निसान ॥ १५५ ॥
चाहुवान मलखान जुरि , होत घोर घमसान ।
बीर अलकपुर संभु सह , बुल्लिय यहै जुबान ॥ १५६ ॥
चाहुवान चंदेल भर , भिरत भूमि भरिवथ्थ ।
लेहु ईस बहु सीस थां , कह कह वीर सुकथ्थ ॥ १५७ ॥

रसावला ।

कह कह सुवीर कहंत । खहखह सु संभु हसंत ॥
गहगह सुगौरिय गंग । घहघह सु घुमड़ि तरंग ॥ १५८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहनह सुबुल्लिव नाह । दिखिय सु जुद्ध उछाह ॥
चहचह सु चंद चमंकि । छहछह सुछट निरमंकि ॥ १५९ ॥
जहजह सुजुग्गिन जाल । झहझह सु झूमर ख्याल ॥
टहटह सु बुल्लिय मोर । ठहठह सुखन मुख सोर ॥ १६० ॥
डहडह सु डौरुव बज्जि । ढहढह सु सिव वृष सज्जि ॥
तहतह सु तंडव होय । थहथह सु थेइ थेइ सोय ॥ १६१ ॥
दहदह सुवरद चलाय । धहधह सु धरि धर धाय ॥
पहपह सु परि मन ढुंकि । फहफह सुफन दरि फुंकि ॥१६२॥
बहबह सु वाहन वीर । भहभह सु भुत्तन भीर ॥
महमह सु चलि महि छंडि । रहि व्यौम तल सब मंडि ॥१६३॥

दोहा ।

रहिब व्यौम तल मँडि कै , सिव दल अति तन घोर ।
जहँ मलखे चहुवान कव , कलह होत महि जोर ॥ १६४ ॥
इति कथ्थय इतिहास कहि , बरदाइय कवि चंद ।
अब मलखे चहुवान कव , होत परस पर दंद ॥ १६५ ॥
आमा हामा आइयव, जैतखंभ के ठान ।
इत भूपति चहुवान मिलि, उत भूपति मलखान ॥ १६६ ॥
अप्सरानि सिंगार करि, दिखत देव विमान ।
ज्यौं बड़वानल सिंधु कहँ, ज्यौं मल दल चहुवान ॥ १६७ ॥
पंच सहस घन सेल सत, मल नृप सूर समान ।
आयौ आयौ हो रहिय, सुनिय बत्त चहुवान ॥ १६८ ॥
मरन जानि मलखान नृप, करिव निसानहि घाय ।
मृत्यलोक कब भोग तजि, स्वर्गलोक मन लाय ॥ १६९ ॥
हरिसिंघ नरसिंघ वीरसिंघ, जयसिंघ स्यौ मलखान ।
सूर कहत सब परसपर, सुनिय बत्त चहुवान ॥ १७० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुजंगी ।

सुनी मल्लखानं करन जुद्ध मंडे । अरी सिंघ नरसिंघ बिरसिंघ बंडे ।
सजे अंग जयसिंघ भाई सुपंचौ । करै लौनु परमाल को आज संचौ १७१॥
हजारं सजे संग भाई भतीजे । सहस्त्रं सजे संग असवार बीजे ॥
बधी फौज पट्टं गरट्टं चलायं । सजे कंगलं अंग नैनं छिपायं ॥१७२॥
भिदी दिष्ट सैां दिष्ट चहुवान केरी । कियौ नद्द नीसान फौजं सुफेरी ॥
मुखं कन्ह अग्गं सुकयमास वीरं । नरंनाह चावंड कनकं गहीरं॥१७३॥
बिरस्सिंघ बीरं सुगोइंदराजं । इतै अग्ग सावंत रचि युद्ध साजं ॥
वरं वीर सारंग मेारी महानं । पमारं सलख जैत जुद्धं सहानं ॥१७४॥
भरं भीम चालुक्क संजम्म रायं । पजूनं वरं कच्छवाहौ सहायं ॥
जुरे जामजादौ दिसा दक्खिनीयं । इतै सज्जि सावंत नृप रक्खिनीयं॥१७५॥
धरं धीर पम्मार पुंडीरचंदं । अचलसिंघ भट्टी पहारं सुइंदं ॥
बघेला लखन वीर मारू महानं । भरं हाहुली राय हम्मीर जानं ॥१७६॥
इते सूर सावंत बाई भुजानं । रची फौज चहुवान मध्यं सुठानं ॥
विजयराज प्रथिराज सज्ज्यौ सयन्नं । बजे नद्द नीसान गज्जे गयन्नं ॥१७७
लख्यौ मल्लखानं दिख्यौ चाहुवानं । उठी बाग बीरं गभीरं गुमानं ॥
लखी फौज चंदेल की वीर पिल्ले । धरा धीर पत्री वरा बीर मिल्ले ॥१७८॥
करै खंड खंडं भसुंडन भारी । छकै छाक लग्गै बजै खग्ग झारी ॥
अन्यौ अन्य वारं करे बिद्ध देाई । कटं काटकूटं घटं घूमि हेाई ॥१७९॥
सटं सांग लग्गै खटं वार छत्ती । पटं पंकरत्ती बिहू वीर मत्ती ॥
खटकै खटं सेा बिहू सूर वारे । गटक्कंति गिद्धिन्नि देाऊ मुनारे॥१८०॥
धरक्कंति धावै नटं वीर नच्चै । चरब्बी चखैया चटं चारु सच्चै ॥
जटं ज्वान कै सीस जट्टाल लेई । झरं झारझारं उभारंत तेई ॥१८१॥
ठठं आय रथ्थं रहे अक्षरेसं । थटं सूर धावंत धारंत केसं ॥
डडक्कंत डौरू चहूँ फेर सद्दं । ठठक्कंत ठुक्कंत सुक्कंत मद्दं ॥१८२॥
सतं सावँतं इक्क ह्यौ संग धायं । हनै बान भैरेा धरा मैं गिरायं ॥
करयौ ध्यान चंडी ग्रं चंदरायं । परे मूरछा वीर सर्वे जगायं ॥१८३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगे वीर करि क्रोध चावंडरायं । महा कोपि मलखान सेल्हं चलायं ॥
लग्यौ सेल्ह अंगं करी फुट्टि खेतं । परयौ चावड़ंराय धरनी अचेतं १८४
तबै राव हरसिंघ बिरसिंघ धायं । तिनं संग जोधा सतं सत्त आयं ॥
लई सिंधिनी वीर मलखान जोटं । हनै सीस पै पंच धर मध्य लोटं १८५
बढ़ी बान पंती कि टट्टी उड़ायं । हते सूर सनमुख्य चल्ले परायं ॥
लसैं बान घाइन्नि जोधानुकूले । मनहुँ पाइ बासंत पालास फूले १८६
तजी वीर कम्मान सेल्हं चलायं । हनै हस्ति हय पुंज धरनी मिलायं
करी हनन चहुवान कहँ गहन आयं । इतौ बैन मलखान सबै सुनायं १८७
अहो कन्ह कयमास चावँडरायं । करौ जुद्ध म्हां सौं बँधे कपच कायं
धनैं सूर सावंत धरनी मिलायं । बली कन्ह हरसिंघ के बीच आयं १८८
महापंच सावंत चहुवान पासं । गयौ फौज कहँ फारि करि लौह आसं
तबै सलख पंमार बिझराज वीरं । लखनसी बघेला जुरे जुद्ध धीरं १८९
कढ़ी तेग तीमं सतं सूर धायं । मनहुँ इंद्र पर कोपि गिरिराज आयं ॥
अरयौ सार सौं सार चवजाम भारी । करी भीम बिझराज सलखं सुरारी १९०
इसी भाँति जुद्धं अहनि अष्ट बीतं । हतौ मूरछा वीर चावंड चीतं ॥
सतं दोय सावंत आवंत रूरे । तिनन्है करे विक्रमं जुद्ध पूरे ॥१९१॥
लखे मलखानं लिये सेल्ह भारी । दुहूँ कोध हंकै भई घोर रारी ॥
तबै वीर चहुवान चल्ले परायं । रहे घाय अध्घाय जोधा सुठायं[1] १९२
कढ़े पंच सरदार करि रारि पिष्षै । तबै कोपि प्रथिराज किय लाल इष्षै ॥
कटे वीर बिझराज के जुद्ध जोधा । डरे पील दिक्खैं करे फेर क्रोधा १९३
रनंकंत रोसं करै पैज धावैं । तटक्कं दुहू छोह लोहं चलावैं ॥
तबै कन्ह करि कोप विझराज बढयौ । सतं सूर सथ्थं सु करबाल कढयौ १९४
गिरै कुंभिनी से करी कट्टि मुंडं । परे मुंड हंकै लरै रोस रुंडं ॥
घटं कट्टि चंदेल कौ साथ सारौ । दहं दाटि कन्हं भिरयौ जुद्ध भारौ १९५

---

(१) हनै द्वदसै वीर भूमै गिरायं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कटी सैन मलखान धायौ रिसानौ । नटं जेमि नाचंत आवंत मानौ ॥
पटं छुट्टि कन्हं बटं बीच आयं । हनौ अस्व मलखान जुद्धं चलायं १९६
सबै कन्ह कौ वीर किन्नौ सहायं । कढ़ी तेग मलखान के सीस छायं ॥
उठ्यौ परिघ मैं तैं दई कन्ह तेगं । परयौ मुंड धरनी उठ्यौ रुंड वेगं १९७
पर्यौ मुंड हंकै धयौ रुंड जाई । हनी कन्हके सीसमैं साँगि जाई ॥
भयौ मूरछा सेा धरा कन्ह आयं । पुनह रुंड पाहार तौमर गिरायं १९८
लियै रुंड तेगं सु घल्लै जरब्बी । कटै सैन चहुवान मानहु करब्बी ॥
स्वयं हथ्थ सूरं सहस्रं सुमारे । गुरं चंद चहुवान भूपं पुकारे॥१९९॥
सबै वीर भुव डारि डर कोप ल्यायं । तबै रुंड प्रथिराज सनमुख्ख धायं ॥
बदै मुंड बत्तै सुनौ रुंड भायं । लखौ नैन चहुवान कौ पील रायं २००
धस्यौ रुंड स्यौ पील भुव मध्य डारौ । प्रथियराज के अंग लोहं न मारौ ॥
सुनै रुंड बैनं धरयौ रुंड धायं । हन्यौ पील चहुवान धरनी मिलायं२०१
करयौ स्वामि-धर्मं बुधं कथ्थ गायं । न चहुवान के अंग लोहा चलायं ॥
जप्यौ मंत्र भैरौ धस्यौ रुंड धायं । महावीर गब्यूत सैना चलायं ॥२०२॥
फिरयौ गर्जि गहलौत गोइंदरायं । हन्यौ अस्व मलखान धनीं मिलायं ॥
लख्यौ गिर्त गहिलौत पज्जून धायं । हरी सिंघ हंकत अल्हन सु आयं २०३
वियं वीर करि क्रोध सेल्हं चलायं । लिये सिप्परं लोह भूमैं गिरायं ॥
तबै रुंड धसि खग्ग कौ वार किन्नौ । हनै अस्व देाऊ गिरे भून विन्नौ २०४
वियं वीर कै घाय दो दो सु किन्नै । परे मूरछा सोन सैां अंग भिन्नै ॥
अयं सूर चंदेल कौ सर्व कांही । करैं धन्य धन्यं सु सुर व्योम मांही२०५
तबै चंद गुरु राम भूपं बुलायं । अहो वीर बद्धं सु किज्जै उपायं ॥
महा विक्रमं चंद गुरु राम दिख्यौ । मलखान ग्रीतार भैरौ सुलिख्यौ २०६
चहुवान बलवान सह जुद्ध मंडै । बिना देव अवतार को वीर खंडै ॥
करयौ ध्यान गुरु चंद भैरौ रिझायं । हती रुंड मैं शक्ति लिन्नं खिचायं २०७
गयौ जीतु करि क्रोध चावंड रायं । गयौ वीर रुंडं सुधनीं मिलायं ॥
चप्यौ पील तर चर्न चहुवान रायं । सबै दौरि सावंत लिन्नै उचायं २०८

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सबै सूर सावंत विक्रम अमोले । खड़े अंति चहुवान के बैन बोले ॥
बड़े बख़त महाराज राजै तुम्हारौ । महावीर चंदेल कौ समर मारौ २०९
मरयौ भूप मलखान भूमैं न मानौ । गयो पहुमि परमाल कौ राज जानौ ॥
इसौ वीर भूमैं न हूहै न होई । मलख्खान जोधा गयौ स्वर्ग सोई २१०

दोहा ।

मलख्खान सेना सहित , परिव भूमि करि रारि ।
स्वामिधर्म परमाल हित , लरत बंध वर चारि ॥ २११ ॥
मलख्खान संगर गिरिव , डारि भूमि चहुवान ।
स्वामिधर्म परमाल हित , लरत बंध बलवान ॥ २१२ ॥
बल घट्टिय परमाल कौ , साहस बिन परिवार ।
मनहु महोत्सव नगर महँ , खुल्ले कोट किवार ॥ २१३ ॥
रतिय पलटि परमाल किय , मलखान रन खोय ।
मनौ महोवे महल बिच , घरु वन जमिय घमोय ॥२१४॥
उठिव हुकुम परमाल कौ , रन लघु लोग परान ।
गहिव कोपि करसार तब , चारयो बंध रिसान ॥ २१५ ॥

भुजंगी ।

भग्यौ सर्व थानौ सु परमाल वारौ । चल्यौ सूर नरसिंग खग्गं सुभारौ ॥
लखे दोइ नरसिंघ बिरसिंघ वीरं । चले चंद पुंडीर शुद्धे गहीरं ॥२१६॥
गह्यौ कुंत चंदं हन्यौ हीक सोयं । गिरयौ सिंघ नरसिंघ चकचूर होयं ॥
लख्यौ चंद नरसिंघ बिरसिंघ ऐसौ । हन्यौ धाय खग्गं घटं घाय जैसौ २१७
लग्यौ चंद के घाय घूम्यौ सुअंगं । पिछै मारियौ चंद बिरसिंघ जंगं ॥
उतै दिख्खि चावंड जयसिंघ घायं । तजे आयुधं मारु वथ्थं भरायं २१८
लरै मल्ल जंगं अभंगं सुहोयं । धरक्कै धरन्नी करक्कै सुसोयं ॥
हनै आनि मुक्की विरचि वीर बाहै । गहीरं गुमानी अमानी उमाहै २१९
परयौ मूरछा वीर चावंडरायं । पढ़यौ जीवनं मत्र चंदं जगायं ॥
तबै दौरि चावंड चर्नं गहायं । समानं हयं दौरि धरनी मिलायं २२०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हन्यौ चावडं राय जयसिंघ रावं । तवं अंग अरिसिंघ जंगं पलायं ॥
मुरौ अंग अरसिंघ जग्गं चलायं । लयौ सिर्सवा नग्र चहुवान चायं२२१

दोहा ।

नगर सिरसवा लुट्टियौ , हय गय जन कटि जाल ।
बहिय हूजजल सोन मिलि , सत्त अहन रँग लाल ॥२२२॥
तोरि सिरसवा नगर नृप , हनिय सैन बलदाय ।
अरिसिंघ भाय न मारिया , भग्गि महोबे जाय ॥ २२३ ॥
मलख्खान रन जूझियौ , स्वामिधर्म मन रत्त ।
मुहर मुहर भग्गुलन मुख , सुनि बनिता यह बत्त ॥ २२४ ॥

चौपही ।

मलख्खान बनिता सुनि बत्तह । बूझिव स्वाम कही सब सत्तह ॥
भाँ सुनि स्रवन भविष्य पुरानह । कंत सथ्थ छुट्टिय तब प्रानह २२५
सो यह जानि मोद मन किन्नव । हेम हीर विप्रन गन दिन्नव ॥
सुरभि विमल परजंक सुहाइय । सो तुम परे भूमितल जाइय ॥२२६॥
बिहँसत वदन मदन तन ऐनह । स्रवन सबद नन हिय भर चैनह ॥
बिन पति बपुहि भूषननि धारहि । घोर नर्क तै तिया निहारहि ॥२२७॥
तुव दरसन बिन मम अति खेदह । अरध अंग बनिता कह वेदह ॥
तजि पिय करहि पुत्र किय आसह । तै तिय करहि नर्क महँ बासह २२८
तजि माया धर धनि जे झारहिं । सत्य लोक पिय जाय निहारहिं ॥
जा तिय के मानस यह आइय । जनम जनम सो पिय सुखदाइय २२
हाय नाथ बिछुरत मुहिं छंडिय । थां बिन म्हां कहँ कहि जग रंडिय ॥
हरि हरि हरि लीला मुख गाइय । छुट्टि प्रान पिय पंथ उड़ाइय ॥२३०॥

दोहा ।

तजे प्रान मलखान तिय , मिलिय कंत कहँ आय ।
मृत्यलोक किय आस तजि , बसिय देवपुर जाय ॥ २३१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) अल्हन स्वप्न वर्णन खंड ।

दोहा ।

ज्यों त्रेता द्वापर लरे , भीम बली हनुमान ।
त्यों कलि में चहुवान सह , भिरयो भूप मलखान ॥ १ ॥

छप्पय ।

भिरिव भूप मलखान जेमि त्रेता कहि ग्रंथह ।
विना सीर धर उठिव सेन समरथ्थ सुमत्थह ॥
हनिव पील जस तिलक पहुमि प्रथिराज जु आयव ।
चाँवड़ करिय सँघारि कन्ह सिर खग्ग लगायव ॥
परमाल लैान हल्लाल करि मथ्थ हार मंह हर भरिव ।
कविचंद कहइ बरदाय बर लेाक लेाक महँ जस करिव ॥२॥
परिव भाय नरसिंघ अवर बिरसिंघ अमानह ।
करिय पैज जयसिंघ सूर चावंड जघानह ॥
इक्क हजार सुवंध परिव इक ज्ञाति बखानिय ।
ठाकुर चारि हजार सदा समता करि मानिय ॥
अरिसिंघ भज्जि महुवै गइव सादी संग पचीस गय ।
यह खबरि पाइ कासिद मुखनि दारुन भय चंदेल भय ॥३॥

दोहा ।

सत्त सहस किकियान महँ , साथिय बचे पचीस ।
ते भग्गे अरिसिंघ सँग , सुनि साचिय जन ईस ॥४॥
पाइ खबर कासिद्दमुख , भूपति गय मुरझाय ।
माहिल भूपति सूहरिहि , मंत्रिनि लेहु बुलाय ॥५॥
मंत्रिन बुल्लन जाल जन , पठै दये परमाल ।
अब आतुर चलि जाय कर , लै आवहु तत्काल ॥६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महियपाल भुवपाल नैं, कहिय बत्त यह नुक्कि।
मलख्खान सौ सूरमा, इक्क पाख नहिँ रुक्किं ॥७॥
वाचनीक। राजा संग्राम की ख़बर रैयत सह बूझत है।

दोहा।

रैयत सह राजा कहै, बुल्लव इक्क जुबान।
कौन कौन साँवत कटिव, जहाँ परिव मलखान ॥८॥

चौपही।

मलख्खान नरसिँघ बिरसिंघ परि। परिव हरीसिंघ घाइन सो भरि॥
इक्क हजार बंधु परि अंगिय। चार हजार सु ठाकुर संगिय ॥९॥
भगि अरिसिंघ महोवे आइय। सिरसवाह भाई मरवाइय॥
सो परिमाल सुनी यह कानह। अंतर डर उपज्यौ चहुवानह ॥१०॥

दोहा।

जनपद जुत नरवर लई, अरु उज्जैन अपार।
दब्बोहा पारेछ लइ, रैयत करी पुकार ॥११॥

चौपही।

फिरि फिरि वेग पुकार सु आयव। प्रथियराज सब देस दहायव॥
अब परमाल नृपति सुधि लिज्जिय। सनमुख साजि जुद्ध बल किज्जिय ॥१२॥

दोहा।

तेारि सिरसवा नगर नृप, हन्यै सुभट मलखान।
रोज सप्त रहि लुट्टि निधि, कियौ कूच चहुवान ॥१३॥
कूच सिरसवा तैं भयव, बज्जे घोर निसान।
धरै कौच उरई नगर, मेलि गयौ चहुवान ॥१४॥
द्वादस दिन उरई रहे, फेर कूच किय वीर।
इक्क लख्ख दल मिल्लियव, वेत्रवती के तीर ॥१५॥
फिर राजा रैयत्त सह, पुंछत वचन सुजान।
कितिक अहन प्रथिराज सह, भिरयो भूप मलखान ॥१६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अष्ट दिवस वरनी लरचौ , तै सब हती सुजान ।
सत सावँत सब सैन लै , ऊभ आनि चहुवान ॥१७॥
धर्मजुद्ध चहुवान तजि , परिघा पुंज खुदाय ।
सब सावंतन बुलि कहि , मलखे अद्य खपाय ॥१८॥
लखि सैना मलखान नृप , कह्यौ दुर्ग तैं वीर ।
चारि पहर संगर करिव , हनि सावँत रनधीर ॥१९॥
तीन बंध संगर परे , चौथव बंध पलान ।
करिव छत्रिया धर्म सब , जुझ्झि परिव मलखान ॥२०॥
ढाहि दयौ आवरन सब , खलिकनि खनि अतिवान ।
मिलिव सरित पहूज पर , चाहुवान बलखान ॥२१॥
मारि सिरसवा संभरिय , सिवर सरित तट सोय ।
सिंहा अवलोकन कथा , कनवज्जह पुर होय ॥२२॥
इक दिन आल्हन प्रात उठि , बुलि ऊद अरु मत्त ।
बैसारे सनमुख दुवौ , बदत स्वप्न किय बत्त ॥२३॥

चौपही ।

माता सुनि अदभुत चित लिख्खिव । मलखे अनुज स्वप्न महँ दिख्खिव ॥
कासमीर अंसुक अति सोहत । ताहि देखि अप्छर गन मोहत ॥२४॥
मुकट सीस मनिमाल सुहाइय । चलि कानन कुंडल कल आइय ॥
परत भाँवरिय बाजे बज्जत । सुनि धुनि स्रवन वारिधर लज्जत ॥२५॥
परि भाँवर आलय कहँ आयव । रहस बधाय कीन मनभायव ॥
दुलही सहित महोवै जायव । सिंघपवँर उतरचौ मनभायव ॥२६॥
मानिक चौक मंडपह आइय । बैसा कुवर नारि स्यौं जाइय ॥
तहँ सु मत्त मल्हन दे आइय । गाय गीत बहु बजत बधाइय ॥२७॥
जहँ सहसन वनिता बनि आवहिँ । जुरि जुरि रवनि परी सम गावहिँ ॥
नृत्य करैं नर नारि सु चारह । पढ़त वंदि सुत द्वार अपारह ॥२८॥
मल्हन दे पग परि कर जोरिय । सुनहु मत्त इक बत्त सु मोरिय ॥
चारि पुत्र जेठी रानिय के । अत्र सत्र बाँधैं बानिय के ॥२९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इक्क पुत्र लघु रानिय जायव । मलखे नाम जोतिषिन गायव ॥
पुनि भविष्य इहि भाँति विचारिय । भैरो कला लीन अवतारिय ॥३०॥
खत्तिय वंस गहै कर कत्तिय । कट्टय सत्रु सैन करि रत्तिय ॥
हुनुवमान अप्फहि वरदानह । सहसनि समर खंडि मलखानह ॥३१॥
सत्त बरष कव वालक सोइय । ता अभार अल्हनसी होइय ॥
तुव समरथ्थ भूमितल माँहिय । करहु अद्य मलखे परछाँहिय ॥३२॥
यह बछराज वचन उच्चारिय । मलखेय कुँवर गोद तुव डारिय ॥
वच्छराज अंकह भरि मोलिय । बैठारा आल्हन किय बोलिय ॥३३॥
विविध वचन कहि दीन अभारह । पुनि पितु चरन देवपुर धारह ॥
मम पितु वचन आल्ह उर धारह । गय चँदेल भूपति दरबारह ॥३४॥
सुनहु विनय परमाल भुवालह । मलखे कुँवर समर महँ कालह ॥
करि चँदेल सह विनय सु सोहिय । आल्हन दीन राज लै मोहिय ॥२५॥
जेठा बंध अल्ह मम होइय । तात तुल्य जाना जग सोइय ॥
बिहँसि बचन यह मलख कहायब । सेा मम बंध बियाहन आयब ॥३६॥
मलखे स्वप्न माँझ कह बत्तह । सेा मम सुनिय चित्त अनुरत्तह ॥
अब सु मात बीत्यौ वह कालह । व्यास साज नहिँ दिय परिमाल ॥३७॥

दोहा ।

पहुँचि नहिंय परिनयन कहँ , जुग भाइन सुधि भुल्लि ।
यह कहि अंतरध्यान हुव , तब मम द्रग विय खुल्लि ॥३८॥

चौपही ।

बिसमित भयव घरिय मम चारिय । पुनह निंद लग्गिय अधिकारिय ॥
दुतिय स्वप्न जननी सुनु भारिय । चाहुवान चंदेलहि रारिय ॥३९॥
सब भट पंच भूप बुलवाये । मंत्रायन किन्नब मन भाये ॥
सब परिगह राजा सन बुल्लिय । गूढ़ मत्त हिय तत्त सु खुल्लिय ॥४०॥
इक्कु बचन बुल्लिब सब कोइय । आल्हन बिन नृप जुद्ध न होइय ॥
सुनि चंदेल दूत पठवावहि । जगनिक भाट बुलावन आवहि ॥४१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनि माता मम वचन सुहेाइय । म्हाँ कहँ स्वप्न असत्य न होइय ॥
जौ असत्य अल्हन मुख भख्खहि । सेस नाग भूतल नहिँ रख्खहि ॥४२॥

दोहा ।

सुनि माता मेा स्वप्न कहँ , करि पड़िहार विचार ।
मलखे कैं माथे दये , चाहुवान दल भार ॥४३॥
फौज सिरसवा पर परय , पिसुन करै ठहराव ।
महियपाल भुवपाल नृप , लेहि पुत्र कव दाव ॥४४॥
माता सुनि चंदेल दुख , अगिनि लग्गि उर दाहु ।
चारि बचन ब्रह्मा कहै , तौ न महोवे जाहु ॥४५॥
कढ़िव आल्ह वर नगर तैं , स्यौ वनिता लघु भाय ।
महियपाल के बचन इमि , लगे साल उर आय ॥४६॥
स्वप्न कजातिक सत्य हुव , वदति उद्द भटराव ।
तजब बंध राठौर घर , उत्तर अंत पराव ॥४७॥

चौपही ।

सुनि बुल्लिय देवलदे रानिय । सुनहु पुत्र इक म्हाँ किय बानिय ॥
स्वामि साकरै सुनत न जाइय । कोटि बरस सेा नरक पराइय ॥४८॥

दोहा ।

देवलदे झुकराय कह , प्रति उत्तर दे कौन ।
सेाक वेाक उर माँझ करि , भयव आल्ह नृप मौन ॥४९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(७) जगनक कनवजपुर गमन खंड ।

दोहा ।

स्वप्नबारता आल्ह किय , वरदाइय कहि गाय ।
सिंहा अवलोकन कथा , फिर अरसिंघ पर आय ॥१॥
चरन छुवे चंदेल के , मरे कहै मलखान ।
सभा सहित परमाल के , मनौं छुट्टिगे प्रान ॥२॥

वाचनीक । राजा चंदेल संभ्रम तैं पूछत हैं अहो अरसिंघ मलखान छत्रिन सहिन जीवत हैं कै नाहीं ।

दोहा ।

तब बुलिब अरसिंघ भट , नीचिय नारि नवाय ।
बिना मुंड पृथिराज स्यौ , दिच्चव पील गिराय ॥३॥
चारि जाम सैना हनिय , तुमुल जुद्ध बलवान ।
भान अंथवत भूमितल , गिरिब वीर मलखान ॥४॥
यह कहि कै अरिसिंघ नृप , दृग आँसू अति ढारि ।
सवा लख्ख असवार सह , लयब सिरसवा मारि ॥५॥
अंतहपुर परमाल गय , छंडि धरनि की आस ।
मल्हन रानिय आदि दै , रोयौ सब रनिवास ॥६॥
लयब सिरसवा सम्हरिय , छुट्टिय बहु अस्थान ।
नगर महोबे हो रहिय , मरे मल्ल मलखान ॥७॥
यौं पुरवासी उच्चरैं , आयब अंत चँदेल ।
मलख्खान सो सूरमा , सो जुझ्झब रन खेल ॥८॥
आल्ह उद से वीरवर , सावँत गये रिसाय ।
पुरवासिय इमि उच्चरहिं , राज चँदेलह जाय ॥९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

माहिल भूपति कीन्ह दिवानह । तब तैं भूपति भयव अजानह ॥
राज काज की सुधि बिसराइय । अदसा नगर महोवे आइय ॥१०॥
वाचनीक । मलखान की सिरपारस सावंत सब करत हैं ।

दोहा ।

स्वामधर्महित तन दियब , परदल करि कतलान ।
विय भारथ कलिकाल करि , धन्य धन्य मलखान ॥११॥

छप्पय ।

मलखखान रन परिउ जानि छत्रिय भ्रम रक्खिव ।
करिब नैान हल्लाल ख्याल देवन गन दिक्खिव ॥
परि बिरसिंघ नरसिंघ परिब जयसिंघ अमानह ।
भगि अरिसिंघ से भाय गहिब चंदेल सुठानह ॥
परि इक्क सहस ठाकुर अवर चारि सहस संगिय रहिब ।
परि बीस सहस पृथिराज के लरि सुर पुर इत्तन गइब ॥१२॥

दोहा ।

स्वामिधर्म महँ चित्त दिय , मर्दे मर्द अमान[1] ।
दिक्खत सुर नर सिद्ध सब , चढ़ि विमान मलखान[2] ॥१३॥
बीस सहस हयराज परि , द्वादस त्रय गजराज ।
बिय सावँत सरदार बसु , गिरिब भूमि पृथिराज ॥१४॥
पंच पील संगर परे , चारि सहस किकियान ।
इत्तन रन करि देवपुर , गये भूप मलखान ॥१५॥
मलख्खान सुरलोक महँ , सुरपति लीन बुलाय ।
सिंहा अवलेाकनि कथा , फिरि भुवतल महँ आय ॥१६॥

---

(१) मारे वीर अनेक । (२) देखत दिव मलखान गे, राखि आपनी टेक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

मलख्खान महराज प्रविन्नव । उम्मर बरस तिंस इक उन्नव[1] ।
धावत रुंड मुंड हंकारिय । पृथियराज कुंजर रन मारिय ॥१७॥

दोहा ।

रुंड हनौ किरवान जब , परेउ भूमि चहुवान ।
मल्लखान पुरहूतपुर , बैसा देवहि मान ॥१८॥
चारि बंध लरि स्वामिहित , रनतीरथ दिय प्रान ॥
बढ़ो मोह माया महा , अरिसिंघ राय पलान ॥१९॥
बीस पाँच सादी सु सँग , आय महोवे ठान ।
सब सैना पुरहूतपुर , गई संग मलखान ॥२०॥

वाचनीक । येती बात राजा परमाल रैयत के मुख सुनि बैसे हते तहुँ लगि खबर पहुँची कै चाहुवान की सैना वैत्रवती पर आइ सिविर करे ।

दोहा ।

कैमासादिक वीर सब , बुलि हजूर नरेस ।
सहर सहर थाना चलै , दब्बि लेहु सब देस ॥२१॥
ग्राम ग्राम चंदेल के , अमल करौ सब हेरि ।
चहूँ भाग सैना छवै , नगर महोवो घेरि ॥२२॥

पद्धरी ।

ससिपाल मिल्लि सिहुड़ा सुजाय । हम्मीर पुरह रयपाल राय ॥
सुम्मेरपुरह हरिदास लाल । नौहा चँदेल खंडौत भाल ॥२३॥
मौधाम टौंध हाहुल हमीर । बादा सु बैठि बिरसिंघ बीर ॥
खज्जूरपुरह सुभ सैन साज । गोइंद बैठि गहिलौत राज ॥२४॥
पुरइन पजून कूरम्मराय । पालहन्न देव मोडत मिलाय ॥
मनिया सुदुर्ग चावंडराय । सँग सहस चारि सैना मिलाय ॥२५॥

(१) उमर वर्ष वतीस नविन्नव ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमराव सर्व सँग सैन येह । हज्जार तीस बरनी सुतेह ॥
बज्जत निसान सब सैन पेरि । जोजन सुचारि सब सहर घेरि ॥२६॥
उत कुप्प भूप परमाल देव । रुक्यो सु सहर सत्रुन्न भेव ॥
साही हुकुम्म किज्जिय सुवेग । भा साठ सहस बाहै सुतेग ॥२७॥
परिमाल भूप यह हुकुम दिन्न । सब सहर राखि संगर न किन्न ॥
सब समुझ वीर आयौ न काल । तब करहु वीर संगर विसाल ॥२८॥
यह हुकुम कीन्ह भूपत्ति राय । चहुँ ओर वीर धाये रिसाय ।
दच्छिनह द्वार सत्रसाल वीर । उत्तरह पैारि सकेतस धीर ॥२९॥
जल्हनह सूर पच्छिम सुभार । डैांगरसि बीर पूरब्ब द्वार ॥
छुट्टन्त बान कम्मान राय । द्वादसह कोस भेाला सुजाय ॥३०॥
कोइ पहुँचि दुर्ग लगि वीर आय । जगनिक्क कुप्पि डारै खपाय ॥
दिन सत्त पंच मंडी सुरारि । पठयौ बसीठ हिय मानि हार ॥३१॥

दोहा ।

बान कमान कलाप चलि , सूर न मानत संक ।
सांई हथ्थ न आवही , नगर महेावेा बंक ॥३२॥
बेालि दूत चहुवान लिय , यह बानिय उच्चारि ।
छप्यौ कहाँ चंदेल नृप , चैारै मंडय रारि ॥३३॥
नातर छंडि महेाब कहँ , दंड हमैं नृप भेव ।
म्हां कौं थांकौं संधि यह , कालिंजर गढ़ देव ॥३४॥
कियव मत्त कयमास सह , भूपति अति चित लाय ।
ये बचन्न कहि दूत सह , महुवे दियेा पठाय ॥३५॥
चाहुवान संदेस लिखि , दूतहि दीन पठाय ।
जुद्ध करहु चंदेल कै , धरा छंडि कै जाय ॥३६॥
दूत जाय महुवे नगर , पहुँच्यौ जहाँ चँदेल ।
पत्री दै कहि धरा तजि , कै खग्गनि के खेल ॥३७॥
सुन्यौ बैन परमाल नृप , मंत्रिय सुतनि बुलाय ।
बुल्लि सूर सावंत सब , परिगह स्यौ जुरि आय ॥३८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महाजीत भिल किय पुरा , ब्रह्मजीत पुर राय ।
इंद्रजित्त पुर भारमल , मंत्रिय लेहु बुलाय ॥३९॥
सभाजित्तपुर सभासिंघ , कामजित्तपुर वीर ।
जसा बुल्लि जसरथ्थ पुर , ये आनहु मम तीर ॥४०॥
जन पठये चंदेल नृप , पुरपुर पहुँचे जाय ।
सब मंत्रिन सह आइयब , ब्रह्मजित्त चित लाय ॥४१॥
सकतसिंघ कौं आदि दै , जोधा जुरे अपार ।
महियपाल भुवपाल सौं , आये सब पड़िहार ॥४२॥
कहिय बात परमाल नृप , पृथियराज चर आय ।
संधि जुद्ध किय प्रवृति कहँ , पंचन देहु पठाय ॥४३॥

छप्पय ।

बदत बत्त परमाल काल आयब पृथिराजह ।
मल्लखान रन मार मारि बिरसिंघ सुलाजह ॥
भंजि सिरसवा नगर गंजि नरसिंघ वीर रन ।
हनि जयसिंघ दुबाह देस दब्बिब लुट्टिब धन ॥
चहुवान प्रबल सम्मर करन पातसाहि गहि छंडियब ।
बुल्लाय कुँवर परिगह सकल जुद्ध सु किहि बिधि किज्जियब ॥४४॥

चौपही ।

सुत चंदेल बुलाये दोइय । माहिल भूपति परिगह सोइय ॥
कायथ श्रीवास्तव कल्यानह । उचरि बयन राज मलियानह ॥४५॥

छप्पय ।

बुल्लि सुतन परमाल बुल्लि कायथ कलियानह ।
बुल्लि बैस नारेन गौर सारंग सुजानह ॥
गहिरवार बोहिथ्थ भाट जगनिक ढिग बुल्लिय ।
प्रोहित केशव समुझि राज बानिय बर खुल्लिय ॥
आयब सु सैन चहुवान सजि जुद्ध जुरत महँ हारियै ।
हित होय जोय सोई करहु सब तत्त सुमत्त उचारियै ॥४६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

संगर होय न आलह बिन , सब जोधन उर आय ।
बचन न नृप सह कहि सकैं , गये मंत्रि मुरझाय ॥४७॥
स्यौ सुत सावँत मंत्र सह , कहिय भूप यह बत्त ।
चाहुवान चढ़ि आइयब , करहु मंत्तदल घत्त ॥४८॥
सुने बैन परमाल के , मंत्रि वीर चित लाय ।
सत्य बैन को बाकता , बुल्लिब जगनिकराय ॥४९॥
असमंजस अरु भल कहै , मंत्र बैन सुनि लेय ।
मानस आपु विचार नृप , राजनीत मत सेय ॥५०॥
बगसी बुल्लि कल्यानसी , सुनहु भूप चंदेल ।
करहु संधि मलखे नहीं , जो मंडै असिखेल ॥५१॥
महियपाल भुवपाल कहि , समर भूप नहिं मंड ।
पंच अर्बुदै अप्फि नृप , देहु दिसा दो छंड ॥५२॥
महियपाल के वचन सुनि , ब्रह्मजित्त रिस ल्याय ।
जीवत भू क्यौं देहि नृप , मरे रहै कै जाय ॥५३॥
ब्रह्मजित्त रनजित्त कहि , लघु मंत्रिन मत धारि ।
सावँत दये भगाय नृप , अब मंडहु महि रारि ॥५४॥

चौपही ।

रारि रारि सब सावँत बुल्ले । ब्रह्मदत्त निज वचन जु खुल्ले ॥
मल्हन दे यह बचन सुनाइय । कुँवर मत्त भुल्लय जिनि राइय ॥५५॥
रानिय मल्हन दे यह भखिखय । राजा जुद्ध मास दो रखिखय ॥
जनक पठै अलह बुलवावहु । पंग काज अर्जस्त चलावहु ॥५६॥
निस दिन मत्त करहु नहिं ज्ञानिय । मानस परत सोच कियखानिय ॥
सोचखान उत्साह गँवाइय । सो भूपति रन माँझ पराइय ॥५७॥

दोहा ।

मंत्रायनि लघु भूप करि , उतसाहित चित भखिख ।
धर्म धारि जय अजय किय , परमेश्वर पर रखिख ॥ ५८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मल्हनदे के वचन सुनि , मंत्रिन नृप सुख पाय ।
उठिव नृपति दीवान तैं , अंतहपुर में जाय ॥ ५९ ॥
अंतहपुर मल्हन सहित , बैठि नृपति चित लाय ।
जगनक वर कबिराज कहँ , लिन्निब अंत बुलाय ॥ ६० ॥

चौपही ।

बुल्लत प्रगट भूप ये बैनह । मो मानस बिन आल्ह न चैनह ॥
पंच अहन महँ कनवज जावहु । जसरथ-नन्दन बेगि बुलावहु ॥६१॥

दोहा ।

भूपति के ये वचन सुनि , चित्त रोष अति ल्याइ ।
बत्त परस्पर बुद्धिवर , बुल्लिव जगनक राइ ॥ ६२ ॥

पद्धरी ।

उच्चरहि बैन जगन्निक राय । पड़िहार पंच दिज्जै पठाय ॥
चुगली कुबत्त स्रुति लिन्न डारि । ग्रीषम सुघर्म दिन्नव निकारि ॥६३॥
अब कहत ताहि ल्यावेा मनाय । कटु वचन वान लग्गे अघाय ॥
हय बाल पंच दिज्जै मँगाय । नातर महौव तजि नगर जाय ॥६४॥
ऐसी कुबत्त नृप कर्ण दीन । आल्हन मनाय अब मत्त कीन ॥
कोपित अनन्तरेा रहि सु कौन । यह कहि सुबत्त जग भये मौन ॥६५

दोहा ।

अस्रु बरसि अति रुदन करि , गये मल्हन दे पाय ।
जगनिक मंत्रनि कील करि , लैहै सेस रिझाय ॥ ६६ ॥
करुना रस जग मानि मन , स्वामि धर्म मन दीन ।
आल्ह मनावन कर प्रवृत्ति , करि विचार सेा लीन ॥ ६७ ॥
मल्हन दे पाँइन परिग , उठे जगन अतुराय ।
कै लै आऊँ आल्ह कै , प्रान तजौं सुख पाय ॥ ६८ ॥
सहुगायत दिय आल्ह कहँ , आपु नृपति सुख पाय ।
सेाभित बानी राय कै , लिन्नब भूप मँगाय ॥ ६९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिन्नव पान प्रसन्न मन , श्री भूपति चित लाय ।
सीख दइय मग चढ़न कौं , हरनागरौ मँगाय ॥ ७० ॥

चौपही ।

लै दुजराज चले कवि जानिय । सीख दई परमाल सु मानिय ॥
हिरन आगरे पर चढ़ि लिन्नब । जगनक भाट बिदा करि दिन्नब ॥७१॥

पायाकुल ।

अल्हन कौं दिय अस्व सु मुत्तियमाल है ।
दइय कलँग्गिय सीस जराइन जाल है ॥
दीन जरी बहुमोल सु अंसुक चार है ।
माछुल कौँ दिय मल्हन मुत्तिय हार है ॥ ७२ ॥
दीन जराइ कि मट्ठिय देवल रानि कौं ।
ईदल को दिय मुक्त धरैं बहु पानि कौं ॥
ऊदल कौ इक अस्व जवाहिर ठान है ।
जीन अमोल सुसाल विसाल कमान है ॥ ७३ ॥

दोहा ।

कंकन दये जराय के , मुक्तमाल पहिराय ।
कचवज को परमाल नृप , बिदा किये कबिराय ॥ ७४ ॥

सोरठा ।

मल्हन कहिब सँदेस , बेगि बहुरि जग आइयब ।
नातर छुट्टत देस , भूमहीन चंदेल सब ॥ ७५ ॥

दोहा ।

जा दिन आल्हन पुत्र हुव , नची अजिर महँ आय ।
देवल दे हार्‌यौ वचन , सो तुम सर्ब सुनाय ॥ ७६ ॥
धनि याकी सिख मानि कै , मनिया के पग लाय ।
हूजौ देव प्रसन्न तुम , जातैं अल्हन आय ॥ ७७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनिया सुर के चरन परि , विनय कीन कवि राय ।
जौ आवै जसराज सुत , तौ तुव दरस बताय ॥ ७८ ॥
मनिया दे दरसन दये , स्वामि वसन धरि गात ।
जगनक राय पधारिये , आवहि आल्हन जात ॥ ७९ ॥
मनिया दे के वचन सुनि , चले जगन सिर नाय ।
हिरन आगरे बैठि कै , कनवज दिस कहँ जाय ॥ ८० ॥
जगनायक लायक अधिक , सायक लिये कमान ।
पहुँचे कनवज नगर वर , आल्हन के दीवान ॥ ८१ ॥
जगनक कौं कनवज पठै , जल्हन निकट बुलाय ।
राजनीत मंत्रिय सहित , भूपति कहिय सुनाय ॥ ८२ ॥
आल्हन सावँत अंत नहिं जुद्ध करै सो आय ।
रानी कहि चहुवान सौं , देाय मास बिलमाय ॥ ८३ ॥

चौपही ।

रानी मत्त बत्त सेा मानिय । पीथल कहँ सहुगायत ठानिय ॥
जल्हन पठय नजर सब दिज्जिय । मास देाय मुक्काम सु किज्जिय ॥८४॥

दोहा ।

देाय मास मुक्काम करि , चाहुवान चित लाय ।
तहँ लगि आल्ह कनौज तें , संगर कहँ चलि आय ॥ ८५ ॥
दिये चिताहन स्वान गन , मिजमानी बहु गथ्थ ।
कुही कुहेला बाज दिय , नृप जल्हन के हथ्थ ॥ ८६ ॥

चौपही ।

कुही कुहेला बाज मँगाये । झगर रगर औ चगर लिआये ॥
बासा बहिर तुरमु तुव लिन्निब । जल्हन बुल्लि पच्छि रिपु दिन्निब ॥८७॥
पान पचास हजार पठायब । सेा मगही छंदन महँ गायब ॥
अतर गुलाब सुदही बरक्षिय । हैवर चार चढ़न कहँ कच्छिय ॥८८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लै सहुगायत जल्हन चल्लिय । सादिय साथ पंच सत भल्लिय ॥
पहुँच्यो जाय कटक महँ झिल्लिव । पृथियराज वितवै पर मिल्लिव ॥८९॥

दोहा ।

जगनक कौं सुत सीख सुनि , सुमिरि नृपति के तीर ।
तातैं दुगुन विचारि चित , गयब बेतवै वीर ॥ ९० ॥

वाचनीक । राजा पृथीराज की डेवढ़ो के तीर जल्हन पहुँचे तब राजा सह द्वारपाल मालूम करी ।

दोहा ।

सुहगायत परमाल किय , सेा लिन्निय उपहार ।
द्वारपाल कहि भूप सुनि , जल्हन ऊभा द्वार ॥ ९१ ॥

चौपाइ ।

सुनत बचन भूपति बुलवाइब । पृथियराज दिखत सिर नाइब ॥
मिलिब राज विहँसत कहि बैनह । है चंदेल धाम धन चैनह ॥ ९२ ॥
तब जल्हन उच्चरि इमि बानिय । सुनु चहुवान भूप चित मानिय ॥
सुख चंदेल धाम उर ऐनह । म्हां सह कहे बदतु ते बैनह ॥ ९३ ॥
दै कागद सब नजर सु दिन्नब । सब परमोध मिलन कव किन्नब ॥
राजा कनवज जगनक पठयब । जहाँ बनाफर रूठि सु बिठयब ॥९४॥
आल्हन आये जद्ध विचारहु । जौ चहुवान छत्रि भ्रम धारहु ॥
पीथल नजर सौंप सब रक्खिय । वचन जल्ह सह श्रीमुख भख्खिय ॥९५॥
म्हाँ कबूल जल्हन तुव बैनह । आवहि सुभट करौ जुध ऐनह ॥
सब सावंत लरन कहँ भरियौ । आवहि आल्ह तबहि जुध करियौ ॥ ९६

दोहा ।

सिरोपाय बहु मोल को , भूपति लयब मँगाय ।
मुक्तमाल विय अस्व लै , जल्हनसी पहिराय ॥ ९७ ॥
कागद लै जल्हन चलिब , गयब महोवे ठाम ।
डेरा करि सरिता निकट , पीथल करे मुकाम ॥ ९८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जल्हन भूप जुहार करि , कहिय प्रवृत्ति बनाय।
देाय मास किय संधि करि , चाहुवान बिलमाय ॥ ९९ ॥

जल्हन के ये वचन सुनि , आनंदित दीवान ॥
तौ लगि आल्ह कनौज तैं , आवै पति किरवान ॥ १०० ॥

पुरबासिन के मुख्ख सुनि , आल्हनसी जब आय ॥
सत सूरन गहि भूप स्यौ , गैयर लेहि छिड़ाय ॥ १०१ ॥

जल्हन नृप महुवे पठै , पुंछि चंद कविनाथ ॥
बड़ौ विक्रमी आल्ह सुनि , तुम बुलौ सेा गाथ ॥ १०२ ॥

फिर राजा बरदाय सह , वानी उच्चरि येम।
आल्ह उदल चंदेल सैां , रूसि गयेा सेा केम ॥ १०३ ॥

सत्त बत्त भुवपत्ति सुनि , आल्ह विक्रमी आय ।
उम्मर चौदह बर्स किय , काबिल लइय छिड़ाय ॥ १०४ ॥

कवन कज्ज काबिल गयव , कियब कवन सह दंद।
सेा वृतांत म्हां सह कहब , बरदाइय कविचंद ॥ १०५ ॥

साठ लख्ख काबिल जवन , जुरे भीम बलवान ।
इक्क मत्त किन्नव सबन , मिट्टन कहँ हिंदुवान ॥ १०६ ॥

हय गय गज्जन पुरिषगन , गन उमराव गभीर।
परे सिविर सब सिंध पर , देस देस के वीर ॥ १०७ ॥

छप्पय ।

खुरासान मुल्तान कदल कैलास वास वर।
रोह रोम खग्गरह भेाज कालिंग देस नर ॥
हबसि ठड्ड भख्खाह वंग अयराक अरब्बह।
फिरंगान खंधार बलक्किय जुरे सु सब्बह ॥
मिल्लिय सुसैन सब सिंधतट हिंदवान मेटन्न लिय।
सेामेस भूप स्रवनन सुनिय आपु मंत्रि सब बुल्ल लिय ॥१०८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

जवन जाल इमि उच्चरहि , पीर मकनपुर भिंटि ।
दिल्लिय कनवज सहर स्यौं , नगर महोवा मिंटि ॥ १०९ ॥

बदति परस्पर पैज करि , जवन वीर बलवान ।
रिद्धि सिद्धि सब लुट्टिये , लीजे सब हिंदवान ॥११० ॥

ये बातैं चरराज कहि , सोमेसुर के अग्ग ।
जुरे जवन सब दिसन कें , पीछे धरत न पग्ग ॥ १११ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(८) यवन युद्ध खंड ।

दोहा ।

सोमेसुर ये वचन सुनि , लियेा सोच उर आनि ।
लिये बोलि मंत्री सबै , जे भूपति वर जानि ॥ १ ॥
व्याघ्र सुरिच्छव मृग चरम , चरन दिये पहिराय ।
जमन सेन के भेद कहँ , बिदा किये नृप राय ॥ २ ॥

चौपही ।

सोमेसुर मंत्री बुलवाए । तुरत सर्व दीमानहि आए ॥
तुम लघु चमू जुद्ध मति ठानेा । साठ लक्ख आयेा तुरकानेा ॥ ३ ॥

दोहा ।

तब मंत्रिन ने मत दियेा , लिखी पत्रि दीमान ।
कनवज नगर महोब कहं , जहां भूप बलवान ॥ ४ ॥
सिंधुर पार अपार दल , जुरे सर्व तुरकान ।
जौ तुम नृप आयेा नहीं , तौ मिट्टहि हिँदुवान ॥ ५ ॥
पत्री लै चर चार चलि , अलगारन चित लाइ ।
कनवज नगर महोब कहं , आतुर पहुंचे जाइ ॥ ६ ॥
दिय पत्री जयचंद को , उत चंदेल सुजान ॥
अलगारन नृप चलियेा , पेरछ करे मिलान ॥ ७ ॥
दोऊ नृप मिलि मंत्र करि , जमन मिट्टवहु आस ।
जौ लग अगिन न मिट्टई , बृद्धि होत उसवास ॥ ८ ॥

चौपही ।

असी लक्ख सह जयचँद आयेा । सवा लक्ख परमाल सुहायेा ॥
जुग्गनपुर कंचन ठहरायेा । षोड़स अहन इंद्रपथ आयेा ॥९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज रासो ।

यह हिन्दी साहित्य का सब से प्राचीन ग्रन्थ है जो अब तक प्राप्त हुआ है। इसमें कवि ने भारतवर्ष के अन्तिम क्षत्री सम्राट् राजा पृथ्वीराज का जीवनवृत्तान्त विस्तारपूर्वक लिखा है जो आदि से अन्त तक विचित्र घटनाओं से भरा हुआ है। इतिहास प्रेमियों के लिये तो यह ग्रन्थ अनमोल रत्न है। इसकी भाषा कुछ कठिन है अतः सभा ने समस्त ग्रन्थ के सारांश को सरल हिन्दी भाषा में इसके साथ ही साथ छपवाया है जिससे मूल ग्रन्थ के पठन पाठन में बड़ी सहायता और आनन्द मिलता है। मनोरञ्जक तो यह इतना है कि कहीं से कोई पृष्ठ उठा कर दस पांच पंक्तियाँ पढ़िये फिर कदापि आप समस्त ग्रन्थ पढ़े बिना नहीं रह सकते। जिन हिन्दी प्रेमियों ने इस ग्रन्थ को अब तक नहीं लिया है उन्हें इसकी एक प्रति अवश्य लेनी चाहिए। इसके ६९ पर्व्व २२ भागों में छपे हैं जिनका मूल्य २५॥) है। प्रत्येक भाग जुदा जुदा भी मिल सकता है। मूल्य १॥) के लगभग है।

अन्य उपयोगी पुस्तकें ।

हम्मीर रासो (रणथंभौर के वीर शिरोमणि महाराज हम्मीर देव का जीवनचरित) २)
हम्मीर हठ ,, ॥)
जंगनाम (दिल्ली के बादशाह बहादुर शाह के पुत्रों का युद्ध) ॥)
इन्द्रावती १॥)
कवि आनन्द घन कृत बिरहलीला =)
भूषण ग्रन्थावली (प्रसिद्ध कवि भूषण के शिवराज भूषण, शिवा बावनी आदि ग्रन्थ) १॥=)
सुजान चरित्र २)
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवनचरित्र ॥=)
महिला मृदुवाणी (भारत वर्ष की विदुषी स्त्रियों की संक्षिप्त जीवनी) १)
हिम्मत बहादुर विरुदावली (बांदा के प्रसिद्ध वीर हिम्मत बहादुर का चरित्र) १)
नन्द दास की रासपंचाध्यायी ।=)
अखरावट ।=)
यूरोपीय दर्शन (यूरप के दर्शन शास्त्र का इतिहास) ॥)
परिचर्याप्रणाली (रोगी की शुश्रूषा करने की विधि) ।)
संक्षेपलेखप्रणाली अर्थात् हिन्दी शार्टहैण्ड १)
महाराणा प्रतापसिंह (नाटक) ॥)

ये सब पुस्तकें मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से मिल सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीर्ण व अजीर्ण के दस्त की दवा।

खाना पचानेवाले रसों के घटने बढ़ने वा विकार से अजीर्ण रोग होता है जिसके यह लक्षण हुआ करते हैं—खाने के बाद पेट

भारी जान पड़ना, पेट में वायु होना, जी मिचलाना, खट्टी वा व्यर्थ डकार आना, छाती जलना, मुंह में पानी भर आना, पेट में थोड़ा थोड़ा दर्द होना, चित्त की ग्लानि, आलस्य आदिक। जब तक खाना हजम की थैली में रहता है और पाचनक्रिया कठिनता से होती रहती है यही हालत होती है। जब यह अनपचा खाना अँतड़ियों में उतर जाता है तब पेट में गड़गड़ाहट होती है, पेट फूलता है व दस्त की चेष्टा होती है। दस्त पतला वा पानी के ऐसा होता है। कभी कभी खाने के थोड़ी देर पीछे ही दस्त हो जाता है। दस्त होने से शरीर क्षीण होता है। ये सब हालतें कभी कम, कभी अधिक होती रहती हैं और महीनों तक चलती हैं। रोगी का शरीर दिन पर दिन गलता जाता है। अन्त को असाध्य हो जाता है।

शरीर की साधारण पुष्टि का घटजाना इस रोग का कारण है। नीचे लिखी हुई हालतों में ऐसाही होता है—

वृद्ध अवस्था, कोई विशेष रोग के बाद कमज़ोरी, कम खाना (जैसा कि व्रत, लङ्घन, पारण आदिक में लोग करते हैं), धातु के व्यर्थ नष्ट होने से क्षीणता, अधिक श्रम, दुश्चिन्ता वा शोक, प्रसव के विकार से कमज़ोरी।

इन विषयों को विचार कर डाक्टर बर्म्मन ने अजीर्ण की दवा बनाई है। खाना हज़म करने व अजीर्ण के दोषों को मिटाने में इसकी विशेष शक्ति है। यह दवा छोटी छोटी टिकिया की ऐसी बनी हुई है। पंदरह रोज़ के सेवन योग्य ३० टिकिया की एक शीशी का मोल १।) रुपया। डाक महसूल १ से ४ शीशी ।-) आने।

डाः एस, के, बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अङ्क संख्या ४७] [पुस्तक संख्या २३

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक, श्यामसुन्दर दास, बी० ए० ।

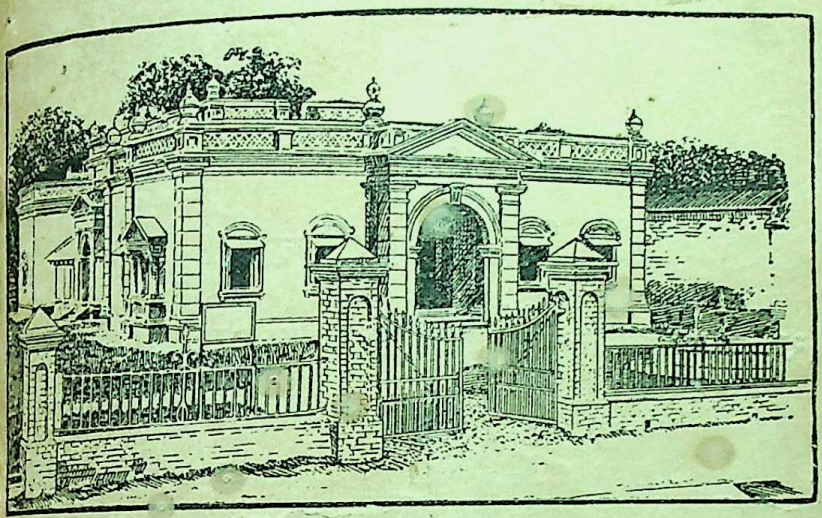

FASCICULUS NO. 47.] [BOOK NO. 23.

NAGARI PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR

SYAM SUNDAR DAS, B.A.

PUBLISHED BY

इक भूप जयचंद बिन , दो नृप मंडहि रार ॥१७॥

चौपही ।

भल भल कहि जयचंद भुवालहि । सोमेसुर नृप सुन महिपालहि ।
धरौ पान राठौर मँगाई । दोइ भूप के सूर बुलाई ॥१८॥

दोहा ।

उठौ बनाफर अल्हसी , यहै बचन उच्चार ।
जनम सहित सोमेस थां , तौ मंडहु मग रार ॥१९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका।

(२३) परमाल रासो—बाबू श्यामसुन्दर दास सम्पादित। (पृष्ठ १०५—१६८ तक)

इन विषयों को विचार कर डाक्टर [illegible] बनाई है। खाना हज़म करने व अजीर्ण के दोषों को मिटाने में इसकी विशेष शक्ति है। यह दवा छोटी छोटी टिकिया की ऐसी बनी हुई है। पंदरह रोज़ के सेवन योग्य ३० टिकिया की एक शीशी का मोल १) रुपया। डाक महसूल १ से ४ शीशी ।-) आने।

डाः एस, के, बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

कीरति सुव विजपाल सुव , दोनों नृप बलवान ।
आयो इत पुर संभरी , कहिय बत्त बरदान ॥१०॥
आगै दै सोमेसु लिय , जुर राजन कहँ आइ ॥
मिले सकल बूझी कुसल , हय आगै रखवाइ ॥११॥

चौपही ।

त्रितिय भूप काबिल कहँ चलिब । सवा लाख सोमेसुर मिलिब ॥
परी सिमर सुलतान सुजानह । सुनत खबर लज्जे पाठानह ॥ १२ ॥
उतरि अटक सब कटक सुहायौ । भज्जि जलालदीन पतिसाहयौ ॥
नृपति तीन काबिल धर आइय । लिय जनपद दिय जवन भजाइय ॥१३॥

दोहा ।

तब जमनन ये मंत्र करि , तीन नृपति बलवान ।
कछुक दर्व दै संधि कै , फेरि देहु हिँदुवान ॥१४॥

चौपही ।

तब जमनन बहु दर्व पठाई । पंग संधि कर बत्त सुनाई ॥
इक नृपति हम सन रन मंडहि । तब हम अनुग होइ दिग छंडहि ॥१५॥

दोहा ।

जो हारैं तौ देस दिय , अनुचर होइ अपार ।
जौ कजात जीतहि नृपति , तौ तुम हूजौ पार ॥१६॥
तब जमनन के बचन वर , यहै बचन उच्चार ।
इक भूप जयचंद बिन , दो नृप मंडहि रार ॥१७॥

चौपही ।

भल भल कहि जयचंद भुवालहि । सोमेसुर नृप सुन महिपालहि ।
बरी पान राठौर मँगाई । दोइ भूप के सूर बुलाई ॥१८॥

दोहा ।

उठौ बनाफर अल्हसी , यहै बचन उच्चार ।
जनम सहित सोमेस थां , तौ मंडहु मग रार ॥१९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊमर चौदह बर्ष की , विक्रम बल अधकाइ ॥
बीरा पान पचास को , अल्हन लीन उठाइ ॥२०॥

पद्धरी ।

उठाय पान अल्हन सुलीन । परमाल काज परनाम कीन ॥
हय चढ़िब कूद बज्जे निसान । सँग लये सूर सावँत अमान ॥२१॥
सकतेस सोम वंसी भुवाल । जगनेस पदमती सत्रलाल ॥
नवलेस चक्रपानहि बघेल । सबलेस सत्र संगर सुपेल ॥२२॥
जल्हन सुजंग जगनिक्क भट्ट । लालासु सीह सँग सैन थट्ट ॥
पायक्क बंध डैंगर सुबीर । नरहर सु गौंडरय साल धीर ॥२३॥
इन आइ उगरे किते जुबान । तै पिले संग अल्हन अमान ॥
पिल्लेस सूर संगर अभंग । परमाल राव पंगर सुसंग ॥२४॥
कर पकर वीर जंपहिं सुनाम । हिँडुवान बदत जय राम राम ॥
इच्छत सु सफल पुर होत धाम । रत स्वामिधर्म अष्टौ सुनाम ॥२५॥
दल पिले देइ बद्दल समान । जब बुंद बुंद वरषंत बान ॥
गहि साठ लष्ष सिंहन रिसाय । चलवात मनहु राडिय उड़ाय ॥२६॥
जरवान बात ठाढ़ी सुकीन । अल्हन सुधर्म हित छाड़ि दीन ॥
छुट्टति सुशक्ति अति करत वार । गिर परत फूट धर पर अपार ॥२७॥
दंती सुदंत दो कट्ट जात । जनु गिरत अंग उर पगन पात ॥
कर सुंड मुंड लुट्टहि करार । कट कुहर अंत मनु लुठत व्याल ॥२८॥
चढ़ि चली श्रोत सरिता अपार । हय आह हैाइ पीलन पहार ॥
कुट कुंभ पुंज पुलि फाल होइ । कंछी कँगाल आमीन सोइ ॥२९॥
उसनी पराज राजन सहाय । जनु बदक ब्रह्म सोभित विसाय ॥
लरत जुद्ध दुहु दल सुबीर । खब जमन पहुंच अल्हन सुतीर ॥३०॥
भय गरज मार दुहु दल कराल । चंदेल चमू भज्जिय विशाल ॥
रहि साठ सहस अल्हन्न संग । मुख जपहि राम जीती अभंग ॥३१॥
पंच लक्ख पाठान पाय । चहुं ओर घेर अल्हन सुआय ॥
बहु जोर जमन उच्चर सुधीर । गहि गहौ अल्ह चंदेल वीर ॥३२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बालक सु अल्ह मारौ न कोइ । गहि लेव जमन पति कहिव सोइ ॥
आवंत दिक्ख अल्हन पठान । पढ़ मंत्र ब्रह्म लिय कढ्ढि बान ॥३३॥
गुर धर सुदृष्ष नंष्यौ सुजान । जनु कहर पुंज उग्यौ सुभान ॥
उड़ अग्नि ज्वाल जमनन जराइ । व्यापंत इक्क मर रहे छाइ ॥३४॥
असमान ओर वरषत अलाय । रथ बरत सुकटक कढ्ढी निकाय ॥
सिवका सुवरत पुत्री सहाय । लगि ज्वाल माल थिर सुद्ध जाय ॥३५॥
रज कुधा पुंज रवरवा बात । कर कर सुभ मल भुव बैठ जात ॥
जर अत्र पात्र धर ब्रह्मवान । बहियै सुपुंज अरु नव निसान ॥३६॥
उड़त बहु बान चहुं ओर धाय । जनु चपल पुंज केतक मिलाय ॥
भये मेघ शब्द चहुं ओर धाय । ज्वाला सुअंग दिन्निव जराय ॥३७॥
ज्वाला सुदीख पासाहि जान । लिन्निव सुहाल कँमान बान ॥
नंष्यौ सुबान छुट्टहि उड़ाइ । नृप साहि बीर दिन्निव बचाइ ॥३८॥
भंजे पठान चंदेल जित्त । अल्हन भुवाल भुव माज कित्त ॥३९॥

दोहा ।

जीत भई चंदेल की , हारे सर्व पठान ॥
रैयत सब परमाल की , बसी आपने जान ॥४०॥

चौपही ।

जीत जमन अल्हन जब आयेा । चंदेलहि चरनन सिर नायेा ॥
हँसि परमाल हिये मँह लाएहु । पदिकमाल अंकुस पहिरायेा ॥४१॥

दोहा ।

हिंगलात अज्ञात गेा , बीरन राज नरेस ।
दुतिय पराक्रम अल्ह कर , लुट्ट जमन लिय देस ॥४२॥
पंच सहस सिंधुर परग , सहस अश्वगन बीस ।
घायल भे उद्दल सुभट , जित्त अल्ह अवनीस ॥४३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

मार महोवे के भट किन्निव । जीत कित्त चंदेलहि दिन्निव ॥
काबिल धर लीन्ही बलवानह । देश देश चंदेल सुथानह ॥४४॥

दोहा ।

कायर पंच पचास कट , पंच लक्ख पाठान ।
बीस सहस हय खेत पर , भजिय वन परवान ॥४५॥
सोमेसुर जयचंद नृप , चित्त पान हित लाय ॥
काबिल धर चंदेल कहँ , अप्पिय राज बनाय ॥४६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(६) आल्ह कनवज गवन खंड ।

चौपही ।

जमन जेर किन्निव बरदाई । जीतो नृप मंडली चलाई ॥
सप्त दिवस मिजमानी किन्निय । वेद वचन ब्रह्मा कह दिन्निय ॥ १ ॥
बहु हय गय आगे रखवाइय । विदा कीन्ह दोऊ नृप राइय ॥
जयचंद चित कनवज कहँ ल्यायहु । नृप परमाल महोवे आयहु ॥ २ ॥

दोहा ।

जीति दिशा काबिल लई , दिन्निव जमन भजाइ ।
कोटि सत्य द्विज पुंज कहँ , दान दयो नृप राइ ॥ ३ ॥

चौपही ।

अवर वत्त सुनियै चहुवानह । गहव सिंध सों करों बषानह ॥
कीरतब्रम्ह बुद्धि घर तौलह । गौड गढ़ापति करयो करौलह ॥४॥

दोहा ।

किय करौल नृपसिंघ कह , बहु मृगया चितु लाय ।
फिरत अकिल्लव गौड सब , जन अपनो विसराय ॥ ५ ॥

चौपही ।

इक काल कीरत नृपराइय । दीवानहि बैठ्यौ सुषदाइय ॥
बलाधक्ष दसरथ कहँ बुलिब । कर्ण लग्गि इक मंत्र जुखुल्लिव ॥६॥
चमुव लेहु बहु दर्व धरावहु । आप मुलक गुजरातहिं जावहु ॥
तब दसहरि करि विनय विसालह । सत्त मानि कीरति भुवपालह ॥७॥
मंत्र इक मम कहत सुजानह । सुनहु भूप धरि कै उर ग्यानह ॥
गौड सत्थ मृगया नहि जाइय । छदम कुटिल कर प्रान खपाइय ॥८॥

दोहा ।

एकाकिय जिन जाय नृप , गौड काल मति मंड ।
मान राज मम विनय कह , सिंघ सत्थ दिय छंड ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनत बत्त दसराज किय , कीरत सिय मुसक्याय ।
वलाधक्ष सूरत सहर , विदा कीन पहिराय ॥ १० ॥
नृप दसहर कह पान दिय , सूरत सहर पठाय ।
इत मृगया कहं सिंघ सथ , नृप असिया गढ जाय ॥ ११ ॥
आषेटक की साज लै , गोड सेन सँग चंडि ।
कीरतब्रह्म भुवाल दिय , नगर महोबा छंडि ॥ १२ ॥
छरिव भूप सँग सिंघ कैं , स्वान चित्तहन भीर ।
आषेटक कँह पहुंचियौ , मनियागढ के तीर ॥ १३ ॥
हनि मृगपति मृग गन नृपति, बहुत परिश्रम पाय ।
आलस भय मम नयन लगि, कहिय सिंह सन आय ॥ १४ ॥
सुनिय सिंघ परजंक लिय , दिन्नी सेज बिछाय ।
तापर नृप पौढारियौ , दब्बि चरण चितु लाय ॥ १५ ॥
सोय गयौ निरभूल नृप , मंत्रिय सिंह बुलाय ।
कोटिन जन कौ पत्ति यह , सो इक्कव बन पाय ॥ १६ ॥
गौड बहुत चंदेल लघु , करी सिंघ नृप संधि ।
सोवत कीरतब्रम्ह की , लई भुजा दो बंधि ॥ १७ ॥
रे रे भूपति सिंघ सुनि , छंडौ भुजा विसाल ।
अग्ग बचन दसरथ्थ के , लिये कंख कलि काल ॥ १८ ॥
अब दसरथ कहँ पाइये , गयौ मुलक गुजरात ।
बालक नृप परिमाल इकु , तुम रष्षहु प्रभु भात ॥ १९ ॥
राजा गहि सिवका धरयौ , तूरण दास चलाय ।
सत्त अहनि निसि में गयौ , गढा सहर सुख पाय ॥ २० ॥
धावक आय महोब कहँ , सोमवती सुनु बत्त ।
सिंघ बंधि राजा लयौ , गयौ गढ़ा करि मत्त ॥ २१ ॥
हाय हाय सब सहर हुव , सौध भयौ सब सोक ।
बंध चंदेलै लै गयब , गौड गढ़ा अप लोक ॥ २२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मंत्रिन रानिन पत्र लिखि , धावक दयब पठाय ।
राजा बंधो सिंघ छल , जतन करहु चितु लाय ॥ २३ ॥
अलगारन धावक चल्यौ , घरिय न बिलम कराय ।
तीस दिवस महं पहुंचियौ , सूरत सहर बताय ॥ २४ ॥
धावक सूरत सहर गौ , कहि दसरथ सह बैन ।
सिंघ बंधि राजा लयौ , गयौ गढ़ा चित चैन ॥ २५ ॥
वलाधक्ष दसरथ भर , कंद मूल फल खाय ।
राति दिवस अति धाइयौ , परिव गढ़ा पर जाय ॥ २६ ॥

चौपही ।

वलाधक्ष जनपद बहु जारिय । ग्राम ग्राम जनु वरत दिवारिय ॥
भगे गौड़ इक चरन पराइय । माहिष मतिय घेर लिय जाइय २७

दोहा ।

वलाधक्ष दसरथ नै , बुल्लि आपनैं वीर ।
बाल तरुण हनि गौंड़ गन , बचै न रेवा तीर ॥ २८ ॥
दिक्खि सिंघ सैना सबै , कीरत नृप लौ आय ।
छमौ चूक महराज मम , लिज्जे प्राण बचाय ॥ २९ ॥
आपु महौवै जाइये , सब सेना लिय संग ।
इक लक्ख हिम अप्प मम , सरद सरद रति रंग ॥ ३० ॥

चौपही ।

कीरत नृप इक वत्त बषानिय । सुनहु सिंघ मम चित यह आनिय ॥
दसरथ बचन धरौ नहि कानह । थां कह सिंघ पुत्र करि जानह ॥३१॥

दोहा ।

कीरत नृप इमि बुल्लियब , लक्ख हेम पठवाय ।
हां जीवत थां देस पर , चम् चँदेलन आय ॥ ३२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

सिंघ राज बुल्लिय इमि बानिय । परिव चरन वाफक रस सानिय ॥
म्हा सह चूक परिय भूतल अति । स्वामि द्रोह मम कियन महामति ॥३३॥
सेा मम चूक छमौ नृप राइय । यह कहि बिदा कीन चितु लाइय ॥
कीरतब्रह्म बाहनिय आइय । दसरथ दिक्खि चरन सिरु नाइय ॥३४॥

दोहा ।

पान जोरि दसरथ्थ कहि , आपु महोबै जाय ।
तरुन वृद्ध बालक-स्यौं , डारौं गौड़ मिटाय ॥ ३५ ॥

चौपही ।

कीरतब्रह्म बुल्लि इमि बानिय । बचनु हारि मम करहु प्रमानिय ॥
म्हां जीवत थां गढ़ा न घेरहु । सब दल नगर महोबा फेरहु ॥३६॥
मोद करन गजराज तु भारिय । कुंदन नगन जटित अंबारिय ॥
तापर कीरतब्रह्म चढ़ाइब । जनु कलिंद्र गिर सूर सुहाइब ॥३७॥

दोहा ।

कीरत नृप अवलोकियै , चलिय सैन सुखु पाय ।
अलगारन दिन द्वादसैं , नगर महोबै आय ॥ ३८ ॥

चौपही ।

फेर दूब बंधी पुर माहिय । बजत बधाइ दान बहुधा हिय ॥
सेामासी उर आनँद किन्नव । कंचन तुला भूप कहँ लिन्नव ॥३९॥

दोहा ।

लियब अंक परिमाल सुत , दसरथ लेत बुलाय ।
ये राजा तुम राजधर , करहु चित्त जेा आय ॥ ४० ॥

यह कहि भूपति प्रान तजि , गयब सुद्ध सुरलेाक ।
नगर महेाबै हेा रह्यौ , लघु दीरघ घरू सेाक ॥ ४१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रानी सोमवती जरी , सती भई पति संग ।
बालक नृप परिमाल लखि , भयौ प्रजा मन भंग ॥ ४२ ॥

लक्ख लक्ख हर अब्द कह , हेम देय परिमाल ।
गढ़ा लेय नृप सिंघ सी , दावैं दिसा विशाल ॥ ४३ ॥

चौपही ।

द्वादस वर्ष आल्ह नृप होइय । गय दिवान हिम लषिय सुसोइय ॥
भूपति सौं यह वचन कहाइय । इतिय हेम कहाँ कह जाइय ॥४४॥

दोहा ।

विहँसि बुलि परिमाल प्रभु , कीरतब्रम्ह सुनाय ।
सिंघ पकरि मृगया दयौ , काराग्रह महँ जाय ॥४५॥

तब तुव आल्हन जल भनहि , पराचीन यह वत्त ।
भूप छीन दसरथ लये , कियौ गढ़ा सब घत्त ॥४६॥

सुनि जुवान अल्हन कुंवर , उठि आयौ घर सोय ।
प्रात सहस असवार सह , लिये संग बल लोय ॥४७॥

रात दिवस धावा करहि , चले आल्ह भटराय ।
षोडश दिन माहिषमती , प्रात पहुच्चे जाय ॥४८॥

पाय खवर नृप सिंघ सी , दसरथ सुत चलि आय ।
द्वारे ऊभा आल्ह भट , घन जन रुक्क बजाय ॥४९॥

जौ रुक्कै तौ रुक्कियौ , क्रोधित दिक्खि खपाय ।
आपु वीर सौ ये वचन , कहै सिंघ नृप राय ॥५०॥

आयस नृप कौ पाइकै , धाये गौड़ अमान ।
आल्हन सिर पर आइया , कढ़ि सक्ति किरवान ॥५१॥

आल्हन पाहन बान लिय , पढिब मंत्र चितु लाय ।
दो दो द्वादस बसि बसु , दीन्है गौड़ गिराय ॥५२॥

इक्कु बान नृप घल्लियब , सो पाहन कव वोक ।
चार सहस भट गौड़ हनि , ते पठये जमलोक ॥५३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहि चुटक्यौ रन वीर हय , कच्छी सत्त कुदाय ।
गयब मध्य दीवान मह , भगिव सिंघ भहराय ॥५४॥
पकरि बाँह आल्हन सुबर , आयौ फेर कुदाय ।
सब बीरन के अंग ही , सिंह सु पटक्यौ आय ॥५५॥

चौपही ।

डारि निगढ़ सिवकालिय राइय । बाहिर सहर ऊभि फिरि जाइय ॥
पठय दूत कहि बचन उमंगह । गौड़ समिट्टि मंडौ अब जंगह ॥५६॥

दोहा ।

गौड़ छिके माहिषमतिय , दीनै अरर लगाय ।
चार सहस इक बान हनि , तासौ कौन लराय ॥५७॥
पहर इक्क ऊभा रहा , गौड़ इक्क नहि आय ।
जारि वीर माहिषमती , नगर महोबा जाय ॥५८॥

चौपही ।

धावक बदति भूप के अग्गह । आल्हन आय महोवे मग्गह ॥
पकरि सिंघ सिवका महँ डारिय । कीरत नृप कव दाव उबारिय ॥५९॥

गाथा ।

सुनि भूपति ये बैनं , मोद मान उर ऐनं ।
चित्र करी कलि करनी , धन्य देवल दे धरनी ॥६०॥
सकत सिंघ पठवायं , अल्हन सी लै आयं ।
दिष्षि राज गहि बाँही , सीना सेां लिय ताही ॥६१॥

दोहा ।

चरन परत नहिं पाइयौ , आल्हन सी बलदाय ।
पान पकरि परिमाल दै , भयौ सीन सह लाय ॥६२॥
तब लगि ल्याये सिंघ नृप , दयौ भूप पग डारि ।
जीवदान नृप दिज्जिये , बन्नाफर उच्चार ॥६३॥
जान रक्ख अल्हन सुवर , गौड दीन करिवारि ।
कीरत नृप कौ दाव लिय , काराग्रह महँ डारि ॥६४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करै आरती मल्हन दै , कंचन थार उतारि ।
दियव दान बट भेष कह , गावति मंगल चारि ॥६५॥
मल्हन दै के चरन परि , आल्हनसी चितु लाय ।
बंधि सिंघ भूपत्ति कहँ , नगर महोबा लाय ॥६६॥

छप्पय ।

एकादश नृप अल्ह दरस गोरष कव किन्नव ।
द्वादस वर्ष उदंड पकरि के हरि नृप लिन्नव ॥
त्रोदस काबिल जित्ति ष्याल षग्गन सह मंडिव ।
चौदह वर्ष कुमार जीत अरि गन सब छंडिव ॥
दह सत्त वर्ष कव जब भयव स्वामि-धर्म चितु लाइयब ।
जसराज सुवन कव भूमि तल कवि कोविद जस गाइब ॥६७॥

दोहा ।

बन्नाफर चंदेलगृह , वलाधक्ष बलवान ।
पुरावृत तिनके सुनब , कानि मंडि चहुवान ॥६८॥

छप्पय ।

कान मंडि चहुवान कहिय बरदाय मत्त गत ।
प्रथम सेन परिमाल रहे जसराज सेनपत ॥
गढ़ा लग्यौ नृप जाय करिय गौड़न सह जंगह ।
परिव चाल चंदेल झेल घन रन अप अंगह ॥
रुक्कियौ तेन अरि सेन सब माम मरन सुद्धिय धरिय ।
पिल्लियौ ष्याल बिन सीस धर काम आप फत्तै करिय ॥६९॥

दोहा ।

रुंड धरयौ किरवान कर , मुंड उच्च हुंकार ।
हनी सैन सनमुष्ष सब , सहस गौड़ रनमार ॥७०॥
सहस गौड हनि रुंड रन , जीवत सत्त हजार ।
जीत भइय परिमाल किय , आनँद बजत अपार ॥७१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

गढ़ा नगर चंदेल सुलग्गिव । गौड समिट जुध कारन पग्गिव ॥
भगिय सैन लष्षी जस राजह । दिन्निव सीस स्वामि के काजह ॥७२॥

दोहा ।

चालु परयौ दल रुक्कियौ , काम आय जसराज ।
मारि गौड़ लिन्हौं गढ़ा , सिर दिय स्वामित काज ॥७३॥

चौपही ।

बीस सहस तहँ गौड़ संघारिब । असिय सहस कव चाल सुपारिब ॥
केतिक भजि कंदर नर जाहिय । केतिक बूड़ि नर्बदा माहिय ॥७४॥
केतिक अस्त्र सस्त्र भुव डारहि । दंत दब्बि त्रन चरन निहारहि ॥
इक्कै कहत त्याजि सब लाजह । गौव जानि रष्षौ मम काजह ॥७५॥

दोहा

पंच सहस परिमाल भट , परे सुकट करवाल ।
जित्तिव चारहु दिसा मह , कहि चंदेल भुवाल ॥७६॥
उपहारै लीन्हैं घनी , करय अनुचरी राय ।
चांदा सुर गढ़ वार क्कैं , मिले गौड़ सब आय ॥७७॥
मिले गौड़ पति भूप कहँ , यहै बचन उच्चार ।
चंदब्रह्म के बंस धर , ना बंधय तरवार ॥७८॥
बलाधक्ष करि गढ़ा कव , सूहरसिय पडिहार ।
इक्क लष्ष सैना सु सँग , चलिव भूप अलगार ॥७९॥
सहर पटोला आइयव , भूपति मन दुचत्याय ।
दसरथ के बालक्क सुत , कहा कहौ समुझाय ॥८०॥
सत्त-वर्ष कव आल्ह भव , उद्दलसिय विय वर्ष ।
सत्त बीम जन पदन के , क्यों धारत वल कर्ष ॥८१॥
यह विचार उर मांझ नृप , करिय कूचु अकुलाय ।
अलगारन परमाल नृप , नगर महोबै आय ॥८२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रथम नृपति परिमालदे , दसरथ सौधहि आय ।
संबोधन कर पंच स्यौं , आल्ह ऊद उर लाय ॥८३॥
फिरि राजा अप महल गय , आल्हनसिय बुलवाय ।
करिय मुकत अंकुस बहुत , लै आये जन धाय ॥८४॥

चौपही ।

राजा जित्ति महोबै आइय । अल्ह ऊद आगे बैसाइय ॥
सिरोपाय पहिराइ पठावहि । पुनः पुनः भूपति बुलवावहि ॥८५॥
आवृत तीन लीन बुलवाइय । तीन पील बगसे सुखु पाइय ॥
फेर राज रावर पठवायव । नगन जाल रानिन पहिरायव ॥८६॥
पुनह भूप के तीरहि आयब । तब यह राज किताब सुनायब ॥
कहब राज धर संसद सोइय । आयसु होत बदत सब कोइय ॥८७॥
है जसराज महातम सारौ । सैना पति धरनी रषवारौ ॥
करि पियार मल्हन महरानिय । ब्रह्मानंद जेमि सुत जानिय ॥ ८८ ॥
सब धरती मह हुकुमु सुसज्जिव । जसा जेम आल्हन कव गज्जिव ॥
बहुत संग सरदार लगाये । सैनापति आल्हन ठहराये ॥८९॥

दोह ।

बन्नाफर चंदेल गृह , सैनापति सरदार ।
सो वृत्तांत सुनिजै नृपति , जातै भयव बिगार ॥९०॥

चौपही ।

पेराखी धर बेारिय जाये । पंच बछेरा लगै सुहाये ॥
माहिल भेापति चुगलिय किन्निय । सेा परिमाल मान सब लिन्निय ॥९१॥

दोहा ।

अधिक विक्रमिय आल्ह के , बंधुर विहद तुरंत ।
तनक ताजना लगत ही , छाड़ देत भुव अंग ॥९२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

नृपति कलिंजर देखन किन्नव । राजा आल्ह बुलाय सुलिन्नव ॥
सावँत सूर सजे सँग सोइय । चले आल्ह भूपति सम सोइय ९३

दोहा ।

चल्यो साज परमाल नृप , चले संग नृप वीर ।
सजे संग सावंत सब , सजे आल्ह रणधीर ॥ ९४ ॥

चौपही ।

कालिंजर गढ़ चल्यो नरेसह । आनंदित तव करे प्रवेसह ॥९५॥

पद्धरी ।

गजराज बाजि सब सजहु वेग । रथ सकल सकत सिवका अनेग ॥
झलकत्त झिलम तन जिरह देग । बलवान सूरमा हथ्थ तेग ॥९६॥
डोला सुडोल चंडोल साज । बन गरज मत्त सुरषत्त लाज ॥
उद्दल बुलाय नृप संग लीन । अल्हन बुलाय नृप हुकुम कीन ९७
तुम चलहु सज्जि रनवास सथ्थ । सँग लेहु सूरमा मंथ गथ्थ ॥
चढ़ि चली भीर एकत्त होइ । सब सैन सिकिल एहि मग्ग सोइ ९८
खेलत सिकार सब सूर बीर । एकै हुलास करि अधिक धीर ॥
पहुँचे सुनग्र कालिंज जाय । तब देस मध्य बढ्यो उछाय ९९
लीने सजोइ सिर कलस नारि । गावंत गीत ठाढ़ी दुवार ॥
ठाढ़े सकल्ल मग उठत राह । नृप गौ महल भीतर सुराह १००
राजमहल महँ जाइ राज । सब सूर वीर डेरन समाज १०१

दोहा ।

करी केल परमाल नृप , सब रनवास समेत ।
माहिल भूपति भूप को , मतौ कुमति को देत ॥ १०२ ॥

अल्हन हय दौराय कै , पकरि लयौ मृग धाय ।
ऐसे इनके पंच हैं , नृप कै एको नाय ॥ १०३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घोरे आपु मँगाय कै, देहु अल्हन को और।
नहीं करै तो घर तजौ, जाइ औरहि ठौर॥ १०४॥

चौपही।

भूपति अल्ह उदल बुलवाए। निकट भूप के बचन सुनाए॥
पंच बछेरा माँगै दीजै। उनके साठे बहु हय लीजै॥१०५॥
एक एक उनतै अधिकारय। जिन पर इन्द्रराज हय बारय॥
आल्हन लखि परमाल सुजानह। नयन रक्त करि बुल्लि जुबानह १०६

दोहा।

घोर देव कै घर रहौ, दो मैं एकज लेहु।
जो तुम को नीकी लगै, सो जुवाब हम देहु॥ १०७॥
भूपति के सुनि कै बचन, उर मैं उठी किसान।
उठी सभा मृग सिंह ज्यौं, बुल्लिव नहीं जुबान॥ १०८॥
सुनत लगी सब कौ बुरी, भूपति करौ उपाय।
अल्हन को राजा सवै, सुनौ सूर घर जाय॥ १०९॥

चौपही।

सुनत बचन आल्हन घर आइय। देवल दे कह आनि सुनाइय॥
मंगत पंच बछेरा भूपति। चुगली करिय महिल अनुभूपति॥११०॥

दोहा।

माता भूपति भूप सह, चुगली करी विसाल।
वार वार वर पंचऊ, माँगत हैं हय वाल॥ १११॥

चौपही।

सुनत बचन देवल दे खिज्जिय। पूत बछेरा दैन न किज्जिय॥
बासु छंडि कनवज कहँ चल्लिय। राजा दल पाँगुर सह मिल्लिय ११२

दोहा।

भुवपति सह भूपाल कहि, सिवर बनाफर छाइ।
सुनत भूप परिमाल दे, लिन्नव छिप्र बुलाई॥११३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

नृप परिमाल कहै मुख बानिय । आल्हन देव बछेरा आनिय ॥
नातरू बासु छंडि कैं चलियै । आनहि ठाम ठिकाना मिलियै ११४
सुनत बचन आल्हन घर आये । छंडौ बास पयानक राये ॥
साहन बाहन सेा सब लिन्नव । कनवज दिसा पयानव किन्नव११५

दोहा ।

स्याह सिला गहि मिल्लियै , महल छंडि दिय राज ।
प्रात होत मटवध सहर , चाले सूर समाज ॥ ११६ ॥
पहिर कवच असि बंधि कट , कंगल लीन सुबास ।
कनवज दिसि कहँ कूचु करि , चलिय आल्ह नर नाह ॥११७॥
आल्ह साथ षेाडस सहस , सेा मटवध पुर जाय ।
चार सहस असवार सह, उद्दलसिय पछिलाय ॥११८॥

चौपही ।

मकर वई पहरा पडिहारह । महिय पाल भूपति सिरदारह ॥
सुवरण साज चरण सिर संधिय । इक्क सहस अयराकिय बंधिय ॥११९॥
इत्तन बचन कह्यौ चर आइय । सुनत बचन उद्दल रिस पाइय ॥
सब सूरन सन बचन कहाइय । अयराकी सब लेहु छुड़ाइय ॥१२०॥
उदल पसर कीन बलदाइय । लग्यौ प्रात पहरा सन जाइय ॥
चलत बान गेाला गन भारिय । दुहुं दिसि होत परस्पर मारिय ॥१२१॥
गहि सुभ साग उद्द कर लिन्निय । लखत पसर सावंतन किन्निय ॥
सारे सुभट कोट मह पैठे । एकै जाय मँदिर महँ बैठे ॥१२२ ॥
इक्कन दर्व लुट्टि मन मानिय । इक्कनि पकरि महिल किय रानिय ॥
भगि धनपाल महौबै आयब । पुत्र मातु भगनिय विसरायब ॥१२३॥
इक्क जाम किय जुद्ध अपारह । पकरि लीन वसुपाल कुमारह ॥
रिद्धि सिद्धि बहु भाँतिन लुट्टिय । पहरा नगर जाम मह छुट्टिय ॥१२४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

इक्क जाम संग्राम हुव , बंध लीन वसुपाल ॥
बंधु मातु भगनिय सहित , छोर लीन हय जाल ॥ १२५ ॥
पहरा मारि मटौध गौ , जहाँ कटक सब मिल्ल ॥
आल्हन सह धावक कहिय , उदलसी रन खिल्ल ॥ १२६ ॥
धावक सह आल्हन कहिव , कवन किन्न लघु मत्त ॥
कवन जोध सह जुद्ध कर , कवन ग्राम किय घत्त ॥ १२७ ॥

चौपही ।

तब धावक बुल्लिय इमि बानिय । सुनहु भूप आल्हन बुध खानिय ॥
पहरा मारि बंक बसुपालहि । तहं किन्नर उदल खग ख्यालहि ॥१२८॥

दोहा ।

परे सहस पडिहार भट , तीस बनाफर बीर ॥
इक्क जाम मह जित्तियो , उदलसी रनधीर ॥ १२९ ॥

चौपही ।

धृक धृक बदति आल्ह भुवपालह । सुनहि बत्त भूपति परिमालह ॥
मम सावँत मम नगर उजारिय । स्वामि-धर्म भल चले विचारिय ॥१३०॥

दोहा ।

जो जोधा महि लोक महँ , स्वामि हृदय दुख देय ॥
असिय सहस संवत सरह , बासु नर्क महँ लेय ॥ १३१ ॥
इतिय बत्त नृप आल्ह कहि , मानस दुक्ख कराय ॥
तहुँ लग हरे निसान दल , उदल पहुँचे आय ॥ १३२ ॥

चौपही ।

बंधु सहित बसुपालहिं ल्यायव । महीपाल तिय अग्ग चलायव ॥
छुए चरन देवल के जाइय । आल्ह चरन सीस रहि नाइय ॥१३३॥

दोहा ।

उठहु उद थां भल करिय , माहिल तिय मम माय ॥
सावँत कवन उदंड करि , म्हां आयस बिन जाय ॥ १३४

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

महियपाल बनिता जब आइय । रुदन करत देवल दे धाइय ॥
मिलत परस्पर दोउब रानिय । बाफक भीज बसन रस सानिय ॥१३५
फिरि पडिहार त्रिया वैसारिय । सुर्न पात्र धरि सीतल बारिय ॥
देवल देाय दया उर जानिय । बदति दुक्ख पड़िहार सु रानिय ॥१३६

दोहा ।

देवल दे इमि उच्चरै , सुनहु उदल सुत बैन ॥
माहिल तीय बँधी न तुम , मोहि बंध लिय ऐन ॥ १३७ ॥

चौपही ।

नहिं थां कव बसुपाल अरातिय । इंद नरिंद बंध मम नातिय ॥
सुता महिल रूपा जिन जानिय । तुव भगिनी सम सदा बखानिय ॥१३८

दोहा ।

सुता पुत्र परिवार सौ , माहिल तिय पहिराय ॥
आल्हन सी देवल दुहूं , विदा कीन सुखु पाय ॥ १३९ ॥
मटवँध तैं दल ऊचक्यौ , बज्जय घोर निसान ॥
कर्णवती कहँ ऊतरे , बीस सहस किकियान ॥ १४० ॥

चौपही ।

पसर भूर भूपति सुत किन्नव । भुनगह सर्व लुट्टि जिहि लिन्नव ॥
धावक धाय आल्ह लह आयब । कहिय बत्त सेा नैन लखायब ॥१४१
लोह जंत्र इक लष्षालयैं अति । परत बान मनेां सलभा गति ॥
मारग वीर अग्ग तुव रुक्किव । सब सावँत संगर मग छुक्किव ॥१४२॥

दोहा ।

अल्हन धावक बचन सुनि , द्रग आरक्त जु कीन ॥
सीहा लाला सुभट किय , बिदा समर कह कीन ॥ १४३ ॥
पंच सहस सैना सु संग , सीहा सुभट कराल ॥
आल्हन मानहु पाठयव , बिजैसिंह कहँ काल ॥ १४४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लाला सीहा धाइयब , बिजैसिंह करि रार ॥
दोइ जाम जुरियौ सुभट , त्रतिय जाम गय हार ॥ १४५ ॥

तब सीहासी नंद पति , किन्निय पसर सम्हारि ॥
मारि लयौ भूपति सुवन , दइय बड़ोषर बारि ॥ १४६ ॥

डेरा करि आल्हन नृपति , भूपति सुत कह कुट्टि ॥
दोइ पहर झरिसार रण , फेर बड़ो षर टुट्टि ॥ १४७ ॥

अर्ध सहस पडिहार भट , कटे घोर घमसान ॥
अल्हन भट पञ्चास परि , जाहिर सकल जहान ॥ १४८ ॥

चोपही ।

जागीरै भोपति किय जारिय । तनुज मारि बस्ती उज्जारिय ॥
परिपाटी पडिहार सुचुक्किय । ऊदल मुष काहू नहि रुक्किय ॥ १४९ ॥

दोहा ।

भेडोषर तजिया नृपति , चलिव अग्ग वर वीर ॥
वसी सहस सह मिलियौ , कालिंद्री के तीर ॥ १५० ॥

दैवल दे बिनिया सु सुनि , कालिंद्री सुखदाय ॥
जनम भूमि महुबौ नगर , फेर दिखावहु माय ॥ १५१ ॥

कालिंद्रिय कंकन सुदिय , बिहँसि दीन बरदान ॥
एवमस्तु कहि भुवन वर , भई सुअन्तरध्यान ॥ १५२ ॥

घाट घाट किय आल्ह नृप , सहँस नाव मँगवाय ॥
हुकुम करयौ अनुचरन सौं , देव चीज भरवाय ॥ १५३ ॥

कनवज्जह पुर आल्ह गौ , बली बनाफर वीर ॥
अवन विसद अति उत्तरौ , गंगाजू के तीर ॥ १५४ ॥

गंगाजू अवलोक नृप , सीस नाय कर जोर ॥
तुम त्रयपुर तर तारिनी , सुनहु विनय इक मोर ॥ १५५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

म्हा आयो थांके सरन , तुम जग तारन माय ॥
यह जननी बरदान मम , तन तुव पंक समाय ॥ १५६ ॥
यह कहि कर परिवार स्यौं , करे आल्ह अस्नान ॥
विप्र बुलि देवल जननि , दये कोट इक दान ॥ १५७ ॥
ऊन वस्त्र नृप आल्ह नै , भूतल दयौ बिछाय ॥
द्रग लग्गत ताही समय , दरस दीन निजु माय ॥ १५८ ॥
कंचन कंचन कर लसै , उर मुकतन के हार ॥
सूर चंद्र मनि सीस तन , सोभा लसत अपार ॥ १५९ ॥
तब गंगा नृप आल्ह सह , कहय वत्त अघ-चूर ॥
गोरिष वर वरदान तुहि , दये अवनि पर पूर ॥ १६० ॥
द्रोनपुत्र बलि व्यास सम , पवनपुत्र से धीर ॥
सुर न बीजौ तोहि सम , सुनु आल्हन वर वीर ॥ १६१ ॥
यहि सुबत्त कहि स्वप्न महँ , भई सु अंतरध्यान ॥
अमर देह कलि मह करयौ , गोरिख कृपानिधान ॥ १६२ ॥
प्रात होत आल्हन नृपति , बैठ गंग के तीर ॥
मोहत नर अरु नायका , तन मन धरत न धीर ॥ १६३ ॥
नर तन कवन सु इक्क कहि , इक कहि सुरपुर राय ॥
निसिपति कहि परिमाल कौ , सावँत रूरौ आव ॥ १६४ ॥
रूरौ रूरौ सब कहैं , सबै रहे चितु डारि ॥
कनवज पुर अचिरज्जु करि , रहे मोहि नर नारि ॥ १६५ ॥
दरस सरस लिय गंग के , बुलिय यहै जुबान ॥
जे सेवैं नर नीर कौ , ते पावैं निर्वाण ॥ १६६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१०) जयचंदमिलाप खंड ।

दोहा ।

आल्हन ऊदल बंधु विय , उतरि गंग तट सोय ।
सिंघाअवलोकन कथा , नगर महोवा होय ॥ १ ॥
आल्हन सी परिमाल सह , कनवज गयउ रिसाय ।
कोऊ कहि अविका अजा , तनया तनुज कहाय ॥ २ ॥
धावो धावो वीर हो , ईहामृग लियै जाय ।
भगे सबै जन जान लै , महा दुष्ष तन पाय ॥ ३ ॥
नगर महोबा के सबै , अंत भये उदवास ।
जाय पुकारे भूप पै , ईहामृग के त्रास ॥ ४ ॥
इक्क कहै मम धाम मँह , इक्क अजिर मँह आय ।
इक्क बरोठै ऊभ कहि , इक्क कहै यह जाय ॥ ५ ॥
इक्क कहै जुग पंच है , इक्क कहै दस बीस ।
इक्क कहै सत सहस हैं , सुनु चँदेल अवनीस ॥ ६ ॥
परिय रौर भुवपाल लौ , पुरजन सबै सुनाय ।
सुनि श्रवनन परिमाल नृप , पंडित लीन बुलाय ॥ ७ ॥
अनहोनी पुर क्यौं भई , कहौ बैन दुजराय ।
आल्ह ऊद दोउ बंध तुम , नाहक दये पलाय ॥ ८ ॥

चौपही ।

चहू भाग पुर गर्त बनाये । लोह जंत्र धर तहाँ लगाये ॥
अत्र सस्त्र सब बीर चलावहिँ । ईहामृग कहँ बधन न पावहिँ ॥९॥

दोहा ।

ईहामृग कहँ सुभट गन , निस-दिन घलहिँ धाय ।
बधन न पावहिँ अक्ष लषि , चपल चमकि ज्यौं जाय ॥ १० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आल्ह जान सब सहर कौ , सो तुम दयौ निकार ।
तातैं यह उतपात नृप , मान समझ्झि विचार ॥ ११ ॥
ईहामृग सूनौ लषैं , सबै सहर महराज ।
तातैं यह उतपात अति , भनत दीह कविराज ॥ १२ ॥
अहन स्वान रोदन करैं , उलकापात जु होय ।
दिन पलट्यो चंदेल तुव , यह भष्षत बुध लोय ॥ १३ ॥
महियपाल भुवपाल लषि , बत्त उच्चरै कौन ।
पंडित गन कौ वचन सुनि , रहिव भूप गहि मौन ॥ १४ ॥
असुभ वचन परिमाल कौं , पंडित उठे सुनाय ।
पुनह कथ्थ कनवज्जपुर , आल्हनसी पर आय ॥ १५ ॥
सुनहु सर्व माहावतिय , सब हस्ती लै आय ।
तन पवित्र भूतल करहिँ , गंगा मध्य धसाय ॥ १६ ॥
सुनत वचन नृप आल्ह के , सब हस्ती जुरि आय ।
पंच बीस गजराज वर , गंगा दये धसाय ॥ १७ ॥
दस हजार नृप पंग के , छुट्टे करी अमान ।
मल्लारी अरु सीवली , जिन पर सेन जघान ॥ १८ ॥
दुहु दिस गज भेला भयव , गंगा जू तट आय ।
मत्त महावत भूप के , दिन्नै करी लराय ॥ १९ ॥

वाचनीक—राजा पंगु के अरु आल्ह के हस्ती लरे ।

दोहा ।

रूसि भूप परिमाल तैं , कनवज्जह पुर जाय ।
कौतक मानस जुद्ध कव , दिन्नैं पील लराय ॥ २० ॥

छप्पय ।

रूसि आल्ह नरनाह सिवर काली सिल किन्नव ।
बीस सहस असवार भार भाइय प्रति दिन्नव ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनह कूच करि प्रात सहर मठवध कहँ आयव ।
देस वेस अवगाह अन्त कनवज कैं जायव ॥
गंगा सुबंद वर उत्तरिव पील विसाल लराइयव ।
देषंत राज कौतक सकल पील पचीस पिलाइयव ॥ २१ ॥
उतहिं पील दस सहस पियन पंगुर के आये ।
उन्नित सुंड विसाल काल सम क्रोधित धाये ॥
लरय परसपर जोर घोर संगर करि भारिय ।
परिय मार घमसान पील पंगुर के हारिय ॥
दह परे पील गंगा निकट हनै घनय कीरति बगस ।
पुक्कार परिय नृप पंगपुर कहय सबै किन्नव हदस ॥ २२ ॥
इक कहय कोऊ दनुज मनुज भक्षन पुर आइव ।
इक कहै नृप छीन आयु उतपात पठाइव ॥
सत जग्गै सुन सहस अक्ष को मार पठायव ।
मीनकेत धरि वपुष जोग्य जयचंद चलायव ॥
इक कहय भूप परिमाल कौ सावँत रूसि जु आइयव ।
दीवान जाय जयचंद कै धावन वचन सुनाइयव ॥ २३ ॥

दोहा ।

तब मंत्रिन ये वचन सुनि , नृप कहँ दये सुनाय ।
सहस पचासक सैन सौं , केहर दयौ पठाय ॥ २४ ॥

आयसु पाय कढ़े हरी , वैरागा बर बीर ।
सहस पचासक सैन लै , मिले गंग के तीर ॥ २५ ॥

दस सहस्र सँग सैन लै, क्रमै सुवीर जुझार ।
करि प्रदक्षना आल्ह भय , उद्दल सी असवार ॥ २६ ॥

जरा पुरिष छिक्या करिग , उद्दल हय आरोह ।
तब लाला सीहा सुभट , कर मानस मह मोह ॥ २७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाचनीक—तब ऊदल जग ज्योतिषी को पूंछ्यो अहो जगजोति जो अस्व आरोहत छिक्या होइ ताकौ विचार कहौ। तब जोतिकी येहा कहा के हाक हाकि राजन प्रसस्त है यथा मत्स पुराणे ॥

औषधे वाहनारोहे विवादे गमनं तथा।
विद्यारंभे शुभे कार्ये न छिका शुभदा मता ॥ २८ ॥

यथा पद्मपुराणे

सर्व दिक्षु छुतं नेष्टं गोछुतं मरणं प्रदं।
अफलं तत् फलं विद्यात वृद्धपीनस कैतवं ॥ २९ ॥

दोहा।

ये वचन सुनि मोद मन, दुंदुभि दीन्ह बजाय।
कारे पीरे लाल धुज, मम भट लेहु छिड़ाय ॥ ३० ॥

चौपही।

बीस सहस अल्हन के संगह। संगर जुरत मुरत नहिँ अंगह।
सजिव वीर उदल अगवानह। गजत सूर बज्जत नीसानह ॥ ३१ ॥

दोहा।

देवलदे क्रोधित महा, पुत्रन वचन सुनाय।
कल मह चलय कहा न कछु, केहर जियत न जाय ॥ ३२ ॥

विंस दोय संगर करे, केहर सिय बलवान।
जब जुरिया तब जीतया, जाहिर सकल जहान ॥ ३३ ॥

मोर साजु सोभै तुरग, सुरग कुरग से आय।
चानै संष्प विरद वर, जुरचौ कठेरी जाय ॥ ३४ ॥

त्रिभंगी।

केहर कट्ठेरी सैना फेरी बाजत भेरी सहस दसं।
गरजत भट नद्दं जनु घन भद्दं नंचत रुद्दं रुद्द रसं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिष्षत नभदेवं अप्सर सेवं सिंद न लेवं भानु रयौ ॥
कढ़िढय किरवानं चलि घनवानं छुट्टि कमानं धूम छयौ ॥ ३५ ॥
कट्टारिन मारत वीर प्रचारत कायर आरत रन त्यागं ।
तह कढ़ि कलकद्दं सुंड सुनद्दं नचत कमद्दं नट लागं ॥
मिंटत भरि अंकं श्रोणित पंकं कुंजर नंकं षभत षरे ।
केहरि बलदायं करिय पिलायं उद्दल रायं आनि जुरे ॥ ३६ ॥
सुन सुन्न बनाफर बुधबल आकर चंदिल चाकर लोह गहौ ।
सुनि कै उदवानी रिसि चित आनी सिंघिन तानी बचन कहौ ॥
सुन पुन कट्ठेरं कुंजर पेरं संगर सेरं आपु सुनं ।
घल्लिय उदवानं करिय जधानं केहर जानं परत रनं ॥ ३७ ॥
कढ़िढय कर तेगं धावत वेगं क्रोध अनेगं चित्त धरं ।
षंडयौ हय नूरं विक्रम पूरं उद्दल सूरं धरनि परं ॥
पायक चय धायं उद्द सहायं घल्लत घायं घन्न घनं ।
जोधा उत आयं केहरि ल्यायं अस्व चढ़ायं बीर तनं ॥ ३८ ॥
चलि अत्र अपारं दुहु दल मारं सरित सुधारं बहत सबै ।
भग्गिय सब सैना लषत न गैना बुल्लत बैना दीन तबै ॥
उद्दल रन मंडयौ षेत न छंडयौ बीर उदंडयौ जानि सबै ।
करि षग्गन ष्यालं शिव उर मालं मुंड विशालं दीन तबै ॥ ३९ ॥

दोहा ।

भगिय सैन राठौर किय , जुगल कोस अकुलाय ।
जाय षबर भग्गुल दइय, भूपति कौ चितु लाय ॥ ४० ॥
परे सत्त किकियान पर , करभ देाय सत षेत ॥
इक्क अहन भर गंग तट , बहिय श्रोणि मिलि रेत ॥ ४१ ॥
परे इक्क हज्जार जहँ , पायक प्रबल सुदेस ।
परे बनाफर तीन सत , जित्तिव आल्ह नरेस ॥ ४२ ॥
पंच करिय किकियान सत , बीस परे मौहार ।
परे वागरिय पंच दश , पंच परे पडिहार ॥ ४३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करि धावा आल्हन नृपति , केहरि दयव भगाय ।
पील सत्त जयचंद के , स्यौं धुज लये छिड़ाय ॥ ४४ ॥

चौपही ।

भग्गुल भग्ग गये दरबारह । बुड्डिय बसन रुधिर बहि धारह ॥
भाषत बचन पंगु के अग्गह । पालायन भट लगत न मग्गह ॥४५॥
बीस सहस पर सैन बषानहु । पंच सहस सम इकु इकु जानहु ॥
कोट कोट सम जुग सरदारह । जिन सिर लगत झरत नहिँ सारह ॥४६॥

दोहा ।

पंच पहर गंगा निकट , केहरि मंडिय रारि ।
करि विक्रम सुरपत्ति सम , दिष्षत ऊभय हारि ॥ ४७ ॥
सुनि भुवाल विजपाल सुव , क्रोध चित्त अति ल्याइ ।
तीस लष्ष सिंधव सहित , रावन देहु पठाय ॥ ४८ ॥
बीस सहस बलवान भट , डारौ सर्व खपाय ।
जुग सरदारहि बंधि कै , कनवज सबै दिखाय ॥ ४९ ॥
मान सीख रावन चलिग , तीस लष्ष लिय संग ।
बजिय दुंदुभिय जाल जह , डगे धरनिधर अंग ॥ ५० ॥

छप्पय ।

तब सुमंत्रि मकरंद चवहि नृप पंग राय सुन ।
वृथा सृष्टि संघरिय त्रिया लष्षन सुमथ्थ धुन ॥
ये भूपति परमाल छंडि सेवन कहँ आये ।
आल्ह उदल इन नाम सुजस तिनके भुव छाये ॥
तुव सरन आय तिन मरन हुव अस कुवत्त किमि बुझ्झिये ।
बुलाय सूर सन्मान करि वृथा न जुद्ध अरूझ्झिये ॥ ५१ ॥

दोहा ।

सुनि बानिय मकरंद की , भूपति अति सुख पाय ।
आल्ह ऊद के बेाध कौ , लाषण दीन पठाय ॥ ५२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

आल्हन सिवर लषन सिय आयव । उद्दल सी आगै हो ल्यायव ।
आल्हन कह मिलि राजकुमारह । आगै रष्षि अस्व मनिहारह ॥ ५३ ॥

दोहा ।

लष्षन सी अति प्रीति मय , कहे बचन परिपूर ।
फेर कुंवर दोऊ बंधु लै , पहुचे पंग हजूर ॥ ५४ ॥
मिलिव भूप जयचंद जू , आदर कीन सुवेस ।
पुंछि षवर परिमाल किय , रहि गाँजर दिय देस ॥ ५५ ॥

छप्पय ।

आल्ह गयव कनवज्ज छंडि परिमाल वास घर ।
भोपति किय जागीर मारि उज्जारि जारि घर ॥
करि आदर जयचंद दीन बड़देस सुभारिय ।
घोरे सत्त मँगाय देय हथ्थिय हितकारिय ॥
मोतिन्न माल विस्साल अति हीरा पौची सुद्धरिय ।
जसराज सुवन अरचे अधिक मिल्हि मारु मंगल करिय ॥ ५६ ॥

दोहा ।

कहै चंद प्रथिराज सुनि , विक्रम विरस बनाय ।
जौर बनाफर आइहैं , रुंडहि मुंडन चाय ॥ ५७ ॥
करय गान डौरू बजै , नृत्य करै शिव आय ।
जौ आवै आल्हन नृपति , श्रोणित सरित बहाय ॥ ५८ ॥
आल्ह पराक्रम अवर किय , सुन सु भूप बलदाय ।
चार मवासिय जेर किय , कहत चंद बरदाय ॥ ५९ ॥
कनवजपति बुलवाइयव , आल्ह उद दोउ भाय ।
चार मवासिय संध करि , वीरा दये उठाय ॥ ६० ॥
हय गय मानिन दबि दिय , आदर बहु नृप किन्न ।
विजहद कुरहर गाजरहि , अरु बंगालहि दिन्न ॥ ६१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोउव बंध जुहार नृप , अप आल कँह आय ।
अंतहपुर महं जाइव , जहां दिवलदे माय ॥ ६२ ॥
तब अल्हन सी जोर कह , सुनहु जननि मम बत्त ।
चार मवासिय संधि लिषि , दइय पंगु करि हत्त ॥ ६३ ॥

चौपही ।

तब बुलिय देवलदे बातिय । चार मवासिय कठिन सुजानिय ।
मोर टट्टरिय साजु षपाइय । पंगुर चढ़िव हथ्थ नहिं आइय ॥ ६४ ॥
ये वचन्न देवलदे भष्षहि । सुनहु पुत्र छत्रिय रज रष्षहि ।
अप साँवतन वेग बुलावहु । होइ मंत्र सोइय ठहरावहु ॥ ६५ ॥

दोहा ।

मत्त वचन सुनि बंधु विय , दीवानहि चलि आय ।
भेज अनुचरण छिप्र ही , सावनतन बुलवाय ॥ ६६ ॥
सीहा लाला आदि दै , बुध पायक रनधीर ।
सर्व सभा मँह आइया , इत्यादिक सब वीर ॥ ६७ ॥

चौपही ।

आल्ह नृपति वातिय उच्चारिय । चार मवासिय दिन्निय मारिय ।
सब रजपुत्त कहब सो किज्जिय । सनधै रष्षिय कै नृप दिज्जिय ॥ ६८ ॥

दोहा ।

सुनि सावंत सुबुलियव , स्वामि धर्म चितु लाय ।
सनधै रष्षहु आल्ह नृप , चर कहँ देहु पठाय ॥ ६९ ॥
दिय सनधै चर हथ्थ कै , पत्रिय दिन्न लिषाय ।
चारि अहन विच अंत करि , गाँजर पहुँच्यौ जाय ॥ ७० ॥
दरवानिय सह बर कहिय , तुव अंतहपुर जाय ।
करहु अरज बिरसिंघ सह , अल्हन पत्तिय लाय ॥ ७१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दरबानिय दरबार मँह , कहे नृपति सह बैन ।
द्वार अल्ह चर ऊभिया , पत्तिय लिन्हे पैन ॥ ७२ ॥

चौपही ।

तब नृपति बुल्लिव इमि बानिय । ल्यावहु जाय हजूरहि आनिय ॥
द्वारपाल सह चर इमि भष्षहि । चलहु भूप ढिग कहु अभिलष्षहि ॥७३॥

दोहा ।

नृपति हथ्थ पत्तिय दई , विनय कहत कर जोर ।
श्रीजयचंद नरेस दिय , चार मचासिय घोर ॥ ७४ ॥
बुल्लिव चर पुनि क्रोध कर , सुनहु भूप मम वत्त ।
जो संधै कायदन करि , रहि गाँजर तुव घत्त ॥ ७५ ॥
बाँच नृपति पत्तिय सनध , दिन्न फेर चह हथ्थ ॥
राज नियत जयचंद करि , करिव अल्ह कर घत्त ॥ ७६ ॥
विरसिंघ हरसिंघ क्रोध करि , चर कह दीन हकार ।
पंगुर नृप नहि जंग करि , असिय लष्ष असवार ॥ ७७ ॥
आल्ह महोवा छंडिया , कनवज्ज आय रिसाय ।
बनजारे सम मेलिया , पत्तिय दीन पठाय ॥ ७८ ॥

चौपही ।

पंगुर सहित अष्प चढ़ि आवहि । म्हां सह जंघ अल्ह नहि पावहि ॥
अवर देस धोषे मत भुल्लहि । विंस सहस्स बनजारहु मिललहि ॥७९॥

दोहा ।

ये चर सौ वत्तैं कहिय , नहिय सनधि मन कीन ।
कहिव जाय नृप अल्ह सह , नहिँ थां से मतिहीन ॥ ८० ॥
चर उततैं सोँ चालिया , दो दिव शिवर कराय ।
येक अहलि कव अंत करि , कनवज पहुँच्यौ आय ॥ ८१ ॥
हथ्थ जोर चर आल्ह सह , नहि पत्तिय लिषि दीन ।
म्हां कह संध सुफेर दिय , थां कौ कहि मतिहीन ॥ ८२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

सुनिय अल्ह नृप चर किय बानिय । नयन रत्त करि अति रिस आनिय ॥
उद्दल कज्ज जरूर बुलाइय । चर किय षवर कहिय समुझाइय ॥८३॥
दोउव बंध गये दरबारह । करि जुहार नृप पंगु निहारह ॥
चर किय षवर कही सब जाइय । सुनि जयचंद कुद्ध मन ल्याइय ॥८४॥

दोहा ।

आल्ह ऊद विय कौ पुकरि , सुनु जयचंद नरेस ।
चार मवासिय भूप गहि , लुट्टि लैहु धन देस ॥ ८५ ॥
पंगु नृपति वीरा दये , कलगी तून कमान ।
तहलन सी उमराव सँग , अरु दिय लष्षन रान ॥ ८६ ॥
तिंस सहस हिंदुव चमू , विंस सहस पट्ठान ।
सहस पचासक सैन सँग , लष्षन कीन पयान ॥ ८७ ॥

छप्पय ।

करिव कोप नृप अल्ह सिवर बाहिर कढि किन्निव ।
विंस सहस असवार भार भाइय सिर दिन्निव ॥
करहु शूर इक मत्त धरहु भ्रम स्वामि सोस पर ।
लरहु जुद्ध करि क्रुद्ध धरहु विरसिंघ वीर वर ॥
यह कहि धुकार धवसन लगिय सत्तर सहस पलानियव ।
कलमलहि सेस धरनिह डगहि अल्ह कोप उर आनियव ॥ ८८ ॥

दोहा ।

दो सत मत्त मतंग वर , अग्ग दीन बलवान ।
लष्षन उद्दल सुभट वर , ते इक्षत घमसान ॥ ८९ ॥

हनूफाल ।

नृप अल्ह वंव कराय लष्षन सु उद्दलराय ।
सीहा सु लाला आय सँग सुभट सूर सजाय ॥ ९० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजि बुधुव पायक संग रन मध्य मह बजरंग ।
पट्ठान तहलन षान जयचंद जोध अमान ॥ ९१ ॥
मौहार संग सु झार चलि बागरी पडिहार ।
कूरम्म वीर बघेल संग्राम अरि दल ठेल ॥ ९२ ॥
सजि चलेय गौड़ अमान संग सत्त सहस कमान ।
सजि चलिय कुरिय अनेक निजु स्वाम धर्महि टेक ॥ ९३ ॥
सत दोय लिन्ह कमान मन पंच गोला षान ।
पंचास सहस सुवान चल्ले सुउंट भरान ॥ ९४ ॥
लिय अस्त्र सस्त्र अपार संग कठिन वीर जुझार ।
इहि भाँति सेन सु संग तब कूचु किय बजरंग ॥ ९५ ॥

दोहा ।

कियव कूचु कनवज्ज तैं , बज्जत घोर निशान ।
अलगारन अल्हन परिव , लहरी नौघट आन ॥ ९६ ॥
लहरी तैं दलु चालिया , सकल सैन अतुराय ।
तीन जाम मह आइया , सापा गढ़ कह धाय ॥ ९७ ॥
सुनिय षवर भुमिया सुतब , अल्हन सी चढ़ि आय ।
मिलन मत्त मन मह धरिव , उपहारहि मंगवाय ॥ ९८ ॥
दोय सहस संग हेम लिय , दिन्ह अल्ह कर आन ।
हथ्थ जोर विनया सु करि , म्हां अप्पन करि जान ॥ ९९ ॥

चौपही ।

सिरोपाय बहु मोल मँगाये । भुमिया कज्ज दिन्ह पहिराये ॥
पातर करि करि किन्ह सु हत्तह । पुनह अल्ह निजु कहिय सुवत्तह ॥१००॥

दोहा ।

गट गाजर सुनि कठिन अति , कहव षोलि निजु मत्त ।
तब भुमिया कर जोर कहि , बिना छिद्र नहि घत्त ॥ १०१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धा मिलुव सैना सहित , उद्दल सी पठवाइ ।
सौदागर हय सज्जि करि , गंजर भिद्द लगाय ॥ १०२ ॥

चौपही ।

अल्ह नृपति उद्दल बुलवायव । भुमिया मत तब ताहि सुनायव ॥
गूढ़ मंत्र मानस धरि लिन्निव । छिद्र करण कव जतन सु किन्नव ॥१०३॥

दोहा

वेलि साहिनिय हुकुमु किय , दो सत अस्व सजाय ।
अयराकी कक्षिय सुरंग , सौदागिरिय बनाय ॥ १०४ ॥

चौपही ।

भिन्न सूर सत पंच अमानह । जिन जित्ते कैयक घमसानह ॥
उद्दल सी यह छिद्र बनायव । विजहट अल्ह दौर करि जायव ॥१०५॥

दोहा ।

लष्षन तहलन आल्ह सँग , उद्दल छिद्र बनाय ।
सिंहा अवलोकन कथा , गढ़ गाँजर मह आय ॥ १०६ ॥

वाचनीक—विर सिंघ हर सिंघ दोऊ कुवर, पैमचंद रूपन रायन बुलवाय जंग मन सावंत आदि दै मंत्र कथ्यते ।

दोहा ।

सापागढ़ भुमिया मिलिव , विजहट अल्ह सुधाय ।
बैस धरूषह जित्ति करि , म्हां पर परय सु आय ॥ १०७ ॥

पत्तिय नहि लिषि अल्ह कह , कहिय जुवानिय सक्त ।
म्हां पर सैन सु डारिया , रीस नयन करि रक्त ॥ १०८ ॥

चौपही ।

करि मंत्रायण बत्त सुठानिय । सब कुटुंम सावंतन जानिय ॥
पहु वर सरित घाट बँधवावहि । आल्ह सैन उतरन नहिँ पावहि ॥१०९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साठ लष्ष जिहि हनै पठानह । पंगुर गर्भ हन्यौ बलिवानह ॥
सिंहपकरि इक जाम जो लिन्नव । सोइय आल्ह आय रिसि भिन्नव ॥११०॥
जेर गया के किन्न पठानह । वेल व्याह मर्दन चहुवानह ॥
गंध्रप जित्त अस्व तिहि लिन्नव । गोरष गुरु वरदान सु दिन्नव ॥१११॥
तिंस इक्क जित्ते संग्रामह । पोडस वर्ष मध्य बलिवानह ॥
ताकौ सत्र वचन नहि पायव । आल्ह सुभट भूतल मह गायव ॥११२॥

दोहा ।

कहि विक्रम सब आल्ह कव , रूप कुमार सुनाय ।
गौरज गंमन सथ्थ लिय , घाट पंथ बँधवाय ॥ ११३ ॥

सोरठा ।

दो सत लिन्न कमान , रूपनराइन चालिया ।
तिंस सहस किकियान , पँच सहस्र सुवान लिय ॥ ११४ ॥

चौपही ।

घाट बंध वकवासिय किन्नव । मैटे कज्ज मरन सब लिन्नव ॥
विंस सहस पैदर तुम लिष्षहु । गौरज गंमन मम रज रष्षहु ॥ ११५ ॥

दोहा ।

धार बांधि जुग कोस लगि , रष्षे वीर अमान ।
आल्ह चमुव उतरै नहिय , तुम किज्जव घमसान ॥ ११६ ॥

या कहि कै विरसिंह नृप , गढ़ कव किन्न विचार ।
षायन षायन वीर सब , ते दिन्नय बैसार ॥ ११७ ॥

गुरज सपीलन तोप धरि , श्रौर रहकला बान ।
सहर कोट के रक्ष कह , लघु सुत कीन पयान ॥ ११८ ॥

पत्री लिषि भुमियान कौ , लिज्जिय छिप्र बुलाय ।
म्हां पर आल्ह जु आइया , किज्जे अब्ब सहाय ॥ ११९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

मेघनंद पूरव थै आयव । सहस पंच सेना सँग ल्यायव ॥
कुरहट तै रयभान सु चल्लिव । सप्त सहस सैना सह मिल्लिव ॥१२०॥
विजहट चमुव न आवन पाइय । आल्हन घेर लिन्न तहँ जाइय ॥
अवर कुमक भुमियन किय आइय । ते रन जंग करहिँ अधिकाइय ॥१२१॥

दोहा ।

बीस सहस असवार जुरि , पैदर सहस पचास ।
लरन कज्ज विरसिंह नृप , कर मैडे किय आस ॥ १२२ ॥
हर सिँह वीर सु आइया , सबके सिवर कराय ॥
अंतहपुर म्हां जाइया , मिजमानिय पठवाय ॥ १२३ ॥

चौपही ।

इत उद्दलसी छिद्र बनाइय । पहु वर घट्ट सिवर कर आइय ॥
गौरज गंमन पुंछिय वत्तह । म्हां सह बुल्लि कहा अव जत्तह ॥ १२४ ॥
वाचनीक—वोला म्हां सौदागर छै वीर विरसिंह के पास घोरे
जाया छै जात ॥ रंग कथ्यते ॥

दोहा ।

पेराकी कक्षी सबज , सुरषा समद सुरंग ।
बादामी अबलष बनै , चौधर नुकर पिलंग ॥ १२५ ॥
षिन्न संदली बैारता , चगर सिराजी हंस ।
पँचकल्यान कुमैत हय , रौहालिक महिया वंस ॥ १२६ ॥
ताजी सुरषी चीनिया , लष्षी गर्रा वाज ।
कुल्ला मुसकी तेलिया , केहरि मगसी साज ॥ १२७ ॥
इत्यादिक सब जात रंग , हय तन महा विसाल ।
देस दहायै आल्ह नृप , इहा रहै कछु काल ॥ १२८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

रूप नरायन चर पठवाइय । घोरिन कज्ज खवर कहि जाइय ।
हुकुम दिन्न विरसिंह भुवालह । आवन दिज्जि अस्व इहि पारह ॥१२९॥
पहुवर उतर अस्व सब आइय । भीतर कोट सिवर करि जाइय ॥
उद्दल सी ये वचन जु भष्पहि । कक्षिन कज्ज चौकसिन रष्पहि ॥१३०॥

दोहा।

सब सावंत सु बुल्लियव , विरसिंघ देहु खपाय ।
सिंहा अवलोकन कथा , नृप अल्हन पर जाय ॥ १३१ ॥

कुंडलिया ।

पत्तिय उद्दलसिय पठय , नृप अल्हन कह लिष्पि ।
पहिल मार घरुषान कह , फिरि गढ़ गाँजर दिष्पि ॥
फिरि गढ़ गाँजर दिष्पि , सेन सह निसि दिन धावहु ।
विजहट बाल गँभीर , वीर तुम वेग पधावहु ॥
जौ रम रहि बल समर , तौन गट्ठहि कहि कत्तिय ।
अपनै करि लिष भेज , दइय उद्दल सो पत्तिय ॥ १३२ ॥
सावंतन सह छिद्र करि , नार कनैरा आय ।
विर सिंघ दे वंधेज करि , गढ़ गाँजर मह जाय ॥
गढ़ गाँजर मह जाय , प्रीत हमसौ दिन बट्ठहि ।
विजहट कज्ज कुमक्क , इक्क सावँत नहि कट्ठहि ॥
करहु पसर नृप अल्ह , झेल रष्पहु नहिं अंतज ।
इत तैं चलहि कुमक्क , छैक रष्पहु सावंतन ॥ १३३ ॥

दोहा ।

यह पत्रिय कासिद दिय , आल्ह नृपति के हथ्थ ।
षोल वंच पुन आल्ह सी , आनँद कियव अकथ्थ ॥ १३४ ॥
चिट्ठी सुनि आल्हन नृपति , कूच कीन बलवान ।
दोय जाम मह आइया , वीहट के मैदान ॥ १३५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

चरन जाय भष्षिय इमि बानिय । अल्हन आनि परयो सेा जानिय ॥
देस उजार दीन सब जारिय । कहत जाम मह बिजहट मारिय ॥१३६॥

दोहा ।

घरूषान सुन चर बचन , अवर मंत्त नहि कीन ।
चलिव बिजहटा आसि तज , मरन मत्त मन दीन ॥ १३७ ॥
धावा करि आवा सुभट , बजत घेार निसान ।
लषा लषै दुहु सैन दुव , बिजहट के मैदान ॥ १३८ ॥

भुजंगी ।

भयै बीर सनमुष्ष बिजहट्ट बारेा ।
चल्यै सूर साम्हैं सुसेलं सम्हारै ॥
जुरी दिष्ट सेां दिष्ट बैनं उचारं ।
करै जुद्ध कढि सुद्ध म्हा सै सम्हारं ॥ १३९ ॥
उतहि मीर तहलन्न गहि षग्ग धायै ।
बली बीर घरुषान के उप्प आयै ॥
जुरे बीर दोऊ करै भीम भोरं ।
करै जुद्ध कर क्रुद्ध सुद्धे गहीरं ॥ १४० ॥
गह्यौ कुंत हथ्थं हन्यौ हीक सेायं ।
गिरयौ षान तहलन्न मुर्छा सु होयं ॥
लषै मीर षानं धयै आय ऐसै ।
हन्यौ धाय षग्गं घटं घाय जैसै ॥ १४१ ॥
लगी तेग बैसं घुम्यै सूर अंगं ।
दई सेल हीकं गिरयौ मीर जंगं ॥
उतै दिष्ष कालेस षानं सुधायं ।
तजे आयु धंमारु वथ्थं भरायं ॥ १४२ ॥
लरै मल्ल जंगं अभंगं सुहेायं ।
धरै क्यौं धरंनी करै क्यै सु सेायं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनै आनि मुकी विरचि बीर बांहै ।
गहीरं गुमानी अमानी उमाहै ॥ १४३ ॥
बली वैस बीरं सुषग्गं चिलायं ।
हन्यौ मीर कालन्न धरनी मिलायं ॥
सुभठ आल्ह दीसं करं क्रोध धायौ ।
हन्यो अस्व सक्ती सुधरनी मिलायौ ॥ १४४ ॥
बिना अस्व धरुषान सेलं चलायं ।
लग्यौ जाय अंगं नहीं घाय आयं ॥
पकर अल्ह पैचं सुहस्थी डरायं ।
लयौ टोर विरहट्ट गरदं मिलायं ॥ १४५ ॥

दोहा ।

तोर विजहटा लुट्टि पुनि , हनिय सैन बलदाय ।
मुरछा तै तल्हन उठिव , अप्प सैन मह आय ॥ १४६ ॥

कालेषां अरु मीरषां , इकसत परि किकियान ।
पंचक सै पैदर गिरिव , विजहट के मैदान ॥ १४७ ॥

हेम लक्ष विय दंडि लिय , सिरोपाय पहिराय ।
सरद सरद के दाम तुम , सो दिन्निय पठवाय ॥ १४८ ॥

षातर कर अल्हन नृपति , किन्न कूच भहराय ।
विजहट भुमियां सँग चल , सापागढ़ कह जाय ॥ १४९ ॥

उद्द अकिल्लव जान तह , अहनि निसां अति धाय ।
पहु फट्टत सवितर उवत , पहुवर मिल्लव धाय ॥ १५० ॥

चौपही ।

चंद्र कोस पर फौज मिलाइय । वँदोवस्त सह सिवर कराइय ।
घाट पंथ विरसिंघ वँधवायव । सरिता नीर अस्व नहि पायव ॥१५१॥
पुन अल्हन सिय वत्त उचारिय । गंजर मह दिष्षिय गढ भारिय ।
सप्त अवर षाइय षुदवाइय । पंगुर जपत हार मन षाइय ॥१५२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा ।

अल्ह नृपत कर कोय , लष तह तहलन सौं कह्यौ ।
ग्रौ वर नही कछु वोय , होत प्रात संगर करहु ॥ १५३ ॥

चौपही ।

सब सावँत जुरि करहु लराइय । तोपवान सब देहु घलाइय ॥
सरंजाम सब जाय घटानह । सरिता उतर करहु घमसानह ॥१५४॥
गौरज गंमन देहु हटाइय । उन मह उद्दल करय सहाइय ।
ये वचन्न लष्पण सिय नष्पिय । अवर मत्त नहि चित मह रष्पिय ॥१५५॥

दोहा ।

लष्पन तहलन पान विय , लिये बान कंमान ।
घलुहिं बीर परसपर , होत महा घमसान ॥ १५६ ॥

रसावला ।

चल चलिय बान कमान । घलुहिं सुवीर अमान ।
छुट्टहिं रहुकुला आन । धरधीर मलपहिं ज्वान ॥ १५७ ॥
जोपं चलावत तीर । कुट्टहि सुपैदर बीर ।
दोउव परसपर हंक । इक इक्क मारहि ढंक ॥ १५८ ॥
शब्दं सुहोत कराल । छुट्टहि घतिय जंजाल ।
कम्मान चलिय अपार । वरषंत मेघन धार ॥ १५९ ॥
थक्के परसपर बीर । धर स्वाम धर्म महि धीर ।
लरि पंच दिन दस भट्ट । छंड्यो न सरिता घट्ट ॥ १६० ॥

दोहा ।

कोप कीन पंगुर कुंवर , हंके वीर पचार ।
सेन सहित तल्हन धस्यौ , अवर बीर जुझ्झ-झार ॥ १६१ ॥
उतहि जोध पिल्ले उररि , विरसिंह बीर कुमार ।
गौर जगम्मन भिल्लियव , झरत परसपर सार ॥ १६२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोतीदाम ।

कियौ नृप आल्हहु कुम्म सुगज्ज । पिले सब सावँत जंग पसज्ज ।
धसौ नृप लष्षन तालहन सान । उतै विरसिंह के वीर अमान ॥ १६३ ॥
लरैं दुहु कोध के अंध जरूर । करैं अति कोप मरद्द मरूर ।
गिरैं रजपूत धरन्नि में आय । सम्हार उठंत बचावहि दाय ॥ १६४ ॥
पिलै जहँ धाय मुछाल जुवान । चलावत आवत क्रोध अमान ।
ढरकहिं तेग सुबाह उठाय । ढरकहि सीस धरन्नि में आय ॥ १६५ ॥
लगै बर सायक छत्तिय माँझ । बधै पुनि धाय करै तह राँझ ।
लगे उर साग सुकत्तिय मेलि । करैं सब वीर यहै विधि खेल ॥ १६६ ॥
करैं तह सेल्हन खेल निराट । गिरैं तहँ सूर सुपग्गन काट ।
करैं भषि गिद्धिनि आमिष दोर । धरै बहु चुंगल मुष्पन कोर ॥ १६७ ॥
चलै कर चोप बहै करवाल । गिरैं कट मुंड सुरुंडन घाल ॥
परे कट सूर धरन्नि सुसैन । डरे बिन सीस परे धर ऐन ॥ १६८ ॥
डरै तह कायर नाहिर मंक । लरैं तहँ शूर करैं नहिं संक ।
बग्गर दौरहि वीर तुरंत । कटै गिर भूम भयानक रंत ॥ १६९ ॥
तबै उमरावन पायौ चाल्ह । भजी सब सैन लषी नृप आल्ह ।
हजार सो अष्ट परे घट पार । भजे नृप पंगुर वीर जुझार ॥ १७० ॥

दोहा ।

अष्ट सहस रजपूत गिर, पंच सहस किकयान ।
दो हस्तिय रनि भूमि मह, परे चार पट्ठान ॥ १७१ ॥

दस सहस्र विरसिंह भट, सप्त सहस किकयान ।
चरन जाय नृप पवर किय, जित्त जगम्मन जान ॥ १७२ ॥

उद्दलसी पुन छिद्र करि, सौदागर बन आन ।
पायन उप्पर मिल्लियव, नार कनेरा ठान ॥ १७३ ॥

ये वचन्न चर मुष सुनिय, आनँद अति सुष पाय ।
गौर जगम्मन सौ कहहु, उद्दल देहु षपाय ॥ १७४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाचनीक—उद्दल बुध पायक सौ कहा कै जयचंद के वीर घाट पै हटे म्हां जाहिर भयो छै। थां विरसिंघ के बीर रोकौ म्हा जगम्मन सांवथ्थ सै जुद्ध करौ छै॥

दोहा।

आन षाय दसराज किय, बधे कवच कसि अंग।
स्वामि धर्म परि चित्त दिय, हथ्थु जगम्मन जंग॥ १७५॥

जप्पय।

चढिव वीर उदराज लीन सावंत सूरवर।
अतुल तेज बल पुंज सतुल सुर धर्म महा पुर॥
तीन सत्त लिय संग अंग अंगल कसि भारिय।
बिंस सहस मह छंडि सूर कूरम बड़ वारिय॥
यहै घैर जगंमन गवर सुनि शूर तवहि हंकारियव।
दस सहस सूर रजपूत वर आन उदल परि डारियव॥१७६॥

दोहा।

उद्दल संग सु तीनि सै, दस सहस्र सह गौर।
दुहू वीर सौ आहुरे, भीम जुद्ध किय ठौर॥ १७७॥

भुजंगी।

जुरे बीर दोऊ यहै बत्त भाषो। लरौ बेग रजपुत्त सनमुष्ष राषो।
गही तेग हथ्थं समथ्थं सुधावै। करै मार षग्गं ठका देत जावै॥१७८॥
चलै वीर हँकै कपानी बहावै। अभंगं वली वाह जंगं मिलावै।
करै षंड षंडं भसुंडन्न भारे। तुहू वेार कट्टे सुवट्टे पनारे॥ १७९॥
विरंचै बली बाह अत्रं चलावै। इकै मुंड टुट्टं सुरुंडं मिलावै।
घलै धोपसूधी जु नब्बै वरक्षी। परै फुट्ट न्यारी गिरै अस्व कक्षी॥१८०
वरं तीर मारै परै मुंड हंकै। उरै फुट्ट संनाह धरणी ठमंकै।
लगै सेल्ह छत्ती हयं पार फुट्टै। गिरै सूरबीरं धरन्नी सु जुट्टै॥१८१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहै तेग अंधं परे अद्ध न्यारे । परैं दुट्ट भूमद्धि बट्टैं पनारे ।
लगै हीक जमदाढ़ कोपं सुमारी । गिरै खेत सूरं सु लिन्है कटारी ॥१८२॥
करैं जुद्ध वीरं गरज्जै सम्हारा । इकं इक्क मारैं परैं भूम धारा ।
मनौ आमिषं कज्ज जुट्टी मुनारे । लगैं पंजरं पंजरं फार डारे ॥१८३॥
दुहू वोर मुक्की सु वीरं चलावै । झरैं सार सीसं सुचावै वधावै ।
लरैं जुद्ध सौ क्रुद्ध सनमुष्ष आवै । परैं मुंड तरवुज्ज से फुट्ट जावै ॥१८४॥
भजी फौज विरसिंघ की उद्द जानी । लषी नैन नृप अल्ह लष्षं गुमानी ।
रुप्यौ भीम सौ उद्द सिर वंधनेतं । धस्यौ आय गौरं रुप्यौ आन षेतं ॥१८५॥
चल्यौ सैन रण सैाप कै उद्द भारी । गह्यौ हथ्थ सेल्हं सुवोलं पचारी ।
उतै गौर जगमन्न रजपुत्त धायं । वरं वीर उद्दल्ल पै कुद्द आयं ॥१८६॥
वली बीर परिमाल अत्रं चलावो । धरा अद्ध तुम वीर नामी कहावो ।
कहै उद्दलं गौर संका न ल्यावो । विरसिंघ वीरं सु अत्रं चलावो ॥१८७॥
लष्यौ गौर जगमन्न उद्दल्ल भारी । हन्यौ अस्वसेल्हं सुकत्ती पचारी ।
गिरयौ उद्द तेजी सुधरनी मिलायो । कियौ जुद्ध रजपुत्त विरसिंघ हायो १८८
तवै उद्दलं इक्क बैनं उचारो । अहो गौर सम्हार सेल्हं हमारो
लियै उद्द सेल्हं सुहथ्थं गहायो । मनौ इंद्र करि कोप बज्रं चलायो ॥१८९
लग्यो वीचही कंसु उद्दल्ल नेजं । परयौ जगमन्न धर अंत सेजं ॥
हन्यौ गौर कै फिरि असि कढ्ढि धायो । उतै वीर विरसिंह कौ पुत्र धायो १९०
घली तेग उद्दल्ल कै सीस चाई । तबै वीर करि घेर लिन्ही वचाई ।
वली वीर करि क्रोध षग्गं चलायो । विरसिंह कौ पुत्र धरती मिलायो १९१

दोहा ।

गौर जगंमन जुझिझयव , अरु विरसिंघ कुमार ।
बीस सहस ठाकुर गिरिव , श्रोणित धार अपार ॥ १९२ ॥

चौपही ।

भग्गुल भग्गु गये दरवारह । वुड्डिय बसन रुधिर वहि धारह ।
भाषत वचन सु विरसिंह अग्गह । पालायन भट लगत न मग्गह ॥१९३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस सहस्र तुव सैन सु संगह । उत सत तीन लरयौ रण रंगह ।
दश सहस्र सम इक इक जानहु । कोटन सम इक उद्द बखानहु ॥१९४॥
सुभट तेज थांपर चढि आइय । उन सह जंग करै को जाइय ।
नृपति अल्ह आयौ नहि भारह । कर संग्राम सु जीति हजारह ॥१९५॥

दोहा ।

पंच दिवस पहुवर निकरि , जगमन मंडिय रार ।
विक्रम किय सुरपत्ति सम , लष्षन दीन्ह विडार ॥ १९६ ॥
पुनह कोप करि उद्द परि , आयहु गौर अमान ।
एक अहन भर लोह किय , रन तीरथ दिय प्राण ॥ १९७ ॥
अष्ट सहस लष्षन चमू , हनी बीर करि रारि ।
दोइ सत्त किकयान परि , तहलन वीर सुचार ॥ १९८ ॥
फिरि उद्दल सह आहुरिव , तिंसमार मरवीर ।
रूप नरायन रन गिरिव , भागी चमुव गहीर ॥ १९९ ॥

चौपही ।

विरसिंघ दुक्ख बहुर सुन कीनह । होनहार विधि सेा लिख दीनह ॥
नौर जगंमन सावँत मरियव । रूप कुमार जूझ रन गिरियव ॥२००॥
वेर वेर पंगुर चढि आयव । गौर जगंमन मारि चलायव ॥
कड्ढेरिय किय सैन खपाइय । म्हां गढ़ झांझर राजु कराइय ॥ २०१ ॥

दोहा ।

यह विलाप विरसिंघ करि , रन कह धरत न धीर ।
गंगाजू कहं चित्त दिय , सिवर करहि जा तीर ॥ २०२ ॥

चौपही ।

ये वचन्न बिरसिंघ बर बुल्लिय । लघु तनया पुनि मत्त जु खुल्लिय ॥
मृत्तलोक मह चित्त न दिज्जिय । सुर्गलोक कव राजु करिज्जिय ॥२०३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाचनीक—विरसिंघ दे सब रजपूत छिप्र बुलाइ कहा। म्हां कौ कुमार अरु गौर जगंमन सावंत रनछेत्र जूझौछै। म्हां जुद्ध करौ कै दंड दै मिलौ छै सो मंत्र कथ्यते।

दोहा।

रजपुत्तन ये वचन कहि, सोच देहु तुम छंडि।
येक जंग पाइन करहि, पुन दिज्जिय नृप दंड॥ २०४॥
यह सुवत्त मन मान लिय, पुन गढ़ मँह सो जाय॥
सिंघा अवलोकन कथा, फिर अल्हन पर आय॥ २०५॥

चौपही।

अल्हन लषन पठान बुलाइय। सावंतन सह छिप्र जु आइय॥
बन्नाफर ये बचन उचारिय। उद्द जगंमन मारिव भारिय॥ २०६॥
गौर कुवर विरसिंघ कव मारिसि। पुनह सैन बहुतक संघारिसि॥
लिन्हौ पहुवर घाट छुड़ाइय। सिवर कीन खाइन पर जाइय॥ २०७॥

दोहा।

उतर अल्ह पहुवर नदी, लष्षन तहलन षान।
आय सिवर खाइन करेय, बज्जत घोर निसान॥ २०८॥

चौपही।

गाजर गढ़ अल्हन नृप आयव। नाके बाँध सुदल मिलवायव॥
उद्दल सी बुध पाइक जाइय। अल्हन चरण परे सो आइय॥ २०९॥

दोहा।

जुगुल बंध भेला भये, उद्दलसी पर पाइ।
मोद मान अल्हन नृपति, लिन्नव कंठ लगाय॥ २१०॥
पुनह लषन तहलन मिले, आदर सो सुख पाइ।
धन्न सुभट परमाल के, बड़ सावंत खपाइ॥ २११॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाचनीक—आल्ह नै चर पठवायौ विरसिंघ तीर जाइ कहौ कै दंड दै मिलौ कै जंग करौ ।

दोहा ।

अल्हन चर कह भेजियव , गढ़ क्यों छिपौ जुझार ।
दंड देहि कै जंग कर , चौरै माडै रार ॥ २१२ ॥
दूत इहां तै चालिया , पहुंच्यो विरसिंघ तीर ।
बुल्यौ चर तव अग्ग ही , सुनहु नृपति मति धीर ॥ २१३ ॥

चौपही ।

तव चर बुल्लि सुनहु मम बानिय । मत्त मान विरसिंघ बुध ज्ञानिय ॥
नृपत अल्ह कह मिलव विचारिय । गढ़ अरु देस रक्खु तुव भारिय २१४

दोहा ।

ये वचन्न सुनि कोप करि , बुल्लत यहै जुबान ।
मेघनंदं पूर्व कव , अरु कुप्यौ रैभान ॥ २१५ ॥
बहुत जुद्ध उद्दल करिव , लष्षन तहलन षान ।
अव अल्हन भांसौ करै , कढ चौरै घमसान ॥ २१६ ॥
चर आयव अल्हन सुनहु , बुल्लिव क्रोध अमान ।
दंड देहि नहि मिलन तुव , कहत जंग मैदान ॥ २१७ ॥

चौपही ।

चर मुख बचन उद्द सुन लिन्निव । दो हय पाषर डार सुदिन्निव ।
एक अस्व बुध पायक दिय सो । रन वीरन पर आपु चढ्यौ सो ॥२१८

दोहा ।

अल्हन नृपत जुहार कर , उद्दलसी बुध कीन ।
दिष्षि ताज नौतेज उडि , भुंमि छोड़ हय दीन ॥ २१९ ॥
विय जोजन आकास कह , गयौ सुमहि हय छंडि ।
गढ़ गाजर मह जाय बर , कह विरसिंघ रण मंड ॥ २२० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिभंगी ।

उद्दल हंकारी सैन सँघारी विरसिंघ भारी काहि छिप्यौ ।
गर्जत भट उद्दं जनु घट भद्दं सुन सो शब्दं आन झप्यौ ॥
विरसिंघ भट देवं हरसिंघ भेवं जुद्ध सुलेवं साम्ह भयौ ।
कढ़ि किरवानं चल घन वानं करत जघानं धूम छयौ ॥ २२१ ॥

वीर पचारत जम धर मारत कायर भागत रण त्यागं ।
कढि पुनि पायक उद्द सहायक मारत धायक नट लागं ॥
भिंटत भरि अंकं श्रोणित पंकं हय बुधि हंकं लरत खरे ।
वायं बलदायं तेजि पिलायं हरसिंघ आयं आन जुरे ॥ २२२ ॥

पायक हय छंडयौ भुव रन मंडयौ हरसिंघ चंडयौ जुद्ध करं ।
सामंतन भारह जंगन हारह लरै हकारह मल्ल लरं ।
बुधबल सोधं करि अति क्रोधं हरिसिंघ जोधं भूम ठयौ ॥
जित्यौ वानेतं उदल चढ़ेतं वैस मरेतं स्वर्ग गयौ ॥ २२३ ॥

पायक हय चड्ढ्यौ विरसिंघ वड्ढ्यौ तेग सुकड्ढ्यौ सीस दयौ ।
तेगं तन खाई मुर्छा आई हय लपटाई झूम गयौ ॥
उद्दलसी भष्यौ पायक लष्यौ विरसिंघ झप्यौ लरजुट्टं ।
अस्वन पेलहि षग्गन षेलहि अप अप झेलहि कर छुट्टं ॥ २२४ ॥

लै कंगल धावै तेग बचावै पैज करावै वीर छलं ।
दोऊ रण शूरे विक्रम पूरे अति विय नूरे वीरबलं ॥
उद्दल कढ़ि तेगं धावत वेगं क्रोध अनेगं चित्त धरयौ ।
मारयौ हय नूरं विक्रम पूरं विरसिंघ सूरं धरनि परयौ ॥ २२५ ॥

उद्दल करि रीसं आयति दीसं विरसिंघ ईसं चाल दयौ ।
किन्नव हय तेजं हथ्थ सुनेजं दुन्नम जेजं जाय लयौ ॥
बग्गफर रुक्यौ बीचहि छिक्यौ गढ़ सब संक्यौ धाय वढ़ं ।
करि विक्रम जालं षग्गन ष्यालं पकर भुवालं अस्व चढ़ं ॥ २२६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

हरसिंघ भाय सुजुझ्भियव , नृप विरसिंघ धरि लीन ।
मुर्छा सै पायक जग्यौ , संग उदल कव कीन ॥ २२७ ॥
पुन गाजर गढ़ जपत किय , वुधु पायक कह रष्ष ।
वनितन सह नहि बुल्लियव , ये वचन्न उद भष्ष ॥ २२८ ॥

चौपही ।

विरसिंघ पकरि अस्व धरि लिन्नव । चुटके हय गढ़ बाहिर किन्नव ॥
अल्ह हजूर आन करि रष्षिय । लष्षन तहलन सौं इम भष्षिय ॥२२९॥
सिवका धरि नृप सिवर पठावहु । पसर कज्ज सब बीर वुलावहु ।
बुल्लहु पसर देर नहिं किज्जिय । लघु बड़ जन कह जान न दिज्जिय २३०

दोहा ।

मेघनंद पूरव कव , कुरहट कव रयभान ।
जंग लरन कह आहुरे , षवर कहिय चर आन ॥ २३१ ॥

चौपही ।

विरसिंघ पकरि उद धरि लिन्हव । गांजर गढ़ मह थानव किन्हव ॥
पायक वुधुगढ़ सै चढ़ि धावहि । प्रात पसर अल्हन करि आवहि ॥ २३२

दोहा ।

मेघनंद चर वचन सुनि , कूच कीन्ह बलवान ।
घाट छोड़ सैना भजी , मिलन कज्जरै भान ॥ २३३ ॥
पसर कज्ज नृप अल्ह के , वीर उठे हंकार ।
मेघनंद भजि पूर्व कह , रैभान फरहरा डार ॥ २३४ ॥
उदलसी की वांह सौ , मिल्यौ आइ रैभान ।
अल्ह नृपत कह भिंटियव , भिंटिव लाषन रान ॥ २३५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

नृपत अल्ह इम बुल्लिव बानिय । तुम समद्ध पंगुर के आनिय ॥
तनया तुम लष्पन कह दिन्निव । सो म्हा नंत मान अब लिन्निव ॥२३६॥

दोहा ।

पुंछ कुसल रैभान कँह , करि आदर सनमान ।
नृपत अल्ह कर जोर कहि , तुम नृप पंगु समान ॥ २३७ ॥

सोरठा ।

कहत अल्ह नृप बैन , सब सावंतन सौ कहिव ।
सिवर करहु तुम चैन , मेघनंद छिद्रम भग्यो ॥ २३८ ॥

चौपही ।

नृप मंजूमनि नंद कुमारह । चेटक मेघनंद बढि धारह ॥
जो भगिकर बंगालहि जावहि । सो पुन देस हथ्थ नहिं आवहि ॥२३९॥

दोहा ।

उच्चर अल्ह बचन्न ये , अस्व मनोरथ सज्ज ।
करि प्रदक्षिना चढिव पुनि , मेघनंद के कज्ज ॥ २४० ॥

हथ्थ जोर तब अस्व कह , सुनहु मनोरथ देव ।
मेघनंद मंत्रन लरहि , तुम जन भुल्लहु भेव ॥ २४१ ॥

ताजी कहदिय ता जनौ , भुंमि छोड़ आगास ।
इक निमष मह अल्ह गय , मेघ नंद के पास ॥ २४२ ॥

सीहा लाला सुभट सह , उद्दल कहिय सुबत्त ।
दस सहस्र असवार सह , करहु अल्ह कव सत्त ॥ २४३ ॥

चढ़िय चमुव सब वीर हय , नद्द निशान बजाय ।
पंच अहनि बिच सिवर करि , पहुँचि अल्ह ढिग जाय ॥ २४४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

मेघ नंद सह चर कह जाइय । पंच सहस सह सीहा आइय ॥
अष्ट सहस लाला संग वीरह । मिलिस आय सैन तुव तीरह ॥ २४५ ॥

दोहा ।

ये वचन्न सुन सैन सजि , चल्यौ बीर करि क्रोध ।
लाला उप्पर डारि दिय , दस सहस्र भट जोध ॥ २४६ ॥

हनूफाल ।

तह सैन विय जुरि आय , बहु अस्त्र सस्त्र चलाय ।
छुटंत बान कमान , बढ़ भूम तल मह आन ॥ २४७ ॥
संधान धन सर छंड , विय सैन तह रण मंड ।
घल्लहिं सु सेल्हन लग्ग , पुन धाय मारह षग्ग ॥ २४८ ॥
फरसा सो तोमर घल्लि , इक इक्क मारहि पिल्लि ।
झिलमै सुवषतर टुट्टि , हय पार जावहि फुट्टि ॥ २४९ ॥
क्रोधंत धावहिं काल , संग्राम जुद्ध कराल ।
मुक्की सु किज्जे मार , तह वीर टुट्टहि झार ॥ २५० ॥
पर मुंड धरती तीर , धर धाय मारहि वीर ।
कर केहरी नषवार , सुर सुभट डारहि फार ॥ २५१ ॥
थक गये बीर समथ्थ , नहि विरम पावहि हथ्थ ।
विय सुभट लोहा मान , सुर चढ़्ढि दिष्षि विमान ॥ २५२ ॥
करि मेघनंद विचार , अब करहु मंत्रण मार ।
पढ़ वीर जंत्रन लीन , सब चमू अंध सुकीन ॥ २५३ ॥
जानी सुअल्ह नरेस , लिय वन्हि वान दिनेस ।
घल्लयौ सुबीर रिसाय , सब तिमिर लिन्निव खाय ॥ २५४ ॥

दोहा

महावीर अल्हन नृपति , लियव वान कम्मान ।
मेघनंद तेही समय , भयौ सु अंतरध्यान ॥ २५५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

शक्ति शूल तरवार कृपानह । अत्र सस्त्र डारहि बलवानह ।
परघ डार सब सैन पपावहि । इकन मार इक धरनि मिलावहि ॥२५६॥
नृपत अल्ह माया कर जानिय । बीर पंठन कर साइक तानिय ।
छुट्ट वान आगास गयव सेा । मंजू नंदन भूम उतर सेा ॥ २५७ ॥

दोहा ।

पुन सीहा सैा आन जुरि , करि छिद्रम बलिबीर ।
पुनह प्रगट हेा लरन कह , मेघनंद रनधीर ॥ २५८ ॥

छंद ।

क्रोधंत सीहा सुभट धायव उग्र वचन उचारही ।
सुन मेघनंदन सुभट वर तुम अत्र कर अब धारही ॥
सुन वत्त इम वलवंत लिन्नव हथ्थ सेल्ह सम्हार कै ।
आयव जहां अल्हन सुभट तह कहै बैन उचार कै ॥ २५९ ॥
सुन सीह सुभट अमान तुम घल्लहु सुसेल्ह न अग्ग ही ।
मम सेल्ह घल्ल बचौ नहीं जैहै सुर पुर मग्ग ही ॥
तब मेघनंदन सेल्ह लिन्निव घाल दिन्निव जेास सैां ।
तब फुट्ट हय भय सीह पैदर षग्ग कर गहि रेास सैां ॥ २६० ॥
हनि अस्व भूमि गिराय दिन्निव क्रोध चित्त घनौ छयै ।
गिरि मेघनंदन भूम परि तब छिद्र कर अंतर भयै ॥
क्रोधं कृतांत सुजंत्र मंत्रण भुल्लि डारिस सैन कह ।
यह वीर कर विक्रम बली पुनि हंक आयव अल्ह कह ॥ २६१ ॥
धायै विशाल कराल वीरह मेघनंदन काल सैां ।
आतुर बहोर विभंजि अस्वहिं मार चालिव सेल्ह सैां ॥
संधान धन सर अल्ह छाड़िव उरग जिमि डर लागही ।
रण छुट्ट प्राण परचौ वली सँग सैन देषत भागही ॥ २६२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

मेघनंद संगर परिव , गयव सुर्ग चितु लाय ।
कहिय खबर भग्गुलन तन , मनजूमनि दुछताय ॥ २६३ ॥
अल्हन हथ्थ कमान लिय , प्रत्यंचा षिच कान ।
घल्ल दीन अति पीन हौ , गयौ फार उरवान ॥ २६४ ॥
मेघनंद संगर परिव , गयौ स्वर्ग चितु लाय ।
कही षबर भग्गुलन सब , मनजूमनि सह जाय ॥ २६५ ॥
पंच सहस सादी परे , करभ कट्टि सत षेत ।
डेढ अहन रण भुंम मह , वही श्रोण मिलि रेत ॥ २६६ ॥
बनांफर भट सहस इक , पायक प्रबल सुदेस ।
पंच पील पर अस्व सत , जित्तिव अल्ह नरेस ॥ २६७ ॥
सत्त पहर रणभूम मह , मेघनंद किय सारि ।
तब अल्हनसी कोप कर , लियव बान संभारि ॥ २६८ ॥
सुनत षवर भग्गुलन किय , मनजूमनि दुछुताय ।
तुल्लि मंत्रि परिगह सकल , कहहु मंत्र ठहराय ॥ २६९ ॥

छप्पय ।

तब सुमंत्र इमि चवहि वुद्ध बलदाय नृपत सुन ।
ये सावँत बलवान छाय दसहू दिसान धुन ॥
प्रथिय राज बड़ भूप संग सावँत बड़ भारिय ।
तिन कर गर्भ नवाय जित्त कैयक रण रारिय ॥
तुम लरन मत्त नहि घट्ट धरि अस कुवत्त नहि किज्जियै ।
वुल्लाय सकल परवार जुत मिलन कज्जि चितु दिज्जियै ॥ २७० ॥

दोहा ।

मंत्रिन के इम बचन सुनि , मनजू मनि सुष पाय ।
अल्लह नृपति के मिलन कह , उपहारै मँगवाय ॥ २७१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंसुष लिय बहु मोल के , अष्ट लक्ष लिय हेम ।
सब साहन सौ चालिया , मिलत चित्त धर नेम ॥ २७२ ॥

चौपही ।

अल्ह सिवर पहुँच्यौ नृप राइय । करिय भिट्टि मन मोद बढाइय ॥
उपहारहि धर अग्रसु लिन्निय । हथ्थ जोर बिनया सो किन्निय ॥२७३॥
हथ्थिय पंच अस्व सत रष्षे । अब कह हुकम होत इम भष्षे ॥
अल्ह नृपत बुल्लिव इम बानिय । संबोधन करि अति रस सानिय २७४

दोहा ।

बचन बाह नृप अल्ह दिय , सिरोपाय पहिराय ।
कनवज पुर कह सथ्थ लिय , मनजू मनि सुषपाय ॥ २७५ ॥
करव कुच्च नृप अल्ह पुन , चलिय सैन अलगाय ।
एक अहन बिच अंत किय , नौघट सिवर कराय ॥ २७६ ॥
नौहट तैसो चालिया , कूच कीन बलदाय ।
पंच अहन विच सिवर कर , गाजर पहुँच्यौ आय ॥ २७७ ॥
लष्षन तहलन षान कह , भिट्टिव अल्हन वीर ।
सब जोधन सह मिलिव वर , पुन उद्दल रणधीर ॥ २७८ ॥

चौपही ।

मंजुव मनि कह अल्ह लिआयव । लष्षन तहलन षाण मिलायव ॥
उद्दल सी पुन भिट्टिव भारिय । दिष्ष नृपत सावँत अधिकारिय २७९

दोहा ।

अल्ह उद्द फिर बुल्लियव , विरसिंघ वीर सो आइ ।
चार लक्ष विय हेम लिय , सिरोपाय पहिराय ॥ २८० ॥

चौपही ।

बुद्धुव पाइक बोल सुलिन्नव । गांजर पुन विरसिंघ कह दिन्नव ॥
श्रीजयचंद रूजू रहि राइय । सरद सरद के दाम पठाइय ॥२८१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

चार मवासी टेार कै , भुमिया लिन्न सेा संग ।
नद्द निशान बजाइ कै , जित्त चल्यौ रण जंग ॥ २८२ ॥
गढ़ गाँजर तै कूच कर , बीचहि सिवर कराय ।
दिनकर उवत सेा चालिया , सापागढ़ कह आय ॥ २८३ ॥
सापा तै पुनि कूच कर , बजत घेार निसान ।
सब सैना सह आइया , लहरी मिल्लव आन ॥ २८४ ॥
लहरी तै सैना चली , बहुत मेाद मन लाय ।
विय जेाजन कनवज्जपुर , सरतह मिल्लव जाय ॥ २८५ ॥
पुनह कूच किय अल्ह नृप , कनवजपुर मह आय ।
सावंतन सह बुल्लियव , सिवर करहु अब जाय ॥ २८६ ॥

चौपही ।

अल्ह उद्द अंतहपुर आइय । परे चरण देवल के जाइय ॥
दिष्षि दिवल सेा अति सुख पाइय । करहि निछावर बजत बधाइय २८७
जुगल लक्ष हेमन कह लिन्नव । भिक्षुक वृंद दान तिहि दिन्नव ॥
सब सावंतन छिप्र बुलाइय । बेाधन किन्न निकट बैसाइय ॥२८८॥

दोहा ।

लष्षन तहलन विय गये , जहाँ पंगु दरवार ।
सकल प्रश्न जयचंद नृप , पुछति करि मनुहार ॥ २८९ ॥
लष्षन लष्षण भाति सह , विनय कीन चितु लाय ।
अल्ह उद्द के ओज की , कथा कहिय समुझाय ॥ २९० ॥
सुनत कथा सब पंगु नृप , बन्नाफर बुलवाय ।
पंच मतंग सुडील वर , सत हय छिप्र मँगाय ॥ २९१ ॥
ते बगसे मन मेाद करि , सबय दिन्न सब भार ।
अल्हन नृप असि लष्ष मह , थप्पि दिन्न सिरदार ॥ २९२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनह भूप उदराज कह , नगन जाल पहिराय ।
धन्य धन्य जसराज सुव , जग सावंत पपाय ॥ २९३ ॥

वैापही ।

अल्ह उद्द बोले कर जोरिय । सुन जयचंद विनय तुव मोरिय ।
चार मवासी आय हजूरह । विदा कीजिये जाय जरूरह ॥ २९४ ॥

दोहा ।

अल्ह वचन सुन पंगु नृप , लिन्नव छिप्र बुलाय ।
सिरोपाय बड़ मोल के , दिन्न सबय पहिराय ॥ २९५ ॥

अल्ह सुभट सह हुकुम कर , उठिव भूप दरवार ।
चार मवासी सथ्थ तुव, बिदा करहु मनहार ॥ २९६ ॥

महल जाय अल्हन नृपत , भुमियन पान सुदीन ।
अपनै अपनै धाम कह , कूच मवासिन कीन ॥ २९७ ॥

छप्पय ।

कहय चंद कर जोरि सुनहु चहुवान भूप वर ।
चार मवासी जोर पकर ल्यायव चरनन तर ॥
मनजू मनि वंगाल वीर बिरसिंघ सु गांजर ।
रैभान घरूषहि जित्त कियव हज्जूर सेा हाजिर ॥
इन सुजस जाय ककुभन रहिय लरिय जहाँ तहँ जित्त हुव ।
तुव पैज ईस सब छूट नृप लरन आल्ह नहिँ वीर तुव ॥ २९८ ॥

दोहा ।

कहै चंद प्रथिराज सुन , विक्रम विरस बनाय ।
जौर बनाफर आइहै , रुंडहि मुंड मिलाय ॥ २९९ ॥

करै गान डौरू बजै , नृत्त करै शिव आय ।
जेा आवै अल्हन सुभट , श्रोणित सरित बहाय ॥ ३०० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहुवान सह चंद कहि, म्हां सोमेस्वर सथ्थ।
भूतमान थां सौ कहौ, अल्ह ऊद की कथ्थ ॥ ३०१ ॥
अवर ओज प्रथिराज सुनु, जो मम द्रगन सुदिष्ष।
थां पर वित्यौ सो कहत, अल्ह पराक्रम लिष्ष ॥ ३०२ ॥
टोर सिरसवा सम्हरिय. मिलु वैत्रवै तीर।
जाय खवर महुवै भई, धरत न वसुधा धीर ॥ ३०३ ॥
श्रवन मास किय पर्व कह, थां महुवै गय दिष्षि।
अल्ह उद्द चंदेल हित, धर जोगिन कव भिष्ष ॥ ३०४ ॥

चौपही।

प्रथियराज महुवे पर आवत। ग्राम ग्राम कव अमल मँगावत॥
भुमिया दर्व दैहि अधिकारिय। चढि आयव सम्हर नृप भारिय॥३०५॥
मिलिव आन सरित इहि पारह। लरन कज्ज सब सुभट हकारह॥
सत सावँत पीथल के संगह। अवर सैन सब तेज उमंगह॥ ३०६॥

दोहा।

देश दब्बि चहुवान लिय, लुट्टि सघन धन वेस।
खबर भग्गुलनि जाय कहि, नृप परमालह देस॥ ३०७॥

छप्पय।

खवरि पाय परमाल चरन मुख अग्ग जु बानिय।
प्रथिय राज चढ़ि आय देस दब्बिय सोइ जानिय॥
लुट्टहि धन अरू देस ग्राम थानिय सो भग्गिय।
नृप चँदेल किय सोच आन उर वान सुलग्गिय॥
यह खवर पाय गय सौध नृप रानिन बत्त सुनाइयव।
सवा लष्ष असवार सह चाहुवान चढि आइयव॥ ३०८॥

दोहा।

खवर जाय परिमाल नृप, कहत सौध मह जाय!
रानी मल्हन सुनत ही, किन्न सोच उर लाय॥ ३०९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

अवर नृपत बानिय इम भष्षहि। विना अल्ह महुवै को रष्षहि ॥
श्रवन मास नौमी तिथि लग्गिय । चाहुवान उर प्रजा सुभग्गिय ॥३१०॥

दोहा ।

ए वचन परिमाल कहि , गद गद नृपत जुबानि ।
श्रवन मास किय पर्व वर , रही कजरिया जानि ॥ ३११ ॥

नृप चँदेल के वचन सुनि , रानी रोदन कीन ।
धरिय कजरि यह सौध मह , तुम विन आल्ह प्रवीन ॥ ३१२ ॥

छप्पय ।

तव मल्हन इम चवहि सुनहु महराज भूप वर ।
श्रवन मास किय पर्व आय चहुवान देस पर ॥
घर घर मंगल वंद हैम दौनानि धरे सब ।
ब्रह्मा कुवंर बुलाहि लेहु महिपाल भूप वर ॥
कहि वनिता चंदेल सह मत्त इक्क ठहराइयव ।
अल्ह ऊद नहि धाम तुव कीरतसर को जाइयव ॥ ३१३ ॥

दोहा ।

मल्हन दे के वचन सुन , नृप दीवानहि आय ।
द्वारपाल कह छिप्र ही , कहे वचन समुझाय ॥ ३१४ ॥
बैठ राज दीवान मह , मंत्री सबै बुलाय ।
ब्रह्माजित्त कुमार वर , सब सावँत चलि आय ॥ ३१५ ॥

छप्पय ।

चलिव ब्रह्मजित कुंवर चलिव जगनिक्क राय वर ।
चलि मंत्रिय कलियान चलिव सकतेस महाभर ॥
चलिव वीर छत्रसाल चलिव प्रोहित मतवे सब ।
चलि भूपत महिपाल चलिव सारंग सु केशव ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सब सुभट चलिब मंत्रिय सुवर दीमानहि जुर आइयब ।
आप कुमार रजपूत सब नृप परिमाल बुलाइयब ॥ ३१६ ॥

दोहा ।

आय सुभट मंत्रिय सबै , नृप परमाल जुहारि ।
श्री चंदेलव बुलियव , चढ़िढय सम्हर बार ॥ ३१७ ॥
धरी कजरि यह सौध महं , किज्जि मंत्र उपचार ।
महीपत्त भूपत्ति कहि , मम सुमत्त चित धार ॥ ३१८ ॥

चंद्रायन ।

माहिल भूपत मत्त अग्ग नृप बुल्लियं ।
चाहुवान चढ़ि आय दंड दै मिल्लियं ॥
अवर मत्त नहिँ भूप वित्त दै टारियं ।
अल्ह उद नहिँ धाम जंग तुव हारियं ॥ ३१९ ॥

दोहा ।

सत सावँत विक्रम बली , चाहुवान के पास ।
कीरतसर कह जाइया , बंद करहि रण वास ॥ ३२० ॥

चौपही ।

अवर मत्त चंदेल सु किज्जिय । षैाट कजरिया सौध सु लिज्जिय ॥
देहु दर्वि यह संध विचारिय । सम्हर राज करहि नहि रारिय॥३२१॥

दोहा ।

पडिहारन के वचन सुन , मंत्रिय चुप्प कराय ।
ब्रह्माजित्त कुमार तन , लगिय अग्नि उर आय ॥ ३२२ ॥
नृप चंदेलव सुवन जरि , कहिय वत्त झुक राय ।
तुम मामा चहुवान मिल , दिन्नव राज ढहाय ॥ ३२३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय ।

ब्रह्म कुंवर इमि चवहि सुनहु चँदेल भुवालह ।
अल्ह उद्द हय काज दंड किन्नव महिपालह ॥
कान लग्ग कहि वत्त नृपत तुम अस्व मँगावहु ।
पंच अस्व नहि देहि कही तज धाम सुजावहु ॥
अब कहत मत्त पडिहार विय घुटहि कजरि यह सौधवर ।
भयव ताप तुव दव्वि कहि अल्ह उद्द नहि सुभट घर ॥ ३२४ ॥

दोहा ।

ये वचन्न वह्मा कहे , क्रोध चित्त उरु ल्याय ।
दपट दिन्न महिपाल कह , दिन्नव पान घटाय ॥ ३२५ ॥

छप्पय ।

कुप्पिव राजकुमार सुनहु सावंत शूरवर ।
स्वामि धर्म उर धरहु रहहु मम सत्थ महाभर ॥
बडभ गर्भ चहुवान हरहु संगर कर भारिय ।
सत सावंतनि मार देहु प्रथिराज विडारिय ॥
यह पैज करहु चंदेल ढिग बिना मुंड रुंडन धरहु ।
चढ़ि चढ़ि विमान सुर दिष्ष ही जो न इतव विक्रम करहु ॥३२६॥

दोहा ।

करिव कोप ब्रह्मा कुवर , सब सावंत सुनाय ।
म्हां जीवित नहि दंड दै , मम कीरित सर जाय ॥ ३२७ ॥
ब्रह्माजित्त कुमार गय , मल्हन दे के अग्ग ।
सजहु कजरियां मात तव , धर कीरत सर पग्ग ॥ ३२८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

सुनत बचन मल्हन सुख पाइय । बजत सौध आनंद बधाइय ॥
कहिव मत्त तुम सुनहु कुमारह । अल्ह उद्द नहि तुव रषवारह ॥३२१॥

छप्पय ।

प्रथिय राज चढ़ि आय तेज देवान समानिय ।
चंद राम गुर आय संग चंडिय अगवानिय ॥
सत सावँत वलवान इक्क लष्षण मुष मोरहि ।
धरि गोरिय पतसाह भीम सम जंगह जोरहि ॥
कहत मात सुन सुवन बर पीथल पच्छिन जीत लिय ।
दशराज सुवन नहिं सथ्थ तुव गय कनवज कहं रूस विय॥३३०॥

दोहा ।

मल्हन दे के बचन सुनि , कोप चित्त सो भष्ष ।
पीथल दल षंडन करहुँ , मानस मम धर रष्ष ॥ ३३१ ॥

छप्पय ।

सपत करहु मम व्रत्त धरहु प्रण सुनहु मातवर ।
करगह असि उतमंग धरत गहि गंग सपत कर ॥
प्रथिय राज दल बदल पवन सह सर्ब उडाउव ।
कीरत सागर मध्य हेम दौनानि बहाउव ॥
दह दसय शूर भूतल हनहु विन अल्हन विक्रम करहु ।
यह सपत षाय परमाल किय मल्हन पय निर्मल करहु ॥३३२॥

दोहा ।

ये वचन सुन सुवन के , मल्हन दे सुख पाय ।
सजत कजरिया मोद सह, कर षोडश स्रंगार ॥३३३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय ।

पहिल सुमंजन चीर चार किंचुक हिय सोहय ।
अंजन तिलक जो भाल कर्न कुंडिल मन मोहय ॥
बनि बैसरि बैनिय माग मानिक छबि राजय ।
छुद्रि घंटिका बनिय हार मोतिन के छाजय ॥
नूपुर नवीन कवि चंद कहि मुषत मोल चातुरिय भनि ।
यह कहत ग्रंथ मतिजान वर ये षोडश श्रंगार गनि ॥ ३३४ ॥

दोहा ।

त्रै रक्ता त्रै उज्जला , त्रै स्यामा तिहि देह ।
इक सुक्षम अस्थूल द्वै , वारा भूषण येह ॥ ३३५ ॥

सुता सज्ज चंद्रावती , आभूषण श्रंगार ।
निशपति वदन जुवारिये , दुज्जै रति अरु मार ॥ ३३६ ॥

मोतीदाम ।

सजि मल्हन रानि सिंगार सबै , चंदेल भुवाल की वाम तबै ।
अजनार किधौ नलनार वियं , परिमाल चँदेल के दावरियं ॥३३७॥
पुन सोहत सोर सिगार कियं , अवतार सतं मृतलोक लियं ।
वहु रूप रमा रति का गनिनी , पतहीन दुषी विष की भगनी ॥३३८॥
मृग कामिन कैसे नैन बनं , जिन पै झषि षंजन वारि घनं ।
मुख देख लजै निसपत्ति जबै , उडिगन्न अभूषण जोत सबै ॥३३९॥
बनि नासिख दीपक जोत भनं , तह त्रासुन अंजनि कंत गनं ।
नव मुक्तिय मध्य सुलाल लसै , कवि द्वै बिच मानहु भौम वसै ॥३४०
उर हार अपार विराज छयं , मनिका लगि श्रीजुत शब्द मयं ।
मुख बाहु मृनालनि सुक्ष धयं , तनि कंचनि चंपक वार वियं ॥३४१॥
कुच श्रीफल चंद वदन्न गनं , बहुलंवित केस सिवाल भनं ।
कवरी हिरनी सम सोभ बढ़ी , मनिनं मणि कंचन खंभ चढ़ी ॥३४२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुग वाजुव बंधनि बाहु लगे , घत वासव दामिन देह पगे ।
लष दंति सुकुंदनि की कलिका , कचि भौहन उच्च मनौ अलिका ॥३४३॥
कटि की बहु शोभनि हार छयं , लजि कंठ रजंवनि राज गयं ।
सुभ ऊरण जंघ सुसोभमयं , पदकन्न अभूषणि सज्ज लयं ॥३४४॥
गतिवंत चलै गति भूपरयं , झनकार सुनूपुर शब्द भयं ।
सुरलोक विमान सुदेव ठयं , तिननं चित लष्षि डगाय दयं ॥ ३४५ ॥
लषि संभव भान न जाय कह्यौ , रतिमार सुचित्त लुभाय रह्यौ ।
यह वाम चँदेल की रूपपथं , कवि चंद सुरूप सुकव्य कथं ॥ ३४६ ॥

दोहा ।

मल्हन दे कौ आदि दै , रानिन सज श्रंगार ।
दासी सजि रनवास की , करता रूप सँवार ॥ ३४७ ॥
ब्रह्मजीत दीवान गय , सब सावंत बुलाय ।
कासमीर अंसुग दये , सब जोधन पहिराय ॥ ३४८ ॥
बाजी दिय गुन आगरे , बाँटि सावँतन कज्ज ।
स्वाम धर्म उर सुभट धरि , कीरितसर कह सज्जि ॥ ३४९ ॥

मधुभार ।

सज्जे सु ब्रह्म कुमार । बहु अस्त्र सस्त्रण धार ॥
छत्र साल सूर अमान । जिन हथ्थ लिन्न कमान ॥ ३५० ॥
सकतेस वीरि जुझार । अरि पट्टि दलन अपार ॥
डौगर सिदौवा वीर । संग्राम तन धर धीर ॥ ३५१ ॥
जगनिक्क वीर अपार । करि दिव्य बाननि मार ॥
जल्हन सुजोध गँभीर । नहिं शत्रु पावहि तीर ॥ ३५२ ॥
नरहरिय गौड सुजान । अति सूर रिंघ अमान ॥
दिवकर्न वरई संग । करि क्रोध जित्तिय जंग ॥ ३५३ ॥
सजि सूर केशव राय । जमदाढ़ मारत धाय ॥
जादव सुलंषिय सूर । ते लरहिं संगर पूर ॥ ३५४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दस सहस पायक सज्जि । संग्राम तन धरि लज्जि ॥
भारा सुवानिक जोध । मारहि सु अरि कह क्रोध ॥ ३५५ ॥
सज्जे सु विय पडिहार । जे दंड में अधिकार ॥
सज सैन सूर समूह । जे करत मेघव कूह ॥ ३५६ ॥
नहि अल्ह उद्दल संग । जे गंग कह वजरंग ॥
को करय कुँवर सहाय । चंदेलराज डराय ॥ ३५७ ॥

दोहा ।

सैन सज्जि सावंत सब , बज्जत घोर निसान ॥
कीरत सर कह सज्जिया , ब्रह्माजित बलवान ॥ ३५८ ॥

पद्धरी ।

चढि चलिव ब्रह्म मानहुं सुरेस । सोभा अपार जानहु दिनेस ॥
राजंत मुकट सिर जटित हीर । जसु गान करहि बंदीन भीर ॥ ३५९ ॥
सित असित अरुण लोचन विसाल । सोहंत कंठ मुत्तीन माल ॥
तह लसत श्रवन कुंडल विलोल । झलकंत आय आभा कपोल ॥३६०॥
मृग मद सुमंडि तह तिलक भाल । वलिहार करहि मनु नगर बाल ॥
अधरान रागु तंमोल जीभ । जनु कमल मध्य दाड़मिय बीज ॥ ३६१ ॥
मुसक्याय पिष्षि मृदु मंद हाँस । चंचला चमकि जनु इंदु पास ॥
आरूढ दंत छवि परम पूर । घनु सिषिरि मनहु उदवेग सूर ॥ ३६२ ॥
अनगनत सथ्थ अनुचर अनूप । सुर संग मनहु सुरलोक भूप ॥
दुतिकन्न दंड जह विजन वाल । जनु कलपवृक्ष कर आल बाल ॥३६३॥
दल दिष्षि संग दीपंत तेम । भारथ्थ सैन पारथ्थ जेम ॥
सँग सजे सूर सेना अमान । ब्रह्मा कुमार अवतार काम ॥ ३६४ ॥

चौपही ।

सजिय सैन चल सु संगह । लरन काज उतसाह उमंगह ॥
फेर दंड किन्नव पडिहारन । चाहुवान चढ़ि समय विचार न ॥ ३६५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

महीपाल भूपत्ति जुरि , कियौ दंड कौ मूल ।
कहि कुवत्त ब्रह्मा कुंवर , पडिहारन नहि भूल ॥ ३६६ ॥

वाचनीक—महिल भूपति चर हथ्थ पत्री लिषी । चहुवान कां अल्ह उद् कनवज्ज है था चढि कै कजरिया देषन मिस आवेा । म्हा सैना लै भगौ थां रणवास धरौ ।

दोहा ।

महीपाल जुग छज्ज लिषि , चाहुवान कह संधि ।
दिषनि कजरिया आव मिस , लेहु पकरि करि वंद ॥ ३६७ ॥

चंद्रायन ।

माहिल पत्री भेज लिषी चहुवान कौ ।
करौ कूच ततकाल सुमाडिल धाम कौ ॥
श्रवन मास किय पर्व आय छल किज्जिग्रै ।
दीन सुचरि के हाथ राज कह दिज्जिग्रै ॥ ३६८ ॥

चौपही ।

माहिल भूपत चर पठवायव । येक अहन विच सिवर करायव ॥
दुतिय अहन विच धाय नविन्नव । चाहुवान कह पत्रिय दिन्नव ॥३६९॥

दोहा ।

सनध वंच सम्हर धनिय , गुर कविचंद सुनाय ।
चर कौ प्रत उत्तर लिषा , मानस मत्त जुआय ॥ ३७० ॥
सब सावंतन सैन सह , चाहुवान नृप बुलि ।
कीरत सर कह चालिया , मम शुपिष्ट लगि चल्लि ॥ ३७१ ॥
सज्ज सैन सावंत सब , बज्जत घोर निसान ।
दिषन कजरिया सम्हरिय , नगर महोत्सव जान ॥ ३७२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भुजंगी ।

सजे कन्ह नरनाह सावंत भारी , सजे चावडं धीर सैना सँघारी ।
सजे संजमं राइ पुंडीर चंदं , सजे सूर नरसिंघ मेघं सुभद्दं ॥३७३॥
सजे सलष लष्षं बडं जोधकारं , सजे विझ्झु राजं सुतोमर पहारं ।
सजे दाहिमा आततांई सुवीरं , सजे निड्डुरं राइ धाधू सुधीरं ३७४
सजे वीर हरिसिंघ पज्जून रायं , सजे सर्व सावंत जुद्धं करायं ।
सजे सर्व सैना मनौ इंद्र राजै , मनौ मेघ भादौ महा नाद गाजै ३७५
बजै दुंदभी ढोल भेरी मृदंगा , सुनै सोर पाताल मध्यै भुजंगा ।
बजै बाँसुरी संष सहनाय तूरं , भये सर्व दिकपाल के कर्ण पूरं ३७६
बजै तीन हज्जार दूधू धुकारं , उठे नीर पाताल चलवार पारं ।
सुनै सोर सुर ईस ससभान लज्जै , सजी सैन चतुरङ्ग गंभीर सज्जै ३७७
चले मत्त मैमत्त घूमंत मत्ता , मनौ बद्दला स्याम माथै रुलत्ता ।
बनी बागरी रूप राजंत दंता , मनौ बग्ग आषाढ़ पातै उडंता ३७८
लसै पीत लालै सुढालै ढलक्कै , मनौ चंचला चौंध छाया छलक्कै ।
गिरी अंग के कुंभ सिंदूर मंडै , घटा अग्र प्रतिमै मनौ मार तंडै ३७९
बहै जोर छंछाल तै मुक्ष नीरं , लगे गंड गुंजार सोभैर भीरं ।
कियौ कुंडली कुंड सुंडाह लीयं , लसै चौर भारे जु श्रंगार कीयं ३८०
लसै गात गंभीर जंजीर जेरे , मनौ मेघ छूटे प्रलय काल केरे ।
चलत्तै बधी पाय बेरी षनक्कै , बजै घूँघरू घोर घंटा ठनक्कै ३८१
बनी किंकिनी लंक लागी घनंकै , मनौ पावसी रैन हिल्ली झनंकै ।
पलानै तहाँ तेज ताजी तुरंगा , परै उच्च उक्षाल मानौ कुरंगा ॥३८२॥
कयाहै स्वलालं दुरंगा स्वरंगा , खरे स्वेत पीतं तथा स्याह रंगा ।
इराकी अरब्बी तुरक्कीअ कक्षी , अमोला ममोला लिये मोल लक्षी ३८३
उभैकर्म ऊभे महा लक्षमी वा , मनौ उच्च उच्चैश्रवा सोभ सीवा ।
भयौ मान हीना जुछुट्टे न भग्गे , चलै पाय ज्यौ वेग पायौ न लग्गे ३८४
जुरे जीन मानिक्क सोहंत मोती , लगे संग डोलै मनौ इंद्र गोती ।
विसालक्ष लौलक्ष सोहै अमोलं , महा सील मय कंठ बोलंत बोलं ३८५

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढ़े सथ्थ चहुवान के सथ्थ वीरं , उलक्षै मनौ चंप वारिद्द नीरं।
सबै षंडधारी चितै चिंत मोहै , मनौ चित्र में अस्व पेषंत सोहै ॥३८६॥

दोहा।

संभर नृपत पयान किय , दुजवर पढ़त असीस।
चंदेले परि चढ़ि चलिव , दिलीपति कव ईस ॥ ३८७ ॥
सवा लष्ष सैना चली , दस सहस्र वर पील।
दस दिग्गजि तै आगरे , उन्नत घन सम डील ॥ ३८८ ॥

छप्पय।

चल्यव सुसम्हर वार सैन सावंत सथ्थ भर।
हन्यव सुभट मलषान अवनि आकंप वीर वर ॥
मेघ भद्द जिमि चालि सैन सरवर हो चल्लिय।
हय गय नर भरि वीर सरित छंडित भुव हल्लिय ॥
षुरथारन उडि गरद गहिय नभ सुभान लोकत भयव।
इक्क इक्क लष्षन हनत चलिव संग रजपूत सब ॥ ३८९ ॥

दोहा।

वैत्रवती तै कूच करि , तट दसान धरि मिल्लि।
पहु फट्टत सवितर उवत , पीथल दल सब झिल्ल ॥ ३९० ॥

छप्पय।

सेसु सीस लचि भार डाढ धर डाढ ढरक्किय।
समद पार लगि सहमि वारि मेदिनिय भरक्किय ॥
चलिय सैन गज बाज धूर थरंत पूर जलद जह।
कमठ कसकि धसि मसकि धसय पब्वय पताल कह ॥
चढ़ि चलिव भूप सम्हर धनिय संक भान हुअ बाग लिय।
हर हँसिग भूत नंचहि सुगम जुग्गिन पान सुपत्र लिय ॥ ३९१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज रासो ।

यह हिन्दी साहित्य का सब से प्राचीन ग्रन्थ है जो अब तक प्राप्त हुआ है। इसमें कवि ने भारतवर्ष के अन्तिम क्षत्री सम्राट् राजा पृथ्वीराज का जीवनवृत्तान्त विस्तारपूर्वक लिखा है जो आदि से अन्त तक विचित्र घटनाओं से भरा हुआ है। इतिहास प्रेमियों के लिये तो यह ग्रन्थ अनमोल रत्न है। इसकी भाषा कुछ कठिन है अतः सभा ने समस्त ग्रन्थ के सारांश को सरल हिन्दी भाषा में इसके साथ ही साथ छपवाया है जिससे मूल ग्रन्थ के पठन पाठन में बड़ी सहायता और आनन्द मिलता है। मनोरञ्जक तो यह इतना है कि कहीं से कोई पृष्ठ उठा कर दस पांच पंक्तियाँ पढ़िये फिर कदापि आप समस्त ग्रन्थ पढ़े बिना नहीं रह सकते। जिन हिन्दी प्रेमियों ने इस ग्रन्थ को अब तक नहीं लिया है उन्हें इसकी एक प्रति अवश्य लेनी चाहिए। इसके ६९ पर्व्व २२ भागों में छपे हैं जिनका मूल्य २४) है। प्रत्येक भाग जुदा जुदा भी मिल सकता है। मूल्य १॥) के लगभग है।

अन्य उपयोगी पुस्तकें ।

हम्मीर रासो (रणथंभौर के वीर शिरोमणि महाराज हम्मीर देव का जीवनचरित) २)
हम्मीर हठ ,, ॥)
जंगनाम (दिल्ली के बादशाह बहादुर शाह के पुत्रों का युद्ध) ॥।)
इन्द्रावती १॥)
कवि आनन्द घन कृत बिरहलीला =)
भूषण ग्रन्थावली (प्रसिद्ध कवि भूषण के शिवराज भूषण, शिवा बावनी आदि ग्रन्थ) १॥।=)
सुजान चरित्र २)
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवनचरित्र ॥=)
महिला मृदुबाणी (भारतवर्ष की विदुषी स्त्रियों की संक्षिप्त जीवनी) १)
हिम्मत बहादुर विरुदावली (बांदा के प्रसिद्ध वीर हिम्मत बहादुर का चरित्र) १)
नन्द दास की रासपंचाध्यायी ।=)
अखरावट ।=)
यूरोपीय दर्शन (यूरप के दर्शन शास्त्र का इतिहास) ॥।)
परिचर्याप्रणाली (रोगी की शुश्रूषा करने की विधि) ।)
संक्षेपलेखप्रणाली अर्थात् हिन्दी शार्टहैण्ड १)
महाराणा प्रतापसिंह (नाटक) ॥।)

ये सब पुस्तकें मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से मिल सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीर्ण व अजीर्ण के दस्त की दवा।

खाना पचानेवाले रसों के घटने बढ़ने वा विकार से अजीर्ण रोग होता है जिसके ये लक्षण हुआ करते हैं—खाने के बाद पेट

भारी जान पड़ना, पेट में वायु होना, जी मिचलाना, खट्टी वा व्यर्थ डकार आना, छाती जलना, मुंह में पानी भर आना, पेट में थोड़ा थोड़ा दर्द होना, चित्त की ग्लानि, आलस्य आदिक। जब तक खाना हजम की थैली में रहता है और पाचनक्रिया कठिनता से होती रहती है यही हालत होती है। जब यह अनपचा खाना अँतड़ियों में उतर जाता है तब पेट में गड़गड़ाहट होती है, पेट फूलता है व दस्त की चेष्टा होती है। दस्त पतला वा पानी के ऐसा होता है। कभी कभी खाने के थोड़ी देर पीछे ही दस्त हो जाता है। दस्त होने से शरीर क्षीण होता है। ये सब हालतें कभी कम, कभी अधिक होती रहती हैं और महीनों तक चलती हैं। रोगी का शरीर दिन पर दिन गलता जाता है। अन्त को असाध्य हो जाता है।

शरीर की साधारण पुष्टि का घट जाना इस रोग का कारण है। नीचे लिखी हुई हालतों में ऐसाही होता है—

वृद्ध अवस्था, कोई विशेष रोग के बाद कमज़ोरी, कम खाना (जैसा कि व्रत, लङ्घन, पारण आदिक में लोग करते हैं), धातु के व्यर्थ नष्ट होने से क्षीणता, अधिक श्रम, दुश्चिन्ता वा शोक, प्रसव के विकार से कमज़ोरी।

इन विषयों को विचार कर डाक्टर बर्म्मन ने अजीर्ण की दवा बनाई है। खाना हज़म करने व अजीर्ण के दोषों को मिटाने में इसकी विशेष शक्ति है। यह दवा छोटी छोटी टिकिया की ऐसी बनी हुई है। पंदरह रोज़ के सेवन योग्य ३० टिकिया की एक शीशी का मोल १।) रुपया। डाक महसूल १ से ४ शीशी ।-) आने।

डाः एस, के, बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पुस्तक संख्या २३, २४

ग्रन्थ संख्या ४८]

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक; श्यामसुन्दर दास, बी० ए० ।

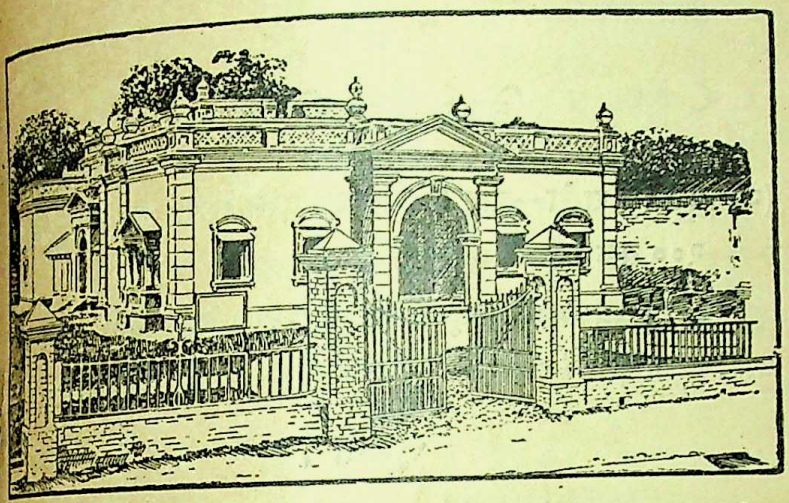

FASCICULUS NO. 48.] [BOOK NO. 23, 24.

NAGARI PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR

SYAM SUNDAR DAS, B.A.

PUBLISHED BY

THE NAGARI PRACHARINI SABHA,

BENARES.

मूल्य प्रति संख्या ॥) [*Price per fasciculus As. 8.*

ISSUED ON THE 15TH SEPTEMBER, 1914.

PRINTED BY APURVA KRISHNA BOSE AT THE INDIAN PRESS,

ALLAHABAD

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका।

(२३) परमाल रासो—बाबू श्यामसुन्दर दास सम्पादित। (पृष्ठ १६९—२०० तक)

(२४) छत्रप्रकाश—बाबू श्यामसुन्दरदास और बाबू कृष्णबलदेव वर्म्मा सम्पादित (पृष्ठ १ से ३२ तक)

सूचना।

छत्रप्रकाश पहले इस माला में प्रकाशित हो चुका है पर उसकी अब कोई प्रति बाक़ी नहीं रह गई है और इधर कई एक हस्तलिखित प्रतियाँ मिली हैं जिससे उसका पुनः प्रकाशित करना उचित जान पड़ता है।

सम्पादक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

नृप चल्लिव लोकानि सुनि , धुन सावंत अनंत ।
दोय अहन में आइया , माडिल सिवर करंत ॥ ३९२ ॥
आय परिव सम्हरधनिय , सब सैना सह ल्याय ।
पत्रिय लिष परमाल कह , कासिद दिन्न पठाय ॥ ३९३ ॥

छप्पय ।

लिष पत्रिय चहुवान दिन्न कासिद पठाइय ।
इक जाम मह पहुँच ढिग्ग चंदेल के जाइय ॥
देव ठानि वनिनूर नगर पुरहूत बषानिय ।
विसु कर्मा रचि धवल अमन सोभा सुनि जानिय ॥
महियपाल विय पंच पुनि भूपति उर संका भइय ।
श्रवन मास किय पर्व कह प्रथियराज आवन कहिय ॥ ३९४ ॥

दोहा ।

पत्री सुनि परिमाल दे , तन मन गयव सुषाय ।
मल्हन दे ब्रह्मा कुंवर , मंत्रिय नृपत बुलाय ॥ ३९५ ॥

चौपही ।

कहय भूप पत्रिय सुन बानिय । मम मानस मह संक जु आनिय ।
कीरतसर पीथल दल मंडहि । हमे दौन अवला किम छंडहि ॥ ३९६ ॥

सोरठा ।

बुल्लिव ब्रह्म कुमार , अस कुवत्त किम बुझिझ्ये ।
पीथलदल संघार , जीत पत्र जसु लैहु मम ॥ ३९७ ॥

छप्पय ।

चवहि ब्रह्म जित कुँवर सेस सीसहि भुव छंडहि ।
पच्छिम दिस उव भान धुव तजि भवन जु मंडहि ॥
दह दिग्गज चलि जाहिं देव गिरजापति भारिय ।
मेरु सिंधु चलि जाहि देव पुरहू जम धारिय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इतेय सर्व चलि अचलि चल कीरतसर मम प्रण धरहु ।
षंड षंड तनि कट्टि सब चंद वंस नहि पग टरहु ॥ ३९८ ॥

दोहा ।

सुनि कुमार के बचन ये , रानिय गय दुछताय ।
देव कज्ज पग ढारिया , मनिया दे ढिग आय ॥ ३९९ ॥

छप्पय ।

सोच मल्हन उर छयव पैज ब्रह्मा कुमार सुन ।
नही अल्ह उद्दल्ल रषि प्रन कहय सीस धुन ॥
गय मनिया दिव पास विनय बहु भांत उचारिय ।
तुम चंदेलन बंस राष आये नृप भारिय ॥
मम कुमार हथ्थ मथ्थह धरहु करहु कृपा वर दिज्जिये ।
सागर समान कीरत्त तह हैम दौन फल किज्जिये ॥ ४०० ॥

दोहा ।

अंचल लै पाइन परिग , देव पूज मन लाय ।
कहिय देव रच्छा करहु , ब्रह्मा केर सहाय ॥ ४०१ ॥
पूज देव रानिय सबै , अप्प सौध मह आय ।
सिंहा अवलोकन कथा , अल्हन सी पर जाय ॥ ४०२ ॥
मनिया दे कनवज्ज गय , सौध बनाफर सोय ।
जामनि सारहि भोर की , अल्हन सुप्न सुहोय ॥ ४०३ ॥
मनिया दे सुप्नात कहि , सुन सामँत मत धीर ।
दिसरा पुर के बाग़ तुव , कट्टहि चाँवड बीर ॥ ४०४ ॥
चाहुवान मांडिल परिव , वंद करन कहि बाम ।
जो नहि अल्ह सहाय तुम , ब्रह्मा आवहि काम ॥ ४०५ ॥
सपनौ दै देवा गयव , और बत्त नहिं बुल्लि ।
वेद सहाय कहे वचन , अल्हन द्रग विय षुल्लि ॥ ४०६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

उठिव अल्ह चिंता भय पूरह । मात दिवल दे आय हजूरह ।
लीन्ह बोर उद्दल बुलवाइय । देव स्वप्न सो कहत सुनाइय ॥ ४०७ ॥

कुंडलिया ।

तो कह कनवज पुर समुझ, वद्ध वगीचा आम ।
चाहुवान सब सैन सह, माडिल करेय मुकाम ॥
माडिल करेय मुकामु, धरय रानिन कह सोइय ।
कर सहाय ब्रह्मा कुवर, काम आइव दुख तोइय ॥
मल्हन मंदिर आइ, बिनय करि पूजिव मो कहँ ।
भये दया परसन्न, सुप्न दिय कनवज तो कहँ ॥ ४०८ ॥

दोहा ।

मनियादे भय सुप्न सो, अल्ह मात सह बुल्लि ।
वेद सहाय जु कहि गयो, सो मम दृग विय घुल्लि ॥ ४०९ ॥

वाचनीय—अल्हन माता अगू उद्दल सहित वैसार कै मानियादे जे पाच बातै सुप्न में कही बगीचा बद्ध चहुबान माडिल रानिन कौ म्हां सहाय तो ब्रह्मा अलप तै बचै ।

दोहा ।

सुपनंतर की बत्त रहि, अवर अल्ह सो भष्षि ।
चाहुवान चंदेल जुरि, कौन महोवा रष्षि ॥ ४१० ॥

चौपही ।

सत सावँत पीथल सह भारह । पारथ सम जे लरत हकारह ।
जो मम उद्दल करहु सहाइय । जगत जीत ब्रह्मा जसु पाइय ॥४११॥

दोहा ।

उद्दल सो ये बचन सुनि, बुल्लिव यहै जुवान ।
दिषन कजरिया जाइया, अवर मत्त नहि मान ॥ ४१२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

तब माता देवल दे बुल्लहि । श्रीषम रित तो कह सो भुल्लहि ।
जान कहत तुहि लाज न आवहि । उपध जाइ मम नाम गमावहि ॥४१३॥

छप्पय ।

चवहि दिवल दे मात सुनहु उदराज सुवन वर ।
जेठ दुपहरी धाम काट तुहि दीन सथ्थ भर ॥
चढि आयव चहुवान देस दहपट्ट सुकिन्नव ।
मलषे सावँत जूझ षबर नृप मोहि न दिन्नव ॥
महियपाल विय हँसहि अवर अनादर किम हुज्जिये ।
मम सुमत्त चित्तह धरिय नगर पयान न किज्जिये ॥ ४१४ ॥

दोहा ।

आन षाय दसराज की , उद्दल भष्षि जुबान ।
नगर महोत्सव कज्ज मम , जोगिन भेष बषान ॥ ४१५ ॥
सपत सुनिय उद्दल्ल किय , अल्हन सी चित लाय ।
माता सह विनया करिव , करि आइस सुष पाय ॥ ४१६ ॥

चौपही ।

देवल दे माता इम बुल्लिय । दइय बिदा कहि मत्त सुषुल्लिय ।
पंगुर नृप घर विय तुम जावहु । करिय सपत जो जाइ सुनावहु ॥४१७॥
अल्ह उद्द पंगुर ढिग आये । कर जुहार राजा बैसाये ।
हथ्थ जोर अल्हन सो बुल्लिव । तत्तमत्त अंतर कव षुल्लिव ॥ ४१८ ॥

दोहा ।

चवहि अल्ह बानी सरल , सुन कन्नधुज महराज ।
उद्दल सपत जुषाइयव , महुव कजरियन काज ॥ ४१९ ॥
कनवज पति ये वचन सुनि , बुल्लिव मधुर जुबान ।
चाहुवान चंदेल जुरि , का तूँ होत अजान ॥ ४२० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

सुनि नृप बचन उद्द मन रष्षिव । कनवज पति के अगृ सुभष्षव ।
चाहुवान दल संक न मानहु । स्वामि धर्म धरि संगर ठानहु ॥४२१॥
नृप जयचंद बुल्लि इमि बानिय । अनआदर किय बत्त वषानिय ।
सो तुम श्रवन उद्द सुन लिज्जिय । समझ चित्त पग सो पुन दिज्जिय ॥४२२॥

छप्पय ।

अन आदर किय राम पितह बनबास सुदिन्नव ।
अन आदर पहिलाद नाम शिव कव नहि लिन्नव ॥
अन आदर भय ध्रुव जाय वन तपसु मंडिव ।
अन आदर भय पंड ग्राम हथनापुर छंडिव ॥
अन आदर तुम भयव विय घर चंदेल छुड़ाइयव ।
यह कहत मत्त कनवज धनिय अन आदर किम जाइयव ॥४२३॥

दोहा ।

प्रतउत्तर कर जोर कहि , सुनहु पंगु महराज ।
जे अन आदर आप कहि, करि आये पर काज ॥ ४२४ ॥

छप्पय ।

अन आदर श्री रामदेव मुनि कारज सारेय ।
अन आदर पहिलाद भये पुरहूतम भारेय ॥
अन आदर भय ध्रुव अटल पदविय सो पाइय ।
अन आदर भय पंड जंग जित्तिय अधिकाइय ॥
यह कहत उद्द जयचंद सह इन अनआदर यह करिय ।
सत सूर सहित चहुवान दल जित्तहु मम प्रण यह करिय ॥४२५॥

दोहा ।

पुनह बुल्लि जयचंद नृप , चाहुवान दल भार ।
जंग जित्त पतसाह सह , गहत न लग्गिय बार ॥ ४२६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय ।

कर कृपान कट्ठोर क्रोध करि कहय उद्द इम ।
कालि कलह कलि करहु कुहक विक्रम सुकर्ण जिम ॥
ये महंत कलि कंठ कुट्टि करि कंठन मिल्लहु ।
करिय कुंभ किकियान कुट्टि करि जाहि न झिल्लहु ॥
करि कोप कहत कनवज्ज मह कनक कुंभ कारम भइय ।
कनवज्ज नृपत के अग्ग कहि पीथल दल कट्टहु करिय ॥ ४२७ ॥

दोहा ।

पंगु राय हँसि बुल्लियव , दइय बिदा सुख मान ।
उद्दल सम सावँत नहि , बीजौ सूर न आन ॥ ४२८ ॥
सिरोपाय बड़ मोल के , नगन जाल पहिराय ।
अल्ह उद्द कह पान नृप , दये कजरियन पाय ॥ ४२९ ॥

चौपही ।

लष्षन सी बुल्लिव करि जोरिय । पंगु नृपत बिनया सुन मोरिय ।
म्हा उद्दल सँग जाउ सलाहिय । महुव कज्जरिय देखहु जाइय ॥४३०॥

छप्पय ।

पंगु राज इम चवहि सुनहु लष्षन कुमार बर ।
तोहि लग्ग परवार और सब सैन राज भरि ॥
हम दिष्षहिं द्रग सुवन गयै चिंता बहु लाइय ।
विय भाइन मह इक्क कहय उद्दल सँग जाइय ॥
तुव अष्ट सिद्ध नव निद्ध सब सखा पिय मंदिर बनै ।
नगर महोत्सव दिषन कह कवन बुद्ध आइय मनै ॥ ४३१ ॥

दोहा ।

दिष्ष मोह नृप पंगु कव , लष्षन पर अधिकाय ।
मुंज सुवन सह उद्द कहि , तू नहि संग भलाय ॥ ४३२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चाहुवान नृप भीम सौ , संग सैन सत सूर ।
तुम लष्षन राजन कुंवर , हैंम दर्व तुव नूर ॥ ४३३ ॥

छप्पय ।

जब लष्षन इम चवहि सुनहु उद्दल मम बानिय ।
पहिल जंग हम करहि बरहि अप्छरि मनि मानिय ॥
षंड षंड तन कटहि ईस गल मुंडन मेलहु ।
पकरि लेहु प्रथिराज सूर सुरपुर कहँ झेलहु ॥
जयचंद सुजस जाहिर करहु जुग जुग जग कीरत चलहि ॥
म्हां चलहु तुम्हारे सथ्थ अब नगर महोवा तन तजहि ॥४३४॥

दोहा ।

मुंज सुवन के बचन सुन , नृप लिय कंठ लगाय ।
कीन बिदा जयचंद नृप , लष्षन सी सुष पाय ॥ ४३५ ॥
कुमक कज्ज लिज्जे लषन , लषन कजरियन कज्ज ।
सिरोपाय बड़ मोल के, दिन्ने मनि गनि सज्ज ॥ ४३६ ॥

छप्पय ।

बिदा करिय नृप पंग संग लष्षनसिय दिन्नव ।
मोद पाय पहिराय बसन बहु मोल नविन्नव ॥
असिय लष्ष मह छट्टि पंच सत सूर पठाये ।
किते जीत संग्राम सुजस भूतल महँ छाये ॥
लिये हेमउ वाता मोल जुत जुगल बंध आगय धरिय ।
दिन्निय कमान मुलतान किय सुभ तुनीर सरबर भरिय ॥ ४३७ ॥

दोहा ।

करि जुहार अल्हन नृपत , सिवर कज्ज पग धारि ।
आय मंदिरन मंत्र किय , चलन कज्ज पग धारि ॥ ४३८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विंस सहस्र महं अल्ह सेा , लिये सूर सत पंच ।
लरन कज्ज जेाधावली , अग्नि ज्वाल तन अंच ॥ ४३९ ॥

छप्पय ।

कहय उद्द सुन अल्ह मत्त इक तत्त बषानिय ।
नगर महेात्सव कज्ज हमहि कोउ जात न जानिय ॥
वर जेाग कव धारि भेाग सब त्याग सुदिज्जिय ।
पंच सहस सँग सूर भेष पलटाय सुलिज्जिय ॥
इमि करहु मंत्र एकंत हो आन कान नहि संचरहि ।
बुलाय सकल परिगह चमुव चलन कज्ज मत विस्तरहि ॥ ४४० ॥

दोहा ।

अल्ह उद्द के बचन सुनि , मानस मत्त जु आय ।
करहु सिवर गंगा निकट , भेष देहु पलटाय ॥ ४४१ ॥
मात दिवल के चरण छुय , करि कनवज तै कुच्च ।
पंच सहस सैना सुसग , दोय पील बर उच्च ॥ ४४२ ॥
अल्ह उद्द लष्षन चले , महुव कजरियन कज्ज ।
आन सिवर गंगा करे , चाहुवान परि सज्जि ॥ ४४३ ॥

छप्पय ।

सजिव सिंधु परि मेघ सजिव दंती परि केहर ।
सज पच्छिन परि बाज सजिव चीतानि मृगे पर ॥
सजिव केाल पर स्वान सजिव आमिष गिध पूरह ।
सजिव भेड पर भिंड सजिव स्यारन पर सूरह ॥
इमि सजिव गंग तै भेष धरि स्वामि धर्म चितु ल्याइयव ।
चहुवान चमुव भय समद सम अल्ह अगस्त सुठाइयव ॥ ४४४ ॥

दोहा ।

पूजा सुरसर की करी , बानी सरल उचारि ।
तुव माता जग पावनी , तरनी चढ़ि भय पार ॥ ४४५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोतीदाम ।

सजी गूदरी अंग बहु मोल वारी । तिन हेम हीरान लग्गी किनारी ।
इसी भात सज्जे सु पंचं हजारं । बजे बाज अनेक धुन्नी अपारं ॥४४६॥
कहूं बज्जियं डैर रुद्रं समारी । कहूं भेर करनाल बीना मुरारी ।
कहूं सिंग सुरपूर भूतल्ल छायो । कहूं गान गंधर्व की तुल्य गायो ॥४४७॥
कहूं न्हान करिकै विभूतं चढ़ावै । कहूं पाठ पोथीन के चित्तु ल्यावै ।
कहूं ध्यान गौरिष्प कौ इष्ट धारै । सिवं मंत्र के बैन मुष्षं उचारै ॥४४८॥
इसी भांत सज्जे सबै अत्र धारै । तिनं दिष्पि हरि सत्र कौ रूप वारै ।
इकै जोगि कम्मान पुरवान नावै । कटं बंध तुन्नीर तेगं बधावै ॥ ४४९ ॥
इकै हाथ में सेल्ह परिगह सुलीनै । इकै गुरज बैठान सम्हार कीनै ।
इकै मुद्ठ जमदाढ़ गहि पान पैनी । मनौ व्यालनी व्याल तै काढ़ि ऐनी ॥४५०॥
इकै धार कंगाल अलि बंध नावै । इकै हस्त दस्तान दोऊ बनावै ।
इकै कम्मरं षंजरं षौस नीके । अरी गोत के पातकी जार नीके ॥४५१॥

दोहा ।

इसी भांति जोगी सजे , चले इष्ट उर लाय ।
तीन दिवस विच सिवर कर , कालिंद्री तट आय ॥ ४५२ ॥
रवि तनया सह विनय कर , तरनि उतर भय पार ।
किय मुकाम कलपी सहर , कल्पेस्वरहि जुहार ॥ ४५३ ॥

छप्पय ।

कल्पेस्वर कह पूज दान हज्जार हेम दिय ।
उद्दल लष्षन जीत मांग वरदान जोग लिय ॥
ईस देहु बरदान हौंहि जुत आनँद कारिय ।
उद्दल लष्षन जित्ति कित्त कीरत सर भारिय ॥
चलि जोग सर्व कालिप्प तै वैत्रवत्त तट सिवर कर ।
दिन देाय करे मुकाम तह जान छेत्र अति सुभग वर ॥ ४५४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

वैत्रवती तै कूच कर , चले जोगि बलवान ।
दोय अहन को अंत पर , सूपा मिल्लव आन ॥ ४५५ ॥
सूपा जोगी आन पर , पवर सुनी चहुवान ।
वरन हथ्थ विनया लिखी , जोगी कज्ज निदान ॥ ४५६ ॥
तुम जोगी मुन ईस से , म्हां बिनया चित धारि ।
करहु सेव आदर सहित , इत जोगी पग धारि ॥ ४५७ ॥
जोगिन प्रतिउत्तरि लिखा , चाहुवान धरि चित्त ।
श्रवन मास किम पर्व दिष , तीरथ को मन रत्त ॥ ४५८ ॥
चाहुवान कँह ज्वाव लिष , नहिय अल्ह मन कीन ।
ब्रह्मा कुवर सहाय कह , स्वाम धर्म चितु दीन ॥ ४५९ ॥

छप्पय ।

स्वाम हित्त हनुमान अवर अंगद सुजोधनन ।
स्वाम हित्त धर इष्ट कनक मारीच मृगानन ॥
स्वाम हित्त सो कर्न अवर भीषम सो किन्नव ।
स्वाम हित्त धर द्रौन सीस जैद्रथह सुदिन्नव ॥
स्वाम हित्त परमाल के जोगी भेष सु अल्ह धर ।
स्वाम हित्त उद्दल लषन अवर मंत्र नहि चित्त करि ॥ ४६० ॥

दोहा ।

श्रवन मास किय पव हित , मेघ भद्द जिमि झिल्लि ।
दोय जाम अह आइया , स्याह सिला धर मिल्ल ॥ ४६१ ॥
नगर महोत्सव देषिकै , जोगिन अति सुष मान ।
मनहु धाम पुरहूत के , मृत्य लोक मह आन ॥ ४६२ ॥
माडिल पै सम्हर धनिय , स्याह सिलह जोगीस ।
पंच सहस सह मिल्लियव , जंपहि उर धर ईस ॥ ४६३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय ।

नृप चँदेल के कज्ज अल्ह कनवज तै चल्लिव ।
लष्षन उद्दल संग आन गंगा तट मिल्लिव ॥
पंच सहस सावंत भेष जोगिन तन धारिय ।
पहिर गूदरिय अंग बज्ज सिंगिय अधिकारिय ॥
अहन सुद्धादस पंच चलि नगर महोत्सव आइयव ।
स्याह सिलह जोगीस धरि धूनी पान लगाइयव ॥ ४६४ ॥

दोहा ।

शिव विभूत गोला लिये . बाघंबर धरि अंग ।
कहिय चरन परमाल सह , बहु लेखक हैं संग ॥ ४६५ ॥

अत्र सस्त्र सब धारिया , जोगी मार समान ।
जंग कज्ज परसन्न है , जित्तय इंद्र विमान ॥ ४६६ ॥

निसानी ।

चंदेले सौ चर कहा जोगी एक आया ।
पंच सहस तिहि सथ्थ रावहु रूप सुहाया ॥
स्याह सिलाधर मंडिया धूनी बहु लागी ।
मनहु हर रिपु रूप रामत देषत त्यागी ॥ ४६७ ॥

तुव सहाय गज टेर ज्यौं गोप तज्जु आये ।
अत्र सस्त्र बहु धारिया विय पारथ आये ॥
सुनत चर की बत्तिया राजा मन आई ।
भेद काज जगनिक्करा अवहु देहु पठाई ॥ ४६८ ॥

बुल्लि भट्ट भूपत्ति राहम बैन उचारे ।
दस सहस्र संग हेमरा मिष्ठान महारे ॥
चंद पुत्र तूंही करा षेधा अति दीनी ।
होहि न कोऊ छिद्र रा लिय भेद नवीनी ॥ ४६९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनत भूप की बत्तिया कव पंथ सिधारा ।
सिवर जाय जोगीन के बहु नम्र उचारा ॥
उपहारै धर अग ही पुन वैन कहाई ।
भूपति नै बिनया करी सुनिये मुनिराई ॥ ४७० ॥
दोय मास छावन करौ तुव सेव कराया ।
फेर इच्छ जहं की करौ तहं कौ फिर जाया ॥
दस सहस्र नित हेम लै धूनीन बनावेा ।
जेागीस्वर कौ नित्त ही बहु भेाग लगावैा ॥ ४७१ ॥
सुनत कवि की बत्तिया मुन नाथ कहाइय ।
द्रव्य छाड़ हम ग्रेह की पद जेाग धराइय ॥
धान षाइ नहि आन का गुरु आयस दिन्हा ।
तीरथ न्हान बिचारिया सब साथ नविन्हा ॥ ४७२ ॥
पच्छिम दिस मम थान रा पूरव सेा जाइय ।
कहि जेागिय सब बत्तरा कवि सैा समुझाइय ॥
इसिय भाँति जगनिक का आदर बहु कीन्हा ।
फूल पान दल पत्र लै परसाद सु दीन्हा ॥ ४७३ ॥

दोहा ।

बिदा करिय कविराज को , तन मन अति सुष पाय ।
जेाग विभूत दई सबै , नृप कौ अति चित लाय ॥ ४७४ ॥

छप्पय ।

कहत भट्ट सुनि भूप कथ्थ जेागीन बषानहु ।
बड़ब ज्ञान बड़ तेज अवर दूसर नहि जानहु ॥
आप चलिय महराज करिय मनहार महाहिय ।
जिहि प्रकार जेागीस रहय द्वय मास पुक्ष हिय ॥
यह बच सुनत परमाल नृप चलन कज्ज चित लाइयव ।
बुल्लाय कुवर ठाकुर सकल तव सुषपाल मँगाइयव ॥ ४७५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

गयव भूप परमालदे , जोगिन ढिग चितु लाय ।
उपहारे धर अग्र ही , चितचित कथा सुनाय ॥ ४७६ ॥
परसन लाग्यौ चरन तब , जोगिय कर गहि लीन ।
बैठारो आदर सहित , तुम राजा परवीन ॥ ४७७ ॥

छप्पय ।

तुम राजा परवीन बहुत ज्ञानिन अधिकारिय ।
सकल गुनन भरपूर रहव तुम आनँद कारिय ॥
हम भिक्षुक जोगीस आय अब तुम्हरे देसह ।
पाय दरस तुव राय भयव आनंद विसेसह ॥
देष कजरिया कूच करि चलेय जाइ पूरव्व कह ।
करय दरस शिवनाथ के कटय कोट पातिक्क तह ॥ ४७८ ॥

चौपही ।

कहय भूप सुनियै मुनि राइय । मम बरदान देहु सुष पाइय ॥
प्रथियराज म्हां पर चढि आयव । अल्ह उद कनवज्ज सिधायव॥४७९॥
दोय मास इत छावन किज्जिय । सावन मास वितीतन दिज्जिय ॥
सुनत बचन जोगी लघु बुल्लिव । भूपति जानु मंदिरन मिल्लव॥४८०॥
नभ पूनौ जिय मन अति आइय । प्रथियराज दल संक न ल्याइय ॥
सुनत बचन ब्रह्मा सुष पाइय । सजहु कजरिया मुनिन कहाइय ॥४८१॥

दोहा ।

बिदा भये परमाल नृप, बिदा भये सुष पाय ।
बैठ सुषासन मंदिरन, मल्हनदे ढिग जाय ॥ ४८२ ॥
श्रवन मास किय सर्वरिय , सर्व सर्वरी चंद ।
सजहु कजरिया सुभ घरिय , करहु गान आनंद ॥ ४८३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय ।

श्रवन मास किय पर्व सजिय सुचँदेलन रानिय ।
सजि सिवका सत दोय अवर डोला सज भारिय ॥
सज उमंग सब सैन गान कोकिल अधिकारिय ।
सजिव सुधा सब नगर किय इक इक बन आगरिय ॥
हेम लक्ष दिय दुजन कह कढिय कजरिया सुभ घरिय ॥ ४८४ ॥

दोहा ।

श्री परिमाल नरेस सज , मार नही तिहि ओप ।
कीरतसर कँह चालिया , दिनकर होत अलोप ॥ ४८५ ॥
ब्रह्मा जित्त कुमार सजि, चल्यव कजरियन सथ्थ ।
सज सैना सामत सब , बज्जे बज्ज अकथ्थ ॥ ४८६ ॥

भुजंगी ।

बजे नद्द नीसान मेघं गरज्जं । बजे फेर करनाल मारू सुबज्जं ॥
बजे तार तूमा बजे चार तारं । बजे साहनाई सुरही तुकारं ॥ ४८७ ॥
बजे ढोल जंगी रबाबं नफीरी । बजे बीन सुरमंड मुहचंग हीरी ॥
बजे झांझ मंजीर सुरताह माही।नची अप्छरी आन उर व्योम माही ४८८

दोहा ।

दो सत सिवका संग चलि , ब्रह्मानँद अगवान ।
नगर त्रिया सब चालिया , कीरतसर कह जान ॥ ४८९ ॥
साठ सहस हय पष्षरौ , गैयर सहस पलान ।
अस्त्र सस्त्र लोहान चलि , दये सूर अगवान ॥ ४९० ॥
चढिव पील परिमाल नृप , दियव निसानय घाव ।
सर्व सैन जुत ब्रह्मजित , कीरतसर पर आय ॥ ४९१ ॥

छप्पय ।

आय नृपत परिमाल कुवर सब सैन सुभारिय ।
आय चँदेलिन वाम आय दासी अधिकारिय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नगर त्रिया सब गान कोकिला जुत सम बुल्लहि ।

....

इहि भांत सकल बनिता उतर हैम दौन हथ्थह सुलय ॥
भय नगर देव पुरहूत सम कुसुम वरन सागर सुभय ॥ ४९२ ॥

दोहा ।

सिवका ते रानी उतरि , हैम दौन लिय हथ्थ ।
कीरतसर महँ पग्ग दिय , षुटिय कजरिया सथ्थ ॥ ४९३ ॥

चौपही ।

पहिल दौन लिय मल्हन रानिय । सुमिर देव पैाट्यो कहि बानिय ॥
दुतिय दौन अल्हन के नामह । गय कनवज्ज रास विय धामह ॥४९४॥

छप्पय ।

सुष पायव परिमाल कज्जरिय पैाट सैाध वर ।
लिग्गै सू सावंत महा तेजान अतुलधर ॥
श्रो ब्रह्माजित संग अवर रनजित्त कुमारह ।
महियपाल भूपत्ति सुसंग मंत्रिय सिरदारह ॥
अवर बजत बाजे सकल नद्द निसानन गज्ज हुव ।
सुनि सुनि धुकार धैासान किय चाहुवान दल संक हुव ॥४९५॥

दोहा ।

सुनिय खबर चहुवान नृप , षुटिय कजरियां आय ।
कीरतसर रानी सबै , गान हेात अधिकाय ॥ ४९६ ॥
सजिय सैन सावंत सब , जंग कज्ज मन लाय ।
चढिव पील सम्हर धनिय , दियव निसानन घाय ॥ ४९७ ॥

छप्पय ।

चढिव भूप चहुवान गरद असमान भान दव ।
सबह लष्य किकयान सेस संका न आन लय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दह दिग्गज करि कान आन सुरलोक पधारिय ।
सुनिय कूह कैलास चलिव गिरिजा पति भारिय ॥
संग सैन सब धवर चलिय सैन तीछन अनिय ।
स्रवन मास किय पर्व कह चढि आयव संभर धनिय ॥४९८॥

दोहा ।

इत ठाढौ चंदेल नृप , उत आयव चहुवान ।
लषा लषौ विय सैन हुव , कीरतसर मैदान ॥ ४९९ ॥

चौपही ।

त्रितिय दोन रानी पुन लिन्नव । चलि चावंड जुरि आय नविन्नव ।
संग सुभट आयो चढि भारिय । कीरतसर मह परभर पारिय ॥५००॥

दोहा ।

षबर पाय ब्रह्मा कुवर , दपट चमू चहुवान ।
चावड़ बरनिय सज्ज भय , माहिल सी अगवान ॥ ५०१ ॥
दस सहस्र चावंड सँग , सैना बलिय अपार ।
दस सहस्र सह आहुरे , माहिल विय पडिहार ॥ ५०२ ॥
इत उतरे माहिल सुवन , उत चावंड बलवान ।
दोऊ वीर सु आहुरे , भीम जुद्ध किय ठानि ॥ ५०३ ॥

भुजंगी ।

जुरे आय वीरं दुहुं सैन वारे ।
सुमिर अप्प इष्टं महा क्रुद्ध भारे ॥
चले तीर नेजा बँदूषें बरच्छी ।
परैं फुट्टि न्यारे महा तेज कच्छी ॥ ५०४ ॥
वरं षंजरं पंजरं मार फोरै ।
लगै हीक जमदाढ़ मुक्कीन जोरै ॥
लगै षग्ग सीसं परै तुट्टि न्यारे ।
धयै आमिषं काज गिद्धं ननारे ॥ ५०५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लरै सूर क्रोधां सु शब्दं हकारं ।
मनौ देव आकास मद्धै पचारं ॥
गहै तेग हथ्थं झपट्टै सुघल्लै ।
कटै सैन जोधं धरन्नी सु मिल्लै ॥ ५०६ ॥
भयो चावँडं रीस बुल्ल्यो पचारी ।
करौ आय जुद्धं सुम्हांपै सम्हारी ॥
महीपाल पुत्रं सपुत्रं सुझायौ ।
हन्यौ चावँडं अस्व धरनी मिलायौ ॥ ५०७ ॥
हन्यौ फेर अस्वं महीपाल पुत्रं ।
भये लथ्थ वथ्थं सुधरनी विचित्रं ॥
लरै मल्ल जुद्धं करै पेज भारी ।
हनी चावँडं हीक मुक्की सम्हारी ॥ ५०८ ॥
परयो चावँडं वीर मुर्छा नविन्नव ।
धयौ वीर कयमास क्रोधां सु किन्नव ॥
हनौ सेल्ह भारी लग्यौ हीक सोयं ।
महीपाल पुत्रं धरा मध्य सोयं ॥ ५०९ ॥

दोहा ।

तीन सहस पडिहार सँग , दोय सहस चहुवान ।
पंच सहस रजपूत गिर , कीरतसर मैदान ॥ ५१० ॥
भगिय सैन पडिहार विय , चंदेलौ ढिग आय ।
कहत षवर परमाल सह , माहिल सुवन षपाय ॥ ५११ ॥

चौपही ।

माहिल भूपति बुल्लिव आनिय । आँसू द्रगनि ढरकि कहि बानिय ॥
मम कुमार डारिय रन मारिय । सैन सरस सह पीथिल भारिय ॥५१२॥

छप्पय ।

सुनिय षवर परिमाल भयव चिंता अति पूरह ।
अभैजित्त पडिहार जंग जूझौ रन सूरह ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन सहस रजपूत गिरव कीरतसर माहिय ।
कहत वीय पडिहार भूप तव मानिय नाहिय ॥
अब कुसल परिय मम सुवन गिर महलन कज्ज पधारियै ।
कोउ दिषव नहिय रजपूत सँग जुद्ध नृपत तुव हारियै ॥५१३॥

दोहा ।

ये बचन्न रजपूत सुनि , कोप वीर छत्रसाल ।
डौंगर सी बुल्ल्यौ तबहि , सुनहु भूप परिमाल ॥ ५१४ ॥

छप्पय ।

तबहि कुप्पि छत्रसाल कुप्पि डौंगर सी बुल्लहि ।
हम घालहि किरवान मार जमदाढन षिल्लहि ॥
कितिक सूर चहुवान आन देवान देह धरि ।
करय नौन हल्लाल लरय विक्षेद स्वर्ग वर ॥
इम चवहि सर्व सावंत वर करहि जुद्ध भारथ्थ सम ।
आप पुत्र धोषै सु जिन सुनहु वीय पडिहार तुम ॥ ५१५ ॥

दोहा ।

जंग कज्ज छत्र साल चलि , अरु डौंगर सी वीर ।
उतहि उरर कयमास सो , सर कीरत के तीर ॥ ५१६ ॥
दोऊ नृप की सैन जुरि , दह दह एक हजार ।
विय सैना जुरि आइरे , झरत परस्पर सार ॥ ५१७ ॥

त्रोटक ।

चलि लोह बरब्बर सीस झरं । भट मेघ समान सु कूह करं
कर सेल्हन लै वर ज्वान मिले । तह सूर अमान सु जाय पिले ॥५१८॥

सोरठा ।

झरत परसपर सार , उच्छल घाय घलै तहाँ ।
घायन भये सुमार , पछिल पाय धारै नहीं ॥ ५१९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोतीदाम ।

बजग्गिय आव धरिट्ठ सुरार । मनौ बन कट्टहि कट्ठ कवार ।
हहंकहि धप्पहि सूर सुधीर । महा भरि सावंत विभूम वीर ॥५२०॥
धसै जमरोज सु आयव काल । ढिले वर सर्व सु सूर मुछाल ।
कहकहह शब्द सु मंचिय रार । जुटे रन जोध सु वीर जुझार ॥५२१॥
कुहक्कहि धक्कहि पिल्लहि संग । फटे धर झार अबारिय अंग ।
बहै किरवान सु चल्लहि भेद । मनौ सुभसार करावहि छेद ॥५२२॥
परे सिर नाचहि उट्ठ कमद्ध । बरे तन कीड सुबीर अवद्ध ।
पलक्कहि श्रोन कि नद्दिय जाल । परे गज बाज भरे रनताल ॥५२३॥
करक्कहि सेल्ह सु एकन एक । परे रन रिंगहि तुट्टहि टेक ।
तरफ्फर उट्ठहि लग्गत कंठ । छुलंक सुघाय करै दिढ मुंठ ॥५२४॥
लरै रन जोध सु कूह करंत । मनौ मतवार लरै रन मत्त ।
हिनक्किय वाजिय वार सुवार । फिरै गज भीत करंत चिकार ॥५२५॥
अटं धर अद्ध सु सूरन वीन । बिना जल पाय तलफ्फत मीन ।
उठे रजपूत दुहू दल सैन । गिरे कटि मुंड परे धर ऐन ॥५२६॥
धप्यौ छत्रसाल सु सूर नृसंकि । उतै कयमास सुआयव हंकि ।
भये लथपथ्थ सु दोउव वीर । बहै कर मुंकिय भिद्द सरीर ॥५२७॥
लगे जमदाढ़ नही कनवार । परे रन वीर झुझार समार ।
लगे विय घाय बरावर अंग । गिरे रन मुर्छा वीर सुजंग ॥५२८॥
धप्यौ करि कोप पजून मरद्द । जुरे रन सूर सुमेघव भद्द ।
लप्यौ कछवाह सुडौंगर सूर । दयौ हिय सेल्ह सु लग्गिव घूर ॥५२९॥
भगी रन सैन लषी परिमाल । गिरयौ रन मुर्छा श्री छत्रसाल ।
अनेग गिरी तह फौज बिसाल । करै गनती अब कौन सुहाल ॥५३०॥

दोहा ।

धर सिवका कयमास कह , लय पज्जून सुजाय ।
छत्रसाल सिवका सुधर , डौंगर सी लै आय ॥ ५३१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अप्प अप्प सैना सुगय , दोउव सूर अमान ।
इत कोप्यौ ब्रह्मा कुंवर , उत कोप्यौ चहुवान ॥ ५३२ ॥

छप्पय ।

ज्यौं रावन पर राम काम पर संकर जैसे ।
ज्यौं मेघन पर पवन जाय छन मै उड़ तैसे ॥
ज्यौं बलि परि करि कोप बज्र बज्रो हल छंडय ।
ज्यौं गज जूहन संघ जाय पंचानन षंडय ॥
इहि भांत चल्यव संग्राम कंह संग सूर सैना घनिय ।
चंद ब्रह्म के बंस पर चढि आयव सम्हर धनिय ॥ ५३३ ॥

दोहा ।

चार सहस चंदेल भट , चार सहस चहुवान ।
अष्ट सहस रजपूत कटि , रण तीरथ तजि प्रान ॥ ५३४ ॥
वेद दौन रानिय सुलिय , पीथल दल चलि आय ।
सैना धसि चंदेल किय , क्रोध चित्त उर लाय ॥ ५३५ ॥
रानिय मल्हन दे कहिय , सुन कुमार मम बत्त ।
चाहुवान चढ़ि आइया , करय अक्ष तुव घत्त ॥ ५३६ ॥

छप्पय ।

जौ पच्छिम दिसि उवय पूर्व अथवै जो दिनकर ।
जो फनपति धर मुरहि गवर पर हरय जु शंकर ॥
ब्रह्म वेद नहि चवहि अन्यर्थ दुदिष्टिल भष्षहि ।
जो सागर जल घटय मेरू मरजाद न डुल्लहि ॥
ब्रह्मा कुमार इम उच्चरहि उलट धार गंगा बहय ।
चहुवान शूर चौगुन चढ़हि तौ न संक मम जान लय ॥ ५३७ ॥

दोहा ।

पंच दौन कहि ब्रह्म चढ़ि , दियौ निसानहि घाय ।
उतहि चलिव सम्हर नृपत , नद्द निसान बजाय ॥ ५३८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोउव दल भेला भये , झरत लोह रन सार ।
सिंघ सिंघ द्वै आगरे , होत भीम सम मार ॥ ५३९ ॥

भुजंगी ।

धये सूर वीरं जुरे भीम आही । दिषै देव गंधर्व विम्मान माही ।
तबै भूत प्रेतं फिरै ताल दैकै । बरै अच्छरी आन सूरं लु लैके ॥५४०॥

लरै जोध जोधा करै मार भारी । गिरी टूट कै तेग अद्धीन नारी ।
तबै तेग तज वीर जमदाढ़काढी । धरी पान पैनी गही मूठ गाढी ॥५४१॥

नरं नाहकं धंधरै तेग धायो । इतहि वीर चंदेल कौ क्रोध धायो ॥
लगै सेल्ह बज्जै गहै बांह षिच्चै । हनै सूर जमदाढ़ सौ पान मुंचै ५४२ ॥

धसै सूर चहुवान के आय सम्है । लरै जोध चंदेल के बीच थम्है ॥
गहै सूर किरवान मुक्की सुघल्लै । लरै सथ्थ वथ्थं दुहू सैन षिल्लै ५४३

तितं घाय अघ्घाय कर भूम धुक्के । थनं थान फुट्टे न कोसार चुक्के ॥
रहै कोर सौ कोर पर सैन सूरं । करै पहुप वर्षा न देवास पूरं ५४४

उठं वीर वेगं दुयाहै सोझारं । मनौ कर्क संतार तुट्टै करारं ॥
धलै पग्ग सीसं सुदामिन चमंकै । भनं काय जाई सुदेवा ठनंकै ॥५४५॥

कटै रुंड मुंडं सुव्योमं निहारै । मनौ चल्लि इंद्रंहि माई हजारै ॥
हहंकार हंकार हंकै सु वीरं । बजै सिंघ नद्दं लरै वीर पूरं ॥ ५४६ ॥

सनंमुष्प धावं सुवीरं मिलंदे । मनौ राह गाहक्क चंपे सुइंदे ॥
हियं तोमरं हीक फुट्टै फरक्कै । लचै मीन वंसी सुभूमै सरक्कै ॥५४७॥

धपट्टै सुधूरं धरं सुंड भारं । डगै कोपि पंका इरं भीत भारं ॥
मिली जोगिनी जोगनं चैत्र धाई । फिरे तंत फिप्फी परं पूर्व आई ५४८

परे बिंब षंडं धरैं रुंड मुंडं । गहै गिद्ध चुंगं परै देषि झुंडं ॥
सिरं नीर आवद्ध नंषै अपारं । नचै ईस देवं दिषै क्रोध भारं ॥ ५४९ ॥

चहूवान हंके सतं सूर धाये । गही फौज चंदेल नैचल्ल षाये ॥
सबै सूर थक्के अचित्तं विचित्तं । दयो पील बैठे धप्यो इंद्रजित्तं ॥५५०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

विचल चमू परिमाल की , सम्हरन आयस मंच ।
ब्रह्माजित्त कुमार सँग , रहे सर सतपंच ॥ ५५१ ॥

चौपही ।

कन्हभुवाल बुल्लि इम बानिय । सुनि कुमार चंदेल अमानिय ॥
भगिय सैन रन सहिय न अंचह । रहे सूर तुव सँग दस पंचह ॥ ५५२

छप्पय ।

कहय कन्ह नरनाह समझ नहि संगर किन्नव ।
कहिय बत्त पड़िहार भूप तव मान न लिन्नव ॥
ब्रह्माकुमार तुहि आन भूप चहुवान धरन्निय ।
सतसावँत वलिवान पेल वैडान फेर दिय ॥
तुव रहे सूर दह पंच संग कटिय सैन विचलिय अनिय ।
अब मिलहु जाय चंदेल कह पकरि लेहि सम्हर धनिय ॥५५३॥

दोहा ।

प्रतउत्तर दिय कन्ह कौ , सूर ब्रह्म के बुल्लि ।
हम तुम भैया जूझिये , कोप वचन सो षुल्लि ॥ ५५४ ॥

छप्पय

बुल्लिव जगनिकराय बुल्लि वानिकरन सूरह ।
बुल्लिव श्री छत्रसाल बुल्लि डाँगर सी पूरह ॥
अल्ह उद्द कनवज्ज तक्कि तुम आन सुछानिय ।
बडव गर्भ चहुवान बुल्लि पकरन कह बानिय ॥
यह कहत बीर चंदेल के सुनहु सूर सत कन्ह तुम ।
संग्राम मध्य ब्रह्मा कुंवर जम सह लैहि छिड़ाय हम ॥५५५॥

दोहा ।

भय विवाद दोऊ दलनि , करहि कूह रन रंग ।
सावन मेघ सुभट्ट तुरि , लरत सर रनबंक ॥ ५५६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय ।

धपय सूर चहुवान धपय ब्रह्मा जित सूरह ।
विय सैन जोरि जंगह लरहि करहि विक्रम अति पूरह ॥
इक्क इक्क कह हनय मार मंचिय सरमाहिय ।
कटहि मुंड तन रुंड चले निम्मान सुजाहिय ॥
धर लैहि अपछरिय स्वर्ग मह अप्प अप्प सावंतवर ।
लै लेत ईस गल माल सिर परे रहत धरनी सुधर ॥ ५५७ ॥

दोहा ।

चाहुवान चंदेल के , कटहि जंग मह सूर ।
जुरे भूत पेसाच षग , अमिष भषहि असु पूर ॥ ५५८ ॥

चंद्रायन ।

बुल्लि सूर नरनाह सुनौ प्रथिराजयं ।
कीन्ह सूरत सत जंग नाह मह थाकियं ॥
सुन बचन्न ये भूप चंद कह बुल्लियं ।
पराचीन कहि बत्त चंद गुर घुल्लियं ॥ ५५९ ॥

छप्पय ।

चवहि चंद गुर राम सुनहु चहुवान भूप वर ।
जगनिक जल्हन सथ्य रोह बाराह बीरधर ॥
अवर सूर छत्रसाल सकत डौंगर सी सूरह ।
देव अत्र कविराय लरय विक्रम करि पूरह ॥
ब्रह्मा कुमार जोधा बलिय करहि रार तन कट्टि भुव ।
अहि बरन आय पारथ सुवन किमि पावहु जीवत्त तुव ५६०

दोहा ।

सुनत बचन गुर चंद के , बुल्लिव सम्हरवार ।
सत सावंतन सौं कहत , मारहु ब्रह्म कुमार ॥ ५६१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वाम धर्म धरि सूर सब , धाये सजि जिमि व्याल ।
इतय गरुड़ सम ब्रह्म लरि , पवर पाइ परमाल ॥ ५६२ ॥

छप्पय ।

सुवन छिकि सुनि वैन जबेह चंदेल सुवामह ॥
संगर है दह पंच भग्गि सब सैन तमामह ।
मनिया दे कह सुमिरि रुदन करि रानिय बुल्लिय ॥
नहिय अल्ह उद राज कुवर कह कौन उबिल्लिय ।
चहुवान भूप सब लुट्टि धन लेहि सैन भरभर सुभर ॥
वेद करहि सत सूर नृप लेहि पकर घरघर सुधर ॥ ५६३ ॥

दोहा ।

जोगिन सह चंदेल नृप , दीन बचन इमि भाषि ।
म्हां बिनया तुम चित धरहु , मम कुमार अब रक्षि ॥ ५६४ ॥
जुग जोगी नृप सौ कहा , सुनु चँदेल चितु लाय ।
ब्रह्मा तुव पारथ्थ सम , थां मन संक न ल्याय ॥ ५६५ ॥
अष्ट दौन रानी लयौ , पैाटत मंगल मेल ।
अल्ह कहै ब्रह्मा कुंवर , करत षग्ग रन षेल ॥ ५६६ ॥

छप्पय ।

सुनहु भूप परिमाल वल्ल जोगी इमि बुल्लय ।
धन्य ब्रह्मजित कुंवर भार पीथल दल झिल्लय ॥
इहि समान नहि बीर वीय भूतल मह जानहु ।
सत सावंतन ठेल पेलि हय गयौ जुठानह ॥
दह पंच सुर सह आइरिव अवर चमुव भग्गिय सकल ।
कमधुज्ज कुवर सह मुनि कहा पसर करौ तुव अति सबल ॥ ५६७ ॥

दोहा ।

लष जोगी कीनी पसर , महा क्रोध उर आन ।
दो सहस्र जोगी सुसँग , हर हर शब्द बषान ॥ ५६८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रसावला ।

जुरे लष्ष धायं । करीयं पिलायं ।
धयौ निड्ढरायं । जुरे जुद्ध ठायं ॥ ५६९ ॥
वियं नैन रत्ते । कहै वैन तत्ते ।
फुले वंध रेनं । सुहै पीय मैनं ॥ ५७० ॥
घनै कर्न दीसं । सुभै टोप सीसं ।
सनाहं सुदेही । तिनं उक्त केही ॥ ५७१ ॥
करै जोध जुद्धं । गजै मेघ भद्दं ।
चलै अत्र त्रोनं । गुरं मान द्रोनं ॥ ५७२ ॥
छुटं वान हथ्थं । मनौ इंद्र पथ्थं ।
करै वीर गाजं । बजै जान बाजं ॥ ५७३ ॥
मुठी दिष्ट मंडै । लियै जी उछंडै ।
हने वीर धारी । लुटै भूम भारी ॥ ५७४ ॥
छुटै अग्नि हथ्थं । जरै सत्रु मथ्थं ।
लरै सैन जंगं । डड़ै मुंड वंगं ॥ ५७५ ॥
दिषै पीथ नैनं । लरै सिद्ध सैनं ।
धपै सूर जोधा । हनै पील क्रोधा ॥ ५७६ ॥
सबै सत्त धारै । न नैनं उघारै ।
छुटै वाय वेयं । मनौ शब्द लेयं ॥ ५७७ ॥
दुहू सैन धाये । मनौ काल आये ।
दुहू क्रोध आनं । इकै वंस जानं ॥ ५७८ ॥
जमं दाढ़ घल्लै । वरं सार झिल्लै ।
करै तीर मारं । वहै लोह धारं ॥ ५७९ ॥
नदी सैन पूरं । फिरै गैन हूरं ।
गजै गैन काली । नचै षप्पराली ॥ ५८० ॥
रूची ईस जंगं । रसे रोस अंगं ।
उमै छेत्रपालं । बकै विक्करालं ॥ ५८१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुवं त्रोन षुट्ट । पछै पग्ग जुट्टे ।
हनै तक्क मध्यं । परै अद्ध अद्धं ॥ ५८२ ॥
झरै सार अंगं । दवं जान जंगं ।
गजं सीस पानं । धरै बिज्जु जानं ॥ ५८३ ॥
धयै वीर जोगं । हनै सैन लोगं ।
परे टुट्ट मुंडं । लरै उट्ठ रुंडं ॥५८४॥
नषं वारि किन्नं । उदर फार दिन्नं ।
झपं निट्ठ रायं । पिल्यौ जोध धायं ॥ ५८५ ॥
धप्यौ जोग ईसं । भगी सैन दीसं ॥ ५८६ ॥

दोहा ।

मुर्छा हो निड्ढुर गिरयो , भगी सैन भहराय ।
लष्षन बंधु सुजान कै , द्रगन नीर ढर आय ॥ ५८७ ॥
शिवका धरि निड्ढुर पठै , लष्षन अप्पन जान ।
चाहुवान नृप द्रगनि लषि , क्रोध चित्त उर आन ॥ ५८८ ॥

छप्पय ।

करिव कोप प्रथिराज सूर सावंत बुलाये ।
कन्ह दाहिमा सथ्थ सलष पम्मार सुआये ॥
धांधुवराय धधेर लषन चावंड अमानह ।
चलपहार विझराज जाय संगर कह ठानह ।
यह करिय हुकुम्म चहुवान नृप अष्ट सूर तुव जाइयव ।
जिन करहु जग्य तुम झेल अब जोगि सु जंग षपाइयव ॥५८९॥

दोहा ।

चले अष्ट रजपूत बर , चाहुवान के सूर ।
आय जुरे लष जोग सह , बोले बोल करूर ॥ ५९० ॥
सुन जोगी मुन ईस से , पट तीरथ धर अब्ब ।
काल गिरा सब आप कव , लुटहि गूदरी सब्ब ॥ ५९१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुनि बचन्न रजपूत के, कोप वदति कर लष्प ।
गुर आयसु म्हां कौ दयौ, लेहु सैन सब भष्प ॥ ५९२ ॥

चौपही ।

तुनकि उठे जोधा सुनि बानिय । घेरिय सार झरन लगि आनिय ।
इन जोगिन सह जो रन मंडहि । हनय सैन कंह तिल तिल खंडहि ॥५९३॥

छप्पय ।

चलय बान जंजाल तोप तोमर असि घल्लहि ।
जाय परस्पर लरहि मार कट्टारिन पिल्लहि ॥
सिंघिन अरु गुरजान परिघ विधुवानि पट्टि चलि ।
भिंडपाल असि पुत्र वांक वगुदानहि आमल ॥
गहि पेस कवज फरसा सुलिय षंजर मारन आइयव ।
अग्यसस्त्र रंजकं घलिय जोगी यावन चल्लियव ॥ ५९४ ॥

दोहा ।

रुधिर तरंगिन बहि चलिय, दंत पंत दै नाल ।
रुंड मुंड तह देषिये, गिर रजपूत विसाल ॥ ५९५ ॥
अष्ट सूर देवा सुमिर, घल्लहि अत्र अपार ।
ब्रह्म कुंवर जोगी हटे, देष्यौ मुनि सिरदार ॥ ५९६ ॥

चौपही ।

मुनि सुवेग उद्दल बुलवाइय । तुम सुजाय रन करहु सहाइय ॥
ब्रह्म लषन सत सावँत घेरिव । कोपि हथ्थ मूछन पर फेरिव ॥५९७॥

छप्पय ।

सल्ल आय अवतार बल्ल के अग्ग सुबुल्लिव ।
घनगराज कहि बानिह हरि लंका गढ़ हल्लिव ॥
करिय सेल्ह ऊरद्द चंद सूरज भृग भुल्लहु ।
भुव सीस पारि सावंत समर षग्गनि सह षिल्लहु ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भनि नागईस भूधर कमठ सकल लोक संकान धरि।
उदराज चढ़िव चहुवान परि जंग करन भव भार हरि ॥५९८॥

दोहा ।

उद्द बचन जोगीस सुनि , चल्लि सथ्थ सुष पाय।
तीन सहस जोगीस चलि , चंदेले ढिग आय॥ ५९९ ॥
हथ्थ जोर परिमाल कह , बुल्लिव मुनियरराय।
षैाट कजरिया अभय स्यों , जंग कज्ज म्हां जाय ॥ ६०० ॥

चौपही ।

चवहि बत्त मल्हन दे रानिय। चाहुवान कव तेज बषानिय॥
मलिषे मारि क्रोध रन किन्नव। सुवन ब्रह्म पीथल छिकि लिन्हव॥६०१॥

छप्पय ।

चाहुवान सत सूर तिनहि सुर असुर सुकंपहि।
काल वरुन जमराज सुनत नभ अग्ग सुचंपहि॥
उधकि उठहि त्रिपुरारि वेद ब्रह्मा कह भुल्लहि।
हहर लंक गढ़ परहि सुनत रावन चितु डुल्लहि॥
पाताल लोक षलभल परहि महिरावन संकान भय।
इम चवहि मल्हन उद जोग सह पल मह ब्रह्म सुघेर लिय॥६०२॥

दोहा ।

लघु जोगी कहि कोप कै , सुन माता मम बत्त।
कितिक सूर चहुवान नृप , करहुं जंग सब घत्त ॥ ६०३ ॥

छप्पय ।

यह बुल्लिव जोगीस कोप करि अत्र जुलिन्नव।
सवालष्ष त्रन गनहु हनहु सत सूर नविन्नव॥
हनहु सैन गज बाज जंग मम संक न मानिय।
ब्रह्म कुंवर उब्बेल सुवन दसराज बषानिय॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मम करहु प्रतिग्या ईस ढिग इतव पराक्रम म्हां करहुं ।
जा जुरहु भूप चहुवान सह मार पील पीथल धरहु ॥ ६०४ ॥

दोहा ।

बदत बत्त जोगीस सह , बुल्लत यहै जुबान ।
चाहुवान के सूर सत , सो म्हां करत बषान ॥ ६०५ ॥

छप्पय ।

चवहि चंदेलन रान सुनहु मुनि ईस गुसाँइय ।
ग्राम कुठारन पाय लरन कँह कुँवर सहाइय ॥
सैना संग चहुवान भूप वर संक न मानय ।
पातसाह दल जीत ककुभ जाहिर जग जानय ॥
उदराज अल्ह गय रूस विय को रन षग्गन पेलिहै ।
प्रथियराज दल भूप वर को मम कुँवर उवेलिहै ॥ ६०६ ॥

दोहा ।

प्रति उत्तर जोगिय कहिब , जननी था सो मान ।
मुंड रुंड कट्टहु घनै , कुंवर उबिल्लहु जान ॥ ६०७ ॥

छप्पय ।

कोपि बुल्लि लघु योगि सुनहु मल्हन महरानिय ।
अल्ह उद्द सम समर करहु यह मान जुबानिय ॥
जुरहि आय जमराज पवन सम ताहि उडाउव ।
हनि मारहु सत सूर स्रोन की सरित बहाउव ॥
इहि भुजन छेद प्रथिराज दल असि तरंग मन षेलहौ ।
भुव डार पील सम्हर नृपत ब्रह्मा कुंवर उवेलहौ ॥ ६०८ ॥

दोहा ।

ब्रह्म कुंवर कौ सोच बहु , रानी धरत न धीर ।
फेर बषानहु था सुनहु , चाहुवान बलबीर ॥ ६०९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय ।

मल्हन दे कर जोर कहत तपसी सुन दोऊ ।
दस हजार दिय हेम फेर दिन्नय तुम सोऊ ॥
प्रथियराज बड़ भूप जंग कबहू नहि हारय ।
कन्ह बली नरनाह सूर सत चंद उषारय ॥
जब इष्ट धरत देवान कव इक्क दह गुन बढहि ।
नहि अल्ह उद्द घर सूरमा चाहुवान सह को जुरहि ॥ ६१० ॥

दोहा ।

इक्क बेर द्वै त्रितिय सुन , जोगिय सप्त सुकीन ।
करहु जंग पारथ्थ सम , तव रानिय चितु दीन ॥ ६११ ॥

छप्पय ।

सहय धनंजय तेज जोगिस्वर हथ्थ सेल्ह लिय ।
रवि पंमाचक दिनह हनहु भूप बच सैन सूर हिय ॥
ज्यौ सुधनंजय तेज वाज गज जूथ उडाउव ।
मुंड रुंड कटि लुथ्थ सरित किय कूल बनाउव ॥
यह सपथ करत चंदेल ढिग सुवन धनंजउ वेलिहौ ।
म्हां डार पील सम्हर धनिय तव हित घोर सुमेलहौ ॥ ६१२ ॥

दोहा ।

सप्त दौन रानी लियौ , लघु जोगिय अगवान ।
चलौ जु सनमुष जंग कह , जहां भूप चहुवान ॥ ६१३ ॥
तीन सहस जोगी धय्यौ . अल्ह पिष्ट लगि चल्ल ।
ता पीछै प्रेतिन चली , भूत प्रेति जुरि भिल्ल ॥ ६१४ ॥

छप्पय ।

चल्यव सुक्र गुरु बुद्ध चलिव रवि चंद भौम वर ।
चल्यव राहु भनकेत चल्यव ऋषि सप्त नषति धर ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल्यव व्रषभ चढि ईस चलिय केहर चढि चंडिय ।
सज साठ चार जोगिन चलिय अप्प अप्प खप्पर सु लिय ॥
चहुवान अल्ह सह जंग जुरि दिषन कज्ज रछ्या सुइन ॥६१५॥

दोहा ।

लघु जोगी सह जंग जुरि, मुनि जुपिष्ट सिरदार ।
जुरे आन तामस भरे, अर सिर घल्लि हथ्यार ॥ ६१६ ॥
सूर सिंघ सेवन जुरे, हर हर शब्द पुकार ।
घलत ब्रज्र सम अत्रविय, झरत परस्पर सार ॥ ६१७ ॥

रसावला ।

तोप छुट्टी सही । धूम छायो मही ।
वान छुट्टे घनं । मेघ सब्दै जनं ॥ ६१८ ॥

छुट्टियं सायकं । हंस लै जायकं ।
सार घल्लै वही । जोध पिल्लै सही ॥ ६१९ ॥

कन्ह आयो बली । भुव कंप्यौ भली ।
उत्त उद्दं धप्यौ । सेस संका छप्यौ ॥ ६२० ॥

तेग घल्लै घनी । सैन कट्टै अनी ।
षंजरं मारियं । पंजरं फारियं ॥ ६२१ ॥

क्रोध किन्नौ मनं । सेल छंडं घनं ।
मुक्कियं मारियं । दोइ हंकारियं ॥ ६२२ ॥

घल्ल कत्ती जरव । सूर कट्ट करव ।
सीस रुद्रं हरं । रुंड धरनी परं ॥ ६२३ ॥

वेग उट्ठै लरै । कूह भारी करै ।
कट्ट वाजी धरं । मत्त दंत्ती परं ॥ ६२४ ॥

श्रोन भूपै वहै । गिद्ध मासै चहै ।
मार भारी भयं । देव स्वंगं छयं ॥ ६२५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जोगिनी षप्परं । वेग लै लै भरं ।
सूर लैके धरं । जानि अच्छरि वरं ॥ ६२६ ॥
भूत पातै भगी । ईस तारी जगी ।
षग्ग कंधं धरं । कट्टि न्यारे परं ॥ ६२७ ॥
नष सिंघं लियं । षिचि अंतै हियं ।
लथ्थ वथ्थं भयं । वीर भूमी छयं ॥ ६२८ ॥
फेर छुट्टै लरै । कृष्ण मै धरै ।
पाय चल्लै नहीं । घाय घल्लै सही ॥ ६२९ ॥
कन्ह सीमा हयं । सूर सत धाइयं ।
इत्त जोगी धपे । रुद्र मंत्रं जपे ॥ ६३० ॥
धूर नभ छाइयं । ईस द्रग जाइयं ।
सुक्ष आसू ढरे । सीस बाघंवरे ॥ ६३१ ॥
उट्ठि सिंघं धय्यौ । बैल नन्दी छय्यौ ।
देव संका भई । सिंघ जुट्टे कई ॥ ६३२ ॥
चाहुवानं अनी । संक पाई घनी ।
इत्त जोगी पिले । जाय लष्षं मिले ॥ ६३३ ॥
द्रष्ट ब्रह्मा धनी । बैट पीलं घनी ।
जोग सस्त्रं चले । दंत वैटे फुटे ॥ ६३४ ॥
जाय ब्रह्मालियं । जोग सिंही भयं ।
इत्त अल्हं कह्यौ । ब्रह्म पिष्टं रह्यौ ॥ ६३५ ॥
चेल मारं दिषं । नैन ठट्ठै लषं ।
ब्रह्म प्रष्टं ठयं । सूर आगे दयं ॥ ६३६ ॥

दोहा ।

सुष पायौ ब्रह्मा कुंवर , षवर सुनी चंदेल ।
जोगिन कुंवर उवेलिया , पीथल दल दिय ठेल ॥ ६३७ ॥
अवर सैन परमाल नृप , दीन्ही सर्व पठाय ।
आय कुंवर भेला भए , जंग कज्ज अधिकाय ॥ ६३८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छत्रप्रकाश ।

—:-○-:—

पहला अध्याय

दोहा ।

एकरदन सिंधुरबदन , दुर-बुधि-तिमिर-दिनेश ।
लंबोदर असरन सरन , जै जै सिद्धि गनेश ॥ १ ॥

छन्द ।

सिद्धिगनेश बुद्धि बर पाऊँ । कर जुग जोरि तोहि सिर नाऊं ॥
तूं अघ के अघओघन खंडै । अधिक अनेकन विघन बिहंडै ॥
प्रथम करै सुर नर मुनि पूजा । और कौन गनपति सम दूजा ॥
भौभंजन नेसक गुन गायै । मूसकबाहन मोदक पायै ॥
उच्च कुंभ सिंदूर चढ़ायै । रवि उदयाचल छबिहिं बढ़ायै ॥
अंकुस लियै दरद कौ दाटै[1] । विकट कटक संकट के काटै ॥

दोहा ।

काटै संकट के कटक , प्रथम तिहारी गाथ ।
मोहि भरोसौ है सही , दै बानी गननाथ ॥ २ ॥

छन्द ।

जै जै जै आनंदित बानी । तुही सत्य चैतन्य बखानी ॥
तुही आदि ब्रह्मा की रानी । वेद पुरानमयी तूं जानी ॥

दोहा ।

तूं विद्या तूं बुद्धि है , तुही अविद्या नाम ।
तूं बांधै सब जगत कौ , तूं छोरै[2] परिनाम ॥ ३ ॥

१—दाटै = भय दिखावे, भयभीत करे । २—छोरै = खोले, स्वतंत्र करे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छन्द ।

तेरी कृपा लाल जौ पावै । तौ कवि रीति बुद्धि बिलसावै ॥
कबिता रीति कठिन रे भाई । बाहिन समुद पहिर[1] नहिं जाई ॥
बड़ौ बंस बरनौ जौ चाहौ । कैसे सुमतिसिंधु अवगाहौ ॥
चहूं ओर चंचल चितु धावै । बिमल बुद्धि ठहरान न पावै ॥
बांधो बिषै सिंधु की डोरै । फिर फिर लोभ लहर में बोरै ॥
जो उर बिमल बुद्धि ठहराई । तौ आनंद सिंधु लहराई ॥
उठी अनंद सिंधु की लहरें । जस मुकता ऊपर ह्वै छहरें ॥
छहरि छहरि छिति मंडल छायो । सुनि सुनि बीर हियौ हुलसायो ॥

दोहा ।

दान दया घमसान में, जाकै हियै उछाह ।
सोही बीर बखानियै, ज्यौं छत्ता[2] छितिनाह ॥ ४ ॥

छन्द ।

भूमिनाह कौ बंस बखानौं । सबही आदि भान कौ जानौं ॥
एक भान सब जग कौ तारौ । जहाँ भानु सै देसि उज्यारौ ॥
सुर नर मुनि दिन अंजलि बांधै । करत प्रनाम भगति कौ कांधै ॥
एकचक्र रथ पै चढ़ि धावै । सकल गगन मंडल फिरि आवै ॥
साठि हजार असुर नित[3] मारै । धरम करम दिन प्रति बिस्तारै ॥
कमल क्यौं न मुसक्याइ निहारै । लच्छि देत कर सहस पसारै ॥
करनि बरष जल जगत जिवावै । चोर कहूं संचार न पावै ॥
काल बांधि निजु गति सौ राख्यौ । एक जीभ जस जात न भाष्यौ ॥

१—पहिर = वास्तव में पैर—उत्तीर्ण होना, पैरना, तरना ।

२—छत्ता = महाराज छत्रशाल का प्यार का घरेऊ नाम ।

३—कहा जाता कि जलाञ्जलि पाने से सूर्य्यदेव साठ सहस्र दैत्यों का नित्य विनाश करते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

भाष्यौ जात न जासु जस , ऐसै उदित दिनेस ।
ताकै भयौ महा बली , मनु उद्दंड नरेस ॥ ५ ॥

छन्द ।

मनु अनेक मानस उपजाये । यातै मानव मनुज कहाये ॥
बरनौं ताकौ बंस कहाँ लौं । जगत बिदित नरलोक जहाँ लौं ॥
तिन में छिति छत्री छबि छाये । चारिहुं जुगन होत जे आये ॥
भूमि भार भुजदंडनि थंभे । पूरन करै जु काज अरंभे ॥
गाइ बेद दुज के रखवारे । जुद्ध जीत के देत नगारे[१] ॥
परम प्रवीन प्रजन कौ पालै । भीर परै न हलाये हालै ॥
दान हेत संपति कौ जोरै । जस हित परनि खग्ग गहि तोरै ॥
बांह छांह सरनागत राखै । पुन्य पंथ चलिबौ अभिलाषै ॥

दोहा ।

प्रगट भयौ तिहि बंस में , रामचंद्र अवतार ।
सेतु बांधि कै जिन कियौ , दसमुख कुल संघार ॥ ६ ॥

छन्द ।

रामचंद्र के पुत्र सुहाये । कुस लव भये जगत जे गाये[२] ॥
कुस कुल कलस भये छबि छाये । अवधि पुरी नृप घनै गनाये ॥
तिन में दानजूझ सिरताजा । हरिब्रह्म कुलथंभन राजा ॥
हरिब्रह्म कुलतिलक प्रवीनै । महीपाल जस जाहिर कीनै ॥
महीपाल उद्दित सुत पाये । नृप-कुल-मनि भुवपाल कहाये ॥
तिनके कमल चंद जग जानै । सूरन के सिरमौर बखानै ॥
तिनके चित्रपाल मरदानै । बुद्धिपाल जिन सुत उर आनै ॥
नंद विहंगराज तिन जाये । अवधि पुरी नृप सात बताये ॥

१—नगारे = डंका । २—गाये = प्रख्यात हुए ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

बिहंगेस नृप कै भये, कासिराज सिरताज ।
अवधि पुरी तैं उमड़ि जिन, कीनौ कासी राज ॥ ७ ॥

छन्द ।

कासिराज नृप मनि छबि छाये । कासी बैठ सुजस बगराये ॥
तिनके कुल जेते नृप आये । काशीश्वर ते सबै कहाये ॥
गहिरदेव नंदन तिन पाये । भुव पर प्रगट सुजस बगराये[1] ॥
तिनके बंस भये नृप जेते । गहिरवार कहियत सब तेते ॥
गहिरदेव के पुत्र बखानौ । विमलचंद जग जाहिर जानौ ॥
राजा नाहुचंद तिन जाये । जिन दौरन[2] दिगपाल हलाये ॥
गोपचंद तिनकै सुत ऐसे । करन दधीच धरमधुर जैसे ॥
तिनके गोबिंदचंद गरूरे । दान जूझ बलि बिक्रम पूरे ॥

दोहा ।

टिहनपाल तिन के भये, परम-धरम-धुर-धीर ।
बिंध्यराज तिन उर धरे, जे गुन में गंभीर ॥ ८ ॥

छन्द ।

बिंध्यराज नृप सुत उपजाये । सोनिकदेव देव से गाये ॥
ताकौ पुत्र प्रगट जग मांही । बीझलदेव धरम कौ छांही ॥
अर्जुनवर्म पुत्र तिन पाये । जुद्ध मध्य अर्जुन ठहराये ॥
तिनके बीरभद्र नृप जानौ । छत्र धरमधुर धरन सयानौ ॥
बीरभद्र नृप के सुत सूरे । भये पाँच बल बिक्रम पूरे ॥
चारि पुत्र पटरानी जाये । लहुरी[3] रानी पंचम पाये ॥
चारि पुत्र के नाम न जानौं । पंचम नृप कौ बंस बखानौं ॥
बीरभद्र नृप सुजस बगारे । पुहुमि पालि सुरलोक सिधारे ॥

१—बगराये = फैलाये । २—दौरन = आक्रमण ।
३—लहुरी = छोटी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

बीरभद्र सुरलोक कौ , गये सुजस जग माड़ि[1] ।
पुहमी पंचमसिंह कौ , बाल बहिक्रम छांड़ि ॥ ९ ॥

छन्द ।

पंचम बाल बहिक्रम जान्यौ । लोभ चहूँ बंधुन उर आन्यौ ॥
पंचम की पुहमी उन छीनी । बाँटि चार हीसा[2] करि लीन्ही ॥
बंधुन दिये दुःख इमि भारे । गृह तजि पंचमसिंह सिधारे ॥
छाड़त गेह बड़ी दुचताई[3] । कित जैये को होइ सहाई ॥
यह संसार कठिन रे भाई । सबल उमडि निर्बल कौ खाई ॥
छनिक राज संपति के काजै । बंधुन मारत बंधु न लाजै ॥
जीवन तनकु पाप अधिकारे । धन जोबन सुख तुच्छ निहारे ॥
निघटत आपु न जानत अंधे । माया के बंधन सब बंधे ॥

दोहा ।

माया के दिढ़ बंध सौं , बंध्यौ सकल सँसार ।
बूड़त लोभ समुद्र में , कैसे पावे पार ॥ १० ॥

छन्द ।

पार लोभ सागर कौ नाहीं । भ्रमत सबै माया भ्रम माहीं ॥
सो माया चैतन्य बखानी । आनन्दमयी ब्रह्म की रानी ॥
उपजावत ब्रह्मांड अलेखै । काल ब्रह्म खेलत जिन देखै ॥
जोगनींद ह्वैकै तिहि भोये । दुगधउदधि नारायन सोये ॥
उहि ब्रह्मा भयभीत उबारे । प्रगट माहिँ मधुकैटभ मारे ॥
दलजुत महिषासुर संघारे । देवन के सब काज सँवारे ॥
धूमनैन उद्धरनि भवानी । चंडमुंड खंडन जग जानी ॥
रक्तबीज खप्पर भर खाये । रन में सुंभ निसुंभ ढहाये ॥

१—माड़ि = स्थापन करके अर्थ में आता है ।
२—हीसा यह अर्बी शब्द हिस्सा का अपभ्रष्ट है = भाग ।
३—दुचताई—दुचिताई होना चाहिए = चिंता, मतिभ्रम ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

वहै योगनिद्रा भई, नंदगोप घर जाइ ।
होनी कहिकै कंस सौं, बसी विंध्य पर आइ ॥ ११ ॥

छन्द ।

विंध्यबासिनी सुनियत नामैं । देत सकल मन वांछित कामैं ॥
ताकै सरन जाइ ब्रत लीजै । मन बंछित फल पूरन कीजै ॥
एहि विचार पंचम उर जान्यौ । मन क्रम बचन भगतिरस सान्यौ ॥
बिमल गंगजल मंजन कीन्हौ । दरस बिंध्यबासिनि कौ लीन्हौ ॥
तीनौ ताप देह तैं छूटे । परम भक्तिरस के सुख लूटे ॥
हरषित गात रोम उठि आये । बंछित फल मन तन जन धाये ॥
छलकि[1] नीर नैननि भरि आये । दुरित दुःख तिन संग बहाये ॥
करुनारस छाई जगमाई । भक्ति हेत उर अंतर आई ॥

दोहा ।

मृदु मूरति जगमाइ की, रही ध्यान ठहराइ ।
एक पाइ पंचम खड़े, भूख प्यास बिसराई ॥ १२ ॥

छन्द ।

भूख प्यास पंचम कौ भूली । त्रिकुटी लगी समाधि अतूली ॥
सात द्यौस इहि रीति बितीते । पंचम इन्द्रिन के गुन जीते ॥
सुनी गगन मंडल धुनि[2] ऐसी । लहिहौ भूमि आपनी वैसी ॥
सुनि पंचम नृप उत्तर दीनौ । भुवहित हौं न परिश्रम कीन्हौ ॥
उलटि गगन धुनि गगन समानी । कछु प्रसन्नता पंचम मानी ॥
बहुर सात बासर त्यौं बीते । लागे होन मनोरथ रीते[3] ॥
तब पंचम नृप करवर[4] काढ्यौ । निज सिर देत भगतिरस बाढ्यौ ॥
काटन कंठ लग्यै हटि ज्यौंही । उठि कर गह्यौ भवानी त्यौंही ॥

१—छलकि = उमड़ करि । २—धुनि = ध्वनि ।
३—रीते = शून्य, ख़ाली । ४—करवर = कस्वाल, खड्ग, कृपाण, तलवार ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

त्यौंही करुनारस भरी , गहे भवानी हाथ ।
जै जै करि बरषे सुमन , सुरनि सहित सुरनाथ ॥ १३ ॥

छन्द ।

जै जै धुनि नभ मंडल मंडी । कर करवार छुड़ावति चंडी ॥
जब करवर झुक झोरि[1] छुड़ायौ । कछुक घाउ पंचम सिर आयौ ॥
तातैं रुधिर बुंद इक छूट्यौ । मनहुँ गगन तैं तारा टूट्यौ ॥
छिति पर परयौ छलिक छबि जाग्यौ । जननि हियौ करुणारस पाग्यौ ॥
सीस दुलाइ बुंद वह देख्यौ । साहस अतुल भक्त कौ लेख्यौ ॥
करुनारस जल थल सरसायौ । सिर ससिकला अमृत बरसायौ ॥
बरस्यौ अमृत बूँद पर ज्यौंही । उपज्यौ कुँवर तहाँ तै त्यौंही ॥
उमग्यौ हियौ कुमार निहारे । छुटी पयोधर ते पय धारे ॥

दोहा ।

छुटी पयोधर धार तै , कुँवर कियौ पय पान ।
विंध्यबासिनी उमगि उर , लगी देन बरदान ॥ १४ ॥

छन्द ।

लगी देन बरदान भवानी । फुरै[2] समर में सदा कृपानी ॥
बढ़ै बंस जग माह अन्यारौ । छत्र धर्मधुर कौ रखवारौ ॥
तुव कुल राज अखंडित रैहै । जो सताइहै सो मिटि जैहै ॥
दरपुस्तनि[3] है नृप भारी । दान कृपान मरद[4] प्रनधारी ॥
प्रथमहि राज आपनौ पावौ । परभुव भोगनहार कहावौ ॥
यह कहि हाथ माथ पर राखे । पुहमी प्रगट बुंदेला भाखे ॥
पाइन परि पंचम बर लीन्हौ । मन बंछित जननी फल दीन्हौ ॥

१—झुक झोरि = झकझोरि, झटका देकर । २—फुरै = फलीभूत हो ।
३—दरपुस्तनि = शाखान्तरों में, पीढ़ी पीढ़ी ।
४—मरद—मर्द = वीरता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगट्यौ बुंदेला बरदाई। भयौ समर कौ उमडि सहाई॥
अतुल जुद्ध बंधुनि सौ बीत्यौ। पंचम राज आपनौ जीत्यौ॥
पंचम यदपि पुत्र बहु पाये। पै कुलतिलक बुंदेला गाये॥

इति श्री लाल कवि विरचिते छत्रप्रकाशे
बुंदेलाजन्मवर्णनोनाम प्रथमोऽध्यायः॥१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूसरा अध्याय

दोहा ।

बरदाइक बुंदेल जब , भयो प्रगट रनधीर ।
गहिरवार पंचम जसी , काशीश्वर नृप बीर ॥ १ ॥

छन्द ।

बीर विंध्य की देवी पूजी । किहि न बीर की कीरति कूजी ॥
बीर जीत पूरब दिसि लीन्हो । बीर दौर पच्छिम कौ कीन्हो ॥
सत्तर खान बीर सौ हारे । अरु उमराउ बहत्तर मारे ॥
बीर करे अपनै मन भाये । सबल सत्रुदल खेत खपाये ॥
बीर समर झारी[1] करवालै । जीती कारी पीरी ढालै ॥
बीर कठिन कालिंजर[2] लीन्हौ । बीर कालपी[3] थानौ दीन्हौ ॥

१—झारी = चलाई, प्रहार किया ।

२—कालिंजर—बुंदेलखंड के बांदा नामक प्रान्त के समीप यह स्थान है । कालिंजर प्राचीन काल से एक अति प्रसिद्ध तीर्थस्थान गिना जाता है, इसकी गणना नव ऊखलों में है । यहां का दुर्ग इतिहास में परम प्रसिद्ध रहा है और यहीं चंदेल वंश के मूलपुरुष महाराज चंद्रब्रह्म की पूज्या माता हेमवतीजी ने काशी से आ कर निवास किया था ।

३—कालपी—यह नगर बुंदेलखंड का द्वार करके प्रसिद्ध है और यमुना के तट पर बसा है । यह कहा जाता है कि वेदव्यास भगवान् कृष्णद्वैपायन की माता मत्स्योदरी यहीं रहती थीं और यहीं भगवान् वेदव्यास का जन्म हुआ था । भारतीय इतिहास में यह नगर भी कालिंजर के समान प्रसिद्ध रहा है और वर्तमान काल में भी बुंदेलखंड की प्रसिद्ध मंडियों में से है । पद्मावति काव्य के रचियिता मलिक-मुहम्मद जायसी के विद्यागुरु शेख़ बुढ़न यहीं के निवासी थे और उनकी समाधि अद्यापि यहां बनी है । कविवर कमलापति मिश्र यहीं के निवासी थे उनके वंशज मालवीय मिश्र अद्यापि यहाँ हैं । राजकवि पद्माकर जी भी समय समय पर यहीं रहा करते थे । सम्राट् अकबर के परमप्रिय चतुर मंत्री महाराज वीरबलजी भी यहीं जन्मे थे । उनके राज्यप्रासादों के भग्नावशेष अब तक रंगमहल आदि नामों से यहां पुकारे जाते हैं परन्तु अब वे सब प्रासाद नितान्त ध्वंस होकर खँडहर रूप में हमें दृष्टिगोचर होते हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोऽयौं बीर सत्रु कै पानी। करी महौनी[1] में रजधानी॥
ऐसौ बीर बुंदेला गायौ। परभुव लोहाधार कहायौ॥

दोहा।

बीर बुंदेला के भये, करन भूप बलवंत।
दान जूझ कौ करन सौ, भुवनदलन दलवंत॥ २॥

छन्द।

तिनके अर्जुनपाल बखानै। सहनपाल तिनके सुत जानै॥
बुधि बल गढ़ कुठार[2] तिन लीनौ। अमल[3] जतहरा[4] में पुनि कीनौ॥
तिन सुत सहज इन्द्र से पाये। सहजइन्द्र जग मांह कहाये॥
तिन के भये पुत्र मन भाये। नौनिकदेव देव से गाये॥
पृथु सम पृथीराज तिन जाये। तिनके रामसिंह छवि छाये॥

१—महौनी—इसका शुद्ध नाम मुहौनी है। जालौन प्रान्त के कोंच परगने में यह स्थान मऊ मुहौनी के नाम से पुकारा जाता है और बुंदेल वंश की आदि राजधानी है। जनख्याति में अद्यापि यह स्थान "बड़ीगद्दी" करके प्रसिद्ध है और अब कुटिल काल के दंड से प्रहारित हो यह प्राचीन राजधानी एक साधारण ग्राम के रूप में वर्त्तमान है।

२—गढ़कुठार—वास्तव में गढ़कुँडार है। यह स्थान ओरछे अथवा ओड़छे के समीप है। बुंदेलों के अधिकार में आने से प्रथम इसमें खंगारों का राज्य था। खंगार बुंदेलखंड में बहुतायत से रहते हैं और पतित जातियों में इनकी गणना है। यह किसी काल में बड़ी प्रबल जाति के लोग गिने जाते थे और बड़े उद्भट वीर होते थे। इनकी आदि राजधानी गढ़कुंडार में थी। वर्त्तमानकाल में ये बहुधा चौकीदारी, साईसी व किसानी का काम करते हैं और उपद्रवी भी समझे जाते हैं।

३—अमल = अधिकार।

४—जतहरा—यह स्थान टीकमगढ़ (ओड़छा) राज्यान्तरगत जी० आई० पी० रेलवे के मऊ रानीपुर स्टेशन के निकट है और ऐतिहासिक स्थान है। यहां ब्रह्मी बूटी बहुत पैदा होती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिनके रामचन्द्र सुत ऐसे। जनक जजाति[1] प्रियव्रत जैसे॥
ताको पुत्र जुद्धरस भीनो[2]। भयो मेदिनीमल्ल प्रवीनो॥
तिनके अर्जुनदेव गरूरे। मल्लुसान तिन के सुत सूरे॥

दोहा।

मल्लखान कौ नंद भौ, रुद्रप्रताप अतूल।
नगर ग्रौंडछौ जिन रच्यौ, खोद खलनि कौ मूल॥ ३॥

छंद।

पुत्र प्रतापरुद्र उपजाये। प्रथम भारतीचन्द कहाये॥
दूजे मधुकरसाहि बखाने। उदयाजीत जगत जग जाने॥
कीरतिसाहि कीर्त्ति जग छाई। लीन्हे भूपतिसाहि भलाई॥
आमनदास उदित जसु लीन्हो। चंदनदास चंद्र सम कीन्हो॥
दुर्गादास दुवन* दल भंजे। घनस्याम सज्जन मन रंजे॥
प्रागदास परवीन प्रतापी। भैरादास मजाही[3] थापी॥
खांडेराय खुसाल सदाई। ये जगविदित बारहौ भाई॥
दान जूझ बल विक्रम पूरे। समर-धीर गंभीर गरूरे॥

दोहा।

रुद्रप्रताम नरिंद के, विदित बारहौ नंद।
थपे ग्रौंछड़े नगर में, बड़े भारतीचंद॥ ४॥

१—जजाति = ययाति राजा। २—भीनो = सना हुआ, भरा हुआ।

*यह शब्द या तो दुष्टन या दुश्मन का अपभ्रंश है या लेख-दोष से "यवन" का दुवन हो गया है।

३—मजाही—यह फ़ार्सी शब्द जमजाही का संक्षिप्त रूप है जो जम और जाही दो शब्दों के योग से बना है। जम शीदईरान का प्रबल सम्राट था जिसका नाम जमशीद प्रसिद्ध था। उसी का संक्षिप्त नाम जम है। जाही का अर्थ पद है अर्थात् जमशीद का सा पद अर्थात् प्रतिष्ठित पद या साम्राज्य।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छन्द

जेठे पुत्र बैांछड़े राखे । करे काज मन के अभिलाषे ॥
थम्भे भुजन भूमि भर भारी । नृप कुठार[1] कौ करी तयारी ॥
खेलत चले शिकार सलौनी । मेटी मिटै कौन सो होनी ॥
जोजन एक शहर तैं आये । नदी उतर बन सघन मझाये ॥
तहां बाघ इक गाइ पछारी । सो करुना[2] करि सुरन पुकारी ॥
कानन परत दीन वह बानी । पहुंच्यौ नृप कर कढ़ी कृपानी ॥
सिर धरि छत्र धर्म्म कौ बानौ[3] । हांक्यो[4] बाघ उठ्यौ विरझानौ[5] ॥
गरजत दुवौ[6] परस्पर जूटे । संगहि प्रान दुहुन के छूटे ॥

दोहा ।

रुद्रप्रताप नरिंद तनु , तज्यौ गाइ के काज ।
परम उच्च आसन दियौ , सुरनि सहित सुरराज ॥ ५ ॥

छन्द ।

सुरन सहित सुरराज सिहानै । पुन्य प्रतापरुद्र अधिकानै ॥
करि अभिषेकु औाड़छे छाये । भूप भारतीचंद्र कहाये ॥
पुन्य पाल जग जसु बगरायौ[7] । इक हरि ही कौ सीस नवायौ ॥
तेइस बरस राज नृप कीनौ । धरनि छांड़ि सुरपुर सुख लीनौ ॥
उपज्यौ नहीं पुत्र मन भायौ । मधुकरसाहि राज तब पायौ ॥
उदयाजीत आदि दै भाई । सबै भूप कौ भये सहाई ॥
प्रजा पाल पुर पुन्य बढ़ाये । दान जूझ जिनके गुन गाये ॥
अरतिस बरस राज नृप कीन्हौं । निस दिन रह्यौ भगतिरस भीनौ ॥

दोहा ।

जाकै उदयाजीत से , भाई सदा सहाइ ।
जस प्रताप ता नृपति कौ , कहौ कौन अधिकाइ ॥ ६ ॥

१—कुठार = गढ़कुँडार । २—करुणा = आर्तनाद । ३—बानो = भेष ।
४—हांक्यो = ललकारा । ५—विरझानौ = क्रोधित होकर । ६—दुवौ = दोनो ।
७—बगरायो = फैलाया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छन्द ।

उदयाजीत उदित नर देवा । जिन उदयाचल किया महेवा[1] ॥

१—महेवा = यह स्थान बुंदेलखंड के छत्रपुर राज्यान्तरगत है और नौगांव छावनी से चार मील पर पूर्व की ओर मऊ महेवा के नाम से प्रसिद्ध है। इसके चारों ओर कोट बँधा है। बुंदेलवंश की पूर्वीय शाखा की यही आदि राजधानी है। इसके कोट के भीतर सीताफल (शरीफ़ा) के वृक्षों का अगम्य वन है और धुवेलाताल के उत्तर तट पर बुंदेलकुल केशरी प्रातस्मरणीय महाराज छत्रसाल के राज्यप्रासाद बने हुए हैं। चिरकालीन होने से ये राजमंदिर अति जीर्ण हो गये थे परंतु छत्रपुराधीश श्रीमान् परम सुयोग्य महाराज विश्वनाथ-सिंह जू देव महोदय ने उनका जीर्णोद्धार करा दिया है। इस राज्यप्रासाद की अटारी से प्रातःकाल के समय धुवेलाताल का दृश्य अत्यंत मनोहर होता है। सीतल समीर का संचार, पक्षियों का कलरव, निर्मल जल पर बालार्क का प्रकाश, कमलवन का विकाश चित्त पर एक ऐसा प्रभाव डालता है जो वर्णन नहीं हो सकता, केवल देखने ही पर निर्भर है। इसके अतिरिक्त और भी बहुत से अनूपम राज्यप्रासादों के ध्वंस इसी कोट के भीतर पड़े हैं। धुवेलाताल के पश्चिम तट पर महाराज छत्रसाल की परमप्रिय महारानी कमलापति का समाधि मंदिर है जिसका गोल शिखर मीने से निसि दिवस चमचमाता रहता है। यह समाधिमंदिर अपने ढंग का अनूठा ही मंदिर है। इसी तड़ाग के पूर्व तट पर महाराज छत्रसाल जी का समाधि मंदिर है जिसका कुछ भाग अपूर्ण रह गया है। उसके निकट ही एक और छोटा सा स्थान है जहां पर महाराज छत्रसाल की सेज है। महेवा अब उजाड़ दशा में है। यहां वृक्षों के नीचे ठौर ठौर पर बारहवीं शताब्दी की बहुत सी जैनमूर्तियों के खंडों के ढेर हैं और कहीं कहीं बौद्ध मूर्तियों के भी खंड मिलते हैं और ऐसा जान पड़ता है कि चंदेलवंशीय महाराजों के समय में भी यह स्थान कोई प्रतिष्ठित स्थान रहा है। यहां से एक मील उत्तर—पूर्व की ओर चल कर महाराज छत्रसालजी के कनिष्ठात्मज, महाराज जगतराजजी का जिनके वंश में अद्यापि चरखारी आदि राज्य हैं, सुदीर्घ विस्तृत जगतसागर नामक तड़ाग है। यह तड़ाग वास्तव में पर्वतों की तलहटी की एक विस्तृत झील है। इसके तट पर भी बारहवीं शताब्दी की बहुत से जैनतीर्थंकरों की प्रतिमाएं जिनकी चरण चौकियों पर प्राचीन काल के लेख हैं रक्खी हैं और एक विशालगढ़ी के भग्नावशेष हैं। यहीं पर "बुंदेला बाबा की बैठक" नाम का एक विहार सा पड़ा है जो हमें किसी बौद्धविहार का अवशेष जान पड़ता है। इसी तड़ाग से वर्तमान काल में एक नहर निकाली गई है जो एक बड़े भूमि भाग को सींचती है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुद्ध मध्य उद्धत अरि मारे। दे दे दान दरिद्र बिदारे॥
ता सुत प्रेमचन्द मरदानौ। पूरन चन्दा के सम मानौ॥
जहां समर मारू सुर बाजै। तहां अरुन आनन छवि छाजै॥
कैयक[1] अरिदल सिंधु बिलोड़ै[2]। धाइ घनै घट ही में ओड़ै॥
लीलतु फिरै[3] लोह की लपटैं। अगवै[4] कौन सिंह की झपटैं॥
मुगल पठान जुद्ध में जीते। भरे कालिका खप्पर रीते[5]॥
साहिसेन[6] झकझोर हलायौ। साहिझार कौ बिरद बुलायौ॥

दोहा।

साहिझार बिरदैत मनि, प्रेमचन्द के नन्द।
पुहमी में परगट भये, तीनौ आनँदकन्द॥७॥

छन्द।

प्रेमचन्द के नन्द बखानै। कुंवरसेन जग जाहिर जानै॥
जिन सिमिरहा[7] अलंकृत कीनौ। करि करि दान जूझ जसु लीन्हो॥
दूजे मानसाहि मरदानै[7]। दौरनि दपटि दुवन[8] जिन भानै॥
दान कृपान बुद्धि बल चांडे। बैठि साहिपुर[9] जिन जस मांडे॥
और भागवतराइ रँगीले। सत्रुन साल समर सरमीले॥
कियौ महैवा जिन रजधानी। कीरति बिदित जगत में जानी॥

१—कैयक = कितने ही। २—बिलोड़े = मथे। ३—लीलत फिरै = खाते फिरते हैं। "लीलत फिरै लोह की लपटैं" से अभिप्राय है कि वह समरभूमि देख करि उत्साहित होते हैं और शस्त्रप्रहार को सम्हालते हैं। ४ अगवै—आगे बढ़कर लेवे, अभिप्राय सम्हालने से है। ५—रीते = खाली। ६—साहिसेन झकझोर हलायो। साहिझार को विरद बुलायो।—से अभिप्राय है कि उन्होंने बादशाह की सेना को झकझोर डाला और उसे रणभूमि से विचलित कर दिया जिसके कारण उन्हें यह विशद यश प्राप्त हुआ कि वह "साहिझार" के उपनाम से पुकारे जाने लगे।

६—सिमिरहा—स्थान विशेष। ७—मरदाने = वीर। ८—दुवन—दुश्मन का रूपान्तर है। ९—साहिपुर—स्थान विशेष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ए तीनौ भाई छबि छाजै। ब्रह्मा विष्णु रुद्र से राजै ॥
तीनौ अगिन तेज उर आनौ। तीनौ नैन रुद्र के जानौ ॥

दोहा।

कुलमंडन परसिद्ध अति, भयो भागवतराइ।
ताके पूरन पुन्य में, लगे चारि फल आइ ॥ ८ ॥

छन्द।

ताके पुन्य चारि फल लागे। खरगराइ अरु चन्द सभागे ॥
सुभट सुजानराइ सुखदाई। सब कौं चम्पतिराइ सहाई ॥
चारिउ भैया उदभट जानौ। चारिउ भुजा विष्णु की मानौ ॥
चारिउ चरन पुन्य छबि छायो। चारिउ फलन देन जनु आयो ॥
हिंदवान सुरगज उर आनौं। ताके चारयो दंत बखानौं ॥
चारौ अंग चमू जिन राखी। चारयौ समुद जीति अभिलाषी ॥
अंतःकरन चारि हुलसाये। चारिउ चक्र सुजस बगराये ॥
हरि के आयुध चारि गनाये। ते जनु छिति रक्षन को आये ॥

दोहा।

जद्यपि आयुध विष्णु के, चारयौ छबि उद्दाम।
पै दानव दल दलन कौं, गदा चक्र सौं काम ॥ ९ ॥

छन्द।

जदपि गदा की बड़ी बड़ाई। पै कछु और चक्र की घाई[1] ॥
गदा समान सुजान बखानौ। चम्पतिराइ चक्र उर आनौ ॥
गनै कौन चम्पति की जीतैं। गनपति गनै तऊ जुग बीतैं ॥
साहिजहां उमडौ घन घोरा। चम्पति झंझापौन[2] झकोरा[3] ॥
साहि कटकु झकझोर झुलायो। गिल्यौ[4] बुंदेलखंड उगिलायो[5] ॥

१—घाई = ढंग, वारी, ओर, शक्ति। २—झंझापौन = बवंडर।
३—झकोरा = झोंका खाया हुआ, निगला हुआ। ४—गिल्यौ = निगला हुआ।
५—उगिलायो—आतंक दिखा कर छीन लिया, लौटा लिया, फेर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चम्पति करौं साह सौ ऐड़ैं। पैठि न सक्यौ मुगल दल मेड़ैं[1]॥
सूबा जिते साहि के चांडे[2]। चम्पतिराइ घेरि सब डांडे॥
बुधि बल चम्पति भयौ सहाई। आलमगीर[3] दिली[4] तब पाई॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे बुंदेलवंशवर्णनं नाम द्वितीयोऽध्यायः॥ २॥

१—मेड़ैं = मेड़ पर, निकट। २—चांडे = बलवान।
३—आलमगीर—औरंगजेब। ४—दिली = दिहली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीसरा अध्याय

दोहा ।

चंपतिराइ नरिन्द के, प्रगटे पांच कुमार ।
मंडे कुल बरम्हंड[1] में, जिनके जस बिस्तार ॥ १ ॥

छंद ।

पांच पुत्र चंपति के जानौ । प्रथम सारवाहन उर आनौ ॥
अंगदराइ रतन मन मानै । छत्रसाल गोपाल बखानै ॥
तिन में छत्रसाल छबि लीनी । निज बस भूमि भावती कीनी ॥
तौ गुन छत्रसाल के गैयै । कैयक सहस जीभ जो पैयै ॥
रन अंगद अंगद गुन भारे । कीनै जग में सुजस उज्यारे ॥
जाकी तेग अरस[2] में डूलै । बाजतु सारु हनु सौ फूलै
लीनी कैयक बिकट लराई । अरि की चमू अनेक हराई ॥
दुवन जीत दक्षिन के लीने । दिल्लीपति के कारज कीने ॥

दोहा ।

कीने काज दिलीस के, लीने बिजै अनेक ।
अंगद चंपतिराइ के, धरी धर्म की टेक ॥ २ ॥

छंद ।

रतनसाहि निरमल गुन पूरे । परम समर्थ समर अति सूरे ॥
आखेटक के जिते ठिकाने । जल थल अन्तरिक्ष के जाने ॥

---

१ बरम्हंड से ब्रह्मांड का अभिप्राय है ।

२ अरस—फार्सी अर्श = आकाश ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रगट महेबा में रन कीनौं। अरि की फौज फारि जसु लीनौं॥
अंगद रन ता दिन बढ़ि जाने। गुनन बड़े छत्रसाल बखाने॥
तिन तैं लघु गोपाल गनाये। सीलवंत सन्तन मन भाये॥
जबहिं समर मंह सैल[1] उछालै। हिरदौ देखि काल को हालै॥
सब भैयन की कथा बखानै। छत्रसाल तै जुदी न जानै॥
छत्रसाल की कथा सुहाई। समै समै तिन में सब आई॥

दोहा।

जदपि नदी पानिप भरी, अपने अपने ठांउ।
पै गंगा में मिलत हीं, गंगा ही को नांउ॥ ३॥

छंद।

गंगा त्रिपथगामिनी जैसी। छत्रसाल की कीरति तैसी॥
सब सुर नर नागन की बानी। गावत बिमल पवित्र बखानी॥
गावत पार न पावहिं कोई। अरब खरब आनन किन होई॥
जैसे उड़ै बिहंग तहां लौं। देखत गगन बिसाल जहां लौं॥
गुन अनन्त मुख एक हमारे। चपल चित्त थोरी मति धारे॥
चाहत है एते पर तैसी। सतकबि मति की पदबी जैसी॥
अगम पंथ कौ बुधि बिलसाई। ह्वैहै जग इहि भांति हँसाई॥
ज्यौं बामन ऊचे फल चाहै। चरननि उचकि उठावै बांहै॥

दोहा।

उचकै हूं पहुंचै नहीं, बाहैं उच्च उठाइ।
लोग हँसी के रस भरे, देखत कौतुक आइ॥ ४॥

छंद।

जो कौतुक उर धरि जग लोई। सुनिहैं सरस कथा सब कोई॥
सरस कथा सुनि हिय हुलसावै। सब कौ छत्रसाल गुन भावै॥
सब जग में जेती मति जाकै। उर उछाह तेते गुन ताकै॥

---

१ सैल = सांग, लोहे की मोटी नोकदार सलाका और बीच में त्रिशूल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपनी मति माफिक सब गावै। गुन कौ पार न कोऊ पावै॥
जौ पै पार गुननि कौ नाहीं। ज्यों सहसानन त्यों हम आहीं॥
छत्रसाल के चरित उज्यारे। मेटत कुल कलिकाल अँध्यारे॥
कुलमण्डन छत्रसाल बुंदेला। आपु गुरू सिगरौ जग चेला॥
छत्रसाल चंपति के ऐसे। बरने कश्यप के रवि जैसे॥

दोहा।

कश्यप कौ रवि गाइये, कै दशरथ कौ राम।
कै चंपति कौ चक्कवै[1], छत्रसाल छबिधाम॥ ५॥

छंद।

छत्रसाल के गुनगन गाऊँ। पूर्व जन्म की कथा सुनाऊँ॥
एक समय हजरत[2] फरमायो। बाकी खान बली चढ़ि आयौ॥
समर खेलु चंपति सौं माच्यो। बाजत मारु[3] रीझि हर नाच्यौ॥
छुटि छुटि भिरै दुवौ दल बांके। लोथनि[4] पटे[5] गिरिन के नाके॥
चंपतिराइ कलह कौं कांधे। बैठे बिकट बिरद कौं बांधे॥
जेठे पुत्र सुभट छबि छाये। नाम सारबाहन जे गाये॥
जान जुद्ध अमनैक[6] अढ़ाये। खैलहार ता समय पठाये॥
बांकी खां कौ कटक उमंड्यौ। बँधे घाट कौ मारग छंड्यौ॥

दोहा।

घाट छांडि औघट[7] धरयो, कुँवर सुनै जिहिं ठौर।
बाकी खां के कटक की, भई तहां कौ दौर[8]॥ ६॥

छंद।

खैलहार पर फौजैं धाईं। कैयक सहस अचानक आईं॥
कुँवर सारबाहन छबि छाये। खेलन सहज ताल में आये॥

१—चक्कवै = चक्रवर्ती। २—हज़रत = शाहजहां से अभिप्राय है।
३—मारु = मारुबाजा, रणवाद्य। ४—लोथनि = लाशों से।
५—पटे = भर गये। ६—अमनैक = हठी, हठीला।
७—औघट = दुर्गम मार्ग, कुघाट। ८—दौर = अक्रमण।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तबहीं बरष चौदही लागी। बुद्धि बाल खेलन में पागी॥
खोलि हथ्यार तीर में राखे। जल के अतुल खेल अभिलाखे॥
एकन कौं धरि एक ढकेलै। सलिल उछाल परस्पर मेलै॥
एकै भजै पहर कै काछै[1]। एकै लगै लपक करि पाछै॥
निकट जानि तन बूड़ि बचावै। छल सौं जल में छुवन न पावै॥
चरन चपेट चलावत चूकै। तिन को देत सबै मिलि कूकै॥

दोहा।

या बिध अति आनँद भरे, कुँवर करैं जलकेल।
बाकी खाँ उचका परयौ, उदभट कटक सकेल॥ ७॥

छंद।

फौज अचानक निकट हँकारी। खलभल आइ खेल में पारी॥
कुँवर कढ़े जल तैं सर भीनै[2]। आइ हथ्यार तीर में लीनै॥
हांके मुगल ताल की जोरी। भजें बिडरि बालक चहुँ ओरी॥
कुँवर सारबाहन बल बाढ़े। तमकि तीर तरकस तैं काढ़े॥
काढ़े तीर बीर जब ऊठ्यौ। सर समूह सत्रुन पर छूट्यौ॥
बखतरपोस[3] हला[4] करि धाये। कुँवर अडोल हलै न हलाये॥
अरुन रंग आनन छबि लीनी। तानि कमान कुण्डलित कीनी॥
छूटे बान बज्र से बांके। फूटे सुभट निकट जे हांके॥

दोहा।

झिली[5] फौज प्रतिभट गिरे, खाइ घाउ पर घाउ।
कुँवर दौरि परबत चढ्यौ, बढ्यौ जुद्ध कौ चाउ॥ ८॥

१—काछे = काछनी, लंगोट, जांघिया।
२—भीने = भीगे हुए।
३—बखतरपोश—कवचधारी।
४—हला = हल्ला, शोर।
५—झिली = आक्रमण किया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छंद ।

समिटि फौज आई रन भूमै । घाइल घने परे जहँ धूमै ॥
मुगल पठान प्रान बिन देखे । बिक्रम अतुल कुँवर के लेखे ॥
बाकी खां देख्यो दल भान्यो । प्रगट कुँवर चंपति कौ जान्यो ॥
बोल्यो तमकि कटकु[1] सब धावै । पकरो कुँवर जान नहिं पावै ॥
बखतरिया[2] ढालै दै आगै । हय तजि पिले[3] बीररस पागै ॥
प्रतिभट पिले निकट जब आये । कुँवर अडोल बान बरसाये ॥
इक इक बान दुइ भट फूटै । झुकि झुकि तऊ चहूँ दिस जूटै ॥
कुँवर एक सहसन धरि धाये । ज्यौं बैरिन अभिमन्यु दबाये ॥

दोहा ।

रुक्यौ कुँवर अभिमन्यु ज्यों, महारथिन के बीच ।
सारु झारि रिपु रुधिर की, बिरचि मचाई कीच ॥ १ ॥

छन्द ।

माची कीच सारु[4] जब बाज्यौ । कुँवर अरुन आनन छवि छाज्यौ ॥
खग्ग झारि एकन कौ काटै । एकन हरषि हांक दै डाटै[5] ॥
धाइ खाइ न अघाइ[6] हठीलौ । उमग्यौ भिरतु समर सरमीलौ ॥
कौतुक लषत भान रथ रोपे । बिडरयौ[7] कटकु कुँवर के कोपे ॥
बिडरतु कटकु वीर जे बांके । झार हथ्यार हरषि हठि हांके ॥
कुँवर मार[8] में सनमुख पैठ्यो । सूरज भेदि बिमाननि बैठ्यौ ॥

१—कटकु = कटक । २—बखतरिया = कवचधारी ।

३—पिले = घुस पड़े, टूट पड़े, धसे ।

४—सारु = यह शब्द सार से बना है जिसके अर्थ तत्त्व के हैं। यहां लोहे के सार, फौलाद से जिससे शस्त्र बनते हैं अभिप्राय है और शस्त्र के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है ।

५—डाटै = ललकारै । ६—अघाइ = तृप्त होवे ।

७—बिडरयो = भागा । ८—मार = युद्ध ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेगन लगि तन तनक न बांच्यौ। रन में रुद्र सीस लै नाच्यौ॥
सुरन पुहुप बरषा बरषाई। जैमाला हूरन[1] पहिराई॥

दोहा।

सजी आरती सुरबधुनि, उमग्यो अमर समाजु।
कुँवर सारबाहन लियौ, बीरलोक को राजु॥ १०॥

छन्द।

बीरलोक आनँद अति छाये। समाचार चंपति पैं आये॥
सुन्यौ कुँवर रन सज्या सोयौ। सोक बढ़े माता अति रोयौ॥
तब माता कौ सपनौं दीनौ। समाधान नीकी बिधि कीनौ॥
मोहि बैर म्लेच्छ सौं लीवै। औरौ काज अपूरब कीवै॥
तातैं फिरि अवतारहिँ लैहौं। ह्वै फिरि प्रगट तुम्हें सुख दैहौं॥
और माइ की कूख नवीनी। सो मैं आइ अलंकृत कीनी॥
यह सुनि कै माता सुख पायौ। सपनौ अपनो प्रगट सुनायौ॥
भई प्रतीत कछुक दिन बीते। सांचे भये सुपन चित चीते[2]॥

दोहा।

चित चीते सांचे भये, सुपन माइ के चारु।
प्रगट्यौ चंपतिराई के, छत्रसाल अवतारु॥ ११॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे छत्रशाल नृपतेः
पूर्वजन्मकथावर्णनं नाम तृतीयोऽध्यायः॥ ३॥

१—हूर = अप्सरा। २—चीते = चेते हुए, अभीष्ट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौथा अध्याय ।

छन्द ।

छत्रसाल जनम्यौ जब माई । धुनि गंभीर रुदन में पाई ॥
घूँघरवारी घनी लटूरी[1] । देती आनन कौ छवि पूरी ॥
मनौ भ्रमर की पांति सुहाई । अमृत पियन उड़पति पैं आई ॥
ऊँच्यौ भाल विशाल विराजै । कनक पट्ट कैसी छवि छाजै ॥
लसतु अष्टमीचंद किधौं है । बखत[2] भूप कौ तख्त मनौ है ॥
नैन विसाल असित सित राते । कमलदलन पर अलि जनु माते ॥
भुजा विसाल जानु लौ आये । भुवभर मानहुँ लेत उठाये ॥
उन्नत नखनि लसत अरुनाई । बक्ष कपाटनि की छवि छाई ॥

दोहा ।

चक्कवतनि[3] के चिह्न सब, अंगन अंगन राखि ।
छत्र धर्म जब औतरयौ, सामुद्रिक[4] दै साखि[5] ॥ १ ॥

छन्द ।

जनम्यौ पुत्र उठी यह बानी । धन्य धरी सबही वह मानी ॥
दुंदुभि बजे लोक सुखदानी । आठो दिसा प्रसन्न दिखानी ॥

१—लटूरी = लटैं, अलकैं ।

२—बखत = फ़ारसी शब्द व.ख्त = भाग्य ।

३—चक्कवतिन = चक्रवर्तियों ।

४—सामुद्रिक = वह विद्या है जिसके द्वारा शरीर पर के वाह्य चिह्नों से किसी पुरुष का भविष्य जाना जाता है ।

५—साखि = साक्षी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जातकर्म कीन्हें सुख मूले। अमर पितर नर उर अति फूले॥
उमग भरे नर नारी गावैं। पिता तुरग नग कोष लुटावैं॥
सतकवि बदन नची बर बानी। भिक्षुक भौंन लच्छमी रानी॥
किरति नची जगत मन भाई। बिमल जौन्हसी[1] छबि छुटकाई॥
लिख्यौ छठी में सत्व सचाई। दान जूझ बल बूझ बड़ाई॥
मन करतूति करम के ऊँचे। जिन सम तखततपी न पहुंचे॥

दोहा।

ईस नखत अनरूप अरु, अरथवंत परिनाम।
जनमपत्र तातैं लिख्यौ, है छत्रसाल यह नाम॥ २॥

छन्द।

प्रगट पासनी[2] में छबि छाई। भुवभर सहित कृपान उठाई॥
ता दिन कबिन कवित्त बनाये। दिये दान तिनकौं मन भाये॥
घुटुनुन चलत घूंघुरू बाजै। सिंजित सुनत हंस हिय लाजै॥
गहि पलका की पाटी डोले। किलिकि किलिकि दसननि दुति खोले॥
विहँसत उठत भोर ही जागै। निरखत को न हियै अनुरागै॥
खेलत लेत खिलौना आछे। धावत किलिकि छांह के पाछे॥
रुचि सौं तकत तुरग जे नीके। बिहँस लेत मुजरा[3] सबही के॥
दिन दिन बढ़ै बढ़ाइ अनंदा। जैसे सुकलपक्ष कौ चंदा॥

दोहा।

खेलन बोलन चलन में, सब कौं देत अनंद।
बालापन तैं बढ़ि चली, दिन दिन बुद्धि बुलंद[4]॥ ३॥

१—जौन्ह = चन्द्रमा। २—पासनी = अन्नप्राशन।
३—मुजरा = अभिवादन। ४—बुलंद—फ़ार्सी शब्द बलंद = उच्च, उत्कट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छन्द ।

बढ़ी बुलंद बुद्धि कछु ऐसी । या जुग मांह नाहिनै जैसी ॥
जबहीं बरष सातई लागी । अदभुत बुद्धि भगतिरस पागी ॥
राजत पुर जगबिदित महेवा । तहां होत रघुबर की सेवा ॥
राजत रामचन्द्र रस भीने । सुन्दर धनुष बान को लीने ॥
त्यौंही लछमन रूप सुहाये । धनुषबान लीने छवि छाये ॥
सीता सरस रूप तनु धारे । भूषन बसन सिँगार सिँगारे ॥
बालगुविंद तहां अति सोहै । घुटुनुन चलत चित्त को मोहै ॥
माखन कौ लोंदा[1] कर माहीं । मुकुट सीस छवि कही न जाहीं ॥

दोहा ।

सिंहासन ऊपर सबै, सोहत अदभुत रूप ।
भगति धरै दरसन करै, पंचम चंपति भूप ॥ ४ ॥

छंद ।

तहं उभबेार आरती साजै । झालर[2] झांझ संख बर बाजै ॥
बालक वृद्ध तरुन तंह आवैं । नर नारी सब दरसन पावैं ॥
छत्रसाल दरसन कौ जाहीं । बाल सुभाइ धरे मन माहीं ॥
अनिमिष[3] रूप अनूप निहारैं । चेतन जानि चित्त निरधारैं ॥
इनिके संग खेलिबो भाई । तौ यह बात भली बनिआई ॥
अपनौ धनुष देह जौ मांगै । घरिकु खेल कीजै इन आगै ॥
जौलौं सब दरसन कौं आये । तौलौं बोलत नाहिँ बुलाये ॥
टरि जैहैं[4] जब सबै इहां तैं । तब ये भली कहैंगे बातैं ॥

दोहा ।

इत उत ये चितवत नहीं, मंद मंद मुसकात ।
सीता सैं चाहत कह्यौ, कछू रसीली बात ॥ ५ ॥

१—लोंदा = गोला । २—झालर = घंटा, घरयार ।
३—अनिमिष = इकटक, पलक झुकाये बिना । ४—टरि जैहैं = हट जावेंगे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छंद ।

मैं अनिमिष दिन द्वेक निहारे । तब पंडा[1] बूझै करि न्यारे ॥
ऐ ठाकुर बोलत क्यौं नाही । है धौं जीव नाहिँ इन मांही ॥
तब पंडन ये बचन सुनाये । ये त्रिभुवनपति हैं छबि छाये ॥
बालक बुद्धि कुंवर तुम मांही । ये ठाकुर कहुं बोलत आंही ॥
यह सुनिकै अचिरज चित बाढ़े । भये आइ दरसन कौ ठाढ़े ॥
ये बिचार चित मेँ ठहरानै । इनके ब्यौत[2] सबै हम जानै ॥
नजर बचाइ सबनि की लैहैँ । तब ये सीता ओर चितैहैँ ॥
तातैँ अब हौं पलक न लाऊं । ये चितवैँ तब हँसौं हँसाऊँ ॥

दोहा ।

यह बिचार छत्रसाल चित, रहै चितै अनिमेष ।
आंखिन तैँ भरि भरि तहां, आंसू बगरि[3] अलेख ॥ ६ ॥

छंद ।

भरि भरि आंसू ढरि ढरि[4] आवै । छत्रसाल नहिं पलक लगावै ॥
देखत दसा सबै मिलि ऐसी । यह यों भई कुंवर कौं कैसी ॥
उमग्यो प्रेमसिंधु उर मांही । कौतुक सबै बिलोकत आंही ॥
बिहसत रामचंद्र मन मोहै । तकै[5] न सीता तन तिरछोहै ॥
तब मन में यह बात बिचारी । ऐ सकुचे मन में धनुधारी ॥
अब जौ बालगुबिंदहिं पाऊं । जौ खेलैं तो इन्हैं खिलाऊं ॥
माखन खात इन्हैं लखि लैहौं । औरो मांगि धाइ सौ दैहौं ॥
जो ये नचन कैसहू आवै । लटकत मुकट अतुल छबि छावै ॥

दोहा ।

यह छबि बालगुबिन्द की, हियै रही ठहराइ ।
माया के उपजे तहां, गये प्रपंच बिलाइ ॥ ७ ॥

१—पंडा = पुजारी । २—ब्योंत = ढ़ंग, काट छांट ।
३—बगरि = फैलाकर । ४—ढरिढरि = लुढ़क लुढ़क कर । ५—तकना = देखना ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छंद ।

सब प्रपंच माया के छूटे । बंधन बिदित त्रिगुन के टूटे ॥
आनँदसिंधु लहरि बढ़ि आई । प्रेम उमगि कछु कही न जाई ॥
ज्यौं ज्यौं उमगि प्रेम चित राच्यौ । त्यौं त्यौं बालगुबिंदा नाच्यौ ॥
डोला सीस मुकट छबि छावै । लटकि लटकि आसन पर आवै ॥
पगतर तार पगन पर पारै । छत्रसाल अनिमेष निहारै ॥
जे सिगरे दरसन कौं आये । तिन मन में अचिरज ठहराये ॥
नाचत बालगुबिंदे देखे । अनहोनी के लक्षन लेखे ॥
पंडा अति संभ्रम उर पागे । तुरतहिं तब पौढ़ावन[1] लागे ॥

दोहा ।

यद्यपि बालगुबिंद जू, राखे हैं पौढ़ाइ ।
नाचे तदपि घरीक लौं, संपुट पगन बजाइ ॥ ८ ॥

छंद ।

संपुट बजै सुनै सब कोई । सबकी बुद्धि अचंभै भोई ॥
छत्रसाल उर प्रीति बढ़ाई । इच्छा पूरी होन न पाई ॥
पंडा तुरत कहां तैं आये । घरिकु गुबिंद न नाचन पाये ॥
ढिग बुलाइ अपनै हौं लेतौ । घर तै मांगि मिठाई देतौ ॥
ये सुख पाइ मिठाई खाते । मेरे ढिग तैं कहूं न जाते ॥
पंडन आनि बिघन यह कीनौ । घरियकु नाच न देखन दीनौ ॥
इहि बिधि अतुल मनोरथ बाढ़े । निरखत रहे घरिक[2] लौं ठाढ़े ॥
प्रेम प्रतीति प्रीति उर पागे । नाचे छुटक भगत के आगे ॥

दोहा ।

चेतन तन नाचे हुते, ब्रजबनितन के संग ।
छत्रसाल के प्रेम ते, नचे अचेतन अंग ॥ ९ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे छत्रशालबालचरित्र
बालगोबिंदनृत्यबर्णनं नाम चतुर्थोध्यायः ॥ ४ ॥

१—पौढ़ावन = सुलाने । २—घरिक = कुछ काल तक, अथवा एक घड़ी तक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाँचवाँ अध्याय ।

छंद ।

एक जीभ हौं कहा गनाऊँ । कछू कथा संक्षेप सुनाऊँ ॥
एक समै दिल्लीपति कोप्यौ । पग न[1] जुझार सिंह नै रोप्यौ
अरब खरब लौं हुते खजानै । सो न जानियै कहां बिलानै ॥
साठि हजार सुभट दल फूट्यौ । कोऊ कहूं न मारिउ छूट्यो ॥
साहिजहान देश सब लीनौ । कियौ बुँदेलखंड बल हीनौ ॥

दोहा ।

हीनौ[2] देखि बुँदेल बल, दीन प्रजन के काज ।
चंपतराइ सुजान मिलि, कियौ मंत्र तिहिँ राज ॥ १ ॥

छंद ।

कछू कालगति जानि न जाई । सब तैं कठिन कालगति गाई ॥
रीती[3] भरे भरी ढरकावै । जो मनु करै तौ फेर भरावै ॥
कीजै कहा नृपति नहिं बूझै । काल ख्याल काहू नहि सूझै ॥
साठि हजार सुभट लै भागे । काहू के न जगाये जागे ॥

१—अर्थात् रणभूमि में पग रोपने का जुझारसिंह ने साहस न किया और शाहजहाँ की सेवा स्वीकार करके बुंदेलखंड और बुंदेलवंश की स्वाधीनता का नाश कर दिया ।

२—हीनो = निकृष्ट, दुर्बल, दीन । ३—रीती = शून्य, खाली ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिरे मुलक में मुगल गदेले। सिंहन की सु थरी[1] गज खेले॥
जाकौ वैरी करै बचाई। सेा काहेकौ जनम्यौ माई॥
अब उठि के यह मंत्र बिचारेा। मुलकु उजार लक्ष संहारेा॥
ज्ञान गनंता पौरुष हारे। सेा जीते जेा पहिले मारे॥

दोहा।

यहै मंत्र ठहराइ कै, उमड़े दोऊ वीर।
दीनों मुलकु उजारि कै, ऐसे अति रनधीर॥ २॥

छंद।

लाये[2] मुलक उठाये थाने। सुनि सुनि साहि बहुत मुरझाने॥
नौसेरी सूबा पहिरायौ। पीठल गौर सहाइक आयौ॥
सुनि बाइस उमराइ उमंडे। थाने छोड़ ओड़छे मंडे॥
बिरझ्यौ[3] चंपतिराइ बुंदेला। फौजन पर कीन्हौ बगमेला[4]॥
जबै कमान कुंडलित कीन्ही। कठिन मार तीरनि की दीन्ही॥
तीछन तीर बज्र से छूटे। बखतरपोस पान से फूटे॥

१—यहां कवि का अभीष्ट यह है कि "वीर भूमि शिरोमणि बुंदेलखंड की वीरप्रसवनी भूमि में घृणित और अपावन मुगल आकर आनंद से विचरने लगे, हाय इस कायर जुझारसिंह की कायरता से इस वीर भूमि की यह दशा होगई कि मृगराज के विहार कानन में उसके भक्ष गज, मृगराज के न होने से, आनंदमय विचरने लगे।

२—लाये = जला दिये।

३ विरझ्यौ = सम्मुख हुआ, उलझा। ४ बगमेला किया—अर्थात् भीषण रूप से आक्रमण किया। मेल देने के अर्थ छोड़ देने, डाल देने अथवा मिला देने के हैं और बगमेल से अभिप्राय यह है कि घोड़ों की बागों को नितान्त ढीला करके घोड़ों को सरपट दौड़ा कर शाही सेना पर टूट पड़ा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फौज फारि चंपति रन जीत्यौ। अरि पर प्रलै काल सम बीत्यौ॥
मोर गौर की फौज हराई। मुगल सँहारि करी मन भाई॥

दोहा।

मारयौ ठिल सहिबाजखां[1], दियो ओंड़छौ[2] बारि[3]।
फते फतेखां सों लई, बाकी खान सँहारि॥ ३॥

छन्द।

मारि लूट सब फौज हराई। सूबा दिल में दहसत खाई॥
चहूँ ओर तैं सूबा घेरौ। दिसनि अलात चक्र सौ फेरौ॥

---

१ सहिबाजखां, शुद्ध शब्द शहबाज़खां है। यह शाहजहां की सेना का नायक था। इसने बाक़ीखां फ़तहखां बंगस आदि सेनानायकों के साथ बुंदेलखंड पर आक्रमण किया था।

२ ओड़छा, ओड़छा अथवा ओर्छा, वर्तमान टीकमगढ़ राज्य की प्राचीन राजधानी है। यह स्थान झांसी से पूर्व छः मील के अंतर पर बेतवा तट पर बसा है। इसी ओर्छाधीश वीरकेशरी महाराज वीरसिंहदेव ने प्रबल सम्राट अकबर का दर्प दमन करने को उसके प्रिय मंत्री अबुलफ़ज़ल का शिरोच्छेदन आंतरी की घाटी में किया था। कविकुल गुरु केशवदास मिश्र इसी ओर्छे में जन्मे थे। ओर्छा यद्यपि राजधानी न रहने से छबिहीन हो रहा है तथापि नौचौकिया फलबाग, रघुनाथ जी के मंदिर, चतुर्भुजजी के मंदिर, ओर्छे के दुर्गम दुर्ग, और अन्यान्य राज्य-प्रासादों के दृश्य से उसका ऐतिहासिक महत्व अद्यापि जीवित है।

३—वारि दियो = जला दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरी सिरौंज[1] भेलसा[2] भाग्यौ। धर[3] उज्जेन[4] धरधरा[5] लाग्यौ॥
ह्वांते धमकि[6] धमौनी[7] मारी। गोपाचल[8] में खलभल पारी॥
सकल मुलक नहिँ जात गनाये। चामिल[9] तैं रेवा लौं लाये॥

१—सिरौंज मध्यभारत का एक नगर है।

२ भेलसा, यह नगर ग्वालियर राज्य का एक सूबा है और भारतवर्ष का एक अत्यंत प्राचीन ऐतिहासिक नगर है। कहा जाता है कि कविवर भवभूति यहीं जन्मे थे। मुसलमानों ने इस नगर को ध्वंस कर दिया था। बौद्धकाल में यह नगर बड़ी उन्नति पर था, यहाँ पर अब भी महाराज अशोक के समय के बहुत से स्थानों के खंडहर पड़े हैं और प्रसिद्ध सांची के स्तूप भी इसी के समीप हैं। यहाँ प्राचीन-काल में एक अनूपम मंदिर भगवान भुवन-भास्कर का था और सोमनाथजी के मंदिर के समान श्रीसम्पन्न था। कहा जाता है कि दुराचारी शहाबुद्दीनगोरी ने उसे तोड़ा था। "वाल" सूर्य का नाम है और उसी वाल से यह भेलसा बना है। प्राचीन विदिशा का यही नगर राजधानी था, इसी के निकट प्राचीन "बैसनगर" नामक नगर के खंडहर पड़े हैं।

३—धर = वर्तमान धार अथवा धारानगरी।

४—उज्जैन, यह नगर जगत प्रसिद्ध महाराज विक्रमादित्य की राजधानी था। वर्तमान काल में महाराज ग्वालियर के मालवे नामक सूबे की राजधानी है। हमें इसके विशेष परिचय देने की आवश्यकता नहीं क्योंकि जो लोग, महाराज विक्रमादित्य और कविकुलगौरव कालिदास के नाम से परिचित हैं वे उज्जैन से पूर्णतया परिचित हैं और जो इनके नामों और चरित्रों से परिचित नहीं हैं हमारी समझ में वे इसके पात्र ही नहीं है कि उन्हें उज्जैन (प्राचीन अवंती) से परिचय कराया जाय।

५—धरधरा लगना = कँपकँपी लगना, थर्राना। ६—धमकि = धावा करके। ७—धमौनी = शुद्ध नाम धामौनी है, यह नगर सागर के निकट मध्यभारत में है। ८—गोपाचल—ग्वालियर का प्राचीन नाम है। ९—चामिल = चम्बल नदी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पजरे[1] सहर साहि के बाँके। धूम धूम में दिनकर ढाके॥
सब उमराइन चौथ चुकाई। ओड़े[2] कौ चंपति की घाई[3]॥
लिखी खबर बाकिन[4] ठिठकाई[5]। पातसाह कौ बांच सुनाई॥

दोहा।

चंपति के परताप तै, पानिप गयौ ससाइ।
पैसेरी भरि रहि गयौ, नोसेरी उमराइ[6]॥ ४॥

छन्द।

सुनत साहि फिरि भेजी फौजें। उमडी दरिया कै सी मौजें[7]॥
खानजहाँ सूबा चढ़ि आयौ। त्यौंही सैदमहम्मद[8] धायौ॥
बली बहादुरखान हँकायौ। अरु अबदुल्लहखाँ पग धायौ॥
और संग उमराइ घनेरे। आये उमडि काल के पेरे॥
डंका आइ देस में कीनो। मुगल पठान जुद्ध-रस भीनो॥

१—पजरे = निकट के, समीपस्थ। २—ओड़ना = सम्हालना।

३ घाई—धावा, प्रहार। ४—बाकिन = गुप्त समाचार देनेवाले, पर्चे-नवीस। यवन बादशाहों के समय में एक प्रकार के दूत प्रत्येक सूबेदार के साथ में तथा युद्ध के समय में सेना के साथ में गुप्त रूप में रहते थे। इन्हें अख़बार नवीस कहते थे। राज्य दर्बार में इनकी बड़ी प्रतिष्ठा होती थी। इन्हीं लोगों को हिन्दू राजसभाओं में "बाकिन" अर्थात् वाक्य-लेखक कहते थे।

५ ठिकठाई = ठीक ठीक। ६—"पैसेरी भर रहि गयो नौसेरी उमराव" अर्थात् वह (शाही सर्दार) प्रतिष्ठित नायक जिसका नाम नौसेरी उमराव था महाराज चंपतराय के प्रताप से भयभीत होकर ऐसा सूख गया कि नौसेरी के ठौर पैसेरी भर रह गया अर्थात् अब वह अपने पूर्व रूप, बल पौरुष में इतना घट गया है कि नौ सेर के बदले पाव भर हो गया है। ७ मौजैं = तरंगैं, लहरैं।

८—सैदमहम्मद = सैयद मुहम्मद।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज रासो।

यह हिन्दी साहित्य का सब से प्राचीन ग्रन्थ है जो अब तक प्राप्त हुआ है। इसमें कवि ने भारतवर्ष के अन्तिम क्षत्री सम्राट् राजा पृथ्वीराज का जीवनवृत्तान्त विस्तारपूर्वक लिखा है जो आदि से अन्त तक विचित्र घटनाओं से भरा हुआ है। इतिहास प्रेमियों के लिये तो यह ग्रन्थ अनमोल रत्न है। इसकी भाषा कुछ कठिन है अतः सभा ने समस्त ग्रन्थ के सारांश को सरल हिन्दी भाषा में इसके साथ ही साथ छपवाया है जिससे मूल ग्रन्थ के पठन पाठन में बड़ी सहायता और आनन्द मिलता है। मनोरञ्जक तो यह इतना है कि कहीं से कोई पृष्ठ उठा कर दस पांच पंक्तियाँ पढ़िये फिर कदापि आप समस्त ग्रन्थ पढ़े बिना नहीं रह सकते। जिन हिन्दी प्रेमियों ने इस ग्रन्थ को अब तक नहीं लिया है उन्हें इसकी एक प्रति अवश्य लेनी चाहिए। इसके ६९ पर्व्व २२ भागों में छपे हैं जिनका मूल्य २४) है। प्रत्येक भाग जुदा जुदा भी मिल सकता है। मूल्य १॥) के लगभग है।

अन्य उपयोगी पुस्तकें।

हम्मीर रासो (रणथंभौर के वीर शिरोमणि महाराज हम्मीर देव का जीवनचरित) २)
हम्मीर हठ ,, ॥)
जंगनाम (दिल्ली के बादशाह बहादुर शाह के पुत्रों का युद्ध) ॥)
इन्द्रावती १॥)
कवि आनन्द घन कृत बिरहलीला=)
भूषण ग्रन्थावली (प्रसिद्ध कवि भूषण के शिवराज भूषण, शिवा बावनी आदि ग्रन्थ) १॥=)
सुजान चरित्र २)
भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवनचरित्र ॥=)
महिला मृदुबाणी (भारतवर्ष की विदुषी स्त्रियों की संक्षिप्त जीवनी) १)
हिम्मत बहादुर विरुदावली (बांदा के प्रसिद्ध वीर हिम्मत बहादुर का चरित्र) १)
नन्द दास की रासपंचाध्यायी ।=)
अखरावट ।=)
यूरोपीय दर्शन (यूरप के दर्शन शास्त्र का इतिहास) ॥)
परिचर्याप्रणाली (रोगी की शुश्रूषा करने की विधि) ।)
संक्षेपलेखप्रणाली अर्थात् हिन्दी शार्टहैण्ड १)
महाराणा प्रतापसिंह (नाटक) ॥)

ये सब पुस्तकें मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से मिल सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीर्ण व अजीर्ण के दस्त की दवा।

खाना पचानेवाले रसों के घटने बढ़ने वा विकार से अजीर्ण रोग होता है जिसके ये लक्षण हुआ करते हैं—खाने के बाद पेट

भारी जान पड़ना, पेट में वायु होना, जी मिचलाना, खट्टी वा व्यर्थ डकार आना, छाती जलना, मुंह में पानी भर आना, पेट में थोड़ा थोड़ा दर्द होना, चित्त की ग्लानि, आलस्य आदिक। जब तक खाना हजम की थैली में रहता है और पाचनक्रिया कठिनता से होती रहती है यही हालत होती है। जब यह अनपचा खाना अँतड़ियों में उतर जाता है तब पेट में गड़गड़ाहट होती है, पेट फूलता है व दस्त की चेष्टा होती है। दस्त पतला वा पानी के ऐसा होता है। कभी कभी खाने के थोड़ी देर पीछे ही दस्त हो जाता है। दस्त होने से शरीर क्षीण होता है। ये सब हालतें कभी कम, कभी अधिक होती रहती हैं और महीनों तक चलती हैं। रोगी का शरीर दिन पर दिन गलता जाता है। अन्त को असाध्य हो जाता है।

शरीर की साधारण पुष्टि का घट जाना इस रोग का कारण है। नीचे लिखी हुई हालतों में ऐसाही होता है—

वृद्ध अवस्था, कोई विशेष रोग के बाद कमज़ोरी, कम खाना (जैसा कि व्रत, लङ्घन, पारण आदिक में लोग करते हैं), धातु के व्यर्थ नष्ट होने से क्षीणता, अधिक श्रम, दुश्चिन्ता वा शोक, प्रसव के विकार से कमज़ोरी।

इन विषयों को विचार कर डाक्टर बर्म्मन ने अजीर्ण की दवा बनाई है। खाना हज़म करने व अजीर्ण के दोषों को मिटाने में इसकी विशेष शक्ति है। यह दवा छोटी छोटी टिकिया की ऐसी बनी हुई है। पंदरह रोज़ के सेवन योग्य ३० टिकिया की एक शीशी का मोल १।) रुपया। डाक महसूल १ से ४ शीशी ।-) आने।

डाः एस, के, बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थ संख्या ४९] [पुस्तक संख्या २३, २४

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक, श्यामसुन्दर दास, बी० ए० ।

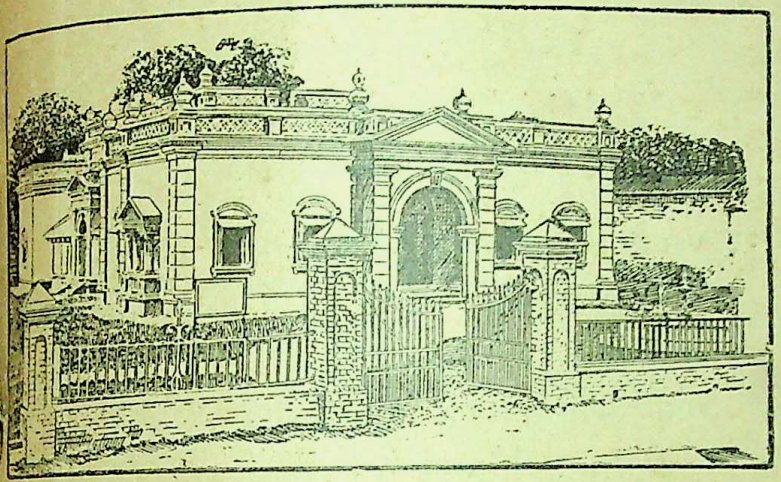

FASCICULUS NO. 49.] [BOOK NO. 23, 24.

NAGARI PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR

SYAM SUNDAR DAS, B.A.

PUBLISHED BY

THE NAGARI PRACHARINI SABHA,

BENARES.

मूल्य प्रति संख्या ॥) [*Price per fasciculus As. 8.*

ISSUED ON THE 25TH SEPTEMBER, 1914.

PRINTED BY APURVA KRISHNA BOSE AT THE INDIAN PRESS,

ALLAHABAD

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका।

(२३) परमाल रासो—बाबू श्यामसुन्दर दास सम्पादित। (पृष्ठ २०१–२३२ तक)

(२४) छत्रप्रकाश—बाबू श्यामसुन्दरदास और बाबू कृष्णबलदेव वर्म्मा सम्पादित (पृष्ठ ३३ से ६४ तक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढ़ि आयव चहुवान नृप , इतै कुंवर मुन ईस ।
वीय सैन रन आहुरे , कटत रुंड तन सीस ॥ ६३९ ॥

भुजंगी ।

लरै जुद्ध जोधा दुही क्रोध भारी ।
घले अत्र पै अत्र मारै हँकारी ॥
इकं इक्क धायं षगं व्याल षिल्लै ।
कटै सूर वीरं धरन्नी सुमिल्लै ॥ ६४० ॥

तबै हंकियं सूर ब्रह्मा कुमारं ।
चप्यौ डैंगरं वीर आयौ सुम्हारं ॥
उतै दोर पिज्जून आयौ सुजोधं ।
भये लथ्थ वथ्थं दुहू वीर जोधं ॥ ६४१ ॥

घलै वार मुक्की नहीं षग्ग टारै ।
गिरौ भूप पज्जून आयौ तमारै । ॥
धप्यो देवनर सिंह रीसं सुआयौ ।
हनौ डैंगरं सील तेगं सुचायौ ॥ ६४२ ॥

गिरयौ डैंगरं सकत सिंह झपट्यौ ।
दई सागरोसं दही सिसुं फुट्यौ ॥
धरयौ वीर जयसिंघ चहुवान केरौ ।
दई सीस सक्कं नहीं स्वगं हेरौ ॥ ६४३ ॥

धप्यौ छत्रसालं बली जोध आयो ।
दयो सीस जय सिंह के षग्ग चायौ ॥
तबै वीर रोसं बली कन्ह ठारौ ।
गिरं छत्रसाल लग्यो खेल्ह पूरौ ॥ ६४४ ॥

तबै पंचियम वीर जल्हन सुधायौ ।
बली तेज कन्हं सुबीचं गिरायौ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरे सूर चंदेल के भूम ठायं ।
इतै कन्ह आदिक्क सूरं उठायं ॥ ६४५ ॥

दोहा ।

इतै बीर चंदेल के , उतै बीर चहुवान ।
अप्प अप्प सैना गये , मुर्छा घायल आन ॥ ६४६ ॥
इत कोप्यो जोगीस मुनि , उत कोप्यो चहुवान ।
स्रवन मास किय पर्व कह , घाइल बीर अमान ॥ ६४७ ॥

छप्पय ।

बीय सैन सावंत भये घायल रन सूरह ।
भीम जंग रजपुत्र लरय करि विक्रम पूरह ॥
इक्क इक्क सो हलय बीर पग्गह नहि टारिय ।
रहे जंग थकि बीर भये मुर्छा रन भारिय ॥
नरनाह कन्ह चलि कोप करि सथ्थ सूर सैना घनी ।
इतहि चालिव कोप कर जोग वर जुरी आन तीछन अनिय ॥६४८॥

दोहा ।

गुरु आयस लघु जोगि चलि , उतहि कन्ह चहुवान ।
इतहि पिष्ट गुरु चालिया , उतहि पिष्ट चहुवान ॥ ६४९ ॥

भुजंगी ।

चल्यौ पिष्ट चहुवान नीसान बज्जै ।
मनौ मेघ आषाढ के नाद गज्जै ॥
उतै जोग सिंही सुमुष्षं बजावै ।
सुनै व्योम देवा सुमेघं लजावै ॥ ६५० ॥
जुरे वीर जोधा बजै राग मारू ।
कियै अप्छरी अक्ष आनंद चारू ॥
दुहू वीर नीसान बज्जै जुझाऊ ।
उटै जीव जोधा न जूझंत चाऊ ॥ ६५१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बजै डौर श्रंगी सुभेरी मृदंगा ।
बजै वांसुरी संग सहनाय जंगा ॥
बजै दुंदुभी ढोल तै जंग तूरं ।
लहै लोह सो भाग है बग्ग तूरं ॥ ६५२ ॥

हसै पेत दानै लसै भूम माही ।
फिरै देवि गौरा गहै पीव बाहो ॥
लियै संग वेताल भूतं सुताली ।
सुरापान कीन्हैं नचै मत्तवाली ॥ ६५३ ॥

नचै भूत भैरौं छुटे केस सीसं ।
करै जुग्गिनी पान विहसंत दीसं ॥
तहां गौर भरतार डौरू बजावै ।
लसै चंद्र माथै महा सोभ पावै ॥ ६५४ ॥

जुरी डीठ फौजं करै मार मारै ।
दुहू वोर सावंत कट्टै हथ्यारै ॥
चलै गोल तीरं मनौ मेघ धारं ।
लगै साथ हथ्थं सुवाजंत तारं ॥ ६५५ ॥

लगै बग्ग एकं गिरै सीस टुट्टै ।
कई वान सांगी दुहू वोर छुट्टै ॥
कटै सूर सावंत श्रंगं विहालं ।
पियै रक्त काली लई ईस मालं ॥ ६५६ ॥

परे भूमि घायल्ल झूमंत घाई ।
तिनें देषि सूरान कै चित्त चाई ॥
फटी वेपरी गूद फैलंत वैडी ।
मनो माझ मारग्ग फुट्टै दहैडी ॥ ६५७ ॥

घलै घाय वोलै रकत्तै भभक्कै ।
वहै एक लोहा हुमकी हुमक्कै ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुरे जोर जोधा भई मार भारी ।
लगै लोह थक्कै मनौ हार ज्वारी ॥ ६५८ ॥
तबै ब्रह्म जित्तं स्वयं अस्व दीनौ ।
चढौ लघ्घु जोगी सउत्साह कीनौ ॥
हर नागरौ बाज जोगीस पायौ ।
करै पग्ग जमकाल सौ जुद्ध ठायौ ॥ ६५९ ॥
तबै कर्न चहुवान बागै उठाई ।
परयौ ब्रंद पक्षी नमै बाजु जाई ॥
इतै जो गिनै अप्प तेजं धपायौ ।
मनौ सिंघ दंतीन पै क्रोध धायौ ॥ ६६० ॥
दुहू क्रोध जोधा सुदंती पचारै ।
गिरै भूप पाहार से ढाय डारै ॥
इकै जोध करि क्रोध बाजी उड़ावै ।
झिलै षग्ग षेलै हनै तेज तामै ॥ ६६१ ॥
दिषी सैन कट्टी बली कन्ह धायौ ।
करै रास जोगीस पै कूद आयौ ॥
इतै लष्ष जोगी सुतेजी चलायौ ।
जुरे भीम से जोध क्रोधं करायौ ॥ ६६२ ॥
तबै कर्न चहुवान सेल्हं उबारौ ।
मनौ इंद्र करि कोप वज्रं सम्हारौ ॥
घल्यौ सेल्ह जोगीस पै चित्त चाई ।
लगौ सेल्ह हीकं भ्रमौ चक्र षाई ॥ ६६३ ॥
तबै कोप किरवान जोगीस लिन्नी ।
दई कन्ह के सीस धायं नविन्नी ॥
गिरयौ जान कन्हं सुकयमास धायं ।
करी रीस जोगीस सर षग्ग नायं ॥ ६६४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल्यौ बीर षग्गं सिरं टोप टुट्यौ ।
हन्यौ सेल्ह कयमास सीना सुफुट्यौ ॥
परयौ भूम कयमास सर्वं सुधाए ।
श्रवन तान कम्मान बानं चलाए ॥ ६६५ ॥

धप्यौ लघ्घु जोगी करं षग्ग लिन्नौ ।
सतं बीर के सीस दो दो सु दिन्नौ ॥
वहै श्रोनतं अंग तैं धार छुट्टै ।
मनौ जावकं माठ धरनी सुफुट्टै ॥ ६६६ ॥

परे भूम सूरं सु अघ्घाय घायं ।
अनी चाहुवानं तबै चाल षायं ॥
तबै बीर चावंड धाधू सुधायं ।
अनी चाल रक्कं तनं तेज तायं ॥ ६६७ ॥

तबै चंपियं बीर चावंड रायं ।
कहा पाय चंदेल कीनो सहायं ॥
तबै जोगियं बीर बुल्ले जुवानं ।
महावीर धानुर्धरी चाहुवानं ॥ ६६८ ॥

भिली फौज चंदेल कौ देश लुट्यौ ।
कियौ भूरि संग्राम सैना सुकट्यौ ॥
कछू काल चंदेल कौ लौन षायँ ।
चप्यौ संक जानी सु किन्नी सहायं ॥ ६६९ ॥

सुनै बैन चावंड उर क्रोप छायौ ।
बली बाह उद्दंड सेल्हं चलायौ ॥
लग्यौ सेल्ह कंगाल सौ टार दिन्नौ ।
पकर बाह चावंड कौ षिंच लिन्नौ ॥ ६७० ॥

हनी हीक असिपुत्र करिवार भारी ।
कियौ मूर्छा वीर भुव मध्य डारी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तबै धाधुवं बीर करि क्रोध धायौ ।
हनौ सेल्ह जोगी सकै सीस वायौ ॥ ६७१ ॥
कट्यौ टट्टरं घाय अंतं न आयो ।
तबै जोगियं बैन सर्वं सुनायौ ॥
अहो वीर सम्हार सेल्हं हमारयौ ।
दियौ आजु करतार कालं तुम्हारयौ ॥ ६७२ ॥
तुमं पात साही सबै जुद्ध जीते ।
सतं सूर मुर्छा तुमं काल बीते ॥
तबै धाधुवं वीर बुल्लै जुबानं ।
तुमं जान जोगी सुरथ्यौ गुमानं ॥ ६७३ ॥
इतै जोगियं हथ्थ नेजा सुलिन्नौ ।
महारीस कर हीक में जाय दिन्नौ ॥
लग्यौ नेज सन्नाह फुट्यौ सरीरं ।
गयौ हंस उड़ि व्योम लोकं गहीरं ॥ ६७४ ॥
भगी फौज पीथल्ल की जोग जानं ।
गयौ अस्व झेलं जहां चाहुवानं ॥
हन्यौ राजपीलं गिरयौ भूप आयं ।
पकरि जोग हथ्थं सुराजै उठायं ॥ ६७५ ॥
तबै आय गुरुचंद बानी उचारौ ।
अहो जोग ईसं सुराजै न मारौ ॥
सुनौ ब्रह्मभट्टं कही जोग वत्तं ।
नहीं धर्म म्हां कौ करौ राज छत्तं ॥ ६७६ ॥
तबं राज गुरचंद बेगं उठायं ।
भयौ राज मुर्छा सुपीलं चढ़ायं ॥
कहै चंद जोगं बडौ जुद्ध किन्नौ ।
भगी फौज जो जन्न चालं परिन्नौ ॥ ६७७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

मुर्छा तै राजा उठै , लिय गुरुचंद पुकारि ।
लघु जोगी सत सूर हनि , मम सुपील भुव डारि ॥ ६७८ ॥
धन्य जोग धनि मातु पित , धन्य धरन अवतार ।
सूर धरन पर डार दिय , मम सुधरनि थर डार ॥ ६७९ ॥

छप्पय ।

भगिय चमुव चहुवान इक्क जोजन पर मिल्लिय ।
बीस सहस रजपूत वीय सैना कटि भल्लिय ॥
ईस रचिय उरमाल सूर मुर्छा सू जग्गिय ।
कोप करिय सावत जंग भोरह कह लग्गिय ॥
इम कहत चंद गुरुराम विय सुनहु भूप सम्हर धनिय ।
यह श्रवन मास किय पर्व कह जंग जित्त जोगिन अनिय ॥६८०

दोहा ।

सुन बचन्न गुरचंद के , चाहुवान कर कोप ।
भोर हनौ जोगी सबै , बचै न पुर जम लोक ॥ ६८१ ॥
लघु जोगी रन जीत कै , सिंगी दीन बजाय ।
अप्प सैन मह आइयौ , ब्रह्म कुंवर सुष पाय ॥ ६८२ ॥
सर्व सैन जोगी सु सब , ब्रह्म कुंवर के संग ।
नृप चँदेल ढिग आइयौ , जिम बढ़ सिंध तरंग ॥ ६८३ ॥
ब्रह्म कुंवर कह देषि नृप , लिय सो कंठ लगाय ।
सुवन दिष्ष माता सुमिल , मुहुर मुहुर उर लाय ॥ ६८४ ॥
जोगिन के नृप मल्हन दे , चहत चरन लपटाय ।
अदकर जोगी हथ्थ गहि , नृप लिय कंठ लगाय ॥ ६८५ ॥

छप्पय ।

बदत मल्हन दे रानि सुनहु जोगीस ईस मुनि ।
सैर सूर सत डारि कीन चहुवान पील धुनि ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लघु जोगी जस कहिय बचन झूठे नहि भष्पिय ।
करहु सपत मम ईस राज अंगह तुव रष्पिय ॥
मुष जो गूद चिन्ह जोगीसि किय मिलिय सु रानी जायकै ।
दसराज सुवन उद्दल सु तुम करिव भेष लपटाय कै ॥ ६८६ ॥

दोहा ।

रानी सौ उदराज कहि, स्वामि धर्म चितु लाय ।
अल्हन सी लष्षन कुंवर, किन्नी ब्रह्म सहाय ॥ ६८७ ॥
नहि माता जाहिर करहुँ, म्हां विनया चित रष्षि ।
तुव संकट हम भेष धरि, उद्द बचन ए भष्षि ॥ ६८८ ॥

वाचनीक—रानी उद्दल कौ चीन्हौ । तब अल्ह ने मल्ह से विनया करी । कै जे छत्री हो कै राजा कौ संकट सुनि कै विलंबु करै तौ वा रजपूत कौ घोर नर्क में वास होइ । आपु राजा सहित साहन लै महलन कौ पधारिऐ म्हां प्रथीराज कौ मैडे ते हटाय दैहौं ॥

दोहा ।

मोद मान मल्हन चली, नृपत सहित रनवास ।
अल्ह जोगि के वचन सुनि, परपूरन भय आस ॥ ६८९ ॥

छप्पय ।

मोद मान महरानि सहित नृप महल पधारिय ।
धरिव ब्रह्म कव हथ्थ अल्ह उद्दल दिय भारिय ॥
अवर सूर सावंत सर्व ते सथ्थ लगाइय ।
डोंगरसी छत्रसाल वीर जल्हन मन भाइय ॥
जगनिक भट्ट सकतेस वर अवर चमुव छंडिय शुभर ।
परिमाल भूप साहन सहित जाय मँदिरन उतर पर ॥ ६९० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

लक्ष हेम नृप दान दिय , संग चँदेलिन बाम ।
कीरत सर ब्रह्मा रहिव , जोगिन सहित मुकाम ॥ ६९१ ॥
सावन सुदि पूनव सुगय , भादौ परिमा आन ।
इतहि कुंवर जोगी सजे , उतहि भूप चहुवान ॥ ६९२ ॥

छप्पय ।

भोर होत चहुवान सज्ज सैना सत सूरह ।
बज्जत घोर निसान आइ बज्जो सम पूरह ॥
इक्क इक्क सावंत भूम भूधर से चल्लहि ।
तिनहि देष नभदेव सरस पाताल सुहल्लहि ॥
चढि चलिव कोप जोगीन पर जिम रावन रघुकुल मनिय ।
इम कहत चंद गुररास विय आन अरिव सूरन अनिय ॥६९३॥

दोहा ।

पीथल नृप चढि आइया , संग सैन रजपूत ।
रन मह सूरग राज भट , करत सूर आकूत ॥ ६९४ ॥
सुनिय षवर जोगीन सो , किलक उठे बलवान ।
आन जुरे चहुवान सह , बज्जत घोर निसान ॥ ६९५ ॥
कट्ट कीस तै लोह सब , वीय सैन चलि घल्लि ।
श्रोनित सरिता बहि चलिय , देष तेज भुव हल्लि ॥ ६९६ ॥

छप्पय ।

झपट सैन सावंत करत घमसान सुभारिय ।
उतहि भूप चहुवान इतहि जोगिय मुनि धारिय ॥
गिरहि लुथ्थ पर लुथ्थ मुंड पर रुंड जुढकहि ।
बिन सुंडन गज फिरत अभ्यानक देष सुभज्जहि ॥
इहि भांत वीर संगर करत हनय बाज धरनिय सुधर ।
नहि पछिल धरत पग सूर सो लरत असुर सम भूम पर ॥६९७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

करिव कोप चंदेल भट , अरु जोगिन धर सार ।
मुनि जोगी रहि पिष्ट पर , अरु रहि ब्रह्म कुमार ॥ ६९८ ॥
चाहुवान अति रीस कर , हंके सूर सम्हार ।
आन तुम्हैं है लैान किय , धर जोगिय रन डार ॥ ६९९ ॥

भुजंगी ।

वियं कोपं सैनं दुहू कोद आनं ।
जपं इष्ट मंत्रं मरं चित्त ठानं ॥
लियं हथ्थ किरवान बुल्ले सुबानी ।
फिरै पैज चित्तं महा कोध जानी ॥ ७०० ॥
करैं षंड षंडं भसुंडन भारे ।
लरै वीय जोधा गजं भुंम फारे ॥
सनै सैान सैा मुक्त मुक्ता परेवं ।
मनौ जाव कंजूर रक्त धौरा झरेवं ॥ ७०१ ॥
भभक्कै भसुंडं न टट्टै वरक्षी ।
लगै हीकवारं षरै वार तक्षो ॥
सरद्दं घटा जोम गाजंत गाजं ।
छटा सैवं दुहू बीर लाजं ॥ ७०२ ॥
लरै सूर सावंत सनमुष्ष धायं ।
हनं सीस षग्गा सुधरनी मिलायं ॥
ठनक्के उरं संग लग्गै घमोरा ।
उरं फुट्ट संनाह फुट्टंत घोरा ॥ ७०३ ॥
मिले सूर सूरं सुकूरं अबारे ।
गहै मुंड दंती सुमत्तो चिकारे ॥
उतहि बीर कयमास चहुवान धाये ।
पचारै करै ते अयारै मिलाये ॥ ७०४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरै मुंड रुंडं उठै व्योम जाही ।
कटै अद्ध अद्धं गिरै भूम माही ॥
दुहू सैन जोधं बिना मुंड धावै ।
घनी सैन कट्टै तबै भूम आवै ॥ ७०५ ॥
इकै जोग अस्वं धरै झूम जाही ।
पकर धाय भोजं परं भूम माही ॥
हनै वेग मुक्की सुहाकं सम्हारं ।
चलं हंस जाही सुव्योमं निहारं ॥ ७०६ ॥
परै रुंड भूपै सुमुंडं चिकारैं ।
तबै ईस मालं सुसीसं सम्हारै ॥
वियं सैन जोधा तनं सूर कट्टै ।
गिरं रुंड सीसं तरंबूज फट्टै ॥ ७०७ ॥
भरं जोगिनी षप्परं वेग धावै ।
नचं भूत सैना सुताली बजावै ॥
भयो दोय जामं इसी भात जुद्धं ।
हटे वीर जोगी नहीं पग्ग सुद्धं ॥ ७०८ ॥

दोहा ।

लषिव जुद्ध जोगिय सु तब , विचल चमू चंदेल ।
चाहुवान के वीर सत , करत षग्ग रन षेल ॥ ७०९ ॥
घायल जोगिय भूम गिरि , बिचिले धीर अमान ।
तब मुनीस क्रोधंत ह्वै , लियो धनुष करवान ॥ ७१० ॥

छप्पय ।

कोपवल्ल को दंड हथ्थ कर तेजवान लिय ।
सुतसमीर बजरंग अंग मह ध्यान धार किय ॥
इन्द्रसेस जलनाथ भान सस मुनि सहाय करि ।
सप्त द्वीप नव षंड ईस धन पत सुआइ लर ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मम सपत नाथ गोरिष्य किय जम दिग्गज ठेलहु भुजन ।
घल्लहु सुवान बड़वान लिय सब जराय डारौ सुहनि ॥ ७११ ॥

दोहा ।

क्रोध चित्त सुर षिंच कर, प्रत्या षिंच कमान ।
घल्लन चाह्यौ पीन ह्वै, गोरिष कहिय जुवान ॥ ७१२ ॥
अंतरिक्ष गोरिष्य कहि, कवन देव चढि आन ।
कितिकि सूर चहुवान दल, कापर छंडत वान ॥ ७१३ ॥

छप्पय ।

कहि गोरिषि बखान कवने तुम तेज सुवोडहि ।
तोहि देषि ससि भान धाम पुरहूतम छोड़हि ॥
देव करय को जंग कवन भुव मंडल माहिय ।
तीन लोक मह कूहवान षिचिव करवाहिय ॥
अब सपत तोहि वजरंग किय अल्हवान जिमि घल्लिये ।
मम मान मान गुर जान करि म्हा जुवान नहि ठिल्लिये ॥७१४॥

दोहा ।

सुनि बानिय गोरिष्ष किय, अल्ह चित्त धर भाय ।
गुर आइस जो मिंटऊँ, घोर नर्क तन जाइ ॥ ७१५ ॥
जोगिय सर धर को समह, मनुज अत्र लिय हथ्थ ।
जंग करन चहुवान सह, झिले सूर सब सथ्थ ॥ ७१६ ॥

छप्पय ।

उतहि पिलिव चहुवान इतहि जोगिय मुन झिल्लिव ।
हनय जोध गज बाज फुट्ट धरनी मह मिल्लिव ॥
गिरहि सुभट कटि मुंड रुंड चौगानन षेलहि ।
परिय लुथ्थ पर लुथ्थ सूर देतिय पग ठेलहि ॥
इम लखि अल्ह चहुवान सह मुंड रुंड चकचूर करि ।
नहि मिलत सीस भर ईस कह फिरत अछरिय ढूंढ वर ॥७१७

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

अत्तताई कन्ह भट , अबर सूर सब आय ।
आय जुरे तामस भरे , अरि पर घल्लहि घाय ॥ ७१८ ॥
अल्ह जागि जुट सिंह सौ , हथ्थ गहिव तरवार ।
करव किरन्नि प्रकास करि , करि तम कुंभ विदार ॥ ७१९ ॥

भुजंगी ।

भयौ कोपि जोगी सबै सथ्थ जानौ ।
जपो गोरषं मंत्र क्रोधं सुआनों ॥
सपथं करै आजु सत्तं सुभाऊ ।
चहुवान सैनं सुभूमै गिराऊ ॥ ७२० ॥

करौ ईश मालं बधै मुंड मैरौ ।
उवारौ अबै लौन चंदेल केरौ ॥
इतै बैन जोगी सुसर्वं सुनाये ।
जपै इष्ट मंत्रं समर मध्य आये ॥ ७२१ ॥

चले बीर चौहान बज्जे गरट्टं ।
सबै सैन जोधं जुरे मेघ थट्टं ॥
तबै जोग ईसं सुअत्रं चलायौ ।
गिरं रुंड मुंड स्वस्वर्गं पठायौ ॥ ७२२ ॥

धय्यौ आततई सबं सूर पिल्ले ।
कटी सैन चंदेल जोगीस भल्ले ॥
हनै एक एकै घनं घाय मारै ।
परै बाज दंती सुभूमें चिकारै ॥ ७२३ ॥

चय्यौं जोध कन्हं परय्यौ बाज सोई ।
हनी सैन जोगीस विचलंत होई ॥
दिषं अल्ह नैनं सुरीसं करेहं ।
धय्यौ सिंह पन तै सुपीलं परेहं ॥ ७२४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहूं वेग जोगी खवाहै उपाटै ।
कितै एक जोधान के सीस काटै ॥
कितै डील गहि पील नाषंत धरनी ।
तरफै करी नीर जौ मक्षहिरनी ॥ ७२५ ॥

कहूं हैवरं पूछ गहि तान बाहें ।
कहूं पाय प्यादे गहै भूम माहै ॥
हनै हंस हंसं वियं तेग मारै ।
चलै स्वर्ग हंसं सुव्योमं निहारै ॥ ७२६ ॥

कहूं सांग मारै कहूं कूद दौरै ।
कहूं बाह छुट्टे सुथट्टं सुमोरै ॥
करंपाय गुरजं किए सीस माहै ।
सिरं चूर भुवडार बानं उमाहै ॥ ७२७ ॥

कहूं षरग लै बीर बाहंत जोरं ।
कहूं काट दंती हजारं सु घोरं ॥
कहूं संकलं बीर बाहै अमानै ।
कहूं पील से डार भूमै जगानै ॥ ७२८ ॥

हनै जोग ईसं सु जोधान कूले ।
मनौ करक कन्नैर पालास फूले ॥
कहूं बंध पर बंधना वंत फरसी ।
भयौ क्रोध जोगीस पै सैन गरसी ॥ ७२९ ॥

कहूं अंग भंगं टुटै षग्ग दोई ।
हनै जोग हथ्थं करै जुद्ध सोई ॥
बिना पाय ऊभंत किरवान टेकं ।
करै बीर धीरं उपायं अनेकं ॥ ७३० ॥

हनी जोग सैना महा रोष रायं ।
लष्यौ भूप चहुवान सनमुष्ष धायं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चल्यौ देषि जोगीस चावंड आयं ।
महा कोप कै बीर सेल्हं चलायं ॥ ७३१ ॥

दियौ डारि जोगीस ढालं विसालं ।
हन्यौ बान चावंड भूमै करालं ॥
लष्यौ भूम चावंड सावंत धाये ।
सलष कन्ह लष्षं सुगोइंद आये ॥ ७३२ ॥

हरी सिंह कनकेस पज्जून बीरं ।
धय्यौ आततांई सु कयमास बीरं ॥
चल्यौ संजमं राय जोधावली है ।
जिनै देषि चंदेल सैना हली है ॥ ७३३ ॥

धय्यौ विभ्भ राय सुतोमर पहारं ।
गहै लोह बाढै सबं सूर धारं ॥
इतै आय सावंत जोगीस तीरं ।
घनै अस्त्र वज्रं उचट्टै सरीरं ॥ ७३४ ॥

फिरैं लोह घल्लै करं रास भारू ।
हनै जोग कौ वेग भूमै सुडारू ॥
मिले अस्व सौ अस्व दंतीन दंती ।
सबै सूर जुट्टै कढी तेग पंती ॥ ७३५ ॥

पढौ जोग नै निद्र अत्रं चलायं ।
परे भूम बीरं नहीं घाय षायं ॥
लगे दिव्य बानै नहीं चेत पायं ।
करी पैल चहुवान कै अंत आयं ॥ ७३६ ॥

कहै जोग चहुवान सो सत्त वत्तं ।
नहीं भूधरा मै धरै जुद्ध छत्तं ॥
गुरू सासना पाय नहि पाय चल्लौ ।
नहीं कोप कर भूप बर घाय घल्लौ ॥ ७३७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हनै भूप को अग्ग अत्र चलाई ।
परै घोर नरकं वदं वेद गाई ॥
चप्यौ ब्रह्म विधि जात तुम राहु जाता ।
हनौ अगृ म्हा कौ करौ अत्र घाता ॥ ७३८ ॥
कहं बैन चहुवान सौ जोग जायं ।
छरयौ जान चंदेल के देस आयं ॥
अहो भूप पीथल बडौ गर्भ लाये ।
सुनी अल्ह उद्दल कनवज्ज ठाये ॥ ७३९ ॥
दया जान हंडं सुकीनी सहायं ।
वली सेवकं जान म्हा कै पठायं ॥
इतौ विक्रमं अग्घ थाकौ बताऊँ ।
हनौ पील तौ दास शिव को कहाऊँ ॥ ७४० ॥
सुनं भूप ये बैन कम्मान लिन्नी ।
लियौ बान जा वृष लै षिंच किन्नी ॥
हनं जोगियं सीन राजं सुवानं ।
परयौ निर्फलं भूप अचरज्ज जानं ॥ ७४१ ॥
म्हा के सुवानं सतं पील फुट्टै ।
तिनं बान जोगीस सीना न फुट्टै ॥
फिरं क्रोध राजं सतं बान झिल्ले ।
उचट जोग अंगं किनं कान मिल्ले ॥ ७४२ ॥
दये बान भूडार कंमान भूपं ।
भयौ ईस जोगीस दूजौ सरूपं ॥
लयौ सेल्ह जोगीस रोसं चलायौ ।
हन्यौ पील प्रथिराज भूमै गिरायौ ॥ ७४३ ॥
गह्यौ सिंहिनी सीस जोगी अमानं ।
जग्यौ आततांई सुषिंची कमानं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गिरयो भूम भूपं गुरू चंद धायं ।
जगाए सबै सूर राजं सहायं ॥ ७४४ ॥

लख्यौ भूप भूमै सबं सूर जुट्टे ।
हनै जोग बानं सबै बीर फुट्टे ॥
उवारंत स्वामी घनै बान षायं ।
गिरं बीर मुर्छा परं भूम गायं ॥ ७४५ ॥

तबै बान गुरु चंद दिव्यं चलाये ।
धप्यौ जोग ईसं न पायं हलाये ॥
लिये बान वल्लार कोधं सुधट्टं ।
थके विप्र गुर राम चंद सुभट्टं ॥ ७४६ ॥

तबै आतताई सुकोप्यौ बली है ।
चहूवान की सैन जोगं कटी है ॥
प्रथीराज आगै जुरयो जुद्ध आई ।
हन्यौ जोग बानं सु भूमै गिराई ॥ ७४७ ॥

दिषै सूर चंदं लगे घाय अंगं ।
धरौ स्वाम धर्मं बधौ चाव जंगं ॥
लियै षग्ग हथ्थं सबं सूर धाये ।
असी बाहनी पैर कै पार आये ॥ ७४८ ॥

जुरे फेर बीरं सुसाम्है हकारे ।
घनै षग्ग जोगीस पै आन डारे ॥
भई षग्ग वर्षा झरं मेघ लाई ।
नहीं जुग्गी पीछै सुपंगं हटाई ॥ ७४९ ॥
लई सिंघनी जोगबानं चलाये ।
सतं सूर अंगं सु दा दो लगाये ॥
बही श्रोन की बारनी रुडं मुडं ।
परे सूर सैना गजं बाज झुंडं ॥ ७५० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परौ पग्ग पत्ती सुघेतं सुलालं ।
मनौ चक्कवाकं वगंपंत मालं ॥
कढे कुंजरं पेट ते स्वान भेगी ।
मनौ लोह मट्ठं चले त्याग जोगी ॥ ७५१ ॥
फिरै जोगिनी जूहरन कुँभ लोलं ।
करै भूत भूतं सुप्रेतं कलोलं ॥
धरै मथ्थ मथ्थं सुकरी अस्व जोहै ।
मनौ किन्नरं सथ्थ हेरंब सोहै ॥ ७५२ ॥
लगै सूर छत्तं मूर्छा सुपढयौ ।
परौ भूम राजं तहां जोग ठढयो ॥
करै जोगिनी भूत रन मै विपायं ।
दिषं चंद भट्टं बहौ चर्ज पायं ॥ ७५३ ॥

दोहा ।

संषिन डंषिन भूत जुरि , सबै व्याहु रन काज ।
जोगिन प्रेत पिसाच जुरि , करहि बरातिय साज ॥७५४॥

मोतीदाम ।

तहां तकि संभु रचै उरमाल ।
गुहै गिरजा गज मोतिय भाल ॥
रुचै सुर अप्छरि फूलन मार ।
पियै रुधि जोगिन झुंडन झार ॥ ७५५ ॥
करै पल भक्ष किलक्कत केत ।
नृप्यष्षर देवि घुरंचत षेत ॥
भवहिन भगी धिन गिद्ध सुचान ।
भयानक भूमि उभाति सुस्वान ॥ ७५६ ॥
जुरे बहु प्रेत बरातिय संग ।
सजे मिल डंकिन ब्याहु उमंग ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिवा फिकरै जनु गावहि गान ।
रच्यो जनु मंडफ भूम मसान ॥ ७५७ ॥
दिये गज चर्न के षम्ह लगाय ।
सांथर वज्र सु दिन्निय डार ॥
करी छवनी हय पुच्छन केर ।
धरे तह मुंड सुवेइय धार ॥ ७५८ ॥
कियौ तह चौक सुराकन पूर ।
सूरन रुंड करै षम्ह नूर ॥
करै गज चर्मन की इक गाय ।
रची रस अंतन बीन बनाय ॥ ७५९ ॥
धरी घुपरी मन मानहु मौर ।
धरै नर केसन सीसन चौर ॥
भये तह बाहन जंबुक स्वान ।
चढे तह डुल्लहु भूत गुमान ॥ ७६० ॥
लिये पट सूरन के कट छोर ।
करीपन रथ्थन रक्तन बोर ॥
लिये कर हाड़न की जयमाल ।
फिरै बर देषत डंकिन काल ॥ ७६१ ॥
सुहागिन जोगिन अंगुल मोल ।
चरब्बय चारु चढावत तौल ॥
पिसाचिन रक्ष सजी जिवनार ।
सरावत सौन करै मनुहार ॥ ७६२ ॥
परोसहि राकस नारि अहार ।
करै भष पूर सुलैहि डकार ॥
मरोरत मुंडन चावत चाड ।
काटत दंत चचोरत हाड ॥ ७६३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बबै इक फेर रकत्त अघाय ।
हिलै हकलीह अछक्किय षाय ॥
गिरद्धिन अंत गहै इक वोर ।
करैइ सठी दिस जंबुक जोर ॥ ७६४ ॥
करग्गस मंड विषंडय दंत ।
दुहू दिस बैर मिट्यौ बढ अंत ॥
कहै कब चंद सुनौ गुरराम ।
ढयौ ढिग भूप सु जोगिय ताम ॥ ७६५ ॥
महादल सैनह जोगिय जीत ।
डरे करि जंगह सुर अचीत ॥
कहू नृप जंगन पीथल हार ।
दियौ विय जोगिन भूतल डार ॥ ७६६ ॥
लषै धर ध्यान भये कवि मौन ।
बिना अल उद्दल जित्तिय कौन ॥
गये विय जान सु अल्ह न छिप्र ।
सनंमुष चंद सुबुल्लिय विप्र ॥ ७६७ ॥
करी तुम अल्ह चँदेल सहाय ।
दयौ नृप पीथल भूम ढहाय ॥
नही तुहि लाइक बीजव सूर ।
जुरै नहि देवह जंग जरूर ॥ ७६८ ॥

दोहा ।

सूर अघानै लोह कर , शिव अघान लिय मुंड ।
प्रेत अघानै रुधिर पिय , बर लिय अप्छरि झुंड ॥ ७६९ ॥

चौपही ।

ये बचन गुरु चंद सुभष्षिय । मानस आय अल्ह उर रष्षिय ॥
बेग नृपत कह पील मँगावहु । सैन सहित सब कूच करावहु ॥७७०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

कहत चंद गुरुराम सह , सुनहु विप्र चित लाय ।
अल्ह उद्द दसराज सुत , नहि बर जंग षटाय ॥ ७७१ ॥

जोर हीन नर अल्ह सौ , जुरत हीन अरि गोत ।
असित रंग मुष देषिकै , असित रंग मुष होत ॥ ७७२ ॥

चाहुवान चढि पील पर , अल्ह कहत कर जोर ।
मैडे पार सु जाइये , जंग करी म्हां तोर ॥ ७७३ ॥

छप्पय ।

कहय भूप प्रथिराज सुनहु जोगीस महामति ।
वडौ वाहि क्रम जाल करिव तुव जंग जीत अति ॥
धन्य मात तुव तात जासु कोविद जस गायेय ।
तुव समान नहि वीर लीन अवतार सुहायेय ॥
तुव डार पील भुव दीन मुहि सैन सूर घायल करिय ।
वाह वाह नृप मुष कहिव नहिय छत्त मोतन करिय ॥ ७७४ ॥

दोहा ।

सुनत वचन जोगी कहा , धारौ घर नृप सोय ।
चंदेल मनावै अल्ह कहँ, उरई संगर होय ॥ ७७५ ॥

छप्पय ।

करिव कूच चहुवान हार जोगिन सह मानिय ।
धरि सिवका सत सूर लाज अंतहपुर आनिय ॥
कहत चंद सह भूप काल।हम स्वप्नन भग्गिय ।
पंच वान मम घल्लि अंग जोगी नहि लग्गिय ॥
यह संक मान चलि भूप तब अलगारन चित लाइया ।
अष्ट अहन बिच सिवर किय वैत्रवती पर जाइया ॥ ७७६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

चाहुवान गय कूच करि , जोगिन सैन सम्हार ।
वीय सैन रजपूत गिर , ग्रहगुन वेद हजार ॥ ७७७ ॥
दो सत मत्त मतंग वर , तीस सहस किकियान ।
गुन सहस्र जोगी गिरे , विय नृप सैन बषान ॥ ७७८ ॥
अनगनती पैदर गिरिव , अवर जीव को भष्षि ।
चाहुवान चंदेल जुरि , भूमि भूर हर रष्षि ॥ ७७९ ॥

छप्पय ।

चलिव सुवन चंदेल सैन सब सथ्थ पधारिय ।
घायल भय रजपुत्त लिये सिवका धर भारिय ॥
संग तेज जोगीस मारि दल करिव विहंगह ।
हनय सैन गज बाजि जूह सत सूर उमंगह ॥
सह दानै बजि चल्लि धाम कह त्रिया सु मंगल गाइयव ।
इमि जंग जीत चहुवान सह ब्रह्म कुवर जस पाइयव ॥ ७८० ॥

दोहा ।

ब्रह्मजीत महलन गये , नृप रानी सुष पाय ।
बहुत दान नृप हेम दिय , देव सर्ब पुज्जाय ॥ ७८१ ॥
राजा सौ मल्हन कह्यौ , बुल्लि सौध की बाम ।
जौ नहि जोग सहाय कर , ब्रह्म सुआवत काम ॥ ७८२ ॥
भूप कुवर रानी सहित , जोगीसिवर कराय ।
लघु जोगी नृप सो कहा , म्हां तीरथ सब जाय ॥ ७८३ ॥

छप्पय ।

बदति भूप परिमाल सुनहु तुम ईस गुसाइय ।
तुम जीवत चहुवान वंस रष्षिव मम आइय ॥
समद सोक मह परिव षैंच करि बाहिर किन्नव ।
मुष से कढिव न राम टेर सुन पील सु लिन्नव ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुव विश्वामित्र वसिष्ठ ऋष आप जंग भेला करिय ।
म्हां कुवर सेव जोगीस तुव नहि तीरथ कौ पग धरिय ॥७८४॥

दोहा

प्रति उत्तर जोगी कहा , स्वाम धर्म मम टेक ।
म्हां जोगी थां बंस पर , करौ सहाय अनेक ॥ ७८५ ॥
कर्न लग्ग नृप सौ कहा , रानी मलहन बुल्लि ।
थां सेवक दसराज सुत , बल्लसल्ल गय भुल्लि ॥ ७८६ ॥
अल्ह उद्द कौ धाय कै , नृप लिय कंठ लगाय ।
बहुत मोह राजा करन , बारं बार लगाय ॥ ७८७ ॥
मुंज सुवन कह भूप मिलि , करि आदर सनमान ।
लक्ष हेम रानी लई , करी निछावर आन ॥ ७८८ ॥
पुन रानी अल्ह उद्द कौ , मिली कंठ लगि झूमि ।
लेत बलैयां सीस की , बारबार मुष चूमि ॥ ७८९ ॥
जगनायक कौ आदि दै , मिले सुभट सिरदार ।
अल्ह उद्द कौ देषि कै , सकुच रहे पडिहार ॥ ७९० ॥
उद्दल सांसो उररि कै , माहिल भेापति मिल्लि ।
सीना सौ धर दाबिया , हुव मुर्छा विय घल्लि ॥ ७९१ ॥
जगनायक कवि बुल्लियैा , सुनहु भूप परिमाल ।
देष रूप जोगीन कौ , गिर भूपत महिपाल ॥ ७९२ ॥
भोरी धर पडिहार गय , नृप जगनिक सम बुल्लि ।
अल्ह उद्द कैसे रहै , नहि कनवज कौ भिल्लि ॥ ७९३ ॥

छप्पय ।

तब बुल्लहि जगनिक्क रहौ तुम आल्ह धाम वर ।
स्वाम धर्म तुम करिव सुजस लेाकान लेाक पर ॥
करिव नैान की सरित सुवन चंदेल उबारिय ।
लरिव भीम सम जंग सम्हरि दीन विडारिय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुव हनिव कुरिय सत सूर वर चाहुवान भूमह परिव ।
विय धन्य धन्य जसराज सुव धन्य धरिय घर अवतरिव ॥७९४॥

दोहा ।

जगनाइक के कर्न लगि , अल्ह सूर इम भष्षि ।
मुंज सुवन के सथ्थ म्हाँ , अवै हमै नहि रष्षि ॥ ७९५ ॥
जगनायक विनया करी , सुनहु भूप चित्तु लाय ।
हम ल्याहै कनवज्ज तै , विदा देहु सुष पाय ॥ ७९६ ॥

छप्पय ।

करिय बिदा परिमाल सबन गज बाज सु दिन्निय ।
नगन जाल पहिराय भेष लपटाय सु किन्निय ॥
करिव कूच नृप जोग येक जोजन परि मिल्लव ।
दोय अहन बिच सिवर जाय वैत्रव तट घल्लिव ॥
फिर करिव कूच उत्साह सौ दह दिन चलि गंगा परिव ।
सब जंग जित्त चहुवान सह आय कनवजह पग धरिव ॥७९७॥

दोहा ।

अल्ह उद्द लष्षन कुँवर , गये पंगु दरबार ।
दिष्षि भूप सो मिल्लियव , करि जुहार बैठार ॥ ७९८ ॥
कुसल छैम चंदेल की , पूछहि पंगुर राज ।
श्रवन मास की पर्व कौ , कहा कर्‌यो प्रथिराज ॥ ७९९ ॥

छप्पय ।

मुंज सुअन कर जोर सुनहु महराज भूप वर ।
लरिव सुवन पडिहार सैन भगि अप्प जुझ्झ घर ॥
जुरिव वीर छत्रसाल लरिव भीमान समानह ।
कोप चढिव ब्रह्मजित्त किन्न भूतल घमसानह ॥
फिर करिय पसर सम्हर धनी भग्गि सैन ब्रह्मा ठयव ।
दहपंच सूर सह आहुरिव चाहुवान पकरन चहिव ॥ ८०० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

छिकौ सुवन चंदेल कौ , करचौ जुद्ध अद्भुत्त ।
जो नहिँ उद्द सहाय कर , होत सुवन रन घत्त ॥ ८०१ ॥

छप्पय ।

धप्पौ वीर उदराज पसर कीन्ही बलिवानह ।
लरिव काल सम जाय बाज चढ़ सैन जघानह ॥
हंड मुंड हय झुंड पील पाहार ढहायेय ।
गिरिव भूप पीथल्ल देव देषत नभ ढायेय ॥
तुव पैज ढिग सो करि गये तिहि तै दुगुन कराइयव ।
नहिँ लरत सूर नभ मरन जो जोजन येक भगाइयव ॥ ८०२ ॥

दोहा ।

चार कोस चहुवान भगि , उद्दल दीन बिडार ।
भोर होत सविता उवत, चढ़िव सम्हर बार ॥ ८०३ ॥
लरौ फेर अल्हन बली , हनै सर सत घाय ।
पकरि छोड़ चहुवान कह , मेडै पार कराय ॥ ८०४ ॥

चौपही ।

लषन कुँवर पंगुर ढिग भष्षिय । अल्ह उद्द चंदेल सु रष्षिय ।
रानी मल्हन बहुत मनायेय । करि जुहार कनवज कह आयेय ॥८०५

दोहा ।

अल्ह उद्द के वेाज की , लषन कही समझाय ।
पंगुर नृप कहि अल्ह सौ , जंग जीत तूँ आय ॥ ८०६ ॥
आल्हासी करि जोर कहि , सुन पंगुर मजबूत ।
पारथ सम लष्षन कुँवर , लरे सुभट रजपूत ॥ ८०७ ॥

छप्पय ।

तुव प्रताप ससिभान छत्र नृप देव निहारत ।
दल पंगुर महराज चवर राजा सिर ढारत ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करि सहाय चंदेल कुँवर लष्षन सी दिन्निव ।
असी लष्ष मह छंटि सूर सैपंच नविन्नव ॥
को लरहि जंग तुव सैन सह हनै सुभर लष्षन धनिय ।
इम कहत अल्ह दरबार मह विचल चमुव समहर धनिय ॥८०८॥

दोहा ।

ये बचन्न राजा सुनै , बहुत मोद सुष पाय ।
हय गज मानिक हेम दिय , सिरोपाय पहिराय ॥ ८०९ ॥

अल्ह उद्द गय धाम कह , माता के ढिग आय ।
चरन छिये देवल्ल के , जननी अति सुष पाय ॥ ८१० ॥

चौपही ।

देवल दे बुल्लिय इम बानिय । कहौ सुवन विय जंग बषानिय ।
मम संका तुम बेग भगावहु । षेम कुसल चंदेल सुनावहु ८११

दोहा ।

अल्ह कहै माता सुनौ , हार जंग प्रथिराज ।
राजा रानी कुँवर सब , नीकै सर्ब समाज ॥ ८१२ ॥

चाहुवान चंदेल रन , हरयौ भूम कव भार ।
श्रवन मास की पर्व कव , चंद कह्यौ विस्तार ॥ ८१३ ॥

अल्हनसी विनया करिग , सुनौ दिवलदे मत्त ।
जौ उद्दल लरतौ नहीं , वृह्म कुँवर सो घत्त ॥ ८१४ ॥

तब देवल इम बुल्लई , सुनौ सुवन मम बत्त ।
स्वाम धर्म जे मन धरै , तै नहिँ कष्ट परंत ॥ ८१५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(११) अल्ह ऊद प्रतिज्ञा खंड ।

दोहा ।

अल्हन की पूछी सुबत , सेा कविचंद सुनाय ।
केहरि अबलेाकन कथा , जगनायक पर आय ॥ १ ॥
जगनायक कव चालिया , स्वाम सीष चितु लाय ।
जुग जेाजन कनवज रहिय , बटतर ऊभा जाय ॥ २ ॥
लष्षन मृगया काज कह , कनवज पुर तै आय ।
इत जगवट मग उरभिया , मिले जुगल विय आय ॥ ३ ॥
भय मेला कवि लषन सह , पुंछ षवर कुसलात ।
असिमंजस सब षबर कहि , सेाक भूप सुन बात ॥ ४ ॥
सकल बनाफर अल्ह सी , कहै कुँवर चित लाय ।
म्हा आयै अब लैन तिहि , जुद्ध कज्ज बलदाय ॥ ५ ॥

चौपही ।

सुनत बत्त लष्षन बलदाइय । जगनायक कह बत्त सुनाइय ।
रहय बीर आल्हन बड भारिय । सेा गय रन रहि गांजर मारिय ॥ ६ ॥

दोहा ।

जाके कज्ज पधारियै , सेा गय समर षपाय ।
अब कही चंदेल कह , बदन दिषाउब जाय ॥ ७ ॥
लष्षन के ये बचन सुनि , जगनायक रिस धार ।
अपनै तन के घत्त कह , तब कढ्ढिय कट्टार ॥ ८ ॥
कटत कटारिय लषनसी , कर गहि करि समुझाय ।
जीवत आल्हन सी सुभट , म्हां हँसि बचन बनाय ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अनहौनिय परमाल नृप , कुम्हिन करिय कुवत्त ।
जह तुम से बुधधर जगत , तँह बुझ्झिय अस बत्त ॥ १० ॥
आल्ह नृपत मृगया गयव , उद्दल विनय न मान ॥
हौं चंद्रावति दुर्ग मह , सुनहु कुँवर बुधषान ॥ ११ ॥

छप्पय ।

कहिव भूप परिमाल जगन चंद्रावति जावहु ।
थकि अवंत कह राह वीर तुम वेग चलावहु ॥
मो पीछे सुनु कुँवर भयव उतपात महा अति ।
घाइल हनव अवद्ध कवन मिँटहि विधंत गति ॥
अब आनि दव चहुवान रन मलष्षान नृप मारियव ।
बर दिय चँदेल संगर करहु महुबे काज पधारियव ॥ १२ ॥
नहिय वीर छत्रसाल नहिय कनकेस महाभर ।
नहि चक्रपान बघ्घेल नहिय सीहा भनैज वर ॥
नहि काइथ कलियान नहिय बानिक भारामल ।
बुद्धवान दल सिँह गयव गंगा सु महाबल ॥
अल्हन हित कविराज वर कनवज कज्ज पधारियव ।
यह संधि जानि पाथिराज नृप महुबे काज सिधारियव ॥ १३ ॥

चौपही ।

दइय सीष लष्षन सुषदाइय । लगि पंथह जकनिक कबिराइय ।
कंचन कलस सोभरस सानहु । कोटन उगे दिवाकर मानहु ॥ १४ ॥

सोरठा ।

कनवज सहर समीप , पहुँच्यौ जगनक बुद्धि बर ।
मनहु साल मल दीप , मन दीपक सी धाम प्रति ॥ १५ ॥

दोहा ।

संकीरन कनवज्ज पथ , पुंछत है कविराय ।
कवन सौध नृप आल्ह कव , पुरजन देहु बताय ॥ १६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोरठा ।

लिषे बरौठे उच्च , सुवरन के हय राज विय ।
दरस हेात दुष मुच्च , अल्ह द्वार कविराज वह ॥ १७ ॥

दोहा ।

अलगारन बहु धाम तजि , कनवज नगर अपार ।
प्रात हेात सविता उवत , ऊभा अल्ह दुवार ॥ १८ ॥
ईदल ऊभा सौध तट , कहि जगनक सी आय ।
सुनत बत्त सब कुटम जुत , आल्हन सी नृप धाय ॥ १९ ॥
मिलिय दिवल दे रुदन करि , आल्ह ऊद सुषु पाय ।
ईदल राज कुमार लै , परिय मछल दे पाय ॥ २० ॥
रानिय राजकुमार स्यौ , दई जगनिक असीस ।
देवै पुत्र पवित्र तुव , जीवै कोट बरीस ॥ २१ ॥
दइय पठौनी छोरि सब , जे दिन्नय परिमाल ।
आल्हन स्यौ रानीन के , कहे संदेसे जाल ॥ २२ ॥
कंचन झारिय गंग जल , देवै भरि लै आय ।
सो अचयौ कविराज जू , संसति हृदय जुड़ाय ॥ २३ ॥
षट रस साज जिवाइया , अतर और अबगात ।
बिहसि आल्ह कविराज कह , पूछत सब कुसलात ॥ २४ ॥
दुक्ख बेाध परिमाल पर , मलष्षान भट घत्त ।
बंच पत्र नृप आल्ह यह , कहाँ कुसल किय बत्त ॥ २५ ॥

छप्पय ।

गयव जगन कनवज्ज दीन आल्हन कह पत्तिय ।
ऊदल ईदल जेाग देव्य देवल दे मत्तिय ॥
पिथ्थौरा पा धरिव साज महुवे पर आयव ।
मलष्षान नरसिंघ बलिय विरसिंघ जुझायव ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भर भंजिस रस वास भरिय देस चंदेल दहाइयव ।
परिमाल थंभ द्वै मास रन मो तुम पास पठाइयव ॥ २६ ॥

दोहा ।

सोक सिंध मल्हन परिग , नीद तजि दिन राति ।
अल्ह अल्ह ये बरन रटि , कंद मूल फल षाति ॥ २७ ॥

वाचनीक—यह बात जब जगनिक राय की सुनी तब अल्ह के वाफक गिरा ।

चौपही ।

जब तुम अल्ह विसर करि चल्लेय । मल्हन दे अति दुषरुष धल्लेय ।
बैठ महल महवाट सजोवहि । कनवज दिसा देष करि रोवहि ॥२८॥
जगनिक बत्त बुल्लि इमि जा तह । आल्हन सहित देव दे मातह ।
महियपाल बंधव त्रय द्रोहिय । प्रथियराज कह आफत मोहिय ॥२९॥
जब दल जोरि पिथौरा आयव । सबरौ देस उजारिय दहाइव ।
भग्यव भर्म चंदेलन कौ सब । आल्हन सुनि पछिताव महा तब ॥३०॥
जयचँद को अरदास्ति पठाइय । सो गुजराय करौ तुम जाइय
कुमक मंगि अपनै संग लिज्जिय । महुवे काज पयानव किज्जिय ॥३१॥

दोहा ।

काहुव पक्ष करौ नहिय , भूप चुगल बस आय ।
मरन सुन्यौ मलषान कव , गयव आल्ह मुरझाय ॥ ३२ ॥
बलि विक्रम मम भुल्लिया , असि वंधत उर लज्ज ।
मातुल अब्बन पा धरौ , नगर महोवे कज्ज ॥ ३३ ॥

चौपही ।

मलषे मरन सुन्यौ सब रानिय । रुदन कयौ अति उच्चिय बानिय ।
तब उद्दल यह बचन कहाइय । जियत न जाय महोवै भाइय ॥३४॥

दोहा ।

स्वाम धर्म तै धर्म नहि , यह मानस अप लिष्षि ।
जलम भुम्मि अल्हन नृपति , नगर महोवा दिष्षि ॥ ३५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय ।

सुनि जगनक किय बत्त अल्ह बुल्लिय बर बानिय ।
लुट्टि महोवौ नगरु कुंटि चंदेल गुमानिय ॥
बिना चूक चंदेल किये पुनि देसह न्यारिव ।
काम आय जसराज सबै नृप काम सुधारिव ॥
पडिहार सैन आगैं धरहु चुगिल चारु हित कान लह ।
सामंत सूर सनमुष्ष ह्वौ जुद्ध करहु चहुवान सह ॥ ३६ ॥

चौपही ।

सुनि जगनिक यह बत्त सुमानिय । हम महराज कछुव नहि जानिय ।
महां सिर बंधि महोवै रष्षिय । नृप परिमाल चुगल दिस दिष्षिय ॥३७॥

दोहा ।

स्वाम धर्म संगर करेय , वृथ्थ सर्व होजाय ।
फेर दुष्ष परिमाल कौ , कहत आल्ह नर राय ॥ ३८ ॥

छप्पय ।

हम मारेय सब गौड देस पुर चाहा वारिव ।
हम जादव भरि भंजि धरा उज्जैन उजारिव ॥
हम कटिहरिया कट्टि वट्ट परिमाल देस दल ।
हम कूरम किरवान दाटि लिन्नव सु महावल ॥
लिन्नय सुपील जयचंद के असिय लष्ष गनियैा सुतुछ ।
सुनु भट्ट वत्त रजपुत्त किय राजा जानिव नहि कुछ ॥ ३९ ॥
हम अंगय पतसाहि फौज भग्गिय दस बारह ।
हम निसरतषां लुट्टि कट्टि दल कियव षुवारह ॥
हम रेवा तट जित्त वैरवल हनैय पठानह ।
हम कटहरिया काटि देस लिन्नव किय थानह ॥
मेंवात मारि हिंडोल धरि अंतरवे दहाइयव ।
बघ्घेल मारि बसुधा बड़िय घर चंदेल सुल्याइयव ॥ ४० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

राजा दस जित्ते जसराजह । लिन्नय धर कंचन किय साजह ।
ताकर फल राजा यह किन्नव । हम कह देस निकारह दिन्नव ॥४१॥
तिन पीछै हम विक्रम किन्नव । राजा जित्त पचासक लिन्नव ।
पंच वार घट भंजिव भारिय । अंत दाय नृप कर रषवारिय ॥४२॥

छप्पय ।

पंच वार परि घाइल गये चौरासिय अंगह ।
स्वाम धर्म संग्रहिव सहिव दुर्जन दल संगह ॥
जीत राज इकतीस रीस करि सैन सुजंगह ।
महिला भूपति चुगल चाह पडिहार सु संगह ॥
बंधियै लोह बारह बरस पच्चासक लगि छोह किय ।
चंदेल चुगल मानिव कहिय तीजे पन पर देस दिय ॥४३॥

दोहा ।

कालिंजर बगसे करी , मुक्तामाल हय जाल ।
ब्रम्हा सम रष्षे सुतै , भुल्लि गये परिमाल ॥ ४४ ॥
दयेय मुलक परिमाल बहु , बिलसी दिसा बिसाल ।
उडि हथ्थह बैठक रुचिर , भुल्लि गये वह आल्ह ॥ ४५ ॥
स्याह सिला दसरथ्थपुर , सिर सौंकरेय बिहार ।
मनिया सुत भुल्ले जिन , सेा अप्फौ कर वार ॥ ४६ ॥
कीरत नृप परलेाल भय , इक्क पुत्र सेा वाल ।
जग जाहिर तुव तात की , करनी सुनौ भुवाल ॥ ४७ ॥
कीरत नृप सत वर्ष विच , हरषि गयौ हरिलेाक ।
पंच वरष परिमाल लषि , सब परिगह जिय सेाक ॥ ४८ ॥
दवि लिन्नि भुमियान भुव , राजपुत्र लघु जान ।
सैनापति जसराज सुत , करिव रेास उरषान ॥ ४९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छाइ छाइ रविमंडल लीन्हौं। नौसेरीखाँ कौं बल दीन्हौं[1] ॥
बल कौं पाइ मुगल दल गाजे। पिले बजाइ जुद्ध के बाजे ॥
बड़ी फौज लखि चंपति फूले। श्रीपति सगुन भये अनुकूले ॥

दोहा।

सगुन भये अनुकूल सब, फूले चंपतिराइ।
अति अद्भुत बिक्रम रच्यो, कासौं बरनौ जाइ ॥ ५ ॥

छन्द।

कबहूँ प्रगटि जुद्ध में हाकै। मुगलन मारि पुहुमि तल ढाकै ॥
बाननि बरषि गयंदनि फोरे। तुरकनि तमकि तेग तर तोरे ॥
कबहूँ जुरै फौज सौं आछै। लेइ लगाइ चालु दै पाछै ॥
बाँके ठौर ठौर रन मंडे। हाहा[2] करे डाडु लै छंडे ॥
कबहूँ उमडि अचानक आवै। घन से उमड लोह बरषावै ॥
कबहूँ हाँकि हरौलनि[3] कूटै। कबहूँ चाँपि चदालनि लूटै ॥
कबहूँ देस दौरि कै लावै। रसद कहूँ की कढ़न न पावै ॥
चौकी कहै कहाँ ह्वै जैहौं। जित देखौं तित चंपति हैहौं ॥

दोहा।

चौंकि चौंकि चौकी उठी, दौकि दौकि उमराइ।
फाके लसकर में परे, थाके सबै उपाइ ॥ ६ ॥

छन्द।

जब उपाइ सूबनि के थाके। सुनि सुनि साहि सबनि कौं ताके ॥
अब कीजै कैसौ मनसूबा। हैं हैरान सीगरे सूबा ॥
तब मंत्रिन मिलि मंत्र बिचारयौ। चंपति उर नहिँ ये सब हारयौ ॥
जो अनेक जुद्धन कौं जीतै। सौ फल पावै जो चित चीतै ॥

१—बल दीन्हो = सहायता पहुँचाई। २—हा हा करना—विनती करना, अर्थात् सब उँगलियों के अग्रभाग को मुख के सम्मुख ले जाकर हा हा शब्द कहना महान दीनता का सूचक है। ३—हरौल—फार्सी हरावल = सेना का अग्रभाग।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तासौं भूल बिरोध न कीजै। जौ कीजै तौ तन धन छीजै॥
चंपति कै चित की हम जानैं। औरन बैठ न पावै थानैं॥
राज ओंड़छे कौ सुनि लीजै। प्रबल पहारसिंह को दीजै॥

दोहा।

पायौ राज पहार नृप, चली चाह सब ठाइ।
गई भूमि भुजदंड बल, फेरी चंपतिराइ॥ ७॥

छन्द।

गई भूमि चंपति फिरि फेरी। मेटी फिकिर दाहिनी डेरी॥
नगर ओंड़छे बजी बधाई। भई देस के मन की भाई॥
मैड[1] बुंदेलखंड की राखी। रही मैड अपनी अभिलाषी॥
नृपति पहारसिंह सुख पायौ। चंपतिराइ मिलन कौ आयौ॥
तब नृप कलस पाँवड़े कीनै। आदर करि आगैसर लीनै॥
भुजा पसारि मिले छबि छाये। उमगि अंगननि[2] मंगल गाये॥
मुकताहलन अतुल भुज पूजे। चंपति के सबही जस कूजे॥
धन चंपति फिरि भूमि बहोरी। भुजन पातसाही झकझोरी॥

दोहा।

प्रलय पयोधि उमंड में, ज्यौं गोकुल जदुराइ।
त्यौं बूड़त बुंदेल-कुल, राख्यौ चंपति राइ॥ ८॥

छन्द।

राज पहारसिंह को राख्यौ। उन उर दोष धरयौ गुन नाख्यौ[3]॥
सब जग चंपति के जस गावै। सुनि सुनि अनख[4] भूप उर आवै॥
बढ़ी ईरषा उर में ऐसी। कथा भीम दुरजोधन कै सी॥
उर मे छई[5] कपट कुटिलाई। करन लगे अपनी मनभाई॥

१—मैड़ = प्रतिष्ठा, बात। २—अंगननि = स्त्रियों ने। ३—नाख्यौ = नाश्यो, मेट दिया। ४—अनख = डाह, ईर्षा। ५—छई = फैली।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नृप मन में यह मंत्र बिचार्यो। इनि चंपति अरि कौ दल मार्यो॥
इनको मन तबही ते बाढ्यो। त्यौंहीं सुजसु जगत मुख काढ्यो॥
अब जौ लौं इनके जस फैले। तबलौं बदन हमारे मैले॥
अरु जौ कहूँ फिसाद उठावै। तौ हम पै दिल्लीस रुठावै॥

दोहा।

तातैं जौ चढ़ि मारिये, तौ अपजसु बिस्तारु।
न्यौति गुपित[1] कछु[2] दीजिये, यहै मंत्र है सारु॥ ९॥

छन्द।

सार मंत्र ऐसो ठहरायो। पाप पहारसिंह उर आयो॥
बिसर गई जो करी निकाई। उगल्यो गरल दूध की थाई[3]॥
एक सभैं न्यौते सब भाई। आदर सौं ज्यौनार बनाई॥
उमग भरे सब बन्धु बुलाये। चंपतिराइ सहित सब आये॥
जथा उचित हित सौं बैठारे। परसन लगे बिसद पनवारे[4]॥
तहाँ भूप जे कुल के माने। ते हित में काहू नहिँ जाने॥
पनवारो चंपति को आनो। देखि सुवा सारो[5] किररानो[6]॥
लोचन मूँदि चकोर डेराने। जानि गये जे चतुर सयाने॥

दोहा।

जाननहारे जानियौ, भोजन के आरंभ।
सिंम बुंदेला कौं भयो. प्रगट भूप कौं दंभ॥ १०॥

छन्द।

सिंम दंभ भूपति को जान्यौ। अपनो प्रान त्याग उर आन्यौ॥
चंपति कौ पनवारो लीनौं। अपनो बदल चंपतिहि दीनौं॥
भोजन करि डेरन कौं आये। गुपित मंत्र काहू न जनाये॥

१—गुपित = गुप्तरूप से। २—कछु दीजिये = कोई विष खिला देना चाहिये। ३—थाई = ठौर, बदले। ४—पनवारे = पत्तलें।
५—सारो = मैना। ६—किररानो = चिड़चिड़ाने लगा, किरकिराने लगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगी भिंम कौं अतुल दिनाई[१]। तुरत हि मीच समै बिन आई॥
भिंम लोक आनँद में पायो। बन्धु हेतु निज प्रान गँवायो॥
गुपित हती नृप की कुटिलाई। प्रगट भिंम की मीच बनाई॥
कोऊ करौ किती चतुराई। पाप रीत नहि छिपै छिपाई॥
जो बिधि रची होत है सोई। जस अपजसै लेहु किनि कोई॥

दोहा।

यह उपाइ निरफल भयौ, नृप पहिराई[२] चोर।
चटक चपट पट में चढ़ै, दयै बीर पर बोर॥ ११॥

छंद।

नृपति पहार चोर पहिराये। चंपति के मारन कौं आये॥
जबही रैन अँधेरी आई। चले करन तसकर मन भाई॥
स्याम रंग कुलही[३] सिर दीन्हे। स्याम रंग कछनी कछ लीन्हे॥
बाढ़ि धरै बगुदा[४] कटि बांधै। स्याम कमान स्याम सर सांधै॥
होत न आहट भौ पग धारे। बिन घंटन ज्यौं गज मतवारे॥
स्याम[५] रंग तन मांह समाने। चौकीदारन जात न जाने॥
चोर पैठि महलनि मैं आये। तहां ब्यौंत हैं बने बनाये॥
और भौन में दीपक दीन्हौं। निज घर को चंपति घर कीन्हौं[६]॥

१—दिनाई = एक प्रकार का विष होता है, जो शेर अथवा तेंदू की मूँछ के बाल, बिच्छू के डंक, सांप के मुँह में भर दिए गए चावल, अथवा मेंढ़क से बनाया जाता है। उस विष को खिला देने से खानेहारा कभी तो अति शीघ्र परन्तु अधिकतर कुछ काल में घुल घुल कर मर जाता है। यह विष किसी औषध से अच्छा नहीं होता और कुछ दिनों में अपना घातक गुण करता है, इस कारण इसे दिनाई कहते हैं।

२—पहिराई = पहरा देनेवाले। ३—कुलही = टोपी।

४—बगुदा (बगुरदा)—एक प्रकार का शस्त्र है जो पेशक़ब्ज की भांति बना होता है।

५—"श्यामरंग तन मांह समाने" अर्थात् काले वस्त्रों में छिपे हुए।

६—घर कीन्हों = बुझा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

और दीप परगास में, लख्यो छाँह तेँ चोर ।
तानि कनपटी में हन्यो, कढ्यो बान उहि ओर ॥ १२ ॥

छंद ।

गिरयो चोर चंपति को मारयो । औरनि लियो उठाइ निहारयो ॥
चले चोर सब लोग जगाये । सोरसार करि दूर भगाये ॥
सदा प्रबुद्ध बुद्ध है जाकी । तासौं कैसे चलै कजाकी[1] ॥
यह सुनिकै चंपति की माता । दानविधान ज्ञान गुन ज्ञाता ॥
निकट आपने पुत्र बुलाये । सुखद मंत्र के बचन सुनाये ॥
तुम कीन्ही नृप को हित ऐडै । अब नृप परयो तुम्हारे पैंडै[2] ॥
तातैं अब यह मंत्र बिचारो । दिल्लीपति मिलिबो अखत्यारो ॥
मिलै दिलीस बहुत सुख पैहै । मनमान्यो मनसब[3] कर दैहै ॥

दोहा ।

ऐसे मंत्र बिचारि कै, पठयो दिली उकील[4] ।
सुनत साहि उमग्यो हियो, कब देखौं वह डील[5] ॥ १३ ॥

छंद ।

सुनत साहि चंपति चित चाहे । देखन के उर लगे उमाहे ॥
पहुँच्यो चंपतिराइ बुँदेला । मानी साहि धन्य वह बेला ॥
दै मनसब खंधार पठाये । दारा की ताबीन लगाये ॥
गढ़ खंधार[6] जाइ कै घेरयो । मुलकनि हुकुम साहि को फेरयो ॥
जब उमराइ घेरि गढ़ लागे । चंपतिराइ जुद्ध रस पागे ॥

१—कजाकी—शुद्ध क़ज़ाक़ी है = कपट, छल, चालाकी ।
२—पैंड़े परना = पीछे पड़ना । ३—मनसब = पद, अधिकार ।
४—उकील—इसका शुद्ध रूप वकील है = दूत ।
५—डील = महानुभाव, प्रतितिष्ठित पुरुष ।
६—खंधार = शुद्ध शब्द क़ंदहार है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गढ़ के निकट मोरचा[1] रोपे। सब उमराइन के जस लोपे॥
ढकिल करी[2] सबतैं अधिकाई। ओड़ी[3] गुरु गोलिन की धाई॥
डारे हलनि हलाइ गढ़ोई[4]। अरि के हिय की हिम्मत खोई॥

दोहा।

दारा गढ़ खंधार की, पाई फतै अचूक।
चंपति की हिम्मत लखे, उठी हिये में हूक॥ १४॥

छंद।

चंपति की हिम्मत उर आनै। रीझ ठौर दारा अनखानै[5]॥
फते पाई दिल्ली फिरि आये। मुजरा करि कै साहि मिलाये॥
सिंह पहार अनषु उर आनै। ठान प्रपंचनि के उर ठानै॥
चारी करै आप चहुं फेरा। खोज[6] डारि चंपति के डेरा॥
खोज पाइ जग इन्हैं लगावै। निरनौ[7] देत अनुष उर आवै॥
इहि बिधि डोर भेद के डारै। चतुरन हूँ नहि परत निहारै॥
कपट प्रपंच जु ह्वै करि आवै। झूठ ठौरि ते सांच बतावै॥
लिखै चितेरयो[8] ज्यौं जल बीची। सम कागद में ऊँची नीची॥

दोहा।

दुहू ओर अन्तर परयौ, क्रम ही क्रम यह रीति।
हियै अनषु[9] उनकै बढ्यौ, इनके धरी प्रतीति॥ १५॥

१—मोरचा रोपना = सैन्य भाग को आक्रमण कराने के लिये टिकाना।
२—ढकलि करी = प्रचंड रूप से धावा किया। ३—ओड़ी = सहन की।
४—गढ़ोई = गढ़ के लोग। ५—अनखानै = क्रोधित हुए।
६—खोज = चिह्न। ७—निरनौ = समाधान।
८—चितेरयो = चित्रकार। ९—अनषु = झुंझलाहट।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छंद ।

दूहूं ओर अन्तर जब जान्यौ । पिसुन[1] प्रवेस तबै उर आन्यौ ॥
भूप कह्यौ दारा सौं ऐसे । सुनौ भाग चंपति कौ जैसे ॥
तीन लाख की कौंच[2] सुहाई । दई साहि इनकौ मन भाई ॥
हाल जमा नौ लाख गनाई । बिना तफावत अबलौं खाई ॥
तातैं कौंच हमैं जौ दीजै । तौ नौ लाख रुपैया लीजै ॥
यह सुनि कै दारा सुख पायौ । पहिलौ अनषु हिये चढ़ि आयौ ॥
जहां न गुन की बूझ बड़ाई । चुगली सुनै चित्त दै साई ॥
रीझ ठौर प्रभु खीझ जनावै । तहां कौन गुन गुनी चलावै ॥

दोहा ।

रीझ फूलि खंडन करै, डारि खीझ के डौर ।
ऐसो स्वामी सेइये, तातै दुःख न और ॥ १६ ॥

छंद ।

दारासाहि लोभ उर आन्यौ । सेवा को सिगरो फल मान्यौ ॥
चंपति को यह बात सुनाई । तू जागीर तीगुनी पाई ॥

१-पिशुन = छली चुगुलखोर ।

२—कौंच = जालौन प्रान्तान्तर्गत दक्षिण भाग में एक नगर विशेष है और कोंच नामक तहसील का प्रधान नगर है । चँदेल वंश के इतिहास में प्रख्यात सिरसागढ़ नामक स्थान इसी तहसील के अंतर्गत पहूज नदी के तट पर है । जब महाराज पृथ्वीराज सिरसा गढ़ पर सेना संधान कर आए थे तब इसी कोंच नामक स्थान में उनकी सेना का डेरा पड़ा था । चौंड़ाताल तथा कुछ और बैठकें इत्यादि अब भी उस समय की स्मारक यहाँ देख पड़ती हैं । इसी के निकट पठा नमक पहाड़ी है । उसके निकट भी कुछ प्राचीन चिह्न पड़े हैं । इसी के "अकोढ़ी" नामक एक ग्राम के निकट रणखंभ रोपा गया था जहाँ पृथ्वीराज और चंदेलों का अंतिम युद्ध हुआ था । मुग़ल साम्राज्य में भी कोंच एक प्रसिद्ध सूबा था और यहाँ पर तहसील के निकट मीरखाँ पिंडारी और अंग्रेज़ी सेना का एक विकट युद्ध हुआ था । यह नगर आज कल भी व्यापार की एक प्रसिद्ध मंडी है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कौंन पहारसिंह मनभाई। देता हौं मेरे मन आई॥
तीन हुकुप दारा जो बोले। चंपतिराइ बचन त्यौं खोले॥
कौंच जाइ चंडालनि दीजै। वृथा हमारो छोर न छीजै॥
यह सुनि कै दारा अनखान्यौ। अरुन रंग आनन में आन्यौ॥
चंपतिराइ समर उर ठान्यौ। दिग्गज से दोऊ ऐड़ान्यौ[1]॥
दिगपालन को दहसत बाढ़ी। मजलिस रही चित्र ज्यौं काढ़ी॥

दोहा।

दिगपालन दहसत बढ़ी, कठिन देखि वह काल।
तुरत आनि आड़ा[2] भयौ, हाड़ा श्री छत्रशाल॥ १७॥

छंद।

हाढ़ा चंपति के ढिग आयौ। दारा कौ न भयो मन भायौ॥
दारा अन्दर को पग धारे। चंपति के इत बजे नगारे॥
डंका प्रगट बिसर[3] के बाजे। चंपतिराइ देश में गाजे॥
छोड़ि पातसाहन की सेवा। कियो अलंकृत आइ महेवा॥
पुत्र कलत्र मित्र सब भेटे। दिल के दुःख सबन के मेटे॥
चहूँ चक्र फौजैं फरमाई। अरि की बदन जोति मैलाई॥
धनिकनि गढ़ि धरि रहे लुकाई। सूबन सौं हठि चौथ चुकाई॥
दै हयवृन्द कविन्दन गाजै। निरमल सुजस जगत छबि छाजै॥

दोहा।

फैले चंपतिराइ के, जग में सुजस बिलंद।
उदै भये तिहुँ लोक जनु, कैयक कोटिन चन्द॥ १८॥

छंद।

तिहूँ लोक चंपति जसु जाग्यौ। सुनि सुनि को न हिये अनुराग्यौ॥
नृपति पहार करी जे घातैं। ते प्रगटी कहिवे कौ बातैं॥
जग में करो जे न कृतु मानै। नीकी करी लटी[4] उर आनै॥

१—ऐड़ान्यौ = ऐंठे। २—आड़ा होना = बीच बचाव करना।
३—बिसर = कूच। ४—लटी = खोंटी, बुरी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तिनके थल जे बनै बनाये। नृपति पहारसिंह ते पाये ॥
सदा न जग में जीवै कोई। जस अपजस कहिवे कौं होई ॥
जग जबतै अपजस जस छावै। क्रम तै अध ऊरधि गति पावै ॥
खोदे कुआ पधारे खालै[1]। महल उठावै ऊचै चालै ॥
इहि बिधि कर्मन की गति गाई। वेद पुरानन सुनी सुनाई ॥

दोहा।

जैसी मति उपजै हिये, तैसो मनु ठहराइ।
होनहार जैसी कछू, तैसी मिलै सहाइ ॥ १९ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे चौरबधपहारसिंह
प्रपंचवर्णनं नाम पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

१—खाले = नीचे की ओर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छठां अध्याय ।

छन्द ।

एक और अब सुनौ कहानी । होनहार गति जात न जानी ॥
साहिजहां दिल्लीपति गायौ । जाकौ हुकुम चहूँ दिस छायौ ॥
चारि पुत्र ताके मरदानै[1] । दारासाह साहि मनमानै[2] ॥
और मुरादसाह अरु सूजा[3] । औरँगसाह समान न दूजा ॥
बत्तिस बरष साह रस भीनै । भोग पातसाही के कीनै ॥
जबै अवस्था उतरन लागी । पुत्र प्रीति मन में अनुरागी ॥
साहिजहां यह चित्त बिचारी । दारा कौं दीन्ही सिरदारी ॥
दारा अपनौ हुकुम चलायौ । सब भाइन कौं हियौ हलायौ ॥

दोहा ।

हुकुमनु कै दिल्लीस कौ , भई और की और ।
उमडि साहजादिन किये , तखत लैन के डौर[4] ॥ १ ॥

छन्द ।

ब्यौंत बिमल बुद्धिन के डारे । तखत लेन के चित्त बिचारे ॥
साह मुराद हियौ हुलसायौ । गज सिक्का चलिबौ फरमायौ ॥
औरँगसाह चाहि सुनि लीनी । बिलसाई बर बुद्धि प्रबीनी ॥
इच्छा प्रगट तखत की छाँडी । प्रीति मुरादसाह सौं माँडी ॥
चित दै हित के लिखे लिखाये । अति प्रबीन उमराइ पठाये ॥
कह्यो मुरादसाह सौं ऐसौ । सरस बिचार मंत्र है जैसौ ॥
बिन ही दिली तखत लै बैसे[5] । आन[6] चलै गज सिक्का कैसे ॥
पेल[7] तखत पर बैठे जाई । दिल्ली पातसाह सो होई ॥

१—मरदानै = वीर । २—मनमानै = प्रिय था । ३—सूजा = शुद्ध शब्द शुजाअ है । ४—डौर = डौल, ढंग । ५—बैसे = बैठे ।
६—आन = और भाँति । ७—पेल = घुसकर, बरजोरी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

हमैं न इच्छा तख्त की , यह जानौ सब कोइ ।
चलो तुम्हैं लै देहिंगे , होनी होई सु होइ ॥ २ ॥

छन्द ।

औरँगसाह मंत्र तब कीनौ । साह मुराद हियै धरि लीनौ ॥
डिढ़ ठहराव यहै ठहरायौ । बाढ़ी प्रीति कुरान उठायौ ॥
दक्षिन तैं उमडे दोउ भाई । ठिले दीह दल पहुमि हलाई ॥
पूरब तैं सूबा दल साजे । प्रगट जुद्ध के धौंसा बाजे ॥
दारा घाट धौरुपुर[1] बांध्यौ । रोपि[2] अरावे[3] कलहै कांध्यौ ॥
सूबन के दिल दहसत ऐसी । अवधौं दई करत है कैसी ॥
हलचल मची चहूँ दिस ऐसी । खलभल प्रलै काल की जैसी ॥
प्रगटी चाह सीढरा[4] ढरक्यौ । चंपति कौ दच्छिन भुज फरक्यौ ॥

दोहा ।

फरक्यौ चंपतिराइ कौ , दच्छिन भुज अनुकूल ।
बड़ी फौज उमड़ी सुनी , भई जुद्ध की फूल[5] ॥ ३ ॥

छन्द ।

बड़ी फूल चंपति सुख पायौ । औरँग उमड़ि अवंती आयौ ॥
सिंह मुकुंद हतौ तंह हाड़ा । दल कौं भयो ऐंड़ धर आड़ा ॥
उमग्यौ औरँग कौ दल गाढ़ौ । हाड़ा भयौ समर में ठाढ़ौ ॥
बिकट सार समसेरन माचो । बाजत मारु कालिका नाची ॥
हाड़ा हरषि बिमानन बैठ्यौ । तब औरंग अवंती पैठ्यौ ॥
औरँगसाह तख्त कौं उमड़्यौ । दारा जहाँ मेघ सौ घुमड़्यौ ॥
सुनी खबर दारा अति कोप्यौ । चामिल घाट अरावौ रोप्यौ ॥
फिकिर बढ़ो सब कै दिल ऐसी । अवधौं दई होति है कैसी ॥

१—धौरुपुर = धौलपुर । २—रोपि = स्थापित करके, सम्मुख जमाकर ।
३—अरावे = तोपखाने, तोपैं । ४—सीढरा = सिंगड़ा, बारूद भरने की कुप्पी । ५—फूल = उत्साह, उमंग ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

कैसी धौं अब होति है , कीजै कौन बिचार ।
उड़ँ अरावे में सबै , भयौ सुभट संहार ॥ ४ ॥

छन्द ।

तब औरंग सबनि तन ताके । बल बौसाउ[१] सबन के थाके ॥
चकृत चित्त चारहुँ दिस दौरे । कछु न बुद्धि काहू की औरे[२] ॥
तब औरंग मतौ यह कीनौ । बिमल चित्त में चंपति दीनौ ॥
हित सौं लिखि फरमान पठायौ । चंपतिराइ सुनत सुख पायौ ॥
उमग भरे दल साजि उमंडे । नरबर[३] ढिग नौरँग जहँ मंडे ॥
तँह अलगारन[४] धाइ पहूँचे । देखे दल के झंडा ऊँचे ॥
चहूँ दिसि सोर कटक में छायौ । चंपतिराइ बुंदेला आयौ ॥
सुनि औरँग उर उमंग बढ़ाई । मनौ फते दिल्ली की पाई ॥

दोहा ।

आनन औरँगसाह कौ , चढ़यौ चौगुनौ चाव ।
ल्यावो चंपतिराइ कौं , हमसौं मिलै सिताब[५] ॥ ५ ॥

छन्द ।

धावन एक सहस जन धाये । चंपति कौं हित बचन सुनाये ॥
नौरँगसाह तुम्हैं चित चाहै । सबै तुम्हारे भाग सराहै ॥
तातैं अब बड़ बिलम[६] न कीजै । चलि दिलास कौं दरसन दीजै ॥
तौलगि नौरँगसाह पठायौ । तुरत बहादुरखाँ चलि आयौ ॥
कह्यौ आइ चंपति सौं भाई । तुम इतनी क्यौं बिलम लगाई ॥
अब यह समै बिलम कौ नाही । भई तिहारे चित की चाही ॥

१—बौसाउ = व्यवसाय, पौरुष । २— बुद्धि औरना = समझ में आना ।
३—नरबर—गवालियर राज्यान्तर्गत नगर विशेष—राजा नल की प्राचीन राजधानी ।
४—अलगारन = कूच पर कूचकरते हुए, शीघ्रता से, ।
५—सिताब—फार्सी शुद्ध शिताब = शीघ्रता से । ६—बिलम = विलंब, अबेर, देरी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब यह हाजिर है असवारी। चढ़ो पालकी करौ तयारी॥
चढ़ि पालकी पयानौ कीन्हौ। दरस प्रसन्न साह कौ लीन्हौ॥

दोहा।

मुजरा करि ऊभौ[1] भयौ, पंचम चंपतिराइ।
लखि आंखिन औरंग की, आनन्द झलक्यौ आइ॥ ६॥

छन्द।

औरँग अति आदर सौं बोले। मिलतहिँ बचन मंत्र के खोले॥
दारा उमड़ि जुद्ध कौं आयौ। कटक अडोल धौरपुर छायौ॥
बिकट अरावौ सनमुख दीनौ। चामिल घाट बांधि उन लीनौ॥
छुटे समुद्र सूखै चहूँघा के। उड़े मेरु मंदर से बांके॥
जौ समसेरन होइ लराई। ओड़ै सुभट सुभट की घाई॥
उमगे सूर साह के बाजै। ठेलै कौन प्रलै की गाजै॥
चामिल पार कौन बिधि हूजै। जैसे मन की इच्छा पूजै॥
आइ भयौ समयौ यह ऐसौ। चंपतिराइ कीजिये कैसौ॥

दोहा।

कैसौ अब कीजै कहो, पंचम चंपतिराइ।
अब आदर औरंग कौ, थक्यौ चौगुनौ चाइ॥ ७॥

छन्द।

बोल्यौ चम्पतिराइ बुंदेला। और घाट ह्वै कीजै हेला[2]॥
जौ दारा उत आड़ौ आवै। तौ रन हमसौं बिजै न पावै॥
सुनि औरँग अचरज उर आन्यौ। और घाट चम्पति तुम जान्यौ॥
चम्पति कही घाट हम जानै। तखत काज तुम करो पयानै॥
सुनि औरंग तखत रस भीनै। चौदह लाख खरच कौ दीनै॥
कीनौ कूच राति उठि जागै। चम्पति भयौ सबन के आगै॥

१—ऊभौ भयो = प्रदीप्तमान हुआ।

१—हेला = उतारा, फ़ौज को धसा कर पांथ नदी को पार करना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उमड़ि चलै दारा के सोहैं[1]। चढ़ी उदंड जुद्धरस भोहैं॥
चामिल उतरि सुभट गन गाजे। पार जाइ संधानै[2] बाजे॥

दोहा।

चम्पति मुख औरंग के, भली चढ़ाई ओप।
नातर उड़ि जातै सबै, छुटै तोप पर तोप॥८॥

छन्द।

चामिल पार भई सब फौजैं। तब नौरंग मन मानी मौजैं॥
दारासाह खबर यह पाई। चामिल पार फौज सब आई॥
आगै चम्पतिराइ बुंदेला। ह्वै हरौल[3] कीन्हो बगमेला॥
चामिल पार भये सब आछे। तजै अडोल[4] अरावे पाछे॥
दारा के दिल दहसत बाढ़ी। चूमन लगे सबनि की डाढ़ी॥
को भुजदंड समर में ठोकै। उमड्यौ प्रलै सिंधु को रोकै॥
छत्रसाल हाड़ा तंह आयौ। अरुन रग आनन छबि छायौ॥
भयौ हरौल बजाइ नगारौ। सार धार कौ पैरन हारौ॥

दोहा।

ह्वै हरौल हाड़ा चल्यौ, पैरनि साहसमुद्र।
दारा अरु औरँग भड़े, मनौ त्रिपुर अरु रुद्र॥९॥

छन्द।

दारा अरु औरंग उमंडे। मनौ प्रलैघन घोर घमंडे॥
बजै जुद्ध में निबिड़ नगारे। दुह दिसि बजै अरावे भारे॥
गुर गंभीर घोर धुनि छाई। फटि ब्रह्मांड परै जनि भाई॥
त्यौं बोले उमराउनि हल्ला। जम के भये कटीले कल्ला॥
हय गय रथ पैदल रन जूटे। घाइन सहित कबच धर फूटे॥

१—सोहैं = सम्मुख, मुक़ाबिले में।
२—संधाने बाजे = बाजे सम्हाले और बजाने प्रारंभ किए।
३—हरौल—शुद्ध हरावल = सेना का अग्र भाग, सेनाग्रणी नायक।
४—अडोल = जो हल चल न सकै, अचल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चंपति की जब बजी बदूखैं । मसहारिन[1] की मेटी भूखैं ॥
दारासाह बजत रन छाज्यौ । जबत[2] पातसाही कौ भाज्यौ ॥
हाड़ा सार[3] धार में पैठ्यौ । सूरज भेद बिमाननि बैठ्यौ ॥

दोहा ।

सूरन कौं सुरपुर मिल्यौ, चंद्रचूड़ कौ हारु ।
तखत मिल्यौ औरंग कौं, चंपति कौं जस चारु ॥ १० ॥

छंद ।

चंपतिराइ सुजस जग गायौ । ह्वै हरौल दारा बिचलायौ ॥
हरबल ह्वै दारा कौ बांकौ । बेटा बली बहादुरखाँ कौ ॥
जुद्ध बुंदेलनि सौं जब साज्यौ । हय हथयार छाड़ि भगि भाज्यौ ॥
पाई फतै भयौ मनभायौ । औरँग उमड़ि आगरे आयौ ॥
दारा पकरि पठाननि लीन्हौ । साह मुराद कैद में कीन्हौ ॥
धरनी लोक दुहुनि तैं छूट्यौ । नौरंगसाह तखत सुख लूट्यौ ॥
बैठे तखत बजे सधानै । चंपतिराइ साह मनमानै ॥
नौरँगसाह कृपा करि भारी । मनसब[4] दीन्हौ दुसहहजारी[5] ॥

१—मसहारिन = मांसाहारी जन्तु, यथा गृद्ध शृगाल आदि ।

२—जबत = जाब्ता, नियम । ३—सार = लोह ।

४—मनसब = पद । ५—दुसहहज़ारी—द्वाज़दहहज़ारी—यह बादशाही समय में एक पद था जिसका पानेवाला बारह हज़ार घुड़सवार सेना का नायक होता था। सेना पदधारी हज़ारी पंचहजारी दफ़्त हज़ारी आदि नामों से अपने अपने पद के अनुकूल लिखे जाते थे और इन्हीं पदों के उपयुक्त उनकी जागीरें होती थीं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

ऐरछ[1] अरु सहिजादपुर, कौंच कनार[2] समूल ।
मिली बड़ी जागीर सब, धरि[3] जमुना कौ कूल ॥ ११ ॥

छंद ।

मिली बड़ी जागीर सुहाई । जरँ[4] समीप[5] भतीजे भाई ॥
मुसकी तुरग लूट जो आनौ । खोज बहादुरखाँ सो जानौ ॥
कहि पठई चंवति कौं भाई । घर की लूट तिहारै आई ॥
दल में लुट्यौ भतीजौ तेरौ । सो सब साज प्रीति में फेरौ ॥
वह करवाल ढाल अरु घोरा । दीजौ राखि आपनौ तोरा ॥
चंपति कौं यह बात सुनाई । बैठे एंड़ प्रीति सों पाई ॥
तब चंपति ऊपर यह दीनौ । करि घमसान तुरग हम लीनौ ॥
ताकी अब चरचा न चलावो । घर ही यह मन कौ समुझावो ॥

दोहा ।

सुनत बहादुरखाँ बली, उत्तर दियौ न और ।
अनखु हिये में धरि रह्यौ, डारि बुद्धि के डौर ॥ १२ ॥

१—ऐरछ—यह नगर बेलातट झाँसी ज़िले के अंतर्गत है । यह बड़ा पुराना ऐतिहासिक नगर है । कहा जाता है कि नृसिंह अवतार यहीं हुआ है और हिरण्य-कश्यप की यहीं राजधानी थी । ईंटें यहाँ बहुत बड़ी बड़ी प्राचीन काल की भूमि के भीतर भरी पड़ी हैं । यहाँ ईंटे नहीं बनतीं, उन्हीं से सब काम चलता है । प्रसिद्ध किंवदंती है । "एरछ ईंट न होय" । यहां एक टूटा हुआ दुर्ग अद्यापि पड़ा है । मुग़ल साम्राज्य में यह एक प्रसिद्ध सूबा था ।

२—कनार—सूबै कनार यमुना तट का प्रान्त इटावे से लेकर बांदे तक कहाता था और इस सूबे की राजधानी कालपी थी । इस विषय का पता मुग़ल बादशाहों के फ़र्मानों से जो लगता है ।

३—धरि = पकड़े हुए, गहे हुए । ४—जरना = ईर्षा करना ।

५—समीप = समीपी, संबंधी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छंद ।

तौ लगि सोर कटकु में छायौ । पूरब तैं सूबा[1] चढ़ि धायौ ॥
गंगा उतरि प्रयाग पछेल्यौ । औरँगसाह सुनत दल पेल्यौ ॥
हुकुम बहादुरखाँ कौं कीन्हौ । उनि सुख मानि सीसधरि लीन्हौ ॥
उमड़ि फौज पूरब कौं धाई । हयखुर गरद गगन में छाई
और हुकुम चंपति पै आयौ । बैठे कहा साह फरमायौ ॥
गैरहाजिरी लिखि है कोई । मन सब घटै तगीरी[2] होई ॥
आलमगीर आप फरमायौ । हुकुम न मानै सो दुख पायौ ॥
उदित बचन उकील[3] सुनायौ । चंपति हियै अनख बढ़ि आयौ ॥

दोहा ।

अनखु बढ़्यौ मनसब तज्यौ , सेवा कछु न सोहाइ ।
डंका दै चंपति चल्यौ , आग आगरै लाइ ॥ १३ ॥

इति श्री लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे औरंगजेब-प्रपंच-चंपतिराइ विक्रम-मुकुंदहाड़ा-बध-दारासाह-पराजय-छत्रसालहाड़ा-बध-वर्णनं नाम षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥

१—सूबा—से अभिप्राय शुजा से है । यह बंगाल और आसाम का सूबेदार था। इससे औरंगजेब से खजुहे के समीप जो फतहपुर के ज़िले में है लड़ाई हुई थी ।

२—तगीरी शुद्ध अर्वी शब्द तग़यीरी تغيري है जिसका अर्थ तबदीली का है। ३—उकील—शुद्ध रूप वकील—यहाँ अर्थ हैं शाहीदूत, साही समाचार लाने हारा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सातवाँ अध्याय।

छन्द।

चंपतिराइ देस में आये। चंड प्रताप चहूँ दिस छाये॥
फौज पेलि भाँड़ैर[1] उजारी। भुमियावट[2] उर में अखत्यारी॥
ऐरछ आइ कोट में बैठे। सूबन के उर में डर पैठे॥
पहुंची खबर साह कौं ऐसी। चंपतिराइ करी उत जैसी॥
सो औरंग चित्त धर लीनी। पहिल फिकिर सूजा की कीनी॥
नौरंगसाह साज दल धायो। जूझ जीत सूजा बिचलायौ[3]॥
दावादार रह्यौ नहि कोई। बैठ्यो तखत साहिबी जोई॥

दोहा।

गज सिक्का औरँग कौ, चल्यौ हुकुम लै संग॥
देसनि देसनि कौं चले, सूबा तेज अभंग॥ १॥

छन्द।

सूबा ह्वै सुभकरन सिधायौ। हित सौं पातसाह पहिरायौ॥
सँग बाइस उमराउ पठाये। लै मुहीम चंपति पै आये॥
जोरि फौज सुभकरन बुँदेला। ऐरछ पर कीन्हौ बगमेला॥
बाजत सुनै जूझ के डंका। उमड़ि चल्यौ चंपति रनबंका॥
माची मार दुहूँ दिस भारी। रचनहार कौं मुसकिल पारी॥

१—भाँडेर = दतिया राज्यान्तर्गत नगर विशेष है। यहीं चितौड़ाधीश बापा रावल का पोषण हुआ था।

२—भुमियावट = घरेऊ रीत पर अपने भूमिस्वत्व पर अधिकार करना।

३—बिचलायौ = भगा दिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चले हाथ चंपति के ऐसे। छूटै बान धनंजय कैसे॥
उतकट भट बखतर धर मारे। कूटे हय गय पक्खरवारे[1]॥
सूखे कढ़े रुधिर नहि छीवै। लागत प्रान परन के पीवै॥

दोहा।

ठिल्यौ कटक सुभकरन कौ, ठिल्यौ खवास अडोल।
रनउमंग में उमड़ि कै, नच्यौ तुरंग अमोल॥ २॥

छन्द।

तबहिँ बान चंपति कौ छूट्यो। हठुवा लग्यो पुठी ह्वै फूट्यो॥
गिरो तुरंग खवास हँकारचौ। सेा कासिमखाँ बरछो मारचौ॥
उगरसाह तंह मार मचाई। साहि गढ़ै अति ओप चढ़ाई॥
चंपतिराइ बिजै तँह लीनौ। मुँह मुरकाइ[2] अरिन कौ दीनौ॥
बिकट कटक झुकझोरि झुलायौ। ह्वाँतै उमड़ि धरौनी[3] धायौ॥
निकट रायगिरि तै तहँ आयौ। तहाँ खोज बंका दल छायौ॥
जानि कटक उमराइ करेरौ। दीनौ राति उमंडि दरेरौ॥
सुभट बान गोलिन सौं कूटे। अरि के बिकट मोरचा छूटे॥

दोहा।

पैठे उदभट कटक में, कपटे बिकट पठान।
घाइन घालत[4] चाव सौं, करि चंपति की आन॥ ३॥

छन्द।

तहाँ मार माची अति भारी। चंपतिराइ तेग झुकि झारी॥
उमड़ि बैरि कौं चलदल कीन्हो। कटक युद्ध कौं पैदल लीन्हो॥
समर बीर बैरिन पग रोपे। जो न जिहाज ओट धरि कोपे॥
बर्षत अस्त्र कवच धर फूटे। मघामेघ मानौ झर जूटे॥

१—पक्खर = पाखर, हाथी घोड़ों का कवच।
२—मुरकाना = फेर देना, भगा देना। ३—धरौनी = स्थान विशेष।
४—घालना = मारना, चलाना।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तहाँ चौदहा मेघ सिधारयौ। सुनि सरदार समान हकारयौ॥
कहै चौदहा मुजरा मेरौ। हौं मारौं सरदार अनेरौ॥
चंपत लख्यौ बचन सुनि प्यारौ। ग्रौचक आनि कियौ उजियारौ॥
छुट्यौ बान बैरी कौ भूख्यौ। छाती लग्यौ कढ़्यौ अति रूख्यौ॥

दोहा।

पंचम चंपतिराइ कै, लग्यौ बान कौ घाइ।
अधिक युद्ध के रस भयौ, बढ़्यौ चोगुनौ चाइ॥ ४॥

छन्द।

हला बोलि बैरी महि आयौ। चंपतिराइ युद्धरस छायौ॥
रन चंपति की नची कृपानी। धरी भीम जनु कीचक घानी॥
फौज फारि चंपति जसु लीन्हौ। अमृत हरत ज्यौं सुपरन कीन्हौ॥
कटकु खोज बंका कौ कूट्यौ। चंपतिराइ बिजै सुख लूट्यौ॥
जीति पाइ अनघोरी[1] आये। चाल दई सुभकरन सिधाये॥
तँह सिकार खेलन अभिलाषी। देबीसिंह नृपति की राखी॥
आइ अजीतराइ तहँ रोके। बर भुजदंड समर में ठोके॥
रहो अजीतराइ कै ऐंड़ै। पैठि सक्यौ सुभकरन न मैंड़ै[2]॥

दोहा।

राजा देबीसिंह कौं, डेरौ दीनौ देस।
उमड़्यौ चंपतिराइ पै, श्री सुभकरन नरेस॥ ५॥

छन्द।

सुनि सुभकरन जुद्धरस भीनौ। मंत्र सुजानराइ सौं कीनौ॥
लरत भिरत बहु काल बितीते। घने जुद्ध सूबन सौं जीते॥
ऐंड़ पातसाहिन सौं कीनी। गई भुमि बंधुन लै दीनी॥
कठिन टौर मसलहत बताई। नौरँगसाह दिली तब पाई॥

१—अनघोरी = चुपचाप, अचानक। २—मैंडे = सीमा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दारा दल जीते मुहरा ते। बड़ी कौन अब हम कौं बाते॥
घाइल भये हमारे भाई। और अवस्था सी कछु आई॥
ये सुभकरन पिले दल साजे। बंधु विरोध करत हम लाजे॥
जो कीजै अब उमड़ि लराई। जीते हू जग में न बड़ाई॥

दोहा।

गोतघाउ[1] तैं आजु लौं, हमैं बचायो ईस।
अब सलाह इन सौं करैं, कछू न ह्वैहै खीस[2]॥ ६॥

छन्द।

यौं मन आनि लगाई बातैं। होई सलाह कटक बिन जातैं॥
सुनि सुभकरन घनौ सुख पायो। मन मिलाइ मिलिवौ ठहरायो॥
यौं चंपति कहि कुशल सुहाती। लिखी सुजानराइ कौं पाती॥
सुरह्यौ[3] घाइ देह बल आयो। खेल सिकार तुरग दौरायो॥
बाँचत चिठी जान वह लीनी। चंपतिराइ सलाह न कीनी॥
मिलिवे काज बोल हम बोल्यो। हित सौं हियो सुभकरन खोल्यो॥
बोल बोलि जो मिलन न जैये। तो झूठे जग में ठहरैये॥
तातैं बनै मिलै निरधारै। चंपति हमैं न झूठे पारै॥

दोहा।

मिलिवौ राइ सुजान कैं, हियै रह्यौ ठहराइ।
इत अनघोरी ले चलै, घर कौं चंपतिराइ॥ ७॥

छन्द।

घर कौ चंपतिराइ सिधाये। दल लै दुवन दलीपुर आये॥
तंह छत्रसाल भगतिरस भीनै। उमगि पिता के दरसन कीनै॥
पहुँचि बेदपुर में छवि छाये। मिलै सुजानराइ सन भाये॥

१—गोतघाउ = बंधु विरोध, वंश हत्या। २—खीस = हानि।
३—सुरह्यो = घाव भर आया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोऊ बीर मंत्र कौं बैठे। दिगपालनि के उर भय पैठे॥
तहाँ सुजानराइ जो बोले। बचन सलाह करन के खोले॥
ते चंपति के चित्त न लागे। उद्दित जुद्ध बुद्धि रस पागे॥
जब हम बिरस[1] साह सौं कीनौ। तब इन बचन कह्यौ रिस भीनौ॥
हम न साह कौं मनसब छैहैं। भुमियावट में सामिल रैहैं॥

दोहा।

जब हम भुमियावट करी, तब इन करी मुहीम॥
हमै जीति ऐ ग्रौंड़छौ, चाहत है सब सीम॥ ८॥

छन्द।

चंपतिराइ सलाह न मानी। राइ सुजान वहै ठिक ठानी॥
मन बच कर्म संधिरस राचै। मिलै न चंपति जब ह्वै साचे॥
तहँ सुभकरन साजि दल धाये। समर ठानि चंपति पै आये॥
फौजै उमड़ि निकट जब आई। तब कीन्ही चंपति मनभाई॥
दल पर बान बज्र से बरषे। कौतुक लखैं देवता हरषे॥
हलनि हलाइ फौज बँध फोरै। घनझुंडा[2] ज्यौं पवन झकोरै॥
खलभल परी दुबन दल भानै। कित धौं गयौ कौन नहि जानै॥
जब न व्यौंत कछु चलै चलाये। तब सुभकरन हजूर बुलाये॥

दोहा।

सँग लै राइ सुजान कौं, मुजरा कीन्हौ जाइ।
देखि साह सुभकरन को, अनतहि दियौ पठाइ॥ ९॥

छन्द।

त्यौंही साह कियो मनसूबा। दक्षिण को भेजो करि सूबा॥
नामदारखां नाम बखानौ। दिल्लीपति के अति मन मानौ॥
रतनसाह तिन संग पठाये। चंपति रहे देस में छाये॥
लिखी नवाबसाह कौं ऐसी। चाहे करन बड़ाई जैसी॥

१—बिरस = बिगाड़, विरोध। २—घनझुंडा = दल बादल।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रतनसाह चंपति कौ जायौ। मिल्यौ मोहि सेवा में आयौ॥
ऊतर साह न दूजौ दीन्हौ। बांचत लिखौ कैद करि लीन्हौ॥

दोहा।

दिल्लीपति की ओर कौ, जबही सुन्यौ जुवाब।
रतनसाह कौ तुरतही, विदा कियो जु नवाब॥ १०॥

छन्द।

राइ सुजान करी जे घातैं। ते न भईं सब मन की बातैं॥
है उदास ह्वांतै उठि आये। ए विचार मन में ठहराये॥
जहां न आदर बूझ बड़ाई। जहां न प्रापति[1] बंधु न भाई॥
जहां न कोऊ गुन कौ पूजै। तहां न पल भर ठाढ़े हूजै॥
सेवा पातसाह की छाड़ी। फेरि सलाह ओंड़छै माड़ी॥
तब बिनई हीरादे रानी। हम सेवा नृप की उर आनी॥
कछु न कपट जानौ हम माही। निहचै चंपति में हम नाहीं॥
तब रानी जुग फूट्यौ जान्यौ। उर बिश्वास करिबो ठिक ठान्यौ॥

दोहा।

त्यौंही राइ सुजान सौं, हितुन कही समुझाइ।
तुम अपनी रच्छा करौ, रचियतु इहां उपाइ॥ ११॥

छन्द।

यह सुनि राइ सुजान सिधाये। तज ओंड़छौ बेदपुर आये॥
अँगदराइ रतन गुन भारे। छत्रसाल जग दृग के तारे॥
तीनौं कुँवर महेवा छाये। समाचार फौजन के आये॥
तिनमें छत्रसाल परबीने। खेलत आखेटक रस भीने॥
हेलहि बरष ग्यारही लागी। प्रगट साल सोरह की दागी॥
अंगदराइ मंत्र तँह कीन्हौ। ढिग बुलाइ छत्रसालहि लीन्हौ॥

१—प्रापति = प्राप्ति।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हित सौ कहै बचन निरधारे। मामनि[1] के तुम जाउ छतारे[2] ॥
और मंत्र मत उर में आनौ। हुकुम मानि तुम करौ पयानौ ॥

दोहा।

ज्यौं खरदूखन के समैं, धरे धनुष तूनीर।
अज्ञा श्री रघुनाथ की, मानी लछमन बीर ॥ १२ ॥

छन्द।

जो छत्रसाल तहां पगु धारे। जहाँ सुनै मामा अनियारे ॥
समाचार चंपति सब लीन्है। डेरा जाइ बेरछा कीन्है ॥
हीरादे[3] फौजै फरमाई। डंका देत जतारह आई ॥
तहँ तें दो फौजैं करि धाये। दुहु दिसि दोऊ बीर दबाये ॥
औचक फौज वेदपुर आई। भीर[4] सुजान न जोरन पाई ॥
तीन सुभट सँग लीन्है बैठे। प्रतिभट उमड़ि जाइ कर पैठे ॥
इत सुजान की छुटी बँदूखैं। फूटी बर बैरिन की कूखैं ॥
झिल झिल फौज ठिलाठिल धावै। चहुँदिस छोर छुवन नहि पावै ॥

दोहा।

दारू[5] गोली के घटै, तीरन माची मार
छूछे[6] भये तुनीर सब, परयौ फौज कौ भार ॥ १३ ॥

छन्द।

परयौ भार मारू सुर बाजैं। तीनौं सुभट समर सुभ छाजैं ॥
उमड़ि मनौला हरी जसौधी। दल में तैग तड़ित सी कौधी ॥
मार करै रनसिन्धु बिलौरै[7]। तैगनि तमकि ताल सो तैरे ॥
लरयौ उलटि रन पंडित पांडे। झुक झपेटि खंडे अरि चांडे ॥
रुचि सौं सार खात ज्यौं मेवा। घाइन कै धरि कंजा नेवा ॥
पाइ दुहुँ के परे न पाछै। पैरै सार धार में आछै[8] ॥

१—मामनि = मामाओं के यहाँ। २—छतारे = छत्रशाल का प्यार का नाम।
३—हीरा दे = हीरादेवी। ४—भीर = फौज। ५—दारू = बारूद।
६—छूछे = रिक्त, खाली। ७—बिलौरै = हिलावै। ८—आछै = भले।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

स्वामि हेत तिल तिल तन टूटे। भानु हेत सुरपुर सुख लूटे॥
फौजैं पिली रुकत नहि जानी। सुरपुर कौं उमगी ठकुरानी॥

दोहा।

सब ठकुरानिन उमगि कै, कीन्हौ अगिन प्रवेस॥
देखत साहस थकि रह्यो, देविन सहित दिनेस॥ १४॥

छन्द।

लख्यौ सुजानराइ ठिक ठायौ। सबही कौ विक्रम मन भायौ॥
यह संसार तुच्छ करि जानौ। राखौ रजपूती कौ बानौ॥
तन कौ कियौ न लोभ न जी कौ। धरयौ लिलाट राज कौ टीकौ॥
सब के संग अमरपुर लीनौ। काढ़ि कटार पेट में दीनौ॥
मरयौ सुजानराइ कै जायौ। लरयौ अरुन आनन छवि छायौ॥
ओड़ी अरि अस्त्रनि की घाई। जूझौ मनै मार कै माई॥
समिटि फौज ह्वांतै फिरि आई। जहां खबरि चंपति की पाई॥
चंपति जहां जुद्धरस भीनै। रोगन[1] आनि सिथिल करि लीनै॥

दोहा।

बल धरि धाये खल सबै, खबर ज्यान[2] की पाइ।
नातर कौ बचतौ कहां, बिचरै चंपति राइ॥ १५॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते छत्रप्रकाशे शुभकरन पराजय-
बंकाबधबर्णनं नाम सप्तमोऽध्यायः॥ ७॥

१—रोगन आनि सिथिल करि लीनै = महाराज चंपतराय रोगों से ग्रसित थे और क्लान्त तथा शिथिल होकर निष्पौरुष हो रहे थे। २—ज्यान = निर्बलता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आठवाँ अध्याय ।

छन्द ।

चंपतिराइ सुनै दल धाये । छाड़ि ओरछा अंत सिधाये ॥
तीन रोज बीते जटवारे[1] । फौजै फिरे खोज निरधारे ॥
तब चंपति यह मंत्र विचारयौ । सहरा[2] कौं जैवौ निरधारयौ ॥
सहरा भूप इन्द्रमनि भाषै । हते साह नाली में राखै ॥
जब हजूर चंपति पग धारे । तहाँ कैद में भये निहारे ॥
चंपति अरज साह सौं कीन्ही । कैद छुड़ाइ भूप कौ दीन्ही
छुट्यौ इन्द्रमनि देसहिँ आयौ । फेरि राज सहरा कौ पायौ ॥
करी हती इहि भांति निकाई । तातैं मति सहरा कौ धाई ॥

दोहा ।

सहरा कौ सूधै भये , चंपति सिथिल सरीर ।
घात ताक पाछै परी , बैरिन की भट भीर ॥ १ ॥

छंद ।

ठिले दलेल दौवा दल पाछे । सोरह सहस सुभट सँग आछै ॥
चंपति संग भीर कछु नाहीं । सँग असवार पचीसक आहीं ॥
सहरा कौं सूधे पग धारे । दिन दिन बढ़ै रोग अति भारे ॥
दौर[3] कोस सोरह की कीनी । उतरि घरिक घोरन दम दीनी ॥
तुरँगनि रातिबु[4] दैन विचारौ । तौं लगि अरि कौ सुन्यौ नगारौ ॥
नजर परी बैरिन की गोलै[5] । चंपति बैठे तरकस खोलै ॥

१—जटवारा = नगर विशेष । २—सहरा = नगर विशेष ।
३—दौर = धावा । ४—रातिब = दाना, चारा । ५—गोलै = झुंड ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चढ़्यौ तुरी तरकस कटि मांही। व्यौंत[1] बान घालिन[2] कौ नांही॥
तंह आड़ौ[3] इक औघट[4] आयौ। दब करि चंपतिराइ नकायौ॥

दोहा।

औघट के नाकत तहां, तन कौ लगी न बार।
चारौ पुतरी झारिकै, उतरि परचो इहि पार॥ २॥

छंद।

पीछै तहां इन्द्रमनि राजा। औघट धस्यौ तुरंगम ताजा॥
गिरौ इन्द्रमनि दिन तौ थोरौ। साधत बन्यौ न औघट घोरौ॥
मिली फौज बैरिन की बांकी। काढ़ि कृपान इन्द्रमनि हांकी॥
टूक टूक तन सन्मुख टूट्यौ। बीरलोक कौ आनँद लूट्यौ॥
जब लगि जूझ इन्द्रमनि कीन्हौ। चंपति गांउ दौर करि लीन्हौ॥
सहरा सहर खबर यह ठाई। साहिबसिंह धधैरै पाई॥
चंपतिराइ चले इत आये। नातै प्रगट प्रीति के पाये॥
ऐसे समै कहा मनु धावै। हितू बिना को काकै आवै॥

दोहा।

तातै इहां बुलाइ कै, चंपति कौ निरधारि।
यह बिचारि पठये तहां, ते द्वै सै असवारि॥ ३॥

छंद।

तँह दौवा[5] सिबराम सिधारचो। अरु गुपाल बारी निरधारचो॥

१—व्योंत = अवसर। मौका। २—घालिन = चलाने का।
३—आड़ो = बीच में। ४—औघट = कुघाट, नाला।

५—दौवा = बुंदेलखंड के राजाओं में यह प्रथा है कि राजा को बाल्यावस्था में जिस धाय ने दूध पिलाया है उसका पुत्र जो राजा के समान वय का होता है उस राजा का दौवा अर्थात् धाय-पुत्र कहाता है। राज्य दर्बार में जाति का विचार न करके इस दौवा का विशेष सम्मान होता है। उसके लिये वेतन, तथा जागीर लगा दी जाती है। ये धायें बहुधा अहीर खवास और राजपूत अदि जातियों की स्त्रियां होती हैं। राजा अपनी धाय के पति को कक्का कह करि संबोधन करते हैं। दौवा को राजा अपने सहोदर की भांति मानते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करिहि कूच तिहि गावैं आये। चंपतिराइ जहां सुन पाये॥
ग्रौचक सुनी फौज जब आई। चंपतिराइ कमान चढ़ाई॥
उठि कै हिम्मत हियै बढ़ाई। सेंके[1] बिना कमान चढ़ाई॥
उतरे ताहि बहुत दिन बीते। फिरी कमान मनोरथ रीते॥
छत्रसाल तंह बैठे आगै। उर उत्साह जुद्ध के जागे॥
त्यौंही छत्रसाल की माता। जग में एक पुन्य की त्राता॥
कढ़्यौ कटार हाथ में लीन्हौ। हुलसि पतिव्रत में मनु दीन्हौ॥

दोहा।

तहां धंधेरै[2] गांऊ के, जुरे[3] फौज सौं जाइ।
अति अडोल बातैं कहीं, सब कौ प्रगट सुनाइ॥ ४॥

छंद।

को हौ तुम आवत मन बाढ़ै। चंपति को हम तजैं न काढ़ै॥
जौहर पहिल हमारे ह्वैहै। ग्रौर छांह तब इनकी छैहै॥
सुनि सरदार फौज के बोले। इतै रोस काहे कौ खोले॥
हम उर नाहिं कपट छल छाये। चंपति चलै लैन हम आये॥
हम इनकौं सहरा लै जैहैं। दुशमन कहूँ खोज नहिं पैहैं॥
यह विधि सीतल बात सुनाई। सुनत प्रतीति सबनि कौं आई॥
तहां उतरि उन डेरा कीन्हा। सब के चित्त सुचित करि दीन्हा॥
सहरापुर कछु दिना गमाये[4]। ह्वांतै सीता बरहिं सुहाये॥

दोहा।

देवालौ रघुनाथ कौ, हतौ निकट तिहि राउ।
दरसन को चंपति गये, धरै भगति कौ भाउ॥ ५॥

१—सेंकना = आग दिखा कर गरम करना।

२—धंधेरे = राजपूतों की एक जाति। बुंदेलखंड में धंधेरे, परमार, बुंदेले ये तीन प्रकार के राजपूत परस्पर संबंध और बेटी व्यवहार करते हैं।

३—जुरे = भिड़े, सम्मुख हुए। ४—गमाये = व्यतीत किये।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छंद ।

देखे उदित रूप सुहाये । सीता राम लखन छवि छाये ॥
अरि की फौज रोस रूख पागी । उमड़ि तुरतु सहरा सौं लागी ॥
सोचु विचार भयो अति भारी । कछु ठहराउ नहीं निरधारी ॥
एकै कहै कूच करि जैयै । मोरन गांउ बचाई हैयै ॥
करी इंद्रमनि कौ हम नीकी । कहा जान करि ह्वैहै फीकी ॥
एकै कहै खबर सुनि लीजै । इनकौ नहीं भरोसौ कीजै ॥
ह्वांतै फौज साजि कै धाये । हम सौं कहै लैन हम आये ॥
गयो मुहीम इंद्रमनि राजा । सूनौ सहर सुनौ सिरताजा ॥

दोहा ।

बन्यो आइ मरिवो इहां, घर घर माच्यो घैरु ।
रिपु सौं राइ सुजान कौं, लैन न पायो बैरु ॥ ६ ॥

छंद ।

लै उसास सिगरे जो बोले । सुनि छत्रसाल बचन तब खोले ॥
इहां बनै मरिवो तौ नीकौ । जंह रघुनाथ सरन सबही कौ ॥
चंपति व्यौंत बुद्धि के कीन्हे । सुनि विचार सबही के लीन्हे ॥
सब को मूल देह निरधारचौ । असुर मारि भुवभार उतारचौ ॥
रिपिन देह आनँद सौ लीन्हौ । तपु करि चित चंचल बस कीन्हौ ॥
जनक जजाति देह धरि आये । जज्ञ दान करि स्वर्ग सिधाये ॥
सूरन सतिन देह जे पाये । करि करतूति सुजस बगराये ॥

दोहा ।

तातै जँग में देह की, रच्छा कीजै आदि ।
सब साधन यातैं सधैं, और बात सब बादि ॥ ७ ॥

छंद ।

हम ही देह धरचौ जग माही । करतूती कीन्ही चित चाही ॥
एक बात जु रही है कीवै । बैर सुजानराइ कौ लीवै ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जदपि अनित्य देह यह गाई। समयै छूटि एक दिन जाई॥
जौ कहूँ सदरार में छूटै। तौ छत्री सुरपुर सुख लूटै॥
तातैं तनक देह बल आवै। तौ कीजै जोई मन भावै॥
कैहूँ रोग देह तै छूटै। राखौ बांधि समुद्र जौ फूटै॥
कितिक औंछड़े में दल आही। जुरत जुद्ध जमलोकहि जाही
जौ कहूँ नैकु बुद्धि बल पाऊँ। तौ दिल्ली झकझोरि झुलाऊँ॥

दोहा।

जौ मुकाम क्यौंहूं बनै, तौ कीजै उपचार।
असवारी कौं बल बढ़ै, झारौं झुक झुक सार॥ ८॥

छन्द।

जौलों सहरा भई लराई। फतै दलेल दोवा तहँ पाई॥
साहिबराइ बिताव रहोऊ। गढ़ में रहै सकिल[1] कै दोऊ॥
साहस चित्त दुहुन का छूट्यो। गुपित पाप चंपति कौ ऊट्यो॥
तब पाती लिखि गुपित पठाई। दौवा अरु बारी कौ आई॥
तुम विस्वास चँपति कौ कीजौ। जीवदान हमकौं तुम दीजौ॥
चाहत हौं न अरिन की बाही। हमकौं कठिन परी गढ़ माही॥
पहिल फतै हमही पह लीजै। पातसाह सौं मुजरा कीजै॥

दोहा।

जबलौं चंपतिराइ कौं, जियत सुनै सब कोइ।
तबलौं अरि की फौज की, दौरै हम पर होइ॥ ९॥

छंद।

सुनी चिठी दौवा अरु बारी। नीचन नीचो बुद्धि बिचारी॥
कही जुरयो फौजन को नाकौ। मोरनगांव चलौ वह बाकौ॥
इत मुकाम चंपति कौं भावै। सहरावारौ कूच करावै॥

१—सकिल के रहे = भाग कर जा घुसे।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कूच मुकाम बनै नहि दोई। जैसी होनहार सो होई ॥
तहँ इक बुद्धि चित्त में आनी। लालकुंवरि परतिच्छ भवानी ॥
दै दै धन पंडा सब साधें। सुमिरन करि रघुबर अवराधे ॥
पति के रहिबे की ठिक पारी। इतै कूच की करी तयारी ॥
सुनि चंपति अति ही सुख पायो। गुपित मंत्र काहू न जनायो ॥

दोहा।

छत्रसाल कीन्हो बिदा, तुरत राज तिहि ठांउ।
हमहीं आवत तुम चलौ, ज्ञानसाह के गांउ ॥ १० ॥

छन्द।

छत्रसाल उठि रात सिधारे। ज्ञानसाह के गांउ पधारे ॥
गये बहिन के मिलन जहां ही। आदर भाव प्रीति कछु नाही ॥
बड़ दुख होइ इकतरौ आवै। तीन उपास न बल तन तावै ॥
बहिन देखि कछु बात न बूझी। मिली न आइ कहाधौं सूझी ॥
ह्वै उदास फिरि आये डेरा। भई रसोई कहां कुवेरा[1] ॥
तौलगि ज्ञानसाह घर आये। समाचार सब सुनै सुनाये ॥
तब डेरा दै जिनस पठाई। भई रसोई रात गमाई ॥
समौ परै सब करै रुखाई। बहिन कौन को काकौ भाई ॥

दोहा।

छत्रसाल कौं करि बिदा, चंपति भये तयार।
सँग दो सौ ठाढ़े भये, सहरा के असवार ॥ ११ ॥

छंद।

चंपतिराइ बुद्धि यह कीनी। ठकुराइनि कौ अज्ञा दीनी ॥
मोरनगांउ चला उत बारी। चलै तहां कौ खाट हमारी ॥
पौढ़े एक खाट पर कोई। नस सिख तै पट ओढ़ै सोई ॥

१—कुवेर = अतिकाल, अवेर।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सँग लीजै सहरा कै बारी। दौ सै घोरै फिरै हथ्यारी॥
फौज टारि मोरन लै जैयो। प्रभु कौं छल सौं इहां छँपैयो॥

दोहा।

एक माइके कौ तहां, सेवक हतौ हजूर[१]।
ताहि बुलायौ जानि कै, यातै परै न भूर[२]॥ १२॥

छन्द।

कही बात तासौ ठकुरानी। तैं प्रतीति को है हम जानी॥
तातै तोकौं मंत्र सुनायौ। प्रभु के चित्त ब्यौंत यह आयौ॥
तू चलि पैढ़ि खाट पर आछै। हौहूँ चलत संगही पाछै॥
यह सुनि कै वह भरी न हामी[३]। झुक झहरानी नौनहरामी[४]॥
पाइन परी जदपि ठकुरानी। स्वामिभगति उर तऊ न आनी॥
जब अति सोर करत वह जान्यौ। तब कीनौ वाही कौ मानौ॥

दोहा।

कूच करै चंपति चले, होनी हियै बिचार।
जिततैं मद्दति चाहिये, तित तैं धाई धार॥ १३॥

छन्द।

चली फौज सँग सहरा बारी। संग दो सै असवार हथ्यारी[५]॥
ताकै घात पाप उर आनै। चंपति तिन्हैं सहाइक जानै॥
सात कोस जौ लौं चलि आये। भये दगैलन[६] के मन भाये॥
आपुस माझ इशारत[५] कीनी। कर उलछार सैंहथी[७] लीनी॥
मारे सुभट दुइक उन संगी। चंपति पै उमड़े जुर जंगी॥

१—हजूर = उपस्थित था। २—भूर = चूक, भूल।
३—हामी न भरी = स्वीकार न किया। ४—नोनहरामी = कृतघ्न।
५—हथ्यारी = शस्त्रधारी। ६—दगैलन = दग़ावाज़ों, विश्वासघातियों।
५—इशारत = इंगित, इशारा। ७—सैंहथी = बर्च्छा, कटार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पृथ्वीराज रासो ।

यह हिन्दी साहित्य का सब से प्राचीन ग्रन्थ है जो अब तक प्राप्त हुआ है। इसमें कवि ने भारतवर्ष के अन्तिम क्षत्री सम्राट् राजा पृथ्वीराज का जीवनवृत्तान्त विस्तारपूर्वक लिखा है जो आदि से अन्त तक विचित्र घटनाओं से भरा हुआ है। इतिहास प्रेमियों के लिये तो यह ग्रन्थ अनमोल रत्न है। इसकी भाषा कुछ कठिन है अतः सभा ने समस्त ग्रन्थ के सारांश को सरल हिन्दी भाषा में इसके साथ ही साथ छपवाया है जिससे मूल ग्रन्थ के पठन पाठन में बड़ी सहायता और आनन्द मिलता है। मनोरञ्जक तो यह इतना है कि कहीं से कोई पृष्ठ उठा कर दस पांच पंक्तियाँ पढ़िये फिर कदापि आप समस्त ग्रन्थ पढ़े बिना नहीं रह सकते। जिन हिन्दी प्रेमियों ने इस ग्रन्थ को अब तक नहीं लिया है उन्हें इसकी एक प्रति अवश्य लेनी चाहिए। इसके ६९ पर्व्व २२ भागों में छपे हैं जिनका मूल्य २४) है। प्रत्येक भाग जुदा जुदा भी मिल सकता है। मूल्य १॥) के लगभग है।

अन्य उपयोगी पुस्तकें ।

हम्मीर रासो (रणथंभौर के वीर शिरोमणि महाराज हम्मीर देव का जीवनचरित) २)

हम्मीर हठ ,, ॥)

जंगनाम (दिल्ली के बादशाह बहादुर शाह के पुत्रों का युद्ध) ॥)

इन्द्रावती १॥)

कवि आनन्द घन कृत विरहलीला =)

भूषण ग्रन्थावली (प्रसिद्ध कवि भूषण के शिवराज भूषण, शिवा बावनी आदि ग्रन्थ) १॥=)

सुजान चरित्र २)

भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र का जीवनचरित्र ॥=)

महिला मृदुवाणी (भारतवर्ष की विदुषी स्त्रियों की संक्षिप्त जीवनी) १)

हिम्मत बहादुर विरुदावली (बांदा के प्रसिद्ध वीर हिम्मत बहादुर का चरित्र) १)

नन्द दास की रासपंचाध्यायी ।=)

अखरावट ।=)

यूरोपीय दर्शन (यूरप के दर्शन शास्त्र का इतिहास) ॥)

परिचर्याप्रणाली (रोगी की शुश्रूषा करने की विधि) ।)

संक्षेपलेखप्रणाली अर्थात् हिन्दी शार्टहैण्ड १)

महाराणा प्रतापसिंह (नाटक) ॥)

ये सब पुस्तकें मंत्री, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से मिल सकती हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीर्ण व अजीर्ण के दस्त की दवा।

खाना पचानेवाले रसों के घटने बढ़ने वा विकार से अजीर्ण रोग होता है जिसके ये लक्षण हुआ करते हैं—खाने के बाद पेट

भारी जान पड़ना, पेट में वायु होना, जी मिचलाना, खट्टी वा व्यर्थ डकार आना, छाती जलना, मुंह में पानी भर आना, पेट में थोड़ा थोड़ा दर्द होना, चित्त की ग्लानि, आलस्य आदिक। जब तक खाना हजम की थैली में रहता है और पाचनक्रिया कठिनता से होती रहती है यही हालत होती है। जब यह अनपचा खाना अँतड़ियों में उतर जाता है तब पेट में गड़गड़ाहट होती है, पेट फूलता है व दस्त की चेष्टा होती है। दस्त पतला वा पानी के ऐसा होता है। कभी कभी खाने के थोड़ी देर पीछे ही दस्त हो जाता है। दस्त होने से शरीर क्षीण होता है। ये सब हालतें कभी कम, कभी अधिक होती रहती हैं और महीनों तक चलती हैं। रोगी का शरीर दिन पर दिन गलता जाता है। अन्त को असाध्य हो जाता है।

शरीर की साधारण पुष्टि का घट जाना इस रोग का कारण है। नीचे लिखी हुई हालतों में ऐसाही होता है—

वृद्ध अवस्था; कोई विशेष रोग के बाद कमज़ोरी, कम खाना (जैसा कि व्रत, लङ्घन, पारण आदिक में लोग करते हैं), धातु के व्यर्थ नष्ट होने से क्षीणता, अधिक श्रम, दुश्चिन्ता वा शोक, प्रसव के विकार से कमज़ोरी।

इन विषयों को विचार कर डाक्टर बर्म्मन ने अजीर्ण की दवा बनाई है। खाना हज़म करने व अजीर्ण के दोषों को मिटाने में इसकी विशेष शक्ति है। यह दवा छोटी छोटी टिकिया की ऐसी बनी हुई है। पंदरह रोज़ के सेवन योग्य ३० टिकिया की एक शीशी का मोल १) रुपया। डाक महसूल १ से ४ शीशी ।-) आने।

डा: एस, के, बर्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पुस्तक संख्या २३, २४

ग्रंथ संख्या ५०]

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक, श्यामसुन्दर दास, बी० ए० ।

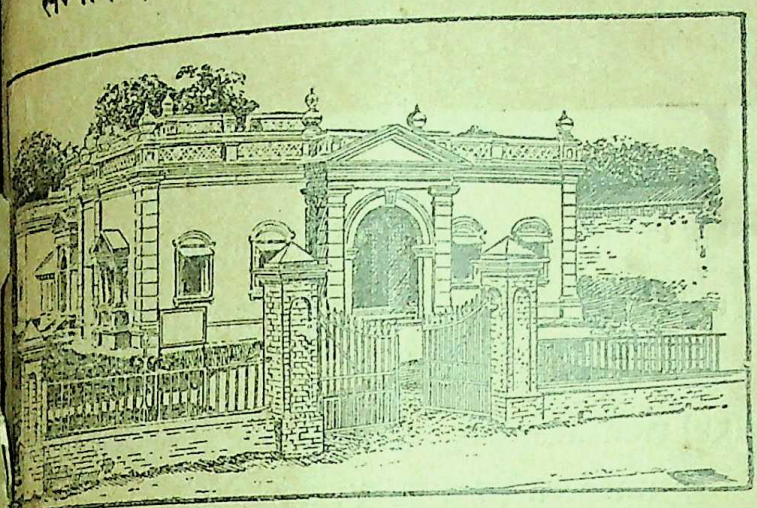

FASCICULUS NO. 50.] [BOOK NO. 23, 24.

NAGARI PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR

SYAM SUNDAR DAS, B.A.

PUBLISHED BY

THE NAGARI PRACHARINI SABHA,

BENARES.

(मूल्य प्रति संख्या ॥) [*Price per fasciculus As. 8.*

ISSUED ON THE 25TH FEBRUARY, 1915.

PRINTED BY APURVA KRISHNA BOSE AT THE INDIAN PRESS,

ALLAHABAD

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका।

(२३) परमाल रासो—बाबू श्यामसुन्दर दास सम्पादित। (पृष्ठ २३३-२६४ तक)

(२४) छत्रप्रकाश—बाबू श्यामसुन्दरदास और बाबू कृष्णबलदेव वर्म्मा सम्पादित (पृष्ठ ६५ से ९६ तक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंक लाय परिमाल नृप , मनिया अंघ्रि लगाय ।
टीका करि टीका मऊ , भूपति नाव कहाय ॥ ५० ॥

चौपही ।

गय पजूर पुर देव पुजाइय । चरन चरन सिर नृपति लगाइय ।
अस्तुति करि त्रपुरारि मनाइय । फिरि जसराज महोवै आइय ॥५१॥

दोहा ।

आय महोवै सैन सजि , कटि बंधिय किरवान ।
कुप्पि चढ़िव जन पदन पर , लषि अरिराज पलान ॥ ५२ ॥
दिसा दिसा चंदेल किय , तूरन आनि पधार ।
जिन भुवपालन षग्ग गहि , ते षंडे करि रार ॥ ५३ ॥
स्वाम धर्म हित सीस दिय , लरिव रुंजु जसराज ।
म्हां कौं दयव निकारि जग , कहा करौं महराज ॥ ५४ ॥
अल्हन के सुनि कै बचन , कछुक चित्त रिस लाय ।
फिरि बोल्यौ कवि आल्ह सौं , सुनहु बत्त चितु लाय ॥ ५५ ॥

पद्धरी ।

सुनि बत्त बुल्लि जगनिक्क रान । अल्हन नरेस सुन सर्व कान ॥
परमाल छंडि बालक्क बाप । जम्मा इध राज सराज आप ॥ ५६ ॥
बरषैं सुपंच परिमाल जान । दब्बी सुभूम भुमियान आन ॥
सब सहर लग्गि उर सोक कीन । बालक्क नरिंद भय बाप हीन ॥५७॥
जसरथ्थ राय लाडन लड़ाय । परमाल राय लिय अंक लाय ॥
सागौंन हौंन सौमा सुजाय । तुव तात आसु लिन्नव बुलाय ॥ ५८ ॥
जनपद महोव जुत अग्र जाय । परिमाल लेहु जसरथ्थ राय ॥
मनिया सुदेव के अंग लाय । फिरि टीक मऊटी कौ कराय ॥ ५९ ॥
पज्जुर पुरह पद्धारि बीर । पूजे सु सर्व सुर सद्ध धीर ॥
छंड्यौ पजूर पुर सुभट राय । दिन अस्त नगर महुवै सुआय ॥ ६० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किरवान बंद्धि उर कोप कीन । दक्षिन सुदेस पायान दीन ॥
चांदा सुपासु लिय दीह दंड । बारी सुदेस गढ कीन षंड ॥ ६१ ॥
रेवा सुपार लिय लुट्टि सर्व । भज्यौ सुजोर जीरा सुगर्व ॥
जटवार राय षग्गन षपाय । मेवा तमारि धर लीन धाय ॥ ६२ ॥
पंचाल देस पंजाब थान । वैराट देस को मर्द मान ।
मालव सुदेस लिय वेस मार । उदया पमार किय धर उजार ॥ ६३ ॥
चंदेल राज पर धार दीन । पुन गढ़ा मारि गढ़ पसर कीन ।
बरषै बीस अरि भूमि षेाइ । तहु लगि चंदेल नृप तरु न होइ ॥६४॥
भय सुचित चित्त किय स्वाम काम । फिरि कटिव जुद्ध जित्यौ तमाम ।
यह बत्त सुनिय परिमाल राज । आये सुकाम जसराज साज ॥ ६५ ॥
सिर धुनि सुआल्ह लिन्नव बुलाय । आपन सुदेस सब दल भुलाय ।
तरवार बंधि सिर तिलक कीन । गैयर मगाइ तिहि वेर दीन ॥ ६६ ॥
किय सेाय अंग सरदार सुद्ध । बज्जियैां बनाफर नरव जुद्ध ।
बैठत पाट अल्हन नरेस । मायैा सुजाय पूरब्ब देस ॥ ६७ ॥
पठ्ठान गया के जेर कीन । तह दर्व कोट त्रय लुट्टि लीन ।
जित्यैा सुसुद्ध निसरथ्थ जाय । सम सहाबाद षग्गन षपाय ॥ ६८ ॥
निक्कार दीन कुट्टे पठान । तुरकान मैटि किय हिंदवान ।
लिन्नैं सुपील जयचंद दौर । केहरि कठेरी कौ मान मौर ॥ ६९ ॥
काबिल सुकोपि रन रोपि पग्ग । जित्ते जवन्न त्रय राज अग्ग ।
त्रोदसह वर्ष गहि सिंघ ल्याय । परमाल पग्ग अंगैं गिराय ॥ ७० ॥
जयचंद हुकुम पद्धार दीन । गाजर गजाय अरि बंध लीन ।
यह बत्त सुनिय पंगुर सुराय । कलगी करिंद दिन्हव पठाय ॥ ७१ ॥
हीरा सुपंच दिय पंच लाल । उरवसी दोइ दिय मुक्त माल ।
मावास देस बहु कीन घत्त । जयचंद रीझ नृप कहिय बत्त ॥७२॥
मम सत्र भीम भव डारि षेाय । किय असिय लष्ष सरदार सेाय ।
लिय मगध देस मुगलानि मार । सुर की बसंत किय भूम जार ॥७३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हिंडोल देस जद्दव दहाय। लुट्टिय सुसद्द नव निद्धि पाय ।
मारे सुबैस सब दल सुदाटि। बघ्घेल बागरिय धरा काटि ॥७४॥
पतसाहि फौज दस वार मारि। चालुक्क सिंघ कौ गर्व गारि।
सतवार पेत्त जित्ते सुदंद। सुन स्वाम धर्म जसराज नंद ॥७५॥
सकरै स्वामि छंडै न कोय। यह भभिष वक्त बर कहत लोय।
रन लरैं स्वामि सेवक पराय। सत जन्म जोर जम लोक जाय ॥७६॥
संकरय स्वामि जो छंडि जाय। अघ्घोर नर्क रजपूत पाय।
तुम कहत आजु कनवज रहाव। संकरै परिव चंदेल राव ॥ ७७ ॥
तजि स्वाम धर्म बुलत जुबान। जम लोक जाहु छुट्टंत प्रान।
तुव होत बधाइय नृपति कीन। सत लक्ष हेम भिक्षुकन दीन ॥७८॥
गजराज बाज बगसे भवाल। अंबर अनूप भूषन बिसाल।
बारह सुथार मुकता चलाय। जनु जलधि वर्ष वर्षा अघाय ॥७९॥
रनवास आय सब गान कीन। करि चाव मल्हन दे नचि प्रवीन।
करि रुदन मल्हन दे कहिव मोहि। सो बत्त दिवल दे कहतु तोहि ॥८०॥

दोहा।

बैस्यौ जसरथ अजिर मह, नृप चँदेल चितु लाय।
टीपन का वर बुधुन जुरि, दीन्ही सर्व सुनाय ॥ ८१ ॥

चौपही।

आल्हन किय टीपन का वंचिय। बुध बल बाल कहत बल षिंचिय।
भिक्षुक भीर अजिर तुव मंचिय। मोदित मनय मल्हन दे नंचिय ॥८२॥

दोहा।

इक जाम मल्हन नचिग, करिय बधाइय राज।
हीर चीर हेमादि सब, दिये अस्व गजराज ॥ ८३ ॥
दियौ दान परिमाल नृप, मल्हनदे सुषु पाय।
फिर रानी देवल जहाँ, मंगति बचन बधाय ॥ ८४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

अल्ह मात तह मल्हन आइय । जह बैठी सियता समुदाइय ।
बचनु इक बुल्लिय सुषु पाइय । देवलदे कछु देव बधाइय ॥ ८५ ॥

दोहा ।

पान जोर देवल कह्यौ , गन थांकै गज बाज ।
जब संकट नृप गढ़ सहर , आल्ह सीस तुव काज ॥ ८६ ॥
देवल तू नहि मानवी , दुर्गा कव अवतारु ।
मल्हन सह हारयौ बचनु , ताकव कवन विचारु ॥ ८७ ॥

चौपही ।

देवलदे तुम बाचा बंधिय । धर परिमाल धारना संधिय ।
गढ पुर आन चढ़य कोई राजह । अल्हन सीस दीन तुव काजह ॥८८॥

दोहा ।

जिनके सत्त धरा रहै , कहै जगन मुष भष्षि ।
सती साध जे बचन कहि , सुनौ दिवल दे सष्षि ॥८९॥

चौपही ।

बचन छले बलि राय अमानह । बचन करन कप चंदिय बानह ।
बचन षंड सुत बनहि सिधारेय । बचन द्रोन भीषम तन हारय ॥९०॥
बचन नीच घर बसि हरिचंदह । बचन लंक दिन्नय रघुनंदह ।
बचन दधीच आपु तन दिन्नव । बचन राज सुम्मी महि किन्नव ॥९१॥
बचन बलार दीन अप मथ्थह । बचन तात त्यागे दशरथ्थह ।
बचन पुरिष गजदंत कहाइय । कढे बढे फिरि मुरकि न जाइय ॥९२॥
बचन सार व्यासह मुष गाइय । बचनन ही तल मुक्ति बताइय ।
जो कोइ बचन हार नहि करइय । चंद सूरज लौ नृक सो परइय ॥९३॥

दोहा ।

कटुक मिष्ट मिश्रित करे , करी नैकु नहि कान ।
सत्त बचन जग उच्चरे , लये दिवल दे मान ॥ ९४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

सुनि बानिय देवल दे बुल्लिय । आल्हन उतत महोबै चल्लिय ।
प्रथिराज सह जुद्ध जु किज्जिय । स्वाम धर्म कव जस सुत लिज्जिय ॥९५॥
तव उद्दल फिरि बुल्लिय बानिय । होइ महोवय कीच कहानिय ।
बुरे हाल कढ्ढे परिमालह । सो अब भुल्लि गये वह ष्यालह ॥९६॥
जगनिक भाट अवै घर जावहु । नगर महोबा लगय अभावहु ।
धर पट्टिय जसराज उपथ्थिय । हम कनवज्ज उतन करि थप्पिय ॥९७॥

दोहा ।

चंद ब्रम्ह परिमाल लगि , बिलसी दिसा बिसाल ।
अष्ट वर्ष कनवज्ज बसि , जन्म भूमि भय साल ॥ ९८ ॥
उद्दल सौंपे बचन कहि , जगनिक गय मुरझाय ।
जुगल पुत्र सह क्रुद्ध करि , बुल्लिय देवल माय ॥ ९९ ॥

पद्धरी ।

करि क्रुद्ध बुलि देवल सुबैन । भुव पटकि हथ्थ आरक्त नैन ।
जसरथ्थ जुद्ध कटि सत्र माल । विय बंध लीन परिमाल पाल ॥१००॥
रानी मल्हन झूलन झुलाय । मुष चुंबि अंक भरि लेत आय ।
बहु मोल वस्त्र भूषन अपार । राषे तजेमि ब्रम्हा कुमार ॥१०१॥
मृगया सुभूप रम्भा रमाय । लिज्जे सुआल्ह ऊदल बुलाय ।
आगै सुपुंज सेव करि गाय । तुम जुगल बंध सिवको चढ़ाय ॥१०२॥
हारीय बचन्न मम मल्हन तीर । जग विमुष जात त्यागत सरीर ।
मम बत्त जाय जग मांझ षोय । रौरव सु नर्क मह बास होय ॥१०३॥

दोहा ।

बचन बुलि परबस परै , जानै वृथा पराय ।
ता मानव कौ नर्क वड , तजै कलेवर जाय ॥ १०४ ॥
देवल के ये वचन सुनि , अल्ह बुल्ल भुवपाल ।
बडे बडे उमराव जग , कहा करयौ परिमाल ॥ १०५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

सिक्र वार सुर्जन बलि बानह । गहिरवार सत्रसाल सुजानह ।
सोम वंस सकतेस महाभर । चक्रपान बघ्घेल दलाभर ॥१०६॥
दुरजन पदम सिंघ राठौरह । महियपाल भूपति सिरमौरह ।
नरहर गौड गढापति सोइय । जाकिय असि जाहिर भुव होइय ॥१०७॥
चांदावार देव गढ़ के पति । जिन सह भूप मान महारति ।
इन उमराउन लज्ज न आइय । चावंड रह्यौ महोबै छाइय ॥१०८॥

दोहा ।

बालक इक मलषान नृप , करिय सिरसवा मारि ।
हन्यौ गर्भ चहुवान कव , आसुन अक्ष विसारि ॥१०९॥
आल्ह कहत जगनिक्क सह , पुन पुन दुष परिमाल ।
लगत नहि म्हां कौ बचन , लागे उर अति साल ॥११०॥

पद्धरी ।

उच्चरि सु आल्ह सुन भट्ट बत्त । महिला भूपत के मत्त रत्त ।
सूरत्त लीन हम समर मार । नृप लीन पकरि चरनन सुडार ॥१११॥
सूरत्ति टाँक दिन्नव बढाय । तुव मारि लेहि महुबौ छिडाय ।
चँदेल सर्व दैहै भगाय । यह बत्त मानि जगनिक्क राय ॥११२॥
विष सान ग्रास किमि षाय राज । आमिष समीप बैठारि बाज ।
श्रुति सुनिय बत्त चँदेल राय । जनपद सु सर्व लिन्नव छिड़ाय ॥११३॥
भुवपाल वत्त मट्टियन कोइ । मिट्टय सुसत्त सब परिघ होइ ।
महिपाल मंत्र भुल्लव भुवाल । उद्दलहि आल्ह जानंत काल ॥११४॥
दिव करन भेज बुल्ला सुदेस । तुम करहु नौकरी आन देस ।
षडे बत इक्क ईदलहि दीन । मिष्टाय काज बालक नवीन ॥११५॥
वादा नरिंद कह भूप दीन । थां कौ सु आसु आयस सुकीन ।
रानी कुमार महुबै सुरष्ष । थां जाहु नौकरी देव भष्ष ॥११६॥
यह बत्त बुल्लि देव करन जाय । हम कुथां प्रष्टि अथ्थिन बधाय ।
भय परस तौ महय जाल सब्ब । मम बुल्लि छंडि महुबौ सु अब्ब ॥११७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मलपान ऊद अगदै निसान । किय बिसर तोम बज्जे निसान ।
काढि सहर सैन बाहिर सुजाय । यह बत्त सुनिय मल्हन सुमाय ॥११८॥
चंदेल पिसुनता सुनिय कान । नृप आल्ह जान ब्रम्हा समान ।
प्रावास जाइ दिस भूप हेरि । मल्हन सुमत्त रप्पे सुफेरि ॥११९॥

दोहा ।

पराचीन जे बत्त कह , करहु स्वाम सन नेहु ।
जगनिक कहि संग्राम कौ , आल्ह ऊद जस लेहु ॥१२०॥
रजपूतन की मान भय , कढत न राजकुमार ।
आल्ह उबारौ तुम तिन्है , स्वाम धर्म धरि सार ॥१२१॥
जगनिक आल्ह विवाहहु , बन्नाफर नहि मान ।
क्रोध जानि कविराज उर , बुल्लिय देवल रान ॥१२२॥
स्वाम संकरै सगन हिय , उपजी कुमति अपार ।
देवल कहि मम उदर मह , परि कट्ठोर कुट्ठार ॥१२३॥
स्वाम धर्म धरि लंक मह , जुध्य कीन हनुमान ।
बानर तै देवा अमर , भये सर्व पुज्जान ॥ १२४ ॥
आनि परिव चंदेल पर , चाहुवान कव भार ।
हा करता संग्राम कह , छंडि दयौ भट सार ॥ १२५ ॥

चौपही ।

गहै सार पडिहार अपारह । गहै सार सब राज कुमारह ।
गहै सार उमराव महामति । चांदावार हिंदोल महापति ॥ १२६ ॥
गहय सार चक्रपान भुवालह । रीवापति जीते अरि जालह ।
जबतै म्हा नृप नगर सिधारिय । ताही दिन मम सार बिसारिय ॥१२७॥

दोहा ।

सुक मास ग्रीषम रितौ , तप्त भूमि अरु वारि ।
इह सुकाल परिमाल नृप , दिन्नव नगर निकारि ॥ १२८ ॥
इंदू नरिंद कुमार विय , भगिनी कौसिल आय ।
आतप लगि लगि कुसुम सम , गय पतोन कुम्हिलाय ॥ १२९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जुग बाहन फल पाप के, परेय कूप के मझ्झ।
भृष्ट भइय भुव लोक मै, देवल भइ नव बझ्झ ॥ १३० ॥

चौपही।

देवल दे कहि बाझ नरिष्षिय। क्षत्रिय धर्म कर्म गय भष्षिय।
स्वामि साकरै देइ न कट्टिय। हा करतार कूप नहि फट्टिय॥१३१॥

दोहा।

पुत्रन पर अति कोप करि, कियव सोग उर ऐन।
देवल रानिय दयानिधि, जल भरि रष्षेय नैन ॥ १३२ ॥

चौपही।

देवल दीन बचन करि रोइय। आसुव भरत वसन तन धोइय।
पुत्रन प्रगट सत्र सम सोइय। तुम रज रजपुत्तन किय षोइय ॥१३३॥
सुनत सांकरय स्वामहि लोइय। उद्वा लैके षंडय सोइय।
गोइय चून जौ धर्म रहाइय। साठ सहस नर्कन मह जाइय ॥१३४॥
जंग बचन सुनि कै नहि हिच्चय। तै भव सूर धर्म नहि सच्चय।
स्वाम धर्म सुनि कहे पुरानह। देवल उदर परे पाषानह ॥ १३५ ॥

दोहा।

स्वाम साकरै जानि कर, रहै आन घर सोय।
सेा रानी फिर तैालियैा, कुल रजपूत न होय ॥ १३६ ॥
स्वामि साकरै जानि तुम, पर घर चित्त लगाय।
यह कहि कै देवल बचन, करिव मरन कव दाय ॥ १३७ ॥
मरन मत्त मानस लियैा, देवल किय तन घत्त।
माछुल सैां कहि किंकरी, अल्ह उद्द सुनि बत्त ॥ १३८ ॥

छप्पय।

आल्ह उद्द सुनि उठेय बीर बिरझाय बंधबर।
मात सुष्ष मन मान करै स्यैां कुटम भौंम भर ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लरय जाय समुहय करय जश बाज धरावहु ।
धरय स्वाम ध्रम सीस कटहि किरवान पान सहु ॥
सथ्थ हथ्थ घल्लहि बिँहसि रहस सूर सम्हर धनिय ।
उजवालि जुद्ध कुल सुद्ध रज रन भिट्टय तीछत अनिय ॥१३९॥

चौपही ।

माता अग्ग उद्द सिय वुल्लिय । तत्त मत्त मानस किय घुल्लिय ।
येक लष्ष दलु है चहुवानह । सत सावँत संगर बलवानह ॥१४०॥
पकरि साहि गोरी जिहि लिन्नव । जसु जाहिर जगती तल किन्नव ॥
जव रन कोपि गहौ करवालहि । ज्यौ सुगोप सुरभी न विडालहि ॥१४१॥
आल्हन सिय वुल्लिव सुनु मातह । समर राज जब देय विधातह ॥
चाहुवान महुवै चढि आइव । गर्भित मन उर संक न लाइव ॥१४२॥
सत सावंत संगह बहु जोरहि । इक्क इक्क लष्षन मुष मोरहि ॥
जौन भूम स्यौ भूप गिराउव । तौन छत्रि गत भुवनन पाउव ॥१४३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१२) अल्हन जयचंद प्रसंग खंड ॥

दोहा ।

मोद मानि माता लयौ , स्वाम धर्म चितु धार ।
यहै मनुष्याधार उर , दोउव लोक उधार ॥ १ ॥
चलन महोवै मत किय , देवल सीष उपाय ।
विदा हौन जयचंद पर , चले सुदौनौ भाय ॥ २ ॥
रषत बषत सब साज करि , कंगल अंग हुलास ।
जगनक कारन संग लै , चलेय पंग के पास ॥ ३ ॥
मंत्रायन राजा करै , उठे सभा सब बीर ।
ठेलि कंगालन बेाप धर , गयेय पंग के तीर ॥ ४ ॥
विन आयस मम अत्र कसि , बघ्नाफर मतिमंद ।
इमि सुबत्त सब सभा सह , कहिय भूप जयचंद ॥ ५ ॥

छप्पय ।

दिष्षि नयन जयचंद बुलि अल्हन सह बानिय ।
क्यौं आइव दरवार सभासद उठेय गुमानिय ॥
सजेय कपच किमि अंग जंग कंगल कस भारिय ।
बिदा करेय कहु नाहि नाहि पुक्कार हकारिय ॥
इक कहय बनाफर जोर कर लैन सुजगनिक आइयव ।
प्रथिराज महोवै जुद्ध कह मेा परमाल बुलाइयव ॥ ६ ॥

दोहा ।

काहुव कौं जन पद करिय , काहुव अस्व समाज ।
मोहि भूप परिमाल दे , दियव जुद्ध कव राज ॥ ७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पंच जाय प्रथिराज सह, यहै बचन उच्चार।
जुद्ध नृपत कनवज गयव, को मंडै नृपरार ॥ ८ ॥

चौपही ।

नयन रक्त कर बुल्लिय बानिय। मरबे काज महौवै ठानिय ॥
अब लगि पटव हमारव षाइय। चंदेलन ढिग मरन बुलाइय ॥ ९ ॥
नृप जयचंद कोप उर ल्याये। परिगह सकल तुरत बुलवाये।
सवरिय नाव जाय बध किज्जिय। आल्हन नृप कह जान न दिज्जिय ॥१०॥
सवरे सर यहै जिय मोचहु। बन्नाफर कव मारग रोकहु ॥
छावनि करय हमारेय पासह। छंडहि नगर महौवै आसह ॥ ११ ॥
तव आल्हन कीनै रत नैनह। सुनि जयचंद नृपत के बैनह ॥
कठिन दीन रहि गाजर मारिय। अप बल लइय तें हम मारिय॥ १२ ॥
तुव दल माझ बीर नही दिष्षहु। असिय लष्ष तिनुका करि लिष्षहु ॥
कनवज लुट्ट रिद्ध सब हरिहैं। पीछैं जुद्ध महोवै करिहैं ॥ १३ ॥
आल्हन मह विक्रम बहु जानिय। पंगुर बिँहसि बुलि बर बानिय ॥
हम प्रसन्न मानस तुव लिन्नव। वृथा कोप बन्नाफर किन्नव ॥ १४ ॥

दोहा ।

तव उद्दल कर जोर कहि, वृद्ध होय तुव राज।
निक्कारे परिमाल नृप, तुम रष्षे महराज ॥ १५ ॥

चौपही ।

तब जगनिक कहि विरद बिसालह। दिन्निय अर्ज लिषिय परिमालह ॥
चंद राज यह बचन सुनावहि। पिथ्थौरा पर कुमक पठावहि ॥ १६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१३) वेलाकव व्याह खंड।

दोहा।

कहिय पंग जगनक्क सुनि, सब विधि समय सचेत।
चाहुवान चंदेल सौ, रारि मँडि किहि हेत ॥ १ ॥
कहत जगन कनवज्ज पति, वत्त श्रवन मम डारि।
वेला के परिनयन तै, अयन ऊपजी रारि ॥ २ ॥
कियव व्याह भय वेल कव, तातैं भयउ बिगार।
काहि कज्ज विय राज रन, गहत परस्पर सार ॥ ३ ॥
जगनायक इमि उच्चरै, सुनु कमधुज्ज सुजान।
व्याह विरुध दौनौ वदतु, सो मंजै नृप कान ॥ ४ ॥
लष्ष हेम बस्तर बहुत, सत्त करिय बलवान।
अयराकी गुन आगरे, दौ सत दिय किकियान ॥ ५ ॥
गाय बजाय बुलाय दुज, पावन पत्रि लिषाय।
सौमेसुर सुन लगुन सँग, लंगरिराय पठाय ॥ ६ ॥
साथ लंगरीराय के, जान दान बलदाय।
पंच सहस सैना लियै, चालिवचाव डराय ॥ ७ ॥
आयस नृप कव पाइ कै, चावँड सो बलदाय।
पांच सहस सैना लियै, नगर महोवै जाय ॥ ८ ॥

पाद्धरी।

लियै लगुन वर चावंडराय। चलि नगर राज महुवै सुजाय॥
बहु लीन बीर बलिवान जान। कोपत्त जुद्ध पारथ समान ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भाषी सु तोप आगैरि गाय । चावंडराय महुवै सुआय ॥
बज्जत निसान फहरत निसान । आगै सुदियै सत इक्कवान ॥ १० ॥
दूर कूच बीर चल्लिव रिगाय । दिन तीस मध्य महुवै सुआय ॥
कीरत्तराज सर तीर आय । तह देव धाम आराम पाय ॥ ११ ॥
उत्तरिव भूप मन मोद मानि । धन धन्य महोत्सव नगर जानि ॥
धावक पठाय परमाल थाम । कहि पवर जाय दीवान ताम ॥ १२ ॥
मंत्रिन सुभूप सह कहिय बानि । चावंड लगुन ब्रह्मा सुआनि ॥
सुनि नृपति भूप भूपनि बुलाय । महिपाल जुक्त सूर है सुआय ॥ १३ ॥
जगनिक्क भाट काइथ कल्यान । बहु मंत्रिश्च गा बुल्लय जुबान ॥
चावंड ब्रह्म किय लगुन ल्याय । कोऊ कुवर अग्ग हो लैन जाय ॥१४॥
मल्हन सुरानि बुल्लिय जुबान । पट्ठाइ देव कोइ कुवर जान ॥
दस सहस सैन सह आल्ह जाय । चावंड लंगरिहि छिप्र ल्याय ॥१५॥
महिपाल बुलि भूपत्ति राय । आल्हन सु अब्ब किहि कज्ज जाय ॥
पठाइ राज रनजित्त राय । चावंड लंगरिय छिप्र ल्याय ॥ १६ ॥
सुनि कै कुबत्त मल्हन जुबान । मम आल्ह पुत्र ब्रह्मा समान ॥
परिमाल राज अल्हन बुलाय । ता संग दीन रनजित्त राय ॥ १७ ॥
दस सहस सैन तारा समान । ता मध्य आल्ह बिधु सौ लषान ॥
कीरत्त राज सर तीर आय । सब मिले कुवर चावंड राय ॥ १८ ॥

दोहा ।

संजमराय कुमार स्यौ , चावड़राय मिलाय ।
अग्गवत्त सौमेस कहि , सो पुनि दीन सुनाय ॥ १९ ॥

वाचनीक—आगैं जयचंद राजा के अग्ग राजा सौमेस नैं राजा परिमाल सौं वचन हारे हते । सो वे राजा पंचतत्त्व कह प्राप्त भये ॥ अब यह ब्रह्मा कुमार की लगुन लीजे । अद्य सुभ घरी वैसाष सुदि त्रयोदसी की भाउरै है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

चावँड़भर के बचन सुनि , अल्हन सी सुष पाय ।
सिवर दये शिव गंग मै , नृप मंदिर फिरि आय ॥ २० ॥
तब सुभूप परिमाल दे, बुलि पंचवर विप्र ।
ब्रह्माजित्त को आइयौ , लेहु लगुन सब छिप्र ॥ २१ ॥
रानिय बहु उमराव की , कह लगि नाव गनाय ।
देवल दे कह आदि दै , राज सौध अब आय ॥ २२ ॥
भूप सौध आनँद बजत , बनिता जुरिय अपार ।
ब्रम्हा जीत समारियौ , मनो मही विय मार ॥ २३ ॥
महीपाल भुवपाल सौ , कहि चंदेल सुनाय ।
लगुन लिज्जिये सुभ घरी , चावँड कज्ज बुलाय ॥ २४ ॥
जगनायक नृप पाठयौ , बुद्धिवान बर बीर ।
चावँड लंगरि ल्याइयौ , नृप चंदेल के तीर ॥ २५ ॥
नृप मिलि लंगरि राय कौ , चरन छिये चावंड ।
सौमेसुर उर कुसल बहु , बचन कहे बलिवंड ॥ २६ ॥

चौपही ।

सब परिगह तूरन बुलवाइय । लगन धरौ ब्रह्मा पर जाइय ॥
तह दीवान दियै समुदाइय । मल्हन आदि रानि तह आइय ॥ २७ ॥
राज धाम सब जटित जराइय । ब्रम्हा जित्त समारि बनाइय ॥
मनौ वियौ मकरध्वज भाइय । पूरत चौक विप्रगन राइय ॥ २८ ॥

दोहा ।

रामधाम चावंड लषि , चित्र चित्त अति पाय ।
अंगन भीति जराय मन , मनहु द्वारिका आय ॥ २९ ॥
करि सिँगार ब्रह्मा कढ़े , नगनि परसि सब अंग ।
मानहु दिनकर निसाकर , उगे येकही संग ॥ ३० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नालिकेर लियै हथ्थ मैं , पान पात मुख मौन ।
आनि बैठियौ चौक मै , सुरभियज्ञ जिमि जौन ॥ ३१ ॥
ब्रम्हाजित अवलोकियौ , ऐसे रुप न कोय ।
इक्क मद्दरत मूरछा , नर नारिन कौं होय ॥ ३२ ॥
पठत वेद सब विप्रवर , चावँड लगुन मँगाय ।
इक्क लष्प लिय हेम पुनि , ब्रम्हा पानि छिवाय ॥ ३३ ॥
पंच हेम कागद धरिय , हय गज दीन मँगाय ।
अंसुक दिय अति मोल के , अस्त्र सस्त्र सुषु पाय ॥ ३४ ॥
बजत बधाइय सौध पुर , मल्हन कुवर चलाय ।
करि बिनया पुनि पारियौ , मनिया दिव के पाय ॥ ३५ ॥
कहत मल्हन कर जोर कै , सुनहु देव मनियाजु ।
चंद ब्रम्ह के वंस मै , तुव दीनौ भुव राजु ॥ ३६ ॥
मनिया दिव सह बिनय करि , बजत बधाइय राय ।
दोइ कोट दुज भट्ट कह , अवर दई सुष पाय ॥ ३७ ॥
दोइ कोट चंदेल दै , दीन्ही लगुन लुटाय ।
बजत बधाई सौध मह , नचत तिया गन आय ॥ ३८ ॥
नृप सामग्री लगुन की , दीनी सर्व लुटाय ।
सुनिय बत्त चावंड जब , तन मन अति दुषु पाय ॥ ३९ ॥
नहिय हमारैं धाम धन , सेा चंदेलहि दैहि ।
जैत षंभ जौ फोरितौ, संभरि अग्गा लैहि ॥ ४० ॥
लोह सागनि फूटि कहि , चावंड राय सुआय ।
चंदेले कौ गर्भ वल , स्यौ सावंतन जाय ॥ ४१ ॥
चावंड लंगरि मत्त करि , यहै बैन सुष साज ।
सेामवत्त कहि या धरचौ , भइय रसोइय राज ॥ ४२ ॥
संजमराय कुमार स्यौ , चावँड राइ बुलाय ।
येक सहस चावंड सँग , जैवन बैठे आय ॥ ४३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पाच सहस परिमाल के, बैठे सूर समाज।
जे अनेक हित्तुवा सबै, बैठारे भुवराज ॥ ४४ ॥
आल्हन उद्द बनाफरन, दो दिन्नय बहियाय।
चारू दिस जन पदन के, बैठे भूपति आय ॥ ४५ ॥
बन्नाफर है कवन कुल, भूपति कहिय बनाय।
महियपाल भुवपाल सहि, भूप देवु बहियाय ॥ ६६ ॥
अन आदर करि आल्ह कौ, नृप चंदेल विसेष।
ब्रम्हा को व्याहन कहै, संभरीक के देस ॥ ४७ ॥

छप्पय।

नारि गारि उच्चारि प्रथम जिवनार गाय कुज।
श्री रघुनाथ चरित्र माथ भजन दस बीस भुज ॥
नूत नूत पल्लव।पषारि पत्रावलि मिल्लिय।
धोइ तोय बिन छिद्र धरेय दौना ढिग झिल्लिय ॥
कोविद उदार उज्जल दुजनि परसन कह आरंभ किय।
भरि छाव काव कवि को कहै प्रथम अनूपम धूप लिय ॥ ४८ ॥

दोहा।

धूप अनूप परोसि पुनि।, पुरी सुष पुरी मेल।
ललित लोचई लै चले, उंच रंचि विधि बेल ॥ ४९ ॥

पद्धरी।

भरी पिठि अंतर नून मिलाय। कचौरिन मेलि चले दुजराय।
जुरे निसिराज सिषा जनु फेर। धरे ढिग चावर मावर हेर ॥ ५० ॥
सुते वर घेवर पैसल पागि। लषै चष वारि गई उर आगि।
जलेबिन जेव कहै कवि कौन। महामधु माठे मिठाइन मौन ॥५१॥
सुधार सफैन की फैनिय आय। तिन पर बूर गरूर मिलाय।
करे कर सक्कर वार सुधार। महोछव दुत्तिय सेव सिधार ॥ ५२ ॥
बनै ते अनार कसार मरत्त। कल्यानिय बानिय पाक धरत्त।
करीस बनी सबही मह सार। गिदौरन ग्रौर करैं सब वार ॥५३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धरे पुरमा अरु पिंडषजूर । वही अषरौटिन ही सुष मूर ।
नव नास पनासिय पेट कषाय । दहौसिन दिन्नय भूष भगाय ॥ ५४ ॥
पगी मधुपान पनंगह वेलि । पगी गुल सक्करि अमृत मेलि ।
विध पकवान धरे बहु षानि । धरे तिन ऊपर पापर आनि ॥ ५५ ॥

दोहा ।

आनि सधानै सब धरे , फूल मूल फल कंद ।
मेदा तै पैदा करे , सुमन मेलि मकरंद ॥ ५६ ॥

रसाबला ।

करि कुंज पुंज धारे । रचि चौप सौं सुधारे ।
बनाय विसद वेली । करनी कनैर केली ॥ ५७ ॥
बकलं वधूप आनैं । घनसार डार सानैं ।
मच कुंद कुंद कीनै । करि केवरे नवीनैं ॥ ५८ ॥
करि के तुकी किती कौ । पुनिया उरंज लौकौ ।
जुहीय जक्त जैनी । भ्रम भूलि भौर सैनी ॥ ५९ ॥

दोहा ।

भांति भांति चरवन रचे , चना चिरौंजिय चार ।
च्यौरा चाहत चैन चढि , मिलि मृग मद घनसार ॥ ६० ॥
करे कसेरु करहरु , गौद गढाठ ठठानि ।
पय के बहु परकर करे , कर कपूर पुट सानि ॥ ६१ ॥

पद्धरी ।

परौ पीर वैाट पैाकरी षीर ताकी । विय जंपिय को सुधा दास जाकी ।
महा मृद्द मैदानि की मेलि रोटी । कछू जामिनी नाथ तैं जानि छोटी ॥६२॥
धरे भोजनं मंडनं आनि माडे । भिदे सक्क राषी रसौं तेन छाडे ।
खा के रुवा मैान दै दै बनाये । घटे घृत्त अंगा करी भिल्ल षाये ॥६३॥
कटी कट्ट मैदा पिठी मै लिपाटी । बनी बेढई अंगुली षात चाटी ।
चुषी रोटियं मिश्रियं चैन आयैा । तहा सालनं आनिरा नीव नायैा ॥६४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लै लै विप्र दौरै सुरं धेर तारु । बनै सूरनं बेगरं मेलि मारु ।
कइ वानि विंवागि दौरा परोसौ । वरे लै धरे वीर जैसे सरोसौ ॥६५॥
सद सैमसै माच चैडाच लाये । टका देत से ढैढ साढं कि आये ।
ककोरा करेला सुरेला सुराये । भली भांति भेड़ान के ठट्ठ ठाये ॥६६॥
रवा सक्करी छौकरि लै धरीते । कली कच्चनारं भली जे करीते ।
विरत्तं भरत्तं भटा कौ सुधन्यौ । नही वाकलं वीज तामैं पधन्यौ ॥६७॥
रच्यौ राइतौ नायतौ लौंग मिरचैं । धना सौठिये लाय घृत तौय सरचैं ।
परोसै नवीनं चना के निधौना । मिरच मेलि निम्बू धरे केर दौना ॥६८॥

दोहा ।

अरक उरक परिकर लये , संभरियै मुष मागि ।
जनु पटुता करि पान सौं , षट रस राषे षागि ॥ ६९ ॥
सुद्ध सधानै सुहजनैं , धरे दही मह साधि ।
फूल मूल फल के जिते , तिते करे सब राधि ॥ ७० ॥
करे कसेरु करहरु , गौद गढाठ ठठानि ।
पय के बहु परकर करे , कर कपूर पुटवानि ॥ ७१ ॥

पद्धरी ।

सरसौह सिवा कर साक जिते । गिरि राज सराहिय राधि तिते ।
भतुवा बड साग पवौत बनौं । बरिवाइ विरंग सवाद सनौ ॥ ७२ ॥
चनकं अरु पोचिय चूक बन्यौ । तह चौरई त्यौ रंन जाय गन्यौ ।
भल डीठ लगी सुवपालक सौं । मधवा उतकै उत बालक सौं ॥ ७३ ॥
दिव दारु सुदारु है साकन मैं । मुरवातिय मैथिय पार्कान मैं ।
नव पल्लव नीव औनाह धरी । करई कटु काट कै दूरि करी ॥ ७४ ॥
भरि भाजन भातु उलैडि इतौ । भर भीमन जैवत भूप जितौ ।
तप तेव सवाइय भत्तु लियं । सुकुमार सुपेत सुगंध कियं ॥ ७५ ॥
अरुनं वरुनं पुनि पीत रच्यौ । इक इक्क सनं मुष कोट सच्यौ ।
समुरं मुग माष चना विधचौ । धरि धोइ सुधारिय दार सुचौ ॥ ७६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस राम ठटै पुट केसर कौ । कछु आनि मही सन मेसर कौ ।
वर वारि बराबर घृत्त लियं । सद सोभित जो सुरभीन श्रयं ॥७७॥
कुसलं मुसलं सम धार परै । अनषंडित मानहु गंग झरै ।
अपनी वट वासति मास परै । हड़िया उसवासन आभ भरै ॥७८॥
चषि चाहि अपार सवाद लसै । बनि भूत अभूत निवंद गसै ।
सुहितें डर शूल कयं परसं । दिग देषि विरंचक सेत रसं ॥ ७९ ॥
मधु मीन रचे यति भांति इती । धनि मल्हनयं मति धारवती ।
पँड पंड मरग्ग लयौ समजै । जिनिवा सुनि बानिक बान लजै ॥८०॥

दोहा ।

जैइ अघानैं जठर परि , जल पिय फेरत पान ।
तुक्ष छुधा आगै रहिय , लइय पछया उर जानि ॥ ८१ ॥

पद्धरी ।

वढी रुचि देषि कढी कर लेत । बिचै मिरचै मिलि लौंग समेत ॥
विकत्त न कत्त सुपट्टिय षारि । लई मुष मंगि हुई मनुहारि ॥ ८२ ॥
करी षट पंतिन की सब सानि । बध्यौ दधि आनि धरयौ ढिग जानि ॥
मठा दधि छानि रुबानि बघारि । जहा मिलि जीर घनं घन सारि ॥८३॥
पनै चहु अंकव जंबुव मेलि । निचोइयौ दाडिम दाष सुठेलि ॥
गऊ पय औटिय धारि उछाटि । धरे भर भाजन मिश्रिय बाटि ॥८४॥
मिली मधि जीरक षारिक चूक । सवारिय डारि भये भष भूक ॥
भये नृपते सब सावंत साथ । कहै मुष क्रत्ति रहै षसि हाथ ॥८५॥
रजा परिमाल के जे परधान । पषा गहि प्रीत करैं सनमान ।
कहै सब सथ्थ भये श्रम भीर । छमा करिवी चित चूक सरीर ॥८६॥
कहै सब सावंत चावंड़राजु । भये परपूरन पावन आजु ॥
तहां तपतोदक हथ्थ धुवाइ । दये कर पान सवारि बुलाइ ॥८७॥
अरचिय दक्षि करद्दम जाय । मिले अप अप्प मिलान न आय ॥
करयो दिन षोडष घायव बास । जिवावत औसर यौ रनिवास ॥८८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भई चढती चढती मनु हारि। दिनं प्रति हास विनोद विचारि॥
करयो सब भाँति सुआदर जोय। भये परपूरन चावंड सोय॥ ८९॥

दोहा।

बिदा भये चंदेल सौं, चावंड राय अमान।
पहुँचै सम्हर सहर कौ, जहाँ भूप चहुवान॥ ९०॥
कहिय पवर यह जाइकै, लगुन दीन सम जात।
वडी दर्वि चंदेल कै, नहि हम तासम तात॥ ९१॥
टीकौ पैतु लगायै, आयस षंभ वनाय।
चंदेले कौ गर्व वल, स्यौ सावंत न जाय॥ ९२॥
इसव मंत्र चावंड करि, स्यौ भूपति सह सोय।
सिंघा अवलोकन कथा, नगर महोवा होय॥ ९३॥
करयो इकुमु परिमाल नृप, मंत्री सबै बुलाय।
दिसा देस भुव पाल कह, न्यौतो देहु पठाय॥ ९४॥
चारू दिसि निवतै दये, ब्रंम भट्ट बुलाय।
पीत बरन तंदुल सुदिय, दह दह हेम पठाय॥९५॥
निवतै पहुचत भूप सब, अपन सयन सब सज्ज।
उत साहित मन मंझ अति, नगर महोवा गज्ज॥ ९६॥
सिवका स्यंदन सकट बहु, पील डील अति काय।
देस निवेस नरेस जुरि, नगर महोवै आय॥ ९७॥
राजा बैठिव तषत पर, अग्ग ऊभ पडिहार।
उतरि अस्व गजराज तै, नैनै करत जुहार॥ ९८॥
करि जुहार भूपत सबै, सूहर लयेय बुलाय।
जो जैसौ नृप बच्च लघु, अप अप षंभन जाय॥ ९९॥
महियपाल भुव पति निकट, दूजौ जगनिकराय।
पान जोर सब नृपन की, अरज करत चितु लाय॥ १००॥
ऊभे सकल दिसान के, भूप जूप गन आय।
राज राज आयस करहु, सेा मानय सुषु पाय॥ १०१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

करिव हुकुम परिमाल भुवालह । आवहि सकल बंधि करवालह ।
करहु सकल निस्सान सुघातह । ब्रह्मा जित्त किय चलहु बरातह ॥१०२॥

दोहा ।

उठिव भूप दरवार तैं , सब कह बचन सुनाय ।
मानि सीष महराज किय , अप अप आलय आय ॥ १०३ ॥

भूप भूप पति के सिवर , फिरत नकीव समाज ।
मधुवर वदि येकादशी , सजि बरात महराज ॥ १०४ ॥

तीरथ करि उज्जैन के , पुरी पुन्य सुष दाय ।
येक लष्ष सैना सुवर , भूपति सज्यौ बनाय ॥ १०५ ॥

ग्यारह सै इकतीस गनि (?) , चैत मास भुव नात ।
ब्रह्मा राजकुमार की , सम्हर चलिय बरात ॥ १०६ ॥

इच्छ्वा करि उज्जैन किय , पूजि चंडिका नाह ।
तब सम्हरि चलि किज्जिये , ब्रम्हजित्त कव व्याह ॥ १०७ ॥

बंनाफर हैं कवन कुल , भुवपति कहिय बनाय ।
मंद बुद्ध परिमाल नृप , ते दिन्नै बहिराय ॥ १०८ ॥

महियपाल भुवपाल के , बचन न मितृय कोय ।
अल्ह उदल नृप बुल्लियव , करय सिषावनु सोइ ॥ १०९ ॥

आल्ह ऊद तुम धाम रहि , गढ़ कव भारन तोहि ।
ब्रम्हा के परिनयन कह , देहु सीष सुत मोहि ॥ ११० ॥

भलैं भलैं जुगवंध कहि , व्याहि ब्रम्ह कह राज ।
म्हां घर ऊभै रष्षिहैं , नगर महोवा काज ॥ १११ ॥

रानी मल्हन नैन भरि , वाफक परत विसाल ।
पाच वार करजोर कहि , ना मानिय परिमाल ॥ ११२ ॥

सकठौनी कह रानिया , ब्रम्ह बरोठैं ल्याइ ।
सिंगारयौ मंडल सघन , मनहु मनंमथ भाइ ॥ ११३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकटौनी कव चार करि , चढ्यौ ब्रम्ह गज गात ।
नगर महोवै तै चली , संभर सहर बरात ॥ ११४ ॥
चलिव भूप परिमाल दे , महियपाल लिय संग ।
बजे नगारे मेघ ज्यौं , सजी सैन चतुरंग ॥ ११५ ॥

पद्धरी ।

सजि चलिव भूप परिमालराज । परिगह सु संग लीनै समाज ॥
सजि चलिव बीर बाहन सुसंग । वारी सुदेस मानस उमंग ॥ ११६ ॥
रइ साहि गौड चादा भुवाल । सजि चलिव बीर बाहन विसाल ॥
सजि चलिव घेलवर चक्रपान । रवि पुत्र जेमि दिन विदित दान ॥११७॥
हिंडोल नगर नामी बिसाल । सजि चलिव संग सेना सुजाल ॥
सुरगढ सुपत्ति सेना सु अत्ति । जिहि स्वाम धर्म मानस सुरत्ति ॥११८॥
खासुपीर भूपत्ति भंग । ते चलेय राज परिमाल संग ॥
चहु दिसह राज आये बरात । जेइ करत जंग मैं दलन घात ॥ ११९ ॥
बादामटौ धमौहार बीर । लियै लोह जंत्र लष्षन सधीर ॥
बघवा बघेल सैनिग्गराय । सत सप्त बान लियै अग्ग जाय ॥ १२० ॥
जुग सहस बांस कहरा कहार । सिवका सुकंध लिन्नै अपार ॥
करि कूचु नृपत पच्छिम दिसान । सरिता दसान मिलिव सुआन ॥१२१॥

दोहा ।

डेरे परेय दसान पर , देस देस के राट ।
नद्दमगारिन के भये , उतरि अचर हट घाट ॥ १२२ ॥

चौपही ।

उतरि दसान सैन सब आइय । ग्राम ग्राम कौ नाव गनाइय ॥
नर वर पति नृप चरन पराइय । सब दल सिरवज सहर मिलाइय ॥१२३॥

दोहा ।

नरवर पति मिलि पंथ मह , पंच सहस सह आय ।
सब ठकुरा इस मेलियौ , सिरवज पुर मह जाय ॥ १२४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सकत सिंघ बिनया सुकरि , बहु तीरथ वर लिष्पि ।
राज्य आपनौ भूप सुनि , पुरि अवंतिका दिष्पि ॥ १२५ ॥
सकत सिंघ के बचन पै , चल्यौ भूप अलगार ।
पुरी वंतिका आइयौ , भूपति बहु सिरदार ॥ १२६ ॥

चौपही ।

करि पिसाचमोचन असनानह । तहा दीन अर्बुद दिन दानह ॥
इहि क्रम सह सब छेत्र अन्हाये । फिरि राजा अप आलय आये ॥१२७॥

दोहा ।

कूच कियौ उज्जैन तैं , दरस बटेसुर चाह ।
संभरि दै बाई सबै , बट्टेसुर लै राह ॥ १२८ ॥
अलगारन नृप आइयव , जहां बटेसुर देस ।
ब्रम्हनाल अस्नान करि , करी सप्त दिन सेव ॥ १२९ ॥
पंच लये गजराज नृप , दो सत तुरग मँगाय ।
मुक्तमाल मनि माल दिय , दुजराजन सुषु पाय ॥ १३० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(१५) आल्ह प्रत्यागमन खंड ॥

दोहा ।

चले बटेसुर पूजि नृप , अलगारन चितु लाय ।
रामनगर पर आयव , भूपति बहु सुष पाय ॥ १ ॥
संभर गढ़ जोजन त्रइय , राम गंग तै सोय ।
सिंहा अवलोकनि कथा , चाहुवान घर होय ॥ २ ॥

नीसानी ।

चाहुवान सह चर कहा चंदेला आया ।
सुनत तासु की बत्तिया सब सूर बुलाया ॥
चावँडसी कयमास राव बरदाइय बुल्ला ।
ब्रम्हन सी गुर राम जी मति अंतर घुल्ला ॥ ३ ॥
चर फिर नृप पुंछिया केता दल संगा ।
इक लष्ष असवार है सत सत्त मतंगा ॥
आल्ह ऊद नहि आइया सारे भट आये ।
सुनि विहस्यौ सोमेस रा इक करब उपाये ॥ ४ ॥
असिय मना लोहा लिया इकु खम्ह बनाया ।
याहि फेरि सावंत रावरि द्वारहि आया ॥
नातर अंसुक ओम धरि त्रन दंत दबाई ।
दीन वचन मुहड़ै कहै मम पग्ग पराई ॥ ५ ॥
ऐसा मता विचारिया अगिवान पठाया ।
संजमरौ रेवंतिया आगै हेा ल्याया ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोटि खिलौना गड्डिया जनु वारि घनारे ।
मानहु पारथ वारिया षंडीव बनारे ॥ ६ ॥
ताके अग्ग सुगड्डिया खम्हा इक लोहा ।
स्याहसेस भुव छंडिया वपु उप्पर सोहा ॥
या कह फेरहि सेल्हरा सो वीर कहावै ।
सो वरु अंगै दै चलै मम द्वारै आवै ॥ ७ ॥
माहिल सी यह बत्त सुनी राजा पह आया ।
वचन कहा कयमास रा सो जाय सुनाया ॥
सुनत भूप परिमाल सी सब सूर हकारै ।
अप्पन अप्पन सेल्हरा सब वीरन धारे ॥ ८ ॥
इक्कहि वारहि छुट्टिया जनु सर्प उड़ानै ।
सर्वे लग्गि उचट्टिया दह सेल्ह समानै ॥
लगेय सेल्ह सब खंभ रावल सावँत कीना ।
इक द्वै मुट्ठ त्रमुट्ठरा तिहि नाव नवीना ॥ ९ ॥

दोहा ।

छत्रसाल सकतैस भर , दुर्जन सी बलिवान ।
चक्रपान नरहरि नृपति , डोगरसी मतिवान ॥ १० ॥
देव करन जन करन भट , जल्हन जगनिक राय ।
इन सूरन के सेल्ह गय , आयस षम्ह समाय ॥ ११ ॥
इक्क दु मुट्ठि त्रिमुट्ठि लगि , लगिव खम्ह सो सार ।
घनै सु सेल्ह उचट्टिया , भयौ इक्कु नहिं पार ॥१२॥
तब बुल्यौ चहुवान नृप , पार खम्ह करि सोय ।
सो सावँत ब्रम्है लयै , मम गृह ऊभा होय ॥ १३ ॥

चौपही ।

फिरि सावंतन सेल्ह चलायेय । चतुर मुष्ट गये खम्ह समायेय ॥
इक्कव फुट्टि गयव नहिं पारह । तब बुल्यौ जसुपाल कुमारह ॥१४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

तब बुल्लिव जसपाल सुव , सुनहु भूप चहुवान ।
अप सावंतन बुल्लि करि , आयस खम्हज घान ॥ १५ ॥

चौपही ।

सलष लषन तौंवर बुलवाइय । बिभक्त राज सावंत बनि आइय ॥
चार सूर सेल्हन गहि छाड़िय । मनौ तुलै पहिराइय डंडिय ॥ १६ ॥

दोहा ।

सत सावंत मह चारि भट , खम्ह सेल्ह करि पार ।
सब से हौहिन भूप सुनि , नरनि मध्य अवतार ॥ १७ ॥
इक्क वीर वर ल्याव था , सेल्ह खंभ जो फोरि ।
मम द्वारहि तब ल्याइयौ , ब्रम्हा कुवर बहोरि ॥१८॥
तब लगि मम तुम हित नहीं , मेलि रहव कै साव ।
जैत खम्ह कौ पार करि , सावंत हनै न घाव ॥ १९ ॥

चौपही ।

तब कविराज बुल्लि वर बालिय । सुनहु मंत्रि कयमास सुजालिय ॥
खम्ह फोर सावँत बुलवावहु । वेलहि व्याह महोवै जावहु ॥ २० ॥

वाचनीक । यह कहि जगनिकराय । सैन सबै मुरकायं ॥
राम गंग पर आयं । किन्नौ सिवर सुहायं ॥

दोहा ।

राम गंग के तीर तर , उपवन वन घन घाम ।
कीरत ब्रम्ह भुवाल सुव , करे तहां मुक्काम ॥ २१ ॥

चंद्रायन ।

बैठा नृप दरवार मंत्रि सब बुल्लियं ।
भयउ मेल परधान गूढ़ मत खुल्लियं ॥
किज्जिय कवन उपाय उदक मम मारियं ।
आसुव भरि परिमाल वचन उच्चारियं ॥ २२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

सकत सिंह कर जोर कहि , सुनहु भूप बलदाय ॥
अल्हन उद्दल वीसरे , जे संगर रिपु षाय ॥ २३ ॥
आल्ह ऊद इह काल जुरि , को जन बचन सुनाय ।
महियपाल भुवपाल भर , दौनौ दिय विसराय ॥ २४ ॥

चौपही ।

तब बुल्लि बगसी कलियानह । सामादिक मुष अगृ वषानह ॥
अवर मंत्रिनन भूप पठावहि । जगनायक बिनु आल्ह न आवहि ॥२५
करिव सोच राजन अधिकाइय । तब राजन पड़िहार बुलाइय ॥
महियपाल भूपति जुग आइय । बुल्लि भूप ये बचन सुनाइय ॥ २६ ॥
सुनि भुवाल कव वचन सुमत्तह । महियपाल भूपति कहि वत्तह ॥
आल्ह ऊद कह बेग बुलावहु । पिथौरा कर गर्व नवावहु ॥ २७ ॥

दोहा ।

विना बनाफर व्याह नहि , कहत मत्त पड़िहार ।
विहसि वत्त नृप बुल्लियव , भलिय करी मनुहार ॥ २८ ॥
तब राजा फिरि बुल्लियब , रानी बचन न मानि ।
आल्हनसी पर जाइ जो , जा उर मेधा षानि ॥ २९ ॥
माहिल भूपति बुल्लियव , सुनहु सत्य नृप राय ।
ब्रम्हजीत कौ संग दै , जगनिक देहु पठाय ॥ ३० ॥

चौपही ।

तब राजा जगनिक बुलवाइय । कर्न लग्गि यइ बत्त सुनाइय ॥
ब्रम्हजित्त कह गोद धरावहु । रूस्यौ आल्ह हजूरहि ल्यावहु ॥३१॥

दोहा ।

आल्ह न आवै मो गयै , थानिव तै जनजाल ।
सो न बोलियौ पंत मह , लगै सोक उर साल ॥ ३२ ॥
आल्हन आवै था गयै , या भाषत दल लोय ।
जगनायक कविराज सुनि , तौ बिन काज न होय ॥ ३३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय ।

सुनत जगन वर वत्त सत्त नीसान बजायेय ॥
बीस सहस असवार साठि गज अग्ग चलायेय ॥
सीष दइय परिमाल सोइय धरि मानस लिन्निय ॥
ब्रम्हजित्त लिय संग राह महुबे किय किन्निय ॥
निसि अहनि चलि अलगार जग वटेस्वर कह आइयव ॥
फिरि करिव कूचु शिव वर उरई सहर मिलाइयव ॥ ३४ ॥

दोहा ।

इंद्र दुर्ग तै कूचु करि , चलिव जगन अलगार ।
आइ धरे उरई सहर , सवरे राज कुमार ॥ ३५ ॥
उरई तैं वागै लइ , चली सैन अतुराय ।
वैत्रवती कह पार हो , वाधुर मिले आय ॥ ३६ ॥
इक्कै विर मैं तीर तर , इक्कै साइर जाय ।
प्रात कूच कर भर परे , पुरइन पुर मह आय ॥ ३७ ॥
जगन मेलि पुरइन रहौ , मानस महा उदास ।
सिंहा अवलोकन कथा , विदित चली इतिहास ॥ ३८ ॥
भूप पहुँचि सम्हर सहर , उद्दल रेवा तीर ।
आल्ह रह्यौ महुवे नगर , विन सैना मतिधीर ॥ ३९ ॥
अवर भूमिधर भूरि गय , ब्रम्ह जित्त सँग लाय ।
साठ सहस मह धाइयौ , जवन गयौ कौ राय ॥ ४० ॥
जवन जानि महुवौ नगर , सूनौ परयौ विशाल ।
कालिंजर धर लुटियौ , द्रव्य दीह हय भाल ॥ ४१ ॥
आनि पठाननि सेतन की , ग्राम जारि सत दोय ।
आल्हन सौ कहि भग्गुलनि , सहर महोवै सोय ॥ ४२ ॥
सुनत खवर नृप आल्ह तब , तुरत निसान बजाय ।
अर्ध सहस सह मेलियौ , वारि दुर्ग मह आय ॥ ४३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वारी गढ़ तै कूच करि , चल्यौ वीर अतुराय ।
रसन सहर डेरा परे , अर्ध सहस के जाय ॥ ४४ ॥
राति दिवस नृप धाइयौ , साजि कपच बलिवान ।
रीवा पुर दिन पाचयै , जहा मेलि पट्ठान ॥४५॥
वीच इक्क जोजन रह्यौ , आल्हन कहय जुबान ।
जवन जान पावै नहीं , प्रात हनौ घमसान ॥ ४६ ॥
आल्ह नृपति यह मत्त किय , आप सुभट मह सोय ।
खवर जाय पट्ठान दल , कहिय चरन मुष जोय ॥ ४७ ॥
साठ सहस पट्ठान वर , कहत परसपर बैन ।
को हम पर चढ़ि आइयव , अर्ध सहस सँग सैन ॥ ४८ ॥
आल्ह आल्ह चर चार कहि , सुनिय जवन गन बात ।
साठि सहस सह भग्गिये , हैान न पावै प्रात ॥ ४९ ॥
लुटै हेम हय हथ्थ गन , लुट्टत सिवर अपार ।
सामग्री परियौ घनी , लघु जन लुट्टनहार ॥ ५० ॥
सिवर तजे हय गय तजे , तजे सबै तन त्रान ।
तजि संगह तनु लै गये , जवन आपनै जान ॥ ५१ ॥

नाराच ।

भजे पठान छंडि वस्त्र भौन आसनं ।
गये दसौ दिसान कौ लईन स्वामि सासनं ॥
गयौ सुकाविलं दिसा लरयौ सुभीम रूपयं ।
हनै पठान साठ लष्ष सोइय आल्ह भूप यं ॥ ५२ ॥
तबै सुबालकं अवै तुरन्न तत्व आइयं ।
जुरै जु जंग मैं जवन्न कोटि कोटि धाइयं ॥
गया कहा बरात भूप रूप जूप आल्हयं ।
कही चनन्न बत्त सेा भइ सु सर्ब झूठयं ॥ ५३ ॥
यहै सुजानि जालिमं सुजौहरं पठानयं ।
करयौ न बेत संक मानि छंडि वीर ठानयं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तजी सुरीव नग्गरी भजे सहस्र साठयं ।
लुटै सुभूरि भूमि या जवन्न दीन भाषयं ॥ ५४ ॥
त्रनं सुदब्बि दंतयं अयं वचन्न बुल्लियं ।
सुरभ्भि जान रक्ख प्रान तत्व मत्त खुल्लियं ॥
गये गया सुछेत्र भज्जि आपु आपु धामयं ।
मिले सुखैर साजि साहि जाय वाम वानयं ॥ ५५ ॥

दोहा ।

मिले पठान सुबाग गन , गया छेत्र मह आय ।
सिंहा अवलोकन कथा , फिरि आल्हन पर आय ॥ ५६ ॥
कालिंद्री के तीर तैं , सीहा लाला धाय ।
पंच सहस असवार सैं , सीहा लाला आय ॥ ५७ ॥
रेवा तट तै धाइयौ , ऊदल सी रनधीर ।
संग सैन दह पंच लै , आल्ह भूप के तीर ॥ ५८ ॥
संग सूर लियवाइया , उद्दल सी परि पाय ।
करिव कूचु नीसान बजि , गया छेत्र कह जाय ॥ ५९ ॥
सब सूरन के अग्ग वर , वचन आल्ह नृप भष्षि ।
चंदेले के राज भर!, जवन इक्क नहि रष्षि ॥ ६० ॥

चौपही ।

कियव कूचु आल्हन बलदाइय । गया सहर अलगारन जाइय ॥
बीच मुकाम करे नहि बीरह । पहुँचेय जाय गया के तीरह ॥ ६१ ॥

दोहा ।

दरवाजिन जन बैठि गय , सहसनि चलत कमान ।
उद्दल सी नैनन निरषि , पसर कीन बलवान ॥ ६२ ॥
होत नगारे पसर के , पट फेरत पट्ठान ।
आगै दै अबलान कौ , तजे आपने थान ॥ ६३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

अंसुक डारि ग्रीम जिव लिन्नव । आगै जिन बनिता गन किन्नव ॥
भाष दीन मुष दइय दिषाइय । आल्हन चरन परे चितु लाइय ॥६४॥

दोहा ।

चरन परे नृप आल्ह के , येक कोट दिय दंड ।
लषत बनाफर उच्चरिव , गया देस सब छंडि ॥ ६५ ॥
जवन परे ऊदल चरन , विनय कीन कर जोर ।
रक्खु रक्खु जसरथ्थ सुत , जनपद भूमि बहोर ॥ ६६ ॥

चौपही ।

उद्दल बंधु अग्ग कर जोरिय । सुनहु नाथ विनती इक मोरिय ॥
भाषत जवन दीन इमि बैनह । रक्खहु राजु करै चित चैनह ॥ ६७ ॥

दोहा ।

जवन कुरान उठाइया , यहै वचन सब भष्षि ।
जौ हम करहि विरुद्ध तेा , पिसित कौल कब भष्षि ॥ ६८ ॥

चैपही ।

सपथ सुनी आल्हन बलदाइय । सैना सहित महोवै आइय ॥
आल्हन देवल के परि पाइय । आनँद घर घर बजत बधाइय ॥ ६९ ॥

दोहा ।

आल्हन सी दीवान अप , सूर सहित दोउ भाय ।
सिगरे नागर नगर के , मिले मोद अधिकाय ॥ ७० ॥
उठि उठि मिलि मिलि वचन कहि , किज्जतु आदर भाय ।
इक पहर दरबार करि , अंतहपुर मह जाय ॥ ७१ ॥
तहु लगि ब्रम्है संग लै , जगनिक पहुँचे आय ।
सिंघ पवर उतरयो कुँवर , भीतर भवन सिधाय ॥ ७२ ॥
लखत वीर आल्हन लयो , सीना सैां सुख पाय ।
कुसल कुसल परिमाल नृप , आल्हन सुभट कहाय ॥ ७३ ॥
बचन कुँवर नहि उच्चरै , वाफक नैन बहाय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आल्हन सौ जगनिक सह , पूछत सब समुदाय ॥ ७४ ॥
मुहर मुहर देवल तिया , ब्रम्ह बलैया लेय ॥
बदन भीजि वाफक रह्यौ , कुँवर न उत्तर देय ॥ ७५ ॥
पौछि आल्ह रूमाल सौं , लियौ गोद बैठारि ॥
कहूँ भूप परिमाल सौं , संगर आइय हारि ॥ ७६ ॥

चौपही ।

अंतहपुर जगनिक बुलवाइय । मिलिव आल्ह सीना सह लाइय ॥
उद्दल देवलदे फिरि मिल्लिय । प्रवत सुगूढ हृदे किय खुल्लिय ॥ ७७ ॥

दोहा ।

अष्ट इक त्रिय वर्ष कव , ब्रम्हाजित्त कुमार ।
सो इक्का क्यौ आइया , कहा लष्ष असवार ॥ ७८ ॥

चौपही ।

तब जगनिक इमि बुल्लिय बानिय । सुनहु आल्ह इक अकथ कहानिय ॥
बीस चार मन लोह मँगायव । गढ़ि नृपता कव खंभ बनायव ॥७९॥
याहि फोरि जो पार करावहि । स्यौ सावंत वर ऊभ न आवहि ॥
सब सावंतन सेल्ह चलाइय । दह लगि अवर सबै उचटाइय ॥८०॥
इकव सेल्ह भयौ नहि पारह । बुल्लिव नृप मम ऊभि न द्वारह ॥
उलटि सैन सब कूचु कराइय । राम गंग पर सिवर पराइय ॥८१॥

दोहा ।

मुरकि भूप परिमाल दे , राम गंग पर आय ।
ब्रम्है लै जग आल्ह यह , नगर महोवै जाय ॥ ८२ ॥
उदक घट्यौ चंदेल कव , चाहुवान घर जाय ॥
रन राजा दसराज के , फेर सुताहि चढ़ाय ॥ ८३ ॥
भूप चुक्कि परि नयन मह , कोप देहु सो डारि ॥
रन राजा दसराज के , ब्रम्हा बदन निहारि ॥ ८४ ॥
ब्रह्मा ने सत व्याह करि , बोल आल्ह भटमाल ।
महियपाल भुवपाल स्यों , परयौ रहै परिमाल ॥ ८५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रोगन चंपतिराइ दबाये। कछू उपाय चले न चलाये॥
ऐसो समौ लख्यौ ठकुरानी। पतिब्रत मांझ चलायौ पानी॥
छुटकि तुरग पति के ढिग जाही। धरी बाग इक दौर सिपाही॥

दोहा।

बाग छुवन पाई नहीं, चढ़्यौ मरन कौ चाउ।
कटरा काढ़्यो पेट में, दये घाउ पर घाउ॥ १४॥

छन्द।

दै दै घाउ मरी ठकुरानी। चंपतिराइ दगा तब जानी॥
यह संसार तुच्छ निरधारयौ। मारि कटारिन उदर बिदारयौ॥
चले बिमान बैठि सँग दोऊ। जै बोलत सुरपुर सब कोऊ॥
धनि चंपति तुम राख्यौ पानी[1]। धनि धनि कालकुंवरि[2] ठकुरानी॥
धनि चंपति जिन खल दल खंडे। धनि चंपति निज कुल जिन मंडे॥
धनि चंपति निरबल जिन थापे। धनि चंपति जिन सबल उथापे॥
धनि चंपति सज्जनमन भाये। धनि चंपति जग जस बगराये॥
धनि चंपति की कठिन कृपानी। धनि चंपति की रुचिर कहानी॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते चंपतिप्रनाशो
नाम अष्टमोऽध्यायः॥ ८॥

१—पानी रखना = प्रतिष्ठा स्थापित करना, बात रखना, सान रखना।

२—कालकुंवरि = छत्रसाल की माता का नाम था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नवाँ अध्याय।

दोहा।

धनि चंपति कै भ्रातरौ, पंचम श्री छत्रसाल।
जिनकी अज्ञा सीस धरि, करी कहानी लाल॥ १॥

छंद।

बालापन तैं बर बुधि लीनी। सकल हथ्यारन पै रुचि कीनी॥
तुपक[1] तीर अरु सकति[2] कृपानी[3]। छुरी गुर्ज[4] की रीतै जानी॥

१—तुपक = बंदूक।
२—सकति = शक्ति, बर्छी।
३—कृपानी = कृपाण, तलवार।
४—गुर्ज = शस्त्रविशेष। यह एक शस्त्र गदा के रूप का होता है और गदा के गोल भाग अर्थात् ऊपर के लट्टू में पतली पतली जंजीरैं कुंडों में लगी होती हैं। इन जंजीरों के सिरे पर छोटे छोटे लट्टू लगे रहते हैं और इसे घुमा कर मारने से कई एक प्रहार साथ ही साथ होते हैं। एक ओर तो गदा की चोट और साथ ही साथ, उन लट्टुओं और जंजीरों की चोट पड़ती है। इस शस्त्र का रूप इसी के अनुसार होता है।

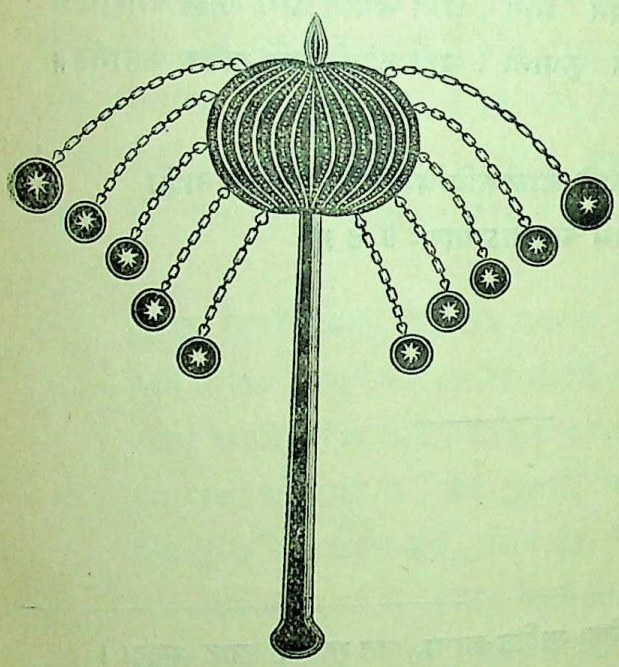

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विद्या बाहुजुद्ध[1] की आई। तर नर बिलगन में अधिकाई॥
असवारी में रंग मचावै। मन के संग तुरंग नचावै॥
चौगानन[2] खेलत छवि छावै। बंटा[3] सब तै अधिक उड़ावै॥
लखत पुरुष लच्छन सब जानै। पच्छो बोलत सगुन बखानै॥
सतकवि कबित सुनत रस पागै। बिलसत मति अरथनि में आगै॥
सब सिकार की जानी घातैं[4]। रुचती दान जूझ की बातैं॥

दोहा।

पूरन पुन्य प्रताप तैं, सकल कला अनयास।
बसी आइ छत्रसाल उर, दिन दिन बढ़ै प्रकास॥ २॥

छन्द।

बढ़ै प्रकास बुद्धि के ऐसै। बरनै चकरवतिन[5] के जैसै॥
तात मात की इच्छा पूजी। कीरति बिदित कबिंदन कूजी॥
ग्यारह बरष बहिक्रम बीत्यौ। खेलत आखेटक श्रम जीत्यौ॥
ऐसे समै और बिधि ठानी। होनहार गति जात न जानी॥
औरँगसाह तखतपति जाग्यौ। मेटन हिंदुधरम कौं लाग्यौ॥
चंपति हिंदुधरम रखवारौ। दिल्लीदल कौ जीतनहारौ॥
तासौ चलै कौन की ऐडै़। परचौ दिलीस बुद्धि बल पैड़ै॥
चंपति जदपि तखत लै दीनौ। तऊ दिलीस उलटि छल कीनौ॥

दोहा।

कीनौ उलटि दिलीस छल, डारि बुद्धि के डौर।
सूबन कौ जितवार[6] पै, काहि पठाऊँ दौर॥ ३॥

१—बाहुजुद्ध = मल्लयुद्ध, कुश्ती।
२—चौगान = पोलो की भाँति का खेल। ३—बंटा = गेंद।
४—घातैं = दाँव। ५—चकरवतिन = चक्रवर्तिन।
६—जितवार = विजयिता, जीतनहारा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छन्द ।

सूबन कौ दल दपट दबावै । ता पर दौर कौन की आवै ॥
तब औरंग बुद्धि उर आनी । फरमाई हीरादे रानी ॥
ज्यौं रन भीषम कौ जसु जागै । अर्जुन दियौ सिखंडी आगै ॥
कीन्हीं कथा उमडि इन ऐसी । भीषम और सिखंडी कैसी ॥
जासौ कुल दिल्लीदल हारयौ । सो चंपति सुरलोक सिधारयौ ॥
सार पहिर रवि मंडल फारयौ । जीत्यो सुरग जीति दिसि चारयौ ॥
गयौ सूर सुरपति के लोकै । फूटौ समुद कौन अब रोकै ॥
उमरे फिरत जुद्ध कौ गाढ़े । चहूँ ओर बैरी बल बाढ़े ॥

दोहा ।

चहूँ ओर बैरी बढ़े, छल बल ताकत घात ।
सूनौ वन मृगराज कौ, दुरद[1] उखारत खात ॥ ४ ॥

छंद ।

ऐसी दसा होन जब लागी । चंपति चमू सोक सौ पागी ॥
सहरा में छत्रसाल प्रबीनै । उतै पिता की अग्या लीनै ॥
सुनै पिता सुर लोक सिधारे । त्यौं माता पतिव्रत पन पारे ॥
कानन परत चाह अनचाही । हिरदै सोक सिंधु बेथाही ॥
दुख की लहर लहर पर आई । हियौ हिलौर दृगन पर छाई ॥
गये पिता कत छाड़ि अकेलै । अब हम राज कौन के खेलै ॥
माता बिन को लाड़ लड़ैहै । को उठि भोर कलेऊ[2] दैहै ॥
मात पिता दीन्है सुख जैसे । ते बीतै सब सपनै कैसे ॥

दोहा ।

सुपन मनोरथ से भये, या जुग के व्यवहार ।
प्रगट पैखियत सांच से, बीतत लगै न बार ॥ ५ ॥

१—दुरद = हाथी । २—कलेऊ = प्रातः काल का भोजन ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छंद ।

बीते[1] प्रगट प्रियव्रत गाये । जिन रथलीक समुद्र बनाये ॥
बीते पृथु जिन पुहुमि सिंगारी । पर्वत पांति धनुष सौं टारी ॥
नल हरिचंद सत्त रखवारे । गये बीत जिन सुजस बगारे ॥
बीते जनक विदेह सयाने । जिन सुख दुःख एक करि जानै ॥
अर्जुन भीम प्रतिज्ञा जीती । अक्षौहिनी अठारह बीती ॥
बीते जिते देह धरि आये । जग जस रहे धर्म तै छाये ॥
ज्यों छत्रसाल बुद्धि उर आनी । तज्यौ सोक हिम्मत ठिक ठानी ॥
न्हाइ पिता कौं अंजलि दीन्ही । कंधन छत्र धरम धुर लीन्ही ॥

दोहा ।

छत्र धरम धुर ले उठ्यो, महाबीर छत्रसाल ।
रीति बड़ेन की विपति में, धीरज धरत बिसाल ॥ ६ ॥

छंद ।

धरि धीरज छत्र साल सिधारे । हांक सुनै अंगद अनियारे ॥
चले छाड़ि सहरा कौ ऐसे । पंडब तज्यौ जतु गृह जैसे ॥
हिम्मत बल दल दुख के मेटे । अंगद जाइ देवगढ़[2] भेटे ॥
कुसल पिता की बूझो ज्यौंही । दृगनि नीर भरि आये त्यौंही ॥
समाचार बीते इत जैसे । अंगद जान लिये सब तैसे ॥
बुद्धि बाहुबल कछू न औरे । चकित चित्त चारौं दिसि दौरे ॥

१—बीते = भूत हुए ।

२—देवगढ़ = ललितपुर प्रांत के जालोन नामक स्टेशन के निकट वेतवा तट पर अत्यंत प्राचीन स्थान है । यह भगवान षड़ानन की जन्मभूमि है । यहाँ का कोट सघन वन से ढँका है। यहाँ गुप्तवंशीय राजाओं के बनवाये मंदिर देखने योग्य हैं ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बैरी बढ़े करत मन भाये। बल बौसाउ चले न चलाये॥
जरतु हियो निज तेजनि ऐसे। बिषधर बँध्यो मंत्रबस जैसे॥

दोहा।

ज्यौं बिषधर मंत्रन बँध्यौ, त्यौं अंगद अनखाय।
लेत उसासैं क्रोधबस, चलत न बल व्यौसाय॥ ७॥

छंद।

त्यौं छत्रसाल धीरधर बोले। सरस बिचार मंत्र के खोले॥
अंगद कौ यह बात सुनाई। राजनीति कछु जामें पाई॥
साहस तजि उर आलस मांड़ै। भाग भरोसे उद्यम छांड़ै॥
ताहि तजै जग संपति ऐसे। तरुनी तजै वृद्ध पति जैसे॥
तातैं अब उद्यम उर आनौ। दूर देस को करौ पयानो॥
भूषन कछुक माई के पाये। राखि दैलवारे[1] हम आये॥
ते सब मांगि खरच कौ लीजे। दूर देस कहि उद्यम कीजै॥
यह बिचार अंगद सुनि लीन्हौ। तुरत बिदा छत्रसालहि कीन्हौ॥

दोहा।

भये देवगढ़ तें बिदा, छत्रसाल सिरताज।
पहुँचि दैलवारैं कियौ, पूरन मन कौ काज॥ ८॥

छन्द।

त्यौंही लगन व्याह की आई। पहिलही तें ह्वै रही सगाई॥
जै पवार कुलवार कुरी के। उद्दित अगिनबंस के टीके॥
तिहि कुल देवकुंवरि छबि छाई। लै अवतार रुकमिनी आई॥
कुल पवित्र भूषित भौ ऐसे। दीपक दीपसिखा तें जैसे॥
दूलह छत्रसाल तिह पाये। करि विवाह कीनै मनभाये॥
रूप सील पतिव्रत सरसानी। भई भूप की जेठी रानी॥

१—देलवारा = स्थान विशेष।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

व्याहि बनी[1] छत्रसाल सिधारे। विसद ब्योत उद्यम के डारे॥
प्रथम बुद्धि ऐसी उर आनी। भेंट भान प्रोहित सौं ठानी॥

दोहा।

भेंट करी इन भान सौं, अपनै प्रोहित जानि।
भान मिले जजमान कौं, राज गरब उर आनि॥ ९॥

छन्द।

प्रोहित लख्यौ राज मद छाक्यौ। तब छत्रसाल आपु तन ताक्यौ॥
जिन चंपति सूबा बिचलाये। तिनके पुत्र कहां हम आये॥
तातें और ब्यौत चितु लीजै। बड़े ठौर कढ़ि उद्यम कीजै॥
त्यौंही पातसाह फरमाये। नृपमनि जे जयसिंह कहाये॥
कूरम कुल उद्दित जग गाये। सूबा ह्वै दच्छिन तैं धाये॥
चढ़ी जोर कूरम की फौजै। बढ़ी मनौ दरियाउ की मौजै॥
ते विलोक छत्रसाल सिहाने। प्रगट करन विक्रम उर आने॥
मिले जाइ जयसिंह नृपालै। उनि हित सौं चाह्यो छत्रसालै॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते जयसिंह-
संमेलनं नाम नवमोऽध्यायः॥ ९॥

१—वनी—वधू = दुलहिन।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दसवां अध्याय ।

दोहा ।

मिलि कै नृप जयसिंह सौं , अंगद लिये बुलाइ ।
मनसिब भयौ दुहूनि कौ , रहे संग सुख पाइ ॥ १ ॥

छन्द ।

रहे संग कूरम के ऐसे । नृप बिराट के पंडव जैसे ॥
यद्यपि मनसम मनसिब नाहीं । सब तैं उमगि अधिक उर माहीं ॥
जहां जूझ के बजे नगारे । तहां उमगि उर लरै छतारे ॥
सनमुख धसै बीररस पागे । घालै घाउ सबहिं तै आगै ॥
अरुन रंग आनन छबि छावै । अरि के अस्त्र गुबिंद बचावै ॥
जहां गढ़न सौं होइ लराई । तहां करै सब तैं अधिकाई ॥
करै मोरचा सब तैं ऊँचै । जहां ग्रीर के मन न पहूँचै ॥
गिरै गाज से तहँ मतवारे । राखि लेहिं तहँ राखन हारे ।

दोहा ।

या बिध नृप जयसिंह के , रहे संग छत्रसाल ।
त्यौं फरमान दिलीस कौ , आइ गयो ततकाल ॥ २ ॥

छन्द ।

त्यौं फरमान साह कौ आयो । बली बहादुरखां फरमायो ॥
लिखी मुहीम देवगढ़ जैयै । बिकट मवास[1] जेर कर ऐयै ॥
सुनि फरमान चढ़ाई भौंहैं । पिल्यौ नवाब देवगढ़ सौंहैं ॥
नृप मद्दत छत्रसाल पठाये । कोका[2] की ताबीन[3] लगाये ॥
कोका संग चले सुख पाये । ये बिचार चित में ठहराये ॥

---

१ मवास = जागीर । २ कोका = धायपुत्र को कहते हैं ।
३ ताबीन = मातहती, सेवा, अनुचरता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जबहिं साह दच्छिन तैं धाये। चंपतिराइ हजूर बुलाये ॥
औरँग कलह तखत हितु कांध्यौ। दारा घाट धै लपुर बाँध्यौ ॥
तहां हरौली[1] चंपति कीन्हीं। चामिल उतरि फतै लै दीन्हीं ॥

दोहा।

दुदस हजारी कौ तहां, मनसिब दियौ दिलीस।
ऐरछ कौंच कनार कुल, अरु पाई बखसीस ॥ ३ ॥

छन्द।

ये नवाब सब जानत आहीं। इनसौं कछु कहिवे की नाहीं ॥
इन चंपति सौं भाइप[2] मानी। बदली पाग जगत में जानी ॥
इनकौ संग भलो है तातै। करिहै भली पुरानै नातै ॥
यह बिचार कोका सँग धाये। चलि दर कूच देवगढ़ आये ॥
निकट जाइ जब बजे नगारे। उमड़े उतहिं देवगढ़वारे ॥
सत्तर सहस सुभट रन बांके। रोके आइ गिरिन के नाके ॥
लागी लाग अरावै छूटे। जे हरौल तिनके मन टूटे ॥
हटत हरौल भयौ भय भारौ। पैठ्यौ चंचल चुटक[3] छतारौ ॥

दोहा।

सिंहनाद गल गर्जि कै, भंज उठ्यौ भट भीर।
छता बीररस उमग मैं, गनै न गोली तीर ॥ ४ ॥

छन्द।

गनै न गोली तीर छतारौ। देखत देव अचंभौ भारौ ॥
एक बीर सहसन पर धावै। हाथ और को उठन न पावै ॥
संगिन मारि करी घनघानी। समर भूमि स्रोनित सौ सानी ॥
नची छता की जोर कृपानी। किलकी[4] उमगि कालिका रानी ॥
सँग के सुभट युद्ध में जूटे। भीर परै तिन सौं सँग छूटे ॥

---

१ हरौली = सेनानायकपन। २ भाइप = भाईपन।
३—चुटक = चटक, प्रवीण। ४—किलकी = हुंकारी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फारत फौज छता अवलोक्यो। उदभट रुकै कौन को रोक्यौ॥
उमगि भरै अरि कौ दल भानौ। घाउ लगत तन तनक न जानौ॥
घाइ खाइ छत्ता रन जीत्यौ। अरि पद प्रलै काल सौं बीत्या॥

दोहा।

बिरझानौ चंपति बली, समर भयानक ठान।
भभरि भीर अरि की भगी, काल रुद्र उर आन॥ ५॥

छन्द।

बैरी भगे मानि भय भारी। परै बिडर[1] ज्यौ बाघ बिडारी॥
बिडरत[2] अरि के कटक निहारे। तब नवाब के बजे नगारे॥
पाई फतै परे तह डेरा। तौ लगि भई सांझ की बेरा॥
सब कौ मिले सबनि के संगी। बिछुरौ एक छता रनरंगी॥
रनमंडल[3] संगिन सब हेरयौ। चकित चित्त चारिहुँ दिसि फेरयौ॥
निस कै पहर कलप से बीते। मिल्यौ न बीर मनोरथ रीते॥
बूझत खबर फिरै चहुं फेरी। ताकत दिसा दाहिनी डेरी॥
भूख प्यास की सुरत बिसारै। जीते जुद्ध तऊ मन हारै॥

दोहा।

मन हारै ढूँढत फिरै, कहां छतारे बीर।
मिलौ आजु तौ है भली, नातर तजौं शरीर॥ ६॥

छन्द।

मति[4] सरीर तजिबे की कीन्ही। दीनदयाल बुद्धि उर दीन्ही॥
एक बेर फिरि फेरी दीजै। चलौ चाह[5] लसगर की लीजै॥
चाह लैन लसगर की धाये। ऐकन तहँ ये बचन सुनाये॥
हम बीसक असवार हथ्यारी। संग फौज के करी तयारी॥
खेतु छाड़ि बैरी जब भागे। बहस बढ़ै हम पीछै लागे॥

१—बिडर = भगेड़। २—बिडरत = भागते हुए। ३—रनमंडल = रणभूमि।
४—मति = विचार। ५—चाह = खोज, समाचार।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गये दूर दल तें कढ़ि ज्यौंही। सूरज चल्यौ अस्त कौं त्यौंही॥
तब बातें मुरके सब भाई। सूरज सनमुख दिसा बताई॥
तहाँ एक कौतुक हम देख्यौ। जाकौ अचिरज जात न लेख्यौ॥

दोहा।

जीन कस्यौ इक दूर तें, देख्यौ तहाँ तुरंग।
ताके धरिबे को हियै, सब कै बढ़ी उमंग॥ ७॥

छंद।

बढ़ि उमंग धरिबे कौ धाये। जब नजीक[1] खेतक पर आये॥
धाइल तहाँ तक्यौ रस भीनै। कढ़ी कृपान हाथ में लीनै॥
ताकी छिनक मूरछा जागै। छिनक जोगनिद्रा सो लागै॥
करै तुरी[2] ताकी रखवारी। ढिग न जान पावै मसहारी॥
पूछ उठाइ चौर[3] से टारै[4]। जो ढिग आवै ताहि बिडारै॥
वाहि धरन धाये बहुतेरे। पहुँचे निकट दाहिने डेरे॥
जब तुरंग वह सनमुख धायौ। भज्यौ बिडर सो जीवत आयौ॥
यह सुनि सुभट छता के धाये। बिछुरे मनौ प्रान फिरि आये॥

दोहा।

तौ लगि उदयाचल चढ़्यौ, सूरज सिंदुर अंग।
त्यौंही दौरी दूर लौं, सब की नजर अभंग॥ ८॥

छंद।

सब की नजर दूर लौं दौरी। चीन्हो तुरी तबै सब औरी॥
देख्यौ तहाँ तुरी बिरझानौ। स्वामिधर्म कौ बाँधै बानौ॥
इन तुरंग की करी बड़ाई। नीकी तुमही सौं बनि आई॥
राति अकेले चौकी दीन्ही। हमतें अधिक भक्ति तुम कीन्ही॥
जब तुरंग इहि भाँति लड़ायौ[5]। संगी जान रोस बिसरायौ॥

१—नजीक = नज़दीक, निकट। २—तुरी = घोड़ा। ३—चौर = चँवर।
४—टारै = हिलावै। ५—लड़ायो = फुसलाया गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

निकट जाइ प्रभु कौं उन देख्यौ। जीवन जनम सुफल करि लेख्यौ॥
मुजरा करि सबही सिर नायौ। चेतन देखि हियै सुख पायौ॥
जल मँगाइ प्रभु कौ मुख धोयौ। फतै सुनाइ समर श्रम खोयौ॥

दोहा।

करी काइजा[1] तुरग की, सीच्यौ बदन बनाइ।
डेरा ल्याये खेत तै, प्रभु कौ पान खवाइ॥ ९॥

छंद।

कोतल[2] भयौ तुरी संग आयौ। जगत बिदित जाकौ जस गायौ॥
बाँधे घाइ कीर्त्ति जग जागी। दल में चाह चलन यह लागी॥
सुनी नवाब चाह यह तैसी। आदि अंत तें बीती जैसी॥
करी तुरी की बड़ी बड़ाई। ऐसौ करत भले जे भाई॥
तातै ताकौ नाम नबीनौ। प्रगटि भले भाई कहि दीनौ॥
जिन छत्रसाल करी घन घाई। तिनकी कछु चरचा न चलाई॥
रीझन तैसी सब बिसराई। बाँकनि अपनी फतै लिखाई॥
सुनत फतूह साह सुख पायौ। बढ़ि नवाब कौ मनसिब आयौ॥

दोहा।

मनसिब बढ़्यौ नवाब कौ, दियौ साह सुख पाइ।
छत्रसाल के भुजन की, को न कमाई खाइ॥ १०॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते देवगढ़जीति
वर्णनं नाम दशमोऽध्यायः॥ १०॥

१—काइजा करना = घोड़े को लगाम चढ़ा कर उसका दूसरा छोर खींचकर उसकी पूँछ की जड़ में बांध देना।

२—कोतल घोड़ा वह कहाता है जिस पर जीन आदि तो कसी हो परंतु कोई सवार न हो और जो धीरे धीरे चलाया जाता है। इसे कोतल चलना कहते हैं।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्यारहवाँ अध्याय ।

छंद ।

छत्रसाल पंचम रन कीन्हो । जैतपत्र कौ कहि लै दीन्हो ॥
आइ मिले सब बिकट मवासी । चुक्यौ[1] अमल ज्यौं रैयत खासी ॥
फिरि नवाब दच्छिन कौं धायै । छत्रसाल तिन संग सिधाये ॥
जद्यपि बिक्रम प्रगट जनायो । फल नवाब तै कछू न पायो ॥
तन मन भयौ अनख अधिकारौ । तुरकन तै कब बन्यो हमारौ ॥
पिता हमारै सूबा डाँड़े । तुरकन पर अजमाये खाँड़े ॥
करी पातसाहन सौ ऐड़ै । परयौ रह्यौ मुगलन के पैड़ै ॥
ऐड़[2] बुंदेलखंड की राषी । चंपति कीर्ति जगत मख भाषी ॥

दोहा ।

तिन चंपति के नंद हम, सीस नवावैं काहि ।
हम भूले सेयौ वृथा, हितू जानिकै वाहि ॥ १ ॥

छंद ।

हितू जानि सेयौ अविवेकी । तातै कहौ होइ क्यौं नेकी ॥
ताकौ हम ऐसौ फल पायौ । याके संग कसालौ[3] खायौ ॥
हम तौ छत्रधर्म प्रतिपाल्यौ । रीझ न याकौ माथौ हाल्यौ ॥
मूरख के आगै गुन गायौ । भैसा बीन बजाइ रिझायौ ॥
वृथा कमल थल माह लगायौ । ऊसर में पानी बरसायौ ॥
खर के अंग सुगंध चढ़ायौ । बायस कौ घनसार[4] चुनायौ ॥
बधिर कान में मंत्र सुनायौ । सूरदास कौं चित्र दिखायौ ॥
कुलरा[5] करिवे कौं घन टेयै[6] । जो अविवेकी साहिब[7] सेयै ॥

दोहा ।

अविवेकी कौं सेइ कै, को न हियै पछिताइ ।
बीजा बवै बबूर के, कहा दाख फल खाइ ॥ २ ॥

१—चुक्यौ = पूरा प्राप्त हुआ । २—ऐंड़ = मान । ३—कसालो = कष्ट
४—घनसार = कपूर । ५—कुलरा = कुल्हाड़ी । ६—टेयै = घिसियै ।
७—साहिब = स्वामी ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छन्द ।

हिंदू तुरक दीन द्वै गाये । तिनसौं वैर सदा चलि आये ॥
लेख्यौ सुर असुरन कौं जैसौ । केहरि करिन बखान्यौ तैसौ ॥
जबतै साह तख्त पर बैठे । तबतै हिंदुन सौं उर ऐठे ॥
महँगे कर तीरथनि लगाये । बेद देवाले निदर ढहाये ॥
घर घर बाँधि जंजिया लीनै । अपनै मन भाये सब कीनै ॥
सब रजपूत सीस नित नावै । ऐड़ करै नित पैदल धावै ॥
ऐड़ एक सिवराज[1] निबाही । करै आपनै चित की चाही ॥
आठ पातसाही झुकझोरै । सूबनि बाँधि डाँड़[2] लै छोरै ॥

दोहा ।

ऐसै गुन सिवराज के, बसे चित्त में आइ ।
मिलिवेाई मन में धर्यो, मनसिब दयो बनाइ ॥ ३ ॥

छन्द ।

इतहि पातिसाही सब झूमै । उतहि सिवा के दल में घूमै ॥
इतकौ उतहि जान नहिँ पावै । जो निकसै सो सीस गँवावै ॥
दुहु दिसि होत खरी हुसियारी । चौकिन निस दिन होत तयारी ॥
तहाँ जान छत्रसाल बिचार्यो । ब्यौंत सिकार खेल कौ डार्यो ॥
तीछन अस्त्र मृगन पर बाहै । बन पहार दच्छिन के गाहै ॥
सुभट संग पटरानी लीन्ही । दुरगम गिरिन बसेरे कीन्हो ॥
भोर चलै सूरज दै बाये । दच्छिन दैहि अस्तगिरि आये ॥
निस में पीठि और धुव चाहै । बुधि बल सब कौ जात निबाहै ॥

दोहा ।

निसि में नक्षत्रनि चलै, दिन में भानु बिचारि ।
लाग[3] दैहि सब साथ कौ, रोज मृगनि कौं मारि ॥ ४ ॥

१—सिवराज = शिवाजी । २—डाँड़ = दंड ।

३—लाग = भोजन की सामिग्री ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छन्द ।

घाटी नकी गिरिन की ठाढ़ी । देखी तहाँ भीमरा[1] बाढ़ी ॥
तरे बांधि काठन के भेरा[2] । परे पार के[3] बन में डेरा ॥
बन ही बन घाटी सब हेरी[4] । चौकी रही दाहिनी डेरी ॥
कृष्णा बढ़ी देखकै त्यौंही । उतरे पार भीमरा ज्यौंही ॥
उतरि पार सिवराज निहारे । सबकै भये अचंभे भारे ॥
तंह सिवराज सील अति बाढ़े । देखत भये दूर तै ठाढ़े ॥
कुसल बूझि ढिग ही बैठारे । कैसे पहुँचे बीर छतारे ॥
कही किसा[5] अपनी सब जैसी । चितु दै सुनी सिवा सब तैसी ॥

दोहा ।

सिवा किसा सुनिकै कही, तुम छत्री सिरताज ।
जीत आपनी भूम कौ, करौ देश कौ राज ॥ ५ ॥

छन्द ।

करौ देश कौ राज छतारै । हम तुमतैं कबहूं नहिं न्यारै ॥
दौरि देस मुगलन के मारौ । दबटि दिली के दल संहारौ ॥
तुरकन की परतीत न मानौ । तुम केहरि तुरकन गज जानौ ॥
तुरकन में न बिवेक बिलोक्यौ । मिलन[6] गये उनकौ उन रोक्यौ ॥
हमकौ भई सहाइ भवानी । भय नहिं मुगलन की मन मानी ॥
छल बल निकसि देश में आये । अब हम पै उमराइ पठाये ॥
हम तुरकनि पर कसी कृपानी । मारि करैंगे कीचक घानी ॥
तुमहू जाइ देस दल जोरौ । तुरक मारि तरवारनि तोरौ ॥

दोहा ।

राखि हियै ब्रजनाथ कौ, हाथ लेउ करवार ।
ये रक्षा करिहैं सदा, यह जानौ निरधार ॥६॥

१—भीमरा = भीमा नदी । २—भेरा = बेड़ा । ३—के = करके ।
४—हेरी = देखी । ५—किसा = क़िस्सा = कथा, वृत्तान्त ।
६—जान पड़ता है कि जब महाराज छत्रसाल शिवा जी से मिलने गये थे, वह वह समय था जब शिवा जी दिल्ली से औरंगजेब के षड्यंत्र से निकल कर दक्षिण पहुंच चुके थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छत्रनि की यह वृत्त बनाई। सदा तेग की खाइ कमाई॥
गाइ बेद विप्रन प्रतिपाले। घाउ एड़धारिन[1] पै घाले[2]॥
तेगधार में जौ तन छूटै। तौ रवि भेद मुकत सुख लूटै॥
जैतपत्र जौ रन में पावै। तौ पुहुमी के नाथ कहावै॥
तुम हौ महावीर मरदानै। करिहो भूमि भोग हम जानै॥
जौ इतही तुमकौं हम राखैं। तौ सब सुजस हमारे भाखैं॥
तातै जाइ मुगल दल मारौ। सुनिये श्रवननि सुजस तिहारो॥
यह कहि तेग मँगाइ बँधाई। बीर बदन दूनी दुति आई॥

दोहा।

आदर सो कीन्हें बिदा, सिवा भूप सुख पाइ।
मिली मनौ उर उमग में, भूमि भावती आइ॥७॥

छन्द।

मानहु भूमि भावती पाई। दृढ़ मसलहत[3] यहै ठहराई॥
साहस सिद्धि धरै मन माँही। फेरि भीमरा कृष्णा गाही[4]॥
दच्छिन में सूबनि कौ भेला। तहाँ सुनै सुभकरन बुँदेला॥
जिन लोहे लहरात मझाये[5]। तीन खून तिन माफ कराये॥
तिनसौ इन मिलिवौ ठिक ठानौ। हितू अनहितू चाहत जानौ॥
इन अपनी जब खबर सुनाई। तब सुभसाहम[6] नौ निधि पाई॥
मिलै दौरि अति आदर कीनौ। सबतै सिरै बैठका दीनौ॥
दिन दिन दिलजाई[7] करि राखै। हित सौ बचन अमृत से भाखै।

दोहा।

कछुक द्यौस सुभसाह के, पास रहे छत्रसाल।
जब उचाट देखे हियै, तब जान्यौ उन हाल॥८॥

१—ऐंड़धारिन = ऐंठवाले विरोधियों पर। २—घाले = चलावे।
३—मसलहत = मनसूबा, विचार। ४—गाही = पार की।
५—मझाये = पार किये। ६—सुभसाहम = शुभकरण।
७—दिलजोई = खातिर, ढाढ़स।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छन्द ।

जानि हाल निज पास बुलाये । दिलजोई के बचन सुनाये ॥
जो कहियै तौ अरज लिखावै । जाके सुनत साह सुख पावै ॥
चतुर उकील अरज लै जैहै । फेरि साह मनसिब लिखि दैहै ॥
अरु जौ हमै इहाँ सगु दीजै । तौ घर ही ठकुराइस[1] कीजै ॥
यह सुनि छत्रसाल जो बोले । साहस सिद्धि खजाना खोले ॥
हम रुचि सौ मनसिब लै देखे । कछु दिन तुरक हितू करि लेखे ॥
सेवा हू अपनै ऐ नाहीं । हम न पतैहैं[2] इनकी छाही ॥
जो घर ही ठकुराइस कीजै । तौ कैसे जग में जसु लीजै ॥

दोहा ।

तातें अब दिल्लीस के, दीरघ दलनि बिलोइ[3] ।
अपनौ उद्दिम[4] ठानवौ, होनी होइ सु होइ ॥९॥

छन्द ।

यह बिचार अपनी कहि दीन्हौ । सुनि सुभसाह अचंभौ कीन्हौ ॥
कलह पातसाहन सौ काँधै । ऐसौ मीरु और को बाँधै ॥
हिम्मत हिये धरी उन ऐसी । करिहै वहै कहत है जैसी ॥
तातै बिदा इन्हैं सब कीजै । इनको देखि प्रतिज्ञा लीजै ॥
तौ लगि चाह चली ठिकठाई । सो राजन के घर घर आई ॥
ठौर ठौर के गिरे दिवाले । सुनत हिये हिन्दुन के हाले ॥
पातसाह फरमान पठायो । हुकुम फिदाईखाँ कौ आयो ॥

दोहा ।

नगर ओड़छे में सुनै, हिन्दू धरै गुमान ।
ते नित पत्थर पूजि कै, फैलावत कुफरान[5] ॥१०॥

१—ठकुराइस = हुकूमत, प्रभुत्व । २—पतैहैं = विश्वास करेंगे ।
३—बिलोइ = बिचला कर, हिला कर । ४—उद्दिम = पुरुषार्थ ।
५—कुफरान = काफिरपन, अविश्वास ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छन्द ।

ऊँची धुजा देवालन राजै । घंटा संख झालरै बाजै ॥
छापै देत तिलक दै ठाढ़े । माला धरै रहत मन बाढ़े ॥
ऐसा हुकुम सरे[1] का नाही । क्यों ऐ करत चित्त की चाही ॥
जौ कहुं कान संख धुनि आवै । मुसलमान तौ भिस्त[2] न पावै ॥
सीसौ ग्रौटि[3] कान जौ नावै[4] । तौ दोजख तैं खुदा बचावै ॥
तातैं ढाहि[5] देवालै दीजै । तिनके ठौर मसीदैं[6] दीजै ॥
मुलना[7] तहाँ निवाज गुदारैं[8] । बाँग देहि नित सांझ सकारैं[9] ॥
न्याउ चुकावै फाजिल काजी । जाते रहे गुसाईं[10] राजी ॥

दोहा ।

सुनत कान फरमान यह, कही फिदाई खान ।
हुकुम चलाऊँ साह कौ, मेटि कुल कुफरान ॥११॥

छन्द ।

ढाहि देवालय कुफर मिटाऊँ । पातसाह कौ हुकुम चलाऊँ ॥
जो कहुँ बीच बुँदेला आवै । तौ हमसों वह फतै न पावै ॥
जौ मानी मन सूबनि मौजै । जोरन लगे ग्वालियर फौजै ॥
सहस अठारह तुरी पलानै[11] । धूमघाट पर धुज फहरानै ॥
यह सुनि महाबीर रस छायौ । बान बाँधि धुरमंगद धायौ ॥
परयौ जाई डेरन पर ऐसै । मत्त करिन पर केहरि जैसै ॥
सांगनि मारि फौज बिचलाई । पर फतूह धुरमंगद पाई ॥

१—सरे—शुद्ध रूप अर्वी—शरअ = मुसलमानी धर्म्मशास्त्र ।
२—भिस्त—शुद्ध रूप विहिश्त = स्वर्ग । ३—ग्रौंटि = पिघला कर ।
४—नावै = डालै । ५—ढाहि = गिरा । ६—मसीदैं = मसजिदें ।
७—मुलना = मौलाना, मुल्ला । ८—गुदारैं = पढ़ैं ।
९—सकारैं = प्रातःकाल । १०—गुसाईं = खुदा ।
११—पलानै = सजे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

भज्यौ फिदाईखां बली, रही कछू न सम्हार ।
दियै पाग के पेच उहि, गोपाचल के पार ॥१२॥

छन्द ।

खबर सुजानसिंह पर आई । जीतै हू दल दहसत खाई ॥
अब की अनी गई ढरि ऐसै । बैर साह के बचियतु कैसै ॥
अब जौ रोस साह उर आवै । तौ हम पै फौजें फरमावै ॥
यह उतपात उठ्यौ रे भाई । भई जुझार सिंह की हाई ॥
तब तौ चंपति भयौ सहाई । गिली[1] भूमि भुजबल उगिलाई ॥
चंपतिराई कहां अब पैयै । कैसे अपनौ बंस बचैयै ॥
साँस अघाई बुँदेला लीन्ही । फिरि फिरि चंपति की सुधि कीन्ही ॥
ज्यौं यह फिकिर भूप उर आई । त्यौं हरकारन खबर सुनाई ॥

दोहा ।

पंचम चंपतिराई कौ, छत्रसाल बिरझाइ ।
करन दूंद देसहिं चल्यौ, मनसिब तज्यौ बनाइ ॥ १३ ॥

छन्द ।

जब यह खबर भूप सुनि पाई । बढ़ी उमगि अरु दहसत खाई ॥
जौ तुरकन पर कसी कृपानी । तौ कीनी मेरी मनमानी ॥
जौ मन में कछु खून बिचारै । तौ कृपान हमही पर झारै ॥
तातैं बनत प्रीति उर आनै । खोदि गाड़ियै बैर पुरानै ॥
यह बिचारि तँह पांच पठाये । जँह छत्रसाल सुनै ठिकठाये[2] ॥
पहुंचै जाई पचौर प्रवीनै । छत्रसाल सौ मुजरा कीनै ॥
जथा उचित हित सौं बैठारै । बूझी कुसल कहां पगु धारै ॥
तब पांचन यह अरज सुनाई । फिकिर सुजानसिंह उर आई ॥

१—गिली = निगली हुई । २—ठिकठाये = ठहरे हुए थे ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा।

पातसाह लागे करन, हिन्दुधर्म कौ नासु।
सुधि करि चंपतिराइ की, लई बुँदेला साँसु॥ १४॥

छन्द।

त्यौंही सुनै अरंभ तिहारे। कह्यो भूप धन बीर छतारे॥
ऐसी कछुक उमगि उर आई। निधि-अंजन[1] खोजत निधि पाई॥
हमहिं तिहारे पास पठायौ। कह्यो भूप यह बचन सुहायौ॥
जौ कहुं बीर दृगनि भर देखौं। अपने भये काज सब लेखौं॥
तातै भूपहिं देउ दिखाई। फेरि करौ अपनी मनभाई॥
मिटिहै फिकिर तिहारे मेटै। ऐसे सुजस और पर भेटै॥
यह सुनि छत्रसाल तँह आये। नृपति सुजानसिंह जहँ छाये॥
सुनत नृपति निज निकट बुलाये। मानौ मनबंछित फल पाये॥

दोहा।

मनबंछित फल से मिले, जब देखे छत्रसाल॥
मिले उमगि उठि दुरहिं[2] तै, सिंह सुजान नृपाल॥ १५॥

छन्द।

हित सौं सिंह सुजान निहारे। बूझो कुसल निकट बैठारे॥
कह्यो बंस के छत्र छतारे। तुम तैं ह्वैहैं काज हमारे॥
जब तैं चंपति करयौ पयानौ। तब तैं परयौ हीन[3] हिंदवानौ[4]॥
लग्यौ होन तुरकन कौ जोरा। को राखे हिंदुन को तोरा[5]॥
तुम चंपति के बंस उज्यारे। छत्र धरमधुर थंभनहारे॥
तुम लीनी हिम्मत हिय ऐसी। आनि फेरिहौ चंपति कैसी॥

१—निधि-अंजन-ऐसा विश्वास है कि एक प्रकार का सिद्ध अंजन होता है जिसके लगाने से भूमि में गड़ी हुई संपत्ति प्रत्यक्ष देख पड़ने लगती है।

२—दुरहिं = द्वार पर से। ३—हीन = निर्बल।

४—हिंदवानो = हिन्दू जाति। ५—तुरा—शुद्ध रूप तुर्रा है = कलगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब जौ तुम कटि कसौ कृपानी। तौ फिरि चढ़ै हिन्दु मुख पानी॥
नृपति बचन चितु दै सुनि लीनै। हँसि बोलै छत्रसाल प्रबीनै॥

दोहा।

महाराज हम हुकुम तैं, बांधत हैं किरवान।
तौलौ फिकिर न आइहै, जौंलौ घट में प्रान॥ १६॥

छन्द।

जौलौ घट में प्रान हमारे। तौलौ कैसी फिकिर तिहारे॥
पै सब किसा आपु की जानी। कहै कौन वेा कथा पुरानी॥
जौ फिरि साह प्रपंच उठावै। तौ लरने घरही में आवै॥
तातै सावधान हिय ह्वैकै। धरौ भार सेा उठिहै लैकै॥
यह सुनि नृप नीचे दृग आने। फेर बचन बोले ठहराने॥
चंपतिराई तेग कर लीनी। ओप[1] बुँदेल बंस कौ दीनी॥
भुजन पातसाही झकझोरी। गई भूमि जुरि जुद्ध बहोरी॥
उदयाजीत बंस के जाये। हम पै सदा छांह करि आये॥

दोहा।

पंचम उदयाजीत के, कुल कौ यहै सुभाउ।
दलै दौरि दिल्लीस दल, जिमि दुरदन[2] बनराउ॥ १७॥

छन्द।

तिहि कुल छत्रसाल तुम आये। दई दिखाई नैन सिराये[3]॥
यौं दृग प्रेम हिये में लैकै। बैठे बीच बिसुंभर दैकै॥
राखी तेग बिसुंभर आगे। कीन्हो सौंह सांच उर पागे॥
तब जिनके दिल में छल आवै। लेाक कृतघ्नी के तिन पावै॥

१—ओप = कान्ति, चमक। २—दुरदन = हाथियों का।
३—सिरायें = शीतल हुए।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अब जो पाप हिये में लैहै। तिनको दंड बिसुंभर दैहै॥
यह कहि प्रीति हिये उमगाई। दिये पान किरवान बधाई॥
दोऊ हाथ माथ पर राखे। पूरन करौ काज अभिलाखे।
हिन्दुधरम जग जाइ चलावौ। दौरि दिलीदल हलनि हलावौ।

दोहा।

अभै देंहु निज बंस कौ, फते लेहु फरमाह।
छत्रसाल तुम पै सदा, करै बिसुंभर छांह॥ १८॥

इति श्री छत्रप्रकाशे लालकविविरचिते नृपसुजानसिंह
मिलापो नामैकादशोऽध्यायः॥ ११॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बारहवाँ अध्याय।

छन्द।

यौं असीस नरपति जब दीन्ही। माथे मानि छतारे लीन्ही॥
वहांते चले बिदा ह्वै ज्यौंही। उठ्यो फरक दच्छिन दृग त्यौंही॥
चलि नौरंगबादहि[1] आये। पैठत सहर सगुन सुभ पाये॥
देखे तहां बीर बलदाऊ। नजर मिलत उठि मिले अगाऊ[2]॥
भेटे प्रीति परस्पर लीन्हौ। भोजन थार एकही कीन्हौ॥
मिलि बैठे तँह दोऊ भाई। राम कृष्ण कैसी छबि छाई॥
छग्रसाल पंचम त्यौं बोले। मंत्र बिचार हिये के खोले॥
दाऊ सब मनसिब हम छांडयौ। विग्रह हिये साह सौं मांडयौ॥

दोहा।

तातै अब तुमहू चलौ, ह्वै है भलो इलाज।
एक मंत्र ह्वैकै हितू, साधत हैं सब काज॥ १॥

छन्द।

राम कृष्ण भुवभार उतारे। राम लषन मिलि रावन मारे॥
चंपतिराइ सुजान सयानै। एक मंत्र ह्वै अरि दल भानै॥
त्यौं हम तुम मिलि दोऊ भाई। तुरंकन पै कीजै घनघाई[3]॥
जुद्ध जीति बसुधा बस कीजै। दै दान जगत जस लीजै॥
यह सुनि बलिदिवान[4] अनुरागे। लच्छन कहन बड़िन के लागे॥
बिपत मांह हिम्मत ठिकठानै। बढ़ती भये छमा उर आनै॥
बचन सुदेस[5] सभनि महि भाषै। सुलस[6] जोरबे में रुचि राषै॥
जुद्धन जुरै अकेले सौ से। सहज सुभाइ बड़िन के ऐसे॥

१—नौरंगाबाद = आंतरी के निकट नगर विशेष है। २—अगाऊ = आगे से।
३—घनघाई = प्रहार। घन भारी हथौड़े को कहते हैं। अभिप्राय यह है कि उन पर ऐसे ऐसे कठिन प्रहार करें जो घन की चोट के समान हों।
४—बलिदिवान = बलदाऊ। ५—सुदेस = समुचित।
६—सुलस = एक प्रकार का लोहा। यहां शस्त्र से अभिप्राय है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

ते सुभाव तुम में सबै, छत्रसाल कुलथंभ।
करन बिचारै और को, एते बड़े अरंभ[1] ॥ २ ॥

छन्द ।

एते बड़े अरंभ तिहारे। तुम तै हम ह्वै है क्यों न्यारे ॥
पै बिचार मन में यह आनौ। फेर अरंभ करो जे जानौ ॥
मानस आप काज कौ दौरै। करता जो रचि राखी और ॥
तौ सब काज वृथा ह्वै जाही। होती काके चित की चाही ॥
जानत कौन देहधर ऐसी। प्रापति हानि कौन कौ कैसी ॥
यह करता अपनै कर राखी। सो जग में सबही कौ साखी ॥
ताकी कछू इसारत पैयै। तौ दृढ़ मंत्र यहै ठहरैयै ॥
बलि की कही छता सुनि लीनी। बोले बुद्धि बढ़ाइ प्रबीनी ॥

दोहा ।

चाहत जौ करतार की, कछू इसारत साखि।
तौ द्वै चिठी उठाइये, प्रभु के आगै राखि ॥ ३ ॥

छन्द ।

कै समसेर साह सौं बांधै। कै छाड़ौ मनसिब हम कांधै ॥
जौन उठाइ चिठी प्रभु दैहैं। माथै मानि वहै हम लैहैं ॥
वह बिचार कीनौ अनुरागे। चिठी लिखाई धरि प्रभु आगै ॥
तब अजान[2] सौ एक मँगाई। तेग बांधिबे की उठि आई ॥
तब प्रतीत बलदाऊ कीनी। माथै मानि चिठी वह लीनी ॥
कह्यौ धन्य छितिछत्र छतारे। तुम कुलचंद हिंदुगन तारे ॥
अब हमसौं रन रुपै[3] न कोऊ। चलिये एक चित्त मिलि दोऊ ॥
जो दृढ़ मंत्र हिये ठहराये। उतरि नर्मदा देसहिं आये ॥

१—अरंभ = आरंभ। २—अजान = अबोध बालक। ३—रुपै = ठहरेगा।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

संवत सत्रह सै लिखे, आठ आगरे बीस ।
लगत बरष बाईसई, उमड़ चल्यौ अबनीस ॥ ४ ॥

छन्द ।

गहनौ[1] कठिन ठौर लै राख्यौ । दिल्लोदल जीतन अभिलाख्यौ ॥
कीनै सुभट खरच दै ताजे । पांच तुरंग संग कौ साजे ॥
प्रथम भले भाई उर आनै । लच्छो मृगछौना मरदानै ॥
और भभूखा दामिन घोरी । जुरै न जोर पौन गति थोरी ॥
ये सब सुभट संग के जानौ । कुंवर नरायनदास बखानौ ॥
गोविंदराइ पैंत पुरवारे । सुंदरमनि पमार अनियारे ॥
दलसिंगार राममनि दौवा । मेघराज परिहार अगौवा ॥
धुरमंगद बगसी[2] मरदानौ । खांगर[3] खरौ किसोरी जानौ ॥

दोहा ।

प्रबल मिश्रदलसाह ज्यौं, त्यौं हरकृष्ण प्रसंस ।
लच्छे राउत राममनि, मानसाह हरिबंस ॥ ५ ॥

छन्द ।

मेघी अरु परदौन दयाले । फानु भाट बगसीसनि[4] पाले ॥
फोजे मियां समर अति सूरौ । लोहलराक सिरोमनि पूरौ ॥
पंवल ढीमर खरगे बारी । मोदी पतै सबै हितकारी ॥
पांच सवार पचीस पियादे । बिरचै बिकट सहज में सादे ॥
चले बिसहटी तै सजि साऊ । बगुदा गये जहां बलदाऊ ॥
बलदाऊ हम करी तैयारी । तुमहूं चलौ करौ असवारी ॥
ल्यौं बल कही बिजौरी जैये । रतनसाह को संग चलैये ॥
छत्रसाल त्यौं गये बिजौरी[5] । भेटे रतनसाह भर कौरी[6] ॥

१—गहनौ—माता के आभूषण । २—बगसी = शुद्ध रूप ब.ख्शी है ।
३—खांगर = खंजार (जाति विशेष) । ४—बगसीसनि पाले = ब.ख्शीसों का पला हुआ, दान से पला हुआ । ५—बिजौरी = स्थान विशेष, बिजावर के निकट है ।
६—कौरी = गोद, अंक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

छत्रसाल बोले सुनौ , रतनसाह सिरमौर ।
भुमियावट उर में धरौ , करौ देस कौ दौर ॥ ६ ॥

छंद ।

दौर देस दिल्ली के जारौ । तमकि तेग तुरकन पर भारौ ॥
हम सेवा करिहैं अनुरागे । लड़िहैं उमगि तिहारे आगे ॥
जुद्ध वृत्ति छत्रिन की गाई । तातै यह मेरे मन आई ॥
अपनौ बर्नधर्म प्रतिपालौ । साहन के दल दौरि उसालौ[१] ॥
जे भुमिया[२] हम में मिलि रैहैं । तेई संग फौज के ह्वैहैं ॥
जे न लागिहैं संग हमारे । दोष न लागै तिनके मारे ॥
जे उमराव चौथ भरि दैहैं । तेई अमल[३] देस को पैहैं ॥
जिन में पेड़ जुद्ध की पावौ । तिनपै उमगि अस्त्र अजमावौ ॥

दोहा ।

तेग छाइहै देस में , देस आइहै हाथ ।
शत्रु भागिहैं मान भय , लोग लागिहैं साथ ॥ ७ ॥

छन्द ।

रतन कही यह क्यौं बनि आवै । बिना भीत[४] को चित्र बनावै ॥
धन बल उदभट जो धन जाकै । बिग्रह बनै भरोसौ काकै ॥
को रच्छक कौनै मत दीनौ । को बलवंत सहायक लीनौ ॥
छता कह्यो रच्छक सो जानौ । सोइ बलवंत सहायक मानौ ॥
जो प्रभु तिहू लोक कौ स्वामी । घट घट व्यापै अंतरजामी ॥
सो मति देत नरनि कौं तैसी । होनहार आगै कछु जैसी ॥
जिनकौ जौन वृत्ति प्रभु दीनी । ताही मांह सिद्धि तिन लीनी ॥
आवत हमैं भरोसौ ताकौ । करुना सिंधु बिरद[५] है जाकौ ॥

१—उसालौ = छिन्न भिन्न कर दो । २—भुमिया = भूम्याधिकारी, जिमीदार ।
३—अमल = कर । ४—भीत = दीवाल, स्थल है ।
५—बिरद = कीर्ति, यहां यथार्थ गुणमय नाम से अभिप्राय है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

करुनानिधि प्रभु एक है, जातै यह संसार ।
ताकौ सेवन सार है, जग है और असार ॥ ८ ॥

छन्द ।

सो प्रभु है ऐसौ हितकारी । संगहि रहै करै असवारी ॥
सेवक जहां कहूं को धावै । तहां संग ही लाग्यौ आवै ॥
जहां सेवकहिं निद्रा लागै । साहिब तहां संग ही जागै ॥
ग्राह गह्यो हाथी जब हार्यो । कमल चढ़ावत ही निरधार्यो ॥
गाढ़ परै प्रहलाद बचाये । खंभ फारि नरहरि कढ़ि आये ॥
द्रुपदसुता की लज्जा राखी । वेद पुरान सिमृति[1] सब साखी ॥
बहै सांकरै[2] होत सहाई । अति अदभुत वाकी गति गाई ॥
रीती भरै भरी ढरकावै । जो मन करै तो फेर भरावै ॥

दोहा ।

जब जैसो चाहै करयौ, तब तैसी मति देइ ।
जो जैसो उद्यम करै, सो तैसो फल लेइ ॥ ९ ॥

छन्द ।

चारि बरन जे जग में आये । सबको प्रभु उद्यम ठहराये ॥
हाथ पाइ उद्यम कौं दीनौ । तातैं उद्यम करत प्रबीनौ ॥
उद्यम तैं संपति घर आवै । उद्यम करै सपूत कहावै ॥
उद्यम करै संग सब लागै । उद्यम तै जग में जसु जागै ।
समुद्र उतरि उद्यम तै जैये । उद्यम तै परमेश्वर पैये ॥
जब यह सृष्टि प्रथम उपजाई । तेग वृत्ति क्षत्रिन तब पाई ॥

१—सिमृति = शुद्ध रूप स्मृति है । २—सांकरै = विपत्ति में ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जितनी जाहि बीरता दीनी। तितनी पुहुमि जीति तिहि लीनी॥
तातै दौर देस कौ कीजै। पुहुमी जीति तेगबल लीजै॥

दोहा।

जदपि मंत्र छत्ता कह्यो, वेद पुरान प्रमान।
तदपि रतन मान्यौ नहीं, होनहार बलवान॥ १०॥

इति श्री छत्रकाशे लालकविविरचिते रतनसाह-छत्रसाल संवादो नाम द्वादशोऽध्यायः॥ १२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरहवाँ अध्याय ।

—:-○-:—

छन्द ।

प्रथम बीरता उमगि बढ़ाई । बर्नधर्म रुचि चित्त चढ़ाई ॥
राजनीति की रीति बताई । ईश्वर की ईश्वरता गाई ॥
फिरि उद्यम की करी बड़ाई । रतनसाह मन कछू न आई ॥
तब मन माह भये पछिताये । रोज अठारह वृथा गमाये ॥
त्यौं सोवत सपनौ हरि दीनौ । समाधान नीकी विधि कीनौ ॥
अंतरिच्छ बोले बरबानी । छत्रसाल कटि कसौ कृपानी ॥
त्यौं बसुधा बनिता ह्वै आई । हाथ जोड़ यह अरज जनाई ॥
हौं रहिहौं बस भई तिहारै । मन क्रम बचन कहत निरधारै[1] ॥

दोहा ।

यह सुनिकै ताकी तहाँ, करी निसा छत्रसाल ।
छुवत छौर अनिमिष मनौ, भई पूर्व दिसि लाल[2] ॥ १ ॥

छन्द ।

भई पूर्व दिसि बदन ललाई । बिहसत कमलमुकुल छबि छाई ॥
तिमिर समूह दिसनि तै भागे । बिछुरे मिले कोक अनुरागे ॥
उठे जागि छत्रसाल प्रबीनै । तुरत जीन घोरन पै कीनै ॥
मुरली मधुरध्वनि तँह बाजी । चली सिपाह संग उठि ताजी ॥
ह्वाँतै चलै कूच करि ज्यौंही । मिले आइ बलदाऊ त्यौंही ॥
औ डेरा मैं डेरा पारे । डोर बजाइ दुंद के डारे ॥
छत्रसाल की खबर सुहाई । बाकीखान बुँदेले पाई ॥
आगै लैन दूर तैं आये । महिमानी करि आनंद छाये ॥

१—निरधारै = निश्चय करके । २—भई पूर्व दिसि लाल = प्रभात हो गया ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

बाकीखाँ सैा मिलि छता , दई दुंद[1] की नीउ ।
लंक लैन कौ राम ज्यौं , किये मित्र सुग्रीउ ॥ २ ॥

छन्द ।

तहाँ आइ त्यौं मिल्यौ सबेरौ । कुँवरराज रनधीर धँधेरौ ॥
तब सबहिनि मिलि मंत्र बिचारयौ । सब कौ छत्र छता निरधारयौ ॥
तँह सम अंस हुते द्वै साऊ[2] । छत्रसाल पंचम बलदाऊ ॥
बलि दिवान त्यौं परम प्रबीने । सरस बिचार चित्त में लीने ॥
सैा के अंस बराबर कीनै । तिन में पाँच जिठाई दीनै ॥
सैा में पैतालीसै आये । छत्रसाल ने पचपन पाये ॥
या बिधि अंस[3] दुहुनि ठहराये । उमगै प्रेम परस्पर छाये ॥
छत्रसाल त्यौं परम प्रबीनै । सील सुभाइ सबै बस कीनै ॥

दोहा ।

एक मंत्र ह्वैकै तहाँ , बढ़े परस्पर प्यार ।
काँधे बर बिक्रम सबनि , बाँधे उमगि हथ्यार ॥ ३ ॥

छन्द ।

त्यौं यह खबर सुनत चितचाही । पहुँचे धाइ कदीम[4] सिपाही ॥
तीस अस्वार सैन तँह साजी । उमड़ी तुपक तीन सै ताजी ॥
प्रथम दौर कै तँह इलाज के । जँह सरीक हे कुँवरराज के ॥
गह्यौ[5] धँधेरन दुरग आसरो । गाँउ गढ़ी कौ दृढ़ दुगासरौ[6] ॥
इतहि बीर छत्रसाल उमंडे । उतहि धँधेरन रनरस मंडे ॥
दुहुँ दिसि तुपक तराभर[7] माची । उदभट भीर बीररस राची ॥
पसर करी छत्रसाल बुँदेला । टूट्यौ गाँउ प्रथम बगमेला[8] ॥
मारि गाँउ मनभायौ कीनौ । पहिलौ बैर बाप कौ लीनौ ॥

१—दुंद = युद्ध । २—साऊ—शाह = शिरोमणि । ३—अंस = भाग । ४—कदीम = प्राचीन । ५—गह्यो धंधेरन दुरग आसरो = धंधेरों ने कोट का आसरा लिया अर्थात् कोट में जा घुसे । ६—दुगासरो = छिपाव । यह शब्द दुगना से जिसके अर्थ बुंदेलखंडी में छिपना है बना है । ७—तराभर = तड़ातड़ । ८—बगमेला = आक्रमण ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

खेत छाँडि बैरी भगे, गढ़ी गही सकराइ ।
धरमद्वार[1] माँग्यो तबै, पाये प्रान बराइ ॥ ४ ॥

छन्द ।

तब हितु आइ धँधेरन कीनौ । तुरत व्याह कौ बीरा दीनौ ॥
बीरा लै रतनागर मारयौ । धाकनि काँपि उठी दिसि चारयौ ॥
दौरि बेढ़[2] सिरौंज कौ कीन्हौ । कुंदा के गिरि डेरा दीन्हौ ॥
तहाँ केसरीसिँह धँधेरौ । मिल्यौ आइ करि नेहु घनेरौ ॥
त्यौंही तेज छता के फैलै । परी सिरौंज सहर में ऐलै ॥
तँह उमराउ हते जगजानै । महमद हाशिम नाम बखानै ॥
आनंदराइ चौधरी बंका । दीनौ दुहुन जुद्ध कौ डंका ॥
बिकट पठान जुद्ध कौ साजै । धौंसा निकट जुझाऊ बाजै ॥

दोहा ।

धौसा धुनि सुनि कै छता, दई फौज फरमाइ[3] ।
पाइ रोपि बाँध्यौ उमडि, घाट[4] तोपचिन धाइ ॥ ५ ॥

छन्द ।

प्रबल पठान जुद्धरस छाये । करै बिचार हला कौं धाये ॥
सनमुख बजी बँदूखैं ज्यौंही । ये बिचारि चित आये त्यौंही ॥
जदपि पठान सुद्ध पिल जैहैं । गोलिन वृथा अजाये[5] ह्वैहैं ॥
तातैं रहै फौज मन बाढ़ी । सनमुख लाग लगाये ठाढ़ी ॥
हम औघट ह्वै हला कीजै । तेगनि मार फतै कर लीजै ॥
औघट[6] धसे घाट इन छंडयौ । छत्रसाल लै तुपक[7] उमंडयौ ॥
तुपकन मारि करे मनभाये । खेत पठान पचासक आये ॥
त्यौं बैरिन दिल दहसत खाई । बिडरी फौज सिरौंजहि आई ॥

१—धरमद्वार मांगना = धर्म की दुहाई देकर गढ़ को खाली करके जीवित निकल जाने के लिये शत्रु से मार्ग माँगने की प्रार्थना करना ।

२—बेढ़ करना = गाय बैल आदि पशु छीन लेना । ३—फरमाइ दई = आज्ञा दी । ४—घाट रोपना = रास्ता रोकना । ५—अजाये होना = मारा जाना । ६—औघट = कुराह । ७—तुपक = बंदूक ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

बिडरी फौज सिरौंज कौ, दिल में दहसत खाइ ।
चंड[1] तेज छत्रसाल कौ, रह्यो दिसनि में छाइ ॥ ६ ॥

छन्द ।

छत्रसाल पंचम रन जीत्यौ । तुरकनि पर परलै[2] सौ बीत्यौ ॥
मारि फौज औड़ेरहि[3] आये । त्यौंरी त्यौं रन पै उठि धाये ॥
लूटि गांव कीनै मनभाये । पकर पटैल[4] जैत कौ ल्याये ॥
लई लूट घोरी अति चाँडी । उखरी गड़ी न सामा छाँडी ॥
छत्रसाल करुनारस मंडै । जैत पटैल डांड बिन छंडै ॥
ह्वांते फिर औड़ेरहि आये । चंड प्रताप चहूं दिसि छाये ॥
महमद हाशिम संका मानी । चपे[5] चौधरी उतरयौ पानी ॥
रहै ससाइ[6] सांस लै दोऊ । बाहर सहर न आवै कोऊ ॥

दोहा ।

त्यौं धामौनी में सुनै, खालिक जाकौ नाउ ।
बैठ्यौ जोर मवास कै, थानै दै हर गांउ ॥ ७ ॥

छन्द ।

सो जीतन छत्रसाल बिचारयौ । गैनौ गांउ दौर करि मारयौ ॥
घेरि पिपरहट में ते कूटे । भगे थनैत तुरंगम लूटे ॥
धौरासागर डेरा पारे । गंजि गरब खालिक के डारे ॥
तहां गौंड़ जोरे बनबासी । मिल्यौ दामजीराइ मवासी ॥
ह्वांते हनूटक कौं आये । हनूमान के दरसन पाये ॥
धामौनी सौं लई लराई । भेड़ा मारि पथरिया लाई ॥
लखरौनी बड़िहारन मारी । रहे रामठां जगथरि जारी ॥
गिरिबर मार खेझरा मारयौ । सोखि सुनौदा पल में गारयौ ॥

१—चंड = प्रचंड । २—परलै = प्रलय । ३—औड़ेरी = गांव, राठ के निकट । ४—पटैल = ज़मीदार । ५—चपे = झेंपे, लजाने । ६—ससाइ रहे = भयभीत हो गये ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

...नोरंजन पुस्तकमाला ।

इस पुस्तकावली में एक ही आकार तथा रूप रंग की हिन्दी की सौ उत्तमोत्तम पुस्तकें होंगी । अब तक निम्न लिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

(१) आदर्श जीवन ।	(२) आत्मोद्धार ।
(३) गुरुगोविंदसिंह ।	(४) आदर्श हिन्दू १ भाग ।
(५) आदर्श हिन्दू, २ भाग ।	(६) आदर्श हिन्दू, ३ भाग ।

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १) डाक व्यय अतिरिक्त, समस्त पुस्तक-माला के स्थायी ग्राहकों से ।।।) लिया जायगा, डाक व्यय अलग होगा ।

हिन्दी शब्दसागर ।

हिन्दी भाषा का बृहद्कोश । ८ अंक छप चुके हैं । प्रत्येक अंक में डिमाई चौपेजी आकार के ९६ पृष्ठ हैं । मूल्य प्रति अंक १) डाक व्यय अलग ।

पृथ्वीराज रासो ।

यह हिन्दी साहित्य का आदि ग्रंथ है । इसमें अंतिम क्षत्री सम्राट पृथ्वीराज चौहान का विस्तृत वृत्तांत कविचन्द लिखित है । साथही समस्त ग्रंथ का सारांश गद्य में दिया गया है । यह सुपर रायल आकार के ३१०० पृष्ठों में समाप्त हुआ है । मूल्य समस्त ग्रंथ का २०) रु० डाक व्यय १।।) के लगभग । ये तीनों पुस्तकें ।

मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा ,

बनारस सिटी, से मिल सकती हैं ।

——:०:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीर्ण व अजीर्ण के दस्त की [illegible]धा।

खाना पचानेवाले रसों के घटने बढ़ने या विकार से अजीर्ण रोग होता है जिसके ये लक्षण हुआ करते हैं—खाने के बाद पेट भारी जान पड़ना, पेट में वायु होना, जी मिचलाना, खट्टी वा व्यर्थ डकार आना, छाती जलना, मुंह में पानी भर आना, पेट में थोड़ा थोड़ा दर्द होना, चित्त की ग्लानि, आलस्य आदिक। जब तक खाना हजम की थैली में रहता है और पाचनक्रिया कठिनता से होती रहती है यही हालत होती है। जब यह अनपचा खाना अँतड़ियों में उतर जाता है तब पेट में गड़गड़ाहट होती है, पेट फूलता है व दस्त की चेष्टा होती है। दस्त पतला वा पानी के ऐसा होता है। कभी कभी खाने के थोड़ी देर पीछे ही दस्त हो जाता है। दस्त होने से शरीर क्षीण होता है। ये सब हालतें कभी कम, कभी अधिक होती रहती हैं और महीनों तक चलती हैं। रोगी का शरीर दिन पर दिन गलता जाता है। अन्त को असाध्य हो जाता है।

शरीर की साधारण पुष्टि का घट जाना इस रोग का कारण है। नीचे लिखी हुई हालतों में ऐसाही होता है—

वृद्ध अवस्था, कोई विशेष रोग के बाद कमज़ोरी, कम खाना (जैसा कि व्रत, लङ्घन, पारण आदिक में लोग करते हैं), धातु के व्यर्थ नष्ट होने से क्षीणता, अधिक श्रम, दुश्चिन्ता वा शोक, प्रसव के विकार से कमज़ोरी।

इन विषयों को विचार कर डाक्टर बर्म्मन ने अजीर्ण की दवा बनाई है। खाना हज़म करने व अजीर्ण के दोषों को मिटाने में इसकी विशेष शक्ति है। यह दवा छोटी छोटी टिकिया की ऐसी बनी हुई है। पंदरह रोज़ के सेवन योग्य ३० टिकिया की एक शीशी का मोल १) रुपया। डाक महसूल १ से ४ शीशी ।-) आने।

डाः एस, के, बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त स्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पुस्तक संख्या २३, २४

संख्या ५३]

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक, श्यामसुन्दरदास, बी० ए० ।

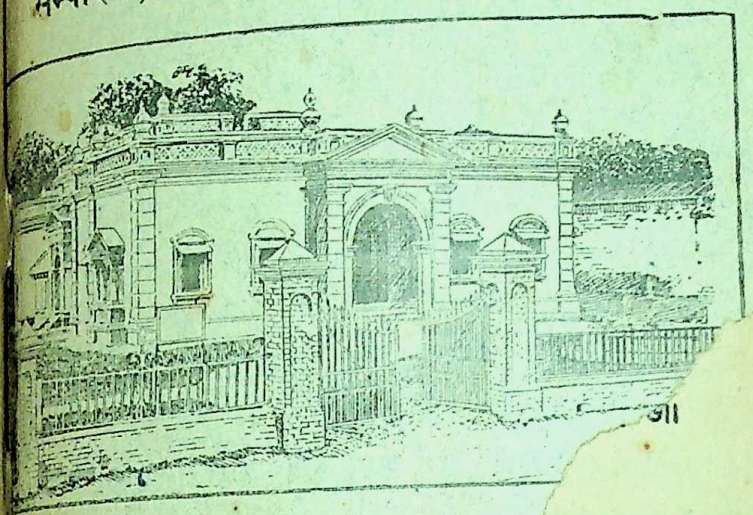

FASCICULUS NO. 53.]

NAGARI PRACHARINI GRANTHAVALI

EDITOR

SYAM SUNDAR DAS, B.A.

PUBLISHED BY

THE NAGARI PRACHARINI SABHA,

BENARES.

(प्रति संख्या ॥) [*Price per fasciculus As.*

ISSUED ON THE 10TH JUNE, 1916.

PRINTED BY APURVA KRISHNA BOSE AT THE INDIAN PRESS,

ALLAHABAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

होता है। कभ

दस्त होने से शरीर

अधिक होती रहती

शरीर दिन पर दिन गलत

शरीर की साधार

नीचे लिखी हुई हालतों

वृद्ध अवस्था,

(जैसा कि व्रत, ल

व्यर्थ नष्ट होने से

के विकार से क

इन वि

बनाई है।

विशेष शि

पंदरह

रुपया

विषयानुक्रमणिका।

रासो—बाबू श्यामसुन्दर दास सम्पादित। (पृष्ठ

—बाबू श्यामसुन्दरदास और बाबू कृष्णबलदेव

(शेष अंश भूमिका आदि)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दिय चित्त महोत्सव नगर मह मुहर मुहर राहिल रटहिं ।
माया पयोध मह परयो मन कीर बोध कारन कढहिं ॥१०३॥

चौपही ।

बन विहार दिन प्रति अधिकारिय । निसिमह सुष्ष नृत्य सुष कारिय ॥
भाति भाति के भोग सु अग्गह । राजा रूप मोह मन पग्गह ॥१०४॥

दोहा ।

पगिव रूप मन मोह नृप, निस दिन रहहि उदास ।
कौन दीप मह आइया, विसमित भयव निरास ॥१०५॥
उवत जुगल जुग अस्तके, चार जाम जन आय ।
रूपब्रह्म महराज के, आयस चित्त लगाय ॥१०६॥
करि सेवन पुनि पाधरै, अप अप धामन वीर ।
ता पीछे महराज मिलि, कहत वीर सुन कीर ॥१०७॥

मायाकगति ।

कहै भूप बत्तं । सुनो कीर मत्तं ॥
सुतं सत्यबालं । दिसाभाषि सालं ॥१०८॥
सुनौ सब्द तत्तं । न नीतं न मत्तं ॥
न अस्वं न जानं । न भ्यासं न बानं ॥१०९॥
सरद सत्त दोयं । भयौ बाल सोयं ॥
हन्यौ रत्त गानं । श्रुतं ना पुरानं ॥११०॥
सबै मूर्ष संगी । करैं भक्ति भंगी ॥
करैं मत्त लोलं । नरी संग डोलं ॥१११॥
पर स्त्री विहारं । गयौ राज भारं ॥
सतं दोय रानी । भई दीन वानी ॥११२॥
करी का विधाता । कियौ वंस घाता ॥
कियं संभु अग्यं । सबै भूप जग्यं ॥११३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिलोक्यं विहायं । महोत्सव सिहायं ॥
वचन्नम उचारे । जलं नयन ढारे ॥११४॥

गाथा ।

यह उच्चरि नृप नाथं । कर्ता कवन दीप दिषरायं ।
हारा हिल सुत पूतं । कर्ता कवन दीप दिषरायं ॥११५॥

दोहा ।

रूपब्रह्म माया मिले, बोले वचन अधीर ।
बहु करुना चित मझ्झ हुव, तब उड़ि आयव कीर ॥११६॥

मायाकगति ।

सुनै वैन कीरं । गयौ भूप तीरं ॥
पषा पैाछि नैनं । सुनौ भूप बैनं ॥११७॥
धरौ धीर चित्तं । सबै संग वित्तं ॥
कलित्रं सुपुत्रं । असत्यं सुमित्रं ॥११८॥
भजौ विस्वरायं । असत्यं विहायं ॥
कछू नाथ कीनौ । जलं दीप दीनौ ॥११९॥
बनै सैाध बागं । सुनौ नृत्य रागं ॥
सदा इच्छ भेागं । लियै सर्व लेागं ॥१२०॥
सुरी सुष्ष दायं । करै सेव आयं ॥
यहै चित्त जानं । तजौ सेाक रानं ॥ १२१ ॥

दोहा ।

सास्त्र पुरान सुवेद मत, राजनीति अब गाय ।
सुक समुझायै समुझि नृप, दीनव दुष्ष विहाय ॥१२२॥

छप्पय ।

सुक समुझायै समुझि भूप माया तजि तूरन ।
तजि रज गुन मत गुनहि सत्य गुन धरिधर पूरन ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रभु नामनि किय माल धारि उर मानस लिन्निव ।
करत जाय निसि अहनि दृष्टि चरनन प्रभु दिन्निव ॥
सब जगत झूँठ मानौ नृपति पुत्र कलत्र पवत्र वित ।
समुझ्यौं सुतत्व मन मझ्झ यह ब्रह्म सरन पावन सुनित ॥१२३॥

दोहा ।

ब्रह्म सरन पावन सुनित, यह जानिय नृपराय ।
छंडि दयेय जग जाल के, चलन सबै चितु लाय ॥१२४॥

चौपही ।

वासिय सर्व दीप के आवहि । भोग अनेक भूप कहँ ल्यावहि ॥
नाना भाँति गुनी गुन गावहि । रूपब्रह्म मन मोद बढ़ावहि ॥ १२५ ॥

दोहा ।

वर्ष एक राजा रहिव, तिहि सुदीप मह आय ।
आइय फेर वसंत रितु, वन फूले समुदाय ॥ १२६ ॥
कीर सहित राजा चलिव, दिष्षन विपन विहार ।
भाँति भाँति पक्षी रटैं, सोभा अगम अपार ॥ १२७ ॥
विपन विलोकत सरित सर, मानस बढ़ि अनुराग ।
फेर नृपति गव्यूत भर, दिष्षि नृपत वर बाग ॥ १२८ ॥
वृक्ष जाति बहु को गनय, ते पुरान मुनि गाय ।
पक्षिन के बहु सब्द सुनि, मोहि रहे नर राय ॥ १२९ ॥
वर्ष येक बस दीप मह, रूप ब्रह्म भुवपाल ।
फिरि माया मह चित्त दिय, भये सुष्ष सर साल ॥ १३० ॥

चौपही ।

अब्द इक्क भरि रहिव सुदीपह । सुष्ष मानि नहि लयव महीपह ॥
वनिता पुरिष प्रात सब आयेय । रूपब्रह्म के दरसन पायेय ॥ १३१ ॥
दिष्षि राज बुल्लिव इमि बत्तह । क्यौ छत जुक्त सुष्ष गय गत्तह ॥
म्हां आयव तुव सर्व सुअंगह । सुवरन तुल्य लषतु नहिं भंगह ॥१३२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवोवाच—दोहा।

राजा हम आराम है, बनिता जाती जात।
स्वर्न धाम अवलोक ते, उहि नृप दयेय दुजात ॥ १३३ ॥
भूमि दान गृह दान दिय, बाग दान सो राज।
ताहिय नृप किय विभौ यह, सब सुष सोभा साज ॥ १३४ ॥
पुष्प जाति बनिता सुगन, जे द्रुम ते नर जाल।
मेवा दुजन षवाइया, तुव आगैं सो हाल ॥ १३५ ॥
रूपराज फिरि पुच्छिया, कवन राज दिन दान।
कवन सहर किहि बंस मह, सो तुम करहु बषान ॥ १३६ ॥
वन देवा इमि उच्चरहि, सुनहु श्रवन दै भूप।
चंद्र ब्रह्म के बंस हुव, राजा मनमथ रूप ॥ १३७ ॥
महा धर्मधारिय भयव, जग्य दान बहु कीन।
भूमि बावरिय बाग गृह, ग्राम ग्राम दुज दीन ॥ १३८ ॥
भूर हते वन देवता, पुष्प जाति तिय आय।
भूमि दान कव दीप यह, सुनहु सत्य नृप राय ॥ १३९ ॥
सहर महोत्सव वास किय, रूपब्रह्म यह नाम।
ता नृप के वनदेवता, दुषित भये तिहि ठाम ॥ १४० ॥
सो राजा दरियाव सह, बूडिव सहिज जिहाज।
राहिलसिय ताकव तनुज, करिय महोवै राज ॥ १४१ ॥
बाग नवीन लगाइया, पराचीन उजारि।
महिष वृषभ कंडूक रै, सृंगन तुचा विदारि ॥ १४२ ॥
पुष्प जाति जल हीन भय, माला कर गय छंडि।
वन देवा छत जुक्त हम, वन देवी दुति षंड ॥ १४३ ॥
उपवन भयेय नवीन अति, पराचीन सब घत्त।
विन पति के वनदेव भय, सुनहु राज यह बत्त ॥ १४४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

तब भूपति बुल्लिव इमि वानिय । वन सुर रूप ब्रह्म मुहि जानिय ॥
उदधि मध्यमाँ पवन उड़ाइय । तरनि नाह बुड्डिय जलु आइय ॥१४५॥
कीर मत्त दीपहि हम आयेय । सुकृत करे तै नैन लखयेय ॥
कहिय भूप देवन सह वानिय । भूसुर सर्व बत्त यह जानिय ॥ १४६ ॥

दोहा ।

कहा करहुँ वन देवता, मम सु नगर बहु दूर ।
फेर हरित करतौ तुम्है, वारि ढार परिपूर ॥ १४७ ॥
कहा करव मम देस कह, दूर करिव करतार ।
नातर तुम कौ सीचतौ, आठ पहर पय ढार ॥ १४८ ॥
तब वनदेवा उच्चरै, इककै वचन विचार ।
थां कह नृप दह जाम मै, नगर महोवै धार ॥ १४९ ॥
रूपब्रह्म कर कीर दिय, वन देवन सुषु पाय ।
उठ्यौ स्वर्न परजंक तै, चलिव उतन चितु लाय ॥ १५० ॥
यह कहि करि राजा लियौ, स्यंदन पुष्प चढ़ाय ।
चतुर पंच इक जाम मह, नगर महोवे आय ॥ १५१ ॥
राजा कह महोवै नगर, बैसारा दीवान ।
तब वनदेविय देवता, भयेय सुअंतरध्यान ॥ १५२ ॥
आम पास बैठारि नृप, वन देवा सब जाय ।
प्रात होत राहिल नृपति, दिष्षि चित्र चितु चाय ॥ १५३ ॥
जनक चीन्हि निजु आपनव, परिव आसुही पाय ।
चित्र देष रानी सहित, भूप तीर सब आय ॥ १५४ ॥
करि प्रदक्षिना नृपति की, चरन परी सब जाय ।
वारै मुक्ता हेम पुर, दिन्नै पुन्य लुटाय ॥ १५५ ॥
करय दान अर्बुदन तै, निसु दिन बजत बधाय ।
गावत गीत उछाह मह, पट भूषन पहिराय ॥ १५६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राहिलसी विनया करत, तात सिंहासन लेहु ।
थां महराज म्हा कुवर अब, यहै सिषावन देहु ॥ १५७ ॥

चौपही ।

राहिल वचन जोर जुग पानिय । पुनः खिताब देहु सुषदानिय ॥
कुवर कुवर जनपद सब बुल्लय । करता भाग्य अद्य मम पुल्लय ॥१५८॥

दोहा ।

सोकसिंधु मह म्हा परिग, राज्य पाय महि माह ।
तात तासु तै ऊबरौ, सुष सोउब तुव छाह ॥ १५९ ॥
रहिब रजागुन छाय तनु, तम गुन चित्त बसाय ।
भगत धार भगवान की, सत गुन गयव उड़ाय ॥ १६० ॥
क्षुधा पिपासा सब गइय, राज धंध मह सोय ।
संसा हंस परयौ घनौ, तन की षबर न होय ॥ १६१ ॥

चौपही ।

रूपब्रह्म हसि बत्त कहाइय । सुत समरथ्थ भाग्य बड़ पाइय ॥
मम भय वृद्ध सक्ति तन नाहिय । मां आयस थां राज कराहिय ॥१६२॥
जे भूपति भूतल मह आयेय । कमला पति पहिराय पठायेय ॥
मत पुरान जो राज्य कराइय । ता नृप काज दोष नहि आइय ॥१६३॥
इक्क सिषापनु माँ कव लिज्जिय । सब जनपदन बाग बहु किज्जिय ॥
पराचोन मम बाग सुधारहु । पुष्प जाति पर पय चय ढारहु ॥१६४॥
बहु वापी सर कूप बनावहु । बहु देवल रचना रचवावहु ॥
यह कहि पूर्व कथा सब गाइय । राजनीति पुत्रहि सिषवाइय ॥१६५॥
भूमि भूर आराम सु किज्जिय । ते दिन प्रति विप्रन कह दिज्जिय ॥
अपनै हथ्थ तिलक फिर किन्नव । राज भार राहिल सिर दिन्नव ॥१६६॥

दोहा ।

तब राहिल नृप हुकुम दिय, जनपद जन बुलवाय ।
करिब माफ करु सर्वदा, ताल बाग बनवाय ॥ १६७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पराचीन नृपतान के, बाग विलोके जाय ।
माला करि रावेय घनै, सारिजु सेत बधाय ॥ १६८ ॥
रूपब्रह्म मुनि मंत्र लिय, बसि पहरा पुर सोय ।
सहर महोवै अंति सो, रच्यौ सरस अघषोय ॥ १६९ ॥
सागर रूप जो नाव धरि, तहँ भूप रहि छाय ।
विप्रन कहँ बहु दान दिय, अध्वर तिंस कराय ॥ १७० ॥

चौपही ।

रूपब्रह्म इक पदिक मगायव । वंसी सुर अहि नाथ मँगायव ॥
विय सरसी सुर धाम विसालह । तहाँ किन्न बैठक भुवपालह ॥१७१॥

दोहा ।

सो राजा सुरलोक गय, ब्रह्म रंध्र तज प्रान ।
तब तै राहिल रसा मह, धार्यौ धर्म निधान ॥ १७२ ॥
इक दिन राहिलराज नै, पंडित लीन बुलाय ।
मम सुतात आयसु करिग, ताल बाग बनवाय ॥ १७३ ॥
कहा पुन्य सर बाग कौ, बापी कूप बनाय ।
वेद पुरानन मै कह्यौ, सो भाषहु दुजराय ॥ १७४ ॥

वाचनीक । तब पुरान मत राजा राहिलसौं पंडित कहत हैं ।

श्लोक ।

दश कूप समो वापी, दश वापी समो ह्रदः ।
दश ह्रद समः पुत्रो, दश पुत्रो समो द्रुमः ॥ १७५ ॥

दोहा ।

पंडित कहै पुरान मत, राहिलसिय सुन लीन ।
तातै सब जनपदन प्रति, नगर बाग बहु कीन ॥ १७६ ॥
वन देवा आइस करिग, रूप राज किय मत्त ।
लाषन सी थां पुंछियै, सो बुल्लिव मम बत्त ॥ १७७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रूपब्रह्म कौ चरित नर, सुनै श्रवन चितु लाय।
जो यह कलि करनी करै, सो सुरलोकै जाय ॥ १७८ ॥

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२१) अंतःपुर मंत्रायण खंड ।

—:०:—

वाचनीक—ये वचन सुनि लाषन चित्र मान्यौ अरु या कही कै जीवत जैहौ तौ ऐसे उपवन लगाइहौ यह बत्त कहि मानस महँ जल्हन सहित सब कुवरावर कीरतसागर पै आये ॥

दोहा ।

कमल विमल गंभीर मह, फुल्ले कमल विसाल ।
बहु पक्षी सुभसुरति सह, भ्रमत भ्रमर बहु जाल ॥ १ ॥

हनूफाल ।

फुल्लेत कमल विसाल । रो लंप गुंजत जाल ॥
जुग कोक सोभ सुहाय । चालंत सम सुषदाय ॥ २ ॥
नृप हंस सहित कुमार । वग हंस दिपत अपार ॥
जनु सिद्ध जुग सुभ अंग । जनु सिद्ध सुन्दर अंग ॥ ३ ॥
दीसंत सिर अति वेाप । जनु सिद्ध सीसन टोप ॥
किल किल सुझलि गहि षाइ । उत फाल जनु नट जाइ ॥४॥
कहँ लौ कहों जल जीव । सब सुष्ष कीलिय सीव ॥
इहि भांति केल कराहिं । सोभा बरन नहिं जाहि ॥ ५ ॥

दोहा ।

सब तीरथ महिलोक के , वेद पुरानि वषान ।
कीरतसागर महँ परचौ , तिन तिन कौ जल आन ॥ ६ ॥

वाचनीक—फेर जल्हन नै सब तडागनि कौ महत्ति कह्यौ तब कीरत सागर अस्नान करै ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

कीरतसागर न्हाइ करि, कुँवर मोद मन पाय ।
आल्ह हवेली को गये, सब ठाकुर सँग लाय ॥ ७ ॥

चौपही ।

देवल मात निछावर किन्निय । सहसन हेम भिक्षुकन दिन्निय ॥
टीकौ करिव सत्त हय राजह । मानौ भुव सुरपति के बाजह ॥ ८ ॥
सौ गंधनि दहलान लिपायेय । राजकुमार सबै वैसायेय ॥
भाँति भाँति अति भोजन किन्नै । डेरा चलि उद्दल सँग लिन्नै ॥ ९ ॥

दोहा ।

लिये पानि परि पैर के, द्वारे उभ्यौ आल्ह ।
सब ठकुराइस लै चली, बदन विहँसि सुष जाल ॥ १० ॥
अल्हन आयै सत्त दिन, भये सुनी प्रथिराजु ।
बुल्लि कन्ह कयमास भर, किये लरन की साजु ॥ ११ ॥
चाहुवान बलवान सुनि, ताल्हन लष्षनरान ।
कन्ह आदि दै सूरि सब, बुल्लि लीन अगिवान ॥ १२ ॥
पत्रिय लिखव चँदेल कौ, कासिद जुगल पठाय ।
बुल्लि सूर सावंत कहि, करहु जुद्ध चितु लाय ॥ १३ ॥
कन्ह बुल्लि कयमास भट, चावँड चंद पुडीर ॥
सलष लषन पज्जून नृप, बुल्लाये सब वीर ॥ १४ ॥

छप्पय ।

बुल्लि कन्ह चहुवान बुल्लि कयमास महाभर ।
बुल्लि चंद पुंडीर बुल्लि चावंड चंडवर ॥
बुल्लि सलष पामार बुल्लि पज्जून महामति ।
बुल्लि सुसंजमराय बुल्लि कनकेस विरदपति ॥
कमधुज्जराय निढ्ढुर बुलिव वरदाई पुर बुल्लियव ।
सब मिलिव सूर सामंतवर तत्तु बत्तु सब बुल्लियव ॥ १५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

कहय चंद पृथिराज सुनि , ढील न कीजे नेत ।
आयव आल्ह कनौज तैं , सहस पचास समेत ॥ १६ ॥

छप्पय ।

लष्षन राजकुमार कुमक नृप पंगराय दिय ।
संग अष्ट उमराव अवर कम्मान सैाक लिय ॥
बानदार सत तीन तीनसत सिंधुर आयव ।
तहलनसी अगिवान ताहि अंतक गोगायव ॥
अल्हन भुवाल जसराज सुत सहस पचासक ल्याइयव ।
लिख पत्रिय भुव परिमाल कहँ जुद्ध सुद्ध ठहराइयव ॥ १७ ॥

दोहा ।

कहत गुरू गुरराम तजि , चाहुवान तन आस ।
जब जीयौ जित्तो चमू , आल्हन सहित पचास ॥ १८ ॥

चौपही ।

अल्हन सहस पचासक ल्यायव । पंग जंग पर सैन पठायव ॥
आये सुभट सात दिन बीतै । करौ जुद्ध चंदेल कहीतै ॥ १९ ॥
दोय मास हम छावनि किन्निय । छत्रिय धर्म षग्गवर चिन्हिय ॥
अब चंदेल जुद्धवर मंडौ । नातर नगर महोवा छंडौ ॥ २० ॥
गुनमंजरि मुहि सालहि दासिय । घायल अन्नाहक हनि तासिय ॥
पहिलै जौम लरन कौ किन्नव । अब चंदेल कहा वल हिन्नव ॥२१॥

छप्पय ।

लिषि पत्रिय प्रथिराज योग्य परिमाल सुकिन्नव ।
छत्रियधर्म धरि धीर सूर सुरलोक सु दिन्नव ॥
करौ जुद्ध पाधरों धरा चंदेल षेल कुल ।
नातर घर तजि धाम रहौ आधीन सेव तुल ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धारियै धीर रज धारना कातरता सब छंडियै।
बुल्लाय कुमक कमधुज्ज किय सिंहनाद नृप किज्जियै ॥ २२ ॥

चौपही ।

छत्रिय धर्म धरहु परिमालह। करहु नरेस पग्ग वर व्यालह ॥
कै तुम नगर महोवौ छंडौ। कै तुम साज लरन कव मंडौ ॥ २३ ॥
लिय परिमाल पत्रिका बंचिय। सोच करिव राजन दिल षंचिय ॥
अपनी पहिगा सकल बुलाइय। संभर काज करौ मतु ठाइय ॥२४॥

दोहा ।

लिषौ बाँच परिमाल नृप, उर अति सोच कराय।
अल्ह आदि दै सूर सब, लीनै निकट बुलाय ॥ २५ ॥

नराज ।

बुल्लाय राज आल्हयं। करंत मत्त ष्यालयं ॥
बुलाय उद्द लीनयं। कुमार दो प्रवीनयं ॥ २६ ॥
ब्रह्मा सु इंद्रजित्तयं। सु बुद्ध चित्त नित्तयं ॥
बुलाय प्रोहितं लियं। लरन्न मत्त जंकियं ॥ २७ ॥
बुलाय कायथं कला। सुचारि बुद्धि है भला ॥
बुलाय भट्ट लीनयं। नरेस थाप कीनयं ॥ २८ ॥
बुलाय वैस वीरयं। चँदेल चारु धीरयं ॥
बुलाय साहि सुंदरं। करंत बत्त अंदरं ॥ २९ ॥
गहैरवार रूपयं। षगार जंग जूपयं ॥
बुलाय राज इंदरं। मल्हन्न नारि मंदरं ॥ ३० ॥
तहाँ सुमत्त कीनयं। अनेक भ्रम्म लीनयं ॥
पिथौर दूत आइयं। जुरन्न जुद्ध राइयं ॥ ३१ ॥
सिताब बात मंडियं। नही सुठाम छंडियं ॥
बुल्यो सु अल्ह रूपयं। सुनौ चँदेल भूपयं ॥ ३२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुरंत कूच किज्जियं । जहान जस्सु लिज्जियं ॥
सुनंत आल्ह बैन यं । करेति रक्त नैनयं ॥ ३३ ॥
बुलाय पीलवानयं । वदंतु यौ जुबानयं ॥
कुथां करिंद्र सज्जियं । निसान तोप बज्जियं ॥ ३४ ॥
बुलाय साहनीलयं । करौ तुरंग जीनयं ॥
बुलाय वान दारियं । कियं हरौल मारियं ॥ ३५ ॥
बुल्यौ सु उद्द बैनयं । सुनौ सुभूप बैनयं ॥
सबै सुवीर जोधयं । चलै सुगोल क्रोधयं ॥ ३६ ॥
सकत्त सिंह भूपयं । सबे सु सैन रूपयं ॥
पदम्म सीय भारयं । लसंत फौज मारयं ॥ ३७ ॥
भनैज सीह चल्लियं । हजार बार मिल्लियं ॥
चले सुअद्द भाइयं । लरंतु पायदाइयं ॥ ३८ ॥
चलेति विप्र नागरं । करंत लोह आगरं ॥
तिवानि भूप वानियं । सदा सु बुद्धिपानियं ॥ ३९ ॥
जगन्न भाट चल्लियं । सुबुद्धि षग्ग पिल्लियं ॥
चल्यौ सुभट्ट जल्हनं । नहीं सुजुद्ध हल्लनं ॥ ४० ॥
चले सुभूप भूपतिं । न स्वामि धर्म की पतिं ॥
गहीर वारहालयं । चल्यौ सुछत्र सालयं ॥ ४१ ॥
कही जगन्न बत्तयं । सुनौ चँदेल मत्तयं ॥
सबै कुरीसु संगयं । नभीर होहु जंगयं ॥ ४२ ॥
करै सुजंग जीतयं । दिवस्स दोय बीतयं ॥
विचार लेाग आपनौ । अरिं दलं उथापनौ ॥ ४३ ॥
पमार गौर गोहिलं । बघेल जोर मोहिलं ॥
कमद्ध कूरमं मिले । सुहार बागरी चले ॥ ४४ ॥
जहासु जद्द पीचयं । भदौर वैस बीचयं ॥
सुसापुल हाडाचयं । बनाफरं जुझारयं ॥ ४५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरूर गोहिलौतयं । पवैय भीर होतयं ॥
नृवान मंद वानियं । कठेरि लोह जानियं ॥ ४६ ॥
जुरे चँदेल शुद्धयं । सुनौ गरूर बुद्धयं ॥
पुंडीर दाहिमा मिले । उमंद सिंहलं चले ॥ ४७ ॥
पिलंति पारिहारियं । चँदेल सैन भारियं ॥
सबै सयन्न मिल्लियं । हजार साठि झिल्लियं ॥ ४८ ॥
पचास दीन पंगयं । कमद्ध राज जंगयं ॥
गयंद तीनि सै हलं । झिरै सुपाट जेवलं ॥ ४९ ॥
चँदेल हो हिरीसयं । दलं असेष दीसियं ॥
करै सँग्राम सुद्धयं । पिथौर सो विरुद्धयं ॥ ५० ॥
चँदेल चेत कीनयं । निकस्सि डेर दीनयं ॥
लिष पिथौर काजयं । करै रनं समाजयं ॥ ५१ ॥
विलंत लोह दीसयं । दिवस्स दोय बीसयं ॥
करै सु जुद्ध आइकै । विरच्चि लोह वाहि कै ॥ ५२ ॥

छप्पय ।

चले वैस वागरिय चले भैाहार महामति ॥
चले मेव अरु गौड़ चले गहिलौत विरदपति ।
चले पुंज पुंडीर चले बघ्घेल दीह दल ।
चले धार पम्मार चले पामार महाबल ॥
चलि सिरसि वाह षाती सघन बन्नाफर जुभ्भार अति ॥
महिपाल जुक्त पडिहार चलि जे प्यारे चंदेल पति ॥ ५३ ॥

चौपही ।

सब जनपद के नृपति सुहाइय । ते सब सिमिट महोवै आइय ॥
सैनानि सहित सिर तन धारेय । जिनि भूपति परिमाल जुहारेय ॥५४॥

वाचनीक—आगै सब देसन देसन के राजा परिमाल लघां आये ॥ तिन पुरन के नाम कहिजत है ॥ वारी कौ राजा वाहन ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चांदा कौ राजा रहिसाहि ॥ सुरगढ़ कौ राजा सुरदेव ॥
गढ़ा कौ राजा नरहरि ॥ हिंडोल नगर कौ राजा ईसुरदास लोधी ॥
रीवां कौ राजा चक्रपान बघेलौ ॥ इन्हैं आदि दै राजा बहुत आये ॥
तिन राजा परिमाल सौं जुहार करयौ ॥ तब राजा जथाक्रम आदरु करयौ ॥
राजा राजकुमारनि येकु येकु अयराषी मुक्तामालै दई ॥

दोहा ।

आदरु करि परिमालदै , भूपति सबै जुहारि ॥
इक्क इक्क हय माल दिय, सिरोपाय पहिराइ ॥ ५५ ॥
मुक्तमाल क्रमसह दई , नृप परिमाल सुजान ।
चले भूप सजि वाहनी, आगे दियौ निसान ॥ ५६ ॥
बजत दुंदुभिय जाल तहँ, जंगी दुहुल विसाल ॥
सब उमरावन संग लै, चल्यो भूप परिमाल ॥ ५७ ॥

पद्धरी ।

चलि नगर छंडि परिमालराज । लिन्नै सुसंग संग्राम साज ॥
सत सप्त संग दंती विसाल । सिंदन अनेक सिंधव सुजाल ॥ ५८ ॥
चल तीस सहस सयरग सुरंग । रन महँ कराल रनजीत संग ॥
पच्चास सहस लष्षन कुमार । बलिवंत वीर संगर अपार ॥ ५९ ॥
नरहरिय गौड़ गढ़पति कराल । सैना सुसंग सोभित विसाल ॥
सुर गढ़ा वीर रय साह धीर । सोभंत संब सैना गहीर ॥ ६० ॥
जीरा सुगोड चाँदा भुवाल । बहु फौज मौज त्यागंत माल ॥
बाहन सुगोड़वारी बसाय । सेना अनेक ता संग जाय ॥ ६१ ॥
हिंडोल नगर सामंत वास । सैना सुसंग ईसुरह दास ॥
यातै अनेक तासंग जाय । कहि चंद कवन गनना गनाय ॥ ६२ ॥
बहु बैरनि बलित नीसान अंग । बलवान वीर नहि मुरत जंग ॥
महुवौ महान पुर उदधि रूप । चलि सैन अैन सरिता सरूप ॥६३॥
भरि बीथिकान हयराज जाल । कज्जल पहार सम गज विसाल ॥
नेजे अनेक सँग वीर लीन । चमकंत बिज्जु जन बंध दीन ॥ ६४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलि भूप रूप सोभित अनेक । भय छत्र छाँह जोजन सुयेक ॥
दस सहस इक्क लष्षह सुसैन । कुद्दत अस्म सुभ्भहि न गैन ॥६५॥
परिपंच लष्ष प्यादाति संग । लिय लोह जंत्र करि सत्रु भंग ॥
सतपंच तीस कट्टनि विसाल । दस सहस बान सोभित कराल ॥६६॥
उडि आस पास सुभ्भत न भानु । दिष्षत अनंत सुर व्योम जानु ॥
चलि घोर फौज बज्जत निसान । गरजत गयंद धावत किक्यान ॥६७॥
चंदेल साज संग्राम लीन । बुल्लाय भूप सब बाँटि दीन ॥
भुवपाल भूप लिन्नव बुलाय । पूंछिय सुबत्त महिपाल राय ॥६८॥
करि सिवर सहर कढि महाराज । सब जुरहिं आय सैना-समाज ॥
उत्तरयौ राज सिव बाग आय । सब करहि भूप डेरा बनाय ॥६९॥
इहि भात कूच कर नृप प्रवीन । सब करहिं भाट गुन गन नवीन ॥
बहु बाग बाग सैना समाज । उत्तरे भूप परिमाल काज ॥७०॥

दोहा ।

सिवर कीन सिव बाग मह, सहर अन्त नर राज ।
बहु बागन बहु देस के, उतरे भूप समाज ॥७१॥
अग्गि तीन सत पील दै, बज्जत घोर निसान ।
तहलनषांसी मिल्लियौ, लाषनसी अगवान ॥७२॥
*ग्यारा सै चालीस भनि, मार्ग मास गुरुवार ।
प्रथीराज पर कोप करि, चल्यौ महोवे वार ॥७३॥
महुवै तै दल उच्चक्यो, बजत निसान गहीर ।
सब चँदेल भर मिल्लियौ, चँदनावल के तीर ॥७४॥
चँदनावलि दिन चार रहि, फेर कूच किय राज ।
जाय परे विरमै नदी, सब सावंथ समाज ॥७५॥
विरमै पर परमाल नृप, आयौ सब परिवार ।
येक महोवे सहर में, ब्रह्मा रह्यो कुमार ॥७६॥

---

*शुद्ध पाठ बारह सौ चालीस जान पड़ता है ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

खंड विस्सइक महल सुहायेा । तहाँ कुवर ब्रह्मा पधरायेा ॥
मध्य सुमानिक चौक उजागर । ता मध मदन ब्रह्म कव सागर ॥७७॥
पदिक माल दरवाजन सोभित । देषत सुर नर कौ मन लेाभित ॥
नव रतनन सब सदन जरायव । उतर देवपुर तै जनु आयव ॥७८॥
तहाँ सुरभ परजंक सुहाइय । चहुव भाग वनिता सुषदाइय ॥
तहाँ कुँवर ब्रह्मा पधराइव । चित्रित धाम चित्तु अति लाइव ॥७९॥
हास विलास करत मन भायव । जिहितै मेाद बढ़ै अति कायव ॥
सब निसि सुष्ष कीन अधिकारे । प्रान-बीर रस अंग सम्हारे ॥ ८० ॥

दोहा ।

संग ब्रह्मजित कै कढ़ी, सैना सहित उछाह ।
नगर महेाबौ सिंधु तैं, उलटे नदी प्रवाह ॥८१॥
ब्रह्मजित्त दल आइयव, सैना सहित समाज ।
तब बेाल्येा परिमाल नृप, लिषौ पिथौरा काज ॥८२॥
लिषी पिथौरा कारनै, सुन संभर के राव ।
एतवार एकादसी, करै जुद्ध कौ चाव ॥८३॥

चौपही ।

पत्री लिषि कासिद पठवायव । सिर धरि दिल्लीसुर ढिग आयव ॥
जुद्ध चाव चंदेलन किन्नव । यह परिमाल लिषौ कर दिन्नव ॥८४॥

दोहा ।

लिष्षौ बाँचि संधान किय, जुद्ध सुद्ध कव चाव ।
मानैं रावन उप्परह , कोप्यो रघुकुल राव ॥ ८५ ॥
आरावे अनेग ले , पंच सहज हयराज ॥
करि प्रनाम प्रभु सह चल्यौ , चाँवड घाटरू काज ॥ ८६ ॥
विरमैं तै दल धाइयव , संगरु भयो अपार ॥
मारि चंद चावँड दल , भये बैतबौ पार ॥८७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

उतरयो घाट चंदेल दल , चाहुवान बलवान ॥
दोय कोस अगमै लियो , बज्जे घोर निसान ॥८८॥
सुक्रवार नौमी निवटि , संभरि धीर नरिंद ॥
बोरन घर चंदेल की , भयो नगारो नंद ॥८९॥
घाट छिन्न चंदेल लिय , सुनिय बत्त चहुवान ।
सिलहपोस सावंत भय , बज्जे भीम निसान ॥ ९० ॥

छंद चावंतराज ।

किन्नौ निसानं महपानं विहसमानं सूरयं ।
मर्दन कराये अँग न्हाए पुन्य ठाये पूरयं ॥
उत सुनिय अपसर करिव स्वक्षर अंग मज्जन कीनयं
बहु फिरै हरषी बाल सुरषी नैन अंजन दीनयं ॥९१॥
गन सजिय भृंगी संभु संगी बजत जंगी ढोलयं ।
गंधर्व गानं भूरि तानं नचत अक्षर लोलयं ।
हरषी कपाली पुली तालं मुंडमाली पूरने ॥
चौसट्ठ अँगं वधि उछंगं पानि पत्रं नूरने ॥९२॥
पलचर सुधावै गीत गावै चित्त आवै मंगलं ॥
चहुवन चँदेलं षग्ग षेलं मिले मेल उदंगलं ॥
सुर चढ़ि विमानं दिष्षि यानं सूर मानं आहुरे ॥
दुहु कोध जोधं चित्त क्रोधं दिष्षि कायर बाहुरे ॥९३॥

चौपही ।

सावंत सूर बढ़यो जुध भारह । सार समाहे संभर बारह ।
इतै जु सुभट कवचअँग लीनै । उत अपछरा सिंगार सुकीनै ॥९४॥

दोहा ।

सूरन कवच बनाय तन, किन्नव मंगल चाव ॥
उत्ते अपछरा तन मलै , अंजन दीन सुभाव ॥९५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छंद भुजंगी ।

इतै सूर न्हाहै करै दान ध्यानं । उतै अपछरा अंग मज्जै सुतानं ॥
इतै टोप टंकार सिरकस उतंगं । उतै अप्छरी कंचुकी कस्सि अंगं ॥९६॥
इतै सूर मोजा बनावंत भाए । उतै अपसरा नूपुरं पहिर पाए ॥
इतै सूर रागं बधे ताइ तंगं । उतै अपसरा चरनियं पहिर जंगं ॥९७॥
इतै पाग पैचं समारंत सूरं । उतै सीसफूलं गुहावंत हूरं ॥
इतै सूरमा पाग पर झिलम डारै । उतै झुंड रंभं सु मांगै समारै ॥९८॥
इतै सूर सर्वं धरे षग्ग मंजैं । उतै अपसरा अंजनं नैन अंजैं ॥
इतै सूर जमदाढ़ कौ बाह दीनै । उतै अपसरा भाल मैं तिलक दीनै ॥९९॥
इतै ढाल सूरं अली बंध डारै । उतै अपसरा श्रवन ताटंक धारै ॥
इतै सूर दस्तान हस्तान कीयैं । उतै अपसरा हथ्थ महँदी सुदीयै ॥१००॥
इतै सूर कर केहरी नष्ष लीन्है । उतै अपसरा कंकनं पान कीन्है ॥
इतै सूर सक्ती लिपहै अन्यारी । उतै अपसरा हथ्थ वर माल धारी ॥१०१॥
इतै सूर तुलसीन की माल नाई । उतै अपसरा माल मौतिन बनाई ।
इतै सूर किरवान कम्मान नाई । उतै अपसरा चमक नैनं नचाई ॥१०२॥
इतै सूर बाजीन के तंग लीवै । उतै अपसरा साज विम्मान कीवै ॥
कही कविचंदं निरष्षी सुसोऊ । बरन्नै समानं परी सूर दोऊ ॥१०३॥

दोहा ।

परीं सूर बरनंत जुग, भूमि मध्य सुर पंथ ।
तिनके विक्रम चंद कवि, भनत रायसे ग्रंथ ॥१०४॥

चौपही ।

परीं सूर बरनत कवि दोऊ । उत परिमाल सजे दल सोऊ ॥
दोइ कोस कव अंतर किन्नव । दुहु दल आन पयानव दिन्नव ॥१०५॥

दोहा ।

नवमी तिथि सुकह दिवस, चढ़े सकल सजि सूर ॥
दोइ कोस अंतर परयौ, करि मुकाम बल पूर ॥१०६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय ।

प्रथीराज चहुवान सर्व सावंत बुलायव ॥
बैठि मंत्र महराज वचन नय बुल्लि सुनायव ॥
पूरब बैर विचारि कमध लष्षनसी आयव ॥
सैना अति समरथ्थ सहस पंचासक ल्यायव ॥
कयमास आदि सत सूर कहि अवर मंत्र नहिं मंडिए ॥
करवाल कड्ढि संमर सुधरि दल चंदेल सुषंडिए ॥१०७॥

चौपही ।

सुनत मंत्रतिथि जुत चहुवानह । ग्यारस तिथिनि जुद्ध ठहरानह ॥
बुद्धिराम दुजराज पठावहि । ते सुवैन चंदेल सुनावहि ॥१०८॥

दोहा ।

बुद्धिराम चंदेल सैं, कह्यौ बचन यह आय ॥
ऐतवार एकादसी, संगर होय बनाय ॥१०९॥

छप्पय ।

बुद्धिराम दुज चवहि सुनौ चंदेल महाबल ।
कहि पठाइ चहुवान जुद्ध बल करहु भूम तल ॥
घायल बिन अपराध हनै मन बुद्धि न आँसिय ।
वदत अवद्धि पुरान करी वध मंजर दासिय ॥
परिमाल इक्क आवहि निपटि इत मम इक्क पधारिहौ ।
असि कढ्ढुल रहि दोउ नृपति हार जित्त करि पारिहौ ॥११०॥

दोहा ।

जो हारौ परिमाल सौ, दिल्ली पैं तु लगाय ॥
जो जित्तौ चंदेल रन, महुवै लेव छिड़ाय ॥१११॥

चौपही ।

तब अल्हन बुल्लिय बर बानिय । बुद्धिराम दुज सुनि बुध वानिय ।
सत सावँत सह भुवपति आवहि । अससस्त्र तीक्षन चलवावहि ॥११२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विक्रम करहि जितौ मन भावहि । अप्प अप्प देवन कह ध्यावहि ।
इक पलक महं भूमि न डारहु । तौ मम बीरन नर्क निहारहु ॥११३॥

दोहा ।

ऊभ इक्क अल्हन सुइक, सत सावँत नृपराय ।
करै पलायन पलक महं, बदत सर्व वरदाय ॥११४॥

वाचनीक ।

तब बुद्धिराम ए बचन कहे कै महाँ कै हरौली कौ पनु कन्ह करयो है थाँ कै लष्षन सी सोई सार है यह बात कहि बुद्धिराम पधारे ।

दोहा ।

बुद्धराम के बचन सुनि, भूपति अति दुचताय ।
महीपाल कह आदि दै, मंत्री लए बुलाय ॥११५॥

छप्पय ।

करि मसलत परिमाल अल्ह उद्दल ढिग बुल्लिव ॥
अरु कायथ कलियान धर्मधर प्रोहित मिल्लिव ॥
बुल्लिव जगनक भाट बुल्लि लष्षन कम धुज्जह ॥
बुल्लिव तहलन षान बुल्लियौ भूपति कज्जह ॥
रानी सुबोल परदा रखिय देवे ढिग्ग बिचारियै ॥
परिमाल कहै सावँत हौं तत्त सुमत्त उचारियै ॥ ११६ ॥

चौपही ।

बुल्लिव भूप मधुर सुर बानिय । सावँत सूर कहौ तुम जानिय ॥
मिलि मंत्रीवर मंत्र विचारहु । राजनीति करि राज सम्हारहु ॥ ११७ ॥

दोहा ।

चाहुवान चढ़ि आइयव, परे अवनि दल भार ।
राजनीति मत चित्त धरि, मंत्री करहु बिचार ॥ ११८ ॥

गाहा ।

उच्चरि बयन कहै परिमालं । सावंत सूर सुनहु जनपालं ।
प्रथम चुक्क सो चित्त न धरयं । घायल हनत समुझ नहिं परयं ॥११९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

बचन सबै परिमाल सुनायव । चढ़ि चहुवान धरनि पर आयव ॥
सामादिक सबरे तुम जानहु । राजनीति मत प्रगट बषानहु ॥ १२० ॥
सुनि भूपत किय सरल जुबानं । कायथ सुबुध कहत कल्यानं ॥
अब जनि वृथा मानसी मोचहु । गत्त वत्त भूपति जन सोचहु ॥ १२१ ॥
सत्रसाल डौंगरसिय बुल्लिय । सकत सोमबंसी मत घुल्लिय ॥
चक्रपान बुल्लिय इमि बानिय । किज्जिय जुद्ध राज मन मानिय ॥ १२२ ॥
जगनिक भाट कहत मन सोइय । उपजै मरन भूप सुनि होइय ॥
तजि तन संक जुद्ध हठ किज्जिय । नृप परिमाल जगत जस लिज्जिय १२३॥
महियपाल भूपत इमि बुल्लिय । प्रवृति सुगुप्त हृदय किय घुल्लिय ॥
जो नृप सीख स्रवन सुन लिज्जिय । दिज्जिय दंड जुद्ध नहिं किज्जिय॥१२४॥
उद्दलि तमकि गुरज्ज करि लिज्जिय । हँसि परिमाल पानि गहि छिज्जिय ॥
बालक बृद्ध इक्क करि जानहुं । उद्दल उरह क्रोध कहँ आनहु ॥ २२५ ॥

दोहा ।

टैकि उठिव अति तमकि कहि, ब्रह्माजित्त कुमार ।
और मंत्र सब छंडि कर, किज्जिय जुद्ध विचार ॥ १२६ ॥

चौपही ।

सुन सब सूर कुँवर मुष बानिय । ब्रह्मजित्त कहि सो सब मानिय ॥
तहलन लष्षनसी उठि बुल्लिव । गूढ़ सुमंत्र हृदै कव घुल्लिव ॥ १२७ ॥
अफल मत्त भट अवर बषानहि । तत्त मत्त अल्हन सब जानहि ॥
रहि गाजर दिन्नव नृप देसह । हारे भूप सुभट नहि पेसह ॥ १२८ ॥
चारि सूर अल्हन गहि ल्यायव । निगढ़ बंधि कनवज्ज पठायव ॥
जयचंद मोद बहुत मन पायव । बन्नाफर विय निकट बुलायव ॥१२९॥

दोहा ।

चित्त मान जयचंद नृप, बगसे अस्व हजार ।
अल्हन उद्दल बंध किय, सूरन के सिरदार ॥ १३० ॥
जनपद दये करोर के, सामज बगसे बीस ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिवर आय जयचंद नृप, कहे अल्ह अवनीस ॥ १३१ ॥
लाषन ताल्हन बचन कहि, गए सिवर कह सोइ ।
भां पुंछत तौ मत्त यह, अल्हन कहै सो होइ ॥ १३२ ॥

चौपही ।

मल्हनदे देवल कहँ पुंछिय । प्रवृति सुगुप्त हृदे किय मुंचिय ॥
कहहु रानि मंत्राइन तुल्लिय । सुनत बीर माता यह बुल्लिय ॥ १३३ ॥

दोहा ।

महियपाल भुवपाल मत, राजा निस दिन रत्त ।
पहिल पुंछि रनवास सब, पीछै भाषहु बत्त ॥ १३४ ॥

चौपही ।

बचन कह्यौ परिमाल सुहायव । अल्हन उद्द सुनौ चितु लायव ॥
धन हमार अर्बुद नग नाइय । जौ चितु संधि देव सुष पाइय ॥ १३५ ॥
यह कुमत्त भुवपति मत धरी । हम पीछे तुम कहे न करी ॥
उद्दल कहत संधि नृप जानहु । बिना जुद्ध कैसहु नहिं मानहु ॥ १३६ ॥
आल्हन कहत कोप बर बानिय । प्रभु तुम पृथीराज भय मानिय ॥
चाहुबान दल बदल सुभायव । पवन बान पल मांझ उड़ायव ॥१३७॥

दोहा ।

अल्ह उद्द के बचन सुनि, भूपत सुष रस रत्त ।
महाबीर माता सुमति, कहत दिवलदे बत्त ॥ १३८ ॥

छंद पद्धरी ।

उच्चरि सुमत्त देवल सुबत्त । मल्हन सुरानि सुन हरित मत्त ॥
संग्राम पहिल अर्पित सरीर । तब जुद्ध बत्त भाषंत धीर ॥ १३९ ॥
संगर सुसूर नहिं विजय चाहि । अघ्घोर नर्क मँह परय जाहि ॥
पाहन सुधाम आयस किवार । डरहै जु भीरु भय लषि अपार ॥१४०॥
अब आयु पूर कब समय पाय । पल मझ्झ ढूँढ़ि जमराज षाय ॥
यह जानि मत्त रावन सुलीन । रघुनाथ नाथ सह समर कीन ॥१४१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह जान द्रोन भीषम सुराय। जिन आप मृत्यु दिन्निव बताय॥
दिय करन कवच अरु पंचबान। संगर सरीर दिय मुच्चि प्रान॥१४२॥
जिय कच्च भूप संगर न होय। सुर नाग भूप भर कहत लोय॥
अप्पंहि सरीर संगर बनाय। संग्राम ठाम तब भूप जाय॥ १४३॥
जुझ्झ हित जाय पुरहूत वेाक। जित्त हित भेाग किय मृत्युलेाक॥
इमि कहिय बत्त देवल सुमत्त। सब सूर लरन किय करहु बत्त॥ १४४॥

दोहा।

देवलदे बर बचन कहि, भूपति रानि सुनाय॥
रुचै सु अब मानस करहु, मेा मति अबर न आय॥ १४५॥

चौपही।

धन्य धन्य देवलदे रानिय। सब रनवास बदत इमि बानिय॥
दीन सुबुद्ध तुमहिं करतारह। तुम सुतीर मत होत सुसारह॥ १४६॥
मल्हन सह राजा कह बत्तह। थां देवल आल्हन की मत्तह॥
सुर बनिता छलि सौ गृह आइय। ह्वीतादिक सब कर्म कराइय॥ १४७॥
चंद बचन्न मिटै महि गाइय। तब तै भा मति भूर उडाइय॥
करहि राज अब ब्रह्म कुमारह। या सिर धरहु भूमि कर भारह॥ १४८॥
संधि वत्त दिय दर्ब गनाइय। करहु जुद्ध सर्वे मन आइय॥
चित्त आय सेाऊ ठहराइय। निकट सैन चहुवान सुआइय॥ १४९॥
आल्ह उद ढिग लीन बुलाइय। कहिय सुबत्त भूप अकुलाइय॥
जागत जुगल जाम अधिकाइय। अब हम सयन करहि चितु लाइय॥१५०॥
बुल्लिय भामा साहस बानं। राजन आल्हन मत्त सुपानं॥
देवै कारन ढिग बैठारे। पीछे लरन मत्त उच्चारे॥ १५१॥
राजा उठि भीतर कहँ आये। देवै ढिगा आल्ह बैसाये॥
रानी मल्हनदे ढिग बुल्लिय। पीछै बत्त मत्त किय घुल्लिय॥ १५२॥
तेज पिथौरा कौ अति कहियेा। तासेां जुद्ध कवन बिधि ठहियेा॥
हारै नगर महेाबा छुट्टै। दंड दये तै अपजस फुट्टै॥ १५३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर देवलदे बुल्लिय बानिय । सुनहु श्रवन राजा अरु रानिय ॥
नीकौ होय सो करहु बिचारहु । परिगह बुल्लि मतौ सब सारहु ॥१५४॥

दोहा ।

दुर्गा कव अवतार है , जानत जे बुधि जानि ।
स्वामि-धर्म हित सत्य सब , बदत देवलदे बानि ॥ १५५ ॥

चौपही ।

सुन यह आल्ह मात यह भष्विय । रामायन भारत किय सष्विय ॥
स्वामि साँकरै छंडन कहै । चंद सूर जौ लौ नक सहै ॥ १५६ ॥
आपन स्वामि साँकरै छंडै । आपु रन जाय फेर घर मंडै ॥
पवन नीर जौलौं नृपराइय । ताकी साष व्यास धरवाइय ॥ १५७ ॥
षाय घाय पर लोन निहोरै । आपन अंग जूझतै टोरै ॥
जासौं जाती जार सु कहियै । असल बीज रजपूत न लहियै ॥ १५८ ॥
षाहि दुराषै आपु न मरै । छत्रीधर्म सीस पर धरै ॥
माया धर की दूरी षेदै । वे रन सूरज मंडल भेदै ॥ १५९ ॥
मोहि आस राजा की भावै । बेटन की कछु दया न आवै ॥
वे जीवत छत्री कहि नारिय । पार्वती कौ अंस बिचारिय ॥ १६० ॥
बुल्लिव अल्ह सुनौ हो माता । कलजुग माझ रषौ विधवाता ॥
साहरीक की फौजें मारौं । साँवत अहड विहड करि डारौं ॥ १६१ ॥
भां कुल काज चढाउव पानिय । भुव मंडल सबही जसु जानिय ॥
ईंदल की रषवारी कहियै । देवलदे की लाज निवहियै ॥१६२॥
मल्हनदे बुल्लिय इम बानिय । आल्ह सुनहु तुम हमरी बानिय ॥
सांवत सूर विषम अति सुनियै । राषौ देस दंड दै गुनियै ॥ १६३ ॥
उदल तमक बैन सुनि कही । पहिलै ऐसी काहे न लही ॥
षायल मारत मैं वरजानै । अब क्यों माता भूप सयानै ॥ १६४ ॥

दोहा ।

पंच वार बिनती करी , मानी नहीं लगार ।
अब क्यौं भूपति समझियै , लषि सावंतनि भार ॥ १६५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम ऊभै निरषै नहीं , तुमरी बुरी नरेस ।
काम आव तन छुट्टिहै , नगर महोबा देश ॥ १६६ ॥
अब राजा मत जुद्ध कव , हमरै हृदय निदान ॥
छत्रिधर्म कैसे रहै , ऊभे तोप निसान ॥ १६७ ॥
तुम आगे परिमाल नृप , मरै सु दोनों भाय ।
आज बरै स्वर अप्सरिय , राज रहै कै जाय ॥ १६८ ॥
होनहार को मिट्टिहै , कहै दिवलदे सुद्ध ।
लौन भूप चंदेल कौ , पूत उबालौ सुद्ध ॥ १६९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२२) रानी कालिंजर गमन खंड ।

दोहा ।

मसलत करि बाहिर कढे , उदल अल्ह नरेस ।
उत रैयत पुकारियव , चौडा दाह्यो देस ॥ १ ॥
जारे गाँउ उजार सब , लुट्टिय रिद्धि अचेत ।
दौरहु लरौ चँदेल तुम , थोरे जोरे षेत ॥ २ ॥
उठे अल्ह बरजे नृपत , आजु सनीचर वार ।
काल करहु चहुवान सह, दीरघ जुद्ध विचार ॥ ३ ॥
तमकि उठिव अल्हन अनुज , असि सप्पर करधार ।
गही बाँह परिमाल नृप , सभा मद्धि बैठार ॥ ४ ॥
नृपति बनाफर रुक्कियौ , तुंडकि ज्यौं अहि धार ।
स्वामि धर्म हित क्रोधमय , अल्हन बचन उचारि ॥ ५ ॥
जा धरती कौ षाइ कर , निंद्रा करै जु कोय ।
कहै आल्ह परमाल सों , छत्रिय धर्म न होय ॥ ६ ॥
जा धरती कौ खाइ कर , धुँवा जुदिष्षै कोय ।
कहै अल्ह चंदेल सुनि , बड़े नर्क घर सोय ॥ ७ ॥
स्वामि लरै रन माँझ अरु , सेवक दिष्ष पराय ।
असी सहस संवत सर , रौरव नर्क पराय ॥ ८ ॥
ष्वाहिद कौ छत आवही , सेवकु बिन छत होय ।
जन्म जन्म तिहि नरन कह , नर्क भयानक होय ॥ ९ ॥
ष्वाहिद की देषै लटो , अंग रषावन सूर ।
कहै अल्ह रजपुत्त कौ , दिज्जै नर्क करूर ॥ १० ॥
ष्वाहिद कौ घर तकि कै , इंद्री रसनि कराय ।
कहै आल्ह तिनि नरन कह , गहिरै नर्क पराय ॥ ११ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिगरी देषै नृपति की , चाकर कसक न होय ।
साठ सहस लौ नर्क मँह , भ्रमतु रहतु नर सोय ॥ १२ ॥
चेरी सों हाँसी करै , प्यार धनी की सुद्ध ।
कहै आल्ह तिनि नरन कह , कीजे स्वान प्रसिद्ध ॥ १३ ॥

चौपही ।

येती मैं बानिय उच्चारिय । अब लगि मैं या सबै सम्हारिय ॥
काल जुद्ध पीथिल कौ षंडौ । सावंतन के जुथ्थ विहंडौ ॥ १४ ॥

दोहा ।

अल्ह कही सबही सुनिय , पन की मन किय बात ।
सूरज मंडिल भेद कै , तै छत्री साछात ॥ १५ ॥
राजन आगे पैज कर , कही बनाफर सोय ।
प्रात करै प्रथिराज सौं , जंग विरुद्ध न होय ॥ १६ ॥
सुनत वचन नृप अल्ह के , चढ्यो वदन पर नूर ।
प्रात प्रात परिमाल कहि , करौ जुद्ध सब सूर ॥ १७ ॥
सबकौ यह नृप सीष दै , गैर महल फिर होय ।
रानी सौ मसहलत करि , मन धरि चिन्ता सोय ॥ १८ ॥

चौपही ।

बुल्लि चँदेल सुनौ हो रानिय । अब तौ दिवस पाछिले मानिय ॥
आय चढ्यौ चहुवान अषारै । करता बिन कोऊ न उवारै ॥ १९ ॥
रानी कहै सुनौ नृपराजह । करिय सैन सो ऐन समाजह ॥
प्रात जुद्ध मंडै अदभुत्तं । मिलिहै आय दुहू दल दुत्तं ॥ २० ॥

दोहा ।

संबोधन रानी करिव , राजा कौ निरधार ।
अल्हन सह संगर जुरै , अंतक आवै हारि ॥ २१ ॥

चौपही ।

अल्हन गये सिवर निजु आपन । उदल ईदल मिले सुजातन ॥
भोजन करे इकटठे होइय । चवथै मिल्यौ नरिंद्र सुसोइय ॥ २२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भोजन करकै पौढ़े जाइय । अपनी अपनी त्रिया बुलाइय ॥
तैर महल कंद्रप जु घुल्लै । अधरा रस इंघ्रत जिमि फुल्लै ॥ २३ ॥
अरस परस रस आरस लीनौ । इहि विधि उद्दल रँग रस भीनौ ॥
अर्धनिसा लग प्रेम बढायव । पाछे भेष वीर रस ल्यायव ॥ २४ ॥

छप्पय ।

पहर निसा पाछिलिय न्हान कर नीर मँगायव ।
करि दातौन अस्नान ध्यान गोरष कव ध्यायव ॥
करै बनाफर होम नवग्रह पुजन किन्नव ।
हनुव पताका जंत्र धारि करि कंठह लिन्नव ॥
आयौ तुरंग तेही समय समर मद्धि तौपर चढव ॥
प्रथीराज पासलै पहुंचिये सूरन पर घायन बढव ॥ २५ ॥
उद्दल बीर बुलाय बोल इंदल सुत लिन्नव ॥
देवल आगे आय चाय परनाम सु किन्नव ॥
पिथौरा उप्परह पैज करिकै चढि जावनहु ॥
सावंतनि साकरै स्वामि छल मार दहावहु ॥
उज्जल जस जसराज करि मां देवल उज्जल करहु ॥
अरि षंड भूमि परिमाल के ईसहार मुंडह धरहु ॥ २६ ॥

चौपही ।

यह सुनि उद्दल बचन उचारिय । भाई तुम नीकी जु बिचारिय ॥
सावंतन संग षग्गनि षेलहु । प्रथीराज भर थट्टन पेलहु ॥ २७ ॥
देवल कहै सुनौ सुत दोइय । लौन हलाल करौ तुम सोइय ॥
षाहिद आगैं सीस जु दिज्जै । निर्भय राज स्वर्ग कव किज्जै ॥ २८ ॥
ठकुराइन उद्दल किय बुल्लिय । सुनियौ सासु बचन बर घुल्लिय ॥
लिहचै वेद नर्क ता भाषै । पिय के मरत त्रिया तनु राखै ॥ २९ ॥

दोहा ।

पिय के मरत त्रिया रहै, करै पुत्र किय आस ।
ते रानिय निहचै करै, महा नर्क महं बास ॥ ३० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पिया सु रन मर तहं मरै , रानी सती न होय ।
अगति जाय भटकत फिरै , कहत रुद्र तिय सोय ॥ ३१ ॥
पिय भागै तिस अदरै , सौंपै सकल सरीर ।
वह रजपुत्तिन कुक्किरि , सुमृतन कही गहीर ॥ ३२ ॥
पतिब्रता के धर्म सब , उद्दल त्रिया उचारि ।
सासु अग्ग तेहू बचन , कहे अल्ह किय नारि ॥ ३३ ॥
बधू पुत्र के अग्ग कहि , देवल वचन सुसार ।
जो कहि कै जसरथ मरे , सो तुम सुनहु कुमार ॥ ३४ ॥
इक दिवस उठि प्रातही , मोह बुल्लि अप तीर ।
भरि वाफक नैना जुगुल , स्वप्न सुनावत धीर ॥ ३५ ॥

चौपही ।

मोहि स्वप्न भय अकथ कहानी । श्रुत दै सुनहु दिवलदे रानी ॥
मृगया काज गयव बन माही । फुल्ले बन किंसुक बहु धाही ॥ ३६ ॥
तिन तर कल परजंक बिछाइय । बैठिव म्हां तापर सुष पाइय ॥
तहां नाव जुग तेल लगावहि । गीत बनित बनिता गत गावहि ॥३७॥
पहिर लाल रंग बसन सुनारिय । मुहुर मुहुर भैटत हितकारिय ॥
ऐसव स्वप्न होय जिहि प्रानिय । वर्ष अर्ध मह मृत्यु बषानिय ॥ ३८ ॥
बनिता सुनहु सिषावन मेरा । मैं सुभ चाहत हौं सब तेरा ।
देवलदे लघु बालक दोऊ । ये तुम तरुन पालियव सोऊ ॥३९॥
सुत सुलक्षनै जब असि बांधै । स्वामि धर्म धारै जब कांधै ॥
जब ये राजनीत मत जानै । निहचै सत्र मित्र पहिचानै ॥४०॥
तब सुचिन्त देवल तुम हूजौ । इनतै सुभट न जान्यो दूजौ ॥
माहिल भूपत परिगह सोइय । हम सह बैर करै सब कोइय ॥ ४१ ॥
राजा निकर मुसाहिब देइय । अनके चलन चलै सब कोइय ॥
यह जसराज सिषावन दिन्नव । अपनौ गवन गढ़ा कह किन्नव ॥४२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

सपथ खाइ जिनि बन्हि जरि , सुत पालौ रनधोर ।
यह कहिकै परिमाल हित , संगर तजौ सरीर ॥ ४३ ॥
अल्हन उद्दल बंध बर , परे मातु के पांय ।
रानी मल्हन संग ही , बिदा करी सुष पाय ॥ ४४ ॥
उद्द अल्ह तिय ईंदलहि , देवल सहित समाज ।
माल्हन महरानी सहित , चलौ कलिंजर काज ॥ ४५ ॥
रानी मल्हन देवलदे , कालिंजर पथ जात ।
नभ लाली जामिन गई , भयौ आइ पर प्रात ॥ ४६ ॥
इक सहस रानीन सँग , सैना दइय पठाय ।
बुलि सुभट संगर करहु , यह आयस किय राय ॥४७॥
जग्य भूप परिमाल दे , अल्हन निकट बुलाय ।
बंटि देहु बिलहन्नं सब ,सजै सैन चितु लाय ॥ ४८ ॥

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२३) परिमाल पलायन खंड ।

चौपही ।

राजा जग्गिन गारोव किन्नव । आल्हन काजै आयस दिन्नव ॥
हय गजराज सूर सजवावहु । तुरत तोम बाजे बजवावहु ॥१॥

दोहा ।

राजा कव यह वचन सुनि, बुल्लिव आल्ह प्रवीन ।
बजै दुंदभी आदि सब, साजहु सूर नवीन ॥२॥

चौपही ।

सिंहनाद बाजी सहनाइय । बजत नफीरी भूरि सुहाइय ॥
जंगी बजत जंग मन मोहत । भेरिन नाद भयानक सोहत ॥३॥
तुरही तुतकारिनि धुनि छाइय । महुवर अरु सुरराज सुहाइय ॥
नागफनी नादनि अधिकारिय । तंत्री बजति अपार सुराइय ॥४॥
सिंधु तवल गन तूरन बाजत । तारी तार सुषिर रव राजत ॥
बजत मृदंग धुनि मुनि सुषदाइय । बहु आनंद को बरन सुनाइय ॥५॥
चढ़े विमान सु मुनि सब हर्षत । परिय पुंज सुमन सब वर्षत ॥
प्रमुदित भूत भूतपति नाचत । बहु आगम शंकर के वाचत ॥६॥
इत भुव माँझ सूर सुष पाइय । बनी पाषरै हेवर पाइय ॥
तंतरीष धर करषा गावत । मारू राग जो सबहि सुनावत ॥७॥

दोहा ।

धावत फिरत नकीबगन , बुल्लत वचन अपार ॥
हुकुम भूप परिमाल कव , सबै होहु असवार ॥८॥
उद्द आल्ह बुल्लाइयव , लाषन सी चंदेल ॥
तहलनषां कह अग्ग दै , करौ षग्ग रनषेल ॥९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छंद पद्धरी ।

बुलाय आल्ह उद्दल सुराज । किन्नव नगार बहु बम्म साज ॥
साजौ सुसाज अन्नेग जोध । विलहंन राज बाटंत सोध ॥१०॥
बुल्लाय आल्ह नृप अग्ग लीन । विलहन्न बंटि यह हुकुम कीन ॥
अरिदण्ड दीन आलहन्न काज । मानिक हीर पन्नानि साज ॥११॥
दल ठेल तुरिय आरच्चि ऊच । समप्यौ सुराज उद्दलि समूच ॥
हरि इंद काज हरि बाज दीन । षंदार देस उपज्यौ नवीन ॥१२॥
सत्रसाल कज्ज दिय दल सिँगार । सकतैस वीर लिय अरि प्रहार ॥
इँगरसी सूर दिय समर राय । नर हरिय गोड दिय पवन भाय ॥१३॥
ईस्वरह दास लोधी भुवाल । तिन कज्ज दीन आरवि विसाल ॥
बक्रपान काज नृप बाज दीन । हजार तीस कह भूप लीन ॥१४॥
भुवपाल बुल्लि सूरह सुराज । इक लष्ष सीन बगसे सुबाज ॥
सीहा सु सूर लिन्नव बुलाय । मुसक्याइ दीन मुसकी सुराय ॥१५॥
लाला सुबीर सैगर अमान । दिन्नव सु अस्व संगर गुमान ॥
दिवकरन काज दिय राज दीन । उपहार मभ्भ भुवपाल लीन ॥१६॥
मन पवन चाल चल अस्वराय । दिय बनिक भार मलकह मगाय ॥
कायथ कल्यान बगसी सुजान । दिय अस्व तीज केहर समान ॥१७॥
गोइंद काज दिय मृग्गराज । प्राकार देश ठंढी समाज ॥
गोदल सुदीन नवलेस सोय । उपज्यो कक्षवर सुभट लोय ॥१८॥
हंसी जुदीन सुरजन्न काज । मालवी उच्च नृप लीन बाज ॥
माहिल्ल काज मनपवन दीन । हजार साठ कह भूप लीन ॥१९॥
नारैन काज दिय तेज रूप । अयराक जाति नृप लियव भूप ॥
जगनिक बुल्लि दिय मन उमंग । जलहन्न काज दिय सेर जंग ॥२०॥
सावंत सूर सब सोध राय । बगसे सुबाज बहु मोल लाय ॥
मंदुर तुरीय तेरह हजार । दीनै सुबंटि करि करि विचार ॥२१॥
हजार साठ परमाल सेन । सज्जौ सुसाज चंदेल तैन ।
पच्चास सहस पंगुर सुदीन । चंदेल काज परनाम कीन ॥२२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पचास पंचधरि पील अग्ग । गाजंत मध्य चालै सुरंग ॥
बैठिव सुपीठि हय अल्ह सोय । परिमाल राज उच्चरि सुलोय ॥२३॥
सत सप्त पील चढ़ जसानन्द । संमुह चलाइ जुरि करहु दंद ॥
अल्हन नरेस कहि सुन चँदेल । हेवर चलाइ दल सत्र ठेल ॥२४॥
भोपति महिल्ल कहि सुनिय राज । आसरै अल्ह चढ़ि रहिव बाज ॥
बैठंत पील पच शब्द पूर । पहिरै सुभीरता सीस सूर ॥२५॥
गज बैठ जुद्ध बहु सूर संग । यह जान अल्ह चढ़ढ्यौ तुरंग ॥
सुन्दर सरीर दर्प्पन लषाय । संग्राम भूमि कंपै न जाय ॥ २६ ॥
गजराज बैठि षग्गन खपाउ । हायराज पिंठ संगर पराउ ॥
उद्दल कुमार सुन कसालीन । गहि बंधु धाइ अल्हन प्रवीन ॥ २७ ॥
समझाय बंधु कह भूमियेव । भिट्टै न कोट कीन्हें सुभेव ॥
मुसक्याइ अल्ह गैयर मँगाय । गहि चरन सीस उप्पर चढ़ाय ॥ २८ ॥
बहु नगिन जटित गैयर मँगाय । तापिष्टि अल्ह सोभित सुजाय ॥
नग जटित वास तन कर अमान । जनु जमुन तात उप्परि सुभान ॥२९॥
करि विनय अल्ह सुनु करिय राय । संग्राम पक्ष चालौ न पाय ॥
संग्राम ऊभ धारौ जु पाय । जमलोक घोर नर्कन पराउ ॥३०॥
मुंदे सुअक्ष गजवत्तु बैन । अमृत सुकंत अवतार ऐन ॥
माते मतंग महिमै गिराहु । भट पटकि अंत चहुवान जाहु ॥३१॥
सुन बचन अल्ह आनंद कीन । लषि सूर बुल्लि बानी प्रवीन ॥
गजराज बैठि सावंत राय । बर बचन सर्व जोधन सुनाय ॥ ३२ ॥
असि मथ्थ हथ्थ धरि दुर्ग लष्षि । संग्राम छेत्र नहि झूठि भष्षि ॥
चंदेल भक्ति हिय मै न होहि । करतार मुक्ति दीजे न मोहि ॥ ३३ ॥
जगनिक्क कोपि जल्हन सुवात । डोलंत सीस कोपंत गात ॥
पडिहार भ्रष्ट बुल्लय कुबात । दिगपाल दीह दिग्गज परात ॥३४॥
संग्राम मुक्ति अल्हन न जाय । जल्हन सुबैन उर लग्गि बाय ॥
पडिहार कुप्पि बुल्यौ जुबान । जल्हन सुधाय लिय सेल्हवान ॥३५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जगनिक्क रुक्कि पुत्रहि समर्थ । किहि हेत कोप तुम करहु व्यर्थ ॥
समयो विचार कहिये जुबत्त । यह कहिय वेद वर पूर बत्त ॥३६॥

दोहा ।

असिय सत्तवर साल के, भूपति भूप सुजान ।
सत्तरि इक्क सरद्द के, महियपाल बलवान ॥३७॥

षष्टि सत्त सूहरि नृपति, अब लगि भयो न बोध ।
जल्हन बालक तासु पर, क्यों धारत उर क्रोध ॥३८॥

इतिय बत्त जगनिक्क कहि, कियव कोप उर ऐन ॥
सुनि धायो परिमाल नृप, लषे सुरत्ते नैन ॥ ३९ ॥

छदं पद्धरी ।

बिच परयौ भूप परिमाल राय । परिगह सुजंग लिन्नव बचाय ॥
आपुस विरुद्ध विरच्यौ अमान । चर कहिय जाय चहुवान कान ॥४०॥
यह सुनिय सूर चहुवान बात । बजाय बंम संमुह चलात ॥
मुष अग्ग कीन्ह पुंडीर चंद । विहस्यौ सुवीर सुनि कान दंद ॥४१॥
चतुरंग सैन किय चाहुवान । किन्नव हरौल बलवान कान ॥
बलवान वीर बहु संग दीन । तिन सिलह धार किरवान लीन ॥४२॥
सावंत सूर सब काल रूप । तिन मध्य कीन चहुवान भूप ॥
चाले सुसूर संमुह रिगाय । जनु जलद भीम भादौं सुआय ॥४३॥
देवा अराधि यह बत्तनु भष्षि । अल्हन सुवीर सह रूप रष्षि ॥
सब नयन मभ्झ रष्यौ सुवीर । पहुँचै न अल्ह चहुवान तीर ॥४४॥
सब सिलहपोस बद्दल समान । दुहु दल सुवीर बज्जत निसान ॥
उठि धूम भीम छुट्टत कमान । हर हर सुसब्द फरहर निसान ॥४५॥
सुर सिद्ध बुद्ध सुरपति सुज्ञान । अवलोकि वीर मति चिन्तमान ॥
दिषंत फौज चंदेल राव । कापंत काय डगमगत पांव ॥४६॥
दृग मुंदि काँपि आल्हन बुलाय । कालिंज्र मेलि नृप मोहि जाय ॥
दिज्जै सुदंड पृथीराज काज । छंडिय सुराज सम्मर समाज ॥४७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुभ सुता देहु अध देस छंडि । चहुवान संगि संपर न मंडि ॥
इमि कहत अल्ह सह बचन सोय । चहुवान संग भट अधिक जोय ॥४८॥

चौपही ।

कँपि कह्यो परिमाल नरेसह । अल्हन अद्धव दिज्जिय देसह ॥
कोट पचास द्रव्य अरु कन्या । दै चहुवान मिलायसु मन्या ॥४९॥

दोहा ।

दिष्षि कन्ह परिमाल नृप, बचन कहे जिमि अंध ॥
मोहि कलिजंर मेलिए, दै धर अद्ध सवंध ॥५०॥
सेस नाग अवनी तजै, अगिन सूर सिय राम ॥
अल्ह जियत परिमाल नृप, तौ नहिं दंड भराम ॥५१॥

छप्पय ।

अगिन सूर सिय राम तजहि गिरजा गिरीस वर ॥
उदधि अंबु घटि जाहि वेद नहि चवहिं अष्ट कर ॥
कदलि फरहि विय वार झुट्ट जमपतिसुत बुल्लहि ॥
परहि भूम गिरि भार सीस धरनी धर डुल्लहि ॥
सुम्मेर डगहि लोकन सहित दिसनि छंडि दिग्गज टरहि ॥
चंदेल सुनहु चहुवान सह तौ न संधि अल्हन करहि ॥५२॥

दोहा ।

हम पिच्छै करु अप्फ तै, सुनि परमाल भुवाल ॥
उद्दल कहि चहुवान सों, करहु षग्ग रन ष्याल ॥५३॥
करभ कट्टि लष्षन कहिय, सुनहु अल्ह बलवान ॥
कायर नृप क्यों ल्याइया, असुभ कीन घमसान ॥५४॥

चौपही ।

अल्हन सह लष्षनसिय बुल्लिव । सुनि जसराज सुवन मत पुल्लिव ।
बंधि भूप गज पर बैठारहु । पीछै लरन मत्त उच्चारहु ॥ ५५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तहलनसिय बुल्लिय इमि वानिय । श्रुति दै सुनहु अल्ह चित आनिय
भूपति बिनु संगर इमि साजत । अहन मध्य ज्यों चंद विराजत ॥५६॥

जगनिकउवाच ।

भुवपति भीरु भयव उर आनहु । लष्षनसिय उद्दल तुम जानहु ॥
आल्हन अवर गत्त नहिं किज्जिय । छिप्र सीष सुष पाय सुदिज्जिय ॥५७॥
उद्दल वीर वत्त इमि कही । जगनिक भट्ट मान मत सही ॥
दूजै चँदेल भीर अति आइय । देव महोत्सव नगर पठाइय ॥५८॥
आल्हन विहंसि कहत इमि वानिय । बदत भीर तुम हम सब जानिय ॥
इनके सुकृत सुजस हम पाये । सदा जुद्ध हम भट करि आये ॥५९॥

दोहा ।

चरन परसि कर जोर जुग, फिर फिर सीस नवाय ॥
आल्ह भूप चंदेल की, बिदा कीन्ह सुष पाय ॥६०॥
हम सावँत सब आप हित, करै जुद्ध कब चाव ॥
ब्रह्मजित्त कह संग लै, आपु कलिंजर जाउ ॥६१॥
तुम मातुल प्रिय नृपति के, कहिय आपु सिर नाय ॥
माहिल भूपति सूहरिहि, संगहि दीन पठाय ॥६२॥
सब सावंतनि मत्त किय, किज्जय जुद्ध विलास ॥
म्यूर ब्यूह सैना सजहु, अल्हन भूप कराल ॥६३॥

छप्पय ।

चक्रपानि भय पक्ष नेत्र सकतेस सुलिन्नव ।
उद्दल तहलन पंज श्रोष्टि लष्षनसिय किन्नव ॥
पिक्ष सूर सत्रसाल जानु जगनिक्क भट्ट भय ॥
उरु मंत्रि मकरंद पिंडुरी दलपत्ति वैस मय ।
पिंडी कुमार ब्रह्मा भयव दट्ट बनाफर चर सचिव ।
सनमुष्य सूर संग्राम कह म्यूर ब्यूह अल्हन रचिव ॥६४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही।

उद्दल सह अल्हसिय बुल्लिव। तत्त सुमत्त प्रगट हौ पुल्लिव।
हित चंदेल भारथ धरि काधहु। ह्यौ चंदेल सेना तुम साधहु ॥६५॥
चाहुवान जोधा बलवानह। जिनके अग्ग देव वर दानह॥
लष्ष लष्ष कह इक्क चलावहि। गज्जनपत संगर गहि धावहि ॥६६॥
लष्षन पनु किन्नव अगिवानह। सेा विनया करि मिंट सुजानह॥
म्हा कह करौ हरौल सुभाइय। पलक माझ पर पुंज पलाइय ॥६७॥
जेा यह मत्त चित्त तुब आयव। स्यौ चहुवान विजै भुव पायव।
तुम आगै लष्षन सिय किज्जिय। जुगल बीच ब्रह्याजित दिज्जिय ॥६८॥
म्हां हरौल संगर हौ पाउव। पवन वान चहुवान उड़ाउव॥
जौ सुरपति सजि सैन विसालह। म्हाँ सह भूमि गहै करवालह ॥६९॥
करहु पलायन ज्यौं षग वाजह। प्रथियराज मानव कव राजह॥
अल्हन सह उद्दल कहि जब्बह। भाई म्हा लघु लेागन दब्बह ॥ ७०॥
हम जीवत तुम होहु हरौलह। नृप जुझ्झत धृकु जियै चंदोलह॥
यह कहि उद्दल उठे जु मद्दह। कियौ निसानन गारिन नद्दह॥ ७१॥

दोहा।

लाषनसिय इमि बुल्लियव, सुनहु बनाफर वीर।
हम हरौल आगे भये, सुर तरिंगिनी तीर ॥७२॥
मध्य कुंवर ब्रह्मा करिव, चौदल अल्हन राव।
हरवल कह जेा धनि करिव, लाषन कौ ठहराव ॥ ७३॥
चक्रपानि सकतेस धर, डौगरसी सत्रसाल।
जगनक जल्हन आदि दै, नरहरि गेाड कराल ॥७४॥
केसव वर दलसिंह कहि, अरु कायथ कलियान।
सीहा भनयज करमचँद, अहनि मध्य जनु भान ॥७५॥
ये सावंत चंदेल के, विरचतु गूढ़ अपार।
रज रष्षन परिमाल किय, आल्ह उद्द सरदार ॥७६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही ।

अष्ट सूर लाषन के संगह । बहु बलवान मुरत नहि जंगह ॥
यह कहि प्रथियराज बलदाइय । सब सावंतन बोल सुनाइय ॥७७॥

छप्पय ।

बोल कन्ह चहुवान बोल सलषन कुमार वर ॥
बोल चंद पुंडीर बोल तौमर पहार भर ॥
बोल दाहिमा कयमास राव चांवड दिग बुल्लिय ।
आतताय पज्जून राय संजम मत तुल्लिय ॥
हरिसिहं देव पल्हन सुभट बुल्लि सुकवि गुर लिज्जिये ॥
सुमत्त करहु चहुवान कहि जिहि चंदेल सुजित्तिये ॥७८॥

दोहा ।

सब सांवतनि मत्त किय, दिय पृथिराज सुनाय ॥
इक्क सथ्थ सब जुध किय, गृद्ध व्यूह ठहराय ॥७९॥

छप्पय ।

हर सिंघह किय पत्र चरन तौमर पहार कर ।
जान वीर चामुंड चंच चहुवान कन्ह वर ॥
जंघ नन्ह परिहार ग्रीव कयमास राय कहि ।
पुंछि चंद पुंडीर रसन पज्जून राय सहि ॥
पिंडी सलष पवार सुवाजैत सिंह सिर छत्र दिय ॥
चंदेल सूर संमुह लरन अद्ध व्यूह चहुवान किय ॥८०॥

दोहा ।

जगनिक धाँधू राय की , वरनी वरनत लोय ।
सोहा इत जयपाल की , करनी बरनी होय ॥८१॥
तहलन चावड राय किय , भैाह बुलाषी षान ।
डौगरसिय विझराजसिय , बरनी बरन अमान ॥ ८२ ॥
गहिरवार पुंडीर किय , संजम सकत नरेस
चक्रपान वरसिंह किय , बरनी वरन सुदेस ॥ ८३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देवकरन सकतेस जुर , लालाहित नरपाल ।
दला उतै गहलौत भर , इत पीपा जिम काल ॥ ८४ ॥
निड्ढूर की बरनी लषन , उद्द कन्ह बलवान ।
ब्रह्मजित्त प्रथिराज किय , बरनी बरन सुजान ॥८५॥
क्रमसह बरनी सब कही , बरनन बाढ़त ग्रन्थ ।
तातै धुव वर चंद कवि , लियौ जुद्ध कव पंथ ॥ ८६ ॥
आलह बरनि राजा सहित , सांवत करत उपाव ।
डुली डुली मेधा फिरै , ज्यों करिया बिन नाव ॥८७॥
मानव अत्र प्रवीन सब , सावँत मंडहि रार ।
दिव्य अत्र जानै सबै , देहि भूम तल डार ॥ ८८ ॥
इक बयन प्रथिराज सह , तव षुल्यौ वरदाय ।
अत्तताइ इक जुद्ध कह , फिर भुव वीर न आय ॥ ८९ ॥
सुनहु भूप गुरराम कहि , दयौ संभु वरदान ।
सुर नर सौ समता करै , जहा लरै घमसान ॥९०॥

चौपही ।

चंदराम गुर की सुन बानिय । सत्त वत्त नृप और न जानिय ॥
अब यह भयव जुद्ध विस्तारह । लिखिय सुबत्त करम करतारह ॥ ९१ ॥

दोहा ।

चावँड आदि दै सूर सब , किये कन्ह अगिवान ।
बजे सर्व आनंद बज , चढ़यौ जुद्ध चहुवान ॥९२॥
चंदराम गुर मंत्र पढ़ि , कियौ भूप बलदाय ।
अप्पन अप्पन देव जपि , संभुहि चले रिगाय ॥९३॥
पवन-सुवन इकै जपै , इकै दुर्गा माय ।
चाहुवान हरि हरि जपै , पीछै परै न पाँव ॥९४॥
महियपाल भुपाल लै , दलतै कढ़यौ चँदेल ।
पिली फौज प्रथिराज किय , भिली बनाफर मेल ॥ ९५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भयव भीर तजि धीरता , सुन पग्गन के पेल ।
चाहुवान दल ह्वौ रही , भग्यौ भग्यौ चंदेल ॥९६॥
भग्यौ नृपति परिमाल दै , सुनिय बत्त चहुवान ।
बंधि लेहु सावँत सहित , चावँड राय अमान ॥९७॥
कर जोरे कयमास कहि , सुनहु बैन नृपराय ।
अल्हन ऊभ्यौ उदधि सम , बुड्ड वीर गन जाय ॥९८॥
जंबू नद कौ कवच तन , पति सावदि चढ़ि बीर ॥
ज्वाला सम आल्हा लसै , भेला करत न ढीर ॥ ९९ ॥
राजा चल्यौ पराइ कै , पसर कीन चहुवान ॥
एक अल्ह सावंतपति , मर्दे घनै गुमान ॥१००॥
सूर सघन चंदेल के , दरिया सम दल घोर ॥
चहुव भाग सावंत करि , तब रिपु राजहि रोर ॥ १०१ ॥

छंद तोटक ।

दिषि राजन फौज चँदेल पिली । दरियाउ समान अमान झिली ॥
पिलि पाल सुपब्बय पुंज गनं । सित दंत दियै बगपंत मनं ॥१०२॥
बहु वाह कपै दस पंत भली । जनु टड्डिय छत्र प्रवाह चली ॥
कवि चंद गुरू अहिमाल लयं । पढ़ि मंत्र सुरक्षन भूप अयं ॥१०३॥
जिहि सथ्थ सुसाठ सहस्स दलं । हनि कावित्र षट्ट सुलाष पलं ॥
यह बैन सुसूर सबै कहियं । अब कै कछु पक्कर सालि हियं ॥१०४॥
यह लष्ष विलोकत सैन घनी । चहुवान बनाइय पंच अनी ॥
वर अग्गि सुभूपति सुर कियं । तिनके वरदाई नाम लियं ॥ १०५ ॥
मुख अग्ग सुकन्ह अमान कियं । भर चंद पुँडीर सुसंग दियं ॥
कमधुज्ज सुनिड्डुरि लाषनयं । अति दीरघ बाह महा बलयं ॥१०६॥
दरियंन कि जाकिय क्रत्त चले । रयपाल सुधा धुव राइ पिले ॥
जिन के उर उत्तर देस हले । कनकं बड गुज्जर जाय मिले ॥१०७॥
जहँ अल्ह कुमार से तारनयं । अचलेस नवल्ल हरी सिंघयं ॥
जहँ जादव जाम हरी सिँघयं । इतनै सिरदार अगै धरियं ॥१०८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिर दाहिनी बाजू कौ भरियं । कछवाह पँजू नर पाल्हनयं ॥
गहिलौत सुगोईंद मल्हनयं । नरसिंह पहार सुतोमरयं ॥१०९॥
तह धावर धीर समो धरयं । विभराज समाज सु वो धिरयं ॥
सुपँवार सलष सुपंवरयं । अग संजमराय सुभष्षरयं ॥ ११०॥
तह षीचिय देवर जैत पिले । सँग हाहुल राय हमीर मिले ॥
दिसि दक्षिन सावँत ये करियं । हनमंत समान हठी वरयं १११ ॥
दिसि बाँइय फौज चँदेल कियं । अचलेस मिले सिय संग दियं ॥
दोऊ बीर हमीर गँभीर नरं । अतताइय सम्हर ईस वरं ॥११२॥
तह मल्ल चंदेलय पूरनयं । दिय बाम दिसा मुष नूर रयं ॥
जह श्री नगमाल कमध्र बली । पडिहार सुनाहर अंग भली ॥११३॥
सहसा मल सांषुल संग दियं । इतनै सरदार सुबाम कियं ॥
कयमास कमद्धुज विक्रमयं । तह टांक सुचाउ अति क्रमयं ॥११४॥
जहं गौर संघातिय जोर दलं । तहं षेत बगार से चार बलं ॥
कयमास सुसंमर मद्र हुवं । चतुरंगिय सैन विराज दुवं ॥ ११५ ॥
हलकारिय सैन नरे सुरयं । चल चावँड राय बली धुरयं ॥
इहि भाँति सुफौज पिलाय दियं । कविचंद कहै बरदाइययं ॥ ११६ ॥

दोहा ।

दियौ बसीठि पठाइ कै , प्रथीराज चहुवान ।
अल्हन लष्षन उद्द स्यौं , बुलियौ यहै जुवान ॥ ११७ ॥

दूत आय नृप अल्ह स्यौ , बुल्यौ यहै जुबान ।
सावंत थांक्यौ ऊभिया , थां नृप गयौ पलान ॥११८॥

बरन हमारी भज्जिया , कालिंजर गढ़ जाइ ।
अब क्यों ऊभे वीर सब , रन तीरथ मह आय ॥११९॥

लष्षन ब्रह्माजित्त वर , जुग बरनी थां जान ।
जो विचार चंदेल गय , सो म्हां करत बषान ॥ १२० ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इंद्र बरुन धनपति नहीय , यह चंदेल कहाय ।
मानुष मति प्रथिराज सुन , राजा गयौ रिसाय ॥ १२१ ॥
अल्हनसिय यह बचन सुन , दूतहिं दीन पठाय ।
सुनै दूत के बैन जब , प्रथीराज रिसियाय ॥ १२२ ॥
मन मानी मौनस लयौ , पार ब्रह्म धर ध्याय ।
पंच सूर कौ निकट लै, दीह निसान बजाय ॥ १२३ ॥
इत सावँत सब संग लिय , चाहुवान गज पेल ।
उत लष्षनसिय अग्ग हुव , अल्ह आय दल ठेल ॥ १२४ ॥

छंद तोटक ।

अल्हन फौज सुदोइ कियं । हलकार बनाफर लोह लियं ॥
कमधुज्ज सुलष्षन अग्ग कियं । चहुवान सुमंगल संग दियं ॥१२५॥
जहँ रूपसी कूवर बामसियं । सकवार सुकूरम पाल हियं ॥
तहँ चालुक संगर बीर बली । जहँ नद्द करै अति सूर दली ॥१२६॥
जिन तालन षान हरौल कियं । हय बीस हजार सुसंग दियं ॥
तब तहलन आय सलाम कियं । उमराव सुभट्टन कोप कियं ॥१२७॥
अप तीर बुलाषिय षान लियं । समसेर बहादुर नाम दियं ॥
पहिरै जरवास कुमार लियं । सुदिये श्रुति मुत्तिय माल वियं ॥१२८॥
कछू मस उट्ठन उट्ट परं । सुरची रुच ब्रह्म सुहथ्थ वियं ॥
ससिवृत्त सुलज्जन जाय मुनं । चल्यौ रन तीरथ छंड बनं ॥१२९॥
बिच तीस हजार की गोल सची । सिरदार सुलष्षन मध्य रची ॥
तिन प्रष्ठ सु अल्ह बनाफरयं । जिन अग्ग सु उद्दल से भरयं ॥१३०॥
दिस बाँइय मोहनदास कियं । सुर कासिय जुद्ध कौ वृत्त लियं ॥
अरसिंघ सुसंग समाज भरं । भरसाहि पमार चलौ अमरं ॥१३१॥
जहँ सैंगर राय अमान भयं । जिन बाम दिसाभर तानलयं ॥
दिस दाहिनी वीर मंगौर गरू । दुतियं दल काइथ तेज नरू ॥१३२॥
मरनं रन तौमर मोहनयं । परमाल सबै दल सोभनयं ॥
भट सीह सु सीनद कौ पतियं । रन विक्रम पारथ की गतियं ॥१३३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

महि कत्त सुवागरि धारि हियं । इतनै भट दाहिनो फौज कियं ॥
नद वानिय रामचँदेल वियं । जहां केसव वागर साजि सियं ॥१३४॥
बड़ गुज्जर देव करन्न चले । दस दोय हजार चँदेल मिले ॥
सब माहिय तोप सुसंग लियं । रजपुत्त मरन्न कौ कोप कियं ॥१३५॥

दोहा ।

सत्त पंच चहुवान के , उच्च पोल बलवान ।
इक्क सहस चंदेल नृप , किये समर अगिवान ॥ १३६ ॥

चौपही ।

ब्रह्मानंद अल्ह बिच सारू । आगे उदल बंध सुधारू ॥
बांई दिस मोहन कह किन्नव । दक्षिन पूरनमल्ल सुदिन्नव ॥ १३७ ॥
पंग हजार पचास चले पिल । और पचास चंदेलन के मिल ॥
चार फौज अल्हन बिच सारह । प्रथियराज के बीस हजारह ॥१३८॥

दोहा ।

असी सहस असवार सँग , सो संख्या कह होय ।
इन सम विक्रम इक्क करि , बीस सहस कव सोय ॥ १३९ ॥
भयव भीर पर पुंज लषि , जान षग्ग के षेल ।
लाषन सब सावंत सह , बिदा भयव चंदेल ॥ १४० ॥
लाषन अल्हन सह कही , सदा न जीवे कोय ।
गयौ भूप परिपाल दे , छत्रि धर्म कह षोय ॥ १४१ ॥
कठिन पंथ भुमिया घनै , गहै कोपि करवाल ।
कालिंजर लौ जाइयौ , ब्रह्माजित्त कुमार ॥ १४२ ॥
दिष्षि फौज परिपाल नृप , काँपि चले तजि पान ।
दस हजार भट संग लै , चले महौबै थान ॥ १४३ ॥
सहर महोबै सत्त दिन , रहयौ भूप दुचित्ताय ।
सब रानिन स्यौ कूचु करि , कालिंजर गढ़ छाय ॥ १४४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२४) तहलनखां वध खंड ।

वाचनीक ।

कालिंजरे ते चर आये । तिन वचन जगनिक राइ सों कहे ॥

दोहा ।

गयव भूप परिमालदे, कालिंजर सुष पाय ।
केहरि अवलोकन कथा, ब्रह्मजित्त पर आय ॥१॥
गयौ इक्क गव्यूत भर, कुंवर भूप के संग ॥
फिर मुरक्यो संग्राम कह, तात लग्गियौ अंग ॥२॥
मिलत मोह बहु तात करि, द्रग भर आसुव ऐन ।
मुहर मुहर परिमाल नृप, बदत ब्रह्म सह वैन ॥३॥
ब्रह्मा थां मम सथ्थ चल, टीके कौ सरदार ।
तजि महोब गहु कलिँजरहि, अटुट दुर्ग बहु सार ॥४॥
चाहुवान तजि जाय घर, दुर्ग गहव बलवीर ।
फेर महोबा लिज्जियौ, कालिंजर गहि तीर ॥५॥
ब्रह्मजित्त फिरि बुल्लियव, सुनहु बत्त नृपराय ।
टीकौ कर रनजित्त कौ, राज करै सुषु पाय ॥६॥
थां सावँत चहुवान सह, जुरै भरै बहु सार ।
पवन पुत्र सम ऊभिया, आल्हनसी सरदार ॥७॥
सीस अप्फिया ईस कौ, सो रष्षहि अपहार ।
भा टीकौ रनराज को, रचि रष्यौ करतार ॥८॥

चौपही ।

ब्रह्मा वदत सुनौ नृप राइय । धन धन मुंज सुवन महि आइय ॥
छंडिव मोह लोह धर कप्पिव । सनमुष सत्र सीन रन रुप्पिव ॥९॥
धन्य अष्ट उमरावस भागेय । लष्षन तजि संगर नहि भाजेय ॥
धन्य तुरक तल्हन बर दाइय । स्यौ परिवार ऊभ रन जाइय ॥१०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

लाषन सिय पर देसियव, सेा गरजै रन सीस ।
सब्ब सब्ब सुर ताहि करि, भ्रक भ्रक भा अवनीस ॥११॥
कुँवर अपूरव लषनसिय, कनवज्ज तैं चलि आय ।
सेा ऊभा संगर सरस, भ्रक भ्रक भां नृपराय ॥१२॥
बहुत मोह महराज कहि, बचन बारही बार ।
करि प्रदक्षिना पाय पर, रुक्यैा न राजकुमार ॥१३॥
चलिव कुँवर सत्तुर अवनि, लिये संग सुभ वीर ।
हला हला करि पहुँचियैा, दोउव दल के तीर ॥१४॥
दोउव दल के बीच मँह, ब्रह्मजित्त चलि आय ।
उत्साहित मन भभ्भ अति, सिरेापाय मँगवाय ॥१५॥
सिरेापाय ब्रह्मा पहिर, मेाज मुहर भरवाय ।
दीह दुष्ष धरि तात कौ, संगर गयव पराय ॥१६॥
ब्रह्म वज्र जामा जरच्यौ, बिच बिच लाल अपार ।
मनौ निसाकर दिवाकर, उगै एक ही बार ॥१७॥
सेा जामा ब्रह्मा पहिरि, दीपति दिपति अपार ।
चाहुवान चंदेल भय, दोनौ दल उजियार ॥१८॥
नद्द नगारिन के भये, दुहु दल धुज फहरान ।
सत्त सहस असवार सह, ब्रह्मा पहुँच्यैा आन ॥१९॥
दिष्षत देव दिमान अव, गहत वीरवर सार ।
आयैा आयैा हेा रहिव, दुहु दल राजकुमार ॥२०॥
दुहितापति सेामेसुरच्यौ, सुत परिमाल भुवाल ।
दुतिया विधु ब्रह्मा भयैा, अंगुलि सबै पसाल ॥२१॥
इक नल नल कूवर कहै, इक रतिपति अवरिष्षि ।
विसमित भव चहुवान दल, ब्रह्माजिति कहँ दिष्षि ॥२२॥
सबै सैन चंदेल किय, ब्रह्मा लखि हरषान ।
दीह दुष्ष आल्हन सुकरि, जग सह कहिय जुवान ॥२३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ब्रह्मजित क्यों बाहुर्‌यो, जगनायक कह कीन ।
यह कहि करि आल्हन नृपति, दंत अंगुलिय दीन ॥२४॥
कहिय कुंवर महराज कह, कालिंजर पहुँचाय ।
जत्त मत्त कीनै दियौ, बीचहि तै चलि आय ॥२५॥

वाचनीक ।

ये वचन आल्ह के सुनि जगनायक बोले ।

दोहा ।

वह मारतु गैयर गहन, यह रिपु हति जसु लेहि ।
मृगपति नरपति पुत्र कौ, कौन सिषापनु देहि ॥२६॥
ब्रह्माजिति फिरि आइया, सिर क्षत्रिय भ्रम धारि ।
पृथियराज पर पा धर्‌यो, बज्जावन तरवार ॥२७॥
दुहुव ओर बाजे बजे, साजे कवच सरीर ।
दोउव दल ऊभे अवनि, वैत्रवती के तीर ॥२८॥
गगन बैठ विम्मान पर, लषन इंद्र सुर संभु ।
पौष सुदी एकादसी, भयौ जुद्ध आरंभ ॥२९॥
दोउव दल ऊभे अवनि, दो सागर सी जानि ।
लिये लोह हलकार भट, मिले परस्पर आनि ॥३०॥

छंद भुजंगी ।

दुहू सैन मिल्ले दुहू बाग लिन्नै । दुहू धारि धर्म वरं इष्ट किन्नै ॥
दुहू संग कट्ठी दुहू ओर बट्ठी । दुहू ओर वानी सवद्दं चरट्ठी ॥३१॥
वजै घोर नीसान जंगी तवल्लं । बजै नाद तुरही नफीरं सुवल्लं ॥
दुहू नाद कीनौ सुरं संषभारी । दुहू नाम ह'कै सुवंकै उचारी ॥३२॥

दोहा ।

पृथियराज दल दिषि द्रग, संगर सनमुख आय ।
पिल्यौ कोपि किरवान गहि, कमधुज लषन राय ॥३३॥

छंद ।

कहै चंद भट्ट सुनौ चाहुवानं । चलावो गरट बंधि बाँई भुजानं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मुषं वाक जंपै सुईसं भवानी । मिलावै वलं वाहु षावै जवानी ॥३४॥
कवि चंद गुरुराम इष्टं सुध्यावै । बताई दिसा सेा फतै स्वामि पावै ॥
गुरूराम विधि की कला भूमि आई । स्वयं चंडिका चंद कविराज गाई ॥३५॥
चली सैन प्रथिराज की कवचधारी । मनौ नभ्भ मैं स्याम घट भीमकारी ॥
तहां फौज के मध्य प्रथिराज ठाढौ । कहै आजु सोमेसुरं पुन्य आढौ ॥३६॥
सतं सूर कर कुंडली भूम चाले । कपे कक्षयं सेस सीसं सुचाले ॥
डगै दिग्गजं कुंभ नीकुंभ राजै । कपै भूधरं भार घोरं चिकारै ॥ ३७ ॥
सवै सावँतं नाम इष्टं सुलेवा । तिन्है अग्ग आवंत धावंत देवा ॥
चली जुग्गनी भूत प्रेतं समानं । चले भूत पति डमरु नद्दं सुवाजं ॥३८॥
चली चंडिका कथ्थ सथ्थं सुसोई । चले सनमुखं सथ्थ सब संभु लेाई ॥
चले सकुन असमान आमिष अहारी । महा मोद अंगं लषे सगुन भारी ॥३९॥
चले वीर चहुवान अगिवान होई । गये तीर जहँ सैन चंदेल सोई ॥
उतै चाँपि चहुवान की सैन आई । मनो मेघमाला रही सोभ छाई ॥४०॥
अगै कीन चंदेल सैना सुहाथी । रहे प्रष्ट असवार भर भार साथी ॥
चलायेा मुषं कन्हपट्टी डठाई । किधौं रामनं राम भैाहैं चढाई ॥ ४१ ॥
अगै आइ हथ्थीन पै हथ्थ वाहै । वरं दंत तानै उठानै अमाहै ॥
उषारंत दन्ती वली बाहु जोरे । गहै पुंड सुंडं चलावै आमोरे ॥ ४२ ॥
कहूं सूर सेलं सुकिरवान धारं । कहूं अस्व कौ नर निकर मार डारं ॥
कहूं सीस सौ सीस सूरं लगावै । कहूं वाँह षैचै अकासै चलावै ॥४३॥
कहूं केस के संग है जोध भारे । कहूं कंध के वंध षेालंत न्यारे ॥
कहूं पाय टुट्टै परै धरनि माहीं । टिकै जानु के भार किरवान वाँही ॥४४॥
कहु जमंदाढं हनै सूर सीनं । मनौ जाल कौ फार कट्टो सुमीनं ॥
फुटै कुंभ कुंभी गिरें गुल्क न्यारे । मनौ जावकं जुक्त बेारे पनारे ॥ ४५ ॥
कहूं सूर लै रंजकं वार किंनी । मनौ सर्पिनी स्वांस मै ओर दिंनी ॥
महा घोर घमसान भा जाम चारी । चहूवान चंदेल सैना न हारी ॥४६॥
दुहु ओर के अस्त्र सत्रं सुघल्ले । चहुवान चंदेल जोधा न चल्ले ॥
कियै कन्ह कोपं तेामर पहारं । गह्यो लोह चंदेल सेना सघारं ॥४७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छबीसवां अध्याय ।

दोहा ।

बैठे कंचन तखत पै , बली बहादुरसाह ।
पीछे औरंगसाह कै , कीन्हो हुकुम उछाह ॥ १ ॥

छन्द ।

तहां खानखाना अधिकारी । राजकाज की करै सम्हारी ॥
पातसाह ढिग तिन हित पाई । चंपतिरा की करी बड़ाई ॥
चंपतिराइ बड़े अनियारे । हजरत के बहु काम सम्हारे ॥
दारासाह दुंद जब कीन्हो । चंपति बीर समर जस लीन्हो ॥
रन हरौल ह्वै फतै लिवाई । औरंगजेब दिली तब पाई ॥
तिनके तनय छत्रपनधारी । छत्रसाल सोहत भट भारी ॥
खुली कृपान अरिन मुख ताकी । जगी जीत जुद्धन में जाकी ॥
सुभट सिरोमनि समुझि अगौवा । करिये उनकौ बेग बुलौवा ॥

दोहा ।

छता बीर बुलवाइये , करिहै काम अनेक ।
हाल लोहगढ़ की बिजै , लै दैहै करि टेक ॥ २ ॥

छन्द ।

फतै लोहगढ़ की लै दैहै । औरहु काम अनेक बजैहै ॥
सुनी खानखाना की बानी । साह हियै अति सुखद सुहानी ॥
बिहंस बहादुरसाह बुलायौ । छत्रसाल कौं लिखा पठायौ ॥
लिखो खानखाना त्यौं पाती । जामें सब बिधि खबर सुहाती ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हजरत याद आप की कीन्हीं। हित की मति साखिन तैं चीन्हीं॥
चहत लोहगढ़ कियै महूमै[1]। तातै चित्त आप में झूमै॥
या हित साह आपु बुलवाये। बड़े प्रीत सौं लिखे पठाये॥
तातैं आप आइबी आछै। सकल सिद्धि ह्वैहै तिंह पाछै॥

दोहा।

बांच लिखे छत्रसाल नृप, लिखी साह कौ ज्वाब।
फतै लोहगढ़ की करैं, हाजिर होत सिताब॥ ३॥

छन्द।

पाती साह छता की बांची। हियै मान लीनी सब सांची॥
फेर गये खत अब इत ऐबी। करिकै भेंट लोहगढ़ जैबी॥
छत्रसाल सुन मन सुख पाये। पातसाह के पास सिधाये॥
सादर साह मिले हरषाई। भई प्रीतिजुत भेंट भलाई॥
चले बेग ह्वै बिदा उहातैं। करी महूम लोहगढ़ जातैं॥
छेंकौ[2] किलौ लोहगढ़ बांकौं। भयौ समर नृप लरयो तहांकौ॥
गोली गोला छुटत अरावे। दबकत कहू सुभट रन दावे॥
हल्ला पसर करी अस रारी। माची मार परस्पर भारी॥
दरवाजिन के फार किवारे। भीतर पैठ गये अनियारे॥
तीन हजार तहां लर सूझे। सुभट किले के घाइल जूझे॥

दोहा।

पंदरह सै बुंदेल कुल, घाइल जूझे बीर।
मार लोहगढ़ की फतै, लई छता रनधीर॥ ४॥

छन्द।

फतै बजाइ दिली नृप आये। पातसाह तैं अति सुख पाये॥
कही लेव मनसब मनभाये। छत्रसाल तब बचन सुनाये॥

१—महूमै = मुहिम्म, लड़ाई, युद्ध। २—छेकों = घेर लिया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हम बगसीस यही करि पावैं। काम लगै जब आप बुलावैं॥
हुकुम सुनत नम हाजिर होवै। हजरत के रन काम सजोवै[1]॥
जो हमकौं बगसी दरपेसह। तामें कौन होइ बिय पेसह॥
दो करोर की जिमी ठिकानै। पुनि दीन्ही हीरन की खानै॥
सो प्रभु की बगसीस बनीऊ। कर्म निमित्त निज देत धनीऊ॥
मनसबदार होइ को काकौ। नाम बिसुंभर सुन जग बांकौ॥

दोहा।

इम प्रभु के विश्वासमय, बचन भाषि छत्रसाल।
बिदा भये उर साह कौं, मुदित राखि महिपाल॥ ५॥

छन्द।

साह बिदा कीनौ सुख पायौ। एक कुवँर रहिबौ ठहरायौ॥
छत्रसाल गृह आइ सिधाये। मऊ[2] पहुंच नीसान बजाये॥

इति श्रीछत्रप्रकाशे लालकविविरचिते दिल्ली तै मऊ
आगमनो नाम षड्विंशोऽध्यायः॥ २६॥

१—संजोवै = पूर्ण करेंगे। २—मऊ = यह स्थान छत्रपुर राज्यान्तर्गत महेवा के निकट है और मऊ महेवा के नाम से प्रसिद्ध है। यही पुण्यश्लोक ग्राम प्रातःस्मरणीय बुंदेलकुल-केशरी, महाराज छत्रशाल का क्रीड़ास्थल रहा है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

Nagari Pracharini Granthamala Series No. 24.

लाल कवि रचित

छत्रप्रकाश ।

—:o:—

श्यामसुन्दरदास बी० ए० और कृष्णबलदेव वर्म्मा
द्वारा सम्पादित

तथा

काशी नागरीप्रचारिणी सभा
द्वारा प्रकाशित ।

—:o:—

1916.

THE INDIAN PRESS, ALLAHABAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका।

—:o:—

भारतवर्ष के मध्य भाग में बुंदेलखंड प्रान्त स्थित है। इसके उत्तर ओर जमुना, दक्षिण ओर नर्मदा, पूर्व की ओर तौंस और पश्चिम की ओर कालिसिन्ध नदी बहती है।

ऐसा कहा जाता है कि जिस समय महाराज युधिष्ठिर भारतवर्ष का राज्य कर रहे थे उस समय इस प्रान्त में शिशुपाल नाम का राजा राज्य करता था और इस प्रान्त का नाम चेन-देश था। शिशुपाल के उत्तराधिकारियों ने बहुत दिनों तक यहां राज्य किया। अन्त में अवध के राजा करन ने इसे जीत लिया और कालिंजर में एक महल बनवाया और शिशुपाल के समय की बसी हुई चँदेरी नगरी को उजाड़ कर गेरुपर्वत के निकट उसे फिर से बसाया। आज कल चँदेरी नगरी ललितपुर से १८ मील पश्चिम की ओर स्थित है। शिशुपाल के समय की चँदेरी नगरी आधुनिक नगरी से ७ मील के लगभग उत्तर पश्चिम की ओर स्थित थी। इसे अब बूढ़ी चँदेरी कहते हैं और टूटे फूटे मन्दिर अब तक इसकी प्राचीनता की साक्षी देते हैं। राजा करन ने अपनी बसाई हुई चँदेरी में एक बड़ा तालाब खुदवाया जिसे "परमेश्वर" नाम दिया और गेरु पर्वत पर एक कोट बनवा कर वहाँ अपनी सेना रक्खी। इस वंश का अन्तिम राजा सोमी हुआ जो अपना राज छोड़ कर कच्छभुज की ओर चला गया। इस समय उज्जैन का राजा भर्तृहरि था। पर वह भी बैरागी होकर राज पाट छोड़ जंगल में चला गया और उसका छोटा भाई विक्रम राज्य का अधिकारी हुआ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसने समस्त मध्य भारत को जीत कर चेन-देश को अपना केन्द्रस्थान नियत किया।

विष्णु पुराण में लिखा है कि जमुना से नरबदा तक और चम्बल से केन तक नागवंशी क्षत्रियों का राज्य था पर इनके राजकाल की अवधि ठीक ठीक स्थिर नहीं की जा सकती।

इस वंश का अन्तिम राजा देवनाग हुआ जिसके समय में राजा गोपाल के सेनापति तोरमान कछवाहा ने इरन* पर आक्रमण किया और भुपाल से इरन तक के समस्त देश को जीत लिया। देवनाग अपना राज छोड़कर नरवर की ओर जैपाल चला गया और तोरमान का वंशज सूरसेन इस देश का राजा हुआ। इसने ग्वालियर का प्रसिद्ध कोट बनवाया।

सूरसेन ने बहुत दिनों तक राज्य किया। सन् ५९३ में कन्नौज के राजा ने ग्वालियर, चँदेरी और नरवर को छोड़ कर समस्त देश जीत लिया पर कछवाहों ने उसे वहाँ से शीघ्र ही भगा दिया। इसी समय में ठाकुर चन्दब्रह्म ने महोबे के निकट अनेक गांवों पर अपना अधिकार जमा लिया। इसी ठाकुर के वंशज चन्देल कहलाए।

कछवाहा बंश का अन्तिम राजा तेजकरन था। इस के समय में परिहार वंश का प्रताप बढ़ा और उन्होंने ग्वालियर को जीत लिया। इस पर तेजकरन धुन्धार में जा बसा पर उसके वंशजों ने नरवर और इदुर में रहना स्थिर किया। परिहार राजाओं का राज बहुत दिनों तक न चल सका। चन्देल राजाओं की शक्ति दिनों दिन बढ़ती गई और अन्त में ग्वालियर को छोड़ कर समस्त देश उनके अधिकार में आ गया। पर ग्वालियर भी कछवाहों के हाथ में बहुत दिनों तक न रहा। सन् १२३२ में तोमर बंशी ठाकुरों ने उसे जीत कर अपने वश में कर लिया।

---

* यह स्थान सागर जिले में वेन नदी के किनारे स्थित है।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चन्देल वंश का पहला राजा वाकपति हुआ। इसके दो लड़के जयशक्ति और विजयशक्ति हुए। इनके पीछे राहिल, हर्ष, यशोवर्मन, विनायकपाल देव, विजयपाल, कीर्तिवर्मन, पृथ्वीवर्मन, मदनवर्मन, परमार्दिदेव, त्रिलोकवर्मदेव, वीरवर्मन, और भोजवर्मन क्रम से राजा हुए। भोजवर्मन के समय में वीर बुन्देला ने इस देश को अपने अधिकार में कर लिया।

वीरभद्र गहिरवार क्षत्री था और इसके पूर्वज काशी के राजा थे। छत्रप्रकाश में वीरभद्र के पूर्वजों की नामावली इस प्रकार दी है। रामचन्द्र के पुत्र कुश के वंश में हरिब्रह्म हुए जिनके पीछे वीरभद्र तक ये राजा हुए—महिपाल, भुवपाल, कमलचन्द, चित्रपाल, बुद्धिपाल, नन्दविहंगराज, काशिराज, गहिरदेव, विमलचन्द, नाहुचन्द, गोपचन्द, गोविंदचन्द, टिहनपाल, विन्ध्यराज, सोलिकदेव, वीभलदेव, अर्जुनदेव, वीरभद्र।

वीरभद्र के पाँच लड़के थे, राजसिंह, हंसराज, मोहन, मान, जगदास। जगदास जिसे पंचम भी कहते हैं, अपने पिता का सब से प्यारा पुत्र था। इसलिये वीरभद्र ने अपना आधा राज्य तो जगदास को दे दिया और आधा राज्य दूसरे चार लड़कों में बाँट दिया। इस पर राजसिंह, हंजराज, मोहन और मान को बड़ी ईर्षा हुई और उन्होंने अपने पिता के मरने पर सन् ११७० में जगदास उपनाम पंचम का राज्य छीन लिया और उसको आपस में बाँट लिया। पंचम दुखित हो विन्ध्याचल को चला गया और वहाँ श्रावण कृष्ण १ संवत् १२२८ से उसने घोर तपस्या प्रारम्भ की। नौ दिन तक कठिन व्रत रख कर उसने दसवें दिन यह निश्चय किया कि अपना सिर काट कर विन्ध्यवासिनी देवी को चढ़ाऊँ। ऐसा कहा जाता है कि ज्योंही उसने यह करना चाहा त्योंही ये शब्द सुन पड़े कि "जा, तू राजा होगा"। इस पर पंचम ने कहा कि मुझे दर्शन दो और ऐसी कोई वस्तु दो जिससे मैं अपने भाइयों को जीत कर उनसे अपना राज छीन लूं। पर जब

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इसका कोई उत्तर न मिला तो वह पुनः अपना सिर काटने पर उद्यत हो गया। इस पर विन्ध्यवासिनी देवी ने पंचम को दर्शन दे कहा कि "जा तेरी जय होगी, तू अपना राज्य करेगा और तेरे वंश के लोग मध्य भारत पर राज्य करेंगे।" पंचम ने जो तलवार अपने सिर काटने के लिये उठाई थी वह उसके सिर पर लग गई और उससे रक्त का एक बूँद पृथ्वी पर गिर पड़ा। इस पर भगवती ने कहा कि तेरे वंश के लोग बुंदेला कहलावेंगे। यह कह देवी तो अन्तर्हित हो गईं और पंचम वहाँ से चला आया। पीछे से उसने सेना इकट्ठी करके अपने भाइयों को जीता और उनसे अपना राज्य छीन लिया। इसी समय से पंचम के वंशज वीर बुँदेला कहलाए और जिस देश पर उन्होंने राज्य किया वह बुंदेलखंड कहलाया। पंचम से लेकर छत्रसाल तक बुँदेलों की वंशावली इस प्रकार है—

पंचम (सन् १२१४ में मरा)

वीर बुँदेला (सन् १२३१ में कालपी, मुहोनी, और कालिंजर जीता)

करनतीर्थ (इसने काशी में कर्णघंटा तीर्थ बनवाया)

अर्जुनपाल (इसने महोनी को अपनी राजधानी बनवाया)

वीरबल—सोहनपाल और दयापाल। अर्जुनपाल की मृत्यु पर वीरबल राज्याधिकारी हुआ और सोहनपाल को कुछ थोड़े से गांव मिले पर इससे वह सन्तुष्ट न हुआ—इस पर वह अनेक राजाओं के पास गया कि जिसमें उनसे सहायता लेकर अपना राज्य बढ़ावे पर किसी ने सहायता न दी। अन्त में पँवार ठाकुरों की सहायता से उसने कुराट के राजा नाग को मार एक नया राज्य स्थापित किया। धीरे धीरे सोहनपाल आधे बुंदेलखंड का राजा होगा।

सहजेन्द्र—सोहनपाल का पुत्र—यह सन् १२९९ में गद्दी पर बैठा इसका छोटा भाई "राम" था।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नानकदेव—सन् १३२६ में गद्दी पर बैठा, इसका छोटा भाई सैनिकदेव था।

पृथ्वीराज—सम् १३६० में गद्दी पर बैठा—इसका छोटा भाई इन्द्रराज था।

छत्रप्रकाश में लिखा है कि पृथ्वीराज के पीछे रामसिंह, रामचन्द्र और मेदिनीमल्ल क्रम से राजा हुए पर अन्य इतिहासों से यह विदित होता है कि पृथ्वीराज के पीछे सन् १४०० में उसका पुत्र मदनिपाल राज्य का अधिकारी हुआ।

मदनिपाल—

अर्जुनदेव—सन् १४४३ में गद्दी पर बैठा—कविप्रिया में केशवदास ने इनकी बहुत प्रशंसा की है—इनके दो भाई माल और भीमसेन थे।

मलखान—सन् १४७५ में गद्दी पर बैठा। सन् १४८२ में बहलोल लोदी (१४५१—१४८८) से लड़ा। मलखान सन् १५०७ में मरा। इसके आठ लड़के थे जिनके नाम ये हैं—प्रतापरुद्र, शाह, जैत, जोगजीत, बरयारसिंह, भाऊसिंह, खड़गसेन, और वीरचन्द।

प्रतापरुद्र—छत्रप्रकाश में इनका नाम रुद्रप्रताप लिखा है। इसने इबराहीम लोदी का बहुत सा राज्य अपने राज्य में मिला लिया। जब बाबर ने इब्राहीम को जीत कर चन्देरी के राजा मेदनीराय को पराजित किया तो उसकी इच्छा प्रतापरुद्र से इब्राहीम के राज को छीन लेने की हुई पर वह केवल कालपी ही ले सका। बैसाख कृष्ण १३ संवत् १५८७ (सन् १५३०) को प्रतापरुद्र ने ओड़छे का नगर बसाया। इन्हें आखेट का बड़ा व्यसन था और इसी में इनकी सन् १५३१ में जान गई। इनके बारह लड़के थे जिनके नाम ये हैं—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भारतीचन्द, मधुकरसाहि, उदयाजीत, कीरतिसाहि, भूपतिसाहि, आमदास, चंदनदास, दुर्गादास, घनश्याम, प्रागदास, भैरोदास, खांडेराय।

भारतीचंद्र—सन् १५३१ में गद्दीपर बैठे थे, इनके समय में शेरशाह (१५४२—१५४५) ने बुंदेलखंड जीतना चाहा पर वह कृतकार्य न हो सका। इस समय राज्य की वृद्धि बहुत कुछ हुई और उसकी वार्षिक आय लगभग दो करोड़ के थी। इनके कोई पुत्र न था इसलिये मधुकरसाहि राजा हुए।

मधुकरसाहि—ये सन् १५५२ में गद्दी पर बैठे। इनके समय में अकबर ने बुंदेलखंड जीतने का कई बेर उद्योग किया। कभी तो मुसलमानों की जीत होती और कभी बुँदेलों की। अन्त में १५८४ में शाहजादा मुराद स्वयं एक बड़ी सेना लेकर आया—पर मधुकरसाहि की बीरता से प्रसन्न होकर उसने उसका सारा राज्य लौटा दिया। मधुकरसाहि के पीछे उसके वंश का राज्य ओड़छे में चला। राजा प्रतापरुद्र ने अपने तीसरे लड़के उदयाजीत को महेवा दे दिया था इसलिये अब महेवे का वंश अलग चला।

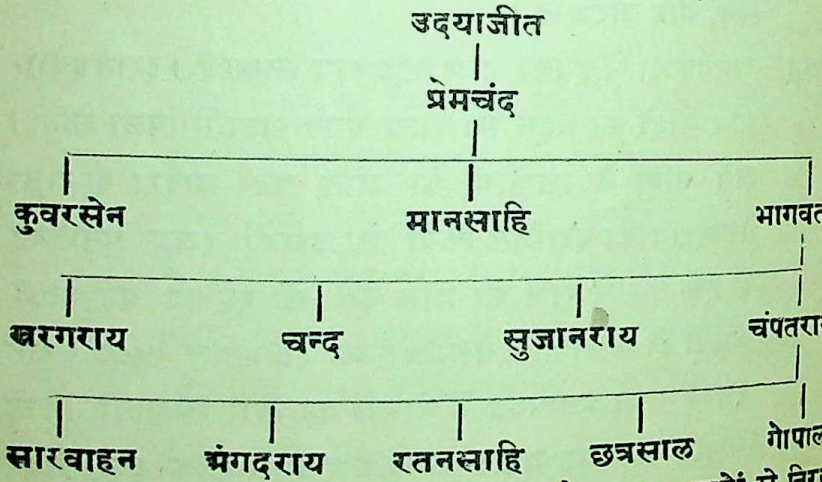

मधुकरसाहि के पीछे उनके वंशजों और मुसलमानों से निरन्तर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लड़ाई होती रही, कभी एक जीतता कभी दूसरा, पर दिनों दिन बुंदेलखण्ड में मुसलमानों का अत्याचार बढ़ता चला। उदयाजीत के वंश के लोग भी इन युद्धों में सम्मिलित रहते थे। मधुकरसाहि के पुत्र वीरसिंह देव के पीछे जुझारसिंह ने अपने भाई राजकुमार हरदेव को अपनी ही रानी से विष दिलवा कर मार डाला। इस जघन्य पाप से चारों ओर हाहाकार मच गया। बाबू कृष्णबलदेव वर्म्मा इस घटना का वर्णन इस प्रकार अपने "बुंदेलखण्ड पर्य्यटन" में लिखते हैं—

"कहते हैं कि जब ओड़छाधीश, महाराज वीरसिंहदेव के पीछे, दिल्लीश्वर की राजसभा में रहने लगे, तब राज्यप्रबन्ध का भार राजकुमार हरदेवसिंह के सिर पड़ा। अपना कार्य सभी भली भाँति सम्हालते हैं। राजकुमार दत्तचित्त हो राज्यप्रबन्ध करते रहे। उनके प्रबन्ध में घूस खाने हारों का निर्वाह न था। जिन लोगों का पेट घूस ही के द्वारा भरता था, उनको हरदेवसिंह से ईर्षा उत्पन्न हो गई और राज-प्रबन्ध हरदेवसिंह से छीनने का वे लोग प्रयत्न करते रहे। राजकुमार की भक्ति अपनी भ्रातृपत्नी में माता के समान थी और वह भी अपने देवर को पुत्रवत ही मानती थी। परस्पर यही सम्बन्ध सदैव रहता था। पुत्रवत्सला माता को जैसे अपने पुत्र को बिना देखे चैन नहीं आता, वही दशा उनकी भ्रातृपत्नी की थी। विश्वासघाती प्रतीतराय ने यह देख भ्राताओं में वैमनस्य कराना चाहा और एक पत्र राजा को लिखा कि राजकुमार का राजमहिषी से अश्लील सम्बन्ध है। सत्य है "विनाशकाले विपरीतबुद्धिः"! राजा ने पत्र पढ़ राजमहीषी के सतीत्व में सन्देह कर परीक्षा करनी चाही। अतएव उन्होंने राजमहिषी से कहा कि यदि तुम्हारे सतीत्व में अन्तर नहीं पड़ा और तुम्हारा हरदेवसिंह से घृणित सम्बन्ध नहीं है तो तुम अपने हाथ से उसे विष दो। राजमहिषी ने बड़े दुःख से अपनी धर्मरक्षार्थ प्रस्ताव स्वीकार किया और भोजन प्रस्तुत किए। कहते हैं कि जब वे भोजन हरदेवसिंह को परोसने लगीं तब उनके

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अश्रुसंचालन हो उठा। हरदेवसिंह ने क्लान्त हो पूछा कि माता! आज पुत्र को खिलाने में तुम क्यों रोती हो? क्या मैंने कुछ तुमको दुःख दिया है। भूमि की तृप्ति तो मघा के बरसने और पुत्र की तृप्ति माता के परोसने से होती है। क्या आज तुममें कुछ मातृस्नेह न्यून होगया है जो तुम रोती हो? राजमहिषी चीख मार कर रो उठीं और जब हरदेवसिंह ने बहुत प्रबोध किया तो बोलीं कि वत्स! अब मैं माता कहे जाने के उपयुक्त नहीं हूं! महाराज को मेरे सतीत्व में सन्देह हुआ है। जगत प्रलय होते हुए भी स्त्री का पहला धर्म सतीत्व-रक्षा है; अस्तु उसीकी इस समय परीक्षा ली गई है, जिसके कारण तुझ सा देवर, जो वास्तव में मेरे पुत्र के समान ही था, आज विष भोजन कर रहा है और अपनी धर्मरक्षा के लिये आज मुझ दुर्भागिनी को यह घोर वत्सहत्या करनी पड़ी। हरदेवसिंह यह सुनते ही उस भोजन को बड़े प्रेम से शीघ्र शीघ्र खाने लगे और बोले कि माता! यह भोजन मेरे लिये अमृत समान है। तेरी धर्मरक्षा से मेरी सुकीर्ति युगानुयुग होगी। राजमहिषी इन सौजन्यपूरित वाक्यों को सुन और भी कातर हो उठीं। उनके ज्येष्ठ भ्राता यह धर्मपरीक्षा और धर्मभक्ति देख कर्तव्यविमूढ़ पत्थर की प्रतिमा सम मुग्ध हो अपनी दुर्बुद्धि पर रोने लगे। हरदेवसिंह जी वहाँ से रसोई का विष-पूरित शेष भोजन उठवा लाए और उन्होंने अपनी दशा का अन्तिम समाचार अपने मित्रों सेवकों और कर्मचारियों से कहा। उनमें से कितने ही हरदेवसिंह जी के सद्गुणों से ऐसे अनुरक्त थे जो उनके साथ ही चलने को उद्यत हो गए और बहुतों ने वही विषपूरित भोजन पा लिया। हरदेवसिंह जी के प्यारे हाथी घोड़े को भी वही भोजन खिलाया गया। हरदेवसिंहजी अपनी बैठक के बंगले में बैठ गए। प्रेमरस पीने हारे थोड़ी देर में झूम झूम गिरने लगे। हरदेवसिंहजी अपनी सेना के अग्रणियों का स्वर्गमार्ग में बढ़ना देखते ही देखते स्वयम् भी झूमने लगे। अन्तकाल-रूपी अश्व इनके लिये प्रस्तुत होने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लगा। जब विष की तरंगों की उमंगें आपके शरीर में उठने लगीं, तब आप बाटिका के बंगले से उठ एक पत्थर के टुकड़े पर, जो रघुनाथजी के मन्दिर के आंगन में ठीक मूर्ति के सम्मुख गड़ा है, मर्य्यादा-पुरुषोत्तम की मूर्ति के सम्मुख हाथ जोड़ आ बैठे और ध्यानावस्थित आंखें किए प्रेमपूर्ण लड़खड़ाती वाणी से त्रेतापहारी अवधविहारी से अपने पापों की क्षमा और उनकी दया की भिक्षा माँगने लगे और थोड़ी ही देर में वहीं समाधिस्थ हो अटल निद्रा में ब्रह्मानन्द के स्वप्नों के दृश्य देखने लगे। महाराज हरदेवसिंह उसी समय से प्रख्यात हरदेवलाल के नाम से विशूचिका के दिनों में पुजने लगे। इनके चौतरे समस्त भारतवर्ष में ठौर ठौर बने हुए हैं। हरदेवसिंह जी की मृत्यु के पीछे समस्त ओड़छे में उदासी छा गई। राजा के इस जघन्य कर्म की निन्दा सजातीय और विजातीय सब लोग करने लगे और ऐसे अविवेकी महाराज के साथ को सर्वदा भयप्रद जानकर उनसे सम्बन्ध तोड़ बैठे। सम्बन्धियों ने भी महाराज से नाता तोड़ा। ओड़छे के लिये यह बड़े अभाग्य का दिन था।"

निदान इस अवसर को अच्छा जान कर शाहजहां ने मुहब्बत खां, खांजहां, और ख्वाजह अबदुल्ला के अधीन बड़ी सेना भेज कर बुंदेलखंड को जीतना चाहा। वीरसिंह देव के छोटे भाई उदयाजीत के प्रपौत्र चम्पतराय से यह न सहा गया। वे अपने सम्बन्धियों की ओर से लड़ने को उद्यत हो बैठे। यद्यपि इस युद्ध में मुसलमानों की जीत हुई पर चम्पतराय ने उनका पीछा न छोड़ा। जब जब उन्हें अवसर मिला वे कुछ न कुछ हानि मुसलमानों को पहुँचाते रहे। सन् १६३३ में तो चम्पतराय एक क़िले में घिर गए पर अपने बुद्धिबल और वीरता से वहां से निकल भागे और पहले की भांति चारों ओर उत्पात मचाते रहे। अन्त में एक समय मुसलमानों के साथ युद्ध करते हुए अपने देश वालों को अपने विरुद्ध पाकर उन्होंने आत्महत्या की। इनके पीछे छत्रसाल ने अपने पिता की नीति ग्रहण की और वे

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बहुत दिनों तक लड़ते रहे। अन्त में इनसे और औरंगजेब से मेल होगया और इन्हें फिर बुंदेलखण्ड का राज्य मिला। छत्रसाल का जन्म १६३४ के लगभग हुआ था। इन्हीं की आज्ञा से लाल कवि ने छत्रप्रकाश ग्रन्थ लिखा। डाक्टर ग्रियर्सन लिखते हैं कि छत्रसाल सन् १६५८ में उस लड़ाई में मारा गया जो दाराशिकोह और औरंगजेब के बीच में हुई थी पर छत्रप्रकाश से यह विदित होता है कि चम्पतराय और छत्रसाल दोनों उस लड़ाई में औरंगजेब की ओर से लड़े थे और उसके पीछे तक जीते रहे। औरंगजेब ने कृतघ्नता करके चम्पतिराय को पुनः कष्ट देना आरम्भ किया था और अन्त में छत्रसाल और औरंगजेब से मेल होगया जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है–इसलिये छत्रसाल की मृत्यु १६५८ में नहीं हुई वरन उसके कई वर्षों पीछे हुई। डाक्टर ग्रियर्सन लिखते हैं कि लाल कवि ने विष्णुविलास नाम का एक ग्रन्थ नायका भेद का लिखा है परन्तु वह अब तक मेरे देखने में कहीं नहीं आया। गार्सिन डी टासी का अनुमान था कि छत्रप्रकाश बुंदेलखंड के इतिहास का अंश मात्र है पर पुस्तक देखने से यह नहीं जान पड़ता। यह एक स्वतंत्र ग्रन्थ है यद्यपि इसमें सन्देह है कि यह कभी लिख कर पूरा किया गया, क्योंकि जितना अंश इसका मिलता है और जो यहाँ प्रकाशित किया गया है उससे ग्रंथ की समाप्ति नहीं प्रमाणित होती। छत्रप्रकाश का अंग्रेज़ी अनुवाद क्यापटेन पागसन ने किया है। छत्रप्रकाश को पहले पहल मेजर प्राइस ने सन् १८२९ में कलकत्ते के फ़ोर्ट विलियम कालिज से छाप कर प्रकाशित किया था परन्तु अब वह प्रति अप्राप्त है, इसलिये काशी नागरीप्रचारिणी सभा की ओर से यह पुनः छापकर प्रकाशित किया गया है।

इसकी भूमिका विस्तार से नहीं लिखी गई है पर जितनी बातें जानने योग्य थीं सबका उल्लेख इसमें संक्षेप रूप से कर दिया गया है। जिन्हें बुंदेल खंड का विस्तृत इतिहास जानना हो वे इस विषय की अन्य पुस्कें देखें।

लाहौरी टोला
काशी ५–८–१९०३,

श्यामसुन्दरदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय-सूची।

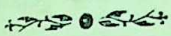

अध्याय	विषय	पृष्ठ से पृष्ठ तक
पहला अध्याय	बुँदेल-जन्म-वर्णन	१—८
दूसरा अध्याय	बुँदेल-वंश-वर्णन	९—१६
तीसरा अध्याय	छत्रसाल-पूर्व-जन्म-कथा	१७—२२
चौथा अध्याय	छत्रसाल-बाल-चरित्र	२३—२७
पाँचवाँ अध्याय	चौरवध और पहारसिंह प्रपंच-वर्णन	२८—४१
छठाँ अध्याय	औरंगजेब-प्रपंच, चंपतिराइ पराक्रम, मुकुंद हाड़ा और छत्रसाल हाड़ा बध तथा दारा साह पराजय-वर्णन	४२—४९
सातवां अध्याय	शुभकरन पराजय और बंका-बध-वर्णन	५०—५७
आठवां अध्याय	चंपतिराय-प्रनाश	५८—६५
नवां अध्याय	जयसिंह-संमेलन	६६—७१
दसवां अध्याय	देवगढ़ विजय-वर्णन	७२—७६
ग्यारहवां अध्याय	सुजानसिंह-मिलाप-वर्णन	७७—८६
बारहवां अध्याय	रतनसाह और छत्रसाल संवाद—वर्णन	८७—९२
तेरहवां अध्याय	केसोराई बध-वर्णन	९३—९९
चौदहवां अध्याय	सैदबहादुर-युद्ध-वर्णन	१००—१०३
पन्द्रहवां अध्याय	रनदूलह पराजय—वर्णन	१०४—१०६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय	विषय	पृष्ठ से पृष्ठ तक
सोलहवां अध्याय	तहवर-युद्ध-वर्णन	१०७—११३
सत्रहवां अध्याय	अनवर-पराजय वर्णन	११४—१२०
अट्ठारहवां अध्याय	सुतरदीन-पराजय	१२१—१२७
उन्नीसवां अध्याय	हमीद खां सैद लतीफ आदि पराजय	१२८—१२९
बीसवां अध्याय	अबदुल समद पराजय	१३०—१३७
इक्कीसवां अध्याय	बहलोलखां-मरण	१३८—१४०
बाइसवां अध्याय	मौधामटौध विजय	१४१—१४५
तेइसवां अध्याय	प्राननाथ शिक्षा	१४६—१५४
चौबीसवां अध्याय	कृष्णजन्म-वर्णन	१५५—१५९
पचीसवां अध्याय	प्राननाथ-बरदान	१६०—१६०
छब्बीसवां अध्याय	दिल्ली से मऊ आगमन	१६१—१६३

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजन पुस्तकमाला ।

इस पुस्तकावली में एक ही आकार तथा रूप रंग की हिन्दी की सौ उत्तमोत्तम पुस्तकें रहेंगी । अब तक निम्न लिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं--

(१) आदर्श जीवन । (२) आत्मोद्धार ।
(३) गुरु गोविंदसिंह । (४) आदर्श हिन्दू १ भाग ।
(५) आदर्श हिन्दू, २ भाग । (६) आदर्श हिन्दू, ३ भाग ।
(७) राणा जंगबहादुर । (८) भीष्म पितामह ।
(९) जीवन के आनन्द । (१०) भौतिक विज्ञान ।

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १), डाक व्यय अतिरिक्त, समस्त पुस्तकमाला के स्थायी ग्राहकों से ।।।) लिया जायगा, डाक व्यय अलग होगा ।

हिन्दी शब्दसागर ।

हिन्दी भाषा का बृहद्कोश । ११ अंक छप चुके हैं । प्रत्येक अंक में डिमाई चौपेजी आकार के ९६ पृष्ठ हैं । मूल्य प्रति अंक १), डाक व्यय अलग ।

पृथ्वीराज रासो ।

यह हिन्दी साहित्य का आदि ग्रंथ है । इसमें अंतिम क्षत्रिय सम्राट पृथ्वीराज चौहान का विस्तृत वृत्तांत कविचन्द लिखित है । साथही समस्त ग्रंथ का सारांश गद्य में दिया गया है । यह सुपर रायल आकार के ३१०० पृष्ठों में समाप्त हुआ है । मूल्य समस्त ग्रंथ का २०) रु०, डाक व्यय १।) के लगभग ।

ये तीनों पुस्तकें

मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा ,

बनारस सिटी, से मिल सकती हैं ।

——:o:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पुस्तक संख्या २४, २५

ग्रन्थ संख्या ५४]

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक, श्यामसुन्दरदास, बी० ए० ।

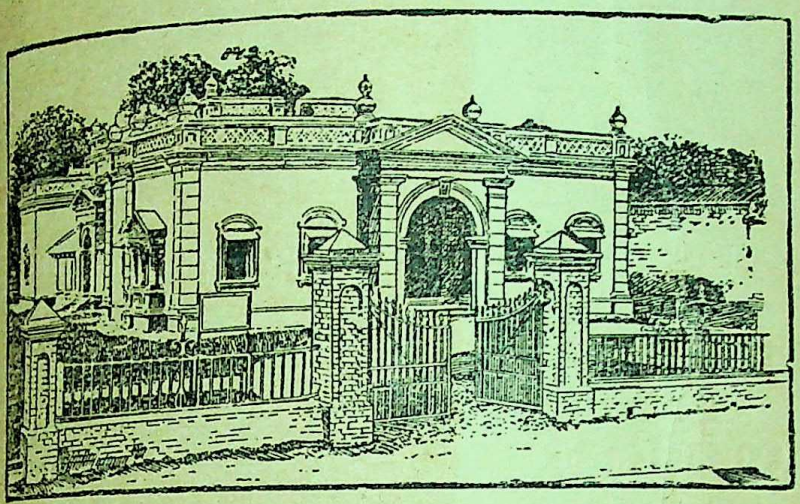

FASCICULUS NO. 54.] [BOOK NO. 24, 25.

NAGARI PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR

SYAM SUNDAR DAS, B.A.

PUBLISHED BY

THE NAGARI PRACHARINI SABHA,

BENARES.

मूल्य प्रति संख्या ॥) [*Price per fasciculus As. 8.*

ISSUED ON THE 20TH OCTOBER, 1916.

PRINTED BY APURVA KRISHNA BOSE AT THE INDIAN PRESS,

ALLAHABAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका।

(२४) परमाल रासो—बाबू श्यामसुन्दर दास सम्पादित। (पृष्ठ ३७७—४०८ तक)

(२५) दीनदयालगिरि ग्रंथावली—बाबू श्यामसुन्दरदास सम्पादित (१—३२)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहूं जे भुसुंडीन पै तेग तावै । कहूं कोप कर तुच्छ धरनी मिलावै ॥
ऐसो जुद्ध देषंत देवा सु सोई । कहै इंद्र सौ वत्त अचरिज्ज होई ॥४८॥

अहो वासवा थां लखे जुग्ग चारी । कलि मद्ध मानव करी येम रारी ॥
वदै वृत्तहा निर्जरा वुद्ध धारी । अयं अवतरे जोध भारथ्थ वारी ॥४९॥

अयं कवरवा पंडवा भूमि आयं । कलिजुग्ग मद्धै सुसाषे सहायं ॥
भयो राज जिरजोधनं चाहुवानं । फुटै पार हो लत्त पीलं सुवानं ॥ ५० ॥

अयं विभ्भराजं सलषसी पमारं । भये भीम अरजुन्न जोधा अपारं ॥
लषनसी बघेला सुतोमर पहारं । भये सो तु विक्रंत ब्रह्मा सुचारं ॥५१॥

भयो कन्ह चहुवान भगदंत रानौ । इसे क्रस्म सब वीर अवतार जानौ ॥
उतै सत्रसालं सुसकेतस वीरं । भयौ भूमि भूरिस्रवा सकुन धीरं ॥५२॥

कला भीषमं जगनिकं भाट जानौ । सुमलषान अवतार मैरों सु मानौ ॥
बली अल्ह उदल जोधा बषानौ । लियं वल्ल खल्लं सु अवतार जानौ ॥५३॥

इती वत्त में देवसौ इंद्र गानं । प्रबंधं कविं चंद भूतल वषानं ॥
चहूवान चंदेल जोधा सुवाकं । हवक्की हवक्का करै धीर धाकं ॥ ५४ ॥

भयौ तुमुल जुद्धं चतुर जाम भारी । दुहू कोध के वीर जित्ते न हारी ॥
लरै भीम जोधा सुवैनं उचारी । धरै मन्नसं स्वाम धर्मं अपारी ॥५५॥

चहूवान चंदेल की भक्त भायं । जिनं कीरतं भूम कविचंद गायं ॥
अहो धन्य चहुवान भूपं विसालं । जुरै अल्ह सौ जुद्ध जित्तै न कालं ॥५६॥

अमर जुद्ध जोधा न अत्रं लगाई । दिये सकल वरदान गोरिष्ष राई ॥

वाचनीक । ये सावंत धनि है जे राजा बिन लरत हैं ।

कहूं बान संधै कहूं जाइ मारै । कहूं धाक वाकै कहूं को पचारै ॥५७॥
सुचहुवान बल सौ करै पील कानी । मुषं मंत्र बोलंत संकर भवानी ॥
कहूं हांक वाकै दहै सैन सोई । बजावै वरं लोह निर्मोह होई ॥५८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करै षंड षंड घटं घाय घारै । विकट्टं बली बाहु थट्टं निहारै ॥
चलावंत तीरं गहीरं गुमानी । षनंकै धरत्ती भनंकै सुवानी ॥ ५९ ॥
उरं सेल्ह लग्गै परं पार होई । गिरै नट्ट वा संकला चुक्क सोई ॥
बहै कंध किरवान बंधं षुलावै । परै मुंड धरती सुरुंडं नचावै ॥६०॥
गुरज्जं बहै सीस रीसं रमानी । सिरं होत चुन्नं विषन्नं जमानी ॥
वहै मुग्दरं मार धारंत छत्ती । परै पील मतवार धरनी विरत्ती ॥ ६१ ॥
करै वार हीकं कटारी करूरं । करे मारु माती परै चक्क चूरं ॥
हनै गुर्ज सीसं करी कुंभ फारी । मनौ भूधरा बज्र बज्री बिदारी ॥६२॥
कटै टंक जोधा लुटै भूम अक्षी । मनौ नीरहीनं तरप्फंत मक्षी ॥
करै रीस रीसं हनै परिघ भारे । मनौ जावकं मन्ह छुट्टै पनारे ॥ ६३ ॥
घनै घाव घूमंत साषंत थूले । मनौ पाय वासंत पालास फूले ॥
करी अस्व कट्टै सहस्रं सुताही । चली स्रोन की बाहनी भूम माही ॥६४॥
इसी भाँत जुद्धं कियौ कन्ह भारी । मिट्यो ध्यान अंबा खुली रुद्र तारी ॥
भगी सैन चंदेल की लषन जानी । कही टेर सबसौ सु अल्हन गुमानी ॥६५॥

दोहा ।

कन्ह कट्ट कीनौ कहर , हटक परी दल मांह ।
भटक वीर भग्गे बली , कोऊ पलटत नांह ॥ ६६ ॥

रसावला ।

कन्ह कोप्यो तबै । कीन जुद्धं जबै । धाय सूधौ बली । सर्व फौजं हली ॥६७॥
चाय पायं गहै । षाय धरती महै । काय बज्रं कियं । खाय सैना लियं ॥६८॥
गाय रागं दुषं । धाय डट्टै रुषं । वीर नारद नचै । चाय कीयै मचै ॥६९॥
छाय स्वर्गं रह्यो । जाय हंसं नह्यो । जाइ घल्लै षटं । षाइ षग्गं थटं ॥७०॥
ढाय रोषै नरं । धाय वाहे वरं । वांडि नाषै दलं । ताय तंगं कलं ॥७१॥
ईस डौरू बजं । भूत नंदी सजं । वीरभद्रं बली । मुंडमाली भली ॥७२॥
ईस कंधं धरी । मोद नंची परी । व्याइ वीरं बली । दाय दायं दली ॥७३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाय वथ्थं वरं । वाय पैरं धरं । जाय टुट्टै पहं । काय खिल्लै फहं ॥७४॥
वाइ बज्जै बरं । त्राय धावै धरं । माय ल्यारी मलं । जाइ ज्वालं जुलं ॥७५॥
वाइ पारै उरं । साइ कढ्ढै सरं । पाइ लिन्है पगं । हंस लग्गे मगं ॥७६॥
अंत गिद्धै गहै । आमिषं को चहै । सैन कंपै जबै । कन्ह दिष्पै जबै ॥७७॥

दोहा ।

कन्ह पान देषौ जबै , भगी सैन चंदेल ।
हन हथ्थी हलकान के , मुहरि मुहरि रन ठेल ॥ ७८ ॥
लाषनसी अप अग्ग किय , दिष्षिय सैन पलान ।
बुल्ल अष्ट उमराव सौ , तब कुप्यो बलवान ॥ ७९ ॥
हल्ला कौ गल्ला करिग , लष्षनसी चितु लाय ।
तब रुक्यौ अल्हन नृपति , पंगुर सपथ दिवाय ॥ ८० ॥

छप्पय ।

दिष्षि पराक्रम आल्ह कमध लष्षनसी बुल्लिय ।
तहलन तुरक पठान रूप मोरी पग घुल्लिय ॥
सुलंषिय केसरी वैस कलियान वीर वर ।
वोहित तोवर बिहसि सूर सैगर अमान धर ॥
सब सूर बीर एकत्र हुअ धारा तीरथ अद्दरिय ।
धुव धवल सीस धारहु धरम मुक्त आस संगर करिय ॥ ८१ ॥

दोहा ।

अल्हन डीलन आय कै , संभारी सब सैन ।
लघु दीरघ लौं टेर कहि , रन मन आनौ भैन ॥ ८२ ॥
जैसे जलधर भीम कौ , झंझावाय चलाय ।
पवन वान चहुवान दल , पल मह देहु उड़ाय ॥ ८३ ॥
तहलन मोरी रूप अरु , बुल्लि लषनसिय लीन ।
ये साँवत गहि साहि कह , चाहुवान कर दीन ॥ ८४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाचनीक । अल्ह बनाफर सब उमराव बुलाये । सत्रसाल गहिरवार, सोमवंसी सकतसिंह, चक्रपान बघेलो, दला गहिलौत, दुरजनसींघ पडिहार, पद्म सिंह पमार, लाला सैगर, सीहा भानैज, जगनाइक भाट, जल्हन भाट, परमानंद प्रोहित, करमचंद काइथ, कलियान काइथ, देवकरन बरई, भारामल बनिक, गंग बनिक, नरहरि गौड, रइसाहि गौड, ईसुरदास लोधी, इनकौ बुलाय तब अष्ट सावंत सहित लष्षनसी कमधुज्ज बुलाये । या कही कै म्हांकौ हरोली दैव तै जित्तौ । तब लष्षन सी बुल्यौ कै गंगा तीर म्हा सपथ करी है सो हरौली म्हां की है । अरु चहुवान कौ भंजित हौकै सिर अप्पिहौ ।

दोहा ।

करी पेल उर क्रोध अति , करयौ बनाफर राव ।
लष्षनसिय अंगै दियै , धाये सब उमराव ॥ ८५ ॥

पद्धरी ।

धावंत अल्ह सम्हार सैन । सरदार चार वर कहै तैन ।
गोयंद उद्द हरचंद सोय । इक्कन चलाय दल लष्ष लोय ॥ ८६ ॥
मेरी सुरूप सैगर अपमान । जादव सुदुं द बल दह्यौ पान ।
मंगल चौहान तोमर सपथ्थ । चालुक्क केस रन समर पथ्थ ॥ ८७ ॥
बड़ गुज्जरं रन महा बाहु । कलियान बैस वर समर चाहु ।
नरहरिय गौड कायथ कल्यान । सैगर विरद्द बोहिता ज्वान ॥ ८८ ॥
बघ्घेल सूर पूरन अमोर । षट्टास षग्ग परमास तोर ॥
लोधी सुधीर बहु धरहिं धर्म । ईदल सु सोमबंसी सुकर्म ॥८९॥
गौतम जुझार पालन पमार । गोकुल बघेल रन बिरचि सार ॥
भगवान सूर चंदेल चित्त । डौंगरसी देव दोवान रित्त ॥ ९० ॥
जगनिक्क भाट जल्हन जुवान । ईसुरह बनिक अतिजोर पान ॥
सकसैन काइथ करमचंद । मकरंद और श्रीवासदंद ॥ ९१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वर ईसु देव कन दुत्त जोर । अति गौर कृपा जूझन अमोर ॥
बछगोत जुद्ध जुत तेग चाहि । अठ भइय सूर नरराय गाहि ॥ ९२ ॥
जादौ सुभूप निगराय सूर । कछवाह राइ सुषलियह नूर ॥
गम्भीर बैंग अजानवाह । सुरषी वसंत नित समर चाहि ॥ ९३ ॥
अनरुद्ध सिंह सैगर भवाल । विरसिंह अंग बढ़ समरकाल ॥
जटवार जाट कमनैत पूत । धावर सुराय धुरवंस सूत ॥ ९४ ॥
पायक बुधूव उर क्रोध लाय । सीहा भनैज लिय तेज लाय ॥
लाला सुसूर ज्वाला चलाय । पर स्वामि निकट पहुँचै सु जाय ॥ ९५ ॥
दुरजनसिंह बंका सुटांक । भट इँद्रसिंह हनमंत हांक ॥
इत्तेसु इकठे भये जोध । सावंत सूर परि करहि क्रोध ॥ ९६ ॥
परमाल सथ्थ समरथ्थ देष । सावंत सूर सब नयन पेष ॥
सावंत सूर कह लगि गनाय । सब जुरी कुरी षटतीस आय ॥ ९७ ॥
वाचनीक । राजा पृथीराज संग्राम कह धावा करत चंदेल की सैना देषी । तब कयमासराय, सलषपमार, चंदपुंडीर, भैाहा चंदेल, जैतपमार, चावंडराय, संजमराइ, पहारसिंह तौमर, गोइंदराज गहिलौत, हर सिंह बड़गूजर, कनकसिंह दाहिमा, नरसिंह, अल्हन पडिहार, कन्ह चहुवान, ये सावंत बुलाय कही कै चंदेल के जोधा जीतवे कौ कठिन है । जा मह जय होय सेा करौ । तब कयमास आदि सब सावंत बेाले कै धारा तीरथ अस्नान कीजे विजै परमेश्वर के हाथ ।

दोहा ।

स्वामि धर्म हित तन तजहि , जाहि सु सुरपुर पंथ ॥
यह कहि सत्रन सनमुषह , धाये सब सावंत ॥९८ ॥

पद्धरी ।

कयमास चंद पुंडीर जोय । निढ्ढुरह जैत पज्जून सोय ॥
हाहुलिय राय हम्मीर बीर । सलषन पवार सजौ गहीर ॥ ९९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रावत्त राम तौमर पहार । संजमह राय रन विषम सार ॥
अतिताइ अंग चहुवान बंक । नरनाह कन्ह अंगै निसंक ॥१००॥
चावंड राय दाहिम सुजान । उप्पर करन्न सैना अमान ॥
निढ्ढुरह राय चहुवान संग । लष्षन चँदेल दल दयौ पंग ॥१०१॥
परमाल सैन लष्षन सुआय । प्रथिराज सैन निढ्ढुर सहाय ॥
भाई सुदोय बगमेल कीन । गहि चरन मथ्थ किरवान लीन ॥१०२॥

दोहा ।

लाषनसी परमाल दल , निढ्ढुर दल चहुवान ।
दोऊ सावंत आहुरे , कमधुज वीर अमान ॥ १०३ ॥

चौपही ।

लाषन जयचँद वंधवनन्दन । निढ्ढुराय भतीजा दंदन ॥
दोऊ बीर आहुरे जंगह । दल चंदेल सम्हारिय संगह ॥ १०४ ॥

दोहा ।

जेठे निढ्ढुरराय नृप , लाषनसी लघु भाय ।
पाय परस उन मथ्थ गहि , कर किरवान गहाय ॥ १०५ ॥
तीस बरस निढ्ढुर नृपति , बीस लषन लघु भाय ।
चाहुवान चंदेल हित , रन मह मुंचत काय ॥ १०६ ॥

मोतीदाम ।

मँडे निढ्ढुर लाषन सींह नरं । चहुवान चंदेलन दिष्षि मरं ॥
कमधुज्ज सुदोउव बीर अरे । बहु लाज जजीरन सौ जकरे ॥ १०७ ॥
हलकार कियं वल धार वयं । निरखै चहुवान चंदेल अयं ॥
वर जंत्रिय मंत्रिय लग्ग उरं । बहु फुट्टिय बानन धार परं ॥ १०८ ॥
लगि तीर सनाहन पार रुषं । सफरी परिजाल मैं काढ़ि कसं ॥
लगि सेल्ह दुहू सुप पेल कियं । निकसे फन पन्नग वार वियं ॥ १०९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

किरवान गहै वलिवान हथं । मरु मारु करै गहि धाय वथं ॥
तर गहत तेग न डीठ हथं । तरबूज मनौ ढरकंत मथं ॥ ११० ॥
जमदाढ लगै कर गाढ सहं । दुलही कर काठ गवाछ चहं ॥
इक सथ्थ लरै भरवथ्थ बली । तंह श्रोनित की सरिता जु चली ॥१११॥
दुहु पार करी गिरराज परे । बहु दंत दिये वगवंत अरे ॥
तंह ढाल सु कक्षप पुंज फिरै । मुख सूरन के अरिविन्दु धरै ॥ ११२ ॥
बहु बाल सिवाल सुतीर लगे । सफरी छुरता चिलकंत पगे ॥
अस कोस तरै अहिराज मनो । कपची पर पुंज कुम्हार मनौ ॥११३॥
परियान कुलीर विराजतयं । अपगा लषि कायर भागतयं ॥
फिरि तारक सायध जुद्ध करै । भव भूतल को भव भार हरै ॥ ११४ ॥
गहि दंत सुमत्त उपारि लियं । कर पीलन डील प्रहार कियं ॥
उचकाय सुपुंछ बली लहियं । हनुमंत दोना गिर से गहियं ॥ ११५ ॥
हय के गहि पाय पटक्क धरं । उडि हंस चले उडि कै अमरं ॥
गहि कै कर दोइ उबार लियं । अरि सैन समूह सबै दलियं ॥ ११६ ॥
उडि रैन अपार अकास छयं । नहि सुझ्झत अक्ष न भान अयं ॥
यहि भांति लरै कमधुज्ज बली । चहुवान चँदेल की फौज हली ॥११७॥
अप अप्प बली करि रोसु रुधं । बिफरे बर बंधव दोइ जुथं ॥
दुहू दल के सब जोध बढ़े । सुर देखत सर्व विमान चढ़े ॥ ११८ ॥

दोहा ।

राषन निढ्ढुरराय ये , कमधुज दोइ जुवान ।
आहुर ये संगर बली , भूतल भीम समान ॥ ११९ ॥

वाचनीक । आगै वीरभद्र गण शिव सौं संग्राम कौ विस्तार कहतं हैं । अहो पिता चंदेल चहुवान दल दोऊ भइया कमधुज लरत हैं जैसे जोधा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सतजुग त्रेता द्वापर मंह लरे ते तैसे लरत हैं। सो जो आपकौ इच्छा होइ तौ तमासौ देषिजे।

दोहा।

चतुर जाम संग्राम करि, निसि आवै अप ग्रेह।
सत्त अहन बिच स्वामि हित, तजत बीर इक देह ॥१२०॥
वीरभद्र मुष वचन सुन, सदासेव सुख पाय।
सुनौ पुत्र अचिरज्ज इक, थासौ बदत बनाय ॥१२१॥
करन भीम भीषम लर्‌यौ, अर्जुन द्रौन विचार।
तिन समान कलि उद्द लरि, कहत भविष्य विचार ॥१२२॥
अट्ट हाँसि हँसि उमापति, भये बृषभ असवार।
कलि भारथ दिष्षन भवन, चल्यौ सहित परवार ॥१२३॥

रसावला।

चले व्यौम केसं। चंदेल सुदेसं। चली साथ चंडी। हरं पिष्ट मंडी ॥१२४॥
चले मोर पत्तं। सदा छिप्र गत्तं। चले आप सांई। सदासेव दांई ॥१२५॥
चले भूत संगं। पिचासं सुरंगं। चल्यौ सज्ज भ्रंगी। लियै अष्ट संगी ॥१२६॥
चल्यौ गज्ज नंदी। सदा स्वाम बंदी। लसै व्याल माला। विसालं कराला १२७॥
विधं सूर चालं। त्रनैनं विसालं। लसै सीस गंगं। त्रसूलं सुचंडं ॥१२८॥
विषं कंठ कालं। लसै मुंड मालं। सुरंगी तरंगं। करी चर्म अंगं ॥१२९॥
विभूतं सुअंगं। लियं पान षंडं। असे प्रेत नाथं। सदा सिद्ध गाथं ॥१३०॥
इसी फौज सज्जं। चल्यौ भूतरज्जं। कियं डमरु नद्दं। मनौ मेघ भद्दं ॥१३१॥
नभं नद्द पूरं। सुरज्जान रूरं। गयौ संभु सोई। जहाँ जुद्ध होई ॥१३२॥

दोहा

अंतरीछ संभू षरे, दिष्षत दिल सुख पाय।
केरहि अवलोकन कथा, फिरि निद्दुर पर आय ॥१३३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय ।

निढ्ढुर राजकुमार फेर चिंता चित किन्नव ।
विरसिंघ मुंज भुवाल पुत्र इक इक विधु दिन्नव ॥
ससिव्रता के हेत मरन लष्षन रन आइय ।
जुगल बंध कट परहि राज कनवज कौ जाइय ॥
जयचंद नृपत आपत्त बिन बहु काली बहु मुख सुनिय ।
करतार करी मिंटय न कोई कर प्रबोध मथ्थह धुनिय ॥१३४॥

दोहा ।

निढ्ढुर नृप मथ्थव धुनिव, मानस वृथा विचार ।
गयव राज जयचंद कव, कहा कीन करतार ॥१३५॥
मुंज सुवन सिरराज कव, राजतिलक्क सुकीन ।
सो लष्षन चंदेल हित, प्रान देत जसु लीन ॥१३६॥
यह कहि कर निढ्ढुर नृपति, कियहु बोध चित लाइ ।
रचि रष्षी भाभी सुविधि, मिट्टत कवन बनाइ ॥१३७॥
जुरे बंधु जुग जुद्ध मह, करत घोर घमसान ।
लषत सिद्ध गंधर्व गन, अमर सीस असमान ॥१३८॥

चौपही ।

दुहुँ दल कढि उप्पर कह आवहि । सामँत सब किरवान चलावहि ॥
जे भट अमर समर सम तारे । सहस सहस विय बीर संधारे ॥१३९॥

छप्पय ।

निढुर राइ कमधुज्ज वंध बिरसिंह जेट्ठ कह ।
अनुज मुंज महराज तस्व लष्षन कुमार लहि ॥
चाहुवान चंदेल मिले दल मेल षेल सज ।
भाइय भाई विरचि वीर नीसान पान गह ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पेषत अनिय दोऊ धनिय लटा वटा परियौ प्रगट ।
परमाल अवर प्रथिराज हित स्वाम काज सौपंत घट ॥१४०॥

दोहा ।

लरत वीर कमधुज वली , गहै कोप कम्मान ।
चलत भूतपति मुदित सब , अमरसीस असमान ॥१४१॥

चौपही ।

सप्त अहन भर भइय लराइय । हय पुर थार छार नभ छाइय ॥
दसौ दिसा मुदित दिन राइय । लोह लहर बरषा बरषाइय ॥१४२॥

दोहा ।

भीम जुद्ध जुग बंध किय, टड्डी सम चलि वान ।
अली अली कर धाइया, तालन सहित पठान ॥१४३॥

छप्पय ।

लष्षन सी उप्परह वीर तहलनषां आयव ।
मोरी रूप सुधार दुं द जादवह चलायव ॥
मंगलसी चहुवान तवर उथ्थाप नाह नर ।
कुवरपाल सक्रवार पेात चालुक केसव भर ॥
सौनिग राइ बड़गुज्जरह सैगर राइ अमान सजि ।
लष्षनह काज येते भिरन आये पंग कुमकु सजि ॥१४४॥

दोहा ।

भूर भूप जयचंद के, सावँत पिले अमान ।
कन्ह जयत कयमास सह, बुल्यो नृप चहवान ॥१४५॥

चौपही ।

पंगुराय जोधा जुरि धाये । लाषनसी उप्पर कह आये ।
तुम सावँत मिलकै सब धाइय । निढ्ढुर नृप कौ करौ सहाइय ॥१४६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

निद्दुर राय सहाय कह, हुकुम कीन चहुवान ।
काढि काढि किरवान लिय, जुर धाये बलवान ॥१४७॥

छप्पय ।

निद्दुर राय सहाय चले सावंत मंत धर ।
कन्ह जयत कयमास सलष लष्षन सुबंध कर ।
पल्हन द्वै पज्जून वीर तौमर पहार वर ॥
पिले इते सावंत हथ्थ बाहै हजरत पर ।
दुहु सयन अयन दिष्षिय नयन धीर वीर धर षग्ग हथ ॥
चहुवान वीर चंदेल पिल प्रथम लोह लिन्निय सुहथ ॥१४८॥

दोहा ।

विरच बीर कमधुज्ज विय, बुल्लत सब्द गहीर ।
पीथल नृप परमाल हित, संगर तजत सरीर ॥ १४९ ॥

षड्डरी ।

विरचौ सुलौह लष्षन सुधाई । ता सीस कुप्प निद्दुर सुआय ।
बजाय वाह गल गज्ज ,नद्द । सजाय सैंन उत्तंग बद्द ॥ १५० ॥
हलकार इष्ट किलकार देाय । हनि मंत सकति पढ़ि रुकत सेाय ।
लष्षन सुपाय बजरंगवीर । निद्दुर अरात सकती गहीर ॥ १५१ ॥
हुंकार सब्द वल करत हांक । तिहु लोक मद्ध बढ़ चलिय धाँक ॥
बिफुरे सुबीर बानैत बाहि । मैगल तुरंग दिन्नै सुठाहि ॥ १५२ ॥
काटंत दंत मारंत पील । धारंत तेग अरबेग डील ॥
गहि सुंड पुंछ पेरंत ताहि । नाषंत वीर अंवर सुवाहि ॥ १५३ ॥
हेवर उठाइ पटकंत भूम । असवार देह हुइ फाक झूम ॥
बाहंत बान बलिवान एक । फाटंत अंत कपचं अनेक ॥ १५४ ॥
उड्डिय रयन्न सुझ्झय न भान । अंमर अरूढ दिष्षत विमान ॥
धुंधरिग पूर दसहू दिसान । निद्दुर नरेस घन लषन रान ॥ १५५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छुट्टंत दुःख वर कटक कट्ट । धरनी पताल नभ पूर सब्द ॥
कर सेल्ह पेल बगमेल सोय । निकरंत पार बरबान लोय ॥ १५६ ॥
दुहु तेग वेग लगि कंध सुंड । फरहरत बीर धर परत रुंड ।
लग्गत कटार तनही कवार । ऊँची अटार जन घुल किबार ॥ १५७ ॥
रज कवच नाम पीदंत कोप । फन करत नागिनिय जंत्र रोप ॥
बाहंत मुष्टका सष्ट भाल । निकसंत अंख श्रुत श्रोन लाल ॥१५८॥
जादौव दुंदमारी सरूप । मंगल चौहान मड़ि मँगल रूप ॥
वोहित्त तवर भारथ्थ वाहि । कूवर सुपाल जादव सहाहि । १५९ ॥
सौनिग्ग राय सैगर सुजाल । तहलन पठान सजि समर काल ॥
हजार पंगु पच्चास वीर । लाषन कुँवार सज्जो गहीर ॥१६०॥
वाहंत तेग विफरंत आय । इक साथ होय धाये उताय ॥
अवलोक इक्क निढ्ढुर सुचौज । पच्चास सहस पंगुर सुफौज ॥१६१॥
धावंत वेग बाहंत रूक । लपटंत लाय उट्ठंत ऊक ॥
जोधान सीस बाहंत सार । कर मार मार लष्षन कुमार ॥१६२॥
सिरदार अष्ट तहलन पठान । जलधर सुतुल्ल वरषंत बान ॥
पच्चास सहस दिष्षे जुवान । पेलंत पील पब्बय समान ॥१६३॥
नृप प्रथियराज चहुवान हेर । कहि कन्ह जयत कयमास टेर ॥
जयचंद फौज आइय सम्हार । तिहि अग्ग वीर लष्षन कुमार ॥१६४॥
निढ्ढुर नरेस कह समर मार । तुम करहु वीर उप्पर सम्हार ॥
सुन बैन ऐन सब सूर आय । लिय तमक तेज लोहा रिसाय ॥१६५॥
प्रथिराज भूप सह कर जुहार । कर पसर वीर मुष मार मार ॥
पिलि सिलह पोस बद्दल समान । सकती चमंकि दामिन समान ॥१६६॥
भव नाद बुंद बरषंत बान । पर असन तुल्य गोला जधान ॥
निस्सान बान सुर धनुष लिष्ष । सिर सेत छत्र बगपति दिष्ष ॥१६७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रटि मोर घोर नक्कीब जाल । चात्रक पिसाच भर करत ष्याल ॥
संकर भवानि भैरव समथ्थ । सेवक सहाय सब फिरत सथ्थ ॥१६८॥
काहू सुसूर जलपति अराधि । धनपति पवन सुत सूर साधि ॥
काहू गनेश काहू कुमार । करि इष्ट सूर देवा अपार ॥१६९॥
चहुवान भग्त उर माझ धीर । कोऊ बिना इष्ट दिष्षे न वीर ॥
कर पसर सर्वलिय अत्रबान । कम्मान चलय गोला जघान ॥१७०॥

दोहा ।

चाहुवान आयस दयौ , बुल्लि जोध वर वीर ।
सब उप्पर कह पहुँचियौ , निढ्ढुर नृप के तीर ॥१७१॥

नीसानी ।

चाहुवान आयस दिया वर वीर हकारे ।
अप्पन अप्प देवता सबही उर धारे ॥
सावँत सूर हलाकिया जग अग्ग पधारे ।
संगर परत सिलीमुषा जनु मेघ झलारे ॥१७२॥
मारु मारु मारू बजै निस्सान बजाये ।
पंग सैन सब रूक्किया सावँत सब धाये ।
इत विरसिंह सी पूतरौ संगर अभिमानी ।
उत लष्षन सी मुंजरौ किय अकह कहानी ॥१७३॥
दोउव वीर धरा लरै साषा कर भारी ।
कृत जुग जुग चालिया अचला मह सारी ।
कन्ह जयत कयमास रा जोधा बड़ वारी ।
ऊभा चरनन चालिया कीन्ही बहु रारी ॥१७४॥
उत सावँत परमालरौ अल्हन सी रूरौ ।
जह लरिया तह जीतिया आनन पर नूरौ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

डौगरसी सत्रसाल जी ऊदारन राजा ।
पर पुंजन इम मारिया षग पुंजन बाजा ॥१७५॥
सैन बरावर दोइया कवि कोविद गावै ।
जो भूतल फिर जीतिया करतार जितावै ॥
उत अल्हनसी कोपिया धर संगर बोधा ।
इत निढ्दुर कर इक्क लष धाये सब जोधा ॥१७६॥

दोहा ।

चाहुवान जोधा पिले, करि आगै अति पील ॥
सैना घन जयचंद किय, लषि निढ्दुर इक डील ॥१७७॥

पद्धरी ।

लषि डील इक्क लष्षन नरेस । दौरे सुकन्ह कयमास तेस ॥
पज्जून लषन मिल जैत जोर । नरसिंह समा चलिगौ अमोर ॥१७८॥
कीनै जु चले सामंत चौज । रुक्यौ सुजाय विच यंग फौज ॥
षुल्लीय अंषि पट्टी सुकर्न । उट्ठंत रोम भय लाल बर्न ॥१७९॥
समुहाय आय तहलन सुवेग । पहुँचौ सुकन्ह पर काढ तेग ॥
कीन्ही सुहांक गलगज्ज चाय । दीन्ही सुकन्ह के सीस आय ॥१८०॥
भ्रमियौ सुकन्ह किरवान चोट । घटिका सुदोय भुव मांझ लोट ॥
भय मूरछाह घटका सुचार । तब लग पजून मंडी सुरार ॥१८१॥
इक सहस सूर तहलन सुमारि । तौंवर पहार जमनन सुमारि ॥
जागी सुमूरछा महत ओट । पीछै सुकन्ह हनकंत चोट ॥१८२॥
टुट्यौ पठान हेवर समेत । भिद्दिय सुधरा किरवान षेत ॥
फिर दई तेग कयमास जोर । सिर परिव टुट्ट उड्डौ सुघोर ॥१८३॥
उड रुंड मुंड मारत्त हांक । तहलन पठान रन करिय धांक ॥
कर लिये षग्ग सूरन गिराय । कयमास कन्ह पर संड आय ॥१८४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीन्ही सुतेग बहु बेग जाय । कयमास कुद्द हेवर पपाय ॥
गव्यूत अर्ध सैना चलाय । करि कोप कन्ह रुंडहि गिराय ॥१८५॥

दोहा ।

तहलनसी रन जूझियौ , संगर कीन बनाइ ।
ता पीछै जयचंद के , लरत अष्ट उमराइ ॥१८६॥

पद्धरी ।

हनियौ पठान सैनिग्ग दिष्षि । चलियौ सुसाज सैना सु पिष्ष ।
आयौ पजून सैना सुअग्ग । लग्गइ कुंत छाती सुअग्ग ॥१८७॥
पज्जून दइय किरवान जाइ । दीन्हौ सुमैट संगर पपाइ ॥
दिष्षयौ रूप मोरी पजून । आयौ सुसथ्य सावँत नरून ॥॥१८८॥
पज्जून रुप मोरी लराइ । लषि भीम जुद्ध कायर कपाइ ॥
मोरी सुरूप सकती चलाइ । पज्जून अस्व दीनौ पपाइ ॥१८९॥
पज्जून संग घल्लिय सहार । सिप्परहि दीन मोरी सुडार ॥
हलकार आय मोरी सुधीर । उत उरर ऊभ चहुवान वीर ॥१९०॥
मोरी सुरूप मंगल चौहान । जादौव दुंद चंदेल मान ॥
मालव केसरिय समर सौर । आठ भाइ आइ उमँड दौर ॥१९१॥
द्वादस सुभाइ त्र्योदस सुभाई । षोडस सुभाई सम भीम आइ ॥
नारैन नवल दल निपट वीर । पज्जून सीस सज्जौ गहीर ॥१९२॥
मचकंत धरा लचकंत सेस । कलकंत क्रूर चंदेल देस ॥
वाहंत वर्ज कर सवर साइ । जनु करत अंत पर वरून ताइ ॥१९३॥
पज्जून कोप लिय तेग हथ्थ । मारयौ सुजाय सैंगर समथ्थ ॥
फट्यौ सुदेह कट्यौ तुरंग । भई धरन लाल रँग तै सुरंग ॥१९४॥
जादव सुदुंद चंदेल मान । पकरै सुमथ्थ पज्जून पान ॥
हेवर समेत धर पर गिराइ । फोरै सुसीस कर मसक ताइ ॥१९५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भज्जे सु सबै भिय समर छंड । उभै पज्जून उमराव पंड ॥
इहि भांत भई अति घोर मार । फुट्टहि सु कपच्च उर जाय फार ॥१९६॥

छप्पय ।

हन तहलन पट्ठान कन्ह काढ़े सुप्रान रन ।
सैगर सौनग राय वीर चंदेल परे तन ॥
ताल्हन केसवदास पास परगह सब सुत्तव ।
कछवाहौ कूरंम जोर जमलोक जुझ्झ तव ।
बारह हजार रजपूत कटि हथ्थिय पंच पचीस दल ।
जयचंद फौज मुर कर चलिय परिव कोप सावंत हल ॥१९७॥

दोहा ।

परे तिंस गजराज रन , पंच सहस हयराज ।
परे सुभट द्वादस सहस , गये धाम सुरराज ॥१९८॥

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२५) सैन सहित लष्षनसी वध खंड ।

दोहा ।

करिय अष्ट सिंधव सहित , सत्त सहस भर नास ।
भइय पज्जूनहि मूरछा , इतनै संग सुपास ॥१॥
भगिय सैन लष्षन लषिय , तहलन आयो काम ।
हाक मार जयचंद दल , तब बुल्ल्यौ रिस ताम ॥२॥
फिरहु फिरहु सब सूर हौ , बुल्लव लष्षन राइ ।
पंच सुभट सह समर मह , तहलन चले जुझाइ ॥३॥

चौपही ।

तहलन परे पठान सुजंगह । पंच परे सरदार उमंगह ॥
बारा सहस जंग रन सूते । हथ्थिय तीस मतंग सहूते ॥४॥
मूरछाह पज्जून सु सोइय । हथ्थिय अष्ट महा मद भोइय ॥
सत्त सहस परि षेत जुवानं । उप्पर रन किन्नव चहुवानं ॥५॥
भजिय फौज पंग की सोइय । सो लष्षन देषी द्रग दोइय ॥
बानी कही रत्त कर नैनं । सपथ भुल्लि गंगा कर ऐनं ॥६॥

दोहा ।

जाय भूप जयचंद कौ , कहा उचारौ लोय ।
महिय लोक में अमर नहिं , मरन काल इक होय ॥७॥
बानिय सुन सैना फिरिय , लष्षन कहिय निराट ।
घेरयौ निढ्ढुर राय कौ , पिले सामुहै ठाट ॥८॥
महावीर बानैत वर , कनवज के भटराय ।
लष्षन की यह बात सुनि , घेरयौ निढ्ढुर आय ॥९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोतीदाम ।

सुनी दल बानिय लष्षन सोइ । फिरे रजपुत्त इकत्तन होइ ॥
बुल्यौ यह शब्द सु राजकुमार । तजौ भुव लोक!के सर्व विहार ॥१०॥
बसौ सब सूर सुरप्पुर जाय । तजौ रन तीरथ उत्तम काय ॥
इती रजपुत्तन बत्त सुनाय । लई तुलसी श्रग कंठह नाय ॥११॥
करी रन मै मरवे किय संघ । लिये गल सालिगराम सुबंध ॥
तबै सब बीर समीप सुजाय । बुले नृप लष्षन सौ चित लाय ॥१२॥
सुनौ यह बत्त सु राजकुमार । तजै यह प्रान सु काज तुमार ॥
किये अग पील चले सिरदार । परे सब निढ्ढुर के सिर भार ॥१३॥
हजार छतीस सजे रन सुद्ध । जुरे सब आय करैहि विरुद्ध ॥
कठेरिय बाबुव जेार जुवान । विरंचिय गौतम श्री भगवान ॥१४॥
जुरे दलपत्तिय बैस मरंद । पिले अठ भैया भेरन भंद ॥
नराइनदास दिये रन भार । मकुंदसी काइथ झिल्लिय सार ॥१५॥
पिल्यौ बगबीर मुलाषिय षान । भतजीव तालहन कौ बलवान ॥
लषौ नरनाह सुकन्ह दुवाह । चले कयमास विये सँग चाह ॥१६॥
चल्यौ भरचंद पुंडीर सजोय । महाभर निढ्ढुर कौ रन जोय ॥
उतै रुपि लामिय लष्षन सुद्ध । इतै रुपि निढ्ढुर राय सुजुद्ध ॥१७॥
बहै किरबान जुवानन हथ्थ । कियौ रथ ऊपर ज्यौं जय पथ्थ ॥
भरक्किय सैन सुछुट्टिय तोप । करक्किय जंत्रिय सूरन लोय ॥१८॥
मरक्कय बानन पंजर छेदि । सरक्कय सेल्ह दुहू दल भेदि ॥
लगै बल संग सुपील गिरंत । सनम्मुष सूर उपारहिं दंत ॥१९॥
गहंत कमान बुलाषिय षान । भतीजव तालहन कौ बलिवान ॥
तनं सत सत्त जुछुट्टिय बान । उडी जन टीडिय सत्र जघान ॥२०॥
करै सर बारं बार जु मार । करै किलकारिय जुग्गिन भार ॥
बहै किरबान परै सिर सूर । करै बहु रोस दुहू दल पूर ॥२१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दुहू दल पील पिले जनु मेर । जुरे भट भीम परी समसेर ॥
कहै बहु बार समान सुसेर । कटे हय कुंजर पुंज सुढेर ॥२२॥
करी किरवान बुलाषिय षान । करयौ दल निढ्ढुर कौ कतलान ॥
बुलाषिय मार करी अधिकाय । चली चहुवान की फौज पराय ॥२३॥
तबै झुषि बुल्लियौ निढ्ढुर बीर । चले मम छंडि अरत्तिन तीर ॥
किते दिन जीवहुगे तुम बीर । निरष्ष मलेछ न जौ रन धीर ॥२४॥
सुनै सब सूरन निढ्ढुर बैन । पिले भर आयुध हथ्थन ऐन ॥
गही तर तेग बुलाषिय षान । रटै मुष मार अपार पठान ॥२५॥
घनं घन घालत बाउ सम्हार । तनं तन फुट्टत लुट्टत रार ॥
गहै सिर सीरष जुट्टत आय । गिरै धर धीर गनं गच घाय ॥२६॥
तबै रनकोप कियौ नरनाह । गहे कर अत्र धसाये बाँह ॥
भरे रिस नैन सु चावँड राय । कढी किरवान धस्यौ दल आय ॥२७॥
दुहू दल मारुव मार सुनंत । परै धर मै धर सीस अनंत ॥
बिना पग भूम उठे असु टेक । लसै बर बीर बहोरिन भेक ॥२८॥
भये तन चून न छंडन दाव । तकै अर उन्नित घालत घाव ॥
सुमेछन मंडित हिंदुन अग्ग । गयौ सब लेगन सौं तन लग्ग ॥२९॥
किय जुद्ध सु कन्हर चावँड राय । बली जयचंद की सैन षपाय ॥
हनै सब लष्षन सीह सहाय । करयौ निरभै भय चावँड राय ॥३०॥
हँस्यौ लषि लष्षन जुझ्झत बीर । तजौ रन तीरथ मज्झ सरीर ॥
धस्यौ नृप लाषन संजुग बीर । गयौ भर निढ्ढुर के तर तीर ॥३१॥
तमंक कुमार गही किरवान । तबै यह लष्षन बुल्लि जुबान ॥
अहो नृप निढ्ढुर लै कर सार । करौं मम सीस पै आपुनि वार ॥३२॥
बुल्यौ नृप निढ्ढुर थां लघु भाय । करौ पहिलै मम ऊपर घाय ॥
मिल्यौ षग निढ्ढुर लष्षन आय । निरष्षहिं नूर बिहूर सपाय ॥३३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गही किरवान सु लष्षन रोस । दई सिर निढ्ढुर कट्टिय कोस ॥
कटौ सिरु आय सुपग्गहि कट्टि । गिरयो धर निढ्ढुर रामहि रट्टि ॥३४॥
लगी किरवान पगी बलमार । भ्रम्यौ बल सूर कुस्यौ सत वार ॥
गही कर निढ्ढुर बीर गुरज्ज । दई बर लष्षन सीस मुरज्ज ॥३५॥
सहस्र सुट्टक भयौ सिर सोय । परयौ धर लष्षन लष्षन होय ॥
भगी सब सैन लषी उमराय । तबै सब धाये क्रोध कराय ॥ ३६ ॥

दोहा ।

लष्षनसी दिल देव बसि , उठव रुंड सिर धार ।
इक्क सहस तनु परहि तह , भूतल सुभट सधार ॥ ३७ ॥
निढ्ढुर पर धर अंत सम , लष्षन अंत सुपाय ॥
पुनह फेर संगी लरत , भरत देवपुर जाय ॥ ३८ ॥

मोतीदाम ।

भयौ धरन मूरछा निढ्ढुरराय । गिरधर अंत जु लष्षनराय ॥
गही किरवान सुकन्हर कोप । चले कयमासऽरु चंद सुजोपि ॥३९॥
उतै सनमुष्ष सुबाबुव साज । भयौ भगवान हरौल सुगाज ॥
जुरे दलपत्ति लियै किरवान । चले रन बंधु नराइन तान ॥ ४० ॥
मकुंद सी कायथ अग्ग सुहोय । हतौ बगसी दल पंगु को सोय ॥
मिलौ बर कन्ह पुँडीर सुचंद । कँठेरिय बाबुव रोपिय दंद ॥ ४१ ॥
इतै भगवान हरौल सुगाजि । नरब्बद और नराइन साजि ॥
लई कर साग सुकन्हर कोप । दई भगवान के सीस मैं रोप ॥४२॥
भई सिर पार परयौ धर मद्ध । तबै चल आयव बाबु अरद्ध ॥
नरायनदास नरब्बद कोप । मिले तिहु आय कै कन्ह कौ रोक ॥४३॥
मुदगर कन्ह पै तीन नै वाहि । लगी तन कन्ह सुघुम्म्यौ पाहि ॥
उठे धर मुरछा जागिय कन्ह । भयौ रिस प्रात प्रभाकर बर्न ॥ ४४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गहे तब कन्ह ने तीन के चर्न । पटक्किय लैकर उत्तम धर्न ॥
भये धर चून हते रन तीन । किये निरजीउ भये वपु हीन ॥ ४५ ॥
भजी जयचंद की फौज विराट । कियो नृप लाषन निढ्ढुर काट ॥
कटे रनवीर गये सुरलोक । थके रन कायर किन्नव सोक ॥ ४६ ॥

दोहा ।

लाषनसी रन पोढ़ियो , नरबद और नरैन ।
पर घायल निढ्ढुर कमध , दो अठभैया तेन ॥ ४७ ॥

चौपही ।

परयो कठेरी बावू जंगह । अरु गौतम भगवान अभंगह ॥
नरबद और नरेस रन कट्टिव । पंग काम रन ताम उपट्टिव ॥ ४८ ॥

दोहा ।

लाषन की सैना सबै , गई सथ्थ कर दंद ।
कटे वैस दलपत्ति अब , अरु कायथ मकरंद ॥४९॥
करिय थप्प जयचंद नृप , मुंज सुवन नृप कीन ।
सो लष्षन चंदेल हित , मथ्थ महोवै दीन ॥ ५० ॥
कनवज महवर उप्पजे , कनवजपत्ति कहाय ।
सो लष्षन विध वस्य हो , कट्यो महोवै आय ॥ ५१ ॥

छप्पय ।

दौर दलपती वीर वेस दाटन दल भारिय ॥
लषि काइथ मकरंद चंद पुंडीर अषारिय ॥
सनमुष हयो श्रीवास हतो बगसी दल सोइय ॥
कर लेषनि किरवान दोत सावंत सिर वोइय ॥
उचरिय इष्ट गिरजा सुमुष कुरष क्रोध सैना हनिय ॥
जयचंद चरन धर सीस पर प्रगट लोह समरहि मिलिय ॥ ५२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा ।

धन्न सुभट जयचंद के , ते लष्पन के सथ्थ ॥
बैस अवर बगसी रह्यौ , ये पिक्षै कटि जथ्थ ॥ ५३ ॥
इतै चंद कयमास भर , करि आये मुषमेल ॥
उत बगसी दलपत्ति पिल , करत वीर अस षेल ॥ ५४ ॥

भुजंगी ।

पिलौ बैस दलपत्ति सनमुष्ष सूरौ । गही तेग हथ्थं समथ्थं करूरौ ॥
वियं जप्पियं सूर मकरंद वीरं । अषारै मडै वे पचारै नहीरं ॥ ५५ ॥
हलालं कियं लौन पंगान तब्बं । नये पाँच चहुवान दल रोक सब्बं ॥
गजे नद्द गोला बँदूषै बरष्षै । किते काइरं अंग जंगं धरष्षै ॥ ५६ ॥
बहै नावकं चावकं तीर सारे । लगै अंग अंगं मनौ सर्प कारे ॥
मिलै हथ्थ हथ्थं विहथ्थं जुवानं । किधौ षेल षेलंत होरी रमानं ॥५७॥
बिकट्टै बहै षग्ग घट्टै सुलागी । फिरें काट अंगं हयं देह पागी ॥
झिलै झेल झल्लै सुझिल्लै झटक्कै । जुवानं कियै जेन तेरा लटक्कै ॥ ५८ ॥
चरं चूरियं चाय अघ्घाय चंदं । सिरं उद्दिढ छिं छिं अरकास बुंदं ॥
ठठुक्कै नही सूर लषि लोह आचं । टटक्कै परे टुट्टते अंग नाचं ॥ ५९ ॥
बजै ईस डौरू सुनै सूर नादं । किधौ पंड कौरौ बिहू मंच वादं ॥
इतै चंद पुंडीर मकरंद दिष्यौ । अमोरं भुजां ते वचन उच्च अंष्यौ ॥६०॥
गह्यौ चंदनै काइथं पंगुरे कौ । लषौ सैन षग्गं सबै जंगुरे कौ ॥
इतै चंद पुंडीर मुषमेल कीनौ । दुहूँ हथ्थ किरवान बलवान लीनौ ॥६१॥
दई चंद कै सीस मैं वीर आनी । किधौ बीच आकास झिलमंझ पानी ॥
कट की सु चंदं धरा मध्य आइय । लष्यौ वीर कयमास बाजी सताइय ६२
दई दौर कयमास मकरंद सीसं । करी आय चायंस देवी सधीसं ॥
लई फांक अंगं हयं फार षग्गी । धरा षग्ग चाली धरा आइ लग्गी ॥६३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परयौ देषि मकरंद दलपत्ति धायौ । मुषं मेल कीनै करं सेल्ह नायौ ॥
हत्यौ आय कयमास के अंग भारी । वरं भेद अंगं निहंगं हकारी ॥६४॥
परयौ दाहिमा देषि चावँड धायौ । हनौ आन कै सीस किरवान चायौ ॥
भ्रम्यौ बैस फिर चेत सेल्हं सु हथ्थं । दई कोप कर बीर चावंड मथ्थं ६५
इतौ जुद्ध भीमं पहर पंच भायौ । हतौ मूरछा दाहिमा चेत आयौ ॥
लरै दाहिमा बैस संग्राम भारी । कपै गोगिरीसं घुली रुद्र तारी ॥६६॥
लयौ सीस मकरंद कौ दुर्ग धाई । हयं फुंक सौ मद्धि गंगा चलाई ॥
लियौ गंग तै ईस नै मेरु कीनौ । लरै बैस बलवान भूमै नवीनौ ॥६७॥
कहै बैस वत्तं सुनौ मीचु नीचं । करै क्यौ कराली लषन मोहि बीचं ॥
लियौ सेल्ह हथ्थं सु कयमास आयौ । हनौ अंग दलपत्त धरनी मिलायौ ६८
हनौ काइथं बैस कयमास भारी । लियौ हथ्थ षग्गं करी घोर रारी ॥
किधौं राम रामं न कोपे पचारी । भई जीत प्रथिराज परमाल हारी ६९

चौपही ।

हन मकरंद काइथह जंगह । दलपत बैस दमन किय अंगह ॥
तहां चंद घाइल मुरझ्यानै । भइय जीत कयमास सुभानै ॥ ७० ॥
तीस हजार लषन के संगह । संमर मांझ परे कट अंगह ॥
हाथी परे तीस अरु पंचह । बुल्लिय चंद बचन कवि संचह ॥७१॥
घायल निढ्ढुरराय अचेतह । दो सत परे कमद्धुज खेतह ॥
कनवज कुमक काम सब आइय । फतै लई चहुवान अचाइय ॥७२॥

दोहा ।

लष्षनसी सावँत सहित , काम आय रन राय ।
सुनत भूप अल्हन नृपत , पसर कीन अकुलाय ॥ ७३ ॥

पद्धरी ।

किन्नव सु कोप अल्हन भुवाल । करवाल कढ्ढ दोहु दल विसाल ॥
कट सुंड करिय लोटन्न लग्ग । मनु परत गिरिन तै गिर उनग्ग ॥७४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर परत पुंज हयराज जाल । जनु प्रलय करन कुप्पिव सुकाल ॥
श्रुत लग्गि कुप्पि खिंचत कमान । पारथ्थ बान सम परत बान ॥७५॥
भय तुमुल जुद्ध जोधा जघान । तहँ बान फुट्ट मुच्चंत प्रान ॥
तोमर सुसक्क सूरन लगाइ । बलमीक वपुष जनु सर्प जाय ॥७६॥
मुद्गर सुपरिघ बाँहै अपार । कर गुरज सत्त घिन्नक सुमार ॥
गोइंदराज कयमास राय । सलषन पमार विभ्भुर सुधाय ॥७७॥
लष्षन बघेल चावंडराव । इन रुक्क आल्ह मारग सुआइ ॥
चहुवान भूप जुद्धहि रिझाय । सब वार सूर किन्नव अघाय ॥७८॥
विय हथ्थ घल्लि असि वार झार । मारे सु सूर सैना अपार ॥
किय राह कट्टि सावंतराय । जोजन सु अद्ध सैना चलाय ॥ ७९ ॥

दोहा ।

लाषनसी अवलोकियै , दइय फौज विचलाय ।
मुंज सुवन की आल्ह नृप, अस्तुत करत बनाय ॥८०॥
चाहुवान वैरी दलह, मुंज सुवन दिय मथ्थ ।
पराचीन नृप आल्ह कव, कहत जगन सह कथ्थ ॥८१॥

चौपही ।

ससिवृता पतिव्रता निहारिय । रूपवंति अति अप्सर वारिय ॥
ब्रह्मन भट पठये दिसि चारिय । अति सुन्दर वर सोध विचारिय ॥८२॥

दोहा ।

चारू दिसि फिरि विप्र कहि , सुनहु भूप सिरमौर ।
सुन्दरता अरु चतुरता , लाषन से नहि और ॥८३॥
सुनत भूप दुज के वचन, तन मन अति सुख पाय
कनवज नृप जयचंद ग्रह, दिन्निय लगुन पठाय ॥८४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय ।

कासमीर सब गात बदन अंबुज सौ सोहत ।
इंदु तिया से करज दिष्पि अक्षर मन मोहत ॥
नील कमल से नयन वयन सुर असन बषानहु ।
रूप वारिजै मार वीर अर्जुन से जानहु ॥
दाता दयाल रवि पुत्र से बैन राम सो कहत ध्रुव ।
सब गुन अगाध भुव अवतरयो महाराज वर मुंजसुव ॥८५॥
लष्पन तहलन कहे सुतरंगिन तीरह ।
मनक्रम आदि सु अंत सबय निर्वाहि सु वीरह ॥
सपत अहनि करि रार सैन पीथल बिच लाइव ।
पछिल धरिव नहिं पाय घाय सनमुष घन पाइव ॥
जयचंद राज थर आपनिय बैठारा भूपति सुकरि ।
कविचंद कहय बरदाय बर को मिट्टय करतार कर ॥८६॥
दक्षिन दिस तै लगुन गइय कनवज्ज महापुर ।
सत हेवर दह पील हेम सत पंच महागुर ॥
धरिय लषन के हथ्थ पढ़िव दुज तियगन गायव ।
महाराज विरसिंघ बिहँसि धन कोट लुटायव ॥
त्रय लष्ष संग सैना सुदिय मुंज काज नृप सीष दिय ।
फरहर निसान सब बीर सजि जाम दिसा किय राह लिय ॥८७

दोहा ।

मुंजराज महराज चढ़ि, दये पील अगिवान ।
टूट दीह असमान तै, भूतल परिव निसान ॥८८॥

छप्पय ।

रुक्यौ न जयचंद बंध मनह उत्साह बहुत किय ॥
तोपवान अगवान वीर समरथ्थ बहुत लिय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तीन लक्ष लिय अस्व मुंज दक्षिन दिसि जाइय ॥
दूलह लष्षन राम ससित्रत सुंदर पाइय ॥
चहुवान आय दस सहस सह ता बनिता कब हरन किय ॥
यह बत्त सुमिरि सावंत वर पराचीन हित प्रान दिय ॥८९॥
मुंज सुवन महराज परिव लष्षन कुमार रन ।
मंत्र मंत्रि स्यौ रहिव छंड़ि नहि भगिव लक्ष जन ॥
कट करिय हय मनुज श्रोन किय सरित बहाइय ॥
पब्बय पील बिसाल दंत बगपंत सुहाइय ।
पनिहार सुजुग्गिन जाल तह बीरभद्र सिर माल कर ।
आनंद मानि चंडिय सहित हरि हरि कहि नाचंत हर ॥९०॥

दोहा ।

सिंघा अवलोकन कथा, कहय चंद कविराय
जुग समधी उर कोप करि, चाहुवान पर आय ॥९१॥
बार जाम संगर भयौ, श्रोनित सरित बहाय ॥
परे बीर हज्जार भट, गैयर सत्त गिराय ॥९२॥
चाहुवान भट सहस पर, हैवर जुगल हजार ॥
तव सावँत मन कोपु करि, पहुंचि जहाँ सरदार ॥९३॥
जुग समधिन सह जुद्ध हुव, षट सुलष्ष सह आय ॥
सब सावंतन मुंज कव, हथ्थिय दीन गिराय ॥९४॥

चौपही ।

षोडस वरस लषनसी आइय । बड्डे भैय वैर सुमिराइय ॥
सुनत बचन उपजै जिय लज्जह । सेा अब करिव हमारे कज्जह ॥९५॥

दोहा ।

पर कज्जह लष्षन करिग, ऐसिय करय न कोय ॥
मृत्युलोक तजि पलक बिच, गयव देवपुर सोय ॥९६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाचनीक। आगै कीरत सागर पर तल्हन पां ठाढ़े हते। तब यह जागा देख प्रमुदित भये॥ तब अल्हन सह बुल्ले अहो आल्हन राजा मुसकौ मट्टी परबार सहित इस तलाव पर दैना॥

दोहा।

लाषनसिय कह बन्हि दिय, आल्हन सी चितु लाय॥
ताल्हन सी परवार सह, महुवै देहु पठाय॥९७॥

सहस इक्क सिवका सुदिय, बहु ढीमर पठवाय॥
कीरत सर पर गड्डियब, स्यौ परबारहिं जाय॥९८॥

लष्षनसी तहलन सुधन, धन्न बुलाषी पान॥
गंगा पर जो उच्चरिय, तजी न तौन जुबान॥९९॥

धन्न संग उमराव जे, पंगुर दीन्है सथ्थ॥
लाषनसी छंड़ौ न जिन, दियौ समर मग मथ्थ॥१००॥

— ० —

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२६) अल्ह संबोधन खंड ।

दोहा ।

आयव लष्षन काम रन , उच्चर आल्ह सुभाय ॥
हम आवहिंगे काम सब , राज चँदेलन जाय ॥१॥

चौपही ।

उच्चरि आल्ह सुनौ सब संगिय । प्रथियराज किय फौज उमंगिय ॥
मारिव लाखन तहलन सूरह । क्षत्रिय धर्म निबाहिव पूरह ॥२॥
जगनिक भट्ट बुलाइय अग्गह । जो कुछ कहि कनवज्ज उमग्गह ॥
लाषन ताल्हन बचन निबाहिव । पीथल दल षग्गन सह ढाहिव ॥३॥
उम्मर बीस वरस इक सोइय । लरिव भीम भीषम सम सोइय ॥
टूक टूक संगर तन डारिव । लाषन कुँवर पाव नहि टारिव ॥४॥

दोहा ।

तुम बालक दिष्षव न द्रग , संगरु उदधि अथाह ॥
ब्रह्मजित्त सह अल्ह कहि , आपु कलिंजर जाहु ॥५॥
जाहु कलिंजर कुँवर बर , करहु तात सह बत्त ॥
महियपाल भुवपाल किय , स्रवनन सुनव न मत्त ॥६॥
चतुर दिशा की आस तजि , कुँवर भूप सह भष्ष ॥
साम दाम बहु भेद करि , चार देश भुव रष्ष ॥७॥
तीस पंच रन पील पर , अर्ध लष्ष किकियान ॥
लाषन ताल्हन पैढ़ियो , सावँत भीम समान ॥८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तुम राजा दीवान के , देहु दीह दिन दान ॥
म्हां राजा संग्राम कव , जाहिर सकल जहान ॥९॥

छप्पय ।

उच्चर बचन सुअल्ह सुनहु ब्रह्मजित कानह ॥
आपु जुद्ध सबु छंडि जाव जीवन घर मानहु ॥
हम करिहैं संग्राम काम आवहिं धर कज्जह ॥
तुम कालिंजर जाहु मिलव परिमाल समज्जह ॥
किज्जियव सेव तन जैान तजि दंड देस दै भष्षियव ॥
नृप राठ षटोला सिहुडरा नगर महोबा रष्षियव ॥१०॥

दोहा ।

विनय हमारी भूप सह , करिव कुँवर सिरताज ।
महियपाल भुवपाल कह , मत्तन दिज्जिय राज ॥११॥

चौपही ।

जौ भां विनय भूप चित्त धारहु । पड़िहारन कह छिप्र निकारहु ॥
जौ प्रिय अधिक निकट हिय लज्जिय । माहिल भूपति मत नहि दिज्जिय ॥१२॥

दोहा ।

जौ चाहौ अपनौ भलौ , कहियत राजकुमार ॥
स्वाम धर्म हित हम वदत , करिजौ परहि विचार ॥१३॥

छप्पय ।

तब कुमार उच्चरहि सुनहु आलहन धरिपत्तिय ॥
गयव भज्जि मम तात भइय ककुभान कुबत्तिय ॥
लष्षनसिय कमधुज्ज मरन कनवज तै आयव ॥
इक्क वधे विय नाहि ताहि संगर मन भायव ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तजि सेस भूमि जौ कनिक गिरि कदलिय सम महि अप हलहि ॥
संग्राम भूम चहुवान सह तौ न वीर ब्रह्मा चलहि ॥१४॥

चौपही ।

उच्चरब बचन ब्रह्मजित लोयह । सुनियै अल्ह श्रवन दै सो यह ।
तुम देषत षग्गन तन षंडहुं । सम्हरीक की सैन विहंडहुं ॥१५॥
लाषन तालहन काम सु आयव । अरु मंत्रिय मकरंद कटायव ॥
सुनहु बनाफर देर न किज्जिय । निर्भय राज स्वर्ग कव लिज्जिय ॥१६॥

पद्धरी ।

उच्चरिय ब्रह्मजित सुनहु आल्ह । चालिय सुजंग छत्रियन चाल्ह ॥
लिज्जै सुवाग मन मोह छंड । भिद्दै सु सूरमा लोह दंड ॥१७॥
सनमुष्ष घाय छत्रिय कटाय । देषंत सिद्ध सुरलोक जाय ॥
सुन बैन आल्ह ऊदल बुलाय । दिन्नव सुवोझ भारथ्थ भाय ॥१८॥
केसव सुदीप चंदेल सूर । बोहित्त वीर परिवार पूर ॥
कोहिय सुराय सल गौर लोह । ईसुरह दास लोधी सतोह ॥१९॥
मल्हन्न बोल भूपत्त भूप । बुल्यो सुभूप नरपाल रूप ॥
रूस्तंमषान पट्ठान धाय । माल्हन्न वीर छत्रसाल आय ॥२०॥
सकतेस सौमवंसी मरद्द । जगतेस धाइ गौतम सरद्द ॥
प्रोहित्त परमानन्द नाम । माधौ मर्द काइथ्थ काम ॥२१॥
मौहार वघिल वागरि सुग्राम । मिल्ले सु आय परमाल काम ॥
सेना सु साठ हज्जार तोल । उच्चरहि अल्हनहि संग बोल ॥२२॥
कनवज्ज नाथ दिय कुमक सुद्ध । आये सु काम सावंत जुद्ध ॥
लष्षन कमद्ध तालहन पाठन । पहिलै जुट्टट परियौ सुठाम ॥२३॥
चंदेल नौन किज्जे हलाल । किजियै जुद्ध आंवध विसाल ॥
लिज्जै सु लोह इक मत्त होय । चाहै सरीर बध जाहि सोई ॥२४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

इम कहत अल्ह बानी सुटोर। तुम सुनहु सूर इक मत्त जोर॥
रन तीर थांह जो प्रान छंडि। तजि मृत्यु लोक करि सुर्ग मंडि॥२५॥

चौपही।

सुनि अल्हन किय बानिव भारिय। तुलसी दल लै सैन सँभारिय॥
इक मत्त ह्वै जुर जुध किज्जिय। छत्री धर्म काज जिय दिज्जिय॥२६॥

दोहा।

अल्हन मत सुनियौ सबन, चितु दिय पग्गन षेल।
आजु बरे सुर अक्षरिय, नौन हलाल चँदेल॥२७॥
कहै बनाफर बैन जे, सब छत्रिन उर धाय।
संगर मह चंदेल हित, तजै बीर बर काय॥२८॥
कमल अक्ष भुज उर गसे, केसर कंचन गात।
ब्रह्माजित अवलोक कै, कही अल्ह नृप बात॥२९॥

भुजंगी।

कही अल्ह वत्तं सुनौ ब्रह्मजित्तं। धरौ धर्म चित्तं गहौ वत्त हित्तं॥
अबै बालकं बाल देहं सुहाई। दिपै कन्न मुत्ती नहीं मुक्ष आई॥३०॥
पचीसं दुयं नारि व्याही तुम्हारी। सबै सुन्दरी गाह चाहंत न्यारी॥
अतुल जुद्ध सावंत लष्षे सुभारी। करौ जुद्ध परमालनंदं विचारी॥३१॥
वियं षोडसं राजकुम्मार सोई। महातेज बहुवान बलवान होई॥
तजौ जुद्ध सामंत नृप संग जावो। पिछै राज परमाल नीकै जमावो॥३२॥
परै भार रजपुत्त स्वामहि निकारै। झिले लोह अंगं तिहंगं सम्हारै॥
धरौ धर्म सीसं सुछत्रिय सूरे। उवारंत स्वामी अषारं सहूरे॥३३॥
भजै रजपुत्तं धनी काम आवै। बसै रावतन के गहिरै परावै॥
आवै जाहु संगं कुँवर तात दोई। मरै देस काजै समाजै सुलोई॥३४॥
विनय राज मानौ गवन आजु कीजे। मल्हन आदि माता सबै सुष्ष दीजै॥
सुनी कुँवर बानी ब्रह्मजित्त सारी। तबै अल्ह सौ बैन बोल्यौ हकारी॥३५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धनी होय धरतीन के भोग भोगै । मरै नाहिं जातं हँसै सर्व लोगै ॥
नहीं बीज रजपुत्त कौ ताहि जानौ । लियै नार फिरतौ सुसंकर वषानौ॥३६॥
नरी नार छंड़ौ मरौ जुद्ध जाई । बरौ अष्परी सुन्दरी सुष्प दाई ॥
बधै पंच भुत्तं पुरानं सुगाये । चिरंजीव जीवं असारं सु काये ॥३७॥
नहीं जीव बालं न वृद्धं न ज्वानं । सदा एकरूपी मनुष्षी वषानं ॥
न जारंत बन्हिं न बुडंतं पानी । यहै बात सत्तं कहै बेद बानी ॥३८॥
नवीनं ग्रहै जीरन वास डारी । पराचीन देहं तजै देहधारी ॥
सुकं पंजरं छार पायै उडाई । बसै काननं मोद अंगं भराई ॥३९॥
यसी देह सो कन्ह धारंत जानी । महा वीर अल्हन कहै कौन बानी ॥
सुनै बैन परमालनंदं उचारे । भयौ चित्त चित्तं सु हित्तं विचारे ॥४०॥
सुनी आस बानी मुषं सुद्ध गाई । सबै लोग मानी पुरानन बताई ॥
जबै अल्ह जानी कुमारं सुग्यानी । भयौ अंग अंगं महा मोद आनी ॥४१॥

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीनदयाल गिरि की ग्रन्थावली ।

—:०:—

अनुरागबाग ।

—:०:—

दोहा ।

श्री पसुपति-प्रिय पद पदुम प्रनवौं परम पुनीत ।
मंगल रूप अनूप छबि कवि बरदानि सुगीत ॥१॥

कवित्त ।

विनसैं विघन बृंद द्वंद पद बंदत ही मानि अरविंद जो मिलिंद परसत हैं । ध्यावत जोगिंद गुन गावत कविंद जासु पावत पराग अनुराग सरसत हैं ॥ भागैं दुरभाग अंगराग देखि दीनदयाल पूरन प्रताप पाप पुंज धरसत हैं । ज्यौं ज्यौं ही पिनाकी-तनै वक्रतुंड झांकी परैं त्यौं त्यौं कविता के झुंड बांके दरसत हैं ॥२॥

छप्पै ।

किन्नर नर सुर निकर जासु किंकर तर मुनिवर ।
दरत चरन तर अधर दंड धर डरत जाहि डर ॥
वासर करतें आदि गगन चर जा मरजी चल ।
दृग इन्दीवर तरल फरक मैं फिरत चतुर फल ॥
अति समरथ है गुन अकथ प्रभु अचर सचर चर अचर कर ।
तजि कै चिर दीनदयाल गिर मधुर धराधर धरहिँ धर ॥३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नटवर वर जस करन सरन भय हरन चरन धन।
सरद कमल वत अमल दरद परसत न रहत तन॥
सकल अमर गन चहत लहत न कहत यह अचरज।
रवन भगत मन भवन दवन कलमष पद रज भज॥
मन कत छन छन भरमत मरत मरकट वत भव सयल पर।
यह तज अव सठ हठ कपट पटल पट अपट तर कलप तर॥४॥

[इति एक स्वर चित्रम् अथ लघ्वक्षर चित्रम्]

कवित्त।

सुवरन वरन लसत कटि तट पट मुकुट लटक छवि कहि न परति अति। मुरि मुसुकनि चल चितवनि जुरि जुरि करति विकल वह हृदय हरति गति॥ अलक झलक करि खलक करत बसि मनु अलि अवलि वरहि मिलि विहरति। वदन सरद ससि मदन चकित लखि जदुपति दुति निति विचरति अति मति॥५॥

मालिनी छन्द।

चरन कमल राजैं मंजु मंजीर बाजैं।
गमन लखि लजावैं हंसऊ नाहिं पावैं॥
विसद कदम छाहीं क्रीड़ते कुँज माहीं।
लखि लखि हरि सोभा संभु को चित्त लोभा॥६॥
कनक बरन काछे काछनी धेनु पाछे।
विहरत बनवारी गोप के वेष धारी॥
ललित लकुट हाथे मोर के पच्छ माथे।
सकल जगत स्वामी भानुजा तीर गामी॥७॥
विहरत जमुना के तीर मैं कृष्ण राजैं।
निरखि सुभग सोभा कोटि कंदर्प लाजैं॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अधर मधुर बंसी बाजती चित्त हारी ।
सुनत धुनि न मोहैं कौन हैं देहधारी ॥८॥
सजल जलद नीके स्याम तैं होत फीके ।
पट तड़ित विनिं दैं भूषि सोहैं गोविंदैं ॥
विलसति बनमाला वैजयंती विसाला ।
चलत गति रसाला मोहते नंद लाला ॥९॥
कुटिल अलक सोहै सीस चीरा लसो है ।
मदन मन फसो है स्याम अंगै बसो है ॥
सफल नयन ताके भक्त के भे पताके ।
निमिषहुं जिन ताके धन्य ताके पिता के ॥१०॥

[ग्रंथवाटिका रूपक]

दोहा ।

मंगलमय जो प्रथम की , कविताई कमनीय ।
सो सुभूमिका भूमिका , धरम परम रमनीय ॥११॥
काव्य कलानि प्रवीन कवि , हरि छबि जिनके हीय ।
ते माली यह बाग मैं , गुनसाली गननीय ॥१२॥
कवित उभय उत्थानि के , तेई अंकुर जानि ।
विरचे दीनदयाल गिर , थिर मति अति सुखदानि ॥१३॥
कहि जे वत्सल भाव की , जननी जसुमति वानि ।
भरी सुधारस वापिका , तेई हैं सुखदानि ॥१४॥
कवित सुमाधव ध्यानमय , रचे प्रथम जो सोधि ।
तेई सुखद द्रुमावली , रहीं सुमन अवरोधि ॥१५॥
स्यामा ते सखि को कथन , मोहन मृदु मुसुकानि ।
तेई यामैं सुमन हैं , मन सुमनस सुखदानि ॥१६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कथन प्रिया को सखिन सों , मोहन सोहन बैन ।
ते कोकिल किल अखिल हैं , यामैं अति सुखदैन ॥१७॥

दरसन जे चहुं भाँति के , हरि के बरनन कीन ।
ते बँगले यामैं भले , चहुँ दिसि लसैं नवीन ॥१८॥

राधा हरि जोरी सुखद , होरी बिरची चाहि ।
ते यामैं हैं मंजरी , भरीं माधुरी माहि ॥१९॥

राधा माधव झूलिबो , अलि को अलि प्रति बैन ।
तेई दोल अनमोल हैं , लोल लसैं सुखदैन ॥२०॥

कवित कलित वक्रोक्ति के , प्रश्नोत्तरहिं समोइ ।
ते यामैं लपटीं लता , ललित लहलही होइ ॥२१॥

मंडन खंडन बेनु के , जे कीन्हें गोपील ।
ते यह उपवन सारिका , मन हारिका प्रवीन ॥२२॥

लीला अंतर्धान की , विनय अंगहूं अन्य ।
ते सुबाग अनुराग के , हैं ललित लावन्य ॥२३॥

दोहा द्वादस मास के , गोपी बिरह अनूप ।
बरने ते यह बाग मैं , मोहन मनिमय कूप ॥२४॥

ऊधव प्रति नँदराय ने , कहे जे मधुरे बैन ।
ते सुक हैं यह बाग मैं , बोलत मृदु दिन रैन ॥२५॥

रितु बरनन बहु अरथ के , बरने जे यहि माहिँ ।
ते षट रितु पुनि पुनि लसैं , बसैं कहूं दुख नाहिँ ॥२६॥

खंडन निरगुन जोग के , मंडन मोहन प्रेम ।
ते यामें मकरंद हैं , करत सगुन प्रिय छेम ॥२७॥

ऊधव सों अभिलाषि निज , कथन किये बृज तीय ।
ते यह सोभित बाग मैं , हैं पराग रमनीय ॥२८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ऊधव मुख प्रभु तें कथन , बिरह दसा बृज केरि ।
ते बर बागनुराग मैं , हैं सुगंध की ढेरि ॥२९॥
पुनि ऊधव प्रभु पैं कहे , राधा तन्मय भाव ।
ते फल हैं यह बाग मैं , मधुर पुनीत सुहाव ॥३०॥
जोऽभिलाष प्रभु चरन को , बरन्यो निज अनुराग ॥
अष्टक नासक कष्ट को , सेा ह्यां विनय तड़ाग ॥३१॥
ग्रंथकार विनती विविध , प्रभुते बारं बारु ॥
कुंडलिका मय मानिए , सेा सीतलता चारु ॥३२॥
पुनि बनमाली तें विनय , कवितालो कुल कीय ।
हैं षट ते षटपद सबै , इते परम रमनीय ॥३३॥
अपर कवित बहु भांति जे , बरने विविध प्रसंग ।
ते पथ हैं यह बाग मैं , जिन लखि होत उमंग ॥३४॥

[माली वर्णन]

कवित्त ।

मूरुख मतंग ढिग आवन न देत क्योंहूँ पापी पसु पामर को करत किनारे हैं । थूरि मद कंटक को दूरि करि यातें भूरि ईरिषा कुसन खनि बाहिर निसारे हैं ॥ सूकर कुचाली नीच निंदक बिदारक जे बाटिका विरोधी तिन्हैं दंड दै बिडारे हैं । धारे बनमाली अनुराग घट प्रेमसाली माली यह बाग के सुकवि रखवारे हैं ॥३५॥

सुमति कुदारी गहि गोडत जुगुति क्यारी छोड़त न सुमन प्रसाद फल धारे हैं । सुनि धुनि सरस विविध बिधि मोद मृदु गुनि गुनि उमगैं हरष हिय भारे हैं ॥ सींचैं नैन नीरनि सों मुदिता लता समाय अति पुलकाय वर बाटिका बिहारे हैं । धारे बनमाली अनुराग घट प्रेमसाली माली यह बाग के सुकवि रखवारे हैं । ॥३६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[उत्थानिकांकुर]

कवित की जाति बहु भाँति गुनि रीत धुनि लच्छना कहां लों वाच्य विंजना जनाओ मैं। भूषन अनेक विधि दूषन न गिने जाहिं छंद के प्रबंधन कों किमि कै जनाओ मैं॥ चसके न छूटैं नवरस के कवित पाहिं परे तिन बस के कहांतैं पार पाओ मैं। प्रभु रूप जस कों बरनि मति करों सेत मन मुद हेत घनस्याम गुन गाओ मैं॥३७॥

कीजै छल छाँड़ि सेव राखिये न हिये भेव वही भलो देव जापैं जाहि की प्रतीति है। तान सुर ग्राम कों न काम अनुरागैं जौन जासों मन पागै तौन लागै भली गीति है॥ साँची रुचिराई मति राची अति जिन्हैं पाई तेई सुखदाई चलि आई यह रीति है। और सब फीको राधापी को रूप ही को गह्यो सोई लगै नीको जग जापैं जाकी प्रीति है॥३८॥

[वात्सल्य-रस-वापी]

सेवन करत बिधि आदि सनकादि जासु भेव न लहत सब देवन को पति है। कालऊ को काल जगजाल को विसाल नट जाहि दीनद्याल संभु सेस करैं नति हैं॥ नेति नेति गाया बेद भेदहु न पाया तासु माया पासु छाया अरु दाया जासु गति है। ताहि सुख पावै लहि नाच कों नचावै गहि मानि मोद गोद लै खेलावै जसुमति है॥३९॥

कबधौं पहिरि पीरे झगा कों सजै गो लाल कबधौं धरनि धीर द्वैक पद राखिहै। रगरि रगरि करि अँचरा गहै गो हरि कब डरि झगरि झगरि करि भाषिहै॥ मेरे अभिलाषन को पूरि कर साखन सों दाखन के संग कब माखन को चाखिहै। भैया भैया बोलि बल भैया सों कहैगो कब मैया मोहि को कन्हैया कब भाषिहै॥४०॥

मनि अँगनाई मैं निरखि प्रतिबिम्ब निज बार बार ताहि चाहि गहिबे कों धावै री। बाजति पैंजनी के चकित होत धुनि सुनि पुनि पुनि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मोद गुनि पाँयन हलावै री ॥ सांझ समै दीपक कों बिलोकि फल जानि कोऊ लेवे को चहत दोऊ कर कों उठावै री । बैयाँ बैयाँ डोलत कन्हैया की बलैयाँ जाँउ मैया मैया बोलत जुन्हैया को लखावै री ॥४१॥

बृज की लुगाई हैं चवाई कैसी लखो माई आवहिं सदाई इतै करि करि कोटि व्याज । कहैं लँगराई करै कान्ह है तिहारो बंक लावत कलंक इन्हैं आवति न संक लाज ॥ वारो है दुलारो मेरो चलिबो न सीख्यो चाल अबहीं न लाल कों पहिरि आवै बाल साज । हालने लगी हैं घुघुरारी लट नेकु नेकु पालने ते लालने उतरि पग धारयो आज ॥४२॥

किलकि किलकि कान्ह हिलकि हिलकि उठै नेकु नहिं मानत कितेकु समझायो री । रोदन कों ठानत न खात दधि ओदन कों गोदन तें गिरो परै करै मन भायो री ॥ चौंकि चौंकि उठै पलना तें परै कल नाहिं पलकु न पारै पल एको मेरो जायो री । गयो हुतो चारन गो ग्वारन के संग आज खरिका में खेलत में लरिका डरायो री ॥४३॥

गरे मुंडमाल धरे सीस पै मयंक बाल लाल के बिलोकन कों जोगी एक आवै री । भोगी लपटाये अंग अंगन में खाए भंग गंग जूट में बहावै री ॥ नजरि बचावों बेरि बेरि में छिपावों बातें ताहि देखि कै बिसेखि डावरो डरावै री । लाखन उपाय करि हारी सारी रैन कान्ह दाखन न छियै नेकु माखन न भावै री ॥४४॥

[यशोदा वचन कृष्ण प्रति]

लाखन हैं गैया गेह तेरे हेत हे कन्हैया चाहिए जितेकु ते तो माखन कों खाय रे । चोरि नवनीत कित भाजत गुपाल परैं डरै जनि लाल लोने मेरे ढिग आय रे ॥ पालन में झूलि घरैं खेलि प्रिय बालन में लालन अजिर तजि बाहिरैं न जाय रे । तापित मही है हाय तपिहै सरोज पाय माय बलि जाय ऐसी धूप में न धाय रे ॥४५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चारु चकई लै घुनघुना लट्टू कंचन को खेलि घरैं लाल बाल सखन बुलाय रे। पूरि अभिलाषन कों चाखन कै माखन लै दाखन मधुर धरे महर मँगाय रे॥ बाजती धौं कैसी यह बाँसुरी बजाय गाय मोद कों बढ़ाय धाय मेरी गोद आय रे। आयो ब्रज बीच हाऊ बूझि चलदाऊ जाय माय बलि जाय कान्ह बाहिरैं न जाय रे॥४६॥

ध्यानद्रुमावली पूर्वानुरागमयी]

जमु ना करत पीर जमुना के तीर गये अमुना प्रकार धीर कहत पुकारि कै। तमु ना रहै सरीर भ्रमु ना तूं करै बीर नीर भव भीर भीम भेदत प्रचारि कै॥ सोहत तमाल तरु तरैं हरैं हरैं चाल जहाँ दीनदयाल लाल रहे हैं बिहारि कै। त्यागि मन बांक कों निसाँक बसि तासु तीर डारि दै मनाक सुमनाक सुख वारि कै॥४७॥

बीर कालिंदी के तीर नीर बीच निरख्यो मैं नीरद नवल एक करत कलोल री। करत बिहाल चित चोरि लेत दीनद्याल चमकैं चहूँधां चारु चपला अडोल री॥ जागि रही चहूँ ओर चंद की अमंद कला ता मैं चल खंजन द्वै नाचत अमोल री। रही ना निचोल सुधि जब तैं वा सुने बोल सोभा बरषाय मति कीन्हीं अति लोल री॥४८॥

बेलि फूलि फैल रहीं मंजु कुंज गैल माँह नील मणि शैल बिज्जु छाँह चलो आवै री। तापर आनन्द कंद चंदन चढ़ो है अमंद लीने निज गोद द्वंद खंजन खेलावै री॥ दीनद्याल तितै मीन नाचत हैं द्वै बिसाल रूप है रसाल पर साल उपजावै री। मोरनि की कोर हैं छपाकर के छोर लगीं मेा चित चकोर बरजोर देखि धावै री॥४९॥

चपला अडोल पैं अमोल पिक बोलैं बोल राजति भुजंगनि मैं कंजनि की लाली री। सरसी गँभीर भीर हंसनि की जासु तीर तहाँ उदय द्वै रहीं विचित्र नखताली री॥ कुहूँ रैनि राकापति संग सजैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीनद्याल तामें उभय भानु लोल नचैं चारु चाली री। एक ही तमाल पर मिले एक काल आज अजब तमासा लख्यो कुंज बीच आली री॥५०॥

बिकसे बनज बृंद विमल बिसाल छबि गुंजत मधुप धुनि माधुरी सुहाई री। अवली मरालन की सजैं सर पै दयाल उड़गन गनहूँ की दुति अधिकाई री॥ खंजन करत मनरंजन तरल गति भंजन करति ताप चंद की जुन्हाई री। एरी मेरी बीर आज कुंज के कदंब तल ग्रीषम के माँह मैं सरद लखि आई री॥५१॥

चंचरीक चंचल ह्वै गुंजत निकुंज जहाँ चहूँ चारु चमकैं चमेली फूलि फूलि कै। तहाँ एक दीनद्याल सांवरो लख्यो रसाल आवत मतंग चाल चलो झूमि झूमि कै॥ मंद मुसुकानि बीच एरी चित खींचि लियो नाहिँ ठहरात जात गात भूलि भूलि कै। ई छन ह्वै तीछन निरीछन की कोर बाँकी उठैं बरजोर मेरे हिये हूलि हूलि कै॥५२॥

जा दिन तैं मो तन कलिंदी तट जात छैल इंदीवर दृगनि तैं देख्यो मुरि मुरि कै। ता दिन ते पीर दीनद्याल किमि धरों धीर बिरहागि दहे अंग रहे चुरि चुरि कै॥ अरी भट्ट गड़ी है कटीली वह दीठि मोहिं सुपने लखाति फिरि जाति दुरि दुरि कै। वाके नैन ठगन ठगोरी डारि भोरी करि मेरो चित चित लूटि लीनो जुरि जुरि कै॥५३॥

जमुना के छोर आज लख्यो री किसोर तासु सोभा बरजोर मनो बाहिर ह्वै छलकैं। बोलनि हँसनि वाकी अति अनमोलनि हैं कुंडल की डोलनि कपोलनि मैं झलकैं॥ दामिनि सी दमकैं दसन दुति दूनी ताहि मेरे दृग दीनद्याल देखिबे को ललकैं। पलकैं न लगैं लखि कलगी सुमोर वारी हलकैं हिये मैं वे मरोरवारी अलकैं॥५४॥

जाती हुती जल कों कलिंद-नंदिनी के तीर लख्यो री गोविंद अरबिंद कर मैं लिये। निंदत सरद इंदु आनन सों दीनद्याल रोचन को बिंदु मन मोचन मनो किये॥ मंद मंद मुसुकानि माधुरी मरीचिनि सों लोचन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चकोर मो अघात नाँहि री पिये। ललकैं बिलोकन कों पलकैं लगति नाहिं अलकैं सुबंक वे निसंक हलकैं हिये ॥५५॥

गई धौं कहाँ तैं कालिंदी के कूल फूल लेन हूलसी लगति नाहिं छबि उतरति है। मूरति अनूप एक आय कै अचानक मैं चानक लगाय अजों हिय कों हरति है॥ जुलफ मैं कुलुफ करी है मति मेरी छलि परी अलि कहा करों कल ना परति है। जब जब वाकी करों सुधि बुधि दीनद्याल तब तब मेरी सब सुधि बिसरति है॥५६॥

कालिंदी के कूल गई फूल लेन तहाँ एक छैल लखि मेरी मति धीरज न धारती। एड़िन को देखि दबि जाति कला रवि की है किमि कैसो दीनद्याल भनै कवि भारती॥ कहूँ मैं कहाँ लों मनु सोभा तिहुँ लोकनि की आनि आनि ताकी सब आरती उतारती। तूरति न बनै कली मोहि सुनि अली रही मूरति सी ठाढ़ी वह सूरति निहारती॥५७॥

नंद के कुमार सुकुमार मारहूँ ते अति सुखमा सुमार कौन कहै तिहि काल की। देखे बन जात बनजात से चरन आली हँस की लजाति चाली लखि लाल की॥ आलसी हिये मैं वह आलसी चितौनि चारु कहा कहौं दीनद्याल सोभा बनमाल की। भाल की बिसाल छबि देखि ससी हँसी होय बसी करबसी लसी मूरति गुपाल की॥५८॥

बसन न पावै चित बसन बिलोकि वाको बस न हमारो कछु चलै आजु माई री। गई एक कूल कों दुकूल भूलि आई तहँ दुख मा हो परी देखि सुखमा सुहाई री॥ अहो यह दाव मैं ठगाई भूलने सुभाव वाको लखि पाव मन अपनो दे आई री। मोहन कहत वहि किमि कै उचाटन कों अहो दीनद्याल देखो जग विपरीत धाई री॥५९॥

परी दुखफंद नंदनंद को बिलोकि अरी मंद मंद चाल नहिं भूलै पटु मन तें। माधव विपति डारे बन को सिधारे हाय स्याम

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बिरहागि जल भई सेत तन तें ॥ वाके मुखचंद लखे नैन अरविंद हू तें उठैं चाह दाह मेरे हिये छन छन तें । भई हौं बिहाल बिन लखे अहो दीनद्याल निगुन मुकुन्द मोहि बाँध्यो री गुनन तें ॥६०॥

सुमन गई ही लैन आई हौं सुमन खोय दुसुमन मेरी ता पैं बोलै हैं बवाई री । कहा करों बीर अब आवत न मोहि धीर साँवरो सरीर देखि पीर सरसाई री ॥वा छबि के सिंधु आज लाज की जहाज मेरी बूड़ि गई कछू नाहिं चलत उपाई री । पथी हूग ए बिसाल होय के बिहाल वाके रहे हैं दुकूलनि के कूलनि मैं जाई री ॥६१॥

[सिंहाऽवलोकन]

गायगो री मोहनी! सुराग बंसुरी के बीच कानन सुहाय मार मंत्र को सुनायगो । नायगो री नेह डोरी मेरे गर में फँसाय हृदय थल बीच चोय बेलि को बँधायगो ॥ धायगो री रूप वाको अति ही अनूप हिये दीनद्याल आय आय चित को चलायगो। लायगो री रोरी बरजोरी मति भोरी करि तबहीं तें हाय लाय बिरह लगायगो ॥६२॥

कारे हैं तरल सितवारे रतनारे नैन लगैं अति प्यारे कौन बिधि ने सँवारे हैं । वारे हैं सुभारे कविता पैं तिहूँ लोक छबि सुपने जो इक बारे प्रभा को निहारे हैं ॥ हारे हैं सुढूँढि ढूँढि उपमा बिचारे तासु जिनके किनारे कोटि अधम उधारे हैं । धारे हैं ई छन इमि नंद के दुलारे अलि आवत वे दीनद्याल कबधौं सकारे हैं ॥६३॥

[सवैया-शाखा]

गाय गयो सुर सों मुरली मधि मो चित चाय चलाय गयो है ।
लाय गयो सर मैन को सैननि नैननि ऐं न बनाय गयो है ॥
नाय गयो बिरहानल मैं मति प्रीति की बेलि बधाय गयो है ।
धाय गयो है सरीर मैं बीर सो पीर अहीर जगाय गयो है ॥६४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलगी वह मंजुल मोरनि की अजहूँ हित सेा हिय हालति है।
वह डोलनि चंचल कुंडल की बिरहानल मैं मुहिं डालति है॥
वह चाल रसाल मरालन सी चित दीनदयाल सुचालति है।
लखि मोहन मूरति मालति मैं सखि सेा मति मैं अति सालति है॥६५॥

बन गैलनि छैल लख्यो इक मैं तिहि की दुति मेा हिये हूलति है।
दिये दीनदयाल तिहूँ पुर की उपमा लघु ह्वै नहिं तूलति है॥
कल नाहिं परै बिनु देखे प्रभा मति कौं पलना करि झूलति है।
जबहीं जब वा सुधि होय हिये तबहीं सबहीं सुधि भूलति है॥६६॥

गुंजत पुंज अलीगन के बहु राजत लंब कदंब दली है।
ताहि थली इक छैल बली सिर सेा हति पच्छन की अवली है॥
माल लसै धवली गर मैं कर दीनदयाल रली मुरली है।
कुंज गली मैं अचानक ही भली भाँति अली उन मोहि छली है॥६७॥

मद जौं धरैं लालन चालन को गज हंसन की कहु का गति है।
दबि जाति कला रवि की छबि तेँ तरवा तर जोति सी जागति है॥
दुति देखत दीनदयाल भले रतिनायक की मति पागति है।
मनमोहन मोहन मूरति री गउ गोहन सोहन लागति है॥६८॥

कटि के तट मैं पट पीत लसै विलसै बनमाल हिये टटकी।
चटकील लला के ललाट लसी वह केसरि जासु कला छटकी॥
घट की सुधि भूलि गई सटकी कुल लाज लखे छबि वा नट की।
अटकी वट मैं मति देखि भटू सुभई री लटू न हटै हटकी॥६९॥

मुरिकै मुसुकानि लख्यो जबतें मम लेा तबते कुलकानि नसी।
कछु भावत है नहिँ ताहि बिना वह रैन दिना दुति आनि बसी॥
गति प्रीति की जानत कोउ नहीँ सब लेाग करैँ उतपात हँसी।
वह लालन कुन्तल जालन मैं मति मेा हरिनी अब जाय फँसी॥७०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहुँ काह अली रस रासि रली मुरली मधुराधर बाजति है ।
हरि बोलनि मोलनि लै चित कौं चल कुँडल डोलनि छाजति है ॥
वह दीनदयाल विसाल प्रभा अजहूँ मन मंदिर राजति है ।
लखि मोहन मूरति कौं अति सै रति के पति की दुति लाजति है ॥७१॥
अरुने द्रग कोरनि डोरनि मैं मन को मनिका मनु पोवतु है ।
नहिं छूटन पावतु है कबहूँ दिन रैनि वहै सँग जोवतु है ॥
वह दीनदयाल लखाय भ्रुवैं कवि की उपमा सब गोवतु है ।
जनु पंकज पै परभात अली दुहूँ पंख पसारित सोवति है ॥७२॥
चलि देखि सखी उनि कुंजनि मैं मनि मालिन लालन साजतु है ।
सुनिये तित दीनदयाल भले मृदु किंकिनि को कल बाजतु है ॥
नव नील मनोहर मूरति पैं अति पीत दुकूल विराजतु है ।
जनु नूतन नीरद स्यामल पैं सुरनायक को धनु छाजतु है ॥७३॥
सजि दीनदयाल विसाल प्रभा तजि बाल सखा सब गोहन के ।
मोहिं विलोकति मो ढिग मैं छलि आय गयो मिस दोहन के ॥
मुसुकाय लगाय गरैं गहि कै चितयो सुमरोरनि भौंहन के ।
सखि सोचन बीच परी लखि कै मन मोचन लोचन मोहन के ॥७४॥

कवित्त ।

जा दिन तें दुही गाय मेरी धूमरी कौं मोहि घूमरी सी आवै नहिं रह्यो जाय घर मैं । ता दिन ते उठत चबाइन के उतपात सगरी सिहात बात बगरी बगर मैं ॥ कहूँ कहा हाल या बिहाल अब अपनो मैं ढूँढति गुपाल कौं फिरति हूँ डगर । दोहनी हमारी दै हमारे कर माँह प्यारी लै गयो मुरारी मन मेरो करि कर मैं ॥७५॥

किधौं जुग दीनदयाल वारिजात हैं विसाल किधौं खंजरीट बाल मुद के दयन हैं । किधौं अनुराग लीन छवि के तड़ाग मीन जुगल कला प्रवीन करत चयन हैं । किधौं कोकनद पैं समद द्वै अलिन सो-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हैं मोहैं करि गदगद रूप के अयन हैं। किधौं अनियारे सर सम रस-वारे आली किधौं रतनारे बनमाली के नयन हैं ॥७६॥

आज मैं निहारे कारे कान्ह को सुपन बीच उठि के सकारे जमुना पैं जल कौं गई। तबहीं तैं दीनद्याल ह्वै रही मनीषा लट्ट एरी भट्ट मेरी भटभेरी मग मैं भई॥ नंदनंद मो तन बिलोकि मंद मंद कह्यो एरी चंदमुखी आई कित तैं इतै नई। कल न परति आली ललन लख्यो न भले चलन समै मैं चल पलन दगा दई ॥७७॥

हँसि हँसि बोलनि की माधुरी रही हैं बसि कुँडल की डोलनि कपोलनि की झलकैं। ललकैं बिलोकि ललना के गन कल नाहिं हालन लगी हैं स्याम लालन की अलकैं॥ कोटिन अनंग छबि संग अंग अंगन के सुखमा तरंग वे हिये मैं आनि हलकैं। रूप के निधानै नैन जानैं क्यों बखानैं बैन जानैं जड़ ताहि को विधानै जानैं पलकैं ॥७८॥

नीलमनि सैल सी सुप्रभा जासु फैल रही सो गुविंद छैल गैल गही आनि गागरी। आलस भरे जम्हात ह्वै रहे सिथिल गात मंद मुसुकात प्रात मिले बड़े भाग री॥ भले जू बने हो बृजराज आज बानक सों कह्यो सजे लाज तुमु झूठी बृज नागरी। बानी अटपटी सुने लागी छटपटी मोहि पेखि लटपटी पाग जाग्यो अनुराग री ॥७९॥

पीत पट कसे लसे भूषन सो अंग अंग हास रस रसे सखा संग प्रभा नई है। आनि कै अचानक या बानक सों घनस्याम कुंज वन धाम मति मेरी हरि लई है॥ किसकी पुकार करौं रिस की लहरि उठैं सिसकी भरति मैं बियोगताप तई है। रही हौं विमोहि जोहि अली कहाँ तोहि डीठि वा तिरीछी मोहि बीछी डंक भई है ॥८०॥

लीन्हौं गुथि मेरो मन मनिका बिलोकतही आपने ही गुन मैं रसाल बनमाल ने। सजैं सुख दैन अलकावली के बीच नैन घोरि लियो उभै मीन मनौ मैनजाल ने॥ भूलै न मराली वह चाली चित

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चुभी चारु झूलै बनमाली दुति आली हिय पालने। हरी हरी लतिका में परी हरी डीठि अरी लीन्हे कर लाल छरी छरी मति लाल ने ॥८१॥

परी डीठि आज री अचानक या बानक सों कैसी रुचि करी उर मोलसरी माल ने। चटकीली खैरि सजैं मटकीली भौंह पैं दीन-दयाल मोह्यो दृग लटकीली चाल ने ॥ बोलि अनमोल बोल लियो मन मेरो मोल लोल लोल लोयन सों लख्यो लोने लाल ने। भूलति न एरी मेरी बीर बलवीर छबि झूलति दिवस निसि चढ़ी चित पालने ॥८२॥

पीत पट धरे करे अंग को त्रिभंग खरे कोटिन अनंग छरे छबि लखि माल की। कुंज की गली में वृषभान की लली के पाँह गहे गलबाँह छाँह छजैं हैं तमाल की ॥ कुंडल की डोलनि कपोलनि अमोल लसैं कौन कहै हाल हँसि बोलनि रसाल की। भई हौं निहाल वा बिलोकि दुति दीनदयाल भूलति न बाल री प्रभा गुपाल लाल की ॥८३॥

कहा कहौं हेली मैं अकेली गई कुंज गैल फूली ही चमेली छैल तहाँ बेनु टेरो रे। पीत पट धरैं हरैं हरैं आय गरैं गह्यो मोतिन की लरैं लखि कंज करैं फेरी रे। कटि को लचाय कै नचाय भौंह नैनन कों सैनन सों कियो चित चंचल कों चेरी रे। कुंज की गली मैं अली ब्रौचक सों आय छली चुनति कली ही चुनि लियो मन मेरो रे ॥८४॥

सजनी ह्वै रजनी सी नंद को किसोर पेखि कुंडल बिसेख सजैं मनो भानु भोर तें। लोल लटकैं हैं लट कंज से कपोलन पैं मनो भौंर भीर घेरि आई चहूँ ओर तें ॥ कुटिल कटाछन की देखि छबि छकी बाल भई हौं बिहाल हाल भृकुटी मरोर तें। गई मैं अकेली हेली चुनन चमेली आज बेली बीच चितै चित चुभ्यो चित चोर तें ॥८५॥

प्रभा पुंज लसैं मंजु मंजरी निकुंजनि मैं चुनन चमेली गई हेली उठि प्रात री। तहाँ एक मंद मंद गुंजत मिलिंद लख्यो सोन जुही संग मैं उमंगि मडरात री ॥ हेरि हेरि चूमत रसीलो रस रासिन कों बेरि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बेरि झूमत झपत लपटात री। परैं ख्याल दीनद्याल वाके दे रसाल जब तब तबहीं बिहाल मन पछतात री ॥८६॥

एरी जगप्रान प्रानपति को बखान कियो जात नाहिं हियो रम्यो देखि तेहि साज कों। हरयो सब ताप कों मिलाप करि मेरे संग अंबर उघारत रही मैं गहि लाज कों। सीतल सुभाव महा सुमना सनेह सानो हिये लपटानो कहा कहौं सुख आज कों। मंद मंद गौन सों मिल्यो है कुंज भौन आय कौन हो बताय प्यारी पौंन रितुराज को ॥८७॥

जीवन के दानि आनि ताप के कलाप हरे चपला हिये मैं धरे स्यामल सुतन है। जा दुति उदोति नीलकंठ कों हरष होत और द्विज गोत लखैं मोद मानि मन है॥ माल है बिसाल बकुलावली की एरी बाल झूमि झूमि चाल वाकी भूलै नहिं छन है। मंद मंद रस बरसाय तरसाय गयो कहा घन स्याम हैं री ना घन सघन है ॥८८॥

कहा कहौं कुंज तीर आज की बहार बीर मेटि कै सिँगार हार दूरि कियो चीर है। परसि नसाई है ललाई अधरान हूँ की बिथुरी अलक बढ़ो पुलक सरीर है॥ मेट्यो चारु चंदन को पंक अंक मैं लगाय गरैं लपटाय हरैं हरयो ताप पीर है। देख तरसाली छबिसाली प्रीति की कटाली कहा बनमाली आली कालिँदी को नीर है ॥८९॥

सुख के तरंग री उठैं हैं अंग स्यामल मैं सोहैं कंज मंजु गुंज भौरन की भीर है। द्विजन की श्रेनी मुद देनी कै रहीं प्रकास जाके आस पास बहै सुरभि समीर है। सिसकी भरी ससंक अंक जाय तिसकी मैं अंजन मिटाय कियो रंजन न धीर है। देखत रसाली छबिसाली प्रीति की कटाली कहा बनमाली आली कालिँदी को नीर है॥९०॥

प्रजा पुंज भर्यो मंजु गुंजत निकुंजन में रंजन करत अवलोकतही मति को। पीतवास धरे करे लोल चाल दीनद्याल देखि गरैं माल राह रोके वार कति को॥ नेरे चलि आय छलि मेरे मुख पंकज कों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

परसै निसंक नहि संक करै रति को। कान्ह हैं बतावरी क्यों बावरी बकावै मोहि भाँवरी भरत भौंर साँवरी सुरति को ॥९१॥

ल्यावरी मिलाव मोहिं कौन हो बतावरी तूँ भाँवरी भरत भौंर गति मेरी मति कौं। लावरी न मोहि घनसार कहै बार बार झाँवरी सी ह्वै रही उसासैं भरै कति कौं॥ नींद न विभावरी मैं घाबरी बरी सी परी रावरी सों कहों नहिं धीर धरै रति कौं। आवरी दिखाऊँ तोहि डावरी गई है सूखि बावरी विलोक्यो कहूँ साँवरी सुरति कौं ॥९२॥

भुजग भुजा तेरी सकारे कारे कान्हर ने गह्यो वहि हिये उठै ता छिन तें लहरें। अंग अंग थहरैं अनंग तें त्रिभंग लखे जहरैं चढ़ति ज्यों ज्यों पीत पट फहरैं॥ छूटीं घुघुरारी लट लूटी हैं वधूटी वट टूटी चट लाज ते न जूटीं परी कहरैं। कहरैं करति आली छहरैं छटा सी छबि लखिबे कों हहरैं न नेकु नैन ठहरैं ॥९३॥

पीत पट कसी बसी स्याम की सुरति लसी तौलों कुल फाँसन सी गाँस कों सहति है। आनै नहि नेक एक प्रीति की परी है टेक करिकै अनेक कला लला कों चहति है॥ कबधों मिलैगो वह साँवरो कुँवर मोहि लाख लाख यहै अभिलाष कों गहति है। खिरिकी के माहिँ खरी हिरिकी हरी कों हेरै घरी घरी फिरिकी लों थिरिकी रहति है ॥९४॥

छोड़्यो गृह काज कुल लाज को समाज सबै एक ब्रजराज सों कियो री प्रीतिपन है। रहत सदाई सुखदाई पद पंकज में चंचरीक नाईं भई छांड़ै नहिँ छन है॥ रतिपति मूरति विमोहनि को नेम धरि लिखै प्रेम रंग भरि मति के सदन है। कुँवर कन्हाई की लुनाई लखि माई मेरो चेरो भयो चित औ चितेरो भयो मन है ॥९५॥

घूँघट की ओट गहैं कबहूँ रहैं छपाय फेरि प्रगटाय प्रभा लहैं पीत पट की। धाय बरजोर चलैं मोर के मुकट ओर लटकैं पकरि छोर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घुघुरारी लट की ॥ ई छन तिरीछे आछे मलून तैं जाय भिरैं बरत बनाय फरैं बनमाल टटकी। नटवर जू की रुचिराई देखि दिना रैन माई मेरे नैन एक रेहैं कला नट की ॥९६॥

बीरबल बीरहि बिलोकि जमुना के तीर जा दिन तें आनि मन मंदिर बसायो री। ता दिन ते दहत दुसह विरहानल मैं लाजहि खसायो सब लोगन हँसायो री ॥ अलक झलक लखि पलक न लागैं वह कुटिल बडिस द्रग मीनन फँसायो री। परति न जानि अब ह्वैहै धौं कवन हानि वाकी मुसुकानि कुल कानि भौ नसायो री ॥९७॥

गई बीर नीर काज लख्यो ब्रजराज आज हंसऊ लजात देखि वाकी गति मंद तें। नैनन की कोर करी मेरी ओर सैनन सों सोभा बरजोर रही उमँगि अनंद तें॥ माधुरी अधर की न पावै सुधा दाख लाख लेत मन मोल बोल मीठे लगैं कंद तें। दमकैं दसन मंद मंद मुसकानि सजैं झरति चमेली हेली मानो चारु चंद तें ॥९८॥

तूँ तो स्यामा वे तो स्याम दोऊ छवि अभिराम आठो जाम घनस्याम नाम ब्रत लयो है। छकी है छबीले के रसीले प्रेम छाकनि सों चोरि चित तेरो मोरिनहीं उन दयो है॥ छपै है छपाकर छपाये कहूँ कर ओट मुकरै री कहा जोट तेरो भलो भयो है। प्यारो बलभैया बन-धेनु को बजैया आय अबही कन्हैया तेरी गैया दुहि गयो है॥ ९९॥

[वर्तमानानुरागमय कवित्त]

मोर को मुकुट धरे ललित लकुट करे चलत चपल रुख पाय बल भाय के। गिरिपति गहि सुरपति को मथे हैं मान एई सुखदाय अति जसुमति माय के॥ गाँयन को पोखे भली भाँयन सँजोखे अली कुँजन की गली तैं कली लीन्हे हरषाय के। संग कुँवरेटे पीतपट कौं लपेटे अंग गोरज धुरेटे ऐहैं बेटे नंदराय के॥ १००॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गरैं गुंजमाल धरैं मंजु मंजरी रसाल बोलत बचन लाल बालक सुभाय के। हिलि मिलि एक ठौरी गावैं गुनि राग गौरी लै लै धौरी धूमरी पुकारैं नाम गाय के॥ देखो दुखमोचन सकोचन को तजि आली लोचन सफल करो दाय यह पाय के। संग कुँवरेटे पीतपट कौं लपेटे अंग गोरज धुरेटे ऐहैं बेटे नंदराय के॥ १०१॥

पायो नहिँ सोध कहूँ निगम पुरानन मैं जाकी सुधि सोधि सोधि सुधी रहे हारि कै। संजमादि साधनि कै सिद्ध जपैं जाकौं नित जाके हित जोगी चित राखत सुधारि कै॥ सोई अरुझान्यो है भगति जाल दीनद्याल देखिये निहारि कहे देत है पुकारि कै। पसुन के संग ह्वै उमंग बन बीच रमैं अर्थ उपनिषद को कंठ गहे ग्वारि कै॥ १०२॥

यह अनुराग सुबाग मैं, सुखद प्रथम केदार।
विरच्यो दीनदयालु गिरि, बनमाली सु बिहार॥ १०३॥

[मंदस्मित सुमनावली]

बैठी है पचासनन सजी विविकीकी पर आइ इक तीती तिति श्रीपति के तीर सोँ। बोली दस खीखी पंच चालिस लिलीरी सुनि साजि लै सिँगार कौं पचास ररधीर सोँ॥ रसनन गामिनि तूँ रसना कौं डारि चलि जामिनि उजेरी तन ढाँकि सित चीर सोँ। लजैँ सिसि तेरह या तीनि विवि तेरी परी देरी तजि एरी करि गमन समीर सोँ॥१०४॥

एरी बीर धीर धारि गुरु जन भीर वारि आई तब तीर हौं छपाई काहू मिसि मैं। देरी सोँ बिलोकै छैल खरो कुंज तेरी गैल एरी एन नैनिन बितावै रैनि रिसि मैं॥ मंद मुसुकानि चलि देखि नंदनंदन की चाँदनी चढ़ी है री निकुँज कुहू निसि मैं। चहूँ ओर तें चकोर कोर बाँधि घेरि रहे मुद सोँ कुमुद फूलि रहे दिसि दिसि मैं॥ १०५॥

सुरसरि धार किधौँ सारद अधर संग भारद करति कला सारद के चंद की। किधौँ हिमि लाई झरि मानिक मही के माहिँ किधौँ सुधा-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सिन्धु बीच बीचि है अनंद की ॥ किधौं कुंद कलिका रही हैं फैलि छबि बाग रचना करत काम किधौं फूल फंद की। किधौं चंद जोति तें अमंद फूल वृंद झरैं किधौं मंद मंद मुसुकानि नंदनंद की॥ १०६॥

किधौं बीर छीर सिन्धु लहरी लहकि रही किधौं बही गंग नीर धार सुखदानि है। दंत छन छटा संग सारद घटा उमंग सारद को अंग किधौं पारदि की खानि है ॥ किधौं लर मोतिन की बिहरति उर पर करति प्रभा कौं वर परति न जानि है। किधौं कामदूती मति गोहन लगाय लेति किधौं मनमोहन की मंद मुसकानि है॥ १०७॥

किधौं अलकावली निसा के बीच है मरीचि चंद की चहूँधाँ चारु रहीं रुचि तानि है। किधौं सुखमा के सर हंसन की श्रेनी बर किधौं घनसार रह्यो विद्रम सौं सानि है॥ चमकैं चमेली किधौं अधर जपा के संग मोहनी को अंग कहे कबि न बषानि है। किधौं कामदूती मति गोहन लगाय लेति किधौं मनमोहन की मंद मुसकानि है॥१०८॥

[वाणी कीर्ति कोकिला]

आनन सुधाकर ते श्रवति सुधा है जनु कानन सुखद हरि बानी रस की भरी। जाकी इरिषा ते द्रग राते जरि सोहैं स्याम घन बातैं की करैं हैं न बराबरी॥ फूल सी झरति अलि अनुराग बागन मैं भागन तें आनि आज मेरे कान मैं परी। हरी मति मेरी हरी गिरा मोहि चेरी करी अरी अधमरी परी सोचति घरी घरी॥१०९॥

मंद मृदु मधुर धरनि मुखचंद पास करति अनंद हास मोल मन मैं लियो। तजि निज नाटन उचाटन भयो है बसि हँसि हरि वचन के ठाटन हरयो हियो ॥ सुनत बसीकर रीसी कर रह्यो है फसि मारनउ सुने जेहि मरि मरि कै जियो। मंद मुसु कानि छलि लियो मन गोहन मैं मोहन की बानी नै विमोहन विजै कियो॥११०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कंद तैं दुचंद नंद नंदन की मीठी बात करति अनंद गात मुद दानि जन की। रंभाऊ अचंभा मानि फलै नहिँ दूजी बार मोहैं रति-रम्भा सुनि जाकी नेकु भनकी ॥ मिसरी कठोर की सरिसरी कहौं मैं कहाँ बिसरी सुनत सुधि एरी बीर तन की। लाखन उपाय करि दाप-न लही न सरि भाषन की माधुरी धुरी न स्याम घन की ॥१११॥

पाई नहिँ रंचकउ मधु मधुराई जासु बोलत कन्हाई सुखदाई जब बात हैं। भाव को प्रकास हास को बिलास जामैं कहुँ कोकिल के कल सम कैसे कहि जात हैं ॥ बीन की प्रवीनता कौं लीन करि राखै गुनि सारद बिसारद और नारद लजात हैं। भूषन लगति ब्रजभूषन बचन सुनि ऊषन पियूषन मैं दूषन दिखात हैं ॥११२॥

[चतुर्विधि दर्शनालय ॥ श्रवणदर्शन]

जा दिन ते कान्ह कथा काहू तैं परी है कान ता दिन तैं कानन मैं आन न सनति री। कैसे मिलै साँवरो सुजान पटपीत वारो झाँवरो भयो तन सीसहि धुनति री ॥ लगो है बसीकर सो दीनद्याल जासु नाम आठो जाम बैठी गुन गन कौं गुनति री। रंच न परति कल कंचन महल माँह स्याम विरहानल मैं हृदय हुनति री ॥११३॥

[स्वप्नदर्शन]

ओढे पट पीत सिर सजनी सुपन बीच साँवरो सलोनो एक देख्यो आज रैन कौं। जानो नहिँ कौन हो कहाँ ते आयो मेरे ढिग लै गयो छबीलो छलि घेरे चित चैन कौं ॥ कंजन से कर मन रंजन करत आली अंजन लगायो मेरे षंजन से नैन कौं। कहौं करि जोरि तोसैं आनि री मिलाय मोसैं मोहि अपसोसैं दै भरोसै निज बैन कौं ॥११४॥

[चित्रदर्शन]

नंद के कुमार कौं सवार हौं मिलाऊँ तोहि वार वार सौ प्रकार सौं बुझाय हारी मैं। कहा उपचार करौं कछू न विचार चलै चार ओर

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ढूँढति दयाल गिरधारी मैं ॥ सूखि गयो सरीर चीर की न सुधि बीर पीवै नहि नीर धरयो रहै तीर झारी मैं। मित्र स्याम के विचित्र चित्र को विलोकि बाल बैठि रही चित्र सी विचित्र चित्रसारी मैं ॥११५॥

[प्रत्यक्ष दर्शन]

वा दिन की बात नहि मों पै कही जात छैल छपि कै छबीलो गैल घेरयो रंग घोरि कै। मंद मंद मुसुकाय कह्यो कछु नेरे आय जोरि हग देख्यो मोहि भौंहन मरोरि कै ॥ करि चतुरायन कौं आपने सुभायन सों रही मैं सजग ह्वै उपायन करोरि कै। डारत अबीर एरी बीर बल बीर मेरो हथाहथी लै गयो अनेरो चित चोरि कै ॥११६॥

[होरी मंजरी]

उततें कन्हाई लरिकाई के सखन लीन्हे करि चतुराई केलि होरी मचाई है। इत वृषभान की कुमारी सुकुमारी प्यारी आली गन आली मैं रसाली सी सुहाई है ॥ ललना गुलालन की लालन पैं डारैं मूठि चलैं पिचकारी सुखकारी दुहुँ घाईं है ॥ केसर साने सुरँग नेह सरसाने डारैं मानो बरसा ने बरसाने झर लाई है ॥११७॥

होरी होरी करत अबीर भरि झोरी लीन्हे षोरी षोरी फिरैं ग्वाल बाल समुदाई है। तामैं नंदलाल लाल चीरा जरीदार धरे गरे भा विसाल बनमाल की सुहाई है ॥ कीरति किसोरी संग गोरी जूथ जूथ मिलि भरी अनुराग फाग स्याम सों मचाई है। केसर साने सुरंग नेह सरसाने डारैं मानो बरसा ने बरसाने झर लाई है ॥११८॥

आज नंदनंद जू अनंद भरे खेलैं फाग कोटि चंद ते दुचंद भाल दुति लाल की। आभरन हीरन पैं मानिक ललाई आई तैसी छवि छाई है विसाल बनमाल की ॥ अबीर उड़ावै मूठि मूठि सी चलावै माई देखिए लुनाई नट नागर गुपाल की। सजै पीत पट पर मुरली लकुट मोर के मुकुट पर गरद गुलाल की ॥११९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कीरति किसोरी संग स्यामैं लखि भई भोरी होरी देखि आई आज प्यारे बल बीर की ॥ सारी जरतारी की किनारी मैं गुलाल राजै तैसी छबि छाजै उत कासमीर चीर की ॥ हरैं हरैं आवैं मंद मंद सुर गावैं दोउ मिलि मुसुकावैं दुति धावैं री सरीर की । नैन कोर ओर पर बरुनी के छोर पर मोहनी मरोर पर ओप है अबीर की ॥१२०॥

[दोलावली]

फुही फुही बूँद झरैं बीर बारि बाहन तैं कुहू कुहू सुनी परैं कूँक कोकिलानि की । ताही समय स्यामा स्याम झूलत हिँडोर चढ़े वारौं छबि कोटिन मैं रति पंचबान की ॥ कुंडल लटक सोहैं भृकुटी मटक मोहैं अटकी चटक पट पीत फहरान की । झूलति समै की सुधि भूलति न हूलति री उझुकनि झुकनि झकोरनि भुजान की ॥१२१॥

झाँवरे लगत सुर जासु की झलक झाँकि सुखमा सराहौं कहा साँवरे सुजान की । झूलिबे की चाह करि चढ़े झूलने पैं दोऊ कोऊ नहिं सकै कहि उपमा झुलान की ॥ कट की लचनि मचकनि चारु जंघनि की अचकनि गहनि वे झूम झूम कान की । झूलति समै की सुधि भूलति न हूलति री उझुकनि झुकनि झकोरनि भुजान की ॥१२२॥

हालरैं हिँडोर झवा जाय मिलैं डारनि सौं झालरैं झुलति चारु गज मुकुतान की । चुनति प्रसूनन की कलिका चपल लाल आनि देति भेट प्रिया प्रथम मिलान की ॥ दुहूँ ओर दृगन की कोर बरजोर चलैं भौंहैं कै मरोर मौहैं दारा देवातन की । झूलति समै की सुधि भूलति न हूलति री उझुकनि झुकनि झकोरनि भुजानि की ॥ १२३ ॥

आनंद के कंद नंदनंद की अमंद छबि बरनी न जाय मंद मंद मुसुकानि की । ललना के संग चढ़े झूलना झूलत लाल कल ना परति बिनु देखे दसा मान की ॥ लोल लोल लोयन के कोयन बिलोकि बालक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कहां गहै मान रहै सुधि न सयान की। झूलति समै की सुधि भूलति न हूलति री उझुकनि झुकनि झकोरनि भुजान की ॥१२४॥

सजैं श्रम सीकर कपोलनि पैं लोल लोल बोलत अमोल बोल लजैं कोकिलान की। उठत उमंग के तरंग अंग अंगनि मैं फैली धुनि कानन अजौं मलार तान की॥ लाल ने बिलोक्यो प्रिया हालने श्रमित भई दीनदयाल बिनै करैं सीरे पवमान की। झूलति समै की सुधि भूलति न हूलति री उझुकनि झुकनि झकोरनि भुजान की ॥ १२५ ॥

[वक्रोक्तिलता]

सवैया ।

हम तो विलखाहिं कदंब तले तुम हो कुलटा यह बैन कहावै।
तुम तो नर हो नागी नाहिं लखो कित जाहिं चले तिय रूप लखावै॥
हम तो न चहैं तुमपैं हठ जू भली बात नचो केहि को नहि भावै।
हरि अंबर देहु हमैं कर मैं गहिये किन सुंदरि जौं कर आवै ॥१२६॥

कबित्त ।

लौल फुलवारी यह कापैं कौन मुद पाय नहीं जू निवारी है करत कहा हे प्रिये। माधवी है माधव दहति क्यों न सौति देखि सेवती है सुनो स्याम काकौं अपने हिये॥ जाय कहै जदुनंद को न को जपै है जाप जपा है जसोदा सुत केते जप कौं किये। कुंद है मुकुंद लखो तीछन कै लीजौ कि नवेला वर दीनदयाल कौंन तीन मैं तिये॥ १२७॥

न रहो निकुंज माँह नारिन कों गहो नांह जाहिं चले कितै रन रीतिहूँ न लई है। रहो जू हमारो तुम आचरन गहो लाल ठाढ़े हम कब तैं तूँ आचारज भई है॥ हम तो हैं वाम स्याम काहे को भिरत आनि हमहूँ त्रिभंगी यह बात भली छई है। हम ब्रजबाला हैं जू हमहूँ हैं ग्वाल बाल ऊतर की माल इमि नंदलाल दई है॥१२८॥

चाहत नवीन स्याम हमतो अधीन रूप किमि कै कुरूप जरा हमैं जानि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लई है। ऐसे जनि बोलो हम सबरी हैं लाजवती जादु चली कानन में कहा हानि भई है॥ हम ब्रज की हैं नारी सुनिए सुजान कान्ह कौन कहैं एक ही की बात यह छई है। एजू हम गोप-बधू बाहिर फिरति हो कहा ऊतर की माल इमि नंदलाल दई है॥ १२९॥

एहो नँदलाल तुम साँची कहो बातैं कछु गाहक हैं प्यारी तव रूप के रतन कौं। नागरी सनेह सने माधव नटत कहाँ सेवत हैं प्रिया तव जोबन के बन कौं॥ पीपर कौं भरैं अंक हमहूँ तिहारे लागि काहे बनि कुलटा कलंक लावो तन कौं। मति को पकरि स्याम हमैं घर जान कहो जादु धाम गोप वाम मोरि निज मन कौं॥ १३०॥

[बंसीसारिका]

किधौं है बसीकर की सी करि करति कैद जान नहिँ देत कहूँ मन के मतंग को। किधौं है उचाटन भुलावै घाट बाटन तैं हाटन तें धावैं बधू छोड़ि सब संग कौं॥ किधौं नेह घटा छजै दंत छन छटा छोर एरी बीर बरसै सर सरस रंग कौं। किधौं यह मोहन की बाँसुरी विमोहन है सोहन लगति लिये गोहन अनंग कौं॥ १३१॥

भई हैं वियोगी बाल भोगी होत हैं विहाल ता रस के भोगी भये जोगी तजि कै तुरी। तपन सुता को री लगो है ज्यौं तपन तीर भूलि कै अपनपो कौं गति वेग तें मुरी॥ सारद विसारद की भारद भई है सुनि बीन को दुराय के प्रवीन दरी में दुरी। भुलैं सब बाँसुरी सुनैं हैं जब बाँसुरी को आँसुरी न रोकि सकैं आसुरी हूँ ब्रौ सुरी॥ १३२॥

जेनी जड़ बंस ते अधर अवतंस बनी गनी है असारन में है हिये की खाली री। हरै मन धन कौं करै है माधुरी सौं बात उठैं उतपात याके कुल तें दवाली री॥ छिद्रन कौं लिये हिये गाठि तें भरी कठोर बोलै मुह जोर बरजोर ए कुचाली री। काली के दमन कहु कैसे प्रीति पाली याते कहैं बनमाली जग में प्रवीन आली री॥ १३३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सही सीत भीत बरषातप की उतपात राति दिन याने बहु भाँति तप कौं किया। जनम तें बाढ़ी प्रीति एक पग ठाढ़ी रही डाढ़ी गई गाढ़ी नहिँ नेकु कसक्यो हिया॥ कीजै नहिँ रोष यापै दीजै नहिँ दोष वीर देह कौं सुखाय धीर नेहू व्रत को लिया। परखि सुलापि ताय लीन्ही वृजराय याकों ताते यहु बंसी आय भई स्याम की प्रिया॥ १३४॥

बंसी ने कियो अधीन गह्यो स्याम मन मीन रवैं वसुजाम लीन लवैं भले भाय री। अंग को त्रिभंग करे एक पग सेवैं खरे अति से उमंग भरे जासु संग पाय री॥ रीझैं हैं कलापैं याकी लला पैं न रह्यो जाय तप के कलापैं याके कापैं कहि जाय री। सेज अधारन पैं सोआय कै सनेह लाय नितहीं पलोटैं पाय जाके जदुराय री॥ १३५॥

[अंतर्द्धानलीला लावण्य]

न लहै रती रती कु छवि कौं बिलोकि जिन्हैं नील अलकावली विमोहती बदन पैं। चली महावीर सम प्रेम रन जीतिवे कौं किंकिनी सुकंठ गहे अंगद पदन पैं॥ जामवंत जात छिन जिन्हें घनस्याम बिन पंजन नयन टीको अंजन रदन पैं। जाके रूप अभिराम लच्छन विनोद धाम ग्राम तें चलीं हैं वाम कुंजन के सदन पै॥ १३६॥

आई तुम कैसे हमैं बाँसुरी बुलाई स्याम कहो कौन काम छविधाम तो सरन को। तात मात भ्रात तुम्हें हैं सनेही किधौं नाहिं साँवरे सुना तो हमैं रावरे चरन को॥ पति के तजे तें गति होय न बड़ो है दोस श्रीपति भरोस अपसोस न तरन को। लोक वेद मरजाद तजी क्यों प्रमाद परि जानै न विवाद गह्यो प्रेम के परन को॥ १३७॥

बाजत मृदंग मुरचंग बीन औ उपंग तातथई तातथई करत उमंग मैं। मेलि कै भुजान को सुजान नृत्यकला कान्ह बीच बीच नाचै मिलि गोपिन के संग में॥ भृकुटी मटक पट पीत की चटक चारु कुंडल झलक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छजै छबि के तरंग में। पद की पटक पाँनि झटक सुमुसकानि ग्रीवा की लटक सजै सोभा अंग अंग में ॥ १३८ ॥

देखि गति ढीली श्याम बिनवैं रसीली मति भई गरबीली अति आदर को पाय कै। भावत है मद मदमोचन कौं नेकऊ न रहैं दीन के अधीन कहैं वेद गाय के ॥ अंतरित भए कान्ह अंतर को देखि मानि रहति निरंतर जो हिय में समाय के। ताहि बन बूझहि नवेली बेली सापिन सों पिन पिन आँखिन में रह्यो है जु छाय के ॥ १३९ ॥

हे असोक सोक हरि हरि कों मिलाय मोहि तोहि कों सपथ करि साचो निज नाम को। हे पलास आस पूरि दूरि करि निज नाम अहे पारिजात करि पूरो मम काम को ॥ हे रसाल लाल को लखाइए रसाल रूप हे तमाल धरे हो सरूप तुम स्याम को। ताते तुम्हें जानिए गुपाल मिले दीनद्याल काहे को बिहाल हाल देखियत बाम को ॥१४०॥

अहे कुंद वे मुकुंद कहूँ तुम लखे जात कहाँ पाई तात दुति लाल के दसन की। दाडिम दुसह दुख दूरि कै दिखाय हमैं तुमहूँ सीखी है रीति स्याम के हँसन की ॥ सोन जुही जुही है सकल छबि तेरे पाहीं मानों परछाहीं परी प्यारे के बसन की। सब मिलि कै मिलाय देहु हरि मूरति कों सूरति न भूलै वह काछनी कसन की ॥१४१॥

बदरी तूँ बदरी विलोक्यो कहूँ घनस्याम काहै को बतावै साँचो नाम याको बेरी है। कहि री निवारी तोहि कान्ह ने निवारी कहा देति न दिखाय अब काहे करै देरी है ॥ एहो करबीर कर बीर उपकार धीर हमैं वर बीर कों बताय आस तेरी है। करन कुसुम हे करन करि दीन बच हरि के जताये ह्वै हरन पीर मेरी है ॥१४२॥

सेवती चरन चारु सेवती हमारे जान ह्वै रही डहडही लही अनंद कंद कौं। माधव तज्यो है तोहि माधवी बताय मोहि ता वियोग ढारै मनौ आँसू मकरंद कौं ॥ सालती हमारे हिए बिरह कटारी भारी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मालती दिखाय कहूँ देखे नंदनंद कौं। केला हो अकेला सब जग में मधुर महा वेला तूँ बताय यह वेला वृज चंद कौं ॥१४३॥

एरी बीर चीर चोर बूझिए कदंब पाहि याके अवलंब माहिं कहूँ ह्वै है दुरि कै। अली चली जाति कितै कुंज गली सोक रली बूझि छली कान्ह कों मधु द्रुम तें मुरि कै॥ तनिका भरोस भटू मानो जानो गनिका को चलो बूझिए री यह जापक तें जुरि कै। सोधि सोधि रहीं मिलो रूप को पयोधि नहीं जाय जाय बूझैं बोधि साखि तें बहुरि कै ॥१४४॥

बूझति है कहा कुरबक ते मधुर बानी जानी नहिं याकी गति एरी मेरी आली री। अबला तूँ बूझति सैलूख तें लला को कहा याकी कला माहिं छले सुक औ कपाली री॥ कि तव बतैहै नाहिं कितव कन्हैया गैल बूझि श्रेयसी सो बोलि बतियाँ रसीली री। जानति वैदेही नीके पी के विरहानल को बूझि सबही के ही के प्रिय बनमाली री ॥१४५॥

देखि हरिनीके नैन देखे हरनी के इन लागै तृन फी के पीके मग कों निहारहीं। नंद के कुमार छलि गये इनहूँ को अलि ताते यह वार वार आँसू धार डारहीं॥ ठाढे पति सोहैं नहिं जोहैं संग रूप राची चलति आगेहैं सरसोहैं ध्यान धारहीं। बूझि इन पाहीं ए ऊबि रही भुलै है नाहीं चलि गलबाँही धरि हरि सो बिहारहीं ॥१४६॥

आए हो सुगंधसने जानै हरि मिले तुम्हैं कहो प्रिया संग कै अकेले बन में रमैं। कहै जगप्रान प्रानप्यारे कों मिलावो जबै नहीं तो प्रभंजन जनात हमैं या समैं॥ काहे जम दिसि तें या निसि मैं चले हो तुम जानो प्रान प्रिय बिन बिना प्रान की हमैं। मिलै जब दीनाद्यल तब ही निहाल होहिं लखिकै बिहाल हाल चूक बाल की छमैं ॥१४७॥

कहैं सब ठौर तेरी गति की है दौर पौन मौन कहा ह्वै रहे लखाओ वहि बल कों। गये हैं रमेस केहि देस है अँदेस हमैं कहिओ सँदेस जाय अबला बिकल कौं॥ त्यागि कुलकाँनि सब व्याकुल विलोकैं हम मानति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलप हरि बिना एक पल कौं। आठो जाम लीन अब दीन भयो मनमीन छाड़ि बचै किमि कै छबीले छबि जल कौं ॥१४८॥

अबही विलोक्यो बल बीर तीर तेरे खड़े हाहा तूँ बताय वह मूरति कितै गई। ऊतर न ऊचरै कबूतरसी कला करै सान्ही जम अनुजा विरंचि रचना ठई ॥ अंक भरै तोहि वे निसंक नित आय आय तेहूं बंक तारि प्रीति करति नई नई। राखति बसाय वसु जाम हिय धाम ठाम स्याम रंग रंगी तातें स्याम मई तूँ भई ॥१४९॥

गोहन तजै गो तब रूसै मति मोहन सों मानिनी गुमान छाड़ि बरज्यो मैं बेरि बेरि। मानी नहीं रंचऊ विरंच बस बानी मम जाते दहै हियो यानै कियो सोई फेरि फेरि ॥ तजी है गुपाल बाल भई है बिहाल हाल हरी हरी करिके मुरुछि परी टेरि टेरि। छकी है छबीली छबि छैल छोह छाकनि सों लगी धकधकी थकी कुँजनि मैं हेरि हेरि ॥१५०॥

भई हैं बिहाल बाल लाल के बिछोह काल साँवरो सनेह देह दसा भूलि गई हैं। जागि मुरुछा तै करै बातै घनस्याम ही की पिया पिया चातकी सी हिया रट लई हैं ॥ अहै प्राननाथ हाथ दीजिये हमारे माथ साथ ते न तजो बिरहागि ताप तई हैं। दुरति न क्यो हूँ प्रभा फुरति हिए मैं नई स्याम की सुरति करि भई स्याममई हैं ॥१५१॥

हटकैं लकुट गहि गायन गुपाल होय एक धौरी धूमरी पुकारैं लै लै नाम को। एक बाल बनी दधिचोर नंद को किसोर एक बरजोर धूरि ल्याई नंद धाम को ॥ एक जसुमति बनि ऊषल सो बाँधि रही एक तो छुड़ावै रूप धरे बलराम को। लीला अभिराम करैं कुँज ठाम सबै वाम हरै मन स्याम को धरै हैं स्वाँग स्याम को ॥१५२॥

भूलैं हम कैसे वह ध्यान को सुजान कान्ह गह्यो मन तुम्हें ज्ञान रह्यो न अपर को। गोरज सुहात गात पीत पट फहरात देखि ललचात चित हित देवहर को ॥ धरै सिर मौरपषा लिए सब सखा संग अति

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ही उमंग अंग जात समै घर को। आवत नचावत हेई छन तिरीछे आछै गैयन के पाछे स्वाँग काछे नटवर को ॥१५३॥

अलक अँधेरी में लियेा है मन धन चोरि अब तेा हमारे कान्ह तलफैं विकल प्रान। लीजै न कलंक हमैं बेधि कै वियेाग अली बनी है निसंक बंक भृकुटी तनी कमान॥ अनल उचाट रूप लाट में तचाई भारी कारीगर काम ने सुधारी अभिराम सान। चाह सेा चितोनि कोर चुभी चित बीच मेरे एरे चितचोर तेरे लोचन अचूक बान ॥१५४॥

मुनिन के मन अलि पुंज जहँ गुंजत हैं सेाई पद कंज मंजु हमैं परसाइये। नीलकंठ सुखधाम एहेा घनस्याम देव मंद मंद मुसुकानि बूँद बरसाइये॥ गेाप की किसेारी भेारी चितवै चकेारी चारु ताको तिन ओरी नाह नाहिँ तरसाइये। छेाड़ि छलछंद ब्रजचंद निज जान हमैं आनँद को कंद मुखचंद दरसाइये ॥१५५॥

व्याल तें उबारी गिरिधारी टारी है दवारी अबलों मुरारी भारी संकट विषे रखे। तकैं तव ओरी किमि तजैं मुखचंद पूर कैसे ए चकेारी धीर धरैं धूर के भषे॥ अहे गेापवंस अवतंस राज-हंस तुम मम मन मानस रमन कित गे सषे। आवरे लषाव हमैं साँवरे सलेाने तन जुग से बिहाय छन रावरे बिना लषे ॥१५६॥

बिरह पयेाधि तें कृपा के सिन्धु दीनबंधु कीजै पार निराधार हिय के जहाज कों। प्रेम नेम तेाष धीर पथी ह्वै अधीर रहे एहेा बलबीर लषे बिकल समाज को॥ गेाकुल के गेाकुल कों व्याकुल उबारे प्यारे हुते जब वारे धारे धराधरराज कों॥ स्वामी सिरताज मेरे टेरे किन सुनेा आज एरे ब्रजराज तेरे काज तजी लाज को ॥१५७॥

सुनि मम बानी दीन द्रवैं पवि पाहन हूँ रेावैं तरु मेली जड़ बेली कुंज बन की। कृपासिंधु दीनबन्धु बरनैं विरद वेद होत नहिँ खेद तुम्हें देखे दसा जन की॥ हा हा उन दिन की सुरति तुम भूले

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नाह करो अनुकूले ह्वै हमारे सब मन की। छाजै छन छन छन छटा छबि छैल तेरी मेरी मति घटा में धरी है रीति पन की ॥१५८॥

तकि तकि चहूँ ओर जकि सी रही हैं थकि बकि बकि उठैं छकि छैल की लगन में। हा हा बलबीर कों बताय मेरी बीर एरी धाय धाय बूझति है कुंज के मगन में ॥ नंद के किसोर चितचोर कित खड़े ह्वैहैं गड़े ह्वैहैं कहूँ कुस कंटक पगन में। अजहूँ न आये बनमाली कित गये आली बोलीं चटकाली लाली लहकी गगन में ॥१५९॥

प्रगटे गुपाल लाल बालन को देखि हाल लपटी तमाल हरि तन में लता सी ह्वै। एक गरे धरे बाँह नाँह सेा झिगारि रही एक पद पाँह परीं बिनवति दासी ह्वै ॥ एक बाम बाम भुज गहे अति अभिराम स्याम घन अंग संग सजैं चपला सी ह्वै। एक ब्रजचंद की पिछोरी पीत गहे गोरी एक तेा चकोरी सम चितवत प्यासी ह्वै ॥१६०॥

[गोपिकाओं के वचन।]

अवली रदन की बदन में विराजैं जनु सुखमा के दार रहे विज्जु बीज गसि कै। नैन मन रंजन ए कंज मदगंजन हैं खेलै जुग खंजन ज्यों ससि में निकसि कै ॥ कुंडल की डोलनि अमोलनि कपोलनि में अहो दीनद्याल हिए हालति हैं धसि कै। आनंद के कंद ब्रजचंद नंदनंद नेक मेरी ओर देखिये जू मंद मंद हँसि कै ॥१६१॥

चंद ते दुचंद मुखचंद की चमाकैं रुचि चंदमौलि चित्त ह्वै चकोर रह्यो फसि कै। चोरि लेत चेत चख चंचल चितौनि चारु रही दीनद्याल बनमाल गरै लसि कै ॥ केसर ललाट दिए गात को त्रिभंग किए रहेा हिये मेरे यह बानक सेां बसि कै ॥ आनंद के कंद ब्रजचंद नंदनंद नेक मेरी ओर देखिये जू मंद मंद हँसि कै ॥१६२॥

जाय हर सीस गंग भृकुटी कुटी के तट जटाजूट कानन में तप कों बढ़ायेा है। मिल्येा मारतंड के प्रचंड तेज कुंड तहाँ तातैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छबि झुंड बरदान पाय आयो है ॥ पूरन पियूष धरे अस्वन पै च,ओ आनि तऊ न मयंक रंक समता कों पायो है। आनन तिहारो हरि कोटि चंद तें दुचंद चंदमुख बीच मनो मेचक लगायो है ॥१६३॥

[जलकेलि।]

करैं जलकेलि स्याम भुज तें भुजान मेलि मनो हेम बेलि रही लपटि तमाल सों। एक अंक भरें लै निसंक ह्वै मयंक मुखी एक बंक नैन कै बतावैं सैन लाल सों ॥ एक छुटि धावैं एक पकरि ले आवैं जुटि एक नीर नावैं पानि पल्लव रसाल सों। महिमा विसाल नहिं जानैं वेद जासु ख्याल परो प्रेमजाल जो छुटावै जग जाल सों ॥१६४॥

यह अनुराग सुबाग मैं, सुखद दुतिय केदार।
विरच्यो दीनदयाल गिरि, बनमाली सु बिहार ॥१६५॥

[मधुपुरी गमन समय वात्सल्य-रस-पूरित यशोदा-वाक-सारणी]

कवित्त।

प्रान के अधारे मेरे वारे ए पधारे चहैं भूप के अखारे जहाँ भारे सजैं सूरमैं। पीर बढ़ी है सरीर बूड़ति बियोग नीर धीर धरों कैसे करों आँखिन के दूर मैं ॥ डारो बरु कंस कारागार मैं जँजीर भरि एरी बीर जादु जरि धन धाम धूर मैं। जोपै ए कन्हैया बल भैया दोऊ लाल मेरे खेलै कहि मैया बैन नैन के हजूर मैं ॥१६६॥

चकई नचावै सीखै धावै पैरि आँगन लौं आवै दौरि गोद मेरे मानि कै डरन कों। पहिरि न सकै चीर छिनै छिन छकै चीर छोड़ै नहिं बीर छोटे छोह छोहरन कों। कहौं काहि गोप पाहिं सुनै कोऊ मेरी नाहिं गये सभा माहिं याहि कहा है करन कों। मीत कुलघालक कहैं न नीतिपालक सों कान्ह अजौं बालक चरावै बछरन कों ॥१६७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अजीर्ण व अजीर्ण के दस्त की दवा।

खाना पचानेवाले रसों के घटने बढ़ने वा विकार से अजीर्ण रोग होता है जिसके ये लक्षण हुआ करते हैं—खाने के बाद पेट भारी जान पड़ना, पेट में वायु होना, जी मिचलाना, खट्टी वा व्यर्थ डकार आना, छाती जलना, मुंह में पानी भर आना, पेट में थोड़ा थोड़ा दर्द होना, चित्त की ग्लानि, आलस्य आदिक। जब तक खाना हजम की थैली में रहता है और पाचनक्रिया कठिनता से होती रहती है यही हालत होती है। जब यह अनपचा खाना अँतड़ियों में उतर जाता है तब पेट में गड़गड़ाहट होती है, पेट फूलता है व दस्त की चेष्टा होती है। दस्त पतला वा पानी के ऐसा होता है। कभी कभी खाने के थोड़ी देर पीछे ही दस्त हो जाता है। दस्त होने से शरीर क्षीण होता है। ये सब हालतें कभी कम, कभी अधिक होती रहती हैं और महीनों तक चलती हैं। रोगी का शरीर दिन पर दिन गलता जाता है। अन्त को असाध्य हो जाता है।

शरीर की साधारण पुष्टि का घट जाना इस रोग का कारण है। नीचे लिखी हुई हालतों में ऐसाही होता है—

वृद्ध अवस्था; कोई विशेष रोग के बाद कमज़ोरी, कम खाना (जैसा कि व्रत, लङ्घन, पारण आदिक में लोग करते हैं), धातु के व्यर्थ नष्ट होने से क्षीणता, अधिक श्रम, दुश्चिन्ता वा शोक, प्रसव के विकार से कमज़ोरी।

इन विषयों को विचार कर डाक्तर बर्म्मन ने अजीर्ण की दवा बनाई है। खाना हज़म करने व अजीर्ण के दोषों को मिटाने में इसकी विशेष शक्ति है। यह दवा छोटी छोटी टिकिया की ऐसी बनी हुई है। पंदरह रोज़ के सेवन योग्य ३० टिकिया की एक शीशी का मोल १।) रुपया। डाक महसूल १ से ४ शीशी ।-) आने।

डा: एस. के. बर्म्मन ५, ६, ताराचंद दत्त ष्ट्रीट, कलकत्ता।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजन पुस्तकमाला।

इस पुस्तकावली में एक ही आकार तथा रूप रंग की हिन्दी की सौ उत्तमोत्तम पुस्तकें रहेंगी। अब तक निम्न लिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

(१) आदर्श जीवन।
(२) आत्मोद्धार।
(३) गुरु गोविंदसिंह।
(४) आदर्श हिन्दू १ भाग।
(५) आदर्श हिन्दू, २ भाग।
(६) आदर्श हिन्दू, ३ भाग।
(७) राणा जंगबहादुर।
(८) भीष्म पितामह।
(९) जीवन के आनन्द।
(१०) भौतिक विज्ञान।
(११) लालचीन।
(१२) कबीर बचतावली।
(१३) महादेव गोविंद रानडे।

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १), डाक व्यय अतिरिक्त, समस्त पुस्तकमाला के स्थायी ग्राहकों से ।॥) लिया जायगा, डाक व्यय अलग होगा।

हिन्दी शब्दसागर।

हिन्दी भाषा का बृहद्कोश। १२ अंक छप चुके हैं। प्रत्येक अंक में डिमाई चौपेजी आकार के ९६ पृष्ठ हैं। मूल्य प्रति अंक १), डाक व्यय अलग।

पृथ्वीराज रासो।

यह हिन्दी साहित्य का आदि ग्रंथ है। इसमें अंतिम क्षत्रिय सम्राट पृथ्वीराज चौहान का विस्तृत वृत्तांत कविचन्द लिखित है। साथही समस्त ग्रंथ का सारांश गद्य में दिया गया है। यह सुपर रायल आकार के ३१०० पृष्ठों में समाप्त हुआ है। मूल्य समस्त ग्रंथ का २०) रु०, डाक व्यय १॥) के लगभग।

ये तीनों पुस्तकें

मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा,

बनारस सिटी, से मिल सकती हैं।

——:०:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रन्थ संख्या ६०—६१] [पुस्तक संख्या २३ और २५

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक, श्यामसुन्दरदास, बी० ए० ।

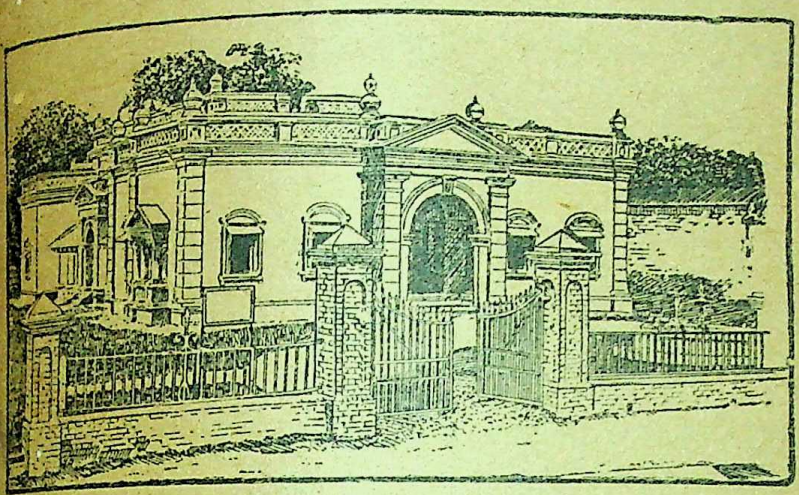

FASCICULUS NO. 60-61.] [BOOKS NO. 23 AND 25.

NAGARI-PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR

SYAM SUNDAR DAS, B.A.

61
Zha

PUBLISHED BY

THE NAGARI PRACHARINI SABHA

BENARES.

मूल्य प्रति संख्या ॥) *[Price per fasciculus As. 8.*

ISSUED ON THE 22ND NOVEMBER, 1919.

Printed by Apurva Krishna Bose, at the Indian Press, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका।

(२३) परमालरासो—बाबू श्यामसुन्दरदास द्वारा सम्पादित। (पृष्ठ ५२९—५५३ तक तथा भूमिका आदि)

(२५) दीनदयालगिरि ग्रंथावली—बाबू श्यामसुन्दरदास द्वारा सम्पादित (पृष्ठ १३७ से १९२ तक)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला २३

परमाल रासो

श्यामसुन्दरदास बी० ए०
सम्पादित

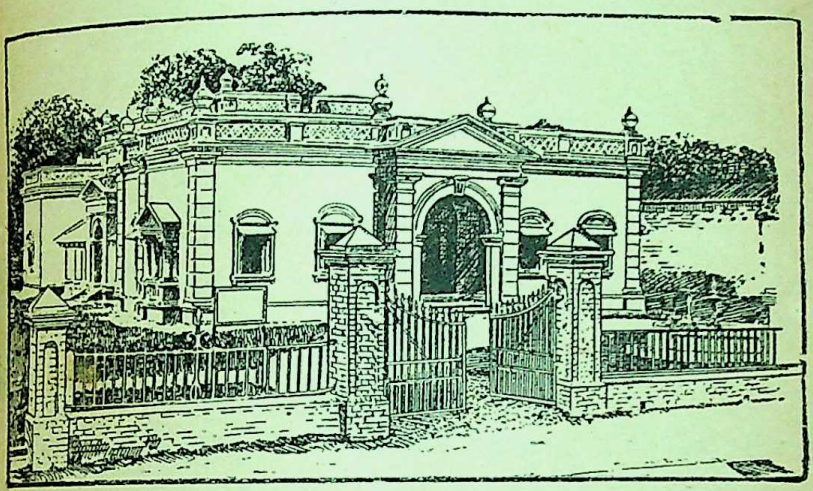

और

काशी नागरीप्रचारिणी सभा
द्वारा प्रकाशित।

संवत् १९७६

PRINTED BY APURVA KRISHNA BOSE, AT THE INDIAN PRESS,
ALLAHABAD.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका ।

सन् १९०१ में हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों की खोज के निमित्त मैं कलकत्ते गया था। वहाँ मैंने एशियाटिक सुसाइटी बंगाल के पुस्तकालय में रक्षित हिन्दी की हस्तलिखित पुस्तकों की जाँच की। ऐशियाटिक सुसाइटी ने एक समय पृथ्वीराज रासो का छापना आरम्भ किया था, पर कई कारणों से वह काम बहुत दिनों तक न चल सका और थोड़े से समयों के छपने के अनन्तर बंद हो गया। इस काम के लिये एशियाटिक सुसाइटी ने पृथ्वीराजरासो की अनेक हस्तलिखित प्रतियों का संग्रह किया था। इन सब प्रतियों की जाँच करते करते मुझे एक पुस्तक पृथ्वीराजरासो के नाम से मिली। यह दो जिल्दों में बँधी हुई थी। एक जिल्द का नाम 'महोबा खंड' और दूसरी का 'क़नवज खंड' था। दोनों खंड संवत् १९२५ के लिखे हुए थे। इन दोनों जिल्दों का वर्णन सन् १९०१ की हस्तलिखित हिन्दी पुस्तकों की खोज की रिपोर्ट की नोटिस संख्या ४६ और ४७ में दिया है। पीछे से "महोबा खंड" की एक प्रति छत्रपुर निवासी बाबू जगन्नाथप्रसादजी से मुझे प्राप्त हुई। यह प्रति संवत् १८४९ (अंक वेद वसु इंदु पुनि) की लिखी हुई है। इसकी पूरी जाँच करने के लिये मैंने एशियाटिक सुसाइटी से केवल "महोबा खंड" की प्रति मँगाई। दोनों के मिलान करने पर यह प्रगट हुआ कि दोनों एक ही मूल ग्रन्थ की प्रतियाँ थीं, यद्यपि कहीं कहीं पाठभेद था। दोनों ग्रन्थों का नाम "पृथ्वीराज-रासो" दिया हुआ था और कर्त्ता का नाम "चंद बरदाई" था, परन्तु पृथ्वीराजरासो के नाम से जो ग्रन्थ ६ खंडों में काशी नागरी-प्रचारिणी सभा ने प्रकाशित किया है उसमें और इसमें आकाश पाताल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का अन्तर है। "महोबा खंड" में पृथ्वीराज चौहान और परमर्दिदेव (परमाल) के बीच में जो भयानक युद्ध हुआ था उसका सविस्तर वर्णन है। "कनवज खंड" में पृथ्वीराज चौहान और जयचंद (पंगराज) के युद्ध का वर्णन है। इन दोनों घटनाओं का वर्णन पृथ्वीराजरासो के कुछ थोड़े से समयों में दिया गया है।

यद्यपि इसमें सन्देह नहीं है कि पृथ्वीराजरासो की जो प्रति काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने छाप कर प्रकाशित की है उसमें क्षेपक बहुत अधिक हैं, परन्तु यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। गोस्वामी तुलसीदासजी कृत रामचरितमानस से प्रसिद्ध और सर्वपूज्य ग्रन्थ में ३०० वर्षों में इतने अधिक क्षेपक मिल गए हैं कि उनसे इस मानस के असली रूप का पहचानना कठिन होगया है। यह व्याधि इतनी बढ़ गई है कि मानस के असली सात सोपानों के स्थान में आठ कांड हो गए हैं। ऐसा कहा जाता है कि पृथ्वीराजरासो को बने सात सौ वर्ष से अधिक हो गए तथा राजपुताने और मध्यभारत में इस ग्रन्थ का बहुत अधिक प्रचार रहा है। इस अवस्था में यदि इस ग्रन्थ में क्षेपक मिल गए हों तो इसमें आश्चर्य की कौन बात है। अभी तक पृथ्वीराजरासो की असल प्रति का कहीं पता नहीं लगा है। एशियाटिक सुसाइटी जिसे असल प्रति माने बैठी है उसके असली होने में बड़ा सन्देह है। इधर "पृथ्वीराज-विजय" नाम के एक संस्कृत काव्य की खंडित प्रति का पता चला है। इसका एक संस्करण रायबहादुर पंडित गौरीशंकर हीराचन्दजी ओझा प्रकाशित करनेवाले हैं। मूल ग्रन्थ तो छप गया है पर उसकी भूमिका आदि के न लिखे जाने के कारण वह अभी तक प्रकाशित नहीं हुआ है। इस विजय काव्य में दी हुई घटनाओं तथा पृथ्वीराजरासो की उस प्रति में दी हुई घटनाओं में, जिसे एशियाटिक सुसाइटी असली माने बैठी है, बड़ा अन्तर है। फिर आज तक यह पता न लगा कि एशियाटिक सुसाइटी की पृथ्वी-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

राजरासो की यह प्रति किस प्रकार के कागज आदि पर, किन अक्षरों में और किस संवत् की लिखी हुई है। जब तक ये बातें न प्रगट हों तब तक उसे असली प्रति मान लेना कदापि उचित नहीं है। अस्तु मेरे कहने का तात्पर्य इतना ही है कि पृथ्वीराजरासो की असली प्रति का अभी तक पता नहीं चला है और काशी नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित प्रति क्षेपकपूर्ण है।

इस अवस्था में पृथ्वीराजरासो के नाम से अंकित तथा 'महोबा' और 'कनवज' खंडों में विभाजित इस पुस्तक का पता चलना बड़ा कौतूहलजनक है। वास्तव में यह पृथ्वीराजरासो नहीं है, वरन उसमें वर्णित दो मुख्य घटनाओं को लेकर मुख्यतः पृथ्वीराजरासो में दिए हुए वर्णन के आधार पर लिखा हुआ एक स्वतंत्र ग्रंथ है। इस ग्रंथ की भाषा भी प्राचीन नहीं है, जैसी कि पृथ्वीराजरासो में अधिक अंश में प्रायः मिलती है। फिर शब्दों की बनावट तथा उनके रूप इस बात का स्पष्ट प्रमाण देते हैं कि यह अजमेर या दिल्ली में बना प्राचीन ग्रंथ नहीं है। मेरा अनुमान है कि किसी बुँदेलखंडी कवि ने इस ग्रंथ की रचना वैक्रमीय सत्रहवीं या अठारहवीं शताब्दी में की है। उसने इस ग्रंथ के लिखने में आधार पृथ्वीराजरासो को माना हो और संभव है कि घटनाओं का विस्तारपूर्वक वर्णन किंवदंतियों के आधार पर किया हो या "आल्हा" नामक ग्रंथ के आधार पर अथवा जगनिकराय के लिखे किसी ग्रंथ के आधार पर किया हो। जो कुछ हो, इसमें संदेह नहीं कि ग्रंथ अद्भुत है तथा भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास की एक उत्साहवर्धक, अभिमानकारक और भाग्यनिर्णायक घटना के सविस्तर वर्णन से संबंध रखता है। अतएव इस ग्रंथ का प्रकाशित करना मुझे सर्वथा उचित और आवश्यक जान पड़ा। मुझे आनंद और संतोष है कि काशी नागरीप्रचारिणी सभा ने इसे प्रकाशित करना स्वीकार किया और नागरी-प्रचारिणी ग्रंथमाला में क्रमशः प्रकाशित हो यह समाप्त हो गया।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यद्यपि इस ग्रंथ का नाम मूल प्रतियों में पृथ्वीराजरासो दिया हुआ है, पर इस नाम से इसे प्रकाशित करना लोगों को भ्रम में डालना होता। अतएव मैंने इसे "परमाल रासो" यह नाम देने का साहस किया है। इस नामकरण के लिये मैं ही उत्तरदाता हूँ। मेरे विचार में यह नामकरण सर्वथा उचित हुआ है, क्योंकि इससे मूल पृथ्वीराजरासो से इसकी विभिन्नता प्रगट होती है तथा इसमें वर्णित मुख्य घटना का निर्देश स्पष्ट हो जाता है। यह काम मैंने अवश्य साहस का किया है पर जिन कारणों से प्रेरित होकर मैंने ऐसा किया है उनका उल्लेख कर इसके औचित्य तथा अनौचित्य का निर्णय मैं विज्ञ पाठकों पर छोड़ता हूँ। मेरा विचार है कि इस ग्रंथ का दूसरा खंड (कनवज खंड) 'पंग रासो' के नाम से प्रकाशित किया जाय।

इस ग्रंथ में ३६ अध्याय हैं जिनकी सूची आगे दी है। इस सूची के देखने से यह स्पष्ट हो जायगा कि इस ग्रंथ में आल्हा ऊदल की जीवनी सविस्तर दी गई है। दूसरे अध्याय में चंदेलवंश की वंशावली दी हुई है। शिलालेखों से इस वंश की जैसी वंशावली का पता चलता है वह इस ग्रंथ में दी हुई वंशावली से नहीं मिलती। सन संवत तो इस ग्रंथ में कहीं दिया ही नहीं है। राजाओं के जो नाम आए हैं वे भी शिलालेखों में दिए नामों से नहीं मिलते। इस ग्रंथ में दी हुई वंशावली इस प्रकार है—

चन्द्रब्रह्म, बालब्रह्म, पारब्रह्म, रूपब्रह्म, बेलब्रह्म, गजब्रह्म, ज्ञानब्रह्म, जानब्रह्म, शक्तिब्रह्म, प्रथुब्रह्म, कीलब्रह्म, श्रीकल्यानब्रह्म, सूरजब्रह्म, रूपब्रह्म, विधुब्रह्म, राहिलब्रह्म, मदनब्रह्म, कीर्तिब्रह्म, परिमाल।

शिलालेखों तथा दानपत्रों में जो वंशावलियां दी हैं उनका प्रारंभ इस प्रकार होता है— चन्द्रात्रेय के वंश में नन्नुक हुए। अर्थात् नन्नुक से ये वंशावलियाँ प्रारम्भ होती हैं—नन्नुक से प्रारम्भ होकर इस वंश का वृत्त इस प्रकार बनता है—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

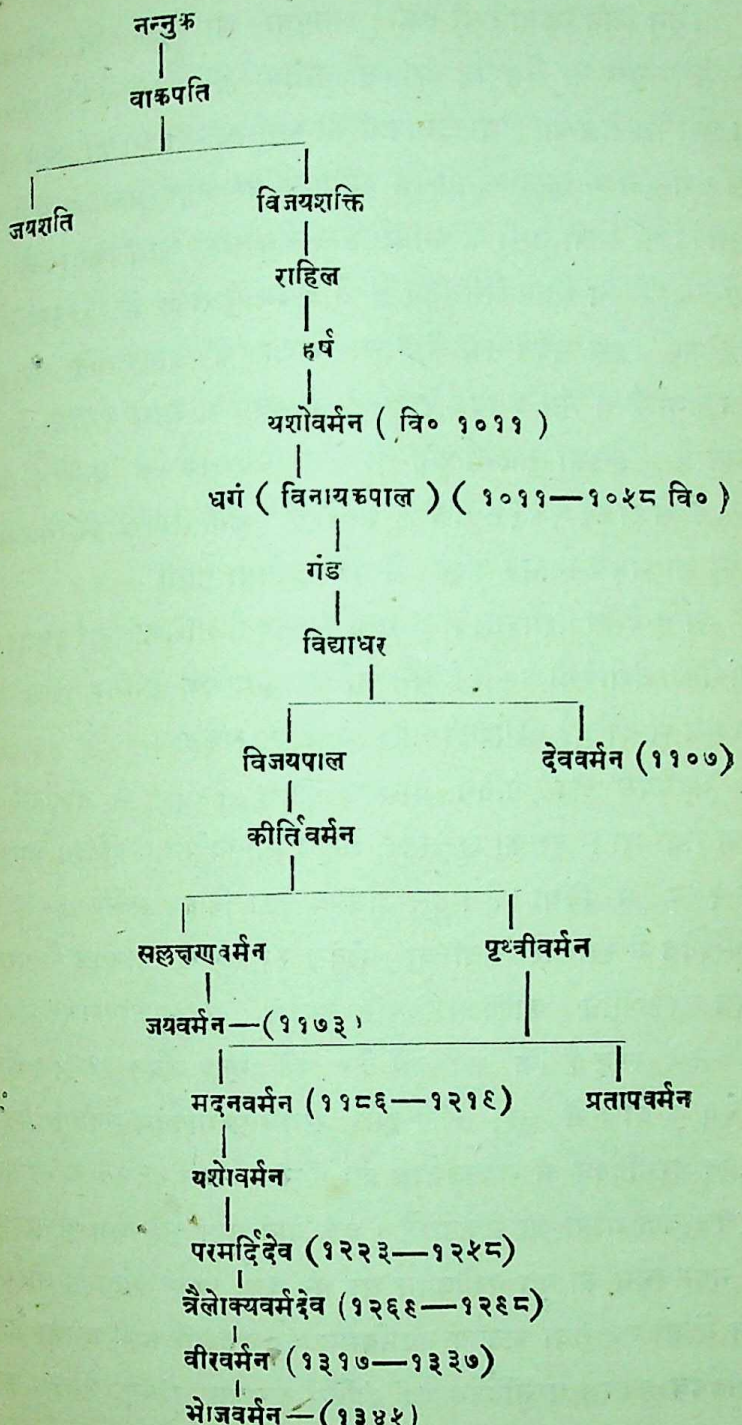

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिन जिन शिलालेखों तथा दानपत्रों का मुझे पता चल सका उसके आधार पर मैंने यह वंशवृक्ष बनाया है। संभव है कि और भी ऐसे शिलालेखों तथा दानपत्रों का अनुसंधान हुआ हो और उनसे इस वंश-वृक्ष में कुछ न्यूनाधिक हो जाय पर जहाँ तक सामग्री मुझे उपलब्ध हो सकी उसी के आधार पर मैंने यह काम किया है। इस वंश-वृक्ष में जो संवत मैंने दिए हैं वे वैक्रमीय संवत है। जिस संवत से लेकर जिस संवत तक के जिस राजा के दानपत्रादि का मुझे पता लगा है वे मैंने दे दिए हैं, जैसे मदनवर्म के आगे ११८६–१२१९ दिया है। इसका तात्पर्य यह है कि मदनवर्म के दानपत्र संवत ११८६ से लेकर १२१९ तक के मिले हैं। इन संवतों से भिन्न भिन्न राज्ञों का समय निश्चय करने में बड़ी सुविधा होगी।

अस्तु दोनों वंशावलियों में बड़ा अन्तर है। शिलालेखों तथा दानपत्रों से जो वंशावली बनती है वह अधिक प्रामाणिक है और उसके रहते इस ग्रंथ में दी हुई वंशावली ग्राह्य नहीं हो सकती।

मदनवर्म का अंतिम दानपत्र संवत् १२१९ में वारीदुर्ग में दिया गया था। इसका सविस्तर वर्णन एपिग्राफिका इंडिका भाग ४ पृष्ठ १५८ में दिया है। इस दानपत्र को विक्रम संवत् १२२३ में परमर्दिदेव ने स्वीकार किया था। संवत् १२२३ के दानपत्र में परमर्दिदेव की उपाधि "कालिंजराधिपति चन्देल महाराजधिराज" लिखी है जिससे स्पष्ट है कि मदनवर्म देव की मृत्यु संवत् १२१९ और १२२३ के बीच में हुई, और इसी समय परमर्दिदेव गद्दी पर बैठे। अतएव परमर्दिदेव के राजत्वकाल का आरंभ संवत १२२० के लगभग निश्चयपूर्वक माना जा सकता है। एक बात यहां कह देना आवश्यक है। मदनवर्मन का पुत्र यशोवर्मन था पर वह अपने पिता के जीवनकाल में ही मर गया अतएव मदनवर्मन का उत्तराधिकारी उसका पौत्र परमर्दिदेव हुआ। परमर्दिदेव का अंतिम दानपत्र संवत् १२५८ का

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खुदा मिला है और उसके पुत्र त्रैलोक्यवर्मदेव का पहला दानपत्र संवत् १२६९ का लिखा मिला है, अतएव यह निश्चय है कि परमर्दिदेव की मृत्यु संवत् १२५८ और १२६९ के बीच में हुई। इसलिये परिमर्दिदेव का मृत्युकाल १२६० के लगभग मान सकते हैं। इस हिसाब से परमर्दिदेव ने ४० वर्ष के लगभग राज्य किया। अब तीसरी घटना जिसपर हमें विचार करना है वह यह है कि परमर्दिदेव और पृथ्वीराज के बीच में जो युद्ध हुआ और जिसका सविस्तर वर्णन परमाल रासो में है वह किस संवत् में हुआ। पृथ्वीराज का जन्म संवत् १२०५ में हुआ था और संवत् १२४८ में उनकी मृत्यु हुई। मदनपुर की बारादरी के दो स्तंभों पर दो लेख खुदे हैं। इनमें से पहला लेख इस प्रकार है

श्रीचाहूमानवंश्ये—
न पृथिवीराजभू-
भुजा। परमर्दिनरेन्द्र
स्य देशोयमुदवास्थते॥

दूसरा लेख इस प्रकार है—

ओं अण्णोराजस्य पौत्रेण श्री-
सोमेश्वर सूनुना। जेजाक—
भुक्तिदेशोयं पृथ्वीराजेन
लूनितः॥ सं० १२३९

इस दूसरे लेख से हमें स्पष्ट प्रमाण मिल गया कि संवत् १२३९ में पृथ्वीराज ने परमर्दिदेव पर विजय प्राप्त की। अतएव यही संवत् इस युद्ध का मानना चाहिए। परमालरासो की दोनों प्रतियों में (चौथा अध्याय ११२ दोहा पृष्ठ ६०) यह दोहा है—

ग्यारह सै चालीस भनि, ईष मास बुधवार।
करयो कोपु चंदेल पर, संभरि संभरि वार॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह स्पष्ट अशुद्ध है। ग्यारह सौ की जगह बारह सौ चाहिए था। यह समझ कर मैंने यह पाठ शुद्ध कर दिया है।

इन ऊपर लिखी बातों से यह स्पष्ट है कि इस युद्ध के अनन्तर लगभग २० वर्ष तक परमर्दिदेव जीते रहे। पर परमाल रासो के देखने से ऐसा विदित होता है कि इस युद्ध में पराजित होने की ग्लानि के कारण परमर्दिदेव ने अपने प्राण दे दिए। रानी मल्हनदे ने राजा से कहा

"चाहुवान बंधे सु अब, तजहु क्षेत्रवर काय"

इस पर राजा ने गजाधर के मन्दिर में जाकर अपने प्राण दे दिए—

गयौ गजाधर ग्रह कव, कियव मरन कव जाप।
उच्च बोलि बानिय दइय, चाहुवान कह श्राप॥
अलहन पीछै छद्म करि, सत्र बंध लिय साथ।
मम पट्टे लागै जुगल, नेत्र कट्टियव नाथ॥
यह कहिकै चंदेल नृप, जोगेस्वर मन लीन।
तजि माया यहि लोक की, पदमावति चितु दीन॥
भूपति तजे प्रान सुर अग्गह।
मुष हरि वदत ध्यान उर पग्गह॥

यह घटना भी सत्य नहीं जान पड़ती, इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं जैसा कि मैं पहले दिखा चुका हूँ कि परमर्दिदेव इस युद्ध के बीस वर्ष पीछे तक जीते रहे और उनकी मृत्यु के १० वर्ष पहले पृथ्वीराज का वध हो गया था।

परमालरासो में लिखा है कि परमर्दिदेव के पीछे समरजित्त राजा हुए। शिलालेखों में कहीं इस नाम का पता नहीं लगता। उनके अनुसार तो त्रैलोक्यवर्मदेव राजा हुए। अतएव मेरा सिद्धांत तो यह है कि इस परमाल रासो का ऐतिहासिक मूल्य बहुत कम है और इसका मुख्य कारण यही है कि किसी आधुनिक कवि ने देशाभिमान से प्रेरित होकर सुनी सुनाई बातों को लेकर तथा प्रचलित किंवदंतियों

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

और ग्रंथों को आधार मान कर इस काव्य की रचना की है। ऐतिहासिक बातों की जाँच पड़ताल करने का उसने कष्ट नहीं उठाया है। परंतु साथ ही यह भी मानना पड़ता है कि इस काव्य को पढ़ कर हृदय में एक अपूर्व भाव उत्पन्न होता है। देश के पूर्व गौरव और उसके महापुरुषों के आदरणीय तथा आदर्श चरित्रों का दृश्य आँखों के सामने उपस्थित हो जाता है और हृदय में उत्साह, आनन्द और अभिमान के भावों को प्रबलता से उत्पन्न करता है। इस विचार से यह ग्रन्थ अवश्य आदरणीय है।

लखनऊ,
आश्विन ६ संवत् १९७६

श्यामसुन्दरदास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अध्याय सूची ।

(१) चन्द्रब्रह्म-उत्पति खंड ... ... १— १८
(२) चन्द्र-वंश-वर्णन खंड ... ... १८— ३६
(३) अल्हन-संबोध खंड ... ... ३७— ४८
(४) मलखान-मंत्रायन-वर्णन खंड ... ... ४९— ६५
(५) मलखान-युद्ध-वर्णन खंड ... ... ६६— ८६
(६) अल्हन-स्वप्न-वर्णन खंड ... ... ८७— ९१
(७) जगनक-कनवजपुर-गमन खंड ... ... ९२—१०३
(८) यवन-युद्ध खंड ... ... १०४—१०८
(९) आल्ह-कनवज-गमन खंड ... ... १०९—१२४
(१०) जयचन्द-मिलाप खंड ... ... १२५—२२६
(११) अल्ह-ऊद-प्रतिज्ञा खंड ... ... २२७—२४१
(१२) अल्हन-जयचन्द-प्रसंग खंड ... ... २४२—२४३
(१३) बटेसुर-गमन खंड ... ... २४४—२५५
(१४) बेला-विवाह खंड ... ... २५६—२७९
(१५) आल्ह-प्रत्यागमन खंड ... ... २८०—२८३
(१६) गुप्तमंत्रणा खंड ... ... २८४—२९९
(१७) शिव-भविष्य-कथन खंड ... ... ३००—३०६
(१८) महोत्सव-नगर-प्रवेश खंड ... ... ३०७—३१९
(१९) राजा-रूपब्रह्म-आख्यान-वर्णन खंड ... ... ३२०—३३६
(२०) अन्तःपुर-मंत्रायण खंड ... ... ३३७—३५४
(२१) रानी-कालिंजर-गमन खंड ... ... ३५५—३५९

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(२२) परिमाल-पलायन खंड ... ... ३६०—३७२
(२३) तहलनखाँ-बध खंड ... ... ३७३—३९२
(२४) सैनसहित लखनसी-बध खंड ... ... ३९३—४०३
(२५) अल्ह-संबोधन खंड ... ... ४०४—४०८
(२६) संगमराय-समागमन खंड ... ... ४०९—४२४
(२७) चौहान-सेना-पलायन खंड ... ... ४२५—४३४
(२८) उदल-बध खंड ... ... ४३५—४४७
(२९) आखेटक-शाप खंड ... ... ४४८—४६१
(३०) अल्हन-बरदान खंड ... ... ४६२—४८०
(३१) चौहान-चंदेल-समागम खंड ... ... ४८१—४८९
(३२) जगनिकराय-बध खंड ... ... ४९०—५०४
(३३) ब्रह्माजित-कुमार-बध खंड ... ... ५०५—५१२
(३४) गोरखनाथ-आगमन खंड ... ... ५१३—५२४
(३५) आल्ह-बन-गमन खंड ... ... ५२५—५३१
(३६) अंतिम खंड ... ... ५३२—५५३

[नोट—अध्यायों के शीर्षक जो इसी सूची में दिए गए हैं उन्हें ही ठीक मानकर मूल ग्रंथ में जहाँ कहीं भेद मिले उसे शुद्ध कर लेना चाहिए।]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अल्हन के सुन कै बचन, उड़े गगन दुचित्याय ।
देषि बनाफर ढरक दृग, मुरकि मुरकि हहिनाय ॥४०॥
जाहु कलिंजर दुर्ग कहँ, नृप परमाल जुहार ।
यहि कहि कै अल्हन नृपति, बिदा करे सब सूर ॥४१॥
कहौ भूप सह मो बचन, सत सावँत सुष पाय ।
महियपाल भुवपाल कहँ, बिदा करौ नृप राय ॥४२॥
जौ मानहु नृप ये बचन, मिटै सोक महि साल ।
पढ्यारिन ढिग राषतौ, बधे जाहु परमाल ॥४३॥
म्हां कदली बन कौ चलिव, थांके संग चितु लाय ।
कृपा करौ गजराज पर, आरूढहु गुरुराय ॥४४॥
रहत न नर सुर सिद्ध बस, गोरिष बचन उचारि ।
पीलवान कहँ अल्ह नृप, भूतल दयौ उतारि ॥४५॥

चौपही

पीलवान उतरत भुव रोयव । आंसुव झरत बसन तन धोइव ।
करिव दाद सुर बचन सुनाइय । अल्हन छंडि चले जन राइय ॥४६॥

दोहा

बाल तरुन तव सथ्य बसि, रह्यौ अंति तुव ठांव ।
तीजे पन अल्हन नृपति, अब काके ग्रह जाँव ॥४७॥
षंडि अस्त्र मम अग्र के, कोटिन दीन षपाय ।
म्हां कहँ अब भव सिंधु महँ, क्यों छंडत नरराय ॥४८॥

चौपही

पुनह बुल्लि गोरिष सह बानिय । मम जु सिद्ध तुम सुनहु कहानिय ।
भुक्ति मुक्ति दरसन लगि होइय । धृकु थां सिद्ध सिद्धता सोइय ॥४९॥

दोहा

प्रभु ध्याये गजराज हित, उब्बारयौ तजि सोक ।
दरसन फल ततकाल भय, गये दोय सुर लोक ॥५०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चौपही

पीलवान की सुनि बर बानिय । गोरिष गुरु करुना दिल आनिय ।
आव आव करि कुंजरि फेरयव । गहिव हथ्थ हरषति मन हेरयव॥५१॥

दोहा

पीलावान कहँ पील पर, पिंच लीन सिधराय ।
परसत वपु भव बह्नि सम, गय त्रय काल जनाय ॥५२॥

चौपही

पीलवान अंगै धर लिन्नव । सिद्ध गवन कदली बन किन्नव ।
अंतरिच्छ गज चलिव उड़ाइय । लषि इक चित्र बुल्लि जनराइय ॥५३॥
अचिरज आल्ह चित्त अति लिष्षव । गगन जात बनिता गनि दिष्षव ।
मनिनि कुंभ सोभित कल मथ्थह । कंचन कमलु कलित बर हथ्थह॥५४॥
सेत वसन अंगन अति सोहत । सरद मेघ दामिन मन मोहत ।
बरन बरन कल कलस बिराजहि । चंद सूर्ज लषि भूसुत लाजहि ॥५५॥
अम्मर अधिक छुट्ट छबि छाइय । वैजवंत जनु माल उड़ाइय ।
पुंछि आल्ह यह कह गुर राइय । सिद्धवधू सुरगंगहि जाइय ॥५६॥

दोहा

सती नारि सद उन्नतन, जरा देषि डर पाय ।
पुन्य ग्रंथ श्रमननि करहि, ते इहि पंथ चलाय ॥५७॥
बैरागर ते चालिया, आल्ह सहित गुरराय ।
जाम अर्ध महँ ऊतरे, कदली बन महँ जाय ॥५८॥

चौपही

सिंह सरभ जहँ लगि मृग बाढ़े । पहर आठ आश्रम ते ठाढ़े ।
सत्रु मित्र तह येकइ भेवा । करहि इक गोरिष की सेवा ॥५९॥
इक सुभ्र सुवरन किय सालह । करत सिद्ध तह ध्यान बिसालह ।
सदा सुरभि रितु तरवर फूले । भवर पुंज गुंजत अनुकूले ॥६०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कलरव करत कोकला के गन । मोहि रहे सुर सिद्धन के मन ।
तिहि बनवास करै गुरराइय । अल्हन सहित गये मनु लाइय ॥६१॥

दोहा

ऐसब अचिरज दिष्षि दृग, अल्हन अति सुख पाय ।
उतरे गुर के संगहिय, सुभ आश्रम महँ जाय ॥६२॥
अस्त्र सस्त्र अल्हन नृपति, छोर धरे गुर अग्ग ।
देहु सिद्ध तुम सिद्धपति, सो मारग मम लग्ग ॥६३॥
हष्थिय सहित महावती, अमर करे सुष पाय ।
भजौ उमापति रमापति, महि मंडल चितु लाय ॥६४॥
दियब मंत्र गुर शिष्य कहि, किन्निय कृपा अपार ।
नागलोक नरलोक नभ, सुर पुर करहु विहार ॥६५॥

चौपही

अल्हन गये समर तजि सूरे । गोरिष नै दिन्नै मत पूरे ।
देह अमर सुनि बन कह धायेय । छंडिब भोग जोग मन लाये ॥६६॥

दोहा

फिरे अल्ह तजि समर कहँ, छंडि भोग के वास ।
गोरिष संग बन कब गये, धरी निरंजन आस ॥६७॥

———

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

(३७) अंतिम खंड ।

दोहा

उत आश्रम कहँ अल्ह गे, गोरिष सँग सुष पाय ।
केहरि अवलोकन कथा, फिर संगर महँ आय ॥१॥
षवर नहिय तन माँझ कछु, परे मूरछा बीर ।
सटपटात नहि सक्ति सुर, तनि तन कौ नहि धीर ॥२॥
आल्ह षंडि चहुवान के, हय गय नर नरराय ।
अहन समर के गनित जुत, बदति चंद बरदाय ॥३॥
पंच अहन लष्षन लरि, उद्दल षोडस इक्क ।
जुगल अहनि अल्हन लरिव, जाकिय सुरपुर लिक्क ॥४॥
अस्व सहस दस चार सत, करी इक नहिं घट्टि ।
अल्ह कोप चहुवान कव, दस हजार भट कट्टि ॥५॥
डेढ़ सहस जुग सैन मह, पत साँवत इक छंडि ।
अवर पील सारे समर, परे पहुमितल षंडि ॥६॥

छप्पय

लष्षनसिय दिन पंच गर्भ जोधन कव गारिव ।
करि षग्गन के वार पील डौंगरसी डारिव ॥
उद्दल षोडस इक्क जुद्ध किन्नव अति भारिय ।
श्रोनित सरित बहाय परी दिल्लीपुर कारिय ॥
जुग अहन अल्ह चहुवान कब दस सहस्र भर षंडियव ।
गोरिष्ष बीच गुर चंद कवि छब्बीस दिवस संगर भयव ॥७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा

जगनायक के अंत नृप, चावँड दयौ चलाय।
सत सादीय सथ्थह सु दिय, गहव गहन रहि छाय ॥८॥
जगत मूरछा अल्ह नृप, चावँड डारहि मार।
तातै सत सादीय सहित, दाहिम दियौ निकार ॥९॥
अल्हन सँग गोरिष गयौ, चंद राम तन घुम्मि।
इक्क महूरत मूरछा, परे वीर नर घुम्मि ॥१०॥
अब रछ्या करता न कोइ, परे वीर समुदाय।
प्रथीराज सीना विषै, गिद्धिन बैठी आय ॥ ११ ॥
ब्रह्मजित्त कर वान बध, भुजा फुट्टि गये दोय।
गिद्धिनी सीना बैठिया, ऊभा हथ्थन होय ॥ १२ ॥
भूप भूमितल महँ परयौ, तन किय सुद्धि भुलाय।
ब्रह्मा कर बध सेल्ह उर, लोहा गयौ समाय ॥ १३ ॥

छप्पय

लोह लग्गि चहुवान परे मुरछाह धरत्तिय।
उर गिद्धिन गय बैठि चुंच बाहंत बिरत्तिय ॥
दिष्षिव संजम राय नृपति द्रग डाटत पंषिनि।
अपनै तन कौ मासु काटि भषु दियव ततत्तनि ॥
रहि सक्ति नयन दिष्षय नृपति अंत समै धम मिल्लयव।
आये विमान वैकुंठ के देह तज्जि भर चल्लयव ॥ १४ ॥

दोहा

गिद्धिनि कौं पलु भषु दयौ, नृप के नयन बचाय।
देह तज्य बैकुंठह, पहुँचे संजम राय ॥ १५ ॥

छप्पय

सत सावँत कव मथ्थ कथ्थ कविराजन गायव।
सहस छत्त लगि बीर अंग भूतल नहिं आयव ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह जानत सब कोय सुनौ श्रुत वेद बतायव ।
जह लरिया तह क्रत्त जित्त साहिब घर ल्यायव ॥
तिल तिल कट्टिव नहि मुरिव समर समै जसु बढ्ढयव ।
संजम भुवाल बल भीम सम पारथ सौं विक्रम गनिव ॥ १६ ॥

दोहा

येक महूरत मूरछा, चंदराम गुर पग्गि ।
स्वामि धर्महित देव जपि, तबै जुगल जन जग्गि ॥ १७ ॥

चौपही

गुर कविचंद वेासरिन धावत । गिद्ध उड़ाय नृपति ढिग आवत ॥
चहुव क्रोधि चितवत अधिकारेय । मनहु प्रेत पुर के रषवारेय ॥ १८ ॥
छतन सहित सावँत अनुकूले । मनहु सुर भरित सैमर फूले ॥
भुव मह परे बाच मुष नाहिय । चंद राम गुर करत सहाइय ॥ १९ ॥

दोहा

चंद गुरू के अंग मह, पंच पंच लगि घाय ।
सिथिल अंग प्रथिराज की, रक्षा करत बनाय ॥ २० ॥
अल्हन सब सावँत हनै, मानस और उपाय ।
चंद गुरू गोरिष्ष लिय, नृप प्रथिराज बचाय ॥ २१ ॥
पाय षवर परमाल नृप, अल्हन विपिन सिधाय ।
महियपाल भुवपाल मति, गढ़तै चलेय पराय ॥ २२ ॥
जब राजा गढ़ तै चल्यौ, कहिय मल्हन दे बत्त ।
तुम बंधन जावत्त तै, भूपति किन्नव मत्त ॥ २३ ॥
तिया बत्त मन्नि्य नहिय, भूपति चल्यौ पराय ।
हौनहार को मिंटई, बदत चंद बरदाय ॥ २४ ॥

छप्पय

भूपति चलिव पराय उतरि तर हट्टिय आयव ।
जान गया कह कीन सैन रष्षनि चितु लायव ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूपति दिन्नव भेद वेग चावँड बुलवायव ।
करि कपट्ट पड़िहार भूप चंदेल बँधायव ।।
अल्हन नरेस गोरिष्ष लिय गयव सिद्ध गन भिंटइय ।
करतार करयौ कवि चंद कहि हौनहार को मिंटइय ।।२५।।

दोहा

बंधि चंदेलै लै चल्यौ, चावँड राय अमान ।
कालिंजर बर दुर्ग तै, छुट्टिय सहस कमान ।। २६ ।।
रानिय नृप बंधन सुन्यौ, सूहरि लीन बुलाय ।
धरी दरव गजराज भरि, दिन्नव दंड पठाय ।। २७ ।।
दंड लियै सूहर महिल, मिलि तरहट्टिय आय ।
सश्थ लिन्न पडिहार भट, चावँड़ चलिव रिगाय ।। २८ ।।
चावंड सह भूपत्ति भर, उच्चरि बत्त सु मूल ।
अर्धराज किय अंग हिय, भूपति करिय कबूल ।। २९ ।।
स्वामधर्म चिन्हव न तुम, कपट पट्ट चहुवान ।
इक्क बत्त हम उच्चरहि, जौ मन्नै परवान ।। ३० ।।

छप्पय

चावंड राय चलाय जाय कालिंजर बिट्ठिव ।
दरवाजे करि बंद भूप काननि छिप बिट्ठिव ।।
खबर दीन्ह भूपत्ति जाहि दाहिम्मह कारिव ।
आगै आय चँदेल मिलति जुग वाहन धारिव ।।
सो पकरि बाह परिमाल नृप गज परि धरि सुलिज्जियव ।
मध्यान काल सत्वर अहनि चावँड बंध सु लै चलिव ।। ३१ ।।

दोहा

चंद ब्रह्म कह आदि दै, आसमुद्र भुवपाल ।
बंधि लयौ चांवड भरि, मति पलटौ परिमाल ।। ३२ ।।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छंद पद्धरी

चावंडि जीत परिमाल ल्याय । पडिहार सथ्थ सब ही दिखाय ॥
भूपत्ति पकरि पग पटक भूमि । राजा कुबत्त तुव मत्त घूम ॥ ३३ ॥
लिन्हौ सुहथ्थ चंदेल धाय । दुइ पंच दिवस रन माँझ आय ॥
पाई सुषवरि इंदल कुमार । धायौ जरूर हो करि तयार ॥ ३४ ॥
सँग सहस वीय असवार लीन । हलकार बीर आयौ नवीन ॥
चावंड राय किन्निय सुरारि । इंदल सुजित्त राजा निहारि ॥ ३५ ॥
भग्यौ सुसूर चावंड राय । परिमाल लीन सिवका चढ़ाय ॥
राजा सु इंद कालिंज ल्याय । चावंड माहिलै लै भगाय ॥ ३३ ॥
पहुँच्यौ सु छिप्र रन महँ पराय । दाहिम सु लग्गि चहुवान पाय ।
इंदल सु भूप लिन्नव छिड़ाय । लिय पकरि भूप माहिल सुराय ॥ ३७ ॥
अल्हन नरेस सुत बलिय अत्ति । संग्राम मद्धि बहु किये घत्ति ।
गैयर सु पंच हय सत गिराय । लिन्निव छिडाय परिमाल राय ॥ ३८ ॥
उचरहि बत्त बहु चर लगाय । माहिल सुभेद भुवपत्ति पाय ।
माहिल कसन्न कुट्टे नवीन । दुव बंधु दंड सत कोटि लीन ॥ ३९ ॥
बहु कुट्ट लुट्ट भल भल सुकीन । त्रय बंधु भूम फिर पटक दीन ।
परिमाल भूप लिन्निव छिडाय । बिन अल्ह सुवन को करि सहाय ४०॥
दाहिम सु आइ किन्निय सलाम । प्रथिराज अग्गमत कीन ताम ।
गुररास चंद चावंड राय । घायल सु सूर पट्टे बँधाय ॥ ४१ ॥
चहुवान हुकुम किन्नव सुफेर । ढुंढव सु समर सामंत हेर ।
कयमास कनक पज्जून जैत । नरसिंह निडुर जामुन समैत ॥ ४२ ॥
तौंमर पहार पुंडीर चंद । धावर धीर बड परे दंद ।
षेता षगार हाडा हमीर । हाहुलिय राय धरि परि गँभीर ॥ ४३ ॥
पचास इक अंगह सुघाय । किन्नी सुफेर करतार आय ।
सब सुभट सूर रन परि अचेत । भये विषम जुद्ध रचि श्रोन षेत ॥४४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रन गिरे सूर दिष्यौ सुचाल । सावंत अल्ह सम भीम काल ।
पहुँचे सुप्रान वरलोक जोर । करता सुफेर दिन्निव बहोर ॥ ४५ ॥
बरदाय चंद गुर राम जोर । पढ़ि मंत्र सजीमनि सर्व भोर ।
जग्गे सु सूर सामंत सर्व । दल मल असंष झलकंत सर्व ॥ ४६ ॥
करि कूच नृपति दिल्लिय दिसान । पज्जून बोलि हज्जूर आन ।
तुम रहु महोब नृप सुभट पान । धरि सौंप भार हय गय समान ॥४७॥

दोहा

पानि जोरि चहुवान कहि, चंद राम गुर आनि ।
दियव भार पज्जून भुज, राखि महोबै थान ॥ ४८ ॥
चाहुवान दिल्लिय नगर, किन्निव नगर प्रवेस ।
घरि घरि मंगल महल हुव, आयौ जित्त नरेस ॥ ४९ ॥
चंद राम गुर संग ही, पहुँचे आन निकेत ।
दीन दान भिच्छुकन कह, अति आनंद समेत ॥ ५० ॥
इक्कन ग्रहन अनंद अति, इक्कन ग्रह अति सोक ।
संजम ग्रह सुन सुंदरिन, था पिय गय परलोक ॥ ५१ ॥
तिंस पंच दह रानियाँ, तिन पति संजम राय ।
अगिनि ज्वाल मह माल जनु, परीं परीं फहराय ॥ ५२ ॥

चौपही

सत्त सहस सूरन किय नारिय । जे रन मभ्भ कटे करि रारिय ॥
अग्नि आनि तिनहू तन दिन्निय । निर्भय बास सत्तपुर किन्निय ॥५३॥
फुट्टि सेल्ह तन षवर जु नाहिय । गिद्धिन नेत्र लेत बल गाहिय ॥
अप्पन त्रच्य काटि भषु दिन्नव । जीवदान संजम नृप दिन्नव ॥ ५४ ॥

दोहा ॥

संजम राय कुमार कह, बोलि हजूर नरेस ।
हय गय मनि मानिक बगसि, अध आसन अध देस ॥ ५५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वीस सहस बलिवान गनि, अरु नृप सैन अपार ॥
बो सत सह दिल्ली गयौ, भूपति संभर वार ॥ ५६ ॥
अमर देह सह सूर मह, करि षग्गनि के षेल ॥
रहे सरन सत आल्ह के, कटी चमू चंदेल ॥ ५७ ॥
सत सावँत मह सप्त कटि, किन्नव सुरपुर बास ॥
अवर सावँतन अंग मह, घाय पचास पचास ॥ ५८ ॥
लियव दंड जन पद्द लये, किन्नव नृपत निरास ॥
छंडि गयौ परमाल गय, गयौ गजाधर पास ॥ ५९ ॥
समर जित्त परिगह सहित, परे भूप के पाय ॥
कालिंजर बर दुर्ग तै, रानी लइ बुलाय ॥ ६० ॥
करि प्रदच्छिना मल्हन दे, परी कंत के पाय ॥
चाहुवान बंधे सु अब, तजहु छेत्रवर काय ॥ ६१ ॥
रानी के नृप बचन सुन, लज्य मानि मन ग्राम ॥
राज्य अप्फिरन जित्त कह, गयौ गजाधर ग्राम ॥ ६२ ॥
गयौ गजाधर ग्रेह कह, कियव मरन कव जाय ॥
उच्च बोलि बानिय दइय, चाहुवान कह श्राप ॥ ६३ ॥
अल्हन पीछै छद्म करि, सत्र बंध लिय साथ ॥
मुम पट्टे लग्गै जुगल, नैत्र कट्टियव नाथ ॥ ६४ ॥
यह कहि कै चंदेल नृप, जोगेस्वर मत लीन ॥
तजि माया महि लोक की, पदमापति चितु दीन ॥ ६५ ॥

चौपही

भूपति तजे प्रान सुर अग्गह । मुष हरि बदत ध्यान उर पग्गह ॥
मल्हन दे कह सषिन सुनाइय । तजे आसु असु कंत मिलाइय ॥ ६६ ॥

दोहा

मल्हन दै पीछै जरी, असी बिंस दो नारि ॥
सत्य लोक महं बासु किय, नृप चंदेल निहारि ॥ ६७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता पीछै ब्रम्हा त्रियां, विहँसत कढीं पचास ॥
व्रन समान भू पुर गन्यौ, मरहिं कंत की आस ॥ ६८ ॥

छप्पय

नालिकेल लिय हथ्थ मथ्थ बिगलित कच सोहत ।
चढ़े कनक के खम्ह व्याल बालक मन मोहत ॥
हाय हाय सब लोक नाम हर हर उच्चारहिं ।
सुर सर सिरहिं विमान सुमन बरषत कर धारहिं ॥
तन त्याग त्याग उज्जिल अगिन सत्य लोग संमुह चलहिं ॥
त्रय कोट अर्ध अब्दह मुदित जाय वीर ब्रम्है मिलहिं ॥ ६९ ॥

दोहा ॥

ब्रम्हा त्रिया सरीर तजि, छंड मोह मय आस ॥
सत्यलोक सुष सिंध मह, बसीं कंत के पास ॥ ७० ॥
प्रथा बहिन प्रथिराज किय, ता लघ बेल सुनारि ॥
कलि मह कृत्या ऊपजी, जरी सेन संघारि । ७१ ॥
कृतजुग कृत्या रेनकह, त्रेता सिया विचारि ॥
द्वापर महं भइ द्रोपदी. कलि ब्रम्हाजित नारि ॥ ७२ ॥

छप्पय

सत्रसाल सकेतस दला गहिलौत कट्टि तन ॥
चक्रपानि सुरजन्न भार भल कीन भीम रन ।
अवर बीर बहु मरिग तासु त्रिय दह हजार जरि ॥
गया छेत्र सर रचिय गजाधर सर्व पाय हरि ।
भारथ्थ कट्टि फिरि अवतेरय तेइय तिय तेइ पुरिष हुव ॥
ते छंडि छंडि संगर तनहिं बासव पुरि किय बासु धुव ॥ ७३ ॥

दोहा

बासवपुर बहु बीर बसि, भव सरिता पति नंकि ॥
इक देवपुर सत्यपुर, सूर भित्ति इक बंकि ॥ ७४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छप्पय

गया छेत्र सर रचिग करे अस्नानि फलक धुनि ।
परसि गजाधरि देव अवर सरवत्र परस मुनि ॥
देवलि के परि पाय लाय कुंकुम सब अंगह ।
पहिर बसन भूषननि नाह अंसुक लिय संगह ॥
हय छंडि भूमि तल उत्तरिय बिहँसि बदन जल केल किय ॥
दिष्षत बिमान चढ़ि देवगन उद्दल तिय तनु अग्नि दिय ॥ ७५ ॥

दोहा

उदर बनी पिय वसन सँग, जरी बन्हि मह जाय ।
अल्हन त्रिया सरीर तजि, अंत कंत के आय ॥ ७६ ॥
उद्दल कौ बाँका सुन्यौ, अल्हन गुरु लै जाय ।
देवल दै पाइय खबरि, उर धर त्रिभुवन राय ॥ ७७ ॥
ईदल कह अवलोक कहि, समरजित्त गहि बांह ।
था पुरषां म्हा बंस पर, करि आये नृप छांह ॥ ७८ ॥
समरजित्त कह भार दै, ईदल कौ सुख पाय ।
बिन्दबासिनी कौ गई, देवल दे चितु लाय ॥ ७९ ॥
ध्यान धारि उर मह गई, दुर्गा के मठ मध्य ।
कुस बिछाय सुख पाय तिय, हूँ दै सक्ति अरध्य ॥ ८० ॥
ब्रम्हरंध्र ह्वै प्रान तजि, उड़िय जोति फहराय ।
फिरि आई सुरपुर सबै, दुर्गा देह समाय ॥ ८१ ॥
देवल दुर्गा देह गय, माहुल कंत मिलाय ।
मिलि उद्दल महराउद्दे, सत्य लोक मह जाय ॥ ८२ ॥
इन्द्र नरिन्द्र कुमार विय, समरजित्त के संग ।
तात वत्त लीनै सुसब, आयस करहिं न भंग ॥ ८३ ॥
असिय वर्ष त्रय राज्य करि, दै विप्रन दिन दान ।
स्यौरन बासहि भूप गौ, सत्य लोक अगवान ॥ ८४ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वाचनीक

यंक सत साठ रानी सहित राजा परमाल चलत भये ॥ कौन कौन रानी ॥ मल्हनदे ॥ कामदे ॥ चन्दमुखो ॥ अरिविंदमुखी ॥ पटरानियां सौ परमाल सत्य लोक पहुँचे ॥ अरु अष्ट भोगन को भोगत भये ॥ इति भोगाष्टकं उदीरतं कौ अर्थ कथ्यते ॥ जथा पंच सायकम् ॥

श्लोक

सुगंधं वनिता वस्त्रं गीतं तांबूल भोजनम् ॥
वाहनं भूषणं चेति भोगाष्टकमुदीरतम् ॥ ८५ ॥

दोहा

गय चँदेल के चतुर पद, जनुपद दुपद समाज ।
गयो कलिंजर जमुल विच, समरजित्त कव राज ॥ ८६ ॥
दिसा देस महुवौ नगर, गय परमाल सु खोय ।
सिंधा अवलोकन कथा, अब कनवज मह होय ॥ ८७ ॥
करि भारथ तट वेतवै, जुभिभ्रव लष्षन राय ।
जयचंद नृप के अग्र यह, धावक कहिय सुजाय ॥ ८८ ॥

भुजंगी

सुन्यौ मरनि गिरिधरनि जयचन्द राजं । अहो लष्षनं जुझ्झि चन्देल काजं ॥
बिना आयसं आपु ही तै पधारै । धनी राज कौ म्हाँ कह्यौ सीस भारे ॥८९॥
करै बुद्धिवानं सयानं सु सोई । एसि बात जयचन्द मुख आप जोई ॥
तवै सौध मुंजाग्र वदि इक्क बिप्रं । सुनै बैन भूपंत प्रानं न छिप्रं ॥ ९० ॥
चली रानियां अंसुकं सीस डारं । पचीसवै कंठह कलाहार मारं ॥
अहो कंत थां सथ्थ कौ म्हां पधारी । चली सत्यलोकं सुबैनं उचारी ॥९१॥
सहस्रं तहां दास आयुं सेा धायं । लियं चन्दनं दारु सर श्री बनायं ॥
सबै तरनि बैठी करै गंग क्रीलं । रटै कोकिला शब्द हरि नाम लीनं ॥९२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करै दान कढ़ि गंग के मद्धि आईं । चढ़ीं सरन पै अपछरी ज्यों सुहाईं ॥
दई अग्नि अर्थिं उठो ज्वाल माला । तजे अंग बैठीं विमानं विसाला ॥९३॥
चलीं व्यौम जातं कहै येह बानी । करैं जाय पुरहूतपुर राजधानी ॥
गईं सत्यलोकं मिलीं कंत जाई । करैं सर्व सुष्पं सु दुष्पं विहाई ॥९४॥

दोहा

अवर अष्ट उमराव किय, अष्ट अष्ट जरि नारि ।
गईं सत्यपुर कौ सबै, अप अप नाह निहारि ॥ ९५ ॥
अवर सथ्थ किय सत्त सत, करि कंतन किय आस ।
जरिय जाय जे वह्नि मह, करें सत्यपुर बास ॥ ९६ ॥

छप्पय

करिव क्रोध जयचन्द भूप रनजित्त बुलायव ।
लिषि पत्रिय इक छिप्र छिप्र कासिद पठवाइव ॥
गइव कलिंजर सोय दीन कागद चँदेल कह ॥
खोलि वंचि जस तिलक मन्त्र लिष बदत भूप सह ॥
सुन श्रवन भूप कनवज चलिव परिगह सकल बुलाइयव ।
इन्दल सु अल्हसुत सैनपति दीह निसान बजाइयव ॥ ९७ ॥

दोहा

दस हजार भर सैन जुत, समरिजित्त नरनाह ।
इन्दल सैनापति सुमति, लिय कनवज किय राह ॥ ९८ ॥
गयव भूप द्वादस दिनै, कनवज सहर अपार ।
सुनत भुप जयचन्द जू, बुल्लि लीन दरबार ॥ ९९ ॥
दिष्षि कुँवर पंगुर सु उठि, लियौ अंक सह लाय ।
पुंछ षवरि जयचन्द कहि, चाहुवान दुषदाय ॥१००॥
यह कहि करि पंगुर नृपति, अन्तहपुर लै जाय ।
सब रानिन टीका करयौ, नित्तावर मन चाय ॥ १०१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सत्त अहनि राख्यौ कुँवर, अष्ट अहनि दिय पान ।
संग म्हां की सैना सु लै, हनौ सत्रु चहुवान ॥ १०२ ॥
दियौ भूप नरसिंघ वर, अवर वीर बलवान ।
तीस लष्ष सैना सु दिय, तोम तोप बहु वान ॥ १०३ ॥

छप्पय

तब राजा जयचन्द कुँवर रनजित्त बुलायव ।
तीस लष्ष असवार भीम सम सथ्थ पठायव ॥
पुनह बुल्लि नरसिंघ दौरि करि निसि दिन धावहु ।
चाहुवान कव थान महोवय मार दहावहु ॥
रनजित्त कुँवर बैठारि पुनि देसन आनि फिराइयव ।
लिय असिय लष्ष चहुवान हनि दिल्लिय नगर षपाइयव ॥१०४॥
तब कमद्ध नरसिंघ बुल्लि नृप पंगुराय सुनि ।
बहु मलेछ महि बढ़िव हिन्दु कह रष्षु रष्षु पुनि ॥
अब सुकाल यह अवरि घटत हिन्दुव मम दिष्षहु ।
इन्द्रप्रस्थ मिटि जाय म्लेछ अगनित्त सु लिष्षहु ॥
विनया अनुग हम उच्चरहिं जो आवहि महराज मन ।
मिलि भूप सर्व काबिल चलहु हनहु सुजोर जमन्नगन ॥१०५॥

दोहा

सुनत भूप नरसिंघ के, वचन कीन परवानि ।
बैठारौ महुवै कुँवर, बुल्यौ यहै जुबानि ॥ १०६ ॥
चली सैन कनवज्ज तैं, तीस लष्ष असवार ॥
पंच दिवस भीतर भये, कालिंद्री कह पार ॥ १०७ ॥
कालिंद्री उतरे सुनै, समरजित्त बलवान ।
नगर महौवौ छंडि डर, नृप पज्जून पलान ॥ १०८ ॥
नृप पज्जून पलान सुनि, समरजित्त नरराय ।
इंदल भट बिनया सुकरि, बीचहि देहु खपाय ॥ १०९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अवर सयन कालिंद्र रहि, दस सहस्र सह धाय।
जोजन अर्ध सुबीच सह, दिल्लिय पर चलि आय ॥११०॥
चरन जाय चहुवान सह, कहिय खबर अकुलाय।
नृप पज्जून पलान करि, अल्ह सुवन चढ़ि आय ॥१११॥
दिल्ली मह खरभर परिय, दिन्नव ग्राम उजार।
घायल सूरन सोच किय, मानहु हनियतु सार ॥११२॥
चरन बत्त चहुवान सुनि, सावंत लीन बुलाय।
इन्दल भट आइव सु चढ़ि, करहु जंग चितु लाय ॥११३॥

छप्पय

बुल्लि वीर चावंड बुल्लि कयमास महाभर।
बुल्लि सलख पंमार बुल्लि तोमर पहार बर॥
बुल्लि सूर विभ्फराज बुल्लि अल्हन भट लिन्नव।
बुल्लिव निड्डुर राय ताहि अगवान सु किन्नव॥
बुल्लाय सूर सब भूप वर कियव हुकुम करि जंग कह।
बज्जाय बंब असवार हुव जुरे आय इन्दल्ल सह॥ ११४॥

पद्धरी

जुरे आय कै वीर रन मद्धि धीरं। इतै पेलियौ पील इन्दल्ल वीरं।
उतै आय कयमास बानी उचारी। गहौ अल्ह के पुत्र सेल्हं सम्हारी ॥११५॥
तबै इंदलं बैन बोल्यौ सुकोपं। सुनौ वीर कयमास धर चित्त चोपं।
हनौं सूर सावंत धरनी मिलाऊं। पकरि भूप चहुवान महुवौ दिखाऊँ॥११६॥
अहो वीर तुमै छत्रिय धर्म नाही। कर्‌यौ जुद्ध तजि धर्म रौ रौ पराही।
हनै सूर परिमाल के छिद्र करि कै। नहीं छत्रिया धर्म कौ सीस धरिकै॥११७॥
इसे जीव जीवन्त मृत्तुं समानं। भयौ अजस भू मध्य सब ठान ठानं।
सुनी बीर कयमास बानी गहीरं। भयौ कोप उर मध्य गहि सेल्ह धीरं॥११८॥
भये क्रोध दुहु क्रोध जोधा अमानं। घनै छुट्टि कम्मान फुट्टै किक्यानं।
घनै सूर नेजान के जूह बरषै। लगावै हियं मध्य लै प्रान करषै ॥११९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चलावै बरच्छी तरच्छी सु जावै । फुटे हीक सन्नाह धरनी मिलावै ।
कहूं मुदगरन मार सीसं चलायं । उडै सहस खंडं सुधरनी परायं ॥१२०॥
हनै पंजरं पंजरं पार फौरै । हनै हीक जमदाढ़ मुक्की कठोरै ।
बहै हथ्थ तेगं सुवेगं सुधारे । परे मत्त गजदन्त सुंडन्नि न्यारे ॥१२१॥
चढ़े देव बिम्मान व्यौमं निहारे । महा रुद्र चढ़ि व्रषभ डौरू सुधारे ।
नचै भूत बेताल तालन्न दै दै । महावीर के सीस लै ईस कौ दै ॥१२२॥
डगी फौज चहुवान कयमास जानी । धस्यौ निड्डुरं राय बुल्यौ गुमानी ।
अहो वीर इन्दल्ल सेल्हं चलावो । वली पुत्र अल्हन्न के भुज गांवो ॥१२३॥
करयौ कोप गहि हथ्थ सेल्हं चलायौ । लग्यौ निड्डुरं राय हीकं सुचायौ ।
गिरयौ भूमि मैं वीर ह्वै कै अचेतं । लख्यौ वीर कयमास धायौ सचेटं ॥१२४॥
दई तेग कयमास के सीस चाई । परयौ मूरछा बीर धरनी मिलाई ॥
तबै बीर करि कोप पंचौ सुधाये । बली बीर इंदल्ल पै कुदि आये ॥१२५॥
बली बीर पंचौ सु इंदल्ल जानै । हनै इन्न उदल संग्राम ठानै ।
तबै बीर करि कोप कंमान लीनं । दये बान दो दो हियं माँझ पीनं॥१२६॥
भये मूरछा बीर सर्वं पलानं । पहुँचे जहा भूप प्रथिराज ठानं ।
करयौ सोच तब भूप चंदं बुलायौ । कहौ मंत्र आकाल म्हा कौ सुआयौ॥१२७॥
सबै सूर घायल्ल अल्हन्न मारे । हनै घाय पर घाय इंदल्ल मारे ।
कहै चंद गुर राम भूपं सुबत्तं । लहौ जीवनं काज धर चित्त मत्तं १२८॥

दोहा

लयौ बैर परिमाल कव, कहत चंद गुर राम ।
तीस लष्ष कालिंद्र पर, नहि जित्तौ संग्राम ॥१२९॥
देहु फेर तुम दंड सब, घायल डरे अकथ्थ ।
संध करहू इंदल्ल सह, यहै विचार सु कथ्थ ॥१३०॥

चौपही

चाहुवान नृप मन धर लिन्निय । दंड फेर कह हुकम सु किन्निय ।
इंदल ढिग गुर चंद सु आयव । दीन दंड सब कूच करायव ॥१३१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा

कियव कूच इंदल्ल पुनि, सहिदानै बजवाय ।
जित्त चल्यौ संभरधनिय, समर नृपत पह आय ॥१३२॥
समरजित्त इंदल्ल कह, हय गय मानिक दीन ।
गयौ राज्य फिरि रषि तुव, अल्हन सुवन नवीन ॥१३३॥
करयौ कूच सब सैन सह, दो बिच सिवर कराय ।
नगर महोवै आइयव, समरजित्त सो राय ॥१३४॥
समरजित्त राजा भये, सिक्का फिरे चलाय ।
सैनापति इंदल सुभय, रैयत सबै बसाय ॥१३५॥
पत्री नृप जयचंद कौ, बिधि जुत दीन लिषाय ।
सुनि पत्रिय पंगुर नृपति, आनँद किन्न बनाय ॥१३६॥

छप्पय

समरजित्त नृप राय राज महुवे मह किन्नव ।
दिसा भूप अरि जूह छीन जनपद सब लिन्नव ॥
बिदा कीन नरसिंह पील मंगाय पंच दिय ।
दिय सिरपाय पचास मुक्तमाला सुजाल लिय ।
परनाम कहिव नृप पंगु सह फेरि राज म्हां कहं सुदिय ॥
तुव तेजु आजु महराज सुनि दिसन देस सब आन किय१३७॥

दोहा

सीष मानि नरसिंह नृप, कनवज नगर पधारि ।
समरजित्त राजा भये, सब रैयत सुष कारि ॥१३८॥

वाचनीक

आगै जो कछू व्यास अनंगपाल राजा सौ भबिष्य बचन कहे हते ॥ सेा राजा अपनै दृग देषि बन तप कौ जात भये ॥ सो अवचित्र कोट कौ धनी राजा रावल चंद कौ पुंछत हैं ॥ अहो वरदायं भविष्य कहा हूहै सेा आप कृपा कर कहिये ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा

कहय चंद रावल सुनहु, हिंदुव तप महि जाय ।
देस दिसा संब बंद किय, जमनि तेज रहि छाय ॥१३९॥
जरत काल की श्राप तै, चाहुवान भर नास ।
अनगपाल भूपत्ति सह, सोइय भष्पिय व्यास ॥१४०॥
तब बरदाइय उच्चरहि, सुन रावल नृप सोय ।
चाहुवान सम्हरधनिय, संजोइयपति होय ॥१४१॥
संजोई की कथ्थ सुनि, रावल सी महराज ।
जरत काल जो श्राप दिय, सेा भष्पत कविराज ॥१४२॥
विंध्याचल मह बास किय, जरत काल मुनि राय ।
बरन बरन मृग सकुन गन, बुल्लत सब्द सुहाय ॥१४३॥

छप्पय

जरत काल मुनि राय गयउ स्नान देव धुनि ।
चिमन राय ता शिष्ष रहिव आश्रम मह बेद गुनि ॥
रंभा आय तिहि काल रूप धारिव बहु गाइव ।
षलित वीजु मुनि भयव गुरुव ताहिय छन आयव ॥
लषि तात नयन नीचे करिग दिव्य विप्र बर क्रोध किय ।
कुस करि पानि नव नीर जुत सुर बनिता कह श्राप दिय ॥१४४॥

दोहा

होहि दुष्ट तुव मर्नवी, जठर जुन्हाई पाय ।
जयचंद नृप कै अवतरै, कनवज्जह पुर जाय ॥१४५॥
नाम वाम संजोगिता, कल कृत्या सम होय ।
तात आपनै कंत के, दो दल डारै षोय ॥१४६॥
हौनहार ऐसी सबै, कहै चंद बरदाय ।
जरत काल को श्राप यह, थांकौ दइय बताय ॥१४७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सुभट कटहि कनवज्ज मह, पंगुर मंडहि रारि ।
इंद्रप्रस्थ पहुँचे नृपति, लै संजोई नारि ॥१४८॥
फिर मृगया पाधारिहै, रिषपति अत्ति सताय ।
पाय श्राप षट मास भरि, अंतह पुर रहि छाय ॥१४९॥
चंद रुकै देवल्ल मह, हाहुलि कपट कराय ।
चाहुवान संगर समय, गोरिय गहि लै जाय ॥१५०॥

छप्पय

ता पोछै कवि चंद चंद मंडल तै आवहि ।
चाहुवान जसु करहि देहि पुत्रहि भुव गावहि ॥
गयव आपु गज्जनै सुनत तह साहि बुलावहि ।
सत्तबंध घरियार लोह बिन बान चलावहि ॥
हनि सस्त्र अस्त्र अवनीस वर जसु जगत्त पूरन भयव ।
बरदाय भूप चहुवान कह सुभ सुरपुर गहि लै गयव ॥१५१॥
ता गोरी कव पुत्र प्रवल विक्रम सो होइय ।
बिनय दीन यह नाम कहत भूतल मह सोइय ॥
सत्त लष्ष संग सैन ढिकिल डिल्ली पर आवहि ।
हनि रेवंत कुमार इंद्रप्रथि नगर दहावहि ॥
फिर जाहि जाहि कनवज्ज कह मति पलट्टि जयचंद किय ।
रुकहु न कोय मम वीर वर गोरी सुत आवन्न दिय ॥१५२॥

दोहा

नृप अग्या रुक्क न कोय, गय दरबार सुठान ।
विनय दीन कह संग लिय, आये सब्ब पठान ॥ १५३ ॥

पद्धरी

महबूब षान महबूब साहि । महमदिय षान बल कुंभ ताहि ॥
मारूप षान मारू मरद्द । आरब्ब षान अरि करि जरद्द ॥ १५४ ॥
बंबार षान बंबार बीर । साहूर षान संग्राम धीर ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जालिम जुवान जुझ्झार षान । पारथ्थ जेम घालंत बान ॥ १५५ ॥
कालिम्म षान कंगाल षान । अकरम्मपान दानव समान ॥
दादरिय षान दाहिम्म षान । सुन शब्द श्रवन बेधंत बान ॥ १५६ ॥
तिन मध्य गोरि पताल षोय । भव विनय दीन यह नाम पाय ॥
कनवज्ज नगर पाधार सोय । उत्तरे मद्ध अवरोध लोय ॥ १५७ ॥
नृप पंगु देषि कुन्नसन कीन । कहि मुट्ठि कट्टि निरवान लीन ॥
गल्ला सुकीन पट्ठान जाय । हल्ला सुबोलि गहि पंगु राय ॥ १५८ ॥
लघु पासवान जनु मंडि जंग । नृप चल्लि पंथ लिन्नी सु गंग ॥
चव सौ विदल्ल दिय षवर जाय । भर भूमि भाग रानी भगाय ॥१५९॥
पहुँचे सुराज तिय गंग तीर । चढ़ि तरनि तिंस गय धार धीर ॥
पुल्ले सुदानु जलधर सुधाय । हरिहर सुशब्द रनिवास लाय ॥१६०॥
भरि बारि बारि लग तरनि आय । गय कुमुद जुक्त गंगा समाय ॥
दिल्ली सुमिट्टि कनवज्ज सोय । भव विनय दीन पति साहि सोय १६१॥
तीनहु सुराज षप्पाय दीन । हिँदवान मिट्टि तुरकान कीन ॥
भव विनय दीन पत साहि सोय । सब दिसनि दिसनि तिहु आन होय ॥१६२॥

दोहा

इन्द्रप्रस्थ कनवज्ज लिय, विनय दीन बलदाय ।
समरजित्त कह समर हनि, महुवो लेहु छिड़ाय ॥ १६३ ॥
तव रावल इम उच्चरै, सुन बरदाई चंद ।
चौकी आपु उठाय कै, क्यों भुल्लय जयचंद ॥ १६४ ॥
म्हां आवत थाँ दरस कह, कहि पठई पट्ठान ।
अंतु राज्य का पाइया, मानी वहै जुबान ॥ १६५ ॥
जवन आप बैठार जन, छद्म कीन बलिवान ॥
छरे देषि नृप पंगु कह, तव कट्टिय किरवान ॥ १६६ ॥
कढति तेग पंगुर लषी, चढ्यौ तरनि परि जाय ।
स्यौ रनवासहि भूप वर, गंगा गयौ समाय ॥ १६७ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विनय दीन साहिब भयौ, महि मंडिल मैं सोय ।
ताही के तप तेज तै, भुव तुरकाना होय ॥ १६८ ॥

छप्प

मन्दोदरि कहि कन्त कुप्पि त्रभुवनपति आयव ।
उदधि बन्ध किय वट्ट ठट्ट मरकट दल छायव ॥
अग्ग जान किय लेहु पाय प्रभु के थां धारहु ।
बचहि सर्व परिवार फेर निर्जर पुर जारहु ॥
पौलस्त पौत्र इम उच्चरहि कुंभकरन सम बन्धु मम ।
हनि भज्जि लैहि सुन्दरि सुनहु सर्व जुजुर पुर जाहि जम ॥१६९॥

दोहा

साम दाम दँड भेद करि, करै बुद्धि वर लोय ।
अप्पन सब उप्पाव बहु, भावी करै सु होय ॥ १७० ॥

छप्पय

पारासर सुत आसु पाव जनमेजय धारेय ।
देहु सिषापन तात व्यास ये वचन उचारेय ॥
त्रतिय दिसा आषेट करहु नृप जो मन मानिय ।
जाम्य दिसा जनि जाहु बत्त हम भविष उचारिय ॥
तुव भव्य सिद्ध मुनि भष्ष हिय तातै म्हां आयस धरहु ।
मम बचन्न भुवपति सुनहु करता क्रत सोई करहु ॥ १७१ ॥
म्हा रुक्त थां जाहु उठहि अस्वनि जिन ल्यावहु ।
जौ ल्यावौ अस्वनिय ताहि जिन अस्व लगावहु ॥
यह सुबत्त मम बदत चित्त थांके नहि आवहि ।
जौक जात चित धरहु सुजस भूसुर भुव गावहि ॥
नृप अस्विनि अस्व लगाइहौ जग्य करहु नहि भूप सुनि ।
मिट्टै सु कौन करतार क्रत भंग होय भाषंत सुनि ॥ १७२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा

रावन जनमेजय नृपति, जिन जानै त्रयकाल ।
तेऊ भुव भूले फिरे, कहत पंगु परमाल ॥ १७३ ॥
जानहार जब होय जग, बुधिधर कहत बषानि ।
चारि जोति किय बत्त बर, तवर राज नहि मानि ॥ १७४ ॥
ना मानी तौंवर नृपति, भये राज बिन पोत ।
मिथ्या या कलिकाल मह, व्यास बचन नहि होत ॥ १७५ ॥
बय पलटी तप कीरती, बाढ़ी कुमति अपार ।
चाहुवान गुर राम के, बरजत गयव सिकार ॥ १७६ ॥
सिंह भरमि गिरकंद रह, दीन्ही बह्नि लगाय ।
धूम भरे विय नैन वर, तब कोप्यो रिष राय ॥ १७७ ॥
कुप्यौ रिषपति श्राप दिय, चंद मंगि बरदान ।
तब दुरवासा तनय कहि, मारि मरै सुलितान ॥ १७८ ॥
लघु भारत कलिकाल कब, सुनै श्रवन दै कोय ।
रन मह पग चालै नहीं, भुव धुव कीरति होय ॥ १७९ ॥
अवर ज्वान समता नहिय, भयेय देवता लोय ।
कलिजुग मह कवि चंद कहि, ऐसो समर न होय ॥ १८० ॥
इक चन्द छप्पय करिय, बानी बरनि बिचारि ।
जो छत्रिय रन कह चलय, लगन सगुन गन सार ॥ १८१ ॥

छप्पय

नहिय लगन नहि सगुन न हिय जोतिक कह बुझ्झहि ।
मात्र वंस केवलिहि नहिय गनिकन गन बुझ्झहि ॥
हृदय धारि रघुनाथ मन्त्र मारुत लिषि बंधहि ।
जथासक्त करि दान ग्यान मानस मह संधहि ॥
प्राकास सुनहि बल्लार कव ता दिन भूरि भेलौ करहि ।
लग्गय न घाय तन सत्र हनि जित्त समर किरति चलहि ॥१८२॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दोहा

बानीजू के बचन सुनि, कहिय चन्द बर बत्त ।
कीरति सुनि बल्लार किय, करहि छत्रि रन घत्त ॥ १८३ ॥

छप्पय

न रहि कोट नहि मट्ठ न रहि वापी सर भारिय ।
न रहि धाम धनवान जात जग ज्यौ जलधारिय ॥
न रहि रूप नहि भूप न रहि रानिय कलषानिय ।
न रहि अस्व गजराज न रहि ग्यानी बहु जानिय ॥
रहि गयव वहै बसुधा विषै जु कछु रिष्षि राजन कहिय ।
वेदनि पुरान पढिवान की जुग जुग कीरति रहि गइय ॥१८४॥

दोहा

सदा जग्य मंडै मही, बिन दामन लह जोत ।
इक षरच चन्देल कव, सब हिंदुन कौ होत ॥१८५॥
मष मिट्टै महुवै नगर, चन्द बचन मिटि जात ।
सब हिन्दू जनपदन मह, हौन लगे उतपात ॥ १८६ ॥

छप्पय

गरज कुप्प घनघोर भूमि कापन्त भूमिधर ।
दिवस स्वान रोदन्त रात कुंजंत काक वर ॥
सुष्ष मेघ करि गरज हँसत प्रतमा पाहन किय ।
साषिय फरत अकाल पतत तारा निस दिन विय ॥
आरन्य जीव घर घर घुसहि गय हय चय कापंत धुव ।
कनवज्ज महोत्सव इन्द्रप्रथ इते सहर उतपात हुव ॥ १८७ ॥
भयव अवान उतपात त्रइय राजन यह जानिय ।
बढय जबन कब बंस मिटि हिन्दुव रजधानिय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करहि म्लेच्छ किय सेव रहय आधीन दीन अति ।
वेद विप्र नहिं पढय सुरभि मारंत मंद मति ॥
भजि भगत भोर भगवान किय दिसन छंडि दिग्गज गये ।
चव जोति बचन को मिट्टइय चारूव बिधि भूतल भये ॥१८८॥

दोहा

राज छोडि तैंवर नृपति, किय कानन कव मत्त ।
लषी भूमि तल आपु दृग, व्यास कही सो बत्त ॥ १८९ ॥

छप्पय

हौनहार चव जोत कहिय चर बत्त उमंगह ।
चाहुवान चंदेल होहि कलि मह इक जंगह ॥
गहय सूर सब सारु मारु अदभुत अति होइय ।
श्रोनित सरित बहाय ईस आनंदित जोइय ।
सुर इंद्र सहित सब दिष्षइय थकित होय मारुतगवन ।
माली पुकार घायल हनत हौनहार मिट्टय कवन ॥१९०॥

दोहा

पारसमनि सी मनि गइय, राज्य गयव सब वाय ।
गये भूप परमाल से, गर्भ करौ कोइ काय ॥ १९१ ॥
ससीव्रता हंसावती, पद्मावती सुजान ।
करनाटी संजोगिता, मिट्टि राज चहुवान ॥१९२॥
नौ हू रस जाने कहे, पुन्य-पुंज अवगाहि ।
समय महोबा श्रमन करि, जो छत्रिय भ्रम चाहि ॥१९३॥

[समाप्त]

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

धाम कीनो है। विद्रुम अधर दंत हीरक कपोल गोल मुकुर अमोल को सरोस करि छीनो है ॥ कंधर वृषभ नैन मृग को कियो है मंद लूट्यो गति को गयंद फंद डारि पीनो है। अबला जरा की कला अहो चाँदनी जगाय जोवन-बजार को उजारि लूटि लीन्हो है ॥१०॥

किधौं यह नाहरी अहार किए जाय पलमति को डराय गज गति को नसाई है। किधौं है हिमंत रितु दंत नहि लायो आप अंग सुकुचाय चाय अधिक कपाई है॥ किधौं डाकिनी है ग्रस्यो तोष धीर बालनि कों किधौं यह धुनी जुबा बल्लरी बहाई है। किधौं मलिनाई छाई तन के तड़ाग काई किधौं यह आई दुखदाई जराताई है ॥११॥

बेसहि बदलि केस चोरन चुराई छवि बाँधे गये हैं कपोल दीन त्रिवलीन सों। लखि कै अनीति द्विज सभा भयभीति भई भागि गई सनै सनै मन कै मलीन सों॥ पायो पंचसाखा बान नाहक प्रचंड दंड ता छन तैं ह्वै गयो विचारो बलहीन सो। येरे जीव पथी जागि रागि हरि हाकिम सों काहे इत पागि रह्यो नींद मैं अधीन सो ॥१२॥

अंग सुकुचान लागे लागे मुरुझान रंग संग जान लागे केहि के उमंग पागे तूँ। प्रान अकुलान लागे बधिरान कान नैन तिमिरान लागे देखत न आगे तूँ॥ भागे भरि जन्म बूढ़ त्यागे करुनानिधान जैहै जमपुरी दिना दोय होय नागे तूँ। नागे नहि एक बार बार तो पकान लागे अजहूँ अभागे नहि राम रंग राँगे तूँ॥ १३॥

भोग न पयाना ठाना लोगन दिवाना जाना नाना विधि रोगन की अबली गजति है। आजु कालि बीच यह सालि खेत कटो चहै जम की जमातिन मैं नौबति बजति है॥ अरि हूँ न त्रास करै सेत केस पास वेस काल की कपास आस पास ज्यों सजति है। हाड घट अतुरूप सीस की दसा कुरूप जानि ज्यों चमार कूप जुवती तजति है॥ १४॥

भयो दिन को मयंक संक करैं सब कोन फँस्यो जरा पंक अंक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लंक अति ही नई। चल न सकै न चाल लागे दुख दैन वाल वैन लटपटे भए नैन अंधता छई ॥ भ्रात हूँ न सुनै बात बूत के नसात समै पूत जमदूत भये वामा वाम ह्वै गई ॥ अज हूँ न हेत करै हरि सों हरामखोर मोर मोर ररै घोर ममता छई भई ॥१५॥

जोबन जलूस फूस लाये लों नसाय कहा पाप समुदाय मान मातो सान धरि कै। भूलि रह्यो ललना के लोल प्रेम पलना मैं फूलि रह्यो नीच कौनि भूलि बीच परि कै ॥ पल मैं चपल प्रान पथिक निसरि जैहै जैसे जलजात पर जल जात ढरि कै। चेत अभिराम नाम तेरो कामतरु जानि वसु जाम धन धाम धोख करि कै ॥१६॥

गौन कियो नाहि रमारौन मग ह्वै हूँ डग रम्यो देस देस ठग प्रेम धारि धन तैं। गई केस स्यामता न स्याम सों भयो सनेह स्वान के समान छयो मान गेह जन तैं ॥ नै गयो कमान लों कलेवर तो बीच ही पै तूँ न नयो मान छाँड़ि माधव सों मन तैं। काम मैं भुलायो काम-तरु को न नाम गायो कौन काम आयो न बनायो नर तन तैं ॥१७॥

तेरो है न कोऊ इत डेरो कित करै एक निसि को बसेरो है सराय मैं न पागि रे। साथ लै सुसंग गौन आतुर सों चातुर ह्वै चलिवो है दूर देस राहै अनुरागि रे ॥ राखि यह ठौर निज धन को सजग होय चोर चहु ओर रहे लैन लोभ लागि रे। सोर लायो खगन गई है घोर रैन बीति सोवै क्यों बटोही अब भोर भयो जागि रे ॥१८॥

रजनी अँधेरी है न सूझति हथेरी रंच चोर करैं फेरी लखि मुख ना लुकोवै तूँ। मारिहैं प्रचारि फाँस डारिये दुखद अति गति को सम्हारि सति पीछे करि रोवै तूँ ॥ करै नहिं हेला अब गढी ढही ठौर ठौर घोर यह बेला कहु काहि ओर जोवै तूँ। अरे पाहरू डरु प्रपंची नींद पागि पागि औरन सो जागि जागि कहै आप सोवै तूँ ॥ १९ ॥

जिनके उदंड दंड डरैं बरबंड बीर अमल अखंड खंड नवो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीप सात रे। भाँवरी भरत भारी भूप भूमि मंडल के भीति मीनि भली भाँति भाव सों प्रभात रे॥ जाकी धूम धाम मची सची नाँहि धाम हूँ लौं भए पची मीच माँह सोऊ न लखात रे। दलके अपार गज हलके हजार गये पलके मँझार यार तेरी कहा बात रे॥ २०॥

भानु से प्रताप जसचंद से अमंद जाके गिने जात डील बड़े दान-सील दानी मैं। सात हूँ समुद जासु रथ की लकीरन मैं बीरन मैं धीर महा सिरमौर मानी मैं॥ सुन्दर अतन से जतन कै बनाए बिधि गये बेर तन लौं लखाय जग खानी मैं। गड़े मीच धुनी कीच बीच बड़े बड़े गुनी सुनी जाति बात ताकी अब तो कहानी मैं॥ २१॥

बड़े बड़े भूप जो सलोने रूप हे अनूप चख्यौ ताहि जाको जस सोम सो बिसाल है। रैन दिन दंतन सों और जीव चने चभै माया मुख जासु मोह रसना प्रवाल है॥ अछक छकै न पिये जाय आप आसव कों झूँमि झूँमि धरै पाय करै नैन लाल है। जाते हैं न साते ना लखाते ये बिहाल हाल काल मदमाते की गजक जगजाल है॥ २२॥

तात मात भ्रात सुत प्रिया प्रिय के सँघात जात ए नसात फेरि मिलिहैं न हेर पैं। दिना चारि की बहारि है जग बजार यार भयो छन संग जथा पथी पथ बेरे पैं॥ फौजन की भीर भार देखि कै अपार धन भूलै न गँवार यह जरदार डेरे पैं। येरे मन मेरे टेरे चेत तूँ सबेरे राम चेरे जम केरे करै फेरे सीस तेरे पैं॥ २३॥

सज तन सीव साज बढ़ो सैन को समाज चढ़ो गजराज राज लियो है अनीति कै। भूल्यो धाम बीच कूर फूल्यो दाम के गरूर भूल्यो काम पलना मैं ललना सों प्रीति कै॥ मानुष जनम पाय जान्यो नहि जदुराय जोवन रतन डारि हारि गयो जीति कै। भीनो रूप रंग चाहि दीनो मन विषै माहि कीन्हो कछु नाहिँ गयो योंही दिन बीति कै॥ २४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोग सब गेह के प्रवीन हैं अपानी घाईं देह जुवाताईं नयो नेह जोरिहैं। जाहिँगे मसान लगि लोक लाज संग तेरो फेर फिरि आय तेरी गठरी टटोरिहैं ॥ भूलि न गँवार इनकेरे इतबार मानि बार बार तोहि भव-वारिधि मैं बोरिहैं। भारी हितकारी भजु रास के विहारी खास बँध्यो जासु माया सोई आसु पासु छोरिहैं ॥ २५ ॥

यह बैरागदिनेस को सुखप्रद दुतिय प्रकास।
विरच्यो दीनदयाल गिरि ज्ञान सुबनज विकास ॥१॥

—:०:—

तृतीय प्रकास।

प्रीति मति अतिसैं तू काहू सन करै मीत भले कै प्रतीति मानि प्रीति दुख मूल है। जामैं सुख रंच है बिसाल जाल दुख ही को लूटि ज्योँ बतौरन की बरछी की हूल है ॥ सुनि लै एकादस मै कान दै कपोतकथा जाते मिटि जाय महामोह मई सूल है। तातैं करि दीन-दयाल प्रीति नंदलाल संग जग को संबंध सबै सेमल को फूल है ॥१॥

काहू की न प्रीति दिढ तेरे संग हे रे मन कासों हठि प्रेम करि पचि पचि मरै है। ये तो जग के हैं सब लोग ठगरूप मीत मीठे बैन मोदक पै क्यों प्रतीति करै है ॥ मारिहै प्रपंच बन बीच दगा फाँस डारि काहे मतिमंद मोहि दुख फंद परै है। प्रेम तूँ लगाउ सुख-धाम घनस्याम सों जो नाम के लिये ते ताप पाप कोटि हरै है ॥२॥

वारि के विलूलन की सेज रचि कौन सोयो ओस कन पिये हिए कौन तोस पायो है। ओढि मकरी को पट सीत कौँ निवारयो कौन भेटि सरनागति मै भय को भगायो है ॥ त्योंही जगजीवन को आसरो है झठो सब ओछन सोँ प्रीति लाय को को सुख पायो है। तातें तजिए दयाल वृथा जग मोह जाल भजिए गुपाललाल जाहि वेद गायो है ॥ ३ ॥

ये रे मन मीन तोहि प्रीति की सुरीति कहों तहाँ प्रीति कीजै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ होय न वियोग है। दिनै दिन बाढत आनन्द को प्रवाह महा जाके परिनाम में न मिलै दुख सोग है ॥ साचो सो सनेह थिर स्याम की सराहैं सुधी और जग प्रीति वृथा सती कैसो भोग है। सदा काल एकरस पूरन गुपाललाल तासों हठि दीनदयाल प्रीति कीजै जोग है ॥ ४ ॥

जननी जनक गये तेरे सुनि तात जहाँ तहाँ दिना द्वै मैं दलि तेहूँ चलि जावैगो। पूत कलवूत से रहैंगे सब ठाढ़े तब कछू न चलैगी जब दूत धरि पावैगो ॥ देखि कै विसाल विभौ भूलै जनि दीन-दयाल अबहीं सम्हाल नहीं पीछे पछितावैगो। चेत हरि नाम संग सबही निकाम अंत राम बिनु तेरे नहिं काम कोऊ आवैगो ॥ ५ ॥

धाम आम खास मैं मुकाम मानि एक साम फेरि यह ठाम जानि सुपनो ह्वै जावैगो। भाई अभिराम भाम भूषित ललाम सजैं बंजै हैं दमाम सबै ग्राम जस गावैगो ॥ देखि दीनदयाल दाम एतो इत माम कहा बाम होय चलै चलै चाल धूर मैं समावैगो। चेत हरि नाम संग सबही निकाम अंत राम बिनु तेरे नहिँ काम कोऊ आवैगो ॥६॥

खेलन मैं ख्वारी करि डारी लरिकापन वै सुधि न सम्हारी दीनदयाल हितकारी है। जोवन सुमनिहारी नारी के अधीन होय भारी मद मान मातो कछू न विचारी है ॥ इंद्रिन की सारि छवि जरा ने बिगारी आनि देखि तूँ निहारी जग जीवो दिन चारी है। प्यारी हरि प्रीति धरि सुमति सुधारी क्यों न धारि गिरिधारी कहाँ मंदमति धारी है ॥ ७ ॥

देखिवो चहै तो दुति देखि नंदनंदन की बंदन चहै तो बंदि बंदि छोरि ध्यान मैं। सुनिवो चहै तो सुनि मुरली की मंद ध्वनि मोहन चहै तो मोहि मोहन नैनान मैं ॥ डोलन चहै तो डोलि कुंडलक डोलन मैं बसिवो चहै तो बसि वारिज-प्रदान मैं। गावन चहै तो गिरि-धारी गुन गाय मम पावन ह्वै जातैं नर जनम जहान मैं ॥ ८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पावन या देह पाय दीनद्याल मलोदाय गोविंद को गुन गाय जाते भव तरैगो। सुन्दर तड़ाग बाग औधन सदन हूँ सों होयगो वियोग भोग कब लौं तू करैगो ॥ ये सब बहुरि हेरि सुपने की मोहै मति इनके लै संसकार हिये माहिँ मरैगो। देखि लै विचारि मुख बाय रह्यो काल-ग्राह कीट औ भुजंग भूत अंत होन परैगो ॥ ९ ॥

चूकत तूँ आयो बहु काल जाल मैं भ्रमायो रह्यो भ्रम भौर चल्यो कछु न उपाव रे। बार बार भौनिधि मैं भयो काल ग्राह ग्रास अजहूँ लों तोपै मुख रह्यो वाय बावरे ॥ अब नर चिंतामनि जन्म पाय चूकै जनि अब के तो चूकै फिरि मिलैगो न दाव रे। ताते जग सिन्धु तरि स्यामै वसु जामैं धरि प्रेम पतवारी हरि नामै करि नाव रे ॥ १० ॥

रथ है विचित्र काय चक्र पाप पुन्य चाय इँद्रीगन आतुराय ज्यों तुरंग धायो है। मन तो है रज्जु रूप मति सारथी अनूप रथी जहां जीव भूप सुन्दर सुहायो है ॥ प्रेरयो मग मोह माहिँ विषै ठग रूप पाहिँ मारि जग कूप ताहि अंध मैं छपायो है। तहाँ एक दीनद्याल रच्छपाल नन्दलाल सुमिरयो जो ताहि काल ताहि कों बचायो है ॥ ११ ॥

कामिनि की हाँसी दिठ फाँसी मति फँसै मीत मारि है फँसाय कै बड़ोई ठग मैन है। मरे हैं अनेक परे लोटत नरक बीच ताहू पै कहत हमैं बडो सुख चैन है ॥ अहो मोह महिमा न जानी जग जाति कछू देखि दहैं दँव दुख मैं न सुने साधु बैन है। त्यागि जग जाल तूँ गुपाल भजि दीनद्याल चार दिना चाँदनी अँधेरी पुनि रैन है ॥ १२ ॥

तेरे नहिँ कोऊ हित हेरे मन मूढ़ मानि तेरे नहिँ सुन्दर ए चामीकर ऐन हैं। तेरे नहिँ राज काज कै समाज वादि सबै तेरी नहि संगी चतुरंगी यह सैन हैं ॥ तेरे सनबंधी सब बीछू बाल के मिसाल तोहि को भछैंगे कहि तातें मृदु बैन हैं। त्यागि जग जालहि गुपाल भजि दीनद्याल चारि दिना चाँदनी अँधेरी पुनि रैन है ॥ १३ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयो बहु माल औ खजानें निज घर तें लै भयो अब चोर रहयो बड़ो साहुकारा है। निज के करम हीन हुआ विषै जुआ बीच खोयो सब धनै नीच बनिकै बिगारा है॥ चेत अजौं आपनो विसाल देस दीनद्याल इतै तो बिचारि दिना चारि को गुजारा है। मालऊ बिकाना है पयाना किये साथिन हूँ उजरो बजार चलो लादि बनिजारा है॥१४॥

धरे रहे धरा माँहि लाखन खजाने खैंचि जाने नहि जाहिँ जासु धन को सुमारा है। धरे रहे राज काज के समाज साज सजे बाजि गजराज रहे गाजत अपारा है॥ तात मात भ्रात तनै अंगना हूँ तज्यो अंग कोऊ नहिँ संग रहयो एक ही बिचारा है। मालऊ बिकाना है पयाना किये साथिन हूँ उजरो बजार चलो लादि बनिजारा है॥१५॥

[कालगति वर्णन]

भूप थे अनूप जहाँ नगरी गरीय रूप गरजैं हैं गजराज जिनमैं बिसाल है। गए दिना चारि के उजारि ह्वै भयो अरन्य कूक दैं अभै भये उलूक औ सृगाल हैं॥ कानन तें भयो खेत खेती तित करैं लोग वही फेरि नदी प्रेत देत जहाँ ताल हैं। जानी नहिं जाति कालगति अति ही बिसाल या जग के ख्याल इन्द्रजाल के मिसाल हैं॥ १६॥

देखे जहाँ केते जन एक ही सदन माहिं बीते कछु काल तहाँ रह्यो एक नर है। एक ते अनेक फेरि भए कछु दिना गये फेरि एक कहूँ न रह्यो पीछे तेहि घर है॥ बाजीगर कै सो ख्याल जग को लखो बिसाल काल ही उताल तो नचावै चराचर है। चेत रे अचेत चेत श्रीनिकेत तातें अब हेत कै सबेरो सोई तेरो दुखहर है॥ १७॥

सुन्दर जवाहर ते मन्दिर जडास जिन अन्दर मैं जगैं जोति जाकी जनु दामिनी। सामुहैं सुचन्दमुखी मंद मंद नाचति हीं तात थई तातथई कै कै गज-गामिनी॥ कंकन मंजीर धुनि धीर मन हरै

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जहाँ ताल के कूतूहल मैं जाति हूती जामिनी। ताहि ठौर दीनद्याल देखे कछु गये काल कूक देत फिरिहै उलूक भूत भामिनी ॥१८॥

भनै दीनद्याल जहाँ भारी भूमिपाल रहे मंदर पुरंदर लों सुन्दर विसाल हैं। अन्दर मृदंग धुधुकारन की धीर धुनि सजैं चन्दमुखी राग रंग जे रसाल हैं॥ बाहर धुरंधर समूह धराधीस बड़े जोरे कर खड़े रहे लीने नग लाल हैं। तहाँ अहो तासु ख्याल देखे कछ गये काल रोवैं विकराल हाल स्यालन की बाल है॥ १९॥

सुन्दर तड़ाग बाग मंदिर बनाए बहु बसुधा सिँगारे जस भारे करि करि कै। मारे तरवार तें हजार जिन वीर धीर हाथिन के हौदन बिदारे दरि दरि कै॥ लूटि लूटि बैरिन के धन कों धरा मै धरे करे सिलसिले किले कोट भरि भरि कै। सानवान बलवान जानिए जहान बीच जात भे समान की कृसान जरि जरि कै॥ २०॥

आपने प्रचण्ड भुज-दण्डन के विक्रम तें खण्डन किये है बल-वण्ड आँनि जे लरे। रिपु गजराज जे उदण्ड दण्ड तिन्है दिये मारतण्ड लौं प्रताप दीनद्याल जे करे॥ जस के अखण्ड महि मण्डल अखण्डल से कोटि गढ़ लूटि धन दाबि धरा में धरे। तेई अब बीर धीर देखिए जरापन मैं ठाढ़ ह्वै रह्यो सरीर झखैं खाट पैं परे॥ २१॥

देखे जिन्हैं ठाढे ह्वै अखाड़े बीच देत ताल नाल को उठावैं हे उताल चूमि चूमि कैं। मण्डिकै प्रचण्ड भुजदण्ड रंज करे दण्ड लरे बलवण्ड मल्लहूँ ते हूँमि हूँमि कै॥ धरि कै सरीर मनो वीर रस ह्वै विसाल चले जे महा मतङ्ग चाल झूमि झूमि कै। हाय दई देखे, तिन्हैं गये कछु दिना बीति देत पाय गिरे परैं भूमि घूमि घूमि कै २२॥

जासु सीस पैं महीस चमर करै हैं छजे अमर समान सजे सीस महलान मैं। जगैं जगमगित जवाहर जराय जोति जैसी ही मुकट प्रभा तैसी नहिं भान मैं॥ कुसुम कली सुरुली गुथी हुती भली भाँति वारैं कवि काम अली जाहि अलकान मैं। देखो दीनद्याल

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ता कपाल कों शृगाल श्वान खेलत चौगान हैं मसान की दिसान मैं ॥ २३ ॥

झूमत मतङ्ग कोटि जिनके जंजीर जरे घूमत तुरङ्ग रहे तीखे हहनाय कै । गरजैं गँभीर गिरा वीर धीर व्यूह द्वार तरजै हैं आसमान मानो बल पाय कै ॥ चपला सी चमकैं कृपान, कुँत चहूँ ओर धमकैं भुसुण्डिन के झुण्ध झहनाय कै । जाहि दीनद्याल ए विसाल हे प्रताप ताहि लै गयो कराल काल चील्ह सेा उठाय कै ॥ २४ ॥

बनि कै भूपाल जे विसाल सुखपाल चढ़े चले दुहु ओर सोर नौबति के बोल ते । बढ़े जाय यों नक़ीब करिकै पुकार कहैं छरीदार हैं उदार दौरैं गति लोल ते ॥ नीके रमनी के सनमान तें भरे उमङ्ग रङ्ग महलान बीच रहे जे कलोल ते । तिन्हैं दीनद्याल अहो देखे कछु गये काल दीन ह्वै गलीन मैं मलीन भए डोलते ॥ २५ ॥

रावन से वीर घन सावन लौं प्रभा जासु झलकैं किरीट बिज्जु अलकै की घेरी मैं । जिनकी गिरा गँभीर गरज सुने ते धीर नाचतहीं किन्नरी मयूरी चहुँ फेरी मैं ॥ कैसी रन कला रहे दीनद्याल वे प्रवीन वरषैं अपार सरधार एक बेरी मैं । ऐसे जग व्योम बीच जडिकै कई विसाल गये उड़िकै कराल काल की अँधेरी मैं ॥ २६ ॥

दाता को महीप मान धाता औ दिलीप ऐसे जाके जस अजहूँ लौं दीप दीप छाये हैं । बाली ऐसे बलवान कौन भे जहान बीच रावन समान को प्रतापी जग जाए हैं ॥ बान की कलान मैं सुजान द्रोन पारथ से जाके गुन दीनद्याल भारत में गाये हैं । कैसे कैसे सूर रचे चातुरे विरंच पूर फेरि चकचूर करि धूर मैं मिलाये हैं ॥ २७ ॥

सवैया ।

जिनकी गति मन्द विलोकत हीं अति मत्त बिलन्द गयन्द लजाये ।
जिन जङ्घनि तें कदली कमनीय किए विफली जग मैं जस पाये ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जिनकी कटि तें कटि केहरि की घटि होति दिए उपमा कवि भाये।
तिनकों निरखे दिन चारि गये छिन मैं चकचूर ह्वै धूर समाये ॥२८॥
जिनकी भृकुटी अभिराम सजी धनु वाम है ज्यों भट काम चढ़ाये।
जिनके दृग घायक सायक से रतिनायक मानहु सान सजाये ॥
जिनकी वर वंक विलोकनि तें बसि ह्वै बुध बीर विराग बिहाये।
तिनको निरखे दिन चारि गये छिन मैं चकचूर ह्वै धूर समाये ॥२९॥
जिनके अधरान तें बिम्ब लजे अरु विद्रुमहूँ द्रुमता पद पाये।
जिनकी मुसकानि बड़ी सुखदानि करैं कुलकानि विदा मुद आये ॥
जिनके रद की दुति देखत ही मद कोँ तजि हीरक कुन्द लजाये।
तिनको निरखे दिन चारि गये छिन मैं चकचूर ह्वै धूर समाये ॥ ३० ॥
जिनकी भृकुटी भट कोटि लखैं भले भूप रखैं मरजी मन लाये।
छवि चन्द की मन्द लगै जस तें रवि हूँ दबि जात प्रताप लखाये ॥
जिनके गुन गावत वन्दिन के गन सन्मुख ह्वै धन लाखन पाये।
तिनको निरखे दिन चारि गये छिन मैं चकचूर ह्वै धूर समाये ॥ ३१ ॥
जिनके मृदु बैन सुने पिक मैन ठगे चित बैन न जे सुनि पाये।
छलकैं छवि पुञ्ज छजैं अलकैं झलकैं कल कुण्डल औन सुहाये ॥
जिनके मुख निन्दत हे अरविन्दहि मन्द करैं छवि छाये।
तिनको निरखे दिन चारि गये छिन मैं चकचूर ह्वै धूर समाये ॥ ३२ ॥

छप्पै ।

जड़ित नील मनि जासु वगर सुन्दर चामीकर।
नगर परम रमनीय सुथर सुरलोकहुँ तें वर ॥
राजैं राज सुसाज बाढि गजराजि गरज्जति।
सेवैं जुवति समाज जिन्हें लखि रति अति लज्जति ॥
निति भूप कोटि भृकुटी लखत रहैं निकट जेहि निपट डरि।
तिनको धरि व्याल विसाल जिमि लियो काल इक कौर करि ॥३३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहसभुजहुँ दससीस खीस ह्वै गये सहित कुल ।
सगर दधीचि दिलीप दोष से भूप भये गुल ॥

जादव छप्पन कोटि बिकट भट कौरव पाँडव ।
लै सब साज समाज गये दिन द्वै करि तांडव ॥

नहि थिर कोउ दीनदयाल गिरि रहत नाट पर चर अचर ।
यह तातें त्यागि कुतर्क भजि सूत्रधार नटवरहिं नर ॥३४॥

संबन्धी दिन द्वै दिखाय जैहैं ज्यों घनपट ।
जैहै तन तरु नीच मीच नटिनी तटिनी तट ॥

नहि रइहै ठहराय आय चल लाय धुआँ की ।
जुवा खुसी छन जाय सपन ज्यों जीति जुआ की ॥

यह झूठो दृश्य प्रपञ्च है लखि नट नाट समाज तजि ।
निज घट मैं दीनदयाल गिरि कपट त्यागि नटवरहिं भजि ॥३५॥

करन चहै जो कालि काज सो आज करै किन ।
करि विचार तूँ देख नहीं मिलिहै ऐसो दिन ॥

समै स्वास जे जात बहुरि तेती नहि आवत ।
औसर भए बितीत मीत रहिहै पछतावत ॥

सुनि हे नर चतुर चूक जनि ह्वै सुचेत आलस्य तजि ।
अब प्रथमै दीनदयाल गिरि त्याग फन्द गोबिंद भजि ॥३६॥

अमल कमल दल नैन मैन अरि जिन्हैं न भावत ।
नन्द नन्द आनन्दकन्द गोविन्द न गावत ॥

दया धरम शुभ करम सील समता नहिं आई ।
प्रीति प्रतीति सुरीति नीति नहिं सज्जनताई ॥

हिय ह्वै उमङ्ग सतसङ्ग जे विषय रङ्ग तजि नहिं चहैं ।
तिनको गुनि दीनदयाल गिरि धुनि मृदङ्ग धिग धिग कहैं ॥३७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[प्रमदा दूषण]

कवित्त ।

कहाँ गयो है अनन्दकारी मुख चन्द जाहि करिकै पसन्द रहे पीतम निहाल हैं । कहाँ गई अलकैं जे झलकैं हिए रसाल कहाँ गये बिम्ब लोंं जु रहे ओठ लाल हैं ॥ कहां गये दाडिम से दंत कंत मोहन वे कहां गईं बाँकी वह भृकुटी विसाल हैं । कवि उपमान कोंं मसान मैं कृसान दह्यो बिधि के बिधान कोंं विदारत सृगाल हैं ॥३८॥

कहाँ गई केहरी समान कटि कामिनि की दामिनि भाकि तै गईं रहीं जेँ विसाल हैं । कहाँ गये लोचन सलोने बंक कोने लाल कहां गई गर ते वे मोतिन की माल हैं ॥ कहां गई कुंडल की डोलनि कपोलनि तें कहां गई बोलनि वे सुधा सी रसाल हैं । कवि उपमान कोंं मसान मैं कृसान दह्यो बिधि के बिधान कोंं विदारत सृगाल हैं ॥३९॥

कहां गये लोने सोने कुंभ के समान कुच टोने सम करैं सब लोगन विहाल हैं । कहाँ गये कोमल वे लाल पानि पल्लव लों कहाँ गई नख की वे श्रेणी नगजाल हैं ॥ कहाँ गईं जंघ रहीं कदली के जे मिसाल कहाँ गई हैं मराल गज की वे चाल हैं । कवि उपमान कोंं मसान मैं कृसान दह्यो बिधि के बिधान कोंं विदारत सृगाल हैं ॥४० ॥

कहाँ गयो कंबु औ कपोत से उदोत कंठ पीक लीक नीक जामैं झलकै थी लाल हैं । कहाँ गई नासा जौनि कीरचंचु हाँस करै देखिए तमास वह कहाँ गे जमाल हैं ॥ कहाँ गयो है विसाल भाल ससि के मिसाल कहाँ गये गुथे व्याल बाल कैसे बाल हैं । कवि उपमान कोंं मसान मैं कृसान दह्यो बिधि के बिधान कोंं विदारत सृगाल हैं ॥४१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

थूक और खखार को अगार मुख ताकौं कहि चंद अरविंद कंद मोहै मतिहीन कौं। हाड़ के लसंत दंत दुरगंध के समेत देत उपमान तिन्हैं कुंद की कलीन कौं॥ मास के निवास कुच तिन्हैं कहैं श्रीफल से कंचन की बेलि कहैं ती-तन मलीन कौं। देखत मसान माँहि खाल को बिहाल हाल होत नाहिं लाज अहो निलज कवीन कौं॥४२॥

नारी कौं विचारो नाहिं प्यारी भई ता नर की ऊपर ही टँगी चाम देखि कै रँगीन कौं। जैसे सुक सेमल के रूप कौं बिलोकि छल्यो बेर बेर भ्रमै को सिखावै मतिहीन कौं॥ मल अरु मूत को बनी है कलबूत ताहि धूत चेत देत महा उपमा मलीन कौं। देखत मसान माँहि खाल को बिहाल हाल होत नाहिं लाज अहो निलज कवीन कौं॥४३॥

तीको तन सिंधु घोर मान है तरंग जोर तामै दृग कोर हैं कहर दरियाव रे। बेसर सिकंदर भुजा है तेहि अंदर मैं झूलि झूलि बरजैं जो भूलि जनि आव रे॥ भौ निधि को दीनद्याल चाहत जो पार हाल तातैं वरकाव क्यों न मनकी तूं नाव रे। जे जे मन गये प्रेरि ते ते नहिं फिरे फेरि हिय मै हीं बूझि हेरि हेरे नर बावरे॥४४॥

नारी है सिकारी भारी भीषन भौ-वन-चारी मारी बनि प्यारी भट मति को प्रचारि कै। नैन विष सने मैन बान के समान बने भृकुटी कमान वंक मान सोँ सुधारि कै॥ घूँघट की ओट छपि छल की चलाय चोट करै लोटपोट एक पल ही मै मारि कै। होय न सिकार तेहि सोंमुहैं सम्हार यार कहों मैं हजार बार तोहि पैं पुकारि कै॥४५॥

सवैया।

लखिहै बिनु तोय तरंग कोऊ बरु सिंधव नाव तें सिंधु तरै।
प्रगटै रवि तें तम की पुतरी बरु ताहि कौं ढाँपि प्रकास हरै॥
बरु मार विराग सनेह सनै कोऊ लोभ अकास को पेट भरै।
बिपरीति यहै बरु होहिं सबै बिनु राम न पूरन काम सरै॥४६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वरु वारिधि खार सुभाव तजै सफरी मिलि छार सों प्यार करै।
सविता वरु सीतल ह्वै कबहूँ ससि तेज विलोकत लोक जरै ॥
कबहूँ रद व्याल ते दीनदयाल पियूष श्रवै सब मीच हरै।
विपरीति यहै वरु होहिँ सबै बिनु राम न पूरन काम सरै ॥४७॥
वरु आक उदार बनै जग मैं हरि चंदनहूँ कृपिनाई धरै।
वरु सिंह को मारि कै स्यार बडो सरदार बनै वनराज करै ॥
सतसंगति पाय कोऊ बिगरै वरु मूढ की संगति तै सुधरै।
विपरीति यहै वरु होहिँ सबैं बिनु राम न पूरन काम सरै ॥४८॥
जो प्रहलाद विषाद दह्यो हित कीन्ह निषाद बराबरि कै।
जो सवरी सबरी तिय तैं हरि कीनी बरी उबरी तरि कै ॥
जो सुख दीन विभीषन कों दुख मेटि विभीषन ही धरि कै।
सो करुना करि दीनदयालहि पालहिगे अपनो करि कै ॥४९॥
जात सबै जग ते रहि देखत तूँ पतियात न नैन निहारे।
तोहि को ऐसहिँ एक दिना गहि दूत पठावैंगे जम द्वारे ॥
जायगी भूलि कला सकला सुनि जौं नहिँ नंदलला हित धारे।
दीनदयाल गुपाल बिना नहिं है कोऊ या महि मैं रखवारे ॥५०॥
पाइए जू परमातम कों यह देह धरे को है काम ही।
जानत हो सब छूटहिँगे सुदती सुत औ धन धाम सही ॥
सोवै न चोर चहूँ दिसि हैं थिरता नहिं कोऊ सरायल ही।
दीनदयाल लखो जगि कैं निसि बीती सबै इक जाम रही ॥५१॥

—:०:—

[अलंकार अन्योक्ति]

मालती छंद।

सुनहु पथिक भारी कुंज लागी दवारी।
जहं तहं मृग भागे देखिए जात आगे ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

फिरत कित कित भुलाने पाय ह्वैहैं पिराने ।
सुगम सुपथ जाहू बूझिए क्यौं न काहू ॥५२॥
बहुत दिवस बीते गैल मैं तोहि मीते ।
मुख रुख कुँभिलाने बैठि लैया ठिकाने ॥
अहह संग न साथी दूर है देश पाथी ।
निकट थल भलो जू सर्व लै लै चलो जू ॥५३॥
बहुत बिधि दुकानैं हैं लगी तू न जानै ।
बनिक बहु विधान के सोहते रूप जाके ॥
निपुननि रखि लीजै वस्तु मैं चित्त दीजै ।
पथिक नहि ठगावै देखि तूँ रैन आवे ॥५४॥
निपट निसि अँधेरी नाहिं सूझे हथेरी ।
बहु बिधि ठग घेरे मित्र कोऊ न तेरे ॥
पथिक इत न सोवै भूलि वित्तै न खोवै ।
जगत रहि सुचेतैं हौं कहौं तोहि हेतै ॥५५॥

[श्लेष]

अभिनव घन स्यामै ध्याव आभा सु जामै ।
विसद वकुल माला सोभती हैं विसाला ॥
द्विज गन हरषावैं ध्यान कै मोद पावैं ।
पथिक नयन दीजै ताप को सांत कीजै ॥५६॥

कुंडलिका ।

बीती सोवत सब निसा होन चहै अब भोर ।
पथी चेत करि पंथ को चिरियन लायो सोर ॥
चिरियन लायो सोर देखि चहु ओर घोर वन ।
चोर लगे वरजोर सखे यह ठौर राखि धन ॥
वरनै दीनदयाल न गाफिल ह्वै इत भीती ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साथी पाथी भए जागि अजहूँ निसि बीती ॥५७॥
हारे भूली गैल मैं गे अति पाय पिराय ।
सुनो पथी अब तो रह्यो थोरो सो दिन आय ॥
थोरो सो दिन आय रह्यो है संग न साथी ।
या वन हैं चहुँ ओर घोर मतवारे हाथी ॥
बरनै दीनदयाल ग्राम सामीप तिहारे ।
सूधे पथ जों जाहु भूलि भरमो कित हारे ॥५८॥
बोहित वत नर देह है यह भवसिन्धु मँझार ।
प्रभु की कृपा सुपवन जहँ सतगुरु खेवनिहार ॥
सतगुरु खेवनिहार धार ते पार उतारत ।
कोह मोह संदेह तोय चर त्रास निवारत ॥
बरनै दीनदयाल न जो यहि साज कियो हित ।
सो रहिहै पथ ताय पाय नरतन सो वोहित ॥५९॥
चिन्तामनि यह जन्म है मानुष को पहिचान ।
ताते आतमज्ञान धन पायो नाहिं अजान ॥
पायो नाहिं अजान स्वान खरवत जग जायो ।
खायो काल प्रहार महा भव मार उठायो ॥
बरनै दीनदयाल नहीं कछु आई है बनि ।
दई गवाइ गँवार जनम मानुष चिन्तामनि ॥६०॥

कवित्त ।

बालपनो सपनो ह्वै गयो लख्यो अपनो ना चेतन-सुरूप भूलि रच्यो रँगे चाम सों । गरब विसाल चाल झूमत चलो है जामै गई तरुनई बीती प्रीति लाय वाम सों ॥ मोह की अंधेरी अजौं घेरी कहै मेरी मेरी रहो है निकाम अरु झाय धाम काम सों । चेत रे अचेत चेत काल बली डंक देत भए केस सेत पै न हेत कियो राम सों ॥६१॥

द्वै द्वै घर दीप बारि सोवै परजंक डार खोवै निज मनी करि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रीति पर भाम की। भाँति भाँति भूषन कों भूषत हैं अंग अंग लावत हैं तेल औ फुलैल देह चाम की ॥ चेतै नहिं आपको भुलाय पाप बीच अंध बली काल बधिक रह्यो है साधि जाम की। जैहै ध्रुव धूरि चाल या तन तो अंत काल कहैं संत दीनद्याल दै दोहाई राम की ॥६२॥

कुल को धरम त्यागि कुलटा के साथ लागि तासु राग रागि निज खोवै धन धातु है। दै दै अति खेद हनै जीवन को स्वाद हेत सो तो सब है अचेत पाप लिखि जातु है ॥ तू तो खल संग पाय रह्यो मद मैं भुलाय तातें जम भीम भय भारी न लखातु है। कैलै सुख रंच हाल फेरि ताडना विसाल पीछे तें परैगी जानि जे जेये कुवातु हैं ॥ ६३ ॥

गयो जमराज एक दिना निरै कुंडनि पैं पाप पुंज पीडित ह्वै सोर सो मचायो है। कह्यो जमनायक तूँ धाम काम वह्यो मूढ़ वाम होय रह्यो राम नाम कों न गायो है ॥ हासन विलासन मै कीने बहु पापन को आई नहिं लाज दया जीवन सतायो है। किधौं कील चक्र ज्वाल आए घोर सुने नहिं रह्यो उतपात माहिं कछू ना डरायो है ॥६४॥

उठि कै प्रभातकाल काल निज प्रेरै गन धाओ दिसि दसो कोन प्रभु कों पुकारा है। देखो कौन पाप पुंज जीव सतावत है कौन उपदेश साधु वेदन को टारा है ॥ ल्याओ गहि ताको दंड मारि मारि ताके सिर कहै गिरि दीनद्याल दै करि नगारा है। चीरो धरि आरा बांधि कारागार डारा करो टेरै जम भारा यह हुकुम हमारा है ॥६५॥

कोऊ कहैं दिनमनि कोऊ तो विराट नैन कोऊ जम तात कहै टेरि बार बार है। मेरे जब दीनद्याल लौनिमेख आदि जुग प्रलै परिजंत जासु दंत को सुमार है ॥ जाहि गतागत मैं अपार जीव नास होहिं सूर जन होय यह कियो मैं विचार है। कारीगर काल कला चातुरी सुधारी भारी आरखल काटिवे कों घोर धार आर है ॥ ६६ ॥

कहा कोसलेस सुख पायो प्रभु तनै पाय कहा सुख दीनो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

प्रहलाद जू के तात जू। कहा सुख दिया प्रिया राघव कों दुखी किया को सुख सुकंठै दिया बालि वली भ्रात जू॥ कहा सुख दीनो धन हेतु भो मथन सिंधु कहा सुख कौरव को दियो राज ख्यात जू। निजा- नंदकंद बिन लह्यो सुख लेस किन कह्यो सनबंध छिन दुख को संचात जू॥ ६७॥

जैसे निसि तरु पै सजोग होत पच्छिन को जैसे पनिहारिन को कूप पैं संघात है। जैसे पथगामिन के संग नाव पौ सर पैं जैसे रैनि संगम सराय मैं सुहात है॥ तैसे सनबंधिन को जग मैं समागम है जात भले चले नाहिं कोई विरमात है। ताते तजिए उताल वृथा यह मोह जाल सपन समान छगल तामै क्यों फँसात है॥ ६८॥

जा दिन ते वासना कुनारि विभिचारिन कों आनि देह गेह बीच चित कों लुभायो है। ता दिन ते सांति औ विवेक मातु पितु हूँ कों तोहि ते निरादर दिवाय विलगायो है॥ संजमादि भ्रात बड़े तोष सखा जे अनूप तिन सों लै वैर रूप अंकुर बढ़ायो है। तातें तजि दीनद्याल तमा तिय कों उताल देखिए कुचाल संग कौन सुख पायो है॥ ६९॥

धीरज जनक जासु जननी छिमा है बनी नारी अति प्यारी सुख पाँति साँति जेकी है। साँच है सपूत पूत भ्रात संजमादि दाया भगिनी गिनी गुनी न गुनि तेकी है॥ सम दम आदि मंत्री भारी हितकारी तोष वल्लभ विराग संग अति सो विवेकी है। येते ए कुटुम्बिन मैं राजैं मुनि दीनद्याल सुख सो भूपाल समो सोवै भीति केकी है॥ ७०॥

चोरी नहिं करै पार नटवर दरबार बार बार तासो छलि बचैगो न जाय कै। सबही जहान तासु नाट को वितान जान राख्यो सचराचर जो नटी सो नचाय कै॥ सोई नट तेरे घट पट मैं विराजि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रह्यो अंतर बहिर ते सुठाटहि ठठाय कै । ताते अब दीनद्याल त्यागि फरफंद जाल ताही के पाय नरहि नीके लपटाय कै ॥ ७१ ॥

[विराट वर्णन]

कवित्त ।

पद है पताल दिग श्रुति अजधाम भाल वाल घनमाल काल भृकुटी विलास है । नैन मारतंड दिगपाल भुज हैं प्रचंड और लोक अंग मही मास वात स्वास है ॥ आनन अनलरूप रसना है वारि भूप वेद बैन है अनूप माया मुख हास है । कुच्छ सिन्धु रोम वृच्छ अस्थि सैल नसाजाल नदी दीनद्याल यों गुपाल विस्ववास है ॥७२॥

भ्रमत चौरासी यह जीव अविनासी परयो माया को भ्रमाया गुन काल कर्म घेरी मै । सुपन विधान विस्व वंदि साल वीच आनि फस्यो सनबंधिन की प्रीति दिढ वेरी मै ॥ भयो दुखी दीन हाल ममता विसाल गहि अद्वय स्वरूप भूलि फस्यो मेरी तेरी मै । भूल्यो निज बलवाँह भूल्यो देह सुख मांह जैसे सिसु सिंह को भुलायो मिलि छेरी मै ॥७३॥

लखो भूलि या विसाल उलटी जगत चाल दिग भ्रम सम रहे सबही भ्रमाय कै । आनँद पै लागि विषै आकन को ढूँढत हैं काम-धेनु आतम कों आपमैं भुलाय कै ॥ जैसे निज अंतर मैं मद को कुरंग भूलि हेरत है ताको वन तासु गंध पाय कै । तैसे निज घट मैं बिसारि चितानन्दकन्द खोजै मतिमन्द ताहि ठौर ठौर धाय कै ॥७४॥

जैसे गहि सूक हाड़ कूकर चबात जात ता दरेर आवै मुँह लोहू प्राटाय कै । ताको वह बेर बेर चाटत है स्वाद मानि तासु रस जानि मूढ़ लगो मोद पाय कै ॥ तैसे जड़ गोचर तें पावत अनन्द नर चिदा-नन्द चेतन की लेस कौं छवाय कै । जा कन अनन्द तें अनन्द सबै लोक माँहि ताहि नाहि चेतै निज घट मैं भुलाय कै ॥ ७५ ॥

तुहीं रिझवार है वितान तानि रह्यो तुहीं तुहीं नट नटी अरु तुहीं तो तमासो है । तुहीं अस्ति भाँति प्रिय रूप ह्वै विराजि रह्यो

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तेरोई प्रकास सब जग को प्रकासो है ॥ अंतर वहिर वीच तुही है अनन्त भेव तुहीं वासुदेव यह विस्व तव वासो है । सदा निरलेप ओत प्रोत भासमान होत जथा आसमान घट मठ माहिं भासो है ॥७६॥

करम परम जोई धरम बढावत है धरम विसद जो विराग कौं दिढ़ावई । भलो सो विराग जो विवेक उपजावत है भलो सो विवेक जौन ज्ञान कौं जगावई ॥ भलो सोई ज्ञान मान कियो जो अनन्दवान भलो सो अनन्द जो समाधि साधि ल्यावई । या विधि सों दीनदयाल राख्यो क्रम जो सम्हाल ताहि बली भाँति भली धन्य वेद गावई ॥७७॥

छप्पै ।

को दिसि ते हैं आय धाय चितरूप कलन्दर ।
डारि रज्जु अज्ञान जीव जिन कीनो बन्दर ॥
स्वरग नरक मृतु जन्म ठौर ही ठौर भ्रमायो ।
दै दै दुखहि नचाय त्रास बहु भाय दिखायो ॥
चल सिला दारू मृदु चित्र ढिग जाय नवावत सीस डर ।
यह लखिए दीनदयालगिरि गूढ चरित आचर जतर ॥७८॥

कहूँ राग रंग ताल बाजत मृदंग झाल कहूँ हाय हाय करि रोदन करत हैं । कहूँ मौन साधि साधु आराधत राधावर कहूँ मद-माते खल सोर सोँ लरत हैं ॥ कहूँ दानसील दान देत नेत हेत करि कहूँ चीर चोरि लेत पाप ना डरत हैं । कहैं दीनद्याल यह लखि अचरज हाल जग के अनन्त ख़्याल जाने ना परत हैं ॥ ७९ ॥

एक नर सबै जग जस तेँ प्रकास करैं एक प्रभाकर ज्यों प्रकासै चराचर हैं । एक नर धरा पर सुर के समान सजैँ एक नर फिरैं जथा सूकर गोखर हैं ॥ एक नर मिले मिलैँ आनँद अनेक आँनि एक नर देहिं डर दुख के निकर हैं । एक नर वर हैं जवाहर तेँ दीन-द्याल एक नर ऊसर काँकर तेँ वतर हैं ॥ ८० ॥

बात ही तेँ राम ऐसे त्यागे सुत कोसलेस बात तेँ रमेश द्वार

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सेवैं बलिराज कौं। बात तें महेसऊ प्रजेस जा बिसारि दई बात हारि पंडु-तनै तजे राज साज कौं॥ बात ही बाँधे महि तें उतंग खड़े सिन्धु अजहूँ लौं परो विन्ध्य मानि बात लाज कौं। पालत जो बात बड़ो सोई जग जसी ख्यात बात के छुटे तें नर गात कौन काज कौं॥ ८१॥

द्वारे गज घटा सोर घंटन को चहूँ ओर कीने भट भूप कोटि आपने अधीने तूँ। भीतर अटान पैं छटा सी जगमगै भाँम करी काम-केलि पाय जोबन नवीने तूँ॥ राजन के राजा महराज अधिराज बनो कहैं दीनद्याल सुर साज छीनि लीने तूँ। दीने प्रभु पथ पीठि ऐसे भये कहा भयो जोंपै मतिहीने नहिं रामरंग भीने तूँ॥ ८२॥

जानो जग जन्त्र मन्त्र जादू जप जोग जज्ञ जानो है मारन अरु मोहन उचाट कौं। जानो चतुराई कविताई को सुर सरूप जानो निगमागम औ राग रंग नाट कौं॥ जानो बहु बयपार पारख हथ्यार मार जानो गिरि दीनद्याल ठोटें सबषठ कौं। फिरो तिहूँ लोक हाट ह्वै सुजान घाट वाट राम कों न जानो तो बिकानो नवराट कों॥८३॥

रागो मन राज काज गजराज पै विराजि रागो धन धाम के समाज साज सार मैं। रागो रस नृत्यन के तान राग रंगन मैं रागो सुख रमनी के रूप मान मार मैं॥ रागो सिधि चेटकादि माय कर मूजन मैं रागो खग कूजन मैं पूजन संसार मैं। ऐसे इन रागन मैं रागि कहा भयो अंत राम खो न रागो सब रागो गयो भार मैं॥८४॥

प्यारे भुज वारे नित नन्द के दुलारे हित जा मुखारविन्द पैं कविन्द इंदु वारे हैं। कारे रतनारे सितवारे दृग दीरघ पैं दीनद्याल मीन मृग छीन छवि डारे हैं॥ सबै जग धारे जन प्रान के अधारे प्रभु अधम उधारे जब नेसुक निहारे हैं। हारे जिन भीषम सों भारेपन को लगाय सोई निसि बासर तिहारे रखतारे हैं॥ ८५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै बराकन कौं बिधि की बराबरि कै बार बार बहकी आलस न गहति है। गोबिंद के गुन नहिं गावति गरूर भरी हरी के सुजसि बिनु जस ना लहति है॥ रस के जे चसके हैं तामैं फसके बिहाल ह्वै रही बिबस क्यों हूँ बस ना रहति है। रसना रसन ठाम रसना तूँ बसु जाम रसना रिजाली राम कस ना कहति है॥८६॥

जीभ मुरी स्वादन ते बाँग मुरी वादन ते नैन मुरे नाना बिधि रूप न लखात हैं। श्रौन मुरे श्रौनन तें पाँय मुरे गौनन तें घ्रान मुरी सुन्दर सुगन्ध न सुहात हैं॥ हाथ मुरे गाहन तें चाह मुरी चाहन तें तुचा मोरी कोमल परस न सुखात हैं। घोर उतपाती ए अनेक बर जोर एक मन के मरोर तें सकल मुरि जात हैं॥ ८७॥

[शांत रसमय वसंत वर्णन]

कवित्त।

हृदय रसाल मैं रसीली रसना की डाल राम नाम बसु जाम कोकिल अलाप है। पुलकलता मैं सुख साजत सनेह सुक भगति वयारि त्रय हरै तिहूँ ताप है॥ सेवत सकल बेला जाय बाग अबला मैं जहाँ अनुरागमय कुसुम कलाप है। ध्वनि संतसंग को बसंत है लसंत जहाँ बनि कै सुतन्त रमाकंत सोँ मिलाप है॥ ८८॥

लसैं विषै वासना प्रसून के समूह जहाँ गुंजैं चित चोप चंचरीकन के जाल हैं। त्रिबिधि बयारि बार बार इहै ईखना की हालरैं चहूँ घा लता लालसा बिसाल हैं॥ बोलैं काम कोकिल कलोलैं कीर कोपन के लहकैं ए लाल लाल लोभ के प्रबाल हैं। धिग है बसंत जग जामैं कंत को वियोग सोगमई मति गति बाल ह्याँ बिहाल हैं॥ ८९॥

[शांत रसमय ग्रीष्म वर्णन]

लोभ लवैं बीच चलैं लालच लहरि लोल जामै मन मूढ़ मृग त्रिषित पगत है। काम को समीर महा पीर बसु जाम करे जाहि देखि कै विशेषि धीरज भगत है॥ दुख की दवागि जागि रही देह दिसि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बीच भागि नहि सकैं जीव जरिवो लगत हैं । मोह मारतंड को प्रचंड तेज तपै जहाँ ग्रीषम को रूप धरे भीषम जगत है ॥ ९० ॥

[शांत रसमय पावस वर्णन]

नाचैं चहुं ओर मो ममता के ठोर ठोर माचैं करि सोर दुख दादुर जमाति हैं । छलकी कला है छन छटा छिति छोर छई मोह मई वाय कों झकोर बहु भाँति हैं ॥ गाजै मेघ मद्द के विराजैं विषै इंद्र चाँप छाजैं ताप जोगन ए दम्भ बगपांति हैं । धिग जग पावस को पातक की घटा जहाँ हित चित चातक की प्यास न बुझाति हैं ॥९१॥

[शांत रसमय शरद वर्णन]

काम कंज फूले जहाँ चंचरीक लालच को मंजु गुंज पुंज करै माति भाँति भाँति है । चमकैं चहूँघां चारु चलता कतार तार चाह चन्द चढ़ो चोप चाँदनी विभाति है ॥ जितै नागरज ज्ञान ना गुविन्द ध्यान विज्जुमान को मराल मन्द चाल जा सुहाति है । जगत सरद काल लगत रसाल है न स्याम के वियोग मति वाम विलपाति है ॥९२॥

[शांत रसमय हेमन्त वर्णन]

पद सों सनेह नीको लागत धनंजै प्रिय जाको लखि कूर मुख कंज मुरझाय है । सबकों सुखद मित्र सीतल सुवात जहां जा समीप जाय दुर दिन घटि जाय है ॥ बढ़ति विभावरी है जासु संग दीनद्याल ओक सुख साजै सोक कोक विलपाय है । संत को समाज धनि सोहत हिमन्त बनि जाहि मैं अनन्त कंत सुख सरसाय है ॥९३॥

[शांत रसमय शिशिर वर्णन]

काँपैं द्विज धीर पीर जाहि के समागम तें जती दुख लहैं होत कामिन उमंग है । जड़ को प्रताप जहाँ निपट कपावै अंग वाम के सनेह तें बढ़ावत अनंग है ॥ बात उतपात जासु लगे तें हृदै को दरै जीवन दुखद करै मित्र तेज भंग है । परनै विनासै बहु कुजन विकासन हेत सिसिर सरूप किधें सोहत कुसंग है ॥९४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[शांत रसमय होरी]

बाजत हैं काम कोह डफ औ मृदंग दोऊ लागी उदवेग की उमंग सों टकोरी है। चाव पिचकारिन साँ भरि कै विषय रंग तातें मति गोरी अति भोरी करि बोरी है ॥ रही उजराई है न घट पट सूझै नहिँ लै गुलाल मोहमई झोरी झकझोरी है। सुने नाहिँ जाहि सुर सोहँ सुभ दीनद्याल मची धूम करि हिय खोरी माहिँ होरी है ॥ ९५ ॥

दंभ के वितान मैं विराजत हंकार भूप काम कोह सखा संग राग फाग रची है। लालच गुलाल कुमुकुमा हैं कुचालन के रंग हैं कुसंग नहिँ तातेँ मति बची है ॥ मद के मृदंग बजैँ ताल झाल झूठ मई तैसईक गीति लै अनीति नटी नची है। गई बुधि सुधि भूलि विषै बरजोरी करैँ कैसी हिय खोरी मोह होरी धूम मची है ॥ ९६ ॥

सरधा सहेली साथ खेलत विवेक फाग भरे अनुराग खरे सखा सबै संग मैं। संजम नियम सम दम धीर ध्यान तोष सील सुभ भूषन सजे लसै सुअंग मैं ॥ मुदितादि चारि परिचारिका के जूथ चारु सांति है प्रधान सजै सुख के उमंग मैं। ज्ञान को गुलाल पूरि रहयो मुद होरी मची प्रेम पिचकारी चलैं भरी छेम रंग मैं ॥ ९७ ॥

मति अभिरामिनी विवेक पति प्रेमपगी जगी जग जामिनी तें उमगे उमंग हैं। फाग मुदि तामैं अनुराग के गुलाल लसैं आतम प्रकास के मसाल सजैँ संग हैं ॥ नाचति सुरति गति लीन मोद मंडप मैं सवद अनाहद के बजत मृदंग हैं। सजत बिसाल सुख अनुभो को दीनद्याल बढत रसाल निज रंग के तरंग हैं ॥ ९८ ॥

यह वैराग्य दिनेस को, सुखप्रद त्रितिय प्रकास।
विरच्यो दीनद्याल गिरि ज्ञान सुबनज विकास ॥१॥

—:o:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चतुर्थ प्रकास ।

[अंतर्लापिका छप्पै]

कहा राज तें होत ? सूर केहि मैं जस पावत ?
कहा धरे निरुपाधि कृत्य कह को यह आवत ?
कहा कियो मिथिलेस ? कौन चंचल जग माहीं ?
दाता केहि दै जात देव पुर देवन पाहीं ?
गुरु कहा कहत हैं शिष्य पैं ? का भंगुर भाषे बुधन ?
को जग है दीनदयाल गिरि **मार मोह प्रमदा सुधन*** ॥१॥

का पथिकन दुख देत चलत ग्रीषम ऋतु मैं मग ?
कहा भलन को होय खलन करमन तें या जग ?
का लागे हरि मिलत ? कहो किहि जोग विषै रस ?
मन को करिए कहा ? होत अंकुस तें को बस ?
सुत कौन करत पालन परम ? कौन धरत छबि नृप हृदय ?
अघ तें ह्वै पुरुष प्रताप कह ? **लोभ लहे जग मान छय†** ॥२॥

को हुतास को बीज ? होत चित काह कनक मैं ?
का मैं सिर दै सूर लेत सुर सदन तनक मैं ?
बरनत कहा कबीस ? साधु हिय को ? हरि हित अति ?
दाता का नहिं कहत ? देत कासी मैं को गति ?

---

* (१) मा = लक्ष्मी । (२) न = युद्ध, अथवा (मा) र (सुध) न = रन । (३) मोह । (४) प्रन । (५) प्रमदा । (६) सुधन । (७) सुन । (८) प्रमदा सुधन । (९) मार मोह प्रमदा सुधन ।

† (१) छय = शिथिलता । (२) मान । (३) लगन । (४) जगमान = संसारी । (५) भल = अच्छा । (६) गज (जग का उलटा) (७) लहे = धन पानेवाले । (८) लोभ (राजाओं के लिये लोभ अच्छा कहा गया है) (९) छय ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का सब जग दीनदयाल गिरि करत एक छन मैं भ्रमन ?
कहि कवन धातु तें बनत है **प्रगट नाम सीता रमन**‡ ॥३॥
निज वस्तुहि उच्चरैं कहा केहि तरै प्रवीने ?
राम भजे नहिं होय कहा ? हरि जन दुख दीने ?
प्रिया स्याम की कौन ? कहैं सुकुमारि सुघर मति ?
ध्रुव वाचक है कौन ? भौन विश्राम बहुरि अति ?
सुभ अरथ विहारी लाल को दोहा दीनदयाल कह ।
सब **मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोइ यह**॥ ॥४॥

[बहिर्लापिका छप्पै]

कौन सेज रचि महाबली भीषम त्यागे तन ?
कहा बढ़त दलि मान जगत में ? गहैं न बुध जन ?
अनुचर को अभिधान कहा विद्वान बखानत ?
श्रोतन को बकतार कहा कहि कथा सुठानत ?
घर नगर त्यागि जोगी जनहिं कहो परम प्रिया लगत को ?
मन कै थिर दीन दयाल गिरि को विरचै सब जगत को * ?५॥

वारिज सुवन

—:o:—

कौन कमल की खानि ? काम करि पंच कहावर ?
को भोजन सुखरूप ? विपति लखि होत कहा घर ?
कौन सुदुरलभ जन्म ? करन को किन रन मारे ?
कहा धरनि धर धरे ? काहि मैं तृन गन जारे ?

---

‡ (१) र = अग्निबीज = सोना । (२) रमन । (३) रन । (४) रमन = शृंगार । (५) म = विष्णु । (६) म = शिव । (७) न = नहीं । (८) म = महादेव । (९) मन । (१०) रम (धातु) ।

॥ (१) मेरी (कह कर) (२) भववाधा । (३) भव = ऐश्वर्य्य । (४) राधा । (५) नागरि । (६) सोइ । (७) नागरि = नगरी ।

* (१) वा = वाण । (२) जसु = यश । (३) वारि = पानी । (४) जन । (५) सुन । (६) वन । (७) वारिज सुवन = ब्रह्मा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नर पार इतर का कहत हैं ? कहा करत जोधा महा ।
जग केहि चह दीनदयाल गिरि ? धरि विराग करिये कहा † ॥६॥

सदन भावार

—:o:—

को है रामा रमन ? देवता देत कहा सद ?
को नासा को पवन ? देव वाची है को पद ?
को वासर को कहै ? कौन अवसर को वाची ?
कातैं कमल, कुमार जनम वदवानी साची ?
पुनि नाम पराभव को कहा ? मुकतावलि को का वदत ?
कहि सकल लोक काकों चहैं ? चोर नाम कौं का गदत ? ‡ ॥७॥

वसु वास हार

—:o:—

मंगल पद केहि कहैं ग्रन्थ के आदि बनावत ?
को जग पूजन जोग जीव जड़तादि नसावत ?
केहि तें तरु पै पान करत ? सब जन सुख पावत ?
कौन विधाता तात सुमन अलिगन जेहि धावत ?
को सोभित दीनदयाल गिरि नीरजात मैं निति रहत ?
का प्रथम चरन की चौपाई भाषा रामायन कहत ॥८॥ ||

† (१) सदन = जल । (२) ? (३) भाव (का) (४) भार । (५) नर । (६) नर = अर्जुन । (७) भार । (८) भार = भाड़ । (९) वार (जैसे, वार पार) (१०) वार = प्रहार । (११) सदन = घर बार । (१२) भाव = भजन भाव ।

‡ (१) ब = समद्र (रामा = नदी) (२) सुवास । (३) सुवास = श्वास । (४) सुर । (५) वार । (६) ? (७) वसु = जल (कमल जन्म) । सर = शर (कुपार वा कार्त्तिकेय जन्म) (८) हार । (९) हार । (१०) सुवास । (११) हार = चोर, हरन करनेवाला ।

|| (१) बंदौं । (२) गुरु । (३) पद = पैर वा जड़ । (४) पद = दरजा । (५) पदुम । (६) पराग । (७) बंदौं.....परागा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वन्दौं गुरु पद पदुम परागा

—:o:—

[मध्याक्षरी]

कौन सुवन को रूप निरखि अति डरी जसोमति ?
को विरचत सब विश्व होय उतपल तें उतपति ?
केहि भंज्यो रघुवीर वीर ? का समर लगावत ?
विदुषन को मन कहा होत नहिं दुख के पावत ?
हैं लोक लोक इनके वरन आदि अन्त महिमहि तजत ।
जो मधि सो दीनदयाल गिरि हित करि नित चित मैं भजत ॥९॥*

विराट विधाता पिनाक सायक विकल

—:o:—

नहीं सूर का होत समर मै जब लागत सर ?
गहत काहि सारङ्ग मानि अपनो अति हित तर ?
जारत विरही चैत कौन ? पद मैं धुनि ठानत ?
नाचत कामैं मोर ? कौन सिय तात बखानत ?
इन सब के दीनदयाल गिरि तीनि वरन दुहुँ दिसि तजो ।
कलि कपट त्यागि प्रति चरन के आदि वरन जुत मधि भजो †॥१०॥

विकल कमल पलास मंजीर पावस जनक

—:o:—

राधिका के नायक सहायक हैं तेरे नित हेरे चित चेतै किन आछे दिन जात हैं । करि लै निकाई काई हिय की छुड़ाय धीर आई जराताई जानि अंग सिथिलात हैं ॥ नीरज चरन जाके हरन अखिल

---

* (१) विराट । (२) विधाता । (३) पिनाक । (४) सायक । (५) विकल ।

† (१) विकल । (२) कमल । (सारंग = भौंरा) (३) पलास । (४) मंजीर । (५) पावस । (६) जनक । (७) ?

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

खेद तिनकी सरन लगि तेई जगतात हैं। आनँद के कंद नंदलाल दीनद्याल सेइ या जग के ख्याल इंद्रजाल से लखात हैं ॥११॥

[शब्द चित्र प्रश्नोत्तरमय एक वाक्य मैं]

का कहै महा मलीन खग में प्रवीन बड़े का कहैं महा मलीन खग मैं प्रवीन जू। कौन मैं विलासै तम मोसन सुनाय साची, कौन मैं विलासै तम झूठ है रती न जू ॥ को कहैं निसा मैं दीन शोक के अधीन परे ? कोक हैं निसा मैं दीन सोक के अधीन जू। के सब ही मा रहै बखानो गिरि दीनद्याल केसव ही मा रहै बखानो पुर तीन जू ॥१२॥

के की गिरा गिरि पैं सुहाति रितु पावस मैं ? को कल गिरा वसंत रितु मांहि सोहई। कामै मुनिराज को तपोधन विनासै घन ? कामैं लीन होत चेत कामै मन सोहई ॥ मै न कासों मोहि रह्यो देवन के दिलै वसि ? चन्द्र कासों ताप हरै सीतलता पोहई ? मन कासों करै शुद्ध जपी जन दीनद्याल ? या जग मैं को हैं सब जीवन विछोहई १३॥*

निसरै प्रवीन बानी वेदसई बार बार जन सुख रूप मन सरस जनात हैं। सहैं गुरु सेवन को सुख दै अनेक विधि, चलैं सुष्ट चाल अति जीवन सुखात हैं ॥ रसमै ह्वै जाति बात ताकी बुध-मंडली मैं होय वसकरी लगैं सब ही के गात हैं। मिलैं ये सुसंग तें सकार आप दीनद्याल पाय कै दुसंग कों दकार बनि जात हैं ॥१४॥

जिनके पदारविन्द दरद दरत दंद सेवत वृंदारवृंद मुख मकरंद कों। देहिं पद दीह कों विदारि दहैं दारुन भौ, मदन द्विरद

---

* (१) केकी = किसकी; मोर। (२) को कल गिरा = किसकी सुंदर वाणी; कोकिल की वाणी। (३) कामैं = किसमें; काम ही, (४) मैन = कामदेव; मेनका = अप्सरा। (५) चंद्र कासों = चंद्रमा किससे ? चंद्रिका से। (६) मन-कासों = मन किससे, मनका (माला) से। (७) को है = कौन है, कोह ही, क्रोध ही।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लजैं देखि गति मंद कौं ॥ दानि संपदा के देव दुर्लभ जु दीनद्याल दासन के दलै दोष दारिद अमंद कौं। वृंदावन चंद चिदानंद नंदनंदन कौं ध्याय फंद दलि, दिल दै अनंदकंद कौं ॥१५॥

जागैं जगमगी जाकी जेहरी जराय जरी जूथ जुवतिन के जगावैं जाय गाय तान। जासु तेजजाल तैं लजाय जाय जाँवूनद, दीनद्याल जाहि छुए जात जलजात मान ॥ ये जग-जलूस मृगजल को समाज जुरो, जुवा जामिनी मैं जगैं जोंम जीगनैं समान। जान दै अजान जान जानकीजीवन जन जाने जिन नाहिं तिन्हैं जानिए जहान स्वान ॥१६॥

[मुद्राऽलंकार]

छाँड़ि फंद बंद तू अनंदकंद रामचंद लच्छन सुलच्छन हैं जाके सुनु, हे सखे ! हार है सुकंठ जाके अंगद सुबाहु बीच नल है मनोज प्रभा नील छवि के लखे ॥ महावीर धीर दसरथ के हरन पीर जाठर विभीषन विथा तैं जिन तो रखे। जामवंत जात चलो संवत दयाल भलो होय गो न तोष विषै ओस कन के चखे ॥१७॥

ध्याय रघुवंश के कुमार को विहंगमन कामादिक हैं किरात ताहि जाल क्यों फँसै। ऐसी विस्व-मोहिनी प्रभा लखी न मेदिनी मैं देखत अमर जाहि प्रेम रस मैं रसैं ॥ जासु मुखचंद की सुकौमुदी मनोरमा मैं चित्त चंदसेखर हूँ को चकोर सो बसैं। तासु अब दीनद्याल नाम लै शिरोमणि कै यही तत्वसार माहिं सुकतावली लसै ॥१८॥

कितै तूँ विमोहो मन मैन वली फंद माँहि दोह राग करै कहा सोरठानि क्यों लरै। तरल नयन करि कामिनीविमोहन ह्वै कीने मन हरन न काम ताते तौ सरै ॥ सारदूल-छाल-धर शंकर जू भजैं जाहिं सोई जौ त्रिमंगी अनुकूल हिए मैं धरै। छूटि जाय त्रास

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीन प्यास दीनदयाल गिरि कंद की सिखरनी लौं प्रभा पान जौं करै ॥१९॥

कहा मीनकेतु की कलान बीच मेली मति कुंदमई होय गई जाती न निवारी है। सेवती मदन बान माधवी माया भुलाय कोई नहिं जामैं बात सारस विचारी है॥ ताते कर वीर भली जुही है समग्री शुभ जपा कर राम कथा करनै जु प्यारी है। धार दीनदयाल जोग मख मल धोय डार वेला यह बार बार सबों होति ख्वारी है॥२०॥

आदि ते भुलायो छेम, सोम सों न लायो प्रेम जाके नित नेम मोद मंगल उदै करै। कैसी बुध हीन भई मानैं उपदेस नाहिं रटैं गुरु बार बार ताहि ना हिए धरै। सुक्र को सम्हारै किन, डारै कित ठौर ठौर, अजौं मति बौरि चाह विषै मै सनी चरै। आयो वह चहै काल तेरो जौन दलै भाल बचै दीनदयाल जौं गुपाल पाँय मैं परै॥२१॥

[सिंहावलोकन]

धाई है कुमति तव विषै विष काँटनि मैं हरि की न छन भरि चरचा चलाई है। लाई है न प्रीति कहूँ संतन के संग जाय, कबहूँ न काहू सन करी तू निकाई है॥ काई है मलीन मन छाई अति दीन-दयाल ताकी नहि करै कूर रंचक उपाई है। पाई है न कछू सब उमर गँवाई अजौं, आई नहिं लाज सुने जम की बधाई है॥२२॥

पास है गरे मैं तव ममता के जौलौं दृढ़ तौलौं नहिं दीनदयाल तोहि सुखाभास है। भास है विचार जौन चार ओर, भ्रमै कहा? देखि तूं विचार दिना चार को निवास है॥ वास है प्रसून बीच तौ लौं ई भवै गो भोर छन छन जाति घटी तेरी वय स्वास है। स्वास है निरादर ज्यों त्यों हीं कियो सेत केस आसपास फूली जनु काल की कपास है॥२३॥

मार है बड़ो ई बटपार कायकुंज बीच जानो नहिं जाय जासु छल को सुमार है। मार है भुलाय तोहि ताहि लखि तू न मोहि

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तब हीँ बचैगो जोँ विवेक लै जु मारहै ॥ मारहै अचेत, वीर, हो चित सुचेत धीर तेरो हित दीनद्याल नंद को कुमार है। मा रहै न सदा गेह, जलजा सोँ कहा नेह, देह छनभंगी की दिना है सुखमा रहै ॥२४॥

तार है सु तेरो मार मोह के विहार माँह जब ते संसार बीच लीने अवतार दै। तार है पसार किए त्योँ ही धन को सुमार तन छनभंगी को छन विसतार है ॥ तार है विसै सनेह रूप ताहि तोरि डार तामै कहा यार दिन ख्वार करता रहै। तार है गुपाल ताहि भजौ क्योँ न दीनद्याल यही कार करिवे मे तोहिकोँ सुतार है ॥२५॥

वार है अनेक तूँ करार कियो प्रभु पाहिं भूलि गयो तोहि जब जाठर दबा रहै। बार है सु कौन जामैँ हरि गुन गायो सुन ऐसही गँवायो वै बडोई तूँ लबार है ॥ बार है जसोमति को सुंदर संसार बीच जासु छवि गावैँ कवि वेद बार बार है। वार है दिनेस दुति कुंडल तेँ लागै लघु ताहि अब दीनद्याल ध्याइए सबार है ॥२६॥

कुंडलिका।

वनिता के अनुचर परे महा मोह के कूप।
कूपर परमा जासु की वरनहिँ नरक विरूप ॥
वरनहिँ नरक विरूप बदैँ बुध वेद विहारी।
हारी मति जो पाय नहीं नर देह सुधारी ॥
धारी दीनदयाल विरत मन को धनि ताके।
ताके तन को नाहिँ फँदे फन्द न वनिता के ॥२७॥

छप्पै।

वरजे रहो सुजान सबल ये सबतेँ गोचर।
चर अरु अचर नचाय सकल करि डारे खरभर ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भरमावै सब जोनि, यहै डारै भवसागर ।
गरल सरिस है दुखद सुधा हैं जैसे रविकर ॥
कर करन देहिँ नहि चित्त कों इनतें हारे अखिल नर ।
नर नर पै दीनदयाल गिरि ये रिपु ज्यों मृग पर सबर ॥२८॥

सवैया ।

देरी करै मति, हे मति ! तूँ कहै दीनदयाल विसाल समे री ।
मेरी सिखापन मानि तजै किन मान भजै नँदनन्दहि हेरी ॥
हेरी नहीं हरि ही न हितू जग के समबंध न बंधन बेरी ।
बेरी भली यह जाति चली वृषभान लली की गली दृग दे री ॥२९॥

सो रहै जहान माहिँ अधम उधारिवे को केतक अजामिल से पापी तरे जोर हैं । जो रहैं कृपाल सरनागत पै काहू विधि ताके नहिं गनैं पाप किए जे करोर हैं ॥ रो रहैं सु हिये हारि दूत सुने नाम जासु सोई प्रभु वासुदेव जमुना के छोर हैं । छोरहैं सु रमानाह कालपास दीनद्याल धाता दिक देव जासु लगे रज सोँ रहैं ॥ ३० ॥

सोँ रहैं रमेस तव पालन मैं दीनद्याल खरे व्है कँपात काल जिन डर सो रहैं । सोर हैं गुनन के जे गाय न सकैं गनेस से ई तौ सहाय नित नन्द के किसोर हैं ॥ सोँ रहैं कुफन्द फँसि मन्द नार चेतैं नहिं मृग के समान लगे भानुकर सो रहैं । सोरहैं कलान करि सुन्दर सुवेष स्याम दरसोँ कों देव जासु हर तरसो रहैं ॥ ३१ ॥

अनुप्रासमयी सवैया ।

हर से हरि से नहिँ हेत कियो खर से जग जीवन हैं नर से ।
कर से नहिं पूजन कै परसे बचि है किमि कै जम के डर से ? ॥
दरसे मुख नाहिँ कलाधर से तरसे मतिमन्द विषै सर से ।
अर से बिन ही जर से वह जाहिँ जे हैं मद के भर से गरसे ॥३२॥
मन को नहिँ हाथ कियो छन को नित संग गहे विषयी जन को ।
तनको धन को अभिमान करैं नहिं चेत धरैं मनमोहन को ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

घन को जिमि लोह सहैं तिमि वै निसि बासर सोकन को ठनको।
उन को गन दूखन भूखन जे, पन भूलि रहे जठरापन को ॥३३॥

काकावलोकनम्।

पनिहारि समौ सब जात चले रुचि को जल लै जग के सर सौं।
सुदतीसुत लौं धन धामहुं तें इनके छन संग नहीं सरसो ॥
करि हैं मन घायल तोहि सही मरिहैं जब मोह महा सर सौं।
जिन दीनदयाल भजे न गुपाल बने नर ते खर सो सर सो ॥ ३४॥

कवित्त। शांत रसमय।

मरयो है कुरंग वीन सबदविषय संग, जरयो है पतंग ह्वै उमङ्ग रूप रागि रे। परयो है मतङ्ग गाड़ परस विषै अधीन दरयो मीन रस तें, मधुप गन्ध पागि रे। एक एक विषै ते मरे हैं एक एक जीव, नर क्यों न मरै जाहि पंच विषै लागि, रे। एतो उर साल ज्वाल काल-व्याल तें कराल जानि विषै विषतें विसाल ताहि त्यागि रे ॥ ३५ ॥

अपने मैं अपने कों अपने सों पेखि तूँ, न सपने मैं मोहै भ्रम ढपने कों त्याग रे। लगी तिहूँ ताप लाय पाय कामरूप वाय, जग कों जराये जाय अजौं जागि भाग रे ॥ गदगद होय कहा रह्यो देखि मृग नद छन मै जरैगो मद कागद को बाग रे। लौ सुख संजोग फेरि हूँ वियोग सूल सोग एतौ सब विषै भोग सती को सुहाग रे ॥ ३६ ॥

नहीं राजकाज, न समाज साज राजधानी, नहीं सैन ऐन कोऊ अन्त ठहरातु है। नहीं जाति पाँति न जमाति कोऊ नेह नात, नहीं तात मात भ्रात गात साथ जातु है ॥ सपन समान जान, हे जन, जहान प्रान चञ्चला चलान समौ चञ्चल चलातु है। छाँड़ि कै जवाल जाल गहि तूँ गोपाललाल तातें कहि दीनद्याल फन्द क्यों फँसातु है ? ॥३७॥

मरे हैं कुरङ्ग कई परे फिरैं बान संग, बीन सों नवीन नेह जा दिन ते लाए हैं। दीन होय मरै मीन अति जल तें विहीन, लीन दीप मैं पतङ्ग अङ्ग को जराए हैं ॥ कंज के अधीन भए छीनतन भवैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भौंर, मनी के वियोग तें मलीन फनी ताए हैं। चातक मरहिँ रटि स्वातीहीन दीनद्याल, नेह को लगाय कौन देह सुख पाए हैं ॥ ३८ ॥

दई दई करै कहा दई ने दई है देह दुर्लभ सनेहमई सुख सेज सोइ ले। लहि कै जतन गहि रतन दयाल नाम तजि कैं निकाम धाम कामसुधा कोइ ले। हरि सोँ लगाय हे तसीख सबै संत देत बनो है सुखेत है सुचेत बीज बोइ ले। मानुस जनम पाय जदुराय गुन गाय बहो दरियाब जाय अहो हाथ धोइ ले ॥ ३९ ॥

श्लेषघटित अनेक प्रश्न के एक उत्तर। कवित्त।

कौन जग जीवन दै जीवन कों पालत है ? स्याम रूप धरे हिये चपला कों लै रह्यो। कियो को सुमन माहिँ सुमन लगाय बास पीत बास ऊपर लै नील तन कै रह्यो। काको गुन गावत रसाल द्वै सुकादि द्विज को न छमा[1] बीच छवि छैल बनि छै रह्यो ॥४०॥

प्रतिपद यमक सहित समस्या।

तन को न तनको प्रमान है पतन को, जू, धरो दीनद्याल धराधर के धरन को। पावन कलेस यह जन्म अब पांवन लै पांवन परन छ्वै अपावन नरन को ॥ मानस मैं धरि धीर मानस विराग माँह मानस-मराल राखि दीजै विहरन को। सीत को परन[2] गनि, परन कों जांचो जनि, परन[3] कों लैकै वरू पैन्हिए परन[4] कों ॥ ४१ ॥

राज के कुमार सुकुमार मार हूँ तें अति, धन को सुमार मार मानि विरमात भे। छाँड़ि खटराग राग एक दीनद्याल स्यामपद के पराग और तें विराग गात भे ॥ ते भे बन जात वनजात से चरन जासु तासु काम राम नाम कों लै वन जात भे। त्यागि उतपाती जग विषै भोग नासपाती, नासपाती खात ते बनासपाती खात भे ॥ ४२ ॥

सुन्दर पुरन्दर के मन्दिर से मन्दिर मैं आदरैं न दरबानी

---

१ छमा = क्षमा = पृथ्वी । २ परन = पड़मा । ३ परन = प्रन, प्रतिज्ञा । ४ परन = पर्ण, पत्ता ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूपन कों जात भे। अन्दर मैं दरसैं हीर मनी सुरमनीय ताके नहिँ ताके नहिँ, तिन कहँ तृनसेज जात भे ॥ मानस मैं मान समै भयो यों विराग जिन्हैं तेई दीनद्याल सबै मानस में ख्यात भे। त्यागि उतपाती जग विषै भोग नासपाती, नासपाती खात ते बनासपाती खात भे ॥४३॥

देखि कै विराग की बड़ाई जग मैं विसाल केतिक भूपाल राज तजि बन जात भे। ऋषभ ऋषीश आदि बड़े चक्कवै जु हुते गात मैं रमाय भूति भू मै भरमात भे ॥ अतिसै उमंग संग काहू जन कों न करैं भू पर सयन बसैं तरु तर रात भे। त्यागि उतपाती जग विषै भोग नासपाती, नासपाती खात ते बनासपाती खात भे ॥ ४४ ॥

देखो कलिमन्द मैं भरथरी औ गोपीचन्द छाँड़ि राजफन्द बनि जोगी बन जात भे। कंथा सतखंडमयी तैसई लई कुपीन, रहे धूरि धूसर है कूसर पैं प्रात भे ॥ माते प्रभु प्रेममद राते गिरधारी गुन ऐसे दिन दीनद्याल तिनके बिहात भे। त्यागि उतपाती जग विषै भोग नासपाती, नासपाती खात ते बनासपाती खात भे ॥ ४५ ॥

पुनः समस्या। छप्पै।

पंडुतनय हित लागि दूत बनि दयासिन्धु हरि।
गे दुरजोधन गेह नेह करि राजनीति धरि ॥
देखे द्वार उदार वार प्रतिहार हँकारत।
खरे भूप सरदार अरे जनु मार बिहारत ॥
बहु कनक छरी बरदार तित आनि प्रभुहिँ विनती करी।
तहँ स्याम प्रभा परतहिँ सु भइ जातरूप नीलम छरी ॥ ४६ ॥

कवित्त।

चिदानन्द कन्द जाको सोभित अनन्दप्रद साधु हिय आल बाल कोमल लखातो है। दया दल तापहारि, मन्द मुसुकानि फूल, मोद मकरन्द, श्रेय फल दिन रातो है ॥ सील सुभ साखा झूली एक

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

रस अनुकूली, आनन आमोद सोई सुरभि सुहातो हैं। पारिजात लता फूली जनकललो अतूली, देखि राम भौंर रातो सदा मड़रातो है ॥४७॥

संतत विमोहै जोहै सुमन सिँगारनि कों देखे छिन एक बिन अति अकुलातो है। गुंजत रहत गुनग्राम वसु जाम जाको रूप मकरन्द छवि हिये हरखातो है ॥ सुखमा सुगन्ध की सदाई रहै चाह जाहि पीतवास धरे सुभ करे स्यामगातो है । पारिजात लता फूला जनक लली अतूली, देखि राम भौंर रातो सदा मँड़रातो है ॥४८॥

गहि गुन मति सूची पट मैं सजति अति सूछम ते सूछम जा मुख बुध गाए हैं । तहाँ वि कूप के समूह तम रूप सजैं तापैं नेह नगरि अनूप जन छाए हैं ॥ तितहीं लसति है भगति देवधुनी धार छूवै अपार जातें पापभार बिनसाए हैं । सूची पर कूप वृन्द, तापैं नगरी गरीय तहां गङ्ग के तरङ्ग तुंग सुन्दर सुहाए हैं ॥ ४९ ॥

कण्ठ मैं पुनीत तासों सूची सतोगुन गुथी जाको अति सूछम प्रमान कवि गाए हैं । तहाँ संस्काररूप कूपन के संघ सजैं, सुपन सहर तापै मति ने बनाए हैं ॥ तामैं हरिदास लखैं ताप दमैं देवनदी दीनद्याल जाके जस तिहूँ काल छाए हैं । सूची पर कूप वृन्द, तापैं नगरी गरीय तहाँ गङ्ग के तरङ्ग तुंग सुन्दर सुहाए हैं ॥ ५० ॥

सवैया ।

एक समय सर पाचहुँ लै रति नायक नाकहिँ जीतन धायो ।
ताहि कों जीति जयो नरलोकहिँ, दीनदयाल सबै बसि ल्यायो ॥
फेरि पताल गयो पथ सिन्धु मैंनाक के नीचे ह्वै चाप चढ़ायो ।
ता धनुफूल रह्यो अलि है, तित भृंग पैं सैल समुद्र सुहायो ॥ ५१ ॥
मैं अति ऊजल हौं प्रभु कों प्रिय पाप न रंच गहौं गुनगाही ।
हा ! जल नीच की संगति तैं तिनहूं गहि मोहि हुतास मैं डाही ॥
ह्वै जु मलीन रहे हरि वे मुख पाप कुसंगति के अति चाही ।
ता दुख भावी विचारन कै इहि कारन छीर फफात कराही ॥ ५२ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सूखमना[1] सुर की सरिता अघ ओघहि दीनदयाल हरै।
ता तट साखी अपात है ब्रह्म, सुचेतन मैं दल सुद्ध सरै॥
लै मनमीन तहाँ करि लीन जमी[2] वर जीव विनोद भरै।
गङ्ग के तीर करीर के पत्र जती इक मच्छहिँ भच्छ करै॥ ५३॥
अपनो अति राजित रूप दिखाय सबै जन को चित लेत चुनै।
लखि कै तमरूप मलीन महा सुत कज्जल को अति हीन गुनै॥
चल वङ्कित नैन कुसंगति मैं, दुख देत तनै की अनीति सुनै।
सोइ दीनदयाल विचारन कै इहि कारन दीपक सीस धुनै॥ ५४॥

पुनः समस्या। दीपकपञ्चक। कुण्डलिका।

तमप्रासक या दीप मैं पूरित पीत सनेह।
बाती विसद हुतास पितु ललित तासु की देह॥
ललित तासु की देह कहाँ तेँ प्रकटो कारो?
है आचरज महान धीर मन माहँ विचारो॥
बरनैं दीनदयाल भेद यह जानि लियो हम।
असन कियो है जौन कढै हिय तेँ सोई तम॥ १॥

अपरम्

लागो है अति प्रीति सोँ भाँवरि भरन पतङ्ग।
अहो, लालची रूप को निरखै बड़े उमङ्ग॥
निरखै बड़े उमङ्ग अङ्ग कोँ मोरत नाहीं।
अरपै मन तन प्रान, प्रानप्रिय गहि गलबाहीं॥
बरनै दीनदयाल ताहि यह जारत जागो।
वहै पाप फल आय दाप मुहँ कारिख लागो॥ २॥

अपरंच

कारे, कुंचित, नीचगति कुन्तल नाम कहाय।
तिनकोँ नेह सनेह सोँ दीपहि तासु सहाय॥

---

१ सूखमना = सुषुम्ना नाड़ी। २ जमी = यमी = यम नियम करनेवाला, योगी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीपहि तासु सहाय, रहै तेहि पास प्रकासत ।
होहि संग तें दोस, गुनहु गुन मानहिँ भासत ॥
बरनै दीनदयाल आप छबि है बहु धारे ।
प्रिय के पाप कलाप कढ़ैं ये मुह तें कारे ॥ ३ ॥

मण्डित कीनो मित्र निसि दै निज तेज प्रकास ।
ठौर ठौर यहि नाम कौं द्यौस न करत विकास ॥
द्यौस न करत विकास गेह ही मैं चल झूमै ।
प्रिय को नाम नसाय, नेह कौं नासत भू मैं ॥
बरनै दीनदयाल स्याम यह जानत पण्डित ।
है कृतघ्न को पाप दीप के मुख मैं मण्डित ॥ ४ ॥

नेही दीपक है बड़ो तपत रैन प्रिय ताप ।
तापै निदरै सब दिना मित्र सामुहैं आप ॥
मित्र सामुहैं आप दीन, कृस देह दिखावै ।
गात धुनै तेहि हेतु नैक जग बात न भावै ॥
बरनै दीनदयाल देखियत कारन येही ।
कढ़ैं सोक मैं स्वास, स्याम यों दीप सनेही ॥ ५ ॥

इति दीपक पंचक ।

चकोर पञ्चक ।

कुण्डलिका ।

प्रिय सों मिलौ विभूति बनि ससिसेखर के गात ।
या विचार अङ्गार कौं चाहि चकोर चबात ॥
चाहि चकोर चबात, चहै चित चारु चन्द रुचि ।
नीके नैन निमेष निवारन कै निरखै सुचि ॥
बरनै दीनदयाल प्रेम पावन यह हिय सों ।
सहि नहिँ सकै वियोग दूरि को मिलिबो प्रिय सों ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अपरम् ।

निज प्रिय पितुहि पयोधि कौं बडवानल है ग्रास ।
करत सदा तेहि लागि तें असन चकोर हुतास ॥
असन चकोर हुतास करै जो जगत प्रकासै ।
गिलत हृदै नहि हिलत मिलत यामैं यह आसै ॥
बरनै दीनदयाल देखि द्विज को सहृदै हिय ।
अहो एकटक लाय विलोकत नभ मैं निज प्रिय ॥ २ ॥

निज प्रिय की प्रिय औषधी ताको दहै दवागि ।
भखत जानि अरि आगि कों गहि चकोर यहि लागि ॥
गहि चकोर यहि लागि कोपि रिपुबीज नसावै ।
मीत रीति की नीति भली जग कौं दरसावै ॥
बरनै दीनदयाल प्रीति धनि गनिए हिय की ।
सनमुख नैन लगाय प्रभा निरखै निज प्रिय की ॥ ३ ॥

घोर अनल कौं भखत है सीतमयूख सहाय ।
तन को मन कौं संक नहिँ सदा रहै हरखाय ॥
सदा रहै हरखाय, मीत सनमुख मुख जोरे ।
बाधा होय न कोय महान प्रनै करि भोरे ॥
बरनै दीनदयाल देखावत प्रिय के बल कौं ।
है चकोर तिहि हेतु चबावत घोर अनल कौं ॥ ४ ॥

नेही बड़ो चकोर लखि दूरदेस प्रिय बास ।
दहि तन मन तें मिलन हित तातें भखत हुतास ॥
तातें भखत हुतास तासु धनि आस कहैं मुनि ।
"मन विलीन ह्वै चन्द' बदैं श्रुति अन्त समै गुनि ॥
बरनै दीनदयाल धीर सुप्रनै रन तेही ।
मोरत है मुख नाहिँ अहो द्विजराज सनेही ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

चित्रकाव्य । मध्याक्षरी रोला छन्द मध्ये द्रुतविलंवित ।

गङ्गा जय जन जननि देवि संपद तन श्री तन ।
हे मंजुल गति कलनि पुरातन शिव ताके गन ॥
कुसुम मलय तिल छिपा सुतट भावन जल पावन ।
टरि भव भव भा करी सिवै तैं केते भुवि जन ॥१॥
परसे दिव्य विमान कामजित वपु ते पाए ।
पाप ताप बिन जना सदा शिवलोकै छाए ॥
सनितपनादि दिवेस शंभु श्री कुजगुरु सेवैं ।
शंभु मुकुट उरु माल काल सशि दिवि के देवैं ॥२॥

पुनः मध्याक्षरी छप्पै ।

हंस बंस हे देव अचर चर रमण सरस रुचि ।
रोष निजं तर तजे राव श्रीवर ना लघु सुचि ॥
बीर धरमु रसु धरनि सकल मंगल करुना उरु ।
मिलि तव बिलसे संत तुंग भा मालव कुस गुरु ॥
इह धीर बीर जुग जुग बरन तजि इक दीनदयाल लहि ।
किय वरजन छल नति नील नल राम चरन नति वरन गहि ॥३॥

पुनः मध्याक्षरी अंतर्लापिका छप्पै ।

चह कह भूधर ? कहा छली छल ? को करमन कर ? ।
रसाधीस[1] का देत ? बंध काते कह पर धर ? ॥
काहि चहैं भूपाल ? चह न केहि ? को है भयकर ? ।
रखत काह नरनाह ? चपल को ? हरत कौन जर ? ॥
पर उत्तर वाह कुवार बल अरु तुकादि के वरन वर ।
रचि आदि अंत लै फिरि दए ऊतर दीनदयाल तर ॥ ४ ॥

---

१ रसाधीस = पृथ्वी का स्वामी, राजा ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ टीका ॥

यहि छप्पै के प्रथम चरन मैं तीन प्रश्न हैं, तिनको उत्तर 'वाह' शब्द करिकै दियो ॥ यथा—चह कह भूधर कहा छलीछल को करमन कर। भूधर वाह चाहै हैं। भूधर पर्वत, वाह मेघ, अथवा भूधर राजा। वाह तुरंग ।अथवा भूधर महादेव, वाह वृषभ। वाह शब्द कै विषै कोष प्रमान। वाहो युग्मं घनो वाहो, प्रवाहो वाह उच्यते। वाहो माया विशेषश्च वाहो बाहुरितिस्मृतः ॥ इति अनेकार्थध्वनिमंजरी ॥ वाहो भुजायां वाहस्तु मानभेदे वृषे हये। इति विश्वसार ॥ अथवा वाह प्रवाह महादेव चहै हैं। जल धारा शिव प्रिया, इति वचनात् ॥ द्वितीय प्रश्न को उत्तर यथा—वाह नाम छल भेद को है, सोई छली को छल है ॥ तृतीय प्रश्न को उत्तर यथा—वाह भुजा को कहै हैं सोई कर्म नाम क्रियान को कर्ता है ॥

दूसरो तुक—रसाधीस का देत बंध कातैं कह पर धर। रसाधीस राजा कु देत, कु कहैं भूमि देत ॥ कुं पापे चेषदर्थे च कुत्साया च निवारणे ॥ इति मेदनी ॥ पृथिव्यां कुः समाख्यातः। इत्येकाक्षराभिधानम् ॥ कुं पाप ताही तें बंध होत है ॥ दूसरो तुक मैं तृतीय प्रश्न को उत्तर, यथा—पर शत्रु कु धरत हैं, कु नाम निंदा को है ॥

तृतीय तुक—काहि चहैं भूपाल ? चह न केहि ? को है भयकर। भूपाल वार चाहै हैं वार नाम द्वार को है; अर्थात राजा द्वार नाम उपाय चाहै हैं ॥ अथवा, वार नाम वैरी के ऊपर प्रहार चाहैं हैं। किंवा वार है वाल ताको चाहै हैं, अर्थात् उत्तम वालक वा वाराङ्गना ॥ रकार लकार की सवर्णता है। तृतीय तुक मै द्वतीय प्रश्न को उत्तर। यथा—भूपाल काकों नहीं चाहैं हैं ? निज ऊपर वार नहीं चाहैं अर्थात शत्रु को प्रहार नहीं चाहैं हैं; अथवा वार मूढ़ को न चाहैं हैं। तृतीय प्रश्न को उत्तर। यथा—वार क्रूर ग्रह भयकर्त्ता अथवा

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वारो महादेवो दुष्टानां च भयंकरः ॥ वारः । सूर्यादि दिवसे द्वारे वारोऽवसर वृंदयोः । कुले वृत्तो हरे वारो वारमद्यस्य भाजने ॥

चतर्थ तुक—रखत काह नरनाह ? चपल कह ? हरत कौन जर ? ॥चतुर्थ चरन को प्रथम प्रश्न—रखत इति, नरपति वल रखत ॥ वल नाम सेना अथवा सामर्थ्य ॥ चपल कौन ? बल है, बल नाम काम को है ॥ अथवा पुरुषतेज अथवा बलदैत्य । कोषश्च—बलो हली । वलं सैन्यं बलं सत्यं बलौषधिः रत्नज्योतिर्वलो दैत्यो बला लक्ष्मी-र्वलामही ॥स्थौल्य सामर्थ्य सत्येषु वलं ना काकसीरिणोः ॥ चतुर्थ तुक के तृतीय प्रश्न को उत्तर यथा—जर नाम ज्वर को लोक मैं है, अरु बल नाम औषधि ज्वर को हरत अथवा ज्वर सरीर बल हरत अर्थात् देह तेज हरत ॥

पंचम चरण पर उत्तर—पर उत्तरवाह कुवार बल अरु तुकादि के वरन वर ॥ पर कहैं श्रेष्ठ, उत्तर 'वाह' 'कुवार' 'बल' इन पदों करिकै भये ॥ रचि आदि अंत लै फिरि दए उत्तर दीन दयाल तर ॥ पुनः छप्पै के द्वै द्वै चरन के वरन लैके उत्तर दये—प्रथम चरन मैं आदि चकार, द्वितीय चरन को आदि वरन रेफ दुहुँ मिलि कै चर भये ॥ यथा ॥ 'चह कह भूधर ?' भूधर जे राजा, ते चर चाहैं हैं; चर नाम धावन को हैं । अथवा भूधर महादेव, चर सेवक कों चाहै हैं । कहा छली छल ? छली को छल चर है; चर नाम चल है, छिन भंगुर है, उघरि जाय है ॥अथवा द्यूतभेद कों चर कहैं हैं सोऊ छल ही है ॥ को कर-मन कर ? को करमन को करै है ?चर नाम सेवक सो करमन कों करै है, अथवा जंगम सकल जीव कर्मों को करै हैं । चरोऽच्च । द्यूतभेदे च भौमेचारे त्रसे चले । इति मेदिनी। चरो द्यूतप्रभेदस्याच्चार जंगमयोश्चले । इति विश्वसार । अथवा 'को' कहै कौन कर्म नहीं कर । चर कहैं चल कर्म नहीं करो ॥ अब तृतीय चरन को आदि वरन 'का' और चतुर्थ चरन को आदि वरन रेफ है दोनो मिलि 'कार' भयो । यथा ॥ रसाधोस

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

का देत ? कहैं कार देत । कार नाम जतन को है, प्रजा पालन जतन करत हैं ॥ अथवा कार नाम निश्चय को है राजा निरनै करत हैं। अथवा कार नाम बध को है राजा दुष्टन को वध करत है ॥ अथवा रसाधीस कों लोक कहा देत ? कार नाम वलि को है सो देत अर्थात् कर देत हैं । द्वितीय चरन को दूसरो प्रश्न—बंध का तें ? वंध कार तें होय है, कार नाम रति को है रति कहिये पदार्थन के विषै आसक्ति। ताते बंध होय है । अथवा कार बंधन ताते बंध होय है । कार शब्द में कोष प्रमान— कारो वधे निश्चये च वलौ यलेरतावपि । कारस्तुषार शैले च कारादूत्यां प्रसेवके ॥ वन्धने बन्धनागारे हेमकारिकयोरपि । कह पर धर ? कौन श्रेष्ठ पर्वत है ? (वर नाम श्रेष्ठ । धर नाम पर्वत) उत्तम शैल हिमाचल ताको कार कहैं हैं सोई पर धर है । अथवा पर नाम श्रेष्ठ जन कहा धारन करत हैं ? कार नाम बलि को है अर्थात् पूजा धारन करत हैं ।पंचम षष्ठ चरन के आदि वरन पकार अरु रेफ क्रम तें लिये तो 'पर' भयो ।

तृतीय चरन में प्रथम प्रश्न—काहि चहै भूपाल ? पर उत्तमता चहै है । चह न कह ? पर जो हैं वैरी ताको नहीं चाहैं हैं । को है भय कर ? पर अनात्मा सो भय कौं करै है। द्वितीयाद्वयं भवतीति वचनात्।

अब प्रथम चरन छप्पै को आदि चकार, अन्तिम छठएँ चरन को रकार; छप्पै के आदि अन्त को वरन मिलाए चर शब्द भयो ताते अर्थ करैं हैं । चतुर्थ चरन को उत्तर चर शब्द तें । रखत काह नर नाह ? चर । चर जो त्रसित नरनाह तिनको रक्षत हैं । दूसरो प्रश्न— चपल कह ? चर चल पदार्थ ते चपल हैं। अथवा चर दूत सोऊ चपल हैं। छप्पै के चतुर्थ चरन को तीसरो प्रश्न—हरत कौन जर ? जर नाम द्रव्य ताकौं चर हरै है । चर नाम द्यूत को है सो जर को नास करै है। अथवा, हरत कौन जर ? जर जो है ज्वर सो कौन को हरन करै है, प्राप्त करै है ? त्रसित दीनता दुर्वलता कौं। चर कहैं त्रसित त्रास युक्त।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथवा, ज्वर कहैं ज्वर सो चर जङ्गम मात्र को हरत सर्व प्रकार तें। यह छप्पै के विषे जे प्रश्न कहे हैं तिन प्रश्नों के उत्तर एक बेर पंचम चरन के मध्य 'वाह' 'कुवार', 'वल', इन शब्दन तें दिए। फेरि छप्पै के छवो चरन के आदि वरनों कों दो दो मिलाय करिकै उत्तर दिए। 'चर कार पर' चतुर्थ चरन के प्रश्नों के उत्तर छप्पै के आदि अन्त के वरन जे चकार अरु रेफ दोनों मिलि चर भयो ता करि उत्तर दियो। दो वार छप्पै के अन्तर्गत जे जे प्रश्न रहे तिन प्रश्नों के उत्तर दो वेर कै प्रकार तें दिए। यह छप्पै अन्तर्लापिका मध्याचरी के भेद में है ॥ ४ ॥

पुनः अन्तर्लापिका छप्पै ॥

काहि धरे सिर सेस ? कहा खगजन सुखदायक ?।
तुरग त्याग के जोग कौन ? मृगगन भनभायक ? ॥
का लै दहति दवागि ? कुसुत केहि दोष लगावत ?।
को पालक सब जगत ? काह कर माँह सुहावत ? ॥
कहु को जल प्रेरक केहि लगे दीनदयाल हरि वस कियो।
करि वरन वृद्धि पुनि इक कतनि कुज वन लै उत्तर दियो* ॥५॥

अनेकानेकोत्तरम् ॥

वासर को कहैं कहा ? कौन वाची औंसर को ? कहा करैं वली ? कौन अली को सिँगार है ?। वृन्दपर जाय कहा ? कौन निंद्य भाजन है ? पार के समान कौन प्रानिन कों प्यार है ? ॥ कौन तरु नाम कौन चाम पैं रचे हैं स्याम ? केते रवि रूप ? भूप कापैं हितकार है ?। कौन दीनदयाल देव ? कौन की न कीजै सेव प्रश्न ये अनेक जवाव दीनो एक वार है ॥ ६ ॥

---

* (१) कुज = पृथ्वी । (२) कुज = वृक्ष, पेड़ । (३) कु = दुष्ट, बुरा । (४) वन । (५) वन । (६) ज = जनक, पिता । (७) ज = विष्णु । (८) वलै = वलय । (९) वन = निर्झर, सोता । (१०) लै = लौ, प्रेम ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यामैं आठ उत्तर कोष तें लिए हैं ॥

वारः सूर्यादिदिवसे द्वारेऽवसर वृन्दयोः ।
कुले वृत्ते हरे वारो वारं मद्यस्य भाजने ॥

अर्धगतागत सवैया ।

ते न रजे लै भलो दम सैं न नसैं मद लोभ लै जे रन ते ।
ते निज कौं लखि आतम लाभ भलामत आखिल को जनिते ॥
ते मन कौं वसि कै नित ही जे तेहीं तनिकै सिव कौं नमते ।
ते रलि के तहि दीनदयाल लयाद नदी हित केलिरते ॥ ७ ॥

सर्वगतागत सवैया ।

ह्वै नर जीवन सोई भलो सज लोकन मैं सुर मानत हैं ।
ह्वै नत नेह सुमाधव सौं नहि तो तन मास बखानत हैं ॥
ह्वै नकली ठस सोह नही भल मानस तो तन जानत हैं ।
ह्वै नव पारव दीनदयाल लयाद नदी मन तानत हैं ॥ ८ ॥
है तन मार सुमैन कलो जस लोभ इ सो नव जीरन ह्वै ।
है तन खावस मानत तोहि न सोव धमा सुहने तन ह्वै ॥
है तन जानत तो सन लाभ हीन हसो सठ लोक न ह्वै ।
है तन तानम दीनदयाल लयाद नदी वर पावन ह्वै ॥ ९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सर्वगतागत अंतादि मुखचित्रम्

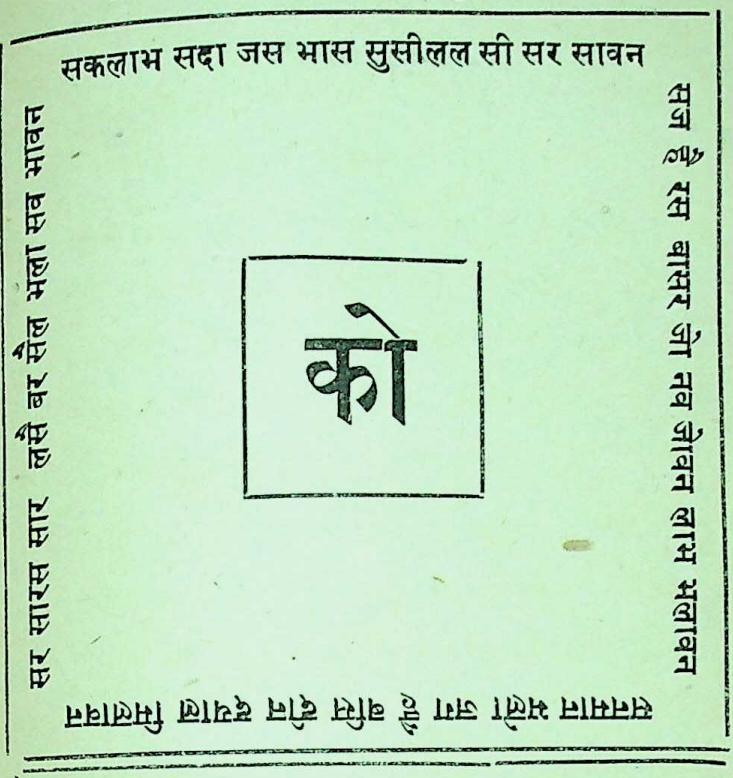

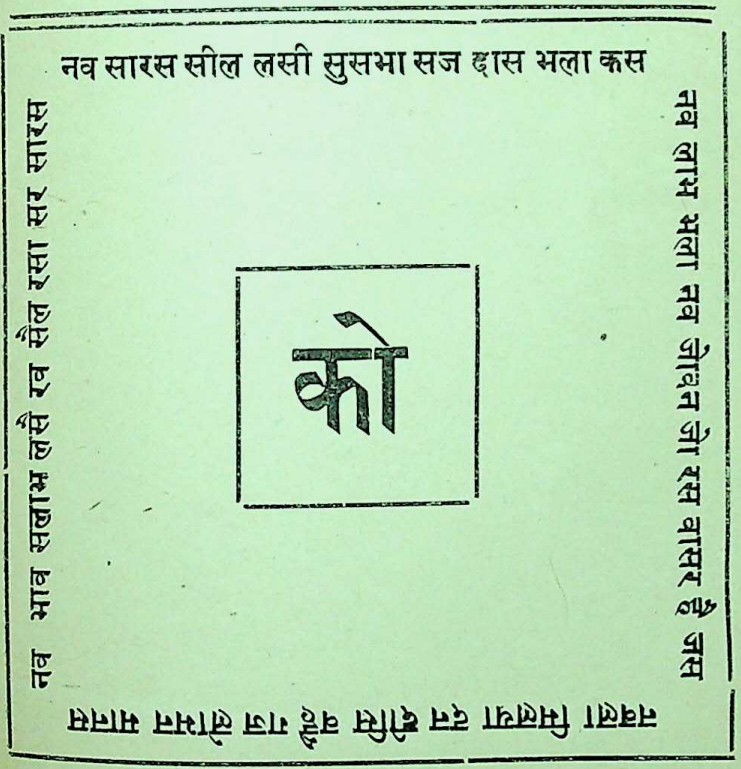

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ षोडशदलकमलबंधमध्ये यमकचित्रम् कवित्व सिंहावलोकनम्

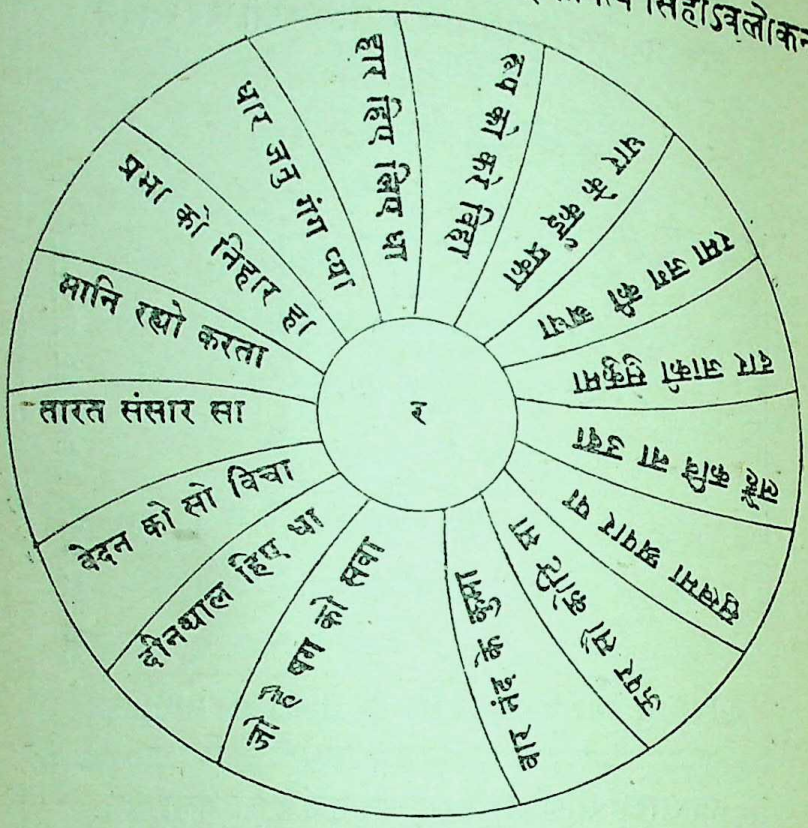

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ अंतादिमुखचित्रम् डमरूबंधोपि च

नम कों पाय के मन कहा लाग्यो

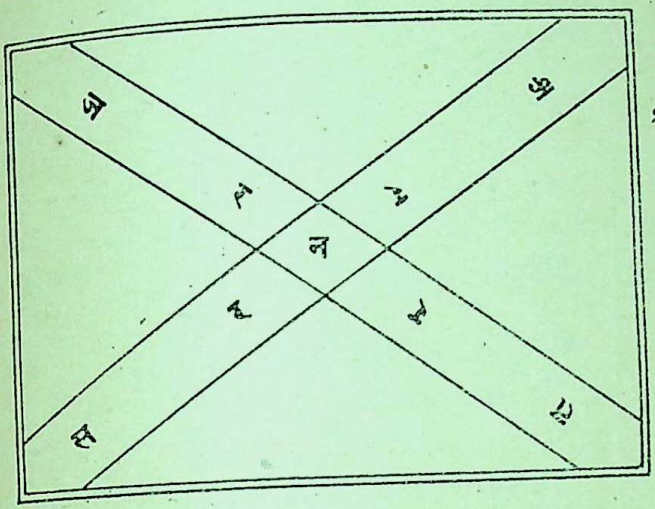

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

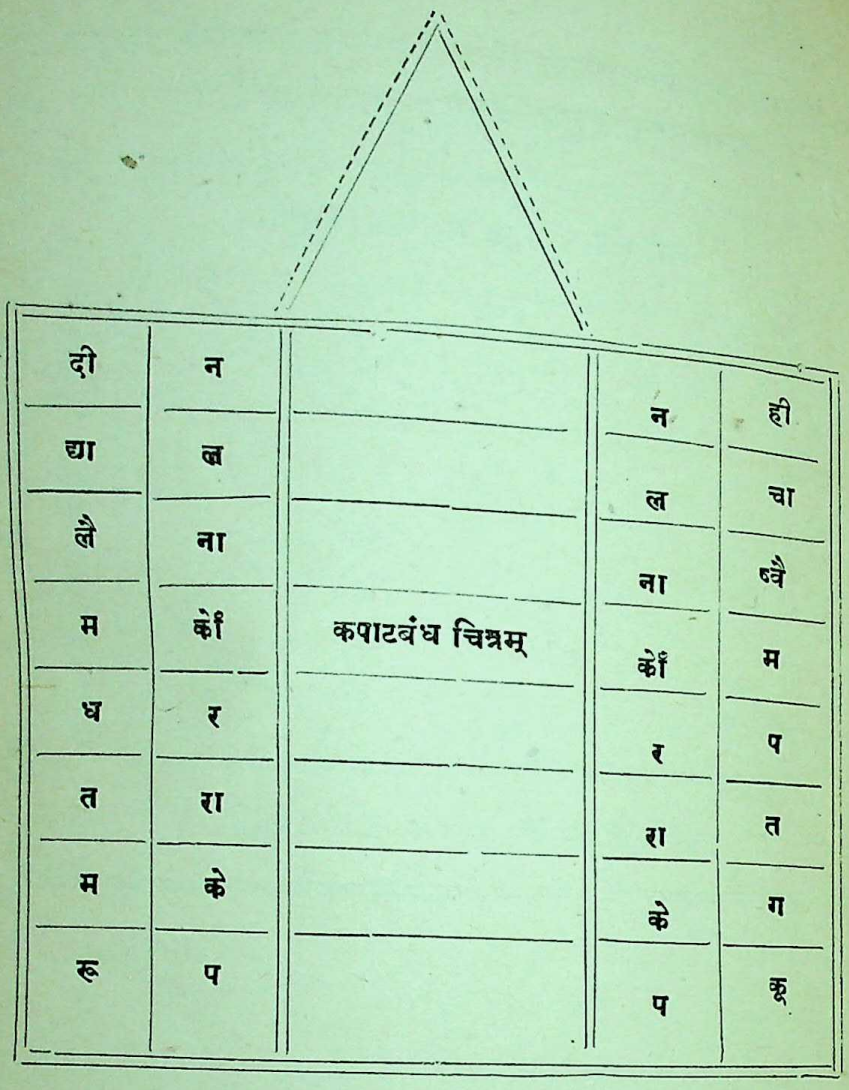

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

त्रिपदी चित्रम्

दी	द्या	लै	म	ध	त	म	रू
न	ल	ना	कौं	र	रा	के	प
ही	च्चा	ष्वै	म	प	त	ग	कू

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

द्वादशदलकमलबंध मध्ये यमक निरोष्ठचित्रम्।

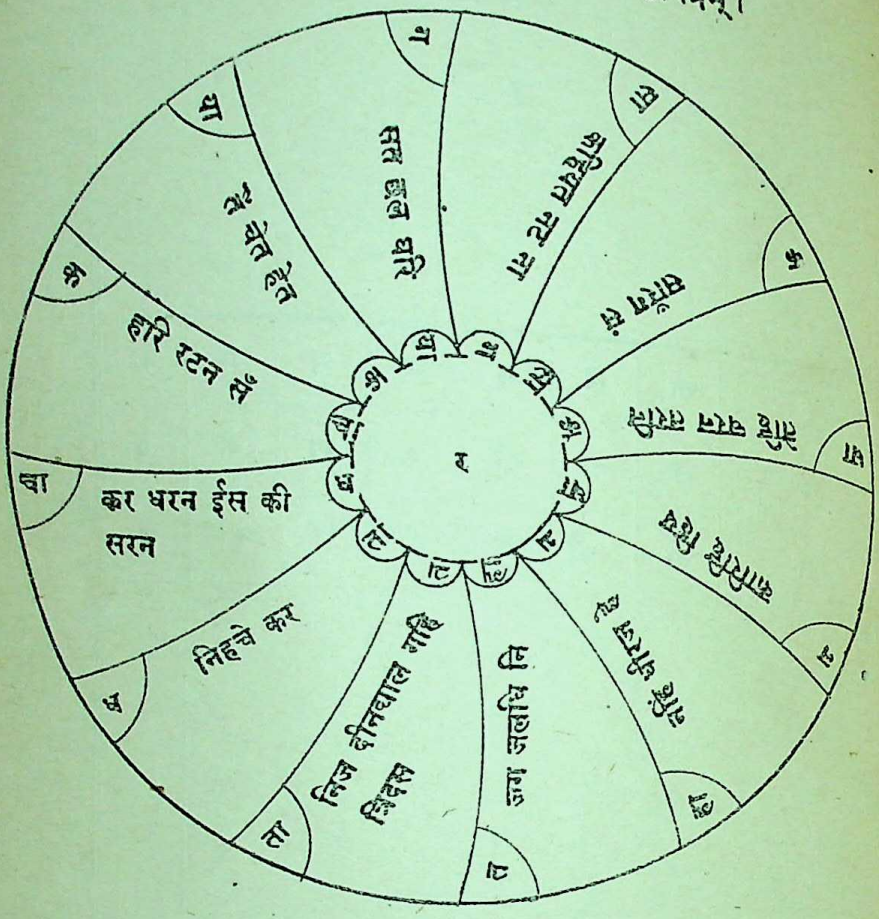

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अथ चक्रबंधचित्रम्

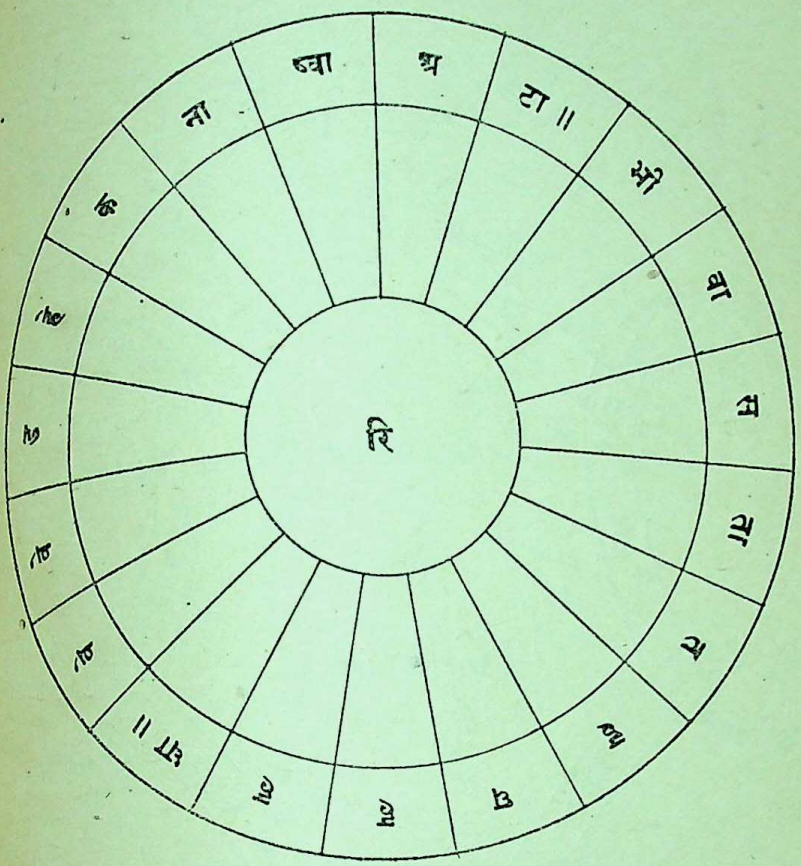

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

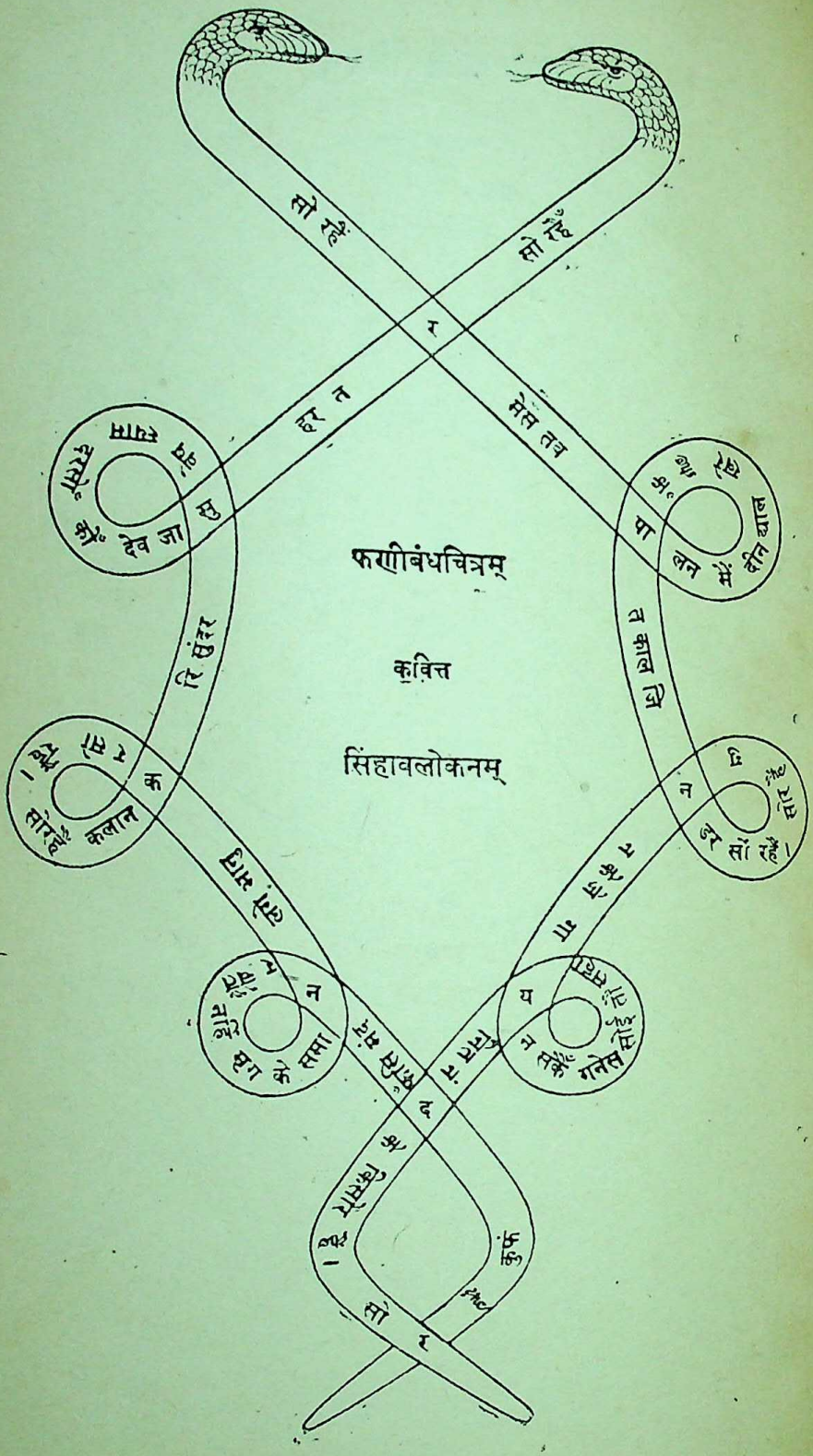

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुनः द्वादश दल कमलबंध चित्रम् । छप्पै ।

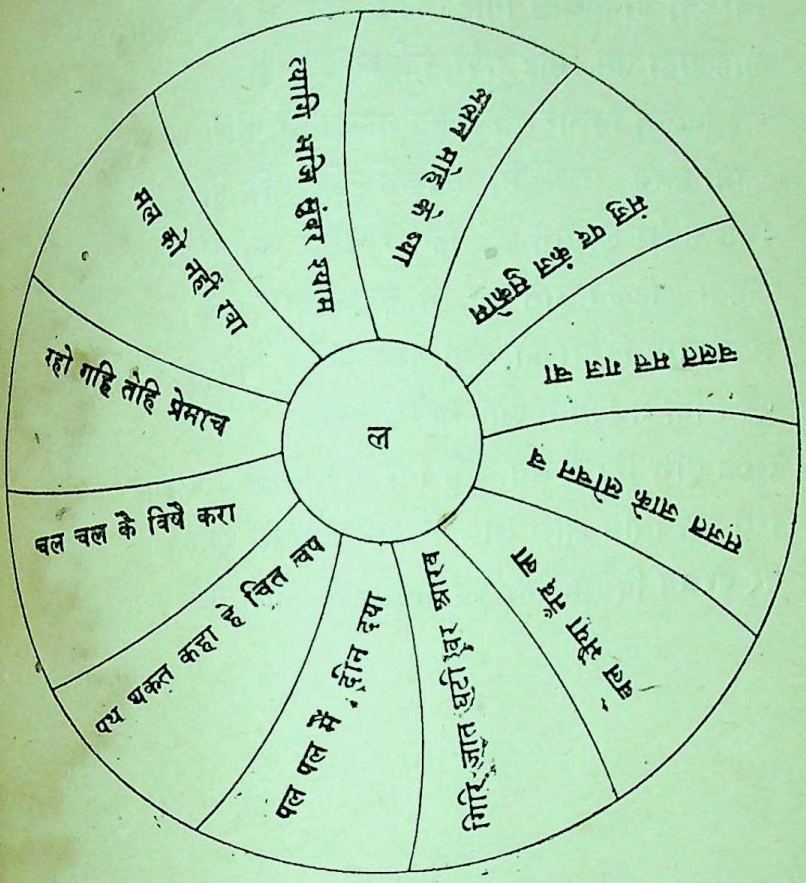

सजो न मंद काम को ।
भजो अनंद राम को ।
तजो कुफंद वाम को ।
सजो सुछंद धाम को ॥२०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह वैराग्य दिनेश को, सुखद सुवेद प्रकास ।
विरच्यो दीनदयाल गिरि, ज्ञान सु वनज विकास ॥ ४ ॥
मोह महा तम मिटि गयो, गई अविद्या राति ।
भई विलोन विकार की लखत नखत की पांति ॥ २१ ॥
कामी कैरव सकुचिहैं, लखिहैं नहि यहि ओर ।
चित चकोर लोभीन के, कहिहैं याहि कठोर ॥ २२ ॥
कुमती कुटिल मलीन मन, जे उलूक खल वृन्द ।
भते वैराग्य दिनेस की, क्यों नहि करिहैं निंद ॥ २३ ॥
पैहैं ज्ञानी मधुपमुद, और विवेकी कोक ।
सूरज वृत्ति विरक्त मन, ह्वैहैं निरषि विसोक ॥ २४ ॥
रितु नभ निधि ससि साल मैं, माधव कृष्ण रसाल ।
वर वैराग्य दिनेस यह, उदै भयो तेहि काल ॥ २५ ॥

—:०:—

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजन पुस्तकमाला ।

इस पुस्तकावली में एक ही आकार तथा रूप रंग की हिन्दी की सौ उत्तमोत्तम पुस्तकें रहेंगी । अब तक निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

(१) आदर्श जीवन ।
(२) आत्मोद्धार ।
(३) गुरु गोविंदसिंह ।
(४) आदर्श हिन्दू, १ भाग ।
(५) आदर्श हिन्दू, २ भाग ।
(६) आदर्श हिन्दू, ३ भाग ।
(७) राणा जंगबहादुर ।
(८) भीष्म पितामह ।
(९) जीवन के आनन्द ।
(१०) भौतिक विज्ञान ।
(११) लालचीन ।
(१२) कबीरवचनावली ।
(१३) महादेव गोविंद रानडे ।
(१४) बुद्धदेव ।
(१५) मितव्यय ।
(१६) सिक्खों का उत्थान और पतन ।
(१७) वीरमणि ।
(१८) निपोलियन बोनापार्ट ।
(१९) शासनपद्धति ।
(२०) हिन्दुस्तान भाग १ ।
(२१) हिन्दुस्तान भाग २ ।
(२२) महर्षि सुकरात ।
(२३) ज्योतिर्विनोद ।
(२४) आत्मशिक्षण ।
(२५) सुन्दरसार ।
(२६) जर्मनी का विकास, १ भाग ।
(२७) जर्मनी का विकास, २ भाग ।
(२८) कृषि कौमुदी ।

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १), डाकव्यय अतिरिक्त; समस्त पुस्तकमाला के स्थायी ग्राहकों से ॥।) लिया जायगा, डाकव्यय अलग होगा ।

हिन्दी-शब्दसागर ।

हिन्दी भाषा का बृहद्कोश । १९ अंक छप चुके हैं । प्रत्येक अंक में डिमाई चौपेजी आकार के ९६ पृष्ठ हैं । मूल्य प्रति अंक १), डाकव्यय अलग ।

पृथ्वीराजरासो ।

यह हिन्दी-साहित्य का आदि ग्रंथ है । इसमें अंतिम क्षत्रिय सम्राट् पृथ्वीराज चौहान का विस्तृत वृत्तांत कविचंद लिखित है । साथही समस्त ग्रंथ का सारांश गद्य में दिया गया है । यह सुपर रायल आकार के ३१०० पृष्ठों में समाप्त हुआ है । मूल्य समस्त ग्रंथ का २०) रु०, डाकव्यय १॥) के लगभग ।

ये तीनों पुस्तकें

मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा,

बनारस सिटी, से मिल सकती हैं ।

——:०:——

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

[पुस्तक संख्या २५

ग्रंथ संख्या ६२—६३]

नागरीप्रचारिणी ग्रन्थमाला ।

सम्पादक, श्यामसुन्दरदास, बी० ए० ।

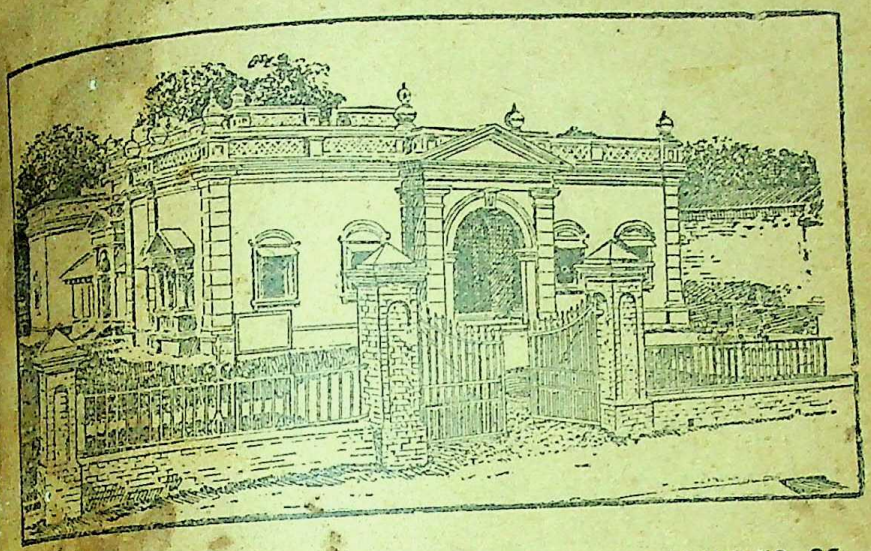

[BOOK NO. 25.

FASCICULUS NO. 62-63.]

NAGARI-PRACHARINI GRANTHAMALA

EDITOR

SYAM SUNDAR DAS, B.A.

PUBLISHED BY

THE NAGARI PRACHARINI SABHA,

BENARES.

[*Price per fasciculus* As. 8.

मूल्य प्रति संख्या ॥)

ISSUED ON THE 16TH FEBRUARY, 1920.

Printed by Apurva Krishna Bose, at the Indian Press, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

विषयानुक्रमणिका ।

(२५) दीनदयालगिरि ग्रंथावली—बाबू श्यामसुन्दरदास सम्पादित
(पृष्ठ १९३ से २६० तक तथा भूमिका आदि)

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नागरीप्रचारिणी ग्रंथमाला—२५

दीनदयालगिरि-ग्रंथावली

श्यामसुन्दरदास बी० ए० संपादित

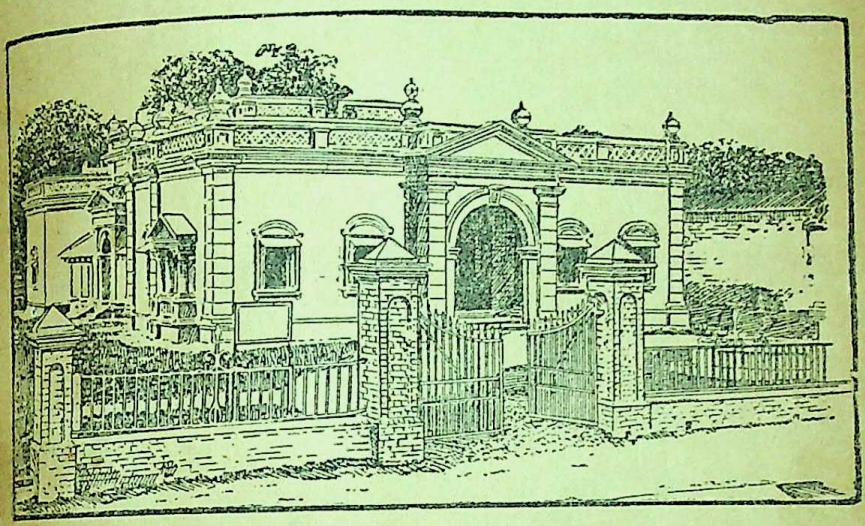

और

काशी नागरीप्रचारिणी सभा

द्वारा प्रकाशित ।

संवत् १९७६

Printed by Apurva Krishna Bose, at the Indian Press, Allahabad.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भूमिका ।

दीनदयाल गिरिजी के केवल तीन ग्रंथ अब तक प्रकाशित हुए थे—अनुरागबाग, दृष्टांततरंगिणी और अन्योक्तिकल्पद्रुम । इनमें से पहला अब दुष्प्राप्य है । इनके ग्रंथों को देखने से ही यह पता लग जाता है कि ये हिंदी के उच्च श्रेणी के कवि थे । इनकी रचना-शैली मनोहर और रसपूर्ण है । सबसे बढ़कर बात तो इनकी कविता में यह है कि इनकी भाषा बहुत चलती हुई और स्वच्छ है, उसमें व्यर्थ शब्दों की भरमार नहीं है । जितने शब्द भावनिर्वाह के लिये आवश्यक हैं उतने ही का प्रयोग हुआ है ।

इनके जीवन के संबंध में लोगों को इसके अतिरिक्त और कुछ ज्ञात नहीं है कि ये काशी-निवासी थे । शिवसिंह सरोजकार ने इनके विषय में केवल इतना लिखा है कि "ये कवि बड़े महान् पंडित संस्कृत के थे और भाषा साहित्य में अन्योक्तिकल्पद्रुम नाम ग्रंथ बहुत ही सुंदर बनाया है और अनुरागबाग और बागबहार ये दो ग्रंथ भी इनके बहुत विचित्र हैं" । अन्योक्तिकल्पद्रुम की भूमिका में पं० विजयानंद त्रिपाठी ने लिखा है कि "ये काशीपुरी के पश्चिम द्वार देहली-विनायक पर रहते थे* । २५ वर्ष के लगभग इनको

*इतना परिचय कवि ने स्वयं अनुरागबाग में दिया है ।

सुखद दहेली पै जहाँ बसत विनायक देव ।
पश्चिम द्वार उदार है कासी को सुर सेव ॥

अन्योक्तिकल्पद्रुम में केवल इतना ही लिखा है—सोभित तेहि औसर विषै बसि कासी सुखधाम ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

काशीवास पाए हुआ।" यह भूमिका सं० १९४७ की लिखी हुई है अतः इसके अनुसार इनकी मृत्यु सं० १९२२ के लगभग हुई। इसके अतिरिक्त इनके विषय में और कुछ ज्ञात नहीं था।

त्रिपाठी जी ने काशी में इनका ठिकाना जो बतलाया उससे इनके संबंध में खोज करने में बड़ी सहायता मिली। यदि वे इतना न लिख देते तो किसी बात का पता चलना कठिन ही था। इस सूत्र को पाकर मैंने इनके संबंध में कुछ खोज की जिससे और कई बातें विदित हुईं। बहुत कुछ पता पं० भोलानाथ मिश्र से लगा जो देहली-विनायक के पास हरिहरा गाँव में रहते हैं और ७५ वर्ष के हैं। इन्होंने बाबा दीनदयाल गिरि को देखा था।

यह तो प्रसिद्ध ही है कि ये गृहस्थ नहीं थे, दसनामी संन्यासियों में थे। इनके जन्मकाल का कुछ पता नहीं चलता। जाति का भी ठीक निश्चय नहीं, इतना अवश्य निश्चित है कि बनारस के आस पास के किसी ब्राह्मण या क्षत्रिय कुल में इनका जन्म हुआ था। वहीं से इनके गुरु ने इन्हें प्राप्त किया। इनके गुरु कुशागिरि सेंगरे (मालदा के पास) से देहली-विनायक आए और वहाँ जमींदारी लेकर बस गए। कुशागिरि के तीन शिष्य थे—दीनदयालगिरि, स्वयंवरगिरि (एकाक्ष) और रामदयालगिरि। कुशागिरि बहुत ऋण छोड़ कर मरे थे। इससे उनकी मृत्यु के उपरांत देहली-विनायक के पास की सारी जमीन नीलाम हो गई। यह जमीन अब काशीवासी गोकुलदास विट्ठलदास (गुजराती) के घराने में है। बरना के तट पर जो प्रसिद्ध रामेश्वर मंदिर है उसमें भी देहली-विनायक के महंत का कुछ अंश था। कुशागिरि के मरने के पीछे तीनों चेलों में अनबन हुई और वे बहुत दिनों तक लड़ते रहे। लड़ानेवाले आस-पास के जमींदार थे जो बची खुची जमीन हड़प करना चाहते थे। दीनदयाल गिरिजी को इस बात का बड़ा दुःख रहता था। जमींदारी आदि बिक जाने

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पर इन्हें बहुत खिन्न देख अमेठी के तत्कालीन राजा साहब ने इन्हें अपने यहाँ चलकर रहने के लिये कहा। पर ये स्वतंत्र वृत्ति के मनुष्य थे, इन्होंने इसे स्वीकार न किया। इनका यह पद्य उसी समय का कहा हुआ है—

पराधीनता दुख महा सुख जन में स्वाधीन।
सुखी रमत सुक बन विषै कनक पींजरे दीन॥

देहली-विनायक के पास मटौली गाँव में इनका मठ था जहाँ ये बराबर रहे। यह मठ अब गिरकर खंडहर हो गया है। इस मठ की एक दीवार पर इनका एक चित्र गेरू से बना हुआ था पर अब उस दीवार ही का पता नहीं है, तब चित्र कहाँ! केवल एक कुँआ अब रह गया है।

यद्यपि ये मठधारी शैव संन्यासी थे, पर साम्प्रदायिक दुराग्रह इनमें नहीं था। ये बहुत सहृदय और उदार थे, इससे कृष्ण की भक्ति का संस्कार भी इनमें पूरा पूरा था जैसा कि इनकी रचनाओं से प्रकट होता है। भारतेंदुजी के पिता बाबू गोपालचंदजी के साथ इनका बहुत कुछ सौहार्द्र था, इससे हिंदी काव्य की ओर इनकी रुचि हुई। इन्होंने काशी में आकर संस्कृत साहित्य का अध्ययन किया, पर किससे और कहाँ यह ज्ञात नहीं। कविता इनकी दिन दिन प्रौढ़ होती गई।

स्वभाव इनका अत्यंत सरल और विनोदप्रिय था। ये बात बात में लोकोक्तियों तथा श्लेष का प्रयोग करके लोगों को हँसाते थे। दया भी इनमें बड़ी थी। दूसरे का दुःख ये नहीं देख सकते थे। एक बार अकाल में इनके यहाँ एक बहुत दीन और दुखी मनुष्य आया। इनके पास धन आदि तो रहा नहीं, पर उसे इन्होंने अच्छी तरह भोजन कराया और घर में जो कुछ मिला सब उसे दे दिया। आत्माभिमान इनमें इतना था कि कितने ही दुःख में रहने पर भी ये किसी

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

से कुछ याचना नहीं करते थे। काशीनरेश तथा और राजा महाराजा जो इनकी विद्या और गुणों से परिचित थे प्रच्छन्न रूप से इनकी सहायता समय समय पर करते थे। ये जैसे गुणी थे वैसे ही गुणग्राही भी थे। कवियों का आना जाना इनके यहाँ बराबर लगा रहता था और ये उनका यथोचित आदर-सम्मान करते थे। इनकी आर्थिक दशा अच्छी न रहने का एक कारण यह भी था। पर और मठधारी महंतों के समान कुमार्ग में इन्होंने एक पैसा नहीं लगाया। इनका चरित्र बहुत निर्मल था। ये प्रायः घोड़े पर चढ़कर निकलते थे और गेरुए रंग की कत्तनी दार पगड़ी बांधते थे। घोड़े की पहचान इन्हें अच्छी थी।

काशी से इन्हें बहुत प्रेम था। ये काशी छोड़ना नहीं चाहते थे। राजा अमेठी आदि के बुलाने पर इनके न जाने का एक कारण यह भी था। वैराग्यदिनेश में काशी के प्रति इनकी प्रीति और भक्ति टपकी पड़ती है। अस्तु, कहा जाता है कि मृत्युपर्य्यंत ये काशी में ही रहे। यहीं मणिकर्णिका घाट के निकट छप्पन-विनायक पर इनका परलोकवास हुआ। कुछ लोग कहते हैं कि पिछले दिनों में ये सेंगरे चले गए और वहीं परम धाम को प्राप्त हुए पर यह बात ठीक नहीं जान पड़ती। इसमें तो कोई संदेह नहीं कि ये बहुत वृद्ध होकर मरे। वृद्धावस्था का इन्होंने चित्र भी अच्छा खींचा है। अस्तु, पंडित विजयानंद त्रिपाठी ने इनका मृत्युकाल जो सं० १९२२ के लगभग बतलाया है वह निश्चित समझना चाहिए।

इस संग्रह में इनके पांच ग्रंथ दिए हैं। पहला ग्रंथ "अनुरागबाग" है, जो संवत् १८८८ में बना। दूसरा ग्रंथ दृष्टांततरंगिणी है जो संवत् १८७९ में बनी। तीसरा ग्रंथ अन्योक्तिमाला है। इसके निर्माण-काल का पता नहीं चलता। चौथा ग्रंथ वैराग्यदिनेश है जो संवत् १९०६ में बना। अंतिम ग्रंथ अन्योक्ति-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कल्पद्रुम है। इसका निर्माण काल संवत् १९१२ है। पहले चारों ग्रंथ एक हस्तलिखित पुस्तक से लिए गए हैं जिसका लिपि-काल संवत् १९०६ है। जिन महाशय के पास से यह हस्तलिखित प्रति प्राप्त हुई है उनका कहना है कि यह दीनदयालगिरि के हाथ की ही लिखी हुई है। अन्योक्तिकल्पद्रुम को अन्योक्तिमाला का परिवर्द्धित और संशोधित संस्करण मानना चाहिए। अन्योक्तिकल्पद्रुम एक हस्तलिखित प्रति तथा भारतजीवन प्रेस की छपी प्रति के आधार पर संपादित हुआ है। इस हस्तलिखित प्रति में कोई संवत् नहीं दिया है। इस विवरण से यह प्रगट होता है कि दीनदयालगिरि का कविता-काल संवत् १८७९ में प्रारंभ और संवत् १९१२ में समाप्त होता है। दृष्टांततरंगिणी की रचना को देखकर यह मानना पड़ता है कि यह कवि की आरंभिक कविता नहीं है। इससे यह अनुमान किया जा सकता है कि कवि ने कविता लिखने का अभ्यास कम से कम १०, १५ वर्ष पहले प्रारंभ किया था। शिवसिंहसरोज में इनके एक और ग्रंथ "बागबहार" का नाम दिया है। पर ऐसे किसी ग्रंथ का अबतक पता नहीं चला है। मेरी समझ में "अनुरागबाग" और "बागबहार" एक ही ग्रंथ के दो नाम हैं, ये दो स्वतंत्र ग्रंथ नहीं हैं।

निम्नलिखित छंद भारतेंदु बा० हरिश्चंद्र के दौहित्र बाबू ब्रजरत्नदास से प्राप्त हुए हैं। उनका कहना है कि ये अनुराग बाग के अंश हैं।

सखी व्यंगोक्ति लच्छिता ते

चैत की चाँदनी चारु चमेली को जीति लई मुसुकानि तिहारी। डारति चंदहि मंद किए मुख की सुखमा प्रगटी अति भारी॥ दाडिम बीजन कों रद पै दुति पै दुति दामिन की गहवारी। खंजन कंजन के मदगंजन नैन लसे यह चैन कहा री॥ १०३. अ.

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दूती वचन रूपगर्विता ते

गौन विलोकतही गजरात लजैं मृगराज लखे करि हाँके। कंजन खंजन सेत बनै न पिया मनरंजन हैं मद छाके॥ तो मुखचंद निरीछन कों ललचैं चख चारु चकोर लला के। दूती के बैन प्रवीन तिन्हैं सुनि बाल के लाल भए दृग बांके॥ १०३. आ.

अथ सवैया

तीखन तेज पिता जम के तिनके कुल मैं सियनाथ सुहावत। बाछलहूं की सिया पै किया अति हेत हिया मैं हुतें दुख पावत॥ स्याम सुधा करके कुल ते कढ़ि काहे वियोग विषागि बढावत। ऊधव जू छलहीन हमैं लखि दीन कहा दुख पीन सहावत॥ २९६. अ.

नीरधि नाँघि गए हनुमान अँदेस नसाय सँदेस लै आए। सो सुनि कै विलखाय सियाबर वारिधि बांधि कै व्याकुल धाए॥ ऊधव जू हति कै अरि को अति प्रान प्रिया के वियोग वहाए। हा अपसोस परोस द्वै कोस पै लेत नहीं सुधि स्याम कहाए॥ २९६. आ.

खंडिता कथन कृष्ण प्रति

आए हो सकारे स्याम श्रमित हमारे धाम प्यारे अभिराम भौन भीतर पधारिए। कीजिए सैन सेज सारस नयन यह मंद मंद गौन पै गयंद कोरि वारिए॥ निगुन कहाओ किन विगुन धरे हो हार वेद पर पुरुष बखानत विचारिए। व्रज के बिहारी तुम रसिक अपूरब हो जाऊं बलिहारी लाल मुकुर निहारिए॥ १०२. आ

पीत वास लसे स्याम भ्रमत निकुंजन मैं कहूं प्रात कहूं निसि निवसो न एक डार। लाल गति रावरी अनेक पद रावरे हैं कहूं कोक-नद फँसे जाय बसे करि प्यार॥ सोन जुही छबि पैं छबीले छकि रहो क्यों न लालची हो रस कों बिलोकि होत बेकरार। चंपक-

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनि मोंहि काहे कों निहारो तुम सेवती है तासों किन माधव करो विहार ॥ १०२. आ

श्लेष

पग छाप सुभाल मैं लाल कहा हिय कों अहो माल दई गुन हीनी। पल पीक की लीक रची असुची बलि मैं नखरेख खची दुख-भीनी ॥ यह स्याम लता अधरान धरी सो करी घनस्याम सुनीति प्रवीनी। मुख ही तो अलीक रचे हैं लला तुम काहे सजाय समीपिन कीनी ॥ १०२ इ

भोर मिले घनस्याम कों वाम मिली मुसुकाय ॥
अँगुठा भूखन दृगन के सन्मुख रही दिखाय ॥ १०२. ई
रससिँगार के ईस हो अरु रसनिधि ब्रजराज ॥
उमगो आवत सो सुखद अधर कूल तें आज ॥ १०२. उ

सुंदर गोल कपोलन पैं अनमोल सुकुंडल डोलनि प्यारी। ही हलकैं दुति मोहन की झलकैं सुथरी अलकैं घुघरारी ॥ वा मुसकानि विलोकतही कुलकानि सबै तजि होत बिदारी। लागि जौ जाहिं तो कीजै कहा सखि ए अँखियाँ रिझवारि हमारी ॥ ९५. अ

है अति भीति चंवाइन की हँसिहैं अरि पापिन दै करतारी। लाज गही ब्रजराज बिलोकत आज लौं मैं कुलकानि सँभारी ॥ आवत जात सदा यहि गैल सुछैल छबील निकुंजबिहारी। लागि जो जाहिं तो कीजै कहा सखि ए अँखियाँ रिझवारि हमारी ॥ ९५. आ ॥

देति सदा सिख तू सजनी अरु मैंहू बिचारति हों हितकारी। मान किए गुनमान कहैं सनमान बढै फिरि ह्वै हित भारी ॥ मोहनी मूरति मोहन को अवलोकत लोक रिझावन हारी। लागि जो जाहिं तो कीजै कहा सखि ए अँखियाँ रिझवारि हमारी ॥ ९५. इ ॥

लीन रहैं नित रूप पयोनिधि मीन कहैं कवि बुद्धि विचारी।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दीन अधीन रहैं बिनु देखत देखत तो खल हैं न सदा री ॥ बानि परी प्रिय पेखन की कुलकानि बिसारि दई इन सारी। लागि जों जाहिं तो कीजै कहा सखि ए अँखियाँ रिझवारि हमारी ॥ ९५. ई ॥

मैं इन छंदों के विषय में कुछ मत प्रगट नहीं कर सकता। संभव है कि ये दीनदयाल जी के ही लिखे हों। इसमें संदेह नहीं कि ये छंद अत्यंत सुंदर भाषा में किसी प्रौढ़कवि की लेखनी से लिखे गए हैं।

मैं पंडित केदारनाथ पाठक का अत्यंत अनुगृहीत हूँ कि उन्होंने बाबा दीनदयालगिरि के जीवन संबंधी बातों के जानने में मेरी बहुत सहायता की। साथ ही पंडित बटुकनाथजी और पंडित शिवशंकरजी त्रिपाठी को गिरिजी के ग्रंथों की अपनी अपनी हस्तलिखित प्रतियाँ देकर इस कार्य में सहायता करने के लिये मैं धन्यवाद देता हूँ।

लखनऊ
३०-११-१९

श्यामसुन्दरदास।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्रंथ सूची।

	पृष्ठांक
१—अनुराग बाग	१—७२
२—दृष्टांततरंगिणी	७३—९०
३—अन्योक्तिमाला	९१—१२०
४—वैराग्यदिनेश	१२१—१९२
५—अन्योक्तिकल्पद्रुम	१९३—२६०

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अन्योक्तिकल्पद्रुम ।

दोहा ।

यह कल्पद्रुम बुधसुखद अरथ अनूप उदार ।
विरच्यो दीनदयालगिरि अभिमत-फलदातार ॥१॥

मंगलाचरण कुंडलिया ।

बंदों मंगलमय विमल ब्रजसेवक सुखदैन ।
जो करि-वर-मुख मूक ही गिरा नचाव सुखैन ॥
गिरा नचाव सुखैन सिद्धदायक सबलायक ।
पसुपतिप्रिय हियबोधकरन निरजर गननायक ॥
बरनै दीनदयाल दरसि पदद्वंद अनंदों ।
लम्बोदर मुदकंद देव दामोदर बंदों ॥२॥

कल्पद्रुम ।

दानी है सब जगत में एकै तुम मंदार ।
दारन दुख दुखियान के अभिमत-फलदातार ॥
अभिमत-फलदातार देवगन सेवैं हित सों ।
सकल संपदा सोइ छोह किन राखत चित सों ॥
बरनै दीनदयाल छाँह तव सुखद बखानी ।
ताहि सेइ जो दीन रहै दुख तौ कस दानी ॥३॥

षट्ऋतु-वर्णन तत्र बसंत ।

हितकारी ऋतुराज तुम साजत जग आराम ।
सुमन सहित आसा भरो दलहि करो अभिराम ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

दलहि करो अभिराम कामप्रद द्विज गुन गावैं ।
लहि सुबास सुखधाम बातबर ताप नसावैं ॥
बरनै दीनदयाल हिये माधव धुनि प्यारी ।
श्रवन सुखद सुखबैन विमल विलसैं हितकारी ॥४॥

लूटे साखिन अपत करि सिसिर सुसजे बसंत ।
दै दल सुमन सुफल किये सेा भल सुजस लसंत ॥
सेा भल सुजस लसंत सकल द्विजगन गुन गावैं ।
अमल कमल जल जीव हंस हरि बर सुख पावैं ॥
बरनै दीनदयाल दुसह दुख तें द्रुम छूटे ।
भे तुरंत विकसंत अंत अतिसै जे लूटे ॥५॥

तौलों हे ऋतुराज नहिं कोकिल काग विचार ।
श्याम श्याम रँग एक से सोहत एकै डार ॥
सोहत एकै डार काक कछु वाक न बोलै ।
ऐड़ो रहै निसंक तासु हाँसी करि डोलै ॥
बरनै दीनदयाल नहीं गुन आवत जौ लों ।
काक कोकिला ज्ञान जात नहिं जाने तौ लों ॥६॥

ग्रीष्म ।

ग्रीषम तुम ऋतुराज के पालै दीन सुसाखि ।
तिन को दाहत हौ कहा दावानल में माखि ॥
दावानल में माखि जारि फिर राख उड़ाई ।
उन दीनन की दशा देखि नहिं दाया आई ॥
बरनै दीनदयाल द्विजन तापत क्यों भीखम ।
मित्रहु तुमरे संग चढ़ै बृष दारुन ग्रीषम ॥७॥

सुखिया जे जे तब रहे लहि ऋतुराज उमंग ।
ते सब अब दुखिया भए हे ग्रीषम तुव संग ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हे ग्रीषम तुव संग साखि सर सूखि गए हैं ।
विकल कमल द्विजराज सकल छविछीन भए हैं ॥
बरनै दीनदयाल रह्यो जगप्रान जु मुखिया ।
सोऊ तपि दुखदानि भयो जो हो अति सुखिया ॥८॥

पावस ।

पावस ऋतु सुखदानि जग तुम सम कोऊ नाहिं ।
चपलाजुत घनस्याम नित विहरत हैं तव माहिं ॥
विहरत हैं तव माहिं निलकंठहु सुखदाई ।
अंबर देत सुहाय द्विजन की करत सहाई ॥
बरनै दीनदयाल सकल सुख तो सुखमा-बस ।
एकै हंस उदास रहे काहे हे पावस ॥९॥

शरद ।

पाई छवि द्विजराज कवि गुरुवर अंबर सोह ।
दरे दरद हे सरद हिय करे मोद संदोह ॥
करे मोद संदोह धरे गुन सज्जन केरे ।
कुवलय खरे विकास भरे भासैं चहुँ फेरे ॥
बरनै दीनदयाल जगत के तुम सुखदाई ।
करिये कहा प्रशंस हंस बिलसैं छबि पाई ॥ १० ॥

हेमंत ।

आवत ही हेमंत तो कंपन लगो जहान ।
कोक कोकनद भे दुखी अहित भये जगप्रान ॥
अहित भये जगप्रान संग जबहीं तुव पाए ।
दुखद भए द्विजराज मित्र निज तेज घटाए ॥
बरनै दीनदयाल दीन द्विज पाँति कँपावत ।
कामिन को भो मोद एक ही तो जग आवत ॥११॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

शिशिर ।

गाये सुजस समूह तो कविराजन अवदात ।
फैली महिमा रावरी महिमंडल में ख्यात ॥
महिमंडल में ख्यात फाग रागन को गावैं ।
शिशिर सु आप प्रसाद जगत सबही सुख पावैं ॥
बरनै दीनदयाल कुंद मिस तो जस छाये ।
एक विचारे पात तिने उतपात लगाये ॥ १२ ॥

पंचतत्वविषये अन्योक्तिः । आकाश ।

आपै व्यापक जगत के आप सरिस कोउ नाहिं ॥
सकल लोक रचना सजै हे अकाश तुव मांहि ।
हे अकाश तुव माहिं मित्र द्विजराज विराजैं ॥
तुमैं बीच सुचि जानि आनि घनस्यामहु छाजैं ।
बरनै दीनदयाल जाय जस बरनो कापै ॥
गहो न संग उपाधि रहो अति निरमल आपै ॥१३॥

पवन ।

जहँ धरि पीत पराग पट वर सम कियो विहार ।
तिहि बन पवन जती भयो रमत रमाये छार ॥
रमत रमाये छार घोर ग्रीषम दव लागे ।
दुख में मधुकर सखा संग सबही तजि भागे ॥
बरनै दीनदयाल रही छबि कुसुमाकर भरि ।
दूलह बन्यो समीर रम्यो पट पीरो जहँ धरि ॥१४॥

जिन तरु को परिमल परसि लियो सुजस सब ठाम ।
तिन भंजन करि आपनो कियो प्रभंजन नाम ॥
कियो प्रभंजन नाम बड़ो कृतघन बरजोरी ।
जब जब लगी दवागि दियो तब झोकि झकोरी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल सेउ अब खल ! थल मरु को ।
लै सुख सीतल छाँह तासु तोरयो जिन तरु को ॥१५॥
लागी भूति अगेह नित अलिगन सिख्य विसेख ।
सरल साल भंजत मरुत करनी खल मुनिवेख ॥
करनी खल मुनिबेख फिरै भरमत सब जग को ।
नहीं छमा में रहै अधर पथ गहै कुमग को ॥
बरनै दीनदयाल बनो जग प्रान विरागी ।
जम आसा तें रमै अहो विरही दुख लागी ॥१६॥

अनल ।

भीखन दुसह सुभाव तुव सुनो अनल जग माहिं ।
करत कोटि अपराध ही तऊ तजत कोउ नाहिं ॥
तऊ तजत कोउ नाहिं बगर पुर नगर जरावत ।
हित सों वल्लभ मानि तुमैं ढूँढ़न को जावत ॥
बरनै दीनदयाल तेज सब करैं निरीखन ।
तुम बिन सरै न काज जदपि जग हौ अति भीखन ॥१७॥

जल ।

हे जल वेग-तरंग तें करै विलग मति मीन ।
ये तो तेरे विरह तें ह्वैहैं प्रान-विहीन ॥
ह्वैहैं प्रान-विहीन देखि दसरथ को बानो ।
प्रिय को देख्यो नाहिं प्रान को कियो पयानो ॥
बरनै दीनदयाल नहीं जिन प्रेम किये पल ।
ते किमि जानैं पीर वियोगीजन की हे जल ॥१८॥

भूतल ।

भूतल तौ महिमा बड़ी फैल रही संसार ।
छमाशील को कहि सकै सहत सकल के भार ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सहत सकल के भार धराधर धीर धरे हो।
पारावार अपार धार सिर क्रीट करे हो॥
बरनै दीनदयाल जगो जग है जस ऊजल।
सब की छमत गुनाह नाह तुम सब के भूतल॥१९॥

दिवाकर।

लीने आभा आपनी हे अम्बक आधार।
दीजै दरशन प्रगटि कै तम दुख दलो अपार॥
तम दुख दलो अपार निसाचर गाजि रहे हैं।
भूत दीप खद्योत उलूक बिराजि रहे हैं॥
बरनै दीनदयाल कोकनद कोकहु दीने।
कब ह्वै हो हरि उदय तुमै बिन लोक मलीने॥२०॥

निसाकर।

मैलो मृग धारे जगत नाम कलंकी जाग।
तऊ कियो न मयंक तुम सरनागत को त्याग॥
सरनागत को त्याग कियो नहिं ग्रसे राहु के।
लिये हिये में रहो तजो नहिं कहे काहु के॥
बरनै दीनदयाल जोति मिस सो जस फैलो।
हौ हरि को मन सही कहैं नर पामर मैलो॥२१॥

दानी अमृत के सदा देव करैं गुनगान।
सुनो चंद बंदैं तुमैं मोद निधान जहान॥
मोद निधान जहान संभु सिर ऊपर धारें।
देखि सिंधु हरखाय निकाय चकोर निहारें॥
बरनै दीनदयाल सबै तुमको सुखखानी।
एक चोर बरजोर घोर निंदैं दुखदानी॥२२॥

केतो सोम कला करो करो सुधा को दान।
नहीं चंदमनि जो द्रवै यह तेलिया पखान॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

यह तेलिया पखान बड़ी कठिनाई जाकी।
टूटी याके सीस बीस बहु बाँकी टाँकी।
बरनै दीनदयाल चंद तुम ही चित चेतो॥
कूर न कोमल होंहि कला जो कीजै केतो॥२३॥

पूरे जदपि पियूख तें हरसेखर आसीन।
तदपि पराये बस परे रहो सुधाकर छीन॥
रहो सुधाकर छीन कहा है जो जग बंदत।
केवल जगत बखान पाय न सुजान अनंदत॥
बरनै दीनदयाल चंद है हीन अधूरे।
जौ लगि नहिं स्वाधीन कहा अमृत तें पूरे॥२४॥

दीपक।

मित्र नाम को दीप लघु करे कहा रे नास।
वे बर तो अभिधान को अधिको करत प्रकास॥
अधिको करत प्रकास भलाई उनकी छाई।
त्रिभुवन भवन-मँझार पूजि सब करैं बड़ाई॥
बरनै दीनदयाल करै तू कौन काम को।
रही कारिखो छाय जराय न मित्र नाम को॥२५॥

रत्न-दीपक।

भाजन सहित सनेह की करत चाह तुम नाहिं।
परहित देत प्रकास बर रतनदीप जग माहिं॥
रतनदीप जग माहिं तुमै चल बात न परसै।
अविचल बिमल सुभाव भाल कालिमा न दरसै॥
बरनै दीनदयाल लसे तातें सिर राजन।
तूल कुवतियाँ त्यागि भए सत-सोभा-भाजन॥२६॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नीरद ।

दीजै जीवन जलद जू दीन द्विजन को देखि ।
इनको आसा रावरी लागी अहै बिसेखि ॥
लागी अहै बिसेखि देहु कुल कीरति छैहै ।
या चपला है चला लला धौं कित को जैहै ॥
बरनै दीनदयाल आप जग में जस लीजै ।
परम धरम उपकार द्विजन को जीवन दीजै ॥२७॥

करिये सीतल हृदय बन सुमन गयो सुरझाय ।
सुनो विनय घनस्याम हे सोभा सघन सुहाय ॥
सोभा सघन सुहाय कृपा की धारा दीजै ।
नीलकंठ प्रिय पालि सरस जग में जस लीजै ॥
बरनै दीनदयाल तृषा द्विजगन की हरिये ।
चपला सहित लखाय मधुर सुर कानन करिये ॥२८॥

भीखन ग्रीषम ताप ते भयो झाँवरो छीन ।
है यह चातक डावरो अनुग रावरो दीन ॥
अनुग रावरो दीन लीन आधीन तिहारे ।
कहै नाम बसु जाम रहै घनस्याम निहारे ॥
बरनै दीनदयाल पालिये लखि तप तीखन ।
सरी सरोवर सिंधु काहु इन माँगी भीख न ॥२९॥

जग को घन तुम देत हौ गज के जीवनदान ।
चातक प्यासे रटि मरे तापर परे पखान ॥
तापर परे पखान बानि यह कौन तिहारी ।
सरित सरोवर सिंधु तजे इन तुमें निहारी ॥
बरनै दीनदयाल धन्य कहिये यहि खग को ।
रह्यो रावरी आस जन्म भरि तजि सब जग को ॥३०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आयो चातक बूँद लगि सब सर सरित बिसारि
चहियत जीवनदानि ! तिहि निरदै पाहन मारि ?
निरदै पाहन मारि पंख बिन ताहि न कीजै।
याहि रावरी आस प्यास हरि जग जस लीजै ॥
बरनै दीनदयाल दुसह दुख आतप तायो।
तृषावंत हित पूर दूर तें चातक आयो ॥३१॥

जिन संसिन को सींच तुम करी सुहरी बहारि।
तिनको दई न चाहिये हे घन ! पाहन मारि ॥
हे घन पाहन मारि भली यह कही न वेदन।
गरलहु को तरु लाय न चहिये निज कर छेदन ॥
बरनै दीनदयाल जगत बसिवो ह्वै दिन को।
लेहु कलंक न कंद पालि दलि जिन संसिन को ॥३२॥

भूले अब घन ! तुम कितै प्रथमै याको पालि।
लखत रावरी राह को सूखि गयो यह सालि ॥
सूखि गयो यह सालि अहो अजहूँ नहिं आए।
दै दै नाहक नीर सिंधु में सुदिन गवाँए ॥
बरनै दीनदयाल कहा गरजत हो फूले।
समै न आए काम काम कौने भ्रमि भूले ॥३३॥

चपला संगति तें भयो घन ! तव चपल सुभाव।
ता छिन तें परखन लगे अमृत को तजि आव ॥
अमृत को तजि आव हनत को तुमैं निवारै।
अहो कुसंग प्रचंड काहि जग में न बिगारै ॥
बरनै दीनदयाल रहैगि न है यह सचला।
ता बस अजस न लेहु देहु चित है चल चपला ॥३४॥

बरखै कहा पयोद इत मानि मोद मन माहिं।
यह तो ऊसर भूमि है अंकुर जमिहै नाहिं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अंकुर जमिहै नाहिं बरष सत जो जल दैहै।
गरजै तरजै कहा बृथा तेरो श्रम जैहै ॥
बरनै दीनदयाल न ठौर कुठौरहि परखै।
नाहक गाहक बिना बलाहक ह्याँ तू बरखै ॥३५॥

समुद्र।

रतनाकर! महि माहँ तुम अति अथाह गंभीर।
हैं प्रवाह दुस्तर भरे ग्राह प्रबल तो नीर ॥
ग्राह प्रबल तो नीर तीर पैठत बुध हारे।
धीर न रहै सरीर तरंग निहारि तिहारे ॥
बरनै दीनदयाल जौन मरजीवा जाकर।
लै मुकुतन को कढ़ै सोइ धनि हे रतनाकर ॥३६॥

गरजे बातन तें कहा धिक नीरधि! गंभीर।
बिकल बिलोकैं कूप-पथ तृषावंत तो तीर ॥
तृषावंत तो तीर फिरैं तुहि लाज न आवै।
भँवर लोल कल्लोल कोटि निज बिभो दिखावै ॥
बरनै दीनदयाल सिंधु तोकों को बरजै।
तरल तरंगी ख्यात बृथा बातन तें गरजै ॥३७॥

नद।

सिंधु बड़ाई भूलि जनि नद? नमि के चलि चाल।
सहिबो परिहै खार ह्वै बड़वानल की ज्वाल ॥
बड़वानल की ज्वाल नाम रूपहु मिटि जैहै।
ह्वैहै अधिक अपीव जीव कोउ नीर न छ्वैहै ॥
बरनै दीनदयाल ब्याज की कहा चलाई।
जैहै मूल नसाय पाय नद सिंधु बड़ाई ॥३८॥

हे नद! ढाहै तरुन जनि पावस प्रभुता पाय।
ये तो तेरे तीर पै सोभा रहे बनाय ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोभा रहे बनाय छाय फल फूलन तें अति ।
सीत सुगंध समीर धीर गति हरैं पथिक मति ॥
बरनै दीनदयाल बिबिध खग रटैं भरे मद ।
ये सुख रहिहैं नाहिं गये इन तरु के हे नद ॥३९॥

नदी ।

बहु गुन तो में है धुनी ! अति पुनीत तो नीर ।
राखति यह ऐगुन बड़ो बक मराल इक तीर ॥
बक मराल इक तीर नीच ऊँचो न पिछानति ।
सेत सेत सब एक नहीं ऐगुन गुन जानति ॥
बरनै दीनदयाल चाल यह भली न है सुन ।
जग में प्रगट नसाहिं एक ऐगुन तें बहु गुन ॥४०॥

सर ।

कोलाहल सुनि खगन के सरवर ! जनि अनुरागि ।
ये सब स्वारथ के सखा दुरदिन दैहैं त्यागि ॥
दुरदिन दैहैं त्यागि तोय तेरो जब जैहै ।
दूरहि तें तजि आस पास कोऊ नहिं ऐहै ॥
बरनै दीनदयाल तोहि मथि करिहैं काहल ।
ये चल छल को मूल भूल मति सुनि कोलाहल ॥ ४१ ॥

आए ग्रीषम देखिहैं लघु सर ! तेरी सान ।
कहा करै एतो बड़ो पावस पाय गुमान ॥
पावस पाय गुमान भरो अति भूलि रह्यो है ।
भेक बकन के संग उमंगन फूलि रह्यो है ॥
बरनै दीनदयाल दिना दस के चलि जाए ।
तब देखिहों तरंग तोय वह ग्रीषम आए ॥ ४२ ॥

सर ! तोमैं सरसे बसे भेकन हित बक बंस ।
सारस हैं सारस न हैं तातें रसैं न हंस ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तातें रसैं न हंस तोहि तजि दूरि गए हैं।
तोको मानि मलीन नहीं मनलीन भए हैं॥
बरनै दीनदयाल बकन हटि तू बरजो मैं।
सरसैं समुझि न हंस कुसंगति को सर तो मैं॥४३॥

कवित्त।

अमल अनूप जल मनिमै नीसेनी जासु थल को बखान सुतो हुतो नरवर मैं। मीन के विलास लहरीन के प्रकास जामें लसी दीनदयाल ऐसी प्रभा ना अपर मैं॥ चितै रह्यो चंचरीक चारु कंज कलिका को हंस सरदागम रमन गो अधर मैं॥ सर मैं लगे हैं अवसर मैं समुझि यह सूकर विहार करैं अहो तिहि सर मैं॥ ४४॥

कमल।

सुनो अरबिंद हे मलिंद बिन सजै नाहिं केलि मलकीटन की रावरे वितान मैं। जानैं कहा मंद ये सुगंध मकरंद गुन गानैं दीनदयाल तव माधुरी जहान मैं॥ तेऊ यह कला लखि भला नहिं कहैं अब मूँदि लेहु मुख गिने जाहुगे मलान मैं। हेरि हंस ओर फेरि खोलिहो भए तें भोर कीजिए सुजान बात भली जो जहान मैं॥ ४५॥

कुंडलिया।

हारो है हे कंज! फसि चंचरीक तुव माहिं।
याको नीके राखिये दुखित कीजिये नाहिं॥
दुखित कीजिये नाहिं दीजिये रस धरि आगे।
एक रावरे हेत सबै इन सौरभ त्यागे॥
बरनै दीनदयाल प्रेम को पैंड़ो न्यारो।
बारिज बँध्यो मलिन्द दारु को बेधनिहारो॥४६॥

दोनेहो चोरत अहो इन सम चोर न और।
इन समीर तें कंज! तुम सजग रहो या ठौर॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सजग रहो या ठौर भौंर रखिये रखवारे ।
नातो परिमल लूटि लेहिंगे सबै तिहारे ॥
बरनै दीनदयाल रहो हो मित्र अधीने ।
भली करत हो रैन कपाट रहत हो दीने ॥४७॥

मधुकर ।

सेवन करि अतिमुक्त को अलि ! पलास मति सेव ।
भ्रमत सदा तम रूप ह्वै गहन विकल या भेव ॥
गहन विकल या भेव देख बेला वर जाती ।
गए न मिलिहै फेरि रहैगो पीटत छाती ॥
बरनै दीनदयाल सेइ कै सोभित देवन ।
कोऊ बहुर मलीन भूत को करै न सेवन ॥४८॥

होत उजागर बन बगर मधुप ! मलिन तव आस ।
तजि माधवी-सुप्रीति को विहरत पास पलास ॥
विहरत पास पलास बास नहिं मोहत कामै ।
निरस कठोर छलीक छलन की लाली जामै ॥
बरनै दीनदयाल कहै कवि जे मतिसागर ।
यथा नाम अरु रूप तथा गुन होत उजागर ॥४९॥

सेमर मैं भरमै कहा ह्याँ अलि ! कछू न बास ।
कमल मालती माधवी सेइ न पूरी आस ॥
सेइ न पूरी आस बास बन हेरत हारो ।
सुरसरि बारि बिहाय स्वाद चाहै जल खारो ॥
बरनै दीनदयाल कहा खटपद ये कर मैं ।
हैं पग पसु तें ड्योढ़ रमै तातें सेमर मैं ॥५०॥

एकै नाम न भूलि अलि इतो कथन मंदार ? ।
वह औरै मंदार है करनी जासु उदार ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करनी जासु उदार देत अभिमत फल वेतो ।
याने ठगे सुकादि कला करि हारे केतो ॥
बरनै दीनदयाल सुखद गुन उन्हैं अनेकै ।
यामैं फोकट नाम अडंबर सुनियत एकै ॥५१॥

सोई विपिन विलोकिये हे मधुकर ! इहि बेर ।
हा ! छवि दही निदाघ अब रही राख की ढेर ॥
रही राख की ढेर जहाँ देखी वह सोभा ।
लता सुमनमय देखि सु मन तेरो जहँ लोभा ॥
बरनै दीनदयाल अहो दैवी गति जोई ।
बहै भँवर तू भूलि भवै न विपिन यह सोई ॥ ५२ ॥

भौंरे भूलि न वे भरम लखि इक सोभत भेस ।
कढ़िगो सौरभ सुमन तें रही लालिमा सेस ॥
रही लालिमा सेस कहूँ मकरंद न या मैं ।
पौन पराग उड़ाय गयो कहुँ मोहत का मैं ॥
बरनै दीनदयाल साँझ ढिग आई बौरे ।
चले विहंग बसेर कहा अब भूले भौंरे ॥ ५३ ॥

आई निसि अलि ! कमल तें क्यों नहिं होत उदास ।
नहिं ह्वैहै छन एक में सुखद अंत की बास ॥
सुखद अंत की बास नहीं बरु बंधन पैहै ।
ऐहै कुंजर जबै सखाजुत तो को खैहै ॥
बरनै दीनदयाल भलो बहु लोभ न भाई ।
तजि के रस की आस चलो अब तो निसि आई ॥ ५४ ॥

लै पल एक सुगंध अलि ! अपनो मानि न भूल ।
लैहै साँझ सबेर में वह माली यह फूल ॥
वह माली यह फूल कितै दिन लोटत आयो ।
फूले फूले लेत कली सब सोर मचायो ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल लाल लखि फँसै न है छल ।
लगी बाग में आग भाग रे गंधहि लै पल ॥ ५५ ॥

बौरे लखि ले लालिमा हे भौंरे मति भूल ।
है छलमय पल के असद ए कागद के फूल ॥
ए कागद के फूल सुगंध मरंद न या मैं ।
मृदु माधुरी पराग नहीं अनुरागत का मैं ॥
बरनै दीनदयाल चेत चित मैं इहि ठौरे ।
लुटि जैहै यह बाग छटा छन की है बौरे ॥ ५६ ॥

देखत ना ग्रीषम विषम इहि गुलाब की ओरि ।
सुनो अली ! यह नहिं भली ह्वैहैं कली बहोरि ॥
ह्वैहैं कली बहोरि तबै तुम पायन परिहौ ।
चायन छों करि काह बकायन मैं सिर मरिहौ ॥
बरनै दीनदयाल रहो हो पीतम पेखत ।
यहै मीत की रीति एक से सुख दुख देखत ॥ ५७ ॥

भौंरा ! अंत बसंत के है गुलाब इहि रागि ।
फिरि मिलाप अति कठिन है या बन लगे दवागि ॥
या बन लगे दवागि नहीं यह फूल लहै गो ।
ठौरहि ठौर भ्रमात बड़ो दुख तात सहै गो ॥
बरनै दीनदयाल किते दिन फिरिहै दौरा ।
पछतैहै कर दए गए रितु पीछे भौंरा ॥ ५८ ॥

तौ लों अलि तू बिहरि लै जौ लों मित्र प्रकास ।
पीछे बाँधो जायगो रजनी नीरज पास ॥
रजनी नीरज पास बँधे फिरि स्वास न ऐहै ।
यह तो बिधि को तात कला इत नाहिं चलैहै ॥
बरनै दीनदयाल सुमन सेयो कइ सौ लों ।
बुड़यो कोकनद नहीं, रही चतुराई तौ लों ॥ ५९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

श्रीहित स्याम बने छली भली पीत छबि गात।
अली कला निसि नहिं चली गह्यो बली बिधि तात॥
गह्यो बली बिधि तात बात वह जात रही है।
जो जन औरहि छलै निदान छलात वही है॥
बरनै दीनदयाल मित्र बिन जैहो अब कित।
तब तो रचे प्रपंच रूप करि कपटी श्रीहित॥ ६०॥

हंस।

कीजे गमन सुमानसर यह दुखदायक ताल।
हंस बंस अवतंस हौ मौन गहो इहि काल॥
मौन गहो इहि काल काक बक खल या ठावैं।
अति कठोर बरजोर सोर चहुँ ओर मचावैं॥
बरनै दीनदयाल इनै तजि सुख सों जीजै।
सठ संगति अतिभीति भूलि तहँ गमन न कीजै॥ ६१॥

मानसचारी हंस करि गंग तरंग बिलास।
सूकर-क्रीड़ा-सर बिषै अब अभाग्यबस बास॥
अब अभाग्यबस बास हास द्विज करैं चहूँ दिस।
हा किमि धारैं धीर बीर या पीर कहूँ किस॥
बरनै दीनदयाल अहो बिधि-गति बलिहारी।
कीच बीच फँसि रह्यो हंस यह मानसचारी॥ ६२॥

नाहीं मानस हंस यह नहिं मुकुतन की रासि।
यह तो संबुक मलिन सर करटन की मिरियासि॥
करटन की मिरियासि रहैं याको सठ घेरे।
तूँ मति भूले धीर जाहु याके नहिं नेरे॥
बरनै दीनदयाल चलो निरजर सर पाहीं।
जहाँ जलज की खानि सदा सुख है दुख नाहीं॥६३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

हितकारी मानस बिना नहीं हंस चित चैन ।
छिन छिन व्याकुल विरहबस सोचत है दिन रैन ॥
सोचत है दिन रैन बैन नीकै नहिं आवत ।
काक बलाकन संग साक तजि समै बितावत ॥
बरनै दीनदयाल मरालहि संकट भारी ।
मानस और न चहै बिना मानस हितकारी ॥६४॥

चक्रवाकी ।

चल चकई तिहि सर बिषै जहँ नहिं रैनि बिछोह ।
रहत एकरस दिवस ही सुहृद हंस-संदोह ॥
सुहृद हंस संदोह कोह अरु दोह न जाकै ।
भोगत सुख अम्बोह मोह दुख होय न ताके ॥
बरनै दीनदयाल भाग्य बिन जाय न सकई ।
पिय मिलाप नित रहै ताहि सर तू चल चकई ॥६५॥

बक ।

चाली हंसन की चलै चरन चोंच करि लाल ।
लखि परिहै बक ! तव कला झख मारत ततकाल ॥
झख मारत ततकाल ध्यान मुनिबर सो धारत ।
बिहरत पंख फुलाय नहीं खज अखज विचारत ॥
बरनै दीनदयाल बैठि हंसन की आली ।
मंद मंद पग देत अहो यह छल की चाली ॥६६॥

मंडूक ।

दादुर काकोदर दसन परे मसन मति ध्याउ ।
कहा लहैगो स्वाद को एक स्वास की आउ ॥
एक स्वास की आउ ग्रास यह तोहि करैहै ।
तोको नहिं विस्वास न कछु मन त्रास धरैहै ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल तोहि लखि बड़ो बहादुर ।
अरिमुख रहो समाय अजौं नहिं संकत दादुर ॥६७॥

कूप ।

पथिकन की अँसुवान को जल दरसाय अलीक ।
किन किन की मति नहिं छली तू मरुकूप ! छलीक ॥
तू मरुकूप छलीक सून हिय तामस बासा ।
खालो धुनि सुनि परै नहीं जीवन की आसा ॥
बरनै दीनदयाल कला न चलै गुनि जन की ।
गुन भो बृथा बिसाल सुमति हारी पथिकन की ॥६८॥

दोहा ।

यह अन्योक्ति-सुकल्पद्रुम साखा प्रथम बखानि ।
बिरची दीनदयालगिरि कवि द्विजवर सुखदानि ॥६९॥

इति श्रीकाशीवासी दीनदयालगिरिविरचिते अन्योक्तिकल्पद्रुमग्रंथे प्रथम शाखा समाप्ता ॥

भूधर

बलिहारी भूधर तुमैं धीर करैं गुन गान ।
सानमान कहि अचल कहि सब जग करैं बखान ॥
सब जग करैं बखान सकल जीवन को पालो ।
तीछन बात दवागि दाह तें नेक न हालो ॥
बरनै दीनदयाल कौन तुम सो उपकारी ।
सुखद रतन की खानि बार बहु ह्वै बलिहारी ॥१॥

मणि ।

चिंतामनि अरु नीलमनि पदमराग सुप्रवीन ।
सुन्यो न पारस ! तुम बिना लोह कनक कोउ कीन ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोह कनक कोउ कीन नहीं जग में जे मानिक ।
चमकैं ठौरहिं ठौर जगे हैं जे जेहि खानिक ॥
बरनै दीनदयाल अहो पारस तुम हो धनि ।
कियो कुधातु महीस मुकुट क्या है चिंतामनि ॥२॥

नीलमणि ।

मरकत पामर कर परी तजि निज गुन अभिमान ।
इतै न कोऊ जौहरी ह्याँ सब बसैं अजान ॥
ह्याँ सब बसैं अजान काँच तो को ठहरावैं ॥
तदपि कुसल तू मान जदपि यहि मोल बिकावैं ॥
बरनै दीनदयाल प्रवीन हृदै लखि दरकत ।
अहो करम गति गूढ़ परी कर पामर मरकत ॥३॥

मुक्ता ।

मेल्यो मुख घँसि सूँघ फिरि फेक्यो कीस अजान ।
मुक्ता ! बात कुशल भई जौ नहिं हन्यौ पखान ॥
जौ नहिं हन्यो पखान बन्यो तौ रूप अजौ लों ।
मिलैं जौहरी तोल मोल बिकिहै कइ सौ लों ॥
बरनै दीनदयाल खेल कपि कैसो खेल्यो ।
बच्यो आपनी भाग्य अहो मुक्ता मुख मेल्यो ॥ ४ ॥

रंग ।

लीने गुरुता गरब को अरे रंग ! मति भूलि ।
रंग न तेरो है कछू सुबरन संग न तूलि ॥
सुबरन संग न तूलि तासु गुन को नहिं जाने ।
धिग तव तौल प्रताप आप गुन आप बखाने ॥
बरनै दीनदयाल तिनै नृप क्रीटन कीने ।
तू पामर तिय पाय रहै लपटाय मलीने ॥ ५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लोहा ।

लोहा ! द्रोह न कीजिये पारसमनि के साथ ।
ताहि परसि पैहै प्रभा भूपमनिन के माथ ॥
भूपमनिन के माथ तोहि लखि जग हरखैगो ।
करि करि कोटि प्रनाम सुमन तो पै बरखैगो ॥
बरनै दीनदयाल कौन सतसंग न सोहा ।
पैहै रूप अनूप बढ़ैगी कीमति लोहा ॥ ६ ॥

कानन ।

राखे जरत दवागि तें दैदै धार उदार ।
मान गहन घनस्याम को वा दिन को उपकार ॥
वा दिन को उपकार साखि ये कोकिल कूजैं ।
फूली लता अपार सुभृंगन के गन गूँजैं ॥
बरनै दीनदयाल धन्य तिनको जग भाखै ।
जे मानैं उपकार तिन्हैं बुध मैं गनि राखै ॥ ७ ॥

सामान्य वृक्ष ।

पाई तुम प्रभुता भली चहुँ दिसि अलि गुंजार ।
हे तरु तटिनीतीर के करि लै कछु उपकार ॥
करि लै कछु उपकार आज ऋतुराज बिराजै ।
डार सुमन के भार रहो झुकि के छबि छाजै ॥
बरनै दीनदयाल पथिन दै छाँह सोहाई ।
पच्छिन को प्रतिपाल करै किन प्रभुता पाई ॥ ८ ॥

एहो द्रुम या सिसिर को दीजे दान तुरंत ।
दीने सूखे पात के दैहै हरो बसंत ॥
देहै हरो बसंत फूल फल दलन समेते ।
पैहो पुंज सुगंध भृंग गूँजेंगे केते ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल लसेागे सेाभा से हो ।
भाखत वेद पुरान दिये बिन मिलै न एहो ॥ ९ ॥

उपकारी हौ द्रुम महा हम भाखत तुव पाहिं ।
राखहु नाहिं दुजिह्व को हिय कोटर के माहिं ॥
हिय कोटर के माहिं देख दुख तो पच्छिन को ।
पथी न आवैं पास त्रास उपजै लखि तिन को ॥
बरनै दीनदयाल सकल गुन है तुव भारी ।
यह कुसंग ततकाल त्यागिये जग-उपकारी ॥ १० ॥

मन को खेद न करिय तरु ! पच्छिन को भरु पाय ।
भाखत साखा रावरी सेाभा रहे बनाय ॥
सेाभा रहे बनाय सुफल में तुम को चाहैं ।
सेवत प्रेम लगाय कहें जस दिसि के माहैं ॥
बरनै दीनदयाल धीर रखिये निज तन को ।
मंद बात को पाय कँपाइय नाहिं सुमन को ॥ ११ ॥

वा दिन की सुधि तेाहि को भूलि गई कित साखि ।
बागवान गहि घूर तें ल्यायेा गोदी राखि ॥
ल्यायेा गोदी राखि सींचि पाल्यो निज कर तेतें ।
भूलि रह्यो अब फूलि पाय आदर मधुकर तें ॥
बरनै दीनदयाल बड़ाई है सब तिन की ।
तू झूमै फल भार भूलि सुधि को वा दिन की ॥ १२ ॥

विशेषवृत्तः । तत्र चंदन ।

चंदन ! वंदनजेाग तुम धन्य द्रुमन में राय ।
देत कुकुज कंकेाल लों देवन सीस चढ़ाय ॥
देवन सीस चढ़ाय कौन तुव रीस करैगो ।
बड़े बड़े तरु ईस सुगंधन पीस मरैगो ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल पाय संताप निकंदन ।
नंदन बन तें आदि करैं तब बंदन चंदन ॥ १३ ॥

तुलसी ।

सब तरु धरा धरे रहे बेख बड़े प्रिय कीस ।
एकै ही तुलसी लसी लघु सरूप हरिसीस ॥
लघु सरूप हरिसीस रीस को तासु करैंगे ।
बास बिसे तरु ईस खीस ह्वै भार जरैंगे ॥
बरनै दीनदयाल बड़ो छोटो जनि चित धरु ।
भाग्यवंत है बड़ो बड़ो नहिं कहिये सब तरु ॥ १४ ॥

रसाल ।

एहो धीर रसाल ! अति सोहत हौ सिरमौर ।
साखा बरनै रावरी द्विजवर ठौरे ठौर ॥
द्विजवर ठौरे ठौर सुफल रावरो ही चाहैं ।
निकसे जो तव बात सुमन सो सुधी सराहैं ॥
बरनै दीनदयाल धन्य वा धात्री के हो ।
जातें प्रगटे आय आप उपकारी एहो ॥ १५ ॥

जेतो फल तैं नमत हो एहो धीर रसाल ! ।
तेतो ऊँचे होत हो सोभा होति विसाल ॥
सोभा होति विसाल बात तव है सुखदायक ।
रस तें करो निहाल तुमै सेवैं द्विजनायक ॥
बरनै दीनदयाल हिए हरि सों हित केतो ।
धरे रहैं छवि स्याम नमित रस देखैं जेतो ॥ १६ ॥

पाई तुम मृदुता नई भई कठिनई दूरि ।
गई स्यामता संग तजि छई लालिमा भूरि ॥
छई लालिमा भूरि पूरि आई मधुराई ।
सोभा बसी विसाल नसी वह खोटि खटाई ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल सुगंध कला छिति छाई ।
जीवनमुक्त रसाल भये सुच संगति पाई ॥ १७ ॥
एहो सुमन समै सखे रखे रहो पिक डाल ।
आप विसाल रसाल ह्वै एऊ बैनरसाल ॥
एऊ बैनरसाल मधुर सुरसाज सजैंगे ।
जाको देखि समाज सबै द्विजराज लजैंगे ॥
बरनै दीनदयाल महा महिमा महि लेहो ।
पै यह काग अभाग दाग गुनि तजिये एहो ॥ १८ ॥
ऐसी संगति रावरे संग सजै न रसाल ! ।
कागन के गन ये तुमै घेरि रहे इहि काल ॥
घेरि रहे इहि काल कहा कुसुमाकर आए ।
रसहु सुगंध समेत वृथा तुम देत बहाए ॥
बरनै दीनदयाल दई गति भई अनैसी ।
कोकिल कीर मलिंद तीर नहिं संगति ऐसी ॥ १९ ॥
जानैं नहिं तव माधुरी मंद मरंद सुगंध ।
ह्वै रसाल अज कूट कपि कोल क्रमेलक अंध ॥
कोल क्रमेलक अंध फूल फल मूल विनासक ।
साख विदारनिहार दुखद दुतिग्रासक त्रासक ॥
एकै दीनदयाल रसज्ञ सिलीमुख मानैं ।
महामीत महि मांह प्रीति महिमा तब जानैं ॥ २० ॥
सुनिये कल कोमल कलित ह्वै सद सुखद रसाल ।
ये सुक पिक सारंग हैं सोभाकरन विसाल ॥
सोभाकरन विसाल डाल सेवैं तव हित सों ।
चोंच चरन के घाय पाय नहिं दुखिये चित सों ॥
बरनै दीनदयाल चूक मन मै जनि गुनिये ।
जानि मधुर सुखदानि बानिबर इन की सुनिये ॥ २१ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कदली ।

रंभा ! झूमत हौ कहा थोरे ही दिन हेत ।
तुम से केते ह्वै गए अरु ह्वैहैं इहि खेत ॥
अरु ह्वैहैं इहि खेत मूल लघु साखाहीने ।
ताहू पै गज गहै दीठि तुम पै प्रति दीने ॥
बरनै दीनदयाल हमैं लखि होत अचंभा ।
एक जन्म के लागि कहा झुकि झूमत रंभा ॥ २२ ॥

रंभाबन ! तुम निज बिखे राखि गजन के ग्राम ।
चहत कुसल फल फूल को तिन खल तें बसु जाम ॥
तिन खल तें बसु जाम गुनत रखिबो दल अपनो ।
साखा राखै कौन मूल हू ह्वैहै सपनो ॥
बरनै दीनदयाल बात यह बड़ी अचंभा ।
बैरिन को सहवास राखि सुख चाहत रंभा ॥ २३ ॥

पलास ।

दिन द्वै पाय बसंत-मद फूल्यो कहा पलास ।
ग्रीखम भीखम सीस पै नहिं लाली की आस ॥
नहिं लाली की आस फूल सब तेरे झरिहैं ।
पीछे तोहि न दली अली कोउ आदर करि हैं ॥
बरनै दीनदयाल रहो नय कोमल किन ह्वै ।
ये नख नाहर रूप रहैंगे तेरे दिन द्वै ॥ २४ ॥

लीने कंटक बन करै बिरही मन झख त्रास ।
याही तें तेरो कबिन राख्यो नाम पलास ॥
राख्यो नाम पलास लाल मुख कोपित धारो ।
लह्यो न एक कलंक बिना कछु तातें कारो ॥
बरनै दीनदयाल संग सुकहू को कीने ।
माधव सों मिलि मूढ़ तऊ छल कंटक लीने ॥ २५ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

साल्मली ।

किन किन की मति नहिं छली सालमली करि अंध ।
गीधे गीध अमिख डली जानत अली सुगंध ॥
जानत अली सुगंध भली लाली सुक भूले ।
जानि अँगार चकोर ओर चहुँतें अनुकूले ॥
बरनै दीनदयाल लखै गति को छिन छिन की ।
यह छलरूप लखाय छली नहिं मति किन किन की ॥२६॥

सेमल ! बिना सुगंध तू करत मालती रीस ।
छलि रे भ्रम दै सुकन को नहिं जैहै हरिसीस ॥
नहिं जैहै हरिसीस भूलि जिन लखि निज लालो ।
जैहै बेगि बिलाय ल्याय मति मद को खाली ॥
बरनै दीनदयाल जगत में बिन गुन जे खल ।
करैं वृथा अभिमान जथा तरु मैं तू सेमल ॥ २७ ॥

आक ।

तो मैं बहु ऐगुन भरे अरे आक मतिहीन ।
कहा जान केहि हेत तें हर तोसों हित कीन ॥
हर तोसों हित कीन तऊ उन केरि बड़ाई ।
तू मति मोहे मूढ़ मानि अपनी प्रभुताई ॥
बरनै दीनदयाल बात सुनि भाखत जो मैं ।
सिव की दाया एक आक बहु ऐगुन तो मैं ॥ २८ ॥

नाहीं कछु फल फूल तो बज्यो नाम मंदार ।
ताप गयो किन पथिन को सेवत तुमरी डार ॥
सेवत तुमरी डार कौन बिश्राम लह्यो है ।
नहिं पराग मकरंद मलिंदन भूलि रह्यो है ॥
बरनै दीनदयाल खगोहु न आवत पाहीं ।
केवल छल मैं नाम बज्यो कहुँ बासहु नाहीं ॥ २९ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तजि ऋतुपति की माधवी आयो इह सारंग।
आक आदरै ताहि किन दुर्लभ याको संग॥
दुर्लभ याको संग राखि जस लै ग्रीखम भरि।
ये तो पत्र प्रसून जाहिंगे पावस में सरि॥
बरनै दीनदयाल कहै को दैवी गति की।
तो पै भ्रमै मलिंद माधवी तजि रितुपति की॥ ३०॥

बंस।

तो मैं बंस! न सार कछु बकिबोहू अभिमान।
ता तें मलै न तोहि को बिरचे आप समान॥
बिरचे आप समान न तो हिय सून निहारत।
तेरे पास हुतास तासु तें तिनहूं जारत॥
बरनै दीनदयाल देख तिनको न कहों मैं।
गंधसार का करै सार है बंस न तो मैं॥ ३१॥

दाड़िम।

दारो तुम या बाग मैं कहा हँसो मुख खोलि।
दिना चार की औध मैं लीजै नैक कलोलि॥
लीजै नैक कलोलि दसन की जो यह लाली।
जैहै कहूँ बिलाय होयगी डाली खाली॥
बरनै दीनदयाल लगे खग हैं दिसि चारो।
भीतर काटत कीट कौन रँग रातो दारो॥ ३२॥

बबूर।

दुख दै जिन इन पथिन को एरे कूर बबूर।
जगकंटक कंटकन तें करि राख्यो मग धूर॥
करि राख्यो मग धूर दूर के थकित बिचारे।
छाय पाय पछिताय लगे फल फूल नकारे॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल दया करके कछु सुख दै ।
हिय कठोर अति घोर अंत बनि कोल्हू दुख दै ॥ ३३ ॥

करीर ।

धार्यो दलन करीर ! तुम बहु रितुराजन पाय ।
यहै त्याग दृढ़ देखि कै प्रिय कीनो जदुराय ॥
प्रिय कीनो जदुराय रमै तव कुंजनि माहीं ।
और सबै तरुराज ताहि दिसि देखत नाहीं ॥
बरनै दीनदयाल ऊँच नहिं नीच विचार्यो ।
जो जग धर्यो विराग ताहि हरि हित सों धार्यो ॥३४॥

असोक ।

सेवत तुमैं असोक ! यह माली गयो बुढ़ाय ।
अधिकै कियो ससोक तुम फोकट नाम सुनाय ॥
फोकट नाम सुनाय नहीं कछु काम सरै है ।
लगे बामपद अहो फूल अभिराम धरै है ॥
बरनै दीनदयाल सरल को कछू न देवत ।
योंहीं आसा लागि तुमैं निरफल को सेवत ॥३५॥

चंपक ।

धारे खेद न रहिय चित हे चंपक कमनीय ।
कहा भयो अलि मलिन हिय जौं नहिं आदर कीय ॥
जौं नहिं आदर कीय मानि तेहिं मंद अभागो ।
कुटज करीर कुसाखि कुसुम को भो अनुरागो ॥
बरनै दीनदयाल नील नीरद सम कारे ।
कुसल रहैं वे केस कुसेसै नैनि सुधारे ॥ ३६ ॥

निम्ब ।

एकै ऐगुन देखि कै नीब न तजो सुजान ।
याकी कटुता नहिं गुनो करि बहुगुन पहिचान ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

करि बहुगुन पहिचान प्रथम सब रोग बिनासै।
जो कोउ सेवै याहि ताहि पीछे सुख भासै॥
बरनै दीनदयाल छाँह मुद देति अनेकै।
यह सीतलता खानि तजो कटु देखि न एकै॥३७॥

कपास।

जग मैं गुनमय करि तुमै बरने सकल महान।
कहा भयो जो नहिं कियो चपल एक अलि मान॥
चपल एक अलि मान कियो नहिं कछू नसायो।
हे कपास सहि खेद धन्य परछेद दुरायो॥
बरनै दीनदयाल स्याम याको गनि ठग मैं।
मधुप मंद किमि जान तुमैं बुध जानैं जग मैं॥३८॥

तुम्बिका।

एरी घूरी तूमरी अहो धन्य तव भाग।
मज्जति सुरसरि नीर मैं साधुप्रसाद प्रयाग॥
साधुप्रसाद प्रयाग टूटि जब तें तू आई।
तब तें भई सुरंग मलीन कुसंग बिहाई॥
बरनै दीनदयाल छुटी कटुता सब तेरी।
सुधरी संगति पाय घूर की तुमरी एरी॥३९॥

गेंदा।

माली की सहि सासना सुनि गेंदे मति भूल।
बिन सिर दै पैहै नहीं वहै हजारे फूल॥
वहै हजारे फूल जौन सुरसीस चढ़ैगो।
दए आपनो आप अधिक तें अधिक बढ़ैगो॥
बरनै दीनदयाल किती तू पैहै लाली।
तेरे ही हित हेत देत सिख तोकों माली॥ ४०॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

गुलाब ।

सुनिये मीत गुलाब अलि क्यों मन रहिहै रोकि ।
रहत न धीरज रसिक चित कुसुमित कली विलोकि ॥
कुसुमित कली विलोकि चहूँ दिसि भ्रत भाँवरी ।
ताहि न कंटक बेधि करो मति विकल बावरी ॥
बरनै दीनदयाल पालि हित अपनो गुनिये ।
रस पराग जुत राग सुगंधहि दै जस सुनिये ॥४१॥

नाहीं भूलि गुलाब ! तू गुनि मधुकर गुंजार ।
यह बहार दिन चार की बहुरि कटीली डार ॥
बहुरि कटीली डार होहिंगी ग्रीखम आए ।
लुवैं चलैंगी संग अंग सब जैहैं ताए ॥
बरनै दीनदयाल फूल जौलों तो पाहीं ।
रहे घेरि चहुँ फेरि फेरि अलि ऐहैं नाहीं ॥४२॥

सामान्य कुसुम ।

मोहै मति सुमना ! मना करौ बारही बार ।
महाछली है मधुप यह कहा करै इतबार ॥
कहा करै इतबार बाहिरै भीतर कारो ।
गनिकादिक में रमै चपल भरमै दिस चारो ॥
बरनै दीनदयाल लालची यह रस को है ।
सुनि याकी धुनि मंद माधुरी तैं मति मोहै ॥४३॥

प्यारे करै गुमान जनि सुनि प्रसून ! सिख मोरि ।
तो समान इहि बाग में फूलि झरे हैं कोरि ॥
फूलि झरे हैं कोरि बहोरि किते बिनसैहैं ।
या बहारि दिन चारि गए फिरि ग्रीखम ऐहैं ॥
बरनै दीनदयाल न करि सारंगहिं न्यारे ।
तो रस जान निहार बड़े हितकारक प्यारे ॥४४॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सोहै नहिं सज सुमन ! तो अज ढिग नखरो नाज।
कौन आदरै बलि बिना अलि सुरसिक सिरताज ॥
अलि सुरसिक सिरताज भाँवरी भरै भाव सों।
रस पराग अनुराग तासु चित लाग चाव सों ॥
बरनै दीनदयाल खोलि दृग तिहि किन जोहै।
तो गुन को रिझवार एक यह सारंग सोहै ॥४५॥

सामान्य विहंग।

सूको तरु सेवत कहा बिहँग देवद्रुम सेव।
सजैं सुकादिक धीर जहं सुन्यो न ताको भेव ॥
सुन्यो न ताको भेव फूल फल सौरभ जामैं।
सदा रहै रस लसो बसो कुसुमाकर तामैं।
बरनै दीनदयाल लाल तू तो अति चूको।
सुखद कलपतरु त्यागि दुखद सेवै द्रुम सूको ॥४६॥

नहीं तरंगी तीर मैं हे खग बास बनाय।
यह सुतंत्र को कहि सकै दैहै कहूं बहाय ॥
दैहै कहूं बहाय हाय करिकै सिर धुनिहै।
कोऊ नहीं सहाय पाय दुख पीछे गुनिहै ॥
बरनै दीनदयाल बड़ो यह है बहुरंगी।
अहै चपल उड़ि चलो भलो यह नहीं तरंगी ॥४७॥

विशेष विहंग—तत्र शुक।

सुनिए हे सुक यह नहीं सुखद रसाल रसाल।
है सेमल छलरूप मति भ्रमो सुमन लखि लाल ॥
भ्रमो सुमन लखि लाल भँवर रस गंध न पायो।
जानि अँगार चकोर प्यार करि डार लुभायो ॥
बरनै दीनदयाल कला याकी बहु गुनिए।
पीछे तूल बढ़ाय सूल हूलत है सुनिए ॥ ४८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

नहिं दाड़िम सैलूख यह सुक न भूलि भ्रम लागि ।
दल तें सूलिन को छल्यो चोंच बचै तो भागि ॥
चोंच बचै तो भागि जाहु ना तो पछतैहो ।
याके फल के बीच बड़ो श्रम कछू न पैहो ॥
बरनै दीनदयाल लाल लखि लोभ्यो है किम ।
यह तो महाकठोर भूलि सुक है नहिं दाड़िम ॥४९॥

तजि कै दाड़िम मूढ़ सुक खान गयो कित बेल ।
काँटनि सेां बेधित भयो भूलि गयो सब खेल ॥
भूलि गयो सब खेल पंख लासा लपटायो ।
गिरयो राख मैं जाय जगत में काग कहायो ॥
बरनै दीनदयाल कहा बहु रोवै लजि कै ।
करु मति को धिक्कार कठिन सेयो मृदु तजि कै ॥५०॥

हे सुक प्रीति न कीजिए इन कागन के संग ।
कहुँ भुलाय लैजाय के करिहैं चोंचहि भंग ॥
करिहैं चोंचहि भंग नारियल फल के माहीं ।
निरफल जैहैं सकल कला पैहै कछु नाहीं ॥
बरनै दीनदयाल जानि इनको दुख हेतुक ।
न तु पछतैहै अंत खोय अपनो गुन हे सुक ॥५१॥

पछितान्यो इक बेर तू यह सेमल फल बीच ।
फिरि सुक सेवन ताहि को लगो कहा रे नीच ॥
लगो कहा रे नीच वहै तरु जानत नाहीं ॥
लखि लखि लाल प्रसून सून मोहत ता माहीं ॥
बरनै दीनदयाल अजौं लगि नहिं पहिचान्यो ।
बेर बेर लै तूल सूल सहि तू पछितान्यो ॥५२॥

तोरै चोंच न कीर ! तू यह पंजर है लोह ।
खुलिहै खुले कपाट के तजि कुल्हिया को मोह ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तजि कुल्हिया को मोह यही बंधन है तोको।
यासों प्रेम लगाय छुटन पाए कहु को को॥
बरनै दीनदयाल छुटै जौं नेह न जोरै।
तो बसिहै आनंद बाग हठि चोंच न तोरै॥५३॥

कोकिल।

कोकिल लोचन ललित करि करिय न कोप बिखाद।
भयो कि मूढ़ द्रयो न जो सुनि के पंचम नाद॥
सुनि के पंचम नाद द्रवैं सुर चतुर विवेकी।
ते न द्रवैं जिहि लगै सुखद बानी कौवे की॥
बरनै दीनदयाल लगै प्रिय साँपनि को बिल।
कहा करैं ते रंगभौन सुनिये हे कोकिल॥५४॥

हे पिक पंचम नाद को नहिं भीलन को ज्ञान।
यहै रीझिबो मानि तू जो न हनै हिय बान॥
जो न हनै हिय बान बड़ी करुना इन केरी।
मारैं ये मृगजूथ कहा गिनती है तेरी॥
बरनै दीनदयाल थको रटि के तुम केतिक।
ये नहिं रीझनिहार जाहु बन को तजि हे पिक॥५५॥

कोकिल दिल दै कीर सों करिए प्रेम सुहात।
दुहुँ रसाल बन सघन के बिहरन-सील कहात॥
बिहरन-सील कहात कंठ कल कोमल देाऊ।
सुजस जगत के माहिं नाहिं तुव पटतर कोऊ।
बरनै दीनदयाल रहो इनहीं तें हिल मिल।
प्रीति समान बखान करैं कविजन हे कोकिल॥५६॥

सोरैं कीस करैं महा किलकारैं इत कोल।
काक बलाक जुरे रटैं कोकिल ह्याँ मति बोल॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कोकिल ह्यां मति बोल नहीं इत बात तिहारी ।
कहा व्यजन की बाय जहाँ बहु बही बयारी ॥
बरनै दीनदयाल कितै सुर पंचम जोरैं ।
सुनै कौन या ठौर जितै ये खल के सोरैं ॥ ५७ ॥

चातक ।

लागे सर सरवर परयो करयो चोंच घन ओर ।
धनि धनि चातक प्रेम तव पन पाल्यो बरजोर ॥
पन पाल्यो बरजोर प्रान परयंत निबाह्यो ।
कूप नदी नद ताल सिंधुजल एक न चाह्यो ॥
बरनै दीनदयाल स्वाति बिन सबही त्यागे ।
रही जन्म भरि बूँद आस अजहूं सर लागे ॥ ५८ ॥

बरषा भरि बरषत धरा धाराधर धरि धीर ।
कहा देख चातक तिनै तो मुख परयो न नीर ॥
तो मुख परयो न नीर नदी नद सबही भरिगे ।
पालि किये बहु सालि बालि जग मैं जस करिगे ॥
बरनै दीनदयाल करो मति तुम आमरषा ।
बुझै नहीं तुव प्यास करै जो केतो बरषा ॥ ५९ ॥

काहे चातक बूंदहित सहत उपल पबिपात ।
कहा सरित सर सूखिगे जे भूखित जलजात ॥
जे भूखित जलजात हंस अवली धवली तें ।
सीतल मधुर पुनीत जासु जल भाँति भली तें ॥
बरनै दीनदयाल तिनै तजि सीकर चाहे ।
सोचत लाभ न हानि सहै द्विज दुख को काहे ॥६०॥

मयूर ।

बानी मधुरी बास बन परभा परम बिसाल ।
बरही ऐगुन एक अति भखत कुव्याल कराल ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

भखत कुव्याल कराल चाल या नहीं भली मैं।
ये सब गुन के जाल जाहिँगे अजस गली मैं॥
बरनै दीनदयाल हाल गति यह तो जानी।
कित वह असन भुजंग कितै यह मृदु बर बानी॥६१॥

धुरवा नहिं दवधूम है नहिं गरजनि तरु सोर।
भ्रमबस कूक करै कहा मरै नाच नचि मोर!॥
मरै नाच नचि मोर न ए दामिनि की दमकैं।
एतो घोर हुतास जोर चहुँ ओर सु चमकैं॥
बरनै दीनदयाल भूलि मति तू मन मुरवा।
तज यह सिखर कराल जरैगो नहिं ये धुरवा॥६२॥

चकोर।

सोच न करै चकोर चित कुहू कु निसा निहारि।
सनै सनै ह्वैहै उदै राका ससि तम टारि॥
राका ससि तम टारि दूरि दुख करिहै तेरो।
धीर धरै किन बीर कहा अकुलाय घनेरो॥
बरनै दीनदयाल लखैगो तू भरि लोचन।
जो तेरो प्रिय प्रान मिलैगो सो अब सोच न॥६३॥

सोवै कितै चकोर! तू सफल करै किन नैन।
चार दिना यह चाँदनी फिरि अँधियारी रैन॥
फिरि अँधियारी रैन सखे! लखि सोच मरैगो।
सजग रहै नहिं भूलि कालकृत जाल परैगो॥
बरनै दीनदयाल लाल! यह काल न खोवै।
रोम रोम प्रति सोम कला फैली कित सोवै॥६४॥

पतंग।

वै तो मानत तोहि नहिं तैं कित भरयो उमंग।
नहिं दीपहि कछु दरद क्यों जरि जरि मरै पतंग॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

जरि जरि मरै पतंग तासु ढिग कदर न तेरी ।
तू अपनो हित जानि भाँवरै भरत घनेरी ॥
बरनै दीनदयाल प्रानप्रिय मान्यो तैं तो ।
मुखमलीन करि रहैं चहैं नहिं तोको वै तो ॥६५॥

उलूक ।

हे रे अंध उलूक तू दुरौ दरी मैं नीच ।
तेरे जान नहीं उदै भये भानु नभ बीच ॥
भये भानु नभ बीच सकल जग तासु अधीने ।
तू एकै खल कूर कहा तो निंदा कीने ॥
बरनै दीनदयाल देख जनि दै उन केरे ।
अपनी भाग बिचार उतै बुध बंदत हेरे ॥६६॥

बायस (कौवा) ।

बायस ! तू पिक मध्य ह्वै कहा करै अभिमान ।
ह्वैहै बंस सुभाव की बोलत ही पहिचान ॥
बोलत ही पहिचान कानकटु तेरी बानी ।
वे पंचम धुनि मंजु करैं जिहि कबिन बखानी ॥
बरनै दीनयाल कोऊ जौं परसै पायस ।
तऊ तजै न मलीन मलहि खाये बिन बायस ॥६७॥

हे रे काग कठोर रट कीरहि दूखत काह ।
सुनि के इनकी मधुर धुनि मोहत हैं नरनाह ॥
मोहत हैं नरनाह हैम पंजर मैं राखैं ।
इनहीं के मुख लखै बैन इनके अभिलाखैं ॥
बरनै दीनदयाल लगै बिख लों तब टेरे ।
कोपे सब इहि लागि भागि ह्यांने खल हे रे ॥६८॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बासा ।

बासा यह तरु पै तुमैं बासा बासर एक ।
बक नहिं इत व्याधा जुरे बहरी और अनेक ॥
बहरी और अनेक का कहें बाज रहै ना ।
जाल परेवा होय जौन दुख सो कहु मैना ॥
बरनै दीनदयाल करै तू केकी आसा ।
लाल मानि अब टेर भजो सर आवत बासा ॥६८॥

सिंह ।

टूटे नख रद केहरी वह बल गयो थकाय ।
हाय जरा अब आइ कै यह दुख दियो बढ़ाय ॥
यह दुख दियो बढ़ाय चहूँ दिसि जंबुक गाजैं ।
ससक लोमरी आदि स्वतंत्र करैं सब राजैं ॥
बरनै दीनदयाल हरिन बिहरैं सुख लूटे ।
पंगु भयो मृगराज आज नख रद के टूटे ॥७०॥

मातंग ।

भाजत हे जिहि त्रास तें दिग्गज दीरघदंत ।
नाहर नहिं नेरे फिरैं देखि बड़ो बलवंत ॥
देखि बड़ो बलवंत गिरैं गिरि कंदर हर तें ।
नदी कूल कुज मूल परसि बिनसैं रद कर तें ॥
बरनै दीनदयाल रह्यो जो सब पै गाजत ।
अहो सोई गजराज आज कलभन तें भाजत ॥७१॥

तोरै मति तरु मूल तें फूल सहित हित नूर ।
अरे निरंकुस दुरद बद दुखद महामद पूर ॥
दुखद महामद पूर लखै नहिं याकी सोभा ।
फल दल भल सुखदानि सकल जग जातें लोभा ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल प्रेम जो सब तें जोरै ।
सो उपकारी मानि मीत ता प्रीति न तोरै ॥७२॥

बारन बारन मति करै ऐ सारँग सुखदानि ।
हे मदमाते अंधमति ह्वैहै तुव छबि हानि ॥
ह्वैहै तुव छबिहानि नहीं छति कछु अलिगन की ।
करिहैं प्रभा प्रकास बिकच बरबारिज बन की ॥
बरनै दीनदयाल जाय जान्यो नहिं कारन ।
बिभौ बिनासि बिसोक बिपिन मैं बिहरै बारन ॥७३॥

आयो हुतो सरोज तजि बड़ी दूर तें भौंर ।
दान देन पीछे रह्यो मारि गिरायो ठौर ॥
मारि गिरायो ठौर गौर गज कछू न कीनो ।
तुम तो कृतघन बने प्रभा तजि अपजस लीनो ॥
बरनै दीनदयाल बूझि बेदन यों गायो ॥
सुख यह जग के माहिं समद तें किनको आयो ॥७४॥

भूपन तें आदर लयो दल को भयो सिँगार ।
अजहूं तजी न बानि गज सिर पर डारत छार ॥
सिर पर डारत छार झूल डारे मखमल की ।
चल्यो हठीली चाल भयो जग सीमा बल की ॥
बरनै दीनदयाल होत नहिं कछु रूपन तें ।
छुटै न बंस सुभाय पाय आदर भूपन तें ॥७५॥

तुरंग ।

घोरे नीकी चाल चल जातें होय बखान ।
छाड़ि ऐब दै आड़ की पछलत्तहुं जनि ठान ॥
पछलत्तहुं जनि ठान सान सों कदम दीजिये ।
बहकि चलै मति राह सीख सिर मानि लीजिये ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल समर तें भागि न भोरे।
मालिक के सँग धाय खाय बनिहै हे घोरे ॥७६॥

कुरंग।

धावै कहा कुरंग ए नहिं है तोय तरंग।
एतो घोर निदाघ की रबिकिरनैं बहुरंग॥
रबिकिरनैं बहुरंग देश मारू यह जानो।
इतै न छाया कहीं नहीं विश्राम ठिकानो॥
बरनै दीनदयाल सुधा जल प्यास न जावै।
हे कुरंग तजि गंग कहा मारू थल धावै ॥७७॥

तेरे ही बिच वस्तु वह जाको जगत सुगंध।
खोजत कहा कुरंग तू! अंबक आछत अंध॥
अंबक आछत अंध कहा दिसि दिसि भरमैहै।
अपनी दिसि अवलोकि तबै वाको सुख पैहै॥
बरनै दीनदयाल मिलै नहिं बाहर हेरे।
अंतरमुख ह्वै ढूंढ़ सुगंध सबै घट तेरे ॥७८॥

जंबुक।

कैसो आयो काल यह गरजन लगे शृगाल।
गाल बजाय कुटिल कहैं कहा केहरी माल॥
कहा केहरी माल ससन के बीच बकैंहै।
पीछे निंदैं नीच मीच को नाहिं तकैहैं॥
बरनै दीनदयाल कठिन दिन आयो ऐसो।
ये बद हद मद करैं जंबुकन के गन कैसो ॥७९॥

सूकर।

सुनि रे सूकर नीचतर कहा करै अभिमान।
जीत्यो मैं यों बकत क्यों अति मृगपति बलवान॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

अति मृगपति बलवान जगत जानै तिहि बल को।
तू मलीन मतिहीन सदा सेवै मल थल को॥
बरनै दीनदयाल आपने बल को गुनि रे।
कहाँ प्रबल मृगराज कहाँ लघु सूकर सुनि रे॥८०॥

शशक।

बांके सर नांके धरे करे भयानक भेख।
कितै छप्यो तृन ओट मैं ससे खोलि दृग देख॥
ससे खोलि दृग देख भाग आनँद घन बन मैं।
नातो तोकों सही हन्यो चाहत कोऊ छन मैं॥
बरनै दीनदयाल कहा ह्वैहै दृग ढाँके।
डर छुटिहैं नहिं व्याध लिये सर आवत बाँके॥८१॥

दोहा।

यह अन्योक्ति-सुकल्पद्रुम साखा दुतिय बखानि।
बिरची दीनदयालगिरि कवि द्विजवर सुखदानि॥८२॥

इति श्रीकाशीवासी दीनदयालगिरिविरचिते अन्योक्तिकल्पद्रुमग्रन्थे द्वितीया शाखा समाप्ता।

मनुष्य जातिविशेष—ब्राह्मण।

हे पांड़े यह बात को को समुझे या ठाँव।
इतै न कोऊ हैं सुधी यह ग्वारन को गाँव॥
यह ग्वारन को गाँव नाँव नहिं सूधे बोलैं।
बसैं पसुन के संग अंग ऐड़े करि डोलैं॥
बरनै दीनदयाल छाँछ भरि लीजै भांड़े।
कहा कहो इत हास सुनै को इत हे पांड़े॥१॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

क्षत्रिय ।

पैहो कीरति जगत में पीछे धरो न पाँव ।
छत्रीकुल के तिलक हे महासमर या ठाँव ॥
महासमर या ठाँव चलै सर कुंत कृपानैं ।
रहे बीरगण गाजि पीर उर मैं नहिं आनैं ॥
बरनैं दीनदयाल हरखि जौ तेग चलैहौ ।
ह्वैहो जीते जसी मरे सुरलोकहिं पैहो ॥ २ ॥

वैश्य ।

वारे को तू बनिक है सौदा लै इहि हाट ।
चौमुख बनो बजार है बहु दुकान को ठाट ॥
बहु दुकान को ठाट कोऊ साँची कोऊ झूठी ।
आछी भाँति विचारि वस्तु लै बड़ी अनूठी ॥
बरनै दीनदयाल खोउ धन वृथा न प्यारे ।
घर आवेगो काम इते सब लूटनवारे ॥ ३ ॥

भारी भार भरयो बनिक तरिबो सिंधु अपार ।
तरी जरजरी फँसि परी खेवनिहार गँवार ॥
खेवनिहार गँवार ताहि पर पैान झकोरै ।
रुकी भवँर में आय उपाय चलै न करोरै ॥
बरनै दीनदयाल सुमिर अब तू गिरधारी ।
आरत जन के काज कला जिन निज संभारी ॥ ४ ॥

माली ।

माली तेरे बाग में चंदन लगो बिसाल ।
ताप करै किन दूरि तू खोजत कितै बिहाल ॥
खोजत कितै बिहाल तिहूँ गुन यामैं देखो ।
कटु अरु सीत सुगंध भली बिधि करो परेखो ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल भूलि भरमै कित खाली !
जाको बरनै वेद सोई यह चंदन माली ॥ ५ ॥

आली चंदन की न क्यों पाली माली कूर ।
मतवाली मति तो भई सींचत बेरि बबूर ॥
सींचत बेरि बबूर दुखद कंटक हैं ताके ।
सेवत क्यों नहिं अंध गंध मुदकर वर जाके ॥
बरनै दीनदयाल सबै श्रम जैहै खाली ।
पालत है किन तापसमन चंदन की आली ॥ ६ ॥

मालो नींब रसाल सँग लाय करी अनरीति ।
काग आम पिक नींव पै बैठारे बिपरीति ॥
बैठारे बिपरीति रीति तूं कछू न बूझै ।
स्याम स्याम सब एक नहिं ऐगुन गुन सूझै ।
बरनै दीनदयाल कौन यह तेरी चाली ॥
कोकिल तें करि ऊँच काग को मानत माली ॥ ७ ॥

कुलाल ।

कैसो मद मैं है भरो याकी करो पिछान ।
यहि कुलाल कों देखिए अहो प्रपंच-निधान ॥
अहो प्रपंच-निधान रंच काहू नहिं मानै ।
आपै बनै बिरंचि समो बहु रचना ठानै ॥
बरनै दीनदयाल समै अब आयो ऐसो ।
बिधि की समता करै कुलाल कूर यह कैसो ॥ ८ ॥

दरजी ।

दरजी सीवत तोहि गे दिन बहु बरनै कौन ।
कोन बीच बसि क्या करै अंधकार इहि भौन ॥
अंधकार इहि भौन आय के छाय रह्यो है ।
टूट गई है सुई सूत अरुझाय रह्यो है ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल लोग सब अपने गरजी ।
जामा जोरन भयो कहा अब सीवै दरजी ॥९॥

रजक ।

ए रे मेरे धोबिया तोसों भाखत टेरि ।
ऐसी धोनी धोइ जो मैलो होय न फेरि ॥
मैलो होइ न फेरि चीर इहि तीर न आवै ।
साबुन लाउ बिचार मैल जातें छुटि जावै ॥
बरनै दीनदयाल रंग चढ़ि है चहुँ फेरे ।
जो तू दैहै धोय भले जल उज्जल ए रे ॥१०॥

नट ।

धारत नट बहु स्वाँग हौं कला अनेक प्रवीन ।
कबहूँ करी न वह कला जहाँ कला सब लीन ॥
जहाँ कला सब लीन कला सफला है सोई ।
और कला जग चला जथा चपला घन होई ॥
बरनै दीनदयाल भागि जनि आगि निहारत ।
धरे सती को स्वाँग कहा पग पीछे धारत ॥११॥

राजा ह्याँ है आँधरो मूक बधिर अज्ञान ।
सभा सबै तैसी भरी ताने कहा बितान ॥
ताने कहा बितान अरे नट बुद्धि-बिहीने ।
लखै सराहै कौन सुनै गो दृगश्रुति हीने ॥
बरनै दीनदयाल सुनाट्य-कला सुर बाजा ।
ह्वैहैं बन के फूल भूल मति तू गुनि राजा ॥१२॥

दारुनटी (कठपुतली)

तेरी है कछु गति नहीं दारु चीर को मेल ।
करै कपट पट ओट मैं वह नट सबही खेल ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

वह नट सबही खेल खेलि फिरि दूर रहै है ।
ह्वै बिन बनै प्रपंच कहो को कूर कहै है ॥
बरनै दीनदयाल कला वा पै बहुतेरी ।
जो जो चाहै नाँच कढ़ै सो सो गति तेरी ॥१३॥

नटी ।

नीकी विधि चलि री नटी अति सूछम इह राह ।
राम राम मुख ध्यान पद ह्वैहै तबै निबाह ॥
ह्वैहै तबै निबाह सबै गो गोचर अपने ।
बस करिके चलि सूध नहीं चित चालै सपने ॥
बरनै दीनदयाल डिगै फिर खोजन जो की ।
ये सब देखनिहार न दैहैं उपमा नीकी ॥ १४ ॥

ग्वालिनी ।

बारि बिलोवै डारि दधि अरी आँधरी ग्वारि ।
ह्वैहै श्रम तेरो वृथा नहिं पैहै घृत हारि ॥
नहिं पैहै घृत हारि हँसैंगी सखी सयानी ।
तू अपने मन मान रही घर की ठकुरानी ॥
बरनै दीनदयाल कहा दिन योंही खोवै ।
पछतैहै री अंत कंत ढिग बारि बिलोवै ॥१५॥

किरातिनी ।

गुंजन को बन देखि कै मुकुतन दीनी त्यागि ।
अरी अबूझ किरातिनी धिक धिक तेरी लागि ॥
धिक धिक तेरी लागि न ऐगुन गुन पहिचानै ।
ऊपर ही के रंग ठगी मतिमूढ़ न जानै ॥
बरनै दीनदयाल परी यह तो सब कुंजन ।
कौड़ी याको मोल लाल लखि भूलि न गुंजन ॥१६

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पनिहारिन ।

पनिहारी इहि सर परे लरति रही सब पाँह ।
रीतो घट लै घर चली उतै मारिहै नाह ॥
उतै मारिहै नाह काह तिहि उत्तर दैहै ।
रोय रोय पति खोय फेरि सर पै फिरि ऐहै ॥
बरनै दीनदयाल इतै हँसिहैं सब नारी ।
ख्वारी दुहुँ दिसि परी अरी ग्वारी पनिहारी ॥ १७ ॥

तमोलिनी ।

बौरी दौरी में धरे बिन सींचे मति भूल ।
फेरै क्यों न तमोलिनी ! सूखै सड़ै तमूल ॥
सूखै सड़ै तमूल बहुरि पीछे पछतैहै ।
ऐहै गाहक लैन कहा तब ताको दैहै ॥
बरनै दीनदयाल चूक जनि तू इहि ठौरी ।
आछी भाँति सुधारि वस्तु अपनी रखि बौरी ॥१८॥

किसान ।

आछी भाँति सुधारि कै खेत किसान बिजोय ।
नत पीछे पछतायगो समै गयो जब खोय ॥
समै गयो जब खोय नहीं फिरि खेती ह्वैहै ।
लैहै हाकिम पोत कहा तब ताको दैहै ॥
बरनै दीनदयाल चाल तजि तू अब पाछी ।
सोउ न, सालि सम्हालि बिहंगन तें बिधि आछी ॥१९॥

गढ़धनी ।

साथी पाथी भे सभे गढ़ी ढहै चहुँ फेरि ।
आनि बनी अरि की अनी धनी खोलि दृग हेरि
धनी खोलि दृग हेरि धवल धुज आय बिराजे ।
बोलन लगे नकीब डंक अब तो तिहुँ बाजे ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल साजि अब अपनो हाथी ।
हरि को टेर सहाय गये सब तेरे साथी ॥ २० ॥

चौपर-खेलारी ।

अहे खेलारी चूक मति पंजा विखे सम्हाल ।
परो दाव तेरो खरो करि लै सारी लाल ॥
करि लै सारी लाल लाल निज चाल न छूटै ।
सनमुखही मुख राखि देख जुग कहूँ न फूटै ॥
बरनै दीनदयाल जीति बाजी इहि बारी ।
हारो मूढ़न संग बार बहु अहे खेलारी ॥ २१ ॥

चंग-उड़ायक ।

काँचे गुन छाड़ै नहीं अरे उड़ायक कूर ।
जैहै कर तें टूटि कै उड़ो गुड़ो कहुँ दूर ॥
उड़ो गुड़ी कहुँ दूरि लूटि लरिका सब लैहैं ।
तो को जानि गँवार हँसी करतारी दैहैं ॥
बरनै दीनदयाल माँजु गुन को बिन जाँचे ।
ह्वैहै गुनी प्रबीन छाँड़ि जनि तू गुन काँचे ॥२२॥

जौहरी ।

मैली थैली लखि न तू भ्रमै प्रेम करि खोलि ।
अहे जौहरी है खरी या में मनि अनमोल ॥
या सें मनि अनमोल तोल करि ताको लीजै ।
कीजै कछू न खोटि कोटि धन तापै दीजै ॥
बरनै दीनदयाल यथा मजनू मन लैली ।
तैसे ही अनुरागि त्यागि मति मैली थैली ॥ २३ ॥
नीकी मुकुतन की लरी पै ह्याँ गाहक नाहिं ।
इत सबरी सबरी भरीं सगरी नगरी माहिं ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

सगरी नगरी माहिं फिरनहारी कुंजन की।
कबरी-भारनि रचैं आनि अबली गुंजन की॥
बरनै दीनदयाल बूझ कैसी तबही की।
अहे जौहरी जौन कौन पै बरनै नीकी॥ २४॥

सौदागर।

सौदागर तू समुझि कै सौदा करि इहि हाट।
जैहै उठि दिन दोय मैं पछितैहै फिरि बाट॥
पछितैहै फिरि बाट बस्तु कछु भली न लीनी।
योंही लंपट होय खोय सब सम्पति दीनी॥
बरनै दीनदयाल कौन विधि ह्वैहै आदर।
गये आपने देस बिना सौदा सौदागर॥ २५॥

चित्रकार।

क्या है भूलत लखि इन्हैं अहे चितेरे चेत।
ए तो अपने ऐन में रचे आपने हेत॥
रचे आपने हेत चराचर चित्रहिं तूने।
डरै भ्रमै मति मीत तोहि बिन ये सब सूने॥
बरनै दीनदयाल चरित अति अचरज या है।
रँगे आपने रंग तिनै लखि भूलत क्या है॥ २६॥

पाहरू।

सुनिये एहो पाहरू कहेां तिहारे हेत।
औरन को टेरत फिरो निज घर को नहिं चेत॥
निज घर को नहिं चेत चोर चोरै धन जावैं।
घर की आग बुझाय सबै बाहिरै बुझावैं॥
बरनै दीनदयाल आपने ही चित गुनिये।
बित हू जैहै लोग हँसैंगे सिगरे सुनि ये॥ २७॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

छैल ।

ए जू छैल छबील मन तुमै कहौं समुझाय ।
यह काजर की ओबरी निकरो अंग बचाय ॥
निकरो अंग बचाय चातुरी तो जग जागै ॥
सिर पै चादर सेत बीच जो दाग न लागै ॥
बरनै दीनदयाल बोध यह बुधन दये जू ।
को न कुसंगति पाय कुलीन मलीन भये जू ॥ २८ ॥

बजंत्री ।

अहे बजंत्री हरिन-भ्रम कहा बजावै बीन ।
या ठठेर-मंजारिका सुर सुनि मोहैगी न ॥
सुर सुनि मोहैगी न सुने इन ठकठक बाजैं ।
कितै थकै करि कला अजौं नहिं आवति लाजैं ॥
बरनै दीनदयाल कहा याके ढिग तंत्री ।
ह्यांतें होय निरास जाय घर अहे बजंत्री ॥ २९ ॥

मृदंग ।

सारंगी हित त्यागि कित रह्यो मृदंग दुराय ।
करिहै सिर पै थाप लै धिगधिग तू सिख पाय ॥
धिग धिग तू सिख पाय तबै कछु मधुर बोलिहै ।
सुघर बजंत्री जबहि पिंड गहि पटहि खोलिहै ॥
बरनै दीनदयाल ढूंढ़ि गुर सुर मिलि संगी ।
मिलो तहाँ चलि जहाँ बीन बाजत सारंगी ॥३०॥

शंख ।

जनमे हौ बरकुल विषे जग गुन गने असंख ।
बजे बिजै बहु बार पै रहे संख के संख ॥
रहे संख के संख संख तुम हौ भीतर तें ।
कहा करो अभिमान धरयो हरि जौ निज कर तें ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल बिमल छवि छाई तन में।
ऊँच नीच मुख लगो कहा भो बर कुल जनमे ॥३१॥

पाषाण।

मूरुख हृदय कठोर लखि हारे करि करि मान।
तातें मज्जत जल विषे अहो सलज्ज पखान॥
अहो सलज्ज पखान बड़ो तुम मैं गरुआई।
जोरे तें जुरि जात अहैं ये द्वै अधिकाई॥
बरनै दीनदयाल कितो करिये वह पूरुख।
जुरे न लाये हेत होत अतिसै जो मूरुख॥ ३२॥

बाण।

हे सर परबस नहिं करो कुटिल धनुख सों संग।
सूधे हो कहुँ फेकिहै टूटि जाहिंगे अंग॥
टूटि जाहिंगे अंग अंग तासों निबहै नहिं।
गुन पै राचे कहा कोटि रचना याके महिं॥
बरनै दीनदयाल कहाँ कारिख कहँ केसर।
तैसेई है संग बंक सूधे को हे सर॥ ३३॥

अंग-विशेष—तत्र रसना।

रसना ए तो दसन हैं सुनि द्विजनाम न मोहि।
इन्है न पंडित मानिये खंडित करिहैं तोहि॥
खंडित करिहैं तोहि रहो निज रूप बचाये।
तोतें बहुत कठोर जोर इन चने चबाये॥
बरनै दीनदयाल समुझि इनके संग बस ना।
ऊपर उज्ज्वल रूप देखि मति मोहै रसना॥ ३४॥

नयन।

सपनेहूँ ब्रजराज छबि लखी न तुम हे नैन।
तातें भटके फिरत हौ लहै कहूँ नहिं चैन॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

लहै कहूँ नहिं चैन रूप जग के सेमल से ।
छले गये नहिं कौन सुमन सुक केते छल से ॥
बरनै दीनदयाल गुनी तुम अंतर अपने ।
ढके पलक के खलक रूप ह्वैहैं सब सपने ॥ ३५ ॥

श्रवन ।

खोये दिन बहु श्रवण हे सुनत वृथा बकवाद ।
सुने न हरिहर मधुर जस जासु सुधासम स्वाद ॥
जासु सुधा सम स्वाद अमर पद देत सुने तें ।
थके धीर गुन गाय छके रस पाय न केते ॥
बरनै दीनदयाल काल तुम वादि बिगोये ।
अजहू सुनि करि प्यार कहा दिन डारत खोये ॥ ३६ ॥

दोहा ।

यह अन्योक्ति-सुकल्पद्रुम साखा तृतिय बखानि ।
बिरची दीनदयालगिरि कवि द्विजवर सुखदानि ॥ ३७ ॥

इति श्रीकाशीवासी दीनदयालगिरिविरचिते अन्योक्तिकल्प-
द्रुमग्रंथे तृतीया शाखा समाप्ता ॥

कैवर्तक—(सिंहावलोकन)

तारे तुम बहु पथिन को यह नद धार अपार ।
पार करो इहि दीन को पावन खेवनिहार ॥
पावन खेवनिहार तजो जनि कूर कुबरनैं ।
बरनैं नहीं सुजान प्रेम लखि लेहु सुबरनैं ॥
बरनै दीनदयाल नाव गुन हाथ तिहारे ।
हारे को सब भाँति सुबनिहै पार उतारे ॥ १ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पथिक—(सिंहावलोकन)

मारे जैहो पथिक हे या पथ है बटपार।
पार होन पैहो नहीं मारि डारिहैं वार॥
मारि डारिहैं वार भजो ये फिरैं अनेरैं।
नेरैं तुमको कोपि तकैं ज्यों बाज बटेरैं॥
टेरैं दीनदयाल सुनो हित हेत तिहारे।
हारे परिहो सखे राख धन कहे हमारे॥ २॥

राही खड़े असोक क्यों बकुलध्यान यह बेल।
है डकैत छाया तजो लख्यो न याको खेल॥
लख्यो न याको खेल सिरसि पा-कर बर चोटैं
कोऊ नहिं सहकार अकेला लगिहो लोटैं॥
बरनै दीनदयाल जटे इन जटी सुकाही।
जाहु चले या बेर कदम गहिपति लै राही॥ ३॥

सोई देस बिचारि के चलिये पथी सुचेत।
जाके जस आनंद की कबिबर उपमा देत॥
कबिबर उपमा देत रंक भूपति सम जामैं।
आवागौन न होय रहै मुदमंगल तामैं॥
बरनै दीनदयाल जहाँ दुख सोक न होई।
एहो पथी प्रबीन देस को जैये सोई॥ ४॥

कोई संगी नहिं उतै है इतही को संग।
पथी लेहु मिलि ताहितें सब सों सहित उमंग॥
सब सों सहित उमंग बैठि तरनी के माहीं।
नदिया नाव सँजोग फेर यह मिलिहै नाहीं॥
बरनै दीनदयाल पार पुनि भेंट न होई।
अपनी अपनी गैल पथी जैहैं सब कोई॥ ५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ग्राहैं प्रबल अगाध जल यामें तीछन धार।
पथी पार जो तू चहै खेवनिहार पुकार॥
खेवनिहार पुकार वार नहिं कोऊ साथी।
और न चलै उपाव नाव बिन एहो पाथी॥
बरनै दीनदयाल नहीं अब बूड़ै थाहैं।
रहे महामुख बाय ग्रसन को भारी ग्राहैं॥६॥

राही सोवत इत कितै चोर लगैं चहुँ पास।
तो निज धन के लेन को गिनैं नींद की स्वास॥
गिनैं नींद की स्वास बास बसि तेरे डेरे।
लिये जात बनि मीत माल ये साँझ सबेरे॥
बरनै दीनदयाल न चीन्हत है तू ताही।
जाग जाग रे जाग इतै कित सोवत राही॥७॥

संबल जल इत लै पथी आगे नहीं निबाह।
दूर देस चलिबो महा मारू थल की राह॥
मारू थल की राह संग कोऊ नहिं तेरे।
सजग हाथ धन राख लगैं पथ चोर घनेरे॥
बरनै दीनदयाल कठिन बचिबो है कंबल।
सखे परैगी जानि उतै इत लै जल संबल॥८॥

जैयै गैल सुछैल बनि पथी सुपंथ बिचारि।
भ्रमो न ठगिनी मारिहै तुमैं ठगोरी डारि॥
तुमैं ठगोरी डारि छीनि सबही धन लैहै।
महा अंध बन कूप बीच या नीच छपैहै॥
बरनै दीनदयाल लाल निज माल बचैये।
अहै ठगन को पुंज कुंज इत गुनि कै जैये॥९॥

सपने पथी सराय परि कहा रचत है राज।
भोर भये छुटिहै यहू तोहि सराय समाज॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तोहि सराय समाज छूटि साथी सब जैहैं।
भठिहारी सों नेह करै मति तैं पछितैहैं॥
बरनै दीनदयाल सोचि नीके चित अपने।
मनोराज-पथ बीच कौन सुख पायो सपने॥१०॥

मालिनी छंद।

सुनहु पथिक भारी कुंज लागी दवारी।
जहँ तहँ मृग भागे देखिये जात आगे॥
फिरत कित भुलाने पाय ह्वैहैं पिराने।
सुगम सुपथ जाहू बूझिये क्यों न काहू॥११॥

बहुत दिवस बीते गैल में तोंहि मीते।
मुख रुख कुंभिलाने बैठि ले या ठिकाने॥
अहह संग न साथी दूर है देस पाथी।
बिलम नहिं भलो जू संबलै लै चलो जू॥१२॥

बहुत बिध दुकानैं हैं लगीं तू न जानै।
बनिक बहु बिधा के सोहते रूप जाके॥
निपुन निरखि लीजै बस्तु मैं चित्त दीजै।
पथिक नहिं ठगावै देखि तू रैनि आवै॥१३॥

निपट निसि अँधेरी नाहिं सूझै हथेरी।
बहु बिध ठग घेरे मीत कोऊ न तेरे॥
पथिक इत न सोवै भूलि बित्तैं न खोवै।
जगत रहि सुचेतै हौं कहों तोहि हेतै॥१४॥

अभिनव घनस्यामैं ध्याउ आभा सु जामैं।
बिसद बकुल-माला सोभती हैं बिसाला॥
द्विजगन हरखावैं ध्यान के मोद पावैं।
पथिक नयन दीजै ताप को सांत कीजै॥१५॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कुंडलिया ।

बीती सोवत रैनि सब होन चहै अब भोर ।
पथी चेत कर पंथ को चिरियन लायो सोर ॥
चिरियन लायो सोर देख चहुँ ओर घोर बन ।
चोर लगें बरजोर सखे यह ठौर राख धन ॥
बरनै दीनदयाल न गाफिल ह्वै इत भीती ।
साथी पाथी भये जाग अजहूँ निसि बीती ॥१६॥

हारे भूली गैल मैं गे अति पाय पिराय ।
सुनो पथी अब तो रह्यो थोरो सो दिन आय ॥
थोरो सो दिन आय रहे हैं संग न साथी ।
या बन हैं चहुँ ओर घोर मतवारे हाथी ॥
बरनै दीनदयाल ग्राम सामीप तिहारे ।
सूधे पथ को जाहु भूलि भरमो कित हारे ॥१७॥

चारो दिसि सूझै नहीं यह नद-धार अपार ।
नाव जरजरी भार बहु खेवनिहार गँवार ॥
खेवनिहार गँवार ताहि पर है मतवारो ।
लिये भौंर में जाय जहाँ जल-जंतु-अखारो ॥
बरनै दीनदयाल पथी बहु पैान प्रचारो ।
पाहि पाहि रघुवीर नाम धरि धीर उचारो ॥१८॥

देखो पथी उघारि कै नीके नैन बिवेक ।
अचरजमय यह बाग में राजत है तरु एक ॥
राजत है तरु एक मूल ऊरध अध साखा ।
है खग तहाँ अचाह एक इक बहु फल चाखा ॥
बरनै दीनदयाल खाय सो निबल बिसेखो ।
जो न खाय सो पीन रहै अति अदभुत देखो ॥१९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

देखो पथी अचंभ यह जमुनातट धरि ध्यान।
महि मैं बिहरैं कंज द्वै करैं मंजु अलि गान॥
करैं मंजु अलि गान नील खंभा तहँ देा पर।
पिक धुनि दामिनि बीच तहाँ सर हंस मनोहर॥
बरनै दीनदयाल संख पै सोम बिसेखो।
ता ऊपर अहितनै ताहि पर बरही देखो॥ २०॥

या बन में करि केहरी कूप गँभीर अपार।
द्वै पहार के ओट में बसत एक बटपार॥
बसत एक बटपार उभै धनु सर संधाने।
ता पीछे इक स्याह नागिनी चाहति खाने॥
बरनै दीनदयाल इनै लखि डरिये मन में।
पथी सुपंथ बिहाय भूलि जनि जा या बन में॥ २१॥

फूली है सुखमामई नई लहलही जेाति।
छई ललित पल्लवनि तें लखि दुति दूनी होति॥
लखि दुति दूनी होति चपल अलि या पै देा हैं।
लगे गुच्छ द्वै बीच वहै जन को मन मोहैं।
बरनै दीनदयाल पथिक है कित मति भूली।
या तेा मारक महा-छली बिषबल्ली फूली॥ २२॥

मोहै चंपक छबिन तें पथिकन यह आराम।
कुंद कली अवली भली लसत बिंब बसु जाम॥
बसत बिंब बसु जाम कीर खंजन सँग मिलि के।
सजैं भौंर तित लोल बोल बिलसैं कोकिल के॥
बरनै दीनदयाल बाग यह पथ को सोहै।
पथी गौन है दूरि देख बीचहि मति मोहै॥ २३॥

चारो दिसि लहरी चलै बिलसै बनज बिसाल।
चपल मीन-गति लसति अति तापर सजै सिवाल॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तापर सजै सिवाल हंस-अवली सित सोहै ।
कोक जुगल रमनीय निरखि सर मैं मति मोहै ॥
बरनै दीनदयाल मकरपति यामैं भारो ।
त्रास मानि हे पथी ग्रास करिहै लखि चारो ॥ २४ ॥

शांत-शृंगार-संयम ।

भूलै जोबन के न मद्द अरी बावरी बाम ।
यह नैहर दिन चार को अंत कंत सों काम ॥
अंत कंत सों काम तंत सबही तजि दै री ।
जातें रीझै नाह नेह नव तातें कै री ॥
बरनै दीनदयाल भूष भूषन अनुकूलै ।
चलि पिय गेह सनेह साजि लखि देह न भूलै ॥ २५ ॥

गौने को दिन निकट अब होन चहै पिय मेल ।
अजहूँ छुटो न तोहि री गुड़ियन को यह खेल ॥
गुड़ियन को यह खेल खेलि सब समै बिगारे ।
सिखे नहीं गुन कछू पिया-मन मोहनवारे ॥
बरनै दीनदयाल सीख पैहै पिय भौने ।
एरी भूषन साजि भटू दिन आवत गौने ॥ २६ ॥

तू मति सोवै री परी कहों तोहि मैं टेरि ।
सजि सुभ भूषण बसन अब पिया मिलन की बेरि ॥
पिया मिलन की बेरि छाँड़ अजहूँ लरिकापन ।
सूधे दृग में हेरि फेरि मुख ना, दै तन मन ॥
बरनै दीनदयाल छमैगो चूकनहूँ पति ।
जागि चरन में लागि सभागिन सोवै तू मति ॥ २७ ॥

पिय तें बिछुरे तोहि री बिते बहुत हैं रोज ।
पिय पिय पपिहा जड़ रटै तू न करै पिय-खोज ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

तू न करै पिय-खोज कितै दुरमति मैं भूली ।
होन लगे सित केस कौन मद मैं अब फूली ॥
बरनै दीनदयाल सुमिरि अजहूँ तेहि हिय तें ।
हैं सब तेरी चूक नहीं कछु तेरे पिय तें ॥ २८ ॥

औरी पिय सों सब तिया मिलीं महल में जाय ।
तू बौरी पौरी धरे बाहर ही पछिताय ॥
बाहरही पछिताय रही अपनी करनी तें ।
अली लगी अति देर चली कौनी सरनी ते ॥
बरनै दीनदयाल चूक तेरी इहि ठौरी
अब तो लगे कपाट भई यह बेला औरी ॥२९॥

मोहै नाहिं निहारि तू एरी नारि गँवारि ।
ये दूती हैं जार कीं तोहि बिगारनिहारि ॥
तोहि बिगारनिहारि कहै मधुरी मृदु बातैं ।
तैं सुनिकै ललचाय लखै नहिं इनकी घातैं ॥
करिहैं दीनदयाल कंत सों तोहि बिछोहैं ।
अंत धरम बिनसाय कलंक लगाय बिमोहैं ॥३०॥

पति के ढिग जनि जार पै मार नयन के बान ।
जानत सब बिभिचार तव गुनत न नाह सुजान ॥
गुनत न नाह सुजान कृपामय मानि अपानी ।
बाँह गहे की लाज बिचारत स्वामि सुज्ञानी ॥
बरनै दीनदयाल बैन सुनि एरी मति के ।
ह्वै अपजस अघ अंत किये छल सनमुख पति के ॥ ३१ ॥

स्वामी सुंदर सीलजुत अपनो गुनी कुलीन ।
ताहि त्यागि पर-नाह सठ सेवति कहा मलीन ॥
सेवति कहा मलीन हीन मति कुलटा बौरी ।
सुधासिंधु तजि सुधा फिरै मृग जल को दौरी ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल अरी ह्वैहै बदनामी ।
जार गँवारहिं भजे तजे बर अपनो स्वामी ॥ ३२ ॥
औरे सब जग पुरुख को अपने पति परिवार ।
जैसो कैसो निज भलो दुहुँ कुल तारनिहार ॥
दुहुँ कुल तारनिहार सुजस गति तासों लहिये ।
इतर संग भय होय खोय कीरति दुख सहिये ॥
बरनै दीनदयाल सील लाजहुँ या ठौरे ।
राखि राखि री राखि छाड़ि जग के पति औरे ॥ ३३ ॥
तेरेही अनुकूल पिय किन बिनवै प्रिय बोलि ।
घट में खटपट मति करै घूंघट को पट खोलि ॥
घूंघट की पट खोलि देखि लालन की सोभा ।
परम रम्य बुधगम्य जासु छबि लखि जग लोभा ॥
बरनै दीनदयाल कपट तजि रहु प्रिय नेरे ।
बिमुख करावनिहार तोहि सनमुख बहुतेरे ॥ ३४ ॥
येरी जोबन छनक है सुनि री बाल अजान ।
निज नायक अनुकूल तें नहीं चाहिये मान ॥
नहीं चाहिये मान देख यह समै सजै है ।
द्विजगन के कल गान सुनो पिय पोय भजै है ॥
बरनै दीनदयाल सीख सुनि सुंदरि मेरी ।
बिहरि बिहारी नाह पाँहँ तेहि छाँहँ अयेरी ॥ ३५ ॥
बिछुरी तू बहु काल तें पौढ़ी पीतम पाहँ ।
कछु बीती निसि नींद में कछु कलहन के माहँ ॥
कछु कलहन के माहँ रही मुख फेरि कठोरी ।
पिय हिय लायो नाहिं मोद नहिं पायो बोरी ॥
बरनै दीनदयाल रही अब निसि ना कछु री ।
यह प्यारे परजंक पौढ़ि अजहू लों बिछुरी ॥ ३६ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

कासो पाती हों लिखों का पै कहों सँदेस।
जे जे गे ते नहिं फिरे वहि पीतम के देस॥
वहि पीतम के देस बड़ो अचरज या भासै।
कहूं न तम को लेस तहाँ बिन भानु प्रकासै॥
बरनै दीनदयाल जहाँ नित मोद-मवासो।
जनमादिक दुखदुंद नहीं चर कहिये कासो॥ ३७॥

सती।

पति की संगति री सती लै सुगती इहि आगि।
धरे सिँधोरा कर परे अब दै डगमग त्यागि॥
अब दै डगमग त्यागि भागि जनि चेति चिता कों।
जरे मरे सिधि पाउ कलंक न लाउ पिता कों॥
बरनै दीनदयाल बात यह नीकी मति की।
सुजस लोक परलोक श्रेय लै संगति पति की॥ ३८॥

मोहविवेकादि वर्णन।

जीवत हो यह जगत में देह मरे के अंत।
अहो मोह अति सिद्ध है तुम मैं कला अनंत॥
तुम मैं कला अनंत संत गुनि अचरज भाखत।
सोक अनल के माहँ हृदय बारिज को राखत॥
बरनै दीनदयाल नेह मैं नचो नटीवत।
देखि परो नहिं ज्ञान दिव्य लोचन को जीवत॥ ३९॥

काम।

हरतन धरि कोपागि जग जारत प्रलै कराल।
तुम जारत जग-जनक मन अतन हँसत बिन काल॥
अतन हँसत बिन काल ज्वाल ससि मुख तें व्यापी।
वे लीने कर सूल फूल सर तातें तापी॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल जयो तेहि लीलापन करि ।
हारि रहे सब भांति लखत तव बल हर तन धरि ॥ ४० ॥

ह्यां मति आवो मार तुम मारे रथी अपार ।
यह हर-ईछन तीसरो तीछन बड़ो विचार ॥
तीछन बड़ो विचार तुम्हैं लै छार करैगो ।
सबही तो परिवार रोय बहु बार मरैगो ॥
बरनै दीनदयाल काम ह्वैहै तब क्या गति ।
उतै रहो कहुँ बहो प्रान लै आवो ह्यां मति ॥ ४१ ॥

क्रोध ।

जिहि मन तें उदभव भयो जिहि बल जग मैं सूर ।
तिहि निसि दिन जारत अहो दुसह कोपगति कूर ॥
दुसह कोपगति कूर बड़ो कृतघन जग मों है ।
प्रथम दहत है आप बहुरि दाहत सब को है ॥
बरनै दीनदयाल कोप तू सुनि सब जन तें ।
अजस होत जनि दहै भयो उदभव जिहि मन तें ॥ ४२ ॥

भाजत लै भा लपि तुमै इन नैनन के ईस ।
करत महा तम क्रोध तुम कौन करै तव रीस ॥
कौन करै तव रीस एक गुन मैं जग ल्यावत ।
अधर द्विजन भ्रू नाक निमिष मैं सबै नचावत ॥
बरनै दीनदयाल घोर धन लों छन गाजत ।
एहो कोप प्रचंड कौन नहिं तुम तें भाजत ॥ ४३ ॥

लोभ ।

तुमरी लोभ कलानि कों अचरज कहैं प्रबीन ।
ज्यों ज्यों वय ग्रासै जरा त्यों त्यों होत नबीन ॥
त्यों त्यों होत नबीन सकल जन को तुम देखत ।
खरे रहो सब तीर न कोऊ तो तन पेखत ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल अलख मति तो मति घुमरी।
लही न पुरी बराट कला यह चूकति तुमरी ॥ ४४ ॥

अँचयो कुंभज नीरनिधि सेा सिध बड़े कहात।
तुम जगजीवन निधिनिकर सीकर सम चटि जात ॥
सीकर सम चटि जात लोभ तब प्यास न जाई।
तुम अकास ऋषि रेनु कहा तिन केरि बड़ाई ॥
बरनै दीनदयाल लोक तिहुं ग्रसि कै पचयो।
तऊ भूख नहिं प्यास गई सत सागर अँचयो ॥ ४५ ॥

आसा की डोरी गरे बाँधि देत दुख षोभ।
चित पितु को बंदर कियो अहो कलंदर लोभ ॥
अहो कलंदर लोभ छोभ दै नाच नचावत।
जदपि निरादर चोट समुझि अतिसै दुख पावत ॥
बरनै दीयदयाल लोग सब लखैं तमासा ।
भरमावै घर घरहिं तऊ नहिं पूरति आसा ॥४६॥

दंभ।

देखो कपटी दंभ को कैसेा याको काम।
बेचनिहारेा बेर को देत दिखाय बदाम ॥
देत दिखाय बदाम लिये मखमल की थैली।
बाहिर बनी बिचित्र बस्तु अंतर अति मैली ॥
बरनै दीनदयाल कौन करि सकै परेखेा ।
ऊँची बैठि दुकान ठगै सिगरो जग देखेा ॥४७॥

अभिमान।

करनी जंबुक जून ज्यों गरजन सिंह समान।
क्यों न डरै जग लखि तुमै अहेा बीर अभिमान ॥
अहेा बीर अभिमान धरा को धीर धरैगेा।
कोप न करेा प्रचंड सबै ब्रहमंड जरैगेा ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल गिरा भट तेा मति बरनी ।
धरनीधर लेां गई नई यह अदभुत करनी ॥ ४८ ॥

विवेक ।

सुनिये बैन बिबेक जू हौ नृप धीरज धाम ।
जौ लगि जीवत काम यह तौ लगि होय न काम ॥
तौ लगि होय न काम बड़ो खल है रिपु दल मैं ।
याकी कला अनेक सकल जग जाते छल मैं ॥
बरनै दीनदयाल बिरति सेां मिलि हित गुनिये ।
भनै जु मंत्री साधु सीख साची सेा सुनिये ॥ ४९ ॥

करिये वेगि बिबेक जू शांति प्रिया की सेाध ।
सकुल कृतारथ होहुगे उपजत पूत प्रबेाध ॥
उपजत पूत प्रबेाध बजैगी अनँद बधाई ।
धन्य कहैंगे धीर रहैगी कीरति छाई ॥
बरनै दीनदयाल जगत की जाल न परिये ।
मिलि नियमादि सखान शांति सेां नित हित करिये ॥५०॥

सुनिये भूप बिबेक तुम बासुदेव अवतार ।
किय मन पितु बसुदेव को बंधन तें उद्धार ॥
बंधन तें उद्धार कियेा कामादि कंस हनि ।
जनकहिं दे आनंद कृतारथ कुलहिं किये धनि ॥
बरनै दीनदयाल सुमति सेां नित हित गुनिये ।
जातें पूत प्रबेाध प्रगट ह्वै सेा सिख सुनिये ॥५१॥

विचार ।

सुनिये बैन विचार तुम या जग होते जौन ।
तेा यह जीव मलीन को करत कृतारथ कौन ॥
करत कृतारथ कौन ख्वार इहि मारहि मारत ।
को करिके निरधारहिं सार असार विचारत ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बनै दीनदयाल बहै बिधि गुरुगम गुनिये ।
जातें होय प्रबोध उदै सो सम्मत सुनिये ॥५२॥

विराग ।

एहो त्याग मृगेस तुम बिन यह तन बनराज ।
करत स्यार कामादि अब ह्वै स्वतंत्र सिरताज ॥
ह्वै स्वतंत्र सिरताज फिरत कूकत कै फूले ।
किन गज्जत घननाद पराक्रम कित वह भूले ॥
बरनै दीनदयाल त्रास जौलों नहिं देही ।
तौलों नहिं ये कूर कढ़ैंगे हिय तें एही ॥ ५३ ॥

संतोष ।

एहो तोख कुलोभ तम को तोलों है बास ।
जौलों नहिं रबि रूप तुम प्रगटत हृदै अकास ॥
प्रगटत हृदै अकास लाभ लघु मुद जुगुनू के ।
दुख दीनता मलीन उलूक रहैं ढिग ढूके ॥
बरनै दीनदयाल लोभ को कब भय देहो ।
तुम बिन सुख नहिं रंच सुनो संतोख अए हो ॥ ५४ ॥

क्षमा ।

बानी कटु सुनि कोप की छमा गहो न गलानि ।
कहा हानि मृगराज की भूकत जौ लषि स्वान ॥
भूकत जौ लषि स्वान हारि मानैगो आपै ।
बैठि रहो हे बीर धीर तुम बोलत कापै ॥
बरनै दीनदयाल बात बुध बिमल बखानी ।
कीजै कछू न सोच सठन की सुनि कटु बानी ॥ ५५ ॥

मन ।

हे मन ये कामादि तव तनै नरक की खानि ।
तुम जानत सुखदानि हैं ये निसि दिन दुखदानि ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

ये निसि दिन दुखदानि मीत बनि प्रीति प्रकासैं ।
अंतर अरि हैं अंत छोनि तो निज धन नासैं ॥
बरनै दीनदयाल संग इनके है छेम न ।
सुतबिबेक तें आदि करी तिन तें हित हे मन ॥५६॥

हे मन बद मद मार को कछु न करो इतबार ।
ये तो दैतन दैत हैं सुभ गुन भच्छनिहारि ॥
सुभ गुन भच्छनिहार कुमति रजनी मैं गाजैं ।
होय प्रबोध प्रभात नहीं तब तें खल राजैं ॥
बरनै दीनदयाल जगत मैं तौ लगि छेम न ॥
जौ लगि नहिं ये कूर कढ़ैंगे हिय तें हे मन ॥५७॥

प्रबोध प्रशंसा ।

भारी भूपति जीव यह रह्यो अखिल को ईस ।
भयो भूल बस कीटसम निज पद परयो न दीस ॥
निज पद परयो न दीस ताहि सुर सीसहि चाढ़यो ।
हे प्रबोध तुम धन्य जगतसरि बूड़त काढ़यो ॥
बरनै दीनदयाल बेद तव है जसकारी ।
चिद्दानंद संदेह दियो सिंहासन भारी ॥५८॥

अपर प्रसंग वर्णन ।

करनी बिधि की देखिये अहो न बरनी जाति ।
हरनी को नीको नयन बसै बिपिन-दिन राति ॥
बसै बिपिन दिन राति बरन बर बरही कीने ।
कारी छबि कलकंठ किये फिरि काक अधीने ॥
बरनै दीनदयाल धीर धन तें बिन धरनी ।
बल्लभ बीचि बियोग बिलोकहु बिधि की करनी ॥५९॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

आये काम न सांकरे रच्छक खरे अपार।
रतनाकर अरु चंद के हुते सकल हितकार॥
हुते सकल हितकार बिबुध बर बीर बांकुरे।
और सूलधर ईस गदाधर धीर ठाकुरे॥
बरनै दीनदयाल रहे सब सखा सुहाये।
कुंभजात अरु राहु ग्रसत कोऊ काम न आये॥ ६०॥

द्वैज दिवस के चंद को बंदत सबै सप्रीति।
कहत कलंकी पूर ससि अहो कूर जग रीति॥
अहो कूर जग रीति बढ़ै पर चौगुन दूषैं।
मिलै कुटिल कबहूक ताहि महिमा करि भूषैं॥
बरनै दीनदयाल न प्रापति द्वै दिन दस के।
तबै करै बहुमान जथा ससि द्वैज दिवस के॥ ६१॥

जाको खोजत सो मिलै यामैं संसय नाहिं।
बिरचे माखी मधु सुधा भीषन बन के माहिं॥
भीषन बन के माहिं सिंह गजराज बिदारैं।
मुकुता मिलै मराल मिलिंद सरोज बिहारैं॥
बरनै दीनदयाल स्वातिजलऊ पपिहा को।
मिलै भली बिधि आय जौन जग खोजत जाको॥ ६२॥

भूप-कूप-श्लेष।

कूपहि आदर उचित है नहीं गुनिन को हेय।
अंतर गुन को ग्रहन करि फिर फिर जीवन देय॥
फिर फिर जीवन देय गुनी गुन वृथा न जावैं।
अति गंभीर हिय दुहू झुके तें अमृत लखावैं॥
बरनै दीनदयाल न देखत रूप कुरूपहि।
जो घट अरपन करै ताहि तें ममता कूपहि॥ ६३॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

पुस्तकालय 110691

सज्जन-ढेकुल-श्लेष ।

गुन को गहि यहि खेत में नमैं सुबसज दोय ।
कृसितन जीवन देत हैं पीछे गुरुता होय ॥
पीछे गुरुता होय कूप तें आदर पावैं ।
ऊँच कहैं सब कोय अमृत घट पुन्य सुहावैं ॥
बरनै दीनदयाल धन्य कहिये जग उन को ।
सहि दुख सुख दैं सबै सरल अति हैं गहि गुन को ॥६४॥

सूक्ष्माऽलंकार ।

कासों हनिये कोप को कापैं पैये ज्ञान ।
गुरू मौन मैं नहिं कह्या छिति छ्वैके धरि कान ॥
छिति छ्वैके धरि कान दसन रवि फेरि लखाएं ।
देखि केस की ओर सुनै न कपाट लगाए ॥
बरनै दीनदयाल सिख्य गुरु की करुना सों ।
समुझि लई सब सैन बैन तिन कह्यो न कासों ॥६५॥

मुद्राऽलंकार ।

कोई सारस नहिं मिलै मदन बान के बीच ।
मीन केतु की कीच फँसि कुंद भई मति नीच ॥
कुंद भई मति नीच निवारी जाय नहीं है ॥
जुही समग्री स्याम जपा करनाम सही है ।
जाती दीनदयाल बिमल बेला सब्बोई ।
ताहि चेतकर-बीर धीर बरने सब कोई ॥ ६६ ॥

सो नाहीं नर सुघर है जो न भजे श्री रंग ।
पारावार अपार जग बूड़त भौंर कुसंग ।
बूड़त भौंर कुसंग ठौर ता महि नहिं पावै ।
सीसहु देत डुबाय भलो हाथहुँ न उठावै ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

बरनै दीनदयाल रूप हरि को तिहि माहीं ।
ध्यान धरै दृढ़ नाव जानि बूड़त सो नाहीं ॥ ६७ ॥

व्याजस्तुति ।

कासी हाँसी मुनि करैं सुनि करनी तव एक ।
दासी तपसी एक सी दै गति बिना बिबेक ॥
दै गति बिना बिबेक एक या और कुचाली ।
अरपै कोऊ कोटि तिनैं लै करो कपाली ॥
बरनैं दीनदयाल काय तिहुँ तिन की नासी ।
परे सरन जे आय कहा यह कीनी कासी ॥ ६८ ॥

सुर धुनि बंकित किमि चलै चकित सुकवि इहि हेत ।
अहो होति लज्जित नहीं खलन ईस पद देत ॥
खलन ईस पद देत नहीं परिनाम बिचारे ।
बाँधै गहि लै जटा न वे उपकार निहारे ॥
बरनै दीनदयाल परी सब तो सिर पै सुनि ।
करी अकरनी जौन भोग ताको री सुर धुनि ॥ ६९ ॥

प्रेम पंचक सवैया ।

छल बंचक हीन चले पथ याहि प्रतीत सुसंबल चाहनो है । तहं संकट वायु वियोग लुवैं दिल को दुख-दाव में दाहनो है ॥ नद सोक विषाद कुग्राह ग्रसैं करि धीरहि तें अवगाहनो है । हित दीनदयाल महा मृदु है कठिनो अति अंत निबाहनो है ॥ ७० ॥

सजि सेज सुबारि बिलूलन की तहँ मीत मतंग सो आवनो है । बरु नीर रखै सिकता घट में मकरी पट सिंह फँसावनो है ॥ सुगमै बरु बारिधि पैरिबो है पय ऊपर तारिबो पाहनो है । हित दीनदयाल महा मृदु है कठिनो अति अंत निबाहनो है ॥ ७१ ॥

रसना अहि की गहिवी सुगमै बन कंटक गौन उबाहनो है । गिरि तें गिरबो भिरबो गज तें तिरबो बड़वागि को थाहिनो है ॥ रन

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

एक अनेकनि तें जु लरै तिमि ताहि न सूर सराहनो है। हित दीन-दयाल महा मृदु है कठिनो अति अंत निबाहनो है ॥ ७२ ॥

पछलत्त तुरीन के हैं सुगमैं नख नाहर को हठि गाहनो है। विष ीर की पीर कौ धीर सहै चढ़ि चीर सरीरहि दाहिनो है ॥ मरु कूप के बीच फँसें सुगमै बरु मीच तें बैर बिसाहनो है। हित दीनदयाल महा मृदु है कठिनो अति अंत निबाहनो है ॥ ७३ ॥

खल निंदक सूकर भै जहँ है गरजैं गज मत्त उराहनो है। कुल-कानि अपार पहार जहाँ गुन लोग सँकोच कुपाहनो है ॥ जल भीर भरी विपदा की सरी तहँ पंक कलंकहि गाहनो है। हित दीनदयाल बड़ो बन है कठिनो अति अंत निबाहनो है ॥ ७४ ॥

दोहा।

पंचक यह है प्रेम को रंचक चित जो देइ।
छूल बंचक बंचै न तिहि दीनदयालु जु सेइ ॥ ७५ ॥

ग्रन्थान्ते मङ्गलम्।

मेटनहारे बिघन के बिघन बिनायक नाम।
रिधि सिधि विद्या उदर ते लंबोदर अभिराम ॥
लंबोदर अभिराम सकल सुभ गुन हिय धारे।
और गहन के हेत देत मनु दंत पसारे ॥
बरनै दीनदयाल भरयो अजहूँ लों पेट न।
वक्रतुंड करि काह चहत ब्रह्मंड समेटन ॥ ७६ ॥

दोहा।

यह अन्योक्तिसुकल्पद्रुम साखा बेद बखानि।
विरची दीनदयालगिरि कविद्विजवर सुखदानि ॥ ७७ ॥
कुंडलिया सु घनाच्छरी सुखद सु दोहा वृत्त।
हरै सवैया मालिनी मिलि पंचामृत चित ॥ ७८ ॥

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

110691

यह कलपद्रुम ग्रंथ में मधुर छंह सुचि पंच ।
पंचामृत हिय पान करि जड़ता रहै न रंच ॥ ७९ ॥
कर छिति निधि ससि साल में माघ मास सित पच्छ
तिथि बसंत जुत पंचमी रबि बासर सुभ स्वच्छ ॥ ८
सोभित तिहि औसर बिषै बसि कासी सुखधाम ।
बिरच्यो दीनदयाल गिरि कलपद्रुम अभिराम ॥ ८१ ॥
अभिमत फलदातार यह विविध अर्थ को देत ।
जौ धुनि गुनि कवि मुदित मन पढ़िहैं प्रेम समेत ॥ ८
उपालंभ अरु नीति जुत प्रीति रसहु सुबिराग ।
बिबिधि भांति सुमनस लसैं यामे सुमन सराग ॥ ८३
सोभित अतिमतिथल सु यह सुमन सहित सब काल
अरप्यो दीनदयालगिरि बनमालिहि सुरसाल ॥ ८४

इति श्राकाशीवासी दीनदयालगिरिविरचिते अन्योक्तिकल्पद्रुमे च
शाखा समाप्ता ।

इति ।

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

मनोरंजन पुस्तकमाला ।

इस पुस्तकावली में एक ही आकार तथा रूप रंग की हिन्दी की सौ उत्तमोत्तम पुस्तकें रहेंगी । अब तक निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—

(१) आदर्श जीवन ।
(२) आत्मोद्धार ।
(३) गुरु गोविंदसिंह ।
(४) आदर्श हिन्दू, १ भाग ।
(५) आदर्श हिन्दू, २ भाग ।
(६) आदर्श हिन्दू, ३ भाग ।
(७) राणा जंगबहादुर ।
(८) भीष्म पितामह ।
(९) जीवन के आनन्द ।
(१०) भौतिक विज्ञान ।
(११) जालचीन ।
(१२) कबीरवचनावली ।
(१३) महादेव गोविंद रानडे ।
(१४) बुद्धदेव ।
(१५) मितव्यय ।
(१६) सिक्खों का उत्थान और पतन
(१७) वीरमणि ।
(१८) नेपोलियन बोनापार्ट ।
(१९) शासनपद्धति ।
(२०) हिन्दुस्तान भाग १ ।
(२१) हिन्दुस्तान भाग २ ।
(२२) महर्षि सुकरात ।
(२३) ज्योतिर्विनोद ।
(२४) आत्मशिक्षण ।
(२५) सुन्दरसार ।
(२६) जर्मनी का विकास, १ भाग ।
(२७) जर्मनी का विकास, २ भाग ।
(२८) कृषि कौमुदी ।
(२९) कर्तव्य-शास्त्र ।

प्रत्येक पुस्तक का मूल्य १), डाकव्यय अतिरिक्त, समस्त पुस्तकमाला के स्थायी ग्राहकों से ॥।) लिया जायगा, डाकव्यय अलग होगा ।

हिन्दी-शब्दसागर ।

हिन्दी भाषा का बृहद्कोश । १९ अंक छप चुके हैं । प्रत्येक अंक में डिमाई चौपेजी आकार के ९६ पृष्ठ हैं । मूल्य प्रति अंक १), डाकव्यय अलग ।

पृथ्वीराजरासो ।

यह हिन्दी-साहित्य का आदि ग्रंथ है । इसमें अंतिम क्षत्रिय सम्राट् पृथ्वीराज चौहान का विस्तृत वृत्तांत कविचंद लिखित है । साथही समस्त ग्रंथ का सारांश गद्य में दिया गया है । यह सुपर रायल आकार के ३१०० पृष्ठों में समाप्त हुआ है । मूल्य समस्त ग्रंथ का २०) रु०, डाकव्यय १॥) के लगभग ।

ये तीनों पुस्तकें

मंत्री, नागरीप्रचारिणी सभा,

बनारस सिटी, से मिल सकती हैं

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar

Digitized by Arya Samaj Foundation Chennai and eGangotri

CC-0. In Public Domain. Gurukul Kangri Collection, Haridwar